वीरविनोद
मेवाड़ का इतिहास

महाराणाओं का आदि से लेकर सन् १८८४ तक का विस्तृत वृत्तान्त
आनुषंगिक सामग्री सहित

द्वितीय भाग
[खण्ड २]
(प्रकरण १०-१२)

लेखक
महामहोपाध्याय कविराज
श्यामलदास
[महाराणा सज्जनसिंह के आश्रित राजकवि]

प्राक्कथन
प्रो० थियोडोर रिकार्डो (जूनियर)
कोलम्विया विश्वविद्यालय (न्यूयार्क)

अनुक्रमणिका,

द्वितीय भाग.

(महाराणा दूसरे अमरसिंहसे महाराणा दूसरे जगत्सिंहके अख़ीर तक).

महाराणा जगत्सिंह दूसरे,
बारहवां प्रकरण - १२१७-१५३४.

दसवां प्रकरण.

महाराणा दूसरे अमरसिंह.

जब महाराणा जयसिंहका देहान्त विक्रमी १७५५ आश्विन कृष्ण १४ [हिज्री १११० ता० २८ रबीउ़लअव्वल = ई० १६९८ ता० ५ ऑक्टोबर] को हुआ. और इस हालकी ख़बर राजनगरमें पहुंची; तब जुवराज उदयपुरकी तरफ़ रवानह होगये. जिस वक्त देबारीके घाटेमें पहुंचे, वहां प्रधान दामोदरदास पंचोली व दूसरे सर्दार, अह्ल्कार वग़ैरहने पेश्वाई की. उस वक्त इन महाराणाकी ख़वासीमें हाथीपर कायस्थ छीतर सहीहवाला बैठा था, कुल सर्दार, उमराव और अह्ल्कार अपने दरजेके मुवाफ़िक़ सवारीमें आगे पीछे होलिये, दो तीन डोरीके क़रीब सवारी चली होगी, कि सब सर्दारोंकी निगाह ख़वासीकी बैठकपर गई, तो छीतर कायस्थको देखा, और महाराणा जयसिंहका मुसाहिब व प्रधान दामोदरदास कायस्थ हाथीके आगे घोड़ेपर चढ़ा चलता था. इस रियासतमें दस्तूर है, कि महाराणा हाथीपर सवार हों, तो ख़वासीमें मुसाहिब बैठा करता है, इस तब्दीलीके होनेसे सब नौकरोंका दिल बिगड़ गया, सर्दारोंमेंसे एक एक दो दो सवारीसे अ़लह्दह होकर ठहरते गये; दो चार डोरी आगे बढ़कर महाराणाने देखा, कि वही राजनगरसे आये हुए शाहज़ादगीके नौकर सवारीमें बाक़ी रहे हैं. तब छीतर कायस्थसे फ़र्माया, कि यह क्या सबब हुआ? उस ख़ैरस्वाहने अर्ज़ की, कि इसका सबब ख़ास मेरा ख़वासीमें बैठना है. महाराणा

अमरसिंहने छीतरको घोड़ेपर सवार करके दामोदरदासको ख़वासीमें विठा लिया, और कहा, कि मुझको ख़याल नहीं रहा; इसलिये ग़लतीसे तुम्हारा हतक हुआ; दामोदरदासने अदबसे सलाम किया. इस वातकी तसल्ली होते ही सब उमराव सर्दार सवारीके साथ हो लिये.

महाराणा जयसिंहके नौकरोंका संदेह जाता रहा, और इन महाराणा (अमरसिंह) ने उदयपुरमें आकर विक्रमी आश्विन शुक्ल ४ [हिज्री ता० २ रबीउस्सानी = ई० ता० १० ऑक्टोबर] को गद्दीनशीनीका दर्बार किया; सब बड़े छोटे नौकरोंने नज़ें दिखलाईं. पुराने नौकरोंसे, जो पहिले नफ़त थी, वह ख़ातिरी व तसल्ली करके मिटा दी. सब रजवाड़ोंसे टीकेका दस्तूर आया; लेकिन् डूंगरपुरके रावल खुमानसिंह, बांसवाड़ेके रावल अजबसिंह, और देवलियाके रावत् प्रतापसिंहने हाज़िर होकर टीकेका दस्तूर पेश नहीं किया, इससे नाराज़ होकर महाराणाने तीनों ठिकानोंपर फ़ौज कशीका हुक्म दिया, और मांडलगढ़ वग़ैरह पर्गनोंमेंसे वादशाही थानेदारोंको (१) निकाल दिया, जिससे अजमेरके सूबहदार मिर्ज़ा सय्यद मुहम्मदका काग़ज़, हिन्दीमें थानह नन्दराय पर्गनह मांडलगढ़की वावत लिखा आया था, उसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

काग़ज़की नक़्ल.

सिध श्री सरव वोपमा सुभ सुथाने जोग महाराज धराज महाराजाजी समस्त जोगी लीखाइतं दारुल पैर हज़रत अजमेर थी, मीर जी श्री सेद म्हेमुद़जी केन हुआ (२) वांचजो जी, ईहां पेर सलाह हे, तुम्हारी पेर सलाह चाहजे जी, अप्रची हाफ़िजवेग मन्सवदार तईनाथ हमारा महीना ३ तीनसे जमयेत असवार व पीयादान थे प्रगने नंदरायमें रहे थो, सो तुम्हारा लोगांने अमल न दियो, और सोखी की. ई वास्ते हाफ़िजवेग उहां सूं ऊठी अजमेर आयो, सो ऊंका उठी आवानें

---

(१) यह तीनों पर्गने विक्रमी १७३६ [हिज्री १०९० = ई० १६७९] से वादशाही ख़ालिसेमें हो गये थे, इन महाराणाने कुंवरपदेमें वादशाही अहल्कारोंसे अपने नामपर ठेकेमें लिखवा लिये थे.

(२) इसमें ऐसे वाज़ वाज़ लफ़्ज़ सूबेदारने अपने बड़प्पनके साथ लिखे हैं, जिससे यह कोई मज़्हबी बुज़ुर्ग मुसल्मानोंका मालूम होता है.

बदनामी पूरी श्री महाराजाजी की हुई, और मैं महाराजाजीका ईषलास सेती या बात हजूरी कूं न लिषी, और अबे अलीबेगकूं साथी पत मुबारीकबादीके आप पासी षींदायो छे, सो गुमासतानके ताई ताकीद कीजे, जो ऊंके ताई प्रगनामें अमल वा दषल दे; और या बदनामी आपकूं हुई है, सो सुन्दर वकील कीधांसू हुई छै; अैं पर पुदा न करे जे या बात हजुरीमें अरज पहुंचे, तो थाकूं पूरो ओलमो आवे, और सुन्दरने आपको जाहीर कियो हैज, बादशाही बंदोन कुं रजामंद कीया है, सो या बात झूठी कही छे; कोण सो कांम पातसाहजीको ईने कीयो, तीसु हम रजामंद हुवा, तीसु रजामंदी हमारी ईम हेज, प्रगने सुं हाथ षेचे और हमारा अमल वाकहे होय, और माहाराजभी ई बातकूं जाणो होज, हमारा भी कुली मुजरा हजुरमें ई ही बातसु है. प्रगनेमें अमल करां और तुम्हारा लोग दषल छोड़े न्ही छे, तीथेजे हमारे ताई हजुरी थी नुकसान पहुंचे, और महाराजी कु पुरी बदनामी आवे, तो या बात भली नहीं, और सुंदर वकील थे जु कछु हम कहां हां, सोतो आपकु वा कई कहै नही, और जु कछु महाराजी कहे सो वा हमसूं कहे न्ही. सो ई बात माहे मतलब बीचमें ही रहे हे, और आपस मांहे पेच होय है, और जे कोई कामका आदमी है, तीनसु तो मीले नहीं, और ऊपर ऊपर लोगानसु मीली करी काम अबतर करे हैं. सो श्री महाराज ई बातके ताई खातरमें लाय करी कयास करोगा जी, और बाजी बात अलीबेग सु जुबानी कही है, सो आपकु कहेगा जी, और घणा क्या लीखे. मी० आसोज सुदी १५ संवती १७५५ (१).

पर्गनह पुर मांडल, बदनौर और मांडलगढ़, तीनों बादशाह आलमगीरने फ़ौजकशीके वक़ ज़ब्त करलिये थे, और जिज़्यहके एवज़में यही पर्गने शुमार किये, जिसपर महाराणा जयसिंहने विक्रमी १७४७ [हि० ११०१ = ई० १६९०] में एक लाख रुपया जिज़्येका देना कुबूल करके पर्गने वापस लिये. इक़ार मुवाफ़िक़ रुपया जमा न होनेके सबब कुछ अर्से तक तो इन्तिज़ार अदा करनेका रहा होगा, लेकिन् न पहुंचनेके सबब फिर यह तीनों पर्गने बादशाहने ज़ब्त कर लिये थे. इसपर महाराणा जयसिंहके राजकुमार (अमरसिंह) ने अपने नामपर ठेकेमें करवा लिये, उस वक़्के दो काग़ज़ फ़ार्सीके हमको मिले हैं, जिनका तर्जमह यहां लिखते हैं:—

---

(१) [हिज्री १११० ता० १४ रबीउस्सानी = ई० १६९८ ता० २१ ऑक्टोबर].

मांडलगढ़के ठेकेकी बाबतके काग़ज़.

यह बयान इस बातका है, कि सूबे अजमेर ज़िले चित्तौड़का पर्गनह मांडलगढ़, शुरू फ़स्ल ख़रीफ़ सन् ११०३ फ़स्लीसे सन् ११०५ फ़स्ली तक तीन वर्षके ठेके का रुपया १०३००० की जमापर कुंवर अमरसिंहके नौकर महासिंह साहको बादशाही मुतसद्दियोंने दिया है. आसमानी और ज़मीनी आफ़तें और मुसीबतें क़हत वग़ैरह अगर ज़ाहिर हों, उनका लिहाज़ रक्खा जावेगा. सन् ११०४ में रु० ३५००० कूंता गया था, लेकिन् मेवाड़में क़हत रहनेके सबब अच्छी पैदा न हुई, कुंवरके नौकरने अपनी उम्दह कार्रवाईसे रअ़य्यतको दिलासा देकर बाज़ जगह खेती कराई, और रुपया १४००० महसूलका मिला; इस सबबसे गुमाश्तह क़हत सालीकी रिआयत चाहता है. यह काग़ज़ सूरत हालके तौरपर लिखा, जो वाक़िफ़ हो गवाही लिख दे.

दूसरा काग़ज़.

यह इस बातका बयान है, कि पर्गनह मांडलगढ़ ज़िले चित्तौड़ सूबा अजमेर का, शुरू ११०६ फ़स्लीसे ११०८ फ़० तक रु० १०६००० हुज़ूरी सिक्कहपर बड़े दरजेके सर्दार राना अमरसिंहके नौकर महासिंहको, जो मुकन्ददासका बेटा है, सर्कारी मुतसद्दियोंकी तरफ़से ठेकेमें दिया गया. यह शर्त है, कि मौसम कैसा ही क्यों न रहे, और ख़ुदा न करे, क़हतसाली भी क्यों न हो, मामूली रुपया अदा करेगा. सन् ११०६ में फ़स्ल ख़रीफ़की बाबत रु० १४५०० तज्वीज़ हुआ था; तमाम मेवाड़में टिड्डी और क़हतकी कस्रतसे तज्वीज़ कीहुई जमाके मुवाफ़िक़ पैदावार न हुई; रानाके आदमीने अपनी नेक कार्रवाई और अच्छे चाल चलनसे पर्गनेकी रअ़य्यत को दिलासा देकर रु० ४५०० हर गांवसे तफ़्सीलवार वुसूल किया. इस सबबसे बड़े अमीर रानाके गुमाश्तहने क़हतसाली और टिड्डीके उज़्रमें यह बयान सूरत हालके तौरपर लिख दिया, जो लोग इस बातसे ख़बर रखते हों, अपनी गवाही लिखदें; ताकि आदमियोंके साम्हने अच्छे और ख़ुदाके नज़्दीक नेक समझे जायें.

इसके नीचे २०१ गांवोंकी तफ्सीलवार फ़िहरिस्त लिखी हुई है, उसको बसबब तवालतके लिखना मुनासिब न जाना; इन दोनों काग़ज़ोंपर क़ानूगो व चौधरियोंके दस्तख़त हिन्दीमें इस तरहपर आड़े लिखे हुए हैं:-

दुसखत चौधरी रतनसी व
वंदर भाण परगने मांडलगढ़रा
इजारो सं० ११०७ फ़स्ल
खरीफ़में टीडयारे सबब कहतसा-
ली हुई, सो उणी फ़सलरा रु०
४५०० अखरे पैंतालीस सो
पैदा हुवा, परगनारा गांव २०१
मधे, गाम ४३ ऊजड़ तथा
दावली बाक़ी गाम १५८ मधे
पैदा हुवा.
दुसखत कानोगो आगरचंद
श्रीचंद मजमूं दुरुस्त.

इसी तरहके दस्तख़त दोनों काग़ज़ोंमें हैं, और क़ाज़ी इहसानुल्लाह व एक बादशाही नौकर महमूद दोनोंकी मुहरें हैं. जब इन महाराणाकी गद्दीनशीनी तक ठेकेका इक़ार पूरा होगया, तब बादशाही नौकरोंने फिर यह पर्गने अपने तहतमें लेने चाहे. अब उन बाज़े अस्ल काग़ज़ोंका तर्जमह नीचे लिखते हैं, जो इन महाराणाके वक़्के मिले, और लिखनेके लायक़ समझे.

१- किसी बादशाही सर्दारकी याद्दाश्त,
मेवाड़के मुआमले में.

सय्यद अब्दुल्लाहखांने लिखा, कि पर्गनह बदनौर और मांडलगढ़, जो चित्तौड़के ज़िलेमें है, गुज़रे हुए राणा जयसिंहके बेटे अमरसिंहने बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ सुजानसिंह राठौड़के बेटों करण और जुझारसिंहको ख़ाली करके सौंप दिया, शजाअ़त-खांने भी जो अर्ज़ी बादशाही हुक्मके जवाबमें लिखी, उससे भी मालूम होता है, कि डूंगरपुरके जागीरदारने चित्तौड़ वग़ैरहकी बाबत, जो कुछ लिखा, उसमें कुछ सचाई नहीं है, और ज़मींदार नामके लिये मन्सबदार है, जिस क़द्र उसको अहमदाबाद आनेके लिये लिखा जाता है, उसका कुछ नतीजा नहीं निकलता.

दूसरे सर्दारकी राय.

शजाअ़तखां और सय्यद अब्दुल्लाखांके लिखनेसे अमरसिंहकी ताबेदारी ज़ाहिर

होती है; इसलिये बादशाही मिहर्बानियोंका उम्मेदवार है, कि मसनद नशीनीका फ़र्मान और टीका उसके नाम भेज दिया जावे; अगर मन्शा हो, यह हुज़ूरी ख़ैरख़्वाह पृथ्वीसिंह और रामरायके हाथ, जो अमरसिंहके नौकर हैं, और जो एक वर्षसे हुज़ूरमें पड़े हुए हैं, भेज दे; कि उनकी मिहनत बेफ़ायदह न जावे; और हुक्म हो, तो जागीरदारकी भेजी हुई नज़्रका सामान सर्कारी कारख़ानहमें पहुंचा दिया जावे.

(हुक्म लिखा गया).

इन बातोंके जवाबमें पेन्सलसे ख़ास दस्तख़त होगये, कि इक़्रारके मुवाफ़िक़ क़ाइम रहनेपर लिहाज़ रक्खा जावेगा. वज़ीरकी तरफ़से तस्दीक़ हुई– कि उदयपुरके जागीरदार अमरसिंहने लिखा है, कि बदनौर वग़ैरह तीन जागीरें सर्कारी ख़ालिसेमें शामिल करदी गईं, और एक हज़ार सवार हुज़ूरमें रवानह करदिये गये; करण और जुझारसिंह जागीरदार बदनौर और मांडलगढ़केने भी अपने दख़्ल पानेकी बाबत लिख भेजा है. (हिज्री १११० = वि० १७५५ = ई० १६९८).

२– नव्वाब जुम्दतुल्मुल्क असदख़ां वज़ीरका काग़ज़, जो मेवाड़के मुआमलोंकी बाबत मार्गशीर्ष शुक्ल १३ को बख़्शियुल मुल्क नव्वाब बहरहमन्दख़ांके नाम लिखा.

पोशीदह न रहे, कि बुज़ुर्ग ख़ान्दान अमरसिंह, राणा जयसिंहके बेटेकी लिखावटका खुलासह उस बड़े दरजेवाले बख़्शियुल्मुल्कके पास भेजा गया; ज़िक्र किये हुए जागीरदारने लिखा है, कि मैं बादशाही ताबेदारी और ख़ैरख़्वाहीको अपने हर तरहके फ़ाइदोंका सबब जानता हूं, इस इक़्रारमें हमेशह क़ाइम रहनेका इरादह रखता हूं. इन दिनोंमें मस्नद नशीनीकी रस्में अदा होती हैं, बादशाही मिहर्बानियोंसे उम्मेद है, कि बुज़ुर्ग फ़र्मान मेरी सर्बलन्दीके लिये इनायत किया जावे. ज़िक्र किये हुए जागीरदारने बहुत शर्मिन्दगी उठाकर पूरा ख़ैरख़्वाहीका इरादह किया है. इसवास्ते वह कार्गुज़ार सर्दार बादशाही दर्गाहमें अर्ज़ी लिख भेजे, कि जागीरदारकी नज़्रें क़बूल करली जावें; और बादशाही मिहर्बानीसे इज़्ज़त दीजावे. अगर बद क़िस्मतीसे कोई क़ुसूर ज़ाहिर होगा, तो उसकी सज़ाका बन्दोबस्त किया जावेगा. जो मुचल्का जागीरदारके नौकरों पृथ्वीसिंह वग़ैरहने लिखकर दिया है, भेजा जाता है; अगर हुक्म होगा, तो पृथ्वीसिंह वग़ैरह हज़ार सवार पहुंचने तक लश्करमें रहेगा; उसके हम्राही २०० सवारोंको तईनात करदिया है, कि लश्करके आगे तीन चार

कोस तक चौकीदारी करते रहें. यक़ीन, कि वह सर्दार मुनासिब वक़्में अ़र्ज़ करके जवाबसे इत्तिला देंगे. (हि० १११० = वि० १७५५ = ई० १६९८).

३- वज़ीरका ख़त, महाराणा अमरसिंहके नाम.

हमेशह बादशाही इनायतोंमें शामिल रहकर खुश रहें, दोस्तीकी बातें ज़ाहिर करनेके बाद मालूम हो, कि उस दोस्तका पसन्दीदह ख़त पहुंचा, उसमें बयान है, कि बांसवाड़ा, देवलिया, डूंगरपुर और सिरोहीके जागीरदार मस्नद नशीनीके वक्त कुछ चीज़ें तुहफ़ेके तौरपर क़दीमसे देते हैं; इन दिनोंमें खुमानसिंह डूंगरपुरका ज़मींदार इन्कार करता है. खुमानसिंहके लिखे हुएसे ऐसा अ़र्ज़ हुआ, कि उस दोस्तने ज़मींदारको पैग़ाम भेजा था, कि अगर शरीक बने, तो पर्गनह मालपुरा वगैरहको लूटकर चित्तौड़में क़ब्ज़ा करे, लेकिन् ज़मींदारने यह बात क़ुबूल न की. इसके बाद उस उ़म्दह सर्दारने अपने काका सूरतसिंहको ज़मींदारकी जागीर लूटनेको रवानह किया, लड़ाई होनेपर दोनों तरफ़के आदमी मारे गये. अब उस उ़म्दह भाईने दुबारा दूसरी फ़ौज भेजी है, यह बात बादशाही दर्गाहमें बहुत ख़राब मालूम हुई. इस मौक़ेपर इस दुन्याके खैरख्वाह (मैं) ने पृथ्वीसिंह और रामराय और बाघमल वगैरह उस दोस्तके नौकरोंकी अ़र्ज़के मुवाफ़िक़ हुज़ूरमें ज़ाहिर किया, कि डूंगरपुरके वकीलने जाली ख़त बना लिया है, उस दोस्तका मत्लब अ़र्ज़ कर दिया गया. बादशाही हुक्मसे इस मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ातके वास्ते शजाअ़तखांको लिखा गया है, कि अस्ल हाल दर्यांफ्त करके लिख भेजे, मुनासिब यही है, कि बादशाही मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कोई काम न किया जावे; ज़ियादह कैफ़ियत जगरूप वकीलके लिखनेसे मालूम होगी. ता० १० सफ़र सन् ४३ जुलूस (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ श्रावण शुक्ल १२ = ई० १६९९ ता० ९ ऑगस्ट).

४- किसी बादशाही नौकर, कायस्थ केशवदासकी
दर्ख्वास्त महाराणा २ अमरसिंहकी
ख़िद्मतमें.

बिहिश्तके मानिन्द महफ़िलके बैठने वाले, और इन्साफ़के फ़र्शको रौनक़ देने वाले, बख़्शिश और इहसान फैलाने वाले, बड़े ताक़तवर, बलन्द दरजेके राजाकी

ख़िदमतमें अर्ज़ करता है, कि इज़्ज़तदार मिहर्बानीका ख़त, जिसके हर एक हर्फ़ से नेक बख़्ती नज़र आती थी, होश्यार सर्दारख़ांके हाथ वुसूल होकर ख़ुशी और बुज़ुर्गी हासिल हुई, और जो बुज़ुर्ग काग़ज़ मए कपड़े और घोड़ेके नव्वाब साहिब के पास भेजा था, पहुंच गया; उससे नव्वाब साहिबको दिली ख़ुशी हासिल हुई; और दोनों तरफ़की मुहब्बत और दोस्तीने ताज़गी पाई. अगर ख़ुदाने चाहा, तो हर मौक़ेपर नव्वाब साहिब उन कामोंमें, जिनसे दीवान साहिब (१) का कोई फ़ायदह हो, ज़रूर कोशिश करते रहेंगे. ख़ैरख़्वाहीके ख़यालसे मैं अर्ज़ करता हूं, कि इन दिनोंमें प्रतापसिंह देवलियाके जागीरदार और बांसवाड़ा और डूंगरपुरके वकीलोंने हाज़िर होकर बयान किया है, कि उन बड़े ख़ान्दान वाले उम्दह राजाकी फ़ौजें, इनमेंसे हर एकके इलाक़ेमें जाकर सताती हैं. इस सबबसे, कि अभी हुज़ूरमेंसे टीका इनायत नहीं हुआ, फ़ौजोंकी तईनाती मौकूफ़ रक्खें, क्योंकि शुरूमें ही शिकायतकी बात अर्ज़ होना अच्छा नहीं है. (हि० ११११ = वि० १७५६ = ई० १६९९).

५— ख़त कुशलसिंह शक्तावतके नाम, जिसकी औलादमें विजयपुरका जागीरदार ठाकुर जवानसिंह है. यह असदख़ां वज़ीरका लिखा मालूम होता है.

बराबरी वालोंमें उम्दह बहादुर ख़ान्दान कुशलसिंह शक्तावत ख़ुश रहे, इन दिनोंमें बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ बख़्शियुल मुल्क मुख़्लिसख़ांजीका ख़त रावल खुमानसिंह डूंगरपुरके जागीरदारकी दर्ख़्वास्तपर शैख़ अब्दुर्रऊफ़ गुर्ज़बर्दारके हाथ मेरे पास पहुंचा है; उसका पूरा मज़्मून बड़े दरजेवाले बुज़ुर्ग ख़ान्दान राणाजीको लिख भेजा है, उससे तमाम हक़ीक़त ज़ाहिर होगी.

गुर्ज़बर्दार, जो आपके लिये ताकीद करेगा, इस वास्ते मेरा काग़ज़ बहुत जल्द राणाजीको दिखलाने बाद उसका जवाब इस तौरपर, कि कोई शुब्हः न रहे, लेकर क़ासिदके हाथ भेज दें. उसके मुवाफ़िक़ बादशाही हुक्मकी तामील की जावे, राणाजीने मुझसे दोस्ती पैदा की है, और मैं भी उनकी बिहतरी चाहता हूं, इस वास्ते मेरी तरफ़से उन्हें कह दें, कि डूंगरपुरके जागीरदारको ज़ियादह दिक़ करना मुनासिब नहीं है; क्योंकि ज़मींदार मज़्कूरने बहुतसी बातें राणाजीकी बाबत बादशाही

(१) महाराणाका पद दीवान है.
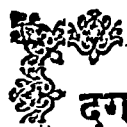
दर्गाहमें अर्ज़ की हैं, जिनसे फ़ायदह नज़र नहीं आता. ज़ियादह क्या लिखा जावे. ता० ४ रबीउ़लअव्वल सन् ४३ जुलूस (हि० ११११ = विक्रमी १७५६ भाद्रपद शुक्ल ६ = ई० १६९९ ता० १ सेप्टेम्बर).

६- वज़ीर असदख़ांका ख़त महाराणा अमरसिंहके नाम.

बादशाही ख़ैरख़्वाहीके इरादे हमेशह उन दोस्तके दिलमें क़ाइम रहें- मालूम हो, कि इससे पहिले उन दोस्तने जिस क़द्र नज़्का सामान मए दरख़्वास्तके बादशाही दर्गाहमें भेजा था, पेश होकर कुबूल किया गया था; और फ़र्मान लिखे जानेको भी हुक्म दिया था; इन दिनोंमें उन उ़म्दह सर्दारका तीर्थकी नियत से बूंदीकी तरफ़ जाना अ़र्ज़ हुआ, नज़्की चीज़ें उन दोस्तके आदमियोंको वापस करदी गईं; और फ़र्मानका लिखा जाना भी मुल्तवी रहा; ऐसा मुनासिब था, कि फ़र्मान और राणाका ख़िताब मिलनेपर शुक्र अदा करके तीर्थके वास्ते इजाज़त मांगते; वग़ैर हुक्म अपनी जगहसे निकलना पुराने दस्तूरके ख़िलाफ़ है; और उन दोस्तकी अक्लमन्दीसे निहायत दूर मालूम होता है.

इस लिये जो अ़र्ज़ी कि इन दिनोंमें बुज़ुर्ग दर्बारमें भेजी थी, बादशाहकी तबीअ़तको बर्ख़िलाफ़ देखकर पेश नहीं की, और जो काग़ज़ कि मुझको भेजा था दोस्तीके सबब उन दोस्तके वकीलसे लेकर मैंने पढ़ा, जिसमें इत्तिला थी, कि आप लौट कर वतन पहुंच गये हैं; अगर्चि आपकी ख़ैरख़्वाहीके इरादे मुझको पहिले ही से मालूम थे, जिनकी बाबत मैंने हुज़ूरमें अ़र्ज़ किया है; लेकिन् मुनासिब देखकर एक दूसरी बात लिखी जाती है, कि बदनौर वग़ैरह ३ पर्गनोंमें, जो कि जिज़्यहके एवज़ बादशाही नौकरोंको आपने सौंप दिये हैं, बिल्कुल दख़्ल न दें; ख़ालिसेके काम्दारोंको इन्तिज़ाम करनेमें कोई शिकायतका मौक़ा न मिले. ख़ैरख़्वाही और ताबेदारीकी बाबत एक अ़र्ज़ी भेजदें, जो मौक़ा देखकर हुज़ूरमें पेश की जावे, और जिससे साफ़ दिलीका ख़याल जम जावे; और उन दोस्तकी भेजी हुई नज़्का सामान कुबूल फ़र्माया जावे. मैं दोस्तीका हक़ अदा करता हूं, चाहे वह पसन्द हो, या ना पसन्द. आइन्दह अपने फ़ाइदोंपर निगाह रखकर बादशाही मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई न करें, और एक इक़ारनामह अपनी मुहरसे लिख भेजें. ता० २९ रबीउ़लअव्वल सन् ४३ जु० (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ आश्विन कृष्ण ३० = ई० १६९९ ता० २५ सेप्टेम्बर).

७- एक अर्ज़ीका मुसव्वदह, जो आ़लमगीर बादशाहको भेजीगई. विक्रमी १७५६ कार्तिक शुक्ल ५ [हि० ११११ ता० ३ जमादियुल अव्वल = ई० १६९९ ता० २९ ऑक्टोबर].

ख़ैरख़्वाह अ़र्ज़ करता है, कि इन दिनोंमें नव्वाब जुम्दतुलमुल्क मदारुल-महामका ख़त ताबेदारके नाम इस मज़्मूनसे आया, कि बग़ैर हुज़ूरी हुक्मके तीर्थोंको जानेसे शर्मिन्दह होकर कभी बिला इत्तिला ऐसी कार्रवाई न करे; और तीनों पर्गने, जो उतार लिये गये हैं, उनमें दख़्ल न दे; और इस मुआ़मलेका मुचल्का हुज़ूरमें लिख भेजे. ताबेदारोंकी जाय पनाह सलामत, बदनसीबीसे इस ताबेदारने कोई ऐसा काम नहीं किया, कि हमेशह बग़ैर फ़र्मानेके किसी तरफ़ न जावे, इस मर्तबह तीर्थ जानेको दुश्मनोंने इस ख़ैरख़्वाहकी नमक हरामीपर ख़याल करके बेजा बातोंसे हुज़ूरकी पाक, बुज़ुर्ग, नेक तबीअ़तको नाराज़ करदिया; इन्साफ़को पालने वाले सलामत, दुन्या और आख़िरतकी रूसियाही उस नालायक़के नसीब हो, जिसकी तबीअ़तमें उ़दूल हुक्मीका कोई ख़याल पैदा हो- ज़ियादह क्या अ़र्ज़ किया जावे. यह ख़ैरख़्वाह सिवाय ताबेदारीके कोई ख़राब इरादह दिलमें नहीं रखता. बुज़ुर्ग मिह्रबानियोंसे उम्मेद है, कि क़ुसूरकी मुआ़फ़ीसे इज़्ज़त बख़्शकर तसल्ली फ़र्मावें, कि यह ताबेदार ख़ैरख़्वाहीके रास्तेपर साबित क़दम है. वाजिब जानकर अ़र्ज़ किया.

८- शहनशाह आ़लमगीरके वज़ीरकी याददाश्त.

ख़ास बादशाही ताबेदारके नाम हुक्म हुआ, कि पृथ्वीसिंह और रामराय वग़ैरह, जो अगले राणाके बेटेके वकील हैं, बादशाही लश्करमें हाज़िर हुए हैं, इनके साथ कुछ जमइयत भी है; इस लिये इनको तीन तीन थान कपड़ेके देकर फ़ौजकी चौकीदारी पर मुक़र्रर किया जावे. ता० ९ जमादियुल अव्वल सन् ४३ जुलूस (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ कार्तिक शुक्ल ११ = ई० १६९९ ता० ४ नोवेम्बर).

९- वज़ीर असदख़ांका ख़त महाराणा अमरसिंहके नाम.

मामूली अल्क़ाबके बाद- उन उ़म्दह सर्दारके ख़त कई बार पहुंचे, मज़्मून अ़र्ज़ कर दिया गया; मन्शासे पहिले भी इत्तिला दी गई है. उन उ़म्दह भाईके

काम मेरे ज़िम्मह हैं; इसलिये जगरूप वकील, पृथ्वीसिंह, रामराय और बाघमल्लको बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ अपने पास ठहरा लिया है, जिस वक्त कि सय्यद अब्दुल्लाखां हुज़ूरमें जवाब लिखेंगे, उन दोस्तके काम अच्छी तरह तै हो जावेंगे; वे फ़िक्र रहें. ता० १४ जमादियुल अव्वल सन् ४३ जुलूस (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ कार्तिक शुक्ल १५ = ई० १६९९ ता० ९ नोवेम्बर).

१०- अजमेरके वक़ाया निगारकी याद्दाश्त, ता० ११ रजब सन् ४३ जु० आ० (हि० ११११ = वि० १७५६ पौष शुक्ल १३ = ई० १७०० ता० ४ जैन्युअरी).

उदयपुरका जागीरदार अमरसिंह, इन दिनोंमें बहुतसी फ़ौज एकठ्ठी करता है, मालूम नहीं उसका क्या इरादह है.

११- किसी बादशाही सर्दारका काग़ज़ पर्गनह बदनौर वग़ैरह की बाबत.
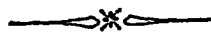
बुज़ुर्ग ख़ान्दानवाले सय्यद हुसैनको मालूम हो, कि इन दिनोंमें बहादुर ख़ासियत अमरसिंह, राणा जयसिंहके बेटेने लिखा है, कि पर्गनह बदनौर वग़ैरह तीन इलाक़े, बापकी तरहपर बादशाही ख़ालिसेमें छोड़ दिये हैं. हुसैनअली अब्दुल्लाख़ांका बेटा वहां जाकर राजपूतोंको सताता है; इसलिये उसको समझा दिया जावे, कि ये पर्गने राणाकी तरफ़से ख़ालिसेमें होगये हैं; कोई शख़्स किसी तरहका इसमें दख़्ल न दे. ता० २१ रजब सन् ४३ जु० आ० (हि० ११११ = वि० १७५६ माघ कृष्ण ७ = ई० १७०० ता० १४ जैन्युअरी).

१२- महाराणा अमरसिंहकी दख्वास्त किसी शाहज़ादहके नाम वि० १७५६ [हि० ११११ = ई० १७००].

बुज़ुर्ग हुक्मसे इत्तिला पाई, जिसमें लिखा था, कि राणाकी फ़ौज जमा होकर फ़साद करना चाहती है, जुझारसिंह कई बातें अर्ज़ कर चुका है. जवाबमें अर्ज़ किया जाता है, कि जुझारसिंहका बयान हुज़ूरमें बिल्कुल झूठ समझना चाहिये; इस ख़ैरख़्वाहको बादशाही इलाक़े लूटनेका हौसला नहीं है. हमेशह ख़ैरख़्वाहीका ख़याल रहता है, जुझारसिंहका भतीजा राजसिंह मेरे मातहत दूल्हासिंहके चार भाइयोंको पकड़कर लेगया, मैं ने अपने मातहत दूल्हासिंहको मना कर दिया, कि

अपने भाइयोंके एवज़ सब्र करे. जुझारसिंहने अपनी तरफ़से हुज़ूरमें झूठ तूफ़ान लिख भेजा. इस मुआमलेकी तह्क़ीक़ात हो, और फ़सादी या झूठेको सज़ा दी जावे, ता कि दुबारा बादशाही दर्गाहोंमें कोई ऐसी अर्ज़ न करे.

१३– ख़बर.

नारायणदास कुम्बी जोधपुरमें तईनात है, और वहींसे जागीर पाता है, और जुझारसिंहकी विकालत करता है. लाला नन्दरायकी मारिफ़त बादशाही हुक्मसे जोधपुरमें जाकर बहुतसे राजपूतोंको मिला लिया है. यहां आकर जुझारसिंहसे कहा है, कि तुम हमेशह राणाकी शिकायत लिखते रहो; मैं कोशिश करके हुक्म भिजवा दूंगा, कि राणाका इलाक़ह लूटते रहो; नारायणदास नन्दरायसे मिला हुआ है, और वह राणाका दुश्मन है, क्यों कि जिस वक़्त उसका बेटा ब्याहके वास्ते दिहली जाता था, और राणाने आदमी साथ देकर अजमेर तक आरामसे पहुंचवा दिया, तो उदयपुरसे दूर होनेके सबब अपने पास बुलाकर सफ़र ख़र्च नहीं दिया; इस बातसे नन्दराय राणाकी तरफ़से नाराज़ है, कि उसका बेटा उनके इलाक़ेमें गया, और उन्होंने ख़ातिर नहीं की. वज़ीर इस बातको ख़ूब जानता है, कि राणा सिवाय हमारे और कोई सिफ़ारिश नहीं रखता. (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ = ई० १७००).

१४– मेवाड़ वकीलकी दरख्वास्त वज़ीर असदख़ांके नाम.

नव्वाब साहिब इह्सान करने वाले, फ़ायदह पहुंचाने वाले सलामत– ताबेदारी और लाचारीके दस्तूर अदा करके बुज़ुर्ग ख़िद्मतमें अर्ज़ किया जाता है, कि पर्गने बदनोर और मांडलगढ़ बड़े दरजे के अमीर राणा अमरसिंहने बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ ख़ाली करके सुजानसिंह राठौड़के बेटों कर्णसिंह और जुझारसिंहको सौंप दिये, अब हर तरह ताबेदारीके साथ हुक्मोंके मुवाफ़िक़ अमल किया जाता है, अगले दिनोंमें यह दोनों पर्गने फ़सादी डाकुओंकी जायपनाह थे, जब ख़ालिसेमें या राणाके इलाक़ेमें मुक़र्रर हुए, अम्न रहा; अब यक़ीन है, कि लुटेरे फिर आ बसेंगे; इस लिये अगर ख़ालिसेमें शामिल कर लिये जावें, तो अच्छा बन्दोबस्त होगा. (हिज्री ११११ विक्रमी = १७५६ = ई० १७००).

१५– वज़ीरका ख़त, महाराणा २ अमरसिंहके नाम. ता॰ १० रमज़ान सन् ४४ जु॰ आ॰
[हि॰ ११११ = वि॰ १७५६ फाल्गुण शुक्र १२ = ई॰ १७००
ता॰ २ मार्च].

हमेशह नेक बादशाही मिहर्बानियोंमें शामिल होकर खुश रहें, जो ख़त कि बादशाही नौकरोंको पर्गनह सौंपने, १००० सवार रवानह करने, फ़र्मान और टीका इनायत होने और पृथ्वीसिंहको रुख़्सत मिलनेकी बाबत लिखा था, पहुंचा. पर्गनोंके सौंपने और सवारोंकी रवानगी और फ़र्मान मिलनेके वास्ते हुज़ूरमें अर्ज़ किया गया; हुक्म हुआ, कि फ़र्मान लिखा जावेगा. मैंने दुबारा लिखा है, ख़ातिर जमा रक्खें, जमइयत भेजनेमें देर न करें; यक़ीन है, कि सवारोंके पहुंचनेपर पर्गने बदस्तूर बहाल होजावें; फ़िक्र न करें. पृथ्वीसिंह और रामराय और वकील जगरूप अच्छी पैरवी करते हैं, ज़ियादह क्या लिखा जावे.

१६– वज़ीरका ख़त महाराणा २ अमरसिंहके नाम.

हमेशह बादशाही मिहर्बानियोंमें शामिल होकर खुश रहें, दोस्ती की बातें ज़ाहिर करनेके बाद मालूम हो, कि बादशाही दर्गाहमें अर्ज़ हुआ है, कि गोपाल नालायक़ 'मालका' और 'बाजणा' के पहाड़ोंमें ठहरा हुआ है; यह गांव अगर्चि पहिले मांडलगढ़के पर्गनेमें शामिल था, लेकिन् शुरू साल २६ जुलूससे गुज़रे हुए राणा जयसिंहने इस तरफ़के १७ गांव अपनी जागीरके तअल्लुक़में कर लिये थे, और अब भी यह जगह उन उ़म्दह सर्दारके क़ब्ज़ेमें है; उदयभान शक्तावत उस दोस्तका नौकर, जो इस गांवका जागीरदार है, बदनसीब गोपालके साथ इत्तिफ़ाक़ रखता है; और वह दोस्त भी मदद ख़र्च देते हैं. यह बात अच्छी नहीं मालूम होती. इस वक़्से पहिले उस उ़म्दह भाईके लिखनेसे हुज़ूरमें अर्ज़ हुआ था, कि उदयभान वग़ैरह ज़मींदार गोपालके साथ इत्तिफ़ाक़ रखते हैं, और राठौड़ भी, जिनकी जागीर क़रीब है, उसको नहीं रोकते हैं; इन दिनोंमें अर्ज़के बर्ख़िलाफ़ मालूम हुआ, जिसकी बाबत बहुत अफ़्सोस है. बुज़ुर्ग हुक्मकी मुवाफ़िक़ मैंने लिखा है, कि पर्गनह मालका और बाजणाको मए १७ गांवोंके अपने इलाक़ेमें जानकर ताकीद रक्खें, कि उदयभान बेजा हरकतोंसे शर्मिन्दह होकर हुक्मके बर्ख़िलाफ़ अमल न करे. वह दोस्त भी मदद ख़र्चसे हाथ खेंचकर बादशाही ख़ैरख़्वाहीपर क़ाइम रहें; और ऐसी कोशिश करें, कि गोपाल

बदश्रामाल क़ैद होकर बादशाही दर्गाहमें पहुंचे, इस कामको अपनी उ़म्दह ख़िझत गुज़ारी समझें; अगर उदयभान कहनेपर अ़मल न करे, तो उसको भी निकालकर इत्तिला देवें, और हर तरह अच्छा बन्दोवस्त करें. ज़ियादह क्या लिखा जावे. (हिज्री ११११ विक्रमी १७५७ = ई० १७००).

१७— किसी बादशाही सर्दारका ख़त दूसरे सर्दारके नाम ता० २१ शव्वाल सन् ४४ जुलूस आ० [हिज्री ११११ = वि० १७५७ वैशाख कृष्ण ७ = ई० १७०० ता० १२ एप्रिल].

बड़े दरजेके बहादुर दोस्त खुश रहें— शौक़के बाद मालूम हो, रामराय वकील, जो उ़म्दह सर्दार अमरसिंहका वकील है, नावाक़िफ़ीसे सय्यद मुज़फ़्फ़रकी मारिफ़त मुझसे ख़्वास्तगार हुआ, कि वह दोस्त ख़्वाहिश रखते हैं, कि अगर गुज़रे हुए राजा भीमके मुवाफ़िक़ मन्सब इनायत हो, और पर्गनह ईडर मए इलाक़ह जागीरमें मिले, तो उ़म्दह फ़ौज समेत हुज़ूरमें हाज़िर रहे, और एक लाख रुपया नज़्र दे, जिसमेंसे आधा पहिले और आधा मन्सब पानेके बाद अदा करे. इसलिये लिखा जाता है, कि उ़म्दह जमइयत लेकर हाज़िर होनेपर तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार, और पांच सौ सवार दो अस्पह सि अस्पहका मन्सब बख़्शा जावेगा, और ईडर जागीरमें दिया जावेगा. यह कोशिश और इम्तिहानका वक़्त है, फ़ौज लेकर आवें, तो ज़रूर फ़ायदह उठावेंगे, इस कागज़को इक़ार समझकर ज़रूर रवानह हों, थोड़े लिखेको बहुत जानें.

१८— वज़ीरका ख़त, मेवाड़के मुआ़मलेकी वावत सूबेदारके नाम.

बड़े ख़ान्दानी बहादुर दोस्त, ख़ुदाकी पनाहमें रहें— सलामके बाद मालूम हो, कि इससे पहिले बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ कर्णसिंह और जुझारसिंहको ताकीद लिख दी गई थी, कि गुज़रे हुए राणा जयसिंहके बेटे अमरसिंहके इलाक़हमें दख़्ल न देनेके वास्ते ताकीद की थी; इन दिनोंमें अमरसिंहने दोबारह लिखा, कि कर्ण और जुझारसिंह उसकी जागीरमें हाथ डालते हैं, और इरादह रखते हैं, कि फ़साद करें, जिससे अमरसिंह हुज़ूरमें बदनाम हो. इस वास्ते लिखा जाता है, कि वह सर्दार ताकीद करदें, कि गुज़रे हुए दलपतके मुवाफ़िक़ अ़मल रक्खें; और अमरसिंहके इलाक़हमें दख़्ल न दें; अपनी जागीरोंका ऐसा बन्दोबस्त रक्खें, कि

दोबारह तक्रार न होने पावे. ता० ४ ज़ीक़ाद सन् ४४ जु० आ० [हिज्री १११९ = वि० १७५७ वैशाख शुक्क ६ = ई० १७०० ता० २६ एप्रिल].

१९ - बादशाह ज़ादह शाहआलम बहादुरशाहका निशान, (१) महाराणा २ अमरसिंहके नाम, दस्तख़त ख़ासका.

बादशाही.

हिन्दुस्तानके राजाओंके बुज़ुर्ग बड़े जागीरदारोंके उम्दह राणाजी, मिहर्बानियोंसे इज़्ज़तदार होकर जानें- हिम्मतवर नरायणदासकी ज़बानी बाज़ बातें मालूम हुईं, अस्ली जवाब, जिनमें झूठका लगाव नहीं है, उससे कह दिये गये; वह मुफ़स्सल लिखेगा मोतबर समझें. मुआमला पहिलेके मुवाफ़िक़ है; जो कोई कम ज़ियादह कहता है, उसमें कुछ सच नहीं है, जितनी बादशाही ख़ैरख़्वाही करेंगे, बड़े दरजेपर पहुंचेंगे. ज़ियादह ताबेदारीपर क़ाइम रहना चाहिये. अगर मेरी इस बातको मानोगे, तो मैं तुम्हारा साथी हूं, और अगर बच्चोंकी बातोंपर ध्यान रक्खा, तो

---

(१) نقل نشان د ستخط خاص شاهزادهٔ شاه عالم بهادر

بنام رانا امرسنگه - دوم *

——— (◦○◦) ———

بادشاهی

زبدهٔ راجهاے هندوستان عمدهٔ
زمینداران عالیشان رانا جیو از نوازش
ممتاز بوده بدانند - از زبانی
تهور دستگاه نراین داس بعض مقدمات
ظاهر شد جوابها نفس الامرے که
شائبهٔ دروغ ندارد باو گفته شد - مفصل
خواهد نوشت — معتبر شناسند و حرف
حرف اول است — و هر که کم و زیاد
میگوید بهرهٔ از راستی و درستی ندارد -

اگر اینحرف مراشنیدید — لهذا درگاه رفیق شماست — و اگر حرف
طفلان گوش کردید — اعتبار دارید — من باشما رفیق نیستم فقط

هرچند بندگی بادشاه عالم پناه بیشتر خواهند کرد بمراتب خواهند
رسید زیاده انقیاد و بندگی باد ۱۶ ذوالقعده نوشته شد ٥

तुम्हारा इख़्तियार है; मैं शरीक नहीं हूं. ता० १६ ज़िल्क़ाद सन् ४४ जु० आ० [हिज्री ११११ = विक्रमी १७५७ ज्येष्ठ कृष्ण २ = ई० १७०० ता० ८ मई].

२०- बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ फ़ज़ाइलखांने नव्वाब वज़ीरके नाम लिखा.

दोस्तीके आदाब बजा लाकर अर्ज़ रखता है, कि बुज़ुर्ग ख़त ता० २४ शव्वालका लिखा हुआ मए ख़त अमरसिंहके वुसूल हुआ, सब हाल मालूम हुए; हुज़ूरमें अर्ज़ करदिया गया. अमरसिंहने लिखा, कि खुमानसिंह जागीरदारने क़िले चित्तोड़की मरम्मतके लिये जो अर्ज़ किया है, उसकी ख़िलाफ़ बयानी शजाअ़तख़ांने लिखी होगी. बादशाही हुक्म हुआ, कि उस सर्दारने अभी तक उस मुआमलेमें राय नहीं दी. बादशाही मन्शा है, कि अमरसिंह क़िला चित्तोड़ और बुतख़ाने बनानेसे पर्हेज़ रखे, और बादशाही मर्ज़ीके बर्ख़िलाफ़ कोई काम न करे; और बादशाही हुक्म ऐसा भी है, कि बख़्तयारख़ांके ख़तकी नक़्ल, जो इन दिनोंमें पेश हुआ है, उन उ़म्दह वज़ीरके पास भेजी जावे, वह नज़रसे गुज़रेगी; ख़ुशीके दिन हमेशह रहें. माह ज़िल्हिज सन् ४४ जुलूस [हिज्री ११११ = विक्रमी १७५७ ज्येष्ठ शुक्ल = ई० १७०० मई].

२१- नव्वाब असदख़ांका ख़त, मेवाड़के मुआ़मलेमें फ़ज़ाइलख़ां मुन्शीके नाम.

बड़े दरजेके साफ़ दिल दोस्त बादशाही मिहर्बानियोंमें शामिल रहें, बाद सलाम शौक़के मालूम हो, कि उस दोस्तका ख़त, जो बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ लिखा था, मुझको मिला; उसमें इशारह है, कि अमरसिंह, राणा जयसिंहके बेटेकी लिखावटसे डूंगरपुरके जागीरदार खुमानसिंहकी अर्ज़ ग़लत मालूम होती है, जिसने लिख दिया था, कि चित्तौड़की मरम्मत होती है, और बुतख़ाने बनाये जाते हैं. शजाअ़तख़ांसे भी दर्याफ़्त किया जावे; इससे पहिले शजाअ़तख़ांका ख़त भी पहुंचा था, जो भेज दिया, अब दो बारह उसकी नक़्ल भेजी जाती है, जिससे मुफ़स्सल हाल मालूम होगा. जागीरदारके वकीलोंसे भी, जो मए तीन सौ सवारोंके लश्करमें हाजिर हैं, दर्याफ़्त किया गया; मुचल्का और जो काग़ज़ कि उन्होंने लिख

दिया है, अस्ल भेज दिया जाता है, किसी मौक़ेपर पेश करदें; और बादशाही हुक्मसे इत्तिला दें. ता० २७ ज़िल्हिजको मुसव्वदह किया, और ता० १ मुहर्रम सन् ४४ जु० आ० [हिज्री १११२ = विक्रमी १७५७ आषाढ़ शुक्ल ३ = ई० १७०० ता० २० जून] को तय्यार हुआ.

२२- नव्वाब वज़ीरका ख़त, महाराणाके मुआमलेमें सूबेदार अहमदाबादके नाम.

ख़ान्दानी इ़ज़्ज़तदार दोस्त ख़ुदाकी हिफ़ाज़तमें रहें, सलामके बाद मालूम हो, कि पहिले उन दोस्तका ख़त पहुंचा था, कि डूंगरपुरके जागीरदार खुमानसिंहकी लिखावटमें कुछ सचाई नहीं है; इन दिनोंमें खुमानसिंहकी तहरीर और अजमेरके वक़ाया निगारोंकी ख़बरोंसे मालूम होता है, कि चित्तौड़की मरम्मत की जाती है; और बुतख़ाने बनाये जाते हैं, और फ़ौज इकट्ठी करके अमरसिंह, राणा जयसिंहका बेटा ख़राब इरादह रखता है. उस शख़्सके लिखने और उसके वकीलोंके इज़्हारसे मालूम होता है, कि यह तमाम झूठ है; इस वास्ते अब लिखा जाता है, कि वह इ़ज़्ज़तदार दोस्त गुज़रे हुए राणाके बेटेकी पूरी हक़ीक़त और नाक़िस इरादहको दर्याफ़्त करके सहीह तौरपर मुझको लिखें, ता कि बादशाही हुज़ूरमें अ़र्ज़ किया जावे; ज़ियादह सलाम. ता० शुरू मुहर्रम सन् ४४ जु० आ० [हिज्री १११२ = वि० १७५७ आषाढ़ शुक्ल ३ = ई० १७०० ता० २० जून].

२३- किसी बादशाही नौकरकी दर्ख़्वास्त, महाराणा २ अमरसिंहके नाम ता० २९ सफ़र सन् ४४ जु० आ० [हि० १११२ = वि० १७५७ भाद्रपद कृष्ण ऽऽ = ई० १७०० ता० १५ ऑगस्ट].

हज़रत बुज़ुर्ग बादशाहकी मिहर्बानियें, उन बड़े दरजेके आलीशान ख़ान्दान वाले राजाके हालपर जारी रहें, मुलाक़ातकी आर्ज़ूके बाद अ़र्ज़ करता है, कि बुज़ुर्ग ख़त भैया रामरायकी मारिफ़त वुसूल हुए, और जो अ़र्ज़ियें, कि शाहज़ादहके हुज़ूरमें भेजी थीं, पेश करदी गईं. कामोंका तै होना अपने वक़्तपर मौक़ूफ़ है. शाहज़ादह आ़लीजाहका लश्कर इन दिनोंमें सूबे मालवाकी तरफ़ आने वाला है, निहायत साफ़ दिलीसे वह उम्दह राजा अपनी ख़ैरख़्वाहीसे मुचल्का लिख कर एक हज़ार सवारकी जमइयत, जो उज्जैन पहुंचनेसे पहिले भेज देंगे, यह सब अ़र्ज़ कर दिया. बुज़ुर्ग

शाहज़ादहने बे हद मिहर्बानियोंके साथ बादशाही दर्गाहसे टीकेका फ़र्मान, राणाका ख़िताब और जड़ाऊ जम्धर, घोड़ा और हाथी, मए चांदीके सामानके उस बुज़ुर्ग सर्दारके लिये हासिल किया; तावेदारीकी सूरत देखकर शाहज़ादह आलीजाह भेज देंगे, उन उम्दह सर्दारका वकील भी ख़िदमतमें हाज़िर रहेगा.

उन बुज़ुर्ग ख़ान्दानके सर्दारको क़दीमी ख़िताव मुबारक हो, इसका शुक्रियह अदा करें, और अपने बुज़ुर्गोंकी मानन्द ख़ैरख़्वाहीके रास्तेपर क़ाइम रहकर बादशाही मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कोई काम न करें. बाग़ियोंको अपने इलाक़हमें जगह न दें, और जमइयत भेजकर फ़सादियोंकी ख़राबीमें कोशिश करें, जिससे बादशाही मिहर्बानियें बढ़ती रहें. जो पैरवी उन उम्दह सर्दारके दीवानसे इस मौक़ेपर ज़ाहिर हुई, तारीफ़के क़ाबिल है, यक़ीन है, कि उम्दह नतीजह बख़्शे. बादशाही दर्गाहमें होश्यार आदमीका भेजना आपकी ख़ूबी ज़ाहिर करता है. मुझको दोस्तीके रास्तेपर साबित क़दम समझें. ज़ियादह क्या लिखूं. ख़ुशीके दिन हमेशह रहें.

२४— ज़ुब्दतुल्मुल्क असदख़ां वज़ीरका ख़त, महाराणा २ अमरसिंहके नाम.

हमेशह बादशाही मिहर्बानियोंमें शामिल रहकर ख़ुशी और बिह्तरीमें रहें— मुहब्बतकी बातें बयान करनेके बाद साफ़ तबीअतपर ज़ाहिर हो, जो ख़त हुज़ूरमें जमइयत भेजनेकी बाबत और अपने गांवपर करण और जुझारसिंहके ज़ुल्मके बयानमें लिखा था, नज़रसे गुज़रा. बादशाही हुक्म होगया है, कि यह बादशाही ख़ैरख़्वाह (मैं) उस दोस्तको लिखे, कि बड़े नव्वाब बुज़ुर्ग शाहज़ादह आलीजाह आज़मशाह उस तरफ़ तश्रीफ़ रखते हैं, उनके मन्शाओंको बादशाही हुक्म समझकर अमल करें. बादशाही हुक्मके काग़ज़ क़ाइदहके साथ इस ख़ैरख़्वाहकी मुहरसे पहुंचेंगे. उस उम्दह सर्दारके एक हज़ार सवार शाहज़ादह आलीजाहकी ख़िदमतमें तईनात हुए हैं, वहां भेजदें. करण और जुझारसिंहको बादशाही दर्गाहसे हुक्म मिला है, कि किसी तरहका नुक़्सान उस बुज़ुर्ग दोस्तके इलाक़ेमें न पहुंचावें. उम्मेद है, कि हुक्मके मुवाफ़िक़ अमल रहेगा. ता० ५ रजब सन् ४४ जुलूस आ० [हि० १११२ = वि० १७५७ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ = ई० १७०० ता० १९ डिसेम्बर].

२५— आज़मशाहके कारख़ानहकी तरफ़से सय्यद अहमदकी रसीद, महाराणा २ अमरसिंहकी भेजी हुई चीज़ोंकी बाबत.

तारीख़ २९ रबीउस्सानी सन् ४५ जु० आ० [हिज्री १११३ = विक्रमी

१७५८ आश्विन कृष्ण ३० = ई० १७०१ ता० ३ सेप्टेम्बर].

हाथी गजशोभा नाम,	तलवार नग ७	घोड़ा ४२, सर्ज याने ज़ीन
क़ीमती रु० ४१२१।=॥.	सावरी ९	घोड़ेके २, जम्धर जड़ाऊ
जम्धर ७ क़ीमती रु० १४८३।=॥.	पाखर वग़ैरह,	कामके मए अतलसी ग़िलाफ़,
जम्धर सोनेके सामानके,	क़ीमती रु० ४००.	क़ीमती रु० १०५९।.
क़ीमती रु० ४२४॥।.	तरक, क़ीमती रु० ४००.	ज़ीन सुनहरी, रुपहरी,
झूल, क़ीमती रु० ९१.	सरचंद,	क़ीमती रु० १५९३.
पायजामा सावरी,	क़ीमती रु० ५००.	
क़ीमती रु० ४५.		

२६– वज़ीरका ख़त, रावल अजबसिंहके नाम.

बराबरी वालोंमें उम्दह रावल अजबसिंह नेक नियत रहें, इन दिनोंमें बुज़ुर्ग ख़ान्दान राणा अमरसिंहके लिखनेसे अर्ज़ हुआ, कि उस सर्दारने भीलवाड़ा वग़ैरह २७ गावोंपर, जो डांगलके ज़िलेमें राणाके सर्हदी इलाक़ेपर हैं, और जिनकी बाबत राणा एक महज़र उनके बाप रावल कुशलसिंह और डूंगरपुरके ज़मींदार रावल खुमानसिंहके हाथकी रखता है, बेफ़ायदह दावा करके ज़ुल्म और दस्ल दे रक्खा है. यह बात बादशाही दर्गाहमें बहुत ख़राब मालूम होती है, और हुक्मके मुवाफ़िक़ लिखा जाता है, कि इस काग़ज़के पहुंचतेही राणाके इलाक़ेपर बेजा दस्ल न करे; इस मुआमलेमें हुज़ूरकी तरफ़से सख़्त ताकीद समझे. ता० २५ ज़िल्क़ाद सन् ४६ जु० आ० [हिज्री १११३ = विक्रमी १७५९ वैशाख कृष्ण ११ = ई० १७०२ ता० २३ एप्रिल].

२७– नव्वाब शायस्तहख़ांकी रिपोर्टका खुलासह. ता० ३ शअ्बान सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७५९ पौष शुक्ल ५ = ई० १७०२ ता० २१ डिसेम्बर].

सुब्हके वक़्त राजा इस्लामख़ांने मालवेके सूबेदार नव्वाब शायस्तहख़ांके पास

आकर ज़ाहिर किया, कि राणा अमरसिंहकी फ़ौज इस्लामपुरके इलाक़ेमें आगई है, जिससे गांवकी रअय्यत भागती है. नव्वाबने कहा, राणाका मोतवर वकील हर वक़ मेरे पास रहता है; मैं उसको ताकीद करता हूं, कि बादशाही मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई न होने पावे. नव्वाबने राणाके वकीलको ताकीद की, जिसने जवाबमें ज़ाहिर किया, कि हमारे ठिकानेदारको बादशाही मुल्कपर हाथ डालनेकी हिम्मत नहीं है. राजा इस्लामख़ां और प्रतापसिंह देवलिया वालेके बेटे कीर्तिसिंहने अपने जानेके लिये हीला बनाया है; अगर मेरा मालिक कोई नुक्सान पहुंचावे, तो मैं मुचल्का लिख देताहूं; राणाको राजासे कोई दुश्मनी भी नहीं है. वकीलने मुचल्का लिख दिया.

मुचल्केकी नक़्ल.

मेरा नाम बाघमल है, राणा अमरसिंहजीका वकील हूं, इक़ार करता हूं, कि राजा इस्लामख़ांने अपनी मुहरसे लिख दिया है, कि राणाजी मुझसे दुश्मनी रखते हैं, और अनोपपुरा वग़ैरह रामपुरेके इलाक़ोंको लूटना चाहते हैं. मेरे ठिकानेदारको राजासे कुछ दुश्मनी नहीं है, बल्कि राजासे बहुत मुवाफ़क़त रखते हैं; इस्लामपुरेके इलाक़ेको लूटना उनके ख़यालमें भी नहीं है. अगर राणाजीकी फ़ौज इस्लामपुरका इलाक़ह लूटे, मैं उसकी जवाबदिहीके वास्ते हाज़िर हूं.

२८– महाराणा २ अमरसिंहका ख़त, ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बख़्शीके नाम.
[विक्रमी १७५९ = हि० ११११ = ई० १७०२].

बुज़ुर्ग बादशाही मिहर्बानियें उन बड़े दरजेके दोस्त बख़्शियुल् मुल्कके हालपर जारी रहें, बाद शौक़के मालूम हो, कि इससे पहिले नव्वाब ज़ुम्दतुलमुल्कके फ़र्मानेके मुवाफ़िक़ एक अर्ज़ी फ़त्हकी मुबारकबादीमें मए किसी क़द्र नज़्रके बाघमलकी मारिफ़त भेजी थी, यक़ीन है, कि हुज़ूरमें पेश की हो. आपने हुज़ूरके रूबरू मेरे मोतबर पंचोली बिहारीदास और सलामतराय मुन्शीको जमइयत भेजनेके वास्ते फ़र्माया था, उसके मुवाफ़िक़ अपने काका कीर्तिसिंहको मए जमइयतके रवानह किया है; अगर ख़ुदाने चाहा, तो ख़ैरियतसे पहुंचकर आपकी मन्शाके मुवाफ़िक़ बादशाही काममें मसरूफ़ होगा. जबसे कि मेरे वकीलोंने आपकी साफ़ तबीअतका हाल लिखा है, मुझको हर तरहकी बे फ़िक्री है; यक़ीन है, कि मेरे कामोंमें ख़याल रक्खेंगे, ज़ियादह क्या तक्लीफ़ दी जावे.

२९- अमीरुल्उमरा शायस्तहखांकी याद्दाश्त; ता० ७ ज़िल्क़ाद ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७६० चैत्र शुक्ल ९ = ई० १७०३ ता० २६ मार्च] हि० ता० २७ ज़िल्क़ाद [वि० वैशाख कृष्ण १३ = ई० ता० १५ एप्रिल] को दुबारा पेश हुई-

कि पर्गनह सिरोही वग़ैरह इलाक़ह अजमेरमें से एक किरोड़ दाम जमापर, १००० सवार दक्षिणमें नाज़िमके पास हाज़िर रहनेकी शर्तपर शुरूअ् रबीअ्ईलसे राणा अमरसिंहकी जागीरमें मुक़र्रर हुआ; मुनासिब है, कि चौधरी, क़ानूनगो, पटैल, रअय्यत और करसे, कुल जवाबदिही और दीवानीके मुआमले सफ़ाईके साथ, लिखे हुए सर्दारके आगे पेश करते रहें; और उसकी मर्ज़ीके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई न करें. ५ ज़िल्हिज सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७६० वैशाख शुक्ल ७ = ई० १७०३ ता० २३ एप्रिल].

पुश्तकी इबारत.

मुक़र्रर जागीर राणा अमरसिंहके नामपर याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ पर्गनह सिरोही और आबूगढ़, ज़िले जोधपुर सूबह अजमेरमें से, १००० सवार दक्षिणमें नाज़िमके साथ रहनेकी शर्तपर इनायत किया गया; दो पर्गने एक किरोड़ बीस लाख दामकी जमामेंसे बीस लाख दाम तख़्फ़ीफ़ किये गये.

३०- मालवेके सूबहदार अमीरुल्उमरा शायस्तहखांका ख़त, अ़ली अहमद फ़ौज्दारके नाम; ता० ९ ज़िल्हिज सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७६० वैशाख शुक्ल ११ = ई० १७०३ ता० २७ एप्रिल].

सर्कारी ख़ैरख़्वाह सय्यद अ़लीअहमद खुश रहें, मालूम हो, कि पर्गनह सिरोही और आबूगढ़ बादशाही दर्गाहसे सनदके मुवाफ़िक़ बहादुर सर्दार राणा अमरसिंहको बख़्शा गया; इस वास्ते हुक्मके मुवाफ़िक़ लिखा जाता है, कि राणाके आदमियोंकी मदद करके थानहदारोंपर ताकीद रक्खें, कि बर्तरफ़ ज़मींदार बादशाही इलाक़हमें रहकर रास्तह चलने वालोंको लूट मार न करे, और दख़्ल न पावे. इस मुआमलेमें बादशाही तरफ़से ताकीद जानकर लिखे मुवाफ़िक़ अ़मल रक्खें.

३१– मालवेके सूबहदारका ख़त यूसुफ़अ़ली फ़ौज्दारके नाम.

इ़ज़्ज़तदार यूसुफ़अ़ली खुश रहें, मालूम हो, कि पर्गनह सिरोही और आबूगढ़ बादशाही दर्गाहसे बड़े दरजेके राणा अमरसिंहकी जागीरमें सनदके साथ बख़्शा गया है; मालूम होता है, कि अजीतसिंह राठौड़ बतरफ़ ज़मींदारको मदद देता है. बादशाही हुक्मोंकी तामील ज़ुरूर है, इस लिये अजीतसिंहको सख़्त ताकीद करदें, कि उसकी मददसे माजूल ज़मींदार इ़लाक़हके रहने वालों और रास्तह चलने वालोंकी जान व मालपर लूट मार न करे. इस मुआ़मलेमें बादशाही ताकीद है. ता० ११ ज़िल्हिज सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = विक्रमी १७६० वैशाख शुक्ल १३ = ई० १७०३ ता० २९ एप्रिल].

३२–नक़ल याद्दाश्त, महाराणा २ अमरसिंहकी तरफ़से.

हक़ीक़त यह है, जब हज़रत बादशाहने राणा राजसिंहपर चढ़ाई फ़र्माई थी, उस ज़मानेमें राणाके वकीलोंने सुलहके वास्ते हुज़ूरमें जाकर सुलहका बयान पेश किया; हज़रतने फ़र्माया कि जिज़्यह उसको देना पड़ेगा. आख़िर बहुतसी रद व बदलके बाद जिज़्येके एवज़में पर्गने बदनौर, मांडलगढ़ और पुरको लेलिया, और सुलह होगई. इसके पीछे खुद हज़रत अजमेरको तश्रीफ़ लेगये, कि इसी अ़र्सेमें राणा मज़्कूरका इन्तिक़ाल होगया; हुज़ूरसे राजाईका टीका राणा जयसिंहको मिला. इन राणाने अ़र्ज़ कराया, कि पर्गने मज़्कूर इ़नायत होजावें, उनकेएवज़ एक लाख रुपया सालाना अजमेरके सर्कारी ख़ज़ानेमें अदा करता रहूंगा. यह बात मंज़ूर फ़र्मा लीगई, और फ़र्मान पर्गनोंकी बाबत खिल्अ़त और हाथी समेत सूबहके दीवान मुहम्मद स्वलाह की मारिफ़त हासिल हुआ, कि मामूली रुपया ख़ज़ानेमें अदा होता रहे. इसके बाद राणा जयसिंह गुज़र गया, पर्गने मज़्कूर राठौड़ोंकी जागीरमें तनख़्वाहके तौर मुक़र्रर होगये. फिर बादशाही हुक्म राणा अमरसिंहके नाम जारी हुआ, कि एक हज़ार सवारकी जमइ़यत हुज़ूरमें भेजदे, जब यह फ़ौज हाज़िरी देगी, तो पर्गने इ़नायत हो जावेंगे. इस लिये हुक्मके मुवाफ़िक़ जमइ़यत मज़्कूर हुज़ूरमें

भेजदी है, जो अब दक्षिणकी लड़ाइयोंमें चाकरी दे रही है; लेकिन् पर्गने अभी तक अ़ता नहीं हुए. अब मैं जनाब नव्वाब साहिब (वज़ीर) की बुज़ुर्गीसे उम्मेद रखता हूं, कि इस बाबत हुज़ूरमें कोशिश करके पर्गनोंके मिलनेसे कामयाब फ़र्मावें, ताकि बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ एक लाख रुपया सर्कारी ख़ज़ानेमें दाख़िल होता रहे, या एक हज़ार सवार मौजूदी हुज़ूरमें चाकरी करते रहें; और मालूम हो कि तीन किरोड़ दाम इन्‌आ़ममेंसे एक किरोड़ दामकी तन्ख़्वाह वुसूल हुई है, और दो किरोड़ दाम सर्कारमें मांगता हूं.

३३- मालवेके सूबहदार अमीरुल् उमरा शायस्तहख़ांका ख़त, अ़ली अहमद फ़ौज्दारके नाम; ता० १८ शव्वाल सन् ४८ जु० आ़० [हि० १११५ = वि० १७६० फाल्गुन् कृष्ण ४ = ई० १७०४ ता० २४ फ़ेब्रुअरी].

बादशाही ख़ैरख़्वाह अ़ली अहमद खुश रहें, इन दिनोंमें राणा अमरसिंहके वकीलकी अ़र्ज़से मालूम हुआ, कि पर्गने सिरोही और आबूगढ़के चौधरी और क़ानूनगो उस एक किरोड़ दामकी जागीरको राणा अमरसिंहसे ज़ब्त होना मश्हूर करके जवाबदिही नहीं करते हैं. बादशाही दफ़्तरसे यह जागीर उनके नाम बहाल पाई जाती है; इस लिये लिखा जाता है, कि चौधरी, क़ानूनगो और रअ़य्यत वग़ैरहको ताकीद करदें, कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ दीवानी और मालकी जवाबदिही ज़िक्र किये हुए सर्दारके पास करते रहें, हिसाबी कार्रवाईमें कुछ फ़र्क़ न हो, ताकीद जानें.

३४- ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बहादुर, नुस्रत जंग, बख़्शियुल्मुल्कका ख़त, महाराणा अमरसिंहके नाम; ता० १२ रबीउ़ल् अव्वल सन् ४८ जु० आ़० [हि० १११६ = वि० १७६१ आषाढ़ शुक्ल १३ = ई० १७०४ ता० १५ जुलाई].

उन बड़े दरजेके इ़ज़्ज़तदार दोस्तकी उम्मेदों और कार्रवाईका बाग़ बादशाही मिहर्बानियोंसे सर्सब्ज़ हो, बाद शौक़के मालूम हो, कि दोस्तीका ख़त पहुंच कर खुशीका सबब हुआ. पर्गनह मांडलगढ़ और बदनौर वग़ैरहकी जागीरके लिये पहिले भी हुज़ूरमें अ़र्ज़ किया गया था; और अब फिर इरादह है. दोस्तीके लिहाज़से एक हज़ार सवारकी रसीद दी जाती है, वर्नह जमइ़यत बहुत कम है;

इस बातपर ताकीद समझ कर और आदमी भेजें. उम्मेद है, कि इसी तरीकेपर दोस्तीके ख़त भेजते रहें. ज़ियादह क्या लिखा जावे.

ऊपर लिखे तर्जमोंका खुलासह.

१ नम्बरके काग़ज़का जो तर्जमह लिखा गया, उसका मत्लब यह मालूम होता है, कि वज़ीर असदख़ांने उदयपुरके वकीलोंकी तसल्लीके लिये बादशाहसे अर्ज़ करनेको यादके तौरपर सब काम लिखे हैं, जिसपर बादशाहने पेन्सिलसे खुद हुक्म लिखा है; और उसकी नक़्ल तसल्लीके लिये वज़ीरने, उदयपुरके वकीलोंको दी होगी, और उन्होंने उदयपुर भेजी, कामोंकी तफ्सील बदनौर, पुर मांडल, और मांडलगढ़का कुछ ज़िक्र है, जो हम ऊपर हिन्दी काग़ज़की नक़्लके साथ लिख आये हैं; लेकिन् राठौड़ कर्णसिंह और जुझारसिंहको बादशाहने ये पर्गने जागीरमें देदिये, और इन राठौड़ोंसे बार बार फ़साद होता रहा, और बादशाही मुलाज़िमोंके कई काग़ज़ोंमें भी इनका ज़िक्र है. पाठक लोगोंको यह संदेह न रहे, कि ये लोग कौन थे, इस लिये थोड़ा ज़िक्र इनका वंश वृक्षके साथ नीचे लिखते हैं:-

जोधपुरके राव मालदेवके बेटे राजा उदयसिंह थे, जिनका जन्म विक्रमी १५९४ माघ शुक्ल १२ रविवार [हि० ९४४ ता० ११ शअ्बान = ई० १५३८ ता० १३ जैन्युअरी] को हुआ, और विक्रमी १६४० भाद्रपद कृष्ण १२ [हि० ९९१ ता० २६ रजब = ई० १५८३ ता० १५ ऑगस्ट] को जोधपुर आये; बादशाह अक्बरसे जोधपुरका राज्य और राजाका ख़िताब हासिल किया; और विक्रमी १६५१ आषाढ़ शुक्ल १५ [हि० १००२ ता० १४ शव्वाल = ई० १५९४ ता० ३ जुलाई] को लाहौरमें उनका देहान्त हुआ. इनके १७ बेटे थे, जिनमेंसे तेरहवें (१) माधवदासकी औलादके ज़िले अजमेर, जूनियां, महरू, पीसांगण वग़ैरहमें अभी तक इस्तिम्रारदार कहलाते हैं, उनका वंश वृक्ष मए गांवों वग़ैरह जागीरके नीचे लिखते हैं. माधवदासका बेटा केसरीसिंह, जिसको बादशाही दर्बारसे पीसांगण जागीरमें मिला था, और उसका बेटा सुजानसिंह, जिसने जूनियां तो गौड़ राजपूतोंसे, और महरू सीसोदियोंसे छीन लिया था.

---

(१) जे० डी० ला टूश साहिब अजमेरके मुहतमिम् बन्दोबस्त, पांचवां बेटा होना लिखते हैं; और जोधपुरकी तवारीख़से तेरहवां बेटा होना पाया जाता है.
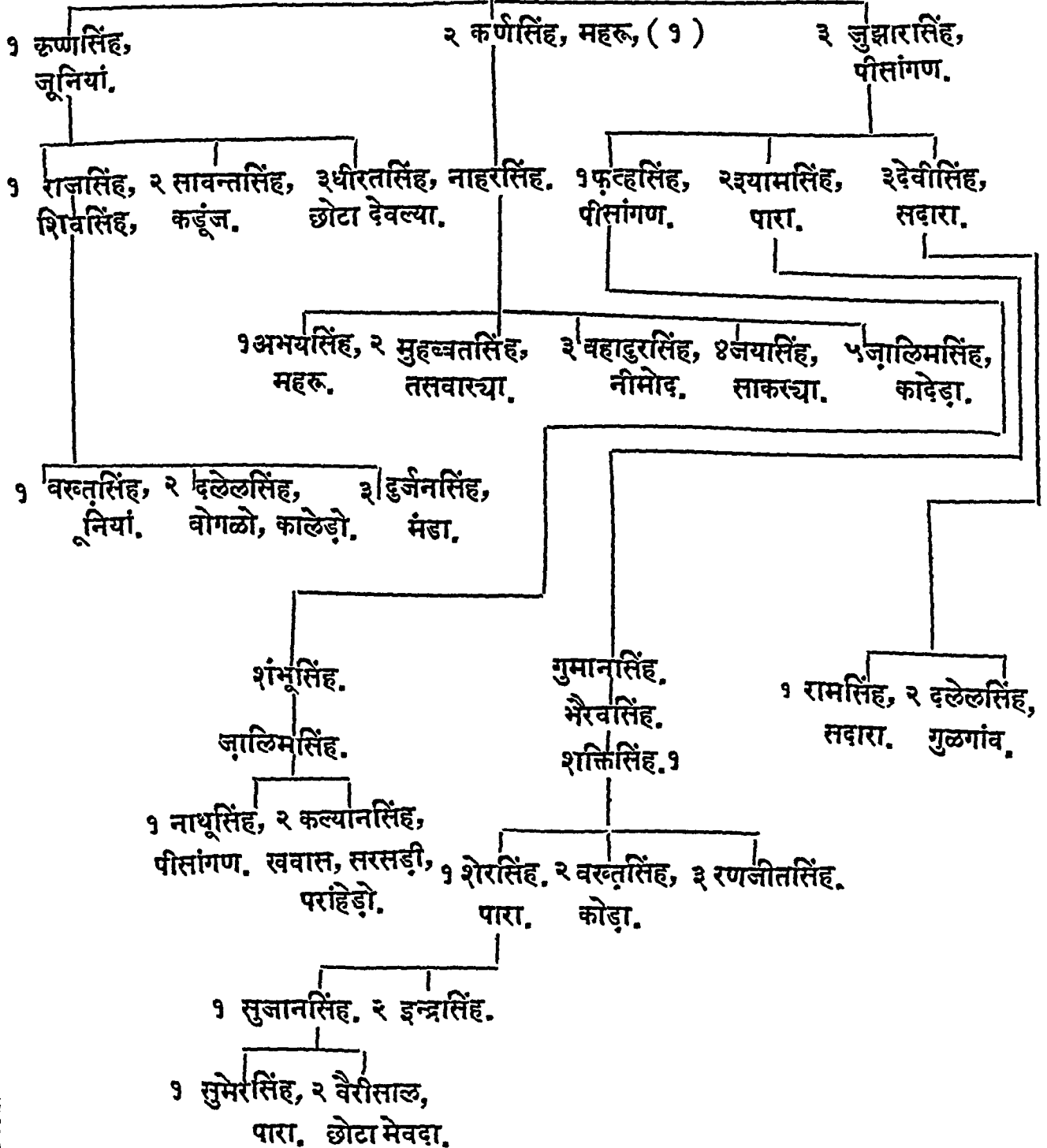
(१) कर्णसिंहको आलमगीरने बदनौर मेवाड़से लेकर जागीरमें देदिया, और पुर मांडल उसके बड़े भाई कृष्णसिंहको व मांडलगढ़ जुझारसिंहको दिया था.

इन ऊपर लिखे हुए राठौड़ोंकी औलाद इन्हीं गांवोंमें मौजूद है, जैसा कि ऊपर लिखे नसब नामेसे ज़ाहिर होती है. गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके मातहत नीचे लिखे मुवाफ़िक़ सालाना मालगुज़ारी अजमेरके सर्कारी ख़ज़ानेमें जमा कराते हैं. इन लोगोंको दीवानी फ़ौज्दारीका कुछ इख़्तियार नहीं है.

जूनियांवाले,	कोड़ा,	सदारा,	गुळगांव,	कादेड़ा,
रु०५७२३॥।≡.	रु०५३६।≡॥.	रु० ८५१.	रु० ८०१।-॥.	रु० ११११।≡।॥.
मंडो,	वोगळो, कालेड़ो,	कडूंज,	देवल्या छोटा,	मेवदा छोटा,
रु० २११.	रु० १६००≡२.	रु०१७१३।-१.	रु०७९९॥।-॥।.	रु० ७८८।-.
महरू,	तसवारिया,	नीमोद,	साकरया,	
रु०५३५९॥,१.	रु०१०२३।,॥।१.	रु० ६१२॥-॥१.	रु० १०७.	
पीसांगण,	खवास, सरसड़ी,	परांहेड़ा,	पारा,	
रु०४५६३॥।=२.	रु०११३७॥।-॥।.	रु०१६९५॥,७.	रु०२१९२=।२.	

जूनियांके कृष्णसिंहका बेटा राजसिंह, जो वड़ा वहादुर आदमी था, अपनी जागीर पुर और मांडलपर क़ाबिज़ रहकर मेवाड़के राजपूतोंसे लड़ा भिड़ा करता था. ज़ियादह तर सीसोदिया चूंडावतोंसे उसकी अदावत होगई, उसने कई चूंडावतोंको मार मारकर पुरके नज़्दीक पहाड़ीकी खोहमें, जिसको 'अधरशिला' कहते हैं, डाल दिया; उस वक्त़ किसी शाइरने मारवाड़ी ज़वानमें यह दोहा कहा:-

दोहा

खेती थारी राजड़ा रस आई रावत्त ॥
अधर शिला तळ ओठिया चुण चुण चूंडावत्त ॥ १ ॥

यह वादशाह आलमगीरकी हिक्मत अमली थी, कि राजपूत लोग आपसमें लड़कर मारे जावें, और कम ताक़त हों; लेकिन् राठौड़ोंकी वहादुरीमें शक नहीं, क्योंकि वड़े ताक़तवर मेवाड़के महाराजा धिराजसे वर्ख़िलाफ़ रहकर वेदिल न होना वग़ैर दिलेरीके नहीं होसक्ता.

अव्वल नम्बर फ़ार्सी काग़ज़का तर्जमह, वज़ीरकी याद्दाश्त है, पहिली क़लमका मत्लब, जो कर्णसिंह, जुझारसिंहके वारेमें है, खुलासह लिखा गया. दूसरी बात उस याद्दाश्तमें यह है, कि डूंगरपुरके जागीरदारने चित्तौड़ वग़ैरहकी वावत जो कुछ लिखा, उसमें कुछ सचाई नहीं है, और ज़मींदार नामके लिये मन्सवदार

है, जिस क़द्र उसको अहमदाबाद आनेके लिये लिखा जाता है, उसका कुछ नतीजा नहीं निकलता. इस यादका यह मत्लब था, कि डूंगरपुर, बांसवाड़ा, और देवलिया प्रतापगढ़के राजा हमेशहसे मेवाड़के मातहत रहे, लेकिन् चित्तौड़पर बादशाह अक्बरका हम्ला होनेके बाद यह तीनों ठिकाने कभी बादशाही नौकर और कभी उदयपुरके मातहत होते रहे. जब महाराणा जयसिंहका इन्तिक़ाल हुआ, और अमरसिंह गद्दीपर बैठे, तब इन लोगोंने गद्दी नशीनीका दस्तूर, जिसको टीका कहते हैं, नहीं भेजा; महाराणा अमरसिंहने नाराज़ होकर महाराज सूरतसिंह भगवन्तसिंहोतको डूंगरपुरकी तरफ़ भेज दिया; सोम नदीपर डूंगरपुरके जागीरदार चहुवान राजपूत मुक़ाबला करके मारे गये; रावल खुमानसिंह डूंगरपुरसे भाग गये; मेवाड़की फ़ौजने शहरको लूटा. आख़िरकार देवगढ़के रावत् चूंडावत द्वारिकादासकी मारिफ़त रावल खुमानसिंहने सुलह चाही, टीकेका दस्तूर उदयपुर भेज दिया, और फ़ौज ख़र्चके एक लाख पचहत्तर हज़ार रुपये की ज़मानत द्वारिकादासने दी, और रुपया वुसूल करनेके लिये पचास सवार डूंगरपुर छोड़कर फ़ौज वापस आई. रावल खुमानसिंहने बादशाही हुज़ूरमें अर्ज़ी लिख भेजी, कि महाराणा अमरसिंह बादशाही मुल्कपर हम्ला करनेके इरादेसे फ़ौज इकट्ठी करके चित्तौड़गढ़की मरम्मत करवाते हैं, और मुझको भी अपने शरीक होनेको कहा, लेकिन् मैं राज़ी न हुआ, इस लिये फ़ौज भेजकर मुझको तबाह किया. इस अर्ज़ीके सुननेसे बादशाह नाराज़ हुआ होगा, लेकिन् दक्षिणकी लड़ाइयोंके सबब इस बातको दर्याफ़्त करनेका हुक्म दिया; तब वज़ीरने अहमदाबाद और अजमेरके सूबोंसे दर्याफ़्त किया, जिसके जवाबमें सूबोंने रावल खुमानसिंहके लिखनेको ग़लत होना ज़ाहिर किया.

तीसरे - उस याद्दाश्तमें यह ज़िक्र है, कि रामराय और पृथ्वीसिंहके हाथ टीका भेज दिया जावे; इसका मत्लब यह है, कि महाराणा अमरसिंह, कर्णसिंह, जगत्सिंह, और राजसिंहके इन्तिक़ाल होनेसे वक़ वक़्पर बादशाह जहांगीर, शाहजहां और आलमगीर गद्दी नशीनीका दस्तूर फ़र्मान, ख़िल्अ़त वग़ैरह किसी बड़े मन्सबदारके हाथ भेजते रहे, उसी तरह महाराणा जयसिंहके इन्तिक़ाल होनेपर अमरसिंह भी चाहते थे, क्यौंकि जयपुर, जोधपुर और बीकानेर वग़ैरहके दूसरे राजाओंके लिये टीकेका दस्तूर घरपर बादशाह नहीं भेजते थे, दर्बारमें हाज़िर होनेपर बतौर ख़िल्अ़तके उनको मिलता था; इस लिये मेवाड़के राजा उस दस्तूरके ज़ियादह ख़्वास्तगार रहते थे. हज़ार सवारके बारेमें जो लिखा, यह वही हज़ार सवारकी जमइ़यत है, जो बादशाह जहांगीरके वक़ क़रारनामेसे क़रार पाई थी, लेकिन् इसकी तामील होनेमें हमेशह हुज्जत और तक्रार पेश आती रही. जब ज़ियादह दबाव देखा,

भेज दिया, वर्नह टाल दिया. इस वक्त महाराणा अमरसिंहके कई मत्लब दर्पेश थे. सिरोही, ईडर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, रामपुरा, मांडलगढ़, पुर मांडल, और बदनौर वगैरह कब्ज़ेसे निकले हुए पर्गनोंको फिर शामिल करनेकी कोशिशमें थे; इस लिये हज़ार सवारोंकी जमइयत देना मंज़ूर किया.

काग़ज़ नम्बर २, जो वज़ीरने बख़्शियुल्मुल्कके नाम लिखा है, उसमें ऊपर बयान की हुई बातोंका, और वकीलोंके मुचल्केका ज़िक्र है.

काग़ज़ नम्बर ३ भी ऊपर ज़िक्र किये हुए बारेमें वज़ीरने महाराणाके नाम लिखा है.

काग़ज़ नम्बर ४ याने कायस्थ केशवदास वकीलकी अर्ज़ी ऊपर लिखी बातोंके बारेमें इत्तिलाअ़न व मस्लिहतन है.

काग़ज़ नम्बर ५ किसी बादशाही सर्दारका शक्तावत कुशलसिंहके नाम है, जो महाराणा अमरसिंहका एतिबारी नौकर था, और जिसकी औलादके कब्ज़ेमें इस वक्त विजयपुरका ठिकाना है, और वह रावल खुमानसिंह डूंगरपुर वालेकी बाबत है; जिसका हाल ऊपर लिखा गया.

६ नम्बर काग़ज़का मत्लब यह है, कि महाराणा अमरसिंह तेज़ मिज़ाज थे, और अपने पुराने खुदमुख़्तार ख़ान्दानका गुरूर रखते थे, जिससे हर वक्त झुंझलाकर बादशाहतके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करना चाहते थे; और पहिले भी जब गद्दी नशीनी का मौक़ा हुआ है, उस वक्त टीका दौड़में मालपुरेका ही लूटना मुक़र्रर था, जो बूंदीके नज़्दीक बादशाही ख़ालिसेमें था, और अब रियासत जयपुरके कब्ज़ेमें है. महाराणा अमरसिंह पन्द्रह बीस हज़ार फ़ौज लेकर अपने ननिहाल बूंदी पहुंचे, यक़ीन है कि महाराणाका इरादह मालपुरा लूटनेका हुआ होगा, लेकिन् उनके सलाह कारोंने मौक़ा न देखकर मना किया; इससे वापस चले आये होंगे, और तीर्थका बहाना बनाया; क्योंकि बूंदीकी तरफ़ कोई ऐसा तीर्थ नहीं है, जहां गद्दीपर बैठतेही महाराणा जाते. क़ियाससे मालूम होता है, कि उनके सलाहकारोंने कहा होगा, कि डूंगरपुर, बांसवाड़ा, देवलिया और रामपुरा वगैरहको मातहत करना और सिरोही व ईडरपर कब्ज़ा करना और जिज़्यहके एवज़, जो तीन पर्गने निकल गये, उनको वापस लेना चाहिये; बादशाही मुख़ालफ़तमें इन सब कामोंसे ना उम्मेद होना पड़ेगा. दूसरे यह भी कहा होगा, कि बादशाह आलमगीर ज़ईफ़ है, उसके मरनेपर बादशाहतमें भी बखेड़ा पड़ेगा, याने उनके बेटे आपसमें लड़ेंगे, उस वक्त अपने दिलका गुबार निकालना बिहतर होगा, जैसे कि महाराणा राजसिंहने किया. इस तरहकी बातें सोचकर महाराणा वापस चले आये; और वज़ीरने जो काग़ज़ लिखा है, वह बिल्कुल बादशाही हिदायतके मुवाफ़िक़ होगा; क्योंकि औरंगज़ेब आलमगीर दक्षिणकी लड़ाइयोंमें फंसा हुआ अस्सी वर्षसे भी

ज़ियादह ज़ईफ़ था, और राजपूतानामें फिर आग भड़क उठनेकी उसको फ़िक्र थी; इस लिये अपने वज़ीर असदख़ांसे दोस्ती रखने और ख़ानगीमें हिदायतें करनेके इरादेसे लिखाया होगा.

७ वां काग़ज़, महाराणा अमरसिंहकी अर्ज़ीका मुसव्वदह है, जो ऊपर लिखे, याने छठे नम्बर वज़ीरके काग़ज़के जवाबमें बादशाहके नाम लिखी गई.

नम्बर ८, वज़ीरकी याद्दाश्त है, जो शायद बादशाहको मालूम करनेके लिये लिखी होगी.

काग़ज़ नम्बर ९, वज़ीर असदख़ांका महाराणा अमरसिंहके नाम है, जिसका यह मत्लब है, कि अजमेरके सूबे सय्यद अब्दुल्लाख़ांकी सिफ़ारिश आनेपर सब काम (१) होजावेंगे.

काग़ज़ नम्बर १०, अजमेरके वाक़िअ़निगारकी ख़बर लिखी हुई है, जिससे महाराणाकी ख़्वाहिश झगड़ा करनेकी तरफ़ साबित होती है.

काग़ज़ नम्बर ११, किसी बादशाही सर्दारका अजमेरके सूबेदारके नाम पर्गने बदनौर वग़ैरहकी बाबत है.

काग़ज़ नम्बर १२, महाराणाने किसी शाहज़ादेके नाम ऊपर लिखे पर्गनोंकी बाबत जुझारसिंह वग़ैरहकी शिकायतके बारेमें लिखा है; और चूंडावतों और राठौड़ोंके आपस में जो फ़साद हुआ, उसका ज़िक्र हम ऊपर लिख आये हैं. यह आंबेठका रावत् दूलहसिंह था, जिसके भाइयोंको कर्णसिंहका भतीजा कृष्णसिंहका बेटा राजसिंह पकड़ ले गया था; उसके एवज़ महाराणाके इशारेसे देवगढ़के रावत् द्वारिकादास और मंगरोपके महाराज जशवन्तसिंहने पुर मांडलपर हम्ला करनेकी तय्यारी की, लेकिन् आपसकी शर्तोंमें ग़फ़लत होनेसे देवगढ़ रावत् तो ल्हेसवे गांवमें ठहर गया, और मंगरोप महाराज मए अपने भाइयों पेमसिंह और बख़्तसिंहके पुरके गढ़में जाघुसा. राठौड़ राजसिंहने मुक़ाबला किया, लेकिन् भागकर मांडलमें जा छिपा, वहां भी जशवन्तसिंह आ पहुंचा, और राजसिंहको मांडलसे भी निकाल दिया. इस लड़ाईमें राठौड़ और सीसोदियोंके बहुतसे आदमी मारे गये; लेकिन् फ़त्ह सीसोदियोंकी रही. महाराणाने अलहदह रहकर यह कार्रवाई की, जिसमें बादशाहको जवाब देनेकी जगह रहे.

काग़ज़ नम्बर १३, कोई ख़बरका काग़ज़ मालूम होता है; लाला नन्दराय मुन्शी कोई कायस्थ क़ौमका बादशाही मुलाज़िम होगा, जिसे कुछ रिश्वत न मिली; इससे वह बादशाहको भड़काता था; और नारायणदास कुन्बी

---

(१) काम वही हैं, जो ऊपर लिख चुके हैं, याने डूंगरपुर, बांसवाड़ा, देवलिया वग़ैरहको मातह्त करके सिरोही और ईडरपर क़ब्ज़ा करना वग़ैरह; और जिज़्यहके एवज़, जो पर्गने दिये, वह वापस लेना. ऊपर लिखे हुए हमारे क़ियासको इस काग़ज़का मज़्मून ज़ियादह मज़्बूत करता है.

नन्दरायका दोस्त गुजरातका रहने वाला बादशाही मन्सबदार था, और जोधपुर ख़ालिसह होनेपर उसको जागीर भी मारवाड़में मिली थी, और वह कर्णसिंह, जुझारसिंहकी विकालत भी करता था. पाठक लोगोंको मालूम हो, कि आलमगीरके मुलाज़िमोंका ढंग बहुत ख़राब था, अगर नन्दराय मुन्शीके कहनेसे मेवाड़पर फ़ौज-कशी कीजाती, तो बादशाहका बहुत ख़र्च पड़ता, और नन्दराय मुन्शीकी बेईमानीसे रिश्वत लेनेकी तादाद बहुत कम होगी. अब सोचना चाहिये, कि जिस बादशाहके मुलाज़िम अपने थोड़े मत्लबके लिये मालिकका ज़ियादह नुक्सान करने पर कुछ निगाह न करते हों, वह बादशाहत कब तक ठहर सक्ती है. ऐसे खुद मत्लबी मुलाज़िमोंका नतीजा थोड़े ही दिनोंमें आलमगीरके बाद ज़ुहूरमें आया, और वह बादशाहत तबाह होगई.

काग़ज़ नम्बर १४, वज़ीरके नाम वकील मेवाड़की दर्ख़्वास्त है, इस दर्ख़्वास्तसे यह मत्लब होगा, कि पर्गने ख़ालिसेमें रहनेसे किसी मौक़ेपर फिर मेवाड़में शामिल हो सक्ते हैं; और दूसरेकी जागीर होनेसे उस जागीरदारकी कोशिशके सबब मेवाड़के मत्लबमें ख़लल रहेगा.

१५ वां काग़ज़, वज़ीर असदख़ांका महाराणा अमरसिंहके नाम वकीलोंकी सिफ़ारिश और जमइयत भेजनेकी बाबत है, जिसमें वकील पृथ्वीसिंह और राम-रायका नाम लिखा है; सो पृथ्वीसिंह भींडर महाराज अमरसिंहका बड़ा कुंवर था, जो बादशाह आलमगीरके पास भेजा गया, और वहीं लड़ाइयोंमें मारा गया, जिसका छोटा भाई जैतसिंह भींडरका मालिक बना. रामराय कोई अहल्कार कायस्थ था.

काग़ज़ नम्बर १६ का मत्लब यह है, कि राव गोपालसिंह रामपुरा वालेको पेश्तर महाराणा अमरसिंह अपना मातहत करना चाहते थे, लेकिन् महाराणाका इरादह पूरा न हुआ, और मुख़्तारख़ां वग़ैरह बादशाही मुलाज़िमोंने गोपालसिंहको निकाल कर यह इलाक़ह उसके बेटे रत्नसिंह (इस्लामख़ां) को देदिया. जब राव गोपालसिंह लूट मार करने लगा, तब महाराणा अमरसिंहने ख़ानगी तौरपर उसको मदद दी, और गांव सत्‌खंधाका शक्तावत राजसिंह, जिसका बड़ा बेटा कल्याणसिंह, तो सत्‌खंधामें रहा, जिसकी औलादमें अब पीपल्याके जागीरदार हैं; और दूसरा बेटा कीता, उसको गांव बीनोता जागीरमें मिला, इसके चार बेटे थे, जिनमेंसे बड़ा सूरतसिंह तो बीनोतेका मालिक रहा, और छोटा उदयभान था, जिसको महाराणा अमरसिंहने जुदी जागीर 'मालका' 'बाजणा' वग़ैरह दी, और महाराणाके हुक्मसे वह राव गोपालसिंहको मदद देता था, और इस काग़ज़में राठोड़ोंका भी राव गोपालसिंहको मदद देना लिखा है; ये राठौड़ रतलामके भाइयोंमेंसे होंगे.

१७ वां काग़ज़, किसी सर्दारका या तो किसी बादशाही मुलाज़िमके नाम है, जो उनको हिदायत करे, या खुद राजा भीमसिंहके बेटे सूर्यमल्लके नाम होगा; क्योंकि भीमसिंहके मरने बाद मन्सब और पट्टा सब ज़ब्त हो गया था, और इसी कोशिशके वास्ते राजा भीमसिंहके छोटे बेटे ज़ोरावरसिंह बादशाही हुज़ूरमें विक्रमी १७५६ आश्विन [हिज्री ११११ रबीउस्सानी = ई० १६९९ ऑक्टोबर] में पहुंचे, जिसका हाल उदयपुरके वकील जगरूप और बाघमल्लकी अर्ज़ीमें लिखा है, जो महाराणा अमरसिंहके नाम अख्बारके तौर पर भेजी है. महाराणा अमरसिंहकी कोशिशसे बनेड़ा फिर भीमसिंहके बेटे सूरजमल्लके कब्ज़ेमें होगया; और ईडरका ज़िक्र इस वास्ते है, कि महाराणा अमरसिंह बनेड़ाकी निस्बत ईडरको अपने तअल्लुक़ करना ज़ियादह चाहते थे, जिसका ज़िक्र मौक़ेपर लिखा जावेगा.

१८ वां ख़त, वज़ीर असदख़ांका सूबेदारके नाम महाराणा अमरसिंहके ख़तके जवाबमें, कर्णसिंह और जुझारसिंहको समझादेनेके वास्ते है.

१९ वां काग़ज़, शाहज़ादह शाहआलम बहादुरशाहका महाराणाके नाम है, जिसमें इशारे लिखे हैं, उससे मालूम होता है, कि जिस तरह शाहज़ादह मुहम्मद आज़मने महाराणा जयसिंहके साथ अपने मत्लबके इक़ार किये थे, उसी तरह शाहज़ादह शाह आलमने भी इन महाराणाके साथ किये होंगे; और बादशाही खैरख्वाही रखनेसे भी यही मुराद होगी, कि जब तक मौक़ा आवे, तब तक बादशाही मर्ज़ीके बर्ख़िलाफ़ न हो.

काग़ज़ नम्बर २०, जो वज़ीरके नाम बादशाही लश्करसे बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ फ़ज़ाइलख़ांने लिखा है, उसमें डूंगरपुरके रावलकी ग़लत बयानीका ज़िक्र है.

२१ वां काग़ज़, नव्वाब असदख़ांका फ़ज़ाइलख़ां मुन्शीके नाम डूंगरपुरके मुआ-मलेमें है, जिसका ज़िक्र ऊपर होचुका.

२२ वें काग़ज़में वही डूंगरपुरके मुआमलेका ज़िक्र है, वज़ीरने दोबारह अहमदाबादके सूबहदारसे तहक़ीक़ात कराई है.

२३ वें काग़ज़का मत्लब यह है, कि महाराणा अमरसिंहके गद्दीनशीनीका दस्तूर, जिस तरह कि हमेशह आता था; इस वक़ भी आया; और शाहज़ादहसे मुराद शायद शाह आलम बहादुरशाहसे होगी.

२४ वां काग़ज़, वज़ीरका महाराणाके नाम है, जिसका यह मत्लब है, कि शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको गुजरातकी सूबहदारी मिली थी, उसकी सलाहके बर्ख़िलाफ़ काम न करनेकी हिदायत है. शाहज़ादह महाराणासे, और महाराणा शाहज़ादहसे खुश थे, पहिले महाराणा जयसिंहके वक्तमें इसी शाहज़ादहकी मारिफ़त सुलह हुई थी और शाहज़ादहने अपने मत्लबका इक़ार नामह भी महाराणाके नाम लिखा था, जिसकी

नक़ हम महाराणा जयसिंहके हालमें लिख चुके हैं. इस वास्ते महाराणासे हज़ार सवारकी जमइयतकी नौकरी शाहज़ादहने अपने पास लेनी चाही, कि जिसके मुवाफ़िक़ वज़ीरने महाराणाके नाम लिख भेजा.

२५ वां काग़ज़, जो चीज़ें कि मेवाड़से शाहज़ादह या बादशाहके वास्ते भेजी गईं, उनकी रसीद शाहज़ादहके कारख़ानहकी है.

२६ वां काग़ज़, बांसवाड़ेके रावल अजबसिंहके नाम वज़ीर असदख़ांका उन गांवोंके बारेमें है, जो पर्गनह डांगलमेंसे महाराणा राजसिंहने फ़ौज ख़र्चमें ज़ब्त किये थे.

२७ वें काग़ज़में रामपुराकी शिकायत है, मुसल्मान होजानेपर राजा इस्लामख़ां रामपुराके रावका और 'इस्लामपुर' रामपुरेका नाम रक्खा गया था. रामपुराके राव गोपालसिंहका बेटा रत्नसिंह, मालवेके सूबहदार मुख़्तारख़ांकी मारिफ़त मुसल्मान होकर अपने बापको गादीसे ख़ारिज करके ख़ुद मुख़्तार बन गया था, लेकिन् राव रत्नसिंहने विक्रमी १७६२ फाल्गुन् शुक्ल ६ [हिज्री १११७ ता० ४ ज़िल्क़ाद = ई० १७०६ ता० १८ फ़ेब्रुअरी] को एक अर्ज़ी महाराणाके नाम लिखी, जिसकी नक़्ल हम नीचे लिखते हैं, इससे मालूम होता है, कि रत्नसिंह दिलसे मुसल्मान नहीं हुआ, शायद अपने बापके जीते जी ख़ुद मुख़्तार होनेकी ग़रज़से दीन इस्लाम इख़्तियार कर लिया हो. इसका मुख़्तसर हाल रामपुरेके ज़िक्रमें लिखा जायगा.

राव रत्नसिंहकी अर्ज़ी महाराणा २ अमरसिंहके नाम (१).

सिध श्री उदयपुर सुभ सुथाने श्री महाराजाधिराज महाराणा श्री अमरसिंहजी एतान, चरण कमलांण लिपतं रामपुरा थी सेवग आग्याकारी राव रत्नसिंघ केन, पावां धोक ओधारजो जी अप्र– अठाका समाचार श्री– जीकी कृपा श्री दिवाणजीकी सुनजर प्रताप थी सब भला हैजी, श्री दिवाणजीका सुख समाचार सदा सर्वदा आरोग्य आवे तो सेवग हैं परम संतोक होयजी, अप्र श्री दिवाणजी बडा है, मावीत है, पर्मेश्वर है, मोटा है, इधको कांई लिखांजी, श्री पर्मेश्वरजी श्री दिवाणजी हैं लापां साल सलामत राखे. श्री जीका तेज प्रताप थी श्रीजीका छोरू सऊपरां है जी, श्री दिवाणजी पान कपूर जतनांसूं अरोगवाको हुकम करेगाजी, और म्हे श्री जीका सेवक हां, अठे सारो ही व्योहार श्री दिवाणजीका हुकमको है जी, सेवकसूं कृपा सुनजर ठेठ कुंवर पणासु है, जणी ही माफ़िक़ हुकम रहे जी; काम चाकरी सेवग लायक व्हे, सु अढायांको हुक्म होवो करेजी; और श्री दिवाणजीको परवाणों हाथ अपरें सेवग

(१) पुराने काग़ज़ोंकी जिस क़द्र नक़्लें दर्ज होती हैं, उनकी इबारतमें कुछ रद्द व बदल नहीं किया गया, और इनमें अक्सर राजपूतानाके रिवाजी संवत् लिखे हैं, जिनको आम तौरपर मुताबिक़ कर दिया गया है.

हैं इनायत हुवो थो, सो पुहंतो माथे चढ़ाय लियो, अपराको द्रसन करे सेवग क्रतारथ हुवोजी; परवानामें हुकम लिख्यो थो, थांको घर सदा स्याम धर्मी है, ज्यूंही थे सेवामें चित रापो हो, आ म्हे निश्चय जाणी है. सो श्री दिवाणजी पर्मेश्वर है, हिन्दुस्थानका सूरज है, पर्मेश्वरसुं अंतेह करणकी वात अर सुरका प्रताप आगे जाहिरी वात छिपी ने रहे है; श्री जी अंतर जामी हैं, भाग है, सेवगको श्रीजी यो हुकम कियो, घणी सेवा जाहिरा महनत करे मिनप पावंद हैं, मावीत हैं, रिझावे है, जद नीठ या वात पावे है, सो म्हारे अंतह करण वड़ांकी भगत थी, सो श्री जी जाण यो हुक्म वांच्यो, मैं जाणी आज म्हारो जीवतव धन्य है, जीवतवको फल मैं आज भर पायो. श्रीरामजी श्री दिवाणजी सरपा मावीतांकी उमर दराज करे; अर छोरू है याही वुधि जीवै जव ताईं देसु स्यामधरमो ही मावितांसु रहै; अर मावित सदा सुजाणें रावांको घर सरासर स्याम धरमी है. याही वीनती परमेश्वरांसु रात दिन करूं हूं जी, अर कामके सिर सेवगकी चाकरी पण नजरे आवसी जी; अर हुक्म हुवो दरवारका लोग रामपुरे आया, जणाहें थे जतनां राप्या वाना (यत्न) किया, सो थांसु सुख पाया हां; अव रूपजी पंचोली हें हजूर वुलाया हैं, सो थे रूड़ा माणस साथे दे हजूर मेल्ह जो, रूपजी थी नवाजिस होसी. श्री एकलिंगजीकी आंण लिप्याको हुक्म हुवो, अर ठाकुर हठीसिंहजी हुक्म थी वोरो लिपसी, सु श्री दिवाणजी सलामत, जो कोई दरवारको लोग आयो रह्यो, सु अणीही वास्ते सेवगने रापे वाना किया. श्री दरवारका एही चाकर अर याही जायगा श्री जीकी, अठे रह्यो आदमी श्री जी याद करें, जदे ही सेवामें हाज़िर रहै जी, अर रूपजी ही श्री जीका गुलाम चाहिजे, इस्यो सेवग स्याम धरमी लायक आदमी है जी. हजूर वापरयां श्री दिवाणजी पण हुकम करेंगा, स्याम धरमी गुलाम है जी, अव यो हुक्म पहुंच्यो ठाकुरे हुक्मसु दिलासा लिखी, मैं रूपजी सूं सव हुक्म थो ज्यूं कही, अव फाल्गुण शुदि १० का चाल्या रूपजी हजूर पहुंचसी जी, परवानो सदा मया प्रसाद होवु करेजी. मि० फाल्गुण सुद ६ संवत् १७६२ का व्रपै.

---

२८ वां ख़त, महाराणा अमरसिंहका ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बादशाही बरूशीके नाम है, जिसमें जमइयत भेजने वग़ैरहका हाल है.

२९ वां ख़त, अमीरुल्उमराकी याद्दाश्त है, (याद्दाश्तका लफ़्ज़ इस वास्ते लिखा है, कि बादशाहके नज़्र करनेके लिये मुसव्वदह किया होगा, और फिर इसी मुवाफ़िक़ लिखा गया होगा) जिसमें यह मत्लब है, कि जब विक्रमी १६७१ [हिज्री १०२४ = ई०

१६१५] में बादशाह जहांगीरसे महाराणा अमरसिंहका सुलह नामह हुआ, तब एक हज़ार सवार दक्षिणकी नौकरीमें भेजना ठहरा था, और इन सवारोंकी तन्ख़ाहमें जागीर मिलनेका भी इक़ार था. सो जब कभी जमइयत भेजीगई, तब दक्षिणमें और किसी वक़् दूसरे इलाक़ोंमेंसे जागीर भी मिली; और जब जमइयत भेजनेमें टालाटूली होती, वह जागीर ज़ब्त होजाती थी. इस वक़् जमइयत भेजी, परन्तु महाराणा अमरसिंहकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ सिरोहीका इलाक़ह मिला, जो क़दीमसे देवड़ा चहुवान राजपूतोंकी जागीरमें चला आता था. यह देवड़ा राजपूत कभी मेवाड़के मातह्त और कभी आज़ाद रहते थे, लेकिन् मेवाड़के राजा क़दामतसे इस इलाक़हको मेवाड़के शामिल जानते रहे. इस वक़् महाराणाने देवड़ोंको बिल्कुल निकाल देना चाहा था.

३० वां ख़त, मालवेके सूबहदार शायस्तहख़ां (१) का अली अहमद फ़ौज्दारके नाम सिरोहीकी बाबत है; यह ख़त बे सरिश्तह लिखा गया; क्योंकि सिरोही हमेशहसे अजमेरके सूबेमें रही, अजमेरके सूबहदारकी मारिफ़त कार्रवाई होना चाहिये था. ३१ वां काग़ज़ भी ३० नम्बरके काग़ज़के बाबमें है.

काग़ज़ नम्बर ३२ मेवाड़के किसी वकीलकी दर्ख़्वास्त है, जो सिरोहीका पर्गनह एक किरोड़ दाम आमदनीका मिलजाने और एक हज़ार सवार दक्षिणमें जमइयतके तौर भेज देनेपर दो किरोड़ दाम आमदनीके एवज़ पर्गनह बदनौर, मांडलगढ़ और पुर मिलनेके लिये वज़ीरके नाम यादाश्तके तौर लिखी थी.

३३ वां ख़त, मालवेके सूबहदारका फ़ौज्दारके नाम पर्गनह सिरोहीकी बाबत है.

३४ वां ख़त, ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बख़्शीका महाराणाके नाम जमइयतकी रसीद और पर्गनह मांडलगढ़ वग़ैरहकी कोशिशके बारेमें है.
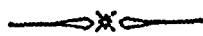
अब हम वह हाल लिखते हैं, जिसके सबब जोधपुरके महाराजा अजीत-सिंह और महाराणा अमरसिंहमें बर्ख़िलाफ़ी और दोस्ती हुई. सिरोहीके देवड़े क़दीमसे राजपूतानहकी बड़ी रियासतोंके सम्बन्धी रहे, जोधपुरके महाराजा जशवन्त-सिंहने भी एक ब्याह सिरोहीमें किया था. जब महाराजा जशवन्तसिंहका इन्ति-क़ाल पिशावरके पास थाने जम्रोदपर हुआ, उस वक़् उनकी दो राणियां हामिला थीं, जिनके लाहौरमें आनेपर दो बेटे पैदा हुए; एक दलथम्बन, दूसरे अजीतसिंह. दलथम्बन का इन्तिक़ाल चार महीनेकी उ़म्रमें होगया; और अजीतसिंहको राठौड़ दुर्गदास

(१) शायस्तहख़ां नूरजहांके भाई आसिफ़ख़ांका बेटा था.

वगैरह जोधपुर लेआये. फिर जोधपुर मुसल्मानोंने छीन लिया, तो कम उम्र अजीत-सिंहको उनके सर्दार लेकर उदयपुर आये, और उदयपुरसे आलमगीरकी सुलह होने बाद अजीतसिंहको राठौड़ सर्दारोंने महाराजा जशवन्तसिंहकी राणी देवड़ीके पास सिरोही भेज दिया, और देवड़ोंने इनको पोशीदह रक्खा. उस ख़िद्मतके बाइस अजीतसिंह सिरोहीके देवड़ोंकी तरफ़दारी ज़ियादह रखते थे. जब सिरोहीका इलाक़ह बादशाह आलमगीरने देवड़ोंसे छीनकर महाराणाको दे दिया, तब अजीतसिंह देवड़ोंकी मदद करने लगे, जिससे महाराणा अमरसिंह अजीतसिंहसे नाराज़ हुए; लेकिन् महाराजा अजीतसिंहका मुल्क छूटा हुआ था, इस सबबसे उन्होंने महाराणासे फिर मेल करना चाहा; क्योंकि बहुत वर्षों तक अजीतसिंह मुल्क लूटकर गुज़र करते रहे. जब विक्रमी १७५५ [हिज्री ११०९ = ई० १६९८] में आलमगीरने डेढ़ (१) हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब और जालौरकी फ़ौज्दारी इनके नाम लिख भेजी, तबसे अजीत-सिंह जालौरमें रहने लगे, लेकिन् आलमगीरकी चालाकियोंसे ग़ाफ़िल नहीं थे.

विक्रमी १७६२ [हिज्री १११७ = ई० १७०६] में नागौरके राव अमरसिंहके बेटे रायसिंहके बेटे राव इन्द्रसिंहका कुंवर मुहकमसिंह, जो बादशाही तरफ़से मेड़तेका फ़ौज्दार था, मौक़ा पाकर दो हज़ार सवारोंके साथ जालौरपर चढ़ आया, कि महाराजा अजीतसिंहको गिरिफ़्तार करके बादशाहके पास भेज देवे. अजीतसिंहके राजपूतोंमेंसे चांपावत लखधीरका बेटा उदयसिंह कुंवर मुहकमसिंहसे मिल गया; लेकिन् मुहकमसिंहके आनेकी ख़बर धांधल उदयकरणने खींवसरसे लिख भेजी थी, जिससे वह होश्यार होकर जालौरसे निकल गये. चांपावत उदयसिंहने अजीतसिंहको ठहरानेकी बहुत कोशिश की, लेकिन् मुहकमसिंहसे उसकी मिलावट होना ज़ाहिर हो गया था, जिससे अजीतसिंह उसके दावमें नहीं आये, और निकल गये; उनके चन्द आदमी, जो पीछे रह गये थे, मुहकमसिंहसे मुक़ाबला करके मारे गये. अजीतसिंहने बड़ी जमइयत इकट्ठी करली, तब कुंवर मुहकमसिंह मए उदयसिंह चांपावतके क़िला जालौर छोड़ भागे, अजीतसिंह उनके पीछे लगे, धूंधाड़े गांवमें जा पहुंचे, और वहां लड़ाई हुई, जिसमें अजीतसिंहकी फ़त्ह हुई, और मुहकमसिंहके तीस आदमी जानसे मारे गये, और

---

(१) मारवाड़की तवारीख़में डेढ़ हज़ारी मन्सब मिलना लिखा है. और मिराते अहमदीमें मन्सब फ़ौज्दारीका लफ़्ज़ लिखा है, जिसकी निस्बत ख़याल होता है, कि ग़लतीसे दो हज़ारीका लफ़्ज़ फ़ौज्दारी होगया है, और शायद फ़ौज्दारीसे ओहदह और इख़्तियार मुराद हो,

पचास घायल हुए. अजीतसिंहके सिर्फ़ तीन आदमी मरे, और सात घायल हुए. इसपर भी अजीतसिंहने मुह्कमसिंहका पीछा नहीं छोड़ा, तब बादशाही मुलाज़िम जोधपुरका फ़ौज्दार जाफ़रबेग और क़ाज़ी मुहम्मद मुक़ीम वक़ाया नवीस दोनों बीचमें आये, और बड़ी फ़हमाइशके साथ अजीतसिंहको वापस जालौर रवानह किया.

महाराजा अजीतसिंहको यह शक ज़ियादह हुआ, कि मुह्कमसिंह बादशाह आलमगीरके इशारेसे आया था. दुर्गदास राठौड़को पाटनकी फ़ौज्दारी मिली थी, उसपर भी शाहज़ादह मुहम्मद आज़मने धोखेसे एक दम हम्ला किया; इन बातोंसे अजीतसिंहको यक़ीन हो गया, कि बादशाह हमको ज़रूर मारेगा, या पकड़ेगा; तब महाराणा अमरसिंहसे सुलह करनेकी कोशिश की. उस वक़्तके चन्द काग़ज़ातकी नक़्ल हम नीचे लिखते हैं:-

१ महाराज अजीतसिंहका ख़त समीनाखेड़ाके
गुसाईं हरनाथगिरके चेले नीलकंठ
गिरके नाम (१).

श्री रामोजयति. श्री हींगोल सत्य.

प्रसादातु.

श्री हींगोल्ल. सही.

सिधि श्री गुशाईं श्री नीलकंठगीरजी सूं महाराजा धिराज महाराजा श्री अजीतसिंघजीरो नीमो नारायण वाँचजो, अठारा समाचार श्री जीरा प्रताप सूं भला छे, थारा देजो. तथा गुसाईं म्हारे पूजनीक छो सही. तथा अठै श्री जीरा प्रतापसूं फ़ते हुई, गुसाईं सुण बहुत खुस्याली कीधी, सो गुसाईं सारी बातां जाणियां छौ स्ही. तथा गुसाईं अठीरी उठीरी माहोमाह मेल करणरी विचारी, ने भगवान धरणी धरनू मेलिया था, उठे आदमी बुलाया था, तीणरी अठै ढील एक सबब हुई, सो गुसाईं षीम्या कीजो, ढीलरी हकीकत भगवान धरणीधर जाहीर करसी. अठासूं

(१) महाराणा अमरसिंह हरनाथगिरकी करामातके मोतक़िद थे, और रियासती मुआमलातमें नीलकंठगिरकी ज़ियादह दस्तअन्दाज़ी रही, जिससे उन्होंने क़रीब पन्द्रह हज़ारके आमदनीकी जागीर भी हासिल की, जो अभी तक उनकी औलाद याने मुरीदोंके क़ब्ज़ेमें है.

गुसाईंरा इसारा माफ़क सारो कामकर त्रवाड़ी सुषदेव नू मेलीया छै, सो थानू कहसी, काम ठीक कीजो, सको थांरा सेवग छै; गुसाईं छो, काम ठीककर बेगी सीख देजो, घणो कासुं लिखां, सारी हक़ीक़त बिगतवार रूक़ामे लीखीछै, वाचीयां जाणस्यो, रुक्का जाहीर कठैही मत करो. त्रवाड़ी भगवान धरणीधर सारी जाहीर करसी सही. संवत् १७६२ रा चैत्र सुदी ११ [विक्रमी १७६३ = हिज्री १११७ ता० ९ ज़िल्हिज = ई० १७०६ ता० २५ मार्च] बुध मकाम जालंधर गढ़.

लीषतं हाथसुं

ऊपर लिखे काग़ज़में दो काग़ज़ और हैं, जिनकी नक़्ल यह है:-

तथा रुक्कारी आ हकीकत छे, इतरा दीन आदमी इण सबब बैठा रह्या, जो म्हारे ने उदयसिंघरे चित षंत पड़ी ने तेजसिंहनु षीजमत फुरमाई, तिण-कर म्हेनु राठौड़ मुकन्ददास बारबार लिखतो रह्यो, जो आपकने दीवाणरा आदमी गुसाईंरी मारफ़त आया छै, सो आपरे मेलरी वात करणी होय सबली तो म्हारी मारफ़त बात करे म्हे दिवाण कने गया था, बात वीगत सारी करी, म्हे रुक्को एक दीवाणरे हाथ अषरे लिखायो छै; जद मारवाड़नु काम पड़े, ने मुकन्ददास कहे, जठीनु रुपीया लाष एक असवार हज़ार पांच अरावो मदत देस, इण भांत म्हेनु कहावतो रह्यो; इण भांतरो मुदो म्हारे हाथ छे, पंचोली दमोदरदासरी मारफ़त महारी बात छे. आप लिखसो गुसाईंरी मारफ़त तो पीण दीवाण म्हानु पुछे, ने पछे आपनु लिषसी, तिणसुं आप म्हारीज हाथ वात करे ज्यु रुक्कारो मुदो आपरी तरफ़ रजू ल्यावें, गुसाईंरा आदमीयांनु सीष देजो, ए आपर अतीत छे, मोटेरो काम मोटे हीज वेत हुवा सपरा पहलां तो हुं अबोलो बैठो थो हीमैं आप रा० तेजसिंघ नु काम फुरमायो छे, तिणसुं म्हारी तेजसिंघरी वात एक छै. म्हे आपरी चाकरीनु छा, तरे म्हे इणनु लिषीयो, थे हजूर आवो, ने म्हानु रुक्को आपीयां दिपावो, सो हजुर तो नायो, इतरामें धुम धाम हुई. म्हे फतेकर नागौर ऊपर चलाया, जोधपुररो सूबेदार आय भेलो हुवो; मुकन्ददास ही आय हाजर हुवो, सुवादार रा कयासुं म्हे जालौर आया, मुकन्ददास पीण म्हां साथे आया, अठे ही म्हे वात विगत कीधी, सो रुक्को तो म्हा नु न दीपायो, और कागळ दिवाणरा दोय चार दीपाया इणरी वात म्हारे कुछ तरेदारसी नीजर आई. म्हे इहनु पूछीयो हीमैं कासुं कीयो चाहीजे. तरे इण अरज करी, आदमी मौकुप राषो. हूं म्हारो आदमी एक मेलु छूं, जैसो आप काम चाहा सो तैसो अठे वैठा कागळसु करीस तरे म्हे विचारीयो, इणरो कह्यो न करे छे तो कामरो पतरो करे छे, और सारी वात मौकूफ राषने परगट तो इणरे सीर उठेरो काम राषयो छे; गोसासुं (पोशीदा) त्रवाड़ी सुषदेवनु थाकने म्हेलीयोछे, त्रि० सुषदेव भगवान धरणी धर सारी

हकीकत कहसी; उठे त्रि० सुषदेव जाहर होण पावे नहीं, थांरी रजावंधीरी पातर मेलीयो छे, मुकंददासरा जासूस उठे दमोदरदासरी मारफत घणा छे, सो उठे त्रिवाड़ी जाहर हुवो तो अठे काममें षलचो पड़सी. दीवाण म्हासु बात करे, सु उठे जाहर न करे, ने मुकन्ददासनु पुछे पीण नहीं, ने लिखे पीण नहीं; इणनु बात पूछीयां रस न छे. थे स्याणा छो, इतरामें घणो समझजो. कागळ (काग़ज़) पीण म्हारे हाथसुं लिपने मेलीयो छे थांरी रजावन्दीरे लीये, सो कागळ थांरे हाथ रापने दीवाणरो कागळ दीवाण पहिली लीष त्रिवाड़ीरे हवाले करे, तठा पछे म्हारो कागळ दिवाणरे हवाले करे जो, म्हे पीण भली भांतसु लीपयो छे, ने उणरो तो लीपावणो गुसाईंरे हाथ छे, म्हारी पातर नीसा छे; गुसाईं बीच आया छो, भली ईंज करसो; तिण वात अठीरो रूड़ो दीसे त्यूं करजो, म्हारेने उणरे मेलनु घणा लोक करावणनु जस लेणनु पपता था; इण वातरो इकत्यार थांरो रापीयो छे, थांरे सीर छे, थांरो कयो कवूल कीयो छे, म्हानु दीवाण राजी करसी, तो एक भले काम सीर म्हे घणे साथसुं मुढा आगे हुसां, म्हारी ने इणरी वात मेली छे. संवत् १७६२ रा चेत सुद ११ बुधे [विक्रमी १७६३ = हिज्री १११७ ता० ९ ज़िल्हिज ई० १७०६ ता० २५ मार्च] मुकाम जालंधर.

इसी काग़ज़के नीचे यह मज़्मून हाथ अक्षरोंका लिखा मालूम होता है.

तथा गुसाईं थां सरीपा समझणा ने दीवाण दपणीयांनु बुलाया, असी अलवद (अफ़्वाह) कुगलां (खोटी बातें) मेली, जे थे तो म्हानू कदेही लीपीयो नहीं, सो जाणीजे, म्हे सुणियो कुछ मसलत कीधी, सो कासुं मसलत कीधी, कासु ठेराव कीयो, कुण कुण था, सो लीप जो. तथा म्हे सुणां छां, आ बात पातसाह सुण अठी आवणो कीयो छे, सो अठी आयो इण भापरानुं भूंडोछे, सो औरंगजेव छे, तीणसुं इण वातरो इलाज कीजो, पछेजु सको (सब) री पातर छे, भली जाणो सो कीजो रही.

तीजी टीप. श्री हीगोल.

तथा गुसाई चीठी दीवाणनु मेलीछे, गुसाई काम सीध वेगो कीजो, ने म्हासुं सेवा होसी तीणरी कोताही नहीं होवे, सो हकीकत भगवान धरणीधर केसी. वे० सु० ११ सुक्रे [विक्रमी १७६३ = हिज्री १११८ ता० ९ मुहर्रम = ई० १७०६ ता० २४ एप्रिल].

नीचे लिखे काग़ज़में किसीका नाम नहीं है, लेकिन् मालूम होता है, कि यह काग़ज़ भंडारी विठ्ठलदासने किसीके नाम लिखा है, क्यों कि इस काग़ज़के हुरूफ़ उक्त भंडारीके ख़तसे मिलते हैं, जिसके और भी कई काग़ज़ मौजूद हैं. विठ्ठलदास महाराजा अजीतसिंहका बड़ा मोतवर अहल्कार था.

कागज़की नक़्ल.

! श्रं ! हजुर सुं राजाजी नु दिलासा आई, जो थे पातर ज़मासुं सावक दस्तूर जालौर बन्दोवस्त सु पवरदार थका वैठा रहजो, ने कुंवर थासु विना हुक्म कीवी छे, तिणरो नतीजो ओलंभारो पावसी; सो हजुर (१) सु दिलासा आवे, तठा सुधां म्हानु मिरजेजी अठे रापीया था, सो दिलासा तो आई, हमें राजाजी कहै छे, थे म्हा कनेहीज रहणो मुकर्रिर करो, सो श्री जी जिकुंही हुकम भेजैं सो, म्हानु कवूल छेजी, हुक्म भेजावजो जी. श्री जी पास दसपतां परवानामें लिप्यो थो, जु एक आदमी मातवर हजुर भेजजो, सो इतरा दिन ढील हुई, सो जालोरारा आवणारी सवव हुई, हमें चुरा देवदतनु श्री जीरी पीदमतमें भेजियो छे, सो अठारी हकीकत सारी हजुरमें मालूम करसी, और चीठी १ श्री जीरी हजुर राजाजी भेजी छे, सो हजुर पहुंचसी जी. वाहुड़ता परवाना महरवानगीरा हमेसा इनायत हुवे. वेसाष वद १४ (२) सवंत् १७६२ रा [विक्रमी १७६३ = हि० १११७ ता० २८ ज़िल्हिज = ई० १७०६ ता० १२ एप्रिल].

जब विक्रमी १७६३ फाल्गुन् कृष्ण १४ [हिज्री १११८ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १७०७ ता० ३ मार्च] शुक्रवार को बादशाह आलमगीरका देहान्त होगया, तो यह सुनकर महाराणा २ अमरसिंहने अपनी फ़ौज सुधारी, और महाराजा अजीतसिंहको जोधपुरपर क़ब्ज़ह करनेका इशारा किया. महाराजाने विक्रमी १७६३ चैत्र कृष्ण १३ [हिज्री १११८ ता० २७ ज़िल्हिज = ई० १७०७ ता० १ एप्रिल] को जोधपुरपर क़ब्ज़ा करलिया, और महाराणाने भी जितने पर्गने पुर मांडल, वदनौर और मांडलगढ़ वग़ैरह निकल गये थे, वे सब ले लिये. बादशाहतका ढंग विगड़ने लगा था, जिसका हाल आगे लिखेंगे. जब बड़े शाहज़ादह मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म और आज़मसे लड़ाई हुई, आज़म मारा गया, और मुअ़ज़्ज़मने फ़त्ह पाकर बादशाही ताज अपने सिरपर रख शाह आ़लम बहादुर शाहके लक़बसे मश्हूर हुआ. आंवेरके महाराजा जयसिंह आज़मकी फ़ौजमें और उनके छोटे भाई विजयसिंह बहादुरशाहके साथ थे; इसलिये बादशाहने जयसिंहसे आंबेर छीनकर विजयसिंहको देने और जोधपुरसे महाराजा अजीतसिंहको निकाल बाहर करनेके लिये विक्रमी १७६४ कार्तिक शु० [हि० १११९ शअ़्बान = ई० १७०७

(१) हुज़ूरसे मत्लब बादशाह आलमगीरसे है.

(२) यह कागज़ गुसाईं नीलकंठगिरके नामके कागज़ोंमें, जो तीसरी टीप है, उससे पहिलेका लिखा हुआ है, लेकिन् पहिलेके तीनों कागज़ एकके नाम और एक मत्लबके होनेसे तीनों एक जगह दर्ज कर दिये गये, और इसको पीछे रक्खा .

नोवेम्बर] में आगरेसे कूच करके आंबेर और जोधपुरको ख़ालिसे किया; और फिर महाराजा जयसिंह व अजीतसिंह को दिहलीसे साथ लेकर इसी वर्षके विक्रमी चैत्र कृष्ण [हि० ज़िल्हिज = ई० १७०८ मार्च] में दक्षिणकी तरफ़ शाहज़ादह काम्बख़्शसे मुक़ाबला करनेको रवानह हुआ. दोनों महाराजा अपनी अपनी रियासतोंके मिलनेकी उम्मेदमें नर्मदा तक साथ रहे, परन्तु बादशाहकी मर्ज़ी बर्ख़िलाफ़ देखकर दोनों राजा राठौड़ दुर्गदास समेत बग़ैर रुख़्सत उदयपुरकी तरफ़ चले आये.

उस वक्त एक काग़ज़ महाराजा जयसिंहने महाराणा अमरसिंहके नाम लिखा था, जिसकी नक्ल नीचे लिखते हैं:-

श्री रामो जयति.

श्री सीतारामजी.

सिधश्री महाराजा धिराज माहाराणा श्री अमरसिंघजी जोग्य, लिपितं जेसींघ केन जुहार वंच्या अप्र- एठाका समाचार की कृपासों भला छै, आपका सदा भला चाहीजे जी; अप्र- आप बड़ाछो, ठाकुर छो, अठे घोड़ा रजपूत छै, सो आपका कामने छै, अपरंच- आपको काम्दार पंचोली बिहारीदास अठे आयो छो, हकीकति सगली कही; सो म्हांके तो आपको ही फुरमायो प्रमाण छै, सो जे ऊपरि महाराजा अजीतसिंघजी अर हुं अर दुर्गदासजी १३ की दिन लसकरसो जुदो होय आपकी हजूरि आवांछां जी. (इस काग़ज़में संवत् तिथि नहीं है).

नर्मदासे आकर बड़ी सादड़ीमें दोनों राजाओंका क़ियाम हुआ, उस वक्त जोधपुरके राठौड़ मुकुन्ददास और जयपुरके चारण देवीदान गाडणने पंचोली बिहारीदासके नाम उदयपुरको काग़ज़ लिखे थे, जिनकी नक्ल नीचे लिखते हैं:-

राठौड़ मुकुन्ददास का काग़ज़ पंचोली बिहारीदासके नाम.

श्रीरामजी.

पं। श्रीबिहारीजी थी राज श्री मुकन्ददासजी रो जुहार बांचजो, तथा जेठ वद २ सोमवाररे दीन श्री महाराजाजी रा ने सवाई जैसींघजी, ठाकुर दुर्गदासजी

रा डेरा सादड़ी हुवा छै, हमै सारो साथ रोज २ मैं उदेपुर श्री दीवाणजी थी प्राघा जोधपुर पधारसी (१) संवत १७६४ जेठ विद २ [वि० १७६५ = ता० १६ सफ़र = ई० १७०८ ता० ८ मई] सौमे.

दूसरा कागज़ देईदानका पंचोली
विहारीदासके नाम.

श्रीरामजी.

श्री दीवाणजी सूं सलाम करी मुजरो मालीम कीजो जी.

सीधि श्री राजी श्री पंचोली जी श्री बीहारीदासजी जोगी, लीषतं देईदान केनी जुहार बांची जो, अप्रंची सादड़ीरे डेरै बाघमलजी वा बीठलदासजी आया, राजी डेरो वा रावटी बीछावणा मेल्या; सु आणी पहुंता, और या अरज पहुंचाई, जु आजी मुकाम कीजे; सु तीज सोमवारको तो मुकाम हुवो, अर बुधवारके दीनी वुटोलाइ डेरा होइला, और पांचे बिसपती वार वुठे पधारेला जी. और श्री दीवाणजी को षत आयो, सु श्री महाराजी वौहौत राजी हुवा; सु षतको जुवाव जोड़ी पाछै ही आवे छै जी. मिती जेठ वदी ७, [वि० १७६५ = हि० ११२० ता० २१ सफ़र = ई० १७०८ ता० १३ मई].

अब हम इन दोनों राजाओंके उदयपुर आनेका हाल, पुरोहित पद्मनाथके यहां से, जो एक उसी समयका लिखा हुआ कागज़ मिला, उससे और उदयपुरके पुराने जुज़दानों में, जो उसी वक़्की तस्वीरोंपर लिखा हुआ मिला, व कारख़ानहजातकी वहियोंसे नक़्ल करके खुलासहके तौरपर नीचे लिखते हैं:—

महाराणा अमरसिंह विक्रमी १७६५ ज्येष्ठ कृष्ण ५ बृहस्पति वार [हिज्री ११२० ता० १९ सफ़र = ई० १७०८ ता० ११ मई] को उदयपुरसे सवार होकर उदयसागर तालावके रूण (भीतरी किनारा) में रात रहे, दूसरे दिन सवारीके लोगोंको तो देवारीके रास्ते भेजा, और महाराणा उदयसागरकी पालपर

---

(१) मेवाड़ और जोधपुरमें श्रावण कृष्ण प्रतिपदासे संवत् बदलता है, और उसी हिसाबसे कागज़में संवत् १७६४ लिखा गया, लेकिन चैत्री हिसाबसे वि० १७६५ समझना चाहिये.

होकर गाडवा (१) गांवके पास पहुंचे; उधरसे महाराजा अजीतसिंह, महाराजा जयसिंह, दुर्गदास और मुकुन्ददास आये. महाराणा पेश्तर अजीतसिंहसे फिर जयसिंहसे, और उसके बाद दुर्गदास व मुकुन्ददाससे मिले; दोनों राजाओंने चंवर और छांहगी (सायःगीर) नहीं रक्खा था, महाराणाने अपनी तरफ़से दिया. उदयसागरकी पालपर गोठ (दावत) तय्यार थी सो भोजन करके महाराणा सिफ़ेद घोड़े (जिसका नाम मन मान प्यारा था) पर सवार हुए उनके दाहिनी तरफ़ महाराजा अजीतसिंह, बांई ओर महाराजा जयसिंह, और पीछे ठाकुर दुर्गदास थे, इस तरह देबारीके रास्तेसे उदयपुरके महलोंमें दाख़िल हुए. दोनों राजा शिवप्रसन्न अमरविलास में, जिसको अब बाड़ी महल कहते हैं सोये, और महाराणाने सूरज चौपाड़में आराम किया.

दूसरे दिन सुब्ह ही महाराजा अजीतसिंहका डेरा कृष्णविलास (२) में और महाराजा जयसिंहका सर्व ऋतु विलास में हुआ. फ़ज्रमें दोनों राजा महाराज गजसिंह (३) की हवेली गये, शामके वक्त महलोंके नीचे नाहरोंके दरीख़ाने में दर्बार हुआ. महाराणा बड़ी पोल तक पेश्वाई करके दोनों राजाओंको ले आये; तीन गादियां तय्यार थीं- दाहिनी तरफ़ (४) महाराजा अजीतसिंह, बाईंपर महाराजा जयसिंह और बीच की गद्दीपर महाराणा बैठे. ठाकुर दुर्गदास महाराजा अजीतसिंहके साम्हने गद्दीके कोनेपर, ठाकुर मुकुन्ददास चांपावत महाराजाकी गद्दीके नीचे तकियाके बराबर बैठे. महाराणाके मातह्त सर्दार गद्दीके साम्हने दाहिनी बाईं लैनमें, और दोनों राजाओंके अपने अपने मालिकोंके साम्हने दहिने बाएं बैठे. इसी तरह पहिले दिनके मुवाफ़िक़ शामको उसी जगह दर्बार

---

(१) तस्वीरपर तो गाडवा गांवके इधर तक जाना कायस्थ लक्ष्मण सही वालेने लिखा है, जो उस वक्त मौजूद था; और पुरोहित पद्मनाथके यहांकी हक़ीक़तमें उदयसागरकी पालके खुरे तक पेश्वाईको जाना लिखा है.

(२) यहांकी अगली इमारत तो गिर गई, और अब वहांपर जेलख़ाना बनाया गया है.

(३) यह महाराज, महाराणा जयसिंहके छोटे भाई और अमरसिंहके काका थे, जिनकी बेटीसे विक्रमी १७५३ [हिज्री ११०७ = ई० १६९६] में महाराजा अजीतसिंहका व्याह हुआ था.

(४) तस्वीरपर तो इसी तरह लिखा है, लेकिन् पुरोहित पद्मनाथके यहांकी हक़ीक़तमें महाराजा जयसिंहका दाहिनी तरफ़ बैठना तहरीर है.
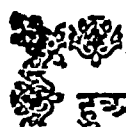
हुआ, और दूसरे दिन दोनों राजाओंके लिये फ़ौज समेत गोठ तय्यार कीगई; लेकिन् उसी दिन महाराणाके काका बहादुरसिंहके मरनेकी ख़बर मिली, जिससे वह खाना घोड़ोंको खिला दिया गया.

महाराणा, महाराजा अजीतसिंहके डेरेपर गये, उन्होंने दस्तूरके मुवाफ़िक़ एक हाथी, दो घोड़े, एक जड़ाऊ कटारी, एक बर्छी और एक मीनाके दस्तेकी तलवार महाराणाको दी. फिर महाराणा महाराजा जयसिंहके डेरेपर गये, उन्होंने भी महाराजा अजीतसिंहके मुवाफ़िक़ चीज़ें देना चाहा, लेकिन् महाराणाने नहीं लिया, क्यौंकि उन्होंने महाराजा जयसिंहके साथ अपनी बेटीकी शादी करना विचारा था; इस लिये महाराणाने एक हाथी, और दो घोड़े उक्त महाराजाको टीकेमें दिये. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण २ सोमवार [हिज्री ता० १६ रबीउल् अव्वल = ई० ता० ६ जून] को महाराणाकी कन्या चन्द्रकुंवर बाई (१) का ब्याह आंबेरके महाराजा जयसिंहके साथ हो गया. दो हाथी चांदीके सामान समेत, ४५ घोड़े, एक रथ, दो ख़र्सल, गहना और सोने चांदीके बर्तनोंके सिवाय बीस हज़ार रुपये नक्द और आठ सौ सिरोपाव मर्दाने और ६१६ ज़नाने दिये; बाईको गहना, कपड़ा, दास, दासी वग़ैरह बहुत कुछ दहेज़में दिया.

इस शादीका नतीजा अच्छा होना चाहिये था, क्यौंकि संबंध होनेसे इत्तिफ़ाक़की तरक़ी होती है, लेकिन् यह राजपूतानहके लिये बर्बादीका बीज बोया गया; क्यौंकि इस वक़ एक अ़ह्दनामह तीनों राजाओंमें लिखा गया, कि उदयपुरके राजाओंकी बेटी अव्वल नम्बर और पहिली जितनी राणियां हों, वे उससे छोटी समझी जावें. दूसरे- उदयपुरके राजाओंकी बेटीका फ़र्ज़न्द युवराज हो; और जो दूसरी राणियोंसे बड़े बेटे हों, वे सब छोटे गिने जावें. तीसरे- उस राज कुमारी से बेटी पैदा हो, तो उसकी शादी मुसल्मानोंके साथ नहीं कीजावे. दूसरी क़लम राजपूतानहके रवाजके बर्ख़िलाफ़ थी, लेकिन् उदयपुरकी राज कुमारीके साथ विवाह करनेमें अपनी इज़्ज़त जानते थे, और बहादुरशाहकी नाराज़गीके सबब मदद मिलनेकी उम्मेदपर यह इक़ारनामह साबित किया गया, जिसका अंजाम यह हुआ, कि

---

(१) जयपुरकी तवारीख़ तथा वंशभास्कर नाम ग्रन्थ (बूंदीके इतिहास कवि सूरजमल्लके बनाए हुए) में इस शादीके सिवाय महाराणाकी बहिनका विवाह महाराजा अजीतसिंहसे होना लिखा है, और मश्हूर भी है, कि दोनों राजाओंकी शादियां हुईं; लेकिन् उस वक़्के काग़ज़ों और जोधपुरकी तवारीख़के देखनेसे यह नहीं पाया जाता. महाराजा अजीतसिंहकी शादी पहिले उदय-कुंवर बाईके साथ हुई थी, जिसको लोगोंने एक साथ होना ख़याल कर लिया है.

मरहटे राजपूतानामें दख़ील हो गये; जिनको पहिले इन्हीं राजाओंके डरसे नर्मदा उतरना कठिन था. उदयपुर और जयपुर दोनों रियासतें बिल्कुल तबाह होगई.

अब हमेशह सलाह होने लगी, कि मुसल्मानोंको हिन्दुस्तानसे निकालकर महाराणाको बादशाह बनाया जावे; लेकिन् यह राय महाराजा अजीतसिंहको ना पसन्द हुई, तब तीनों रियासतोंसे तीन चारण बुलाये गये, और उनकी रायपर फ़ैसलह होना क़रार पाया. जोधपुरकी तरफ़से द्वारिकादास दधिवाड़िया, उदयपुरसे ईश्वरदास भादा और आंबेरसे देवीदान गाडण थे; इन लोगोंकी राय लीगई, तो द्वारिकादासने एक दोहा मारवाड़ी भाषामें कहा–

दोहा.

व्रज देशां चन्दण वड़ां मेरु पहाड़ां मौड़ ॥
गरुड़ खगां लंका गढां राज कुळां राठौड़ ॥ १ ॥

इसका यह मत्लब है, कि देशोंमें व्रज, दरख़्तोंमें चन्दन, पहाड़ोंमें सुमेरु, पक्षियोंमें गरुड़, क़िलोंमें लंका और राजपूतोंमें राठौड़ अव्वल दरजेके हैं; इस लिये हिन्दुस्तानकी बादशाहतपर महाराजा अजीतसिंहका हक़ है. यह सुनकर ईश्वरदासने दोहा कहा–

दोहा.

व्रज बसावण गिर नख धरण चन्दण दियण सुगंध ॥
गरुड़ चढ़ण लंका लियण रघुवंशी राजन्द ॥ १ ॥

इसका यह अर्थ है, कि व्रजको आबाद करने वाले, पर्वतको नखपर उठा लेने वाले, चन्दनको ख़ुशबू देने वाले, गरुड़पर सवार होने वाले, लंकाको जीतने वाले रघुवंशी राजा हैं. इस लिये महाराणा ही हिन्दुस्तानके बादशाह होने चाहियें.

इस आपसके झगड़ेको देखकर महाराणाने कहा, कि हम हिन्दुस्तानकी बादशाहत नहीं चाहते; क्यौं कि अभी तो सब राजा मुसल्मानोंके दर्बारमें खड़े रहकर बहुतसी नागवार बातें सहते हैं, और हमारी ताबेदारी करनेसे भी बुरा मानकर फ़साद करेंगे, तब वेही मुसल्मान विलायतसे आकर फिर हिन्दुस्तानके मालिक बन जावेंगे; हम अपनी इस तरहकी फ़ज़ीहत करानी नहीं चाहते. इस लिये यह ठीक है, कि दोनों राजा अपनी अपनी रियासतपर क़ब्ज़ा कर लेवें, हम दिलसे दोनोंके मददगार हैं.

इसी अर्सेमें शाह आलम बहादुर शाहके बड़े शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदार शाहका एक निशान महाराणा अमरसिंहके नाम आया; जिसका तर्जमह मए नक़्ल लिखा जाता है:–

निशान (१) शाहज़ादह जहांदार शाह, वलद बहादुरशाह बादशाहका.

विस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम.

मुहरकी नक़ल.

अल्लाह
अक्बर
जहांदार शाह
बहादुर, इब्न सय्यद
अबुलनस्र कुतुबुद्दीन मुहम्मद
मुअ़ज़्ज़म शाह आलम बहादुर
बादशाह गाज़ी
सन् अहद ११११९.

तुग़ाकी नक़ल.

निशान आ़लीशान
शाहज़ादह जहांदारशाह
बहादुर, इब्न शाह आ़लम
बहादुर बादशाह ग़ाज़ी.
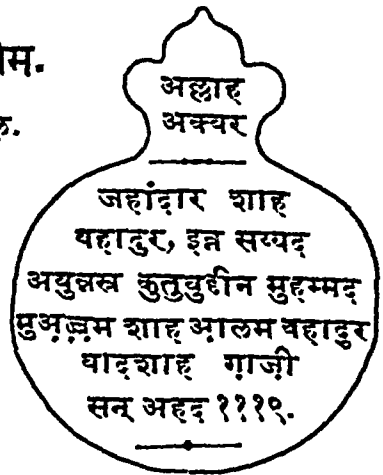
नेक नियत ख़ैरख़्वाहोंका बड़ा, नेकी चाहने वाले दोस्तोंका उ़म्दह, वफ़ादार ख़ान्दानमेंका बुज़ुर्ग, मर्ज़ी ढूंढने वाले घरानेका यादगार, बादशाही ताबेदारोंका

---

(१) نشان باد شاهزادهٔ جهاندار شاه بهادر - بنام رانا امرسنگه - ۲ *

بسم الله الرحمن الرحيم
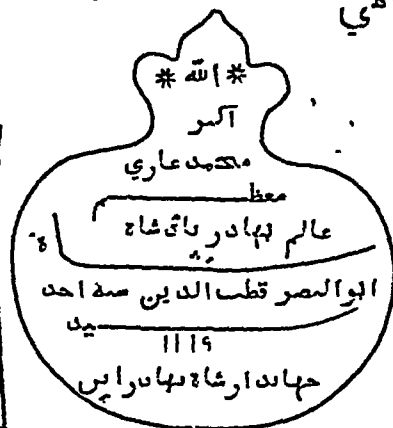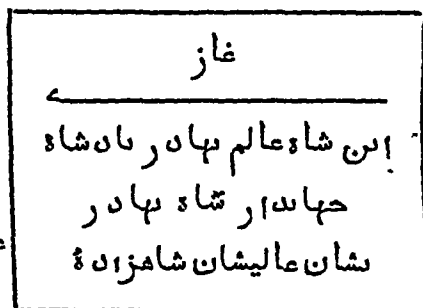
بادشاهي

نقل طغره

غاز

ابن شاه عالم بهادر بادشاه
جهاندار شاه بهادر
نشان عاليشان شاهزادهٔ

عالي متعالي شامي

نقل مهر

* الله *
اكبر
محمد عاري
معظم
عالم بهادر بادشاه
ابو النصر قطب الدين ... احد
...يد
۱۱۱۹
جهاندار شاه بهادر ابن

زبدهٔ نيكخواهان عقيدت كيش ، خلاصهٔ مخلصان خيرانديش ،
نتيجهٔ دودمان وفاخوئي ، بقيهٔ خاندان رضاجوئي ، سلالهٔ دولت
منشان ، سزاوار الطاف واحسان ، مطيع الاسلام رانا امرسنگه ،

بعنايات بے نهايات مستظهر بوده بداند - درينولا چون ناحيت سنگه وجے سنگه و درک داس
جاگيردار متصديان عظام تنخواه نداده‌اند ، بنابر آن از راه پريشاني برخواسته رفته‌اند ؛ بايد كه اونها را نوكر

बिह्तर, बादशाही मिह्बानियों और इह्सानके लाइक़, मुसल्मानी बादशाहतका फ़र्मांबर्दार, राणा अमरसिंह, बहुतसी बादशाही मिह्र्बानियोंसे मज्बूत दिल होकर जाने- जो कि इन दिनोंमें अजीतसिंह, जयसिंह और दुर्गदासको बादशाही अह्ल्कारोंने जागीर और तन्ख्वाह नहीं दी, इस लिये वह तक्लीफ़के सबब उठ भागे हैं. उस खैरख्वाहको चाहिये, कि उन लोगोंको अपने पास नौकर न रक्खे, और बादशाही मिह्र्बानियोंसे तसल्ली देकर तीनोंकी अर्ज़ियां हुजूरमें भेज दे, कि उस उम्दह राजाकी मारिफ़त हम दर्मियानमें आकर इन लोगोंके कुसूर मुआफ़ करा देंगे; और जागीरोंकी सनद हुजूरसे हासिल करके हम उस साफ़ दिल दोस्तके पास भेज देंगे, ता कि ये लोग कुछ अर्से अपने वतनमें रहकर तक्लीफ़से आराम पावें; इसके बाद हम हुजूरमें तलब करके अपनी मारिफ़त मुजरा करा देंगे. इस मुआमलेमें जहां तक हो सके, ज़ियादह ताकीद जाने, तसल्लीके साथ हज़रत बादशाहकी मिह्र्बानियोंको अपने हालपर हमेशह बढ़ता हुआ समझे. ता० १४ सफ़र सन् २ जुलूस [हिज्री ११२० = विक्रमी १७६५ वैशाख शुक्ल १५ = ई० १७०८ ता० ६ मई].

——✻——

इस निशानपर कुछ लिहाज़ न हुआ, लेकिन् महाराणाने महाराजा अजीतसिंह, महाराजा जयसिंह और दुर्गदासकी अर्ज़ी उनके बे रुख्सत चले आनेके उज़्रों और कुसूरोंकी मुआफ़ी करानेके मत्लबकी लिखाकर शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीनकी मारिफ़त भेज दी. महाराजा अजीतसिंहको, जब तक उदयपुरमें रहे, चार सौ रुपये और महाराजा जयसिंहको ४०० रुपये और दुर्गदासको २०० रुपये रोज़ दिये जाते थे. बिदाके वक्त दस हज़ार रुपये, एक हाथी, दो घोड़े महाराजा अजीतसिंहको, और उनके चारों बेटोंके लिये घोड़े, सिरोपाव, और दुर्गदासको घोड़ा, सिरोपाव व दो हज़ार रुपया दिया. इसके बाद महाराणाने दोनों राजाओंको बिदा किया, जिनके साथ कुछ फ़ौज

خود نکند؛ و مستمال عنایات نموده عرضداشت هر سه را بحضور فیض گنجور ارسال دارد، که بوساطت آن عمده راجها مابدولت درمیان آمده تقصیرات آنها را معاف کنانیده سند جاگیر آنها را از حضور پرنور حاصل نموده پیش آن مخلص باخلاص میفرستیم، که تا چندی در وطن خود بوده از پریشانی برآیند- بعد از آن بحضور پرنور طلبیده بوساطت خود ملازمت آنها خواهیم کنانید- درین باب تاکید اکید و قدغن بلیغ دانسته مستمال نماید، و عنایات عالی متعالی شاهی نسبت بحال خود روز افزون شناسد * بتاریخ چهاردهم شهر صفر ختم بالظفر سنه دوم جلوس مبارک والا همت تحریر پذیرفت *

——✻✻✻——

देकर कायस्थ श्यामलदास और महासहानी चतुर्भुज वगैरहको भेजा. दोनों राजा उदयपुरकी जमइयत समेत जोधपुर पहुंचे; और बादशाही थानेको उठा दिया. महाराजा जयसिंहके दीवान रामचन्द्र और श्यामसिंह कछवाहा वगैरहने, जब कि ये दोनों राजा उदयपुरमें थे, आंबेरसे बादशाही थानेदारोंको पेश्तर ही निकाल दिया था. इस बारेमें शाहज़ादह जहांदार शाहका दूसरा निशान महाराणा अमरसिंहके नाम आया, जिसका तर्जमह नीचे लिखा जाता है:-

दूसरा निशान (१).

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम.

मुहरकी नक़ल.

तुग़्राकी नक़ल.

निशान आलीशान शाहज़ादह जहांदारशाह बहादुर, इब्न शाह आलम बहादुर बादशाह ग़ाज़ी.
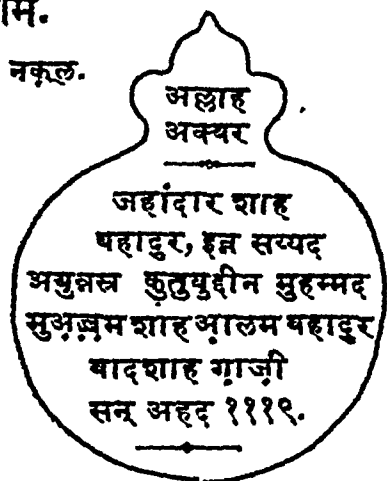
आदाब अल्क़ाबके बाद,

उस ख़ैरस्वाहने, जो अर्ज़ी कि अजीतसिंह, जयसिंह व दुर्गदासकी अर्ज़ियों

---

(१) نشان دوم شاهزاده جهاندار شاه بهادر بنام رانا امرسنگه - ۲ *

بسم الله الرحمن الرحیم

زبدهٔ نیکخواهان عقیدت کیش، خلاصهٔ مخلصان خیراندیش،

نتیجهٔ دودمان وفاخوئی، نقیهٔ خاندان رضاجوئی، سلالة

समेत मीर शुक्रुल्लाह मन्सबदारके हाथ भेजी थी, हमने बादशाही मुबारक नज़रमें पेश करदी. हम इस फ़िक्रमें थे, कि इन लोगोंके कुसूर मुआफ़ होजावें, लेकिन् इन दिनोंमें अजमेरके सूबहदार शजाअ़तखांकी अ़र्ज़ीसे हुजूरमें मालूम हुआ, कि रामचन्द्र वग़ैरह जयसिंहके नौकरोंने सय्यद हुसैनख़ां वग़ैरह बादशाही नौकरोंसे लड़ाई की. अजीतसिंह वग़ैरहको हर्गिज़ मुनासिब नहीं था, कि हमारा जवाब पहुंचने तक बेहूदह हरकत करते, बहुत नालायक़ कार्रवाई हुई. इसलिये कुछ अ़र्से तक इनके कुसूरोंकी मुआफ़ी हमने मौकूफ़ रक्खी है. इनको कहदे, कि अब भी हाथ खेंचकर कोनेमें बैठें, रामचन्द्रको निकालदे, और अ़र्ज़ी भेजे, कि उसने बादशाही आदमियोंके साथ बे अदबी की थी, इसलिये नौकरीसे दूर कियागया. इसके बाद उनके कुसूरोंकी मुआफ़ीकी फ़िक्र कीजावेगी. बादशाही मिहर्बानियोंको हमेशह अपने हालपर ज़ियादह समझे. ता० २७ रबीउ़स्सानी सन् २ जुलूस [हिज्री ११२० = विक्रमी १७६५ श्रावण कृष्ण १३ = ई० १७०८ ता० १७ जुलाई].

ऊपर लिखे निशानके जवाबमें महाराणा अमरसिंहने शाहज़ादह जहांदार शाहके नाम जो लिखा, उसका अस्ल मुसव्वदह उसी वक़्का हमको मिला है, जिसका तर्जमह यहां लिखा जाता है:-

---
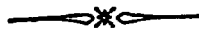
فدویت منشان، سزاوار الطاف و احسان، مطیع الاسلام رانا امر سنگه
بعنایات بی نهایات مستظهر بوده بدانند، عرضداشتی که با عرضداشت اجیت سنگه
و جیسنگه و درگداس مصحوب میر شکرالله منصبدار ارسال داشته بود، از نظر همایون مقدس معلی
گذرانیدیم. در فکر این بودیم، که عفو جرایم اینها بشود، درین اثنا از روی عرضداشت شجاعت خان
ناظم صوبه دار الخیر اجمیر بعرض اشرف اقدس ارفع اعلی رسید، که رامچند وغیره نوکران جیسنگه
با سید حسین خان وغیره ملازمان پادشاهی جنگ کردند. اجیت سنگه وغیره را نمی بایست که تا رسیدن
جواب ما حرکت دور از کار میکردند. بسیار بد واقعه شد. بنابر آن چندی عرض برای عفو جرایم
اینها موقوف فرموده ایم. اینها را بگوید که الحال هم دست خود ها را کوتاه نموده بگوشه بنشینند، و رامچند
نوکر خود را دور کنند، و عرضداشت ارسال دارد که ازو با بندهای پادشاهی بی ادبی شده، از
نوکری برطرف کردم. در آن وقت فکر عفو جرایم اینها کرده شود. عنایت عالی متعالی شاهی را نسبت
بحال خود روزافزون شناسد * بتاریخ بیست و هفتم ربیع الثانی سنه دوم جلوس مبارک سمت
تحریر پذیرفت *

महाराणा २ अमरसिंहकी तरफ़से दर्ख़्वास्त
शाहज़ादह जहांदार शाहके नाम.

जहान और जहान वालोंके वुज़ुर्ग सलामत,

हुज़ूरका वुज़ुर्ग निशान निहायत क़द्रदानीके साथ इस तावेदार ख़ैरख़्वाहके नाम इस मज़्मूनसे जारी हुआ, कि इस फ़र्मांवर्दारकी अर्ज़ीके साथ राजा अजीतसिंह, राजा जयसिंह और दुर्गदास राठौड़की अर्ज़ियां वादशाही हुज़ूरमें पेश कर दीं, हुज़ूर इनके क़ुसूर मुआ़फ़ करावेंगे; और इस वातका भी हुक्म था, कि जयसिंहको ताकीद कीजावे, कि वह अपने नौकर रामचन्द्रको, जिसने वादशाही आदमियोंके साथ वे अदवी की है, अलहदह करदे; और ये लोग अपने क़ुसूरोंकी मुआ़फ़ीके लिये वादशाही हुज़ूरमें अर्ज़ियां भेजें.

इन वातोंके लिखनेसे तावेदारको वहुत इ़ज़्ज़त हासिल हुई, हुज़ूरके निशानको इ़ज़्ज़तके साथ सर आंखोंपर रक्खा; हुज़ूरकी मन्शाके मुवाफ़िक़ राजा जयसिंहको सख़्त ताकीद लिखदी है, कि रामचन्द्रको, जिसने नालाइक़ कार्रवाई की, निकाल दें; और अपने क़ुसूरोंकी मुआ़फ़ीके वास्ते वादशाही दर्गाहमें और हुज़ूरके पास अर्ज़ियां भेज दें. लेकिन् अस्ल हक़ीक़त यह है, कि वतनमें जागीर पाये वग़ैर इन लोगोंकी तसल्ली नहीं होगी, और ऐसा मालूम होता है, कि हिन्दुस्तानमें वड़ा फ़साद उठेगा. इसलिये हुज़ूरकी ख़ैरख़्वाही और इस इ़लाक़हका फ़साद दूर होनेके लिहाज़से जागीर और क़ुसूरोंकी मुआ़फ़ीके लिये अ़र्ज़ किया जाता है; ये लोग क़दीमी ख़ानहज़ाद हैं; इसलिये तावेदार उम्मेद रखता है, कि वादशाही हुज़ूरमें अ़र्ज़ करके वतनकी जागीर इनको इ़नायत करा देवें, ता कि झगड़ा दूर हो; मुनासिव जानकर अ़र्ज़ किया गया.

महाराणा २ अमरसिंहका ख़त, जो नव्वाव आसिफ़ुद्दौलह
को जवावमें लिखा गया.

वाद शौक़के यह है, कि आपका वुज़ुर्ग ख़त पहुंचा, जिसमें यह लिखा है, कि हज़रत शहन्शाहकी तरफ़से मन्सव वहाल होकर राजा अजीतसिंहको सोजत और जैतारन, राजा जयसिंहको खदमनी (१) और दुर्गदास राठौड़को पर्गनह

(१) इस गांवका नाम खदमनी पढ़ा जाता है, नहीं मालूम सहीह नाम क्या है.

सिवाना जागीरमें दिये जानेका हुक्म हुआ; इनको ताकीद कर दें, कि फ़साद और बेजा हरकत न करें, आंबेरसे हाथ खैंचकर चुप चाप बैठें; खुदाने चाहा, तो दुबारा हुजूरमें अर्ज़ करके जोधपुर और आंबेर इनको दिला दिये जावेंगे; हर एक अपना वकील भेजकर सनद हासिल करे. इन बातोंके दर्याफ्त करनेसे बहुत खुशी हासिल हुई, लेकिन् नव्वाब साहिब सलामत, अस्ल हक़ीक़त यह है, कि ये लोग जब उदयपुरमें पहुंचे, तो मैंने सिर्फ़ शाहज़ादह साहिबके हुक्म और हज़रत शहन्शाहकी खैरख्वाहीके लिहाज़से हर तरहकी नसीहतें, जो मुनासिब नज़र आईं, उन अज़ीज़ोंको कहीं; और हुजूरमें भी इत्तिलाई अर्ज़ी भेजकर एक महीनेसे ज़ियादह उन लोगोंको ठहरा रक्खा; लेकिन् बादशाही अह्ल्कारोंकी नाराज़ीके सबब कोई मत्लब दुरुस्त न हुआ.

आपकी साफ़ तबीअतपर ज़ाहिर है, कि बुज़ुर्ग खुदाने दुन्याके इन्तिज़ामको कुद्रतसे किया, और बहुत चीज़ें व जान्दार पैदा किये; और हर इलाकेके लिये जुदे आदमी मुकर्रर फ़र्माये हैं. इसी तरह अगले बादशाह राजपूतानाकी आमद, खर्च और इन्तिज़ामपर नज़र करके अपनी खुशीसे इस इलाकेके मौजूद आदमियोंके बुज़ुर्गोंको वतनकी जागीरोंके सिवाय अपने पाससे पर्गने और इन्आम देते रहे हैं, जिसके सबब उन्होंने उम्दह खिद्मतें की हैं.

इस वक्त मुल्कमें हर तरफ़ फ़साद उठ रहा है, और हर तरह कोशिश कीजाती है, लेकिन् बगैर वतनमें जागीर मिलनेके दोनों अज़ीज़ (जयसिंह व अजीतसिंह) और दुर्गदास राठौड़ फ़सादसे जल्द बाज़ न आवेंगे; यह खैरख्वाह मुद्दतसे आपकी खिद्मतमें एतिबार रखता है, इस वास्ते बेतकल्लुफ़, जो कुछ सच नज़र आया, लिख दिया है; इस मौकेपर मुनासिब यही है, कि शाहज़ादह साहिबकी सिफ़ारिशसे वतनकी जागीरोंके लिये इन लोगोंको सनद इनायत होजावे, तो बहुत मुनासिब है; आगे जिस तरह हज़रत शहन्शाहकी मर्ज़ी मुबारक और बड़े अह्ल्कारोंकी खुशी हो, सबसे बिह्तर है. वकीलोंके लिये, जो फ़र्माया, उसका यह हाल है, कि मैं आपके कारखानह और मकानको अपना घर जानता हूं, जल्द वकील भी आपकी खिद्मतमें हाज़िर होजाएंगे. ज़ियादह क्या तक्लीफ़ दी जाये.

इसके बाद महाराजा अजीतसिंह, जयसिंह और महाराणा २ अमरसिंहकी फ़ौजने जोधपुरसे निकलकर पुष्करमें एक महीने तक मक़ाम रक्खा, और अजमेरके सूबहदार शजाअतखांसे फ़ौज खर्चके कुछ रुपये लेकर दोनों राजाओंने सांभरपर जा

क़ब्ज़ा किया; वहां सय्यद हुसैनसे मुक़ावला हुआ, दोनों राजाओंने फ़त्ह पाई, और सय्यद मए फ़ौजके मारा गया; यह हाल जोधपुरकी तवारीख़में लिखा जायगा.

इसी वर्षमें महाराणाको फ़ौज ख़र्चकी ज़रूरत हुई, तब मेवाड़के जागीरदार और ख़ालिसे व सासणीक लोगों से फ़ौज ख़र्चके रुपये वुसूल करना चाहा; क्योंकि बादशाही फ़ौजोंसे मुक़ावला होजानेका ख़तरा था. ख़ालिसेकी रिआया व जागीरदारों और अह्ल्कारोंने तो रुपये देदिये, परन्तु ब्राह्मण, चारण और भाटोंने इन्कार किया, जिसपर ज़ियादह दवाव डाला गया; इससे तीनों ज़ातके हज़ारों आदमियोंने धरना दिया; महाराणा काले कपड़े पहिनकर बाड़ी महलके झरोकेमें आबैठे, और कहा, कि मैं रुपये ज़रूर वुसूल करूंगा. तब महाराणाके पुरोहितने ब्राह्मणोंके बदले छः लाख रुपये, और खेमपुरके गोरखदास दधिवाड़िया (१) ने चारणोंके एवज़के तीन लाख रुपये अपने घरसे जमा करा दिये, और इन दोनोंने अपनी अपनी ज़ात वालोंसे कहला दिया, कि तुमको रुपये छोड़ दिये हैं; क्योंकि यदि उन्हें यह ख़बर हो जाती, तो वे हर्गिज़ न उठते. यह देखकर भाट लोग और भी भड़के.

महाराणासे किसीने कहा, कि इन भाटोंके विस्तरोंमें मिठाई और रोटियां मौजूद हैं. तब एक मस्त हाथी छुड़वाया, जिसके डरसे भाट लोग विस्तरे छोड़ भागे, और उनके विछौनोंमें मिठाई और रोटियां मिलीं; इसपर उन्हें शहर बाहर निकलवा दिया. इस लज्जासे हज़ारों भाट एक साथ एकलिंग पुरीको चले; महाराणाने चीरवेके घाटेपर बन्दोबस्त करवा दिया; तब उदयपुरसे उत्तर ५ मीलके फ़ासिलेपर आंबेरीकी बावड़ीके पास दो हज़ार भाट ख़ुद कुशी करके मर गये; और उनके क़ब्ज़ेमें, जो ८४ गांव सासणके थे, वे महाराणाने छीन लिये. उसी दिनसे हज़ारों भाटोंने बंजारोंका पेशह इख्तियार किया, और उनकी औलाद वाले अब तक बैल लादकर गुज़ारा करते हैं. उस समय किसी कविने मारवाड़ी ज़बानमें एक सोरठा कहा थाः–

सोरठा.

घर पतरे घाड़ेह । भटवाड़े सह भंजिया ॥
गोरख गढ़वाड़ेह । आडो आस करन्न वत ॥ १ ॥

---

(१) दधिवाड़िया, चारणोंमें एक गोत्रका नाम है.

मत्लब इसका यह है, कि महाराणाके ज़ुल्मने भाटोंको ग़ारत किया; और गोरखदास आसकरणका बेटा उस वक्त चारणोंके गढ़वाड़ोंका मददगार रहा.

इन महाराणाने अपने नामके ख़रीते, पर्वाने व ख़ास रुक्के लिखनेका काइदह मुक़र्रर किया, जिसमें सहीह वालोंके (१) अक्षर पहिले कई ढंगके (बापके और और बेटेके और) लिखे जाते थे, उनका तर्ज़ उस समयसे एक ही तरहका क़ाइम किया गया, जो कि आज तक जारी है.

दूसरे, सोलह व बत्तीस उमराव क़ाइम करके उनकी जागीरें मुक़र्रर (२) कर दी गईं, जिससे रिआया और जागीरदार दोनोंको फ़ायदह हुआ.

इन महाराणाने राजपूतानामें आग भड़काकर सर गिरोह बननेकी कार्रवाई की, और यह ख़बरें अजमेरके सूबहदारकी मारिफ़त दक्षिणमें बादशाहके पास पहुंचती थीं; लेकिन् बादशाह अपने भाई काम्बख़्शकी लड़ाइयोंमें फंसा हुआ था; उसने अजमेरके सूबहदार शजाअ़तख़ांके एवज़ सय्यद हुसैनको सूबहदारीपर भेज दिया. महाराजा अजीतसिंहने छेड़ छाड़ कर रक्खी थी, और महाराणाने बदनौर, पुर मांडल और मांडलगढ़ तीनों पर्गनोंसे राठौड़ सुजानसिंहके बेटोंको निकालकर क़ब्ज़ा कर लिया. जब बहादुरशाह अपने भाई काम्बख़्शपर फ़त्ह पाकर दक्षिणसे लौटा, तो महाराणाने लड़ाईकी तय्यारी करके पहाड़ोंमें रहनेका इरादह किया. यह हाल सूबहदारोंने बादशाहको लिखा, इसपर वज़ीर असदख़ांने महाराणाके नाम फ़ार्सीमें एक काग़ज़ भेजा, जिसका तर्जमह यहां लिखते हैं:-

---

(१) यह भटनागर कायस्थ हैं, और महाराणाकी 'सही' हुक्मी काग़ज़ोंपर करवाते हैं, इससे वह सहीह (صحیح) वाले मश्हूर हैं.

(२) पहिले ख़ास ख़ास लोगोंके लिये जागीरका सद्र मक़ाम (ख़ास ग्राम) क़ाइम रहा है, परन्तु आम रवाज यह था, कि जागीर तीन वर्ष या इससे कम ज़ियादह अर्सेमें बदल दी जाती थी. इसमें महाराणाने रअ़य्यतकी ख़राबी जानकर पक्का पट्टा और अमरशाही रेख क़ाइम करदी. जागीर बदलनेका रवाज इस रियासतमें मुग़ल बादशाहोंके क़ाइदेके मुवाफ़िक़ महाराणा कर्णसिंहने जारी किया था.

असदखां वज़ीरका ख़त, महाराणा
२ अमरसिंहके नाम.

अमीरीकी पनाह, बड़ी ताक़तवाले बहादुर, बराबरीवालोंसे उम्दह और बिह्तर, बुज़ुर्ग सर्दार राणा अमरसिंह, हज़रत शहन्शाहकी मिहर्बानियोंमें रहें -

हुज़ूरमें अर्ज़ हुआ, कि वह दिलेर सर्दार बादशाही लश्करकी रवानगीकी ख़बर सुनकर बेवकूफ़ लोगोंके बहकानेसे वहमके सबब अपना अस्बाब और सामान पहाड़ोंमें भेजते हैं. हुक्म फ़र्माया गया है, कि इससे पहिले तसल्लीका बुज़ुर्ग फ़र्मान् जारी हो चुका है; फिर किस वास्ते ख़ौफ़ किया जाता है. जब कि हज़रत बादशाहकी मिहर्बानी उन उम्दह राजाके हालपर किसी तरह कम नहीं है, तो साफ़ दिली और बे फ़िक्रीके साथ अपनी जगहपर आरामसे रहें, और अपने आदमियोंकी भी तसल्ली करदें, कि कोई न घबरावे. हुक्मके मुवाफ़िक़ अमल करें. मैंने ख़त उन दोस्तके नाम भेजा था, उसके जवाबका इन्तिज़ार किया जाता है, जिस क़द्र जल्द भेजें बिह्तर है. ता० ७ मुहर्रम सन् २ जुलूस [हिज्री ११२० = विक्रमी १७६५ चैत्र शुक्ल ९ = ई० १७०८ ता० ३१ मार्च].

इसी सबबसे अगर्चि चित्तौड़के पास होकर बादशाही लश्करका रास्तह मुक़र्रर हुआ था, लेकिन् उसे छोड़कर मुकन्दराके घाटेसे हाड़ौती होकर गया. महाराणाका वकील बाघमल्ल और मोतमद झाला कान्ह वगैरह इस कोशिशमें बादशाही लश्करके साथ थे, कि मेवाड़के तीनों पर्गने जो क़ब्ज़ेमें किये, उनकी सनद हासिल करके महाराजा जयसिंह और महाराजा अजीतसिंहका भी मत्लब पूरा किया जावे. बादशाही अहल्कार कुछ दबाव और कुछ लालचसे बादशाहके दिलपर राजा लोगोंकी तरफ़से रोब बढ़ाते जाते थे. यह भी याद रखना चाहिये, कि राजाओंके वकील भी अपने मालिकोंको उसी तरह बेफ़िक्र नहीं होने देते थे. इसलिये दो काग़ज़ोंकी नक़्ल यहां लिखते हैं, जो बादशाही लश्करसे मेवाड़के वकीलोंने महाराणा २ अमरसिंहके नाम भेजे थे.

पहिले काग़ज़की नक्ल.

स्वण सुदी १० स्मे (सोमे)
सांभरो लीप्यो भादवा व्दी ३ भमे (भोमे)
दीयो ईरा दो० ७॥ साढा सातम्हे आव्यो.
कागद ४ री जाब भेलो लीपे चलायो भादवा
व्दी ४ बुधे सं० १७६७.

अप्रंच । आगै कागद सांवन सुदी ९ रीऊ (रवि) मेवड़ा मंनौहर नगा साथे मौकल्या सै, सु हजुर मालुंम हुवा होगाजी, ईनहीं दींन सांझै म्हावतपांरै म्हे गया, म्हाबतषां म्हलमां थो, षवर करावी, दीवांनषांनै आई बैठा, म्हांनै कहो जो तुंम वड़े नवाब (वज़ीर) पास जावौ, जौ फरमांवै सु सुंनवौ करौ, परगनो वासतै याही कहो, जो रांनांजीकुं ईनाईत करौ, या मेरै औहद्दे करौ; ईस सीवाई तीसरी वात कवुल न्ही. नरंम गरंम जाव करीयो, मैंनै भी डराया है, अर म्हे फरदां अरजी परगनां वासतै तथा चीतोड़री राहदारी वासतै नसरतयारपांहे हुवी है, तीन वासतै तथा फरद १ म्हारांनांजीरा षीताव वासतै फरमांन षीलअत हाथी तीलायर स्मेत साज स्मेत, घोड़ो साज स्मेत, तरवार जड़ाऊ, मौत्यारी माला, कलगी, पालकी साज नै झालर स्मेत, तथा म्हाफ़ौ (अमारी عماری) घोड़ांरौ अतनी वसतां वासतै म्हे अरजी लीपदी थी, सु पातीसाहजी वै दीन षीताव ईनांमरी फरद प्र सुवाद (ص) मंनजुर कीयांरौ कर आया; और अरजांपर दस्पत न हुवा, सु बोवरौ आगै अरज लीषौसै, सु षीताव ईनांम हुवांरी फरद म्हाबतषां म्हांनै दीषावी. म्हावतपां कही, जो अव ही ईस हुकंमके साहा (हिसावी काग़ज़ سیاهه) कारषांनौ भेजै, तो वड़ा नवाव तथा पातींसाह पातीसाहजादा जांनैंगे, जौ रांनांजीके लौग ईतनेमै ही राजी हुवा, परगनोंकी मजकुर सरद पड़ैगी, मैंनै सवकुं कहा है, वीगर परगनै कांन्हजीकुं और वात कवुल न्ही, परगनोंका कांम हुवा सव ईनायात कवुल ह.

म्हावतषां औ वातां कहै म्हांनै षांनषांनां तीरै भेजा, दीलीरौ (दिहलीका) वाकानवीस बषसी फषरुदीषांहै म्हावतषां म्हांरी साथे दीधो, जो वड़ा नवाब पास लेजावो. घड़ी ६ रात गयां षांनषांनांरै गया, नवाब म्हलमै था, षबर करावी, नवाब दीवान षांनै आई वैठा, षीलवत मै नवाब नै फषरुदीषां नै म्हे दोई जंना था, प्हैलां तौ नवाव आवताही श्रीजीहै षीताब ईनांमां हुई, तींरी मुबारकबादी म्हांनै दीवी, म्हे तसलीमां कीवी, अरज कीवी, जो नवाबनै तवज्है कर सब कांम कीया, ईक थोड़ासा हंमारे परगनोका कांम रह्या, सु भी तवज्है करै; नवाब कही वो भी हौता है; षंन पातीसाह तुंम्हारा कहाही करता जाता है, तुंम्हारौ राह न गया, तुंमनै कह्या सु कीया, अर करैगा; तुम भी तौ पातीसाह राजी होई सु करौ. पातीसाह तुंम्हारै मुलकरै राह होई दीषंण गया, अब फेर तुम्हारे मुलक पास होई अज्मेर आया, चाहीये था जो कुंवरजीकुं मुलाज्मतकुं भेजते, पातीसाह राजी होता, ईन प्रगनों सीवाई ओर परगनै देता, अर जो कीनी पातीसाहनै आगुं न दीया होगा, सु दे पातीसाह ईनांम देता राजी होई तुरत रुषसत करता; सु तुंमनै या भी कांम कीया न्ही, अर पातीसाह अर सब पातीसाहजादै अर हंमारै हंमचसंम (همچشم) सब जांनते है, जौ राजपुतीया सब मुकद्मां षांनषांनांके हाथ है, सु षुदाईके फजल सुं, जो कांम हाथ पकड़ा, सु सब सरंजांम पाया. राजौंका कांम कैसा वरहंम (ख़राव) था, छत्रसाल बुंदेलेका कांम चालीस वरससुं वरहंम था, सु हंमारै कौलसुं सब आये हजुर आयों, हंमारी तजवीज सुं भी ईधका कांम सबका हुवा. अब देषो राव बुधसिंघकुं वतनकी रुषसत हौती न थी, सु भी हंमनै पातीसाह सुं वजद (ताकीदसे) होई आज रुषसत बुंदी कुं कराया, हाथी, घोड़ा दीलाया, म्हावतषांके सीरकी सौगंद है, जो हंम जांनते है, जो राजपुतौं सुं असा ईषलास मजबुत करैं, जो हुंमारी औलाद अर ईनकी ओलाद ईषलास सचा चाल्या जाई; अर हंमारा तुंम्हारी पोथीमै नांव रहै, हंम या वात चाहते है. अब दोई वात सुं हंमारी जीयादे सरंम रैहती है, जौ ईक तो दौनुं राजा वादे सुं दोई रोज प्हैलां कावल कुं चलै, दुजा तुंम्हारै मनमै साच आवै अर कुंवरजीकी मुलाज्मत ठैहरावो, तुंम्हारी बात वीच छत्रसाल कुं ल्यांवेगे. रांनांजीकै अर छत्रसालके वोहत ईषलास है, छत्रसाल रांनांजीके पत हंमकुं दीषाता है, सु उंनकुं वीच देगे; अब तुंम भी दानां हो, अब ही जवाव दो मत, ईस वात कुं वीचारकर कहीयो, उतावल का कांम न्हे-

पांनां दुजौ.

तव म्हे तो वैं वकत सलाह देष नवाब साहीव नवाब साहीब क्हेवो करया.

नीधांन म्हे कही जो सब सरंम नवाव कुं है, हीदुसतांनमै वड़ा जस होई रहा है, रांनांजी नै राजौनै तो श्या करार कीया है, जो पुसत दर पुसत नवावके षांनदांनसुं श्रैसी ही बंदगी रहैगी; श्रर रांनांजीकुं, जौ खीदमत फरमाई, सु लाषों रुपये घरके षरच कर नवावका हर भांत बौल वाला कीया. श्रव नवावकुं सब सरंम है. पाछै दुरगदासजीरी मजकुर पुछी, नवाव कही, जो परगनों लीप ल्यावो हंम करदेते है, श्रमां दुरगाकुं लीपौ, जो सीताव हजुर श्रावै, तुं काहेकुं बैठ रह्या है, ती पाछै नवाव कही, जो तुंम रांनांजीकुं लीपौ, जो राजोंकुं ताकीद लीपै, श्रपनै भले मांनस राजों पास भेजै, ताकीद कर चलावै. म्हे कही रांनांजी तो नवावके फरमायेसुं लीषैगे, श्रमां नवाव पंन राजोंकुं पत लीप सरकारके श्रादीमी भेजै. नवाव पांन दे म्हांनै रुपसत कीया; म्हे वारै श्राई घोड़ां श्रसवार हुवा, श्रर फेर नवाव बुलाया कही, जो हंम श्रपनै दसपतों सुंही श्रव पत लीख देते हैं; सुव्है रांनांजी हजुर चलाईदो. श्रर तुंम्हारै हीसै का मेवा भी लौ; सु श्रांव श्रर श्रंननास २ दीया. वैही वकत नवाव श्रापरा हाथसुं पत लीप मोहर कर म्हांनै सोपो, कही जो सीताव चलावो, म्हांनै घंनां ईपलास प्यारसुं श्राधी रातहै डेरा है रुपसत कीया. सु पत हजुर मोकलो सै, हजुर मालुंम होसी. सावंन सुदी १० सोमे मंनोहरपुर सुं कुंच हुवो, सु म्हावतषां सुं पांनषांनांरी मजकुर व्हैनी सै, यांरी सलाह सुं वड़ा नवावहै जाव देनो है, सु म्हावतषां सोवतो मोड़ो जागो, उठतो ही पातीसाहरै मुजरै गया, उठासुं मंनोहरपुररै वागमै जनांनो कीयो; सौ म्हे पंन वागमै बैठा सां, म्हावतषां सुं मील श्रागली मंजल जास्यां. राव वुधसिंघजीहै देसरी सीप हुवी, श्राजरा डेरांसुं चालसी. राजांहै श्रवार हजुरसुं पांनषांनांरा लीष्यासुं कुछ लीपवारौ हुकंम न्होई. श्रै श्रर वै श्रापरी करेलेसी, राजा श्रजीतसिंघजीहै हजुररा कागद ललो पतोरा ईपलासरा सदा भेजा कराजो, पांनषांनांरा पतरो जाव लीप भेजी जो, घंनो ईपलास बंदगी लीषाजो, राजां वावत–

पांनो तीजो.

लीपजो नवावरा लीष्यासुं राजांहै ताकीद घंनी लीपी है, श्रर फेर लीपां हां सु श्रसो षतमै लीपाजो, श्रोर गाजदीषांरो पोजो न्हेरौज (نوروز) नवावरा घोड़ा स्मंदाव दीली सुं लसकर पोंहचो, नवाव तीरै जाईसै. म्हावतषां म्हांनै कहौ, जो षोजारी लारे जमीयत दे उदैपुर तक पोंहचावो, सु म्हां तीरै तो जमीयत मालुंम श्रर

गाजदीपां (غازی الدین خان) रो पंन भलो मंनांवनो, तींसुं पोजा हे असवार दे म्हाराजा जैसिंघजी हजुर मोकल्यो हे; कागद १ साह नांनजी हे म्हे लीप दीधो हे, जो थे हजुर हे चालो, तरे पोजा हे लारे लीयां जाजो, ऊंटाले डेरा करावे हजुर मालुम कर लोग साथ देगा, जदी पां तीरे पोंहचता कीजो. पोजो सीरदार से म्हाराजा जैसिंघजी घोड़ा ४ पातीसाहजी हजुर मोकल्या था, सु प्हलां तो पातीसाहजी नजर करे रपाया था, काल्हे फेर नजर गुजरया, हुकंम कीयो, जैसिंघके घरके घोड़े पुत्र पैदा होते हे, ए घोड़े फेर दो. वे घोड़े भेजेगा, सु श्रे घोड़ा दुवलासा था, तींसुं फेर भेजा; तुरत म्हावतपां आपरे तवेले वांधासे जी. गाजदीपां पोजा व्हेरोज हे लीपो थो, तुं जोधपुररे राह आवे मत, आवे तो उदेपुर होई आवी. सु पोजो ईतवारीसे हजुर आवे तो पगेलगावारो हुकंम होई, रुपसतरी वीरयां सीरोपाव पावे, अर गाजदीपां तक पोंहतो कराजे, अनननास २ हजुर मेवड़ा भांमां छीत्र साथे मोकल्या से; सु हजुर नजर गुदरावजो जी. पांनपांनां कहे थो, जो पातीसाहजी फरमाया करे हे, रांनांजीका कुंवर मुलाज्मतकुं न आया, आगे वकीलने मामुल लीप दीधा था, अर करारदाद था, अर पातीसाहजी या भी फरमावे हे, जो हंम अज्मेरकुं सीताव फीरेंगे, पांनपांनां वाघमलजी वासते पुछो, तव म्हे कही वाजे कांमकुं हजुर गया हे. नवाव कही हंमारी वीगर रुपसत कुं चलाया. अस कहे था. अवे म्हावतपांसुं ईन वातरी ठीक मंनसुवो करे वड़ा नवाव सुं कंहां हां, ठेहरे हे, सु अरज लीपी ही जी. संवत् १७६७ व्रपे साणए सुद १० [हि० ११२२ ता० ८ जमादियुस्सानी = ई० १७१० ता० ६ ऑगस्ट] सोमे पाछला पहररा चाल्या.

दूसरे काग़ज़की नक्ल़.

१ ॥ श्रीरामजी ॥.

पोस सुदी ८ दीतवार आया
कागद साह वीरो ऽऽ दीवा
लीपे २२ वाल्या.

अप्रंच । आगे कागद पोस वदी १४ सुके मेवड़ा रांमां देवा साथे भेजा हे,

सु हजुर मालुंम हुआ होगाजी. मगरांरा राजां है गुरुजी (सिक्ख) रा पकड़वा सारु ताकीद गई थी, अर नांहंनरा राजा तीरै ईक दोई मंनसबदार पंन ताकीद वासतै भेजा था, तींप्र नांहंनरा राजारो प्रधांन हजुर आयो अरज कीवी, जो गुरु हंमारे मुलकमे आया न्हीं, राजा भी हजुर आवता है, गुरुकी षबर कुं हमारे जासुस पंन गये है; ओर डावरमे गुरुरी सारी गढी षोदी, सु आगे साढी सात लाष रुपया नीसरचा था, तीं पाछे कुछु नीसरो न्हीं; अर गुरुरी पन षवर ठीके आवी न्हीं; तींसुं पेस षांनो (पेश खेमह) पीजराबाद मुपलसपुर त्रफ जमंनांजी त्रफ चलायो. म्हंमद अमीषां सरहंदसु कीलारी फत्हेरी अरज दासत भेजी थी, तींप्र म्हंमद अमींपांरो मुजरो हुवो, फरमांन भेजो हजुर बुलायो. फेरोजपां है आगे सरहंदरी फोजदारी ठैहरी है, सु सरहंद है बीदा कीयो. पोस सुदी ३ भोमे डावरसुं कुच हुवो, दोई कोसरो कुच हुवो, सु ता० ३ जीलकादरी कांमबषसरी फत्है कीधी थी, सु जीलकादरो म्हीनो पोसैसु सुदी ५ थे उन फत्हेरो जसंन सरु कीधो, दीन तीन तांई जसंन होगो; तींनसुं अठै मुकाम हुवा; पाछै पीजरावाद जासी, मगरांरा राजां है दवदवो देसी; सु अब तांई गुरुरी ठीके तो आवी न्हीं, कोई ठीके न्ही जी. सुदी ५ नाहंनरो राजा हजुर आयो, अगाड़ी उत्रो थो, म्हाबतपां सांम्हो लेवा गयो थो, प्हैलां षांनपांनांरै ल्यायो, पाछै पातीसाहजीरी मुलाज्मत करावीजी, ओर कागद आपरो मांगसर सुदी ५ रो लीपो पोस सुदी ४ मेवड़ा टोड़ा वा नांमे ४ साथे आया दीन २९-

पानो दुजो.

स्मांचार सारा पाया जी, राजां वासतै लीषो थो, जो दो ही राजांरा कागद हजुर आया था, चलावारी सल्हा पुछाई थी, जींणीप्र जवाव यो लीषो है, सो ऐक बार दो ही म्हाराजा गुरुजीरो मामलो फैसल हुवां प्हैलां भेलो व्हैणो सल्हा सै; पछै कावलरी मोहंम जतंन करतां मोकुफ व्हे तो भलां सै, न्ही तो आगै जीसी गौं देपजे, जीसी गौं कीजे; सु हजुर सुं आछां सल्हा तरीक लीप भेजो, आगै उणारो अपत्यार सै. अठै पंन नाहरपांरा जोधपुरसुं कुच करायांरा कागद आया था जी. भंडारी पींवसी म्हाराजा जैसिंघजीसुं मीले लसकर है आगै चालो सै. भंडारी आजे स्वारै लसकर पोंहचसी. कागद आया था जी, राजा अजीतसिंघजीरा मेड़तै पोंहचारा समाचार आया था जी. म्हाराजा जैसिंघजीरा डेरा नई सराई सै. अजीतसिंघजीरा कागद रात दींन आवै है, जो म्हे बेगा आंवां हां, थे आगै चालो मत. तींनसुं म्हाराजा जैसिंघजी नई सराई बैठा सै. भंडारी अठै आवे सै, सु फेर कोल करार लेसी.

कावलरी मोकुफी वासतै तलास करसी, पांनपांनां म्हावतपां तो क्हैसी, तुंम हजुर आवो, हजुर रहो, अर्जीमरी पंन मरजी सै, जो कावल न जाई, तो भलांसे, हजुरमें ही रहे; पछे दीपंण पुरवरी तईनाती ठैहराई लेस्यां. अव देपजे, भंडारी आंयांसुं कांई ठैहरै जी, ओर राजा अजीतसिंघजी है, दरवार सुं टीलौ भेजो, सु या वात जोग्य ही थी जी. ऊंटां वासते लीपो, जो ऊंट परीद तो कीया है, पणं तुरत पोंहचा न सै; सु ऊंट तरै पोंहचै तरै सीताव चलाव जो जी. हकींम नीत याद करै सै जी; दुरगदासजीरा कांम वासतै लीपौ, सु अठै कड़ावी नराईनदासनै सवलसिंघ रजपुत ईणांरा कांम वासतै रफीअलसां (رفیع الشان) रै रीसालै फीरै है जी, सु दुरगदासजी है वौवरौ लीपता ही होगाजी.

पांनो तीजो.

अप्रंच । ईनामात तो कौचअलीपां उरफ मीरजा म्हंमदरै हुवालै हुवी, मीरजा म्हंमद कहैसै, जो प्रगनोका कांम परगनोंमें ही करलेगे उहां चुकाई म्हावतपांकुं लीप भेज जाव मंगावैगे; सु यो भलो मांनस नजर आवै है; पंन सारो अपत्यार म्हावतपांरो नै पांनपांनांरा पेसकारांरो है, सु आगै तो म्हावतपां परगनांरो छ्हमाहो मांगै थो, सु छ्हमाहरा तीनुं प्रगनांरा स्वा तींन लाप रुपया ज्मा होई, सु म्हे आरे करां न था; अव म्हावतपां राई गजसिंघ पालसारा पेस दसत है वुलाई गजसिंघ है नै भगवंतराई आपरा दीवांन है म्हा तीरै दीवांनपानांमे भेजाया; रद वदल करावी तींप्र म्हे फेर ओर कीवी न्ही; वां राजा अजीतसिंघजी म्हाराजा जैसिंघजीरो पत मेड़ता वस्यारौ दीपायो, सु छ्हमाहो उन कागद माहे लीपो सै. म्हे कही राजोंके परगनोमे अर हंमारे परगनो तफावत (फ़र्क़) घंना है; राजोके परगनै रईयती नै सेर हासील है; हंमारै परगनै जोर तलव कंम हासील, तींन हजार असवारकी फौज वाहरे म्हीनै रहै है, तव टका पैदा होता है; तव गजसिंघ मेवात्यारी जागीर दारीरो उपजतांरो कागद काढो, सु कंम जीयादै छ्हमाहा वरावर ज्मां लीपी सै. म्हे कही तकसींममै जागीरदारीरी ज्मां जीयादै है, कानुंगो लीपदेसे, कोई पालसारा अमलरो दापलारो कागद काढो; फेर म्हे कही जो नवावनै तवज्है करनी सै, तो रीयाईतसुं प्रगनां चुकाईदो, मौनै सीप दो, अर नवावरा दीलमै न आवै, तो मोनै सीप दीजे; मीरजा म्हंमद जाई ही सै, तीसो देपेगा, तीसा करैगा; तींप्र मुतसद्यां सारी वात नवाव है कही, म्हावतपां सुंन कही, जौ असा कांम कीजे, तीसमैं सवका सुपंन वाला रहै, ईन प्रगनोका हासील मेरी नकदीकी तंनपाह कराई लुंगा; सु यांरी तो या मरजी सै, म्हे चाहां हा

जो सीमाहा चो माहा तक चुकै, तो आछां सै; अर वांरी मरजी छह माहारी सै जी, कहै सै, जो परगनै तो गुंजाईस-

पानो चोथो .

के है, हंम रीयाईतकर छहमाहा क्हैतै है, सु तब तक अठे चुकै है, च्यार टकां घाट बाध तब तक तौ अठै ही चुकावां हां, जै कदाच अठै न चुकै है, तो सीप मांगे उठैही मीरजा म्हंमद तीरां चुकाई लेस्यां; ईसै पंन करार कर रापोसै, पंन तब तक चुकै, तब तक अठै चुकास्यां जी; ओर म्हाबतपां है, हकींम है, तथा हीदायत केस्पां है, तथा मुतसद्यां है आपर दरबार आडीसु देणो व्हैगो; घंणां दीनांरा सारा उमैदवार सै, कंही कुछह पायो न सै, सु हजुर मालुंम ही सै; यांसु सदा कांम है, अर म्हावत्पांरो लालच है सु आपो संसार जांणै है जी; पातीसाह नै पातीसाह जादा पंन ईनरो लालच नीकां जानै है; आप लीपौ जो त्यांहै देनां होई, त्यारी ठीक करे बोबरौ लीपजो; सु आगै बार दोई अरज लीपी थी, जो ईक लाप रुपया मोकलवारो हुकंम होई, सु फेर बोबरारो लीपो आयो; सु अठै कींनै ठीक कीवी सै; सारा मोढो उवाई चोघ रह्या सै; दरबार सुं पावनरो घंनो भरंम रापै सै जी. पांनपांनां रोक तो न लेगो, यां है कुछह जींनस पोंहचा जे, तो ईषलास वधै है जी. म्हाबतपां वागैरे है परगनांरो चुकाव व्है तो देणां, न चुकै तो देणां; यांसु सरोधो रापजे, तो भलां सै; सु हजुर मालुंम करे हजुर रो हुकंम होई सु बेगा मोकलावजो जी. ओर पोस सुदी ७ सीनुं मीरजा म्हंमद सारी ईनांमात ले म्हाबतपांसु पंन रुपसत हुवो, पांनपांनां सुं आगै रुपसत हुवो ही थो; सु स्वार तक चालसी, सु प्हैलां तो दीली जासी, साज सांमांन करसी; ओर अतनां नांमां है देणौं सै- वीगत-

१ पांनपांनां है, जीनस.	१ म्हावतपां रै, नगदी.	१ हकींम सलेंम.
१ हीदायत केसपां.	१ राई नवनिध.	१ राई गजासिंघ.
१ राई भगवंत.	१ मुनसी सारांरा.	१ तथा हजुर नवीस.
१ हकीमरो पेसकार.		

अतना नांमा है देनों जरुर सै जी, जौ म्हे अठै अठारा करीनां माफक कंही है, देनो करे हजुर बौबरो अरज लीपां हां, तो हजुर मैं लौक अरज करै, जो अतनो टकौ कीसा कांम प्र-

पांनो पांचमो.

परचै है, अपुठो गैर मुजरो होई; अठै यांरै कंही बातकी कंमी न सै, जै थोड़ो कंहां सां, तो अठै मसषरी करै है, जो उसा मोटा दरबाररी त्रफसुं या

वात कहे सै, तव सरंम न रहै; तींसु वां नांम लीप हजुर मोकल्या सै; सु हजुर मालुंम करेजो; नांम नांमप्र हुकंम होई, ती माफक लीपे सीताव सरंजांम करे भीजा जो जी;

और वराड़ रौ नै पांनदेसरो सुवौ आगे रुसतंमपां दीपणीं है थो, रुसतंमपां है सुवदारी नवाव पांनपांनां म्हावतपांरी मारफत हुवी थी; अवै यां दीना मांहे अमीरल उमराव रफीअलखां सुं जोड़ कीधो सै; सु अमीरल उमराव वां दोऊ सुवांरी सुवदारी दाऊदषांरै नामै ठैहरावे फरमांन भीजायो जी. तींप्र आपसमे गुफत गो अठै होई रही सै; यां वाप वेटा रुसतंमपां है हसवल हुकंम आपरी मोहरसुं भेजा है, जो सुवदारी तुंमप्र वहाल सै; सु असी सोहवत होई रही सै. वाकारी फरद ४ मोकली सै जी, वकाआरी फरद ४ च्यार मौकली छै जी समत १७६७ व्रपे पौस सुद ८ [हि० ११२२ ता० ६ ज़िल्क़ाद = ई० १७१० ता० २९ डिसेम्बर] रुऊ प्रभाते.

कागदरौ जाव सताव मौकलजो, ढील नु हौवे जी, घणौ कंई ल्पांजी.

ईश्वरकी मर्ज़ी देखना चाहिये, कि महाराणा २ अमरसिंहके पास यह अर्ज़ी पहुंचने भी नहीं पाई, कि वे इस जहानसे चल वसे; इसीसे अक्लमन्दोंने कहा है, कि मौत वहरी है, वह किसीके मत्लवकी वातें नहीं सुन्ती. महाराणाके वड़े वड़े इरादे थे, जो पूरे न होने पाये.

इनका जन्म विक्रमी १७२९ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ बुधवार [हिज्री १०८३ ता० १९ रजव = ई० १६७२ ता० ११ नोवेम्बर] को और देहांत विक्रमी १७६७ पौष शुक्ल १ [हिज्री ११२२ ता० आख़िर शव्वाल = ई० १७१० ता० २२ डिसेम्बर] को हुआ.

इनका मंझला क़द, गेहुंवां रंग, वड़ी आंखें, और चौड़ी पेशानी थी. यह मिज़ाजके तेज़ और गुस्सेकी हालतमें ज़ालिम और निर्दई थे. सीसोदिया वंशमें शराव पीना इन्होंने शुरूअ् किया, शरावके नशेमें वहुतसी वुरी वातें जहांगीर वादशाहके मुवाफ़िक़ कर वैठते थे; लेकिन् अच्छी आदतोंसे भी ख़ाली नहीं थे; इन्होंने देशका इन्तिज़ाम भी वहुत उम्दह किया, कोई किसीपर ज़ुल्म नहीं करने पाता था, हर एक आदमीको इनकी तरफ़से यक़ीन था, कि सिवाय मालिकके दूसरेसे हमारा नुक्सान नहीं होसक्ता. पर्गनोंका वन्दोवस्त, दर्वारका तरीक़ह, सर्दारोंकी नशस्त और वर्ख़ास्तके दस्तूर क़ाइम किये; सोलह और वत्तीस उमराव मुक़र्रर हुए, जागीरका क़ाइदह और पुख़्तगी क़ाइम करदी; नोकरी, छटूंद, जागीरकी रेख व तल्वार वन्दीका तरीक़ह

बांधा; दफ़्तर और कारख़ानोंकी तर्तीब की. लड़ाई झगड़ोंमें भी यह अव्वल दरजेके बहादुर थे. इनका बांधा हुआ बन्दोबस्त जब तक मेवाड़में क़ाइम रहा, कोई बखेड़ा नहीं हुआ. इन्होंने "शिवप्रसन्न अमरविलास" नामी महल सिफ़ेद पत्थरका बहुत उम्दह और आलीशान विक्रमी १७६० [हिज्री १११५ = ई० १७०३] में बनवाया, जो कि अब "बाड़ी महल" के नामसे मश्हूर है. बड़ी पौलके दोनों बाजूके दालान, घड़ियाल और नक़ारख़ानेकी छत्री भी इन्हीं की बनवाई हुई है. इनके एक कुंवर संग्रामसिंह थे, जो इनके बाद गादीपर बैठे.

जोधपुर या मारवाड़की तवारीख़.

महाराणा राजसिंह, जयसिंह और अमरसिंहके वक़्में जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहके बेटे अजीतसिंहका मेवाड़से बहुत तअ़ल्लुक़ रहा; इसलिये जोधपुरका इतिहास मुफ़स्सल यहां लिखा जाता है:-

मुल्क मारवाड़ (राज जोधपुर) का जुग्राफ़ियह.

लेफ़्टिनेएट कर्नेल सी. के. एम. वाल्टर, साबिक़ पोलिटिकल एजेएट जोधपुरके गज़ेटियरके २२२ वें सफ़्हेसे खुलासह लिखा जाता है, कि जोधपुरका इलाक़ह जिसको मारवाड़ भी कहते हैं, फैलावमें सब राजपूतानाकी रियासतोंसे बड़ा है. इसकी उत्तरी सीमा बीकानेर और शैखावाटी; पूर्वी सीमा मेवाड़, जयपुर और कृष्णगढ़; अग्निकोणपर अजमेर और मेरवाड़ा; दक्षिणमें मेवाड़, सिरोही और पालनपुर; पश्चिममें कच्छकी खाड़ी और थर व पारकर नामी सिंध देशके ज़िले, और वायुकोणपर जयसलमेर है. उत्तर समतल रेखा २४·३० और २७·४० और ७०· और ७५·२० पूर्व देशान्तरके मध्यमें है; ईशान और नैऋतमें इसकी लंबाई २९० मील, सबसे ज़ियादह चौड़ाई १३० मील, और रक़बह ३७००० मील मुरब्बा है.

क़ुद्रती हालत.

यह एक बहुत बड़ा मरुस्थल (रेगिस्तान) है, और इसके दक्षिण पूर्व तीसरे हिस्सेमें यानी लूनी नदीके दक्षिणमें अर्वली पर्वतके सिल्सिलेके मुवाफ़िक़

बहुतसी अलग २ पहाड़ियां हैं; परन्तु उन पहाड़ियोंमेंसे किसीकी चौड़ाई व ऊंचाई इतनी नहीं है, कि जिसको पहाड़ी सिल्सिला कह सकें.

मिट्टी और ज़मीनकी हालत.

मारवाड़की ज़मीन अव्वल- बेकल, (बालू) जो बहुत है, उसमें बाजरा, मोठ, मूंग, तिल, तर्बूज़ और ककड़ी वग़ैरह चीज़ें बहुत पैदा होती हैं; उम्दह ज़मीन, जिसको चिकनी मिट्टी कहते हैं, उसमें अक्सर गेहूं पैदा होता है.

दूसरी- पीली, जिसमें रेत मिली हुई है; ऐसी ज़मीनपर तम्बाकू, कांदा और तरकारी होती है.

तीसरी- सिफ़ेद (एक तरहकी खारी मिट्टी) है; और उसमें अच्छी वर्षा होनेके बाद फ़स्ल हो सक्ती है.

चौथी- खारी ज़मीन, जिसमें कुछ भी पैदा नहीं होता.

यहां अक्सर पहाड़ियें हैं, जिनमें और रेतके नीचे बिल्लौर, अबरक़ और काला पत्थर निकलता है; पहाड़ियों में सबसे बड़ी नाडोलाईकी पहाड़ी है, जिसपर एक बहुत बड़ा पत्थरका हाथी बना हुआ है. जीधनके पास पूनागिर, सोजतकी पहाड़ी, पालीके पासकी पहाड़ियां, गुंडोजके पासकी पहाड़ी, सांडेरावकी पहाड़ी, जालौरकी पहाड़ी और बहुतसी छोटी छोटी पहाड़ियां हैं. इनके चारों तरफ़की ज़मीन सख़्त और पथरीली है; लूनी नदी के पार या मारवाड़के फैलावके तीसरे हिस्सेमें ये पहाड़ियां नहीं हैं. राजधानी जोधपुर तक ये चटान नज़र आते हैं, क़िला जिसके साम्हने बस्ती है, पहाड़ी और बालूपर है, जिसकी ऊंचाई आठ सौ फ़ुट है; क़िलेके उत्तरी तरफ़ आतिशी और रेतीला पत्थर भी है, जिसके रेज़े सितारोंके मानिन्द चमकते हैं; इस देशमें पानी बहुत दूर याने दो सौ तीन सौ फ़ुट नीचे मिलता है.

मारवाड़में कोई धातु नहीं है, सोजतके पास किसी क़द्र जस्त मिलता था, उत्तरमें मकरानाके पास सिफ़ेद पत्थर निकलता है, और पूर्व दक्षिणकी सीमापर घाणेराव गांवके पास छोटी छोटी टेकरियोंमें भी मिलता है.

नमककी खान.

जोधपुरके राज्यमें नमक, मक़ाम सांभर, पचभद्रा, डीडवाना, फलोदी, पोहकरण

और कुचामण वगैरहमें निकलता है. पचभद्रामें ई० १८५७ [वि० १९१४ = हि० १२७३] में कूंता गया है, कि वर्ष भरमें अंग्रेज़ी तोलसे ग्यारह लाख मन नमक और डीडवानेमें साढ़े तीन लाख मन, और इसीके मुवाफ़िक़ फलौदीमें है, और पोहकरणमें वीस हज़ार मन पैदा होता है.

नदी और झील.

लूनी नदी, जो पुष्करसे निकली है, निकासके पास सावरमती, और गोविन्दगढ़में सारस्वती नामसे मश्हूर है; और गोविन्दगढ़से मारवाड़के बीच होकर कच्छके रणके पास दलदलमें जज़्ब होगई है. यह बर्साती नदी है, दूसरे मौसममें खड्डोंके सिवाय और कहीं पानी नहीं रहता, नोवेम्बरसे जून तक इसकी तलहटीके सत्हसे कई फुट नीचे कूओंमें पानी मिलता है; इन कूओंका पानी बहुत गहरा खोदे जानेसे खारी हो जाता है. मारवाड़में वालोतरा तक इस नदीका पानी बहुत मीठा, और बालागांवके पास खारी है; लेकिन् इससे निकली हुई छोटी नदियोंका जल कम खारी है; जोधपुरके राजमें इन नदियोंके तीरपर नमकके छोटे छोटे कारख़ाने जारी हैं; कच्छके रणके किनारेपर, जो मारवाड़की सईद है, इस नदीकी तीन शाख़ें हुई हैं.

जोजरी नदी, मारवाड़के मेड़ता ज़िलेसे निकलकर जोधपुरसे दक्षिण पश्चिम कोणमें पांच मीलके फ़ासिलेपर लूनीमें गिरती है.

गोवा नदी, बाला कापुरा (कापुरा सोजतका एक पर्गना है) के पहाड़ोंसे निकलकर सातलानाके पास लूनीमें मिलती है.

रेडरिया वाली नदी, सोजतके पहाड़ोंसे निकलकर गोवा वालामें मिलने बाद पालीके पास बहती है ; इस नदीके पानीसे कपड़ा रंगा जाता है; रंगनेका मुसालिहा पानीमें मिलाने और उबालनेसे रंग कुछ पक्का हो जाता है.

बांडी नदी, सरयारीके पास अर्वली पहाड़से निकलकर लूनीमें गिरती है; और 'जुआई' अर्वलीसे निकलने बाद ऐरनपुरेकी छावनीके पास होकर गुड़ाके पास लूनीमें मिलती है.

सांभर झील, मारवाड़में तीस मील लंबी है, जिसकी बाबत कर्नेल ब्रुक साहिबने ई० १८६८ या ६९ [विक्रमी १९२५ = हिजी १२८५] के अकालकी रिपोर्टमें इस तरह लिखा है:-

अजमेरके उत्तरका अर्वली पहाड़, जो राजपूतानाके अलग अलग दो हिस्से करता है, उसमें एक खाई है, इसमें भी अर्वलीके दोनों तरफ़ ३० या ४० मील तक इस तौर पर है, कि एक खाई तीस मील लंबी है; मुद्दतों पहिले जब राजपूताना समुद्रकी धरातलसे ऊंचा उठाया गया, चलती हुई लहरोंसे इस बड़ी खाईमें खारी पानी भर गया होगा; पानी धीरे धीरे धूपसे सूखा, और चिकनी मिट्टीकी बनी हुई तलहटीपर नमक भर गया; हर वर्ष झीलमें पानी बहकर इस खारको गला देता है; इसीसे गर्मीके दिनोंमें डली बंधती है. इसी तरह दो और खाई हैं, एक मारवाड़के उत्तर डीडवानेके पास, दूसरी मारवाड़के दक्षिणी हिस्से पचभद्राके पास, जिनका ज़िक्र ऊपर हो चुका है.

मारवाड़में कई झीलें हैं, जिनमेंसे सांचौरकी झील वर्षा ऋतुमें चालीस या पचास मीलतक फैलती है, और उसकी तलहटीपर गेहूं, चने अच्छे पैदा होते हैं.

पानी, हवा और बर्सातकी कैफ़ियत.

मारवाड़की आब व हवा खुश्क है, वर्षा ऋतुमें भी और जगहोंकी व निस्बत यहां खुश्की ज़ियादह रहती है; क्योंकि जंगल नहीं है. मारवाड़, दक्षिणमें सिरोही, पालनपुर, और कच्छके रणसे लेकर उत्तरमें बीकानेर तक फैला है, दोनों सीमाओंका फ़ासिला, याने लम्बाई २९० मील है; और इस देशकी पूर्वी हद अर्वली पहाड़ है, जो मेवाड़को अलग करता है; पश्चिमी हद कच्छका रण, अमरकोट, और थरका रेगिस्तान है;इस मुल्ककी चौड़ाई १३० मीलके क़रीब है. हिन्दके समुद्रसे भापको लाने वाली नैर्ऋत्य कोणकी हवा और बंगालेकी खाड़ीसे (अग्निकोण) भापको लाने वाली हवा यहां बिल्कुल नहीं आती; नैर्ऋत्य कोणका बादल मारवाड़ पहुंचनेके पहिले उत्तरमें गुजरात, कच्छके रणके रेतीले देश, अमरकोट और पारकरपर होकर आता है; इसीसे यहां पानी बहुत कम बरसता है. जोधपुरमें साढ़े पांच इंचसे ज़ियादह पानी नहीं बरसता. दूसरे ज़मीनके ऊपरी हिस्सेके रेतके असरसे हवा खुश्क होती है; रेतेके नीचे पत्थरकी तह है, और उसमें खरिया मिट्टी और कंकरकी खान मिलती है. लूनी वगैरह नदियोंमें पानी न रहनेके सबब हवामें तरी नहीं रहती, और जंगल न होनेसे पानी कम बरसता है, जिससे खेती बाड़ी

बहुत कम होती है. ठंडके मौसममें हवाका हेर फेर दिन और रातमें भी रहता है. मारवाड़में दिनको तंबूके नीचे गर्मीके सबब थर्मामेटर ९० से ऊपर रहता है, और रातको इतनी ठंड होती है, कि पाला जम सक्ता है; अक्सर ठंडके दिनोंमें हवाके बदलनेसे सील होती है, खुजलीकी बीमारी ज़ोर करती है; यह पानीके ख़राब होने और सफ़ाई न रहनेका सबब है. अगर मारवाड़में नमक सस्ता और ज़ियादह न होता, तो बीमारी और ज़ियादह फैलती; चेचक अक्सर निकलती है, बाला और ब्याऊ यहां की ख़ास बीमारियां हैं; लेकिन् जोधपुरके पश्चिममें ये बीमारियें बहुत कम होती हैं.

मुन्शी हरदयालसिंह, सेक्रेटरी मह्कमह ख़ासकी
रिपोर्ट विक्रमी १९४० से.

इस रियासतमें कुल ४४४० गांव हैं, जिनमेंसे ४९७ ख़ालिसेके हैं; उनकी जमा बाला बाला दीवानकी मारिफ़त तहसील कीजाती है; बाक़ी २८२ गांव ख़ालिसेके वे हैं, जिनकी आमदनी ख़ालिसह कचहरियान ज़िलामें जमा होती है; कुल ७७९ ख़ालिसह, बाक़ी जागीर और सासण वग़ैरहमें हैं.

इन पर्गनोंके सिवाय मल्लानीका पर्गनह, जो सबसे बड़ा है, विक्रमी १८९० से अंग्रेज़ी सर्कारने मुल्की मस्लिहतके सबब अपने तअ़ल्लुक़ कर लिया है. उसमें एजेंटीकी हुकूमत है, सिर्फ़ राजकी फ़ौज बन्दोबस्तके वास्ते हाकिमके पास रहती है; हाकिम एजेंटीके हुक्मके मुवाफ़िक़ काम करता है. यह पर्गने राठौड़ जागीरदारोंके हैं, और उनसे एजेंटी की मारिफ़त दस हज़ार रुपयेके क़रीब राजका सालाना ख़िराज 'फ़ौज बल' के नामसे लिया जाता है. इस पर्गनेकी आबादी १४८३२६ आदमियोंकी है.

पर्गनह अमरकोट, जो पहिले इस रियासतमें था, अब सर्कार अंग्रेज़ीके क़ब्ज़ेमें है; इसके एवज़ दस हज़ार रुपये सालाना राजको सर्कार अंग्रेज़ीसे मुक़र्रर ख़िराजमेंसे मुजरा मिलते हैं. इस मुल्कमें मामूली दो फ़स्लें होती हैं, पहिली बारिशसे, जब कि ११ से १३ इंच तक पानी बरसे; दूसरी कुएं और तालाबोंकी सिंचाईसे होती है. यहां नव या दस वर्षमें पानीकी कमी होनेसे अकाल पड़ता है; तब लोग अपने खटले समेत मालवाको चले जाते हैं.

मारवाड़में बाजरा, मोठ, ज्वार, तिल, मूंग, कपास, मक्की, मंड, भुरट, ज़ीरा, अजवायन, धनिया, तिजारा, मिर्चे, तर्बूज़, कचरी, मेथीदाना, ककड़ी, मतीरा, गेहूं,

जव और चने होते हैं; लेकिन् आम लोगोंकी खुराक वाजरी, मोठ और भुरट है, जो ज़ियादह पैदा होती है. खास जोधपुरके अनार अच्छी क़िस्मके होते हैं; मवेशी सब क़िस्मके उम्दह होते हैं, लेकिन् ऊंट और बकरी मानो परमेश्वरने इसी मुल्कके लिये पैदा किये हैं; गाय, बैल, घोड़े भी अच्छे होते हैं. घोड़ोंकी नस्लको महाराजा जशवन्तसिंहने सुधारकर अव्वल दरजेपर पहुंचाया है. इस मुल्ककी कुल आबादी सन् १८८१ ई० की मर्दुमशुमारीके मुताबिक़ १७४६८०२ है, जिसमें मल्लानीके पर्गनेके भी १४८३२६ आदमी शामिल हैं.

राठौड़ोंकी तवारीख़.

क़न्नौजके राजा जयचन्द्रसे पहिलेकी वंशावली और उनका अहवाल मिलना कठिन है. कविराजा करणीदान कविया चारणने, जो 'सूर्य्यप्रकाश' नाम ग्रंथ मारवाड़ी और ब्रज भाषामें कविताके तौरपर विक्रमी १७८७ [हि० ११४३ = ई० १७३०] में बनाया, उसमें लिखा है, कि राजा १ सुमित्रका पुत्र २ कम्धज, उसका ३ गणपति, उसका ४ तोगनाथ, उसका ५ कीर्तिपाल, उसका ६ भैरव, उसका ७ पुंजराज; इन्हींके तेरह बेटोंके नामसे राठौड़ोंकी तेरह शाखें हुईं. पहिली दानेसुरा, दूसरी अभयपुरा, तीसरी कपालिया, चौथी करहा, पांचवीं जलखेड़िया, छठी बुगलाना, सातवीं अरह, आठवीं पारकेश, नवीं चंदेल, दसवीं वीर, ग्यारहवीं वरियावर, बारहवीं खैरवदा, और तेरहवीं शाख जैवंत है. पुंजके १३ बेटोंमें बड़ा धर्म बंब था, जिसका बेटा ९ अभय चन्द्र, उसका १० विजय चन्द्र, और उसका ११ जयचन्द्र.

सूर्य्य प्रकाशकी तेरह शाखों और वंशावलीके नामोंसे जोधपुरकी दूसरी तवारीख़के नाम नहीं मिलते, जो जोधपुरसे हमारे पास आई है; और इसी तरह तीसरी तवारीख़में कुछ और ही तरहपर है. ऐसी हालतमें किसी एकपर यक़ीन नहीं होसक्ता; मालूम होता है, कि यह सब घड़ंत बड़वा भाटोंने अपनी पोथियोंको मोतबर बनानेके लिये की है; इसलिये हम इस ज़मानेकी नई तहक़ीक़ातके मुवाफ़िक़, जहां तक वंशावली मिली, वह नीचे लिखते हैं, जो मारवाड़की तवारीख़ोंसे कुछ भी नहीं मिलती.

क़न्नौजके राठौड़.

एशियाटिक सोसाइटीकी सौ सालकी रिपोर्ट, भाग २ के पृष्ठ ११९ से १२२ तकका तर्जमहः—

ईसवी १८०७ [वि० १८६४ = हि० १२२२] के क़रीब एक ताम्रपत्र एच. टी. कोलब्रुक साहिबको मिला, जिन्होंने उसका तर्जमह एशियाटिक रिसर्चेज़में छापा. वह क़न्नौजके राजा विजयचन्द्रका दानपत्र ईसवी ११६४ [वि० १२२१ = हि० ५५९] का मालूम हुआ. विजयचन्द्र राजा जयचन्द्रका पिता था, जिसके बारेमें आईनअक्बरीके हवालेसे मुसल्मानोंके मुक़ाबलेपर ईसवी ११९३ [वि० १२५० = हि० ५८९] में शिकस्त खाना लिखा था. उस पत्रमें राजा विजयचन्द्रकी वंशावली छः पीढ़ियों तक पाई गई. १ श्रीपाल, २ यशोविग्रह सूर्य वंशका उसका बेटा ३ महीचन्द्र, उसका बेटा ४ श्रीचन्द्रदेव, जिसने कान्यकुब्ज जीत लिया, और क़न्नौजका पहिला राठौड़ राजा हुआ. ५ मदनपालदेव, ६ गोविन्द चन्द्र, ७ विजय चन्द्रदेव.

ईसवी १८२५ [विक्रमी १८८२ = हिज्री १२४०] में प्राफ़ेसर एच०एच० विल्सन ने ईसवी ११७७ [विक्रमी १२३४ = हिज्री ५७२] के राजा जयचन्द्रके वक़्के ताम्रपत्रसे, उनकी वंशावलीका पहिला नाम यशोविग्रह निकाला, जो कि पहिले भूलसे श्रीपाल पढ़ा गया था. यह ख़ान्दान राठौड़ राजपूतोंका था, और उसकी सात पीढ़ियोंके नाम, जो ग़लत नहीं हो सक्ते, कर्नेल टॉडकी लिखी हुई वंशावलीसे कुछ भी नहीं मिलते, जो उन्होंने राजस्थानकी दूसरी जिल्दके ७ वें एष्ठमें लिखी है; वह सातों नाम, उन पुराने सिक्कोंसे भी पुख़्तह किये गये, जो क़न्नौजके आस पास बहुतसे मिले; लेकिन् ईसवी १८३२ [विक्रमी १८८९ = हिज्री १२४८] के पहिले उनको किसीने नहीं पहिचाना, जिस सन्में कि विल्सन साहिबने राजा जयचन्द्रके पितामह गोविन्दचन्द्रके दो सिक्कोंका बयान एशियाटिक रिसर्चेज़की १७ वीं जिल्दके ५८५ एष्ठमें छापा. ईसवी १८३५ [विक्रमी १८९२ = हिज्री १२५१] में प्रिन्सेप साहिबने श्रीचन्द्रदेवका नाम तह्क़ीक़ करके इन सिक्कोंकी सुबूतीको पक्का किया. ईसवी १८३५ [विक्रमी १८९२ = हिज्री १२५१] के बाद और बहुतसे ताम्रपत्र राठौड़ोंके पाये गये, जिन सभोंसे पहिले पत्रोंकी वंशावली पक्की हुई.

ईसवी १८४१ [विक्रमी १८९८ = हिज्री १२५७] में जयचन्द्रका दान पत्र ईसवी ११८७ [विक्रमी १२४४ = हिज्री ५८३] का एच. टॉरेन्स साहिबने छापा. ईसवी १८५८ [विक्रमी १९१५ = हिज्री १२७४] में एक पत्र जय-चन्द्रके पड़दादा मदनपालके वक़्का ईसवी १०९७ [विक्रमी ११५४ = हिज्री ४९०] का, और दूसरा जयचंद्रके दादा गोविन्दचंद्रका ईसवी ११२५

[विक्रमी ११८२ = हिज्री ५१९] का फ़िड्ज़ एडवर्ड हॉल साहिबने प्रसिद्ध किया. पीछेसे जो तहक़ीक़ातें हुईं, उनमेंसे गोविन्दचन्द्रके दान पत्रसे, जो बाबू राजेन्द्रलाल मित्रने ईसवी १८७३ [विक्रमी १९३० = हिज्री १२९०] में छापा, कोलब्रुक, विलसन और दूसरे साहिबोंकी राय खूब पुख़्तह ठहर गई, याने यह कि इस ख़ान्दानके पहिले दो आदमी 'यशोविग्रह' और 'महीचन्द्र' क़न्नौजके राजा नहीं थे; लेकिन् तीसरे राजा श्रीचन्द्रने क़न्नौजको फ़त्ह किया, और वह वहांका पहिला राठौड़ राजा हुआ. उसी पत्रसे यह भी मालूम हुआ, कि अगले ख़ान्दानके आख़िरी राजाका नाम भोज था, जिसके मरने बाद कुछ दिनों तक राजा श्री कर्णके समयमें बद इन्तिज़ामी रही, और उसी वक़्में राठौड़ राजा श्रीचन्द्रने क़न्नौजकी गद्दी पहिली बार हासिल की.

इन सब ताम्रपत्रोंसे क़न्नौजके राठौड़ोंका समय ईसवी १०५० [विक्रमी ११०७ = हिज्री ४४२] से ईसवी ११९३ [विक्रमी १२५० = हिज्री ५८९] तक ठहराया जासक्ता है, इस ताम्रपत्रके दूसरे श्लोकमें "विजयीनृपः" श्री चन्द्रदेवके लिये लिखा है, और उसको महिआल याने महिपालका बेटा लिखा है, जो महीचन्द्रका दूसरा नाम था; जर्नल जिल्द ४ पृष्ठ ६७० में गहरवाल वंशका रिश्तहदार बतलाया गया है, जो कि इलियट साहिबके लिखनेके मुताबिक़ राठौड़ोंका ही ख़ान्दान है.

महाराजा जयचन्द्रका हाल राजपूतानेमें पृथ्वीराजरासा (१) के मुताबिक़ ज़ाहिर है, लेकिन् यह पुस्तक हमारी रायमें विक्रमी १६४० [हि० ९९१ = ई० १५८३] से विक्रमी १६७० [हि० १०२२ = ई० १६१३] के बीचमें चहुवानोंके किसी भाटने पृथ्वीराजके भाट चंदके नामसे बनाकर प्रसिद्ध करदी है. इसी पुस्तकके सबब राजपूतानेके इतिहासमें बहुत कुछ फेर फार हो गया; याने अस्ली नाम व साल सम्वत् गुम होकर उनके बदले बनावटी क़ाइम हुए, जैसे कि राजा जयचन्द्रकी गद्दी नशीनीका संवत् विक्रमी ११३२ [हि० ४६८ = ई० १०७६] मारवाड़की तवारीख़ोंमें दर्ज हो गया, लेकिन् राजा जयचन्द्र और उनके बुज़ुर्गोंके ताम्र पत्रोंने

---

(१) हमने इस ग्रन्थकी नवीनता साबित करनेके लिये एक पुस्तक रूप बनाकर बंगाल एशियाटिक सोसाइटीके ई० १८८६ [विक्रमी १९४३ = हिज्री १३०३] के पहिले जर्नलमें छपवाया है, और उसीके मुताबिक़ हिन्दी भाषामें भी छपवाकर प्रसिद्ध किया, जिसके देखनेसे पुरानी प्रशस्तियां, ताम्रपत्र और उस ज़मानेकी फ़ार्सी तवारीख़ोंके लेख पाठक लोगोंको विश्वास दिलावेंगे, कि यह पुस्तक नई और इतिहासमें ख़राबी डालने वाली है.

सच्चा हाल खोल दिया, जिनके नाम यह हैं:- १ श्री पाल, २ महीचन्द्र, ३ श्रीचन्द्रदेव, ४ मदनपालदेव, ५ गोविन्दचन्द्र, ६ विजयचन्द्रदेव ७ जयचन्द्र. पृथ्वीराजरासामें लिखा है, कि विक्रमी ११५१ [हि० ४८७ = ई० १०९४] में राजा जयचन्द्र राठौड़की बेटी संयोगिताको दिल्लीका राजा पृथ्वीराज चहुवान ले आया, लेकिन् ईसवी १८८६ [विक्रमी १९४३ = हिज्री १३०३] के जर्नल इन्डियन एन्टीक्वेरीमें राजा जयचन्द्रके दो दान पत्र, एक विक्रमी १२२५ माघ शुक्ल १५ [हि० ५६४ ता० १४ रबीउस्सानी = ई० ११६९ ता० १६ जैन्यूएरी] का, दूसरा विक्रमी १२४३ आषाढ़शुक्ल ७ रविवार [हि० ५८२ ता० ५ रबीउस्सानी = ई० ११८६ ता० २६ जून] का दर्ज है. इस तरहके गलत संवत् देखकर राजपूतानेकी तवारीखोंमें फ़र्क़ पड़ा, और अस्ली संवत् नष्ट होगये.

हमको जयचन्द्रसे मंडोवरके राव चूंडा तक मारवाड़की तवारीख़के संवत् ठीक मालूम नहीं होते, राठौड़ोंकी तवारीख़में बहुत पुराने ज़मानेसे क़न्नौजका राज उनकी हुकूमतमें होना लिखा है, लेकिन् ऊपरके लेखसे यह साबित होगया, कि विक्रमी ११०७ [हि० ४४२ = ई० १०५०] में क़न्नौजका राज राठौड़ों के क़ब्ज़ेमें आया.

आख़िरी राजा जयचन्द्रसे उसका मुल्क विक्रमी १२५० [हिज्री ५८९ = ईसवी ११९३] में शिहाबुद्दीन ग़ौरीने चन्दवार (चन्दावल) में लड़ाई करके लेलिया; (तबक़ात नासिरी पृष्ठ १२०) इस लड़ाईमें तीन सौसे ज़ियादह हाथी शिहाबुद्दीनके हाथ आये, और जयचन्द्र अपनी राजधानी छोड़ भागा. फिर हिन्दुस्तानके पहिले बादशाह कुतुबुद्दीन एबकने इस शहरको अपने मातहत किया. पृथ्वीराजरासेका बनाने वाला लिखता है, कि राजा जयचन्द्र शिहाबुद्दीन ग़ौरीके हिन्दुस्तानमें आनेसे पहिले गंगामें डूब मरा, शायद यह डूब मरनेकी बात सहीह हो; लेकिन् इस पुस्तकपर पूरा विश्वास नहीं हो सक्ता.

जोधपुरकी तवारीख़में राजा जयचन्द्रका बेटा ९ बरदाईसेन, उसका १० सेतराम, उसका ११ सीहा, जिसे शिवा भी कहते हैं, लिखा है; हमको बरदाईसेन और सेतरामके नाममें शक है, कि बहुतसी पुरानी पोथियोंमें राजा जयचन्द्रके पीछे शिवाका नाम लिखा है, और बड़वा भाट अपनी पोथियोंमें इन दोनों नामोंके बाद सीहाका नाम बतलाते हैं; परन्तु इस बातको सहीह या ग़लत ठहरानेके लिये कोई पुख़्तह सुबूत नहीं मिलता.

सीहाने भीनमालके पास मुसलमानोंसे लड़ाई की, फिर वह मारवाड़में आया. जोधपुरके इतिहासमें लिखा है, कि सीहाने अनहिलवाड़ा पट्टनके राजा मूलराज सोलंखीकी बेटीसे शादी की; लेकिन् यह नहीं होसका; क्योंकि मूलराज विक्रमी

९९८ [हि० ३२९ = ई० ९४१] में अनहिलवाड़ा पट्टनकी गद्दीपर बैठा, और विक्रमी १०५४ [हि० ३८७ = ई० ९९७] में मर गया; और सीहा, जयचन्द्र राठौड़से चौथी पीढ़ीपर था; जयचन्द्र विक्रमी १२५० [हि० ५८९ = ई० ११९३] में मरा, तो जयचन्द्रसे दो सौ वर्ष पहिले मूलराजका समय होता है. शायद सीहाने भीमदेव सोलंखीकी बेटीके साथ शादी की हो. सीहाने पालीमें सोमनाथका मन्दिर बनवाया, और वहांके पल्लीवाल ब्राह्मणोंको लुटेरोंकी तक्लीफ़ोंसे बचाया. राव सीहाका बेटा, १ आस्थान, २ अजमाल, ३ सोनंग, ४ भीम था.

इनके बाद १२ आस्थान मारवाड़के गांव पालीमें आया, वहांके पल्लीवाल ब्राह्मणोंने आस्थानको इस सल्लबसे अपने गांवमें रक्खा, कि उनको लुटेरोंसे बचावे. जब वहांसे आस्थानने खेड़के शंकरसाहसे दोस्ती पैदा की, और खेड़के मालिक गोहिल राजपूतोंसे संबन्ध हुआ, आस्थान शादी करनेको खेड़ गया; वहांके मुसाहिब डाबी राजपूत भी राठौड़ोंसे मिल गये; आस्थानने गोहिलोंको दग़ासे मारकर खेड़का राज छीन लिया, और गोहिल भागकर गुजरात चले गये, जिनका ज़िक्र महाराणा उदयसिंहके इतिहासमें लिखा गया है. (पृष्ठ ८७ से १०० तक) आस्थानने भीलोंको मारकर ईडरका राज छीना, और अपने छोटे भाई सोनंगको दिया, जिसका हाल ईडरकी तवारीख़में लिखा जायगा. सोनंगकी औलाद अब ईडरके ज़िलेमें पालपोलांके जागीरदार हैं, जो पहिले मुल्कके राजा थे.

खेड़में राज करनेसे आस्थानकी औलाद खेड़ेचा कहलाई; इसका बेटा १ धूहड़, जो खेड़की गद्दीपर बैठा, २ जोयसा, जिसके सात बेटे हुए; १ सिंधल, जिसके सिंधल राठौड़ कहलाये, २ जेलू, जिसके जेलू कहलाये, ३ जोरा, जिससे जोरा मश्हूर हुए, ४ ऊहड़, जिसके ऊहड़ राठौड़ कहलाये, ५ राजींग, ६ मूल, जिसके मूलू राठौड़ कहलाये, ७ खींवसी.

आस्थानका तीसरा बेटा धांधल था, इससे धांधल कहलाये; इसके तीन बेटे थे, १ पाबू जो चारणोंकी गायें छुड़ानेके बखेड़ेमें खीचियोंसे लड़कर मारा गया; वह अब तक देवताके नामसे पूजा जाता है, और राजपूतानेमें प्रसिद्ध है. २ बूड़ा, जिसके बेटे झरड़ाने खीचियोंको मारकर पाबूका बैर लिया; ३ ऊहड़.

आस्थानका ४ हिरडक, ५ पोहड़, ६ खींवसी, ७ आसल, ८ चाचिग, जिसकी औलाद चाचिंग राठौड़ कहलाई.

आस्थानके बाद १३ धूहड़ गद्दीपर बैठा, यह राजा करणाटक देशसे अपनी

कुलदेवी (१) चक्रेश्वरीकी मूर्ति लाया था, उसको नागौरमें रक्खा, जिससे उसका "नागणेची" नाम मश्हूर हुआ; उसको अब तक राठौड़ अपनी कुलदेवी मानकर पूजते हैं. इन्होंने पंवार राजपूतोंको शिकस्त देकर ५६० गावों समेत बाढ़मेरका इलाक़ह लेलिया; इसके बाद धूहड़, चहुवान राजपूतोंसे लड़कर मारागया. उसके सात बेटे थे- १ रायपाल, २ कीर्तिपाल, ३ बेहड़, इसकी औलादके बेहड़ राठौड़ कहलाते हैं, ४ पीथड़, जिसके पीथड़ राठौड़ कहलाते हैं, ५ जोगायत, ६ जालू, ७ बेग. धूहड़के बाद १५ रायपाल गद्दीपर बैठा, उसने वृद्ध भाटी राजपूतको रोड़ (क़ैद) करके चारण बनाया, जिसके वंशके रोड़िया बारहठ कहलाते हैं, और जन्म व शादी होनेके वक्त नेग पाते हैं. रायपालने देहान्त होनेपर बारह पुत्र छोड़े- १ कान्ह, २ केलण, इसका थांथी, इसका फिटक, जिससे फिटक राठौड़ कहाते हैं. रायपालका ३ बेटा सूंड़ा, ४ लाखणसी, ५ थांथी, ६ डांगी, ७ मोहन, ८ जाभ्रूण, ९ राजा, १० जोगा, ११ राधा, जिससे राधा राठौड़ कहलाये; और रायपालका १२ वां बेटा हतूंडिया था. इसके बाद बड़ा बेटा १६ कान्ह गद्दीका मालिक बना, उसके तीन बेटे थे. १ भीवकरण, २ जालणसी, ३ विजयपाल भीवकरण तो पहिले ही लड़ाईमें काम आया, और १७ जालणसी अपने बापके मरने

---

(१) कुलदेवी उसे कहते हैं, जिसे अपने कुलके बुज़ुर्ग पूजते आये हों; इसलिये हमारा क़ियास है, कि दक्षिणके राठौड़ राजाओंमेंसे किसीने आकर क़न्नौजका राज लिया है, क्योंकि मारवाड़की तवारीख़में राव धूहड़का करणाटक देशसे अपनी कुलदेवी चक्रेश्वरीको लाना लिखा है; जब धूहड़की कुलदेवी दक्षिणमें थी, तो उसके मानने वाले बुज़ुर्ग भी उसी मुल्कमें होंगे. दक्षिणके राठौड़ोंका वंश इस तरहपर जाना गया है:-

दक्षिणके राष्ट्र कूटोंका हाल.

(रामकृष्ण गोपाल भंडारकरकी बनाई हुई अंग्रेज़ी ज़बानमें दक्षिणकी पुरानी तवारीख़ पृष्ठ ४७ से ५५ तक)

इस ख़ान्दानमें पहिला राजा गोविन्द (पहिला) हुआ, लेकिन् एलूरामें दशावतारके मन्दिरकी एक प्रशस्तिमें दंतिवर्मन और इन्द्रराज दो अगले नाम और भी लिखे हैं. इन्द्रराज गोविन्दका पिता और दंतिवर्मन उसका पितामह था. गोविन्दका बेटा कर्क पहिला, उसके बाद उसका बेटा इन्द्रराज दूसरा गद्दीपर बैठा. इन्द्रराजने चालुक्य घरानेकी लड़कीसे शादी की, लेकिन् वह मांकी तरफ़से चन्द्र वंशी, या शायद राष्ट्रकूटों हीके ख़ान्दानकी थी; उसका बेटा दंतिदुर्ग हुआ, जिसने करणाटककी फ़ौजको जीत लिया, और दक्षिणमें बड़ा राजा हुआ; उसका एक दानपत्र शक ६७५ [ईसवी ७५३ = विक्रमी ८१० = हिज्री १३६] का कोलापुरमें मिला. दंतिदुर्गके बाद उसका चचा कृष्णराज मालिक हुआ; जैसा कि कड़ीके एक ताम्रपत्रसे साबित है. उसका दूसरा नाम शुभतुंग था, और उसने चालुक्योंको शिकस्त दी.

बाद गद्दीपर बैठा. उसने सोढा राजपूतोंसे लड़ाई की, और फ़त्ह पाई. इसके बाद वह मुसल्मानोंकी लड़ाईमें मारा गया, जिसके तीन बेटे थे– १ छाडा, २ भाखर्सी, ३ डूंगरसी. जालणसीके बाद १८ छाडा गद्दीपर बैठा, इसके सात बेटे थे– १ तीडा, २ बानर, जिससे बानर राठौड़ कहलाये. छाडाका तीसरा बेटा रुद्रपाल, ४ खोखर, जिससे खोखर राठौड़ कहलाये, ५ सीमल, ६ खींवसी, ७ कानड़. छाडाके देहान्त होनेपर १९ तीडा राजका मालिक हुआ, उसने महेवाको अपनी राजधानी

कृष्णराजका समय ई० ७५३ [विक्रमी ८१० = हिज्री १३६] और ई० ७७५ [विक्रमी ८३२ = हिज्री १५८] के बीच रहा होगा. उसका बेटा गोविंद दूसरा, उसके बाद उसका छोटा भाई ध्रुव गद्दीपर बैठा, जिसके दूसरे नाम निरुपम, कलिवल्लभ और धारावर्ष हैं; उसने कौशांबीके राजापर चढ़ाई की, कौशंबीको अब कोशम कहते हैं, जो इलाहाबादके नज़्दीक है; उसने वत्सराजको मारवाड़में भगा दिया. इसके बाद गोविन्द तीसरा या जगत्तुंग पहिला हुआ, जिसने मयूरखंडी स्थानमें शक ७३० [ई० ८०८ = वि० ८६५ = हि० १९२] में राधनपुर और वणीडिंडोरीके दानपत्र जारी किये; यह बहुत बड़ा राजा हुआ.

मालवासे लेकर कांचीपुर तक उसका राज फैला, इसके बाद उसका बेटा शर्व या अमोघवर्ष पहिला राजा हुआ, जिसका हाल उत्तर पुराणके शेष संग्रहमें लिखा है. अमोघवर्षका बेटा अकालवर्ष था, वह कृष्ण दूसरा भी कहलाता था; इसीके वक्तमें गुणभद्रने जैनियोंका महापुराण शक ८२० [वि० ९५५ = हि० २८५ = ई० ८९८] के क़रीब पूरा किया. इसकेबाद जगत्तुंग दूसरा गद्दीपर बैठा, उसका बेटा इन्द्रराज तीसरा हुआ, इन्द्रकेबाद अमोघवर्ष दूसरा, और फिर उसका भाई गोविन्द चौथा हुआ, जिसका नाम सहसांक भी था, उसने अपनी राजधानी मान्यखेटमें शक ८५५ [ई० ९३३ = विक्रमी ९९० = हिज्री ३२१] में दान किया, उसका पत्र 'शांगलीपत्र' कहलाता है. उसके बाद बद्दिगा या अमोघवर्ष तीसरा, जिसके बाद कृष्णराज तीसरा और उसके पीछे उसका छोटा भाई खोटिका गद्दीपर बैठा, जैसा कि खारी पाटनके ताम्रपत्रसे मालूम होता है. खोटिकाके बाद उसका भतीजा ककल या कर्क दूसरा. ककल बड़ा दिलेर सिपाही था, लेकिन् उससे चालुक्य वंशके राजा तैलप ने जीतकर राज छीन लिया.

ककलके समयका ताम्रपत्र, जो करड़ामें पाया गया, शक ८९४ [ईसवी ९७२ विक्रमी १०२९ = हिज्री ३६१] का है, और दूसरे वर्षमें तैलप दक्षिणका राजा हुआ. इस तरह ईसवी ७४८ [विक्रमी ८०५ = हिज्री १३०] से ई० ९७३ [विक्रमी १०३० = हिज्री ३६२] तक दक्षिणका राज्य राष्ट्रकूटोंके हाथमें रहा, (याने क़रीब दो सौ पच्चीस वर्ष के.) इससे साबित है, कि इन्हीं लोगोंकी औलादने कन्नौजको वि० ११०७ [हि० ४४२ = ई० १०५०] में लिया होगा.

बनाया, देवड़ा चहुवानोंपर फ़त्ह पाई, भाटियोंसे दंड लिया, और बालेसा राजपूतोंको शिकस्त दी. इसके बाद मुसल्मानोंके हाथसे वह मारा गया. उसके तीन बेटे थे, १ त्रभूणसी, २ कान्हड़, ३ सळखा. तब २० सळखा गद्दीपर बैठा, इसका १ मल्लीनाथ, उसके वंशके माला कहाये, २ जैतमाल, जिससे जैतमालोत राठौड़ कहलाये, उसकी औलादवाले मेवाड़में केलवा, आगरिया वग़ैरहके जागीरदार हैं. सळखाका ३ बेटा वीरम, ४ सोभीत, जिसकी औलाद सोड़ राठौड़ कहलाई. मल्लीनाथने महेवापर क़ब्ज़ा किया, इनके नौ बेटे थे, १ जगमाल, २ रूपा, ३ चंडा, ४ उदयसिंह, ५ जगमाल, ६ मेदा, ७ अडराव, ८ अड़कमल्ल, और ९ हरम; जैतमालने सीवानामें अपना अमल जमाया, जिसके छः बेटे हुए, १ हापा, २ जीया, ३ बीजड़, ४ खींवा, ५ लूंठो और ६. खेतसी; सळखाके तीसरे बेटे २१ वीरमदेव खेड़में रहने लगे. दल्ला जोइया, जो दिल्लीके बादशाहका ख़ज़ानह लेकर भाग आया था, महेवामें आरहा, मल्लीनाथके बड़े बेटे जगमालने उसका माल व असबाब छीन लेना चाहा; तब उसने खेड़में जाकर २१ वीरमदेवकी पनाह ली; पीछेसे फ़ौज लेकर जगमाल भी पहुंचा; तरफ़ैनमें लड़ाईकी तय्यारी हुई; लेकिन् महेवासे मल्लीनाथ गया, और बीच बिचाव कराकर जगमालको लौटा लाया. इसके बाद दल्ला (१) जोइयाने अपने वतनमें जाना चाहा, तो उसे पहुंचानेको वीरमदेव भी साथ चला, लखवेरामें पहुंचकर दल्लाने वीरमदेवकी बहुत ख़ातिर की, और अपने इलाक़ेपर वीरमदेवका हुक्म जारी करदिया; लेकिन् वीरमदेव और उसके राजपूतोंने जुल्मसे मुसल्मनोंको तंग किया, उन लोगोंने एक अर्से तक दर गुज़र किया; अन्तमें बहुत दिक़ होनेसे मुसल्मानोंने वीरमदेवपर हम्ला कर दिया; और वह मुक़ाबला करके मारागया.

वीरमदेवके पांच बेटे थे, देवराज, जयसिंह, बीजा, चूंडा और गोगादेव. इनमेंसे छोटा गोगादेव, जिसने लखवेरामें पहुंचकर दल्ला जोइयाको मारा, और अपने बापका एवज़ लिया, वह दल्लाके भतीजे देपालदेव, धीरा वग़ैरहसे लड़कर मारागया; इस लड़ाईका हाल गोगादेवके रूपक (२) में मुफ़स्सल लिखा है. वीरमदेवके मरने बाद चूंडा मंडोवरका मालिक हुआ.

---

(१) यह पहिले राजपूत था, लेकिन् फिर मुसल्मान होगया.

(२) यह किताब मारवाड़ी भाषाकी कवितामें है.

२२ राव चूंडा.

वीरमके मरनेके बाद चूंडा बड़ी तक्लीफ़ोंमें रहा, फिर राव मल्लीनाथने उसको सालोढ़ी गांवके थानेपर रक्खा, वहां कुछ जमइय्यत इसके पास होगई. मंडोवरका क़िला पहिले राव रायपालने परिहार राजपूतोंसे छीन लिया था, और पीछे मुसल्मानोंके क़ब्ज़ेमें आया, ईंदा राजपूतोंने मुसल्मानोंसे फिर छीन लिया; लेकिन् कम ताक़त होनेके सबब रायधवल ईंदाने अपनी बेटी राव चूंडाको ब्याहकर मंडोवरका क़िला दहेज़में दिया; किसी शाइरने उस वक़्त मारवाड़ी भाषामें एक सोरठा कहा था:-

सोरठा.

ईंदांरो उपकार, कमधज कदे न वीसरे ॥
चूंडो चवरी चाड़, दियो मंडोवर दायजे ॥

यह मंडोवरका राज विक्रमी १४५१ [हि० ७९६ = ई० १३९४] में राव चूंडाको मिला (१). राव चूंडाने मुसल्मानोंसे नागौरभी छीन लिया; इन दिनोंमें दिल्लीके बादशाह बेताक़त होगये थे, जिनके नौकरोंने गुजरात और मालवे की खुद मुख़्तार बादशाहतें बनालीं. ऐसी हालतमें मंडोवर और नागौरसे गुजरातके मातहत मुसल्मानोंको राजपूतोंने निकाल दिया हो, तो तअ़ज्जुब नहीं; दिल्लीकी ताक़त तो बहुत अर्से तक ग़ाइब रही, लेकिन् गुजरातियोंने कुछ अर्से बाद नागौर छीन लिया. फिर भाटी राजपूत और सिंधके मुसल्मानोंसे लड़कर राव चूंडा मारागया. (मुन्शी देवीप्रसादने इनके मारेजानेका संवत् विक्रमी १४६५ [हिज्री ८११ = ईसवी १४०८] लिखा है) इसके १४ बेटे थे.

---

(१) क़न्नौजके राजा जयचन्द्रसे पीछे राव चूंडा तक गद्दीनशीनीके साल संवत् हमने नहीं लिखे, क्योंकि पृथ्वीराजरासाकी बनावटी तहरीरने असली संवत् मिटाकर जाली बना दिये, इसलिये राजा जयचन्द्रसे पहिलेके संवत् हमने ताम्रपत्र वगैरह के लेखसे सहीह बना दिये; परन्तु पिछले संवतोंको सहीह करनेके लिये कोई सुबूत नहीं मिलता; इससे लाचार ग़लत संवतोंको छोड़ दिया; और जो मारवाड़की ख्यातसे मिले हैं, वे इस नोटमें लिखे जाते हैं. आस्थानका जन्म वि० १२१८ कार्तिक कृष्ण १४ गुरुवार [हि० ५५६ ता० २८ शव्वाल = ई० ११६१ ता० २० ऑक्टोबर] को हुआ, और उसने विक्रमी १२३३ [हि० ५७२ = ई० ११७६] को मारवाड़में आकर खेड़का राज-

१– रणमल, जिसका जन्म वि० १४४९ वैशाख शुक्ल ४ [हि० ७९४ ता० २ जमादियुस्सानी = ई० १३९२ ता० २८ एप्रिल]को हुआ; २– अरड़कमल, जिसके अरड़कमालोत; ३– बीजा, ४– सत्ता, जिसके सत्तावत राठौड़ कहलाये; ५– भीम, जिसके भीमोत; ६– पूना, इसके पूनोत; ७– कान्ह, जिसके कान्होत; ८– शिवराज, ९– अज्जा, १०– लूंबा, ११– रावत्, १२– रामदीन, १३– सहसमल्ल, जिसके सहसमलोत; १४ रणधीर, जिसके रणधीरोत कहलाते हैं. इनके बारेमें यह कहावत मश्हूर है:–

"चौदह राव चूंडाका जाया। चौदह ही राव कहाया ॥"

चूंडाकी बेटीका नाम हांसबाई था, जो चित्तौड़के महाराणा लाखाको व्याही गई, जिसका ज़िक्र पहिले भागमें लिखा गया है. राव चूंडाके बाद उसके छोटे बेटे कान्हके गद्दीपर बैठ जानेसे बड़ा रणमल, जो हक़दार था, नाराज़ होकर महाराणा मोकलके पास चित्तौड़ चला आया; उसे महाराणाने कई गावों समेत धणलाका पट्टा दिया, जो अब मारवाड़के इलाकेमें सोजतके पास है.
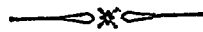
राव कान्ह.

कान्हने जांगलूके सांखला राजपूतोंपर फ़त्ह पाई; फिर मरगया. रणधीर वगैरह भाइयोंने मिलकर सत्ताको मंडोवरका मालिक बनाया, जिसपर महाराणा मोकलसे मदद लेकर रणमल चढ़ आया. सत्ताके बेटे नर्वदसे रणमलका मुक़ाबला होनेपर नर्वद ज़ख़्मी हुआ, और रणमलने फ़त्ह पाकर मंडोवरपर क़ब्ज़ा कर लिया; नर्वद महाराणा मोकलके पास आया, जिसको महाराणाने एक लाख रुपयेकी जागीरमें कायलाणाका पट्टा दिया, जो अब जोधपुर के पास है.

लिया. इसके बाद राव धूहड़ गद्दीपर वि० १२६१ ज्येष्ठ कृष्ण १३ [हि० ६०० ता० २७ शअ्बान = ई० १२०४ ता० ३० एप्रिल] में बैठा, और चहुवानोंकी लड़ाई में वि० १२८५ ज्येष्ठ [हि० ६२५ जमादियुस्सानी = ई० १२२८ मई] को मारागया. इसके बाद रायपाल गद्दीपर बैठा; इसके बाद वि० १३०१ [हि० ६४१ = ई० १२४४] में कान्ह गद्दीपर बैठा, जिसका जन्म वि० १२८१ [हि० ६२१ = ई० १२२४] और देहान्त वि० १३८५ [हि० ७२८ = ई० १३२८] में हुआ. इसके बाद जालणसी गद्दीपर बैठा; फिर मल्लीनाथ विक्रमी १४३१ [हि० ७७६ = ई० १३७४]को गद्दीपर बैठा; और वीरमदेवका इन्तिक़ाल वि० १४४० कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ७८५ ता० १९ शअ्बान = ई० १३८३ ता० १७ ऑक्टोबर] को लिखा है.

२३ राव रणमल (१).

इन्होंने सोनगरा राजपूतोंसे कई लड़ाइयां करके उनको अपने तावे वनाया. मेवाड़में कुल कारोवारका मुख़्तार राव रणमल था, क्योंकि रावकी वहिनके वेटे महाराणा मोकल उसपर पूरा भरोसा रखते थे; रणमलने महाराणा लाखाके वेटे चूंडा वगैरहको निकलवा दिया था, जिससे वे लोग राठौड़ोंके दुश्मन होगये. महाराणा मोकलको महाराणा खेताकी पासवानके वेटे चाचा और मेराने मार डाला, जिनको मारकर रणमलने मोकलका वैर लिया. महाराणा कुम्भाके वक़में भी राव रणमल मेवाड़का मुसाहिव रहा; मांडूके वादशाह महमूदको (२) गिरिफ़्तार करके महाराणा कुम्भाके हवाले किया. कुम्भाके काका महाराणा लाखाके वेटे राघवदेव (३) को रणमलने दग़ासे मरवा डाला, इस वातसे फिर अदावत ज़ियादह वढ़ी; रावत् चूंडा व महपा पंवारके वेटे अक्काने महाराणा कुम्भाके इशारेसे रणमलको विक्रमी १५०० [हिज्री ८४७ = ई० १४४३] में मरवा डाला; और उसका वेटा जोधा मारवाड़की तरफ़ भागा; रास्तेमें लड़ाइयां होकर दोनों तरफ़के वहुतसे आदमी मारेगये. राव जोधाने तक्लीफ़की हालतमें रहकर सात वर्ष वाद मंडोवरका क़िला अपने क़ब्ज़ेमें किया, और सीसोदिया रावत् चूंडाके वेटे इस हम्लेमें मारेगये. यह सव हाल मुफ़स्सल महाराणा मोकल और कुम्भाके वयानमें लिखा गया है.

राव रणमलके २४ वेटे थे, १- जोधा, २- अखेराज, इसका महेराज, इसका कूंपा, जिससे कूंपावत राठौड़ कहाये; अखेराजका दूसरा वेटा पंचायण, जिसका जैता हुआ, इसकी औलादवाले जैतावत कहलाते हैं. रणमलका ३- वेटा कांधल, जिसकी औलाद वीकानेरके इलाक़ेमें कांधलोत मश्हूर है; ४- चांपा, जिसके चांपावत; ५ वां- लक्खा, इसके लखावत; ६ वां- भाखर, इसका वेटा वाला हुआ, जिससे वाला राठौड़ कहलाये. रणमलका ७ वां- वेटा डूंगरसी, जिससे डूंगरसिंहोत हुए; ८ वां-जैतमाल, इसका

---

(१) मुन्शी देवीप्रसादका वयान है, कि इनकी गद्दीनशीनीके संवत्में वहुतसे इख़्तिलाफ़ हैं. लेकिन् हमारी दानिस्तमें विक्रमी १२७४ [हिज्री ८२० = ई० १२१७] दुरुस्त है.

(२) यह वात मारवाड़ और मेवाड़ वगैरह राजपूतानेकी ख्यातमें लिखी है. लेकिन् फ़ार्सी तवारीख़ोंमें नहीं मिलती.

(३) इसकी छत्री चित्तौड़में अन्नपूर्णाके मन्दिरके पास दक्षिणी तरफ़ अवतक मौजूद है, और उसे सीसोदिया अपना वुज़ुर्ग मानकर पूजते हैं.

भोजराज, जिससे भोजराजोत राठौड़ कहलाये. रणमलका ९ वां- वेटा मंडला, जिससे मंडलावत मश्हूर हुए, जो बीकानेरके इलाकेमें हैं. रणमलका १० वां- वेटा पाता, जिसके पातावत; ११ वां- रूपा, जिसके रूपावत; १२ वां- कर्ण, जिसके कर्णोत; १३ वां- सांडा, जिसके सांडावत; १४ वां- मांडण, जिसके मांडणोत; १५ वां- नाथा, जिसके नाथोत; १६ वां- ऊदा, जिसके ऊदावत; १७ वां- वैरा, जिसके वैरावत; १८ वां- हापा; १९ वां- अडमाल; २० वां- सावर, २१ वां- जगमाल, इसका वेटा खेतसी, जिससे खेतसिंहोत हुए; २२ वां- शक्ता; २३ वां- गोपा; २४ वां- चन्द (१).

२४ राव जोधा.

इनका जन्म विक्रमी १४७२ वैशाख कृष्ण १४ [हिज्री ८१८ ता० २७ मुहर्रम = ई० १४१५ ता० ९ एप्रिल] को हुआ था, और राव रणमलके मारेजाने बाद यह चित्तौड़से भागकर वहुत दिनों तक रेगिस्तान (मरुस्थल) में फिरता रहा, और मंडोवरपर रावत् चूंडाने क़ब्ज़ा करलिया, जो कुछ अर्से वाद इसके तह्तमें आया. राव जोधाने विक्रमी १५१५ ज्येष्ठ शुक्ल ११ शनिवार [हिज्री ८६२ ता० १० रजब = ई० १४५८ ता० २५ मई] को जोधपुर शहर और क़िलेकी नीव डाली. विक्रमी १५४५ वैशाख शुक्ल ५ [हिज्री ८९३ ता० ३ जमादियुल अव्वल = ई० १४८८ ता० १८ एप्रिल] को राव जोधाने इस दुन्याको छोड़ा. इनके १७ वेटे थे, १-सांतल, २-सूजा, ३-बीका (२), ४-नींवा, ५-कर्मसी, ६-रायसाल, ७वां-वनवीर, ८वां-बीदा, ९वां-जोगा, १०वां-भारमल, ११वां-दूदा, १२वां-वरसिंह, १३वां-सामन्तसिंह, १४वां-शिवराज, १५वां-जशवन्त, १६वां-कूंपा और १७वां-चान्दराव था.

२५ राव सांतल.

राव जोधाका बड़ा वेटा सांतल गद्दीपर वैठा. अजमेरके सूबहदारसे कोशाणा गांवमें राव सांतलकी लड़ाई हुई, सूबहदार अजमेरके साथ घड़ूला नामी कोई मश्हूर

(१) राव रणमलके वेटोंके नाम मुख्तलिफ़ तौरपर हैं, लेकिन् हमने ये मौतवर ख्यातकी पोथीसे लिखा है, जो कविराज मुरारिदानने भेजी है.

(२) बीकानेरकी तवारीख़में बीकाको दूसरे नम्बरपर लिखा है, और राव सांतलके वाद बीका जोधपुर लेनेको इसी मत्लबसे गया था, कि अव मैं हक़दार हूं; यह ज़िक्र बीकानेरके हालमें लिखागया है; लेकिन् जोधपुरकी तारीख़में वह सूजासे छोटा तहरीर है.

आदमी था, जिसको राव सांतलने मार लिया, और खुद भी मुसल्मानोंसे लड़कर विक्रमी १५४८ चैत्र शुक्ल ३ (१) [हिज्री ८९६ ता० १ जमादियुल अव्वल = ई० १४९१ ता० १३ मार्च] को मारेगये. कोशाणाके तालावपर इनकी छत्री मौजूद है. सांतलके कोई लड़का नहीं था, इसलिये उनके छोटे भाई गद्दीपर विठाये गये, और सांतलके नामपर सांतलमेर आवाद हुआ.

२६ राव सूजा.

इनका जन्म विक्रमी १४९६ भाद्रपद कृष्ण ८ [हिज्री ८४३ ता० २२ सफ़र = ई० १४३९ ता० ३ ऑगस्ट] को हुआ था; राव बीकाने बीकानेरसे फ़ौज लेकर जोधपुरमें राव सूजाको आघेरा, लेकिन् सुलह होनेके बाद वापस लौट गया. राव सूजा विक्रमी १५७२ कार्तिक कृष्ण ९ [हिज्री ९२१ ता० २३ शअ्‌वान = ई० १५१५ ता० २ ऑक्टोवर] को मर गये. इनके ९ बेटे थे; १- वाघा, विक्रमी १५१४ वैशाख कृष्ण ३० [हिज्री ८६१ ता० २९ जमादियुल अव्वल = ई० १४५७ ता० २५ एप्रिल] को पैदा हुआ, और विक्रमी १५७१ भाद्रपद शुक्ल १४ [हिज्री ९२० ता० १३ रजव = ई० १५१४ ता० ३ सेप्टेम्वर] को वापके साम्हने ही मर गया, इसका वेटा १- वीरम, २- गांगा था, जिनमेंसे पिछला सूजाके बाद जोधपुरका मालिक हुआ; वाघाका ३- वेटा खेतसी; ४- प्रतापसिंह था. राव सूजाका २- वेटा नरा; ३- शेखा; ४- देवीदास; ५- ऊदा; इससे ऊदावत (२) कहलाये; ६- प्राग; ७- सांगा; ८- पृथूराव; ९- नापा था.

२७ राव गांगा.

इनका जन्म विक्रमी १५४० वैशाख शुक्ल ११ [हि० ८८८ ता० ९ रबीउल अव्वल = ई० १४८३ ता० १८ एप्रिल] को हुआ. राव सूजाके बाद वीरमको गद्दीपर विठाना चाहते थे, लेकिन् वीरम और उनकी माकी मग़रूरीसे

---

(१) हर साल जोधपुरमें अब तक इसी चैत्र शुक्ल ३ के दिन घडूलाका मेला होता है.

(२) इसकी औलादमें रायपुर वगैरहका ठिकाना है.

उसको महरूम रखकर सर्दारोंने गांगाको गद्दीपर बिठा दिया. यह राव गांगा अपने दादाकी ज़िन्दगीमें भी चित्तौड़के महाराणा सांगाके पास रहा था. जब विक्रमी १५७६ [हि० ९२५ = ई० १५१९] में महाराणा सांगाने ईडरके राव भीमदेवके बेटे राव रायमल्लकी मददपर चढ़ाई की, और गुजरातका बहुतसा हिस्सह लूटा, उस वक्त राव गांगा उनके शरीक थे. विक्रमी १५८६ [हि० ९३५ = ई० १५२९] में नागौरके हाकिम दौलतखांपर, जो गांगाके भाई शैखाकी मददको आया था, लड़ाईमें फ़त्ह पाई, बहुतसा अस्बाब लूट लिया, और शैखा भागकर चित्तौड़ चला आया, जो गुजराती बहादुरशाहकी लड़ाईमें मारा गया.

विक्रमी १५८८ (१) ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि० ९३७ ता० ३ शव्वाल = ई० १५३१ ता० २१ मई] को राव गांगाका इन्तिकाल हुआ, जिसकी हक़ीक़त इस तरहपर है:- राव गांगा महलके झरोखेपर अफ़ीमकी पीनकमें गाफ़िल हो रहे थे, कि उस वक्त उनके बड़े बेटे मालदेवने नीचे गिरा दिया, और वे मर गये. इनके ६ बेटे थे, १- मालदेव, २- मानसिंह, ३-वैरीशाल, ४- कृष्णसिंह, ५-सार्दूलसिंह, और ६- कानसिंह.

---

२८ राव मालदेव.

राव मालदेवका जन्म विक्रमी १५६८ पौष कृष्ण १ [हि० ९१७ ता० १४ रमज़ान = ई० १५११ ता० ४ डिसेम्बर] को हुआ था. यह गद्दीपर बैठनेके बाद अपने भाई वीरमदेवसे सोजतमें कई वार लड़े; आख़िरकार सोजतसे उसे निकाल दिया; और वीरा सींधलको मारकर भाद्राजून लेली. विक्रमी १५९२ [हि० ९४२ = ई० १५३५] में मुसल्मानोंसे नागौर (२) छीन लिया. महाराणा उदयसिंहकी मददके लिये बनवीरकी लड़ाईके वक्त मारवाड़की तवारीख़में राठौड़ कूंपा वगैरहको भेजना लिखा है, लेकिन् मेवाड़की तवारीख़ोंमें इस बातका कुछ ज़िक्र

---

(१) यह संवत् चैत्री हो, तो ठीकही है, और अगर मारवाड़के रवाजसे है, तो विक्रमी १५८९ चैत्रीका ज्येष्ठ शुक्ल ५ होगा.

(२) नागौरमें गुजराती बादशाहोंकी तरफ़के मुलाज़िम रहते थे; मारवाड़की तवारीख़में उस हाकिमका नाम नागौरीख़ां लिखा है, लेकिन् यह नाम नागौरके ख़ान (حاکم ناگور) से बिगड़कर बना मालूम होता है, नाम शायद उसका कुछ और होगा.

नहीं है. विक्रमी १५९५ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० ९४५ ता० २२ मुहर्रम = ई० १५३८ ता० २० जून] को डूंगरसिंह जेतमालोतसे सिवानाका किला लेकर मांगलिया देवा भादावतको किलेदार बनाया.

विक्रमी १५९८ [हि० ९४८ = ई० १५४१] में राव मालदेवने बीकानेरपर फ़ौज भेजी, और राव जैतसीको मारकर मुल्क जांगलूपर क़ब्ज़ा करलिया; जिसके इन्आममें कूंपाको झूंझनूंका पट्टा दिया. यह हाल तफ़्सीलवार बीकानेरके इतिहासमें लिखआये हैं. विक्रमी १५९९ आषाढ़ शुक्ल १५ [हि० ९४९ ता० १४ रबीउल् अव्वल = ई० १५४२ ता० २८ जून] को हुमायूं बादशाह शेरशाहसे तंग होकर सिन्धकी तरफ़से देवरावलमें आया, और श्रावण कृष्ण ६ [हि० ता० २० रबीउल् अव्वल = ई० ता० ४ जुलाई] को बासिलपुर, और भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० ता० १७ रबीउस्सानी = ई० ता० ३० जुलाई] को बीकानेरसे १२ कोसपर, और वहांसे फलौदी व जोगी तालाब (१) पर पहुंचा. हुमायूं शाहको राव मालदेवने बुलाकर अपनी पनाहमें रखना चाहा था, लेकिन् वह यह बात सुनकर, कि बादशाहके साथियोंने गाय मारी है (२), नाराज़ हुआ. हुमायूंको भी उसकी नाराज़गीका हाल मालूम होगया, तब वह डरकर सांभर, सातलमेर और जयसलमेर होता हुआ उमरकोट चला गया.

राव मालदेवने बीकानेर और मेड़ता अपने भाइयोंसे छीन लिया था, जिससे बीकानेरका राव कल्याणमल्ल और मेड़तेका राव वीरमदेव शेरशाहके पास दिल्ली पहुंचे, और मददके लिये उसको ले आये; वह मए फ़ौजके अजमेर पहुंचा. यह ख़बर

---

(१) जहां अब कृष्णगढ़ शहर आबाद है.

(२) राजपूतानहकी तवारीख़ोंमें मश्हूर है, कि हुमायूंने गाय मारी, इस सबबसे मालदेवने नाराज़ होकर बादशाहको कह दिया, कि हमारे देशमेंसे चले जाओ, नहीं तो मारे जाओगे. अक्बरनामह, तबक़ात अक्बरी, तारीख़ फ़िरिश्तह वगैरह तवारीख़ोंमें यह बात नहीं लिखी. लेकिन् हमारी रायमें राजपूतानहकी तवारीख़ोंका क़ौल सहीह मालूम होता है, क्योंकि अक्बर जौहर आफ़्ताबची, जो हुमायूंके साथ था, लिखता है, कि जब बादशाह जयसलमेरके इलाक़ेमें पहुंचा, तब रावलकी तरफ़से दो क़ासिद आये. जिन्होंने अर्ज़ किया, कि राजा मालदेवने आपको बुलाया था, और उसके मुल्कमें गाय भी नहीं मारी, हमारे इलाक़ेमें आकर गाय मारी गई, यह अच्छा काम न हुआ; इसलिये हम तुम्हारा रास्ता रोकते हैं.

इस कलामसे साबित होता है, कि हुमायूं और उनके साथियोंको गाय मारनेमें कुछ नुक़्सान मालूम न था, इसलिये उनने मारवाड़में भी मारी होगी; जयसलमेरके क़ासिदोंने हुमायूंको ज़ियादह क़ुसूरवार दिखलानेके लिये ऐसा कहा होगा.

सुनकर मालदेवने अपने सर्दारोंको बुलाया; उन लोगोंने क़ासिदोंको बधाई (१) का इन्आम दिया.

सब लोगोंको साथ लेकर राव मालदेव अजमेरकी तरफ़ रवाना हुए; अस्सी हज़ार फ़ौज शेरशाहके पास और पचास हज़ार राव मालदेवके पास थी. बादशाहका डेरा गांव समेलमें और रावका मक़ाम गीररी गांवमें था. शेरशाहको मालदेवकी बड़ी फ़ौज देखकर हैरानी हुई; तब बीरमदेव मेड़तियाने कहा, कि आपको कुछ फ़िक्र नहीं करनी चाहिये, हम इसका इलाज करते हैं. बादशाहसे कई फ़र्मान मालदेवके सर्दारोंके नाम इस मज़्मूनके लिखवाये, कि तुम लोगोंकी अर्ज़ियां राव मालदेवके ज़ियादह तक्लीफ़ देनेसे उसको गिरिफ़्तार करा देनेके मत्लबकी आईं; सो जमा ख़ातिर रखनी चाहिये; जब मालदेवको गिरिफ़्तार करादोगे, तब तुम्हें इक़ारके मुवाफ़िक़ जागीरें दी जायंगी.

इस तरहके फ़र्मान ढालकी गादियोंमें सिलवाये, और ढालें अपने आदमीको सौदागर बनाकर मालदेवके सर्दारोंके हाथ कम क़ीमतपर बेच दीं. बीरमदेवने अपना आदमी भेजकर मालदेवको ख़ानगीमें कहलाया, कि अगर हम आपके बर्ख़िलाफ़ हैं, तो भी अपनी और आपकी एक इज़्ज़त जानकर होश्यार करते हैं, कि आपके सर्दार कूंपा, जैता, वग़ैरह बादशाहसे मिलगये हैं; एतिबार न हो, तो इनकी ढालोंकी गादियोंमें बादशाही फ़र्मान मौजूद हैं, उनको देख लीजिये. यह सुनकर मालदेवने ढालोंकी गादियोंमेंसे काग़ज़ निकलवाकर देखे, और घबराया; तो कूंपा व जैता वग़ैरहने बहुतसा समझाया, पर विश्वास न आया, और भाग निकला; तब कूंपा, खींवां व जैता वग़ैरहने विचारकर बादशाहकी फ़ौजपर धावा किया. इस लड़ाईमें दो हज़ार राठौड़ और बहुतसे बादशाही आदमी मारेगये. यह लड़ाई विक्रमी १६०० पौष शुक्ल ११ [हि० ९५० ता० १० शव्वाल = ई० १५४४ ता० ५ जैन्युअरी] को हुई. इस लड़ाईमें, जो मारवाड़ी सर्दार काम आये, उनकी तफ़्सील नीचे लिखी जाती है:-

---

(१) खुशीकी ख़बरको बधाई बोलते हैं, राजपूतानहमें राजपूत लोग लड़ाईकी ख़बरको खुश ख़बरी मानकर इन्आम देते थे, और यह ख़याल करते थे, कि हम बीमारीसे नहीं मरें, लड़ाईमें मारे जाकर दूसरी दुन्याका आराम हासिल करें. इन लोगोंका अब तक अक़ीदह है, कि लड़ाईमें मारे जाने बाद परियां फूलकी माला लेकर आती हैं और मरने वालेके गलेमें डाल कर उसे अपना ख़ाविन्द बनाती हैं, फिर दोनों मिलकर दूसरी दुन्यामें आरामके साथ रहते हैं.

(१) राठौड़ जैता पचांयणोत. (२) राठौड़ उदयसिंह, जैतावत.
(३) राठौड़ जोगा, रावल अखैराजोत. (४) राठौड़ वीरसी, राणावत.
(५) राठौड़ वीदा, भारमलोत. (६) राठौड़ हामा, सिंहावत.
(७) रणमल्ल. (८) राठौड़ भद्दो, पचांयणोत.
(९) वीदा, पर्वतोत. (१०) सूरा अखैराजोत.
(११) राठौड़ हरपाल. (१२) सोनगरा अखैराज, रणधीरोत (१)
(१३) राठौड़ कूंपा, महराजोत. (१४) राठौड़ खींवां, ऊदावत.
(१५) राठौड़ पत्ता, कान्हावत. (१६) राठौड़ सुजानसिंह, गांगावत.
(१७) राठौड़ कल्ला, सुरजणोत. (१८) राठौड़ रायमल्ल, अखैराजोत.
(१९) राठौड़ भोजराज, पचांयणोत. (२०) राठौड़ जयमल्ल.
(२१) राठौड़ भवानीदास. (२२) राठौड़ नींवा, आनन्दोत.
(२३) सोनगरा भोजराज, अखैराजोत. (२४) भाटी पचांयण, जोधावत.
(२५) भाटी मेरा, अचलावत, (२६) भाटी कल्याण, आपलोत.
(२७) भाटी सूरा, पातावत. (२८) भाटी नींवा, पातावत.
(२९) देवड़ा अखैराज़, वनावत. (३०) ऊहड़ सुर्जन, नरहरदासोत.
(३१) सांखला धनराज, (३२) ईंदा किशर्ना.
(३३) जयमल्ल वीदावत, (३४) राठौड़ भारमल्ल, वालावत.
(३५) भाटी गांगा, वरजांगोत, (३६) भाटी हमीर, लक्खावत.
(३७) भाटी माधा, राघोत. (३८) भाटी सूरा, पर्वतोत.
(३९) सोढा नाथा, देदावत. (४०) ऊहड़ वीरा, लक्खावत.
(४१) सांखला डूंगरसिंह, माधावत. (४२) मांगलिया हेमा, नरावत.
(४३) चारण भाना, खेतावत. (४४) पठान अलीदादखां.

शेरशाहने इस लड़ाईके बाद कहा, कि "मैंने एक मुठी बाजरेके एवज़ हिन्दुस्तानकी सल्तनत खोई होती". राव मालदेव पीपलादके पहाड़ोंकी तरफ़ चले गये, और बादशाहने जोधपुरपर क़ब्ज़ा किया. उस वक्त जोधपुरमें भी मालदेवके बहुतसे राजपूत लड़मरे, जिनकी छत्रियां अब तक गढ़पर मौजूद हैं, तवालतके सबब नाम नहीं लिखे गये. इस वक्त राव कल्याणमल्लने बीकानेर, और वीरमदेवने मेड़तेपर क़ब्ज़ह किया. इसके बाद बादशाह चला गया, और राव मालदेवने गांव भांगेसरके

(१) यह अखैराज महाराणा प्रतापसिंहका नाना नहीं है, दूसरा होगा.

थानेपर हम्ला करके बहुतसे बादशाही आदमियोंको मारा, और ख़ज़ानह लूटलिया. विक्रमी १६०२ [हि० ९५२ = ई० १५४५] में राव मालदेवने जोधपुरका क़िला लेलिया.

विक्रमी १६१३ फाल्गुन् [हि० ९६४ रबीउल् अव्वल = ई० १५५७ जैन्युअरी] में जब महाराणा उदयसिंह और हाजीख़ांसे लड़ाई हुई, तब राव मालदेवने हाजीख़ांकी मददके लिये डेढ़ हज़ार सवार भेज दिये थे. मारवाड़ी सर्दार हाजीख़ांको सहीह सलामत जोधपुर ले आये; फिर वह पठान गुजरातको चला गया. यह ज़िक्र महाराणा उदयसिंहके हालमें लिखा गया है- (देखो एष्ठ ७१). इस लड़ाईमें मेड़तेका राव जयमल्ल बीरमदेवोत महाराणा उदयसिंहकी फ़ौजमें था, वह मेड़ते गया, तो राव मालदेवने अदावतसे मेड़ता छीन लिया.

विक्रमी १६१४ फाल्गुन् शुक्ल पक्ष [हि० ९६५ जमादियुल् अव्वल = ई० १५५८ मार्च] में बादशाह अक्बरके सर्दार मुहम्मद क़ासिम नेशापुरीने अजमेर और नागौरपर क़ब्ज़ह करलिया; और इस सर्दार के मातहत सय्यद मुहम्मद बारह और शाहकुलीख़ां महरमने जैतारन फ़त्ह करलिया; राव मालदेवके राजपूत भाग गये. राव बीरमदेवका बेटा जयमल्ल बादशाह अक्बरके पास गया, और बादशाह भी राजपूतानहकी तरफ़ चला. उसने सांभरके मक़ामसे विक्रमी १६१९ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष [हि० ९६९ रमज़ान = ई० १५६२ मई] में मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीनहुसैनको मए जयमल्ल मेड़तियाके मेड़तेपर भेजा. यह क़िला पहिलेसे राव मालदेवने जगमालको देदिया था, जिसकी मददके लिये रावने देवीदासको पांच सौ राजपूतों समेत भेजा; राजपूत मिर्ज़ाकी फ़ौजसे ख़ूब लड़े, कभी कभी बाहर निकलकर भी हम्ला करते थे. एक दिन बादशाही लोगोंने सुरंग लगाकर क़िलेका एक बुर्ज उड़ा दिया; लेकिन् राजपूतोंने बहादुरीके साथ दुश्मनोंको रोका, और रातके वक़ वह बुर्ज पीछा तय्यार करलिया; परन्तु रसदकी कमीके सबब राजपूतोंने सुलह चाही.

इक़ारके मुवाफ़िक़ जगमाल तो अपने बाल बच्चोंको लेकर निकल गया, लेकिन् देवीदास अपना अस्बाब जलाकर बाहर जाता था, कि मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीनहुसैनके हुक्मसे जयमल्ल, लूणकर्ण, शाह बदाग़ख़ां, अब्दुल मुत्तलिब, मुहम्मदहुसैन और सूजा वग़ैरहने हम्ला करदिया; देवीदास भी बहादुरीके साथ पेश आया और ज़ख़्मी होकर घोड़ेसे गिरगया, जो कई वर्षोंके बाद जोगियोंकी जमाअतमें मश्हूर होकर जोधपुरमें आया; जिसका ज़िक्र आगे किया जायगा; इसके सिवाय और भी बहुतसे बहादुर इस लड़ाईमें मारे गये; मेड़ता मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीनहुसैनने जयमल्लके

सुपुर्द किया, लेकिन् विक्रमी १६१९ आश्विन शुक्ल पक्ष [हि० ९७० सफ़र = ई० १५६२ ऑक्टोबर] में मिर्ज़ा शरफुद्दीनहुसैनके बाग़ी होनेपर बादशाहने जयमल्लसे छीनकर जगमालको मेड़ता दिला दिया, और जयमल्ल चित्तौड़ आया, जिसको महाराणा उदयसिंहने एक हज़ार गांवों समेत बदनौरका पट्टा दिया.

राव मालदेवका देहान्त विक्रमी १६१९ कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ९७० ता० ११ रबीउल् अव्वल = ई० १५६२ ता० ९ नोवेम्बर] को हुआ. यह राव तेज़ मिज़ाज, बेरहम, खुद मत्लबी और घमंडी थे, लेकिन् बड़े बहादुर और बलन्द हिम्मत होनेके सबब पहिले सब ऐब रद्द होगये. वह अपने नुक्सानका बदला लेनेको बड़े मुस्तइद थे, और दूसरेकी तारीफ़ पसन्द नहीं करते. मारवाड़का खुद मुख्तार पहिला राजा मालदेवको ही समझना चाहिये, क्योंकि पहिलेके राजा आस्थानसे लेकर राव गांगा तक छोटे इलाक़ेके मालिक रहे; यह राव ब्राह्मण, चारण वग़ैरह पेशवा क़ौमोंकी बहुत ख़ातिर करते थे. इनके ग्यारह पुत्र थे १- रामराज, २- उदयसिंह, ३-चन्द्रसेन, ४- रायमल्ल, ५-भाणा, ६-रत्नसी, ७- भोजराज, ८- विक्रमादित्य, ९- पृथ्वीराज, १०-आशकरण, ११- गोपाल, जिनमेंसे बापके मरने बाद चन्द्रसेन गद्दीपर बैठा.

२९ राव चन्द्रसेन.

राव चन्द्रसेनका जन्म विक्रमी १५९८ श्रावण शुक्ल ८ [हि० ९४८ ता० ६ रबीउस्सानी = ई० १५४१ ता० ३१ जुलाई] को हुआ था. राव मालदेवका सबसे बड़ा बेटा रामराज था, परन्तु उसने अपने बापको दादेकी तरह मारनेका इरादह किया, इसलिये मालदेवने उसको निकाल दिया, तब रामराज अपने ससुर महाराणा उदयसिंहके पास उदयपुर आया; महाराणाने उसको कई गांवों समेत कैलवाका पट्टा दिया. दूसरा उदयसिंह और तीसरा चन्द्रसेन, दोनों महाराणी झाली स्वरूपदेसे पैदा हुए थे, झाली राणीने किसी नाराज़गीसे उदयसिंहको निकलवाकर (१) चन्द्रसेनको वलीअह्द बनाया; जब राव मालदेवका इन्तिक़ाल हुआ, तब चन्द्रसेन जोधपुरकी गद्दीपर बैठे; लेकिन् इनका बड़ा भाई रामराज बादशाह अक्बरके पास पहुंचा, और चन्द्रसेनकी तेज़ मिज़ाजीके सबब उसके राजपूत, रामराज और उदयसिंहसे मेल रखते थे. मारवाड़में आपसकी फूटसे

(१) राव मालदेवने उदयसिंहको निकालने बाद फलोदीकी जागीर उसको दी थी.

ग़द्र होने लगा; गद्दीनशीनीके दूसरे वर्ष ही बादशाही फ़ौजने चन्द्रसेनको जोधपुरसे निकाल कर मारवाड़पर क़ब्ज़ाकर लिया.

चन्द्रसेन वहांसे निकलकर घूमते रहे; अबुल्फ़ज़्ल लिखता है, कि हिज्री ९७८ ता० १६ जमादियुस्सानी [वि० १६२७ मार्गशीर्ष कृष्ण २ = ई० १५७० ता० १५ नोवेम्बर] को चन्द्रसेन नागौरमें बादशाह अक्बरके पास हाज़िर हुआ, फिर बादशाहसे बाग़ी होनेके बाद कुछ दिनों तक सिवानेपर क़ाबिज़ रहा. इसके बाद पहाड़ोंमें डूंगरपुर, बांसवाड़ेकी तरफ़ चलागया; बादशाही लोगोंसे कई लड़ाइयां कीं; आख़िरकार बादशाही थाना काटकर सोजतमें क़ब्ज़ा करलिया और वहीं उसका इन्तिक़ाल हुआ. अबुल्फ़ज़्ल यह भी लिखता है, कि जुलूसी सन् २५ [हिज्री ९८८ ता० २४ मुहर्रम = विक्रमी १६३६ चैत्र कृष्ण १० = ई० १५८० ता० १० मार्च] को, जब चन्द्रसेनने फ़साद उठाया, तब पाइन्दा मुहम्मदख़ां मुग़ल मए दूसरे जागीरदारोंके उसकी तंबीहको तइनात हुआ, जिससे राजाने शिकस्त खाई, और फिर कभी उसका पता नहीं लगा, जिससे उसका मरना ख़याल किया गया. इसीसे मालूम होता है, कि विक्रमी १६३७ [हि० ९८८ = ई० १५८०] व वि० १६३८ [हि० ९८९ = ई० १५८१] के बीचमें उनका देहान्त हुआ होगा. इनके तीन बेटे थे, १– रायसिंह जिसका जन्म विक्रमी १६१४ [हिज्री ९६४ = ई० १५५७] में; २– उग्रसेन जिसका जन्म विक्रमी १६१६ भाद्रपद कृष्ण १४ [हिज्री ९६६ ता० २८ शव्वाल = ई० १५५९ ता० ३ ऑगस्ट] को हुआ; ३– आशकरण जिसका जन्म विक्रमी १६२७ श्रावण कृष्ण १ [हिज्री ९७८ ता० १५ मुहर्रम = ई० १५७० ता० १९ जून] को हुआ था. इन तीनोंमेंसे सब राजपूतोंने मिलकर छोटे आशकरणको गद्दीपर बिठा दिया, जिससे उग्रसेनने फ़साद किया; तो राजपूतोंने दोनों भाइयोंको आपसमें समझाया, लेकिन् उग्रसेन दिलसे नाराज़ था, जिससे विक्रमी १६३८ चैत्र शुक्ल २ [हि० ९८९ ता० १ सफ़र = ई० १५८१ ता० ७ मार्च] के दिन उसने आशकरणको मारडाला, और उसके राजपूतोंने उग्रसेनका भी काम तमाम किया. रायसिंह, जो बादशाह अक्बरके पास था, यह ख़बर सुनकर सोजतमें आया और अपने बापकी गद्दीपर बैठा.

सिरोहीके राव सुल्तानपर बादशाह अक्बरने महाराणा उदयसिंहके बेटे जगमालको फ़ौज देकर रायसिंहके साथ भेजा. विक्रमी १६४० कार्तिक शुक्ल ११ [हि० ९९१ ता० ९ शव्वाल = ई० १५८३ ता० २७ ऑक्टोबर] को ये दोनों मारेगये. इन तीनों भाइयोंमेंसे उग्रसेनके तीन बेटे थे, १– कर्मसेन, २– कल्याणदास, ३– कान्ह; कर्मसेनकी औलादमें अजमेरके मातहत भिणायके राजा हैं.

३० राजा उदयसिंह (मोटा राजा).

इनका जन्म विक्रमी १५९४ माघ शुक्ल १२ रविवार [हिज्री ९४४ ता० १० शअ़्बान = ई० १५३८ ता० १३ जेन्युअरी] को हुआ था, ये विक्रमी १६२७ [हिज्री ९७८ = ई० १५७०] में अक्बरकी तावेदारीमें हाज़िर हुए, और विक्रमी १६३५ चैत्र शुक्ल [हिज्री ९८६ मुहर्रम = ई० १५७८ मार्च] में सादिक़ख़ांके साथ राजा मधुकर बुन्देलेकी तंबीहके वास्ते मुक़र्रर हुए. इनको बादशाह अक्बरने "राजा" का ख़िताब और जोधपुरका क़िला दिया. विक्रमी १६३९ चैत्र कृष्ण १ [हिज्री ९९१ ता० १५ सफ़र = ई० १५८३ ता० ९ मार्च] को मिर्ज़ाख़ां (ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीम), बीरमख़ांके बेटेके साथ गुजरातकी सफ़ाई करने और मुज़फ़्फ़र गुजरातीका फ़साद मिटानेको गये. विक्रमी १६४० भाद्रपद कृष्ण १२ [हिज्री ९९१ ता० २६ रजब = ई० १५८३ ता० १५ ऑगस्ट] को जोधपुरमें आकर गद्दीपर बैठे.

विक्रमी १६४४ [हिज्री ९९५ = ई० १५८७] में इन्होंने अपनी बेटी मानबाई (१) की शादी शाहज़ादह सलीम (जहांगीर) के साथ की; यह बात कल्ला रायमलोतको बुरी मालूम हुई; और उसने फ़साद करना चाहा, लेकिन् बादशाही दबावसे भागकर सिवाने चलाआया; राजा उदयसिंह भी पीछेसे बादशाही फ़ौज लेकर चढ़ा; विक्रमी १६४५ [हिज्री ९९६ = ई० १५८८] में कल्ला इस लड़ाई में मारागया, जिसकी औलाद लाडणू वग़ैरह गांवोंमें है. फिर इन्होंने बादशाही फ़ौज लेकर विक्रमी १६४८ फाल्गुन् शुक्ल ७ [हि० १००० ता० ५ जमादियुल आख़र = ई० १५९२ ता० २० फेब्रुअरी] को बादशाह अक्बरसे बिदा होकर सिरोहीके राव सुल्तानपर चढ़ाई की और फ़त्ह पाई.

राजा उदयसिंहका इन्तिक़ाल विक्रमी १६५२ आषाढ़ शुक्ल १५ [हि० १००३ ता० १४ ज़िल्क़ाद = ई० १५९५ ता० २३ जुलाई] को लाहौरमें हुआ. यह राजा शुरूअ़में बहादुर थे, लेकिन् बदनके भारी होनेसे बेकार होगये; राव मालदेवके पीछे भाइयोंके फ़सादसे मारवाड़का कुल मुल्क क़ब्ज़ेसे निकल गया था, जिसमेंसे कुछ पर्गने बादशाह अक्बरकी मिहर्बानियोंसे हासिल किये; और एक हज़ारी ज़ात व सवारके मन्सब

---

(१) अक्बर नामहमें मानमती, और बादशाह जहांगीरने तुज़क जहांगीरीमें जगत् गुसांयन लिखा है; शायद यह ख़िताबी नाम होगा, जिसका अर्थ जगत्की मालिक है.

तक पहुंचे थे. इनको "मोटा राजा" बदनके मोटा पनसे बादशाहने कहा होगा, जिससे यह नाम मश्हूर हुआ. दूसरा सबब यह भी है, कि इन्होंने चारणोंके कुल गांवोंपर विक्रमी १६४३ [हि० ९९४ = ई० १५८६] में इस ग़रज़से ज़ब्ती भेज दी थी, कि कुछ रुपये वुसूल करें, जिसपर दो हज़ार चारण तागा (खुद कुशी) करके मरगये; उन चारणोंमेंसे नामी और मश्हूर दुर्सा आढ़ा था, उसने भी अपने गलेमें छुरी मारी थी, जब वह बादशाहके पास गया, और दर्याफ़्त करनेपर सब हाल अर्ज़ किया, तो जितने राजा व राजपूत वहां खड़े थे, सबने राजा उदयसिंहकी हिक़ारत की; तब बादशाहने फ़र्माया, कि ऐसे आदमीका नाम ज़बानपर लाना ठीक नहीं, उसी वक़्से "मोटा राजा" कहने लगे; जिससे दोनों मत्लब निकलते हैं, याने एक तो मोटा बदन देखकर, दूसरा तानेसे "मोटा (बड़ा) राजा" मश्हूर हुआ, जैसे कि अक्सर लोग किसी बुरे आदमीको बाज़ मौक़ेपर "भला आदमी" या "बड़ा आदमी" कहते हैं.

इस राजाके १६ बेटे थे, १- नरहरदास, जो विक्रमी १६१३ माघ कृष्ण १ [हि० ९६४ ता० १५ सफ़र = ई० १५५६ ता० १९ डिसेम्बर] को पैदा हुआ, २- भगवानदास, विक्रमी १६१४ आश्विन कृष्ण १४ [हि० ९६४ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १५५७ ता० २३ सेप्टेम्बर] को, ३- शक्तिसिंह विक्रमी १६२४ [हि० ९७४ = ई० १५६७] में, ४- दलपत विक्रमी १६२५ श्रावण कृष्ण ९ [हि० ९७६ ता० २३ मुहर्रम = ई० १५६८ ता० २१ जुलाई], ५- भोपतसिंह विक्रमी १६२५ कार्तिक शुक्ल ६ [हि० ९७६ ता० ४ जमादियुल अव्वल = ई० १५६८ ता० २९ ऑक्टोबर], ६- सूरसिंह विक्रमी १६२७ वैशाख कृष्ण ३० [हि० ९७७ ता० २९ शव्वाल = ई० १५७० ता० ४ एप्रिल] को, ७- मोहनदास विक्रमी १६२८ [हि० ९७९ = ई० १५७१], ८- कृष्णसिंह वि० १६३९ ज्येष्ठ कृष्ण २ [हि० ९९० ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १५८२ ता० १० मई] को हुआ, ९- अभयराज, १०- तेजसी, ११- माधवसिंह, १२- कीर्तिसिंह, १३- जशवन्तसिंह, १४- करणमल्ल, १५- केशवदास और १६- रामसिंह था.

३१ राजा सूरसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १६२७ वैशाख कृष्ण ३० [हिज्री ९७७ ता० २९ शव्वाल = ई० १५७० ता० ४ एप्रिल] को हुआ था. इनको बादशाहने लाहौरमें उदयसिंहकी जगह

क़ाइम किया, दूसरे बेटे इनसे बड़े थे, लेकिन् राजा उदयसिंहने सूरसिंहकी माके लिहाज़से (जिससे कि वह बहुत खुश थे) बादशाहसे कहदिया था, कि मेरी जगहपर सूरसिंहको क़ाइम करना चाहिये, इससे अक्बरशाहने सूरसिंहको जोधपुरका राजा बनाया. विक्रमी १६५३ [हि० १००५ = ई० १५९६] में बादशाह अक्बरका शाहज़ादह सुल्तान मुराद गुजरातकी हुकूमतपर मुक़र्रर हुआ, उसके साथ सूरसिंह भी थे. जब गुजरातके जागीरदार लोग शाहज़ादह मुरादके साथ दक्षिणकी मुहिमपर चले गये, और मुज़फ़्फ़र गुजरातीके बड़े बेटे बहादुरने गंवारोंकी जमइयत इकट्ठी करके वहांके गांवोंको लूटना शुरूअ् किया, तब यह उसके मुक़ाबलेके वास्ते अहमदाबादसे निकले; जब दोनों तरफ़की फ़ौजें तय्यार होगईं, बहादुर कम हिम्मतीसे भाग गया. सुल्तान मुरादके मरने बाद विक्रमी १६५४ [हि० १००६ = ई० १५९७] में दक्षिणकी हुकूमत सुल्तान दानयालके नाम हुई; तब सूरसिंह भी उसके साथ भेजेगये, और शाहज़ादहने राजू दक्षिणीकी तंबीहके वास्ते दौलतखां लोदीके साथ सूरसिंहको भेजा. विक्रमी १६५९ ज्येष्ठ कृष्ण ३० [हि० १०१० ता० २९ ज़िल्क़ाद = ई० १६०२ ता० २१ एप्रिल] को ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमके साथ खुदावन्दखां हबशीकी तंबीहके वास्ते, जिसने कि पालम वगैरहमें फ़साद उठा रक्खा था, रुख़्सत हुआ; राजाने उस सूबेमें सर्कारकी ख़ातिरख़्वाह ख़िद्मत की थी, इसको शाहज़ादह दानयाल और ख़ानख़ानांकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ नक़ारा इनायत हुआ.

विक्रमी १६६५ चैत्र शुक्ल १३ [हि० १०१६ ता० १२ ज़िल्हिज = ई० १६०८ ता० २९ मार्च] को सूरसिंह बादशाह जहांगीरके हुज़ूरमें हाज़िर हुए. और उसी सन् में बादशाहके चौथे जुलूसपर अस्ल और इज़ाफ़ह मिलाकर चार हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब पाया, और मन्सबदारोंके साथ दक्षिणके सूबहदार ख़ानख़ानांकी मददको मुक़र्रर होकर वहां भेजे गये. बादशाह जहांगीरके वक़्में उदयपुरकी लड़ाईमें महाबतख़ांने सोजतका पर्गनह छीन लिया, लेकिन् विक्रमी १६६८ [हि० १०२० = ई० १६११] में अब्दुल्लाख़ां फ़ीरोज़जंगने फिर इन्हींको देदिया. महाराजाका मुसाहिब गोविन्ददास भाटी था, पहिले कुल राठौड़ महाराजाके साथ भाई चारेके हक़से बराबरीका दावा रखते थे. गोविन्ददासने नीचे लिखे मुवाफ़िक़ रियासतका इन्तिज़ाम किया:- दीवान, बख़्शी, ख़ानसामां, हाकिम, कारकुन, दफ़्तरी, दारोग़ा, फ़ोतहदार, वाक़िअह नवीस वगैरह बनाये: राव रणमल्ल, राव जोधा, सूजा, गांगा, मालदेव और उदयसिंहकी औलाद वाले, जो सब बराबरीका दावा रखते थे, उनको ताबेदार करके दर्बारमें

दाहिनी, बाईं तरफ़ बैठनेका तरीक़ा चलाया; दाहिनी तरफ़ राव रणमल्लकी औलादमेंसे आउवाके चांपावतोंको और बाईं तरफ़ राव जोधाकी औलादमेंसे रीयांके मेड़तियोंको अव्वल नम्बर क़ाइम किया; शादी ग़मीमें उमराव, भाई, बेटोंकी औरतोंका रिश्तहदारीके हक़से ज़नानख़ानहमें जानेका तरीक़ह बन्द किया; ख़वास, पासवान दरजे बदरजे बनाये; महाराजाकी ढाल, तलवार रखनेका काम खीचियोंको, और चंवर करनेकी ख़िद्मत धांधलोंको सौंपी; ग़रज़ इस तरह सब रियासती ढंग बनाया. यह बात महाराजा सूरसिंहके भाइयोंको नागुवार मालूम हुई. जब बादशाह जहांगीर उदयपुरके महाराणा अमरसिंहपर चढ़ाई करके अजमेर आया, तब दक्षिणसे सूरसिंहको भी बुलाकर पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया; और शाहज़ादह ख़ुर्रमके मातह्त उदयपुर भेजा; शाहज़ादहने उनको बड़ी सादड़ीके थानेपर तईनात किया. मेवाड़की लड़ाई ख़त्म होने बाद विक्रमी १६७२ ज्येष्ठ शुक्ल ८ [हि० १०२४ ता० ६ जमादियुल्अव्वल = ई० १६१५ ता० ६ जून] को राजा सूरसिंहके भाई राजा कृष्णसिंहने गोविन्ददास भाटीको मार डाला, क्योंकि पहिले गोविन्ददासने भगवानदास उदयसिंहोतके बेटे गोपालदासको मारा था; राजा कृष्णसिंह भी इसी झगड़ेमें मारा गया. इस मारिकेका ज़िक्र तफ़्सीलवार कृष्णगढ़के इतिहासमें लिखा गया है. इसके बाद महाराजा सूरसिंह दो महीनेकी रुख़्सत लेकर जोधपुर आये. दोबारह अपने कुंवर गजसिंह समेत बादशाही हुज़ूरमें पहुंचे, और दक्षिणकी तरफ़ भेजे गये.

विक्रमी १६७६ भाद्रपद शुक्ल ९ [हिज्री १०२८ ता० ७ शव्वाल = ई० १६१९ ता० १९ सेप्टेम्बर] को दक्षिणमें महेकरके थानेपर सूरसिंहका इन्तिक़ाल हुआ. यह राजा बड़े बहादुर, फ़य्याज़ और मुल्कदारीमें होश्यार थे. इन्होंने अपने मुल्कका इन्तिज़ाम बहुत अच्छा किया, जिनके बांधे हुए तरीक़े मारवाड़में अब तक जारी हैं. राव मालदेवके सिवाय मारवाड़का पूरा राजा इन्हींको कहना चाहिये, लेकिन् इतना फ़र्क़ है, कि मालदेवने आज़ादीकी हालतमें मुल्क बढ़ाया, और इसके सिवाय वह ज़ालिम व मग़्रूर भी था; यह दूसरेकी ताबेदारीमें बढ़े, और सख़्त मिज़ाजीमें भी बढ़कर नहीं थे. इनके दो बेटे १- गजसिंह, २- सबलसिंह थे; दूसरेका जन्म विक्रमी १६६४ [हि० १०१६ = ई० १६०७] में हुआ था. इसने अपने बापसे फलौदी और बादशाहसे गुजरातमें जागीर पाई थी; यह विक्रमी १७०३ फाल्गुन् कृष्ण ३ [हि० १०५७ ता० १७ मुहर्रम = ई० १६४७ ता० २३ फ़ेब्रुअरी] में नौकरके ज़हर दे देनेसे मरगया.

३२ राजा गजसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १६५२ कार्तिक शुक्ल ८ गुरुवार [हि० १००४ ता० ६ रबीउल् अव्वल = ई० १५९५ ता० ११ नोवेम्बर] को हुआ था. राजा सूरसिंहके मरने बाद इनको जहांगीरशाहने तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब, नेज़ा और राजाका खिताब दिया; यह दक्षिणकी फ़ौजमें अपने बापकी जगह महेकरके थानेपर तईनात थे; जब गुजरातकी बाग़ी फ़ौजने इनको आघेरा, तब इन्होंने बड़ी बहादुरीके साथ उन्हें पीछे हटादिया, और दूसरी भी कई लड़ाइयोंमें दक्षिणियोंपर फ़त्ह पाई, जिसपर खुश होकर बादशाह जहांगीरने "दल थंभन" का खिताब और एक हज़ारी ज़ात व सवारके इज़ाफ़ेसे चार हज़ारी ज़ात व तीन हज़ार सवारका मन्सब दिया.

विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] में शाहज़ादह खुर्रम दक्षिणमें भेजा गया, तो यह रुख़्सत होकर जोधपुर आये; फिर बादशाहसे शाहज़ादह खुर्रम बाग़ी हुआ, उसके मुक़ाबलेके लिये शाहज़ादह पर्वेज़ और महाबतखांके साथ विक्रमी १६८० ज्येष्ठ कृष्ण ५ [हि० १०३२ ता० १९ रजब = ई० १६२३ ता० १९ मई] को यह पांच हज़ारी ज़ात, व चार हज़ार सवारका मन्सब पाकर मुक़र्रर हुए, और इनको पहिली तरक़्क़ीके साथ जालौर और दूसरी तरक़्क़ीके साथ फलोदीका पर्गनह मिला; इसी वर्षमें मेड़ता भी मिलगया.

विक्रमी १६८१ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० १०३४ ता० १४ सफ़र = ई० १६२४ ता० २६ नोवेम्बर] को शाहज़ादह पर्वेज़की फ़ौजसे शाहज़ादह खुर्रमका मुक़ाबला हुआ, इस लड़ाईमें राजा गजसिंहने पर्वेज़की मातह्तीमें बड़ी बहादुरी दिखलाई. खुर्रमकी तरफ़ राजा भीम मारागया, और खुर्रम भाग निकला.

विक्रमी १६८४ माघ [हि० १०३७ जमादियुस्सानी = ई० १६२८ फ़ेब्रुअरी] में जहांगीरके बाद शाहजहां बादशाह हुआ; जब शाहजहां आगरेमें आया, तब यह उसी सन् में बादशाहके पास गये; शाहजहांने ख़ास खिल्अ़त, जड़ाऊ जम्धर फूल कटारा समेत, जड़ाऊ तल्वार और पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब जो जहांगीरके अह्दमें था, निशान, नक़ारह, घोड़ा ख़ास सुनहरी ज़ीन समेत और ख़ास हल्क़ेका हाथी दिया. विक्रमी १६८६ फाल्गुन् कृष्ण ६ [हि० १०३९ ता २० जमादियुस्सानी = ईसवी १६३० ता० ३ फ़ेब्रुअरी] को ख़ानेजहां लोदी सर्कशीसे निज़ामुल्मुल्क दक्षिणीके पास भागकर चलागया; तब बादशाहने निज़ामुल्मुल्क वग़ैरहकी बर्बादीके वास्ते

राजधानीसे दक्षिण जानेका इरादह किया, और तीनों फ़ौजें तीन अमीरोंकी सर्दारीसे तज्वीज़ हुईं, एक फ़ौजके सर्दार यह राजा मुक़र्रर होकर दक्षिणके सूबहदार आज़मख़ांके साथ रुख़्सत हुए. विक्रमी १६८७ पौष [हि० १०४० जमादियुस्सानी = ई० १६३१ जैन्युअरी] में, जब आसिफ़ख़ां, आदिलख़ांकी तंबीहके वास्ते मुक़र्रर हुआ, यह उसकी हरावलमें थे; वहांसे लौटकर अपनी राजधानीको चले आये. विक्रमी १६८९ पौष [हि० १०४२ जमादियुस्सानी = ई० १६३२ डिसेम्बर] में बादशाही हुज़ूरमें गये, दोबारह ख़ास ख़िल्अ़त और सुनहरी ज़ीन समेत घोड़ा इनायत हुआ. विक्रमी १६९३ कार्तिक [हि० १०४६ जमादियुस्सानी = ई० १६३६ नोवेम्बर] में घर जानेकी रुख़्सत पाई.

वि० १६९४ कार्तिक [हि० १०४७ जमादियुस्सानी = ई० १६३७ नोवेम्बर] में यह अपने बेटे जशवन्तसिंह समेत बादशाही दर्बारमें हाज़िर हुए, जहां इनको बीमारी हुई, और वि० १६९५ ज्येष्ठ शुक्ल ३ [हि० १०४८ ता० २ मुहर्रम = ई० १६३८ ता० १७ मई] को आगरे में देहान्त होगया. यह राजा फ़य्याज़ी, सख़ावत और दिलेरीमें बड़े मश्हूर थे; इन्होंने चौदह लाख पशाव (१) नीचे लिखे लोगोंको दिये :-

(१) चारण भादा अजा, कृष्णावत.
(२) चारण आढ़ा दुर्सा, मेहराजोत.
(३) चारण आढ़ा कृष्णा, दुर्सावत.
(४) चारण बारहठ राजसी, अखावत.
(५) चारण महडू कल्याणदास, जाड़ावत.
(६) चारण संडायच हरीदास, वाणावत.
(७) चारण कविया पचांयण.
(८) चारण दधिवाड़िया जीवराज, जयमलोत.
(९) भाट मनोहर.
(१०) बारहठ राजसी, प्रतापमलोत.
(११) चारण कविया भवानीदास, नाथावत.
(१२) चारण केसा, मांडण.
(१३) भाट गोकलचन्द, ताराचंदोत.
(१४) सामोर हेमराज.

---

(१) राजपूतानामें लाख पशाव देनेका यह क़ाइदह है, कि पांच हज़ार का ज़ेवर अपने पहननेका, पांच हज़ारका ज़ेवर घोड़े हाथियोंका और एक हाथी व घोड़े जो दो से कम न हों, और नक्द पच्चीस हज़ारसे लेकर पचास हज़ार तक, बाक़ीके एवज़में गांव एक हज़ार रुपये सालानहकी आमदनीसे पांच हज़ार रुपये सालानह तककी आमदनीका दियाजाता है; और उस कविको हाथीपर राजा खुद हाथ पकड़कर सवार करता है; बाज़ वक़् अपने कन्धेपर कविका पैर दिलाकर भी चढ़ाते थे, और जलेब में मर्ज़ी हो, तो कुछ दूर तक राजा चले, वर्नह अपने बड़े सर्दार या प्रधानको मकान तक जलेबमें भेजे, यह बर्ताव राजाकी मर्ज़ीपर कम या ज़ियादह होसक्ता है; लेकिन दानमें कमी करने का क़ाइदह नहीं है.

इसके सिवाय और भी कई वार चारणोंको लाख पशाव वगैरह दिया; इन्होंने मुल्की इन्तिज़ाम अच्छा किया; इनके तीन बेटे हुए, जिनमेंसे १– अमरसिंह थे, जिनको जोधपुरकी गद्दी नहीं मिलनेका कारण आगे लिखा जायगा; २– अचलसिंह, जो बचपनमें मरगये; ३– जशवन्तसिंह थे, जिन्होंने राज पाया.

---

३३ महाराजा जशवन्तसिंह अव्वल.

इनका जन्म वि० १६८३ माघ कृष्ण ४ मंगलवार [हि० १०३६ ता० १८ रबीउस्सानी = ई० १६२७ ता० ६ जैन्युअरी] को हुआ. अमरसिंह इनसे बड़े थे, लेकिन् महाराजा गजसिंहने मरते वक्त शाहजहांसे अर्ज़ की थी, कि मेरे बाद छोटा कुंवर जशवन्तसिंह जोधपुरका मालिक हो; बादशाहने वैसा ही किया. इसके कई सबब मारवाड़की तवारीखोंमें लिखे हैं; अव्वल एक अनारां नाम पातर महाराजा गजसिंहकी ख़वास थी, जिसको अमरसिंह कम दरजा जानकर नफ़त करते थे, और जशवन्तसिंहने एक दिन अनारांकी जूतियां उठाकर उसके साम्हने रखदीं, जिससे उसने खुश होकर महाराजासे सिफ़ारिश की; महाराजा अनारांसे निहायत खुश थे, उसके कहनेसे जशवन्तसिंहको अपना वलीअहद किया. दूसरे बीकानेरकी तवारीख़में लिखा है, कि रीवांके बघेले राजकुमारके साथ गजसिंहकी बेटीकी शादी हुई थी, वह जोधपुर आया, और ज़बानी तक्रारमें अमरसिंहके हाथसे मारागया, जिसपर गजसिंहने नाराज़ होकर उसे राजसे खारिज किया. तीसरे यह लिखा है, कि अमरसिंह ज़ियादह बदकार था, उसकी दोस्ती किसी शाहज़ादीके साथ होगई, महाराजाने डरकर और रिश्तहदारीमें ऐसा बुरा काम देखकर उसे खारिज किया; बादशाह नामह वगैरह फ़ार्सी तवारीखोंमें यह लिखा है, कि गजसिंहने अपने छोटे बेटे जशवन्तसिंहको अपना वारिस बनानेकी बादशाहसे अर्ज़ की, क्योंकि वह जशवन्तसिंहकी मासे खुश था; यह रवाज राठौड़ोंके सिवाय और राजपूतों में नहीं है (१). इन ऊपर लिखे सबबोंसे अमरसिंहका हक़ मारागया,

---

(१) जैसा कि राव मल्लीनाथके छोटे भाई वीरमदेवका बेटा चूंडा मंडोवरका मालिक हुआ, और चूंडाके बड़े बेटे रणमल्ल वगैरहसे छोटा कान्ह मंडोवरका राव हुआ. राव मालदेवके बड़े बेटों रामसिंह, उदयसिंह वगैरहसे छोटा चन्द्रसेन गद्दीका मालिक बना, चन्द्रसेनके बेटोंमें छोटा आशकरण हक़दार माना गया, और महाराजा उदयसिंहके बेटोंमेंसे छोटा बेटा सूरसिंह जोधपुरका मालिक बना; इसी तरह गजसिंहका छोटा बेटा जशवन्तसिंह वलीअहद बनाया गया.

और बादशाह शाहजहांने गजसिंहकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ जशवन्तसिंहको खिल्अ़त, जड़ाऊ जम्धर, चार हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब, राजाका ख़िताब, निशान, नक़ारह, सुनहरी ज़ीन समेत ख़ासह घोड़ा, और हाथी इनायत किया. जशवन्तसिंहका बड़ा भाई अमरसिंह, जो हुक्मके मुवाफ़िक़ शाहज़ादह सुल्तान शुजाअ़के साथ काबुल गया था, तीन हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार और रावके ख़िताबसे सर्फ़राज़ हुआ.

विक्रमी १६९५ [हि० १०४८ = ई० १६३८] में राजसिंह राठौड़, जो बादशाही नौकरीमें एक हज़ारी ज़ात, चार सौ सवारका मन्सब रखता था, ज़रूरतके सबब राजाका प्रधान बनाया गया, कि उसका मुल्की काम करता रहे; इसी वर्षके विक्रमी पौष [हि० रमज़ान = ई० १६३९ जैन्युअरी] में राजा जशवन्तसिंहको बादशाहने एक हज़ारी ज़ात, हज़ार सवारकी तरक़ीसे पांच हज़ारी ज़ात, पांच हज़ार सवारका मन्सब दिया; इसके बाद बादशाहके साथ काबुलकी मुहिम्पर गये, वहांसे वापस आनेपर जोधपुर जानेकी रुख़्सत पाई. विक्रमी १६९९ [हि० १०५२ = ई० १६४२] में शाहज़ादह दाराशिकोहके साथ राजा जशवन्तसिंहको मए दूसरे राव राजाओंके क़न्धार भेजा, ता कि ईरानका बादशाह उसे फ़त्ह न करले. जो साथ गये, उनका तफ़्सीलवार हाल मए फ़िहरिस्तके नीचे लिखा जाता है:-

क़न्धारका सूबह जो बादशाह जहांगीरके वक़ में ईरानियोंने ले लिया था, शाहजहांके अ़ह्दमें फिर हिन्दुस्तानके शामिल हुआ; इसी संवत् में शाहजहांने सुना, कि ईरानका बादशाह क़न्धारपर चढ़ाई करनेको तय्यार है, तब उसने ख़ुद जानेका इरादह किया, लेकिन् बड़े शाहज़ादह दाराशिकोहने अ़र्ज़ की, कि आप यहीं रहें, और मुझे भेजें; बादशाहने मंजूर करके पचास हज़ार सवार, बहुतसे हाथी, घोड़े, तोपख़ानह व ख़ज़ानह वग़ैरह साथ दिया; और ख़ासह ख़िल्अ़त, नादिरी, क़ीमती जीग़ह मोती और हीरेका, क़ीमती सर्पेच, लाल वग़ैरह समेत, पांच हज़ार सवारकी तरक्क़ीसे बीस हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब, दो ख़ासह घोड़े, एक हाथी व हथनी और बारह लाख रुपया नक़्द इन्आ़म देकर रवानह किया; उनके साथी सर्दारोंमें से, जिन्हें ख़िल्अ़त और इन्आ़म दिया, उनके नाम ये हैं:-

(१) सय्यद ख़ानेजहां बहादुरको ख़ासह ख़िल्अ़त, जड़ाऊ तलवार, दो ख़ासह घोड़े और एक हाथी.

(२) राजा जशवन्तसिंह और राजा जयसिंहको ख़ासह ख़िल्अ़त, जड़ाऊ जम्धर, फूलकटारा, ख़ासह घोड़ा और ख़ासह हाथी.

(३) रुस्तमखांको खासह खिल्ञ्चत, घोड़ा, और पांच हज़ारी मन्सब मए पांच हज़ार सवार दो अस्पा सिह अस्पा.

(४) क़िलीचखां, बहादुरखां, व अल्लाहवर्दीखांको खासह खिल्ञ्चत और घोड़ा.

(५) नागौरके राव अमरसिंहको खासह खिल्ञ्चत और मन्सब चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार, और एक घोड़ा मए ज़ीनके.

(६) मुबारिज़खां, फ़िदाईखां, व सर्दारखांको खिल्ञ्चत और घोड़ा.

(७) असालतखांको खिल्ञ्चत, घोड़ा और नक़ारह.

(८) ख़लीलुल्लाहखांको खिल्ञ्चत, घोड़ा, नेज़ा और नक़ारह.

(९) राजा रायसिंहको खिल्ञ्चत, चार हज़ारी मन्सब और घोड़ा.

(१०) राव शत्रुशालको खिल्ञ्चत और घोड़ा.

(११) नज़र बहादुरको खिल्ञ्चत और तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब, घोड़ा और नक़ारह.

(१२) शेख फ़रीद, राजा जगत्सिंह, जांसुपारखां और सरन्दाज़खांको खिल्ञ्चत और घोड़ा.

(१३) यक्का ताज़खां, हरीसिंह और महेशदासको खिल्ञ्चत, घोड़ा और नेज़ा.

(१४) रामसिंह राठौड़को खिल्ञ्चत और घोड़ा.

(१५) चन्द्रमन बुन्देलेको खिल्ञ्चत, घोड़ा और नेज़ा.

(१६) राजा अमरसिंह नरवरी, गोकुलदास सीसोदिया, रायसिंह झाला और सय्यद नूरुलअयांको खिल्ञ्चत और घोड़ा.

(१७) सय्यद मुहम्मद, ख़लीलबेग, व तुर्क ताज़खां और मीरखांको खिल्ञ्चत, मन्सब हज़ारी ज़ात पांच सौ सवार व घोड़ा.

(१८) सय्यद मन्सूर सय्यद ख़ानेजहांके बेटेको खिल्ञ्चत मन्सब हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार व घोड़ा.

और मुल्तानसे सईदखां बहादुरको मए अपने बेटोंके, और काबुलसे सआदतखां, अक्बरकुली, सुल्तान कक्खड़, शादमां पगलीवाल और दूसरे मन्सबदार वग़ैरहको भेजा, लेकिन् ईरानका बादशाह आता हुआ काशानमें मरगया, जिससे बादशाही फ़ौज वापस आई.

विक्रमी १७०० आश्विन [हि॰ १०५३ शऋबान = ई॰ १६४३ ऑक्टोबर] में राजा जशवन्तसिंहको वतन जानेकी रुख़्सत मिली. विक्रमी १७०२ [हि॰ १०५५ = ई॰ १६४५] में जशवन्तसिंह वतनसे हाज़िर हुए, और उनके मन्सब पांच हज़ारी ज़ात व सवार में एक हज़ार सवारकी तरक़्क़ी दीगई.

विक्रमी १७०४ [हि० १०५७ = ई० १६४७] में पांच हज़ारी ज़ात, व सात हज़ार सवारका मन्सब पाया. विक्रमी १७०६ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० १०५९ ता० १४ ज़िल्क़ाद = ई० १६४९ ता० २० नोवेम्बर] को जयसलमेरका रावल मनोहरदास मरगया, जिसका हक़दार सबलसिंह था, परन्तु वहांके सर्दारोंने रामचन्द्रको गद्दीपर विठा दिया; सबलसिंह शाहजहांके पास रहता था, इससे उसकी मददके लिये बादशाहने महाराजा जशवन्तसिंहको फ़ौज देकर भेजा; महाराजाने जोधपुरसे रियांके मेड़तिया गोपालदास, पालीके चांपावत विठ्ठलदास गोपालदासोत, व कूंपावत नाहरखां राजसिंहोत आसोपको दो हज़ार सवार और ढाई हज़ार पैदल देकर सबलसिंहके साथ भेजा; विक्रमी १७०७ कार्तिक कृष्ण ६ शनिवार [हि० १०६० ता० २० शव्वाल = ई० १६५० ता० १६ ऑक्टोबर] को पोहकरणका क़िला फ़त्ह करलिया; यह क़िला महाराजा जशवन्तसिंहको सबलसिंहने देना किया था, जो उसी वक़्से भाटियोंके क़ब्ज़ेसे निकल गया, और अब तक जोधपुरके इलाक़हमें है. इसी फ़ौजने जयसलमेरको जा घेरा, रामचन्द्र भागगया, और महाराजाके सर्दारोंने सबलसिंहको जयसलमेरका रावल बनाया.

जब शाहजहां बादशाहकी बीमारीके सबब उसके शाहज़ादोंमें लड़ाइयां हुईं, तब महाराजा जशवन्तसिंहको सात हज़ारी ज़ात और सात हज़ार सवारका मन्सब देकर शाहज़ादह दाराशिकोहकी सलाहसे बादशाहने बीस हज़ार फ़ौजके साथ औरंगज़ेब और मुरादको रोकनेके लिये मालवेकी तरफ़ भेजा; वहां उज्जैनके पास विक्रमी १७१५ वैशाख कृष्ण ८ [हि० १०६८ ता० २२ रजब = ई० १६५८ ता० २५ एप्रिल] को खूब लड़ाई हुई, और महाराजा जशवन्तसिंहके साथी क़ासिमख़ां वग़ैरह आलमगीरसे मिलगये; जिससे आलमगीर और मुरादकी फ़ौजने फ़त्ह पाई. महाराजा अपने आठ हज़ार राजपूतोंमेंसे बचे हुए छः सौ राजपूतोंको लेकर जोधपुर पहुंचे; वहां उनकी राणी बूंदीके राव शत्रुशालकी बेटीने क़िलेके किवाड़ बन्द करवाकर महाराजाको अन्दर नहीं आने दिया, और खबर देने वालोंको कहा कि, "मेरा पति लड़ाईसे भागकर नहीं आवेगा, वह वहां ज़रूर मारागया है. और यह, जो आया है, बनावटी होगा, मेरे लिये जलनेकी तय्यारी करो." इन झिड़कियोंसे महाराजाने शर्मिन्दह होकर महाराणीसे कहलाया कि, "मैं बहुत बड़ी लड़ाई लड़कर आया हूं, मेरा ज़िरह बक्तर और घोड़ा देखना चाहिये, कैसे छिन्न भिन्न होरहे हैं, और मैं इसलिये आया हूं, कि यहांसे जमइयत बनाकर आलमगीरसे फिर लड़ूं." ऐसी बातोंसे महाराणीको बड़ी मुश्किलोंके साथ समझाया; तब

महाराजाको भीतर आने दिया; लेकिन् जब महाराजाके साम्हने भोजन रक्खागया, तो महाराणीने लकड़ी, मिट्टी और पत्थरके बरतनोंमें परोसकर आगे धरा; महाराजाने कहा, कि खानेके बरतन इस तरहके क्यों लायेगये ? महाराणीने जवाब दिया, कि धातुके शस्त्रोंकी आवाज़से डरकर आप यहां चले आये हैं, अगर यहां भी धातुके बरतनोंका खड़का आपके कानमें पड़े, तो न जाने क्या हालत हो; इसपर महाराजाने बहुत शर्मिन्दह होकर महाराणीसे कहा, कि मैं अब जो लड़ाइयां करूं, वह सुनलेना. इस बातका ज़िक्र बर्नियर भी अपनी किताबकी पहिली जिल्दके ४७ वें पृष्ठमें इस तरह लिखता है:-

"जब जशवन्तसिंहकी राणीने, जो राणाकी बेटी (१) थी, यह ख़बर सुनी, कि वह क़रीब ५०० दिलेर राजपूतोंके साथ ज़ुरूरतके सबब (लेकिन् वे इज़्ज़तीके साथ नहीं) लड़ाईका खेत छोड़कर आरहा है; तब उस दिलेर सिपाहीके बचकर आनेका धन्यवाद देने और उसकी मुसीबतपर तसल्ली करनेके एवज़ उसने यह सख़्त हुक्म दिया, कि क़िलेके किवाड़ उसके बर्ख़िलाफ़ बन्द करदेने चाहियें. उसने कहा, कि यह आदमी बेइज़्ज़तीसे भरा हुआ है, इन दीवारोंके भीतर नहीं आसक्ता. मैं उसे अपना ख़ाविन्द नहीं क़बूल करती; मेरी आंखें जशवन्तसिंहको फिर नहीं देख सक्तीं, राणाका जमाई उसके मुवाफ़िक़ होगा, पस्त हिम्मत नहीं होसक्ता; जो राणाके बड़े नामी ख़ानदानसे रिश्तह रखता है, उसकी सिफ़तें उस बड़े आदमीके मुवाफ़िक़ होनी चाहियें; अगर वह फ़त्ह न करसके, तो उसको मर जाना चाहिये. थोड़ी देरके बाद वह चिल्लाई, कि चिता तय्यार करो, मैं अग्निमें अपना शरीर जला दूंगी; मुझे धोखा हुआ है, मेरा शोहर हक़ीक़तमें मरगया है; उसका ज़िन्दह रहना मुम्किन नहीं. फिर गुस्सेमें आकर बहुत मलामत करने लगी, आठ या नव दिन तक उसकी यही हालत रही; उसने अपने शोहरको देखनेसे बराबर इन्कार किया; लेकिन् राणीकी माके आजानेसे उसकी तबीअ़त कुछ नर्म हुई; उसने अपनी बेटीको राजाके नामपर वादा करके तसल्ली दी, कि थकावट दूर होनेपर वह दूसरी फ़ौज एकट्ठी करके औरंगज़ेबपर हम्लह करेगा, और अपनी बेइज़्ज़तीको दूर करेगा."

औरंगज़ेब, दाराशिकोहपर आगरेके पास फ़त्ह पाने बाद अपने बाप शाहजहां

---

(१) यह राणी महाराणाकी बेटी नहीं थी, बूंदीके राव शत्रुशाल हाड़ाकी बेटी और महाराणा राजसिंहकी साली थी.

और छोटे भाई मुरादको क़ैद करके दाराशिकोहके पीछे लाहौरकी तरफ़ रवानह हुआ; तब जयपुरके राजा जयसिंहके समझानेसे जशवन्तसिंह भी औरंगज़ेबके पास आगये; परन्तु उनका दिल साफ़ नहीं था. औरंगज़ेब पंजाबसे दाराको निकालकर वापस आया, और शाहज़ादह शुजाअ्से मुक़ाबला करनेको बंगालेकी तरफ़ चला; इलाहाबादके पास खजुआ गांवसे आगे बढ़कर विक्रमी १७१५ माघ कृष्ण ६ [हि० १०६९ ता० १९ रबीउस्सानी = ई० १६५९ ता० १२ जैन्युअरी] को अपने भाई शुजाअ्से मुक़ाबला करनेके लिये फ़ौजकी दुरुस्ती की; तब हरावल, चंदावल और बाईं फ़ौजमें दूसरे लोगोंको जमाकर दाहिनी फ़ौजका अफ़्सर मए अपनी फ़ौज व राजपूतोंके महाराजा जशवन्तसिंहको बनाया; और महेशदास राठौड़, मुहम्मदहुसैन सलदोज़, मीर अज़ीज़ बदख़्शी, बल्लू चहुवान, रामसिंह और हरदास राठौड़ इन्हींके शामिल किये गये; शुजाअ्की फ़ौजसे मुक़ाबला शुरूअ् हुआ; रात होजानेके कारण दोनों तरफ़से लड़ाई बन्द हुई; लेकिन् घोड़ोंसे ज़ीन और आदमियोंसे हथियार अलग नहीं किये गये; क्योंकि एक को दूसरेका डर था. इसी रातमें औरंगज़ेबकी फ़ौजसे शाहज़ादह शुजाअ्को महाराजा जशवन्तसिंहने कहला भेजा, कि हम आज पिछली रातको औरंगज़ेबके लश्करमें छापा मारकर लूट खसोट करते निकलेंगे; उस वक़्त औरंगज़ेब फ़ौज समेत हमारा पीछा करेगा; आपको मुनासिब है, कि औरंगज़ेबकी फ़ौजपर पीछेसे टूट पड़ें.

इस शर्तके मुवाफ़िक़ महाराजा जशवन्तसिंहने, जो दिलसे शाहजहांके ख़ैरख़्वाह और दाराके दोस्त थे, पिछली चार पांच घड़ी रात रहे बग़ावतका झंडा खड़ा किया; उनके शरीक महेशदास राठौड़, रामसिंह राठौड़, हरदास राठौड़ और बल्लू चहुवान वग़ैरह होगये थे. उन्होंने पहिले शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानके लश्कर को, जो इनके नज़्दीक था, लूटा; उसको लूटनेके बाद बादशाही लश्करपर छापा मारा, जो चीज़ मिली लूट ली; और जो साम्हने पड़ा, उसे मारडाला; इससे औरंगज़ेबके लश्करमें तहलका मचगया, जिसका जिधर जी चाहा भागा, और जो लोग औरंगज़ेबके दबावसे आमिले थे, वे भी जशवन्तसिंहके शरीक होकर माल, ख़ज़ानह, हथियार, चौपाये लूट लेगये; और हरावलके लोग मारे ख़ौफ़के भागकर बादशाही डेरोंमें आ छिपे; बहुतसे लोग घबराकर उसी वक़्त शाहज़ादह शुजाअ्से जा मिले; लेकिन् दिलेर औरंगज़ेब बिल्कुल न घबराया, और दूसरी सवारियोंको छोड़कर तामझाम पर सवार हुआ, और अपनी फ़ौजमें फिरने लगा; उसने हुक्म दिया, कि कोई अपनी जगहसे न हिले, और जो भागता नज़र आवे, उसको गिरिफ़्तार करके हमारे पास लावें; फिर अपने लोगोंसे कहा, कि हम जशवन्तसिंहकी इस बग़ावतको ग़नीमत जानते हैं, कि जो ख़ैरख़्वाह और बदख़्वाह थे, मालूम होगये; वर्नह

मुकावलेके वक्त मुश्किल पेश आती. बहुतसे लोग महाराजा जशवन्तसिंहके साथ निकल भागे, कितने एक शुजाअ़से जा मिले, और कुछ तित्तर वित्तर होगये. उस वक्त औरंगज़ेबकी फ़ौज आधीसे भी कम रहगई थी, लेकिन् इस होनहार बादशाहका दिल वैसा ही मज़्बूत बना रहा, जैसा कि पहिले था.

महाराजा जशवन्तसिंह अपने साथियों समेत जोधपुर पहुंचे; आलमगीर दिलसे जलता था, लेकिन् इस ज़बर्दस्त राजाको ज़ियादह अपने बख़िलाफ़ करना मुनासिब न समभकर शुजाअ़की लड़ाईसे निश्चिन्त होनेके बाद आंबेरके महाराजा जयसिंहकी मारिफ़त फिर भी उसकी तसल्ली करवा दी; परन्तु महाराजा जशवन्तसिंहको आलमगीरका डर था, जिससे दाराशिकोहके साथ सलाह करके आलमगीरसे फिर लड़ना चाहा. दाराशिकोह महाराजा जशवन्तसिंहको अपना मददगार जानकर आलमगीरसे लड़नेके लिये अहमदाबादसे अजमेर पहुंचा; महाराजा जयसिंहने जशवन्तसिंहको रोका, जिससे वह जोधपुरमें ही रहे. दाराकी ख़राबी होने बाद आलमगीरने तसल्लीका फ़र्मान और ख़िल्अ़त भेजकर अहमदाबादका सूबहदार बनाया; दो वर्ष तक वहां रहे, धीरे २ उनका डर दूर होता गया, और वे बादशाही दर्बारमें आने जाने लगे; फिर दक्षिणकी लड़ाइयोंमें शायस्तहख़ांके साथ भेजे गये; वहांसे शिवा मरहटाकी मिलावटके शुब्हेसे बादशाहने बुलालिया; और विक्रमी १७२८ ज्येष्ठ कृष्ण ८ [हि० १०८२ ता० २२ मुहर्रम = ई० १६७१ ता० ३१ मई] को बर्सातो फ़र्गुल और ५०० अशरफ़ीका घोड़ा देकर पेशावरके पास खैबरके घाटेमें जमोदके थानेपर भेजदिया. विक्रमी १७३१ [हि० १०८५ = ई० १६७४] में जमोदकी थानेदारीसे रावलपिंडीके मक़ामपर बादशाहके पास हाज़िर होकर वापस गये, जहांसे फिर न लौटे, और विक्रमी १७३५ पौष कृष्ण १० [हि० १०८९ ता० २३ शव्वाल = ई० १६७८ ता० ७ डिसेम्बर] को उसी थानेपर महाराजा जशवन्तसिंहका देहान्त हुआ.

यह महाराजा इक़ार पूरा करने वाले, बड़े बहादुर और फ़य्याज़ थे; इनके वक्तमें जोधपुरके राज्यमें सुख चैन रहा; मुसाहिब और अह्लकार भी इनके पास अच्छे थे; बादशाह शाहजहांकी इनपर बड़ी मिहर्बानी रही; और दाराशिकोह भी इनका मददगार था. इनके पुत्र १- पृथ्वीसिंहका जन्म विक्रमी १७१० आषाढ़ शुक्ल ५ [हि० १०६३ ता० ४ शअ़्बान = ई० १६५३ ता० ३० जून] को हुआ था. ये दिल्लीमें विक्रमी १७२४ ज्येष्ठ कृष्ण ११ [हि० १०७७ ता० २५ ज़िल्क़ाद = ई० १६६७ ता० १९ मई] को मरगये. २- जगतसिंहका जन्म विक्रमी १७२३ माघ

कृष्ण ४ [हि० १०७७ ता० १८ रजब = ई० १६६७ ता० १४ जैन्युअरी] को हुआ, और चैत्र कृष्ण ७ [हि० २१ रमज़ान = ई० ता० १७ मार्च] की रात्रिको मरगये. ३ - अजीतसिंहका जन्म विक्रमी १७३५ चैत्र कृष्ण ४ [हि० १०९० ता० १८ मुहर्रम = ई० १६७९ ता० १ मार्च] को हुआ, और ४ - दलथंभन भी इसी तारीख़को दूसरी राणीसे पैदा हुए. इन महाराजाके साथ एक महाराणी चन्द्रावत रामपुरेके राव अमरसिंहकी बेटी, और २० ख़वास जोधपुरमें ख़बर आनेपर, और जम्रोदमें ८ ख़वास परदेवाली, कुल्ल २९ स्त्रियां सती हुईं.

३४ महाराजा अजीतसिंह.

इनका हाल इस तरह पर है, कि महाराजा जशवन्तसिंहके इन्तिक़ालके वक़ नरूकी महाराणी और महाराणी जादमणको गर्भ था, इसलिये राठौड़ सर्दारोंने उनको सती होनेसे रोका, और एक काग़ज़ जोधपुर लिख भेजा, कि बादशाही आदमी आवें तो फ़साद न करना.

इसके बाद सब राठौड़ दोनों राणियोंको साथ लेकर जम्रोदसे अटक नदीपर आये, दर्याई अफ़्सरोंने बग़ैर बादशाही पर्वानेके रोका; लेकिन् राठौड़ बादशाही लोगोंको मारकर उतर आये, और लाहौर पहुंचे, जहां दोनों महाराणियोंसे विक्रमी १७३५ चैत्र कृष्ण ४ [हि० १०९० ता० १८ मुहर्रम = ई० १६७९ ता० १ मार्च] को अजीतसिंह और दलथंभन पैदा हुए. वहांसे बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ सब लोग राणी और राज कुमारों समेत दिल्ली आये.

बादशाह आलमगीरने महाराजा जशवन्तसिंहके इन्तिक़ालकी ख़बर सुनतेही विक्रमी १७३५ फाल्गुन् शुक्ल १३ [हि० १०९० ता० ११ मुहर्रम = ई० १६७९ ता० २३ फ़ेब्रुअरी] को ताहिरख़ांको जोधपुरकी फ़ौज्दारी, ख़िद्मतगुज़ारख़ांको क़िलेदारी, शैख़ अनूवरको अमानत और अब्दुर्रहीमको कोतवाली देकर मारवाड़ भेजा; और ख़ानेजहां बहादुरको हसनअ़लीख़ां वग़ैरह सर्दारों समेत मारवाड़ देशकी संभालके लिये रवानह किया. सय्यद अब्दुल्लाहको सिवानेके क़िलेपर महाराजा जशवन्तसिंहका अस्वाब संभालनेके लिये भेजा.

महाराजा जशवन्तसिंहके बेटे और राणियोंका डेरा, कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी हवेलीमें था, बहुतसे राजपूत पहिलेही मारवाड़को चलदिये थे, और आलमगीरने भी उनका जाना ठीक समझा. फिर नागौरके राव रायसिंहके बेटे इन्द्रसिंहको,

जिसने ३६ लाख रुपये नज़में दिये, फ़र्मान व ख़िल्अ़त वगैरह देकर जोधपुर भेज दिया. विक्रमी १७३६ श्रावण कृष्ण २ [हि० १०९० ता० १६ जमादि-युस्सानी = ई० १६७९ ता० २५ जुलाई] को बादशाहने सख़्त हुक्म दिया, कि फ़ौलादख़ां कोतवाल और सय्यद हामिदख़ां ख़ास चौकीके आदमियों समेत व हमीदख़ां और कमालुद्दीनख़ां, ख़्वाजह मीर वगैरह शाहज़ादह सुल्तान मुहम्मदके रिसालेके सवारों सहित जावें, और राणियों व जशवन्तसिंहके बेटेको, जिनका डेरा कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी हवेलीमें है, नूरगढ़में ले आवें; और साम्हना करें, तो सज़ा दीजावे. दुर्गदास व सोनंग वगैरह राठौड़ पहिले ही दिन अजीतसिंहको लेकर मारवाड़की तरफ़ रवानह होगये थे, बाक़ी राजपूतोंने तलवारोंसे जवाब देकर मुक़ाबला किया, और बड़ी बहादुरीके साथ मए राणियोंके लड़ाईमें काम आये; उनके नाम नीचे लिखेजाते हैं:-

(१) राठौड़ रणछोड़दास, गोविन्ददासोत.
(२) राठौड़ विठ्ठलदास, विहारीदासोत.
(३) राठौड़ चन्द्रभान, द्वारिकादासोत.
(४) राठौड़ कुम्भा, कीर्तिसिंहोत.
(५) राठौड़ दीपा, केशवदासोत.
(६) राठौड़ पृथ्वीराज, वीरमदेवोत.
(७) राठौड़ महासिंह, जगन्नाथोत.
(८) राठौड़ जगत्सिंह, रत्नसिंहोत.
(९) राठौड़ रामसिंह, श्यामसिंहोत.
(१०) राठौड़ महासिंह, खींवावत.
(११) राठौड़ जुझारसिंह, राजसिंहोत.
(१२) राठौड़ महेशदास, नाहरख़ानोत.
(१३) राठौड़ हिन्दूसिंह, सुजानसिंहोत.
(१४) राठौड़ मोहनदास, धनराजोत.
(१५) राठौड़ भारमल्ल, दलपतोत.
(१६) राठौड़ गोविन्ददास, मनोहरदासोत.
(१७) राठौड़ आशकरन, वाघावत.
(१८) राठौड़ रघुनाथ, सूरजमलोत.
(१९) राठौड़ गोवर्धन, रामसिंहोत.
(२०) राठौड़ जस्सू, अजबसिंहोत.
(२१) राठौड़ भीम, केसरख़ानोत.
(२२) राठौड़ कृष्णसिंह, चान्दसिंहोत.
(२३) राठौड़ भाखरख़ान, मथुरादासोत.
(२४) राठौड़ सुन्दरदास, हरीदासोत.
(२५) राठौड़ सुन्दरदास, ठाकुरसिंहोत.
(२६) राठौड़ लक्ष्मीदास, नाथावत.
(२७) राठौड़ भैरवदास, खेतसिंहोत.
(२८) राठौड़ डूंगरसिंह, लाडख़ानोन.
(२९) राठौड़ उदयसिंह, जगन्नाथोत.
(३०) राठौड़ पूर्णमल्ल, सूरदासोत.
(३१) राठौड़ अखैराज, कल्याणदासोत.
(३२) चहुवान रघुनाथ, सुरतानोत.
(३३) भाटी उदयभान, केशरीसिंहोत.
(३४) भाटी शक्तिसिंह, हरदासोत.
(३५) भाटी जगन्नाथ, विठ्ठलदासोत.
(३६) भाटी शक्तिसिंह कल्याणदासोन.
(३७) भाटी द्वारिकादास, भाणावत.
(३८) भाटी गिरधरदास, कान्हावत.
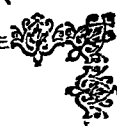
(३९) भाटी धनराज, वीकावत. (४०) जोगीदास सोभावत.
(४१) राठौड़ सूरजमल्ल, नाथावत. (४२) राठौड़ नारायणदास, पातावत.
(४३) पंचोली हरराय. (४४) महता विष्णुदास.

और अठारह राजपूत दूसरे व बर्क़न्दाज़ गिरधर, सांखला आनन्द, रैबारी कुम्भा, और सुल्तान; बाक़ी घायल और बचे हुए मारवाड़में आये.

मआसिरे आलमगीरीमें दो राणियों और ३० राजपूतोंका माराजाना लिखा है, शायद इस पुस्तकके बनाने वालेने मशहूर राजपूतोंकी गिन्ती लिखदी होगी. पहिले दिन दुर्गदास व सोनंग वगैरह महाराजा अजीतसिंहको ले निकले थे; कोतवालने एक लड़का घोसीके घरसे निकालकर पेश किया, और कहा, कि यही जशवन्तसिंहका बेटा है. बादशाहने उसे अपनी बेटी ज़ेबुन्निसा बेगमको पर्वरिशके लिये सौंपा, और उसका नाम मुहम्मदीराज रक्खा. इस जगह खयाल होता है, कि कोतवालने अजीतसिंहके निकल जानेसे अपनी ग़फ़्लत छिपानेको किसी लौंडी वगैरह का लड़का पेश किया होगा, या बादशाहने ही अजीतसिंहको बनावटी जतलानेके लिये इस लड़केको अस्ली मशहूर किया, अथवा दलथंभन, जो अजीतसिंहका छोटा भाई था, इस वक्त बादशाहके हाथ आगया; शायद उसके बड़े भाईके निकल जानेपर दलथंभनका पेश्तर मरजाना और अजीतसिंहका हाथ आजाना बादशाहने मशहूर किया हो, जैसा कि मआसिरे आलमगीरीमें लिखा है. यह मुहम्मदीराज जवान होनेके पहिले आलमगीरके लश्करमें रहकर दक्षिणमें ववासे मरगया.

राठौड़ोंने अजीतसिंहको सिरोहीमें महाराजा जशवन्तसिंहकी राणी देवड़ीके पास पहुंचाया, और वहां कालिन्द्री गांवमें पोहकरणा ब्राह्मण जयदेवकी औरतके सुपुर्द किया. वह उसको अपना बेटा मानकर पालने लगी; लेकिन् सिरोहीके रावने यह बात सुनकर कहा, कि मेरा राज्य बादशाह छीन लेंगे. तब राठौड़ दुर्गदास वगैरह देवड़ीजीको अजीतसिंह सहित उदयपुर लेआये, और महाराणा राजसिंह (अव्वल) ने तसल्ली करके गांव कैलवा जागीरमें दिया; राठौड़ और सीसोदिये एक होकर फ़साद करने लगे; इसलिये बादशाह आलमगीर बड़ी भारी फ़ौजके साथ मेवाड़पर चढ़ा. यह हाल महाराणा राजसिंहके वर्णनमें लिखागया है- (देखो पृष्ठ ४६३-४७२).

फिर मेड़ते और सिवानेपर राठौड़ोंने क़ब्ज़ा करलिया, और बादशाही आदमियोंको मारकर निकाल दिया; पुष्करमें तहव्वुरखांकी फ़ौजपर ऊदावत

सिंह मेड़तियाने हमलह किया, जिसमें तरफ़ैनके आदमी मारेजाने बाद बादशाही ख़ालिसहमें होगया. फिर गांव ओसियाके पास राठौड़ दुर्गदाससे सिंहके राजपूतोंसे ख़ूब लड़ाई हुई. इसी तरह तहव्वुरख़ांसे देमूरीके ड़ अच्छे लड़े. राठौड़ और सीसोदियोंने मिलकर आलमगीरके ज़ादह अक्बरको बाग़ी किया; लेकिन् आलमगीरकी चालाकीसे अक्बरको भागकर ईरानमें जाना पड़ा; उसका एक लड़का और लड़की दुर्गदासके पास रहे थे, जिनको उसने बड़ी ख़ातिरके साथ रक्खा, और तालीम भी दी.

राव इन्द्रसिंहसे मारवाड़का कुछ बन्दोबस्त नहो सका, तब बादशाहने विक्रमी १७३८ चैत्र शुक्ल ११ [हि० १०९२ ता० १० रबीउ़ल अव्वल = ई० १६८१ ता० ३१ मार्च] को इनायतख़ांको अजमेरकी फ़ौज्दारीपर भेजा, और इन्द्रसिंह खटले समेत नागौर गया. राठौड़ोंने कई छोटी बड़ी लड़ाइयां कीं, और शाहज़ादह अक्बर जो बाग़ी होकर शम्भा राजाके पास चला गया, इस बातसे आलमगीरको ज़ियादह फ़िक्र हुई; क्योंकि हज़ारों राठौड़ बाग़ी थे, उदयपुरसे लड़ाई जारी थी; दक्षिणमें फ़साद होता, तो कुल हिन्दुस्तान फ़सादका नमूना बनजाता. यह विचारकर उदयपुरके महाराणा जयसिंहसे, जब कि महाराणा राजसिंहका इन्तिक़ाल होगया था, सुलह करली; और दक्षिणकी तरफ़ कूच किया. दूसरे दिन अजमेरसे देवराई मक़ामपर पहुंचकर विक्रमी १७३८ आश्विन शुक्ल ८ [हि० १०९२ ता० ६ रमज़ान = ई० १६८१ ता० २१ सेप्टेम्बर] को बड़े शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मके बेटे मुहम्मद अज़ीमको जुम्दतुल्मुल्क असदख़ां वज़ीरके साथ अजमेर भेजा, कि वहांका बन्दोबस्त रक्खे; और उनके मातह्त एतिक़ादख़ां, कमालुद्दीनख़ां, राजा भीमसिंह राजसिंहोत कुंवर समेत, और मरहमतख़ां वग़ैरहको ख़िल्अ़त, जवाहिर, घोड़े और हाथी देकर मुक़र्रर किया; इनायतख़ां अजमेरके फ़ौज्दार और सय्यद यूसुफ़ बुख़ारी बीटलीगढ़के क़िलेदारको भी ख़िल्अ़त देकर अजमेर भेजा.

राजा भीमसिंह राजसिंहोतकी मारिफ़त असदख़ां वज़ीरने राठौड़ोंसे सुलह करनेकी तद्बीर की, लेकिन् राठौड़ सोनंगके मरजानेसे मुल्तवी रही. भीमसिंहने राठौड़ोंको कहलाया, कि सोनंगके मरजानेसे मुसल्मानोंका ख़ौफ़ मिटगया है, कुछ बहादुरी दिखाना चाहिये. तब राठौड़ोंने डीडवाणा और मकराणेको लूटकर मेड़तेपर हाथ चलाया, जिसपर असदख़ांने अपने बेटे एतिक़ादख़ांको फ़ौज समेत भेजा. गांव ईंदावड़में एतिक़ादख़ांकी फ़ौजपर राठौड़ोंने हमलह किया, जिसमें १४ नामी आदमी राठौड़ोंके मारे गये. मआसिरे आलमगीरीमें सोनंगका इसी लड़ाईमें

माराजाना लिखा है, परन्तु मारवाड़की ख्यातका लेख सहीह मानकर ऊपर लिखा है. इसका व्यौरेवार हाल महाराणा जयसिंहके ज़िक्रमें लिखा गया- (देखो पृष्ठ ६६४). दूसरा हमलह पुर व मांडलके पास राठौड़ोंने किया, इसके बाद उन्होंने जुदे २ ज़िलोंमें हमलह करना शुरूअ् किया, मुसल्मान पीछा करते, तो लड़ाइयां होती थीं; किसीको जागीर देकर राज़ी करते, तोभी वह फिर दूसरेकी मदद करनेको बाग़ी होजाता. इन झगड़ोंसे राठौड़ और मुसल्मान सर्दार बहुत मारेगये, जिनका ज़ियादह हाल तवालतके सबब छोड़ दिया है.

महाराजा अजीतसिंह, जो बचपनके सबब अब तक पोशीदह रहते थे, विक्रमी १७४४ वैशाख कृष्ण ५ [हि० १०९८ ता० १९ जमादियुल अव्वल = ई० १६८७ ता० २ एप्रिल] को सिरोहीके गांव पालड़ीमें सर्दारोंके शामिल होकर फ़ौज मुसाहिब बने, उस वक्त यह ८ वर्षके थे. फ़साद बढ़ता जानकर जोधपुरके ज़िम्मह‌दार इनायतख़ांने सिवानेका पर्गनह और राहदारीसे चौथा हिस्सह देनेका इक्रार करलिया, जिससे ख़र्चमें सहारा मिला. इन्हीं दिनोंमें दुर्गदास भी महाराजासे आमिले, और इसी वर्षमें मुसल्मानोंने सिवाना छीन लिया; तब महाराजा अजीतसिंह उदयपुरके दक्षिण छप्पनके पहाड़ोंमें चले आये, और महाराणा जयसिंह भी इन दिनों उसी ज़िलेमें जयसमुद्र तालाब तय्यार करा रहे थे, महाराजाको खानगी मदद दी होगी. दुर्गदास वगैरह राठौड़ोंने सिंधसे लेकर अजमेरतक शोर मचाया; इसपर अजमेरके सूबहदारने पोशीदह तौरसे कहा, कि तुम लोग राहदारी वगैरह, जो दस्तूर हो, अपने तौरपर लेलिया करो, ज़ाहिर लेनेसे हम बदनाम, और बादशाह हमसे नाराज़ होते हैं.

विक्रमी १७४९ [हि० ११०३ = ई० १६९२] में महाराणा जयसिंह और कुंवर अमरसिंहमें रंज हुआ; महाराजा अजीतसिंहकी तरफ़से राठौड़ दुर्गदास तीस हज़ार सवार लेकर महाराणाके पास घाणेरावमें आया, और बाप बेटोंका बाहमी रंज मिटानेमें मस्रूफ़ रहा. यह हाल महाराणा जयसिंहके प्रकरणमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ६७४). विक्रमी १७५३ [हि० ११०७ = ई० १६९६] में महाराणा जयसिंह और कुंवरके आपसमें फिर बिगाड़ हुआ, जो महाराजा अजीतसिंहने आकर मिटाया, और महाराणाने अपने भाई गजसिंहकी बेटीका विवाह महाराजाके साथ किया, जिसके दहेज़में ९ हाथी, डेढ़ सौ घोड़े वगैरह सामान देकर विदा किया- (देखो पृष्ठ ६८२).

मिरात अहमदीमें लिखा है कि, विक्रमी १७५४ पौष [हि० ११०९ जमादियुस्सानी = ई० १६९७ डिसेम्बर] में अहमदाबादके सूबहदार शजाअतख़ांकी

मारिफ़त दुर्गदास आलमगीरके पास हाज़िर हुआ, और शाहज़ादह अक्बरके बेटे, व बेटीको पेश किया, जो दुर्गदासके पास थे. उसको बादशाहने एक लाख रुपया इन्आम, मेड़ता वगैरह पर्गनह जागीरमें और तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब दिया. उसके साथी दूसरे राठोड़ोंको भी मन्सब और जागीरें मिलीं. राठोड़ मुकुन्ददासको पालीकी जागीर और छः सौ ज़ात व तीन सौ सवारका मन्सब मिला. और महाराजा अजीतसिंहको भी विक्रमी १७५४ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० ११०८ ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० १६९७ ता० १३ जून] को डेढ़ हज़ारी ज़ात व पांच सौ सवारका मन्सब और जालोर बादशाहकी तरफ़से जागीरमें मिला; महाराजाने मुकुन्ददास चांपावतको मुसाहिब और विट्ठलदास भंडारीको दीवान बनाया. विक्रमी १७५९ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० १११४ ता० २८ रजब = ई० १७०२ ता० २२ नोवेम्बर] को इनके कुंवर अभयसिंह पैदा हुए, और दुर्गदास राठोड़को अहमदाबादके ज़िलेमें पाटनकी फ़ौज्दारी मिली. अहमदाबादके सूबहदारने शाहज़ादह आज़मके इशारेसे दुर्गदासपर फ़ौज भेजी, जिसकी ख़बर विक्रमी १७६२ कार्तिक शुक्ल १२ [हि० १११७ ता० १० रजब = ई० १७०५ ता० २९ ऑक्टोबर] को मिली; इस ख़बरके सुनते ही दुर्गदास तो निकल गया, लेकिन् उसके दो बेटे महकरण व अभयसिंह वगैरह मारेगये. दुर्गदासके नाम बादशाहकी तरफ़से तसल्लीका फ़र्मान आया.

विक्रमी १७६२ [हि० १११७ = ई० १७०५] में बादशाही इशारेके मुवाफ़िक़ नागौरके राव इन्द्रसिंहका कुंवर मुह्कमसिंह जालौरपर चढ़ा, और वहांका क़िला हिक्मत अमलीसे लेलिया. महाराजा अजीतसिंह बाहर निकल गये, और बड़ा भारी लश्कर जोड़कर जालौरकी तरफ़ रवानह हुए; कुंवर मुह्कमसिंह डरकर जालौर छोड़ भागा, रास्तेमें महाराजासे मुक़ाबला हुआ, १ हथनी, ६ घोड़े व अस्बाब, नक़ारह, निशान महाराजाने छीन लिया; वह मेड़तेमें जा छिपा, और महाराजाने पीछा किया, लेकिन् गांव कांकाणीमें जोधपुरके फ़ौज्दार जाफ़रबेगने आकर महाराजाको समझाया, और महाराजाने बादशाही आदमियोंके बख़िलाफ़ कार्रवाई करना ठीक न जानकर पीछा कूचकर जालौरके क़िलेपर दोबारह अपना क़ब्ज़ा करलिया.

विक्रमी १७६३ फाल्गुन् कृष्ण १४ [हि० १११८ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १७०७ ता० ३ मार्च] को बादशाह आलमगीर दक्षिणमें मरगया. महाराजा अजीतसिंह यह ख़बर सुनकर जोधपुरकी तरफ़ चले; बादशाही मुलाज़िम फ़ौज्दार वगैरह तो पहिले ही निकल गये थे, महाराजाने जोधपुरपर चैत्र कृष्ण ५ [हि०

ता० १९ ज़िल्हिज = ई० ता० २३ मार्च] को क़ब्ज़ा कर लिया; सब राठौड़ोंने एकट्ठे होकर बड़ी ख़ुशियां मनाईं, और महाराजाने अपने बर्ख़िलाफ़ आदमियोंको पूरी सज़ाएं दीं; जो इनको चाहने वाले थे, उन्हें इन्आ़म इक्राम दियेगये. शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म और आज़मकी लड़ाई, जो जाजवके पास हुई, उसमें आज़म अपने बेटे बेदारबख़्त समेत मारागया, और मुअ़ज़्ज़म शाहआ़लम बहादुरशाह बादशाह बना. यह दोनों राजाओंसे नाराज़ था, क्योंकि महाराजा जयसिंह आंबेर वाले आज़मकी फ़ौजमें, और उनके छोटे भाई विजयसिंह बहादुरशाहके साथ थे; उसने विजयसिंहको आंबेरकी जागीर और मन्सब देना चाहा; महाराजा अजीतसिंहने जोधपुरका क़िला बादशाही आदमियोंसे छीन लिया था; इसलिये इन दोनों रियासतोंपर ख़ालिसह भेजकर बादशाह आप अजमेर आया. महाराजा जयसिंह और अजीतसिंह एक मत होकर बादशाहके पास आये, और पीपाड़के पास दोनों महाराजाओंने विक्रमी १७६४ फाल्गुन् शुक्ल ६ [हि० १११९ ता० ४ ज़िल्हिज = ई० १७०८ ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को बादशाहसे सलाम किया. बादशाहने बखेड़ा मिटानेकी निगाहसे ख़िल्अ़त वग़ैरह देकर तसल्ली की; और हाथी घोड़ोंके सिवाय पचास हज़ार रुपये महाराजा अजीतसिंहको दिये.

विक्रमी १७६५ चैत्र शुक्ल १० [हि० ११२० ता० ८ मुहर्रम = ई० १७०८ ता० २ एप्रिल] को अजमेरमें बादशाहने राठौड़ दुर्गदासको मन्सब देना चाहा, लेकिन् उसने उज़्र किया, कि पहिले महाराजा अजीतसिंहको मिले, तो मैं लूंगा. बादशाहने महाराजाको साढ़े तीन हज़ारी मन्सब और सोजत वग़ैरह पर्गने देने चाहे; परन्तु इन्होंने जोधपुरके बग़ैर क़ुबूल नहीं किया; और महाराजा अजीतसिंह व जयसिंह जो बादशाह के साथ थे, नर्मदाके उरली तरफ़से (१) नाराज़ होकर लौट आये; प्रतापगढ़के राव प्रतापसिंहने दोनों राजाओंको मिहमानी दी; फिर ये उदयपुर आये. महाराणा अमरसिंह २ ने ख़ातिर करके अपनी बेटी चन्द्रकुंवर बाईका विवाह महाराजा जयसिंहके साथ करने बाद फ़ौजी मदद देकर दोनों राजाओंको विदा किया, जिसका पूरा हाल महाराणा अमरसिंह २ के बयानमें लिखा गया है. महाराजाके आनेकी ख़बर सुनकर जोधपुरका फ़ौज्दार मिहराबख़ां भागकर अजमेर चलागया. महाराजा अजीतसिंहने बड़ी ख़ुशीके साथ जोधपुरपर दख़्ल किया. इन महाराजाने अपनी बेटी सूरजकुंवरका संबन्ध महाराजा सवाई जयसिंहसे किया, और महाराजा जयसिंह जोधपुरसे रवानह हुए; महाराजा अजीतसिंहके निकलनेमें कुछ देर हुई; तब एक काग़ज़ राठौड़

(१) कहीं नौलाई और कहीं बड़ौदके मक़ामसे लौट आना लिखा है.
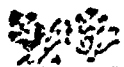
दुर्गदासने महाराणा अमरसिंहके नौकर कायस्थ बिहारीदासके नाम सम
लिख भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे लिखते हैं:–

श्री परमेश्वरजी सहाय छै.
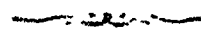
स्वस्तिश्री उदयपुर सुभस्थाने पंचोली श्री बिहारीजी योग्य, राजश्री
मजी लिखावतं राम राम बांचजो, अठारा समाचार श्री परमेश्वरजीरा
भला छै, थांहरा सदा भला चाहिजे, थे घणी बात छो, थां उपरांत कांई बात
अपरंच; म्हे समदड़ी गया था, तिण दिसा तो श्री दीवाणजीसूं म्हे अर्ज़
छै, जु राजा श्री जयसिंहजीरे कूंच हुवारी खबर आवे छै, तिण घड़ी म्हे जा
व्हां छां, सु थें श्री दीवानजीसूं मालुम करजो; राजा जयसिंहजी तो राजा अजीत
सूं कूंचरी बहुत ताकीद कराई, पिण व्हांरे दोय दिनरी ढील देखी, तरे
जयसिंहजी कूंचकर जोधपुर सूं कोस १७ पीपाड़ आंण डेरा किया, ने
समदड़ी खबर आई, जु राजा जयसिंहजी तो जोधपुरसूं कूंच कियो, उणहीज
म्हे समदड़ीसूं चढीया, सु परबाहिरा आंणने राजा जयसिंहजीसूं सामल
ने राजा अजीतसिंहजी बी आंवण दिसां कहे तो छै, जु म्हे आवां छां, सु जो
तो भलांईज छै; ने नहीं आवसी तो म्हांने तो श्री दीवाणजी खिजमत
सु म्हे तो राजा जयसिंहजी साथे व्हां आंबेर जावां छां.

तथा नवाब गाज़ीउद्दीनखां रो खत म्हने आयो छो. तिण जाब लिखि
तिणरी नकल ने उठासूं खत आयो छो. सु बिजनस भेया सलामत रायजीरा
घाल मेलियो छै: सु हकीकत श्री दीवाणजीसूं मालुम करावजो: वाहुड़ता
समाचार वेगा वेगा देजो. विक्रमी १७६५ आसोज वदि २ [हि० ११२० न
जमादियुस्सानी = ई० १७०८ ता० ३ सेप्टेम्बर].

इन दोनों राजाओंने जोधपुरसे रवानह होकर महाराणा अमरसिंहको भी
मददके लिये बुलाना चाहा था; परन्तु यह सलाह न जाने किस सबबसे मौकू
इस बारेमें दुर्गदास राठोड़का जो कागज़ बिहारीदास पंचोलीके नाम आ
उसकी नक़्ल यह है:–

श्री परमेश्वरजी सहायछै.

स्वस्ति श्री उदयपुर सुथाने पंचोली श्री बिहारीजी योग्य, राज श्री दुर्ग

लिखावतुं राम राम वांचजो, अठारा समाचार श्री परमेश्वरजीरा प्रताप सूं भला छै, थांहरा सदा भला चाहीजे, थें घणी बात छौ, थां उपरांत कांई बात न छै, अपरंच॥ महाराजा अजीतसिंहजी ने महाराजा जयसिंहजी म्हांने श्री दीवाणजीरी हजुरनूं विदा किया छै, श्री दीवाणजी नूं बुलावणरे वास्ते; सो श्री ठाकुरजीरो दुवो छै, तो आसोज सुद १० सौमवाररा हालिया म्हे श्री दीवाणजीरे पांवे आवां छां, वाहुड़ता कागल समाचार वेगा वेगा देजो सं० १७६५ आसोज सुद ८ [हि० ११२० ता० ६ रजव = ई० १७०८ ता० २४ सेप्टेम्बर].
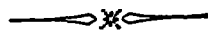
यह महाराणाको बुलाना इस वास्ते था, कि कुल हिन्दुस्तानमें फ़साद फैलाकर मुसल्मानोंकी बादशाहत ग़ारत कीजावे. इसके बाद अजमेरके सूबहदार शजाअ़त-ख़ांने इन लोगोंको दम देकर कुछ दिनों तक पुष्करमें रक्खा; और बादशाहसे मदद चाही; परन्तु वह कामबख़्शकी लड़ाईमें रुका हुआ था, कुछ भी मदद न कर सका; यह दोनों राजा दुर्गदास और मेवाड़की मददगार फ़ौजके मुसाहिब साह सांवलदास और महासहाणी चतुर्भुज समेत पुष्कर पहुंचे, उधरसे अजमेरका सूबहदार (१) सय्यद हुसैनख़ां, मेड़तेका फ़ौज्दार अहमद सईदख़ां और नारनौलका फ़ौज्दार ग़ैरतख़ां वग़ैरह फ़ौज लेकर आपहुंचे; दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ, जिसमें बादशाही मुलाज़िम सय्यद हुसैनख़ां वग़ैरह तीनों सर्दार भाई बेटों समेत मारेगये, और सांभरपर महाराजाने क़ब्ज़ा करलिया. इस लड़ाईका हाल महासहाणी चतुर्भुजने सांभरसे कायस्थ बिहारीदासको लिखा था, जिसकी नक़्ल यहां दर्ज की जाती है:-

काग़ज़की नक़्ल.
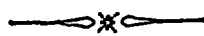
सिद्धश्री उदयपुर सुथाने सर्वोपमा जोग्य पंचोली श्री बिहारीदासजी जोग, सांभरी पेली आड़ीरा डेरा कोस अर्ध तलाई देवजानी नखला डेरा थी मसाणी चतरभुज लिखतुं जुहार बांचजो जी, अठारा समाचार श्रीजीरी सुनजर थी भलासै जी, राजरा सदा भला चाहीजे जी, अपरंच- काती विद १५ सनीचर री राते खवरी आई, मियां सैयद हुसैनख़ां जमीती असवार हज़ार चार थी चल्यो आवे सै; काती सुद १ रवे रे

---

(१) इस वक़्त अजमेरकी सूबहदारीपर शजाअ़तख़ां था, परन्तु मुन्तख़बुल्लुबाब तवारीख़में हुसैनख़ां लिखा है, जिससे ऐसा मालूम होता है, कि इसके नामपर अजमेरकी सूबहदारी होगई होगी, लेकिन् तामील होनेमें शजाअ़तख़ांके लिहाज़ और दक्षिणके झगड़ोंसे मुल्तवी रही.

दिने पाछली घड़ी चार राती थी, जदी राजाजी राजाजी दमामो हुओ, दिन पौहर एक चढ़तां सिलेह करेर डेरां थी चढ़्या, तलाई देवजानी थी कोस अर्ध थलो छे, जिठे आवे ऊभा रह्या; परेंथी मीयां तथा मीयांरा भाई भतीजा हाथ्यां ऊपरि चढ़्या आव्या, पाछलो घड़ी चार दिन थो, जदी मुकालबो हुओ, सूधा भेलाई होगया जी, एक महाभारत व्हे जिश्यो भारत हुओ जी; मीयां तथा मीयांरा भाई बंध तथा लोग जमीती सारी थी काम आव्यो जी, श्री दीवाणजी राजाजी राजाजीरे बोलबाला हुओ जी, राजाजी राजाजीरे खैर आवी, और चैन अमन श्रीजी री सुनजरथी छे जी. राजाजी राजाजीरै किहीं बातरो उसवास न ल्यावो जी, विशेष खेम कुशल छे जी, और समाचार विवरा वार पंचोली सांवलदासरा कागद थी मालूम होसी जी. काती सुद १ सं० १७६५ [हि० ११२० ता० ३० रजब = ई० १७०८ ता० १५ ऑक्टोबर].

आंबेरपर महाराजा जयसिंहके प्रधान रामचन्द्रने इस लड़ाईसे पहिलेही क़ब्ज़ह करलिया था, अब सांभरको दोनों राजाओंने आधा आधा बांटकर आंबेरकी तरफ़ कूच किया, और वहां पहुंचनेपर खुशीका जश्न (उत्सव) हुआ. महाराजा अजीतसिंह वापस जोधपुर आये. इन्हीं दिनोंमें महाराजाने पालीके ठाकुर मुकुन्ददास चांपावत राठौड़को धोखेसे मरवा डाला, मुकुन्ददासको पालीकी जागीर और मन्सब बादशाहकी तरफ़से मिला था, महाराजा ऊपरी दिलसे उससे खुश थे, लेकिन् भीतरसे जलते थे, जो महाराजाके एक काग़ज़से ज़ाहिर है, कि उन्होंने अपने हाथसे उदयपुरके गुसांई नीलकंठगिरको लिखा था-(देखो पृष्ठ ७६४). मुकुन्ददासको क़िलेपर बुलवाया, जहांपर उसको छिपियाके ठाकुर प्रतापसिंह ऊदावत और कूंपावत सबलसिंहने मारडाला, तब मुकुन्ददासके राजपूत गहलोत भीमा और धन्नाने प्रतापसिंहको मारकर बदला लिया, और आप भी मारेगये. उस वक्त किसी कविने सोरठे व दोहे कहे थे, जो नीचे लिखेजाते हैं:-

सोरठा.

आजूणी अधरात, महळज रूनी मुकन्दरी ॥
पातलरी परभात, भली रुवाणी भीमड़ा ॥ १ ॥
पांच पहर लग पौळ, जड़ी रही जोधाणरी ॥
रै गढ़ ऊपर रौळ, भली मचाई भीमड़ा ॥ २ ॥
चांपा ऊपर चूक, ऊदा कदेन आदरे ॥
धन्ना वाळी धूक, जणजण ऊपर जूभवे ॥ ३ ॥

दोहा.

भीमा धन्ना सारखा दो भड़ राख दुबाह ॥
सुण चन्दा सूरज कहे राह न रोके राह ॥ ४ ॥

अर्थ- १ - आज आधी रातको मुकुन्ददासकी औरतें रोईं, उसी तरह फ़ज्रमें प्रतापसिंहकी औरतोंको ऐ ! भीमड़ा तूने अच्छा रुलाया. २- जोधपुरके दर्वाज़े पांच पहर तक बन्द रहे, ऐ ! भीमड़ा क़िलेमें तूने अच्छा कोलाहल मचाया. ३- चांपावतोंपर ऊदावत कभी चूक नहीं करेंगे, क्योंकि हर एकके दिलोंपर धन्नाकी दह्शत ग़ालिब होरही है. ४- सूर्य चन्द्रमाको कहता है, कि भीमा और धन्ना, जैसे दो बहादुर अपने पास रक्खेजावें, तो राहु ग्रह कभी रास्ता नहीं रोकेगा.

महाराजाने नागौरपर चढ़ाई करके वहांके रावसे फ़ौज ख़र्च लिया; इसके बाद अजमेरको जा घेरा, वहांके सूबहदार शुजाअ़तख़ांने कृष्णगढ़के राजा राजसिंहकी मारिफ़त पैंतालीस हज़ार रुपया फ़ौज ख़र्च देकर पीछा छुड़ाया; शाहपुरेके राजा भारतसिंहने अजमेरके ज़िलेके राठौड़ोंको ख़ूब ज़लील किया था, इस वक्त वे बादशाहके साथ दक्षिण गये थे, पीछेसे अजमेरके राठौड़ोंने महाराजा अजीतसिंहकी हिमायत चाही, तब बादशाही लश्करसे भारतसिंहने और शाहपुरेसे उनके अह्लकारोंने उदयपुरमें पंचोली बिहारीदासके नाम काग़ज़ भेजे, जिनकी नक़्ल नीचे लिखी जाती हैः-

काग़ज़की नक़्ल.

—*—

सिद्धश्री उदयपुर सुथाने राज श्री बिहारीदासजी योग्य, लिखाइतुं लश्कर थी राज श्री भारथसिंहजीकेन जुहार बांचजो जी, अठाका समाचार श्री जीका प्रसाद थी भलासै जी, आपका समाचार सदा आरोग्य चाहिजैजी, तो म्हांने परम संतोष होइजी, राजि उपरांत म्हांके सर काई बात न छैजी, राजि म्हांके घणी बात छै जी, म्हांसूं हमेशा हेत मया राखैछै, तींथी विशेष राखावजो जी, अपरंच - काम्बख़्श बेटा सूधी काम आव्यो, बादशाह बहादुरकी फतह हुई, अर समाचार होसी, सो कागद पाछां थी लिखांछां जी; अर उठे अमरसिंह छै, सो वांकी राजिने घणी सरम छैजी, अर शाहपुरा काम काज को घणे बसमाने रखावजो जी; कागज समाचार मया करी लिखाजोजी. मिती माह सुदी ६ सं० १७६५ [हि० ११२० ता० ४ ज़िल्क़ाद = ई० १७०९ ता० १७ जैन्युअरी] वर्षे.

शाहपुराके अहलकारोंके
पत्रकी नक़्ल.

—⊰✻⊱—

सिद्धश्री उदयपुर सुथाने सर्वोपमा योग्य पंचोलीजी श्री बिहारीदासजी चिरणजी चिरण कमलांणं, शाहपुरा थी लिखावतंच चौधरी सांवलदास व्यास कमलाकर केन सेवा मुजरो आशीर्वाद अवधारजो जी, अठारा समाचार श्रीजी री कृपा थी भला सै जी, श्री राजिरा सदा आरोग्य चाहिजै जी, राज बड़ा सौ, साहिब छौ, मोटा छौ, म्हारे आप घणी बात छौ, आप उपरांत कांई बात न सै जी, म्हांसू आप महरवानगी राखौ छौ, जिशी अवधारता रहजो जी, अठा सरीखी चाकरी होय, सो मया करावजो जी, अपरंच— राजाजी श्री अजीतसिंहजी अजमेर आया छै जी, सो राठौड़ कनकसिंह राजाजी तीरे छै, और धरतीरा राठौड़ ठाकुर सारा छै, सो म्हांसूं कुं मया करै छै, सो आप तो सारी जाणो छौ जी, सो अर्जदास्त श्रीजीसूं लिखी छै; सो आप वसमानो ऊपर करे अर्जदाश्त गुजरावजो जी. राज श्री भारथसिंहजीरी शर्म राजने छै जी; अर राजाजी राठौड़ांरो ऊपर करसी, तो भारतसिंहजी पण श्रीजीरा छोरू बन्दा छै, धणी छौ, सो म्हांरो ऊपर राज करशो जी; सारी शर्म आपने सै जी, म्हे आप छतां नचीता छांजी, सारो जतन आपने ही करनो सै जी; कागल समाचार वेगा मया करावजो जी. मिती चैत्र वदी ३ सम्वत् १७६५ वर्षे [हि० ११२० ता० १७ ज़िल्हिज = ई० १७०९ ता० २७ फ़ेब्रुअरी].

—⊰✻⊱—

महाराजा अजीतसिंहने अजमेरमेंसे रुपये वुसूल करके देवलिया प्रतापगढ़में अपनी शादी की, और जोधपुर चलेगये. यह ख़बरें बादशाह बहादुरशाहके पास दक्षिणमें पहुंचीं, तो नव्वाब असदख़ांने एक ख़त अजमेरके सूबहदार शजाअ़तख़ां को लिख भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे लिखते हैं:—

—⊰✻⊱—

नव्वाब असदख़ांका ख़त, अजमेरके सूबहदार शजाअ़तख़ांके नाम.

—⊰✻⊱—

अमीरी और बड़े दरजेकी पनाह सलामत, आपके ख़त देरसे पहुंचे, बहुत तअ़ज्जुब हुआ, ख़ैर! आख़िरमें एक तुम्हारा ख़त पहुंचा, पूरा हाल उससे नहीं मालूम

हुआ, मुनासिब है, कि अच्छी तरहपर लिखते रहें. इन दिनोंमें दोस्तीके ख़यालसे उम्दह राजा राणाजी और अजीतसिंह, और जयसिंहको ख़त भेजे हैं, जिनका मज़्मून अलहदह कागज़ोंसे ज़ाहिर होगा; तुमको मालूम है, कि बहुत आदमी झूठ बका करते हैं, लेकिन् मैं सच कहता हूं, और लिखता हूं, कि अगर ये लोग ताबेदारी करें, और बादशाही मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ रहें, तो हर तरह बिह्तर होगा, फ़ायदह उठावेंगे; और अगर बदमआशोंके कहनेपर अमल किया, बिल्कुल ख़राब होंगे. ख़ैर! इस बादशाही ख़ैरख़्वाहने राजा अजीतसिंह और राजा जयसिंहको अपना बेटा कहा है, और हर तरहपर मुहब्बत है; इसलिये दिल जलता है, और नसीहत लिखी जाती है; अगर कुबूल करें, तो हर तरह इनका आराम है. बादशाहोंके साथ ताबेदारीके बग़ैर इलाज नहीं है. अपने बुज़ुर्गोंके हालपर ग़ौर करना चाहिये, कि बादशाही रज़ामन्दीके लिये किस तरहकी ख़िद्मतें की हैं; अगर शुरूअ़में कम ज़ियादह हो, उसपर नज़र न रखनी चाहिये, ख़िद्मत बजा लावें, आख़िरमें तरक़ी होजायगी, इस बातका जवाब लिखें, जिससे हम काममें दख़्ल दें.

ग़रज़ यह है, कि अव्वल बार, जो हज़रतने फ़र्माया है, कुबूल करना चाहिये; इसके बाद उम्मेद है, कि जल्द उम्मेदको पहुंचेंगे. अगर अब तक बेजा हरकत न करते, तो काम बन जाता, लेकिन् उन् लड़कोंके मिज़ाजसे क्या किया जावे. तुम आप जानते हो, हम इनको बेटा कहनेके सबबसे रंज करते हैं; वर्नह कोई मत्लब नहीं है, मेरी तरफ़से तुम समझाओ. इस वक्त फ़त्हमन्द बादशाही लश्कर मन्ज़िलवार हिन्दुस्तानको आता है. हमारी और तुम्हारी एक इज़्ज़त है, कोई ऐसा काम नकरें, जिससे हम और तुम बादशाही दर्गाहमें लोगोंके साम्हने शर्मिन्दह हों; बाप बेटेपनका, जो क़रार हुआ था, वह बिल्कुल भूल गये. इस बातको, जिसमें ख़ल्क़तका आराम है, जल्द तै करके लिखें, जिसपर कुछ कार्रवाई की जावे. ता० ११ सफ़र सन् ३ जुलूस [हि० ११२१ = वि० १७६६ प्रथम वैशाख शुक्ल १२ = ई० १७०९ ता० २१ एप्रिल].

विक्रमी १७६७ [हि० ११२२ = ई० १७१०] में महाराजाने बादशाह बहादुरशाहके पास भंडारी खींवसीको भेजकर शाहज़ादह अ़ज़ीमुश्शानकी मारिफ़त फ़र्मान वग़ैरह पाये, और ख़ुद महाराजा भी बादशाहसे सलाम करके जोधपुर लौटआये. विक्रमी १७६८ भाद्रपद [हि० ११२३ रजब = ई० १७११ सेप्टेम्बर] में महाराजा अजीतसिंह फ़ौज लेकर कृष्णगढ़ गये, और वहांके राजा राजसिंहसे पेशकश लेकर वापस आये.

विक्रमी १७७० ज्येष्ठ कृष्ण १ [हि० ११२५ ता० १५ रबीउस्सानी = ई० १७१३ ता० १२ मई] को जूनियांके राठौड़ करणसिंह और जुझारसिंहको महाराजाने बुलाकर जोधपुरके क़िलेमें दग़ासे मरवाडाला. इसके बाद इसी वर्षके भाद्रपद शुक्ल ५ [हि० ता० ४ शअ्बान = ई० ता० २७ ऑगस्ट] को अपने आदमियोंको भेजकर दिल्लीमें नागौरके राव इन्द्रसिंहके कुंवर मुहकमसिंहको मरवाडाला. इसपर बादशाहने राव इन्द्रसिंहको उनके छोटे बेटे मोहनसिंह समेत बुलवाया; महाराजा अजीतसिंहने मोहनसिंहको भी रास्तेहीमें दग़ासे मरवाडाला, जिससे बादशाह फ़र्रुख़सियरने नाराज़ होकर सय्यद हुसैनअ़लीको बड़ी फ़ौजके साथ मारवाड़पर भेजा. विक्रमी १७७१ [हि० ११२६ = ई० १७१४] में महाराजाने हुसैनअ़लीसे सुलह करली, और बड़े कुंवर अभयसिंहको दिल्ली भेजदिया. इस वक्त अहमदाबादकी सूबहदारी महाराजाके नाम हुई. विक्रमी १७७२ आषाढ़ [हि० ११२७ जमादियुस्सानी = ई० १७१५ जून] में कुंवर अभयसिंह जोधपुर आये, और महाराजा अहमदाबाद गये. इसी संवत्के आश्विन [हि० शव्वाल = ई० ऑक्टोबर] महीनेमें महाराजाकी कन्या इन्द्रकुंवर बाईका डोला दिल्ली भेजागया, और पौष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = ई० ता० ११ डिसेम्बर] को उसकी फ़र्रुख़सियरके साथ वहां शादी हुई.

विक्रमी १७७३ श्रावण [हिज्री ११२८ शअ्बान = ई० १७१६ ऑगस्ट] में महाराजाने इन्द्रसिंहसे नागौर छीन लिया. विक्रमी १७७४ [हि० ११२९ = ई० १७१७] में अहमदाबादकी सूबहदारी मौक़ूफ़ हुई, और महाराजा जोधपुर आये. विक्रमी १७७५ [हि० ११३० = ई० १७१८] में दिल्ली गये, और सय्यद अब्दुल्लाहख़ां वज़ीरसे मिलगये, जिससे बादशाह फ़र्रुख़सियर दिलमें नाराज़ था; बादशाहने अब्दुल्लाहख़ां और महाराजाको मारनेकी तद्बीरें कीं, परन्तु वह ख़बरदार होगये; आख़िरकार अब्दुल्लाहख़ांने अपने भाई हुसैनअ़लीख़ांको दक्षिणकी सूबहदारीसे बुलाया, वह तीस हज़ार फ़ौज लेकर आया; तब अब्दुल्लाहख़ां, महाराजा अजीतसिंह और कोटेके महाराव भीमसिंह व कृष्णगढ़के राजा राजसिंह वग़ैरहने लाल क़िलेमें बन्दोबस्त करलिया; विक्रमी १७७५ फाल्गुन् शुक्ल ९ [हि० ११३१ ता० ८ रबीउस्सानी = ई० १७१९ ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को फ़र्रुख़सियर भागकर ज़नानेमें जाछिपा; दिल्ली शहरमें ग़द्र मचगया. हुसैनअ़लीख़ांके साथके २००० हज़ार मरहटे सवार बादशाही मुलाज़िमों और दिल्लीकी रअ़य्यतके हाथसे मारेगये. विक्रमी फाल्गुन् शुक्ल १० [हि० ता० ९ रबीउस्सानी = ई० ता० २८ फ़ेब्रुअरी] को ज़नानख़ानेसे लाकर फ़र्रुख़सियरको क़ैद किया, और उसी समय बहादुरशाहके पोते और रफ़ीउश्शानके बेटे शम्सुद्दीन अबुल

बरकातको जेलखानहसे निकालकर तख़्तपर बिठादिया, जिसकी २० बीस वर्षकी उम्र थी; परन्तु वह सिलकी बीमारीसे कमज़ोर था; तीन दिन तक महाराजा लाल क़िलेमें रहे, फिर अपनी बेटी इन्द्रकुंवरबाईको लेकर जोधपुर चले आये; वह बेगम कुछ अर्सेके बाद जोधपुरमें मरी. जोधपुरकी तवारीख़में उसका ज़हर खाकर मरना लिखा है, परन्तु सबब नहीं बयान किया.

महाराजाको दोबारह अहमदाबादकी सूबहदारी मिली. वि० १७७६ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० ता० २३ रजब = ई० ता० १० जून] को रफ़ीउद्दरजात मरगया, और उसके भाई रफ़ीउद्दौलहको सय्यदोंने बादशाह बनाकर उसका "शाहजहां सानी" ख़िताब रक्खा; लेकिन् वह भी उसी बीमारीसे विक्रमी भाद्रपद [हि० शव्वाल = ई० ऑगस्ट] में मरगया; तब बहादुरशाहके पोते और जहांशाहके बेटे रौशनअख़्तरको दिल्लीके तख़्तपर बिठाया, और "मुहम्मदशाह" लक़ब रक्खा. महाराजा जयसिंह सय्यदोंकी दुश्मनीसे ज़ोधपुर चलेआये; महाराजा अजीतसिंहने अपनी बेटी सूरजकुंवरका विवाह महाराजासे करदिया. सय्यदों और दूसरे मन्सबदार निज़ामुल्मुल्क वग़ैरहसे बिगाड़ हुआ, तब निज़ामुल्मुल्ककी बर्बादीके लिये सय्यद हुसैनअलीख़ां बादशाहको बड़ी फ़ौजके साथ दक्षिणकी तरफ़ ले निकला, और अब्दुल्लाहख़ां दिल्लीमें रहा; लेकिन् हुसैनअलीख़ां फ़तहपुरसे ३५ कोसपर मारागया, और अब्दुल्लाहख़ां दिल्लीमें मुहम्मदशाहसे लड़कर क़ैद हुआ. यह ख़बर सुनकर महाराजा जयसिंह जोधपुरसे दिल्ली गये, और महाराजा अजीतसिंहने अजमेर वग़ैरह बादशाही ज़िलोंपर क़ब्ज़ा करलिया, तब मुहम्मदशाहने मारवाड़पर फ़ौज भेजी.

विक्रमी १७७९ [हि० ११३४ = ई० १७२२] में मेड़तेपर बादशाही फ़ौजका मुहासरा होनेसे महाराजाने सुलह करके अपने कुंवर अभयसिंहको बादशाही ख़िद्मतमें दिल्ली भेजदिया. कुंवर अभयसिंहको महाराजा जयसिंह और दूसरे मुग़ल सर्दारोंने समझाया, कि बादशाह फ़र्रुख़सियरके मारेजानेका कुसूर बादशाहके दिलमें महाराजाकी तरफ़से खटकता है; तुम मारवाड़का राज अपने घरानेमें रखना चाहते हो, तो उनको मरवा डालो; तब कुंवरने अपने छोटे भाई बख़्तसिंहको लिख भेजा. इस इशारेके मुवाफ़िक़ बख़्तसिंहने अपने बापको विक्रमी १७८१ आषाढ़ शुक्ल १३ [हि० ११३६ ता० ११ शव्वाल = ई० १७२४ ता० ३ जुलाई] को ज़नानेमें सोते हुए मारडाला. इनके साथ राणियां, ख़वास, लौंडियां, नाज़िर वग़ैरह जिन सबकी तादाद ६६ थी, चितामें जलमरे. यह महाराजा बहादुर, फ़य्याज़, घमंडी, लुटेरे, बचनके सच्चे दोस्तको नफ़ा व

दुश्मनको नुक्सान पहुंचाने वाले थे. इनके नौकर ऐसे वफ़ादार थे, कि तक्लीफ़की हालतोंमें भी उनके बदनपर किसी तरहका सद्मह नहीं आने दिया, वर्नह तमाम उम्र बादशाहतके दुश्मन रहे थे, जीना मुश्किल होता. इनके १५ बेटे थे, १- अभयसिंह, २- बख़्तसिंह, ३- सुल्तानसिंह, ४- तेजसिंह, ५- दौलतसिंह, ६- किशोरसिंह, ७- जोधसिंह, ८- आनन्दसिंह, ९- रायसिंह, १०- अखैसिंह, ११- रत्नसिंह, १२- रूपसिंह, १३- मानसिंह, १४- प्रतापसिंह, और १५- छत्रसिंह.

३५ महाराजा अभयसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७५९ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ शनिवार [हि० १११४ ता० २८ जमादियुस्सानी = ई० १७०२ ता० १८ नोवेम्बर] को हुआ था. जब महाराजा अजीतसिंहको बख़्तसिंहने तलवारसे मारा, तो वह एक महलमें जा छिपा, क्योंकि वह जानता था, कि पिताके राजपूत मुझे मारे बग़ैर न छोड़ेंगे; राजपूतोंने महलको घेरलिया; तब बख़्तसिंहने मुहम्मदशाहका फ़र्मान और अभयसिंहका काग़ज़ दिखलाकर कहा, कि मैंने उनके हुक्मकी तामील की है, अगर इस वक्त मैं महाराजाको नहीं मारता, तो फ़र्रुख़सियरके एवज़में महाराजाकी जान जानेके सिवा जोधपुरका राज भी राठौड़ोंके ख़ानदानसे चलाजाता. इसपर राजपूत लोग ठंडे हुए, लेकिन् अजीतसिंहका माराजाना उनके दिलोंपर खटकता रहा; और राजपूतानाकी तमाम रियासतोंमें बख़्तसिंह ऐसा बदनाम हुआ, कि आजतक उसका नाम लेनेसे लोग नफ़्रत करते हैं; और शाइरोंने मारवाड़ी ज़बानमें उसकी बदनामी बहुतसी की है, जिसमेंसे १ दोहा और १ छप्पय यहां लिखते हैं:-

दोहा.

बखता बखत बाहिरा। क्यूं मार्यो अजमाल॥
हिंदवाणी को शेवरो। तुरकाणी को शाल॥ १॥

छप्पय.

प्रथम तात मारियो। मात जीवती जळाई॥
असी चार आदमी। हत्या ज्यांरी पण आई॥
कर गाढ़ो इकलास। वेग जयसिंह बुलायो॥

मेटी धर्म मुर्जाद । भरम गांठको गंमायो ॥
कवि अणां हूंत केवा करें। धरा उदक लेवण धरी ॥
बखतसी जन्म पायां पछे। किशी बात आछी करी ॥

जब महाराजा अजीतसिंहके साथ राणियां सती होनेको निकलीं, तब आनन्दसिंह, रायसिंह, और किशोरसिंहकी माओंने बालकोंको सर्दारोंके सुपुर्द किया. किशोरसिंहको तो उनके ननिहाल जयसलमेर भेजदिया, और आनन्दसिंह व रायसिंहको देवीसिंह और मानसिंह चहुवान पहाड़ोंमें लेगये. इसके बाद मारवाड़में ज़ोर पाकर इन दोनों भाइयोंने ईडरका राज्य लेलिया; यह हाल ईडरके ज़िक्रमें लिखा जायगा; बाक़ी भाइयोंको बख़्तसिंहने मरवाडाला. महाराजा अजीतसिंहको मार डालनेके एवज़ बख़्तसिंहको क़िला नागौर और राजाधिराजका ख़िताब मिला; कुल सर्दार, जो महाराजा अभयसिंहके पास थे, वे दिल्लीसे नाराज़ होकर चले आये; बाक़ी जोधपुरसे निकल गये; और कहा, कि भंडारी खींवसी और रघुनाथको क़ैद किया जावे, क्योंकि इन लोगोंने महाराजा अजीतसिंहके मारनेकी सलाह दी थी. लाचार महाराजा अभयसिंहको ऐसा ही करना पड़ा; इस हुल्लड़में भंडारी वग़ैरह और भी आदमी मारे काटे गये, और महाराजा अभयसिंहने अपने राजपूतोंको बड़ी मुश्किलसे ताबे किया.

महाराजा विक्रमी १७८७ [हि० ११४३ = ई० १७३०] में मुहम्मद-शाहके हुक्मसे गुजरातकी सूबहदारीकी सनद लेकर मारवाड़में आये, और अह्मदाबादके सूबहदार सर्बलन्दख़ांसे सूबहदारी लेनी चाही; परन्तु उसने हुक्मकी तामील नहीं की; तब महाराजा फ़ौज लेकर चढ़े (१), और सिरोहीके राव उम्मेदसिंहको जा घेरा, जो महाराजाके बख़िलाफ़ था; जब उसने ज़ियादह फ़ौज देखी तो अपनी बेटी और फ़ौज ख़र्च देकर पीछा छुड़ाया. वहांसे महाराजा फ़ौज समेत अह्मदाबाद पहुंचे; सर्बलन्दख़ांने चार हज़ार सवार व चार हज़ार पैदलोंमेंसे पांच सौ सवार और १००० पैदल, छोटी बड़ी सात सौ तोपें व दो हज़ार मन बारूत अपने बेटे शाहनवाज़ख़ांके साथ शहर में छोड़कर ख़ुद महाराजाके मुक़ाबलेको चढ़ा.

---

(१) मिरात अहमदीमें यह हाल इस तरहपर लिखा है:- "हिज्री ११३६ ज़िल्काद [वि० १७८१ श्रावण = ई० १७२४ ऑगस्ट] को नव्वाब निज़ामुल्मुल्क बहुत झगड़ोंके सबब वज़ारतका उह्दह छोड़कर हुज़ूरकी इजाज़त बग़ैर दक्षिणको चलदिया, तो इस वज्हसे कि मुग़लियह सल्तनतमें वज़ीर नहीं बदला जाता, निज़ामुल्मुल्कको वकील मुतलक़, याने ख़ास मुसाहिब और 'आसिफ़जाह' का ख़िताब देकर एतिमादुद्दौलह क़मरुद्दीनख़ां बहादुर नुस्रतजंगको

विक्रमी १७८७ आश्विन शुक्ल ७ [हि० ११४३ ता० ५ रबीउस्सानी = ई० १७३० ता० १७ ऑक्टोबर] को मूंचेड़ गांवके पास दोनों तरफ़से गोलन्दाज़ी शुरूअ् हुई, लेकिन् रात होजानेके सबब उस दिन लड़ाई बन्द रही; दूसरे दिन नव्वाब मुक़ाबलेको तय्यार हुआ, परन्तु कुछ लड़ाई होनेके बाद महाराजा पीछे हटे (१). मिरातअहमदीमें लिखा है, कि महाराजाने साबरमती नदीके पासके गांवोंमें मोर्चे जमा लिये, और भद्र क़िलेकी तरफ़ गोले चलाये; उधरसे भी चलने लगे; तीसरा दिन भी ऐसेही बीता; चौथे दिन विक्रमी आश्विन शुक्ल १० [हि० ता० ८ रबीउस्सानी = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को सर्बलन्दखां मए अपनी जमइयतके शहरसे निकलकर लड़ा; महाराजाने भी फ़ौजके तीन हिस्से करके लड़ाई शुरूअ् की; पहिले गोलन्दाज़ी, फिर तीर, बन्दूक़, पीछे तलवारोंसे कटकर लड़े; सब दिन अच्छी तरह लड़ाई हुई; पहिले हमलेमें महाराजाकी फ़ौज हटगई, लेकिन् दूसरे वक्त मारवाड़ी सर्दारोंने नव्वाबकी फ़ौजको बर्बाद किया, और तोपख़ानह व फ़त्हगज नामी हाथी वगैरह लेलिया. मिरातअहमदीमें लिखा है, कि सर्बलन्दखांके पास कुल चार सौ सवार बाक़ी रहगये थे; लेकिन् यह तादाद महाराजाको मालूम नहीं हुई, जिससे हमलह नहीं किया, रात होजानेसे नव्वाब शहरमें आगया.

क़ाइम मक़ाम वज़ीर किया. मुबारिज़ुल्मुल्क सर्बलन्दखांको, जिसका मन्सब सात हज़ारी ज़ात, सात हज़ार सवार दो अस्पह सिह अस्पह था, गुजरातकी सूबहदारी आसिफ़जाहसे उतारकर इनायत कीगई. हिज्री ११४२ [वि० १७८७ = ई० १७३०]में जब कि बहुतसा सामान हासिल करके मुबारिज़ुल्मुल्कने बादशाहकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ सूबहका इन्तिज़ाम अच्छी तरह न किया, और अमीरुल्उमरा सम्सामुद्दौलह बादशाही मुसाहिबसे हर तरह बर्ख़िलाफ़ी रहने लगी, और फ़ौजके सवार मौकूफ़ कियेजानेका हुक्म दियागया, तो मुबारिज़ुल्मुल्कने कई बार हुज़ूरमें इस्तिअ़्फ़ा भेजा, जिसपर एतिमादुद्दौलह वज़ीरने उसकी तरफ़से बादशाहका दिल फेरकर जोधपुरके महाराजा अभयसिंहको, जो उस वज़ीरसे मिलावट रखता था, गुजरातकी सूबहदारीके लिये तज्वीज़ किया; और उसको बादशाही हुज़ूरसे ख़ास ख़िल्अ़त, जवाहिर, एक हाथी, अठारह लाख रुपया ख़ज़ानह, पचास तोपोंका तोपख़ानह और दूसरा सामान फ़ौज वगैरह, रवानगीके वक्त दिलवाया."

(१) मिरातअहमदीमें महाराजाका पीछा हटना २ या ३ कोस, और मारवाड़की तवारीख़में ५०० या सात सौ क़दम लिखा है.

दूसरे दिन फिर लड़ाई शुरूअ् हुई, तब सुलहका पैग़ाम होने लगा, नींबाजके ठाकुर ऊदावत अमरसिंहसे बात चीत हुई. मिरातअहमदीमें दूसरे दिन सुलह होना लिखा है, और मारवाड़की तवारीख़में ११ के दिन लड़ाई होकर १२ को सुलह होना तहरीर है; लेकिन् यह दूसरा लेख सिल्सिले वार और तारीख़ वार है; इसलिये यही सहीह मालूम होता है. सुलह इस तरहपर ठहरी, कि शहरपर महाराजाका क़ब्ज़ह कराया जावे, बारबर्दारी देकर नव्वाबको अहमदाबादके इलाक़ेसे बाहर पहुंचा देवें, और महाराजासे बराबरकी मुलाक़ात हो. दूसरी बातोंमें तो मिरातअहमदी और मारवाड़की तवारीख़में ज़ियादह फ़र्क़ नहीं है; लेकिन् मिरात-अहमदीमें बारबर्दारी और एक लाख रुपया महाराजाकी तरफ़से नव्वाबको देना, दूसरे, नव्वाबका मुलाक़ातको आना, महाराजाका पेश्वाई करके अपने डेरेमें लाना, पगड़ी बदल भाई होकर मिलना, और महाराजाके भाई बख़्तसिंहका तीरकी चोटके ज़ख़्मके सबब नहीं आना लिखा है; लेकिन् मारवाड़की तवारीख़में एक लाख रुपया देनेका ज़िक्र नहीं, और महाराजाका अपने भाई समेत घोड़ोंपर चढ़कर खड़े खड़े मुलाक़ात करना लिखा है; पगड़ी बदल भाई होना दोनों जगह तहरीर है. महाराजाने नव्वाबके साथ नींबाजके ठाकुर अमरसिंह ऊदावतको भेजा, और बारबर्दारी देकर पहुंचाया. इस लड़ाईमें दोनों तरफ़के सैकड़ों आदमी मारेगये, और महाराजा वहांके सूबहदार बने.

इस वक़ महाराजाने बादशाही तोपख़ानह, माल, अस्बाब, बहुत कुछ जोधपुर पहुंचा दिया; और सब मारवाड़ियोंने गुजरातियोंको तंग करके रुपये पैदा किये; हुकूमत क्या लुटेरापन था. अगर महाराजा अच्छा इन्तिज़ाम करते, तो शायद निज़ामुल्मुल्ककी तरह गुजरातका मुल्क इन्हींके क़ब्ज़ेमें रहजाता, उन्होंने गुजरातके कुछ मुल्की ज़िले मारवाड़में मिलालिये थे. चारण कविया करणीदान (१) ने सर्वलन्दख़ांकी लड़ाईका ग्रन्थ बिरदशृंगार नाम बनाया, जिसपर महाराजाने खुश होकर उसे लाख पशाव और आलावास गांव और कविराजका ख़िताब दिया, और आप उसकी जलेबमें चले, उस समयका मारवाड़ी ज़बानमें एक दोहा इस तरह पर है:-

---

(१) कविया करणीदान मेवाड़में सूलवाड़ा गांवका रहने वाला था, उसका ज़िक्र महाराणा संग्रामसिंहके हालमें लिखा जायगा.

दोहा.

अस चढियो राजा अभो कवि चाढे गजराज ॥
पोहर हेक जळेवमें मोहर हले महाराज ॥ १ ॥

विक्रमी १७८८ [हि० ११४४ = ई० १७३१] में बाजीराव पेश्वाने चौथ लेनेके इरादेसे बड़ौदेपर क़ब्ज़ा करलिया; महाराजाने फ़ौज भेजी, और दक्षिणसे निज़ामुल्मुल्क महाराजाकी मददको सूरत तक आया; यह सुनकर बाजीराव घबराया, और महाराजासे सुलहके साथ मुलाक़ात करके वापस चला गया; महाराजाने इस मददके एवज़ निज़ामुल्मुल्कको शुक्रिया भेजा. विक्रमी १७९० [हि० ११४६ = ई० १७३३] में महाराजा अपने नाइब भंडारी रत्नसीको अहमदाबादमें छोड़कर जोधपुर आये, और वहांसे फ़ौज लेकर बीकानेरपर चढ़े; नागौरका महाराज बख़्तसिंह भी इनके साथ था; लेकिन् दोनों भाई भागकर पीछे चले आये. इस लड़ाईका हाल बीकानेरके ज़िक्रमें लिखागया है. फिर ज़िले अजमेर हुरड़ा गांवके मक़ामपर महाराणा जगत्सिंह दूसरे, महाराजा जयसिंह, महाराज बख़्तसिंह, महाराव दुर्जनसालने इकट्ठे होकर मुसल्मानोंकी बादशाहत और मरहटोंके लिये सलाह की, जिसका हाल महाराणा जगत्सिंह दूसरेके बयानमें लिखा जायगा. इस मुलाक़ातमें महाराणाके लाल डेरे देखकर महाराजा अभयसिंहने भी अपने लिये उसी रंगके डेरे खड़े करवालिये. यह बात अभयसिंहकी शिकायतमें मुहम्मदशाहके कान तक पहुंची; तब बादशाहने जोधपुरके वकील भंडारी अमरसीको बुलाकर जवाब पूछा, जिसपर भंडारीने कहा, कि महाराजा अभयसिंहने मरहटोंको रोकनेके लिये सब राजाओंको इकट्ठा किया था, और इस बातपर तक़रार हुई, कि किसके डेरेमें बैठकर सब राजा सलाह करें; इस हुज्जतको मिटानेके लिये महाराजाने बादशाही दीवान-ख़ानह लाल रंगका तय्यार करवाकर वहां सबको इकट्ठा किया. इस बातपर भंडारीने अपनी चालाकीसे क़ुसूरकी सज़ाके एवज़ महाराजाको ख़िल्अ़त और ख़ातिरीका फ़र्मान भिजवाया.

विक्रमी १७९४ [हि० ११५० = ई० १७३७] में अहमदाबादकी सूबहदारी ज़ुल्म करनेके सबब महाराजासे उतार लीगई, और आपसमें महाराजा व बख़्तसिंहके नाइत्तिफ़ाक़ी हुई. विक्रमी १७९७ [हि० ११५३ = ई० १७४०] में महाराजाने दोबारह बीकानेरपर चढ़ाई की; इस मौक़ेपर महाराणा २ जगत्सिंहके कुंवर प्रतापसिंह दूसरे उदयपुरसे जोधपुर आये, और महाराजा अजीतसिंहकी बेटी

सौभाग्यकुंवरको विवाहकर उदयपुर चले गये. अभयसिंह लड़ाई झगड़ेमें थे, इससे नहीं आसके. इन्होंने बीकानेरके राजा ज़ोरावरसिंहको घेर रक्खा था, ज़ोरावरसिंहने जयपुर व नागौरके महाराजाओंसे मदद चाही. महाराज बख़्तसिंहने मेड़तेपर क़ब्ज़ा करलिया, और महाराजा जयसिंह भी जयपुरसे चले; तब महाराजा अभयसिंह भागकर जोधपुर चलेआये; लेकिन् दूसरी तरफ़ बड़ी भारी फ़ौज थी, क्योंकि महाराजा जयसिंहके साथ और भी राजा फ़ौज समेत शामिल थे; जोधपुरका क़िला घेर लिया गया. महाराजा अभयसिंहने बीस लाख रुपये फ़ौज ख़र्च देकर पीछा छुड़ाया; और महाराजा जयसिंह लौटे. यह हाल बीकानेरकी तवारीख़में लिखागया है. इसी वर्षमें महाराजा अभयसिंहने अपने भाई बख़्तसिंहसे मिलावट करके जयपुरकी तरफ़ चढ़ाई की; महाराजा अभयसिंह तो मेड़तेमें थे, और बख़्तसिंहने आगे जाकर गगवाणा गांवमें महाराजा जयसिंहसे मुक़ाबला किया. महाराजा अभयसिंहने लड़ाईके समय शामिल होनेको कहा था, परन्तु रीयांके ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया और कविराज करणीदानने महाराजासे कहा, कि आपके बेटे रामसिंह कम अक़ल हैं, जिनसे बख़्तसिंह राज छीन लेंगे, अब जयपुर वालोंसे उन्हें लड़ने दीजिये; अगर फ़तह हुई, तो भी ठीक, और जो बख़्तसिंह मारेगये, तो खटका मिटा. इससे महाराजा अभयसिंह रीयांमें ठहर गये, और महाराज बख़्तसिंह जयपुरकी फ़ौजसे ख़ूब लड़े, यहां तक कि फ़ौजके पांच हज़ार आदमियोंमेंसे बहुत थोड़े आदमी बाक़ी रहगये; और जयपुरकी फ़ौजकी हरावलमें शाहपुरेके राजा उम्मेदसिंह भी थे, उनके चार सौ आदमी इस झगड़ेमें काम आये. महाराज बख़्तसिंह भागकर पुष्करमें महाराजा अभयसिंहसे आमिले, और उनकी पूजाकी हथनी वग़ैरह सामान शाहपुरेके राजाने लूटकर महाराजा जयसिंहको देदिया. बख़्तसिंह नागौर गये; महाराजा अभयसिंह और जयसिंहमें इत्तिफ़ाक़ हुआ, और दोनों अपनी अपनी राजधानीको चले गये. यह लड़ाई विक्रमी १७९८ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० ११५४ ता० २३ रबीउल्अव्वल = ई० १७४१ ता० ९ जून] को हुई.

विक्रमी १८०० आश्विन शुक्ल १४ [हि० ११५६ ता० १३ शअ्बान = ई० १७४३ ता० ३ ऑक्टोबर] को जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहका देहान्त होनेपर महाराजा अभयसिंहने फ़ौज भेजकर अजमेरपर क़ब्ज़ा करलिया; तब जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंहने अजमेरकी तरफ़ चढ़ाई की, और अभयसिंह भी महाराज बख़्तसिंह समेत मुक़ाबले के लिये पहुंचे; परन्तु बीचके लोगोंने मेल करादिया. इस सुलहसे बख़्तसिंह नाराज़

होकर नागौर चला गया, तो भी अजमेर अभयसिंहके क़ब्ज़ेमें रहा, और दोनों राजा अपनी अपनी राजधानीको चले गये.

विक्रमी १८०३ [हि० ११५९ = ई० १७४६] में बीकानेरपर फ़ौज समेत भंडारी रत्नसीको भेजा; यह भंडारी वहां मारा गया, जिसका हाल बीकानेरके इतिहासमें लिखा गया है. महाराजा बख़्तसिंह और अभयसिंहमें नाइत्तिफ़ाक़ी रही, विक्रमी १८०६ आषाढ़ शुक्ल १५ सोमवार [हि० ११६२ ता० १४ रजब = ई० १७४९ ता० ३० जून] को महाराजा अभयसिंहका अजमेरमें देहान्त हुआ; इनके साथ २ ख़वास व ११ पर्दायत पुष्करमें सती हुईं, और जोधपुरमें ६ राणी व १४ ख़वास पर्दायती वग़ैरह जलीं.

यह महाराजा सुलह पसन्द, कारगुज़ार नौकरके क़द्रदान और बहादुर थे, लोगोंके कहनेपर अमल करलेते थे; परन्तु बुद्धिमान और फ़य्याज़ होनेके सबब रियासतमें नुक़्सान नहीं आया; और जो कभी कुछ हुआ, तो मिटाते रहे. इनके एकपुत्र रामसिंह थे, जो गद्दीपर बैठे.

३६ महाराजा रामसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७८७ प्रथम भाद्रपद कृष्ण १० [हि० ११४३ ता० २४ मुहर्रम = ई० १७३० ता० ७ ऑगस्ट] को हुआ था, यह अक़्लसे ख़ारिज थे, गद्दीपर बैठते ही नालायक़ और कमीन आदमियोंको पास रखकर दरजे और जागीरें देने लगे, जिनमेंसे एक अमीड़ा डोम भी उनका मर्ज़ीदान था. इन्होंने महाराज बख़्तसिंहको कहलाया, कि जालौर छोड़दो, वर्नह नागौर छीन लिया जायगा. इसके बाद महाराजा रामसिंह मेड़ते गये, वहां रीयांके ठाकुर शेरसिंहसे कहा, कि तुम अपना गुलाम बिजिया हमको देदो; मगर शेरसिंहने नहीं दिया, और रीयां चला गया. महाराजाने नागौरपर चढ़ाई की, तो दूसरे लोगोंने समझाया, और कहा, कि शेरसिंहको बुलाना चाहिये; तब महाराजा आप रीयां जाकर शेरसिंहको लेआये, और बिजियाको अपना मुसाहिब बनाया. इसके बाद आउवाके ठाकुर चांपावत कुशलसिंह और आसोपके ठाकुर कूंपावत कन्हीरामको भी नादानीकी बातोंसे नाराज़ करके अपने देशसे निकल जानेका हुक्म दिया. रीयांके ठाकुर शेरसिंह मेड़तियासे कुशलसिंहकी ज़बानी तक़ार हुई, जिससे चांपावत, कूंपावत,

व ऊदावत वगैरह बिगड़कर नागौर चले गये. पोहकरणके ठाकुर देवीसिंह व पालीके ठाकुर पेमसिंह वगैरह भी इसी तरह नाराज़ होकर नागौर पहुंचे.

इस बखेड़ेसे महाराजा रामसिंह और बख़्तसिंहमें कई लड़ाइयां हुईं. जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंह और बीकानेरके राजा गजसिंहके बड़े भाई अमरसिंह वगैरह महाराजा रामसिंहके मददगार, और बीकानेरके राजा और मारवाड़के उमराव चांपावत व कूंपावत वगैरह महाराज बख़्तसिंहके तरफ़दार होगये; आपसमें जो लड़ाई हुई, उसमें अमरसिंह वगैरह कई सर्दार मारेगये. इसके बाद मेल होगया, महाराजा रामसिंह मेड़ते, और बख़्तसिंह नागौर पहुंचे, बाक़ी मददगार भी अपने अपने ठिकानोंको चले गये; लेकिन् मारवाड़ी उमराव सब नागौरमें थे, मौक़ा देखकर महाराज बख़्तसिंहको चढ़ा लाये. इधर महाराजा रामसिंहने भी मेड़तिया शेरसिंह वगैरह सर्दारोंको लेकर मुक़ाबलह किया; दोनों तरफ़के राजपूत दिल खोलकर खूब लड़े; विक्रमी १८०७ कार्तिक शुक्ल ९ [हि० ११६३ ता० ७ ज़िल्हिज = ई० १७५० ता० ८ नोवेम्बर] को यह लड़ाई हुई, जिसमें महाराजा रामसिंहकी तरफ़के नीचे लिखे सर्दार मारेगयेः—

१ रीयांका ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया, २ आलणियावासका मेड़तिया ठाकुर सूरजमल्ल, ३ बलूंदेका चांदावत ठाकुर श्यामसिंह, ४ बीखर्णियाका ठाकुर डूंगरसिंह, ५ सेवरियाका ठाकुर सुरतानसिंह, ६ शेरसिंहका कोठारी सुजाण और कर्मसोतोंके तीन आदमी काम आये; ७ मीठड़ीका ठाकुर शक्तिसिंह, अपने बेटे नाहरसिंह समेत मारागया. ८ कुचामणका ठाकुर ज़ालिमसिंह, ९ देधाणाका ठाकुर अनूपसिंह, १० बख़्तसिंह जैतमालोत.

महाराज बख़्तसिंहकी ओरसे आउवाका ठाकुर कुशलसिंह व बिठोराका भाटी बख़्तसिंह काम आया. यहांसे महाराज बख़्तसिंहको बीकानेरके राजा गजसिंह व कृष्णगढ़के राजा बहादुरसिंह लेनिकले, और सोजतपर क़ब्ज़ह करलिया. पीछेसे महाराजा रामसिंह भी फ़ौज लेकर पहुंचे, महाराज बख़्तसिंहने विक्रमी १८०८ वैशाख कृष्ण ९ [हि० ११६४ ता० २३ जमादियुल् अव्वल = ई० १७५१ ता० २१ एप्रिल] को दूसरा हमलह रामसिंहकी फ़ौजपर किया; इस लड़ाईमें रामसिंहकी तरफ़से कुचामणका ठाकुर ज़ालिमसिंह मए दो बेटों और सत्तर आदमियोंके मारागया, और दूसरी तरफ़के भी बहुतसे बहादुर राजपूत लड़मरे. इसी तरह तीसरी लड़ाई हुई, आख़िरकार महाराजा रामसिंह तो मेड़तेमें थे, और महाराज बख़्तसिंहने विक्रमी १८०८ श्रावण कृष्ण १२ [हि० ११६४ ता० २६ शश्र्बान = ई० १७५१ ता० २१ जुलाई] को जोधपुरपर क़ब्ज़ह किया.

——⋇——

३७ महाराजा बख़्तसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७६३ भाद्रपद कृष्ण ८ [हि० १११८ ता० २२ जमादियुल् अव्वल = ई० १७०६ ता० १ सेप्टेम्बर] को हुआ था. इन्होंने महाराजा गजसिंह और बहादुरसिंहको रुख़्सत दी. महाराजा रामसिंहके पास जो आदमी थे, वे आपाजी सेंधियासे दस बारह हज़ार फ़ौज मददके लिये लाये; और अजमेरपर क़ब्ज़ा करलिया. महाराजा बख़्तसिंह जोधपुरसे चढ़े, और अजमेर पहुंचे; वहां जाली काग़ज़ बनाकर मरहटोंकी फ़ौजमें डलवा दिया, जैसे कि शेरशाहने राव मालदेवके साथ किया था. मरहटे रामसिंहको लेभागे, और मन्दसौर पहुंचे. बख़्तसिंहने मरहटोंसे लड़कर मालवा छीननेका इरादह किया, और जयपुरसे महाराजा माधवसिंहको बुलाया; सोनोली गांवमें दोनोंका मिलाप हुआ. विक्रमी १८०९ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० ११६५ ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० १७५२ ता० २२ सेप्टेम्बर] को महाराजा बख़्तसिंहका वहीं देहान्त होगया. मशहूर है, कि जयपुरके राजा माधवसिंहने ज़हर दिलवाया था. बख़्तसिंहने अपने बाप महाराजा अजीतसिंहको मारा, इसलिये चारणोंने मारवाड़ी शाइरीमें उन्हें खूब बदनाम किया, जिससे बख़्तसिंहने चारणोंके कई गांव ज़ब्त करलिये. इस वक्त महाराजा बख़्तसिंहकी बेहोशीमें पोहकरणके ठाकुर देवीसिंहने चारणोंके एवज़ अपने हाथपर संकल्प लेकर वे गांव बहाल करवा दिये. इनके साथ ५ राणी व १० पर्दायत वग़ैरह जोधपुरमें सती हुईं.

यह महाराजा अव्वल दरजेके बहादुर, सख़्त मिज़ाज, ज़मीनके लोभी, ज़ालिम, फ़य्याज़ और दग़ाबाज़ थे. क़ौलका क़ियाम अपने मत्लबके साथ रखते थे, इनके थोड़ेसे राज्य करनेसे ही मारवाड़ी लोगोंका नाकमें दम आगया था; कई आदमियोंके हाथ पैर कटवाये, और अक्सरको मरवाडाला; ईश्वर ऐसे बे रहम् राजाके हाथमें लाखों मनुष्योंका इन्तिज़ाम ज़ियादह नहीं रखता. इनके बाद कुंवर विजयसिंह राज्यके मालिक हुए.

३८ महाराजा विजयसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७८६ मार्गशीर्ष कृष्ण ११ वृहस्पति वार [हि० ११४२

ता० २५ रबीउस्सानी = ई० १७२९ ता० १६ नोवेम्बर] को हुआ था. कृष्णगढ़के राजा बहादुरसिंह और बीकानेरके राजा गजसिंह विजयसिंहके मददगार थे, और रूपनगरके महाराजा सामन्तसिंहके बेटे सर्दारसिंह महाराजा रामसिंहके साथ आपाजी सेंधियाको ६० हज़ार फ़ौज समेत मारवाड़पर चढ़ा लाये; महाराजा विजयसिंह अपनी चालीस हज़ार फ़ौज लेकर जोधपुरसे चले; और बहादुरसिंह व महाराजा गजसिंह भी आमिले; मेड़तेके पास गांव गांगारड़ामें विक्रमी १८११ आश्विन कृष्ण १३ [हि० ११६७ ता० २७ ज़िल्क़ाद = ई० १७५४ ता० १५ सेप्टेम्बर] को सख़्त लड़ाई हुई; आख़िर महाराजा विजयसिंह शिकस्त खाकर मेड़तेमें जाठहरे. इस लड़ाईमें नीचे लिखे हुए सर्दार काम आये:-

चांपावत राठौड़.

(१) पालीका ठाकुर पेमसिंह. (२) राठौड़ लालसिंह.
(३) राठौड़ अर्जुनसिंह. (४) सर्वाड़का ठाकुर मुह्कमसिंह.
(५) मांडावासका ठाकुर जैतसिंह. (६) धांदियाका ठाकुर उदयसिंह.
(७) खाटूका ठाकुर बहादुरसिंह. (८) रणेलका ठाकुर लखधीर.
(९) हैवतसरका ठाकुर कीर्तिसिंह. (१०) भैरूंवासका ठाकुर सवाईसिंह.
(११) धाम्लीका ठाकुर नवासिंह. (१२) मांडियाका ठाकुर ज़ोरावरसिंह.
(१३) गढ़ियाका ठाकुर शुभकरण. (१४) जैतपुराका ठाकुर ज़ोरावरसिंह.
(१५) बरलेणका ठाकुर भीमसिंह.

राठौड़ मेड़तिया.

(१६) लूणवाका ठाकुर रायसिंह. (१७) लूणवाका सूरसिंह.
(१८) मारोटका ठाकुर मोतीसिंह. (१९) खारियाका जुझारसिंह.

राठौड़ महेचा.

(२०) थोबका ठाकुर सर्दारसिंह.

भाटी.

(२१) रामपुरेका ठाकुर शुभकरण. (२२) मेड़ावासका ठाकुर पेमसिंह.
(२३) कंटालियाका ठाकुर बख़्तसिंह. (२४) कीटनोद्का ठाकुर महेशदास.
(२५) खारियाका ठाकुर कीर्तिसिंह. (२६) जैतसिंह.
(२७) दौलतसिंह. (२८) चहुवान लालसिंह.
(२९) शेखावत दौलतसिंह, लाडखानी.

और तोपख़ानेका अफ़्सर बहादुरसिंह चांदावत भी इस लड़ाईमें बहादुरीके साथ काम आया. इस लड़ाईमें बीकानेरके महाराजा गजसिंहके ३०० आदमी मारेगये, और १०० घायल हुए; कृष्णगढ़के महाराजा बहादुरसिंहके भी सौ आदमी मारेगये.

महाराजा विजयसिंह मेड़तेमें भी न ठहरने पाये, और भागकर नागौर गये; मरहटी फ़ौजने पीछा किया, और नागौर जा घेरा; महाराजा रामसिंह कुछ मरहटी फ़ौज लेकर जोधपुर जा पहुंचे, और क़िला घेर लिया; महाराजा विजयसिंहने झगड़ा मिटानेको उदयपुरके महाराणा राजसिंह २ व सलूंबरके रावत् जैतसिंहको बुलाया था, वह आपाजी सेंधियाकी फ़ौजमें ठहरा; इसी अर्सेमें चहुवान साईंदासकी जमइयतके खोखर केसरख़ां और एक गहलोत सर्दार दोनों आदमियोंने महाराजाके हुक्मसे मरहटी फ़ौजमें जाकर बनियेकी दूकान की, एक दिन यह दोनों बनावटी बनिये आपसमें ऐसे लड़े, कि देखने वालोंको हंसी आती थी, वे दोनों लड़ते झगड़ते आपाजीकी ड्योढ़ीपर पहुंचे, उन्होंने भी इनकी लड़ाईका हाल सुनकर इन्साफ़के वास्ते अन्दर बुलाया; ये दोनों लड़ते लड़ते आपाजीपर जा गिरे, और पेशक़ब्ज़ोंसे उनका काम तमाम करके खुद भी मारेगये. मरहटोंने सलूंबरके रावत् जैतसिंहपर हमलह किया, वह अपनी जमइयत समेत बहादुरीके साथ मारागया, मरहटोंने फिर भी लड़ाई न छोड़ी; तब महाराजा विजयसिंह अपने राजपूतोंको क़िलेमें छोड़कर बीकानेर गये, वहांसे महाराजा गजसिंहको साथ लेकर जयपुर पहुंचे; लेकिन् महाराजा माधवसिंह १ ने विजयसिंहके साथ दग़ा करना चाहा, तब वे वहांसे लौटकर बीकानेर चले आये. मरहटोंसे इस शर्तपर सुलह हुई, कि अजमेर और इक्यावन लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका उनको दिया जाय; जोधपुर महाराजा विजयसिंहके, और मेड़ता महाराजा रामसिंहके क़ब्ज़ेमें रहे; बाक़ी आधा आधा मुल्क बांट लिया जाय. इसके बाद महाराजा बीकानेरसे जोधपुर आये, विक्रमी १८१२ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० ११६९ ता० १४ सफ़र = ई० १७५५ ता० १९ नोवेम्बर] को यह झगड़ा ख़त्म हुआ.

विक्रमी १८१३ [हि० ११६९ = ई० १७५६] में महाराजा रामसिंह जयपुर शादी करने गये, पीछेसे मेड़ता, सोजत और जालौर वग़ैरह क़िलोंपर महाराजा विजयसिंहने क़ब्ज़ह करलिया; यह सुनकर मरहटी फ़ौजें फिर मारवाड़पर आईं; महाराजा भी उनके पीछे २ दौड़ते थे; लेकिन् मारवाड़के सर्दार मरहटोंसे मिलगये, जिससे देशकी बर्बादी हुई; महाराजा भी दिक़ होकर जोधपुरमें जा बैठे, सर्दार विना इजाज़त अपने अपने घर चलेगये, जालौर मरहटोंने लेलिया, और मेड़तेपर महाराजा

रामसिंहका क़ब्ज़ा होगया. खाटू वग़ैरहके जागीरदारोंने मुल्कमें ख़राबी फैलाई; तब जग्गू धाय भाईने जोधपुरसे रवानह होकर खाटू व मगरासर वग़ैरह जागीरदारोंको सज़ा दी. पोहकरणके ठाकुर देवीसिंहको महाराजाने जोधपुर बुलाया, पर वह न आया, और दूसरे सर्दारोंको एकट्ठा करके फ़सादपर तय्यार हुआ, महाराजा खुद गये, और उन सर्दारोंको मना लाये, लेकिन् सर्दार लोग मग़रूर होगये, और महाराजाको कहलाया, कि स्वामी आत्मारामको क़िलेसे निकाल दो. यह बात महाराजाको बहुत बुरी मालूम हुई, लेकिन् इसी अर्सेमें उक्त स्वामीका देहान्त होगया. सर्दारोंको जग्गू धाय भाई व गोवर्धनखींचीने कहलाया, कि आत्मारामके मरजानेसे महाराजा बहुत उदास हैं; इसलिये आप लोग आकर तसल्ली दें. तब सर्दार लोग क़िलेपर आये, और उनकी जमइय्यतोंको बाहर रोक दिया, कि स्वामी आत्मारामकी लाशके दर्शनोंको राणियां आवेंगी. जिन सर्दारोंको विक्रमी १८१६ फाल्गुन् कृष्ण १ [हि० ११७३ ता० १५ जमादियुस्सानी = ई० १७६० ता० ३ फ़ेब्रुअरी] को महाराजाने गिरिफ़्तारीके बाद क़ैद किया, उनके नाम ये हैं:-

(१) पोहकरणका ठाकुर देवीसिंह. (२) आसोपका ठाकुर छत्रसिंह.
(३) रासका ठाकुर केसरीसिंह. (४) नींबाजका ठाकुर दौलतसिंह.

यह केसरीसिंहका बेटा नींबाज गोद गया था. क़ैद होजानेके बाद उसी वक़ किसी कविने मारवाड़ी ज़बानमें यह दोहा कहा थाः-

दोहा.

केहर देवो छत्रशल । दौलो राज कुंवार ॥
मरते मोड़े (१) मारिया । चोटी वाला चार ॥

देवीसिंह छः दिनके बाद और छत्रसिंह एक महीने बाद मरगये, दौलतसिंहको बच्चा जानकर छोड़ दिया, केसरीसिंह क़ैदमें रहा, जो दो वर्षके बाद मरगया. देवीसिंहके बेटे सबलसिंह वग़ैरह चांपावतोंने मारवाड़में लूट मार मचाई; महाराजा विजयसिंहकी फ़ौजने मेड़तेपर दख़्ल किया, और रामसिंहने राठौड़ सर्दारोंके साथ मेड़तेको घेर लिया; लेकिन् फ़ौज समेत जग्गू धाय भाईके आजानेसे भाग गया, और कितने ही सर्दार महाराजा विजयसिंहसे आमिले; चांपावत फ़साद करते रहे, एक लड़ाईमें पोहकरणका ठाकुर सबलसिंह मारा गया, जिससे महाराजा

(१) मोड़ेसे मुराद स्वामी आत्माराम है.

विजयसिंहकी ताकत बढ़गई; इन्होंने अजमेरके ज़िलेमें फ़ौज भेजकर रुपये वुसूल किये, और अजमेर जाघेरा, मरहटे क़िले बीटलीपर चढ़गये. यह सुनकर माधवराव सेंधिया फ़ौज लेकर आपहुंचा; तब मारवाड़की फ़ौज भागकर अपने देशको चली आई. महाराजाने विक्रमी १८१८ [हि० ११७४ = ई० १७६१] में नव लाख रुपया माधवराव सेंधियाको देना करके पीछा छुड़ाया.

विक्रमी १८२१ श्रावण [हि० ११७८ सफ़र = ई० १७६४ ऑगस्ट] में जग्गू धाय भाई मरगया, और विक्रमी १८२२ [हि० ११७९ = ई० १७६५] में माधवराव सेंधियाके आनेकी ख़बर लगी, तब बारहठ करणीदानको भेजा, जिसने तीन लाख रुपया देकर उसको मन्दसौरसे आगे न बढ़ने दिया. इन्हीं दिनोंसे महाराजा विजयसिंह नाथद्वारेके गुसाईंको मानने लगे; जानवर मारना और शराब निकालना बन्द किया. इसी वर्षके कार्तिक शुक्ल १ [हि० ता० २९ रबीउस्सानी = ई० ता० १४ ऑक्टोबर] को नाथद्वारे आये, और मार्गशीर्षमें सर्दारगढ़के ठाकुर सर्दारसिंहके यहां शादी करके मारवाड़को गये. विक्रमी १८२७ [हि० ११८४ = ई० १७७०] में उदयपुरके महाराणा अरिसिंहसे गोढवाड़का पर्गनह महाराजा विजयसिंहको इस शर्तपर मिला, कि वे तीन हज़ार सवार व पैदलोंकी फ़ौज नाथद्वारेमें महाराणाकी तावेदारीके लिये रक्खें; और रत्नसिंहको, जो कुम्भलगढ़में महाराणा बना है, निकाल देनेकी कोशिश करें; डेढ़ वर्ष तक यह फ़ौज नाथद्वारेमें रही थी; वह जगह नाथद्वारेमें अब तक फ़ौजके नामसे प्रसिद्ध है. उस फ़ौजमें सिंघवी काम्दार मुसाहिब था, जिसकी औलाद अब तक नाथद्वारेमें मौजूद है. महाराजा विजयसिंह, बीकानेरके महाराजा गजसिंह और बहादुरसिंह विक्रमी १८२८ माघ [हि० ११८५ ज़िल्क़ाद = ई० १७७२ फ़ेब्रुअरी] में नाथद्वारे आये, और महाराणा अरिसिंहसे मिलकर गोढवाड़के पर्गनहकी बाबत बात चीत की; लेकिन् महाराजा विजयसिंहने टाला टूलीका जवाब दिया, तो सब राजा अपनी अपनी राजधानियोंको चलेगये.

विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में महाराजा रामसिंहका जयपुरमें इन्तिक़ाल हुआ (१), तब सांभरके पर्गनहपर जो उनके क़ब्ज़ेमें था, महाराजा विजयसिंहने क़ब्ज़ह करलिया. विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = ई० १७७४] में महाराजाने आउवाके ठाकुर जैतसिंहको जोधपुरके

---

(१) मारवाड़की ख्यातमें एक जगह महाराजाका इन्तिक़ाल मन्दसौरमें होना लिखा है.

क़िलेमें बुलाकर मरवा डाला. विक्रमी १८३४ [हि० ११९१ = ई० १७७७] में रायपुरके ठाकुरको फ़ौज भेजकर निकालदिया, और जागीर छीन ली. सिंघवी भीमराज फ़ौज लेकर महाराजाकी तरफ़से चढ़ा, और मरहटोंसे खूब लड़ाइयां कीं. कृष्णगढ़का राजा प्रतापसिंह माधवराव सेंधियासे मिलगया, जिससे महाराजा विजयसिंहने फ़ौज भेजकर तीन लाख रुपया लेलिया, और अजमेर भी मारवाड़में शामिल किया.

महाराजा गुलाबराय पासबानके कहनेपर चलते थे, इनको जहांगीर और नूरजहांका नमूना कहना चाहिये. माधवराव सेंधिया फ़ौज बनाकर राजपूतानाकी तरफ़ चला, तंवरोंकी पाटनके पास जयपुर और जोधपुरकी फ़ौजने मुक़ाबलह किया; जयपुर वालोंने माधवरायसे मेल करलिया, जिससे जोधपुरकी फ़ौजका बहुत नुक्सान हुआ, जिसका जिधरको मुंह उठा, भागा और जान बचाई; बहुतसे मारेगये. मरहटोंने अजमेर छीन लिया, और मारवाड़में घुसे, मेड़तेके पास सिंघवी भीमराजसे मुक़ाबलह हुआ, जो महाराजाका फ़ौज मुसाहिब था; बहुतसे सर्दार और आदमी मारेगये. यह ख़बर सुनकर महाराजाने अपने ज़नाने और छोटे मोटे बाल बच्चोंको जालौर भेजदिया, और पासबान गुलाबराय महाराजाके पास रही.

विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = ई० १७९०] में महाराजाने साठ लाख रुपया और अजमेर देकर मरहटोंसे पीछा छुड़ाया, लेकिन् पासवान गुलाबराय जो चाहती कर बैठती थी, इससे सर्दारोंके दिल बिगड़े, और जोधपुरसे निकल गये. विक्रमी १८४८ फाल्गुन् कृष्ण १२ [हि० १२०६ ता० २६ जमादियुस्सानी = ई० १७९२ ता० २० फेब्रुअरी] में महाराजा उन्हें लानेके लिये निकले, विक्रमी १८४९ वैशाख कृष्ण ७ [हि० १२०६ ता० २१ शअ्बान = ई० १७९२ ता० १४ एप्रिल] को महाराजाके पोते भीमसिंहने जोधपुरके क़िलेपर क़ब्ज़ह करलिया, और कुंवर ज़ालिमसिंह उदयपुरके भान्जेने फ़साद उठाया, जिसे महाराजाने गोढवाड़का पट्टा जागीरमें देकर उदयपुर भेजदिया.

इसी वर्षके वैशाख कृष्ण १० सोमवार [हि० ता० २४ शअ्बान = ई० ता० १७ एप्रिल] को पासबान गुलाबराय मारीगई. भीमसिंहको सिवानेके क़िलेमें भेजनेका विचार हुआ; तब उसने कई सर्दारोंको बचन लेकर अपने साथ लिया, और गांव भंवरमें पहुंचे; महाराजा जोधपुर आये. महाराजाने अखैसिंहको परदेशी लोगोंकी फ़ौज देकर भेजा, कि भीमसिंहको गिरिफ़्तार करलेवे. विक्रमी १८५० चैत्र शुक्ल ९ [हि० १२०७ ता० ८ शअ्बान = ई० १७९३ ता० २२ मार्च] को भंवर गांवमें लड़ाई हुई, जहां कुचामणका ठाकुर सूरजमल्ल व चंदावलका

ठाकुर हरीसिंह वगैरह भीमसिंहकी तरफ़से मारेगये, और ठाकुर सवाईसिंह कुंवर भीमसिंहको पोहकरण लेगये. महाराजा विजयसिंहको गुलावराय पासवानके मारे जानेका बहुत रंज हुआ, और विक्रमी १८५० आषाढ़ कृष्ण १४ [हि० १२०७ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १७९३ ता० ८ जुलाई] की आधी रातके वक्त उनका देहान्त होगया. इनके साथ नागौरमें एक पासबान सती हुई, लेकिन् जोधपुरमें कोई भी नहीं हुई.

यह महाराजा धर्म व मतपक्षी और दयावान थे, यहां तक कि इन्होंने अपने राज्यमें जीव जन्तु मारनेकी मनादी करदी थी, और शराब गोश्त छोड़ दिया था; इनके हुक्मसे जो सर्दार वगैरह मारेगये, उनके मारनेके लिये इन्होंने दिलसे हुक्म नहीं दिया था, परन्तु जग्गू धाय भाई वगैरह इनके खैरख्वाह बड़े ज़ालिम और सख्त थे, उन्होंने आधे हुक्मकी पूरी तामील कर बताई. यह महाराजा बहादुरी और सखावतमें अपने बुज़ुर्गोंसे कम न थे; इनके वक्में महाराजा रामसिंहके झगड़े और सर्दारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे देशकी बर्बादी होती रही, आज एक ओरसे तसल्ली हुई, कल दूसरी तरफ़का हमलह हुआ. इनपर उन लोगोंके कहनेका असर ज़ियादह होजाता था, जिनका कि इन्हें भरोसा होता. इनके सात पुत्र थे, १- कुंवर फ़तहसिंहका जन्म विक्रमी १८०४ श्रावण कृष्ण ४ [हि० ११६० ता० १८ रजब = ई० १७४७ ता० २७ जून] को हुआ था, जो विक्रमी १८३४ कार्तिक शुक्ल ८ [हि० ११९१ ता० ७ शव्वाल = ई० १७७७ ता० ८ नोवेम्बर] को मरगये. २- कुंवर भौमसिंह विक्रमी १८०६ भाद्रपद शुक्ल १० [हि० ११६२ ता० ९ शव्वाल = ई० १७४९ ता० २३ सेप्टेम्बर] को पैदा हुए, और विक्रमी १८२६ वैशाख कृष्ण १३ [हि० ११८२ ता० २७ ज़िल्हिज = ई० १७६९ ता० ५ मई] को शीतला (चेचक) की बीमारीसे मरगये; इनके पुत्र भीमसिंह विक्रमी १८२३ आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० ११८० ता० ११ सफ़र = ई० १७६६ ता० १९ जून] को पैदा हुए. ३- पुत्र ज़ालिमसिंह विक्रमी १८०७ आषाढ़ शुक्ल ६ [हि० ११६३ ता० ५ शअ्बान = ई० १७५० ता० १० जुलाई] को जन्मे, और विक्रमी १८५५ आषाढ़ कृष्ण ५ [हि० १२१२ ता० १९ ज़िल्हिज = ई० १७९८ ता० ४ जून] को काछवलीके घाटेपर इनका देहान्त हुआ. ४- सर्दारसिंहका जन्म विक्रमी १८०९ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० ११६५ ता० १२ रजब = ई० १७५२ ता० २७ मई] को हुआ, और विक्रमी १८२६ वैशाख कृष्ण ७ [हि० ११८२ ता० २१ ज़िल्हिज = ई० १७६९ ता० २९ एप्रिल] को शीतलाकी बीमारीसे मरगये. ५- गुमानसिंह विक्रमी १८१८ कार्तिक शुक्ल ८ [हि० ११७५ ता० ७ रबीउस्सानी = ई० १७६१ ता० ६ नोवेम्बर] को पैदा हुए, और

विक्रमी १८४८ आश्विन कृष्ण १३ [हि० १२०६ ता० २७ मुहर्रम = ई० १७९१ ता० २५ सेप्टेम्बर] को इस दुन्यासे कूच किया; इनके कुंवर मानसिंह विक्रमी १८३९ माघ शुक्ल ११ [हि० ११९७ ता० १० रबीउ़ल अव्वल = ई० १७८३ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को जन्मे. ६- सावन्तसिंहका जन्म विक्रमी १८२५ फाल्गुन शुक्ल ८ [हि० ११८२ ता० ७ ज़िल्काद = ई० १७६९ ता० १६ मार्च] को हुआ था, जिनको भीमसिंहने विक्रमी १८५१ [हि० १२०८ = ई० १७९४] में मरवाडाला; इनके पुत्र सूरसिंहका जन्म विक्रमी १८४१ कार्तिक शुक्ल ३ [हि० ११९८ ता० २ ज़िल्हिज = ई० १७८४ ता० १७ ऑक्टोबर] को हुआ; विक्रमी १८५१ [हि० १२०८ = ई० १७९४] में भीमसिंहने इनको भी मारडाला; ७- पुत्र शेरसिंह थे.

३९ महाराजा भीमसिंह.

भीमसिंहका जन्म विक्रमी १८२३ आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० ११८० ता० ११ सफ़र = ई० १७६६ ता० १९ जून] को हुआ. महाराजा विजयसिंहका देहान्त होनेके वक़ यह शादी करनेको जयसलमेर गये थे, वहांपर यह ख़बर सुनते ही ठाकुर सवाईसिंहको साथ लेकर विक्रमी १८५० आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० १२०७ ता० ८ ज़िल्हिज = ई० १७९३ ता० १८ जुलाई] को जोधपुर आये; ज़ालिमसिंह और मानसिंह भी आगये थे, जो इनका आना सुनकर पहिले उदयपुर, और दूसरे जालौर चलेगये. विक्रमी आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० ता० ११ ज़िल्हिज = ई० ता० २१ जुलाई] को भीमसिंह गद्दीपर बैठे. इसके बाद इन्होंने अपने भाई सावन्तसिंह, शेरसिंह, प्रतापसिंह और सावन्तसिंहके बेटे सूरसिंहको मरवाडाला; लखवा मरहटाकी फ़ौज मारवाड़में आई, जिसे फ़ौज ख़र्च देकर लौटाया.

विक्रमी १८५४ [हि० १२११ = ई० १७९७] में महाराजा भीमसिंहने बख़्शी अखैराजको बड़ी फ़ौजके साथ जालौर भेजा; उसने महाराज मानसिंहको जा घेरा, लेकिन् उन्हीं दिनोंमें लोगोंके बहकानेसे महाराजा भीमसिंहने अखैराजको पकड़ बुलाया, और क़ैद करके साठ हज़ार रुपया लिया, जिससे लाचार जालौरसे फ़ौज भी लौट आई. इसी वर्षमें महाराजा विजयसिंहके छोटे बेटे ज़ालिमसिंह, जो महाराणा जगत्सिंह २ के दोहिते थे, उदयपुरसे फ़ौज लेकर आये; और काछबलीके घाटेपर ठहर कर मारवाड़में शोरिश मचाई. महाराजा भीमसिंहकी तरफ़से सिंघवी बनराजने फ़ौज लेकर शरियारी गांवमें डेरा किया, और ज़ालिमसिंह विक्रमी

१८५५ आषाढ़ कृष्ण ५ [हि० १२१२ ता० १९ ज़िल्हिज = ई० १७९८ ता० ४ जून] को काछबलीमें मरगया. महाराजा विजयसिंहके कुंवर फ़तहसिंहकी बेटीकी शादी जयपुरके महाराजा प्रतापसिंहसे और महाराजा भीमसिंहकी शादी महाराजा प्रतापसिंहकी बहिनके साथ विक्रमी १८५८ आषाढ़ [हि० १२१६ रबीउ़ल् अव्वल = ई० १८०१ जुलाई] में पुष्कर स्थानपर हुई, जिसमें दोनों राजाओंने बड़ा जल्सह किया.

इसी वर्षमें महाराज मानसिंहने पालीको लूट लिया, सिंघवी चैनकर्ण और बलूंदेका बहादुरसिंह जा पहुंचा, लड़ाई हुई, जिसमें दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी मारेगये; और महाराज मानसिंह भागकर जालौर चलेगये. इसी वर्षमें महाराजाकी तरफ़से सिंघवी इन्द्रराजने जालौरमें मानसिंहको जा घेरा, और इसी अर्सेमें मारवाड़के सर्दारोंने सिर उठाया, लेकिन् गांव कालूमें महाराजाकी फ़ौजसे शिकस्त खाकर सब तित्तर बित्तर होगये. सिंघवी जोधराजको विक्रमी १८५९ भाद्रपद कृष्ण २ [हि० १२१७ ता० १६ रबीउ़स्सानी = ई० १८०२ ता० १४ ऑगस्ट] की रातमें सर्दारोंने मरवाडाला, जिसपर महाराजा सर्दारोंसे नाराज़ हुए, और कुल बाग़ी सर्दारोंको देशसे निकाल देनेका इरादह किया. इसी संवत्के मार्गशीर्ष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ शअ़्बान = ई० ता० ७ डिसेम्बर] को सिंघवी बनराजने हमलह करके जालौरपर क़ब्ज़ह करलिया; इस लड़ाईमें फ़ौजमुसाहिब सिंघवी बनराज मारागया, और मानसिंहके क़ब्ज़ेमें ख़ाली क़िला रहगया.

विक्रमी १८६० भाद्रपद शुक्ल ६ [हि० १२१८ ता० ५ जमादियुल् अव्वल = ई० १८०३ ता० २४ ऑगस्ट] को जयपुरके महाराजा प्रतापसिंहके मरनेकी ख़बर आई; तब उनकी महाराणी राठौड़, जो जोधपुरमें थी, सती हुई.

इसी संवत्के कार्तिक शुक्ल ४ [हि० ता० ३ रजब = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को चार घड़ी दिन चढ़े महाराजा भीमसिंहका देहान्त हुआ; इनकी पीठपर एक फोड़ा हुआ था, जिसको अदीठ कहते हैं. इनके साथ आठ राणियां, उन्नीस ख़वास, पासबान और बांदियां सती हुईं; और एक आदमी चितामें कूदकर जलमरा.

यह महाराजा बड़े फ़य्याज़, बहादुर, दयावान और अपने नौकरोंकी पर्वरिश करनेवाले व इन्साफ़ पसन्द थे; इनको दूसरे ख़राब लोगोंने बहकाकर भाई भतीजोंके मारनेका प्रायश्चित्त लगाया. यह शाहजहांनी कार्रवाई गोत्र हत्या करनेकी महाराजा अजीतसिंहके इन्तिक़ालसे भीमसिंहके समय तक क़ाइम रही. अगर्चि यह महाराजा पढ़े लिखे कुछ भी न थे, लेकिन् ज़ाती अक़्मन्द होनेके सबब

राज्यका काम दुरुस्तीके साथ करते रहे. इनके कोई पुत्र नहीं था, एक धौंकलसिंह नामी शख़्स दावेदार हुआ, जिसे महाराजा मानसिंहने बनावटी साबित किया.

४० महाराजा मानसिंह.

मानसिंहका जन्म विक्रमी १८३९ माघ शुक्ल ११ [हि० ११९७ ता० १० रबीउल् अव्वल = ई० १७८३ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को हुआ था. महाराजा भीमसिंहके वक़्से फ़ौज जालौरको घेरे हुए थी, और सिंघवी बनराजके मारेजानेपर महाराजा भीमसिंहने सिंघवी इन्द्रराजको फ़ौज मुसाहिब बनाकर भेज दिया, जिससे महाराज मानसिंहने इक़ार किया, कि हम विक्रमी १८६० कार्तिक कृष्ण ३० [हि० १२२८ ता० २९ जमादियुस्सानी = ई० १८०३ ता० १६ ऑक्टोबर] दीपमालिकाको निकल जावेंगे, तुम हमें ज़ियादह तंग मत करो. इस बातपर सिंघवी इन्द्रराजने लड़ाईकी कार्रवाईको रोका.

जालौरके क़िलेमें जलन्धरनाथका एक मन्दिर था, वहांके पुजारी देवनाथने महाराज मानसिंहसे आकर कहा, कि मुझे जलन्धरनाथने हुक्म दिया है, कि छः रोज़ तक महाराज क़िलेसे न निकलें, तो इनसे यह क़िला नहीं छूटेगा, बल्कि जोधपुरके क़िलेके मालिक भी यही होंगे. परमेश्वरकी इच्छासे उसी अर्सेमें महाराजा भीमसिंहके देहान्तकी ख़बर सिंघवी इन्द्रराजके पास इस मत्लबसे आई, कि तुम घेरा बदस्तूर रखना, क्योंकि महाराजा भीमसिंहकी राणीको हमल है, और ठाकुर सवाईसिंहके पोहकरणसे आनेपर पुख़्तह बात चीत कीजायगी; लेकिन् जोधपुरकी फ़ौजी ताक़त कुल सिंघवी इन्द्रराजके पास थी; उसने सोचा, कि जो कोई दूसरा गद्दीपर बिठाया जायगा, तो ठाकुर सवाईसिंह और धाय भाई शंभूदान वग़ैरह ख़ैरख़्वाह बनेंगे; इसलिये महाराज मानसिंहको गद्दीपर बिठानेके विचारसे जोधपुर ले आया, और वह विक्रमी १८६० मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि० १२१८ ता० २१ शअ्बान = ई० १८०३ ता० ७ नोवेम्बर] को क़िलेपर चढ़े, जहां सबने नज़्रें दिखलाईं.

महाराजा भीमसिंहकी राणी देरावल मानसिंहके आनेसे पहिले चांपाशनी चलीगई थी, जिनको इस इक़ारपर फिर लेआये, कि इनके गर्भसे बेटा हो, तो वह राज्यका मालिक होगा, और मानसिंह वापस जालौर चले जावेंगे; लेकिन् वह राणी तलहटीके महलोंमें रही. ठाकुर सवाईसिंहने कहा, कि बनियोंका बनाया हुआ राजा नहीं बन सक्ता, रड़मलों अर्थात् राठौड़ोंका किया होसक्ता है, जिससे वह इस कोशिशमें लगा, कि राज्यमें बखेड़ा होकर हमारी मुख़्तारी बनी रहे; इसलिये मश्हूर

है, कि उसने कुछ आदमियोंको बाहर निकालकर कहा, कि महाराजा भीमसिंहके बेटा हुआ, जिसे खेतड़ी ले गये, और थोड़े ही दिनों बाद सवाईसिंह भी पोहकरण चलागया. उस लड़केको धौंकलसिंहके नामसे मश्हूर किया. इसी वर्षमें जश्वन्तराव हुल्कर अजमेरके पास आया; तब महाराजाने उससे दोस्ती पैदा करली; हुल्कर अंग्रेज़ोंसे डराहुआ था, इस बातको ग़नीमत जानकर मालवेमें चलागया.

आयस देवनाथने जोधपुरका राज मिलनेकी, जो करामाती बात जालौरमें कही थी, इससे महाराजाने उसे बुलाकर अपना गुरू बनाया; और रियासती कामोंमें भी उसका पूरा दख़्ल हुआ. पहिले महाराजा भीमसिंहने गद्दीपर बैठकर शेरसिंह, सामन्तसिंह, सूरसिंह, और प्रतापसिंहको मरवाडाला था, लेकिन् जिन आदमियोंने मारा, उनको महाराजा मानसिंहने बड़ी बे रहमीसे मरवाया; जैसे कि नग्गा अहीरको सिरमें कील ठुकवाकर मारा. जालौरके घेरेमें जो लोग हाज़िर थे, सबको जागीरें मिलीं; चारण जुग्ता बणसूरको लाख पशाव, ताज़ीम और पारलाऊ गांव दस हज़ार रुपयेकी आमदनीका दिया; और दूसरे आदमियोंको भी जागीरमें गांव दिये, जिनके नाम नीचे लिखेजाते हैं:-

महाराजा भीमसिंहने आउवा सूरजमलोतोंसे छीनकर चिरपटियाके ठाकुरको दिया था, जो महाराजा मानसिंहने चिरपटिया वालोंसे छीनकर माधवसिंहको दिया; इसी तरह आसोप केसरीसिंहको, नींबाज सुल्तानसिंहको, रायपुर जवानसिंहको और लांबियां, रोयट व चंडावलको भी अपने अपने ठिकाने वापस दिये. यह लोग महाराजा भीमसिंहसे नाराज़ होकर हाड़ौतीमें चलेगये थे. आहोरके ठाकुर औनाड़सिंहको जालौरके घेरेकी नौकरीके एवज़ बहुतसी जागीर दी, और आसिया चारण ठाकुर बांकीदासको लाख पशाव, ताज़ीम और जागीर देकर कविराजका ख़िताब दिया; मेड़तिया रत्नसिंहको गांव पीपलाद मिला. चहुवान श्यामसिंहको गांव जोजावर और कुछ अर्से बाद गांव राखीका पट्टा दिया, और भाटी जश्वन्तसिंहको सांथीणका पट्टा मिला.

इन्होंने गद्दीपर बैठते ही सिरोहीपर महता ज्ञानमल्लको और घाणेरावपर महता साहिबचन्द्रको फ़ौज देकर रवानह किया; कुछ दिनों बाद लड़ाई करके दोनों फ़ौजोंने दोनों जगह क़ब्ज़ह करलिया. विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] में धौंकलसिंहके नामसे खेतड़ी, झूंझनूं, नालगढ़ और सीकर वग़ैरहके शेख़ावतोंने डीडवाणेपर अमल किया, जिसे महाराजा मानसिंहने फ़ौज भेजकर पीछा छुड़ालिया.

पहिले महाराजा भीमसिंहसे उदयपुरके महाराणा भीमसिंहकी बेटी कृष्णकुंवरकी

सगाईके लिये कुछ ज़िक्र हुआ था, परन्तु महाराजा भीमसिंह मरगये; तब उस राजकुमारीकी सगाई जयपुरके महाराजा जगत्सिंहके साथ ठहरी. इन्हीं दिनोंमें पोहकरणके ठाकुर सवाईसिंहकी पोतीको जयपुर भेजकर महाराजा जगत्सिंहके साथ शादी करदेना क़रार पाया, जिसपर मानसिंहने सवाईसिंहको कहलाया, कि हमारे भाइयोंको जयपुर डोला भेजना शर्मिन्दगीकी बात है. सवाईसिंहने कहला भेजा, कि मेरा भाई जयपुरमें रहता है, और जयपुरकी तरफ़से गीजगढ़ उसकी जागीरमें है, इसलिये हम अपने घरमें लड़कीकी शादी करते हैं; परन्तु बड़े महाराजा श्री भीमसिंहकी सगाई उदयपुर हुई थी, अब वही सगाई जयपुरके महाराजासे होनेकी तय्यारी है, इस बातमें आपको कितनी बड़ी शर्मिन्दगी होगी; इसपर महाराजा मानसिंहने विना सोचे विचारे विक्रमी १८६२ माघकृष्ण ३० [हि० १२२० ता० २९ शव्वाल = ई० १८०६ ता० २० जैन्युअरी] को एक दम कूच करादिया, और मेड़ते पहुंचकर फ़ौज एकट्ठी कराना शुरू किया, जिसकी तादाद मारवाड़की तवारीख़में एक लाख लिखी है. उधर जयपुरके महाराजा जगत्सिंहने भी फ़ौज एकट्ठी करके शहरके बाहर डेरा किया; लड़ाई होनेमें किसी तरहकी कस्र न रही; लेकिन् जोधपुरके सिंघवी इन्द्रराज और जयपुरके दीवान रायचन्द्रने सलाह करके कहा, कि दोनों राजा उदयपुरमें शादी नहीं करेंगे, और महाराजा जगत्सिंहकी वहिनके साथ मानसिंहकी, और महाराजा मानसिंहकी बेटीके साथ जगत्सिंहकी शादी होना क़रार पाया. जशवन्तराव हुल्कर भी महाराजा मानसिंहकी मददको आ पहुंचा था; लेकिन् सुलहके होजानेसे वापस लौटा दियागया.

विक्रमी १८६३ आश्विन [हि० १२२१ शअ्बान = ई० १८०६ ऑक्टोबर] में महाराजा मानसिंह जोधपुर चलेआये, लेकिन् सिंघवी इन्द्रराज वग़ैरह अहल्कारों को महाराजाने क़ैद करदिया, और दूसरे विरोधी लोगोंने बुझी हुई आगको फिर भड़काकर दोनों महाराजाओंको लड़नेके लिये मुस्तइद किया. महाराजा मानसिंहने मेड़ते आकर फ़ौज एकट्ठी करना शुरू किया, और जशवन्तराव हुल्करको लिखकर बुलाया; वह कृष्णगढ़ तक आकर खर्च मांगने लगा, महाराजाके पास खज़ानह कम था, इसलिये देर हुई, और जयपुर वालोंने कुछ रुपया देकर उसे लौटा दिया. नव्वाब अमीरखां जयपुरकी तरफ़ होगया; बीकानेरके महाराजा सूरतसिंह भी कछवाहोंके शरीक होगये; पोहकरणके ठाकुर सवाईसिंह मारवाड़ी सर्दारोंको मिलाने लगे. महाराजा जगत्सिंह जयपुरसे रवानह होकर मारोठ पहुंचे, वहांसे नव्वाब अमीरखां और ठाकुर सवाईसिंहको फ़ौज देकर आगे भेजा. इधरसे महाराजा

मानसिंह भी चढ़े, गींगोलीके पास दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ, कितनेही राठौड़ सर्दार महाराजा मानसिंहसे बदलकर जयपुरकी फ़ौजमें जामिले, और जो बाक़ी रहे, उन्होंने महाराजाको भागजानेकी सलाह दी; महाराजा मानसिंह बहुत झुंझलाये, लेकिन् लाचार भागकर जोधपुर आये.

सवाईसिंहका यह विचार था, कि महाराजा जालौर जायंगे, तो धौंकलसिंहको जोधपुरमें गद्दीपर बिठाकर अपना इरादह पूरा कर लूंगा, लेकिन् महाराजा मानसिंहने जोधपुर आकर क़िलेको दुरुस्त किया, और जयपुरकी फ़ौजने सामान, तोपख़ानह, डेरा वगैरह लूटकर आगेको कूच किया. मारोठ, मेड़ता, पर्वतसर, सोजत और नागोरपर क़ब्ज़ह करनेके बाद महाराजा जगत्सिंहसे दीवान रायचन्द्रने कहा, कि अब उदयपुर चलकर शादी करलेना चाहिये; लेकिन् सवाईसिंह इसके बर्ख़िलाफ़ महाराजाको जोधपुर लेआया, और विक्रमी १८६३ चैत्र कृष्ण ७ [हि० १२२२ ता० २१ मुहर्रम = ई० १८०७ ता० ३१ मार्च] को जोधपुरका क़िला घेरलिया. सिंघवी इन्द्रराज और भंडारी गंगारामको महाराजाने क़ैद करदिया था, सो क़ैदसे निकालकर कहा, कि ख़ैरख़्वाहीका यह वक़ है. ये दोनों बाहर गये, तब सवाईसिंहने कहा, कि बनियोंका बनाया राजा नहीं रहसक्ता, अब हम धौंकलसिंहको जोधपुरका राजा बनावेंगे. इन्द्रराज वहांसे निकलकर गांव बाबरामें पहुंचा, और दौलतराव सेंधियाके पास एक वकील भेजकर कहलाया, कि हमारी मदद करना चाहिये; और नव्वाब अमीरख़ांको तीस हज़ार रुपये ख़र्चके लिये देकर अपनी तरफ़ किया; वह जयपुरकी फ़ौजसे निकलकर सिंघवी इन्द्रराजके साथ ढूंढाड़को लूटने लगा, और चतुर्भुज उपाध्या, तथा बूढ़सूके ठाकुर प्रतापसिंह वगैरहने पर्वतसर व डीडवाणापर क़ब्ज़ह करलिया. नव्वाब अमीरख़ांको एक लाख रुपया पेशगी देकर जयपुरकी तरफ़ रवानह किया, उसने फागी गांवमें शिवलाल बख़्शीके डेरोंपर हमलह किया, जो जयपुरसे फ़ौज लेकर जोधपुर जाता था; शिवलाल तो शिकस्त खाकर भागा, फ़ौजको नव्वाब और राठौड़ोंने लूट लिया. अमीरख़ां और कुचामणके ठाकुर शिवनाथसिंहने जयपुरके पास जाकर शहरपर गोला चलाना शुरू किया; लेकिन् एक दिन लड़ाई करनेके बाद अजमेरकी तरफ़ चलेआये, और गांव हरमाड़ेके डेरे विक्रमी १८६४ भाद्रपद [हि० १२२२ रजब = ई० १८०७ सेप्टेम्बर] में पांच हज़ार फ़ौज लेकर सिंघवी इन्द्रराज नव्वाबके शामिल हुआ.

महाराजाके ख़ैरख़्वाह राठौड़ोंने ढूंढाड़के मुल्कको लूट खसोटसे बर्बाद करदिया; नव्वाब और इन्द्रराजने बड़ी भारी फ़ौज बनाकर दो बारह जयपुरकी तरफ़ कूच किया; यह

सुनकर महाराजा जगत्सिंह घबराये, ठाकुर सवाईसिंहने बहुत कुछ समझाया, लेकिन् विक्रमी १८६४ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० १२२२ ता० १२ रजब = ई० १८०७ ता० १६ सेप्टेम्बर] को जयपुरकी तरफ़ चलदिये, और महाराजा सूरतसिंह बीकानेर गये; ठाकुर सवाई-सिंह वगैरह भागकर नागौरके क़िलेमें जा छिपे, डेरोंमें जो अस्बाब रहगया, वह महाराजा मानसिंहने ज़ब्त किया. महाराजा जगत्सिंहकी फ़ौजके पीछे मारवाड़ी लोगोंने लूट खसोट शुरू की, और जो आदमी क़ाबूमें आया, उसके नाक, कान काट लिये. इस लड़ाईमें दोनों मुल्कोंकी ग़रीब रिआयापर बड़ा ज़ुल्म हुआ, पहिले जयपुरके लोगोंने मारवाड़ी औरतोंको पकड़कर दो दो पैसेमें बेचा; फिर उसी तरह सिंघवी इन्द्रराज और नव्वाब अमीरख़ांकी फ़ौजने ढूंढाड़की औरतोंको पकड़ पकड़कर एक एक पैसेमें बेचा; अमीरख़ां और इन्द्रराजने भी महाराजा जगत्सिंहका पीछा किया, तो एक लाख रुपया देकर दीवान रायचन्द्रने पीछा छुड़ाया.

महाराजा मानसिंह और जगत्सिंहकी दोनों हालतें देखकर मनुष्योंको ईश्वरके चरित्रोंपर ध्यान देना चाहिये. आख़िरकार महाराजा मानसिंहने अपने ख़ैरख़्वाहोंको ख़ुश होकर इ़ज़्ज़त और जागीरें इ़नायत कीं. अमीरख़ां जोधपुर आया, महाराजाने शुक्रिया अदा करके बराबर गद्दीपर बिठाया. अब नागौरसे धौंकलसिंहका दख़्ल उठाने और ठाकुर सवाईसिंहके मारनेका घाट गढ़ागया; नव्वाब और महाराजाके बीच फ़ौज ख़र्चकी बाबत ज़ाहिरी तक्रार हुई, नव्वाबने जोधपुरके गांवोंको लूटना शुरू किया, जिससे सवाईसिंहने अमीरख़ांके साथ मेल करलिया; पहिले नव्वाब नागौर गया, फिर सवाईसिंह उससे मिलने आया; तब नव्वाबकी फ़ौजने ग़ाफ़िल बैठे हुए राठौड़ोंपर डेरा गिराकर तोप और बन्दूक़ोंकी बाढ़ मारदी, जिससे विक्रमी १८६५ चैत्र शुक्ल ३ [हि० १२२३ ता० २ सफ़र = ई० १८०८ ता० ३० मार्च] को पोहकरणका ठाकुर सवाईसिंह, पालीका ठाकुर ज्ञानसिंह, बगड़ीका ठाकुर केसरीसिंह, चंडावलका ठाकुर बख़्शीराम और इनके साथके चार पांच सौ आदमी मारेगये; इनके सिर ऊंटोंपर लदवाकर महाराजा मानसिंहके पास भेजदिये, और नागौरमें महाराजाका अमल करवा दिया.

इसके बाद कृष्णकुंवर बाईका ज़हरसे मारेजानेका ज़िक्र उदयपुरके महाराणा भीमसिंहके हालमें लिखेंगे. महाराजाने बीकानेरपर बीस हज़ार फ़ौज देकर सिंघवी इन्द्रराजको भेजा, वह फ़ौज ख़र्च लेकर फ़त्हके साथ पीछा आया; कुचामणके ठाकुर शिवनाथसिंह व सिंघवी इन्द्रराज वगैरह महाराजा मानसिंहके ख़ैरख़्वाह और एतिबारी नौकर थे; इन्हीं लोगोंने महाराजा मानसिंह और महाराजा जगत्सिंहका विरोध मिटाकर पहिले इक़ारके मुवाफ़िक़ दोनों शादियां करादेनेका वादा किया;

महाराजा मानसिंह जोधपुरसे कूच करके नागौर आये, आयस देवनाथकी मारिफ़त बीकानेरके महाराजा सूरतसिंहसे मुलाक़ात हुई; सूरतसिंहको विदा करके बरात समेत महाराजा मानसिंह रूपनगर आये; जयपुरसे महाराजा जगत्सिंह भी उसी तरह बड़ी सज धजके साथ अपने इलाक़ेके गांव मरवेमें आ ठहरे; इन दोनों गांवोंमें तीन कोसका फ़ासिलह था. विक्रमी १८७० भाद्रपद शुक्ल ८ [हि० १२२८ ता० ७ रमज़ान = ई० १८१३ ता० ४ सेप्टेम्बर] को महाराजा मानसिंहकी शादी जगत्सिंहकी बहिनसे जयपुरके डेरोंमें हुई, और दूसरे दिन भाद्रपद शुक्ल ९ [हि० ता० ८ रमज़ान = ई० ता० ५ सेप्टेम्बर] को महाराजा मानसिंहकी बेटीकी शादी महाराजा जगत्-सिंहके साथ जोधपुरके डेरोंमें हुई; दोनों तरफ़से मुहब्बतका बर्ताव रहा; कृष्ण-गढ़के महाराजा कल्याणसिंह भी इस जल्सेमें शरीक थे. इसके बाद दोनों महाराजा अपनी अपनी राजधानीको सिधारे. जोधपुरमें कुल कारोबारका मुख़्तार आयस देवनाथ और सिंघवी इन्द्रराज था. इनकी शिकायत महाराजा नहीं सुनते थे, इन्द्रराजके डरसे महता अखैचन्द निज मन्दिरमें शरण जा बैठा.

विक्रमी १८७१ [हि० १२२९ = ई० १८१४] में महाराजाने अमीरख़ांकी फ़ौजको तीन लाख रुपया देकर रुख़्सत किया, लेकिन् विक्रमी १८७२ [हि० १२३० = ई० १८१५] में ख़ुद अमीरख़ां फ़ौज लेकर जोधपुर आया, तब महता अखैचन्द और आसोप व आउवा वगै़रहके सर्दारोंने नव्वाबसे मिलावट करके कहा, कि आयस देवनाथ और सिंघवी इन्द्रराजको मारडालो, तो तुम्हारे फ़ौज ख़र्चके रुपये हम देंगे; इस सट पटसे देवनाथ और इन्द्रराज वाक़िफ़ होगये, जिससे क़िलेके नीचे नहीं आते थे; आख़िरकार अमीरख़ांने २७ आदमी भेज कर क़िलेके भीतर 'ख़ाबका' (१) के महलमें दोनोंको मरवाडाला; महाराजाको बहुत रंज हुआ, लेकिन् मिलावट वाले लोगोंने अमीरख़ांका डर दिखलाकर उन २७ सिपाहियोंको ज़िन्दह निकाल दिया. यह मुआमला विक्रमी १८७३ चैत्र शुक्ल ८ [हि० १२३१ ता० ७ जमादिउल् अव्वल = ई० १८१६ ता ५ एप्रिल] को हुआ. नव्वाबको साढ़े नव लाख रुपये फ़ौज ख़र्चके देकर विदाकिया.

कामके मुख़्तार- दीवान महता अखैचन्द, आसोपका ठाकुर केसरीसिंह, नींबाजका ठाकुर सुल्तानसिंह, कंटालियाका ठाकुर शंभूसिंह, आउवाका बख़्तावरसिंह और चंडावलका ठाकुर विष्णुसिंह बने; महाराजा इन लोगोंकी कार्रवाईसे वाक़िफ़

---

(१) ख़ाबका- अस्लमें ख़्वाबगाह है.

थे, लेकिन् वक्त देखकर चुप रहे. इन्द्रराजका बेटा गुलराज, जो कोटके थानेपर था, महाराजाके इशारेसे दो हज़ार आदमी लेकर जोधपुर आया, जिससे मुरुतार सर्दार निकल भागे; और महता अखैचन्द स्वामी आत्मारामकी समाधिके शरणमें जा छिपा. इसी संवत्के माघ [हि० १२३२ रबीउ़ल् अव्वल = ई० १८१७ फ़ेब्रुअरी] को गुलराज क़िलेमें आया, और महाराजाने उसे अपना दीवान बनाया.

महाराजाको आयस देवनाथ और सिंघवी इन्द्रराजके मारेजानेका रंज बहुत रहा, यहां तक कि एकान्तमें रहना इख्तियार करलिया; तब महता अखैचन्दने आयस देवनाथके भाई भीमनाथ, महाराजाके कुंवर छत्रसिंह व उनकी माता महाराणी चावड़ीको मिलाया; और दूसरे भी जोषी मघदत्त, फत्ता, व्यास विनोदीराम, मुन्शी जीतमल्ल, खींची बिहारीदास, धांधल, मूला, जीवा, दाना, वगैरहको शामिल करके क़िलेदार देवराजोत बिहारीदास, नथकरण वगैरहको भी मिलालिया; और विक्रमी १८७४ वैशाख कृष्ण ३ [हि० १२३२ ता० १७ जमादियुल् अव्वल = ई० १८१७ ता० ५ एप्रिल] को इन सबने सिंघवी गुलराजको क़ैद करके उसी दिन आधी रातके वक्त मरवाडाला. सिंघवियोंके बाल बच्चे सब भागकर कुचामण चलेगये. इसके बाद सब लोगोंने मिलकर ज़बर्दस्ती महाराजा मानसिंहके हाथसे छत्रसिंहको युवराज बनवाया; विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० २ जमादियुस्सानी = ई० ता० २० एप्रिल] को छत्रसिंहका हुक्म जारी हुआ.

छत्रसिंहका जन्म विक्रमी १८५९ फाल्गुन् शुक्ल ९ [हि० १२१७ ता० ८ ज़िल्क़ाद = ई० १८०३ ता० ३ मार्च] को हुआ था. महाराजा मानसिंह सबको एक राय देखकर पागल बनगये, और महता अखैचन्द कुल कामका मुरुतार बना; पोहकरणके ठाकुर सालिमसिंहको प्रधान बनायागया. चांपाशनीके गुसाइंयोंसे छत्रसिंहको नाम सुनवाया, जिससे भीमनाथ वगैरहकी इज़्ज़तमें भी फ़र्क़ आया; तब कविराजा बांकीदासने एक सवैया कहा, जिसका एक पद यह है:-

"मानको नन्द गोविन्द रटे तब गंड फटे कनफट्टनकी"

सिंघवी चैनकरण जो काणोणाकी हवेलीकी पनाहमें था, उसे पकड़कर तोपसे उड़ा दिया. इसी वर्षमें गवर्मेंट अंग्रेज़ीके साथ जोधपुरका अह्दनामह हुआ. कुंवर छत्रसिंह गर्मीकी बीमारीसे विक्रमी १८७४ चैत्र कृष्ण ४ [हि० १२३३ ता० १८ जमादियुल् अव्वल = ई० १८१८ ता० २७ मार्च] को इन्तिक़ाल करगया, जिसपर एक दिन तो मुसाहिबोंने इस बातको छिपा रक्खा, और चाहा, कि उसी शक्लका कोई आदमी हो, तो उसे छत्रसिंह बनालेवें; लेकिन् यह सलाह नहीं चली; तब दूसरे दिन कुंवरकी लाशको मंडोवरमें जलाया; महाराजा और भी पागल बनगये. मुसाहिबोंने ईडरसे कोई

लड़का लाकर गद्दीपर बिठानेका विचार किया; लेकिन् गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे अ़ह्दनामह होचुका था; इससे गवर्मेण्टने महाराजाका इम्तिहान करनेके लिये मुन्शी बरकतअ़लीको जोधपुर भेजा. वह एक दिन तो सब मुसाहिबोंके साथ महाराजाके पास आया, महाराजा उसी पागलपनेकी हालतसे मिले; दूसरे दिन बरकतअ़ली महाराजाके पास अकेला गया, तब महाराजा मानसिंहने अपनी तक्लीफ़ोंका सारा हाल उससे कहा, और उसने महाराजाकी दिलजमई की; फिर रिपोर्ट होकर गवर्मेण्टका ख़रीतह आया, जिसपर महाराजाने सबको धोखेसे तसल्ली दी; महता अखैचन्द व दूसरे सब मुसाहिबोंसे कहा, कि जैसे काम करते थे, किये जाओ.

विक्रमी १८७५ कार्तिक शुक्ल ५ [हि० १२३४ ता० ४ मुहर्रम = ई० १८१८ ता० ४ नोवेम्बर] को महाराजा हजामत, स्नान व पोशाक करके दो वर्ष सात महीनेमें बाहर निकले. महाराजाने आयस देवनाथ व सिंघवी इन्द्रराजके मारेजानेके दिनसे इस दिन तक एकान्त वास किया. अब महाराजाने सिंघवी मेघराजको फ़ौज बख़्शी बनाया, लेकिन् अखैचन्द वग़ैरह लोगोंपर बड़ी मिहर्बानी और सिंघवियोंसे मामूली बर्ताव दिखलाते रहे. विक्रमी १८७७ वैशाख शुक्ल १४ [हि० १२३५ ता० १३ रजब = ई० १८२० ता० २७ एप्रिल] को नीचे लिखे आदमियोंको क़िलेपर बुलाकर क़ैद किया:-

महता अखैचन्दको पहिले परदेशियोंकी फ़ौजने तन्ख़्वाह न चुका देनेके बहानेसे क़ैद किया, इसका बेटा महता लक्ष्मीचन्द, इसका मुकुन्दचन्द और अखैचन्दके काम्दार रामचन्द, क़िलेदार नथकरण, व्यास विनोदीरामको उसके बेटे गुमानीराम, धांधल, मूला, दाना, जीवा, जोषी विठ्ठलदास, दामोदर, शिवकरण और चेला दर्ज़ी वग़ैरह चौरासी आदमियों समेत क़िलेपर गिरिफ़्तार किया; और खींची बिहारीदास भागकर खेजड़ला वालोंके डेरेपर चलागया, जिससे फ़ौज भेजकर खेजड़लाके भाटियोंको मरवाया; परन्तु ठाकुर शक्तिदान ज़ख़्मी होकर भी जीता रहा.

इसी संवत्के ज्येष्ठ शुक्ल १४ [हि० ता० १३ शअ़्बान = ई० ता० २७ मई] को नीचे लिखे आदमी ज़हर देनेसे मारेगये:-

क़िलेदार नथकरण, महता अखैचन्द, व्यास विनोदीराम, पंचोली जीतमल्ल, जोषी फ़तूहचन्द; और दाना, जीवा व मूलाको तक्लीफ़ देदेकर मरवाया. इसके बाद द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० ता० १२ रमज़ान = ई० ता० २५ जून] को नीचे लिखेहुए आदमी फिर क़ैद हुए:-

जोषी श्रीकृष्ण, महता सूरजमल्ल भाई बेटे व भतीजों समेत, व्यास

शिवदास, पंचोली गोपालदास. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १५ [हि० ता० १४ रमज़ान = ई० ता० २७ जून] को नींबाजके ठाकुर सुल्तानसिंहपर सिंघवी फ़तह-राज, मेघराज और कुशलराजको फ़ौज सहित भेजा; उन्होंने ठाकुरको घेरलिया; उस वक्त ठाकुर सुल्तानसिंह मए अपने भाई सूरसिंहके हवेलीका दर्वाज़ह खोलकर बहादुरीके साथ मारागया, और पोहकरएका ठाकुर सालिमसिंह पोहकरणको चलागया, जो जीते जी जोधपुर नहीं आया; आसोपका ठाकुर केसरीसिंह आसोप गया था, वहांसे भागकर बीकानेरके ज़िले देष्णोकमें करणी माताके शरणे जा बैठा, और वहीं मरगया; केसरीसिंहके मरने बाद आसोपपर ख़ालिसेका क़ब्ज़ह होगया. चंडावल, रोहट, खेजड़ला, सांथीण, और नींबाज वग़ैरह ठिकाने भी ख़ालिसे होगये; ठाकुर लोग उदयपुर चलेगये.

इसी संवत्के भाद्रपद शुक्ल ४ [हि० ता० ३ ज़िल्हिज = ई० ता० १२ सेप्टेम्बर] को जोषी श्रीकृष्ण व महता सूरजमल्लको ज़हर देकर मरवाडाला, और कुंवर छत्रसिंहकी मा महाराणी चावड़ीको एक तंग मकानमें बन्द करदिया, जो अन्न जल बग़ैर मरगई; नाज़िर वृन्दाबनकी नाक कटवा डाली, जती हरखचन्द, कुंवर छत्रसिंहके वैद्यकी भी नाक कटवाई, और बाक़ी बहुतसे आदमियोंको जुर्मानह लेकर छोड़ दिया. आयस देवनाथ व सिंघवी इन्द्रराजके मारने वालों और छत्रसिंहको राज्य दिलाने वालोंको सज़ा दी; ख़ैरख़्वाहोंको ख़ैरख़्वाहीका बदला मिला. विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = ई० १८२१] में सिंघवी मेघराज बख़्शी और धांधल गोवर्धनको इक़ारके मुवाफ़िक़ सवार देकर दिल्लीकी तरफ़ गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी तईनाती में भेजा, जो दूसरे वर्ष वापस आये.

आयस देवनाथके भाई भीमनाथ और देवनाथके बेटे लाडूनाथ दोनोंमें बिगाड़ हुआ, तो महाराजाने महा मन्दिरमें लाडूनाथको मुरुतार करके भीमनाथके लिये उदय मन्दिर तय्यार करवाया; लेकिन् उन दोनों चचा भतीजोंका फ़साद दूर न हुआ. इसी तरह अहलकारोंमें दो गिरोह होगये, एक तो सिंघवी फ़तहराज व भाटी गजसिंहका, दूसरा धांधल गोवर्धन और नाज़िर अमृतरामका था; पहिले गिरोहकी सलाह लाडूनाथके शामिल और दूसरे गिरोहकी भीमनाथके शरीक थी; आपसकी शिकायतें होने लगीं; महाराजाने दोनों तरफ़से बहुतसा जुर्मानह वुसूल किया.

विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] में, जिन सर्दारोंके ठिकाने महाराजाने छीन लिये थे, उनके वकीलोंने गवर्मेंएट अंग्रेज़ीमें नालिश की. पोलिटिकल एजेंट एफ़० वाइल्डर साहिबने उनको हिदायत की, कि तुम

महाराजाके पास जाओ, वे तुम्हारी फ़र्याद सुनेंगे ? उन्होंने कहा, कि महाराजा हमें क़ैद करके मारडालेंगे; साहिबने कहा, ऐसा कभी नहीं होगा. आख़िरकार वे सब, यानें आसोपका वकील कूंपावत हरीसिंह, आउवाका पंचोली कान्हकरण, चंडावलका कूंपावत दौलतसिंह और नींबाज वग़ैरहके वकील महाराजाके पास आये, जिन्हें सलीमकोटमें क़ैद करदिया; लेकिन् गवर्मेण्टने छुड़ादिया, और लाचार महाराजाने लोगोंके ठिकाने वापस दिये.

विक्रमी १८८१ फाल्गुन् कृष्ण ८ [हि० १२४० ता० २२ जमादियुस्सानी = ई० १८२५ ता० १० फ़ेब्रुअरी] को महाराजा मानसिंहकी बेटी स्वरूपकुंवरका विवाह बूंदीके महाराव राजा रामसिंहसे हुआ; इसमें दस लाख रुपया ख़र्च पड़ा था. इसी वर्षमें भंडारी भवानीरामने बाघा जालौरीसे लिखवाकर सिंघवी फ़तहराजके नामकी उसीके अक्षरोंके मुताबिक़ एक अर्ज़ी धौंकलसिंहके नामसे महाराजा मानसिंहके साम्हने पेश की, जिससे महाराजाने नाराज़ होकर सिंघवी फ़तहराज, मेघराज, कुशलराज, व उम्मेदराजको विक्रमी १८८२ चैत्र शुक्ल १४ [हि० १२४० ता० १३ शश्रबान = ई० १८२५ ता० ३ एप्रिल] को क़ैद किया; लेकिन् कुछ अर्सेके बाद यह जाल खुलगया, जिसपर महाराजाने बाघा जालौरीका हाथ कटवाया, और भवानीरामको क़ैद करके दण्ड लिया. इसी संवत्में जोषी शंभूदत्त कामका मुरुतार हुआ, जो आयस लाडूनाथसे नाइत्तिफ़ाक़ी होनेके सबब मौक़ूफ़ किया गया; और लाडूनाथके काम्दार मुसाहिब बने; लेकिन् उन मज़्हबी लुटेरोंसे काम कब चलसक्ता था, ख़ुद किनारा करगये. विक्रमी १८८३ [हि० १२४१ = ई० १८२६] में फिर शंभूदत्तको काम मिला, और इसने अंजाम दिया; लेकिन् आयस लाडूनाथने अपने आदमियोंके बहकानेसे बखेड़ा उठाया, और महा मन्दिरके अहलकार उत्तमचन्दको मुसाहिब बनाकर जोषी शंभूदत्तको ख़ारिज किया; उन ना तज्रिबहकार अहलकारोंने विक्रमी १८८४ श्रावण [हि० १२४३ मुहर्रम = ई० १८२७ ऑगस्ट] में आउवाके ठाकुर बख़्तावरसिंहपर फ़ौज भेजी, जिससे नींबाज और रास वग़ैरहके सर्दारोंने मिलकर डीडवाणेमें धौंकलसिंहका क़ब्ज़ह करवादिया; परन्तु महाराजा बुद्धिमान थे, जिससे सिंघवी फ़ौजराजको फ़ौज देकर डीडवाणेकी तरफ़ भेजा, और नींबाज व रासके ठाकुरोंको अपनी तरफ़ करके आउवासे फ़ौज बुलवा ली.

नागपुरका राजा इसी वर्षमें अंग्रेज़ोंसे डरकर जोधपुरमें आछिपा, उसे महा मन्दिरमें रक्खा, लेकिन् वह कुछ दिनों बाद वहीं मरगया. विक्रमी १८८५ [हि० १२४३

= ई० १८२८] में सिंघवी फ़त्हराज प्रधान हुआ, और आयस लाडूनाथ गिरनारकी यात्राको गया; वहांसे आते वक्त् बामणवाड़ा गांवमें मरगया. इसका बेटा भैरवनाथ तीन वर्षकी उ़म्रमें गद्दीपर बैठा, लेकिन् छः महीने बाद वह भी मरगया; तब भीमनाथके बेटे लक्ष्मीनाथको गद्दीपर बिठाया. विक्रमी १८८६ [हि० १२४४ = ई० १८२९] में भीमनाथके उखाड़ पछाड़ करनेसे काम बिगड़ा, कोई दीवान नहीं बनता था; नाम तो अपने सिर नहीं लिया, लेकिन् बख़्शी और दीवानीका काम फ़ौजराज करने लगा. विक्रमी १८८७ [हि० १२४५ = ई० १८३०] में महा मन्दिरके काम्दारोंसे रिश्तहदारी होजानेके सबब फ़त्हराज दीवान हुआ. विक्रमी १८८८ [हि० १२४६ = ई० १८३१] में सिंघवी गंभीरमल्लको दीवान बनाया. विक्रमी १८८९ [हि० १२४७ = ई० १८३२] में इससे भी काम छीनकर भंडारी लक्ष्मीचन्दके सुपुर्द किया. दीवान कोई न रहा, कुल कामका मुरूतार आयस भीमनाथ हुआ.

विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] में पंचोली कालूराम दीवान बना, लेकिन् छः महीने बाद इससे भी उ़ह्दह छिनकर फ़त्हराजको मिला; उससे भी काम न चला; क्योंकि भीमनाथ कुल जमा हज़्म करजाता, और तन्ख़्वाहदारोंकी तन्ख़्वाह व अंग्रेज़ोंका ख़िराज चढ़ता जाता था, जिसका जवाब नहीं देते थे; इससे बड़ी अब्तरी फैली; अंग्रेज़ी सर्कारकी तरफ़से तक़ाज़ह हुआ, बल्कि फ़ौज भेजनेकी धम्की दीगई; तब जोषी शंभूदत्त, सिंघवी फ़ौजराज, धांधल केसर, सिंघवी कुशलराज, कुचामणके ठाकुर रणजीतसिंह और भाद्राजूनके ठाकुर बख़्तावरसिंहको विक्रमी १८९१ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२५० ता० १३ जमादियुल्अव्वल = ई० १८३४ ता० १८ सेप्टेम्बर] को अजमेरकी तरफ़ रवानह किया. इन लोगोंने बात चीत करके आगेसे दुरुस्त इन्तिज़ाम रखनेके इक़ारपर गवर्मेंएटको खुश किया; लेकिन् फिर भी नाथोंका हुक्म चलता रहा, और कोई किसीकी नहीं सुनता था. महाराजा भीमनाथके कहनेको ईश्वरका हुक्म समझते थे, यहां तक कि कोई कनफटा योगी जुल्म करता, या किसीकी बहिन बेटियोंकी इ़ज़्ज़तको बट्टा लगाता, तो भी उसे कोई न रोकता.

इसी संवत्में मालाणीके भौमियोंका, जो लूट खसोट करते थे, बन्दोबस्त अंग्रेज़ी सर्कारने अपने हाथमें लेलिया. विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = ई० १८३५] में जोधपुरसे अंग्रेज़ी गवर्मेंएटकी ख़िद्मतमें जो फ़ौज भेजनी पड़ती थी, उसके एवज़ रुपया देना ठहरगया. विक्रमी १८९४ [हि० १२५३ = ई० १८३७] में आयस भीमनाथ मरगया, और महा मन्दिरके आयस लक्ष्मीनाथका हुक्म तेज़ हुआ; प्रधानेका काम भंडारी लक्ष्मीचन्दको मिला, लेकिन् काम न

चलनेसे यह आपही छोड़ भागा; तब सब रियासती काम और उह्दे महा मन्दिरके आदमियोंने अपने क़ब्ज़हमें करलिये. आख़िरकार नाथोंके ज़ुल्मसे मारवाड़के सर्दारोंने कर्नेल सदरलैन्ड साहिबके पास अजमेर जाकर नालिश की; नाथ लोग ज़ाहिरा मुल्क लूटते थे, और डकैती व चोरी ज़ोर शोरसे फैल रही थी; महाराजाको नाथ लोग दबाते, और जो चाहते करालेते थे.

विक्रमी १८९६ चैत्र शुक्क ७ [हि० १२५५ ता० ६ मुहर्रम = ई० १८३९ ता० २२ मार्च] को कर्नेल सदरलैन्ड साहिब, एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूतानह जोधपुर आये; और उनके कहनेके मुवाफ़िक़ महाराजाने सर्दारोंको जागीरें दीं, लेकिन् नाथोंका बन्दोबस्त कुछ न हुआ; इसलिये सदरलैन्ड साहिबने अजमेर पहुंचकर एक इश्तिहार सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से फ़ौजकशीके लिये विक्रमी श्रावण शुक्क १५ [हि० ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० ता० २५ ऑगस्ट] को जारी किया उसकी नक़्ल नीचे लिखीजाती है:-

इश्तिहारकी नक़्ल.

लॉर्ड गवर्नर जेनरल साहिब बहादुर, मालिक मुल्क हिन्दुस्तानकी तरफ़से मारिफ़त कर्नेल जॉन सदरलैन्ड साहिब बहादुर, जो कि लॉर्ड साहिब बहादुरकी तरफ़से रजवाड़ोंके बन्दोबस्तके वास्ते मुक़र्रर हैं, वास्ते ख़बर देने सारे रईसान और रअय्यत मारवाड़के लिखा हुआ ता० १७ ऑगस्ट सन् १८३९ ई० मक़ाम नसीराबादका:-

कि महाराजा मानसिंहने क़रीब पांच वर्षके अर्सेसे अपने वे अह्द और इक़ार जो सर्कार अंग्रेज़ीके साथ रखते थे, अपनी समझसे एक राह मुक़र्रर करके, तोड़दिये; और जोधपुरके सवाल जवाबका तदारुक और बदला, (जिसके मांगनेमें सर्कारने वक़्पर ग़फ़्लत नहीं की,) उन्होंने नहीं दिया; और सर्कारका कहा न माना.

अव्वल अह्दनामहकी लिखावट मूजिब सर्कारके हक़के रुपये दो लाख तेईस हज़ार बर्सौदीके मुक़र्रर हैं, जिसके कुल आज तक दस लाख उन्नीस हज़ार एक सौ छयालीस रुपये, दो आने हुए, जो आज तक वुसूल नहीं हुए.

दूसरा ग़ैर इलाक़ोंके रहने वालोंका नुक़्सान मारवाड़के मुल्कमें बद इन्तिज़ामीके वक़्त हुआ, और उसकी तादाद लाखोंपर पहुंची; उस नुक़्सानका एवज़ वुसूल नहीं हुआ.

तीसरे उस बन्दोबस्तका मुक़र्रर करना, कि जो रअय्यतको पसन्द हो, और जिससे

मुल्क मारवाड़में सुख चैन हो; और इलाक़ोंके व व्यापारियोंके मालका, नुक़्सान और मुसाफ़िरोंपर ज़ुल्म और ज़ियादती वन्दोबस्त करने वालोंकी नालाइक़ी और मारवाड़में रहने वालोंकी हरामज़ादगीसे होती है, उसमें बचाव हो, सो नहीं हुआ.

इस सूरतमें लॉर्ड गवर्नर जेनरल साहिब बहादुर हिन्दको यह वाजिब हुआ, कि इस मारवाड़से हक़ और दावा ज़ोरसे ले लेनेका हुक्म देवें.

इस वास्ते सर्कार अंग्रेज़ीकी फ़ौज तीन तरफ़से मारवाड़के मुल्कमें दाख़िल होकर जोधपुर जावेगी; और झगड़ा सर्कार अंग्रेज़ीका महाराजा श्री मानसिंहजी और उनके काम्दारोंसे है, मारवाड़की रअ़य्यतसे नहीं; इस वास्ते मुल्क मारवाड़की रअ़य्यत दिलजमई रक्खे; और जब तक रअ़य्यत मज़्कूर सर्कारकी फ़ौजसे दुश्मनी नहीं करेगी, तब तक सर्कार उस रअ़य्यतके जान मालको अपनी रअ़य्यतकी तरह रक्खेगी; और हर एक कम्पूमें बन्दोवस्त सर्कारका ऐसी ख़ूबीके साथ होगा, कि रअ़य्यतके लोग अपने अपने घरोंमें और अपने अपने कामोंमें ऐसी ख़ूबीके साथ रहेंगे, जैसा कि फ़ौज नहीं आनेके वक़्तमें ख़ुशीसे रहते हैं- फ़क़त.

कर्नेल सदरलैंड साहिब अंग्रेज़ी फ़ौज समेत मारवाड़की तरफ़ रवानह हुए; लेकिन् महाराजा मानसिंहने साम्हने जाकर क़िलेकी कुंजियां साहिबके सुपुर्द करदीं, विक्रमी आश्विन कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रजब = ई० ता० २९ सेप्टेम्बर] को क़िलेमें अंग्रेज़ी अफ़्सरोंका क़ब्ज़ह करादिया. महाराजाने ज़नाने वग़ैरह सबको नीचे उतार लिया, जिसपर फिर एक अ़ह्दनामह क़रार पाया- (देखो अ़ह्दनामह नम्बर ४३). रियासती इन्तिज़ामके लिये नीचे लिखे आदमियोंकी कौन्सिल मुक़र्रर हुई:-पोहकरणका ठाकुर बिभूतसिंह, आउवाका ठाकुर ख़ुशहालसिंह, नीवाजका ठाकुर सवाईसिंह, रीयांका ठाकुर शिवनाथसिंह, भाद्राजूणका ठाकुर बख़्तावरसिंह, कुचामणका ठाकुर रणजीतसिंह और (आसोपका ठाकुर शिवनाथसिंह बालक था, इसलिये उसके एवज़) कंटालियाका ठाकुर शंभूसिंह, रासका ठाकुर भीमसिंह, धाय भाई देवकरण, दीवान सिंघवी फ़ौजराज, वकील राव रिड़मल व जोषी प्रभूलाल.

इस कौन्सिलको कुल इख़्तियार दियागया; कर्नेल सदरलैंड कलकत्ते गये, और पोलिटिकल एजेंट लडलो साहिब सूरसागरपर रहने लगे. थोड़े ही दिनों बाद फाल्गुन् शुक्ल १२ [हि० १२५६ ता० ११ मुहर्रम = ई० १८४० ता० १६ मार्च] को कर्नेल सदरलैन्ड वापस आये, और क़िला महाराजाको देदिया. अब भी नाथ लोगोंका ज़ुल्म नहीं मिटा, इस बारेमें पोलिटिकल एजेंट उनको रोकनेके लिये, जो ख़रीते लिखकर भेजता,

उनका जवाब गोलमाल दियाजाता. इसके बाद विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में भंडारी लक्ष्मीचन्दको दीवान बनाया, और दूसरे वर्ष महता बुद्धमल्लको काम दिया; लेकिन् नाथ लोगोंका कुछ बन्दोबस्त न होनेसे जमा खर्च और इन्तिज़ामका ढंग नहीं जमा. सदरलैन्ड साहिबने जोधपुर आकर नाथोंके इन्तिज़ामके लिये महाराजाको समझाया, पर कुछ असर न हुआ; तब महामन्दिर, उदयमन्दिर वग़ैरह नाथोंकी जागीरके गांव ज़ब्त कियेगये, इसपर भी महाराजाके इशारेके मुवाफ़िक़ उनके पास जमा पहुंचती रही. अन्तमें एजेन्ट साहिबने तंग होकर नाथोंको समझाया, कि तीन लाख रुपया सालानह आमदनीकी जागीर लेकर किनारा करो, लेकिन् उन्होंने न माना; दिन ब दिन कान फड़वाकर नये नये नाथ बनते थे, जिनकी हिफ़ाज़तके लिये डेरे खड़े करवाकर खाने पीनेकी पूरी संभाल कीजाती थी. जब यह लोग रुपये मांगते और देनेमें देर होती, तो ज़मीनमें ज़िन्दह गड़नेको तय्यार होते; तब महाराजा रुपये देकर उन्हें खुश करते.

विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में महता लक्ष्मीचन्दको प्रधान बनाया, लडलो साहिबका नाकमें दम होगया, और कहते थे, कि जो जमा आती है, नाथोंमें खर्च होजाती है, रियासतके हाथी घोड़े, नौकर लोग फ़ाक़ह कशी करते हैं. तो भी साहिबके कहनेका असर न हुआ. विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] में दो नाथोंने एक ब्राह्मणकी लड़कीको पकड़ लिया, और कहा, कि हमको रुपये दे, तो छोड़ें. यह खबर लडलो साहिबके कान तक पहुंची, साहिबने उन दोनोंको गिरिफ़्तार करके अजमेरकी तरफ़ रवानह करदिया. यह सुनकर महाराजा बहुत उदास हुए, और राईके बाग़से सवार होकर साहिबके पास जाने लगे; लोगोंने रोका, और कहा, कि साहिब न मानेंगे. महाराजा गुलाबसागर तालाबपर ठहर गये, और दो दिन तक खाना न खाया.

इसी संवत्के वैशाख कृष्ण ९ [हि० ता० २३ रबीउ़ल्अव्वल = ई० ता० २३ एप्रिल] को महाराजाने बदनपर भस्म रमाई, और फ़क़ीर बनकर मेड़तिया दर्वाज़हके बाहर बावड़ीपर जाबैठे. वहांसे विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० २ रबीउ़स्सानी = ई० ता० २ मई] को गांव पाल गये, कुछ दिनों तक वहां रहे, फिर जलन्धरनाथके दर्शन करके जालौर जानेका इरादह था, कि पोलिटिकल एजेन्ट लडलो साहिब वहां पहुंचे, और महाराजासे कहा, कि जब तक आप यहां रहेंगे, तब तक आपके जीते जी दूसरा राजा न होगा; और आप मारवाड़से बाहर जायेंगे, तो धौंकलसिंहको गद्दीपर बिठादिया जायगा. इस बातसे महाराजाने गिरनारका इरादह छोड़दिया, और विक्रमी आषाढ़ शुक्ल

४ [हि॰ ता॰ ३ जमादियुस्सानी = ई॰ ता॰ ३० जून] को जोधपुरके पास राईके बाग़में वापस आये. जिस दिनसे महाराजा फ़क़ीर हुए, उसी दिनसे एक पेड़ा, चंदलोईका शाक और दो तीन रुपये भर दही खाते थे. विक्रमी श्रावण शुक्ल ३ [हि॰ ता॰ २ रजब = ई॰ ता॰ २९ जुलाई] को महाराजा मंडोवर गये. विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ७ [हि॰ ता॰ ६ शअ़्बान = ई॰ ता॰ १ सेप्टेम्बर] से एकांतरा ज्वर आने लगा; विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ११ [हि॰ ता॰ १० शअ़्बान = ई॰ ता॰ ५ सेप्टेम्बर] को महाराजाने एक सिफ़ेद दुपट्टा ओढ़लिया, और सब आदमियोंको वहांसे बाहर निकालकर कहा, कि सुब्हके वक्त ब्राह्मण लोग अन्दर आकर हमें संभालें; और इसी तरह हुआ, कि द्वादशीको महाराजाकी दग्ध क्रिया कीगई. इनके साथ महाराणी देवड़ी और छः ख़वास पर्दायतें सती हुईं.

यह महाराजा जैसे बलन्द हिम्मत, बहादुर, अक़्लमन्द और क़द्रदान थे, वैसे ही घमंडी, हठी, निर्दई वग़ैरह भी पूरे थे. इनके वक्तमें दंगा, फ़साद बाहरी और भीतरी होता रहा, रअ़य्यत लुटती थी, जब राज्यमें ख़र्च की तंगी हुई, तब रुपये मुल्कसे वुसूल किये; जिस किसीके पास दौलत होती, छीन ली जाती; इसपर भी नाथ लोग ज़बर्दस्तीसे भले आदमियोंके लड़कोंको पकड़ लेते, और चेला बनाते; अच्छे घरानेकी बहू बेटियोंको पकड़कर घरोंमें डाललेते, माल छीनलेते, जिनकी पुकार कोई नहीं सुनता था. इतने ऐबोंपर भी महाराजाकी तारीफ़ राजपूतानहमें अब तक होरही है, और लोग कहते हैं, कि वैसा राजा पैदा होना कठिन है. यह तारीफ़ सिर्फ़ महाराजाकी फ़य्याज़ीसे होरही है, क्योंकि यह एक ही गुण ऐसा है, जिससे मनुष्यके और अवगुणोंकी तरफ़ कोई नज़र नहीं देता. इनके ३ पुत्र हुए, जिनके नाम छत्रसिंह, शिवदानसिंह, और पृथ्वीसिंह रक्खे-गये थे, बाक़ी बे नाम ही मरगये; और दो बेटियां थीं, १- सिरहकुंवर, जिसकी शादी विक्रमी १८७० [हि॰ १२२८ = ई॰ १८१३] में जयपुरके महाराजा जगत्सिंहके साथ हुई, और २- स्वरूपकुंवर बूंदीके रावराजा रामसिंहसे विक्रमी १८८१ [हि॰ १२३९ = ई॰ १८२४] में ब्याही गई. इनके राणियां १३, पर्दायती १२ और गायणियां १२ थीं, महाराजाकी ख़वासोंके बेटे नीचे लिखे मुवाफ़िक़ थे:-

१- रंगरूपरायके बेटे स्वरूपसिंह, २- हस्तूरायके बेटे शिवनाथसिंह, ३- तुलसीरायके बेटे लालसिंह, ४- रूपजोतके बेटे विभूतसिंह, ५- उदयरायके बेटे सोहनसिंह, ६- सुन्दररायके बेटे तेजसिंह.

४१ महाराजा तख़्तसिंह

इनका जन्म विक्रमी १८७६ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० १२३४ ता० १३ शअ्बान = ई० १८१९ ता० ५ जून] को हुआ था. महाराजा मानसिंहका देहान्त होनेपर धौंकलसिंह को गद्दीपर बिठानेकी कार्रवाइयां होने लगीं, लेकिन् पोलिटिकल एजेन्ट लडलो साहिब ने सबको हुक्म सुनादिया, कि जो कोई धौंकलसिंहको बिठानेका इरादह करेगा, उसे सज़ा दीजायगी; और साहिबने माजी साहिबकी सलाह लेकर ईडरके इलाके अहमद-नगरसे महाराजा तख़्तसिंहको लानेका हुक्म दिया; दीवान महता लक्ष्मीचन्दके बेटे मुकुन्दचन्दको दो हज़ार आदमियोंकी भीड़ भाड़के साथ ले आनेके लिये रवानह किया. इस वक्त पोलिटिकल एजेन्ट लडलो साहिबने महाराजा तख़्तसिंहके नाम एक ख़रीतह लिखा, जिसकी नक्ल यह है :-

एजेन्ट साहिबके ख़रीतहकी नक्ल.

स्वस्तिश्री सर्वोपमा विराजमान सकल गुण निधान राज राजेश्वर महाराजा धिराज महाराजाजी श्री तख़्तसिंहजी बहादुर योग्य, कप्तान जॉन लडलो साहिब बहादुर लिखावतां सलाम बंचावसी, अठाका समाचार भला है, आपका सदा भला चाहिजे, अपरंच- आपको महाराजा साहिब मानसिंहजीके गोद लेनेके वास्ते सब सर्दार, उमराव, मुतसद्दी, ख़वास पासबान, ज़नानह, काम्दार मिलकर कह्यो, कि महाराजा तख़्तसिंह को खोले लेवेंगे; सो हमको भी मन्ज़ूर है, सो आप खुशीसे जोधपुर पधारिये. सो तख़्तसिंहजी तो राजके पाट बैठेंगे, और कुंवर जशवन्तसिंहको भी लार लेते आवना दोनों साहिबोंकूं यहां पधरावना, सो हम भी नव्वाब गवर्नर जेनरल साहिबको लिखेंगे, सो ज़ुरूर मन्ज़ूर करलेंगे; और आपके मिज़ाजकी खुशीके समाचार लिखावसी. ता० १४ ऑक्टोबर सन् १८४३ ई० = कार्तिक वदी ६ संवत् १९००.

सब माजी साहिबोंकी तरफ़से जो महाराजा तख़्तसिंहके नाम रुक्का लिखागया, उसकी, नक्ल.

लालजी छोरू श्री तख़्तसिंहजी, मोती जशवन्तसिंह सूं म्हांरा वारणा वांचजो, तथा श्री जी साहबांरो ही फ़ुर्मावणो थाने खोले लेणरो हुओ थो, ने हमार म्हांरो ही

फ़ुर्मावणो हुओ है, ने सर्दारां उमरावां ने मुत्सद्दी वग़ैरह सारांरे पिण थांने खोले लेनरी ठहरी है; सो थें सिताव आवसो. (इस ख़ास रुक़्केके नीचे छओं माजी साहिबाके दस्तख़त थे.)

सर्दार और अह्लकारोंने महाराजा तख़्तसिंहके नाम जो अ़र्ज़ी लिखी, उसकी नक़्ल.
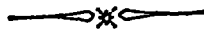
स्वस्ति श्री अनेक सकल शुभ ओपमा विराजमान श्री राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री तख़्तसिंहजी, महाराज कुमार श्री जशवन्तसिंहजी री हजूरमें समस्त सर्दारां मुत्सद्दियां ख़ास पासवानां री अर्ज मालुम होवे; तथा ख़ास रुक़्क़ा श्री माजी साहबांरी लिखावट मूजव सारा जणारे आपने खोले लेणा ठहराया है, सो बेगा पधारसी- (इस अ़र्ज़ीके नीचे सब सर्दारों, मुतसद्दियों और ख़ास पासवानोंके दस्तख़त हुए.)

लक्ष्मीचन्दके बेटे मुकुन्दचन्दके जानेपर महाराज कुमार जशवन्तसिंह समेत महाराज तख़्तसिंह विक्रमी १९०० कार्तिक शुक्ल ७ [हि० १२५९ ता० ६ शव्वाल = ई० १८४३ ता० २९ ऑक्टोबर] को जोधपुरके क़िलेमें दाख़िल हुए, और मार्गशीर्ष शुक्ल १० शुक्रवार [हि० ता० ९ ज़िल्काद = ई० ता० १ डिसेम्बर] को गद्दी बैठनेका जल्सह हुआ. अब हम इन महाराजाके समयमें, जो बड़े बड़े काम हुए, वह लिखते हैं.

विक्रमी १९१० ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० १२६९ ता० १२ रमज़ान = ई० १८५३ ता० १९ जून] को महाराजाने अपनी बेटी चांदकुंवरका विवाह जयपुरके महाराजा रामसिंहके साथ बड़ी धूम धामसे किया. फिर सर्दीके मौसममें आबू, सिरोही गोढवाड़ और सोजतकी तरफ़ दौरा किया. विक्रमी १९१४ भाद्रपद कृष्ण ५ [हि० १२७३ ता० १९ ज़िल्हिज = ई० १८५७ ता० ९ ऑगस्ट] को जोधपुरके क़िलेमें बारूतके ख़ज़ानेपर बिजली गिरी, जिससे क़िलेकी दीवार और चामुंडा माताका मन्दिर उड़कर शहरमें आपड़ा; उन पत्थरोंसे दो सौ आदमी अपने अपने घरोंमें दबकर मरगये; दीवार और मन्दिर नये सरसे बनवाये गये. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १२ [हि० ता० २६ ज़िल्हिज = ई० ता० १६ ऑगस्ट] को ख़बर मिली, कि ऐरनपुरकी छावनीका रिसालह अंग्रेज़ोंसे बाग़ी होकर आउवेको चला आया, जिसपर महाराजाने क़िलेदार पंवार औनाड़सिंह, लोढा राव राजमल्ल, सिंघवी कुशलराज और महता विजयसिंह वग़ैरहको फ़ौज देकर आउवापर भेजा. विक्रमी

आश्विन कृष्ण ९ [हि० १२७४ ता० १९ मुहर्रम = ई० ता० ८ सेप्टेम्बर] को आउवाके ठाकुर और बाग़ियोंने राज्यकी फ़ौजसे मुक़ाबलह किया, इस लड़ाईमें राव राजमल्ल और क़िलेदार ओनाड़सिंह मारेगये; और सिंघवी कुशलराज व महता विजयसिंह भागकर सोजत पहुंचे, और मुख़ालिफ़ ग़ालिब रहे, सिर्फ़ आहोरके ठाकुरने महाराजाका तोपख़ानह बचाया, जिससे उसकी कारगुज़ारी समझी गई.

एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके अजमेरसे रवानह होनेकी ख़बर मिली, कि बाग़ियोंको सज़ा देनेके लिये आउवाकी तरफ़ जाते हैं; यह सुनकर मेशन साहिब पोलिटिकल एजेएट मारवाड़, बड़े साहिबके शरीक होनेको अजमेरकी तरफ़ चले; सो अपने लश्करके धोखेसे बाग़ियोंके रिसालहमें आउवे पहुंचे; उन लोगोंने पहिचानकर साहिबको मारडाला. एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह भी कम जमइयतके सबब अजमेर लौट गये; और ऐरनपुरका रिसालह, जो आउवेमें था, मारवाड़का मुल्क लूटता हुआ नारनौल पहुंचा, जहां अंग्रेज़ी फ़ौजसे शिकस्त खाई; और बर्बाद होगया. सिंघवी कुशलराज और कुचामण ठाकुर वग़ैरह पांच छः हज़ार फ़ौज राज्यकी लेकर बाग़ियोंके पीछे नारनौल तक गये; लेकिन् लड़ाई करनेकी हिम्मत न हुई, इससे लौटआये, और महाराजाके हुक्मके मुताबिक़ बड़लूकी गढ़ीमें आसोपके ठाकुरको घेरलिया, क्योंकि वह महाराजासे बदला हुआ था. आख़िरकार विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १० [हि० ता० २४ रबीउ़ल अव्वल = ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को लड़ाई हुई, और आसोपके ठाकुर शिवनाथसिंहको जोधपुर ले आये, विक्रमी माघ कृष्ण ८ [हि० ता० २२ जमादियुल अव्वल = ई० ता० १० डिसेम्बर] को क़िलेमें क़ैद करदिया, जो कुछ अर्सेके बाद क़िलेसे निकल भागा; कहते हैं, कि उसके सर्दार जुझारसिंह कूंपावतने बड़ी मिह्नतके साथ उसको क़िलेसे निकाला था. फिर महाराजाने फ़ौज भेजकर आउवा ख़ाली करा लिया; और ठाकुर खुशहालसिंह भागगया. आउवा, आसोप, और गूलर वग़ैरहके ठाकुर भागकर मेवाड़के उमराव कोठारिया, व भींडर वग़ैरहके पास रहने लगे.

आउवाके ठाकुरने पोलिटिकल एजेएटके मारे जानेका क़ुसूर अपने ज़िम्मह नहीं बतलाया, और सर्कार अंग्रेज़ीसे सफ़ाई करके उदयपुरमें आरहा; महाराणाने उसके गुज़ारेके लिये एक हज़ार रुपया माहवार मुक़र्रर करदिया था; लेकिन् उसका इन्तिक़ाल उदयपुरमें ही होगया. उसका बेटा देवीसिंह, आसोपका ठाकुर शिवनाथसिंह, गूलरके विष्णुसिंह वग़ैरहके वकील अंग्रेज़ी अफ़्सरोंके पास फ़र्याद करते थे; और सर्दार लोग मारवाड़को लूटते थे; फिर बीकानेरमें ये लोग जारहे. अंग्रेज़ी अफ़्सरोंने इनकी जागीरें वापस देनेकी सिफ़ारिश महाराजाको की; परन्तु मन्ज़ूर न हुई. महाराजा ऐश

इ़शरत और शराब नोशीमें डूबे हुए थे; बाग़ी सर्दार मुल्क लूटते; महाराजाके महाराज कुमार, जो चाहते, जुल्म करते; ऐसी छीना झपटीमें बद नियत अह्लकार भी मत्लब बनाने लगे; इन सबसे, जिस तरह क़ाबू पड़ता, महाराजा भी अपना मत्लब सिद्ध करते; लेकिन् महाराजाका ख़ज़ानह लौंडियोंके हाथ था; कभी किसी लौंडीने पचास हज़ार रुपये हज़्म किये, कल दूसरीने अपना काम बनाया; महाराणियों और ख़वास पासबानोंकी हिमायतसे लौंडियां बे फ़िक्र थीं. महाराजा चन्द दिनोंके बाद कुछ मिनटोंके लिये बाहर आते, बल्कि कभी महीनों तक ज़नानेसे नहीं निकलते थे, शराब निकलवानेमें बड़ा ख़र्च होता था. जब पोलिटिकल एजेण्ट अथवा एजेण्ट गवर्नर जेनरलकी मुलाक़ात होती, और वे इन्तिज़ामकी हिदायत करते, तो महाराजा अपने अख़्लाक़ और होश्यारीसे ऐसा जवाब देते, कि उनको यक़ीन होजाता, कि अब ज़रूर मुल्कका इन्तिज़ाम करेंगे; लेकिन् उनके जानेके बाद फिर ऐश इ़शरत और शराबनोशीमें मश्ग़ूल होजाते. आख़िरकार एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने बहुतेरा समझाया, और महाराजाने इक़ार भी किया, लेकिन् कुछ अ़मल न हुआ.

विक्रमी १९२९ [हि॰ १२८९ = ई॰ १८७२] में दूसरे कुंवर ज़ोरावरसिंह जीवन माताके दर्शनका बहाना करके नागौरके क़िलेपर जा जमे, महाराजा एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहकी मुलाक़ातको आबू गये थे, ज़ोरावरसिंहके नागौर ले लेनेका हाल साहिबने दर्याफ़्त किया, तब महाराजाने कहा, कि मैंने कुछ हुक्म नहीं दिया; उसने यह अपनी मर्ज़ीसे किया है. विक्रमी आषाढ़ शुक्ल १२ [हि॰ ता॰ ११ जमादियुल अव्वल = ई॰ ता॰ १६ जुलाई] को महाराजा जोधपुर आये, और पोलिटिकल एजेण्ट फ़ौज समेत नागौर गये; ज़ोरावरसिंह समझानेसे पोलिटिकल एजेण्टके पास आगये; तब वह विक्रमी श्रावण शुक्ल १५ [हि॰ ता॰ १४ जमादियुस्सानी = ई॰ ता॰ १८ ऑगस्ट] को ज़ोरावरसिंहको साथ लेकर जोधपुर आये; और खाटूका ठाकुर व बारहठ भारथदान वग़ैरह, जो ज़ोरावरसिंहके शरीक थे, उनकी जागीरें ज़ब्त हुईं; ज़ोरावरसिंह नाराज़ होकर अजमेर जा रहे; गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने कामका इख़्तियार बड़े महाराज कुमार जशवन्तसिंहको दिलादिया.

विक्रमी १९२९ माघ शुक्ल १५ [हि॰ ता॰ १४ ज़िल्हिज = ई॰ १८७३ ता॰ ११ फ़ेब्रुअरी] को महाराजा तख़्तसिंहका देहान्त होगया. इनका छोटा क़द, गोरा रंग, बड़ी आंखें, चौड़ी पेशानी, आ़दतमें हंस मुख और मिलनसार थे; जब कोई आदमी इनसे मिलता, तो तमाम उ़म्र यही कहता, कि महाराजा

तख़्तसिंहकी मिहर्बानी मुझपर बहुत है; और जब यह मुल्की इन्तिज़ाम और अच्छे बुरे आदमियोंकी चाल चलनके बारेमें बात करते, तब दूसरा उनके बराबरीमें कोई न जंचता; लेकिन् यह सब वर्ताव शराब नोशी और अय्याशीसे पलट दिये थे. महाराजाने २९ वर्ष राज्य किया, जिसमें २२ दीवान बदले गये. इनके ३० राणियां थीं, और १० पुत्र हुए.

१- कुंवर जशवन्तसिंह, २- ज़ोरावरसिंह, इनका जन्म विक्रमी १९०० माघ शुक्ल ६ [हि० १२६० ता० ५ मुहर्रम = ई० १८४४ ता० २५ जैन्युअरी] को हुआ, और फ़ेब्रुअरी सन् १८८८ ई० में मरगये. ३-प्रतापसिंह, विक्रमी १९०२ कार्तिक कृष्ण ६ [हि० १२६१ ता० २० शव्वाल = ई० १८४५ ता० २० ऑक्टोबर] को पैदा हुए. ४- रणजीतसिंह, विक्रमी १९०३ चैत्र कृष्ण ३ [हि० १२६३ ता० १७ रबीउ़ल अव्वल = ई० १८४७ ता० ५ मार्च] को; ५- किशोरसिंह, विक्रमी १९०४ भाद्रपद कृष्ण ९ [हि० १२६३ ता० २३ रमज़ान = ई० १८४७ ता० ३ सेप्टेम्बर] को; ६- बहादुरसिंह, जो विक्रमी १९१० पौष शुक्ल १२ [हि० १२७० ता० ११ रबीउ़स्सानी = ई० १८५४ ता० १० जैन्युअरी] को हुए, और विक्रमी १९३६ पौष शुक्ल ९ [हि० १२९७ ता० ८ सफ़र = ई० १८८० ता० २० जैन्युअरी] को मरगये. इनके एक कुंवर जीवनसिंह हैं, जिनका जन्म विक्रमी १९३२ मार्गशीर्ष शुक्ल ४ [हि० १२९२ ता० ३ ज़िल्क़ाद = ई० १८७५ ता० २ डिसेम्बर] को हुआ; ७- भोपालसिंह, विक्रमी १९११ चैत्र शुक्ल ४ [हि० १२७० ता० ३ रजब = ई० १८५४ ता० २ एप्रिल] को; ८- महाराज माधवसिंहका जन्म विक्रमी १९१३ आषाढ़ शुक्ल ६ [हि० १२७२ ता० ५ ज़िल्क़ाद = ई० १८५६ ता० ८ जुलाई] को हुआ था, यह विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में छब्बीस वर्षकी उम्र पाकर मरगये; तब महाराजा साहिबके हुक्मसे भोपालसिंहके कुंवर दौलतसिंह, जिनका जन्म विक्रमी १९३४ वैशाख शुक्ल ११ [हि० १२९४ ता० १० रबीउ़स्सानी = ई० १८७७ ता० २४ एप्रिल] को हुआ था, गोद आये; ९- मुहब्बतसिंह, विक्रमी १९१४ फाल्गुन् कृष्ण २ [हि० १२७४ ता० १६ जमादियुस्सानी = ई० १८५८ ता० ३ फ़ेब्रुअरी] को; १०- ज़ालिमसिंह, विक्रमी १९२२ आषाढ़ कृष्ण ६ [हि० १२८२ ता० २० मुहर्रम = ई० १८६५ ता० १४ जून] को पैदा हुए.

महाराजा तख़्तसिंहके ३० राणियोंके सिवा १० ख़वास पासवानोंके जो लड़के हुए, उनके नाम ये हैं- १- मोतीसिंह, २- जवाहिरसिंह, ३- सुल्तानसिंह, ४- सर्दारसिंह, ५- जवानसिंह, ६- सावन्तसिंह, ७- तेजसिंह, ८- कल्याणसिंह ९- मूलसिंह, और १०- भारतसिंह.

४२ महाराजा जशवन्तसिंह २.

इनका जन्म विक्रमी १८९४ आश्विन शुक्ल ८ [हि० १२५३ ता० ७ रजब = ई० १८३७ ता० ७ ऑक्टोबर] को हुआ. महाराजा मानसिंहने चारण जुगता बणशूरको, तख्तसिंहने बाघा भाटको, और इन महाराजा धिराजने कविराज मुरारिदानको लाख पशाव और ढींकाई गांव इनायत किया. यह महाराजा बहादुरी और फ़य्याज़ी में अपना सानी नहीं रखते; इन्होंने पिताकी मौजूदगीमें गोढवाड़के मीनोंको तलवारके ज़ोरसे ऐसा सीधा किया, कि अब तक महाराजाके नामसे थर्राते हैं; इसी तरह लोहियाणाके लुटेरे भूमियोंको ग़ारत किया; लेकिन् रियासती इन्तिज़ाम याने माली और मुल्की कामोंकी तरफ़ इनका ध्यान बहुत कम है. इनके छोटे भाई महाराज प्रतापसिंह महाराजाके दिली ख़ैरख़्वाह, बे रू रिआयत और बे तमा शख़्स हैं; रियासतके इन्तिज़ामको बहुत अच्छी तरह चलाते हैं. सच्चाई, ईमान्दारी, और ख़ैरख़्वाहीमें अपना सानी नहीं रखते; इन्होंने अपनी जागीर रियासतमें मिलाकर अपने ख़र्चके लिये नक्द तन्ख़्वाह कराली है; इनके मातहत मुसाहिब कारगुज़ारीके साथ काम करते हैं.

इस रियासतमें सबसे बड़ी अदालत मह्कमहख़ास है, जिसके हाकिम श्री महाराजा साहिब हैं, यह मह्कमह विक्रमी १९३० वैशाख [हि० १२९० रबीउ़ल अव्वल = ई० १८७३ मई] में क़ाइम हुआ; इससे पहिले दीवान और बख़्शी मुसाहिबसे पूछकर ज़बानी काम चलाते थे. इन महाराजाके अ़ह्दमें भी क़रीब एक वर्ष तक वही ढंग रहा. इनके अ़ह्दमें पहिले मुसाहिब ख़ां बहादुर भय्या मुहम्मद फ़ैज़ुल्लाहख़ां विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] तक रहे; इसी संवत्के भाद्रपद [हि० शअ़्बान = ई० ऑगस्ट] में महाराज किशोरसिंह मुसाहिब आला बने, और मह्कमहका नाम आलियह कौंन्सिल रक्खा. विक्रमी १९३५ [हि० १२९५ = ई० १८७८] में किशोरसिंहको तो कमांडर इन् चीफ़ फ़ौज बनाया, और महाराज प्रतापसिंहने इस उ़हदेपर क़ाइम होने बाद प्राइम-मिनिस्टरीका ख़िताब पाया; और मह्कमहका नाम मह्कमह आलियह प्राइममिनिस्टरी रक्खा गया. इसमें दो सीगे़ बनाये, एक मुआ़मलात अन्दुरूनी और दूसरा अज़लाए ग़ैर. विक्रमी १९३८ भाद्रपद [हि० १२९८ शव्वाल = ई० १८८१ सेप्टेम्बर] में महाराज प्रतापसिंहने इस्तिअ़्फ़ा दे दिया; तब मह्कमहख़ास नाम होकर रियासती मुसाहिबोंके क़ब्ज़हमें आया; लेकिन् विक्रमी आश्विन [हि० ज़िल्क़ाद = ई० ऑक्टोबर]

में महाराज प्रतापसिंहको पूरा इख्तियार और "मुसाहिब आला" का ख़िताब मिला, वह अब तक महकमह ख़ासके मुसाहिब आला और प्राइमिनिस्टर हैं. जब इनको इख्तियार मिला, तो रियासतकी आमदनी क़रीब तीस लाख सालानहके और जमा व ख़र्च अन्तर था; इसके सिवाय चालीस या पचास लाख क़र्ज़ा था; लेकिन् प्राइम-मिनिस्टर महाराजकी कोशिशसे ख़र्च कम हुआ, और आमदनी बढ़कर विक्रमी १९३९ [हि० १२९९ = ई० १८८२] में उन्तालीस लाख होगई; और सिवाय तीन लाख रुपयेके कुल क़र्ज़ अदा करदिया गया. विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] में महाराज प्रतापसिंहको सर्कार अंग्रेज़ीसे "सर, के० सी० एस० आई० " का एज़ाज़ मिला; और दूसरे वर्ष हुज़ूर मलिकह मुअ़ज़्ज़मह कैसरह हिन्दके जश्न जूबिलीमें विलायत जानेपर उनको ख़िताब "लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल, और एड्डि काङ्, टु दि प्रिन्स ऑव वेल्स" (शाहज़ादह साहिब वेल्सका फ़ौजी मुसाहिब) मिला.

मुल्कमें जो डकैती, बटमारी, और ख़ानहजंगी वगैरह ज़ियादह थी, वह दूर होगई; मीना, भील, बावरी, थोरी वगैरह फ़सादी क़ौमोंने सीधे होकर खेती वगैरहका पेशह इख्तियार करलिया.

अदालतोंका यह हाल था, कि वगैर हिमायतके काम चलना दुश्वार था; अब कोई किसीकी हिमायतका नाम नहीं लेता; पहिले कोई क़ाइदह रियासतमें नहीं था, अब वे भी जारी होते जाते हैं; यह सब महाराज प्रतापसिंहकी ईमान्दारी, सच्चाई, ख़ैरख्वाही, और क़द्रदानीका नतीजह है. इनके मातहत महाराज ज़ालिमसिंह और मुन्शी हरदयालसिंह वगैरह अच्छी तरह काम देते हैं. कविराज मुरारिदान, हाकिम अपील बड़े ईमान्दार और साफ़ मुआमलह शख़्स हैं, उनके ज़रीएसे हमको भी मारवाड़की तारीख़का एक बड़ा ज़ख़ीरह हासिल हुआ, जिसकी बाबत जितनी शुक्रगुज़ारी कीजाये, कम है; इसी तरह हम मुन्शी देवीप्रसादको भी वगैर शुक्रियह नहीं छोड़ सक्ते, जिनसे अक्सर वक्त मारवाड़के बाज़ अहवाल दर्याफ़्त करनेमें मदद मिलती रही है.

महकमह ख़ास मुल्क मारवाड़का सद्र है, और सब हुक्म व अहकाम यहींसे जारी होते हैं. इस महकमहका ख़ास काम यह है:-

नीचेके महकमोंकी निगरानी, हिदायत व क़ाइदोंका जारी करना और अमलमें लाना, रियासती इन्तिज़ामके लिये सलाह करना, अदालत अपील व कोर्ट सर्दारानकी अपील सुनना, बजट व जमा ख़र्च तय्यार कराकर कमी बेशी करना, और ठगी, डकैती वगैरह मिटानेकी निगरानी और बड़े संगीन मुक़द्दमोंका तदारुक तज्वीज़ करना; लेकिन् ऐसे मुक़द्दमोंमें श्री महाराजाधिराजकी मन्ज़ूरी लेनी पड़ती है.

महाराजाधिराज श्री जशवन्तसिंहके महाराज कुमार सर्दारसिंह विक्रमी १९३६

माघ शुक्ल १ [हि० १२९७ ता० २९ सफ़र = ई० १८८० ता० १० फ़ेब्रुअरी] को पैदा हुए हैं.

कुल अह्लकारोंका नक्शह विक्रमी १९४० की रिपोर्टके मुवाफ़िक़ नीचे लिखा जाता है:-

नम्बर.	उह्दह.	नाम अह्लकार.	कैफ़ियत.
१	मुसाहिब आला व प्राइम-मिनिस्टर.	कर्नेल महाराज सर प्रतापसिंह, के. सी. एस. आई.	महाराजाके छोटे भाई.
२	कमान्डर-इन्-चीफ़.	महाराज किशोरसिंह.	ऐज़न.
३	असिस्टेण्ट मुसाहिब आला.	महाराज ज़ालिमसिंह.	ऐज़न.
४	प्रधान.	राठौड़ मंगलसिंह.	ठाकुर पोहकरण.
५	दीवान.	राय महता विजयमल्ल.	ओसवाल.
६	महाराजाके प्राइवेट सेक्रेटरी.	पं० शिवनारायण.	कश्मीरी ब्राह्मण.
७	मुसाहिब आलाके होम सेक्रेटरी.	मुन्शी हरदयालसिंह.	यह पंजाबमें एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर थे.
८	बाउन्डरी अफ़्सर.	कप्तान डब्ल्यू. लॉक साहिब.	यूरोपिअन.
९	सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमए सायरात.		महकमह ख़ासके तअल्लुक़में है.
१०	मैनेजर जोधपुर रेल्वे.	मिस्टर होम साहिब.	यूरोपिअन.
११	मुह्तमिम् तामीरात रफ़ाह आम.	ऐज़न.	ऐज़न.
१२	अफ़्सर शिफ़ाख़ानहजात.	डॉक्टर ऐडम्स साहिब.	ऐज़न.
१३	ख़ास दवाईख़ानहका मुह्तमिम्.	डॉक्टर नवीन चन्द्र.	बंगाली.
१४	सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमए कोर्ट-सर्दारान.	मुन्शी हरदयालसिंह.	खत्री.

१५	असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमए मज़्कूर.	पंडित जीवानन्द.	
१६	जज अदालत अपील.	कविराज मुरारिदान.	चारण.
१७	हाकिम सद्र अदालत फ़ौज्दारी.	शैख़ मुहम्मद मख़्दूम.	
१८	हाकिम सद्र अदालत दीवानी.	महता अमृतलाल.	ओसवाल.
१९	अफ़्सर महकमए तामील.	ख़ान बहादुर मुहम्मद फ़ैज़ुल्लाहख़ां.	पठान.
२०	सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमए ज़ब्ती.	सिंघवी बच्छराज.	ओसवाल.
२१	मुन्सरिम महकमए बाक़ियात.	महता सर्दारमल्ल.	ओसवाल.
२२	कोतवाल शहर जोधपुर.	राव राजा मोतीसिंह.	महाराजाके ख़वास वाल भाई.
२३	क़िलेदार जोधपुर.	सोभावत केसरी करण.	
२४	दारोग़ा ख़ास दफ़्तर.	जोषी आशकरण.	ब्राह्मण.
२५	ख़ज़ानची.	सिंघवी हुक्मराज.	ओसवाल.
२६	मुन्शी रियासत.	पंचोली हीरालाल.	कायस्थ.
२७	मीर मुन्शी हिंदी.	पंचोली मोतीलाल.	ऐज़न.
२८	सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमए नमक.	सिंघवी सूरजमल्ल.	ओसवाल.
२९	मुन्सरिम कारख़ानह जात.	महता कुन्दनमल्ल.	ऐज़न.
३०	सुपरिन्टेन्डेन्ट स्कूल व छाप: ख़ानह.	पं० गंगाप्रसाद मिश्र, एफ़्० ए०	ब्राह्मण.

३१	दारोगह कुतुबखानह.	पुरोहित तेजकरण.	ब्राह्मण.
३२	बख़्शी प्याद.	बोहरा आसूलाल.	
३३	दारोगह जवाहिरखानह व ज़रगरखानह.	व्यास देवीलाल.	ब्राह्मण.
३४	दारोगह देवस्थान.	व्यास रघुनाथ.	ऐज़न.
३५	दारोगह टकसाल.	शैख़ मुम्ताज़अली.	शैख़.
३६	दारोगह स्टाम्प.	सिंघवी शिवदानमल्ल.	ओसवाल.
३७	तहसील्दार क़स्बे जोधपुर.	फ़ौज्दार गुलाबखां.	
३८	दारोगह जेलखानह.	बाबू रामसुख.	
३९	मुहतमिम् दूकानात सर्कारी.	सिंघवी खुशहालचन्द.	ओसवाल.
४०	मुहतमिम् महकमए अफ़्यून.	महता सर्दारमल्ल.	ओसवाल.
४१	दारोगह महकमए नमक खारी.	ऐज़न.	ऐज़न.
४२	मकरानेका दारोगह.	फ़ौज्दार गुलाबखां.	

सद्रके बड़े उह्दह दारोंके सिवा इलाक़हके अह्लकारोंकी फ़िह्रिस्त नहीं दीगई; तेईस पर्गनोंमेंसे हर एकपर एक हाकिम, नाइब हाकिम और दो तीन थानहदार मुक़र्रर रहते हैं. इस रियासतमें ख़ालिसहके सिवा छोटे बड़े जागीरदार भी बहुतसे हैं, जिनमेंसे अव्वल और दूसरे दरजेके सर्दारोंका नक़्शह यहांपर दर्ज किया जाता है.

रियासत जोधपुरके अव्वल और दूसरे दरजहके जागीरदारोंका नक्शह, सन् १८८४-८५ ई० की रिपोर्टके मुवाफ़िक़.

नम्बर.	नाम जागीर.	ज़ात.	गोत्र.	तादाद गांव.	रेख.
१	पोहकरण...........	राठौड़.	चांपावत विट्ठलदासोत.	१००	९४९९१
२	आसोप...........	ऐज़न्.	कूंपावत मांडणोत.	४॥	३१०००
३	खैरवा...........	ऐ०	जोधा गोइन्ददासोत.	१०	२७७५०
४	रास...............	ऐ०	ऊदावत.	१७	३९२५०
५	नींबाज...........	ऐ०	ऐ०	१०	३५१००
६	आउवा...........	ऐ०	चांपावत आईदानोत.	१६	१६०००
७	रीयां...............	ऐ०	मेड़तिया माधवदासोत.	८	३६१०३
८	भाद्राजूण...........	ऐ०	जोधा रत्नसिंहोत.	२७	३१९५०
९	रायपुर...............	ऐ०	ऊदावत.	३८॥	४८८००
१०	कुचामण...........	ऐ०	मेड़तिया गोइन्ददासोत.	१६	४२७५०
११	घाणेराव...........	ऐ०	ऐ० गोपीनाथोत.	४२	३७६००
१२	आहोर...............	ऐ०	चांपावत आईदानोत.	९॥	२२६२५
१३	दासपां...............	ऐ०	ऐ० विट्ठलदासोत.	१३	२५५००
१४	रोयठ...............	ऐ०	ऐ० आईदानोत.	११	१६५२५
१५	कंटालिया...........	ऐ०	कूंपावत महेशदासोत.	१२	१३८००
१६	लांबियां...........	ऐ०	ऊदावत.	७	१८५००
१७	गूलर...............	ऐ०	मेड़तिया सुरताणोत.	५	२३२५०
१८	भखरी...........	ऐ०	ऐ० सुरताणोत.	५	१९५००
१९	बूड़सू...........	ऐ०	ऐ० केशवदासोत.	२४	३७५५०
२०	मींढा...............	ऐ०	ऐ० चांदावत.	२९	२६३०२
२१	बलूंदा...........	ऐ०	ऐ० ऐ०	६	२०२५०

२२	खींवसर..........	ऐ०	करमसोत.	३२	११९५०
२३	राखी......	चहुवान.	....	२२	२१६००
२४	कांणाणो.................	राठौड़.	कर्णोत.	३	१२०००
२५	मनाणा.................	ऐज़न्	मेड़तिया केशवदासोत.	७	१६७००
२६	पालासणी................	ऐ०	ऊदावत.	२	१४०००
२७	खींवाड़ा................	ऐ०	चांपावत विट्ठलदासोत.	१७	१६०२५
२८	वाकरो................	ऐ०	ऐ० ऐ०	७	१७२५०
२९	चंडावल................	ऐ०	कूंपावत ईसरदासोत.	८	२००००
३०	अगेवा....................	ऐ०	ऊदावत.	३	२०७५०
३१	आलणियावास...........	ऐ०	मेड़तिया माधवदासोत.	४	१३६००
३२	चाणोद...............	ऐ०	ऐ० नाथोत.	२४	३१०००
३३	जावला..................	ऐ०	ऐ० सुरताणोत.	८॥	३८०००
३४	बडू......................	ऐ०	ऐ० केशवदासोत.	१२	३२७५०
३५	मीठड़ी....................	ऐ०	ऐ० गोइन्ददासोत.	१५	२६४००
३६	लाडणू....................	ऐ०	जोधा केशरीसिंहोत.	७	२००००
३७	बगड़ी....................	ऐ०	जैतावत पृथ्वीराजोत.	७	१५०००
३८	कल्याणपुर............	चहुवान.	....	७	९०००
३९	खेजड़ला............	भाटी.	अर्जुनोत.	८	२४८००
४०	झलामंड...........	राणावत.	सूरजमलोत.	८	१४१००
४१	डोडियाणा...........	राठौड़.	मेड़तिया गोइन्ददासोत.	९	३२०००

अ़हदनामह नम्बर ३६,
राज्य जोधपुर.

अ़हद्नामह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराजाधिराज राजराजेश्वर मानसिंह बहादुरके आपसमें दोस्ती और इत्तिफ़ाक़की बाबत,

तज्वीज़ किया हुआ जेनरल जिरार्ड लेक, सिपहसालार फ़ौज अंग्रेज़ी मौजूदह हिन्दुस्तानका, लॉर्ड रिचर्ड मारक्किस वेलेज़्ली, गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख्तियारसे, जो ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजाधिराज राजराजेश्वर मानसिंह बहादुर और उनके वारिसों और जानशीनोंके तरफ़से हुआ.

शर्त पहिली- दोस्ती और इत्तिफ़ाक़ हमेशहके लिये ऑनरेबल अंग्रेज़ी कम्पनी और महाराजाधिराज मानसिंह बहादुर और उनके वारिसों और जानशीनोंके आपसमें मज़्बूत क़रार पाया है.

शर्त दूसरी- दोनों सर्कारोंमें, जो दोस्ती क़ाइम हुई है, तो एक सर्कारके दोस्त व दुश्मन दोनों सर्कारोंके दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे; और इस शर्तकी तामीलका दोनों सर्कारोंको हमेशह ख़याल रहेगा.

शर्त तीसरी- ऑनरेबल कम्पनी इन्तिज़ाम मुल्कमें, जो अब महाराजाधिराजके क़ब्ज़हमें है, दख़्ल नहीं देगी; और न उनसे ख़िराज मांगेगी.

शर्त चौथी- जिस सूरतमें कि कोई दुश्मन ऑनरेबल कम्पनीका उस मुल्कपर हमलह करनेका इरादह करे, कि जो थोड़े अर्सहसे हिन्दुस्तानमें ऑनरेबल कम्पनीने लिया है, तो महाराजाधिराज अपनी कुल फ़ौज कम्पनीकी फ़ौजकी मददके लिये भेजेंगे; और दुश्मनके ख़ारिज करनेमें खुद भी बहुत कोशिश करेंगे; और दोस्ती व मुहब्बतकी कमी किसी बातमें किसी मौक़हपर नहीं करेंगे.

शर्त पांचवीं- जो कि ब सबब दोस्तीके, जो इस अह्दनामहकी दूसरी शर्तके मुवाफ़िक़ क़रार पाई है, ऑनरेबल कम्पनी महाराजाधिराजकी ज़िम्महवार होती है, कि वह बर्ख़िलाफ़ किसी ग़ैर दुश्मनके मुल्ककी हिफ़ाज़त करेगी, और महाराजाधिराज भी वादह करते हैं, कि उनके और किसी दूसरे रईसके आपसमें झगड़ा पैदा होगा, तो महाराजाधिराज पहिले सर्कार अंग्रेज़ीके हुज़ूरमें उस बखेड़ेके सबबकी कैफ़ियत भेजेंगे, ता कि सर्कार उसका फ़ैसलह वाजिबी करदे, और जो दूसरे फ़रीक़की हठसे वाजिबी शर्त क़रार न पावे, तो महाराजा मददके लिये कम्पनी को दर्ख्वास्त करसकेंगे; और ऐसी हालतमें मदद भी दी जायगी; और महाराजाधिराज वादह करते हैं, कि हम उस मददका ख़र्च उस शरहके मुवाफ़िक़ देंगे, जो हिन्दुस्तानके दूसरे रईसोंसे क़रार पाई है.

शर्त छठी- महाराजाधिराज बज़रीए इस तहरीरके वादह करते हैं, कि अगर्चि वह दर अस्ल अपनी कुल फ़ौजके मालिक हैं, तो भी लड़ाई या लड़ाईके विचारकी हालतमें साहिब कमाण्डर फ़ौज अंग्रेज़ी (जो उनको मदद देती होगी) की सलाह और कहनेके मुवाफ़िक़ काम करेंगे.

शर्त सातवीं- महाराजा किसी अंग्रेज़ी या फ़ांसीसी रऋय्यत या यूरपके और किसी बाशिन्दहको सर्कार कम्पनीकी रज़ामन्दी बग़ैर अपने पास नहीं आने देंगे, और न नौकर रक्खेंगे.

ऊपर लिखा ऋह्दनामह, जिसमें सात शर्तें दर्ज हैं, दस्तूरके मुवाफ़िक़ जेनरल जिरार्ड लेक साहिब और महाराजाधिराज राजराजेश्वर मानसिंह बहादुरके मुहर व दस्तख़तोंसे मक़ाम सरहिन्दी सूबह अक्बराबादमें तारीख़ २२ डिसेम्बर सन् १८०३ ई० [ता० ७ रमज़ान सन् १२१८ हि० = मिती पौष शुक्ल ९ संवत् १८६०] को तस्दीक़ हुआ.

जब एक ऋह्दनामह, जिसमें सात शर्तें ऊपर लिखी हुई दर्ज होंगी, महाराजाधिराजको गवर्नर जेनरलकी मुहर और दस्तख़तके साथ दिया जायगा, तो यह ऋह्दनामह, जिसमें जिरार्ड लेक साहिबकी मुहर और दस्तख़त हैं, वापस लिया जायगा.

| मुहर कम्पनी. |

दस्तख़त- वेलेज़्ली.

यह ऋह्दनामह गवर्नर जेनरलने ता० १५ जैन्युअरी सन् १८०४ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त- जी० एच० बार्लो.
दस्तख़त- जी० अडनी.

अह्दनामह नम्बर ३७.

ऋह्दनामह आपसमें ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराजा मानसिंह बहादुर राजा जोधपुरके, पेश किया हुआ राज्य अधिकारी कुंवर युवराज महाराज कुमार छत्रसिंह बहादुरका, मंजूर किया हुआ सर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़ साहिबका कम्पनीकी तरफ़से मार्किस ऑव हेस्टिंग्ज़ के० जी० गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख़्तियारके मुवाफ़िक़, और व्यास विष्णुराम और व्यास अभयराम महाराजा मानसिंह बहादुरकी तरफ़से युवराज महाराज कुमार और महाराजाके दिये-हुए इख़्तियारसे.

शर्त पहिली- दोस्ती और इत्तिफ़ाक़ और ख़ैरख़्वाही हमेशह आपसमें ऑनरेबल ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजा मानसिंह बहादुर और उनके वारिसों

और जानशीनोंके क़ाइम रहेगी, और एक सर्कारके दोस्त व दुश्मन दूसरी सर्कारके भी दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी- सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि वह रियासत और मुल्क जोधपुरकी निगहबानी करेगी.

शर्त तीसरी- महाराजा मानसिंह और उनके वारिस और जानशीन ताबेदारी सर्कार अंग्रेज़ीकी करेंगे, उनकी रियासतका इक़्रार है, कि किसी और रईस या सर्दारसे सरोकार नहीं रक्खेंगे.

शर्त चौथी- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन किसी रईस या सर्दारसे मेल मिलाप बिदून इत्तिला और मंजूरी सर्कार अंग्रेज़ीके नहीं करेंगे, लेकिन् उनके दोस्तानह कागज़ पत्र उनके दोस्तों और रिश्तहदारोंमें जारी रहेंगे.

शर्त पांचवीं- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे; जो कभी इत्तिफ़ाक़न् किसीसे तक्रार पैदा होगी, तो वह तक्रार होनेकी वजह पंचायत और फ़ैसलहके लिये सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द करदेंगे.

शर्त छठी- जो ख़िराज अब तक सेंधियाको जोधपुरसे दियाजाता है, और जिसकी तफ़्सील अलहदह लिखीगई है, वही हमेशहके लिये सर्कार अंग्रेज़ीको दिया जायगा; परन्तु ख़िराजकी बाबत सेंधिया और जोधपुरमें जो शर्तें हैं, वे रद्द होंगी.

शर्त सातवीं- महाराजा बयान करते हैं, कि सिवाय उस ख़िराजके, जो जोधपुर वाले सेंधियाको देते हैं, और किसीको नहीं दिया जाता है, और इक्रार करते हैं, कि ख़िराज मज़्कूर वह सर्कार अंग्रेज़ीको देवेंगे. इस वास्ते जो सेंधिया या और कोई ख़िराजका दावा करेगा, तो सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि वह उसके दावेका जवाब देगी.

शर्त आठवीं- ज़ुरूरतके वक़ जोधपुरकी रियासत सर्कार अंग्रेज़ीको पन्द्रह सौ सवार देगी, और ज़ियादह ज़ुरूरतके वक़ कुल फ़ौज जोधपुरकी अंग्रेज़ी फ़ौजके शामिल होगी, सिर्फ़ उतनी रहजायगी, जो मुल्कके अन्दरूनी इन्तिज़ामके लिये दर्कार होगी.

शर्त नवीं- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन अपने कुल मुल्कके हाकिम रहेंगे, और हुकूमत अंग्रेज़ी इस रियासतमें दाख़िल न होगी.

शर्त दसवीं- यह अह्दनामह दस शर्तोंका मक़ाम दिल्लीमें क़रार पाया, और उसपर मुहर और दस्तख़त मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस् मेट्काफ़ साहिब, और व्यास विष्णुराम और व्यास अभयरामके हुए, और उसकी तस्दीक़ गवर्नर जेनरल और

राजराजेश्वर महाराजा मानसिंह बहादुर और युवराज महाराज कुमार चत्रसिंह बहादुरके दस्तख़तसे होकर इस तारीख़से ६ हफ़्तहके अन्दर आपसमें एक दूसरेको दिया जायगा.

मक़ाम दिल्ली, ता० ६ जैन्युअरी सन् १८१८ ई०.

दस्तख़त सी० टी० मेट्काफ़.

मुहर.

मुहर.
व्यास विष्णुराम,

मुहर.
व्यास अभयराम,

मुहर.
महाराजा मानसिंह बहादुर.

मुहर.
युवराज महाराज कुमार चत्रसिंह बहादुर.

गवर्नर जेनरलकी छोटी मुहर.

दस्तख़त—हेस्टिंग्ज़.

गवर्नर जेनरलने मक़ाम ऊचरमें, ता० १६ जैन्युअरी, सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त—जे० ऐडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

तफ़्सील ख़िराजकी, जो जोधपुरसे
दिया जावे.

सिक्के अजमेर	१८००००
बट्टा रु० २० सैंकड़ेके हिसाबसे	३६०००
बाक़ी सिक्के जोधपुरी	१४४०००
उसमेंसे आधे नक़द	७२०००
आधेका सामान	७२०००
कुल	१४४०००
नुक़्सानी चीज़ें आधेके हिसाबसे	३६०००
बाक़ी सिक्के जोधपुरी	१०८०००

दस्तख़त– सी०-टी० मेट्काफ़. वड़ी मुहर.

वड़ी मुहर.

मुहर– भास्कर राव वकील.

बहुक्म गवर्नर जेनरल.

दस्तख़त– जे० ऐडम,
सेक्रेटरी गवर्नर जेनरल.

अ़ह्दनामह नम्बर ३८.

तर्जमह इक्रारनामहका रियासत जोधपुरकी तरफ़से मारवाड़के इलाक़ह मेरवाड़ेकी बाबत:– इस दर्बारको पूरा भरोसा है, कि वह खूब अच्छी पोलिस मेरवाड़ेमें रखसक्ते हैं, और वहांकी हर एक बातके ज़िम्मह्वार होसक्ते हैं; परन्तु यह ख्वाहिश हमेशह रही है, कि गवर्मेन्ट अंग्रेज़ीकी खुशनूदी हासिल हो, और गवर्मेण्टकी मर्ज़ी यह है, कि उनकी पोलिस उस इलाक़हके इन्तिज़ामके लिये मुक़र्रर रहे; इस वास्ते १५००० पन्द्रह हज़ार रुपया सालानह आठ वर्ष तक सिपाहके ख़र्चकी बाबत, जो पोलिसके लिये नौकर रक्खीजायगी, जैसा मिस्टर वाइल्डर साहिबने बयान किया है, दिया जायगा; और चांग चितार और दूसरे गांव ख़ालिसह मारवाड़के, जिनमें कि इस दर्बारके ठाकुर एक अंग्रेज़ी फ़ौजकी मददसे रक्खेगये थे, उन गांवोंको सज़ा देनेके लिये भेजी गई थी, वे उन रुपयोंके शामिल हैं, जो ऊपर लिखी मीआ़दपर दिये जावेंगे; परन्तु एक मुख़्तारकार इस रियासतकी तरफ़से हिसाबकी रसीदें वग़ैरह लेनेके लिये और वास्ते मुजरा उस आमदनीके ज़रूर है, जो वुसूल हो; और मीआ़द गुज़र जानेपर रुपया देना मौकूफ़ होगा; और इलाक़ह वापस लिये जायेंगे. ता० ४ रजब सन् १२३९ हि०.

दस्तख़त– व्यास सूरतराम, वकील.

तर्जमह जवाब, साहिब पोलिटिकल एजेण्टकी
तरफ़से.

जो कुछ रुपया मेरवाड़ेके गांवोंसे जो मारवाड़की तरफ़से बतौर ज़मानत सर्कार अंग्रेज़ीके पास है, तहसील होगा, रु० १५००० से आठ वर्ष तक मुज्रा होगा; और आठ वर्ष पीछे वह गांव जोधपुरके अह्लकारोंके सुपुर्द होंगे; और

शर्तके मुवाफ़िक़ रुपया देना मौक़ूफ़ होगा. ता० ५ मार्च सन् १८२४ ई० फाल्गुन् शुक्ल ५ संवत् १८८० वि०.

दस्तख़त- एफ़० वाइल्डर,
पोलिटिकल एजेण्ट.

अह्दनामह नम्बर ३९.

तर्जमह इक़्रारनामह, जो रियासत जोधपुरकी तरफ़से मेरवाड़ेमें मारवाड़की ज़मीनकी बाबत हुआ:-

गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी रज़ामन्दीकी तामीलके लिये उनके मुख़्तार मिस्टर वाइल्डर साहिबकी नेक सलाहके मुवाफ़िक़ इस सर्कारने आठ वर्ष तक पन्द्रह हज़ार रुपया सालानह सिपाहके (जो नये नौकर मेरवाड़ा इलाक़हके इन्तिज़ामके लिये हों,) ख़र्चकी बाबत मन्जूर किया था; और गांव चांग चितार और दूसरे गांव मारवाड़के, जिनमें थाने इस दर्बारकी तरफ़से बज़रीए मदद फ़ौज अंग्रेज़ी, जो उनको सज़ा देनेके लिये भेजी गई थी, मुक़र्रर हुए थे, बतौर ज़मानत गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके पास ऊपर लिखी मीआदके लिये देदिये गये; इस मुरादसे कि एक मोअ्तबर अहल्कार इस सर्कारकी तरफ़से हाज़िर रहेगा, कि वह तमाम हिसाब किताब ऊपर लिखे गांवोंकी आमदनी देखकर परताल करलिया करे; और जो आमदनी उन गांवोंकी आवेगी, उसको शर्तके मुवाफ़िक़ पन्द्रह हज़ार रुपया, जो गांवोंकी आमदनी समझा गया है, मुजरा देगा; और शर्त मुवाफ़िक़ मीआद गुज़रने पीछे रुपया शर्त मूजिब मौक़ूफ़ होगा; और गांव वापस किये जायेंगे.

शर्त दूसरी- और जो वह शर्त फाल्गुन् शुक्ल ५ सम्वत् १८८८ मुताबिक़ ३ रजब सन् १२४७ हि० को गुज़र गई; और इस दर्बारने फिर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी नज़रसे और मेजर आल्विस साहिब, एजेण्ट गवर्नर जेनरलकी सलाहसे वास्ते रियासतों राजपूतानहके, जो उनके असिस्टेण्ट लेफ़्टिनेन्ट हिनरी ट्रेविलियन साहिबकी मारिफ़त दीगई थी, वादह करते हैं, कि वह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीको पंद्रह हज़ार रुपया सालानह ऊपर लिखा हुआ, नव वर्ष तक बाबत ख़र्च ऊपर लिखी सिपाहके आगेको देते रहेंगे; और गांव चांग चितार और दूसरे गांवके लिये उन्हीं पहिली शर्तोंपर ऊपर लिखी मीआद मुक़र्रर रक्खेंगे; और यह वादह ता० ६ फाल्गुन् सम्वत् १८८८ मु० ५ रजब सन् १२४७ हि० को शुरू होगा.

शर्त तीसरी– और सिवाय इसके दोस्ती बढ़ानेके लिये, जो अब गवर्मेंएट अंग्रेज़ी और इस दर्बारके आपसमें है, वह यह भी इस तहरीरके ज़रीएसे इक़्रार करते हैं, कि वह गवर्मेंएटकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ नीचे लिखे सात गांव, कार्तिक शुक्क २ सम्वत् १८९२ मुताबिक़ २९ जमादियुस्सानी सन् १२५१ हि० से लेकर ऊपर ज़िक्र किये हुए गांवोंकी मीआ़द गुज़रने तक उन्हीं शर्तोंपर, जिनपर गांव चांग चितार वग़ैरह मुक़र्रर किये गये हैं, सुपुर्द करते हैं.

शर्त चौथी– पहिले ज़िक्र कीहुई मीआ़द गुज़रनेपर सालानह और गांवोंका पट्टा, जो गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके साथ पहिले कियागया था, और अब कियाजाता है, मौक़ूफ़ होगा; और कुल गांव दर्बारको वापस होंगे. कार्तिक शुक्क २ सम्वत् १८९२ मु० २९ जमादियुस्सानी सन् १२५१ हि०, ता० २३ ऑक्टोबर सन् १८३५ ई० को क़रार पाया.

पहिले ज़िक्र किये हुए गांवोंकी
तफ़्सील.

रतोड़िया, धाल, नौदना, भगूरा, राल, करवारा, चतरजीका गुढ़ा.

दस्तख़त– व्यास सवाईराम, वकील.

राजपूतानहके असिस्टेंएट एजेंएट गवर्नर जेनरल, लेफ़्टिनेंएट
ट्रेविलिअनके जवाबका तर्जमह.

मारवाड़ मेरवाड़ाके उन गांवोंके पट्टेकी मीआ़द, जो गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके पास आठ वर्षके लिये उस इलाक़हका अच्छा इन्तिज़ाम करनेके वास्ते सुपुर्दगीमें इस ग़रज़से रक्खे गये थे, कि जो रुपया उसका वुसूल होगा, वह शर्तके रु० १५००० में मुज्रा दिया जायगा, अब गुज़र गई, और पट्टा नया और नव वर्षका हुआ, और उसमें सात गांव दूसरे नीचे लिखे मुवाफ़िक़ उन्हीं शर्तोंपर गवर्मेन्ट अंग्रेज़ीको कार्तिक शुक्क २ सम्वत् १८९२ से शामिल किये गये, और इनका पट्टा भी चांग चितार वग़ैरह मारवाड़ मेरवाड़ाके उन गांवोंके साथ, जो पहिले सुपुर्दगीमें लिये गये थे, गुज़रेगा; इन गांवोंकी आमदनी भी उसी तरह सुपुर्द किये हुए गांवोंकी आमदनीके साथ मुज्रा होगी, और ऊपर लिखी तारीख़से नव वर्ष पीछे पहिले मुक़र्रर हुए गांव और यह गांव, जो अब दिये गये हैं, रियासत जोधपुरके अह्लकारोंको वापस कियेजावेंगे; और लेनेका रुपया मौक़ूफ़ होगा. कार्तिक शुक्क २ सम्वत् १८९२ मुताबिक़ २३ ऑक्टोबर सन् १८३५ ई०.

पहिले ज़िक्र किये हुए गांवोंके नाम.

रतोड़िया, धाल, नौदना, भगूरा, राल, करवारा, चतरजीका गुढ़ा.

दस्तख़त- एच० डब्ल्यू० ट्रीविलिअन,
असिस्टेण्ट, एजेण्ट गवर्नर जेनरल.

अ़ह्दनामह नम्बर ४०.

तर्जमह अ़ह्दनामह महाराजा मानसिंह बहादुर राजा जोधपुर, और गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके आपसमें, जो मारिफ़त लेफ़्टिनेण्ट हेनरी ट्रीविलिअन, असिस्टेण्ट एजेण्ट गवर्नर जेनरल बहादुर बाबत रियासतहाय राजपूतानहके क़रार पाया.

जो कि महाराजा मानसिंह बहादुर, राजा जोधपुरने इक़ार किया, कि वह रु० ११५००० कल्दार सालानह मिती पौष शुक्क १५ सम्वत् १८९२ से, बाबत फ़ौज कन्टिन्जेण्ट पन्द्रह सौ सवारके, जिसका इक़ार जोधपुरके राजाने ज़रूरतके वक्त देनेका किया था, जिसका बयान उस अ़ह्दनामहकी आठवीं शर्तमें, कि जो सर्कार अंग्रेज़ीके साथ ब मक़ाम दिल्ली ता० ६ जैन्युअरी सन् १८१८ ई० को हुआ दर्ज है, दिया करेंगे. यह काग़ज़ इक़ारनामहके तौरपर लिखागया; और उसके रू से नीचे लिखी बातें ऊपर लिखे अ़ह्दनामहकी आठवीं शर्तके लिखे मुवाफ़िक़ सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से मन्सूख़ हुईं, याने "जोधपुरकी रियासत ज़रूरतके वक्त पन्द्रह सौ सवार देगी," और नीचे लिखा फ़िक्रह उसके एवज़ क़ाइम हुआ, याने "रियासत जोधपुर ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ अजमेर मक़ाममें एक लाख पन्द्रह हज़ार रुपया कल्दार हर साल दिया करेगी." पहिली बार रु० ११५००० कल्दार मिती पौष कृष्ण १ सम्वत् १८९३ को अदा होगा, और उतना ही उसी तारीख़को हर वर्ष अदा होता रहेगा.

मक़ाम जोधपुर मिती पौष कृष्ण २ सम्वत् १८९२ मु० ता० ७ डिसेम्बर सन् १८३५ ई०.

दस्तख़त- एच० डब्ल्यू० ट्रीविलिअन,
असिस्टेण्ट एजेण्ट गवर्नर जेनरल.

गवर्नर जेनरलने तस्दीक़ किया. ता० ८ फ़ेब्रुअरी, सन् १८३६ ई०.

अ़ह्दनामह नम्बर ४१.

तर्जमह ख़त वकील जोधपुरकी तरफ़से, साहिब पोलिटिकल एजेण्ट जोधपुरके

नाम तारीख़ १५ मई सन् १८४७ ई०.

मैंने आपकी चिट्ठी मुवर्रिख़ह ६ मार्च गुज़िश्तह बाबत इत्तिला इस बातके, कि उ़मरकोटके एवज़ रु० ११५००० सवार ख़र्चमेंसे रु० १००० सालानह हर साल कम किये जायेंगे, महाराजा साहिबके हुजूरमें गुज़रानी. महाराजा फ़र्माते हैं, कि उ़मरकोट हमारा है, और हमारा दावा उ़मरकोटपर साफ़ और सहीह है, इसको साहिब बहादुर भी खूब जानते हैं, जब तक उ़मरकोट गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके क़ब्ज़हमें रहेगा, उस वक़्में भी हम उ़मरकोटको अपना समझेंगे, और जब गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी उसको अ़लहृदह करना चाहेगी, तो हम जानते हैं, कि वह हमको देगी, और किसी दूसरेको न देगी; इस वास्ते कि उ़मरकोट हमारा है, और हमको मिलना चाहिये. राजस्थानमें ज़मीनका हक़ बहुत बड़ा समझा जाता है, और जिस रोज़ उ़मरकोट हमको वापस दियाजायगा, वह दिन बहुत मुबारिक और खुश समझा जायगा; और यह भी फ़र्माते हैं, कि अगर रु० १०००० सालानह रु० १०८००० मेंसे, जो गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीको ब तौर ख़िराज दियाजाता है, मुज्रा दियाजायगा, तो यह रुपया ज़मीनके एवज़ है; और ख़िराज भी ज़मीनकी बाबत दियाजाता है, इस वास्ते यह रुपया ख़िराजके रुपयोंमेंसे मुज्रा होना चाहिये.

तर्जमह सहीह है.
दस्तख़त— एच० एच० ग्रेटहेड,
पोलिटिकल एजेण्ट.

गवर्नर जेनरलने मन्जूर और तस्दीक़ किया, ता० १७ जून सन् १८४७ ई०.

अ़ह्दनामह नम्बर ४२.

तर्जमह इक़ारनामह रियासत जोधपुरकी तरफ़से जिलावतन ठाकुरोंकी बाबत.

ठाकुर बूढ़सू व ठाकुर चंदावलकी ख्वाहिश नहीं है, कि उनपर मिहर्बानीकी नज़र कीजाये, मगर सर्दार आउवा, आसोप, नींबाज और रास, रहम करनेके लाइक़ नहीं हैं, परन्तु गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी ख़ुशीकी नज़रसे जो इलाक़ह महाराजा बख़्त-सिंहके वक़्में उनके पास था, वह उनको छः महीनेमें वापस दिया जायगा. एक ख़रीतह गवर्नर जेनरल बहादुरका महाराजाके नाम रज़ामन्दीके लिये इस मज़्मूनका आया, कि जो यह ठाकुर अपनी कारगुज़ारी या फ़र्मांबर्दारीमें कमी करें, या किसी जुर्मके मुज्रिम हों, या दर्बार जैसी चाहें, वैसी कार्रवाई न करें, तो महाराजाको इख़्तियार है, कि जो मुनासिब जानें, सो करें.

इसीके पीछे गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके सबब इस वक्त इक़ार किया गया, लेकिन् अब जो यह सर्दार दर्बारकी फ़र्मांवर्दारी और ख़िद्मतमें राज़ी रहें, तो उनको इसके सिवाय कुछ इन्आ़म भी दिया जायगा; और दूसरे जिलावतन ठाकुरोंकी बाबत यही बात है, कि जो वह महाराजाकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ काम करेंगे, तो उनपर भी मिहर्बानीकी नज़र रक्खी जायगी; इस शर्तपर कि गवर्मेंएट अंग्रेज़ी उनकी निस्बत कुछ एतिराज़ बीचमें न लावे.

फाल्गुन् कृष्ण ११ सम्वत् १८००.
दस्तख़त- फ़त्ह्राज, दीवान.

तर्जमह जवाब साहिब पोलिटिकल एजेएट.

महाराजा मानसिंहने जो यह इक़ार किया, कि उन ठाकुरोंको, जो पहिले कुसूरोंकी बाबत निकाले गये हैं, गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ जिन्होंने मुझको इस कामके वास्ते यहां मुक़र्रर किया है, दुबारह उनके क़दीमी इलाक़ोंपर दख़्ल करादेंगे; इस वास्ते इन ठाकुरोंमेंसे पीछे कोई किसी जुर्मका मुज्रिम होगा, या महाराजाकी मर्ज़ीके बर्ख़िलाफ़ कोई काम करेगा, तो अह्दनामहमें लिखाजाता है, कि महाराजा हाकिम हैं, जो चाहें, सो करें; गवर्मेंएट अंग्रेज़ी फिर उनकी जानिबसे दख़्ल नहीं देगी, और महाराजाकी ख़ुशनूदीके लिये एक ख़त भी इस मज़्मूनका गवर्नर जेनरल बहादुरकी तरफ़से लिखा जायगा. ता० २५ फ़ेब्रुअरी सन् १८२४ ई०.

दस्तख़त- एफ़० वाइल्डर,
पोलिटिकल एजेएट.

अह्दनामह नम्बर ४३.

इक़ारनामह सर्कार अंग्रेज़ी और महाराजा मानसिंहके आपसमें.

सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार जोधपुरके आपसमें मुद्दतसे दोस्ती जारी है, और सम्वत् १८७५ वि० मुताबिक़ सन् १८१८ का अह्दनामह होनेसे यह दोस्ती ज़ियादह मज़्बूतीके साथ क़ाइम हुई, इस तरह अब तक दोनों सर्कारोंके आपसमें दोस्ती क़ाइम है, और आगेकोभी रहेगी.

अब अह्दनामहकी नीचे लिखी शर्तें सर्कार अंग्रेज़ी और महाराजा मानसिंह

बहादुर महाराजा जोधपुरके आपसमें मारिफ़त कर्नेल जॉन सदरलैण्ड साहिबके क़रार पाई हैं.

शर्त १- अब मुल्की इन्तिज़ामकी बाबत दोनों तरफ़से आपसमें ग़ौर होकर यह क़रार पाया, कि महाराजा और कर्नेल सदरलैण्ड साहिब और राज्यके सर्दार व अह्लकार और ख़वास पासवान एकट्ठे होकर मुल्की इन्तिज़ामके क़ाइदह बनावें, जिनकी तामील अब और आगेको हुआ करे; और यह सभा तै करके अक्सर सर्दारों और गवर्मेण्टके अफ़्सरों और दूसरे सम्बन्ध रखने वालोंके हक़ क़दीमी दस्तूरके मुवाफ़िक़ क़ाइम करेगी.

शर्त २- पोलिटिकल एजेण्ट अंग्रेज़ी और राज्य जोधपुरके अह्लकारोंने आपसमें सलाह की है, कि वे रियासती कामोंका इन्तिज़ाम इन क़ाइदोंके मुवाफ़िक़ आपसमें सलाह करके किया करेंगे, और महाराजासे भी सलाह लेलिया करेंगे.

शर्त ३- उक्त पंचायत रियासती कामोंका बन्दोबस्त क़दीमी दस्तूरके मुवाफ़िक़ किया करेगी.

शर्त ४- कर्नेल साहिबने कहा, कि कुछ अंग्रेज़ी फ़ौज जोधपुरके क़िलेमें रहेगी, और महाराजाने उसको मंजूर किया. राजस्थानकी दूसरी रियासतोंमें जहां साहिब पोलिटिकल एजेण्ट रहते हैं, वहां वह शहरके बाहर रहते हैं, क़िलेके आस पास मकान बने हैं, और जगह भी तंग है, इस सबबसे इसमें दिक़्क़त मालूम होती है, परन्तु सर्कारकी खुशीकी नज़रसे यह बात (फ़ौजके क़िलेमें ठहरनेकी) मंजूर हुई है, और एक अच्छी जगह तज्वीज़ होकर मुक़र्रर होगी. दबार्रको सर्कारकी तरफ़से किसी तरहका डर नहीं है.

शर्त ५- श्रीजीका मन्दिर याने नाथ साहिबका मन्दिर और स्वरूपका याने लक्ष्मी-नाथ व प्रयागनाथके दूसरे मन्दिरों और जोगेश्वरों याने नाथ फ़क़ीरोंके मन्दिर, जो इस मुल्कके हों, तथा दूसरे मुल्कके हों, उनके चेलों और ब्राह्मणों समेत और उमरावों याने भीतरी ठाकुरों और कीका याने महाराजाकी ग़ैर अस्ली औलाद और मुतसद्दियों याने कुशलराज, फ़ौजराज वग़ैरह, और ख़वास पासवान वग़ैरह के मर्तबह और इ़ज़्ज़त और काम काजमें कमी न होगी, जैसे अब हैं, उसी मुवाफ़िक़ रहेंगे.

शर्त ६- कारबारी अपना अपना काम (मुक़र्ररह क़ाइदहके मुवाफ़िक़) करते रहेंगे, परन्तु जब किसीकी तरफ़से किसी तरहकी ग़फ़्लत और सुस्ती काममें मालूम हो, तो महाराजाकी सलाह लेकर उसके एवज़ लाइक़ आदमी मुक़र्रर किया जाये.

शर्त ७-जिनके हक़ छीनेगये हैं, उनको इन्साफ़के साथ उनके हक़ वापस मिलेंगे, और वे लोग दर्बारकी फ़र्मांबर्दारी व तावेदारी किया करेंगे.

शर्त ८- सर्कार अंग्रेज़ीकी नज़र इस वातपर है, कि महाराजाका हाकिमानह हक़, इज़्ज़त और नाम्वरी, और मारवाड़की ख़ैरख़्वाही जारी रहे, इस वास्ते सर्कारके हाथसे इनमें कमी न होगी, और वह न किसी दूसरेसे इसमें कमी होने देगी, इसकी बाबत सर्कारसे साफ़ वादह होगया है.

शर्त ९ - साहिब एजेएट और मारवाड़के अह्लकारोंने आपसमें सलाह की, कि वे महाराजाकी सलाह और जो क़ाइदह मुक़र्रर किये जावेंगे, उनके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ी ख़िराज और सवार ख़र्च, जो बाक़ी है, उसके देनेके लिये अच्छा बन्दोबस्त करेंगे, उसी तरह आगेको भी ऊपर लिखा रुपया अदा होनेमें फ़र्क़ न होगा, और नुक़्सानका एवज़ वह फ़रीक़ देंगे, जिनकी निस्बत सुबूत हो, और दूसरे रईसोंकी निस्बत मारवाड़का दावा मुक़द्दमोंके सुबूतपर अदा होगा.

शर्त १०- महाराजाने जागीरें सर्दारोंको दीं, और उनके एवज़ मुवाफ़क़त हासिल की, और पहिले कुसूर उनके मुआफ़ किये; इसी तरह सर्कार अंग्रेज़ी भी उनके ख़यालके मुवाफ़िक़ करती है, जिनकी निस्बत उनको पहिले उज़्र था, जैसे स्वरूप याने लक्ष्मीनाथ वगैरह जोगेश्वर और उमराव और अह्लकार.

शर्त ११- जो कि एक एजेएट रियासतकी राजधानीमें मुक़र्रर हुआ है, इस वास्ते जुल्म और ज़ियादती किसी शख़्सपर न होगी, और किसी तरहका दख़्ल मज़्हबी छः फ़िर्क़ों (षट दर्शन) की बाबत भी न होगा; और कोई जानवर, जो मारवाड़में धर्मके अनुसार पवित्र और उसका मारना मना है, नहीं मारा जायगा.

शर्त १२- जो कुल काम सर्कार जोधपुरके छः महीने या एक वर्ष या डेढ़ वर्षमें फ़ैसलह पा जायेंगे, तो साहिब एजेएट और फ़ौज अंग्रेज़ी जोधपुरके क़िलेसे उठ जायेगी, और जो इस मीआदसे पहिले तै पा जायेंगे, तो सर्कार अंग्रेज़ीकी ख़ुशी और रियासत जोधपुरकी लियाक़त और ज़ियादह भरोसेका सबब ख़याल होगा.

शर्त १३- ऊपर लिखा अह्दनामह पहिले ज़िक्रके मुवाफ़िक़ मक़ाम जोधपुरमें तारीख़ २४ सेप्टेम्बर सन् १८३९ ई० को क़रार पाया, और लेफ़्टिनेएट कर्नेल सदरलैएड साहिबकी मारिफ़त मंज़ूरी और तमींमके लिये राइट ऑनरेबल गवर्नर जेनरल हिन्दकी ख़िद्मतमें भेजा जायेगा; और एक ख़रीतह महाराजाके नाम ऊपर लिखे अह्दनामहके मज़्मूनके मुवाफ़िक़ लॉर्ड साहिब बहादुरकी पेशगाहसे जारी होगा.

ऊपर लिखा अह्दनामह मारिफ़त कर्नेल सर जॉन सदरलैएड साहिबके मुवाफ़िक़

इख्तियार दिये हुए राइट ऑनरेबूल लॉर्ड जार्ज आकलैंड, जी० सी० बी०, गवर्नर जेनरल हिन्दके क़रार पाया.

दस्तख़त - रिड़मल्ल, वकील. दस्तख़त - फ़ौजमल्ल.

मुहर दफ्तर रिड़मल्ल.	मुहर दफ्तर फ़ौजमल्ल.

यादाश्त लेफ्टिनेएट कर्नेल सदरलैण्ड साहिब.

शर्त चौथी- अस्ल मुसव्वदेमें सिर्फ़ यह लिखा है, कि फ़ौज क़िलेमें रहेगी, और उसपर महाराजाकी यह लिखावट है, कि अच्छा मक़ाम तज्वीज़ होगा; इससे मुराद यह है, कि हमारी फ़ौज महलात और ज़नाने महल और मन्दिरोंमें न रहेगी.

शर्त पांचवीं- ज़मींदारीके हक़ और दूसरे हक़ लोगोंके पहिली शर्तके मुवाफ़िक़ वे पावेंगे.

शर्त दूसरी और छठी, इसमें यह ज़िक्र करना था, कि नाथ लोग रियासती कामोंमें दख़्ल न रक्खेंगे, परन्तु खुद मानसिंहने यह बयान किया, कि वे इन शर्तोंसे अच्छी तरह निकाल दिये गये हैं, क्यों कि वे लोग न तो अह्लकार हैं, न रियासतके कारबारियोंमें हैं.

शर्त नवीं- यह भी तज्वीज़ थी, कि फ़ौज ख़र्चका ज़िक्र भी किया जावे, याने जो फ़ौज अब रहेगी, उसका ख़र्च जोधपुरके ज़िम्मह रहेगा; लेकिन् मानसिंहने बयान किया, कि अल्बत्तह ख़र्च तो दिया ही जायेगा, परन्तु उसका ज़िक्र हमेशहके अह्दनामहमें, जो सदैव ख़िराज और आगेको रियासतके इन्तिज़ामकी बाबत है, होना कुछ ज़रूर नहीं है.

शर्त ग्यारहवीं- सींगवाले चौपाये, मोर और कबूतर पवित्र समझे गये हैं, और इनके मारनेकी मनाही क़रार पाई है.

शर्त तेरहवीं- लेफ्टिनेएट कर्नेल सदरलैण्ड साहिबकी मारिफ़त गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख्तियारसे इस अह्दनामहके क़रार पानेका ज़िक्र अस्ल मुसव्वदहमें पहिले था, परन्तु महाराजाने उसको पीछे रक्खा.

अह्दनामह नम्बर ११.

अह्दनामह दर्मियान महाराजा तख़्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, व लेफ़्टिनेएट कर्नेल आर० एच० कीटिंग, सी० एस० आई०, और वी० सी०, एजेएट गवर्नर जेनरल, रियासतहाय राजपूतानह, बमूजिब हिदायत चिट्ठी फ़ॉरेन सेक्रेटरी, नम्बरी १३९५, मुवर्रख़ह ३ डिसेम्बर, सन् १८६८ ई०.

शर्त १- महाराजा साहिब नीचे लिखे वज़ीरोंको रियासतका काम चलाने के लिये मुक़र्रर करते हैं:-

जोषी हंसराज, ख़ास दीवान; महता विजयसिंह, अदालत फ़ौज्दारी; महता हरजीवन, दफ़्तर माल; सिंघवी समर्थराज, अदालत दीवानी; पंडित शिवनारायण; और चूं कि आजकल राज्यका ख़ज़ानह ख़ाली है, इसलिये १५ लाख रुपया उनके इख़्तियारमें वास्ते ख़र्च आमके रखनेका वादह करते हैं. वज़ीरोंको अपने काम बाला बाला महाराजाके हुक्मोंके मुवाफ़िक़ करने चाहियें; वे कोई नसीहत महलके नौकरों या ज़नानेके आदमियोंकी मारिफ़त न लेवें; और उनको महाराजा और पोलिटिकल एजेएटकी शामिलात बिदून अपने पैग़ाम औरोंको भेजनेकी आज़ादी न होगी.

शर्त २- अगर महाराजा या पोलिटिकल एजेएट किसी दीवानका चाल चलन ऐसा देखें, कि उसकी मौक़ूफ़ीकी ज़ुरूरत हो, या किसी दूसरे सबबसे कोई जगह ख़ाली हो, तो तरफ़ैनकी रज़ामन्दीसे उसकी जगह दूसरा आदमी मुक़र्रर होना चाहिये. अगर इस बातपर रज़ामन्दी मुमकिन् न हो, तो इसका फ़ैसलह एजेएट गवर्नर जेनरलको करना चाहिये, जो कि महाराजाकी ख़्वाहिशोंपर पूरा ग़ौर करेंगे.

शर्त ३- ता वक्ते कि गवर्मेएट इन्डियाका हुक्म न हो, कोई तब्दीली उमरावोंके बंधे हुए अमल दरामदमें बमीआद इस अह्दनामहके न होनी चाहिये.

शर्त ४- कुल इन्तिज़ाम रियासती ख़ालिसहका और उसके दीवानी व फ़ौजदारी अमल दरामदका मारिफ़त वज़ीरोंके महाराजाके हुक्मसे होना चाहिये; और उसका एक हिस्सह भी बिला मर्ज़ी पोलिटिकल एजेएटके न तो ख़ारिज कियाजावे, न बदलकर किसी दूसरेको दियाजावे.

शर्त ५- ज़नानहके किसी गांवमें अमल दरामद किसी ख़ूनके मुक़द्दमह और डकैती या सख़्त जुर्ममें न होना चाहिये.

शर्त ६- अगर महाराजाका कोई बेटा या रिश्तहदार या ज़ाती नौकर या ज़नानेका कोई आदमी महलोंकी हदके बाहर कोई सख़्त जुर्म करे, तो महाराजा

उस मुआमलेको तै करेंगे; और अगर पोलिटिकल एजेएट दर्याफ़्त करें, तो उस मुक़द्दमहकी इत्तिला मए हुक्म मस्तूरहके उनको देदेवें.

शर्त ७- वज़ीरोंको महलोंके इहातेमें हुकूमत न करना चाहिये.

शर्त ८- महाराजा साहिब, पोलिटिकल एजेएटके हर एक बन्दोबस्तकी तामील करनेपर, जो कि महाराज कुमार जशवन्तसिंहजी और छोटे बेटोंके वास्ते मुस्तक़िल तज्वीज़ हुआ है, पाबन्द होते हैं. पोलिटिकल एजेएटको इस काममें तीन ठाकुरों और तीन मुतसद्दियोंकी कमेटीसे मदद मिलनी चाहिये, जो कि एजेएट गवर्नर जेनरलकी तरफ़से नामज़द की जावे. कोई दावा, कि जिसपर इस कमेटीके चार मेम्बरोंकी राय पोलिटिकल एजेएटसे मिलजाय, उसको मिस्ल फ़ैसलह किये हुएके समझना चाहिये.

शर्त ९- महाराजा इस बातका इक़ार करते हैं, कि कोई बन्दोबस्त, जो पोलिटिकल एजेएट अकेले या किसी और सलाहकारकी रायसे करेंगे, और एजेएट गवर्नर जेनरल नीचे लिखी हुई दो बातोंपर उसको मज्बूत करदेवेंगे, तो वह उसकी तामील करेंगे-

अव्वल- हुक्मनामहके सवालका, या मारवाड़के ठाकुर, जो तलवार बंधाईका रुपया देते हैं, उसका मुस्तक़िल इन्तिज़ाम.

दूसरे- कुल झगड़ोंका बन्दोबस्त, जो कि दर्बार और आउवा, गूलर, बाजावास, आसोप, और आलणियावासके ठाकुरोंमें हों.

दर्बार इन दो बातोंपर एजेएट गवर्नर जेनरलके फ़ैसलहके मुक़ाबलहमें बिलादेर अपील करनेका इख्तियार रखते हैं, लेकिन् वे बिला तअम्मुल गवर्मेएट हिन्दके फ़ैसलहपर क़ाइम रहेंगे.

शर्त १०- दीवान छः माहीकी क़िस्तसे बराबर एक लाख अस्सी हज़ारसे दो लाख पचास हज़ार रुपये तक हैसियतके मुवाफ़िक़ महलोंके ख़ानगी ख़र्चके वास्ते, जिसको महाराजा मुक़र्रर कर देवेंगे दियाकरे, यह रुपया महाराजा और एजेएट गवर्नर जेनरलकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ पोशीदह तख़मीनह होनेपर तै हुआ है. किसी दीवानको बिला मर्ज़ी पोलिटिकल एजेएटके न तो महलमें कोई उहदह मन्ज़ूर करना चाहिये, और न कोई नई नौकरी करना चाहिये.

शर्त ११- रियासतकी आमदनीका रुपया बिला मर्ज़ी पोलिटिकल एजेएटके ख़ास ख़ज़ानहसे न बदला जाये, और न किसी जगह भेजाजावे, और हिसाब इस तौरसे रक्खाजावे, कि रियासतकी मालगुज़ारीकी हालत बड़ी ईमानदारीसे दिखलाई जावे, और उससे साफ़ साफ़ समझा जासके; रियासतके कुल हिसाब

उस आदमीके मुलाहज़हको खुले रहने चाहियें, जिसको कि एजेण्ट गवर्नर जेनरल मुक़र्रर करें.

शर्त १२- इस अह्दनामहपर चार वर्ष तक अमल रहे, ता वक्ते कि उस अर्सेमें मारवाड़की हुकूमतमें कम्ज़ोरी और बद इन्तिज़ामी शुरू न हो, जो कि गवर्मेण्ट हिन्दको जल्द दख़्ल करनेको मजबूर करे.

अह्दनामह नम्बर ४५.

तर्जमह ख़रीतह महाराजा जोधपुर, जी० सी० एस० आई०, ब नाम एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह, मुवर्रख़ह २९ जुलाई, सन् १८६६ ई०.

आपका ख़रीतह मुवर्रख़ह २९ फ़ेब्रुअरी गुज़श्तहका, इस मज़्मूनसे आया, कि गवर्मेण्ट उन क़ौल व क़रारोंको, जो कि मेरी पहिली चिट्ठीमें लिखे थे, रेल बननेके बारेमें इस दर्बारकी तरफ़से अस्ली इन्कार समझती है. मैं आपको ज़ाहिर करना चाहता हूं, कि मैंने रेल्वेको कभी ना मंजूर नहीं करना चाहा, दर हक़ीक़त मैं जानता हूं, कि उससे मारवाड़को कितने फ़ाइदे होंगे; जो कुछ कि मैंने पहिले दरबारे नुक़्सान महसूल सायरके लिखा था, उसकी बुन्याद यह थी, कि बाहरका बहुत कम माल मारवाड़में ख़र्च होता है; और यह कि सिवाय नमकके और कोई ऐसी चीज़ मारवाड़में नहीं पैदा होती, जो बाहर भेजीजावे; इसलिये ख़ास आमदनी उन रवानगीकी चीज़ोंके महसूलसे हासिल होती है, जो कि उसकी मारिफ़त होकर जाती हैं याने बिकनेके वास्ते इस इलाक़हमें खोली नहीं जाती, और इस रक़मके नुक़्सानसे बेशक मेरी मालगुज़ारीमें बहुत कमी होगी. ताहम ब लिहाज़ आपकी चिट्ठीके, जो बनाम मेरे थी, और ब्रटिश गवर्मेन्टकी मर्ज़ीके और मेरी कुल रअय्यतके फ़ाइदहके, मैं रेल्वेका मारवाड़में होकर निकलना नीचे लिखी हुई शर्तोंपर मंजूर करता हूं:-

शर्त १- क़रीब २०० फ़ीटके रक़बहमें ज़मीन सड़क या स्टेशनोंके लिये मुफ़्त दीजावेगी, और जो कुछ नुक्सान इस मुल्कके गांवों, कूओं या बाग़ोंमें उसके भीतर चलनेसे होगा, दर्बार सहेंगे.

शर्त २- मिल्कियतका हक़ इस ज़मीनपर इस दर्बारका रहेगा, लेकिन् और तमाम हक़ गवर्मेण्टको देदिये जायेंगे, और कोई मुज्रिम इस रियासतका इस ज़मीनमें आश्रय न ले सकेगा, और इस ज़मीनमें कोई आश्रय ले, तो इस रियासतके अह्लकारोंके सपुर्दकर दिया जायेगा; कोई मुज्रिम दूसरी रियासतका बाशिन्दह होकर इस ज़मीनमें आश्रय लेवे, तो वह वास्ते तहक़ीक़ातके इस रियासतके पोलिटिकल एजेण्टके सुपुर्द किया जावेगा.

शर्त ३- तमाम अस्बाब, बे खोले हुए इस रियासतमें होकर विना किसी महसूलके चले जायेंगे, लेकिन् जो अस्बाब कि बाहरसे आकर मारवाड़में खोला जावे, या जो अस्बाब कि मारवाड़में लादा जावे, और वहांसे आगेको जाता होवे, तो क़ाबिल अदा करने महसूल इस रियासतके होगा.

शर्त ४- जो कि लकड़ी मारवाड़में कम है, इसलिये, रेल, जो उसमें होकर गुज़रेगी, उसके वास्ते लकड़ी नहीं दी जासक्ती है. जब कि किसी रेलकी सड़कका मारवाड़में होकर निकलना तै होजावे, तो उसके बनानेमें हर एक मुम्किन मदद दी जायेगी.

अ़ह्दनामह नम्बर ४६.

अ़ह्दनामह आपसमें बृटिश गवर्मेण्ट और श्रीमान् तख़्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, महाराजा जोधपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके, एक तरफ़से कप्तान यूजेनी क्लटरबक इम्पी, पोलिटिकल एजेण्ट मारवाड़, और पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट मल्लानीने ब इजाज़त लेफ्टिनेण्ट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आई०, और वी० सी०, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इख़्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, बैरोनेट, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आई०, वॉइसराय और गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानने दिये थे, और दूसरी तरफ़से जोषी शिवराज, मुसाहिब जोधपुरने उक्त महाराजा तख़्तसिंहके दिये हुए इख़्तियारोंसे जारी किया.

शर्त १ - कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़हमें बड़ा जुर्म करे, और मारवाड़की राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो मारवाड़की सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगे जानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त २- कोई आदमी मारवाड़के राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी मुल्कमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम जोधपुरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ सुपुर्द करदेवेगी.

शर्त ३- कोई आदमी जो, मारवाड़के राज्यकी रअ़य्यत न हो, और मारवाड़की राज्यसीमामें कोई बड़ा जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी; और उसके मुक़द्दमहकी रूबकारी सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अ़दालतमें होगी. अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़-

र्मोका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होता है, जिसके तह्तमें वारदात होनेके वक्पर मारवाड़की मुल्की निगहबानी रहे.

शर्त ४- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो बड़ा मुज्रिम ठहरा हो, दे देनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि दस्तूरके मुताबिक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो; और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पाया जावे, उसका गिरिफ़्तार करना दुरुस्त ठहरेगा; और वह मुज्रिम क़रार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त ५- नीचे लिखे हुए काम बड़े जुर्म समझे जावेंगेः-

१ खून- २ खून करनेकी कोशिश- ३ वहशियानह क़त्ल- ४ ठगी- ५ ज़हर देना- ६ ज़िनाबजब्र- (ज़बर्दस्ती व्यभिचार)- ७ ज़ियादह ज़ख्मी करना- ८ लड़का वाला चुरा लेजाना- ९ औरतोंका बेचना-१० डकैती- ११ लूट- १२ सेंध (नक़ब) लगाना- १३ चौपाये चुराना- १४ मकान जलादेना- १५ जालसाज़ी करना- १६ झूठा सिक्कः चलाना- १७ धोखा देकर जुर्म करना- १८ माल अस्बाब चुरालेना- १९ ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्ग़लान्ना (बहकाना).

शर्त ६- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमोंको गिरिफ़्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह उसी सर्कारको देना पड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बातें कीजावें.

शर्त ७- ऊपर लिखा हुआ अ़ह्दनामह उस वक़्त तक बर्क़रार रहेगा, जब तक कि अ़ह्दनामह करने वाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई उसके रद्द होनेका इश्तिहार न देवे.

शर्त ८- इस अ़ह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अ़ह्दनामहपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अ़ह्दनामहके, जो कि इस अ़ह्दनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम आबू, राजपूतानह. तारीख़ ६ ऑगस्ट सन् १८६८ ई०.

दस्तख़त- ई० सी० इम्पी,
पोलिटिकल एजेण्ट.

दस्तख़त-जोषी शिवराज, मुसाहिब,
महाराजा जोधपुर, जी० सी० एस० आई०.

दस्तख़त- जॉन लॉरेन्स,
वॉइसराय, गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिमलेपर तारीख़ २६ ऑगस्ट, सन् १८६८ ई० को की.

दस्तख़त- डब्ल्यू० एस० सेट्न कार, सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द.

अह्दनामह नम्बर ४७.

अह्दनामह आपसमें सर्कार अंग्रेज़ी और श्री मान् महाराजा तख़्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, महाराजा जोधपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके, जो एक तरफ़ कर्नेल जॉन सी० ब्रुक, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट, जोधपुरने व हुक्म लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आई० और वी० सी०, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके, जिनको पूरा इख़्तियार श्री मान् राइट ऑनरेबल रिचर्ड साउथवेल बर्क, अर्ल मेओ, वाइसरॉय, गवर्नर जेनरल हिन्दने दिया था; और दूसरी तरफ़ जोषी हंसराज, मुसाहिब मारवाड़के साथ किया, जिसको उक्त महाराजा तख़्तसिंहसे पूरा इख़्तियार मिला था.

शर्त १- नीचे लिखे हुए अह्दनामहकी शर्तोंके मुताबिक़ जोधपुरकी सर्कार सांभर झीलके किनारेकी ज़मीनकी हद्दके भीतर (जैसा कि चौथी शर्तमें लिखा है) नमक बनाने और बेचने तथा इस हद्दके दर्मियान पैदा होनेवाले नमकपर महसूल लगानेका हक़ सर्कार अंग्रेज़ीको दे देवेगी.

शर्त २- यह पट्टा उस वक़ तक क़ाइम रहेगा, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी इसको छोड़नेकी ख़्वाहिश न करे, इस शर्तपर कि सर्कार अंग्रेज़ी जोधपुरकी सर्कारको उस तारीख़से दो वर्ष पहिले इस बन्दोबस्तके ख़त्म करनेका इरादह ज़ाहिर करे, जिससे कि पट्टा ख़त्म होनेका इरादह रखती है.

शर्त ३- सांभर झीलपर नमक बनाने और बेचनेका काम चलानेके वास्ते सर्कार अंग्रेज़ीको लाइक़ करनेके लिये सर्कार जोधपुर, सर्कार अंग्रेज़ीको और उसके मुक़र्रर किये हुए अफ़्सरोंको पूरा इख़्तियार देवेगी, कि शुब्हेकी हालतमें नीचे लिखी हुई हद्दके भीतर मकान और दूसरी जगह, जो खुली या वन्द हो, उसके भीतर जावें और तलाशी लेवें; और अगर कोई शख़्स उस हद्दके भीतर नमक बनाने, बेचने, हटाने; या बग़ैर लाइसेन्सके बनाने वा दूसरे देशसे लेआनेकी मनाहीके निस्वत सर्कार अंग्रेज़ीके मुक़र्रर किये हुए क़ाइदहके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करते हुए गिरिफ़्तार हो, तो उसको गिरिफ़्तार करें, जुर्मानह करें, जेलख़ानह भेजें, माल अस्बाब ज़ब्त करें, या और किसी तरहसे सज़ा देवें.

शर्त ४- झीलके किनारेकी ज़मीन, जिसमें सांभरका क़स्बह और बारह दूसरे खेड़े, और वह बिल्कुल इलाक़ह जिसपर कि अब जोधपुर और जयपुर दोनोंका क़ब्ज़ह है, शामिल है; उसका निशान किया जायगा; और निशानकी लाइनके भीतरकी बिल्कुल ज़मीन तथा झीलका या उसके सूखे तलेका हिस्सह, जो ऊपर कही हुई दोनों रियासतोंके मातहत है, वही हद समझी जायगी, जिसके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी और उसके अफ्सरोंको तीसरी शर्तके इख्तियार रहेंगे.

शर्त ५- कही हुई हद्दोंके भीतर और इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तके मुताबिक़ क़ाइदोंकी कार्रवाई करानेके लिये और नमकके बनाने, बेचने, हटाने और बगैर इजाज़तके लानेसे रोकनेके लिये जहां तक ज़रूरत हो, सर्कार अंग्रेज़ी या उसकी तरफ़से इख्तियार पाये हुए अफ़्सरोंको इख्तियार होगा, कि इमारतों या दूसरे मत्लबोंके लिये ज़मीन लेलेवें और सड़क, आड़, झाड़ी या मकान बनावें और इमारतें या दूसरा सामान हटा देवें. ऊपर लिखे हुए किसी मत्लबके लिये जोधपुर सर्कारकी खिराज देनेवाली ज़मीनपर सर्कार अंग्रेज़ीका दख्ल करलिया जावे, तो वह सर्कार जोधपुरको उस खिराजके बराबर सालानह किरायह दिया करेगी. जब कभी किसी शख्सकी जायदादको सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ़्सर किसी तरह इस शर्तके मुताबिक़ नुक़्सान पहुंचावेंगे, तो जोधपुरकी सर्कारको एक महीने पेश्तरसे इत्तिला दी जायगी; और सर्कार अंग्रेज़ी उस नुक़्सानका बदला मुनासिब तौरसे चुकादेवेगी, जब किसी हालतमें सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ्सर और मालिक जायदादके दर्मियान नुक्सानकी तादादके बारेमें बह्स होगी, तो तादाद पंचायतसे ठहराई जायेगी.

ऊपर लिखी हुई हद्दोंके भीतर इमारतोंके बनानेसे सर्कार अंग्रेज़ीका कोई मालिकानह हक़ ज़मीनपर न होगा, जो कि पट्टेकी मीआद ख़त्म होनेपर सर्कार जोधपुरके क़ब्ज़हमें वापस चली जायेगी, मगर उन इमारतों और सामानके जो कि सर्कार अंग्रेज़ी वहांपर छोड़ देवे. किसी मन्दिर या मज़्हबी पूजाके मकानमें दख्ल नहीं दिया जायेगा.

शर्त ६- जोधपुर सर्कारकी मंजूरीसे सर्कार अंग्रेज़ी एक कचहरी क़ाइम करेगी, जिसका इख्तियार एक लाइक़ अफ़्सरको रहेगा, जो ऊपर बयान की हुई हद्दोंके भीतर अक्सर इज्लास करेगा, इस गरज़से कि उन मुक़द्दमोंकी रूबकारी कीजावे, जो कि शर्त तीसरीमें लिखे हुए क़ाइदोंके बर्खिलाफ़ कार्रवाईके सबब दाइर होवें, और तमाम मुज्रिमोंको सज़ा दीजावे; और सर्कार अंग्रेज़ीको इख्तियार है, कि जिन

मुज्रिमोंको जेलख़ानह होवे, उनको चाहे उक्त हद्दोंके भीतर या अपनेही इलाक़हमें जहां मुनासिब हो क़ैद करे.

शर्त ७- पट्टेके शुरू होनेकी तारीख़से और उसके पीछे गवर्मेंएट अंग्रेज़ी वक्त वक्तपर क़ीमतका निर्ख़ मुक़र्रर करेगी, जिसके मुताबिक़ वह नमक बेचा जावेगा, जो कि उक्त हद्दोंके भीतर बनाया जावे, और जो जोधपुर व जयपुरकी हद्दोंके बाहर भेजा जावे.

शर्त ८- वह नमक, जिसपर कि सर्कार जोधपुर और जयपुर दोनोंकी मिल्कियत हो, और पट्टा शुरू होनेके वक्त उन हद्दोंके भीतर मौजूद रहे, जोधपुर सर्कारका हिस्सह ऊपर लिखी हुई मिक़्दारका आधा नीचे लिखी हुई शर्तोंपर जोधपुर सर्कारकी तरफ़से सर्कार अंग्रेज़ीको दे दिया जावेगाः-

जोधपुरकी सर्कार अपना हिस्सह पांच लाख दस हज़ार मन अंग्रेज़ी तोलके नमकमेंसे सर्कार अंग्रेज़ीको बिला क़ीमत देवेगी. लिखी हुई मिक़्दारके बाक़ीमेंसे जोधपुर सर्कारका जो हिस्सह है, उसकी क़ीमत साढ़े छः आने मन अंग्रेज़ी तोलके हिसाबसे गिनी जायेगी; और उसी निर्ख़से सर्कार अंग्रेज़ी जोधपुरकी सर्कारको क़ीमत अदा करेगी, इस शर्तपर कि यह साढ़े छः आने मन जोधपुर सर्कारको उसी हालतमें दिया जावेगा, जब क़िसी सालमें आठ लाख पच्चीस हज़ार अंग्रेज़ी मनसे ज़ियादह नमक सर्कार अंग्रेज़ी बेचे, या बाहरको भेजे, और उस हालतमें भी बढ़तीके उसी हिस्सहपर जो सर्कार जोधपुरका है, और ज़ब तक इस सालानह बढ़तीकी कुल मिक़्दार नमककी पूरी मिक़्दारके बराबर न हो, जो पांच लाख दस हज़ार अंग्रेज़ी मनसे ज़ियादह और उसके अ़लावह है, अंग्रेज़ी सर्कार उस बढ़तीको बेचावकी क़ीमतपर बीस रुपये सैकड़ेका रसूम न अदा करेगी, जो कि बारहवीं शर्तमें लिखा है.

शर्त ९- कोई महसूल, चुंगी, राहदारी या और किसी तरहका जोधपुर सर्कार खुद नहीं जारी करेगी, न क़िसी दूसरे शख़्सको इजाज़त देवेगी, कि वह उस नमकपर जारी करे, जो कही हुई हद्दोंके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी बनावे या बेचे, या जिस वक्त कि अंग्रेज़ी पर्वानहके ज़रीएसे वह जोधपुरके इलाक़हमें होकर जोधपुरके बाहर किसी जगह जाता हो.

शर्त १०- इस अ़ह्दनामहकी किसी बातसे कही हुई हद्दोंके भीतर दीवानी व फ़ौज्दारी वगै़रह सब मुआ़मलातमें सर्कार जोधपुरके अधिकारमें ख़लल न आवेगा, सिवाय उन मुआ़मलोंके जो नमकके बनाने, बेचने या हटाने या वगै़र लाइसेन्सके बनाने या दूसरे देशसे लानेकी रोकसे तअ़ल्लुक़ रखते हों.

शर्त ११- नमकके बनाने, बेचने और हटाने तथा वगै़र लाइसेन्सके

बनाने या बगैर इजाज़तके कही हुई हद्दोंके भीतर बाहरसे लानेके रोकनेमें जो कुछ ख़र्च पड़ेगा, उस सबसे सर्कार जोधपुर मह्फूज़ रहेगी; और सर्कार अंग्रेज़ी को, जो पट्टा मिला है, उसके एवज़में जोधपुर सर्कारको एक लाख पच्चीस हज़ार रुपये कल्दार सालानह ख़िराज दो छःमाही क़िस्तोंमें, कही हुई हद्दके भीतर, जो नमक बेचा जाता है, उसमें सर्कार जोधपुरके हिस्सहके लिये, देनेका वादह करती है; और यह सालानह ख़िराज जिसकी तादाद एक लाख पच्चीस हज़ार रुपया अंग्रेज़ी सिक्कः है, नमक, जो कि कही हुई हद्दोंके भीतर बेचाजावे, या उससे बाहर चालान किया जावे, उसपर बगैर लिहाज़के लिया जायेगा.

शर्त १२- अगर किसी सालमें कही हुई हद्दोंके भीतर आठ लाख पच्चीस हज़ार अंग्रेज़ी मनके ब निस्बत ज़ियादह नमक सर्कार अंग्रेज़ीसे बेचाजावे, या उस हद्दके बाहर चालान कियाजावे, तो सर्कार अंग्रेज़ी जोधपुरकी सर्कारको उस बढ़तीपर (आठवीं शर्तमें जो मिक्दार लिखी है, उसके ख़र्च होजानेके पीछे) बीस रुपये सैकड़ेके हिसाबसे एक महसूल फ़ी मनके उस दामपर देगी, जो कि सातवीं शर्तके पहिले जुम्लेके मुताबिक़ बिकनेका निर्ख़ मुक़र्रर किया गया है.

जब कभी इस बारेमें सन्देह हो, कि किस सालमें कितने नमकपर महसूल लेना है, तो जो हिसाब सर्कार अंग्रेज़ीके ख़ास अफ़्सरकी तरफ़से पेश किया जावे, जो सांभरका मुख़्तार है, इस बातकी क़तई गवाही समझी जायेगी, कि दर अस्ल कितना नमक सर्कार अंग्रेज़ीने उस वक्तमें बेचा, या बाहर चालान किया है, जिसका ज़िक्र हिसाबमें है; शर्त यह है, कि जोधपुर सर्कार अपना एक अफ़्सर फ़रोख़्तका हिसाब रखनेको अपनी तसल्लीके वास्ते रखनेसे न रोकीजावे.

शर्त १३- सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि हर साल सात हज़ार मन अंग्रेज़ी तोलका नमक बगैर कुछ क़ीमत वगैरहके जोधपुर दर्बारके वास्ते दिया करेगी; यह नमक उस जगहपर दियाजायेगा, जहां कि बनता है, और उस अफ़्सरको दियाजावेगा, जिसको जोधपुर सर्कारकी तरफ़से लेनेका इख़्तियार मिला हो.

शर्त १४- सर्कार अंग्रेज़ीका कोई दावा किसी ज़मीनके या दूसरे ख़िराजपर नहीं होगा, जो नमकसे सरोकार नहीं रखता, और सांभरके क़स्बे या दूसरे गांवों या ज़मीनोंसे दियाजाता है, जो कही हुई हद्दोंके भीतर शामिल है.

शर्त १५- अंग्रेज़ी सर्कार जोधपुरके इलाक़हमें उस हद्दके बाहर नमक नहीं बेचेगी, जो कि इस अह्दनामहके या किसी दूसरेके मुताबिक़ मुक़र्रर कीगई हो.

शर्त १६- अगर कोई शख़्स, जिसको सर्कार अंग्रेज़ीने कही हुई हद्दोंके भीतर

मुक़र्रर किया हो, कोई जुर्म करके भागगया हो, या कोई शख़्स इस अ़ह्दनामहकी तीसरी शर्तके क़ाइदोंके बर्ख़िलाफ़ कोई काम करके भागगया हो, तो जोधपुरकी सर्कार जुर्मकी पुख़्तह गवाही होनेपर हरएक तरह उसको गिरिफ़्तार करने और कही हुई हद्दोंके भीतर अंग्रेज़ी हाकिमोंको सुपुर्द करनेकी कोशिश करेगी, जिस हालतमें कि वह शख़्स जोधपुरके इलाक़हके किसी हिस्सहमें होकर गुज़रा हो, या कहीं आश्रय लिया हो.

शर्त १७- इस अ़ह्दनामहकी कोई शर्त अ़मल दरामदके लाइक़ नहीं होगी, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी दर अस्ल कही हुई हद्दोंके भीतर नमकके कारख़ानहका काम अपने हाथमें न लेवे. काम लेनेकी तारीख़ सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करसक्ती है, इस शर्तसे कि अगर पहिली मई सन् १८७१ ई० को या उसके पेश्तर चार्ज न लियाजावे, तो इस अ़ह्दनामहकी शर्तें मन्सूख़ होजावेंगी.

शर्त १८- इस अ़ह्दनामहकी कोई शर्तें बग़ैर दोनों सर्कारोंकी पेश्तर रज़ामन्दी होनेके न बदली जायेंगी, न मन्सूख़ की जायेंगी, और अगर कोई फ़रीक़ इन शर्तोंके मुताबिक़ चलनेमें क़स्र, या बेपर्वाई करे, तो दूसरा फ़रीक़ इस अ़ह्दनामहकी पाबन्दीसे छूट जावेगा.

दस्तख़त कियागया, मुहर हुई, और आपसमें तबादला हुआ, ब मक़ाम जोधपुर, तारीख़ २७ जैन्युअरी सन् १८७० ईसवी, मुताबिक़ माघ कृष्ण ११, सम्वत् १९२६.

फ़ार्सीमें मुहर.	जोधपुर एजेंसी दफ़्तर.	दस्तख़त-जे० सी० ब्रुक, कर्नेल, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट, मारवाड़.

दफ़्तरकी मुहर
रियासत जोधपुर.

मुहर.	दस्तख़त- मेओ.

दस्तख़त- जोषी हंसराजके, हिन्दीमें.

गवर्मेण्टकी मुहर.

इस अ़ह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने ब मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम तारीख़ १५ फ़ेब्रुअरी सन् १८७० ईसवीको की.

मुहर.

दस्तख़त- सी० यू० एचिसन्,
काइम मक़ाम सेक्रेटरी, गवर्मेंएट हिन्द,
फ़ॉरेन डिपार्टमेंएट.

अह्दनामह नम्बर ४८.

अह्दनामह दर्मियान अंग्रेज़ी गवर्मेंएट और श्रीमान् तख़्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, महाराजा जोधपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके, जिसको एक तरफ़ कर्नेल जॉन चीप ब्रुक, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट, जोधपुरने लेफ़्टिनेएट कर्नेल रिचर्ड् हार्ट कीटिंग, सी० एस० आई०, और वी० सी०, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानाके हुक्मसे किया, जिनको पूरा इख़्तियार श्रीमान् राइट ऑनरेबल रिचर्ड साउथवेल बर्क, अर्ल ऑव मेओ, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दकी तरफ़से मिला था, और दूसरी तरफ़ जोषी हंसराज, मुसाहिब मारवाड़ने मज़्कूर महाराजा तख़्तसिंहसे पूरे इख़्तियारात पाकर किया.

शर्त १- नीचे लिखे हुए अह्दनामहकी शर्तोंके मुताबिक़ सर्कार जोधपुर सर्कार अंग्रेज़ीको सांभरकी झीलके किनारेके इलाक़हकी हद्दोंके भीतर (जैसा कि चौथी शर्तमें बतलाया गया है) नमक बनाने और बेचने और उन हद्दोंके भीतर, जो नमक बनता है, उसपर महसूल लगानेका हक़ पट्टा करके दे देवेगी.

शर्त २- यह पट्टा उस वक़्त तक जारी रहेगा, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी इसको छोड़नेकी ख़्वाहिश न करे, शर्त यह है, कि सर्कार अंग्रेज़ी इस बन्दोबस्तके ख़त्म करनेके इरादहकी इत्तिला सर्कार जोधपुरको उस तारीख़से दो वर्ष पेश्तर देवे, जिससे कि वह पट्टा ख़त्म करनेकी ख़्वाहिश रखती हो.

शर्त ३- सर्कार अंग्रेज़ीको सांभरझीलके पास नमक बनाने और बेचनेके लाइक़ करनेके लिये, जोधपुर सर्कार, सर्कार अंग्रेज़ी और उसके अफ़्सरोंको, जो इस कामके वास्ते सर्कार अंग्रेज़ीसे मुक़र्रर कियेगये हों, इख़्तियार देवेगी, कि शुब्हेकी हालतमें लिखी हुई हद्दोंके भीतर मकानों और तमाम दूसरी जगहों (घिरी हों या नहीं) के भीतर जावें, और तलाश करें, और गिरिफ़्तार करके जुर्मानह, जेलख़ानह, माल ज़ब्त करके, या दूसरी तरहसे सज़ा देवें, उन तमाम शख़्सोंको या अकेले शख़्सको, जो उन हद्दोंके भीतर, नमक बनाने, बेचने, व हटाने या बग़ैर लाइसेन्सके बनाने या बाहरसे लेआनेकी मनाहीके निस्बत, जो क़ाइदे सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करे, उनमेंसे किसीके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करनेके लिये गिरिफ़्तार हो.

शर्त ४- ज़मीनका एक हिस्सह, जो कि बराबर झीलके किनारेपर है, जिसपर अलग इख़्तियार जोधपुरका है, जिसमें नावां, गुढ़ा, और दूसरे गांव व खेड़े शामिल हैं, और औसतसे जो चौड़ाईमें, झीलके पानीकी सबसे ऊंची सत्हसे नापे जानेपर दो मील हो, उसका निशान कियाजावेगा; और इस निशानके भीतरकी तमाम जगह और खुद झील या उसके सूखे तलेके वे हिस्से, जिनपर अब जोधपुरका अकेला और अलह्दह अमल है, उस हदमें समझे जावेंगे, जिसके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी व उसके अफ़्सरोंको तीसरी शर्तमें लिखे हुए इख़्तियारात रहेंगे.

शर्त ५- कही हुई हदोंके भीतर, और नमकके बनाने, बेचने, व हटानेकी मदद व हिफ़ाज़त, या बाहरसे लाना रोकनेके लिये, जहां तक ज़रूरत हो, और इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तके मुताबिक़ मुक़र्रर किये हुए क़ाइदोंका अमल दरामद करनेके लिये, सर्कार अंग्रेज़ी व उसकी तरफ़से मुख़्तार किये हुए अफ़्सरोंको इख़्तियार होगा, कि मकान बनाने या दूसरे मत्लबोंके लिये ज़मीन लेवें, सड़क, आड़, झाड़ी या इमारतें बनावें, और इमारतें या दूसरी जायदाद हटादेवें. अगर कोई ज़मीन, जिससे सर्कार जोधपुरको ख़िराज मिलता है, ऊपर कहे हुए किसी मत्लबोंके लिये सर्कार अंग्रेज़ीके तह्तमें रखलीजावे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उस ख़िराजके बराबर सालानह महसूल सर्कार जोधपुरको देवेगी.

हर एक हालतमें, जिसमें कि किसी तरह किसी शख़्सकी जायदादको नुक़्सान पहुंचानेवाला कोई काम सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ़्सर इस शर्तके मुताबिक़ करेंगे, तो जोधपुर सर्कारको एक महीने पेश्तरसे इत्तिला दी जायेगी; और ऐसी तमाम हालतोंमें सर्कार अंग्रेज़ी उस नुक़्सानका बदला मुनासिब तौरपर चुका देवेगी. अगर सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ़्सरों और जायदादके मालिकके दर्मियान नुक़्सान की रक़मके बारेमें बहस होगी, तो यह रक़म पंचायतसे ठहराई जावेगी.

कही हुई हदोंके भीतर कोई इमारत बनानेसे ज़मीनपर सर्कार अंग्रेज़ीका मालिकानह हक़ किसी तरह न होगा, लेकिन् पट्टेकी मीआद ख़त्म होनेपर ज़मीन जोधपुर सर्कारको वापस मिलेगी, मए तमाम इमारतों या सामानके, जो सर्कार अंग्रेज़ी वहांपर छोड़देवे. किसी मन्दिर या मज़्हबी पूजाकी जगहमें दख़्ल न दिया जायेगा.

शर्त ६- जोधपुर सर्कारकी मन्ज़ूरीसे सर्कार अंग्रेज़ी एक लाइक़ अफ़्सरके मातह्त एक अदालत क़ाइम करेगी, इस मत्लबसे कि तीसरी शर्तमें लिखे हुए क़ाइदोंके बर्ख़िलाफ़ चलनेवाले तमाम शख़्सोंकी रूबकारी कीजावे, और उनको

सज़ा दीजावे, जब कि वे मुज्रिम सावित होजावें; और सर्कार अंग्रेज़ीको इख्तियार है, कि जिन मुज्रिमोंको जेलख़ानहका हुक्म हुआ है, उनको कही हुई हद्दोंके भीतर या और कहीं, जहां मुनासिब समझें, क़ैद करें.

शर्त ७- पट्टा शुरू होनेकी तारीख़से और उसके बाद सर्कार अंग्रेज़ी वक़ वक़ पर निर्ख़ मुक़र्रर करेगी, जिसके मुताबिक़ वह नमक बेचा जावेगा, जो कि कही हुई हद्दोंके भीतर बनाया जावे.

शर्त ८- पट्टा शुरू होनेके वक़पर, जितना नमक कही हुई हद्दोंके भीतर मौजूद रहेगा, वह तमाम सर्कार जोधपुरकी तरफ़से सर्कार अंग्रेज़ीको नीचे लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ देदिया जावेगा :-

सर्कार जोधपुर छः लाख मन अंग्रेज़ी तोलका नमक अंग्रेज़ी सर्कारको बिला क़ीमत पूंजीके तौरपर कारख़ानह शुरू करनेके लिये देवेगी. उस पूंजीके बाक़ी हिस्सहकी क़ीमत जोधपुर सर्कारको साढ़े छः आने मन अंग्रेज़ी तोलके हिसाबसे दीजावेगी, और इसी निर्ख़से सर्कार अंग्रेज़ी जोधपुरकी सर्कारको क़ीमत अदा करेगी, इस शर्तपर कि यह साढ़े छः आने मनकी निर्ख़ सर्कार जोधपुरको दिया जाना उसी हालतमें शुरू हो, जब किसी सालमें सर्कार अंग्रेज़ी नौ लाख मन नमकसे ज़ियादह बेचे, या बाहर भेजे; और जब तक कि ऊपर कहे हुए छः लाख अंग्रेज़ी मनसे ज़ियादह सालानह बढ़ती दिये हुए नमककी पूंजीके बराबर न होजावे, अंग्रेज़ी सर्कार उस बढ़तीपर चालीस रुपये सैकड़ेका रुसूम, जैसा कि शर्त बारहवींमें लिखा है, नहीं देवेगी.

शर्त ९- जोधपुर सर्कार उस नमकपर, जो कि कही हुई हद्दोंके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी बनावे, या बेचे, या जब कि वह जोधपुरके इलाक़हमें होकर अंग्रेज़ी पासके ज़रीएसे जोधपुरके बाहर किसी दूसरी जगहको जाता हो, किसी तरहका महसूल चुंगी, राहदारी या और कोई महसूल न तो खुद लगावेगी, या किसी दूसरे शख़्सको लगाने देगी; शर्त यह है, कि जोधपुरके इलाक़हके भीतर ख़र्चके लिये जितना नमक बेचाजावे, उस तमाम नमकपर उस रियासतकी सर्कार जो महसूल चाहे, लगावे.

शर्त १०- इस अह्दनामहकी किसी बातसे कही हुई हद्दोंके भीतर दीवानी व फ़ौजदारीके तमाम मुआमलातपर, जो नमकके बनाने, बेचने, व हटाने या बग़ैर लाइसेन्स बनाने, या बाहरसे लानेकी मनाहीसे निस्बत रखते हों, जोधपुर सर्कारका इख्तियार किसी तरह ख़ारिज नहीं किया जायेगा.

शर्त ११- कही हुई हद्दोंके भीतर नमकके बनाने, बेचने व हटाने, और बग़ैर लाइसेन्स बनाना और बाहरसे लाना रोकनेके तमाम ख़र्चसे सर्कार जोधपुर महफ़ूज़

रहेगी, और इस अह्दनामहके मुताबिक़ उसकी तरफ़से, जो पट्टा और दूसरे हुकूक़ सर्कार अंग्रेज़ीको मिले हैं, उसके एवज़में सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि जोधपुर सर्कारको सालानह किराया तीन लाख रुपया सिक्के अंग्रेज़ी दो (छःमाही) क़िस्तोंमें दिया करेगी; और इस सालानह किराये तीन लाख रुपये सिक्के अंग्रेज़ीके अदा करनेमें इस बातपर कुछ लिहाज़ नहीं किया जायेगा, कि दर अस्ल कितना नमक कही हुई हद्दोंके भीतर बेचागया, या उसके बाहर चालान कियागया. ऊपर लिखे हुए तीन लाख रुपयोंकी जमामें भूम, राहदारीका महसूल, और हर तरहके हक़ कुचामनके ठाकुर और दूसरोंके शामिल हैं, जो सर्कार जोधपुर अदा करनेका वादह करती है.

शर्त १२- अगर कही हुई हद्दोंके भीतर किसी सालमें नव लाख मन अंग्रेज़ी तोलसे ज़ियादह नमक सर्कार अंग्रेज़ी बेचे, या बाहर भेजे, तो वह उस बढ़ती (आठवीं शर्तमें कही हुई पूंजीके ख़र्च होने बाद) पर जोधपुर सर्कारको चालीस रुपये सैकड़ेके हिसाबसे एक महसूल फ़ी मनकी क़ीमतपर देगी, जो सातवीं शर्तके मुताबिक़ बिक्रीका निर्ख़ बांधागया हो.

अगर कभी इस बारेमें सन्देह होवे, कि किसी सालमें कितने नमकपर रुसूम लेना है, तो जो हिसाब सांभरका मुख़्तार ख़ास अंग्रेज़ी अफ़्सर पेश करेगा, इस बातकी पुख़्तह गवाही समझी जावेगी, कि दर अस्ल सर्कार अंग्रेज़ीने कितना नमक उस वक़्में, जिसके बाबत कि हिसाब है, बेचा या भेजा है; शर्त यह है, कि सर्कार जोधपुर अपनी तसल्लीके लिये फ़रोख़्तका हिसाब रखनेके वास्ते अपना एक अफ़्सर भेजनेसे बाज़ न रक्खी जावे.

शर्त १३- जोधपुर दर्बारके ख़र्चके लिये सात हज़ार मन अंग्रेज़ी तोलका अच्छा नमक बग़ैर कुछ लिये हुए हर साल देनेका वादह सर्कार अंग्रेज़ी करती है; और यह नमक बननेकी जगहपर उस अफ़्सरको सौंप दिया जावेगा, जिसको जोधपुर सर्कारकी तरफ़से लेनेका इख़्तियार मिला हो.

शर्त १४- नावां और गुढ़ाके क़स्बों या कही हुई हद्दोंके भीतरके दूसरे गांवों या ज़मीनोंसे, जो ज़मीनका या दूसरा ख़िराज मिलता है, और जो नमकसे निस्बत नहीं रखता, उसपर सर्कार अंग्रेज़ीका कुछ दावा नहीं होगा.

शर्त १५- इस अह्दनामह या किसी दूसरे अह्दनामोंके मुताबिक़ मुक़र्रर कीहुई ऐसे इख़्तियारातकी हदके बाहर, जोधपुरके इलाक़हके भीतर कुछ भी नमक सर्कार अंग्रेज़ी नहीं बेचेगी.

शर्त १६- अगर कही हुई हद्दोंके भीतर सर्कार अंग्रेज़ीका मुक़र्रर किया हुआ

कोई शख़्स कोई जुर्म करके भागजावे, या कोई शख़्स तीसरी शर्तमें लिखे हुए क़ाइदों के बर्ख़िलाफ़ कोई क़ुसूर करके भागजावे, तो जोधपुरकी सर्कार उसके जुर्मकी काफ़ी गवाही पहुंचनेपर, उसको गिरिफ़्तार करने और कही हुई हद्दोंके भीतर अंग्रेज़ी हाकिमोंके सुपुर्द करनेके लिये हर तरह कोशिश करेगी, जिस हालतमें कि वह जोधपुरके इलाक़हके किसी हिस्सहमें होकर गुज़रा हो, या कहीं आश्रय लिया हो.

शर्त १७– इस अ़हृदनामहकी कोई शर्त कामिल नहीं समझी जावेगी, जबतक कि सर्कार अंग्रेज़ी कही हुई हद्दोंके भीतर नमकके कारख़ानहका काम दरहक़ीक़त न संभाल लेवे.

काम संभालनेकी तारीख़ सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करसक्ती है; शर्त यह है, कि अगर तारीख़ १ मई सन् १८७१ ई० को या उसके पेश्तर काम न संभाला जावे, तो इस अ़हृदनामहकी शर्तें मन्सूख़ होजावेंगी.

शर्त १८– इस अ़हृदनामहकी कोई शर्त किसी तरहपर न तो अलग की जायेगी, न बदली जायेगी, जबतक कि दोनों सर्कार पेश्तरसे राज़ी न होजावें; और अगर कोई फ़रीक़ इन शर्तोंके पूरा करनेमें कसूर या बेपर्वाई करेगा, तो दूसरा फ़रीक़ भी इस अ़हृदनामहका पाबन्द नहीं रहेगा.

मक़ाम जोधपुरमें दस्तख़त हुए, ता० १८ एप्रिल, १८७० ई०,

दस्तख़त– जे० सी० ब्रुक, कर्नेल,

क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट, मारवाड़.

मुहर,

रियासत जोधपुर. दस्तख़त– जोषी हंसराज. मुहर.

दस्तख़त– मेत्रो. मुहर.

इस अ़हृदनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिम्लेपर ता० १६ जुलाई, सन् १८७० ई० को की.

दस्तख़त– सी० यू० एचिसन,

क़ाइम मक़ाम सेक्रेटरी, गवर्मेण्ट हिन्द,

फ़ॉरेन डिपार्टमेण्ट.

इश्तिहार.

फ़ॉरेन डिपार्टमेण्ट ता० ३० नोवेम्बर, सन् १८७० ई.

जो कि तारीख़ १८ एप्रिल सन् १८७० ई० के अ़हृदनामहसे, जो सर्कार अंग्रेज़ी

और श्रीमान् महाराजा जोधपुरके आपसमें सांभर झीलपर नमक बनाने और बेचनेका कारख़ानह चलानेके लिये सर्कार अंग्रेज़ीको लाइक़ करनेके लिये किया गया था, (और बातोंके अ़लावह) यह इक़्रार हुआ था, कि सर्कार जोधपुर, सर्कार अंग्रेज़ीको और इस कामके लिये सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से मुक़र्रर किये हुए तमाम अफ़्सरोंको इख़्तियार देवेगी, कि नीचे लिखी हुई हद्दोंके भीतर मकानों और तमाम दूसरी जगहों (खुली हों या नहीं) के अन्दर शुब्हेकी हालतमें जावें, और तलाश करें, और नमकके बनाने, बेचने व हटाने, और बग़ैर लाइसेन्सके बनाना या बाहरसे लाना रोकनेके लिये सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से मुक़र्रर किये हुए क़ाइदोंमेंसे किसीके बर्ख़िलाफ़ चलनेवाले तमाम शख़्सोंको या अकेलेको, जो कि उन हद्दोंके भीतर ज़ाहिर हो, गिरिफ़्तार करें, और जुर्माने, जेलख़ानह, माल अस्बाब ज़ब्त करनेसे, या दूसरी तरहसे सज़ा देवें; और सर्कार जोधपुरकी मन्जूरीसे सर्कार अंग्रेज़ी एक लाइक़ अफ्सरके मातह्त एक इज्लास इस मुरादसे क़ाइम करेगी, कि कहे हुए क़ाइदोंके तोड़ने वाले या उनसे निस्बत रखने वाले जुर्म करने वाले तमाम शख़्सोंकी रूबकारी कीजावे; और जुर्म साबित होनेपर सज़ा दीजावे; और सर्कार अंग्रेज़ीको यह भी इख़्तियार मिला था, कि ऐसे मुज्रिमोंको जिन्हें जेलख़ानहका हुक्म हुआ हो, या तो पेश्तर कही हुई हद्दोंके भीतर, या और कहीं, जहां मुनासिब हो, क़ैद करें.

ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ और कही हुई मन्जूरीके मुवाफ़िक़ वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्द ज़ाहिर करते हैं कि:-

अव्वल - सांभर झीलकी कचहरी, जो इश्तिहार नम्बर ५०५ पी० मुवर्रख़ह १८ मार्चके मुताबिक़ क़ाइम कीगई थी, अबसे कहे हुए मत्लबोंके लिये अ़दालत क़रार दीगई.

दुवुम - सांभर झीलकी कचहरीके इख़्तियारकी हद्द इस तौरसे फैलाईजाती है, कि इसमें सांभर झीलके या उसके सूखे तलेके वे हिस्से शामिल होवें, जिनपर जोधपुरका अकेला और अलग इख़्तियार है; तथा ज़मीनका वह टुकड़ा, जो झीलके किनारोंपर फैला हुआ है, जिसपर जोधपुरका अलग अ़मल है, जिसमें नावां, गुढ़ा, और दूसरे गांव व खेड़े शामिल हैं, और जिसकी चौड़ाई झीलके पानीकी सबसे ऊंची सत्हसे मापी जानेपर औसत दो मील है, और ज़ो कि ऊपर लिखे अ़ह्दनामहके मुताबिक़ निशान कीजायेगी.

सिवुम - इश्तिहार नम्बर ५०५ पी० मुवर्रख़ह १८ मार्चकी दफ़्अ़ तीनसे लेकर

सात तक्में, जो बातें लिखी हैं, जिनका बयान पहिले होचुका है, इस बढ़ाये हुए इस्तियारके चलानेके लिये कचहरी मज्कूरसे तऋल्लुक़ रक्खेंगी.

अह्दनामह नम्बर ४९.

तर्जमह ख़रीतह अज़् तरफ़् श्रीमान् महाराजा जोधपुर, बनाम पोलिटिकल एजेएट, जोधपुर, मुवर्रख़ह ७ मार्च सन् १८६९ ई०.

यह आपको मालूम है, कि बहुत दिनोंसे श्रीजी हुज़ूरकी मन्शा है, कि आम फ़ाइदहके लिये शाही रास्तह एक पुख़्तह सड़कका पालीके रास्ते होकर ऐरनपुरासे बड़ तक बनाया जावे, जो मारवाड़में है. पहिले मेजर निक्सन व कप्तान इम्पी साहिबके वक्तमें दर्बारकी तरफ़से हुक्म हुआ था, और जहां तहां सड़क शुरू हुई भी थी; लेकिन् श्रीजी हुज़ूरने रीयां, आगरा, और सीरोहीकी तरफ़ सफ़र किया, उसके ख़र्चके सबब उन कामोंको मुल्तवी रखना पड़ा.

आपने मुझको इत्तिला दी है, कि गवर्मेएट हिन्द बड़के घाटेमें होकर एक शाही सड़क ज़िले अजमेरमें नयानगरसे बड़तक बनानेका इरादह रखती है, और बड़के घाटेमें काम भी शुरू करदियागया है, और आपने तज्वीज़ की है, कि बड़से ऐरन-पुरातक मारवाड़में होकर सड़क मेरी तरफ़से बनाईजावे, और आपने यह भी लिखा है, कि अगर उसके बनानेके लिये दर्बार राज़ी हों, तो सर्कार अंग्रेज़ी ख़र्चका कुछ हिस्सह देकर मदद करेगी. इस बातसे दर्बारको मालूम हुआ, कि उनकी ख़्वाहिश पूरी होनेवाली है. मैंने इस बातपर अच्छी तरह ग़ौर किया, और बड़से ऐरनपुरा तक अपने इलाक़हमेंसे सड़क बनानेका और उसके लिये हुक्म जारी करनेका पुख़्तह इरादह करलिया. इसके अलावह जोधपुरसे पाली तक एक अलह्दह सड़क भी बनाई जायेगी, और उसका ख़र्च, जो ख़र्च सर्कार अंग्रेज़ी देवेगी, उससे अलह्दह रियासत मारवाड़से दियाजायेगा; और सब काम उसीकी मारिफ़त बनाया जावेगा, और दाम उसीकी मारिफ़त चुकाया जायेगा. जो कि इस बातकी इत्तिला आपको देना ज़ुरूर था, इसलिये इत्तिलाअ़न यह पेश कियाजाता है. मैंने इन दोनों सड़कोंके बनानेके बारेमें आपकी राय व आपके ख़यालात हासिल करनेके लिये आपको लिखा है, और जिस बातका फ़ैसलह होजावे, वह आपकी सलाहसे कीजावेगी.

बन्दोबस्त, जो श्रीमान् तख़्तसिंह महाराजा जोधपुर और कर्नेल जे० सी० ब्रुक, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट, मारवाड़के दर्मियान, बड़से ऐरनपुरा तक मारवाड़की रियासतके बीचसे एक शाही सड़क बनानेके वास्ते क़रार पाया.

जिन सड़कोंकी मन्जूरी महाराजाने अब दी है, वे महक्मए त
महकी मारिफ़त बनाई जावेंगी. श्री हुजूर वादह करते हैं, कि उनके
रुपया सिकए अंग्रेज़ी सालानहके हिसाबसे दियाकरेंगे, लेकिन् गवर्मेण्ट
चाहे, इस कामको चलावे; इसे देखकर खुश होंगे; लेकिन् यह स
लिया गया है, कि सालानह लाख रुपयेमेंसे कामके लिये, जो जमा
उसपर उनको व्याज देना नहीं पड़ेगा.

२– बिल्कुल कामका ख़र्च इस हिसाबसे होगा, कि मारवाड़की स
सैकड़ा और गवर्मेण्ट इंडिया बीस रुपये सैकड़ा देवे.

सड़क उसी क़िस्मकी बनाई जावे, जैसी कि रियासत कृष्ण
अजमेरके वास्ते मन्जूर हुई है, और बग़ैर रज़ामन्दी दर्बारके कोई ि
मन्जूर होगा.

मौजूदह डाक बंगलोंकी मरम्मत महक्मए तामीरातकी मा
कीजावेगी; और एक नया डाक बंगला बरमें बनाया जायेगा.

मौजूदह डाक बंगला, जो बरमें है, उसकी मरम्मत होकर मु
काममें लाया जायेगा, और तीन बंगले नये इसी मत्लबके लिये इस
दर्मियान बनाये जायेंगे.

मारवाड़ सर्कारके तऋल्लुक़ सिर्फ़ उतनी ही संभाल रहेगी, जित
करनेके लिये अलग हल्के मुक़र्रर किये जावेंगे, लेकिन् बिल्कुल कारखा
रखने वाले मुलाज़िमोंसे कुछ तऋल्लुक़ नहीं रहेगा.

३– कोई पुल, जिसका तख़्मीनन ख़र्च बीस हज़ार रुपयेसे
वह बग़ैर साफ़ मन्जूरी महाराजाके नहीं बनाया जायेगा.

४– कामके ख़र्च व तरक़्क़ीकी इत्तिला दर्बारको होती रहे,
कामोंके वास्ते, जो ठेके होते हैं, उनकी नक़्ल दर्बारमें भेजी जायेगी
जो ख़र्च लगेगा, उसका माहवारी नक़्शह पेश किया जायेगा.

दर्बार जिन हिसाबोंकी नक़्ल मांगेंगे, वे इस शर्तपर दिये जायें
करानेका बन्दोबस्त करानेको राज़ी हों.

५– दर्बारकी तरफ़से एक एजेण्ट मुक़र्रर होकर उन एग्ज़िक्यू
मुलाक़ात करेगा, जो साहिब सड़ककी दाग़बेल लगावेंगे. वह एजेण्ट
और तमाम मुआमलातमें उनकी मदद करेगा, जिसमें कि मुल्कके

जायेगा; और ज़मीन सुपुर्द करनेका सब बन्दोबस्त दर्बारका एजेण्ट करेगा.

कोई दिक़्क़त दर्पेश आनेकी सूरतमें एग्ज़िक्यूटिव इंजिनिअर, पोलिटिकल एजेण्टको लिखेंगे, जो दर्बारसे राय लेंगे. सड़कके जितने हिस्से बन चुकेंगे, जहांतक मुमकिन् हो, काममें लाये जावेंगे.

मुहर. दस्तख़त- महाराजा तख़्तसिंह.

दस्तख़त-. जे० सी० ब्रुक,

मक़ाम जोधपुर. क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट, मारवाड़.

ता० ८ एप्रिल, सन् १८६९ ई०. [वि० १९२६ प्रथम वैशाख कृष्ण १२ = हि० १२८५ ता० २६ ज़िल्हिज].

अबुन्नस्र, क़ुतुबुद्दीन मुहम्मद, मुअ़ज़्ज़म, शाह आ़लम,

बहादुर शाह, बादशाह ग़ाज़ी.

ابوالنصر قطب الدین محمد معظم شاه عالم بهادر شاه بادشاه غازی

इस बादशाहका हाल बहुत है, पर मुझे मुख़्तसर लिखना है, इसलिये लुब्बुत्तवारीख़, जगजीवनदास गुजराती मुलाज़िम बहादुरशाही, और मुन्तख़बुल्लुबाब ख़फ़ीख़ांको मुक़द्दम रखकर मिराति आफ़्ताबनुमा शाहनवाज़ख़ांकी, सैरुलमुतअख़्ख़िरीन सय्यद गुलामहुसैनकी, चहार गुल्शन चतुरमनराय कायस्थकी, व मिराति अह्मदी शैख़ अहमद गुजराती, व जंगनामह निअ़्मतख़ानआ़ली, वग़ैरह किताबोंसे कुछ कुछ मत्लब दर्ज करनेके लाइक़ चुन लिया है.

इस बादशाहका जन्म हिज्री १०५३ ता० आख़िर रजब [वि० १७०० कार्तिक शुक्ल १ = ई० १६४३ ता० १३ ऑक्टोबर] को हुआ था; शाहज़ादगीका तज़्किरह बादशाह आ़लमगीरके हालमें लिखा गया है; परन्तु जब दक्षिणसे काबुलकी तरफ़ उनको बादशाहने रवानह किया था, वहांसे शुरू किया जाता है :-

सन् ११०५ हि०, जुलूसी ३८ आलमगीरी तारीख़ ५ शव्वाल [वि० १७५१ ज्येष्ठ शुक्ल ७ = ई० १६९४ ता० ३१ मई] को आलमगीरने बहादुरशाहको बीजापुरसे राजधानीकी तरफ़ रवानह किया, क्योंकि शाहज़ादह आज़मसे इनकी अदावत होगई थी; जब इनको बादशाहने कैद किया, तब आज़मको तख़्तके दाहिनी तरफ़ बैठक मिली; फिर यह क़ैदसे छूटे, तो बादशाहने इनको उसी जगह बिठाया; आज़म शाहने धक्का देकर इनकी जगह बैठना चाहा, लेकिन् आलमगीरने उसे हाथ पकड़कर बाईं तरफ़ बिठादिया; और आगे बखेड़ा न बढ़नेके ख़यालसे शाहआलम बहादुरशाहको इन्तिज़ाम करनेके लिये भेजदिया. हिज्री ११०६, जुलूसी सन् ३९ आलमगीरी ता० ९ शव्वाल [वि० १७५२ ज्येष्ठ शुक्ल ११ = ई० १६९५ ता० २४ मई] को वह आगरे पहुंचे; और हिज्री ११०७, जुलूसी सन् ४० आलमगीरी ता० १५ ज़िल्हिज [वि० १७५३ श्रावण कृष्ण १ = ई० १६९६ ता० १४ जुलाई] को आगरेसे इसलिये रवानह हुए, कि शाहज़ादह अक्बरके ईरानसे क़न्धारकी तरफ़ आनेकी ख़बर मिली; तब ये दिल्ली पहुंचे, और वहांसे हिज्री ११०८, जुलूसी सन् ४० ता० ११ मुहर्रम [वि० श्रावण शुक्ल १३ = ई० ता० १० ऑगस्ट] को रवानह होकर ता० २ रबीउ़ल अव्वल [वि० आश्विन शुक्ल ४ = ई० ता० ३० सेप्टेम्बर] को लाहौर पहुंचे; ता० ९ रबीउ़स्सानी [वि० कार्तिक शुक्ल ११ = ई० ता० ५ नोवेम्बर] को मुल्तान दाख़िल हुए. फिर वहांसे १७ ता० रबीउ़स्सानी [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण ३ = ई० ता० १३ नोवेम्बर] को रवानह होकर ता० २३ जमादियुल अव्वल [वि० पौष कृष्ण ९ = ई० ता० १७ डिसेम्बर] को औज पहुंचे; और ता० २७ जमादियुस्सानी [वि० माघ कृष्ण १३ = ई० १६९७ ता० २० जैन्युअरी] को रावी नदीपर छांवनी डाली. हिज्री ११०९, जुलूसी सन् ४१ ता० ११ रबीउ़ल अव्वल [वि० १७५४ आश्विन शुक्ल १३ = ई० १६९७ ता० २९ सेप्टेम्बर] को फिर मुल्तान गये; वहां ख़बर मिली, कि काबुलका सूबहदार अमीरख़ां मरगया; तब ता० ५ ज़िल्हिज, ४२ जुलूसी [वि० १७५५ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ७ = ई० १६९८ ता० १७ जून] को काबुलकी तरफ़ कूच किया.

हिज्री १११० ता० २३ रबीउ़ल अव्वल [वि० १७५५ आश्विन कृष्ण ९ = ई० १६९८ ता० ३० सेप्टेम्बर] को अटक नदीपर पहुंचे; वहांसे ता० १४ रबीउ़स्सानी [वि० आश्विन शुक्ल १५ = ई० ता० २१ ऑक्टोबर] को पेशावर, और ता० २ जमादियुल अव्वल [वि० कार्तिक शुक्ल ४ = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को ख़ैबरके रास्तेसे ता० ३ जमादियुस्सानी [वि० मार्गशीर्ष शुक्ल ५ = ई० ता० ९ डिसेम्बर] को जलालाबाद पहुंचे; जुलूसी सन् ४३ ता० १७ शव्वाल [वि० १७५६

वैशाख कृष्ण ३ = ई० १६९९ ता० १८ एप्रिल] को वहांसे कूच करके ता० ४ ज़िल्हिज [वि० ज्येष्ठ शुक्ल ६ = ई० ता० ४ जून] को काबुल दाख़िल हुए; और आठ वर्ष तक वहां रहे; हर एक ज़िलेका दौरह करके इन्तिज़ाम दुरुस्त किया.

हि० १११८, जुलूसी सन् ५० तारीख़ १८ शअ्बान [वि० १७६३ मार्गशीर्ष कृष्ण ४ = ई० १७०६ ता० २५ नोवेम्बर] को जम्रोद आये. इसी वर्षकी ता० २७ ज़िल्हिज सन् ५१ जुलूसी [वि० चैत्र कृष्ण १३ = ई० १७०७ ता० ३१ मार्च] को बादशाह आलमगीरके इन्तिक़ालकी ख़बर पाई, कि २८ ज़िल्क़ाद [वि० फाल्गुन् कृष्ण १४ = ई० ता० २ मार्च] को यह हादिसह हुआ; तब सन् १११९ हि० ता० ४ मुहर्रम [वि० १७६४ चैत्र शुक्ल ६ = ई० १७०७ ता० ८ एप्रिल] को वहांसे कूच करके ता० ११ [वि० चैत्र शुक्ल १३ = ई० ता० १५ एप्रिल] को अटक उतरे, और तारीख़ ३ सफ़र (१) [वि० वैशाख शुक्ल ५ = ई० ता० ७ मई] को लाहौर पहुंचे; वहांसे रवानह होकर मंज़िल दर मंज़िल आगे बढ़े; रास्तहमेंसे ता० २५ सफ़र [वि० ज्येष्ठ कृष्ण ११ = ई० ता० २९ मई] को दिल्लीके बन्दोबस्तके लिये मुनइमखांको रवानह किया, और ता० २७ सफ़र [वि० ज्येष्ठ कृष्ण १३ = ई० ता० ३१ मई] को बादशाह खुद भी पहुंचगये. ख़फ़ीख़ां लाहौर पहुंचनेका बयान तूल तवील लिखता है, कि "अपने साथियोंको बहादुरशाहने ख़िल्अ़त, ख़िताब और मन्सब देकर शाहानह जश्नके बाद खुत्बह और सिक्कह अपने नामका जारी किया;" (२) और मुनइमख़ांने चालीस लाख रुपया, बहुतसे सामान और बार्बर्दारी समेत नज़ किया; सरहिन्दमें वज़ीरख़ांने २८ लाख रुपये पेश किये; फिर दिल्ली पहुंचे. शाहज़ादह अज़ीमुश्शान, जो बंगालहकी तरफ़ था, शाहज़ादपुरमें आलमगीरकी मौतका हाल सुनकर बड़ी फ़ौजसे आगरे आया, और अपने बापको दिल्लीसे बुलाया; बड़ा शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीन, जो मुल्तानकी सूबहदारीपर था, लाहौरसे ही बापके साथ होगया था. बादशाह बहादुरशाह दिल्लीके ख़ज़ानहसे तीस लाख रुपया लेकर आगरे पहुंचा, और आगरेका क़िलेदार बाक़ीख़ां, जो अज़ीमुश्शानसे क़िला देनेमें टालाटूली

---

(१) ख़फ़ीख़ां मुन्तख़बुल्लुबाबमें आख़िर मुहर्रम लिखता है, और यही सैरुलमुतअख़्ख़िरीनका बयान है, परन्तु जगजीवनदासका लिखना सहीह मालूम होता है; क्योंकि वह बहादुरशाहके साथ था.

(२) जगजीवनदास लाहौरसे १२ कोस पश्चिमकी तरफ़ पुले शाहदौलहमें जुलूसी जश्न होना लिखता है, उसने तारीख़ नहीं लिखी, परन्तु तीसरी तारीख़ सफ़रको लाहौर पहुंचना लिखा है, इससे क़ियास किया जाता है, हिज्री १११९ ता० ३० मुहर्रम [वि० १७६४ वैशाख शुक्ल १ = ई० १७०७ ता० ४ मई] को जश्न हुआ होगा; जैसा कि सैरुलमुतअख़्ख़िरीन वगैरहका बयान है.

करता था, बादशाहके पास ख़ज़ानह और क़िलेकी कुंजियां लेकर हाज़िर होगया. ख़फ़ीख़ांका बयान है, कि आगरेके क़िलेमें ९ करोड़ रुपये (१) की अश्रफ़ी और रुपयेके अ़लावह सोना चांदी वे सिक्केके बहादुरशाहको मिला; ये उनमेंके सिक्के हैं, जो शाहजहां बादशाहने चौबीस करोड़ रुपयेकी जमा आगरेके ख़ज़ानहमें डाली थी, उनमेंसे कुछ बादशाह आ़लमगीरने दक्षिणकी लड़ाइयोंमें ख़र्च किये, और बाक़ी रहे हुए इस वक़्त बहादुरशाहके हाथलगे. उनमेंसे चार करोड़ रुपये निकलवाकर बादशाहने अपने शाहज़ादों, सर्दारों, सिपाहियों, बेगमों वग़ैरह नये और पुराने नौकरोंको इन्आ़म, और फ़क़ीर और लावारिसोंको ख़ैरातमें बांटे. इसमें दो करोड़ उठगये, दो बाक़ी रहे.

मुनइ़मख़ांने वज़ीर आज़मका उ़ह्दह और पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और "साहिबुस्सैफ़ वल क़लम, वज़ीरि बाफ़र्हंग; उ़म्दतुल्मुल्क बहादुर, ज़फ़रजंग" का ख़िताब पाया; और हरावल फ़ौजमें अफ़्सर बनायागया (२). बहादुर शाही फ़ौजकी तादाद लुब्बुत्तवारीख़में जगजीवनदास गुजरातीने दो लाख, ख़फ़ीख़ांने अस्सी हज़ार सवार, और मिराति आफ़्ताबनुमामें शाहनवाज़ख़ांने एक लाख सवार लिखी है; बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करमें सवा लाख सवार हैं. हमें मालूम नहीं कि क़िसका लिखना सहीह है; क्योंकि उसी ज़मानहके आदमी ख़फ़ीख़ां और जगजीवन-दासमें ही इख़्तिलाफ़ है, तो अबक्या इन्साफ़ करसक्ते हैं.

अब हम शाहज़ादह आज़मका हाल लिखते हैं, बादशाह आ़लमगीरने

---

(१) ख़फ़ीख़ांने यह भी लिखा है, कि "ऐसा भी सुननेमें आया, कि अक्बर बादशाहके समयमें सौ तोलेसे पांच सौ तोले तकका रुपया और १२ माशेसे १३ माशे तककी मुहरें, जो एलची वग़ैरहको देनेके लिये एकट्ठी कीगई थीं, वे सब मिलनेसे १३ करोड़ नक़्दकी जमा बहादुरशाहको मिली;" और वह यह भी लिखता है, कि "बहादुरशाहने अपनी ज़िन्दगीमें यह ख़ज़ानह तमाम उड़ादिया, कुछ भी बाक़ी न रक्खा."

(२) बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करमें बूंदीके राव बुद्धसिंहको कुल्ल फ़ौजका अफ़्सर व उन्हींकी तज्वीज़ और बहादुरीसे बहादुरशाहकी फ़त्ह होना तवालतके साथ लिखा है; परन्तु हमको राव बुद्धसिंहका ज़िक्र फ़ार्सी तवारीख़ोंमें कहीं नहीं मिला, फ़क़त एक तवारीख़में है, जिसका कोई नाम नहीं, सिर्फ़ बहादुरशाहके शुरू अ़ह्दसे दूसरे शाहआ़लमके वक़्त तकका हाल उसमें है. उसमें राव बुद्धसिंह और कछवाहा राजा विजयसिंहको बहादुरशाहकी हरावलके शामिल होना लिखा है, और एक ख़रीतह महाराणा अमरसिंहका बुद्धसिंहके नामका हमें मिला, उसकी नक़्ल बूंदीकी तवारीख़ (पृष्ठ ११०) में लिखी गई है, जिससे मालूम होता है, कि बुद्धसिंहने इस लड़ाईमें अच्छी बहादुरी दिखलाई होगी, लेकिन् कुल्ल फ़ौजका दारोमदार मुनइ़मख़ांपर था.

अपनी बीमारीकी हालत देखकर विचार किया था, कि उत्तरी हिन्दुस्तानकी सल्तनतपर बड़ा शाहज़ादह मुअज़्ज़म रहे, दक्षिण व गुजरातका देश आज़मकी जागीरमें शुमार हो, और बीजापुर कामबख़्शको मिले; इसी विचारके अनुसार कामबख़्शको बीजापुर की तरफ़ रवानह करदिया, और मुहम्मद आज़मको मालवेकी तरफ़ भेजा. परमेश्वर की इच्छासे हि० १११८ ता० २८ ज़िल्क़ाद [वि० १७६३ फाल्गुन् कृष्ण १४ = ई० १७०७ ता० २ मार्च] को बादशाहका इन्तिकाल होगया; शाहज़ादह आज़म बीस कोसके क़रीब जाने पाया था, कि बादशाहके इन्तिकालकी ख़बर ज़ेबुन्निसा बेगमके काग़ज़से पाई, जिससे दूसरे ही दिन वह अहमदनगर लौट आया; और अपने बापकी लाशको दस्तूरके मुवाफ़िक़ कन्धा देकर औरंगाबाद पहुंचाया, जिसको खुल्दाबादमें दफ़्न किया. हि० ता० १० ज़िल्हिज् [वि० फाल्गुन् शुक्ल १२ = ई० ता० १४ मार्च] को आज़मशाह तख़्तपर बैठा, और सिक्कह व ख़ुत्बह जारी किया. इसने सिक्केमें यह शिअ्र खुदवाया था:-

सिक्कः ज़द दर जहां ब दौलतु जाह,
बादशाहे ममालिकाज़म शाह.

* سکه زد در جهان بدولت وجاه
* بادشاه ممالک اعظم شاه

अर्थ- मुल्कोंके बादशाह आज़म शाहने मर्तबे और दब्दबेके साथ दुन्यामें सिक्कह जमाया.

इसके बाद बहुतसे अमीरोंको ख़िल्अ़त, मन्सब वग़ैरह दिये गये; और वज़ीरुल्मुल्क असदख़ांको उसके उह्दहपर क़ाइम रक्खा; सिपहसालार ज़ुल्फ़िक़ारख़ां, मिर्ज़ा सद्रुद्दीन मुहम्मदख़ां सफ़वी, तर्बियतख़ां, मीर आतिश, चीनक़िलीचख़ां बहादुर, मुहम्मद अमीरख़ां, ख़ानेआलम, व मुनव्वरख़ां, वग़ैरह मुसल्मान सर्दार थे.

आंबेरका राजा सवाई जयसिंह, कोटाका राव रामसिंह हाड़ा, दतियाका राव दलपतसिंह बुंदेला, रतलामका राठौड़ शत्रुशाल वग़ैरह सब लोगों समेत हि० ता० १५ ज़िल्हिज् [वि० चैत्र कृष्ण १ = ई० १९ मार्च] को आज़मशाह अहमदनगरसे रवानह हुआ; लेकिन् आज़मशाहकी कम ख़र्ची और बदमिज़ाजीके सबब बुर्हानपुरसे चीनक़िलीचख़ां (१) और मुहम्मद अमीनख़ां वग़ैरह कई सर्दार दक्षिणको लौटगये. आज़मशाहके हंडिया नदी उतरने बाद ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने राजा शम्भाके बेटे साहूको दक्षिणमें जानेकी छुट्टी दिलवादी, जो क़रीब १८ वर्षसे बादशाही निगरानीमें

(१) यह ग़ाज़ियुद्दीनख़ांका बेटा था, जिसकी औलादमें अब हैदराबादके निज़ाम हैं.

था; साहूने दक्षिणमें पहुंचकर बीस हज़ार सवार एकट्ठे करने बाद अपने मौरूसी क़िलोंपर क़ब्ज़ह करलिया.

हि० १११९ ता० ११ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १७६४ ज्येष्ठ शुक्ल १३ = ई० १७०७ ता० १४ जून] को आज़मशाह ग्वालियर पहुंचा, बहुतसे लोग उसको छोड़कर बहादुरशाहसे जामिले; क्योंकि बहादुरशाहकी फ़य्याज़ी मश्हूर थी. आज़मशाहने अपनी बहिन ज़ेबुन्निसा बेगम वगै़रह ज़नानख़ानहको असदख़ां वज़ीर और इनायतुल्लाहख़ां वगै़रह समेत ग्वालियरमें छोड़ा, और कुछ ज़नानह और थोड़ासा ख़ज़ानह लेकर आगरेकी तरफ़ रवानह हुआ. फिर फ़ौजको मदद ख़र्च बांटकर शाहज़ादह बेदारबख़्तको हरावलका अफ्सर किया, जिसके साथ ज़ुल्फ़िक़ारख़ां, ख़ानेआ़लम, मुनव्वरख़ां, राव दलपत बुंदेला, राव रामसिंह हाड़ा, राजा जयसिंह कछवाहा वगै़रहको दिया; और आप मए शाहज़ादह वालाजाह, मिर्ज़ा सद्रुद्दीन मुहम्मदख़ां, तर्बियतख़ां, अमानुल्लाहख़ां, मुत्तलिबख़ां, सलाबतख़ां, आ़क़िलख़ां, सफ़-वीख़ां बख़्शी, सय्यद शजाअ़तख़ां, इब्राहीमबेग तब्रेज़ी व उ़स्मानख़ां वगै़रह अमीर और राजपूतोंके चला. ख़फ़ीख़ां दक्षिणसे चलनेके वक्त अस्सी नव्वे हज़ार सवार लिखता है, लेकिन् ग्वालियरसे रवानह होनेके वक्त उसने लिखा है, कि आज़मशाहके साथ पचास हज़ार सवार थे; ख़र्चकी तंगी और सख़्त मंज़िलोंके सबब इस वक्त सिर्फ़ पच्चीस हज़ार सवार रहगये थे, तो भी आज़मकी दिलेरी बढ़ती जाती थी.

आज़मशाहके ग्वालियर पहुंचनेकी ख़बर सुनकर बहादुरशाहने नसीहतके तौरपर एक ख़त लिख भेजा, कि "अपने बुज़ुर्ग बापने ख़ास दस्तख़तोंसे वसिय्यत नामह मुल्कके लिये लिखदिया है, जिसमें चार सूबे दक्षिण और अहमदाबाद वगै़रह तुम्हें दिये, इसके सिवाय एक दो सूबे और भी मैं तुमको देता हूं, मुसल्मानोंकी ख़ूंरेज़ी नहीं चाहता, क्योंकि एक ईमान्दार मुसल्मानके ख़ूनके बदले मुल्क भरका हासिल भी दियाजाये, तो बराबर नहीं होसक्ता; तुम्हें चाहिये, कि ख़ुदाकी दी हुई दौलत व बापकी वसिय्यतके मुवाफ़िक़ ख़ुश रहकर फ़सादको रोको; अगर बेइन्साफ़ीसे अलग नहीं होना चाहते, और ख़ुदाके हुक्म और बापकी फ़र्माइशसे राज़ी नहीं होते, और अपनी बहादुरीके भरोसेपर तलवार निकाली है, तो क्या ज़रूर है, कि नाशवान देशके लिये आपसकी अ़दावतसे हज़ारों जीव मारेजावें; इससे बिह्तर है, कि हम तुम दोनों अकेले मुक़ाबलह करलेवें, फिर देखना चाहिये, कि ख़ुदा किसकी मदद करता है." यह पैग़ाम देकर ख़ानेज़मांख़ां अस्फ़हानीको भेजा था, जिसे पढ़कर आज़मशाह ख़फ़ा हुआ, और कहा, कि उस कम अ़क़्ल (बहादुरशाह) ने गुलिस्तां भी नहीं पढ़ी है, जिसमें शैख़ सअ़्दीका क़ौल है:-

दो बादशाह दर इक्लीमे न गुन्जन्द, व दह दर्वेश दर गिलीमे बु खुसपन्द.

دو بادشاه در اقلیمی نگنجند ۰ و ده درویش در گلیمی بخسپند *

अर्थ- दो बादशाह एक विलायतमें नहीं समाते, और दस फ़क़ीर एक कम्लीमें सो जाते हैं.

फिर आस्तीन चढ़ाकर शाहनामहका यह शिअ्र पढ़ा :-

शिअ्र.

चु फ़र्दा बरायद बलन्द आफ्ताब,
मनो गुर्जु मैदानु अफ़्रासियाब (१).

چو فردا بر آید بلند آفتاب *
من و گرز و میدان و افراسیاب *

अर्थ- कल सूर्य निकले, तो मैं हूंगा, और गुर्ज़, मैदान और अफ़्रासियाब होगा. खानेज़मांको सख्त कलाम कहकर निकलवा दिया, और कहा, कि इसे ज़िन्दह न छोड़ो; तब ज़ुल्फ़िक़ारखांने कहा, कि एल्चीको मारना मना है. इस तरह खानेज़मां वापस आया. बहादुर शाहने भी अपना पेशखेमह जाजबमें खड़ा किया, और रुस्तमदिलखांको थोड़े अमीर और तोपखानह साथ देकर आप शिकारके लिये गया; क्योंकि लड़ाई करनेका विचार बीस तारीखको था; लेकिन् आज़मशाहने दो दिन पहिले यानी हि॰ ता॰ १८ रबीउ़ल‌अव्वल [वि॰ १७६४ श्रावण कृष्ण ४ = ई॰ १७०७ ता॰ १९ जुलाई] को हमलह करदिया. पेशखेमहका अफ़्सर शाहज़ादह अ़ज़ीमुश्शानको मुक़र्रर किया, और उसका मददगार मुनइमखांके बेटे खानेज़मांको बनाया; शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीन वगैरह तीनों शाहज़ादोंके साथ चग़त्ताखां बहादुर फ़तहजंग, हसनअ़लीखां, हुसैनअ़लीखां वगैरह सय्यद बारहके और बहादुरअ़लीखां, इलाहवर्दीखां, हिज़ब्रखां, तहव्वुरखां, रुस्तमदिलखां, सादातखां, सैफ़खां, शहामतखां, इनायतखां सादुल्लाहखां वज़ीरका पोता, मक़्सूदखां, फ़तहमुहम्मदखां, जांनिसारखां, आतिशखां, मिर्ज़ा राजा विजयसिंह (२) कछवाहा, राजा अनूपसिंह, बाज़खां वगैरहको हुक्म दिया, कि मुक़ाबलहको तय्यार रहें.

---

(१) यह रुस्तमके मुक़ाबिल तूरानका एक बादशाह था.

(२) यह आंबेरके महाराजा सवाई जयसिंहका छोटा भाई था, परन्तु जयसिंहके आज़मकी तरफ़ होनेसे बहादुरशाहने विजयसिंहको मिर्ज़ा राजाका खिताब देकर आंबेरका मालिक क़रार दिया था.

आज़मशाहने भी अपनी फ़ौजकी तर्तीब की, शाहज़ादह मुहम्मद बेदारबख़्तको हरावल बनाया, जिसके साथ जुल्फ़िक़ारख़ां बहादुर नुस्रतजंग, ख़ानेआलम मुनव्वरख़ां दक्षिणी, अमानुल्लाहख़ां, ख़ुदावन्दहख़ां, राव दलपत बुंदेला, राव रामसिंह हाड़ा, रतलामका शत्रुशाल राठौड़ व मुर्शिदक़ुलीख़ां वग़ैरह बहुतसे नामी बहादुर मए तोपख़ानहके मुक़र्रर कियेगये. शाहज़ादह वालाजाहको बाईं तरफ़ तईनात करके अमानुल्लाहख़ां, अब्दुल्लाहख़ां, हसनबेग वग़ैरहको साथ दिया; और दूसरी तरफ़ शाहज़ादह वालातबारको अफ़्सर बनाया, जिसके साथ सुलैमानख़ां पन्नी, उमरख़ां, उस्मानख़ां, अब्दुल्लाहख़ां, सलाबतख़ां, आक़िलख़ां, हमीदुद्दीनख़ां, अमीरख़ां, मुत्तलिबख़ां, मिर्ज़ा सद्रुद्दीन मुहम्मदख़ां सफ़वी, और सफ़वीख़ां वग़ैरह बहुतसे बहादुरोंको दिया.

आज़मशाह मुक़ाबिल फ़ौजकी ज़ियादतीका कुछ ख़याल न करके शेरके मानन्द बढ़ता था, जिसकी हरावल बहादुरशाहके पेशख़ेमोंपर जागिरी, और तोपख़ानह लूटकर डेरे जलादिये; डेरोंके मुहाफ़िज़ कितने ही भागगये, और मारेगये. इससे बहादुरशाही फ़ौजमें तहलका मचगया; जुल्फ़िक़ारख़ां वग़ैरहने आज़मशाहसे अर्ज़ किया, कि आज फ़त्हका शादियानह बजाकर लड़ाई मौक़ूफ़ रक्खी जावे, क्योंकि इस फ़त्हयाबीसे दूसरी तरफ़के बहुतसे लोग इधर आमिलेंगे; लेकिन् इस बातको आज़मशाहने क़ुबूल न किया, और फ़ौजको तेज़ीसे बढ़नेका हुक्म दिया. उधरसे अज़ीमुश्शान अपनी फ़ौजको बढ़ाकर मुक़ाबलहको आया, और बहादुरशाहके पास शिकारगाहमें लड़ाईकी ख़बर पहुंचाई, कि आप जल्दी तशरीफ़ लावें.

दोनों तरफ़से तोप और बाण चलने लगे; और मस्त हाथी, जिनकी पीठपर पाखरें और सूंडोंमें तीन तीन मनकी ज़ंजीरें थीं, दोनों तरफ़से बढ़ाये गये; ख़ूब लड़ाई होरही थी; और तरफ़ैनसे बहादुर बढ़ते जाते थे; ऐसी भारी लड़ाई हुई कि जिसको बर्बादीका नमूना कहना चाहिये. इसमें राव दलपत बुंदेला और राव रामसिंह हाड़ा, जो आज़मशाहकी फ़ौजमें शामिल थे, लड़ाईमें बहादुरीसे काम आये; और बहादुरशाहकी फ़ौजका हरावली अफ़्सर बाज़ख़ां भी मारा गया. फिर मुनव्वरख़ां और ख़ानेआलम दक्षिणी, जो बहादुर थे, आज़मशाहकी फ़ौजसे आगे बढ़े; और लड़ते भिड़ते अज़ीमुश्शानके हाथी तक पहुंचगये; उस शाहज़ादहपर मुनव्वरख़ांने बर्छा चलाया, जिससे अज़ीमुश्शान तो बचगया, पर जलालख़ां क़रावल ज़ख़्मी हुआ, जो उसकी ख़वासीमें बैठा था; मुहम्मद अज़ीमने तीरसे मुनव्वरख़ांको मारलिया. इसी तरह ख़ानेआलमने शाहज़ादहपर बर्छा चलाया, जिससे भी शाहज़ादह बचगया, और

जलालख़ांने गोलीसे ख़ानेआलमको मारलिया. इसी अर्सेमें रफ़ीउल्क़द्र और मुइज़्ज़ुद्दीन मए फ़ौजके आपहुंचे; शाहज़ादह बेदारबख़्त मस्त हाथीके मानन्द अ़ज़ीमुश्शानपर चला; हसनअ़लीख़ां और हुसैनअ़लीख़ां सवारियोंको छोड़कर बेदारबख़्तपर टूट पड़े, और रुस्तमअ़लीख़ां, नूरुद्दीनख़ां, हफ़ीज़ुल्लाहख़ां वग़ैरह पांच सर्दार हुसैनअ़लीख़ां और हसनअ़लीख़ांकी मददपर जापहुंचे; उधर बेदारबख़्तकी तरफ़से शजाअ़तख़ां और मस्तअ़लीख़ांने भी सवारियोंको छोड़कर सय्यदोंसे मुक़ाबलह किया, और मुनइमख़ां ख़ानेज़मां मए अपने बेटेके ज़रूमी हुआ. मुन्तख़बुल्लुबाबमें ख़फ़ीख़ांने इतना ही लिखा है, कि उस तरफ़ शाहज़ादह बेदारबख़्त मारागया; ऐसा ही बयान जगजीवनदासका है; लेकिन् एक किताबसे, जिसमें शाहआ़लम बहादुरशाहके समयसे दूसरे शाहआ़लमके ३० जुलूस तकका बयान है, और जिसके मुसन्निफ़का या किताबका नाम कुछ नहीं है, और हमने उसका नाम 'ख़ानदानिआ़लमगीरी' रक्खा है, इस तरहपर ज़ाहिर होता है, कि बेदारबख़्त अ़ज़ीमुश्शानके हाथी तक पहुंच गया, तब अ़ज़ीमुश्शानने कहा, कि ऐ भाई! क्यों नाहक़ ज़िन्दगी खोता है, यह दोबारह न आवेगी; बेदारबख़्त बोला, कि हमारी तुम्हारी यही मुलाक़ात है, और एक तीर मारा, जिससे अ़ज़ीमुश्शान तो बचगया, पर उसके ख़वासीवालेकी बाज़ूपर जा लगा, तब अ़ज़ीमुश्शानने बेदारबख़्तकी छातीमें बन्दूक़ मारी, जिससे उसका काम तमाम हुआ. यह ख़बर आज़मशाहने सुनते ही बड़े दर्दके साथ आह खेंची, और मस्त हाथीकी तरह बहादुरशाहकी फ़ौजपर टूट पड़ा; मुहम्मद इब्राहीमबेग तब्रेज़ी घोड़ा कुदाकर आज़मशाहके पास आ बोला, कि आप नौकरोंका हमलह देखिये, वह सवारी छोड़कर खूब लड़ा, और मारागया. इसी अर्सेमें एक ज़ंबूरेका गोला शाहज़ादह वालाजाहके लगा, और वह मरगया; दूसरे गोलेने वालाजाहकी बीबीका काम तमाम किया, जो हाथीकी अ़म्बारीमें सवार थी.

आज़मशाह दर्द फ़र्ज़न्दसे बेताब लड़रहा था, इसी अर्सेमें एक तेज़ आंधी बहादुरशाहके लश्करकी तरफ़से आज़मशाहके साम्हने आई, जिसका यह असर था, कि गर्द और गुबारसे आंखें मिचने लगीं, और तीर बन्दूक़ वग़ैरह हथियार बेकार होगये, दोनों तरफ़के तोपख़ानोंका धूआं आज़मशाहकी फ़ौजपर गिरनेसे अंधेरा छागया. तर्बियतख़ांने आज़मशाहकी तरफ़से बढ़कर दो बन्दूक़ चलाईं, परन्तु ख़ाली गईं, और दूसरी तरफ़की बन्दूक़से वह मारागया. आज़मशाह बढ़ बढ़कर हमलह करता था, जिससे इनायतख़ां सादुल्लाहख़ांका पोता, सुल्तानख़ां, तहव्वुरख़ां वग़ैरह १४ पन्द्रह नामी सर्दार बहादुरशाहकी तरफ़के मारेगये; आज़मशाहकी तरफ़से

सफ़वीख़ां, मुर्शिदकुलीख़ां, कोकलताशख़ां, सय्यद यूसुफ़ख़ां, मस्तअ़लीख़ां, शजाअ़तख़ां, अशरफ़ख़ां, शरीफ़ख़ां, ज़ियाउल्लाहख़ां, उस्मानख़ां, वग़ैरह ५२ के क़रीब नामी आदमी मारेगये. ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके होंटपर ज़ख़्म लगा, तब उसने आज़मशाहके पास पहुंचकर कहा, कि आपके बाप दादों व और भी बादशाहोंपर ऐसा वक़ आगया था, कि वह लश्करसे अलग होगये, और जानें बचाईं, फिर वक़ आनेपर अपनी मुराद पूरी की; अब आपको भी वैसा ही करना चाहिये. आज़मशाहने गुस्सह होकर कहा, कि "बहादुरजी आप अपनी जानको, जहां चाहें, सलामतीसे लेजावें, (१) हमको तो इस ज़मीनसे हिलना मुश्किल है, बादशाहोंको तख़्त मिले, या तख़्तह (मुर्दोंको निल्हानेका तख़्तह)", तब ज़ुल्फ़िक़ारख़ां मए हमीदुद्दीनख़ांके ग्वालियर चला गया.

आज़मशाह ज़ख़्मी शेरके मानन्द चारों तरफ़ भटकता था, और कहता था, कि बहादुरशाह नहीं लड़ता, खुदा मुझ कम्बख़्तसे फिरगया है; उसने अपने शाहज़ादह आ़लीतबारको बच्चा होनेके सबब अपने पास हौदेमें बिठाया था, जिसे तीर वग़ैरहकी चोटसे बचाता रहा; पर वह बच्चा शेर बच्चेकी तरह खुद लड़ाई करना चाहता था, आज़मशाह उसे रोकता था; इस लड़ाईमें ख़ास आज़मशाहके कई हाथी-बान मारेगये थे, और ज़ख़्मी होनेसे हाथी भी चिल्ला रहाथा; लेकिन् वह ज़ख़्मी शेर हौदेसे पैर निकालकर हाथीको भी रोकता था; उसी हालतमें आज़मशाहकी पेशानीमें एक गोली लगी, जिससे वह दुन्यासे कूच करगया. ख़ानदानिआ़लमगीरीमें शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीनके हाथकी गोली लगनेसे उसका माराजाना लिखा है.

सन् १११९ हि० ता० १८ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १७६४ आषाढ़ कृष्ण ४ = ई० १७०७ ता० १९ जून] को दो घड़ी दिन रहे आज़मशाह मारागया; रुस्तमअ़लीख़ां हाथीपर चढ़कर उसका सिर काट लाया, और बहादुरशाहके साम्हने डाला; बहादुरशाहकी आंखोंमें आँसू भरआये. इसी अ़र्सेमें अ़ज़ीमुश्शान वग़ैरह चारों शाहज़ादों व कुल सर्दारोंने आकर मुबारकबाद दी, और आज़मशाहके शाहज़ा-दह आ़लीतबार व बेदारबख़्तके बेटे बेदारदिल और सईदबख़्तको हाज़िर किया; और लूटनेसे जो सामान बचा, वह बहादुरशाहके क़ब्ज़हमें आया. बहादुरशाहने उन यतीम शाहज़ादोंको बग़लमें लेकर तसल्ली दी, और पास रक्खा; आज़मशाह, बेदारबख़्त और वालाजाहकी लाशोंको दफ़्न करनेका हुक्म दिया. आगरे पहुंचकर बादशाह दूसरे दिन

(१) ख़ानदानिआ़लमगीरीमें लिखा है, कि आज़मशाहने गुस्सहमें आकर ज़ुल्फ़िक़ारख़ांपर तीर मारा, पर छोटा तीर होनेसे उसके दो दांत गिरगये.

मुनइमखांके घरपर गये; उसकी ख़िद्मतोंके एवज़ "ख़ानख़ानां बहादुर, ज़फ़रजंग, यार वफ़ादार" का ख़िताब व सात हज़ारी ज़ात व सवार जिनमें पाँच हज़ार सवार दो अस्पह सिह अस्पह थे, और एक करोड़ रुपया नक़्द व सामान इनायत करके विज़ारतका उह्दह सौंपा; उसके बड़े बेटे नईमख़ांको "ख़ानेज़मां बहादुर" का ख़िताब, पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर तीसरे दरजहका बख़्शी बनाया; उसके छोटे बेटेको "ख़ानह-ज़ादख़ां" का ख़िताब और चार हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और चारों शाह-ज़ादोंको तीस तीस हज़ारी ज़ात व बीस बीस हज़ार सवारका मन्सब और बड़े शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीनको "जहांदारशाह बहादुर" का ख़िताब, मुहम्मद अज़ीमको "अज़ीमुश्शान बहादुर", और रफ़ीउल्क़द्रको "रफ़ीउश्शान बहादुर" और खुजिस्तह अख़्तरको "जहांशाह बहादुर" का ख़िताब दिया. इन चारों शाहज़ादोंको हुज़ूरमें नौबत बजाने व पालकीमें सवार होनेका हुक्म दिया. असलाख़ांको "चग़त्ताख़ां फ़तहजंग" का ख़िताब, सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया, बूंदीके बुधसिंह को "राव राजा" का ख़िताब व पांच हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब, नौबत और कई पर्गने दिये (१).

इनके सिवाय बहुतसे लोगोंको इन्आम, ख़िताब और मन्सब मिला. यह बादशाह फ़य्याज़ी और रह्म दिलीमें अपने ख़ानदान वालोंसे बढ़कर था, लेकिन् बादशाहोंको बे मौक़ा रह्म दिली करनेसे नुक़्सान होता है; नेक दिल होना तो अच्छा है, लेकिन् डरानेको बनावटी गुस्सह भी रखना चाहिये. इस बादशाहकी नेक मिज़ाजी और रह्म दिलीसे नौकर ग़ालिब होगये; मसल मश्हूर है, कि "ऐसा कड़वा भी न हो, कि थूक देवें, और ऐसा मीठा भी न हो, जो निंगल जावें." राजा बादशाहोंके लिये यह कहावत बहुत ठीक है. अन्तमें बहादुरशाहकी रहम दिलीका नतीजह यह हुआ, कि इसके बाद बादशाहतको ख़लल पहुंचा. बादशाहने ग्वालियरसे असदख़ां वज़ीरको और शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा वग़ैरह बेगमातको बुलाया; असदख़ां अपने बेटे ज़ुल्फ़िक़ारख़ां समेत हाथ बांधकर हाज़िर हुआ; बादशाहने बहुत ख़ातिर की, और शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा बेगमको बादशाह बेगमका ख़िताब और दूनी तन्ख़्वाह करदी.

---

(१) यह ज़िक्र फ़ार्सी मुवर्रिख़ोंने छोड़दिया है, इनका लड़ाईमें शामिल होना भी सिर्फ़ ख़ानदानि-आलमगीरीमें ही लिखा है; इसी तरह दूसरे हिन्दू राजाओंका भी हाल कम लिखा गया है, परन्तु रावराजा बुधसिंहको ख़िताब, मन्सब, व नौबत मिलना उस ख़रीतहसे भी साबित है, जो महाराणा अमरसिंह २ ने बुधसिंहके नाम लिखा-(देखो पृष्ठ ११०).

अमीरुल्उमरा असदख़ांको "निज़ामुल्मुल्क आसिफ़ुद्दौलह" का ख़िताब और वकील मुल्क़ (मुसाहिब आला) बनाकर ख़िल्अ़त वग़ैरह बहुतसा सामान दिया. कई पास वालोंने बादशाहसे कहा, कि यह आज़मशाहके शरीक था, जिसपर बादशाहने जवाब दिया, कि यह दक्षिणमें था, अगर हमारे बेटे भी वहां मौजूद होते, तो उनको भी लाचार ऐसा ही करना पड़ता. ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और "सम्सामुद्दौलह, अमीरुल्उमरा बहादुर, नुस्रत-जंग" का ख़िताब, और मीरबख़्शीका उहदह दिया; मिर्ज़ा सद्रुद्दीन मुहम्मदख़ां सफ़वीको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब, और "हिसामुद्दौलह मिर्ज़ा शाहनवाज़ख़ां" का ख़िताब दिया.

निदान बहादुरशाहने सब अपने बेगाने, छोटे बड़े नौकरोंको इन्आ़म जागीरें देकर खुश किया; असदख़ांको कहा, कि तुम दिल्ली जाकर आराम करो, और वकालतका काम तुम्हारा बेटा ज़ुल्फ़िक़ारख़ां देता रहेगा. कुल कामका मुख़्तार वज़ीरुल्मुल्क मुनइमख़ां था, जिसने बड़ी ईमानदारी और नेक नामीसे काम किया. बहादुरशाहने सिक्कहमें शिअ़्र व तारीफ़ वग़ैरह कुछ न रक्खी, सिर्फ़ एक तरफ़ शहरका नाम और दूसरी तरफ़ बादशाहका नाम था.

इन्हीं दिनोंमें बादशाहको यह ख़बर मिली, कि महाराणा अमरसिंहकी मदद और आंबेरके राजा जयसिंहकी मिलावटसे महाराजा अजीतसिंहने जोधपुर और मारवाड़पर क़ब्ज़ह करके गायका मारना, आज़ान (बांग) का देना बन्द किया; और बादशाह आलमगीरने जिन मन्दिरोंको तुड़वाकर मस्जिदें बनवाई थीं, उन्हें गिरवाकर मन्दिर बनवा लिये; इसपर बादशाहने राजपूतानहकी तरफ़ कूचका झंडा खड़ा किया, और हिज्री ता० ७ शअ़्बान [वि० कार्तिक शुक्ल ९ = ई० ता० ४ नोवेम्बर] को रवानह होकर आंबेरके रास्तेसे अजमेरके पास पहुंचा; शाहज़ादह अ़ज़ीमुश्शानको ख़ानख़ानां मुनइमख़ां वग़ैरह कई सर्दारोंके साथ फ़ौज देकर मारवाड़की तरफ़ भेजा; और आप भी जोधपुरसे छः कोसपर जा ठहरा. वहां फ़ौजने बर्बादी करना, रअ़य्यतको लूटना शुरू किया; तब मुनासिब समझकर महाराजा अजीतसिंह, महाराजा जयसिंह समेत वज़ीर मुनइमख़ांकी मारिफ़त बादशाहके पास हाज़िर होगये. जोधपुर व आंबेरपर बादशाही क़ब्ज़ह होगया; ये दोनों राजा राठौड़ दुर्गदास समेत बादशाहके पास रहे, और बहादुरशाह पीछा अजमेर होकर राजधानीको लौटा.

इसी अ़र्सेमें दक्षिणसे ख़बर मिली, कि मुहम्मद कामबख़्शने बादशाह बनकर फ़साद उठाया है; तब बहादुरशाहने अपने भाईके नाम लिखभेजा, कि अपने बापने तुमको बीजापुरकी हुकूमत दी है, परंतु हम हैदराबादकी हुकूमत सिवाय देकर यह लिखते हैं, कि सिक्कह व खुत्बह हमारे नामका रक्खाजावे; और जो ख़िराज व तुह्फ़ह

वहांके हाकिम बादशाही सर्कारमें पहुंचाते थे, तुमसे न लिया जायेगा. यह फ़र्मान् हाफ़िज़ अहमद मोतबरखां मुफ़्तीके हाथ ख़िल्अ़त, जवाहिर, हाथी, घोड़ों समेत भेजा; मुहम्मद कामबख़्श बिल्कुल कम अ़क़्ल था, तक़र्रुबखां व इहतिदाखांके बहकानेसे बड़े बड़े पुराने सर्दार रुस्तमदिलखां, अहसनखां, सैफ़खां और अहमदखांको बेरहमीसे मरवाडाला, और उनके बाल बच्चों व नौकरोंपर भी सख़्तियां हुईं. बहादुरशाहका भेजाहुआ, एल्ची हाफ़िज़ अहमद मोतबरखां मुफ़्ती (१) फ़र्मान लेकर हैदराबाद पहुंचा, चन्द बदमआ़शोंने कामबख़्शसे कहा, कि एल्चीके साथी मौक़ा पाकर आपको गिरिफ़्तार करने आये हैं. उस बे अ़क़्लने एल्चीके साथी ७५ आदमियोंको दावतके बहानेसे बुलाकर गिरिफ़्तार करलिया, जिनमें चन्द आदमी हैदराबादके रहनेवाले भी थे, जो एल्चीकी दोस्तीसे दावत खानेमें शरीक हुए थे; वे पूछे ताछे इन बे गुनाहोंके सिर कटवाडाले, और एल्चीको सख़्त जवाब लिखकर रवानह किया; कामबख़्शके जुल्मसे बहुतसे इज़्ज़तदार लोग हैदराबाद छोड़गये. ये सब बातें बहादुरशाहके पास पहुंचती थीं.

बहादुरशाह आगरेसे ता० आख़िर ज़िलहिज [वि० चैत्र कृष्ण ऽऽ = ई० १७०८ ता० २२ मार्च] को रवानह हुआ, महाराजा जयसिंह और अजीतसिंह बादशाहके साथ थे, जो नर्मदाके किनारेसे बे इत्तिला लौट आये; क्योंकि इनको आंबेर और जोधपुर बख़्शनेका जो इक़ार था, वह पूरा न हुआ. इनका मुफ़स्सल हाल महाराणा अमरसिंह २ और महाराजा अजीतसिंहके बयानमें लिख आये हैं. बादशाहने बुर्हानपुर, बिदर होते हुए हैदराबादसे चार कोसपर हिज्री ११२० ता० १ ज़िल्क़ाद [वि० १७६५ माघ शुक्ल ३ = ई० १७०९ तारीख़ १५ जैन्युअरी] को पहुंचकर डेरा किया, और अपने सब साथियोंको होश्यार करके मोर्चा बन्दी करली. दूसरे दिन प्रभातही शाहज़ादह रफ़ीउ़श्शान और जुम्दतुलमुल्क मदारुल्-महाम ख़ानख़ानां मुनइमखां बहादुर ज़फ़रजंग, अमीरुल्उमरा ज़ुल्फ़िक़ारखां बहादुर नुस्रतजंग, दाऊदखांपन्नी, हमीदुद्दीनखां बहादुर, इस्लामखां दारोग़ह तोपख़ानहको कामबख़्शकी तरफ़ जानेका हुक्म दिया, और कहा, कि उसको समझाओ, अगर मुक़ाबलहसे पेश आवे, तो लड़ाईका ऐसा ढंग डालो, कि वह ज़िन्दह गिरिफ़्तार हो, मारा न जाय; शाहज़ादह जहांशाह अपने लश्करको लिये हुए अगली फ़ौजका मददगार रहे.

हिज्री ता० ३ ज़िल्क़ाद [वि० माघ शुक्ल ५ = ई० ता० १७ जैन्युअरी] को काम-

---

(१) ख़ानदानि आ़लमगीरीमें इस एल्चीका नाम ख़ानेज़मांखां इस्फ़हानी लिखा है.

वख़्श हाथीपर सवार होकर दूसरे हाथीपर अपने तीन बेटे मुहय्युसुन्नह वगैरह और तीसरे हाथीपर अपनी बेगमको सवार करके मए तोपख़ानहके मुक़ाबलहको आया, तोप, बन्दूक़ और तीर तेज़ीके साथ चलानेका हुक्म दिया. इस वक़्त इसके साथ सिर्फ़ तीन सौ या चार सौ सवारोंका होना खफ़ीख़ांने लिखा है; क्योंकि इसके ज़ुल्म, बदमिज़ाजी और कमअक़्क़ीसे कुल फ़ौज बिगड़कर चलीगई थी; लुच्चे शुहदे और चुग़लख़ोर भी काफ़ूर हुए. बहादुरशाहके अस्सी हज़ार सवारोंके साम्हने क्या करसक्ता था, ज़ख्मी होकर दाऊदख़ां पन्नीकी क़ैदमें आया; और जब वह बादशाही डेरोंमें लायागया, तो बहादुरशाहने हुक्म दिया, कि हिफ़ाज़त और इज़्ज़तके साथ लायाजावे; उसके इलाजके लिये जर्राह यूनानी और फ़रंगी तइनात कियेगये; कामबख़्श इलाज करानेसे इन्कारी हुआ, और शोरबह भी नहीं खाया. रातको बहादुरशाह उसके पास गये, और अपने कन्धेसे चादर लेकर उसपर डाली, बहुत प्यारके साथ ख़बर पूछकर आंखोंमें आंसू भरलाये, कहा कि हम तुमको इस हालमें देखना नहीं चाहते थे ! कामबख़्शने जवाब दिया, कि मैं भी नहीं चाहता था (१), कि तीमूरकी औलाद बेइज़्ज़तीसे गिरिफ़्तार हो. बादशाह बहुत कुछ कह सुनकर दो तीन चमचे शोरबहके पिलाकर बड़े रंजके साथ अपने डेरेमें आये; तीन चार पहरके बाद कामबख़्श और शाहज़ादह फ़ीरोज़मन्द, जो उसीके साथ ज़ख़्मी हुआ था, मरगया; और कामबख़्शकी लाश मए शाहज़ादह और एक बीबीकी लाशके दिल्लीमें हुमायूंके मक़्बरेमें दफ़्न करने को भेजीगई.

---

(१) सैरुल मुतअख़्ख़िरीनमें सय्यद गुलामहुसैन लिखता है, कि जब बादशाहने कहा, कि मैं तुम्हें इस हालतमें देखना नहीं चाहता था, तब कामबख़्शने भी वैसा ही जवाब दिया, इस बातसे लोग यह अर्थ करते हैं, कि उसने यह कहा, कि मैं भी तुमको बादशाही हालतमें नहीं देखना चाहता था; लेकिन् यह बात मुन्तख़बुल्लुबाबमें नहीं है, जिसका मुसन्निफ़ खफ़ीख़ां बहादुरशाहके साथ मौजूद था; और इसका लेख हम मूलमें लिख आये हैं. जगजीवनदास लुब्बुत्तवारीख़में जो लिखता है, उसके लेखसे दोनों भाइयोंका स्नेह अधिक पाया जाता है. वह लिखता है, कि कामबख़्श मए अपने ज़नाने और शाहज़ादोंके चार घड़ी दिन रहे बादशाही डेरोंमें इज़्ज़तके साथ लाया गया, और दर्बारख़ां नाज़िरकी हिफ़ाज़तमें रक्खा गया. रातके वक़्त खुद बादशाह अपने चारों शाहज़ादों और अमीरुल्उमरा व हमीदुद्दीनख़ां वगैरह समेत गये, और कामबख़्शका सिर अपने घुटनों पर रक्खा, तब कामबख़्शने अज़ीमुश्शानसे कहा, कि क्या हज़रत हमारे सिरपर साया डालते हैं, मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं, जो पेश करूं; तुम अर्ज़ करो, कि दो कुरआन शरीफ़, जो मेरे कुतुबख़ानहमें खुश ख़त हैं, वह क़ुबूल फ़र्मावें. तब बादशाहने कहा, मैंने क़ुबूल किया. फिर बहादुरशाहने कहा, कि हरचंद मैंने लिखा, पर कुछ फ़ाइदह न हुआ, नहीं तो तुमको इस हालमें क्यों देखता; अब भी मेरी मिहर्बानी अपने ऊपर

बहादुरशाहने तीन दिन तक मातम रक्खा, चौथे दिन सब अपने सर्दारोंको ख़िताब इन्ऋाम, इक्राम देकर हैदराबादका नाम "ख़ुजिस्तह बुन्याद" रक्खा. इन्ऋाम और ख़िताबके साथ यहां तक अपने सर्दारोंकी इज़्ज़त बढ़ाई, कि अपने साम्हने बड़े बड़े सर्दारोंको नौबत बजानेकी इजाज़त दी; तब ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने अ़र्ज़ किया, कि हुज़ूरने हमको सब तरहसे इ़ज़्ज़त और इन्ऋाम बख़्शा, और कोई आर्ज़ू बाक़ी न रही; परन्तु अदब आदाबके लिहाज़ और नौकर व मालिकका फ़र्क़ दिखानेको हुज़ूरके रूबरू मुआफ़ रहे. बादशाह कुछ अ़र्से तक उसी मुल्कमें रहकर हिज्री ११२१ ता० शुरू रबीउ़ल अव्वल [वि० १७६६ द्वितीय वैशाख शुक्ल २ = ई० १७०९ ता० १३ मई] को दिल्लीकी तरफ़ रवानह हुआ, और सारे दक्षिणकी सूबहदारी अमीरुल्उमरा ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको दी; उसने अपनी तरफ़से दाऊदख़ां पन्नी को दी, और आप बादशाहके साथ चला.

इसी वर्षके शव्वाल [वि० मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष = ई० डिसेम्बर] में नर्मदा उतरा, वहां पंजाबकी तरफ़से सिक्खोंके फ़सादकी ख़बर मिली; तब राजपूतानहकी तरफ़ चढ़ाई करनेका इरादह मौकूफ़ रखकर मुकन्दराकी तरफ़ हाड़ौती होता हुआ अजमेर पहुंचा; वहां जयपुर और जोधपुरके महाराजाओंकी दिलजमईके वास्ते महाराणा अमरसिंह २ ने उदयपुरसे वकील भेजे, जिनकी मारिफ़त राजा अजीतसिंह व राजा जयसिंहका फ़ैसलह होकर उनके मुल्क उनको मिलगये; क्योंकि बहादुरशाह इस वक्त पंजाबके फ़सादसे बिल्कुल दबा हुआ था, महाराणा अमरसिंह और महाराजा अजीतसिंहके हालमें, जो उस समयके काग़ज़ोंकी नक़्लें दर्ज की हैं, उनसे ज़ाहिर है. ख़फ़ीख़ां वग़ैरह फ़ार्सी तवारीख़ वालोंने इस हालको कम लिखा है, सिर्फ़ बादशाहकी बड़ाईकी तरफ़ निगाह रक्खी है. चौथे जुलूसका जश्न बादशाहने अजमेरमें किया (१). यह जश्न हिज्री ११२१ ता० १८ ज़िल्हिज [वि० १७६६

ज़ियादहसे ज़ियादह समझो. बादशाहने पूछा, कि तुम्हारे पास कितने सवार थे, उसने जवाब दिया, कि सौ. बादशाह बोले, कि मैं एक हज़ार सवार सुनता था; तब कामबख़्शने कहा, कि इतने होते, तो मैं अपने इरादेको पहुंचता; फिर भी ख़ुदाका शुक्र है, कि मैं अपनी मुरादको पहुंचा, मैं चाहता था, कि तख़्त पाऊं, ख़ुदाने वैसा ही किया, कि मेरा सिर आपके घुटनेपर, जो तख़्तसे भी बढ़कर है, पहुंचाया. ऐसी बातें कहनेके बाद कामबख़्श बेहोश होगया, और बादशाह भी उठकर डेरोंमें आये.

(१) ख़फ़ीख़ां १८ ज़िल्हिजको तख़्तनशीनीका जश्न लिखता है, और सैरुल मुतअख़्ख़िरीन ता० ३० ज़िल्हिज और मिराति आफ़्ताबनुमामें शाहनिवाज़ख़ां ता० १ ज़िल्हिज लिखता है. इसी तरह सब किताबोंमें जुलूसका इख़्तिलाफ़ है; ख़फ़ीख़ांका लिखना झूठ नहीं होसक्ता,

फाल्गुन् कृष्ण ४ = ई० १७१० ता० १९ फ़ेब्रुअरी] को हुआ, इसी महीनेमें अजमेरसे कूच करके दिल्लीको १२ कोस दाहिनी तरफ़ छोड़ा, और पंजाबकी तरफ़ चला; मुहम्मद अमीनख़ां, रुस्तमदिलख़ां और चूड़ामन जाटको हरावलके तौर आगे भेजा.

हि० ११२२ ता० १० शव्वाल [वि० १७६७ मार्गशीर्ष शुक्ल १२ = ई० १७१० ता० ४ डिसेम्बर] को बादशाह पंजाबमें शाह दौलहके पास पहुंचा, और सिक्खोंके बड़े बड़े हमले होने लगे; ख़ानख़ानां मुनइमख़ां, हमीदुद्दीनख़ां बहादुर, रुस्तमदिलख़ां, राजा छत्रशाल बुंदेला, फ़ीरोज़ख़ां मेवाती और चूड़ामन जाट वग़ैरह बड़े बड़े सर्दार साथ देकर शाहज़ादह रफ़ीउश्शानको सिक्खोंपर भेजा. यह लोग खूब लड़े, और दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी मारेगये; सिक्खोंने बलवागढ़का सहारा लिया, जो कठिन पहाड़ोंमें था; बादशाही लश्करने वहां भी जा घेरा, खूब लड़ाई होने और हज़ारों आदमी मरनेके बाद सिक्खोंका गुरू निकलकर हिमालयकी तरफ़ चलागया, और उसके एवज़ एक गुलाबू खत्री गिरिफ़्तार हुआ. यह धोखा होजानेके रंजसे ख़ानख़ानां मुनइमख़ां मरगया. ख़ानदानि आलमगीरीमें ख़ानख़ानांका मरना बहादुरशाहकी वफ़ातके रंजसे लिखा है, परन्तु ख़फ़ीख़ांका लिखना सहीह है, क्योंकि वह उस वक्तका आदमी है.

अब विज़ारत देनेमें बड़ा पसोपेश होने लगा, शाहज़ादह अज़ीमुश्शानकी यह राय थी, कि ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको विज़ारतका उहदह, और ख़ानख़ानां मुनइमख़ांके बेटेको दक्षिणकी सूबहदारी व बख़्शीगरी मिले, जो ज़ुल्फ़िक़ारख़ांकी सुपुर्दगीमें थी; ज़ुल्फ़ि-

---

क्योंकि वह उसके साथ रहकर हरसालका जश्न लिखता रहा. हमारे विचारसे इस इख़्तिलाफ़का यह सबब मालूम होता है, कि बहादुरशाहको हि० १११८ ता० २७ ज़िल्हिज् [वि० १७६३ चैत्र कृष्ण १२ = ई० १७०७ ता० ३० मार्च] को आलमगीरके मरनेकी ख़बर मिली, तब उसने हि० ता० ३० ज़िल्हिज् [वि० चैत्र कृष्ण ऽऽ = ई० ता० २ एप्रिल] को जमरूदमें जश्न किया, और अटक उतरनेके बाद नाज़िर मुबारक तख़्त व छत्र लाया, तब फिर हि० १११९ ता० १५ मुहर्रम [वि० १७६४ वैशाख कृष्ण ३ = ई० ता० १८ एप्रिल] को जश्न किया; तीसरी बार लाहौरसे पश्चिम १२ कोस पुले शाहदौलहमें हि० ता० ३ सफ़र [वि० वैशाख शुक्ल ४ = ई० ता० ६ मई] को जश्न करने बाद अपने नामका सिक्कह और खुत्बह जारी किया; चौथा आगरेमें आज़मपर फ़तह पाकर हि० ता० १९ रबीउल् अव्वल [वि० आषाढ़ कृष्ण ५ = ई० ता० २१ जून] को किया; तब विचारा होगा, कि किस तारीख़को जश्न मानकर सन् जुलूस जारी किया जावे; इसपर बहादुरशाहने सबको छोड़ा, और अपने बापके मरनेसे बीस दिन मातमके समझकर ता० १८ ज़िल्हिज्को क़ाइम रक्खा होगा; इस सबब कई जश्न होनेसे किताबोंमें इख़्तिलाफ़ होगया.

क़ारखांकी यह राय थी, कि मेरे बाप असदख़ांको विज़ारत मिले, और मैं अपने दोनों उह्दोंपर क़ाइम रहूं. जुल्फ़िक़ारख़ां कुल बादशाहत अपने हाथमें रखना चाहता था, और शाहज़ादह अ़ज़ीमुश्शान उसके पेचको टालता था. इस नाइत्तिफ़ाक़ीसे बादशाहने कुछ हुक्म न दिया, और यह कहा, कि जब तक वज़ीर क़ाइम न हो, शाहज़ादह अ़ज़ीमुश्शान काम चलावे, और इनायतुल्लाहख़ांका बेटा सादुल्लाहख़ां ख़ालिसहका दीवान उसका नाइब रहे. हि० ११२३ ता० आख़िर जमादियुल अव्वल [वि० १७६८ श्रावण शुक्ल १ = ई० १७११ ता० १७ जुलाई] को बादशाह लाहौर पहुंचे. इन्हीं दिनोंमें ग़ाज़ियुद्दीनख़ां बहादुरके मरनेकी ख़बर पहुंची, जो अहमदाबादका सूबहदार और हैदराबादके निज़ामका मूल पुरुष (मूरिसि आला) था. यह आ़लमगीरके शुरू अ़ह्दमें अ़क्लमन्दी और बहादुरीके सबब छोटे दरजेसे बड़े मन्सब तक पहुंचा था.

बहादुरशाह बादशाह एक दम बीमार होकर हि० ११२४ ता० २० मुहर्रम [वि० १७६८ फाल्गुन कृष्ण ६ = ई० १७१२ ता० २८ फ़ेब्रुअरी] को इस दुन्याको छोड़गया (१). यह बादशाह बहुत आ़लिम, नेकदिल, नेक मिज़ाज, सुल्ह पसन्द, रहमदिल, फ़य्याज़ और अपने मज़्हबका पाबन्द था, लेकिन् सख़्ती, या तअ़स्सुब नहीं रखता था. इसने दक्षिणसे लौटते वक़्त अजमेर मक़ामपर हुक्म दिया था, कि शीअ़ह मज़्हबके तरीक़हसे ख़ुत्बहमें हज़रतअ़ली चौथे ख़लीफ़हके नामपर "वसी" (नबीका नाइब) का लफ़्ज़ पढ़ाजावे; यह बात सुन्नियोंको बहुत बुरी लगी, यहां तक कि शाहज़ादह और बड़े बड़े सर्दार भी फ़साद बढ़ानेमें शरीक होगये; आख़िर-कार बादशाहको लाहौरके मक़ामपर अपना हुक्म मन्सूख़ करना पड़ा.

हिन्दुस्तानकी सल्तनत मुग़लियह ख़ानदानसे निकल जानेका सामान आ़लम-गीरने करलिया था, परन्तु बहादुरशाहकी नर्म मिज़ाजी और बेरोबीसे नौकर बेख़ौफ़ होकर ऐसे बढ़गये, कि आपसके झगड़ोंसे बादशाहतका नुक़्सान किया, और यह बादशाह सल्तनतको अपने साथ लेगया. इसकी लाश लाहौरसे रवानह करके कुतुब साहिबकी लाटके पास दिल्लीमें दफ़्न कीगई, जिसपर सिफ़ेद पत्थरका मक़्बरह बनाया गया.

---

(१) ख़फ़ीख़ांका बयान है, कि मिज़ाजमें ख़लल आकर सात आठ पहरमें मरा; मिराति आफ़्ताबनुमा और ख़ानदानिआ़लमगीरीमें एक दम पेटके दर्दसे मरना दर्ज है, और सैरुलमुत-अख़्ख़िरीनमें दो चार दिन पहिलेसे होश और मिज़ाजमें फ़र्क़ आने बाद फिर आ़रिज़हसे मरना लिखा है.

कर्नेल टॉड लिखता है, कि वह ज़हर देनेसे मरा. उसके एक दम मरजाने और शाहज़ादों व नौकरोंके आपसकी अ़दावतसे शायद यह बयान भी सहीह हो.

बादशाह बहादुरशाह और उसके भाइयोंकी औलादके नाम, जो उसके पास मौजूद थी, लिखे जाते हैं:-

१- मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाह, और उसके तीन बेटे अअ़ज़्ज़ुद्दीन, और अ़ज़ीज़ुद्दीन, तीसरेका नाम मालूम नहीं.

२- अ़ज़ीमुश्शान, और उसके तीन बेटे मुहम्मद करीम, फ़र्रुख़सियर व हुमायूंबख़्त.

३- रफ़ीउ़श्शान, और उसके दो बेटे रफ़ीउ़द्दरजात व रफ़ीउ़द्दौलह.

४-ख़ुजिस्तह अख़्तर जहांशाह, और उसके दो बेटे फ़र्ख़ुन्दह अख़्तर व रौशन अख़्तर.

आज़मशाहका बेटा बेदारबख़्त, और उसके बेटे वेदारदिल और सईदबख़्त.

आज़मशाहका दूसरा बेटा आ़लीतबार.

कामबख़्शका बेटा मुह्युस्सुन्नह.

बहादुरशाहकी दो बेटियां थीं.

१- दह्र अफ़्रोज़ बानु बेगम.
२- दौलत अफ़्रोज़ बानु बेगम.

इस बादशाहके वक़्में ३५००००००० रुपये सालानह आमदनी थी.

नील छन्द.

श्री जयसिंह नरेश गए शिवलोक जबैं ।
धारिय छत्र बिचित्र बली अमरेश तबैं ॥
शाहलिये बधनोर पुरादिक प्रान्तपुरा ।
लेन तिन्हैं तरफैन करी तहरीर तुरा ॥ १ ॥
ईश चितोर रु शेवक शाहनके दलजे ।
नीतिरु प्रीतिरु भीतिभरे छलतैं वलजे ॥
लै चहुवाननतैं वरजोर शिरोहिय भू ।
ख़्वाहिशके अनुसार दई अमरेशहि जू ॥ २ ॥

वग्गुर कंठल रामपुरा पति आन नये ।
तीन सुजानक वंधज प्रान्तन छोर गये ॥
कृष्ण जुझार रु कर्ण यथान्वय लेख भयौ ।
वीरनके इतिहासहि वीरविनोद छयौ ॥ ३ ॥
शाह वहादुरतें जयसिंह अजीत फिरे ।
वोल तिन्हैं उदयापुरमें मेहमानकरे ॥
रानसुता जयसिंह विवाह भयो जव ही ।
राजनकी धरपै मरहट्ट गिरे तवही ॥ ४ ॥
रान लये वल संग दुहूं महिपाल चले ।
ख्वाहिशके अनुसार जिन्हैं निज राज मिले ॥
राज प्रवंध अनन्य जवे अमरेश रचे ।
ऊमरके पकवान सवै वहि ठोर पचे ॥ ५ ॥
यैं अमरेश नरेश जितेक प्रवंध किये ।
ताहि मगे उदयापुर आजहु जात किये ॥
मारव जोधपुरेशहिको इतिहास लिख्यो ।
शाह वहादुर वृत्त यथाविधि देख दिख्यो ॥ ६ ॥
सज्जन रान अपेक्षितके हित हौंन हितैं ।
शासन श्री फतमाल नृपालहि सिद्ध चितैं ॥
श्यामलदास कियो अमरेश जुखंड यहै ।
वीरविनोद महा इतिहास अखंड रहै ॥ ७ ॥

महाराणा अमरसिंह दूसरे.

दसवां प्रकरण समाप्त.

इग्यारहवां प्रकरण.

महाराणा संग्रामसिंह दूसरे.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १७६७ पौष शुक्ल १ [हि० ११२२ तारीख़ २९ शव्वाल = ई० १७१० ता० २२ डिसेम्बर] और राज्याभिषेकोत्सव विक्रमी १७६८ ज्येष्ठ कृष्ण ५ [हि० ११२३ ता० १९ रबीउ़ल अव्वल = ई० १७११ ता० ८ मई] को हुआ. इस राज्यमें पहिलेसे यह दस्तूर चला आता है, कि जब महाराणाका इन्तिक़ाल हो, उसी दिन उनका बेटा, चाहे ख़ास हो, अथवा गोद लिया हुआ, गद्दीपर बैठता है; और कुछ अर्से बाद शुभ मुहूर्त निकलवाकर गद्दी नशीनीका जल्सह किया जाता है; उस वक्त तमाम राजाओंको न्योता भेजा जाता है; और सब बहिन, सुवासिनी व कुन्बेवालोंको एकट्ठा करते हैं; शास्त्रके अनुसार सब तीर्थोंका जल और अग्निहोत्रका सामान, वस्त्र, शस्त्र और गहना वग़ैरह एकट्ठा करके महाराणा पाटवी महाराणीके साथ गद्दीपर बैठते हैं, तब सब सर्दार या राजा लोग, जो उस वक्त हों, नज़ देते हैं. महाराणा सबकी नज़ बैठे हुए लेते हैं, उस वक्त किसीको ताज़ीम नहीं

दीजाती. जब महाराणा अमरसिंह २ का देहान्त हुआ, तो महाराजा सवाई जयसिंह जयपुरसे आये, और टीकेके जल्सहमें भी शामिल हुए; महाराणाने उनसे कहलाया, कि इस वक्त आपकी बे अदबी होगी, इसलिये अपने डेरेको पधारें; तब महाराजाने कहा, कि अपने धर्मशास्त्रसे पुराने क़ाइदोंके मुताबिक़ गद्दीनशीनीके वक्त राजामें दशों दिग्पालका अंश आजाता है, इसलिये मैं आपको रामचन्द्र और महाराणीको जानकीका स्वरूप जानता हूं, सो दर्शनोंके वक्त मुझे दूर न रखना चाहिये. इस तरह प्रीतिके साथ महाराजा जयसिंह भी रहे. महाराणाने इस दस्तूरसे फ़ुर्सत पाकर कुल्ल ख़ैरख़्वाह और रिश्तहदारोंको इज़्ज़तके साथ विदा किया, और महाराजा सवाई जयसिंह भी जयपुरको गये.

महाराणा अमरसिंह २ ने, जो क़ाइदे जारी किये थे, इन्होंने उनको अच्छी तरहसे मज़्बूत किया; और मांडलगढ़, पुर मांडल व बधनौरके पर्गने महाराणा अमरसिंह २ ने बादशाह आलमगीरके मरते ही मेवाड़में मिलालिये थे, लेकिन् बहादुरशाहकी तरफ़से ख़ालिसहमें गिने जाकर बख़्शिशका फ़र्मान् न आया, जिसके लिये महाराणा अमरसिंह २ भी कोशिश करते रहे, जो उनके अह्दके काग़ज़ोंसे ज़ाहिर है. महाराणा अमरसिंह २ का जब अचानक देहान्त होगया, तो यह ख़बर सुनकर बहादुरशाहने टीकेका दस्तूर भेजा हुआ भी वापस मंगानेका हुक्म दिया, और ऊपर लिखे पर्गनोंकी कार्रवाई बन्द रही; लेकिन् ख़ानख़ानां मुनइमखां वज़ीर, जो राजाओंका तरफ़दार था, वह इन्हीं दिनोंमें मरगया; और अमीरुल्उमरा जुल्फ़िक़ारख़ां, जो उसके बर्ख़िलाफ़ था, उसने मुनइमख़ांके बनाये कामोंको बिगाड़नेकी नियतसे पुर मांडल वगैरह पर्गने मेवाती रणबाज़ख़ांको और मांडलगढ़का पर्गनह बादशाहसे कहकर नागौरके राव इन्द्रसिंहको जागीरमें लिखवा दिया.

शाहज़ादह अज़ीमुश्शानने बादशाहसे कहा, कि पंजाबकी बग़ावत तेज़ हो रही है, और राजपूतानहमें फिर इस जागीरके देनेसे और भी फ़साद बढ़नेका अन्देशह है; लेकिन् शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीन व जुल्फ़िक़ारख़ांने बादशाहको उलटा सीधा समझाकर जागीरका फ़र्मान लिखवा दिया. इसपर मेवाड़के वकील किशोरदासको शाहज़ादह अज़ीमुश्शानने सब बातें कहकर इशारह करदिया, कि जागीरपर मेवातियोंका क़ब्ज़ह मत होनेदो, अगर वे जंगी कार्रवाई करें, तो मारडालो; हम बादशाही गुस्सहको ठंडा करलेंगे. इस बातको राव इन्द्रसिंह जानता था, कि यह जागीर मिलनेमें जानका ख़तरह है, किनारा करगया; लेकिन् बिचारे मेवाती शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीन और अमीरुल्उमरा जुल्फ़िक़ारख़ां मीर बख़्शीकी हिमायतके नशेमें पुर मांडलकी जागीरपर क़ब्ज़ह करनेको रवानह होगये. जुल्फ़िक़ारख़ांने पांच सात हज़ार चुने हुए आदमियोंकी फ़ौज

उनके साथ देदी थी, और रणबाज़ख़ांने अपनी ख़ास जमइयत भी साथ लेली थी. बाज़े आदमियोंने मेवातियोंको बहकानेके लिये राठौड़ कृष्णसिंह, करणसिंह, और जुझारसिंहके हालकी भी मिसाल दी होगी, जिनको आलमगीरनें यह पर्गने जागीरमें दिये थे, और उन्हें महाराणासे कई बार मुक़ाबलह करना पड़ा; लेकिन् वह आलमगीरका ज़बर्दस्त ज़मानह था, जिसके रोबसे महाराणा अमरसिंह २ को किनारे रहकर पेचीदह कार्रवाई करनी पड़ी थी, तो भी ये पर्गने उनके क़ब्ज़हमें न रहे; और यह बहादुरशाही ठंडा ज़मानह, जिसमें दक्षिणी मरहटे और पंजाबी सिक्खोंका ज़ोरशोर होनेके सिवा, शाहज़ादों और वज़ीरोंकी अदावत तरक़ीपर थी; ऐसे मौक़ेपर हर एक आदमीको हौसलह होता है. महाराणा संग्रामसिंह बड़ी ताक़तवाला राजा, रणबाज़ख़ां मेवातीसे कब दब सक्ता था.

जब कभी मेवाड़के महाराणा दबाये गये, तब कुल बादशाही ताक़त काममें लानी पड़ती थी, जिसमें भी अक्बर, जहांगीर, शाहजहां और आलमगीरके वक़् राजपूतानहके दूसरे राजा शाही फ़ौजोंके शरीक होते थे, वह सब इस वक़् इन महाराणाके बर्ख़िलाफ़ नहीं थे; लेकिन् रणबाज़ख़ांको बड़े शाहज़ादह और मीरबख़्शी ज़ुल्फ़िक़ारख़ां की हिमायतका ज़ोर था, कुछ न सोचा, और राजपूतानहमें बेधड़क चलाआया. यह ख़बर महाराणा संग्रामसिंहको मिली, कि पुर मांडल और बधनौरके पर्गनोंसे हमारे आदमियोंको निकालकर नव्वाब रणबाज़ख़ां वहां अपना क़ब्ज़ह करेगा. फ़ौरन् महाराणाने अपने अहल्कार और सर्दारोंको एकट्ठा किया, सबने एक मत होकर लड़नेकी सलाह दी, और दिल्लीसे वकील किशोरदासने शाहज़ादह अज़ीमुश्शान व महाबतख़ांके इशारहसे लिख भेजा था, कि मेवातियोंको ग़ारत करदेना. महाराणाने फ़ौजकी तय्यारीका हुक्म दिया. इस फ़ौजमें शाहपुराका कुंवर उमेदसिंह, बधनौरका ठाकुर जयसिंह, बाठरड़ाका रावत् महासिंह, देवगढ़का रावत् संग्रामसिंह, सलूंबरके रावत् केसरीसिंहका भाई सामन्तसिंह व बान्सीका रावत् गंगदास वग़ैरह बहुतसे सर्दार थे.

बेगूंका रावत् देवीसिंह किसी सबबसे न आया, और अपने एवज़ कामदार कोठारीके साथ जमइयत भिजवा दी, जिसे देखकर सब राजपूत सर्दार मुस्कराये, और रावत् गंगदासने कहा, "कोठारीजी यहां आटा नहीं तोलना है," तब कोठारीने जवाब दिया, "मैं दोनों हाथोंसे आटा तोलूंगा, उस वक़् आप देखना;" परमेश्वरकी इच्छासे खारी नदीके उत्तर दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ, (१) तो शुरूहीमें बेगूंके कोठारीने घोड़ेकी

---

(१) यह लड़ाई बाज़ लोग हुड़ाके पास और बाज़ बांदनवाड़ाके क़रीब होना बतलाते हैं, लेकिन् ज़ियादह फ़ासिलह नहीं है.

वाग कमरसे बांधकर दोनों हाथोंमें तलवारें लेलीं, और कहा, कि "सर्दारो ! मेरा आटा तोलना देखो". उस दिलेर कोठारीने मेवातियोंपर एक दम घोड़े दौड़ा दिये; यह देखकर सर्दारोंने भी हमलह करदिया; क्योंकि सर्दार लोग भी यह जानते थे, कि कोठारीकी तलवार पहिले चलनेमें हमारी हतक है. नव्वाब रणबाज़ख़ां और उसके भाई नाहरख़ां व ज़ोरावरख़ांके नाइब दीनदारख़ां वग़ैरह मेवातियोंने भी बड़ी बहादुरीके साथ मुक़ाबलह किया; ऐसा मश्हूर है, कि रणबाज़ख़ांके साथ पांच हज़ार आदमी कमान चलानेमें नामी तीरन्दाज़ हाथी और घोड़ोंपर सवार थे, लेकिन् बीस हज़ार बहादुर राजपूत चारों तरफ़से एक दम टूट पड़े, कि तीरन्दाज़ दूसरी वार कमानपर तीर न चढ़ा सके; बर्छा, कटार, तलवार और ख़न्जरके वार होने लगे; आख़िरकार नव्वाब रणबाज़ख़ां अपने भाई नाहरख़ां व दूसरे भाई बेटों समेत मारागया, और दीनदारख़ां मए अपने बेटेके ज़ख़्मी होकर अजमेर पहुंचा. इस बादशाही फ़ौजमेंसे बहुत कम आदमी जीते बचे, और राजपूत भी बहुत मारेगये.

रावत् महासिंह ख़ास रणबाज़ख़ांसे लड़कर मारागया, और बेगूंका कोठारी बड़ी बहादुरीके साथ काम आया; बधनोरका ठाकुर जयसिंह और सलूंबरके रावत् केसरीसिंहका भाई सामन्तसिंह ज़ख़्मी हुआ; बानूसीका रावत् गंगदास, जो कई लड़ाइयोंमें फ़त्ह पाये हुए था, किसी ओटमें इस मत्लबसे खड़ा रहा, कि लड़ाईके ख़ातिमहपर घोड़े उठाकर फ़त्हकी नामवरी पावे; क्योंकि उस वक़्त दोनों फ़ौजें कमज़ोर होंगी; और हम मए अपने राजपूतोंके घोड़ा उठावेंगे, हमारी दानिस्तमें उसका यह विचार बहुत ठीक था, लेकिन् यह मश्हूर है, कि रावत् गंगदासने नदीकी डोरियोंकी डांगड़ (१) की आड़ ली, जो लम्बाईमें एक मीलसे ज़ियादह थी; जब गंगदासने घोड़ा उठानेका विचार किया, तो रास्तह न मिला, जिससे एक मील तक इधर उधर दौड़ता फिरा; जब लड़ाई पूरी हुई, तब वह शामिल हुआ. उस वक़्त किसी कविने मारवाड़ी ज़बानमें एक दोहा कहा था, जिसके दो मिस्रे यहां लिखे जाते हैं:-

॥ माहव तो रणमें मरे, गंग मरे घर आय ॥

अर्थ- कवि ताना मारता है, कि महासिंह, जो कम उम्र था, लड़ाईमें मारागया, और गंगदास बुड्ढा घर आकर मौतसे मरा, जो कि लड़ाईमें मारेजानेके लाइक़ था.

---

(१) डांगड़- नदीके या तालाबके किनारेपर पानी निकालनेके लिये जो चरसके ढाने बनाये जाते हैं, उसको डोरी बोलते हैं, और उस डोरीसे खेतोंमें पानी पहुंचानेके लिये जो दीवार बनाई जाती है, और जिसपर होकर पानी पहुंचता है, उसे डांगड़ कहते हैं. खारी नदीपर ऐसी डोरियें और डांगड़ें बहुतसी बनीहुई हैं, जिनके ज़रीए़से दो दो मील तक पानी पहुंचता है; क्योंकि नदी नीची और ज़मीन ऊंची होनेके सबब यह नहर मिट्टीकी दीवारपर ५ से १० फ़ुट तक ऊंची होती है.

महाराणा संग्रामसिंहने, जब यह सर्दार फ़त्ह करके आये, रावत् महासिंहके बेटे सारंगदेवको कानोड़का पट्टा और सामन्तसिंहको रावत्का ख़िताब व बम्बोरा जागीरमें दिया, और सूरतसिंहको महासिंहकी पहिली जागीर बाठर्डा गांव और रावत्का ख़िताब दिया. इसी तरह अपने सब सर्दारोंको इन्आ़म, इक्राम और इ़ज़्ज़तें देकर खुश किया.

इस लड़ाईमें रणबाज़ख़ां नव्वाबको मारनेका बयान मुख़्तलिफ़ है, बधनौर वाले अपनी तवारीख़में लिखते हैं, कि ठाकुर जयसिंहने बाधनवाड़ेमें पहुंचकर नव्वाबको मारलिया, पीछे उदयपुरकी सब फ़ौजने लड़ाई की, और नव्वाबका नक़ारह, निशान, ढाल तलवार छीन लाये, जो अब तक बधनौरमें मौजूद है. नीचे लिखे दोहे भी उसी तवारीख़में लिखे हैं :-

दोहा.

बाधनवाड़ा बीचमें जबर करी जैसींग ॥
वडंग मार रणबाजख़ां धजवड़ राखी धींग ॥ १ ॥
रण मारयो रणबाजख़ां यूं आखे संसार ॥
तिण माथे जैसींगदे तें वाही तरवार ॥ २ ॥

अर्थ १ - बाधनवाड़ा गांवके बीचमें जयसिंहने ज़बर्दस्ती की, और घोड़े समेत रणबाज़ख़ांको मारकर तीख चोख रक्खी.

अर्थ २ - जहान् कहता है, कि लड़ाईमें रणबाज़ख़ांको मारा, उसके सिरपर जयसिंहदे तूने तलवार मारी.

इसी तरह कानोड़की तवारीख़में लिखा है, कि रावत् महासिंहकी तलवारसे रणबाज़ख़ां, और रणबाज़ख़ांकी तलवारसे महासिंह मारागया. उन्होंने अपनी तवारीख़में यह सोरठे लिखे हैं :-

सोरठा.

अमलां भांगां आज, कर मन्हवारां जग कहै ॥
बाह खाग रणबाज, यूं कहवो माहव अधिक ॥ १ ॥
तें वाही इकतार, मुगलांरे सिर माहवा ॥
धज वढ़ हंदी धार, सात कोस लग सीसवद ॥ २ ॥
जे पग लागे जाण, रण सामां रणबाजरा ॥
उदक पृथी अडाण, करदेसूं माहव कहै ॥ ३ ॥

अर्थ १ - दुनया कहती है, कि आज अमल और भांगकी मनुहार करना चाहिये, लेकिन् महासिंहका यह कहना ख़ूब है, कि ऐ ! रणबाज़ख़ां तलवार चला.

अर्थ २ - ऐ महासिंह ! तूने मुग़लोंके सिर पर एक ढंगसे तलवार चलाई, ऐ सीसोदिया ! जिस तलवारकी धार सात कोस तक चलाई.

अर्थ ३ - महासिंह कहता है, कि रणबाज़खांके जितने क़दम लड़ाईमें मेवाड़की तरफ़ पड़े, उतनी ज़मीन और कूए ब्राह्मणोंको संकल्प करदूंगा, अर्थात् नव्वाबको एक क़दमभी आगे न बढ़ने दूंगा. देवगढ़ वाले बयान करते हैं, कि रावत् संग्रामसिंहने अपने एक सांगावत राजपूतसे ललकारकर कहा, कि मदारियाके कुछ खर्गोश मारखाये हैं, लेकिन् गोली लगाने और नाम पानेका मौक़ा आज है; तब उस सांगावत राजपूतने गोलीकी चोटसे नव्वाबका काम तमाम किया. बम्भोरा वालोंका बयान है, कि रावत् सामन्तसिंहने नव्वाब रणबाज़खां और उसके भाई नाहरखांको मार गिराया. शाहपुरा वाले अपनी कार्रवाई बतलाते हैं; हक़ीक़तमें यह लड़ाई इन सर्दारोंने बड़ी बहादुरी और तन्दिहीके साथ की थी, लेकिन् नव्वाब किसके हाथसे मारागया, यह साबित करना मुश्किल है, क्योंकि वह एक आदमीके हाथसे मरा होगा, और फ़त्ह सब सर्दारोंकी बहादुरीसे हुई, वर्नह एक क्या कर सक्ता है; हां अलबत्तह बधनोर वालोंके पास एक नक़ारह दूसरे ढाल और तलवार मौजूद है, उस ढालपर कुर्आनकी आयतें खूबसूरतीके साथ लिखी हुई हैं. इन चीज़ोंके देखनेसे क़ियास होता है, कि ये ख़ास नव्वाबके रखनेकी होंगी. यह ख़बर अजमेरके वाक़िअ़हनवीसोंने लाहौरमें बादशाहके पास पहुंचाई; बादशाह सुनते ही नाराज़ हुआ, और महाराणा संग्रामसिंहके लिये टीका भेजनेका दस्तूर, जो तय्यार होचुका था, मौकूफ़ रक्खा. हम इस मौक़ेपर दो काग़ज़ोंकी नक़्ल दर्ज करते हैं, जो महाराणाके वकीलोंने दिल्लीसे उदयपुर भेजे थे.

पहिले काग़ज़की नक़्ल.

सीधी श्री अप्रंच । आगै कागद दुः भादवा वदी ८ सीनु मेंवड़ा पेमां नामै ४ साथे लाहौरसुं मौकल्या है, सौ हजुर मालुंम हुवा होगा जी; तींण पाछै इण भांते है, जौ रुसतंमदीलपां आपरी फौज कोस १० प्र छौड़े आप जरीदौ वीगर हुकंम लाहौर सहर मांहे ईरी हवेली है, तठै ईरो कबीलो थो, जठै ईणां ही दीन राते आयौ; या पवर ये ही वकत पातीसाहजी थे अरज हुंवी, अर आपौ दरबार लागु थो ही, म्हेलां तौ सरवराहखां कौटवाल हे नौबतखां है भेजा, जौ रुसतंम दीलखांरी हवेली घेरे वैहे पकडौ, पाछै म्हावतपां है, इसलांमपां है, मुपलसषां है बीदा कीधा, जो लडै तो मारनाषौ, न्हींत्र पकड लावौ; तींत्र ओ सारा गया, म्हावतषां आपरा हाथी प्र आप तींरें बैसांण

लेआयो, जाली माहे म्हावतषांरै चौकीषांने बैसाणी, अर अरज करावी. हुकंम हुवो, कीस भांत ल्याए है; अरज कीवी हाथी प्र ल्याऐ है; फरमायो, पाव पयादा ल्यावनां था. ईसलांमषां है हुकंम हुवो, इसकुं लाहौरके कीलैमे जंजीरकर कैद कर आवौ; इसका कवीला भी कीलैमे रषौ, षांनसांमां वुतात (बुयूतात) है हुकुंम हुवो, इसका अमवाल हवेली सव जबत करो, सो ई हैं कीलामै लेजाती बार लसकररा हजारां छोहरा भेला हुआ था; तीसी नीयत थी, तीसी पाई; अमवाल सारो जबत हुवो, जागीरां जवत हुवी, पीदमतां लोका है हुवी, सो वकायारी फरदां सु मालुंम होगो जी, सो ईणे तो कीधो थो, तीसो प्रायो जी. फेरौजपां मेवाती पाछै बैठ रहो थो, तीरा लेवाहे गुरजबरदार २ अर म्हावतखांरी मौहर रो हसबल हुकंम गयो थो; सो फेरौजखां कालहे लसकरमे आयो; म्हावतखांरा डेरां तीरै उत्रो है. जंमुंरी अथवा सरहंदरी फौजदारी ईरै नांमे ठैहरैगी जी, और गुरूजी तो साढौरै (शाह दौलह) डावर त्रफ गया; सहारनपुर ज्मना पार है, ईक बार उठै जाबारी पवर है. म्हमद अमीरपां है पाछो करवारो हुकंम है जी, राजां है हुकंम है जो साढौरै आवै, सो तुरत तो दोनुं राजा (जयसिंह व अजीतसिंह) दीली तीरै वदली बैठा है, उठै बैठां आस पासरो काम करै ही सै जी; दीलीरी गीरद जवत तो आछो कीधो सै; भंडारी षींमसी साह अजींमजी है अरज दासती गुजरांनी, जो साढोरै आवारो हुकंम हुवो, सु मुफसदरी मुफसदी मालम सै. आगे रुसतमदीलखां म्हमदअमींपां सारपां वड़ा उमराव गया था, तीं वतै वै है तंब्ही होई न सकी; अर म्हे डावर आंवां, अर मुफसद भाग मगरां माहे जावे, तो या हजुरमें लोक अरज करै, जो यांही मील भगाई दीधो. अब तांई म्हांरो ईतवार हजुरमे न सै, तींसु गुजरात सारपी म्हांनु सोंपजे, उठै पातीसाही कांम करां, म्हांरो ईतवार आवै, पछै तठै हुकंम होगो, तठै जावांगा. दुजो यो लीपो, जो नांहंनरो राजा रोक माहे है, ती है छोड़जे. नागौर मोहकंमसिंघ है हुवो है, सु ईंद्रसिंघजी है वहाल रहै; अर षींवसी भंडारी है ईक वार रुखसत होई, म्हांरी नीसांकरे पाछो फेर पाछो हजुर आवै; सो साह अरजदासती पढ़ फरमायो, तुंभकुं रुषसत करैंगे, तुं जाई राजोंकुं साढौरै लेआव, साढौरै आयो पातीसाह राजी होगे; सो अब देपजे कांई ठैहरै सै; पण राजा दीली तीरै बैठां वदनांमीरो ही कांम करैसै जी, अठै तो वदनांमी घंणी ही आवैसैजी, अठै तुरत तो कोई सांभलै नसै जी, और विलफैल तो पातीसाहजी लाहौर वीराजैसै, तुरत सालामार-बाग भी देषवा पधारया नसै; कुचरी बात तुरत ठैहरी न सै, गुरुजीरी बात ठीक अरज होई चुकी सै, जो साढोरा डावर बुणीया तूफ गया, सुंणं चुपक्या व्है रह्या सै. म्हमद अमीषां है ताकीद जावैसै जी, देषजे अब गुरु कठै ठाहरै, कांई कारज करै जी.

पांनो दुजो.

अप्रंच श्रीजीरा तेज प्रताप करे टीलारा फरमान तथा ईनामात वासतै मेवात्यांरा मारयां पाछे मोकुफ़ हुवो थो, सो फेर तलास करे मनसुवा करे हुकंम करायो, फरमान वासतै ईनामात वासतै सारी ठांमां ताकीद करावी, सौ आगे बोवरो अरज लीपो हीसे जी. नवाव अमीरल उमरावसुं पुफया फेर सलुक कीधौ, सौ फरमांन तो अमीरल उमराव तयार कर म्हावतपां तीरै भेजो, तब म्हे म्हावतपां तीरै बैठा था; म्हावतख़ां फरमांन म्हांनै दीपाड़ो, म्हे तसलीम कर उरौ ले आप तीरै रापौ, फरमान है डेरै ले आयासां जी. ईनांमातरी ताकीद कराई से जी, बले अरजी दे यारम्हमदपां कौल प्र हुकंम ल्याया सां, जो सजावली ईनामात चलावै, जी सु ईनामात वासतै सारी ठांमा ताकीद से जी. साह अजीमसांरौ नीसांन पीलअत स्मसेर जड़ाउ पंण तयार कराया से जी, ओर नवाव अमीरल उमरावरौ आगला पतरौ जवाब अबारुं हजुर मोकलो सै, सौ नजर गुजर सी जी; पतरौ जाव घंणो ईषलास सुं आवै जी; और साह अजीमसां हमेसा म्हांनै याद करे पीलवत मां बुलावै था, पंण म्हे गौं देपे ढीलही करां था, अबारुं साह टीलारौ फेर हुकंम करायो, कांमां माहे वजद हुवो, फेर कुदरतुलाहै हुकंम कीधो, ले आवो; तरै हु० भादवा वदी १० राते कुदरतुलारी मारफत म्हे ने रांमराजारी रांणीरौ वकील पंडत यादुकेसौ साहरी हजुर पीलवत मां गया, प्हैलां साह म्हांहै ईक हाथरै आंतरै नेड़ा वुलावे फरमायो, जौ पातीसाहसुं वजद होई रांणांजीके वासते टीका लीया है; तब म्हे तसलीमां कीवी; फेर फरमायो, जो मैवातौके मुकदमेसुं पातीसाह गुसै होई रह्या था, सो हंमने नीसांकर तकसीर माफ करावी; तव म्हे फेर तसलीम कीवी; अर अरज कीवी, जो रांणां तो सिदक अैतकादसुं ईस जनाबका वंदा है; तीस भांत आंगुं अमर हुवा है, अर होगा, उसही मवाफक रांणांजी करते हैं; रांणांजीकुं ईस जनाबके तसवर फरमाईए; फरमायो, इसमै क्या सक है, पातीसाही भी टीकेका दसतुर तयार होता है, अर हमारे ईहांका नीसान लवाज्मां तयार है; फेर म्हे तसलीमा कीवी; साह फरमायो, यादुकेसो वासतै, जौ ऐभी हमारे है, अब तुम्हारे तांई सौपते है, इसकुं रांणांजी पास भेजो, इसकुं उदैपुरमै ही रषौ, ऐ उहांही बैठा अपनै पांवदकुं लीख जवाब सवाल कर कांम करेगा, तुंम ईनकी मददमै रहौ; म्हे अरज कीवी, जो तीस भांत इरसाद मुबारक होता है, उस ही भांत कांम सरजाम पावैगा, पछै यादुकेसौ वा आपो पंडत हरकारो तौ से, पंण यादुकेसौ मैं थेटसुं मिलो सै, वां कुदरतुला साथ तफावतसुं षड़ा था, अरज करावी, जौ दीपणंका सुवा जहांपन्हा अपने तअलक करै, हंम मुजरा करादिपावै; फरमायौ, अव तो थोड़ी वात आई रही है; फेर यां अरज कीवी, अब

दीपण, मालवै, गुजरात, अज्मेर, धुर दीली आगरै तक सव जगो भला कांम करैगे; फरमायो तुंमसुं होई आवे, सो करो; फेर कांन्हजीरी तूफ देपे साह रूबरू नेड़ा था फरमायो, रांणांजी पास बसत भाव कुंन लेचलैगा; कांन्हजी अरज कीवी, मै हुजुर सुं रुपसत होई ईनामात लेजांउगा; फरमायो, ईहां कीसकुं रषोगे; अरज कीवी, ईस वकील कीसोरदासकुं, हमेसा रीकावमै ही रैहता है; सो कांन्हजी तीरै कीसोरदास षड़ोही थो; साह फरमायो, खुव है. पछै यादुकेसो वासतै फेर फरमायो, जो तुंम साथ लेजावो, म्हे कवुल कीधो; सो भेद लेबा वासतै म्हे फेर अरज कीवी, जो बाजे मतलिव ओर अरज करनै है; फरमायो, हंमनै फरमाया है, सो सेप कुदरतुला कहैगे, तुंम भी ईसही साथ मतलव अरज कराईयो; सो पंडत दोउ हाजर था, तीं वासतै दोन्य त्रफां भेदरी बातां न हुवी; पाछै कुदरतुला है म्हां है पंडतां है रुषसत कीया, आधी रात पाछै डेरां आया; दुजे दीन कुदरतुलारै गया, खीलवत कीधी; म्हे पुछो, साह कांई फरमावे है; वां कही, जो साह चाहे है, जो दीपणमै फीसाद होई, दीषणके सुर मारेजांई, दाउदखां ठीकांणै लागे, अमीरल उमरावकी कुवत तुटै, अर मालवा पाक सीयाह होई, जहांसाह खजानेसैं तुटैं, ओसा ही ओर मतलब है. तव म्हे कही, जो ओ मोटी बातौं है, हंमारे तांई फरमाते हो, तुंम दीपणोंकी मदद करो, तब हंमनै दीपणोंकी मदद कीवी, तबतो मुकदमां तुल पैचैगा; सो मेवातोंका मुकदमां ईरसादसु ही हुवाथा, मुकदमां हुवां पीछै सब ईगमाज

पांनो तीजो.

करगये थे; सो वो तो जुजवी (छोटा) मुकदमां था, ऐ मुकदमै भारी है; नीधांन साहकी मरजी क्या है; तब ओसा फीसाद उठै, तव साह नीधांन क्या करैगे, इस सीवाई दीपणोंमें हमारी फौज तब जावे सामल हुवी, तब हमारी फोजकी बात छीपी न रहेगी, पातीसाह हजुर हम बदनाम होगे, तीसकी क्या सलाह दौलत है. तव कुदरतुला कही, तंमनै सब बात सच कही है, ईसका जवाव बीगर साहकै वुझै कहया न जाई, तुंमनै कहया है, सो सब मतलब अरजकर ईरसाद फरमावेंगे, सो तुंमकुं कहैगे. म्हे कही हंमारा पांवद ईक साहकी जनावकुं जांनते हैं, ओर कीसीकुं जानते न्ही, साहका ईरसाद होगा, सो ही करैगे, अमां अब ईरसाद होई, सो पकी ही होई, मरजी होगी, सो ही वात तयार है जी; ओर साह हजुर रुवरु हींदवी नीसांन वासतै अरज कीवी थी; फरमायो, पास दसपतोंका हींदवी नीसांन अलवतै देगे; ओर कोचअलीषां दीलीसुं न आयो सै, पंण हातीम वेगषां कहै थो, कौच अलीषां दिलीसुं चल्या है; हम तो मनै करते है, जो अब मत आवो, अगली ईनांमातका हुकंम मुजदद (मुजदद- नया) का तलास करते है; हुकंम तुमकुं पौहचै, तब आवो, तो भला है; सो कोचअलीषां चल्या आवता है; तीं प्र म्हे कुदरतुलारी मारफत

आगली इनामात वासतै फेरे अरजी दीवी है, तुरत अरजी पाछी आवी न सै, जांणांसां कौचअलीपां आयो, अर मुलाज्मत कीवी; तव ईनामातरी पुछा पुछी होगी, तीं सुं दोई दीन ढीलसुं आवै, तौ टीलारो तो कांम हाथ आई चुकै; अर आसी, तो वौ भी फीकर कर रापौ सै जी; और जौरावरपां मेवाती आगै दींनदारषां नांय थो, सो ईण लड़ाईमां वाप वेटौ धारले अज्मेर भाग आया था; सौ वेटौ तौ मुवो, अर ऊ आछो हुवो; वैंरा पत वकील है लौकां है आया था, जो मेरा ईजाफा होई, अर हुकंम आवै, तव परगनोकु वड़ी फोजसुं जांउ; सौ तुरत अठै कंही जाव दीधो न्ही, वकील भी ललो पत्तो लीप भेजी सै जी; फेरोजपां मेवाती काल्हे म्हावतपांरा पीलवत पानां मै म्हांसु मीलो थो, हसकर चुपको सो होई रहौ जी; वैही वकत म्हावतषां म्हांनै कहै थो, जो ईनामात भी सीताव आवे है, ताकीद वोहत है, अव तुंम परगनोका चुकावकर टके भरो; अर सैद अहैमद गैलानीकी भी सनदो होती है, तुंम साह कुदरतुला पास वैठे दोनों वातोंका नीसतुक कर द्यो. म्हे तो याही कही, नवाव फरमाओ, सो ही होसी; नवाव कही, अव हमारै फरमावे प्र ललो पत्तो करो मती, चुकाव कीयो ही फाईदो है, वात वधावो मती. तव भी म्हे मलमलाता ही वौल्या; सौ आगै सारा वौवरौ अरज लीपौ ही सै जी. अव दुरअंदेसी प्र नजर राष इक वात नीसतुक ठेहेराई, वौवरौ लिषवारो हुकंम व्हैजी, अठै कवतांइकी सीदसत आवे, जसुं वात आगै चालसी जी; और मेवात्यंरी ल़ड़ाईरा मुकदमौं श्री जीरा तेज प्रतापसुं अठै कैहणौं सुंणणौं थो, सु कंहै सुंण चुक्या सां जी; अव अज्मेरमै अथवा और ठांमांमै हजुररो कंहीरी सुफारसरौ तलास करवारौ हुकंम न व्हे जी; अव दरकार न्हीं जी; और आज वरस दीनरी जाईगा हुवी, साह उटांरी फरमाईसे कीधी थी; अव फेर साह कुदरुतुला है फरमावै था, जो पुछो ऊंट न आऐ; सो वै म्हां है ओलंभो सो दे था; सो ऊटांरी कांई मालयत है, जो अतनी ढील कीजे; अव ऊंट आछा वेगा आवै जी; ऊंट पोहंचसी, तव नजर गुजरान मुतसद्यांरी मोरसुं रसीद ले हजुर मोकलस्यां जी; और उसवास (वस्वास- फ़िक्र) न्हीं सै जी; और ईषलासषांजीहे मेवात्यांरा मुकदमां वावत पत आयो थो, सौ म्हे अर रौसंनराईजी भेला व्हे पोहंचायो; वां भी घंणौ ईषलास जणायो जी; यांरो पत तयार व्हे सै जी; और लाहौररा म्हेलां माहे दलवादल पीनो छोटो ज्हागीरा वारारो पड़्यो थो, सौ पातीसाहजी हजुर मंगावे पड़ो करावैसै; वै मै सालगीरै आपरीरो जसंन करैगा; अर आलीतवाररो व्याह पंण रफीअलसांरी वेटीसु होगो जी; और कागद दरवाररो प्रथंम भादवा वदी ११ सोमेरो लीषो मेवड़ा प्रमानद पीथा नाभै २ साथे दु० भादवा वदी ३० सीनु लाहोर पौहच्यो जी, स्मांचार सारा पायाजी; कागद भेजवारी ढील हुवी लीषी, सौ वीच कागदारी ढील हुवी,

सौ प्रथंम तो ईक मास ब्यह (बयास) नदी उतरतां लागो, दुजो मेवात्यांरो मुकदमो आईपडो, तींरो जवाब सवाल कीयां बीगर हजुर कांई लीषजे; अर झुठ तौ स्माचार लीष्या न जाई; सौ

पानो चोथो.

श्रीजीरा तेज प्रतापसुं सारी ठांम मजकुर पकी कर पात्र ज्मां कर कागद हजुर मोकल्या सै जी, अब कागदांरी ढील न होगी, हजुरा हुकंम माफक दीन आठ कागद मोकलवो करस्यां जी; और कीसोरदासरा रौजगाररी हुंडी रुपया ३७४ री मोकली थी, सो पोंहची सै जी, माथै चढावे लीवी जी. वकायारी फरद ५ पांच हजुर मोकली छे, जो वलतो कागद समाचार मया हौवे जी. समत १७६८ ब्रषे दुती भादवा सुद २ सौमे, मेवडा जण ३ तीन दपोरै चलाया छो जी, अणी कागदरा समाचार कठै ही जाहर नु होवे जी, ओ समाचार बारै सुणै जसा नु छे, दुजा समाचार कतराक ल्षवामो आवे नु छे, हजुर आवसु जदी मालुम करसु जी. ओवे हजुर हु पण वेगो आवु छु जी.

दूसरे काग़ज़की नक्ल.

१ श्रीरामजी.

सीद्वी श्री अप्रंच । आगे कागद दु० भादवा सुदी २ सोमे मेवड़ा भगवांन नामे ३ साथे मौकल्या सै, सौ हजुर मालुंम हुवाहोगा जी. कागद १ दरवाररो प्रथंम भादवा सुदी ११ सौमेरो लीषो दु० भादवा सुदि ८ सीनु मेवड़ा नराईणं, रामां, अमरा, छीत्र, लोधो नामे ४ साथे लाहोर पौंहच्या जी; सारा स्मांचार पाया जी. षत नवाब म्हाबतषां है, ईषलासषांहे, कागद हींदवी राजा राजसिंघहे, परवांनो १ सैद नसरतयारषांरा परधांन दीपचंदरै नांमै, परवांनो १ रौसनराईरै नामे तथा कागद १ राजीरो दीपचंदरे नांमे मोकल्या था, सौ पोहंच्या जी; म्हाबतषांहे, दीपचंदहे, रोसनराईहे, षत परवांनां पौंहचाया जी. बीच ही दींन सुदी ९ तथा १० मेह ईधक हुवा, तीणसुं राजा राजसिंघहे, ईषलासषांहे षत अब पोंहचावस्यां जी; सारांरो जवाब लीषावे, हजुर मौकलां सां जी; और राजांरी हकीकती लीपी, जो राजा तो पातीसाहीसुं मेल करे चाल्याजावे सै, तीणसुं दरवाररो पंणं सलुक सारांसुं लीषणै पढणै राषजे, तींप्र नसरतयारषांरा लोक घोडो ले हजुर आया था, त्यांहे घोड़ो ले हजुरसुं मया करे, षत घंणां ईषलासरा मौकल्या; ईणं सीवाई वकील वाघमलहै अज्मेर मौकल्यो

सै, पत्त मोकल्या सै, सौ या वातरौ हुकंम हुवा, सौ आछो हुवो जी; सलुक कीयां भली हीज वात सै; पंण सलुक पातीसाहीमै कीधो चाहीजे, पातीसाही मां सलुक हुवां सारा दवता रहैसै, सो श्रीजीरा तेज प्रतापसुं पातीसाही मां तौ सारांसु ललो पतौरो सलुक रापौ सै, ने वले ईंधक सलुक रापां सां जी. आगै राजांहै हुकंम गयो सै, जो साढौरे आवे वैठौ; अर गुरजवरदार गयो सै, नाहरपां पंण सांभर सुं राजारां ल्यावा वासतै राजां तींरै वादली आई पौंहचौ सै, सौ राजा तुरत दीली उरै वादली तींरै वैठा सै. वादली तींरै पातीसाही पासी सीकार गाह सै, उठै ही सालामार वाग पातीसाही सै, तठै राजा सीकार हीरणांरी पेल्या, अर वाग गया, तरे दरवांनां माल्या, दरवाजों पौलौ न्हीं, दुहाई दीन्ही; राजां कीत्राक रजपुतां हे वागरी भीतां प्र चढावे वाग भीत्र भेजे दरवाजो पुलावे राजा वाग मांहे गया, सौ सीकाररी वाग जावारी मजकुर सवान्हे नीगार दीलीरे लिप हजुर भेजी; पातीसाहजी पढे म्हावतपा रैनांम दसपत कीधा, जो जफरजंग नाहरपां सजावलकुं ताकीद लिषै, राजोंकुं सीताव साढौरे ल्यावै, और कुछ्ह फरमायो न्ही; पंण मंन माहे घणंही अेतराजसे. ईं सीवाई आगै मेवातरी गीरदसुं पेशकसां राजां लीधी, और भी दीलीरा जसोंतपुरा माहे कसाई ने जजीया वाला मार्या, अर राहदारी लेवे सै सो पातीसाहजी सुं केई त्रफां सुं अरज पोहुंची सै; सो तींप्र भी चुप साधी सै जी. अवारुं भंडारी पींवसी अरज दासती साह अजीमजीहै गुजरानी, तींरा स्माचार आगै अरज लीप्या ही सै जी. पींवसी आपरी रुपसत वासतै कुदरतुलारी मारफत साहसुं अरज करावी थी, साह पातीसाहसुं अरज कीवी, हुकम कीयो, जाई राजोंकुं ले साढौरै आवै, साह दौनुं राजांहे नीसांन ने पीलअत भंडारी ने भिषारीदासहे सौंप्या, साह याही फरमाई, जो वदनाम तो तुंम वहुत हुवेहो अर हमारे हंमचसंम पातीसाह हजुर हंमकु वदनांम तुह्मारे वासतै करते हैं; अपनी व्हेवुद (विह्बूद–फ़ायदह) चाहौ तौ पातीसाही अताअत मांनो, साढौरे आवौ; पातीसाह जांणैगे, हमारी अताअत मांनी. हंमने कावलकी तईनाती तुम्हारी मोकुफ करावी, अर करांवेगे, साढौरे आंयो पीछो या हजुर आईयो, या पुरवके तईनात करांवेगे, या दीपंणके तईनात करावेगे; ऐही न मांनोगे, तो वतंनकी रुषसत देगे, पंण तुंम दीली ही वैठै वेअदवी करतेहो, सो खुव न्ही; अैसी ही दीलमै थी, तो वतंनसुं काहेकु दीली तक आए; अव अताअत मांनते हो, तो साढौरे आवौ, न्ही त्र उठजावो, पातीसाह फीकर करलेगा– सो पातीसाह जादे कुदरुतुला साथे या कहाई सै, ती प्र भंडारी षींवसी दीन दौई च्यारमै राजा तींरै चालसी जी; भंडारी कहै सै राजां हे साढौरै वेगो ले आउं हुं; साह फरमाई तीहीं भांत म्हावतपां भांत भांत भंडारीहे माकुल कीधौ सै जी. पातीसाह जादौ अर म्हावतपां कहे है, जो भीषारीदास भी जावै, अपने राजाकुं

माकुल कर राजा जैसिंघजी कनां राजा अजीतसिंघजीकुं माकुल कर लेआवे, तींप्र भीषारीदास भी त्यार हुवो सै, पंण भंडारी चाहै नहीं,

पांनो दुजो.

जो भीषारीदास साथ आवे, अठै लसकरमां रहै; ई वास्ते जौ भंडारी राजा श्री जैसिंघजीरै आपरी मारफत नैनसुप है परधांन कीधो है, राजाजीरै यां दीनां मांहे नैनसुषरौ ही अषत्यारसै; सौ अठासुं प्हैलां तो भंडारी लीपी, जो दोनुं राजा नारनोल पोहंचे, अर गुजरातरो सुबो कराई भेज्यु. नारनोल आया, तब लीषी, जो दीली तींरै आवो, तब बीरादरीरो मंनसब ने जागीर मंनमांनती ल्युं, अर गुजरात मालवारा सुबा ल्युं, थे दीली तक आवौ, आगे थांनुं आबा दुं न्ही, दीलीमै आई बैठौ, अर फौज घंणी भेली करो, तब पातीसाहजी आपसुं आप क्हैसी, जो दीली रह्या भला न्ही; तब क्हैस्यां, सो करसी. तींप्र राजा दीली आया, अब राजांहे साढौरै आबारौ हुकंम हुवो; तींप्र राजा अजीतसिंघजी भंडारीनु लीखौ सै, जौ तै आठ म्हींनां तक लसकरमै बैठे कांई कांम कीधो, तै म्हांनु दीली तक बुलाया, अब साढोरै बुलावे सै; तीणसुं तुं ईक बार हजुर आई, तींप्र भंडारी चालै सै, जो स्मंझावे साढोरै ले आंउ, पछे फेर लसकर आउं, कांम करुं; सो भंडारी तो साच झुठ राजा अजीतसिंघजी है लीषंतो, अर नैनसुष है लीषतो; नैनसुष राजा जैसिंघजी है स्मंझातो, अर भीषारीदास साचो आदमीं सै, सौ साच बात आपरा राजा है लीषै; तींप्र भीषारीदास है राजा श्री जैसिंघजी रौ प्रवानो आवे, जो फलाना मुकदमै भंडारी ओर भांत लीषो, थे ओर भांत लीषो, सौ कांई सै, तींप्र भीषारीदास तो स्यांम ध्रंम पणां सुं साच वात दषाई लीषै, उठै नैनसुष पेस जाबा दे न्ही, भंडारीरो लीषो सावत रषावै, तींणसुं भीषारीदास जांणै सै, जो हुं पंण जाउं, अर राजा है दीषाई दोनुं राजा आवै सै, तो भलांही सै, न्ही तू राजा जैसिंघजी है तो बात स्मंझावे ले आंऊं, अर भंडारीरो साच झुंठ षोली काढु, ईणं सबब भंडारी यां है अठैही राषो चाहै सै, साह अजीमसांनजी कुदरतुलारै साथे भीषारीदासहै क्हैवाड़ो, जो तुं तो देरीनां (पुराना) आदीमी है, अपने राजेकुं तो माकुल कर ले आव, ओर उसवास करै मत, हमारा कौल बीच है, ओरोंके कहेसै तुंम क्युं पराव्र होतेहो, तुंम आवोगे, जो अरज करोगे, सो पातीसाह सब मनजुर करैगे. सो भीषारीदास है तो भंडारी जुदो कठै जावादेवे न्ही, तीणसुं कुदरतुला म्हांरै हाथ औ स्मांचार कह्या था, सो म्हे भीषारीदास है कह्या, सो भीषारीदास कहे है, भंडारी अर मैं साथ ही साहरी हजुरसुं रुषसत व्हे स्यां; सो प्रभाते रुषसत साहसुं व्हैगा, मेड़तारा परगना प्र पातीसाही चेलांरी ने

पांनज्हांनी रीसालारी - पाछला वरसरा हासीलप्र तनंषाह आगे हुवी थी, सो घणा परा तो भंडारी अठे पईसा रोकड़ा दीधा, बाकीरा देचालसी जी. राजां तीरे असवार हजार पचीसेकरो अठे भरंम उठो; तींप्र मोजदीन (मुइज़्ज़ुद्दीन) अरज कीवी थी, जो भाई अजीमंसांनकी ईसारतसु राजों पास तीस हजार सवार ज्मां हुवा है, सो हजरतप्र दगा है, मुझै हुकंम होई, तो राजोंप्र जाऊं; तींप्र हुकंम हुवो, राजा साढोरे आंवे; अर साह अजींम है फरमायो, जो राजों पास ऐती फोज तुमनै ज्मां करवाई; अब लीपो, जो दोई तीन हजार असवार पास रषे, ओरकुं न रषे; सो आगें राजां है ईए वातरा लीष्या म्हावतषांरा गया है; अबारुं साह भी फरमायो, जो जुजवी जमीयतसुं आवों, जीयादे जमीयत मत रषों; सौ अब भंडारीरा गयासुं राजा दोनु साढोरे आया, तो भलांही से, पछे फेर ओर कुछ हुकंम होगो, अर न आया, तो वात वरहंम होगी जी; सो ईक मासमे सारी मालुंम ही होगी जी; ओर दीषण्यां रो कागद वांरा ही आदम्यां साथे हजुर आयो लीषो, त्यांरो जाव लीष्यांरो हुकंम हुवां, सो कागदवाई कीधां भलां हीज से जी, अर वरसात पाछे मालवा गुजरात त्रफ दीषणीं आवसी लीष्या, अर यो लीषों जो दुरगदासजी सारषा वांमे मीले, तो फीसाद वडो उठे; सौ यांहे असाही मौटा काम वास्ते राष्या से, सौ या वात मौटी से जी. म्हे साह अजींमजी हजुर गया, अर मजकुर हुवी, अर पछे म्हे साहसुं कुदरतुलाजी साथे अरज कराई, सो तो वोवरो आगे अरज लीषौ ही से जी, तींप्र ईरसाद हुवो, जो तुम्हारी बंदगीसु हंमकुं असीही उमेद है; बीलफैल दीषणी तो मालवा त्रफ आंवे; आंयो पीछुं हंम फरमांवे, तब अपनी फोज उनके सांमल करीयो, अर जो ईरसाद करे, सो करीयो; बीलफैल उनकुं आंवण द्यो, सो काती सरे दीषणी तो षड़नी वास्ते मालवां त्रफ आवेही आवे; आयां पाछे साहसुं अरज पोंहचावे, जो ईरसाद फरमावेंगा, सो ती माफक अरज लीषांगा जी; तब तक राजांरी भी नीसतुक होगी जी. रांणीरा वकील है पंण साथ ले हजुर आवांहां जी; ओर हुकंम आयो, जो हकींमरी मारफत साहसु काबु पको कीजो; सो श्रीजीरा परतापसुं अठे साहसुं आगांसुं बसेष वांरी मरजी मुजब मनसुबा करकर षीलवतमां अरज पोंहचावे, राजी राषे, यांरी हजुर दरवाररो काबु नीपट आछां कीधो से; नै बले ईधक करां सां जी; साहरा कावुरी त्रफ सुं पावज्मां फरमावारो हुकंम व्हे जी; और कौचअलीषां दीलीसु चाल्यौ सांभल्यौ, अर हातींमवेग कहे, जो कौचअलीषां हजुर आवेगा,

पांनो तीजो.

अर पातीसाहकी मुलाज्मत करेगा. पातीसाह तथा मुतसदी ईनामात वासते

पुछ्हैगे; तब तो कोचअलीषां अपने सीर न लेगा, याही कहैगा, मुझसुं जोरावरी लीवी, अरजदासती लीप दीवी; तब सब कोई कौचअलीषांका कह्या सच मानैगे; सौ म्हेतो या बात आगे ही बीचार राषे तलास मुजदद हुकंमरौ कीधो थो; तब तो साहने म्हाबतषां फरमाई थी, जो टीकेका तो इनांमात ले चुको, पीछो जांनबी, तींप्र म्हे टीकारी ईनांमातरौ तलास करे हुकंम दुजी बार ले ने ईनांमात लेवा है बजद (दपै) हां; अवारु फेर कौचअलीषां रौ षत म्हानुं आयो, सौ बजनस हजुर मौकलो सै जी. हातींमबेगषां है पंण षत आयो, तींप्र म्हे बीचारौ, जो कोचअलीषां नीधांन हजुर आसी, नया सीरसुं बदनांमी फेर जाहर होई, तो सलाह न्ही; अर ईनामात लेबामै ढील व्हेगी; तींप्र म्हे फेर साह है अरजी दीधी, अर अरजी षौले लीवी, तींप्र साह म्हावतषांप्र दसषत कीधा, सो म्हे तलासकर त्यां है देणो थो, त्यां है देणो करे म्हाबतषां सुं बजद व्हे कौचअलीषांरै नांमै हसवल हुकंम मुजददरो आगली ईनामात बाबत परवांनगी लीवी सै; सौ हसबल हुकंम तयार करावे, सलाह व्हैगी, तो उ हुकंम बजनस हजुर मौकलांगा; अर जै कौचंअलीषां नेडो पोंहचै सै, तो वै है पौंहचावे, नकल हजुर मोकलांसां जी. श्रीजीरा तेज प्रतापसुं यो पंण मोटो काम हुवो जी; और नसरतयारषांरा प्रधांन दीपचंद है हजुररौ प्रवांनो आयो, सु दीधो, माथै चढावे लीधो; हजुररा लीष्या माफक वै पासै नसरतयारषां है आछा भांते लीषावे वांरा कासीद साथे षत मौकल्या सै; म्हे पंण षत नसरतयारषां है घंणीं ललौपतो रौ लीषो सै जी; दीपचंद तीरा भी याही लीषावी सै, जो श्रीजीरा वकील आया सै, सौ वांरी रजामंदी मुजब परगणांरो कांम चुकाजो; न्ही त्र ओर त्रफ काम रीजु होगो; ईण सीवाई षीदमती दोई दीनरी सै, असा मौटा घरसुं ईषलास सलुक राष्यां ईक दीन थांहरै कांम आसी, अर दरबाररी चोकी वासतै नसरतयारषां हजुर है तजवीज लीषै, तीं वासतै दरबारराा कागदमै लीषो आयो, सौ यो बड़ो मुकदमो सै, असांरौ लीषौ अवारुं तो अठै कुंण सुंणै सै, तो भी हजुररा हुकंमसु दीपचंद तीरां लीषायो सै जी, दीपचंद है उमैदवार कीधो सै, अर दीपचंदरा प्रवांनां माहे सीरोपाव मया हुवो लीषौ, सो सीरोपाव वासतै पुछै थो, सो म्हे कहौ, अज्मेर थांहरो बेटो नसरतयारषां तीरै सै, जठै पौंहचसी; सो फत्हचंद ईरो बेटो सै ती है सीरौपाव पोहंचैजी; और सरीयतषांरा पेसदसत मौहता कांन्हदास है हजुर बुलावे घोड़ो सीरपाव मया करे, वैरा बेटा कीसोरदास है अठै लसकर मा है सरीयतपां तीरै सै, तींहे, दरवाररी चौकी गुजरात रहै, परगणां दीवावै; सो लीषावे मोकल्यौ, सौ या वात् आछां है, वंणै तो भलां ही सै, म्हांसु पैगांम देसी, अथवा मीलसी, अथवा म्हे कठै ही सुराप (सुराग़-खोज) पास्यां, तो आपसुं ही सरीयतषां सुं अबदल हमीदषां सुं कीसोरदास सुं मील सलुककर कांम पेस

रफत करस्यां जो; और गांम आगोंचा हुरड़ारी बंद मवेसी वासतै आगै अरजी दीधी थी, सौ म्हावतपां हैं हुकम हुवो, सो सैद सुजायतषांरै नांमै हसवल हुकम तो करावे मोकलो सै, नकलसुं मजमुंन मालुंम होगी जी; सो यो हस-वल हुकम तो अज्मेर भेजीजो, अर ईंए बातरी ताकीद करवा वासतै ईक हसवल हुकम नसरतयारपांरै नामै तयार करायो सै, सो पाछां थे मोकलां सां जी, तयार व्हे सै जी. ई सीवाई अज्मेर मां कोई गुरजदार व्हे, तो वैरो नांम लीपो आवे, तो वैरे नांम भी सजावलीरो हुकम भेजां जी; और ईनाईतुलापां पांनसांमांरै टीकारा लवाज्मांरो हुकम पोंहचो, चेला सजावली है गया, सौ षीलअत हाथी १, घोड़ा २ अरबी औराकी, कटारी १ जड़ाऊ, हाथी घोड़ांरा साजरी दसतकां कारपांनां प्र करदीवी; सौ तौ कारपानां पौहंचावी, ताकीद करावी; अर मोत्यांरी माला ने तरवार जड़ाऊ वासतै ईनाईतुलापां कही, जो षांनसांमांनी दफतूमै ईन दोई चीजका सरसता दाषल न्ही; टीकेमै कब ही दीया न्ही, तींप्र म्हे कही, म्हे सदामद टीकामै पाई आयाहां; हीदायत केसपांरै व्हैकीक करौ; तींप्र महावतपांरी मारफत फेर पाती-साहसुं अरज करावी सै, सौ मेहरै सवव दीन २ री ढील हुवी; सो यां दोन्यां वसतांरी पंण तलास फेर कीधो सै जी. फरमांनतो म्हांतीरै आवे पौंहचो सै जी; और षवर आवी, जो गुरुजी जमनांजी पार व्हे हरदुवारजी त्रफ गया; सो देपजे कठी है जावै जी, चोकस स्मांचार आवै है, सौ पाछां थे अरज लीषांहां जी; और पातीसाहजी सात दींनरौ जसंन सालगीर्हे रौ आपरो कीधो जी, दलवादल पीमौं तुरत पड़ौ हुवो न सै, पड़ौ व्हे सै जी.

पांनो चौथो.

मीर म्हंमद हासींम वीलाईत सुं आयो थो, तीं है अवारु चार हजारी जात दोई हजार असवाररो मंनसव हुवो, मीरजा सफवतपांरो षीताव हुवो नौबत पाई जी; बडो मरातीव पायौ जी, म्हे पंण मुवारकवादी है जावांगा जी; और रुसतंमदीलपां लाहौररा कोट माहै कैदमै सै, घरवार जागीर सारो जवत हुवो, अवारुं मंनसव षीताब वर तूफ़ हुवो; हुकम हुवो, दीनहै वेड़ी षोले द्यो, राते बेड़ी घाल्या करौ; सो यो तो मामलो फारग हुवो जी. फेरौजपां है जंमुरी फौजदारी बहाल रही, अब म्हावतपांरी मारफत जंमु है रुपसत व्हैसै जी; और रौसंनराईजीरी नवाब म्हावतपांजी सुं मुलाज्मत करावी, वौहत मैहरवांनी फरमाई जी; फरमायो मतलव कहै सो करदेगे; सो रोसंनराईजी कहै से सो करांसां जी; और प्रगनांरी षीदमती सैद अहैमद है हुई सै, सो तो आगै वौवरौ कागदां माहै लीषौ सै, सौ हजुर मालुंम हुवो होगा जी, तींन परगनांरा कांम

वासतै आषा देसरा कांम कींए वासतै बरहंम कीजे, अर वदनांमी लीजे, जै कंही बात कर टकौ न षरचाई; अर परगणां राषजे, तो चोकीही बेगी भेजो, कुछ्ह तौ दसत-आवेज हाथ राषजे, तो नीधांन भलां सै. आगै पंण वीगर परगणां दरबाररी चौकी दीषणमै रैहती, पईसा भी परच पातीसाहीमै हौता, अर प्रगणामै पातीसाही फौजदार रैहता; पंणं आगला वदनांमी वासतै चोकी भी राषता, पईसा भी षरचता; अर नीधांन बात तो दीलीरा घरसुं आदसुं हंम चसमीं ल्है आई सै, सो चालीही जाई सै; अै काबुप्र चुकै न्ही; सौ तो श्री ऐकलिंगजी सदा स्हाई करीसै, ने बले करै ही सै; सौ म्हे बंदा सुभचीतक सां, स्यांमध्रम पणां सुं मनमाहे उपजी, सौ अरज लीषी सै जी. ईण सीवाई अवार तांई साह अजीमसांहैने कंही उमराव है नजर म्हैमांनी रोक, जीनस दरबार सुं पोंहची न्हीं; सौ कांम काजमे हीकमत सुं मंनसुवा कर कर दरबाररौ कांम करां ही हां; पंण वां सारांरा मंन माहे सै, जो कदे कंहीरी मुदारात न करै सै, कांम करावै सै; सो काठा लोक सै, सौ काल्हे म्हाबतषांने कुदरतुला हसता ही तांनो मारै था; सौ अठारी या बात सै, देषांसां; सो अरज लीषांसां जी. सदामद दस्तुर माफक कांम कीया. सलाह दौलतसै राजा अजीतसिंघजीरै मेड़तो, राजा जैसिंघजीरै बसवौ पातीसाही षालसै सै; सौ वै भी फसलरा फसल टका हजुरमै भरै सै, सलुक राषैसै; बंणसी तव संमभबीजी; ओर कागद लीष्या पाछैं ईंही वीरयां राजा अजीतसिंघजीरा कागद भंडारी है आया, जौ म्हे साढोरा है कुच कीधो सै, आगै थांनै हजुर बुलाया सै, सौ अव थे उठैही रहीजो, कांम काज करजो; सो भंडारी कागद ले दरबार गयो सै जी, सौ राजा साढौरै तो आवैसे जी. समत् १७६८ व्रषे दुती भादवा सुद १२ तीजापोहर चाल्या. फरद ४ वकायारी हजुर मौकल छे.

इन काग़ज़ोंको हमने इसलिये दर्ज किया है, कि उस वक़्की राजपूतानहकी हालत पाठक लोग जानकर दिल्लीकी बादशाहतके ज़वालका सामान नज़रमें अच्छी तरह रक्खें. बहादुरशाहका इन्तिक़ाल होनेपर उनके शाहज़ादोंमें फ़साद हुआ, तीन शाहज़ादोंके मारेजाने बाद अमीरुल् उमरा ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने बड़े शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाहको तख़्तपर बिठाया. इस बखेड़ेमें महाराणाके वास्ते टीका भेजना और तीनों पर्गनोंकी सनद लिखवाना मुल्तवी रहा. जब अज़ीमुश्शानका शाहज़ादह फ़र्रुख़सियर बंगालेसे अब्दुल्लाहख़ां और हुसैनअलीख़ांकी मददसे दिल्लीका बादशाह बना, तो उसने दिल्ली पहुंचने बाद मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाह और ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको तस्मे व ख़ंजरसे मरवाडाला; तब अज़ीमुश्शानकी दोस्तीके सबब महाराणा संग्रामसिंहके वकीलोंकी भी ज़ियादह रसाई हुई. उस वक़्त सय्यदोंने भी अपना

गिरोह बढ़ानेकी ज़ुरूरतसें उदयपुरकी दोस्तीको ग़नीमत जाना. महाराणाके वकील कायस्थ बिहारीदासको बादशाहकी ख़िल्वतमें दाख़िल किया; फ़र्रुख़-सियर शतरंज खेलनेका बड़ा शौक़ीन था; बिहारीदाससे शतरंज खेलनेका शग़्ल जारी हुआ; दिन दिन बिहारीदासपर बादशाहकी मर्ज़ी बढ़नेलगी. बिहारीदासने अब्दुल्लाहख़ांको दोस्तानह सलाह दी, कि जिज़्यहकी लागतसे कुल हिन्दू नाराज़ हैं, और शाहआलम बहादुरशाह भी उसकी मौकूफ़ीका हुक्म देचुके थे, लेकिन् यह बात अमलमें न आई; इसलिये इस लागतके छोड़नेसें आप लोगोंकी बुन्याद मज़्बूत होगी. अब्दुल्लाहख़ांने इस सलाहको बहुत ठीक समझकर बादशाहसे जिज़्यह मुआफ़ करवाया; परन्तु यह काम मज़्हबी लोगोंको नागुवार हुआ, जिससे फिर जारी करनेका उपाय करने लगे थे. इनायतुल्लाहख़ां अपने बेटे हिदायतुल्लाहख़ांके मारेजानेपर, जो मुइज़्ज़ुद्दीनकी फ़ौजमें था, भागकर मक्कह चलागया; फिर कई आदमियोंकी सुफ़ारिशसे वापस आकर फ़र्रुख़सियरके पास हाज़िर हुआ; और मक्कहके शरीफ़ (हाकिम) की एक अर्ज़ी लाया, जिसमें जिज़्यह जारी करनेको हदीसके रूसे मज़्हबी फ़र्ज़ लिखा था. फ़र्रुख़सियरने भी इनायतुल्लाहख़ांके दममें आकर फिर जिज़्यह जारी किया. सय्यदोंने बहुतेरा समझाया, और कहा, कि इसमें बड़े भारी बखेड़ेकी सूरतें हैं, लेकिन् लोगोंने बादशाहको यह समझा दिया, कि अब्दुल्लाहख़ां हिन्दू राजाओंसे मिलावट रखता है. फ़र्रुख़सियरने एक फ़र्मान अपने हाथसे जिज़्यहके बारेमें लिखकर महाराणा संग्रामसिंहके नाम भेजदिया, जिसका तर्जमह और अस्लकी नक़्ल हम नीचे लिखते हैं:-

---

फ़र्मानका तर्जमह (१).

मामूली अल्क़ाबके बाद,

इन दिनोंमें जिज़्यह लियाजाना जारी होनेकी बाबत मक्केके शरीफ़की अर्ज़ी ग़ैबकी ख़ुशख़बरीके मुवाफ़िक़ हाजी इनायतुल्लाहख़ांके हाथ, जो हज़्रत ख़ुल्दमकान (आलमगीर) के

(نقل فرمان فرخ سیر بادشاه)

هو

بادشاهان

لایق العنایت والاحسان ، سزاوار مراحم بیکران، قابل الطاف

شایان ، زبدهٔ معتقدان ارادت آهنگ ، عمدهٔ راجهان

مهارانا سنگرام سنگه ، امیدوار تفضل شاهي بوده بداند - دریولا

ख़ालिसहका दीवान था, पेश होकर मालूम हुई– हमने जिज़्यह रऋय्यतकी विह्तरीके ख़यालसे बराहे इह्सान मुऋाफ़ फ़र्माया था, ऋौर हमारे दिलमें इस बातका बिल्कुल ख़याल नहीं था; लेकिन् शर्ऋके क़ानूनके बमूजिब ऋर्ज़ शरीफ़को जो रोज़ए पाक (मक्कह) का ख़ादिम है, बड़ोंके ऋह्दकी मुवाफ़िक़ क़ुबूल करनेका मामूल होगया है, मन्ज़ूर किया गया; ऋौर हमने इस बातकी इत्तिला उस हिन्दुस्तानके उ़म्दह राजाको, जो हमारी बुज़ुर्ग दर्गाहके दोस्तों ऋौर मोतक़िदोंमेंसे है, साफ़ तौरपर फ़र्माई. शाही मिह्रबानीको वह उ़म्दह राजा ऋपने ऊपर दिनों दिन बढ़ती जाने.

———*———

इस हुक्मसे सारे हिन्दुस्तानमें फ़सादकी बुन्याद क़ाइम हुई, तो फ़र्रुख़सियरके मारेजानेपर रफ़ीउ़द्दरजातको बादशाह बनाकर सय्यद ऋब्दुल्लाहख़ां व महाराजा ऋजीतसिंहने इस मज़्हबी टैक्सको मौक़ूफ़ किया; लेकिन् जब फ़सादकी ऋाग फैलजाती है, तो पानी छिड़कनेसे भी नहीं बुझती.

महाराणा संग्रामसिंहने विहारीदासकी बहुत इ़ज़्ज़त बढ़ाई, क्योंकि उसने फ़र्रुख़सियरसे रामपुरेका फ़र्मान मेवाड़में मिलानेकी बाबत हासिल कराया. दूसरे चित्तौड़पर जो महलोंके साम्हने पुराना त्रिपौलिया था, उसी ढंगका दिल्लीमें बनने बाद ऋौर

بموجب عرضداشت شریف مکهٔ معظمه که بحسب بشارت مصحوب
حاجی عنایت الله خان که دیوان خالصهٔ وتن حضرت خلد مکان بود ،
در مقدمهٔ تقرراخذ جزیه ، که از پیشگاه فضل و احسان برفاه
مخلوقات جهان آفرین معاف فرموده بودیم ، وهرگز تعین اینمعنی
مرکوز خاطر ملکوت ناظر نبود ، معروض مقدس معلی گردید - ازانجا
که در قانون شریعت غرّا ملتمسات شریف معزالیه ، که خادم روضهٔ مقدس
منوره است ، بروفق طریقهٔ عهود اسلاف بلاتوقف اجابت فرمودن
معمول افتاده ، منظور شد ؛ واطلاع اینمعنی به آن عمدهٔ راجهان
هندوستان که ازجملهٔ مخلصان و معتقدان بارگاه عظمت وجاه است ،
تفصیل فرمودیم ؛ وتفضل شاهی را همیشه دربارهٔ خود آن عمدهٔ
راجهان روزافزون دانند فقط .

जगह बनवानेकी मनाई होगई थी, जिसकी इजाज़त ली; और उदयपुरमें भी बनवाया गया; परन्तु चित्तौड़ और दिल्लीके त्रिपौलिये "एकके बाद दूसरा" आगे पीछे थे, और यहां तीनों बराबरीमें बने. तीसरे अगढ़ (१) पर हाथी लड़ाना ख़ास बादशाहोंके सिवाय औरोंको मना था; इसकी इजाज़त लेकर उदयपुरमें त्रिपौलिये और महलोंके बीच, और चौगान (२) में भी अगढ़ बनवायागया. इससे यहां बिहारीदासका दरजा बढ़तारहा. विक्रमी १७७० [हि० ११२५ = ई० १७१३] में महाराणाने पीछोला तालाबकी पालके पूर्व तरफ़ नीलकंठ महादेवजी के मन्दिरके पास दक्षिणामूर्ति ब्रह्मचारीके अकीदहपर इसी नामका एक मन्दिर महादेवजी का बनवाया- (देखो शेष संग्रह नम्बर १).

विक्रमी १७७२ माघ शुक्ल १२ [हि० ११२८ ता० ११ सफ़र = ई० १७१६ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को स्यारमा ग्राममें, जो उदयपुरसे पश्चिम पीछोला तालाबके किनारे पर है, वैद्यनाथ महादेवकी प्रतिष्ठा हुई; यह मन्दिर महाराणा अमरसिंह २ की महाराणी और महाराणा संग्रामसिंह २ की माताने बनवाया, जो बेदलाके राव सबलसिंहकी बेटी और राव सुल्तानसिंहकी बहिन थी. इस मन्दिरकी प्रतिष्ठामें महाराणा संग्रामसिंह २ ने लाखों रुपये ख़र्च किये; राज माताने और बहुतसे दान देनेके सिवाय सुवर्णका तुला दान किया, और इस जल्सहमें कोटेके महाराव भीमसिंह, डूंगरपुरके रावल रामसिंह वगैरह बहुतसे मश्हूर राज्यवंशी मौजूद थे. इस प्रतिष्ठाकी एक प्रशस्ति विक्रमी १७७५ [हि० ११३० = ई० १७१८] को वैद्यनाथके मन्दिरमें लिखीगई है- (देखो शेष संग्रह नंबर २), जिससे सब हाल प्रकट होगा. इस उत्सवकी तस्वीरोंका एक पत्र, जो यहां मौजूद है, उसकी पीठपरका लेख हम नीचे दर्ज करते हैं, जिससे उस समयका रिवाज और सर्दारोंके नाम जाने जायेंगे.

चित्रपटके पीठपरके मज़्मूनकी नक्ल.

श्री महादेव वैद्यनाथजीरो देवरो श्री बाईजी राज देवकुंवरजीरो नवो करायने देवरो परणायो, जदी ईंतरो साथ जदी गोठ कीधी- श्री महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजी,

(१) यह एक हाथी लड़ानेकी मज़बूत और नीची दीवार बीचमें होती है, जिससे एक हाथी दूसरे हाथीपर सख़्त हमलह न करसके.

(२) यह एक नियत कियाहुआ इहातह है, जिसके चारों तरफ़ दीवार, उत्तर व पूर्वकी तरफ़ दर्बारके लिये दो बड़े मकान और बीचमें एक बलन्द और गोल चबूतरा है, और वहीं अगढ़ बनेहुए हैं.

जदी इतरा ठाकुर डोरो फेरता इतरो साथ देवरा माहें– श्री बाईजीराज समस्त राज लोक, श्री महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजी, कुंवर श्री जगत्सिंहजी, बाई चिमनी और राज लोक सगलो साथ, पुरोहित सुखरामजी. बाई जी राज तुलां विराज्या, गोदमें चिमनी बाई बैठा, श्री महाराणाजी साम्हां ऊभा, पुरोहितजी साम्हां ऊभा, आगे पाछे धाय बडारण ऊभी; गोठ हुई, जदी इतरो साथ, ठाकुरांरो जीमणी बाजू रावल रामसिंहजी, महाराणा श्री संग्रामसिंहजी बीचमें बैठ्या, डावी बाजू राव सुरताणसिंहजी, रावत केसरीसिंहजी, महाराज तख्तसिंहजी, श्री कुंवर जगत्सिंहजी, कुंवर नाथजी, राठौड़ किसनदासजी; सामा बैठा– तुवर किसनसिंहजी, रामसिंहजी, तुलसीदासजी; आरोगने डेरे पधारिया, जदी राव सुरतानसिंहजीरो हाथ उपरे हाथ श्री महाराणा श्री संग्रामसिंहजीरो हाथ नीचे; चमरदार तुलसीदास, चमरदार पंचोली मयाचंद, जणा आगे रावल रामसिंहजी, रावत केसरीसिंहजी, कुंवर श्री जगत्सिंहजी, कुंवर नाथजी, काको तख्तसिंहजी, रामसिंहजी; पाछे राठौड़ किसनदासजी, तुवर किसनसिंहजी; हाथी मदनमूरत ऊभो, आगे हथणी ऊभी. संवत १७७२ वर्षे महा सुदी १२ बैजनाथजीरे गोठ अरोगवा पधारा.

विक्रमी १७७४ वैशाख शुक्ल १५ [हि० ११२९ ता० १४ जमादियुल् अव्वल = ई० १७१७ ता० २ एप्रिल] को वेदलेके राव सुल्तानसिंहने बावड़ीकी प्रतिष्ठा की, और महाराणाको निमंत्रणकर बड़ा भारी उत्सव किया, जिसमें राव सुल्तानसिंहके तिहत्तर हज़ार रुपये ख़र्च पड़े –(देखो शेष संग्रह प्रशस्ति नम्बर ३); महाराणा संग्रामसिंह राव सुल्तानसिंहके भान्जे थे. फिर पंचोली बिहारीदासने फ़ौजी ताक़तसे रामपुराके राव गोपालसिंहको महाराणाके पास लाकर कुछ ख़र्चके लाइक़ जागीर दिलानेका वादह किया था, और उसीके मुवाफ़िक़ उनको जागीर दिलाईगई; क्योंकि महाराणा अमरसिंह २ के वक़्से रामपुरा फ़ौज भेज भेजकर कई बार लेलिया गया था, और ख़र्चके लाइक़ जागीर रावको निकालदी थी; लेकिन् आख़िर अह्द ठहराकर इक़ारनामह लिखवाया गया, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है:–

नक़्ल इक़ारनामह.

सिद्धि श्री महाराजाधिराज महाराणा श्री संग्रामसिंहजी आदेसात्, रामपुरो श्री पातसाहजी श्री जी है वतन जमीदारीसूं मया कीधो थो, सो बंदोबस्त खालसे

करे पांच ठाकुर तथा पंचोली बिहारीदासजी है फ़ौज लेर मोकल्या; सो पांच ठाकुरांकी अरज थी, राव गोपालसिंघजी, संग्रामसिंघजी तथा सारा भाई बेटा चंद्रावत देवड़ा धरतीका रजपुतां अरज कीधी, सो आगेही म्हांका वड़ावुड़ा चाकरी करता हा, सो अवे ही म्हां तीरां थी चाकरी करावजो; पांच ठाकुरां मेवाड़का चाकरी करे है, ज्यूं मे ही चाकरी करांगा, ने म्हांका घरकी मेर मुर्जाद सदा रहीहै, ज्यूंई श्री जी रापेगा; विगेर हुकम कोई काम करां, तो पांच ठाकुर दरवार थी ओलंभो दे, पातसाहीमें तथा सूबा थी कठेई सादवा पावां नहीं; तथा रोएला (रुहेला– पठान) रापवा पावां नहीं, पातशाही मुलकमें बगेर हुकम दपल करां नहीं; जाइगा पट्टे करे देवाणी हे, जणीमें रहांगा; दपणी रोएलारा जतन वासते उजीणके सोबे म्हांका पट्टा माफिक जमीअत लेकर चाकरी करांगा, हजुर बुलावे चाकरी करावेगा, तो हजुर चाकरी करांगा; कणी वातरो उजर करां नहीं; पातसाहीमें पहली षर्च हुवो, सोतो सारी धरतीपर हुवो, ने अवे परच होवेगो, सो पांच ठाकुर मेवाड़काके सिरश्ते व्हेगो; पातसाहरी नेकी वदी है पांच ठाकुर भेला दौड़ांगा. रामपुराको हदो बस्त रु० ८००००० को, जी मधे रु० ४००००१ की धरती श्री जीरे षालसे राषी, जींरी बिगतः–

५८३०० परगने हवेलीका गांव १००.
७१६५० परगने आमदका गांव ७८.
२०६२५ परगने पठारका गांव ५९.
४९२५० परगने दांतोलीका गांव २८.
२०१०० परगने आंतरीका गांव २०.
५११०० परगने संजेतका गांव ५८.
६७२५० परगने चन्दवासरा गांव ४७.
३८५०० परगने संकोधारका गांव २५.

रु० ३७६७७५ गांव ४१५ यां गांवांको बिवरो नामा प्रनामी ऊपर दरज है.

रु० ४००००१ की जाइगा राव गोपालसिंहजी, संग्रामसिंहजी समस्त देवड़ाने मया कीधी.

२५००० कस्वो रामपुरो.
१४५५०० परगने कमलाको परगणों गांव ९४.
२०९७०० परगने गेरोटका गांव १३५.
१९९०० परगने सांपूधारका गांव १७.

अणां गांवांको बिवरो ऊपर दरज है, हरेक परगणामें हे षालसाका गावांका

कामदार जागीरदार षालसाकी हद्दम्हें रहेगा, ने चंद्रावतांका गांवांकी हद्दम्हें चंद्रावत रहेगा, मांहे मांहे कोई बोलवा पावे नहीं, कोई ऑटो झगड़ो ऊपजे, तो श्री जी हजुर अरज करे, तथा पांच ठाकुरां थी अरज करे परभारा बोले नहीं; ईतरा ठाकुरां वाता माहे व्हे ने काम कीधो:–

राठौड़ दुर्गदासजी.
रावत देवभाणजी.
राठौड़ प्रतापसिंहजी.
रावत संग्रामसिंहजी.
झाला कल्याणजी.
झाला अजैसिंहजी.
सगतावत जैतसिंहजी.
राव रघुनाथसिंहजी.
राणावत संग्रामसिंहजी.
राणावत कीर्तिसिंहजी.

बरामी गोरवाड़.
रावत केसरी सिंहजी.
राव विक्रमादित्यजी.
रावत देवीसिंहजी.
रावत प्रथीसिंहजी.
रावत सारंगदेवजी.
रावत हमीरसिंहजी.
डोडिया मनोरसिंहजी.
सगतावत खुशालसिंहजी.
राणावत रत्नसिंहजी, बख्तसिंहजी.

तथा समस्त षूम षूमरा ठाकुरां हो चंद्रावतांरा ओलंभा सावासरी बात अनो हे पूछाएगी, ने एहीज हुकम राषेगा; दरबार थी बंदगी राखे हैं, जना थी चंद्रावत सूं शुद्ध राखेगा; राव छत्रसिंहजीरे ने चंद्रावतांरे अशुद्ध थी, सो शुद्ध कीधी; पांच ठाकुर राव गोपालसिंहजी हैं श्रीजी हजूर पगे लगावा लेचाल्या, ने संग्रामसिंहजी है देश आबादान करवा अणाका पट्टामें मेल्या; सो हुक्म प्रमाणे चाकरी करेगा. अतरा ठाकुर चंद्रावतांरा भेला होए लिख्या करे दीधो.

सही राव गोपालसिंहजी.
महाराज कुशलसिंहजी.
देवड़ा अचलसिंहजी.
देवड़ा अनोपसिंहजी.
रावत नाहरसिंहजी.
रावत सवलसिंहजी.
चंद्रावत कान्हजी.
राव सदानन्दजी.

छाप संग्रामसिंहजी.
परशोत्तमसिंहजी.
देवड़ा देवीसिंहजी.
रावत हरनाथसिंहजी.
सुल्तानसिंहजी.
जसकरणजी.
चंद्रावत दौलतसिंहजी.
धाभाई भगोतसिंहजी.

भादवा सुद २ संवत १७७४ मुकाम भाणपुरे.

इसी मत्लबका एक काग़ज़ पंचोली विहारीदासके नाम भाणपुरेसे कुंवर संग्रामसिंह चंद्रावतने लिखभेजा, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है :-

रामपुरा कुंवरके काग़ज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी १

॥ महाराज जोहार वंच्या

॥ सिधि श्री उदेपुर सुथाने पचोली जी श्री बीहारीदासजी जोग्य, लीपायतं भांनपुरका डेरा थी लीपायतं महाराज श्री संग्रामस्यंघजी केन्य जुहार बंच्या, अप्र अठाका समाचार श्रीजीकी क्रिपा थी रावली मया थी भला हे, राजका सुष समाचार स्दा भला चाहिजे, तो म्हा हे प्रम संतोष होय, अप्र राज मोटा हो, म्हासुं क्रिपा सनेह राषो हो तेथी वीसेप रापजो जी, म्हाके राज उप्रात दुजी बात नहे जी, अप्र राजको कागद आयो, समांचार पाया; आपने लीप्यौ श्री जी हजुर थी नील कमलरो बीज वीजारनो मगायो हे, सु जरुर पोहचावजौ; सु नील कमलरा बीज तो हजुर मोकल्या हे, सु मालुम कीजौ; अर वीजारना ठा० कीरासु ताकीत कीवी, ती उपर कीराने अरज पोहचाई, कमलका चाडा पाके झडे हे, उनी बीजको बीजार नौ व्हे हे; तीसु बीज तो हजुर पोहच्यो हे, अर वीजार नो हंगाम सीर पोहचेगो जी; अोर श्रीजीको प्रवानो मया हुवो थो, तीका जवावमें अरज दास्त कीवी हे; सु आप श्री जी हजुर गुदरोगा जी; अोर श्री जी हजुर पोहच्या हो, सो श्री बाबाजी हे पगा लगाया होसी, म्हाके तो हजुर में ऐक वसीलो पप राजको हे, म्हे तो रावलो हुकम हर भांत करे साध्यो हे; अब राज ईसी मेहरवानगी करोगा, यो ठीकानो साबत दसतुर बहाल होय, अर म्हे राजीथका बंदगी करा, तीमे सरकारकी मोटी गरज होसी; पछे तो राज सरब जान हो, भला होसी ज्युं करोगा; अब श्री बावाजीहे वीदा सीताब करोगा जी, घनो काई लीषां. कागद समाचार हमेस लीषावु कीजो जी. मीती आसोज सुदि १५ दीने, संवतु १७७४ वर्षे.

इसी मत्लबकी एक अर्ज़ी राव संग्रामसिंहकी महाराणाके नाम है-

अर्ज़ीकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी १

॥ सदा सेवग संग्राम सघकी मुजरो मालुम होयजी

॥ सिधि श्री उदेपुर सुथाने सकल सुभ उपमां श्री महाराजाधिराज महारांणा

॥ श्री संग्रामस्यंघजी ऐतांन्य चरण कमलान भांनपुरका डेराथी लीषायतं स्दा सेवग छोरु संग्रामस्यंघ केन्य सेवा पावांधोक अवधारजो जी, अत्र अठाका समांचार श्री दिवांणजीका तेज प्रताप करै भला हे जी, श्री दिवाणजीका साहन भंडारका सुष समाचार दीनप्रत घडी घडी पल पलका स्दा आरोग्य चाहिजे जी, तो सेवग हे प्रम संतोष होयजी, अत्र श्री दिवाणजी बडा हो जी, मावीत हो जी, सेवग छोरु सुं क्रिपा मेहरवानगी फरमावो हो जी, तेथी बीसेष राषजो जी, म्हारे श्री दिवाणजी उप्रांत दुजी बात न हे जी, श्री दिवांणजी म्हांके प्रमेसुरजी समांन हो जी, सुरज हो जी, श्रीरामजी श्री दिवाणजी हे हीदुसथांनका अर सेवगांका सीरा उपर हजारां हजार साल सलामत राषेजी, अत्र श्री दिवांणजीको प्रवानों सेवगके नांम मया हुवो, सु माथे चढाय ले बांच्यो, सरफराजी हासल हुई. श्रीजीने फरमायो, थांरी सुधरी हकीकत पचोलीजीरा लीष्यां थी मालुम हुई, थे छोरु हो; सु श्रीजी सलामत; म्हे तो महाराव श्री दुरगभांन जीथी ले आजसुधी पाट छोरु हां, ओर श्री बाबोजी श्रीजी हजुर आया हे, सु पगां लागा होसी जी. श्रीजी अंतरजामी मावीत हो जी. सीतापति रुघनांथकुं नेंक नवायो सीस ॥ कहा भभीछन ले मील्यौ लंक करी बगसीस ॥ श्रीजी पण ईषवाक बंस हे, तीथी ये बात उपर नजर करे सेवगां उपर सरफराजी फरमवोगा जी. यो ठिकानों सावक दस्तुर सावत राष्या श्रीजीकी पण मोटी गरज व्हेगी, अर म्हे रजाबंद थका वे उजर बंदगी करांगा; म्हाके तो अषत्यार तोबराकी मुंठी तक हे; ओर हुकम आयो, बंभोरीका तलावमे नील कमल मालम हुवा हे, सुष्यां कमलारो बीज त्था बीजारनो जतना हजुर मेह चावजो, सु श्री हुकम प्रमांने नील कमलरो बीज हजुर मोकल्यौ हे, अर बीजार नो हंगांमसीर पोहचेगोजी, अठे सारोही ब्योहार श्रीजीका हुकमको हे जी, सेवग लायक काम षीदमत होय, सु फरमावेगाजी; बाहुड्तो प्रवांणों मया प्रसाद होयगो जी. मीती काती वीद २ दीने, संवतु १७७४ ब्षै.

राठौड़ दुर्गदासकी बाबत, जिसे महाराजा अजीतसिंहने मारवाड़से निकाल दिया था, मश्हूर है, कि दुर्गदासको यह घमंड होगया था, कि महाराजा अजीतसिंहको मारवाड़ मैंने दिलाया, और मैं बादशाही मन्सबदार हूं, जिसपर विरोध बढ़ा, और आख़िरमें महाराजाने मारवाड़से निकालदिया, परन्तु लोग महाराजापर इल्ज़ाम लगाते हैं, कि दुर्गदासकी ख़िद्मतोंका उन्होंने कुछ भी ख़याल न किया, इस बारेमें एक दोहा मश्हूर है :-

दोहा.

महाराजा अजमालकी, जद पारख जाणी ॥
दुर्गो देशां काढ़जे, गोलां गांगाणी ॥

अर्थ- महाराजा अजीतसिंहकी जभी हमने परीक्षा करली, कि दुर्गदास (जैसे ख़ैरख़्वाह) को मुल्कसे निकाल दिया, और ग़ुलामोंको गांगाणी जैसा गांव जागीरमें दिया.

दुर्गदास उदयपुर चलाआया, और महाराणा संग्रामसिंहने उसे बड़े आदर भावसे रक्खा; विजयपुरका पर्गनह व पन्द्रह हज़ार रुपया माहवारी करदिया. इस समय जमइयत देकर रामपुराकी हिफ़ाज़तके लिये उसे भेजा था, क्योंकि चन्द्रावत फ़साद करते थे.. उस मुआमलेकी बाबत रामपुरासे एक अर्ज़ी, जो महाराणाके नाम दुर्गदासने भेजी थी, उसकी नक़ल नीचे लिखते हैं:-

दुर्गदासकी अर्ज़ीकी नक़ल,

॥ श्री परमैस्वर जी स्त्यछै जी

॥ सिंध श्री ऊदैपुर सुभसुथांनै सर्व उपमा विराजमांन माहाराजाधिराज माहारांणाजी श्री संग्रामसिंघजी चरणकमलायनु, रा। दुरगदासजी लिषतुं सेवा मुजरौ अवधारजौ जी, आठारा समाचार श्री परमेश्वरजीरा प्रताप कर भला छै, श्री माहारांणाजीरा सदा आरोग्य चाहजे जी, श्री दीवंणजी वडा छै, साहब छै, मांसु सदा मया फुरमावे छै, तिणसु विसेप फुरमावजौ जी; आठा लायक कांम चाकरी हुवै, घणी फुरमावजौ जी; अठै घोडा रजपुत छै, सौ श्री दीवंणजीरा कांमनै हाजर छै जी;——
अप्रंच प्रवंनौ ईनाईत हुवौ, वडी षुस्याली हुई; हुकम हुवौ, ज्यौ रांमपुरै रैहतां हजुर नचींताई हुई, उठारो जावतौ रहै; सुं श्री दीवंणजीरे प्रताप कर भांत भांतसुं जवतौ राषां छां, आठारी तरफसुं श्री दीवांणजी षतर जमै फुरमावजौ जी; ओर हकीकत पंचोली विहारीदासजीरा कागदसुं हजुर गुदरसी जी;————
वाहुडता परवांना वेगा वेगा ईनाईत करावजौ जी. मीती काती वदि ५ भौम, सं॥ १७७४ रा.

राठौड़ दुर्गदासका, जो काग़ज़ पंचोली बिहारीदासके नाम आया, उसकी नक़ल यह है:-

कागज़की नक्ल.

॥ श्री परमेसुरजी स्त्यछै

श्री जगतसिंघरो जुहार अवधारजो,

॥ सिंध श्री उदैपुर सुथंनै पंचौली श्री विहारीदासजी जोग्य, राज्य श्री दुरगदासजी लिषावतुं जुहार वाचजो, आठारा समाचार श्री परमेसुरजीरा प्रतापकर भला छै, राजरा सदा भला चाहजै, राज घणी वात छो, म्हांरै राज उप्रंईत काई वात न छै, सु कागदमै कीसी मनहार लिषां, सदा सुष ईकलास राषो छो, तीएसु विसेष राषजो; आठा सारीषो कांम काज होय, सु लिषावजो, अप्रंच कागद राजरो आसोज सुदि ८ रो लीष्यो आयो, वाच्यां थी सुष हुवो; लीषो थो, ज्यो देवलीया, वंसवाला, डुगरपुर होय सुदी ७ रीषबदेवजी डेरा हुवा छै (१), सुदी १० श्रीजीरै पावै लागणेरो मोहरत छै; सु पावै लागां पछै ज्यो हकीकत होय, सु लिषावजो. श्री जीरो प्रवंनो आयो, वडी षुस्याली हुई, तीएरा जुबाबमै अरजदासत मेली छै, सु गुजरांनैगा; ओर लीष्यो ज्यो संग्रामसिंघजी प्रडगनै आवरारा गंम मारीया, तीए वासतै राव गोपालसिंघजी कनै भी लीषायो छै, नै अठासु पीए कहावजो, सुं संग्रामसिंघजी तो हीमारतंई भांएपुर हीज छै, कोई विचार राषता होसी, तो कहावसां, ईसो कांम न करसी; आठारी हकीकत आगे जाट लिषमीया साथे कागद दीयो छै, तीएसु राजनु मालम होसी; आठारी तरफरी नचिंताई राषजो; लिष्यो थो, रा। सीरदारसिंघ नु उदैपुर जाय सीष दीरासां, सु वेगी सीष दीरावजो. कीका अणंदसिंघ प्रतापसिंघरो पसमंनो राषजो; प्रडगनै विजैपुर, षडलाषड, दुध भेसो केलुंधुट दीसां राजनै कहो थो, सु इणं तीनु रंकमरी छुटरा उमेदवारछां; प्रडगना उपर चीठी हुवण न पावै, नै कदास रंकम न छुटै, तो कुसलसिंघजीरै मुकरडे़ लागतो, सु भरदेसां; भरोती कराय मेलजो, ओर दांणरो ईजारो पं ॥ कांनजी नु कहैनै करायदीजो; आगे ईजारो छै, तीए माफक

(१) ये तीनों ठिकाने इन दिनों महाराणाकी हुक्म उदूली करते थे, इस वास्ते पंचोली बिहारीदास फ़ौज लेकर गया, और तीनों रईसोंको साथ ले आया.

कीसत रा कीसत रुपीया केसी जठै भराय देसां जी.

वाढ़ुडता कागद वेगा वेगा दीजो. मीती काती वदि ६ भौम, सं । १७७४ रा।

मुं । दुधैलाई.
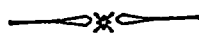
इन ऊपर लिखे हुए हालातसे महाराणा संग्रामसिंहका मुल्की इन्तिज़ाम, नोकरोंकी क़द्र व सर्दारोंका लिहाज़, जैसा बर्ताजाता था, वह पाठक लोग जान सक्ते हैं. इसी वर्षके श्रावण मास [हि० रमज़ान = ई० ऑगस्ट] में नाहरमगरेके महलोंकी बुनयाद डालीगई. यह शिकारगाह उदयपुरसे सोलह मील ईशाण कोणपर अब तक मौजूद है, और वहां उनके बनवाये हुए गुम्बज़दार महल क़ाइम हैं. इसी तरह उदयसागरके तीरपर कमलोदकी पहाड़ीमें शिकार खेलनेके मकान बनवाये. यह महाराणा मुल्की इन्तिज़ामसे फ़ुर्सत पाकर दुन्यादारीके आरामकी तरफ़ भी ध्यान रखते थे, जो उस समयके चित्रपट देखनेसे ज़ाहिर है. इनके समयमें रियासतमें कोई ख़लल नहीं आया, क्योंकि यह हर एक बातकी तरफ़ मौक़ेपर तवज्जुह करते थे; लेकिन् अफ़्सोस है, कि ऐसे अक़्मन्द राजाने उन बातोंके अंजामपर कुछ भी ध्यान नहीं दिया; क्योंकि बुद्धिमान लोग संसारी सुखसे नुक़्सान नहीं उठाते, परन्तु वे ऐश व इश्रतकी जड़ जमा देते हैं, जिससे पिछले ग़ाफ़िल लोग धीरे धीरे ख़राबीमें पड़कर बर्बादीकी दशाको पहुंच जाते हैं.

महाराणा जयसिंहने मरनेसे कुछ दिन पहिले ऐश व इश्रतके कामोंकी तरफ़ ध्यान दिया, फिर महाराणा अमरसिंह २ ने बहादुरी और बुद्धिमानीके बग़ीचेमें शराबके पानीसे इस पौदेको पर्वरिश किया, और इन महाराणाने उसकी शाख़ोंको बढ़ाया, पर यह न सोचा, कि इससे बग़ीचेके पिछले दरख़्तोंको नुक़्सान पहुंचेगा. हम इस जगह मुग़्लियह ख़ानदानकी मिसाल देतेहैं, कि अक्बर बादशाहने ऐश व इश्रतका बीज बोया, और जहांगीरने उसकी रक्षा की, शाहजहांने उसे सर सब्ज़ किया, जिसकी ठंडी छायामें ग़ाफ़िल होतेही आलमगीरकी क़ैदमें आया. फिर उसके ख़ानदानमें अय्याशी ऐसी फैल गई, कि हिन्दुस्तानकी बादशाहतका ख़ातिमह होनेतक पीछा न छूटा. इसी तरह मेवाड़को भी बहुत नुक़्सान पहुंचा, जो पाठकोंको आगे अच्छी तरह मालूम होजायेगा.

विक्रमी १७७५ चैत्र शुक्ल १ [हि० ११३० ता० ३० रबीउस्सानी = ई० १७१८ ता० १ एप्रिल] को बड़े कुंवर जगत्सिंहको शीतला निकली, जिसका उत्सव कियागया,

और इसी मानताके कारण शीतला माताका मन्दिर बनवाया, जो देलवाड़ेकी हवेलीके साम्हने बाग़के अन्दर अब तक मौजूद है.

यह महाराणा रियासतमें एक हुक्म रखना चाहते थे, अर्थात् रियासतोंमें अक्सर क़ाइदह है, कि मज़्हबी पेश्वा, ज़नानख़ानह अथवा वलीअ़ह्द, तथा भाई बेटे वगैरह जुदा जुदा हुक्म चलाने लगते हैं. इन महाराणाने अपने हुक्मके सिवाय दूसरेका हुक्म नहीं चलने दिया; इस बारेमें एक बार अपनी मासे भी रंजीदह होगये थे. उनकी यह आदत थी, कि हमेशह अपनी मा से प्रभातको दंडवत् करनेके बाद खाना खाते; एक बार मामूल मूजिब बाईजीराज (अपनी माता) के पास गये, तो उन्होंने किसीको जागीर दिलानेकी सिफ़ारिश की; महाराणा मन्जूर करके बाहर आये, और उस जागीरका पट्टा लिखकर बाईजीराजके पास भेजदिया; परन्तु दूसरे दिनसे भीतर जानेका दस्तूर बन्द किया; बाईजीराजने बहुत कुछ चाहा, पर वे न गये; तब उन्होंने तीर्थ यात्राका मनोर्थ किया; महाराणाने सब तय्यारी करवादी, तोभी मिलनेको न गये; बाईजीराज आंबेर पहुंचे, महाराजा सवाई जयसिंहने यहां तक उनका आदर किया, कि बाईजीराज की पालकीमें कन्धा लगाकर महलोंमें लेगये. फिर राज माता मथुरा, वृन्दावन वगैरह तीर्थ यात्रा करके लौटीं, तो महाराजा सवाई जयसिंह उन्हें पहुंचानेको उदयपुर तक आये, और यह कहा, कि मैं दोनों मा बेटोंका रंज मिटवा दूंगा. महाराणा अपनी माताकी पेश्वाईके लिये उदयपुरसे एक मंज़िल साम्हने जाकर उन्हें अपने डेरोंमें ले आये, और महाराजा जयसिंहसे मिले. महाराजाने आपसके रंजका ज़िक्र छेड़ा, महाराणाने कह दिया, कि घरका विरोध घरमें ही मिटता है, आप मिह्मान हैं, आपको इन बातोंसे कुछ मत्लब नहीं. इसके बाद उदयपुरमें आये, और महाराजा जयसिंहकी बहुत ख़ातिर की. यह बात कर्नेल टॉडने महाराणाकी बुद्धिमानीकी प्रशंसामें लिखी है, जो हक़ीक़तमें बड़े बुद्धिमान थे. विक्रमी १७७९ फाल्गुन् कृष्ण ११ [हि० ११३५ ता० २५ जमादियुल अव्वल = ई० १७२३ ता० ४ मार्च] को चीनीकी चित्रशालीमें रहनेका उत्सव किया; यह चीनीकी ईंटें महाराणाने पोर्चुगीज़ोंकी मारिफ़त चीनसे मंगवाई थीं, और बहुतसी उनमेंसे यूरोपकी बनीहुई थीं, जो इस महलमें लगाई गईं, वह अब तक मौजूद हैं.

वि० १७८० वैशाख कृष्ण ७ [हि० ११३५ ता० २१ रजब = ई० १७२३ ता० २७ एप्रिल] को युवराज कुंवर जगत्सिंहका यज्ञोपवीत संस्कार किया, और वि० ज्येष्ठ [हि० रमज़ान = ई० जून] में कुंवर जगत्सिंहकी बरात लूणावाड़े गई. वहांके रईस सोलंखी नाहरसिंहकी बेटीके साथ विवाह हुआ. इस शादीमें महाराणा संग्रामसिंहने

लाखों रुपये खर्च किये थे. चारण कविया करणीदानके गीतों (१) को महाराणाने धूप देकर पूजन किया. यह बात इस तरह हुई थी, कि मेवाड़में सूलवाड़ा गांवका चारण कविया करणीदान अन्न विना लाचार होकर घरसे निकला; यह अच्छा शाइर था; अव्वल शाहपुराके कुंवर उम्मेदसिंहके पास गया, जो इन्हीं दिनोंमें अपने बापको रद्द करके शाहपुराका मुरूतार होगया था. करणीदानने अपनी शाइरीसे उन्हें खुश किया, उम्मेदसिंहने कुछ राह खर्च देकर रुख़्सत दी. यह अपने प्रारब्ध को दोष लगाकर रवानह होगया, क्योंकि कुंवर उम्मेदसिंह उदार थे, और इसकी कवितासे ज़ियादह खुश भी हुए, परन्तु करणीदानको घरपर भेजनेके लाइक़ ज़ाहिरा कुछ नहीं दिया; ८०० रुपये उम्मेदसिंहने करणीदानके घर भेजदिये, और उसका कुछ भी ज़िक्र नहीं किया. करणीदान डूंगरपुर पहुंचा, जहांके रावल शिवसिंहने उसकी कवितासे खुश होकर लाख पशाव दिया. उस वक़्का एक दोहा हम नीचे लिखते हैं:-

दोहा.

बावरिया छत्रपतविया कीदाखूं क्रामात ॥
सिध जूना रावळ शिवा नमो गिरप्पुर नाथ ॥ १ ॥

अर्थ- दूसरे छत्र धारी (राजा) नये जोगी अर्थात् छोटी जटावाले मरकर थोड़ीसी तपस्याके ज़ोरसे राजा बनगये, जिनको मैं करामाती नहीं कहसक्ता; परन्तु पुराने तपस्वी (बहुत दिनों तक तप करके राजा बनने वाला) रावल शिवसिंह तुमको मेरा प्रणाम है. करणीदान वहांसे उदयपुर आया, और महाराणा संग्रामसिंह को पांच गीत सुनाये, जिससे महाराणाने खुश होकर कहा, कि तुम कहो, तो इन गीतोंका हम अपने हाथसे पूजन करें, और तुम कहो, तो लाख पशाव दियाजावे. करणीदानने अपनी इज़्ज़त बढ़ानेके लिये पूजन करना पसन्द किया; महाराणाने वैसा ही किया, और लाख पशाव (२) भी दिया. फिर यही करणीदान जोधपुरके

---

(१) यह एक प्रकारके छन्द होते हैं, जो चारण लोग अक्सर मारवाड़ी शाइरी इन्हीं छन्दोंमें बनाते हैं.

(२) लाख पशावकी तफ़्सील इस तरहपर है, एक हाथी मए सामान व जेवरके, १ पालकी (लंबे खम्दार बांसके डंडे वाली), २ घोड़े मए सुनहरी व रुपहरी जेवर व सामानके, २ ऊंट, बीस हज़ार रुपयों से लेकर पचास हज़ार रुपयों तक नक़्द, एक हज़ार रुपया सालानाकी आमदनीसे

महाराजा अभयसिंहके पास पहुंचा, और वहांका अजाची बना, जिसका ज़िक्र मारवाड़की तवारीख़में लिख आये हैं.

विक्रमी १७८१ भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० ११३६ ता० १७ ज़िल्क़ाद = ई० १७२४ ता० ८ ऑगस्ट] को महाराणाके कुंवर जगत्सिंहकी भार्या सोलंखिणीसे भंवर प्रतापसिंहका जन्म हुआ. महाराणाने पौत्र पैदा होनेका बहुत बड़ा उत्सव किया. इन महाराणाको अपने बापका मन्शा पूरा करनेकी बहुत ख़्वाहिश थी; रामपुरा महाराणा अमरसिंह २ की मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ अपने क़ब्ज़ेमें करलिया, सिरोही लेनेकी कोशिश थी, और ईडरके लिये चाहते थे, कि उसको मेवाड़में मिला लियाजावे; लेकिन् जोधपुरके महाराजा अजीतसिंहको उनके बेटे बख़्तसिंहने मारडाला; और महाराजाके छोटे बेटे आणन्दसिंह और रायसिंह भागकर ईडर पहुंचे; उन्होंने वहांके पहिले राजाओंकी ख़राब हालत देखकर ईडरपर क़ब्ज़ह करलिया, जिसको महाराणा संग्रामसिंहने उनसे छीन लेना चाहा, और महाराजा सवाई जयसिंहको इस मुआमलेमें मुन्सिफ़ क़रार दिया. जयसिंहने महाराजा अभयसिंहको समझाया, कि आपके भाई आणन्दसिंह व रायसिंह ईडरके पहाड़ी मुल्कपर क़ाबिज़ रहकर मारवाड़को बर्बाद करेंगे, इसलिये मैं उनको ग़ारत करनेके लिये एक तद्बीर बतलाता हूं, कि ईडरका फ़र्मान बादशाहसे आपको मिलचुका है, लेकिन् महाराणाने मुझसे कहा है, कि वह ज़िला मुझे ठेकेपर महाराजा अभयसिंह लिखदेवें; बस आप अपने भाइयोंको मारडालनेके इक़ारपर महाराणाको दे दीजिये. महाराजाने इस सलाहको मंज़ूर किया, और एक ख़रीतह महाराजा जयसिंहके ख़रीतहके साथ महाराणाको भेजा; उन दोनों ख़रीतोंकी नक़्लें नीचे लिखीजाती हैं:-

महाराजा सवाई जयसिंहका ख़रीतह,

श्रीरांमजी

सीतारांमजी

सिध श्री महाराजा धिराज महारांणा श्री संग्रामस्यंघजी जोग्य, लिषतं राजा

लेकर पांच हज़ारकी आमदनी तकका गांव, और सिरोपाव व पांच हज़ार रुपयोंका ज़ेवर. पिछले ज़मानेमें महाराणा भीमसिंहके समय रुपयोंकी कमी होती, तो उनके एवज़में ज़ेवर व जायदाद ज़ियादह दीजाती थी, जिसका ज़िक्र उनके हालमें किया जायेगा.

(१) श्री दीवांणजीसो मारो मुजरो मालुम व्हे, अप्र हुं श्री दीवांणकी हजुरी छो, जदी आप हुकम कीयो छो, जो इडर तो आगण छे; अर छपन घर छे, सो इने लीयो चाहिजे; सो म्हारे इको तलास वहोत छो, सो अव यो काम श्री दीवाणका प्रतापसो हुवो.

सवाई जेस्यघकेन मुजरौ अवधारिज्यौ, अैठाका स्मांचार श्री जीकी क्रिपा सौं भला छे, आपका सदा भला चाहजे, अप्रंच आप वड़ा छो, हिंदुसथांनमै सरदार छो, अैंठा वैठाको व्योहारमै कहौं वात जुदायगी न छै, अैठे घोड़ा रजपुत छै सो आपका कांमनै छै, ई त्रफ़ कांम काज होय, सो लिपावता रहोला; अर ऊदेपुरमैं म्हे आपकी हजुरि छा, तव म्हानै आप या वात फ़ुरमाई छी, जो मेवाड़ तो घर छे, अर ईड़र मेवाड़को आंगण छे, सो ई का लेवाको तलास रपावोला; सो वै ही दिनसौं म्हे तलासमै छा; अर अव भी ई कांमकै वासतै मयारांम ऊकीलनै आपको लिष्यो आयो, सो दलपत राय म्हांनै वजंनसि वंचायो; तीपरि म्हे महाराजा अभैस्यंघजीनै समझाय व्योरो कह्यौ, सो यां भी कवुल करी, अर प्रगनौं ईडरको आपकी नजरि कीयौ, सो पत याको ईही मतलवको लिषाय भेज्यौ छै, सो पहुंचैलो, अर महाराजा अभैस्यघजी या अरज करी छै, जो आप जतन असो करावोला, अणंदस्यंघ वैठासौं जीवतो नीकलै नही, मास्यो ही जाय, वैनै मास्या विना राजको वंदवसत कठणि छै; सो याका राजका वंदवसतको तो फिकर आपनै छै ही, तीस्यौ म्हे भी याही अरज करां छां, प्रथम तो ई कांमकै वासतै श्री दीवांण ही पधारै, अर जो कदाचि आपका पधारिवाकी सलाह न होय, तो धाय‌भाई नगनै हुकंम होय, वो आछी फोज सौं जाय, अर पैहली तो नांका वंदी करिले, जैठा पाछै वैनै मारै; भाग्य जावा न पावै. ई वातको घणो जतन रपावे, कागद समाचार लिषावता रहोला. मिती असाढ वदि ७ सवत १७८४.

पांनो दुजो.

रांमजी

प्रगनुं ईडर महाराजा अभैस्यघजीकी जागीरमै छै, जेतौ तो या आपकी नजरि ही कीयौ छै, अर जो कदाचि ओर कहीकी जागीरमै होजाय, तो जमाव वैठाको असो करांवैला, अमल सरकार ही को रेहवो करै, ओर मनसवदार अमल करवा न पावै. मिती असाढ वदि ८ संवत १७८४.

(१) ये तीनों आड़ी सतरें ख़ास महाराजा जयसिंहके हाथके लिखे हुएकी नक्ल़ है.

महाराजा अभयसिंहके काग़ज़की नक्ल़, जो महाराजा जयसिंहके काग़ज़के साथ आया था.

॥ श्रीपरमेसरजी स्त छै.

॥ स्विस्ति श्री महाराजा धिराज महारांणा श्री संग्रांमसिघजी जोग्य, राज राजेश्वर माहाराजा धिराज महाराजा श्री अभैसिघजी लिषावतं मुंजरो वाचजो, अठारा समाचार भला छै, राजरा सदा भला चाहीजै, राज ठाकुर छो, वडा छो, सदा हेत मया रापो छो, तिणथी वीसेप रषावजो, अठा सारषो कांम काज हुवे, सुं हमेसां लिषावजो, अठे राजरो घर छे, जुदागी कीए वात दीसा न जांणे, अठे घोडा रजपुत छै, सुं राजरे कांमनुं छै,

अप्रंच प्रगनो ईडर म्हे राजनुं दीयो छै, राज ऊठारो भली भांत जावतो करावजो, ने राज ईजारे मुकाते दीसा लिषीयो थौ, सुं आ कीसी वात छै, ईडर राजरी नीजर छै; तथा अंणदसीघ नें रायसीघ हरांम पोर छे, तीणांनुं फोज मेलने मराय नांपजो; म्हांरी ईण वात सुं रजामंदी छै, राज ईण वातरो आघो कढावजो मती,

सांवत १७८३ रा असाढ वदी ७ मं ॥ फरीदावाद.

(१) म्हांरो मुजरो मालुम हुवे, श्री दीवांण आण-दसीघ, रायसीघनु मरायनांपसो, या बात जरुर.

पहिले काग़ज़में विक्रमी १७८४ और दूसरेमें विक्रमी १७८३ लिखा है, इससे यह मालूम होता है, कि महाराजा जयसिंहका काग़ज़ चैत्रादि संवत्से और महाराजा अभयसिंहका श्रावणादिके हिसाबसे लिखागया है; क्योंकि पहिले काग़ज़में चैत्रसे विक्रमी १७८४ लग गया, और दूसरेमें आपाढ़ी पूर्णिमा तक विक्रमी १७८३ माना गया, वर्नह महीना, तिथि और मत्लब दोनों काग़ज़ोंका एक है; और ये एक ही साथ महाराजा जयसिंहने भेजे हैं. इन काग़ज़ोंके आने बाद महाराणाने अणन्दसिंह व रायसिंह पर फ़ौज तय्यार करके ईडरकी तरफ़ भेजी. इस फ़ौजके मुसाहिब भींडरका महाराज जैतसिंह और धायभाई राव नगराज थे. एक दम ईडरको जाघेरा, तो अणन्दसिंह और रायसिंहने शहर और ज़िला महाराणाकी फ़ौजके सुपुर्द किया, और खुद हिरासतमें आगये. इन दोनों मुसाहिबोंने भी मुल्की बन्दोबस्त करके अणन्दसिंह व रायसिंहको साथ लेकर उदयपुरकी तरफ़ कूच किया; उस वक़्त मारवाड़ी भाषामें किसी शाइरने यह दोहा कहा था:–

(१) ये दोनों आड़ी सतरें ख़ास महाराजा अभयसिंहके हाथके लिखे हुएकी नक्ल़ है.

दोहा.

जैतो आयो जैतकर ईडर अमल जमाह ॥
हिन्दूपत राजी हुवो सगतांरो पतसाह ॥ १ ॥

अर्थ - जेतसिंह फ़त्ह करके ईडरमें अमल जमा आया, जिससे शक्तावतोंके मालिकपर हिन्दूपति (महाराणा) खुश हुआ.

आणन्दसिंह व रायसिंहको महाराणाने अपने पास रक्खा, तो महाराजा अभयसिंहने एक काग़ज़ महाराणाके पास भेजा, जिसकी नक़ल हम नीचे लिखते हैं:-

महाराजा अभयसिंहके काग़ज़की नक़ल.

॥ श्रीपरमेसरजी स्त छे.

॥ स्वस्ति श्री माहाराजा धिराज माहारांणा श्री संग्रामसिंघजी जोग्य, राज राजेश्वर माहाराजा धिराज माहाराजा श्री अभैसिंघजी लिपावतं मुजरो वाचजो, अठारा समाचार भला छे, राजरा सदा भला चाहीजे, राज वडा छो, ठाकुर छो, सदा हेत मया रापा छो तिण था विसेप रपावजो, अठा सारीपो कांम काज हुवे सु हमेसां लिपावजो, अठे राजरो घर छे, जुदायगी कीणी वात दीसा न जांणे, अठे घोडा रजपुत छे सो राजरे कांमनुं छे। अप्रंच अणंदसिंघ, रायसिंघरी वात राज ठेहराय ने ऊदेपुर बुलाया, सु आछां कीयो, आ वात राजरे हीज करणरी थी; हीमै यानुं पटो भावे रोजीनो दीरायनें राज कने रपावसी; ईडररो ऐक पेत ही ईणांनुं न दीरावेला, ईडर राजरे रपावजो, दरबाररे मुतसदीयांनुं हुकंम हुवो छे, सो ईडररे ईजारेरो टको हीमार राजरे मुतसदीयां कने कोई मांगे नहीं, सु राज हरगीज ईडररो ऐक पेत ही ऊणांनुं दीरावो मत, और हकीकत पं ॥ रायचंद अरज करसी. संवत १७८५ रा भाद्रवा वदी २ मुं ॥ जहांनावाद.

इस काग़ज़के लिखनेका मत्लब ज़ाहिरा तो ईडरमें रायसिंह व अणन्दसिंहको न रखनेका है, परन्तु उनके न मारेजानेसे महाराजा अभयसिंहकी दिली मुराद पूरी न हुई; तब महाराणाको इशारेसे उलहना लिखभेजा, कि "अणन्दसिंह, रायसिंहको फ़ौज भेजकर उदयपुर बुलाया, यह अच्छा किया, यह बात आप हीके करनेकी थी", अर्थात्

इक़ारके बर्ख़िलाफ़ आपके करनेकी न थी. दूसरी बात ईडरमेंसे उनको ज़मीन न देनेके लिये भी इस वास्ते लिखी है, कि जिस तरह उनको मारडालनेका इक़ार पूरा न हुआ, इसी तरह ज़मीन न देनेका भी पूरा न हो; परन्तु इस काग़ज़के आनेसे पहिले आणन्द-सिंह व रायसिंह दोनों उदयपुरसे रवानह होगये, और मेड़ता वग़ैरह मारवाड़के कई पर्गने जा लूटे. इसपर महाराजा अभयसिंहने जयसिंहको लिखा होगा, क्योंकि वे महाराणा को ईडर दिलानेमें पंच थे. महाराजा अभयसिंहने अपने भाई बख़्तसिंहको फ़ौज देकर मेड़तेकी तरफ़ भेजा, और महाराजा जयसिंहको भी अभयसिंहका मददगार बनना पड़ा; तब एक और काग़ज़ महाराजा जयसिंहने महाराणाके नाम लिख भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है :-

महाराजा सवाई जयसिंहके काग़ज़की नक़्ल.

श्रीरांमजी.

श्रीसीतारांमजी.

॥ सिधि श्री महाराजा धिराज महारांणा श्री संग्रामस्यघजी जोग्य, लिपतं राजा सवाइ जैस्यघ केन्य मुजरो अवधारिज्यो, अैठाका समाचार श्री जीकी क्रिपा सौ भलां छै, आपका सदा भला चाहिज्ये, अप्रंचि, आप वडा छो, हिंदसथांनमै सरदार छौ, अैठा वैठाका व्योहारमै कही वात जुदायगी न छै, अैठै घोडा रजपुत छै, सो आपका कांमनै छै, ई तरफ कांम काज होय् सो लीपावता रहोला, ओर राजा वपतसीघजी वा फोज म्हांकी अणंदसीघ, रायसीघ ऊंपरि गई छी, सो हीरदै नारायण तो आय् मील्यो, अर अणंदसीघ रायसीघकी ई भांति ठाहरी, जो ए तो दोन्यो ऊंदैपुर श्री दीवांणकी हजुरि रहवो करै, कहींठे जाय नहीं, अर ईडरका पडगंनांका जो गांव श्री दीवांणकी हदकी त्रफ छै, सो तो श्री दीवांणके रहै, अर कसवो ईड्र वा ओर गांव अणंदसीघ रायसीघ नै दीज्यै, सो अब अणंदसीघ, रायसीघ श्री दीवांणकी हजुर आवे छै, सो यांकी तसल्ली फरमांवैला, अर नीसां ले हजुर राषैला, अर ईडरकी सीवाय गांम आपकी हदकी त्रफ की सनदि करिदेवाको मुतसद्यांनै हुकंम फरमावैलाजी, ओर कागद समाचार लीपावता रहोला. मीती भादवा वदी १३ संवत १७८५.

अणन्दसिंह व रायसिंहके उदयपुर पहुंचनेपर महाराणाने ख़ास क़स्बह ईडर व थोड़ा सा ज़िला अणन्दसिंह, रायसिंहको देदिया; और पोलां व पाल वग़ैरह कुछ पहाड़ी ज़िला ईडरके पहिले राजाकी सन्तानको गुज़ारेके लिये दिया, बाक़ी मुल्क मेवाड़में मिलाया; ज़मानेके फेरफारसे मरहटोंके ग़द्रमें बहुतसा पहाड़ी ज़िला तो उसमेंसे मेवाड़के तह्तमें रहा, बाक़ीपर अणन्दसिंह रायसिंहने अपना क़ब्ज़ह करलिया; और उदयपुरकी मातह्तीसे भी अलग होगये.

विक्रमी १७८१ [हिज्री ११३६ = ई० १७२४] में शाहपुराके राजा भारथसिंहने जगमालोत राणावतोंसे जहाज़पुरका पर्गनह छीन लिया, और महाराणाको ख़ुश करके एक पर्वानह भी हासिल करलिया था, उसी बारेमें भारथसिंहके कुंवर उम्मेदसिंहने पेशकशी वग़ैरह भरनेके लिये जहाज़पुर व फूलिया वग़ैरह मेवाड़में मिलानेकी ग़रज़से मुचल्का लिख दिया, जिसकी नक़ल नीचे लिखते हैं :-

मुचल्का जहाज़पुरकी बाबत.

७००१) सीध श्री दीवाणजी आदेसातु, लीपतु कुअर उमेदसीघजी भारथसीघोत अप्रचं। जाजपुररो श्री दरबार थी जागीरी मया हुओ, तीरी पेसकसी अजमेररे सोबै पेसकसीरा रुपय्या लागे है रु० ७००१) अके रुपय्या सात हजार अेक लागे हे, सौ दरबार भरणां,

वीगत र

३५००) म्हा सुदी १५. ३५०१) जेठ सुदी १५.

छ १७८५ काती सुदी १२ संनु लीपतु कुअर उमेदसीघ, उपलो लीष्यो स्ही.

२२००३) लीष्यो १ सीधश्री दीवाणजी आदेसातु, लीपतु कुअर उमेदसीघजी भारथ सीघोत अप्रचं। प्ररगनो फुल्यारो मुकातै अजमेर थी तीरा मुकातारा त्था पेसकसीरा रुपय्या लागे हे, सो श्री दरबार देणां, उजर करा न्ही, अजमेररे सोबै दरबार थी सुध करेलेसी. बदी २ म्ही जेठीरी आधुआध

वीगत र

१७००१) फुल्यारा प्रगनारा मुकातारा पेसकसी सुधी रुपय्या सतरा हजार अेक.

२००१) गाम देवल्यो प्रडगणे भीणांयरे हासल पेसकसी सुधी.

१००१ गाम कोठ्यांरी पेसकसीरा.

२००० परचरा.

२२००३ अपरे बावीस हजार तीन, काती सुदी १२ संनु लीपतु कुअर उमेदसीघ, उपलो लीप्यो स्ही.

अब हम राजपूतानाकी कुछ रियासतोंका मरहटोंके हाथसे बर्बाद होने, और रहे सहे रोब दाबके भी मिट्टी होनेकी शुरू बुन्याद लिखते हैं.

महाराणा अमरसिंह २ की बेटी चन्द्रकुंवरका विवाह विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] में जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहके साथ हुआ था, जिसका ज़िक्र ऊपर लिखागया है. उस वक्त एक अ़हदनामह तै पाया था, कि उदयपुरके महाराणाकी बेटीका कुंवर छोटा हो, तो भी अपने बापकी रियासतका मालिक होगा. चन्द्रकुंवर बाईके पहिले पहिल कन्या हुई, जिसकी शादी महाराजा जयसिंहने जोधपुरके महाराजा अभयसिंह से करदी; लेकिन् विक्रमी १७८५ पौष कृष्ण १२ [हि० ११४१ ता० २६ जमादियुल् अव्वल = ई० १७२८ ता० ३० डिसेम्बर] को आंबेरके महाराजा जयसिंहकी महाराणी और महाराणा संग्रामसिंहकी बहिन चन्द्रकुंवर बाईके गर्भसे एक बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम माधवसिंह रक्खा गया. इस राजकुमारके जन्म होनेसे महाराजा सवाई जयसिंहको बड़ी फ़िक्र हुई; क्योंकि इनके दो राजकुमार, जो दूसरी राणियोंसे पैदा हुए, मौजूद थे; एक शिवसिंह दूसरे ईश्वरीसिंह; अगर अ़हदनामहपर अ़मल किया जाय, तो इन दोनोंका हक़ ख़ारिज हो; और वे दोनों भी फ़सादपर कमर बांधें; और उस इक़ारके बर्ख़िलाफ़ बर्ता जाये, तो उदयपुरसे मुक़ाबलह करना पड़े, जिससे जोधपुर, बूंदी, कोटा, बीकानेर वग़ैरह रियासतें उदयपुरकी मददगार हों. ऐसे विचार करनेसे महाराजाको खाना पीना भी बुरा लगने लगा, और यह सोच लिया, कि इस बखेड़ेसे बर्बादीके दिन आगये. अव्वल तो उस राजकुमारके मारडालनेकी कोशिश कीगई, लेकिन् चन्द्रकुंवर बाई इस बातको जानती थीं, जिससे महाराजाकी सारी कोशिशें फ़ुज़ूल हुई. तब महाराजा जयसिंह दौड़कर उदयपुर आये, जहां विक्रमी १७८५ आश्विन शुक्ल १०

[हि० ११४१ ता० ९ रबीउल् अव्वल = ई० १७२८ ता० १५ ऑक्टोबर] से विक्रमी कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रबीउल् अव्वल = ई० ता० २५ ऑक्टोबर] तक रहे; और मुसाहिबोंको मिलाकर माधवसिंहको जुदी जागीर रामपुरा दिलानेका उपाय किया, लेकिन् यह मन्सूबह भी रोका गया, क्योंकि पंचोली बिहारीदासने इस बातको बिल्कुल मंजूर नहीं किया; लाचार महाराजा वापस गये, लेकिन् फिर भी उनको इस फ़सादके मिटानेकी फ़िक्र बनी रही, इसलिये फिर इसी वर्षके अन्तमें उदयपुर आकर रामपुराके लिये बहुत कुछ कहा, और महाराणाको समझाया, कि रामपुराके राव बादशाही नौकर थे, जिनका मुल्क आपने ज़बर्दस्ती छीन लिया, अगर आपका भानजा वहांका मालिक बने, तो हमारी रियासतका झगड़ा दूर हो; इस बातको सोचना चाहिये. राव नगराज धायभाईने भी महाराणाको समझाया, कि रामपुरा माधवसिंह को अपनी तरफ़से देनेमें मेवाड़का हक़ नहीं जाता, वर्नह महाराजा जयसिंह बादशाहोंसे मिलकर कुछ और फ़साद खड़ा करेंगे; अगर यह भी न हुआ, और उन्होंने अपने बड़े बेटेको पाटवी रक्खा, तो हमको कितनी बड़ी ताक़त आज़माई करनी पड़ेगी; तिसपर भी हमारा मल्लब पूरा हो, या न हो. महाराणाके दिलपर धायभाईके कहनेका असर हुआ, लेकिन् बिहारीदासने इस बातको न माना, और कहा, कि माधवसिंह तो आपके भानजे हैं, परन्तु हमेशह भानजे न रहेंगे; चन्द्रावतोंसे, जो सीसोदिया हैं, यह रियासत छीनकर कछवाहोंको देना पूरी बदनामीकी बात है; अगर आपको दिल्लीके बादशाहोंका डर हो, तो मैं इसका ज़िम्महवार हूं, कि मुहम्मदशाह महाराजा जयसिंहका पक्षपात नहीं करेगा, इत्यादि.

महाराणा इन दोनों मुसाहिबोंकी बर्खिलाफ़ सलाहपर विचारने लगे, क्योंकि दोनों ख़ैरख़्वाह और एतिबारी थे, दोनों तरफ़की दलीलें मज़्बूत थीं. इस ख़ानगी सलाहकी ख़बर महाराजा सवाई जयसिंहको मिली, तब वह पहर रात गये ख़ुद बिहारी-दासके घरपर गये, और बहुतसी खुशामदकी बातें करके कहा, कि हमारी रियासतका फ़साद घटाना और बढ़ाना तुम्हारे हाथमें है. इस कहनेसे बिहारीदासपर बहुत असर हुआ, लेकिन् इतने पर भी दिलसे सलाह नहीं दी, और चुप होरहा; तब धायभाई नगराजको सवाई जयसिंहने कहा, कि अब कोई कार्रवाई करना चाहिये. नगराजने महाराणाको फिर समझाया, जिससे महाराणाने रामपुरेका पर्वानह माधवसिंहके नाम लिख दिया. उस पर्वानेकी, और माधवसिंह व सवाई जयसिंहके इक़ारनामोंकी नक़्लें यहां दर्ज कीजाती हैं:-

रामपुराके पर्वानहकी नक़ल.

श्री रामोजयति.

श्री गणेस प्रसादातु. श्री एकलिंग प्रसादातु.

थाका रांमपुरो थांहे दीधो हे, सो म्हां नेंडे रहोगा जीत्रे थां थी नहीं उत्रे सही.

॥ महाराजाधिराज महारांणा श्री संग्रामसिंघजी आदेशातु, भांणेज कुंअर श्री माधोसींघजी कस्य, ग्रास मया कीधो

वीगत

पटो रांमपुरारो थांहें मया कीधो हे, सो असवार १००० एक हजार, बंदुक १००० एक हजार थी छ महींना सेवा करोगा, नें फोज फांटे असवार हजार ३००० तींन, बंदुक हजार ३००० तींन थी सेवा करोगा; सो म्हां हजुर रहोगा, जीत्रे या जायगा थां थी नहीं ऊतरे. प्रवांनगी पचोली रायचंद, मेंहतो मालदास

एवं संवत १७८५ वर्षे चेत सुदी ७ भोमे

भांणेज कुंअर श्री माधोसींघजी कस्य.

कुंवर माधवसिंहके इक़ारनामहकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी

(१) ई बातका साषद् महाराजा श्री सवाई जयसिंघजी, ओर कुंवर आरे करी.

॥ स्वस्ति श्री लिपतं कूवर भाणेज श्री माधोस्यघजी अप्रंचि म्हानै रांमपुरो जीमीदारीमे दीयौ छे पटामै, सो ईसी तरेह चाकरी करीस्यां, जो आगै चंद्रांवतास्यै ई तरेह था, पछी सो ईही प्रमांण हजुरी रही सेवा करीस्यां, जे तै म्हास्यौ जाईगा ने उतारै.

वीगत

माफीक चंद्रावता

मास छह एक हजार सुवार, एक हजार वंदुकेस्यै सेवा करणी, फोज फांटे असवार
१००० १०००
हजार तीन, वंदुक हजार तीन सेवा करणी. मिती चैत सुदि ७ संवत १७८६.
३००० ३०००

महाराजा सवाई जयसिंहके लिखे हुए इक़ारनामहकी नक्ल.

श्रीरामोजयति.

सिधि श्री लिपतं सवाइ जयसीघ कुवर माधोसीघने परमेश्वर चिरंजी राषे, जे ओर तरह व्हे, तो छोटो कुवर रामपुराकी एवज चाकरी करे, अर एक ही व्हे, तो पटा माफीक चाकर ही चाकरी करे, जदि दुसरो व्हे जदी वो आय चाकरी करे. मीती चैत सुदी ९ गुरौ स १७८६.

(१) सिरेके अक्षर महाराजा श्री जयसिंहजीके हाथके हैं.

ऊपर लिखे हुए पर्वाने और इक़ारनामहके संवत् में फ़र्क़ है, जिससे पर्वानेके एक वर्ष बाद इक़ारनामोंका लिखाजाना मालूम होता है, लेकिन् ये इक़ारनामे उसी समय लिखे गये हों, तो तअ़ज्जुब नहीं; क्योंकि महाराजा सवाई जयसिंह चैत्रादि संवत् लिखते थे, जैसे ऊपर अणन्दसिंह व रायसिंहके मुआमलेमें महाराणाके नाम ख़रीतह लिखा था- (देखो पृष्ठ ९६७).

आख़िरकार चन्द्रकुंवर बाई और कुंवर माधवसिंहको उदयपुर लाये, और वे यहीं रहे, जबतक कि ईश्वरीसिंहके बाद वह जयपुर गये, और गद्दीपर बैठे. अब हम महाराणा संग्रामसिंहके समयके दशहरेके दर्बारके चित्रपटके लेखकी एक नक्ल यहां दर्ज करते हैं, जिससे उस वक्तके मौजूदह सर्दारोंके नाम और दर्बारका तरीक़ह मालूम होगा:-

---

चित्रपटपरके लेखकी नक्ल.

महाराजा धिराज महाराणा श्री संग्रामसिंहजी दसरावारे दिन खेजड़ी पूजे जठारो भाव दरीखाने बेठा, जीमणी बाजूरा ठाकुर, श्री जीरी पाखती- राव गोपालसिंहजी, राज कीरतसिंहजी, रावत देवभाणजी, रावत केसरीसिंहजी, रावत संग्रामसिंहजी, रावत प्रथीसिंहजी, झालो अज्जोजी, रावत सारंगदेवजी, सक्तावत जैतसिंहजी, रावत हरीसिंहजी, राव रघुनाथसिंहजी, महाराज प्रतापसिंहजी, महाराज तख़्तसिंहजी, राठौड़ भीमसिंहजी नागोर वाला, महाराज अदोतसिंहजी, झालो अगरसिंहजी झाड़ोल वालो, रावत सावंतसिंहजी, राठौड़ अखैरामजी गोपीनाथोत, भाटी जुझार-सिंहजी, चौहान कीतोजी, चौहान जोरावरसिंहजी, राठौड़ कुशलोजी, सक्तावत श्यामसिंहजी, चौहान अनोपसिंहजी, सक्तावत सूरतसिंहजी; श्री जीरा पाछे पंचोली बिहारीदासजी, पंचोली किशनदासजी, ढींकड्यो रामसिंहजी, खवास रुघोजी, मसाणी लखमण, पुरोहित सुखरामजी होम करे; डावी बाजूरा ठाकुरांरो साथ बैठा- रावल बिसनसिंहजी बांसवाला वालो, रावल रामसिंहजी डूंगरपुर वालो. राव बख़्तसिंहजी, राठौड़ प्रतापसिंहजी, रावत देवीसिंहजी, झालो कल्याणजी, महाराज दलसिंहजी, महाराज उमेदसिंहजी, डोडिया मनोहरसिंहजी, कुंवर श्री जगतसिंहजी, चौहान शोभानाथजी, झालो दौलतसिंहजी, राठौड़ किशनदासजी, महाराज सूरतसिंहजी भगोतसिंहोत, बीजावत कुशलसिंहजी, राठौड़ शिवसिंहजी, राणावत अगरसिंहजी,

राणावत अचलसिंहजी, रावत सूरतसिंहजी, तंवर किशनसिंहजी, बख़्तसिंह महेचा वालो, राणावत रत्नसिंहजी, ठाकुर इन्द्रभाणजी, महाराज नरायणदासजी बैठा; बीचमें कुंवरांरी पांत जणी उपरे राठौड़ दुर्गदासजीरा पोता दो बैठा, कुंवरां नीचे धायभाई नगजी बैठा; चंवरदार तुलसीदासजी, पंचोली मयाचंदजी चमर राखे.

इस चित्रपटमें संवत् नहीं लिखा है, परन्तु विक्रमी १७७६ और विक्रमी १७८८ के बीच यह बना मालूम होता है, क्योंकि विक्रमी १७७५ [हि० ११३१ = ई० १७१९] के प्रारंभमें बेदलेका राव सुल्तानसिंह मौजूद था, और इसमें उसके बेटे राव बख़्तसिंहका नाम लिखा है, जिसको इसी वर्षके कार्तिक मास [हि० ११३२ मुहर्रम = ई० नोवेम्बर] में तलवार बंधी थी; और विक्रमी १७८९ [हि० ११४४ = ई० १७३२] में बांसवाड़ेके रावल विष्णुसिंहका देहान्त हुआ, और इस चित्रपटमें उनका भी नाम है.

अब हम महाराणा संग्रामसिंहके आख़िरी समय, अर्थात् विक्रमी १७९० [हि० ११४५ = ई० १७३३] के एक काग़ज़की नक़्ल नीचे लिखते हैं, जिससे उस वक़्के कुल जागीरदारोंकी तादाद, गोत्र, रेख (आमदनी) वग़ैरह का हाल मालूम होगा; लेकिन् यह भी याद रखना चाहिये, कि इस काग़ज़से प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, ईडर, और सिरोहीकी जागीरें जुदी हैं, जो उस समय महाराणाके मातहत थीं.

पत्रकी नक्ल.

संवत १७९० रा बरसरो इकतो सरदारांरो उपत घोड़ा नामा जोजावल.

॥ श्रीरामजी.

। श्रीचत्रभुजजी.

॥ सीधश्री गुणेसाअजीनमो. ठाकुरारा साथरो डीगतो संवत १७९० रा बरसरो

ऊपत रु०	गोत्र	नांमा	घोडा	जोजावल
३२२५२५	झालारो साथ	३४	११८५	५९

उपत रु०	गोत्र	नांमा	घोड़ा	जोजावल.
२४७६५५	चोहणारौ साथ	४०	९२८	४२
८४५२२०	चौंडावतांरौ साथ	१६९	३१२६	१३२
३८७४५०	सगतावतांरौ साथ	६१	१५५५	७०
५९६२१५	रांणावतांरौ साथ	१४५	१९६३	८२
४२००५०	राठौड़ारौ साथ	१४०	१५९६	५२
१०२९५०	पुवारारौ साथ	२७	४०४	१६
१०६११५	सोलंख्यारौ साथ	५३	४०९	१४
३१९००	भाट्यारौ साथ	११	१३५	४
८९०७००	कछवांवांरौ साथ	१२	२५२१	५५
१४५०	तुवर तथा गौड़ारौ साथ	५	६	०
७२२५	सोनगरारौ साथ	८	२९	०
८९७५	सापलारौ साथ	१०	३७	०
५३००	पीच्यारौ साथ	७	१७	०
१२००	बलारौ साथ	६	७	०
३२५	बालेसांरौ साथ	३	३	०
२५५०	जादवारौ साथ	७	१२	०
१२७५	सादड़ेचांरौ साथ	५	६	०

उपत रु०	गोत्र	नांमा	घोड़ा	जोजावल.
९६५०	सीघलांरौ साथ	१५	३४३	०
१०५२५	भांडावतांरौ साथ	१२	४०	०
३८२००	हाडारौ साथ	११	१३१	४
६०१०५	डोड्यारौ साथ	३०	२३९	८
२४०७५	देवड़ांरौ साथ	२२	९१	०
१०००	पीढ्यारारौ साथ	३	४	०
२५८५०	प्रचुंनी साथ नांमा	१२	८८	४
४११४८४८५		८४८	१४५७५	५४२

डीगतौ

४११४८४८५	ऊपत रुपीत्र्या	८४८	त्र्यांसांमी
१४५७५	त्र्यसवार	५४२	जोजावल

तीरी वीगत		नांमां	त्र्यस्वार	जोजावल
८५६९९७	रांमपुरारा वाद	१	२४००	५०
३२९१८८८	वाकी	८४७	१२१७५	४९२
४११४८८८५		८४८	१४५७५	५४२

महाराणा संग्रामसिंहका देहान्त विक्रमी १७९० माघ कृष्ण ३ [हि० ११४६ ता० १७ शत्र्व्वान = ई० १७३४ ता० २३ जैन्युत्र्यरी] को हुत्र्या. यह विक्रमी १७४७ वैशाख कृष्ण ६ शुक्रवार [हि० ११०१ ता० २० जमादियुस्सानी = ई० १६९० ता० १ एप्रिल] को जन्मे थे; इनका मझलेसे कुछ छोटा कद, चौड़ी पेशानी, गेहुत्र्यां गौर वर्ण, भराहुत्र्या वदन, हसत मुख, इनका त्र्यख़्लाक़ हर एक त्र्यादमी को खुश करनेवाला था; राज्य प्रवन्ध चलानेमें

चतुर, वक़्के बड़े पावन्द, वचनके सच्चे थे, इनमें ऐब ढूंढनेसे भी बहुत कम पाया जाता है. पोलिटिकल हालतमें पक्के होनेपर भी इन्होंने अपनी ईमान्दारीको नहीं छोड़ा. इनका रोब नौकरों पर ऐसा था, कि सलूंबरके रावत् केसरीसिंह रुख़्सत लेकर घर गये, सलूंबर शहरके दर्वाज़े में घुसते वक़्त किसी दुश्मनके अर्ज़ करनेपर महाराणाने हुक्म भेजदिया, कि जल्दी चले आओ; यह हुक्म पहुंचनेपर वह अपने बाल बच्चोंसे वगै़र मिले ही लौट आया; महाराणा बहुत खुश हुए. इसी तरह अदनासे लेकर आला तक हर एक नौकर महाराणाके हुक्मको माननेवाला था, और मुहब्बतके साथ नौकरी देता था, राज्य प्रबंधका यह हाल था, कि किसी उत्सवके रोज़ कोठारियाके रावत्ने महाराणाके जामेका घेर कम होनेसे ज़ियादह बढ़ानेकी अर्ज़ की. महाराणाने मंजूर करके उक्त उमरावकी जागीरके एक गांवपर ख़ालिसा भेजदिया. जब उसने सबब दर्यापत़ किया, तो कुल राज्यका जमा ख़र्च दिखलाकर फ़र्माया, कि हर एक सीगे़के लिये जमा ख़र्च मुक़र्रर है, अब जामेका घेर न बढ़ायाजावे, तो बेमुरव्वती है, और बढ़ायाजावे, तो यह ख़र्च किस जगहसे वुसूल हो, इसलिये तुम्हारी जागीरके एक गांवकी आमदनीसे यह घेर बढ़ाया जायेगा. इस बातसे उनका राज्यप्रबंध अच्छा मालूम होता है. महाराणा अमरसिंहके प्रबंध और मनोरथोंको इन्हींने पूरा किया, और महलोंमें चीनीकी चित्रशाली, बड़े जगमन्दिरोंमें नहरके महल, व दोनों दरीख़ाने वगै़रह, महासतीमें अपने पिताके दग्धस्थानपर बड़ी छतरी, सहेलियोंकी बाड़ी और त्रिपौलिया वगै़रह बहुतसी इमारतें बनवाईं. इनके १६ राणियां थीं, लेकिन् उनमेंसे जिनके नाम मिले, वे नीचे लिखे जाते हैं:-

१ जैसलमेरके रावल अमरसिंहकी बेटी अतरकुंवर.
२ ऐज़न सूरजकुंवर.
३ बंबोरीके पंवार मुकन्दसिंहकी बेटी उम्मेदकुंवर.
४ समदरड़ीके राठौड़ दुर्गदासकी बेटी रामकुंवर.
५ राठौड़ सूरजमल्लकी बेटी.
६ भाटी प्रतापसिंहकी बेटी इन्द्रकुंवर.
७ ईडरके राठौड़ हटीसिंहकी बेटी महाकुंवर.
८ गोगूंदाके झाला राज अजयसिंहकी बेटी महाकुंवर.
९ वीरपुरा दयालरामकी बेटी.
१० झाला कर्णसिंहकी बेटी जसकुंवर.

इनके ४ कुंवर थे, बड़े महाराजकुमार जगत्सिंह महाराणी नम्बर ३ से; दूसरे कुंवर नाथसिंह महाराणी नम्बर ७से; तीसरे कुंवर बाघसिंह और चौथे कुंवर अर्जुनसिंह महाराणी नम्बर १० से थे; अर्जुनसिंह महाराणाके इन्तिक़ालके तीन महीने बाद पैदा हुए थे.

महाराणाकी राजकुमारियां- सवैकुंवर, रूपकुंवर, और ब्रजकुंवर, और ख़वासके पुत्र नारायणदास और केसरीदास थे.

रामपुराकी तवारीख़.

महाराणा संग्रामसिंहके समयमें रामपुराकी रियासतका ख़ातिमह होकर नामके लिये उसका निशान वाक़ी रहा, इस वास्ते हम उसकी तवारीख़से पाठकोंको वाक़िफ़ करते हैं.

यह सीसोदियोंकी एक मश्हूर शाख़ चन्द्रावत नाम महाराणा मेवाड़के ख़ानदान से है. वड़वा भाट तो चन्द्रसिंहको महाराणा लक्ष्मणसिंहके वेटे अरिसिंहका दूसरा वेटा वतलाते हैं, और राजपूतानाकी तवारीख़ोंमें भी ऐसा ही दर्ज है; लेकिन् नैनसी महताने अपनी किताबमें चन्द्रसिंहको महाराणा भुवनसिंहके वेटे भीमसिंहकी औलादमें लिखा है; और तारीख़ मालवा, जो हालमें सय्यद करीमअ़लीने वनाई है, उसमें चन्द्रसिंहको महाराणा हमीरसिंहका वेटा और महाराणा खेताका भाई लिखा है; पर इस तवारीख़का लिखना विल्कुल ग़लत मालूम होता है, क्योंकि पीढ़ियोंका शज्रह भी वेतर्तीव है, और पहिला हाल क़ियासी कहानीके तौर लिखा है; अल्वत्ता रामपुरा छूटनेके वादका हाल कुछ ठीक है. मआसिरुल उमरामें चन्द्रावतोंका हाल जिसक़द्र अक्वरनामह, तुज़ुकजहांगीरी, वादशाहनामह, मआसिरेआ़लमगीरी, मुन्तख़-वुल्लुवाव वग़ैरह किताबोंसे छांटकर लिखा है, वही सहीह जचता है; लेकिन् राव दुर्गभानुसे लेकर रत्नसिंह तक वादशाही नौकरी और मन्सवका ज़िक्र दर्ज है, पहिला और पिछला हाल उसमें भी नहीं है.

हमारी दानिस्तमें नैनसी और वड़वा भाट दोनोंमेंसे एकका लेख सहीह होना चाहिये; क्योंकि नैनसी महता तहक़ीक़ातके साथ इस समयसे सवा दो सौ वर्ष पहिले लिखगया है, जो हमारी वनिस्वत उस ज़मानेके क़रीबका था; उसके बयानसे चन्द्रसिंह भीमसिंहका वेटा होना ठीक होगा. यदि वड़वा भाटोंका लिखना सहीह मानाजावे, तो भी ग़ैर मुनासिव नहीं है; क्योंकि महाराणा भीमसिंहके जयसिंह, उनके लक्ष्मणसिंह, उनके अरिसिंह चार पुश्तका फ़र्क़ होता है; परन्तु इन चारों पीढ़ियोंका राज्य लड़ाईमें जल्द मारेजानेके सवव वहुत कम अर्से तक रहा, इससे वक़्तमें ज़ियादह फ़ासिलह नहीं है. उदयपुरके वड़वा व भाटोंकी पोथियोंमें महाराणा जयसिंहका वेटा चन्द्रसिंह लिखा है, परन्तु इन वड़वा भाटोंके पुराने नसवनामे एतिवारके लाइक़ नहीं हैं; क्योंकि एकसे दूसरेकी पोथीका वयान नसवकी वावत नहीं मिलता; इसलिये

हम नैनसी महताकी पोथीको ठीक समझकर बयान शुरू करते हैं; बीचका हाल फ़ार्सी तवारीख़ोंसे, और पिछला तारीख़ मालवा व बुड्ढे आदमियोंकी ज़बानी तथा काग़ज़ोंसे तलाश करके दर्ज करते हैं.

अव्वल चन्द्रसिंह, उसका बेटा सज्जनसिंह, उसका जाझणसिंह, उसका छाजूसिंह, उसका शिवसिंह था.

महाराणाने चन्द्रसिंहको आंतरीका पर्गनह गुज़रके लिये दिया; सो उसकी औलाद भोमियां लोगोंके तौरपर वहां रही. जाझणसिंहके बड़े बेटे भाखरसिंहसे उसके काका छाजूसिंहकी तक्रार हुई, तब छाजूसिंह आंतरी छोड़कर दूसरी जगह जा बसा. उसका बेटा शिवसिंह बड़ा बहादुर और नामी हुआ, जिसने मांडूके बादशाह होशंग गोरीकी बेगमको नदीमेंसे बहते हुए बचाया, जिससे उस बेगम ने होशंगसे शिवसिंहको रावका ख़िताब दिलाया. उसके बाद राव रायमल्ल हुआ, जिसको चित्तौड़के महाराणा कुंभाने अपने ताबे बनाया. उसका अचलदास था, जिसके राव दुर्गभान पैदा हुए, उसने शहर रामपुरा अपने इष्टदेव रामचन्द्रके नामपर आबाद किया; तारीख़ मालवामें लिखा है, कि रामा भीलको मारकर राव शिवसिंहने रामपुरा बसाया, परन्तु यह बात ज़बानी क़िस्सेकी तरह सुनकर लिख दी है; क्योंकि एक तो रामपुरा दुर्गभानका आम लोगोंमें मश्हूर है, जिसकी तस्दीक़ नैनसी महताकी किताबसे होती है; दूसरे एक दोहेके दो मिस्रे राजपूतानाके आम लोगोंकी ज़बानी सुननेमें आते हैं, कि " रामपुरा दुर्गभाणका देखत भागे भूक" इससे प्रतीत होता है, कि राव दुर्गभानने रामपुरा आबाद किया, जिसका हाल हम फ़ार्सी तवारीख़ोंसे नीचे लिखते हैं:-

जब विक्रमी १६२४ [हि० ९७४ = ई० १५६७] में बादशाह अक्बरने क़िले चित्तौड़पर घेरा डाला, तो आसिफ़ख़ांको कई अमीरोंके साथ फ़ौज समेत भेज कर रामपुरा बर्बाद किया, और महाराणा उदयसिंह पहाड़ोंमें चलेगये. अक्बर बादशाहकी ज़बर्दस्त ताक़त देखकर दुर्गभान भी बादशाही ताबे बनगया. मआसिरुल उमराका मुसन्निफ़ अक्बरनामहके ज़रीएसे लिखता है, कि विक्रमी १६३८ [हि० ९८९ = ई० १५८१] में अक्बर बादशाहने सुल्तान मुरादके साथ राव दुर्गभानको अपने छोटे भाई मिर्ज़ा हकीमपर भेजा; और विक्रमी १६४० [हि० ९९१ = ई० १५८३] में गुजरातकी तरफ़ बाग़ियोंका फ़साद मिटानेके लिये मिर्ज़ाख़ां (१) के साथ

---

(१) यह ख़ानख़ानां अब्दुर्रहीमका पहिला ख़िताबी नाम है.

रवानह किया, जहां राव दुर्गभानने बड़ी तन्दिही और नेक नियती दिखलाई.

विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] में राव मज़्कूर ख़ाने आज़म कोकाके साथ दक्षिणमें भेजागया. विक्रमी १६४८ [हि० ९९९ = ई० १५९१] में वह सुल्तान-मुरादके साथ मालवे गया, और दक्षिणी लड़ाइयोंमें अच्छी बहादुरियें दिखलाई. विक्रमी १६५७ [हि० १००८ = ई० १६००] में रावको बादशाहने मिर्ज़ा मुज़फ्फ़र-हुसैनकी गिरिफ्तारीके लिये भेजा, उधरसे ख़्वाजह उवैस मिर्ज़ाको गिरिफ्तार किये लारहा था, जो सुल्तानपुरके पास रावको मिला, वहांसे दोनों शख़्स मिर्ज़ाको बादशाही हुज़ूरमें लेआये. फिर दुर्गभानको शैख़ अबुलफ़ज़्लके साथ नासिककी तरफ़ मुक़र्रर किया, पर कुछ अर्से बाद वतनकी अब्तरीके सबब रुख़्सत लेकर घर आया, और विक्रमी १६५८ [हि० १००९ = ई० १६०१] में वापस चलागया.

विक्रमी १६६४ पौष [हि० १०१६ रमज़ान = ई० १६०८ जैन्युअरी] में राव दुर्गाका देहान्त होगया; इस समय उसकी उम्र ८२ वर्षकी थी. अक्बरके जुलूसी सन् ४० तक डेढ़ हज़ारी ज़ात और सवारके मन्सबपर था; तुज़क जहांगीरीके पृष्ठ ६३ में बादशाह जहांगीर लिखता है, कि "यह राव मेरे बापके नौकरोंमेंसे था, जो ४० वर्षसे ज़ियादह उनके मातहत सर्दारोंके तौर उनकी नौकरीमें रहा; और धीरे धीरे चार हज़ारी मन्सब तक पहुंचा; वह मेरे बापकी नौकरीमें आनेसे पहिले राणा उदयसिंहके मोतबर नौकरोंमेंसे था, नवीं दहाई (१) (अस्सी और नव्वेके बीच) में गुज़रगया, वह सिपाहगरीके फ़नमें होश्यार था."

दुर्गभानके बाद राव चांदा (चन्द्रसिंह) गद्दीपर बैठा, और जहांगीर बादशाहके साम्हने कई ख़िदमतोंमें हाज़िर रहा. इसके ४ बेटे थे, बड़ा नग्गा, दूसरा गिरधर, तीसरा रुक्माङ्गद और चौथा हरिसिंह. चांदा विक्रमी १६८७ [हि० १०३९ = ई० १६३०] में इस जहानको छोड़गया, नग्गा तो बापके साम्हने ही मरगया था; इसलिये दूदा, जो चांदाका पोता था, गद्दीपर बैठा. दूदाने शाहजहां बादशाहसे दो हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब पाया, और आज़मख़ांके साथ ख़ानेजहां लोदीपर भेजागया, लेकिन् लड़ाईके वक्त भागगया. इसके बाद यमीनुद्दौलह आसिफ़ख़ांके साथ आदिलख़ांकी मुहिमपर भेजागया. ६ जुलूस शाहजहानी

---

(१) मआसिरुल उमरामें हफ्ताद व दो ७२, और तुज़क जहांगीरीमें अश्रूए नोज़दुहुम याने उन्नीसवीं दहाई जो लिखा है, इनके लिखने और छपनेमें ग़लती रहगई; मआसिरुल उमरामें हश्ताद व दो ८२, और तुज़क जहांगीरीमें अश्रूए नुहुम याने नवीं दहाई दुरुस्त मालूम होता है, जिससे दोनों किताबोंका तह्रीरी फ़र्क़ निकल जायेगा.

विक्रमी १६९० [हि० १०४२ = ई० १६३३] में, जब क़िले दौलतावादपर लड़ाई हुई, उस वक़ बीजापुरकी मदद आगई थी, चारों तरफ़से लड़ाई होने लगी, उस मौक़ेका ज़िक्र मुल्ला अब्दुलहमीद लाहौरी बादशाह नामह जिल्द १ पृष्ठ ५२० में इस तरह लिखता है:-

"ता० २४ ज़िल्क़ाद [विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ९ = ई० ता० २ जून] को मुरारि पंडितने बहुतसी फ़ौजके सबब मग़रूर होकर रन्दूला और साहूको बहुतसी फ़ौजके साथ ख़ानेज़मांके मुक़ाबलेपर भेजा, और आप याक़ूत हबशीको साथ लेकर फ़ौज समेत रवानह हुआ; ख़ानख़ानांने ख़ानेज़मांको कहा, कि दुश्मनोंसे लड़नेकी जल्दी फ़िक्र करें; फिर उसने सोच विचार कर ख़ानेज़मांका जाना मुनासिब न समझा, और लुहरास्पको अपनी फ़ौज समेत मुक़र्रर किया. जगराज, राव दूदा और पृथ्वीराजको भी कहा, कि अपने मोर्चोंसे निकलकर तय्यार रहें; और दिलेरहिम्मतको चन्द्रभान वग़ैरह समेत मोर्चोंकी निगहबानीके वास्ते अंबरकोटके भीतर छोड़कर आप थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ क़िलेसे वहां आ पहुंचा, जहां कि दूदा मौजूद था; इस मौक़ेपर राणाके आदमी, जिनको ख़ानेज़मांने भोपतकी मातह्तीमें भेजा था, ख़ानख़ानांकी मददको आगये. दुश्मनोंकी एक फ़ौजने राव दूदासे लड़ाई शुरू की, और लुहरास्प दूर था, इसलिये सिपहसालार कम फ़ौज होनेपर भी दुश्मनोंकी तरफ़ चला; मालू, परसू, राव दूदा, तथा रामाकी जमइयत भी आगई, और थोड़ीसी कोशिशसे दुश्मनोंको हटाकर मैदान ख़ाली करदिया. फिर मुबारिज़ख़ां, राजा पहाड़सिंह और जगराज भी जा पहुंचे; और दुश्मनोंका पीछा किया. जब दुश्मन भागकर लुहरास्पकी तरफ़ गये, तो ख़ानख़ानां, जगराज और राणाके आदमियोंको साथ लेकर लुहरास्पकी मददको चला. इस वक़ राव चांदाके पोते राव दूदा चंद्रावतने, जिसके किसी क़द्र रिश्तहदार लड़ाईमें मारेगये थे, अपने मुर्दोंको उठानेकी इजाज़त मांगी. सिपहसालारने मना किया; लेकिन् दूदाने, जिसकी मौत पास आगई थी, कुछ ख़याल नहीं किया; और मालू वग़ैरह मरेहुओंकी लाशोंको उठाने लगा; जूंहीं ख़ानख़ानांकी फ़ौज नज़रसे ग़ाइब हुई, दुश्मन के बहुतसे लोग इधर उधरसे आगिरे, और राव दूदा अपने साथियों समेत लाचारीके सबब घोड़ेसे उतर पड़ा, और बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारागया. बाद इसके बादशाह शाहजहांने उसके बेटे हटीसिंहको ख़िल्अत, डेढ़ हज़ारी ज़ात व हज़ार सवारका मन्सब और रावका ख़िताब दिया; और ख़ानेज़मां बहादुरके साथ दक्षिणकी मुहिमपर तईनात किया; लेकिन् वह कुछ अर्से बाद मौतसे मरगया."

हटीसिंहके कोई औलाद नहीं थी, तब राव चांदाके तीसरे बेटे रुक्मांगदका बेटा रूपसिंह गद्दीपर बैठा, और बादशाह शाहजहांके पास विक्रमी १७०० [हि० १०५३

= ई० १६४३] में हाज़िर हुआ. विक्रमी १७०२ [हि० १०५५ = ई० १६४५] में वह शाहज़ादह मुरादबख़्शके साथ बल्ख़की तरफ़ भेजागया. विक्रमी १७०३ [हि० १०५६ = ई० १६४६] में बल्ख़के मालिक नज़रमुहम्मदख़ांसे अच्छी तरह लड़ा, जिस समय, कि वह बहादुरख़ां रुहेला और असालतख़ांकी फ़ौजमें हरावल था. अन्तमें नज़रमुहम्मदको शिकस्त मिली; तब रूपसिंहको तरक़ीसे डेढ़ हज़ारी ज़ात और हज़ार सवारका मन्सब मिला. जब शाहज़ादहको वहांकी आबो हवा नापसन्द आई, तो वह दिल्लीको चलाआया, और राजा रूपसिंह भी और सर्दारोंके साथ पेशावरमें आगया था; परन्तु बादशाही हुक्म पहुंचनेसे ये लोग अटक न उतरने पाये. मुरादबख़्शके एवज़ शाहज़ादह औरंगज़ेब भेजा गया, जिसके साथ उज़्बकोंकी लड़ाईमें राव रूपसिंहने बड़ी बहादुरी दिखलाई. फिर शाहज़ादहके साथही बादशाही हुज़ूरमें हाज़िर हुआ.

विक्रमी १७०६ [हि० १०५९ = ई० १६४९] में शाहज़ादह औरंगज़ेबके साथ क़न्धारकी तरफ़ भेजागया, जहां कज़लबाशोंसे मुक़ाबलह हुआ; उस वक़ रुस्तमख़ां और फ़त्हख़ांकी हरावलमें इसने अच्छी बहादुरी दिखलाई. इस ख़िद्मतके एवज़ उसने असल और इज़ाफ़ह मिलाकर दो हज़ारी ज़ात व बारह सौ सवारका मन्सब पाया. विक्रमी १७०८ [हि० १०६१ = ई० १६५१] में राव रूपसिंह इस जहानको छोड़ गया. उसके भी कोई लड़का न था, इसलिये राव चांदाके बेटे हरीसिंहका बेटा अमरसिंह गद्दीपर बैठा, जिसको बादशाह शाहजहांने एक हज़ारी ज़ात व नव सौ सवारका मन्सब और रावका ख़िताब तथा चांदीके सामान समेत घोड़ा देकर रूपसिंहकी जगह क़ाइम किया.

विक्रमी १७०९ [हि० १०६२ = ई० १६५२] में औरंगज़ेबके साथ अमरसिंहको क़न्धारकी तरफ़ भेजा, और विक्रमी १७१० [हि० १०६३ = ई० १६५३] में इसी मुहिमपर दाराशिकोहके साथ तईनात हुआ. विक्रमी १७११ [हि० १०६४ = ई० १६५४] में दाराशिकोहकी सुफ़ारिशसे ढाई हज़ारी ज़ात व हज़ार सवारका मन्सब मिला, और विक्रमी १७१२ [हि० १०६५ = ई० १६५५] में दक्षिणकी मुहिमपर भेजागया. विक्रमी १७१५ [हि० १०६८ = ई० १६५८] में वह राजा जशवन्तसिंहके साथ मालवेकी तरफ़ औरंगज़ेब और मुरादके मुक़ाबलेको भेजागया. फ़त्हाबादकी लड़ाईमें अमरसिंह महाराजा जशवन्तसिंहकी फ़ौजका हरावल था, लेकिन् लड़ाई होनेके बाद भागगया, और जब आलमगीर बादशाह बना, तब उसके पास हाज़िर होगया. इसी वर्ष शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानके

साथ बंगालेकी तरफ़ शुजाअ़पर भेजागया. फिर मिर्ज़ा राजा जयसिंहके साथ दक्षिण भेजागया, जहां खूब खिद्मतें कीं.

विक्रमी १७१६ [हि० १०६९ = ई० १६५९] में सालेरके क़िलेके नीचे लड़ाईमें राव अमरसिंह काम आया, और उसका बेटा मुह्कमसिंह दुश्मनोंकी क़ैदमें गया. वह कुछ रुपये देने बाद छूटा, और दक्षिणके नाज़िम बहादुरख़ां कोकाके पास पहुंचा. फिर अपने बापकी गद्दीपर क़ाइम होकर रामपुरेका राव कहलाया. कुछ अ़र्सेके बाद यह भी दुन्याको छोड़गया. राजपूतानहमें राव मुह्कमसिंह बड़ा मश्हूर और उदार राजा गिनागया है, और राजपूतानहके कवि उसकी कीर्ति (नाम्वरी) तारीफ़के साथ कवितामें बयान करते हैं.

उसका बेटा राव गोपालसिंह विक्रमी १७४७ [हि० ११०१ = ई० १६९०] में बादशाह आ़लमगीरके पास गया, और रामपुरेकी रियासतका प्रबंध अपने बेटे रत्नसिंहको सौंपा; यह रत्नसिंह बापसे बाग़ी होगया; जब राव गोपालसिंहने बादशाही हिमायतसे उसे दबाना चाहा, तब वह मालवाके सूबहदार मुख़्तारख़ांकी मारिफ़त मुसल्मान होगया, जिससे आ़लमगीरने खुश होकर उसका नाम 'इस्लामख़ां' और रामपुराका नाम 'इस्लामपुर' रक्खा. इसकी सुबूतीके अस्ल काग़ज़ोंकी नक़्लें महाराणा अमरसिंह २ के वर्णनमें दीगई हैं-(देखो पृष्ठ ७४७). गोपालसिंह शाहज़ादह बेदारबख़्तके पास मुक़र्रर था, जहांसे भागकर महाराणाकी शरणमें आया, और कुछ न करसका. विक्रमी १७४९ [हि० ११०३ = ई० १६९२] में बादशाहके पास हाज़िर हुआ, तो कोलासकी क़िलेदारी पाई, लेकिन् विक्रमी १७६० [हि० १११५ = ई० १७०३] में वहांसे मौकूफ़ होनेपर भागकर मरहटोंका साथी बना; और राजा इस्लामख़ां (रत्नसिंह) रामपुरेका मालिक रहा. वह मुसल्मानोंके पास मुसल्मान और राजपूतोंके आगे राजपूत बन जाता था. जहांदारशाहके वक़्में यही राजा मारागया, जिसका ज़िक्र मुन्तख़बुल्लुबाबकी दूसरी जिल्दके पृष्ठ ६९३ से ६९७ तकमें इस तरहपर लिखा है:-

"जहांदारशाहकी शुरूअ़ सल्तनतमें कड़ेका फ़ौज्दार सर्बलन्दख़ां अपने इ़लाक़ेसे दस बारह लाख रुपये लेकर आया, और रास्तेमें फ़र्रुख़सियरके पास नहीं गया, जिससे जहांदारशाहने खुश होकर अहमदाबादकी सूबहदारी दी, और अहमदाबाद के सूबहदार अमानतख़ांको मालवेकी सूबहदारीपर भेजा. जब यह उज्जैन पहुंचा, तो वहां राजा इस्लामख़ांने जिसका उर्फ़ रत्नसिंह था, अक्सर इ़लाक़ह दबा रक्खा था, और अमानतख़ांके मुरब्बी और राजाके मुरब्बीमें दिन दिन अ़दावत बढ़ती थी; जुल्फ़िक़ारख़ांके

लिखनेसे, या राजाने सर्कशीसे अमानतख़ांका दख़्ल न होने दिया, और वेफ़ाइदह जवाव सवाल करने लगा. आख़िरकार दोनों तरफ़से फ़ौजें तय्यार हुईं; अमानतख़ांने थानेदार रहीमवेगको सारंगपुर भेजा था, जहां राजा इस्लामख़ां व दिलेरख़ां पठानने चार पांच हज़ार फ़ौज समेत पहुंचकर थानेको उठा दिया, वहुतसोंको मारा, और वहुतेरों को क़ैद किया. अमानतख़ांके साथ कुल तीन हज़ार फ़ौज थी, जिसमेंसे चार सौ या पांच सौ आदमी थानेकी लड़ाईमें काम आचुके थे. यह राजा राजपूत होनेकी हालतमें मुसल्मानोंसे जितनी अदावत रखता था, उससे भी ज़ियादह मुसल्मान होनेपर रखने लगा. इसके पास वीस हज़ारसे ज़ियादह सवार थे, जो तीस चालीस हज़ारके क़रीव जान पड़ते थे; इसके लश्करमें अच्छे अच्छे नामी पठान थे, जैसे – चार पांच हज़ार सवारोंका मालिक दोस्त मुहम्मदख़ां रुहेला, दिलेरख़ां पांच छः हज़ार सवार व तोपख़ानह समेत, और वहुतसे अक्खड़ राजपूत थे; जव अमानतख़ां उज्जैनसे चार पांच कोसपर सारंगपुरके नालेके पास पहुंचा, अचानक उसे राजा इस्लामख़ांके लश्करने आघेरा, और दिलेरख़ांने पांच छः हज़ार सवार साथ लेकर वाईं तरफ़से अमानतख़ांको आ दवाया, और वड़े सख़्त हमले किये; इस्लामख़ांने दस वारह हज़ार सवार तीन सर्दारोंके साथ मुक़र्रर करदिये थे, कि अमानतख़ांको चारों तरफ़से घेरकर ज़िन्दह पकड़ लेवें. इस वक्त अमानतख़ां ऐसी तंगीमें था, कि उसे अपने लश्करमेंसे किसीके ज़िन्दह वचनेकी उम्मेद न थी, तो भी उसने वड़ी वहादुरीसे लड़ाई की, और अपने साढू दिलावरख़ांसे, जो राजाकी तरफ़से आया था, सख़्त मुक़ावलह किया. अनवरुद्दीनख़ां वहादुर, जो अमानतख़ांका दोस्त था, थोड़ीसी जमइयत लेकर दिलेरख़ांसे ख़ूव लड़ा, और तीन घड़ी तक वरावर कटा छनी होती रही; अनवरुद्दीनख़ांने भालेसे ज़ख़्मी होने वाद भी दिलेरख़ांपर गोली मारी, जिससे उसका काम तमाम हुआ, लेकिन् अनवरुद्दीनख़ांका भाई काम आया. राजाकी तरफ़से दिलेरख़ां जमादार (जमाअ़ःदार) ज़ख़्मी हुआ, और कई नामी जमादार मारेगये."

"यह लड़ाई पहर दिन चढ़ेसे तीसरे पहर तक रही, इस वक्त चारों तरफ़ तीरोंका जंगल ख़ूनकी नदीसे सर्सब्ज़ नज़र आता था. राजा घोड़ा झपटाकर लड़नेको आया, लेकिन् उसके साथी उसकी वद ज़वानी और वद आदतोंसे पहिले ही नाराज़ थे, और मौक़ा ढूंढते थे, इस वक्त लड़नेसे विल्कुल किनारा करगये; राजा थोड़ेसे आदमियों समेत लड़ता रहा, और गोली लगनेसे उसका काम भी तमाम हुआ; परंतु राजाके मरनेकी ख़वर किसीको न हुई, एक घंटे तक वरावर उसका लश्कर लड़ता रहा; जव राजाका जमादार दिलावरख़ां भागा, तो अमानतख़ांने फ़तहके शादियाने

बजवाये; इतनेमें राजाका सिर भी लोग काटलाये, और राजाकी तरफ़ वाले पठान अपने अपने डेरोंमें आग लगाकर भागगये; बहुतसे घोड़े, हाथी और बाक़ी उ़म्दह डेरे व बहुतसा सामान अमानतख़ांके हाथ आया, जिससे उसका सारा लश्कर माला माल होगया. जब जहांदारशाहको ख़बर पहुंची, तो शाबाशीका फ़र्मान दो ख़िल्अ़त समेत भेजा. अमानतख़ांने रामपुराको, जो इस्लामख़ांका वतन था, लूटनेका इरादह किया; तब रत्नसिंहकी राणियोंने नक्द रुपये और दो हाथी नज्र भेजकर अ़र्ज़ की, कि राजा तो अपने कियेके नतीजेको पहुंच गये, अब हम विधवाओंपर फ़ौज-कशी करना बड़ोंकी शानके लाइक़ नहीं है. इसपर अमानतख़ां चुप होरहा."

इसके बाद जब रत्नसिंह मारागया, तो राव गोपालसिंहने रामपुरेपर क़ब्ज़ह करलिया; रत्नसिंहके दोनों बेटे बदनसिंह और संग्रामसिंह अपने बापके मुसल्मान होनेपर गोपालसिंहके पास चले आये थे. राव गोपालसिंह बुड्ढे और नर्म दिल थे, रियासतका उ़म्दह इन्तिज़ाम न करसके; इसी अ़र्सेमें महाराणा संग्रामसिंहका प्रधान कायस्थ बिहारीदास बादशाह फ़र्रुख़सियरसे रामपुराको महाराणाकी जागीरमें लिखा लाया, जिसके अस्ल काग़ज़ यहां अब तक मौजूद हैं; और उदयपुरसे फ़ौज लेजाकर वहां दख़्ल किया; लेकिन् कुछ गांव फ़ौज ख़र्चके लेने बाद राव गोपालसिंहको वहीं क़ाइम रखकर अपना ताबे बना लिया. राव गोपालसिंहके पोते बदनसिंह और संग्रामसिंहने जोश जवानीसे महाराणाके आदमियोंको फ़ौज ख़र्चके गांवोंपरसे निकाल दिया; तब विक्रमी १७७४ [हि० ११२९ = ई० १७१७] में महाराणा संग्रामसिंहने बेगूंके रावत् देवीसिंह और कायस्थ बिहारीदासको फ़ौज समेत वहां भेजा; अठानाका रावत् उदयसिंह, जो मेवाड़से बाहर निकालागया था, रावत् देवीसिंहकी सुफ़ारिशसे इस फ़ौजमें शामिल हुआ; और रामपुरेको जाघेरा; कुछ अ़र्से तक लड़ाई होती रही. एक दिन अंधेरी रातमें अठानेका रावत् उदयसिंह अपने साथियों समेत शहर पनाहपर सीढ़ी लगाकर चढ़-गया, और दूसरे फ़ौज वालोंने भी हमलह करदिया; क़िला फ़त्ह हुआ, और राव गोपालसिंहको उदयपुर लेआये. फिर आमदका पर्गनह जागीरमें देकर एक इक़ार-नामह लिखवाया, जिसकी और दूसरे काग़ज़ोंकी नक़्लें ऊपर लिखीगई हैं- (देखो पृष्ठ ९५७). महाराणाने राठौड़ दुर्गदासको रामपुराके बन्दोबस्तपर भेजा; थोड़े दिनों बाद राव गोपालसिंह तो मरगया, और उसका बड़ा पोता बदनसिंह आमदका जागीरदार हुआ; यह महाराणाकी ताबेदारीमें रहा. इसके कोई औलाद नहीं थी, इसके मरने बाद उसके छोटे भाई संग्रामसिंहको गद्दी मिली. फिर रामपुरा महाराणा संग्रामसिंहने अपने भानजे और जयपुरके कुंवर माधवसिंहको जागीरमें देदिया.

तारीख़ मालवामें गोपालसिंहके बाद संग्रामसिंहका गद्दी बैठना लिखा है, लेकिन् बड़वा भाटोंकी किताबोंसे और दूसरे काग़ज़ोंसे साबित होता है, कि राव गोपालसिंहके बाद उसका बड़ा पोता बदनसिंह गद्दीपर बैठा; और उसका बेटा फ़त्हसिंह बापके साम्हने ही मरगया, जिसका बेटा लछमनसिंह बदनसिंहके बाद गद्दीपर बैठा; बड़े बेटेकी औलादका बैठना दुरुस्त भी है. यह अल्बत्तह हुआ हो, तो तअ़ज्जुब नहीं, कि बदनसिंहके बाद लछमनसिंह बालक हो, और सब कारोबारका मुख़्तार संग्रामसिंह रहा हो, जो रावके नामसे मश्हूर हुआ; क्यौंकि रामपुरा तो क़ब्ज़हसे निकल गया था, ये लोग एक इलाक़हके इलाक़ेदार और महाराणा उदयपुर या कुंवर माधवसिंहके जागीरदार रहगये थे; इस हालतमें संग्रामसिंहको राव ख़याल करलिया हो, तो तअ़ज्जुब नहीं. यह संग्रामसिंह अपनी रियासत वापस मिलनेकी कोशिशमें बादशाह मुहम्मदशाहके पास दिल्ली गया था, लेकिन् कुछ तद्बीर न करसका, सल्तनतकी कमज़ोर हालतमें उदयपुर और जयपुरके बख़िलाफ़ हुक्म मिलना मुश्किल था. तारीख़ मालवाका बयान है, कि इसी कोशिशमें संग्रामसिंह आगरेके पास सिकन्दरेमें मरगया. लछमनसिंह भी रामपुरा लेनेकी उम्मेदमें इस दुन्यासे कूच करगया. इसके बेटे भवानीसिंहने बहुत कोशिश की, लेकिन् रामपुरा महाराजा माधवसिंहने मल्हार राव हुल्करको देदिया; तब मरहटोंसे यह लड़ता भिड़ता रहा. इसके बाद मुह्कमसिंह गद्दीपर बैठा, रामपुरा हुल्करके क़ब्ज़ेमें था, रावकी जागीरमें आमदका क़िला और कुछ पर्गनह बाक़ी रहा, जिसकी सालाना आमद डेढ़ लाख रुपयेके क़रीब होगी.

मुह्कमसिंहका इन्तिक़ाल होनेपर ग़ैर हक़दार भैरवसिंह गद्दीपर बैठगया, जिसको जयपुरके महाराजा जगत्सिंहने विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में टीकेका दस्तूर भेजकर मुह्कमसिंहका वारिस बनाया, लेकिन् उदयपुरके महाराणा भीमसिंहके हुक्मसे भाटखेड़ीके रावत् कर्णसिंह व अठाणाके रावत् तेजसिंहने भैरवसिंहको निकालकर मुह्कमसिंहके हक़ीक़ी बेटे नाहरसिंहको गद्दीपर बिठाया. फिर महाराणाने मुन्शी अमरलाल कायस्थके हाथ तलवार वग़ैरह दस्तूर भेजकर मुह्कमसिंहकी जगह क़ाइम करदिया, और उसने रुपये १०००० दस्तूर तलवार बन्दीके नज़ किये. इस मुआ़मलेके काग़ज़ात उदयपुर बख़्शीख़ानेके दफ़्तरमें मौजूद हैं. नाहरसिंहने कुछ कोशिश नहीं की, वर्नह सर्कार अंग्रेज़ीसे उसका जुदा अ़ह्दनामह होजाता, जिस तरह कि मालवाके छोटे मोटे दूसरे रईसोंके साथ मालकम साहिबने किया था. इसपर भी नाहरसिंहने अगले ज़मानेके ख़यालातको दिलमें रखकर बाग़ियोंको पनाह दी, जिससे मेकडोनल्ड साहिब फ़ौज लेकर गये, और आमदका क़िला गिरवादिया; राव नाहरसिंहको नज़र क़ैद करके रामपुरामें लेआने बाद एक हवेलीमें रखदिया, और

क़रीब एक लाख आमदकी जागीर गुज़ारेके लिये हुल्करसे दिलवा दी. उस वक़्से चन्द्रावतोंको हुल्करके जागीरदार बनकर रहना पड़ा. राव नाहरसिंह विक्रमी १९१५ [हि० १२७४ = ई० १८५८] में मरगया, जिसका बेटा तेजसिंह अब मौजूद है. इसने हुल्करसे बहुत कुछ क़र्ज़ लेलिया है; इसलिये तकूजीराव हुल्करने उसकी घरू जायदादपर भी मुन्सरिम रखदिया है. इस ख़ानदानका और ज़ियादह हाल नहीं मिला.

महाराणा संग्रामसिंहके अह्दमें ईडरके राजाओंकी तब्दीली और उदयपुरके तावे होनेके सबब हम उस रियासतका इतिहास यहां लिखते हैं:—

ईडर.

फ़ॉर्ब्स साहिबकी रासमाला, बम्बई गज़ेटियरकी जिल्द ५ एष्ठ ३९८ तथा गुजरात राजस्थानके अनुसार लिखते हैं, क्योंकि इस राजधानीसे हमको कोई लेख नहीं मिला.

इस राजके उत्तर सिरोही और मेवाड़, पूर्वमें डूंगरपुर, दक्षिण और पश्चिममें अहमदाबाद और गायकवाड़का मुल्क है; कुल क्षेत्र फल २५०० मील मुरब्बा, (१) सन् १८७२ ई० में २१७३८२ और सन् १८८१ की मर्दुम शुमारीमें २५८००० बाशिन्दे थे, और सालियानह आमदनी ६००००० छः लाख रुपये हैं, जिसमेंसे २५०००० ढाई लाख महाराजाका ख़ालिसह, और ३५०००० साढ़े तीन लाख उनके जागीरदारोंके क़ब्ज़हमें है.

दक्षिण पश्चिममें एक चौरस और रेतीला हिस्सह है, उसके अलावह मुल्ककी ज़मीन ज़र्खेज़ (उपजाऊ) और जंगलसे ढके हुए पहाड़ों और नदियोंसे भरी हुई है; सर्दी (२) और बारिशमें यह मुल्क बहुत ख़ूबसूरत होजाता है.

---

(१) डॉक्टर हंटरके गज़ेटियर सेकण्ड एडिशनकी जिल्द चौथीके एष्ठ ३३६ में क्षेत्र फल ४९६६ मील मुरब्बा लिखा है, जो बम्बई गज़ेटियरके लेखसे दूना फ़र्क़ बताता है; और डॉक्टर साहिबने सन् १८८१ ई० की सेन्सस (ख़ानह शुमारी) रिपोर्टके मुवाफ़िक़ लिखा है.

(२) गुजरात राजस्थानमें लिखा है, कि सर्द मौसममें इस देशकी आबो हवा ख़राब होजाती है.

नदियां.

इस देशमें पांच नदियां हैं- साबर, हाथमती, मेश्वो, माझम, और वात्रक.

साबरमती मेवाड़के पहाड़ोंसे निकलकर उत्तरकी तरफ़ बहने बाद दक्षिणको जाती है, और बीस मील तक रियासतकी पश्चिमी सीमा बनाती है.

हाथमती पूर्वोत्तरी सीमासे आकर देशके बीचमें गुज़रती हुई अहमदनगरके पास साबरमें मिलजाती है, और संगमके बाद दोनों नदियोंका नाम साबरमती हो जाता है.

मेश्वो पूर्वसे आती है, और सांवलाजीके क़स्बेके पास होकर दक्षिण पश्चिमकी तरफ़ बहकर केड़ाके पास वात्रक में मिलजाती है.

माझम डूंगरपुरके पास पहाड़ोंसे निकलती है, और मेश्वोके तौर बहकर आमलियारा ठिकानेके पास वात्रकमें मिलजाती है.

वात्रक दक्षिण पूर्वमें मेघराजके पास होकर निकलती है, और दक्षिण पश्चिममें बहकर माझममें मिलकर धौलकामें वोथा मक़ामपर साबरमतीसे मिलती है.

पहाड़.

ईडरमें कई पहाड़ हैं, जिनमेंसे कई एक बहुत लंबे और ऊंचे हैं, और सब दरख़्तों और झाड़ियोंसे ढके हुए हैं.

ईडरका क़िला उस पहाड़पर है, जिसकी श्रेणी अर्वली और विंध्यसे मिली हुई है.

उत्तरी पहाड़ी हिस्सहमें गर्मी और सर्दी बहुत ज़ियादह पड़ती है, और बाक़ी हिस्सोंकी आबो हवा मध्य गुजरातके दूसरे हिस्सोंके समान है; सबसे अधिक गर्मीके महीनोंमें थर्मामिटर ज़ियादहसे ज़ियादह १०५ डिगरी तक, और कमसे कम ७५ तक रहता है; जुलाई और ऑगस्टमें ९५ से ७५ तक और डिसेम्बर और जेन्युअरीमें ५३ से ८९ तक रहता है.

तिजारत.

कुद्रती पैदावार ईडरमें बहुत कम है, पहिले ईडरके सौदागर अफ़ीमका रोज़गार ज़ियादह करते थे, लेकिन् अब बिल्कुल कारख़ानह सर्कारने लेलिया है. सांवलाजी और खेड़ब्रह्मके मेलोंसे कुछ तिजारत चलती है, तो भी अक्सर बंबई, पूना, अहमदाबाद, प्रतापगढ़ और विशननगरसे तिजारत होती है; ख़ास करके घी, कपड़ा, गल्लह, शहद, चमड़ा, गुड़, तेल, तिल वग़ैरह चीज़ें, जिनसे तेल निकलता है, साबन, पत्थर और लकड़ी बाहरको भेजी जाती हैं. पीतल, तांबेके बर्तन, रूई, विलायती और देशी कपड़े, नमक, शकर और तम्बाकू वग़ैरह चीज़ें बाहरसे आती हैं; अहमदनगरमें साबन बहुत बनाया जाता है.

ईडर महाराजके ख़ानदानके सर्दार.

१- महाराज जगत्सिंह, हमीरसिंहोत, सुवरका.
२- महाराज सर्दारसिंह, इन्द्रसिंहोत, दावड़ाका.
३- महाराज भीमसिंह, इन्द्रसिंहोत, नुवाका.

पटायत सर्दार.

१- चांपावत हमीरसिंह, रायसिंहोत, चांदरणीका.
२- चहुवान इन्द्रभाण, सूरजमलोत, मूंडेटीका.
३- जोधा मुहब्बतसिंह, हमीरसिंहोत, वेरणाका.
४- चांपावत दीपसिंह, दौलतसिंहोत, टींटोईका.
५- कूंपावत अर्जुनसिंह, नाहरसिंहोत, उंडणीका.
६- चांपावत भारथसिंह, गोपालसिंहोत, मऊका.
७- कूंपावत अजीतसिंह, दौलतसिंहोत, कूकड़ियाका.
८- जैतावत दलपतसिंह, खुमाणसिंहोत, गाठीयालका.

भोमिया.

१- पाल, २- खेरोज, ३- घोड़वाड़ा, ४- मोरी (मेघरज), ५- पोसीना, ६- वेराबर, ७- पाल, ८- बूडेली, ९- ताका, १०- टुंका, ११- कुशका, १२- सोमेयरा, १३- जालिया, १४- देघामड़ा, १५- वडीयोल, १६- वसायत, १७- धमबोलिया, १८- नाडीसाणा, १९- सरवणा, २०- गामभोई, २१- मोर डूंगर, २२- मोहरी (देवाणी), २३- करचा देरोल.

इतिहास.

ईडर- यह पुरानी जगह है, जिसके बारेमें कई कहानी क़िस्से प्रसिद्ध हैं, कहते हैं, कि ईडरके पहाड़पर वेणीवच्छराज नाम राजाने एक क़िला वनवाया था; फिर यह देश जंगली भील लोगोंका निवास स्थान रहा; जब वल्लभीपुरका राज पश्चिम निवासी गुर्जरोंने तबाह किया, उस वक़ वहांके राजा शिलादित्यकी राणी कमलावती अम्बा भवानीके दर्शनोंको आई थी, वह अपने गर्भके बालक केशवादित्यको शस्त्रक्षतसे निकालकर वहांके पुजारी हरका रावलकी स्त्री लक्ष्मणावतीके सुपुर्द करने बाद आप आगमें जलगई. केशवादित्यके बड़े होनेपर ईडरके भीलोंने उसे अपना राजा

बनाया. इसके बाद भांडेर, नागदा, चित्तौड़ व उदयपुरमें उस वंशके राजा नम्बरवार राज करते रहे, जिनका हाल पहिले भाग व इस भागमें मुफ़स्सल लिखागया है. फिर ईडरपर परिहार राजपूतोंका राज रहा.

ईडरपर जबसे राठौड़ोंका राज हुआ, उसका बयान इस तरहपर है:- क़न्नौजके राजा जयचन्द्रकी सन्तानमें सीहा (सिवा) के चार बेटे थे:-

१- आस्थान, २- अजमाल, ३- सोनंग, ४- भीम; इनके बुज़ुर्गोंका हाल हम जोधपुरकी तवारीख़में लिख आये हैं. सोनंग और अजमाल दोनों भाई गुजरात देश अनहिलवाड़ा पट्टनके सोलंखी राजा दूसरे भीमदेवके पास आये, और भीमदेवने सोनंगको कड़ी पर्गनेका सामेत्रा गांव जागीरमें दिया. अजमालने ओखामंडलमें जाकर वहांके चावड़ा राजाओंको मारने बाद राज छीनलिया; उनके दो पुत्र वाघा और बाढेल थे, उन दोनोंके नामसे "वाजी" और "बाढेल" गोत्रके राजपूत अबतक उस ज़िलेमें मौजूद हैं.

ईडरका राज सोनंगको इस तरह मिला:-

परिहार वंशका आख़िरी राजा अमरसिंह, जो पृथ्वीराज चहुवानके साथ शिहाबुद्दीन गौरीकी लड़ाईमें लड़कर मारागया (१), ईडरका राज एक अपने नौकर कोली हाथीसोड़की सुपुर्दगीमें करगया था; वह अमरसिंहके बाद ईडरका राजा बन बैठा. उसके बाद उसका बेटा सांवलिया सोड़ ईडरका राजा हुआ, उसने अपने प्रधान नागर ब्राह्मणकी कन्यासे ज़बर्दस्ती शादी करना चाहा; नागरने उसको दम देकर राठौड़ राव सोनंगसे पुकार की; सोनंग छिपकर अपने तीन सौ राजपूतों समेत नागरकी हवेलीमें आ छिपा; नागरने सामलिया सोड़को अपनी बेटीकी शादी करनेको बुलाया; वह अपने साथियों समेत बड़ी धूम धामसे आया; नागरने उन लोगोंकी शराबसे ख़ातिरदारी की; जब वे बेहोश होगये, तो राठौड़ोंने तलवारोंसे सबका काम तमाम किया. सामलिया सोड़ भागता हुआ ईडरके क़िलेके दर्वाज़ेके पास मारागया; उसने मरते वक़् अपने खूनसे सोनंगके सिरपर राज तिलक किया.

सोनंग विक्रमी १३१३ [हि० ६५४ = ई० १२५६] में रावका ख़िताब पाकर ईडरकी गद्दीपर बैठा, उसके पुत्र अहमल, धवलमल, लूणकरण, रवनहत, और

(१) बंबई गज़ेटियर वग़ैरह किताबोंमें लिखा है, कि उन दिनों ईडर चित्तौड़के मातह्त था, और परिहार अमरसिंह चित्तौड़के रावल समरसिंहके साथ शिहाबुद्दीन गौरीकी लड़ाईमें मारागया, लेकिन् इस बयानके सहीह होनेमें शक है- (देखो बंगाल एशियाटिक सोसाइटीका जर्नल नं० १ भाग १ सन् १८८६).

रणमल्ल एकके बाद एक गद्दीपर बैठे. रणमल्लके वक्तमें गुजरातके बादशाह अव्वल मुज़फ्फ़रशाहने विक्रमी १४५० [हि० ७९५ = ई० १३९३] और विक्रमी १४५५ [हि० ८०० = ई० १३९८] में ईडरपर हमलह किया, और विक्रमी १४५८ [हि० ८०३ = ई० १४०१] में तीसरा हमलह हुआ, तब राव रणमल्ल ईडर छोड़कर विशनगर चलागया.

रणमल्लके बाद उसका बेटा पूंजा ईडरकी गद्दीपर बैठा, वह गुजराती बादशाह अहमदशाहसे लड़ा था, और उससे शिकस्त खाने बाद एक खड्डेमें घोड़ेसे गिरकर मरगया. उसके पीछे नारायणदास गद्दीपर बैठा, जिसने अहमदशाहको ख़िराज देना कुबूल किया, लेकिन् विक्रमी १४८५ [हि० ८३१ = ई० १४२८] में वह बादशाहसे बर्ख़िलाफ़ होगया था. उसके बाद भाण गद्दीपर बैठा, जिसके ऊपर विक्रमी १५०२ [हि० ८४९ = ई० १४४५] में महमूदशाहने चढ़ाई की. मिराति सिकन्दरी के पृष्ठ ४९ में लिखा है, कि राव पहाड़ोंमें भागगया, और अपने वकील भेजकर सुलह चाही, और अपनी बेटीका डोला भी महमूदशाहके लिये भेजदिया. राव भाणके दो बेटे थे, बड़ा सूरजमल्ल और छोटा भीमसिंह, जिनमेंसे सूरजमल्ल गद्दीपर बैठा, और उसके बाद उसका बेटा रायमल्ल ईडरका राव हुआ. भीमसिंहने अपने भतीजेसे राज छीन लिया, रायमल्लका विवाह चित्तौड़के महाराणा संग्रामसिंह अव्वल (सांगा) की बेटीके साथ हुआ था, जिससे महाराणाने उसकी मदद की, और गुजरातियोंसे महाराणाकी लड़ाई हुई, जिसका हाल तफ्सीलसे उक्त महाराणाके बयानमें लिखा है.

भीमसिंह गुजरातके मुल्कको लूटने लगा, तब मुज़फ्फ़रशाह (२) ने उसपर चढ़ाई की; भीमसिंह पहाड़ोंमें भागगया, फिर सुलहके साथ वापस आया. उसके बाद रायमल्ल फिर गद्दीपर बैठा; लेकिन् इसको भी मुज़फ्फ़रशाहने निकाल दिया, और उसने बहुतसी लड़ाइयां कीं. उसके बाद राव भारमल्ल ईडरका मालिक बना, इसपर भी बहादुरशाह गुजरातीने दो दफ़ा हमलह किया, आख़िरमें यह अक्बरके ताबे हुआ. इसके बाद इसका बेटा पूंजा (२) ईडरका राव हुआ, और उसके बाद उसका बेटा नारायणदास गद्दीपर बैठा; इसने विक्रमी १६३१ [हि० ९८१ = ई० १५७४] में अक्बरकी इताअत कुबूल की थी, लेकिन् यह महाराणा १ प्रतापसिंहका ससुर था, जब अक्बर बादशाह मेवाड़पर चढ़ आया था, तब विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] में उसने ईडरकी तरफ़ फ़ौज भेजी, और राव नारायणदासने मुक़ाबलह किया, जिसका ज़िक्र महाराणा प्रतापसिंहके हालमें लिखागया है- (देखो पृष्ठ १५६); नारायणदाससे ईडर छूटकर बादशाही क़ब्ज़ेमें आया, लेकिन् कुछ अर्से बाद राव मए अपने कुंवर वीरमदेवके बादशाही दर्बारमें पहुंचा, तो बादशाहने उसका राज उसे वापस देदिया.

नारायणदासके बाद वीरमदेव गद्दीपर बैठा, यह बड़ा बहादुर और सख़्त बे रह्म था, उसने अपने सौतेले भाई रायसिंहको मारडाला, और दूसरे भी छोटे बड़े राजाओंके साथ लड़ाइयां करता रहा; वह काशी यात्राको गया, जब पीछा लौटकर आंबेर आया, तो वहां उसके सौतेले भाई रायसिंहकी बहिन जो आंबेरके राजाको ब्याही थी, उस महाराणीने अपने भाईका एवज़ लेनेके लिये वीरमदेवको मरवाडाला. इसी वीरमदेवके नामसे बनी हुई एक कहानी राजपूतानहमें मश्हूर है, जिसको पन्ना वीरमदेवकी बात कहते हैं, लेकिन् वह कहानी बिल्कुल झूठी दिल्लगीके लिये बेबुनियाद बनाकर मश्हूर करदी गई है. उसके बाद उसका भाई कल्याणमल्ल ईडरका मालिक कहलाया. लिखा है, कि उदयपुरके महाराणा और सिरोहीके रावसे कल्याणमल्ल ख़ूब लड़ता रहा, और ओगना, पानड़वा वग़ैरह पहाड़ी हिस्सह अपने क़ब्ज़हमें करलिया. जब उसका इन्तिक़ाल हुआ, तब उसका बेटा राव जगन्नाथ मुख़्तार बना, परन्तु विक्रमी १७१३ [हि० १०६६ = ई० १६५६] में बैताल भाटकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे दिल्लीके बादशाह शाहजहांके हुक्मके मुताबिक़ गुजरातके सूबहदार शाहज़ादह मुरादबख़्शने चढ़ाई करके इसी वर्ष में ईडर लेलिया; राव भागकर पोल़ गांवकी तरफ़ पहाड़ोंमें चलागया, और एक मुसलमान अफ़्सर सय्यद हातूको शाहज़ादहने ईडरमें छोड़ा. जगन्नाथका देहान्त पोल़में हुआ. उसका बेटा पूंजा तीसरा गद्दीपर बैठा, वह दिल्ली गया, लेकिन् आंबेरके राजाकी नाइत्तिफ़ाक़ीके सबब ईडरका राज मिलनेसे नाउम्मेद होकर उदयपुर चलाआया, और महाराणा (१) की मददसे ईडरपर क़ब्ज़ह करलिया; परन्तु छः महीनेके बाद पूंजाका देहान्त होगया, और उसका भाई अर्जुनदास गद्दीपर बैठा; थोड़े अर्सेमें वह भी रहबरोंकी लड़ाईमें मारागया. उस समय जगन्नाथके भाई गोपीनाथने अहमदाबादका इलाक़ह लूटा, और मुसल्मानोंको ईडरसे निकाल दिया, फिर ग़रीबदास रहबरको डर हुआ, कि गोपीनाथ अर्जुनदासका बदला लेवेगा, तब वह अहमदाबाद गया, और मुसल्मानोंकी फ़ौज चढ़ालाया, जिसके ज़रीएसे ईडर लेलिया. गोपीनाथ पहाड़ोंमें भागगया, और अफ़ीम न मिलनेके कारण जंगलमें मरगया.

फिर उसका बेटा करणसिंह राव कहलाया, जिसने विक्रमी १७३६ [हि० १०९० = ई० १६७९] में मुसल्मानोंको निकालकर ईडर लेलिया, परन्तु मुहम्मदअमीनख़ां और बहलोलख़ांने उससे ईडर छीन लिया, और करणसिंह भागकर सरवाण गांवकी तरफ़ गया,

---

(१) इस वक्त उदयपुरके महाराणा अव्वल राजसिंह थे. जो शाहजहांके बेटोंकी लड़ाइयोंके वक्त अपना मत्लब निकाल रहे थे.

जहांपर उसका देहान्त होगया. करणसिंहके दो बेटे थे, चन्द्रसिंह और माधवसिंह; माधवसिंहने वेरावर मक़ाम लिया, जहांपर उसकी औलाद क़ाबिज़ है; ईडरमें बहुत अर्से तक मुसल्मानोंका क़ब्ज़ह रहा, जहांका हाकिम मुहम्मद बहलोलख़ां रहा. विक्रमी १६९६ [हि० १०४९ = ई० १६३९] से चन्द्रसिंह ईडरपर हमलह करने लगा, जिसपर उसने विक्रमी १७१८ [हि० १०७१ = ई १६६१] में वसाई वालोंकी मददसे क़ब्ज़ह करलिया; परन्तु सिपाही राजपूतोंकी बहुत तन्ख़्वाह चढ़गई थी, वह न देसका, इसलिये ईडर बलासणाके ठाकुर सर्दारसिंहको सौंपकर पौलमें चलाआया, और वहांके मालिक परिहार राजपूतको मारकर क़ब्ज़ह करलिया. सर्दारसिंह चन्द्रसिंहके नामसे हुकूमत करता रहा, परन्तु वहांके निवासियोंसे फ़साद होनेके सबब कुछ अर्से बाद वह भी बलासणाको भाग गया; और बच्छा पंडितने ईडरपर क़ब्ज़ह करलिया.

विक्रमी १७८१ आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० ११३६ ता० ११ शव्वाल = ई० १७२४ ता० ४ जुलाई] को महाराजा अजीतसिंहको उनके दूसरे बेटे बख़्तसिंहने मारडाला, जिसका ज़िक्र इस तरहपर हैः- कि सय्यद अब्दुल्लाहख़ां और महाराजा अजीतसिंहने शामिल होकर दिल्लीके बादशाह फ़र्रुख़सियरको मारडाला, जब मुहम्मदशाहके वक़्में अब्दुल्लाहख़ां मारागया, आंबेरके महाराजा सवाई जयसिंहने महाराजाके बड़े बेटे अभयसिंहको समझाकर बख़्तसिंहके नाम लिखवा भेजा, तो उसने अपने बापको मारकर छोटे भाइयोंको भी मारना चाहा, उस वक़् अजीतसिंहके छोटे बेटे अणन्दसिंह और रायसिंहको उनके रिश्तहदार राजपूत वहांसे ले निकले, और कुछ अर्से तक मारवाड़में फ़साद करते रहे; ईडरका पर्गनह मुहम्मदशाहने महाराजा अभयसिंहको जागीरमें लिखदिया था; यह सुनकर अणन्दसिंह व रायसिंहने विक्रमी १७८३ [हि० ११३८ = ई० १७२६] (१) में उसपर क़ब्ज़ह करलिया.

अब ईडर सोनंगकी औलादसे निकलकर उसके बड़े भाई आस्थानकी औलादके तह्तमें आया. यह हाल सुनकर महाराणा संग्रामसिंह (२) ने इस राज्यको मेवाड़में मिलालेना

---

(१) फ़ॉर्ब्स साहिबकी रासमाला हिस्ट्री और मारवाड़की तवारीख़में अणन्दसिंहका ईडर लेना विक्रमी १७८५ [हि० ११४० = ई० १७२८] में और ऊदावत लालसिंहका ईडरमें आना और विक्रमी १७८७ [हि० ११४३ = ई० १७३०] में महाराजाका क़ब्ज़ह होना लिखा है. ये दोनों तहरीरें ग़लत हैं, क्योंकि विक्रमी १७८४ आषाढ़ [हि० ११३९ = ई० १७२७] में आंबेरके महाराजा जयसिंह और जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने महाराणा संग्रामसिंहके नाम इस मज़्मूनके ख़रीते लिखे हैं, कि अणन्दसिंहको निकालकर आप ईडर ले लीजिये, जिनकी नक़्लें ऊपर दर्ज हो चुकी हैं- (देखो पृष्ठ ९९७).

चाहा, और महाराजा सवाई जयसिंहकी मारिफ़त महाराजा अभयसिंहकी भी इजाज़त लेली; ताकि आपसकी मुहब्बतमें फ़र्क़ न आवे. इस विषयके काग़ज़ और महाराणाकी फ़ौजकशीका हाल ऊपर लिखा गया है. कुछ अर्से तक अणन्दसिंह व रायसिंह महाराणाके मातहत रहे.

विक्रमी १७९१ [हि० ११४६ = ई० १७३४] में मल्हार राव हुल्कर और राणोजी सेंधियाकी मदद लेकर अणन्दसिंहने जवांमर्दख़ां सर्दारको निकाला. विक्रमी १७९५ [हि० ११५१ = ई० १७३८] में गुजरातका सूबहदार मोमिनख़ां ईडरपर चढ़ा, और रणासण व मोहनपुरके सर्दारोंपर कर लगाया, लेकिन् रायसिंहने मोमिनख़ांसे सुलह की, और सूबहदारने भी उसकी बात कुबूल करली. राघवजी मरहटाके बर्ख़िलाफ़ रायसिंहने मोमिनख़ांसे दोस्ती रक्खी, जिसके एवज़ उसने मोड़ासा, कांकरेज, अहमदनगर, प्रांतिज, और हरसोलके ज़िले देदिये. विक्रमी १७९९ [हि० ११५५ = ई० १७४२] में रहवर राजपूतोंने हमलह करके महाराजा अणन्दसिंहको मारडाला, और उसके साथ चहुवान् देवीसिंह और कूंपावत अमरसिंह मारेगये, तब रायसिंह मोमिनख़ांसे रुख़्सत लेकर आया, और रहवरोंको ईडरसे निकाल दिया. उसने अणन्दसिंहके बेटे शिवसिंहको गद्दीपर बिठाया, जो उस वक़्त छः वर्षका था; और रायसिंह मुसाहिबीका काम करने लगा, जो विक्रमी १८०७ [हि० ११६३ = ई० १७५०] में मरगया, परन्तु बंबई गज़ेटियरमें इसके मरनेके सन्को सन्देहके साथ लिखा है.

विक्रमी १८१४ [हि० ११७० = ई० १७५७] में मरहटोंने अहमदाबाद लेलिया, जिसके साथ राजा शिवसिंहसे भी प्रांतिज, बीजापुर, मोड़ासा, बायद और हरसोलका आधा हिस्सह लेलिया, जिससे मालूम होता है, कि शिवसिंह मुसल्मानों की हिमायतमें था. फिर गायकवाड़ आपा साहिब विक्रमी १८२३ [हि० ११७९ = ई० १७६६] में चढ़ आया, और शिवसिंहसे ईडरका आधा राज मांगा, जो रायसिंहके हिस्सेमें था, वह निःसन्तान मरगया था; शिवसिंहको लाचार आधी आमदनी लिखदेनी पड़ी. विक्रमी १८४८ [हि० १२०५ = ई० १७९१] में शिवसिंह मरगया, उसके पांच बेटे थे, १- भवानीसिंह, २- संग्रामसिंह, ३- ज़ालिमसिंह, ४- अमीरसिंह, और ५- इन्द्रसिंह. भवानीसिंह गद्दीपर बैठा, लेकिन् बारह दिन राज करके मरगया. उसका बेटा गंभीरसिंह तेरह वर्षका गद्दीपर बैठा. उसके काकाओंने गंभीरसिंहको मारना चाहा, जिसपर वे ईडरसे निकालेगये. संग्रामसिंह अहमदनगर और ज़ालिमसिंह व अमीरसिंह बायड़ व मोड़ासा चले गये. विक्रमी १८५२ [हि० १२०९ = ई० १७९५] में इन तीनों भाइयोंने फिर

ईडरपर हमलह किया, जिससे गंभीरसिंहने उनको फिर कुछ इलाक़ह देदिया.

विक्रमी १८५८ [हि० १२१६ = ई० १८०१] में पालनपुरके पठानोंने घोड़वाड़के कोलियोंपर हमलह करके क़ब्ज़ह करलिया, लेकिन् गंभीरसिंहने मरहटोंकी मदद लेकर उनको निकाल दिया, और गायकवाड़को २४००० रु० घास दानेके नामसे सालियाना देना ठहराया; कोलियोंसे तीसरा हिस्सह गंभीरसिंह लेने लगा; इसी तरह घोड़वाड़के रहवरोंसे भी पांच हिस्सोंमेंसे दो ईडरमें लिये जाते थे, वे हिस्से गंभीरसिंहने अपने चचा इन्द्रसिंहको देदिये. विक्रमी १८६५ [हि० १२२३ = ई० १८०८] में गम्भीरसिंहने बीराहर (जो पुराने ईडरके राज्य वंशियोंके ख़ानदानमें था) और तंबा कोलियोंका और दांताके पंवार सर्दारके नवर गांव और वरनापर हमलह करके खिचड़ीके नामसे ख़िराज ठहरा लिया. इसी तरह पोल्के राव रत्नसिंहको भी खिचड़ी देना पड़ा. दूसरे साल कोलियोंके गांव कर्चा, समेरा, देह गामड़ा, वंगर, बांदी ओल और राजपूतोंके गांव खुश्की और रहवरोंके ठिकाने सिरदोई, मोहनपुर, रणासण और रूपालसे भी ख़िराज ठहरा लिया. गंभीरसिंह विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] में मरगया.

उनका बेटा जवानसिंह गद्दीपर बैठा, और उसके बचपनमें रियासतका इख़्तियार सर्कार अंग्रेज़ीके हवाले हुआ. जब अहमदनगरके महाराज तख़्तसिंह जोधपुर दत्तक चलेगये, तो वह इलाक़ह भी ईडरमें शामिल होगया, जिसको महाराजा तख़्तसिंह जुदा रखना चाहते थे, लेकिन् गवर्मेंटने क़बूल नहीं किया.

जवानसिंह बड़े आक़िल और सर्कारके ख़ैरख़्वाह थे, इसलिये सर्कारने उनको बंबईकी लेजिस्लेटिव कौन्सिलका मेम्बर बनाया, और के० सी० एस० आई० का ख़िताब दिया. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में ३८ वर्षकी उम्र पाकर उनका इन्तिक़ाल होनेपर उनके पुत्र केसरीसिंह वर्तमान महाराजा गद्दीपर बैठे. उदयपुरके महाराणा भीमसिंहने विक्रमी १८४० - १८५० [हि० ११९७ - १२०८ = ई० १७८३ - १७९३] में ईडरके महाराजाकी तीन बेटियोंके साथ शादी की थी, जिसका हाल उक्त महाराणाके हालमें लिखा जायेगा; और वर्तमान महाराजाकी दो बहिनोंमेंसे एकके साथ विक्रमी १९३२ आषाढ़ शुक्ल ८ [हि० १२९२ ता० ७ जमादियुस्सानी = ई० १८७५ ता० १२ जुलाई] को और दूसरीके साथ विक्रमी १९३४ [हि० १२९४ = ई० १८७७] को वैकुंठवासी महाराणा सज्जनसिंहकी शादी हुई, जिसका वर्णन उक्त महाराणाके हालमें किया जायेगा.

ईडरके महाराजाकी १५ तोपोंकी सलामी होती है, और उनको दत्तक लेनेकी

सनद हासिल है. विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] में एक अ़ह्द-नामह सर्कार अंग्रेज़ीके साथ हुआ, जो एचिसन्की किताबमें दर्ज है.

डूंगरपुर.

जुग्राफ़ियह.

डूंगरपुरकी उत्तरी सीमा मेवाड़; पूर्वी मेवाड़ और माही नदी है, जो इसको बांसवाड़ेसे जुदा करती है; दक्षिण तरफ़ माही, और पश्चिम तरफ़ रेवा व माही कांठा है. यह रियासत, जिसका रक़्बह ९५२ मील मुरब्बा है, २३.२५- और २४.३ उत्तर अक्षांश और ७३.४० व ७४.१८ पूर्व देशान्तरके बीचमें फैली हुई है; लंबाई इसकी पूर्वसे पश्चिमको ४० मील और चौड़ाई उत्तरसे दक्षिणको ३५ मील है.

इस रियासतका अक्सर इलाक़ह पहाड़ियोंसे ढका हुआ है, जिसमें सालर वग़ैरह बड़े और कई क़िस्मके छोटे २ दरख़्त कस्रतसे हैं. गर्मीमें जंगल सूख जाते हैं, लेकिन् बारिशके दिनोंमें कई क़िस्मकी हरियाली होजानेसे अक्सर पहाड़ियोंका सब्ज़ा खुशनुमा मालूम होता है. मेवाड़ और प्रतापगढ़की तरफ़की ज़मीन वीरान और ऊंची नीची है, लेकिन् रेवाकांठाकी तरफ़ वाली उससे उ़म्दह है. यह देश कई मील तक गुजरातके समान मालूम होता है. यहां दो या तीन बड़ी बड़ी झाड़ियां हैं, जिनमें आबनूस और दूसरी क़िस्मके बहुतसे काठ पैदा होते हैं. यहांपर मवेशीकी चराईके लिये ज़मीन बहुत कम है.

बालरा खेतीके टुकड़ोंके सिवाय पहाड़ियोंके किनारेपर, और उसके बीच, या घाटियोंकी नीची २ तर ज़मीनमें होती है, और कुएं व तालाबोंसे सींची जासक्ती है. अगर्चि ज़मीन ऊंची नीची बहुत है, लेकिन् कोई बड़ी पहाड़ी नहीं है. राजधानीकेपास एक पहाड़ी ७०० फुट ऊंची है, जिसके दामनका घेरा पांच मील है; उसके नीचे शहर, और एक उ़म्दह झील है; और चोटीपर महारावलके महल हैं. सागवाड़ेमें एक दूसरी पहाड़ी है, जो शहरके पासवालीसे कुछ बड़ी है.

नदी और झील.

यहां माही और सोम दो ही नदियां हैं, जो बनेश्वरके मन्दिरके पास मिलती हैं; वहांपर हर साल एक मेला होता है; माही नदी इस राजको बांसवाड़ेसे अलग करती है, और सोम नदी सलूंबरसे, जो मेवाड़में है. ये दोनों नदियां बराबर साल भर बहती रहती हैं; अगर्चि कई जगहमें सोमका जल धरतीके नीचे बहता है, लेकिन् वह एक

बारगी छिपजाती, और फिर दिखाई देती है; माही नदीकी तलहटी औसत तीन या चार सौ फ़ुट चौड़ी और ज़ियादह तर पथरीली है. इसके तीरपरके कई हिस्सोंमें, जो वेणूके दरख़्तसे ढके हुए हैं, गर्मीके दिनोंमें जंगली जानवर रहते हैं. कुद्रती झील डूंगरपुरमें कोई नहीं है, लेकिन् ५ या ६ बनाई हुई झीलें हैं.

आबोहवा और बारिश.

डूंगरपुरकी आबोहवा न बहुत सर्द है, न गर्म है; बारिशका औसत क़रीब २४ इंचके है. आबोहवा मुअ्तदिल होनेसे यह एक तन्दुरुस्तीका देश समझा जासक्ता है, क्योंकि यहांपर सिवाय बुख़ार और बालाके हैज़ह या दूसरी बीमारी बहुत कम होती है.

पैदावार.

इस देशमें गेहूं, जव, चना, बाजरा, मक्की, चावल, रूई, अफ़ीम, तिल, सरसों, अद्रक, हल्दी और गन्ना वग़ैरह पैदा होता है; पियाज़, रतालू, नीबू, मीठा आलू, बैंगन, मूली, तर्बूज़, आम और केलाके सिवा कोई फल या तर्कारी नहीं होती; महुवाके पेड़ बहुत हैं, जिनसे शराब बनती है; खेती कुओंसे ज़ियादह और नदी तालाबोंसे कम सींची जाती है.

ज़मीनकी मालगुज़ारी और पट्टा.

ज़मीनकी मालगुज़ारी वुसूल करनेका किसी गांव या शहरमें एक क़ाइदह नहीं है, न तो ज़मीन मापी जाती है, और न फ़ी बीघे महसूल मुक़र्रर है. वसन्त और जाड़ेकी फ़स्लमें राजसे एक अफ़्सर भेजा जाता है, जो फ़स्ल देखनेके बाद राजका महसूल ठहरालेता है. वर्षमें एक बार पटैलको सर्कारी अफ़्सर बुलाकर हर एक गांवकी आमदनी और राजकी शरह मुक़र्रर कर लेते हैं. पूंजा रावल, जो १९० वर्ष (१)

---

(१) पूंजा रावलका बनाया हुआ गोवर्धननाथका मन्दिर डूंगरपुरमें गैबसागर तालावकी पालपर है, जिसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] में हुई थी; यह बात वहांकी प्रशस्तिमें लिखी है. इसके बाद महाराणा जगत्सिंहके वक्तमें, जब डूंगरपुरपर विक्रमी १६८५ [हि० १०३७ = ई० १६२८] में फ़ौज गई थी, तब वहां पूंजा रावल था, जिसको २६० वर्षका अर्सह हुआ; यह बात राज समुद्रकी प्रशस्तिमें लिखी है. राजपूतानह गज़ेटियरमें यह बात गलतीसे लिखीगई है, क्योंकि राज समुद्रकी प्रशस्तिके आठवें सर्गके आठवें श्लोकमें लिखा है, कि गिरधर रावलको महाराणा राजसिंह १ ने अपने तावे बनाया, तो इससे साफ़ ज़ाहिर है, कि उस समय पूंजाका देहान्त होचुका था, जिसको शाहजहांने डेढ़ हज़ारी मन्सब दिया था.

पहिले जीता था, उसके ज़मानेमें ज़मीन मापी जाती थी, भाव भी ठहरालिया जाता था, और आमदनीके सीगे ठीक करलिये जाते थे.

पूंजा रावलने इक्कीस सीगे मालगुज़ारीके मुक़र्रर किये थे. ज़मीनकी मालगुज़ारी याने वराड़, सर्कारी कामदारोंकी तन्ख्वाह देनेके लिये, सर्दारके ख़ानदानके लिये, परदेशी सिपाहियोंके लिये और दूसरी फुटकर बातोंके लिये बहुतसे महसूल मुक़र्रर जगह लियेजाते थे. उस वक़्के दस्तूरोंमेंसे यह बड़ी तब्दीली हुई है, कि अब किसानको रुपयेके सिवाय कुछ अन्न भी देना पड़ता हैं; गांवोंमेंसे कहीं पैदावारकी चौथाई और कहीं तिहाई लीजाती है, और कहीं कहीं पैदावारके हिसाबसे कम ज़ियादह भी लिया जाता है; जहां पैदावार कम है, वहां अन्नके सिवाय कुछ नहीं लिया जाता.

डूंगरपुरकी कुल ज़मीनकी आमदनी एक लाख तिरासी हज़ार तीन सौ पचास रुपया है, जिसमेंसे ७९६८८ रु० राजको, ५१९६७ रु० ठाकुरोंको मिलता है, और बाक़ी धर्मार्थ दिया जाता है.

आबादी.

हिन्दुओंकी तादाद १७५००० है, और कुल रअय्यतमेंसे तीन चौथाई हिस्सह हिन्दू, आठवां हिस्सह जैनी, और इतने ही मुसल्मान हैं. भीलोंकी तादाद क़रीब दस हज़ारके है; और विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] की मर्दुमशुमारीकी रिपोर्टके मुवाफ़िक़ एक लाख तिरेपन हज़ार तीन सौ इक्यासी आदमी हैं.

इस देशमें ख़ास व्यापारी हिन्दू महाजन और बोहरे हैं. यहां ब्राह्मणोंकी संख्या आठ और दस हज़ारके बीचमें है, राजपूत और महाजन तादादमें पांच हज़ारके क़रीब गिनेगये हैं, और कुछ मुसल्मान भी आबाद हैं. भील इस देशके क़दीमी रहने वाले हैं; बड़े शहरोंमें साधारण रोज़गारी और कारीगर पाये जाते हैं. हलवाई, सुनार, कुंभार, लुहार, कूंजड़े, बढ़ई, संगतराश, और मोची वगै़रह शहरमें हैं; लेकिन् गांवोंमें ज़ियादहतर खेती पेशा लोग हैं. कपड़ा और ग़ल्लह अदल बदलकी मुख्य चीज़ है. काले पत्थरके खिलौने, आबख़ोरे और मूर्तियां डूंगरपुरमें बनती हैं. सागवानकी सादी व रंगीन तिपाई और चारपाई वगै़रह चीज़ें अक्सर बढ़ई लोग बनाते हैं.

डूंगरपुरमें कोई पाठशाला नहीं है, राजधानीमें पुलिसका बन्दोबस्त एक कोतवाल और २५ कांस्टेबल् करते हैं, और ज़िलोंमें छः जगह पुलिस है; जिनमें एक थानहदार, दो नाइब और कुछ कांस्टेबल् रहते हैं. अव्वल दरजेके थानेदारको

एक महीने जेलख़ानह और २५ रुपया जुर्मानह, दूसरे दरजे वालेको १० रुपया जुर्मानह और आठ दिन जेलख़ानह भेजनेका इख्तियार है; छोटे छोटे मुक़द्दमोंकी मिस्ल नहीं रक्खीजाती, लेकिन् बड़े मुक़द्दमोंके काग़ज़ात तह्क़ीक़ातके बाद कचहरीमें भेजदिये जाते हैं.

सड़कें, शहर और मश्हूर जगह.

इस राज्यमें कोई बनाई हुई पक्की सड़क नहीं है, बांसवाड़ेसे डूंगरपुरमें होकर गाड़ीकी कच्ची सड़क खैरवाड़ेको गई है. दूसरी सागवाड़ेमें होकर बांसवाड़ेसे खैरवाड़ेको पहुंची है. ये दोनों सड़कें पश्चिमोत्तरमें हैं. तीसरी दक्षिण पश्चिममें सलूंबरसे डूंगरपुरमें होकर बीछीवाड़ेको गई है, और यह उदयपुरसे अहमदाबादको जानेवाली सड़कसे राजकी दक्षिण पश्चिमी सीमापर मिलती है. ख़ास मक़ाम राजधानी डूंगरपुर, गलियाकोट और सागवाड़ा, नोसराम, गींजी, बीछीवाड़ा, आसपुर और बनकौड़ा हैं, जिनमेंसे डूंगरपुर, गलियाकोट और सागवाड़ा तीनों तिजारतके ख़ास मक़ाम हैं; वर्ष भरमें दो मेले, एक तो बनेश्वर और दूसरा गलियाकोटमें फ़ेब्रुअरी और मार्च महीनेके अन्दर होते हैं; पिछले मेलेमें मुसल्मान बोहरोंके सिवाय और लोग बहुत कम जाते हैं, और यह बोहरोंका ही जारी किया हुआ है; पहिले मेलेमें सब तरहके लोग जमा होते हैं, जिनका शुमार पन्द्रह हज़ारसे बीस हज़ार तक है; यह मेला पन्द्रह दिन तक रहता है, और इसमें आस पासके सौदागर भी आते हैं. विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में इस मेलेपर` १४३००० का माल आया था, जिसमेंसे ११७५०० का सामान बिक गया.

बनेश्वरमें एक देवीका प्रसिद्ध मन्दिर है, जहां सब ज़ातके हिन्दू पूजाके लिये आते हैं. यह जगह सोम और माही नदीके संगमपर है, और वहांका जल बहुत पवित्र समझागया है. गलियाकोटमें एक मुसल्मानका रौज़ह है, जो फ़ख़्रुद्दीनके नामसे मश्हूर है. बनकौड़ाके लोग एक विष्णूका मन्दिर विष्णू अवतारके लिये रखते हैं, जिसका नाम मानजी कहलाता है; और यह बनेश्वरके पास ही है. यहां गुजराती और हिन्दुस्तानी मिली हुई भाषा बोली जाती है, जो वागडी कहलाती है.

तवारीख़.

डूंगरपुरका तवारीख़ी हाल बहुत कम मिलता है. क्योंकि न तो वहांके आदमी

इस इल्मसे वाक़िफ़ हैं, और न वहांके राजाओंको इस बातका शौक़ हुआ; मैंने विद्यमान महारावलसे दो दफ़ा मुलाक़ात की, पहिले धूलेवमें, जब वह ऋषभदेवके दर्शन करनेको आये थे, और मैं भी इसी कामके लिये वहां गया था; दूसरी बार भीलोंके बल्वेमें हुई, जब कि वे खैरवाड़ेकी छावनीमें आये थे, और मैं वहां गया था; मैंने तवारीख़के फ़ाइदे दिखलाकर बहुत कुछ कहा, और महारावलने भी तह्क़ीक़ात करवाकर भेजनेका इक़ार किया; उन्होंने एक कुर्सीनामह व अपना हाल मुख़्तसर मेरे पास भेजा, जिसमें चन्द प्रशस्तियां अल्बत्तह मुफ़ीद हैं; उन प्रशस्तियोंसे, नैनसी महताकी पुस्तकसे और राजपूतानह गज़ेटियर व बड़वा भाटोंकी पोथियोंसे चुनकर, जो कुछ हाल मिला, वह यहां लिखता हूं:-

मेवाड़ और मारवाड़की ख्यातोंमें इस तरह लिखा है, कि रावल करण १ के दो बेटे एक माहप, दूसरा राहप था; जब मंडोवरका राणा मोकल परिहार करणसिंहको तक्लीफ़ देने लगा, तो उन्होंने अपने बड़े बेटे माहपको उसके पीछे भेजा, माहप कुम्भलमेरके पहाड़ोंमें शिकार खेलने लगा, और राणा मोकलका कुछ प्रबंध न करसका; थोड़े अर्से बाद माहप अपने बापके पास चला आया. यह बात राहपको नागुवार गुज़री, उसने राणा मोकलको बरातके बहानेसे मंडोवरमें घुसकर गिरिफ्तार करलिया, और अपने बाप करणके पास लेआया. रावल करणने मोकलसे राणाका ख़िताब छीनकर अपने छोटे बेटे राहपको दिया (१). यह बात माहपको बुरी मालूम हुई, और नाराज़ होकर अहाड़ गांवमें चला आया, जहां अब उदयपुरसे पूर्व दो मीलके फ़ासिलेपर महाराणाओंका दग्धस्थान है. इस बातसे महारावल करणने नाराज़ होकर अपने छोटे बेटे राणा राहपको वलीअह्द किया; महारावलका इन्तिक़ाल होनेपर राहप राणाके ख़िताबसे मेवाड़का मालिक कहलाया (२).

नैनसी महताको डूंगरपुरके सांइया झूलाके बेटे भाणा, उसके बेटे रुद्रदासने जो हाल लिख भेजा, उसके अनुसार वह इस तरहपर लिखता है:- कि रावल माहपने अपने छोटे भाई राहपको उसकी ख़िद्मतोंसे खुश होकर मेवाड़का राज्य दे दिया, और आप अहाड़में आरहा; इसी तरह डूंगरपुरके विद्यमान लोग भी ज़िक्र करते हैं; लेकिन् इनके सिवाय ऐसा और कोई बयान नहीं करता.

---

(१) रावल करण और राहप व माहपका हाल हमने अपनी रायके साथ इस किताबके पहिले हिस्सेमें मुफ़स्सल लिखा है.

(२) हमारे ख़यालसे माहप नाउम्मेद होकर बैठ रहा, और राहप चित्तौड़ लेनेके इरादेपर मुस्तइद रहकर लड़ाइयां किये गया.

माहपने डूंगरिया मेरको मारकर डूंगरपुरका शहर आबाद किया. मेवाड़की किताबोंमें इस शहरके आबाद करनेमें भी महाराणा राहपकी मदद लेना लिखा है; डूंगरपुरसे जो प्रशस्तियां आईं, उनमें सहस्त्रमल्ल रावल और पूंजा रावलके बनाये हुए मन्दिरोंमें वंशावली लिखीगई है, लेकिन् एकसे दूसरी नहीं मिलती; इस वास्ते पुराना हाल सहीह लिखना बहुत मुश्किल है, परन्तु कई तरहसे यह साबित है, कि यह रियासत पुराने ज़मानेसे उदयपुरके मातहत रही है. उनकी पीढ़ियोंके नाम बड़वा भाटोंकी पोथियोंके मुवाफ़िक़ नीचे लिखते हैं:-

मेवाड़के रावल करणसिंहका बेटा १ रावल माहप, २- रावल नर्बद (१), ३- रावल भीलो, ४- रावल केसरीसिंह, ५- रावल सांवन्तसिंह, ६- रावल सीहड़देव, ७- रावल दूदा, ८- रावल बरसिंह, ९- रावल भाचन्द, १०- रावल डूंगरसिंह, ११- रावल करमसिंह, १२- रावल कान्हड़देव, १३- रावल पत्ता, १४- रावल गोपालदास, १५- रावल समदरसिंह, १६- रावल गंगदास.

यहां तककी ज़ियादह तवारीख़ नहीं मिलती. बाज़ कहते हैं, कि माहपने पहिले बड़ौदामें राजधानी बनाई, जो डूंगरपुरके इलाक़ेमें एक गांव है; और रावल वीरसिंहने डूंगर भीलको मारकर डूंगरपुर राजधानी क़ाइम की, जिसके बारेमें एक कहानी मश्हूर है, कि डूंगर भीलने अपने भाई बेटों समेत महाजनोंकी लड़कियां ज़बर्दस्ती ब्याह लेनी चाहीं, तब महाजनोंने रावल वीरसिंहसे मदद मांगी; रावलने शादीमें शरीक होनेके बहानेसे डूंगर और उसके सैकड़ों साथियोंको शराब पिलाकर ग़फ़्लतकी हालतमें मारडाला; उसी भीलके नामपर डूंगरपुरका शहर बसाया; लेकिन् इस कहानीमें और रावलके नाममें हर एक जगह और हर एक लिखावटमें इख़्तिलाफ़ है.

रावल कान्हड़देवने अपने नामका दर्वाज़ह और बाज़ार आबाद किया. इनके बाद रावल पत्ताने पातेला तालाब और इसी नामका दर्वाज़ह बनवाया.

रावल गैबाने, जो विक्रमी १४९८ [हि० ८४५ = ई० १४४१] में गद्दीपर बैठे थे, गैबसागर तालाब और बादल महल बनवाये, जो अब तक मौजूद हैं; उससे शहर डूंगरपुरकी खूबसूरती मालूम होती है.

रावल गंगदासकी गद्दीपर १८ रावल उदयसिंह अव्वल बैठे, यह महाराणा संग्रामसिंह अव्वल याने सांगाके बड़े सर्दारोंमें थे. बादशाह बाबरने अपनी किताब

---

(१) नम्बर २, ३, ४, ५, रावलोंके नाम डूंगरपुरसे भेजे हुए कुर्सीनामेमें नहीं हैं, और नम्बर ८ रावल बरसिंहकी जगह वीरसिंह, नम्बर ९ का नाम भरतुंड, १५ नम्बरके एवज़ गैबाजी और १६ नम्बरके बदले सोमदास लिखा है.

तुज़क बाबरीके पत्र २४३ में रावल उदयसिंहको महाराणा सांगाके सर्दारोंमें बारह हज़ार सवारका मालिक लिखा है. यह रावल उदयसिंह उक्त महाराणाके साथ विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२८] में बाबर बादशाहसे लड़कर बड़ी बहादुरीके साथ मारेगये. इनके बड़े बेटे १९ पृथ्वीराज और छोटे जगमाल थे; पृथ्वीराज गद्दीपर बैठे, तो जगमालने वागड़के कई पर्गनोंपर अमल करलिया.

नैनसी महता लिखता है, कि पृथ्वीराजने चहुवान मेरा वागड़िया और रावत् पर्वत लोलाड़ियाको जमइयतके साथ भेजा; उन दोनों राजपूतोंने बड़ी बहादुरीके साथ जगमालको वागड़से बाहर निकालदिया. इन लड़ाइयोंमें दोनों तरफ़के सैकड़ों राजपूत मारेगये. चहुवान मेरा और रावत् पर्वत फ़त्हके साथ इस उम्मेदपर डूंगरपुर आये कि रावल पृथ्वीराज हमको इन्आम देगा, लेकिन् उनको उसका नतीजा उल्टा मिला; उन सर्दारोंके साथमेंसे एकने रावलसे जाकर कहा, कि जगमाल क़ाबूमें आगया था, पर इन दोनों सर्दारोंने जान बूझकर उसे जानेदिया. इस बातपर नाराज़ होकर रावलने दोनों राजपूतोंकी ड्योढ़ी बन्द की. और कहा, कि तुम हमारे हरामख़ोर हो, जो हमारा दुश्मन क़ाबूमें आया हुआ, तुम्हारी मिलावटसे जीता चलागया. ये दोनों राजपूत नाराज़ होकर जगमालसे जामिले, और जगमाल भी उनके मिलनेसे ताक़तवर होकर वागड़का देश लूटने लगा. पृथ्वीराजने भी अपनी फ़ौज मुक़ाबलहको भेजी, दोनों तरफ़के बहादुर अच्छी तरहसे लड़े; लेकिन् पृथ्वीराजकी फ़ौजने शिकस्त खाई, क्योंकि मेरा और पर्वतसिंहके साथ अच्छे अच्छे राजपूत जगमालके पास चलेगये थे; आख़िरकार पृथ्वीराजने लाचार होकर वागड़का आधा देश जगमालको बांटदिया; पृथ्वीराज डूंगरपुरमें, और जगमाल बांसवाड़ेमें राजधानी बनाकर रहने लगे.

मेवाड़की पोथियोंमें लिखा है, कि महाराणा रत्नसिंहने जगमालकी हिमायत करके पृथ्वीराजसे आधा राज बंटवादिया, जिसकी तस्दीक़ तारीख़ फ़िरिश्तह और मिरात सिकन्दरीके पृष्ठ २४३ में लिखी है, कि "बहादुरशाह गुजराती मुरासेमें अपने लश्करको देखकर वागड़में आया, डूंगरपुरके राजा पृथ्वीराजने सुंबुल मक़ामपर हाज़िरी दी; बादशाह लश्करको वहीं छोड़कर आप शिकार खेलनेको बांसवाड़े गये, और करजीके घाट तक शिकार खेला; उस जगह चित्तौड़के राणा रत्नसिंहके वकील डूंगरसी और झांझरसी आये. फिर सुंबुल मक़ामपर पहुंचकर बादशाहने वागड़का मुल्क पृथ्वीराज और जगमालको आधा आधा बांटदिया."

इससे पाया जाता है, कि महाराणाके वकील भी इसी मत्लबके लिये बादशाहके पास गये होंगे, जिन्होंने इसी मत्लबकी बातें भी बहादुरशाहको अपना शरीक बनानेके

लिये कही थीं. रावल पृथ्वीराजका इन्तिक़ाल होनेपर उनके बेटे २० आशकरण गद्दीपर बैठे, क्यौंकि विक्रमी १५८८ [हि० ९३७ = ई० १५३१] में रावल पृथ्वीराज मौजूद थे, और विक्रमी १५९० [हि० ९३९ = ई० १५३३] में जब बहादुरशाह गुजराती चित्तौड़पर चढ़ आया था, तब आशकरण महाराणाकी फ़ौजमें शामिल थे; इस अर्सेके बीचमें रावल पृथ्वीराजका इन्तिक़ाल और रावल आशकरणका गद्दी नशीन होना पाया जाता है. महाराणा विक्रमादित्यके बेजा बर्तावसे कुल सर्दारोंके दिल बिगड़गये, उसी तरह रावल आशकरण भी नाराज़ होकर चित्तौड़से डूंगरपुर चलेगये; इन्होंने बनेश्वरमें पुरुषोत्तम भगवानका मन्दिर बनवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १६१७ ज्येष्ठ शुक्ल ३ [हि० ९६७ ता० २ रमज़ान = ई० १५६० ता० २६ मई] को हुई थी. महाराणा उदयसिंहके साथ कई लड़ाइयोंमें इनकी बहादुरी मश्हूर है.

अबुल्फ़ज़्ल अक्बरनामहकी तीसरी जिल्दके पृष्ठ १६९ में लिखता है, कि- "जब बादशाह बांसवाड़ेके पास पहुंचे, तो विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] में रावल प्रतापने, जो वहां सर्कश था, मए डूंगरपुरके ज़मींदार रावल आशकरण वग़ैरहके ताबेदारी इख़्तियार की."

इस वक़्से डूंगरपुर और बांसवाड़े वालोंने बादशाही ताबेदार बनना शुरू किया, फिर मालूम नहीं, कि रावल आशकरण कब इस दुन्याको छोड़गया. फिर उनके बेटे सहस्रमल्ल गद्दीपर बैठे, इन्होंने सुरपुरकी नदीके तीरपर माधवरायका मन्दिर बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १६४७ [हि० ९९८ = ई० १५९०] में की, वहां एक प्रशस्ति भी है, जिसमें डूंगरपुरकी वंशावली और कुछ हाल लिखा है- (देखो शेषसंग्रह नम्बर ४).

इनके बाद रावल करमसी गद्दीपर बैठे, जिनका ज़ियादह हाल नहीं मिलता.

इनके बाद रावल पूंजा मस्नद नशीन हुए, जिन्होंने गैबसागर तालाबकी पाल पर गोवर्द्धननाथका एक मन्दिर विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] में बनवाकर एक प्रशस्ति भी खुदवाई, जिसमें रावल पूंजा तक वंशावली लिखी है, और नैनसी महताने इसी वंशावलीको अपनी पोथीमें दर्ज किया है, और एक गांव भी मन्दिरकी भेट विक्रमी १७०० [हि० १०५३ = ई० १६४३] में किया-(देखो शेषसंग्रह नम्बर ५). जब विक्रमी १६७१ [हि० ११२६ = ई० १६१४] में जहांगीर बादशाह और महाराणा अमरसिंह अव्वलकी सुलह हुई, तब कुंवर करणसिंहकी जागीरके फ़र्मानमें डूंगरपुर भी दर्ज है-(देखो पृष्ठ २४८); उस फ़र्मानमें डूंगरपुरको ग़ैर अमली लिखा है, जिससे यक़ीन होता है, कि रावल आशकरणने अक्बरकी ताबेदारी कुबूल की, वह थोड़े दिनों तक रही होगी, क्यौंकि मुसल्मानोंकी ताबेदारीसे महाराणाकी

तावेदारी करना उनको ज़ियादह पसन्द होगा, जो एक अर्सेसे उनके बड़े करते आये थे, जिसपर भी राजपूतोंको आपसका ताना बड़ा नागुवार गुज़रता है; अगर दिल दूसरी तरफ़ हो, तो भी शर्मिन्दगीसे वह काम नहीं कर सक्के, जिससे बिरादरीका ताना सहना पड़े. इसलिये आशकरण, सहस्रमल्ल और करमसी महाराणा प्रताप-सिंह अव्वल व अमरसिंह अव्वलकी लड़ाइयोंमें ज़रूर साथ होंगे.

पूंजा रावलने शाहज़ादह खुर्रमसे बग़ावतके वक्त कुछ मिलाप करलिया, जिससे जहांगीरके मरनेपर खुर्रम याने शाहजहां बादशाह बना, तो पूंजाने भी महाराणा जगत्सिंह अव्वलकी हुकूमतसे निकलना चाहा, जिससे महाराणाने अपने प्रधान अक्षयराज वगैरहको कई सर्दारोंके साथ भेजकर रावल पूंजाको फिर अपना तावेदार बनाया, जिसका ज़िक्र महाराणा जगत्सिंह अव्वलके हालमें लिख आये हैं- (देखो पृष्ठ ३१९).

रावल पूंजाने अपने नामसे पुंजपुर गांव आबाद करके पुंजसागर तालाब बनवाया.

इनके बाद रावल गिरधरदास गद्दीपर बैठे. जब महाराणा जगत्सिंह अव्वलने इस दुन्याको छोड़ा, तब रावल गिरधरदासने भी महाराणाकी तावेदारीसे सिर फेरा; राजसमुद्रकी प्रशस्तिके आठवें सर्गके आठवें श्लोकमें लिखा है, कि विक्रमी १७१६ [हि० १०६९ = ई० १६५९] में फ़ौज भेजकर रावल गिरधरदासको महाराणा राजसिंहने फिर अपना तावेदार बनाया.

इनके बाद रावल जशवन्तसिंह गद्दीपर बैठे, जिनको जसराज भी कहते हैं. विक्रमी १७३२ [हि० १०८६ = ई० १६७५] में जब महाराणा राजसिंहने राजसमुद्र तालाबकी प्रतिष्ठा की, तो उस वक्त डूंगरपुरके रावल जशवन्तसिंह थे; इससे उक्त समय पहिले गिरधरदासका परलोक वास होना पायाजाता है. इनके बाद खुमानसिंह गद्दीपर बैठे, महाराणा राजसिंह १ और आलमगीरकी लड़ाईके बाद डूंगरपुरके रावलने फिर बादशाही तावेदार बननेकी कोशिश की, और महाराणा दूसरे अमरसिंहकी गद्दी नशीनीके वक्त टीकेका दस्तूर लेकर हाज़िर भी नहीं हुए; इस नाराज़गीसे उक्त महाराणाने अपने काका सूरतसिंहको बड़ी फ़ौजके साथ डूंगरपुर भेजा; सोम नदीपर डूंगरपुरके कई चहुवान राजपूत मुक़ाबलह करके मारेगये; महाराणाकी फ़ौजने डूंगरपुरको घेरलिया. तब रावल खुमाणसिंहने घबराकर अपनी तलवार बन्दी व फ़ौज खर्च के एवज़ एक लाख पछत्तर हज़ारका रुक्का लिखकर देवगढ़के रावत् द्वारिकादासको अपना सुफ़ारिशी और रुपयोंका ज़ामिन बनाया.

रुक़्हकी नक्ल.

श्रीरामोजयति १

स्वस्ति श्री महाराज धिराज महाराणा श्री अमरसिंघजी आदेशातु, रावल श्री पुमाणसीघजीरे कपुर (१) कीधो, जणीरी वीगत रुपीया १७५००० ईपरे रुपीया एक लाप पीचोतर हजार, हाथी २ दोय, माला १ मोतीरी——

वीगत रुपीया——

१००००० रुपीया एक लाप, हाथी २, माला १, पेहैली भरसी——

३५००० पंधी १ एक संवत् १७५६ री ऊनाली माहै भरसी, रुपीया पेतीस हजार——

४०००० पंधी १ संवत् १७५७ री सीआली माहै भरसी, रुपीया च्यालीस हजार——

१७५००० जेठ सुद ५ भोमे संवत १७५५ वर्षे (२).

यह मुआमलह ठहराकर महाराज सूरतसिंह तो उदयपुर चला आया, और देवगढ़का रावत् द्वारिकादास रुपया वुसूल करनेको एक आदमीके साथ पचास सवार वहां छोड़ आया; उन सवारोंने रावल खुमाणसिंहको तंगकर रक्खा था, महारावल सवारोंको टालता रहा, और एक अर्ज़ी बादशाह आलमगीरके नाम इस मत्लबकी लिख भेजी, कि महाराणा दूसरे अमरसिंह बहुत बड़ी फ़ौज एकट्ठी करके बादशाही मुल्क पर हमलह करना चाहते हैं, और मुझे भी अपने शरीक होनेको कहा, मैंने हुज़ूरकी ख़ैरख़्वाहीपर निगाह रखकर इन्कार किया, जिससे नाराज़ होकर फ़ौजकशीसे मुझको बर्बाद करते हैं. यह अर्ज़ी तहक़ीक़ातके लिये अजमेरके सूबहदारके पास भेजीगई, और उसने तहक़ीक़ात की. इस बारेके फ़ार्सी काग़ज़ोंकी नक़्लें महाराणा दूसरे अमरसिंहके हालमें लिखीगई हैं- (देखो पृष्ठ ७३५).

खुमाणसिंहके बाद उनके बेटे महारावल रामसिंह गद्दीपर बैठे. यह भी अपने बापकी नसीहतोंके मुवाफ़िक़ महाराणासे जुदा होना चाहते थे, और महाराणा उनको

(१) मेवाड़में दस्तूर है, कि किसीसे जुर्मानह अथवा तलवार बन्दीके रुपये लिये जावें, तो उनको कपूरके रुपये कहते हैं; इसका मत्लब यह है, कि देने वाला लाचार होकर कहता है, कि आप पानकी बीड़ी खाते हैं, उसमें जो कपूर डाला जावे, उस कपूरके कारख़ानेमें यह रुपये जमा कीजिये; वह इस बातसे उनका बड़प्पन दिखलाता है.

(२) यह संवत् श्रावणी है, और चैत्री संवत् विक्रमी १७५६ होता है.

अपने सर्दारोंमें शुमार करते थे; महारावल रामसिंहपर पंचोली विहारीदास फ़ौज लेकर गया, और एक लाख छब्बीस हज़ार रुपयेका रुक्कह लिखवाकर दूसरा रुक्कह न जाने किस मत्लबसे लिखवाया, वह हमको अस्ल मिला, जिसकी नक़्ल नीचे लिखते हैं:-

रुक्केकी नक्ल.

श्रीरांमजी १

सीधश्री श्री दीवांणजी आदेशातु, प्रतदुवे पंचोली वीहारीदासजी अत्र ॥ डुंगरपुर रावल रांमसीघजीरे पेसकसीरो ठेराव कीयो, मुकांम गांम फलोदरे डेरे———
वीगत रु———

पेहली रु १२६००० एक लाष छावीस हजार कीया सो सावत.

पंचोली श्री वीहारीदासजीरा डेरा गांम ईमरत्या आसपुरथी गांम फलोद हुवा, सो नीज्र कीया, चुहांण माधोसीघ, चुहांण अवचलसीघ, पुआर साचो, भंडारी गणेस, स्मस्त पांचा भेला व्है कीया———
वीगत———

हाथी १ दंतीलो षरीद रु० २५०००) रो से, ज्यो नीजर करसी———
२०००० रोकडा रुपीया वीस हजार———

लीपतं साह देवा लाधावत गांम फलोदरे डेरे स १७७४ आसोज सुदी ४, स्रो लीषंतरा पत २ पाछा देने रुपीया भरसी, त्या रावल रामसीघजी गांम फलोदरे डेरे आवे मीलसी, रावत् जोधसीघ, रावत सांवतसीघजी, कुअर दुरजंणसीघजी, साह देवो लेवा चालसी, या थाप कीधी.

मतो राउलजी.

अतो रु———

२०००) छोड्या रावतजी रे अरज कीधी तीथी
१८०००) वाकी सावत हाथी १

रावल रामसिंह बहादुरीमें बड़े मश्हूर थे, भील लोगोंपर इनका रोब ऐसा ग़ालिब था, कि बिल्कुल चोरी डकैती बन्द होकर इनका नाम लेनेसे थर्राते थे. इनके राज्यमें महाजन व्यापारियों और किसानों वग़ैरहको बड़ा चैन था; डूंगरपुरकी तवारीख़में लिखा है, कि इन्होंने गुजरातकी तरफ़ लूणावाड़ा, कडाणा तक अमल्दारी बढ़ाली; और उस ज़िलेमें छोटी गढ़ियें बनवालीं, जिनको लोग अब तक रामगढ़ीके नामसे पुकारते हैं. यह रावल बारह वर्ष तक लड़ाई झगड़ोंमें निरन्तर शस्त्र बद्ध रहे. इनके बाद इनके बेटे शिवसिंह गद्दीपर बैठे, यह बड़े अक़्लमन्द, बहादुर और फ़य्याज़ मश्हूर थे; इन्होंने बादशाहतका ज़वाल और अपनी रियासतकी बर्बादीकी चाल ढाल जानकर महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके साथ सुलह करके धाय भाई नगराजकी मारिफ़त इक़ारनामह लिखदिया, जिसकी नक़्ल हम नीचे लिखते हैं:-

——※——

इक़ारनामहकी नक़्ल.

श्रीरामजी १

।लीष्यो १ डुगरपुर रावल सीवसीघजीरो

।सीध श्री दीवाणजी आदेसातु, प्रत दुआै धाअभाई नगजी अप्रंच ॥ रावल श्री सीवसीघजी लीषतां, रांणा श्री जगतसीघजी राणा श्री राजसीघजीरी वार मांहें पेली सेवा करता मास ६, जो सेवा करसी; फोज फांटे हुकंम प्रमांणै सेवा करसी. सं १७८६ वेसाष सुद ६ दीने आछा साथ सांमांन थी धाअभाई नगजीरा कागल प्रमांणै सताब आवे भेला हा. सं १७८६ वेसाष सुद ६ दीने——————

——※——

इसी मुचल्केके साथ तलवार बन्दीके रुपयोंका रुक़ा लिखा गया, उसकी भी नक़्ल यहांपर दर्ज कीजाती है:-

तलवार बन्दीके रुपयोंके रुक़ेकी नक़्ल.

——※——

लीष्यो १ रु० ४००००० डुगरपुर कीदा तीरी नकल लीपी——————

सीध श्री दीवाणजी आदेसातु, प्रत दुआै धाअभाई नगजी अप्रंच ॥ रावल श्री सीवसीघजीरे केदरा रुपीआ ४००००० अके रुपीआ च्यार लाष कीदा, सो भंडार भरसी, रोकडा पेली भरसी. सं १७८६ वेसाष सुद ६.

अत्रमतु ९

रावल सीवसीघजी मतो.

दसकत भंडारी गणेस

गांधी गोकलजी.

मालूम होता है, कि ये दोनों काग़ज़ पूरे दवावके साथ लिखवाये होंगे, क्योंकि रावल खुमाणसिंहसे एक लाख पछत्तर हज़ार, रावल रामसिंहसे एक लाख छब्बीस हज़ार लिये थे, और इस वक्त चार लाखका रुक्कह लिखवाया गया, तो ऐसी बड़ी रक़म वगैर दवावके मंज़ूर करना क़ियासमें नहीं आता; और यह भी मालूम होता है, कि रावल रामसिंहने गुजरातकी लूट खसोटके साथ जो नये पर्गने लिये, उनकी आमदनीसे ख़ज़ानह भी अच्छा एकट्ठा करलिया था, क्यौंकि गुजरातकी तरफ़ क़िले बनवाये गये. रावल शिवसिंहने डूंगरपुरके गिर्द शहर पनाह तय्यार करवाई, और वागड़में भी कई छोटे छोटे क़िले वनवाये; महाराणाको इतनी बड़ी रक़म देनेके अलावह रावल शिवसिंहने और भी वड़े काम किये, जिनमें वहुत ख़र्च हुआ था. इसके सिवाय रावल शिवसिंहकी फ़य्याज़ी कवि लोग अपनी शाइरीमें अब तक बड़ी मुहब्बतके साथ याद रखते हैं; रअय्यत भी महारावल शिवसिंहको नहीं भूली है. उनकी जारी कीहुई पचपन रुपये भर सेरकी शिवशाही तोल और दूसरे कई वर्ताव उस ज़िलेमें जारी हैं; रियासतमें शिवशाही पगड़ी वगैरह वहुतसे दस्तूर उन्होंने क़ाइम किये थे. शिवराजेश्वरका मन्दिर तय्यार करवाया, और दूसरे भी मन्दिरोंकी मरम्मत विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में करवाई.

उदयपुरके महाराणा दूसरे भीमसिंह विक्रमी १८४० [हि० ११९७ = ई० १७८३] में ईडरके महाराजा शिवसिंहकी बेटीके साथ शादी करनेको गये, तो डूंगरपुरके रावल शिवसिंह भी वरातके साथ थे, और पीछे लौटते वक्त शिवसिंह महाराणाकी मिह्मानीके लिये डूंगरपुर चले आये, चार कोस तक महाराणाकी पेश्वाई की, और पगमंडा व नज्र, निछावर सब दस्तूरके मुवाफ़िक़ किया; वापसीके वक्त महाराणाको चार कोस तक पहुंचाया. थोड़े ही दिनोंके वाद रावल शिवसिंहका देहान्त होगया, और रावल वैरीशाल गद्दीपर वैठे; कुछ अर्से वाद इनका भी इन्तिक़ाल होगया, और उनके बेटे फ़त्हसिंह गद्दीपर वैठे. इन्होंने उदयपुरका तअल्लुक़ छोड़दिया. जब महाराणा दूसरे भीमसिंह दोबारह ईडर शादी करनेको गये, तो उस वक्त फ़त्हसिंह वरातमें नहीं आये, जिससे नाराज़ होकर महाराणाने लौटते वक्त डूंगरपुरको घेरलिया; महारावलने तीन लाख रुपयेका रुक्कह लिखकर पीछा छुड़ाया. यह हाल तफ़्सीलवार महाराणा दूसरे भीमसिंहके वयानमें लिखा

जायेगा. यह रावल फ़तहसिंह फ़साद फैलनेसे बिल्कुल ज़वालमें आगये थे.

महारावल जशवन्तसिंह.

रावल फ़तहसिंहके बाद महारावल जशवन्तसिंह गद्दीपर बैठे, इनके वक्तमें गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे अह्दनामह हुआ, और जो टांका मरहटोंको देते थे, वह अंग्रेज़ी सर्कारको देना क़रार पाया. इस बारेमें राजपूताना गज़ेटियरकी पहिली जिल्दके २७५ एष्ठमें इस तरह लिखा है:-

"जब मुसल्मानी बादशाहत बिगड़ी, तो दूसरी छोटी छोटी रियासतोंके मुवाफ़िक़ डूंगरपुर भी मरहटोंके ताबे हुआ, और पैंतीस हज़ार रुपया लगानका सेंधिया, हुल्कर और धारके सर्दारोंमें बांट दियेजानेका बन्दोबस्त हुआ; परन्तु अन्तमें धारके सर्दारोंने ही अपना हक़ करलिया. मरहटोंके बर्बाद होने बाद यह देश पिंडारों या दूसरे लुटेरों और अरब व अफ़्ग़ान लोगोंके गिरोहका, जिन्हें सर्दारोंने अपने बचावके वास्ते नौकर रक्खा था, शिकार हुआ, (याने छीन लिया गया, और कई वर्ष तक सिंधियोंका क़ब्ज़ह रहा). आख़िरकार ये लोग अंग्रेज़ी फ़ौजसे निकलवादिये गये, क्योंकि सर्कार अंग्रेज़ी विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] के सुलहनामहके मुताबिक़ इस राज्यको अपनी हिफ़ाज़तमें लेचुकी थी, और तभीसे ख़िराज भी सर्कारका होगया था, तो भी कई वर्ष तक बड़ी ख़राबी रही; क्योंकि राजपूत सर्दार अपनी रियासतके भीलोंमें लूटने और भूमि लेनेके लालचसे मिलगये, और कोई भीलोंको दबावमें न रखसका. तब अंग्रेज़ी अफ्सरोंके साथ एक फ़ौज भेजीगई, और भील व सर्दार मिलालिये गये; थोड़े ही दिनोंमें बिल्कुल बर्बादी दूर हुई; रावल जशवन्तसिंह चाल चलन ठीक न होनेके सबब हुकूमत करनेके लाइक़ न था; इसलिये विक्रमी १८८२ [हि० १२४० = ई० १८२५] में अलग कियागया, और उसका दत्तक पुत्र दलपतसिंह सावन्तसिंहका पोता, जो प्रतापगढ़का राजा था, क़ाइम किया गया.

विक्रमी १९०१ [हि० १२६० = ई० १८४४] में प्रतापगढ़की हुकूमत दलपतसिंहको इस शर्तपर मिली, कि उदयसिंहको डूंगरपुरमें अपना जानशीन बनालेवे, लेकिन् जब तक प्रतापगढ़का सर्दार रहे, और वह लड़का बालक रहे, तब तक डूंगरपुरका प्रबन्ध भी वही करे. इस मौक़ेपर जशवन्तसिंहने अपनी हुकूमत लेनेकी बहुत कुछ कोशिश की, पर नाकाम्याब हुई, और वह मथुरा भेजागया, जहां कि बन्दोबस्तमें रहा. वह बन्दोबस्त, जिससे दलपतसिंह प्रतापगढ़में रहनेके वक्त डूंगरपुरका मालिक बनायागया, ठीक नहीं ठहरा; इसलिये विक्रमी १९०९ [हि० १२६८ = ई० १८५२] में उसने डूंगरपुरका बिल्कुल तअ़ल्लुक़ छोड़दिया, और

वह एक देशी एजेंट (मुन्शी सफ़दरहुसैन) के अधिकारमें विद्यमान रावल उदयसिंहके होश्यार होने तक रक्खागया. डूंगरपुर वालोंने दत्तक लेनेका इख्तियार पाया है, और उनकी पन्द्रह तोपोंकी सलामी है."

महारावल उदयसिंह-२.

महारावल जशवन्तसिंह और दलपतसिंहके बाद महारावल उदयसिंह विक्रमी १९०३ आश्विन शुक्ल ८ [हि० १२६२ ता० ७ शव्वाल = ई० १८४६ ता० २९ सेप्टेम्बर] को गद्दीपर बैठे, जब तक इन्हें इख्तियार नहीं मिला, तब तक इनको रजवाड़ोंकी सैर करनेको गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे हिदायत हुई थी; इसपर यह उदयपुरमें महाराणा स्वरूपसिंहके पास आये थे, और क़दीम दस्तूरके बमूजिब इनकी इज़्ज़तका बर्ताव कियागया. यह महारावल नेक तबीअत, नेक आदत, फ़य्याज़, बहादुर, सच्चे, ईमान्दार और जगत् मित्र हैं. इस किताबका लिखनेवाला (कविराजा श्यामलदास) भी इनसे दो दफ़ा मिला, तो उनका अख़्लाक़ व मिलनसारी लाइक़ तारीफ़के पाई. रअ्य्यत और सर्दार सब लोग इनके मिज़ाजसे खुश हैं, और ग़ैर इलाक़ेका कोई अदना व आला, जो इनसे मिलता है, वह ज़िन्दगी भर इनकी खुश अख़्लाक़ीको नहीं भूलता, गवर्मेंट अंग्रेज़ीके अफ़्सर भी इनसे खुश हैं. अपने इलाक़हका हर साल दौरह करते हैं; किसी पालके भीलोंकी बग़ावत सुनते हैं, तो उसी वक्त खुद पहुंचकर दबागतसे या फ़हमाइशसे अम्न करदेते हैं. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] के अकालमें इन्होंने रिआयाके साथ बड़ी हमदर्दी की; इनके एक पुत्र खुमाणसिंह जवान हैं, लेकिन् उनकी आदत, व होश्यारी और चाल चलनसे लोग बहुत कम वाक़िफ़ हैं. और विक्रमी १९४४ [हि० १३०४ = ई० १८८७] में महारावलके एक पोता भी पैदा हुआ है.

पहिले दरजेके ठाकुर ताज़ीम पाते हैं. यह सब सर्दार राजपूत, कुछ महारावलके रिश्तहदार और कुछ चारण हैं, जिनकी जागीर व आमदनीका हाल नक्शेमें दर्ज है.

पहिले दरजेके जागीरदारोंका नक़्शह मए गांव व आमदनी.

गोत्र.	नाम.	जागीर.	गांव.	आमदनी सालिमशाही रुपयेसे.
चहुवान.	केसरीसिंह.	बनकौड़ा.	२७ ३/४	१४०२५)
चहुवान.	गंभीरसिंह.	छीतरी.	७	५४०५)
चहुवान.	दीपसिंह.	पीठ.	३७	५७१५)
चहुवान.	उदयसिंह.	ठाकरड़ा.	१२	६४४४)
चहुवान.	डूंगरसिंह.	मांडो.	१४॥	५३७५)
चहुवान.	भवानसिंह.	बमासा.	२	१६०५)
चहुवान.	धीरतसिंह.	बीछीवाड़ा.	६॥	२७१०)
चहुवान.	केसरीसिंह.	लोडावल.	२॥	१४५०)
अहाड़िया.	उम्मेदसिंह.	नांदली.	५॥	१६३२)
अहाड़िया.	गुलाबसिंह.	सावली.	३॥	७०४)
राठौड़.	उदयसिंह.	कूआं.	३५॥	६४८४)
चूंडावत.	प्रतापसिंह.	रामगढ़.	२	२४६५)
चूंडावत.	पहाड़सिंह.	सोलज.	१४	१७६५)
सोलंखी.	लक्ष्मणसिंह.	ओड़ां.	२	२३४५)
चारण.	वाणसिंह.	नौमावां.	१	२०००)
चारण.	जगतसिंह.	कड़ावाड़ा.	३	३०००)
	१६	१६	१७५ ३/४	६३१२४) सालिमशाही.

एचिसनकी अह्दनामोंकी किताब जिल्द ३.
अह्दनामह नम्बर १०, पृष्ठ ३३,
बाबत डूंगरपुर.

अह्दनामह ऑनरेबल् अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कंपनी और राय रायां महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान, क़रार पाया हुआ कप्तान जे० कॉल्फ़ील्डकी मारिफ़त, ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वग़ैरह, पोलिटिकल एजेण्टके हुक्मसे, मोस्ट नोबल् गवर्नर जेनरल बहादुरकी क़ाइम मक़ामीकी हालतमें, और राय रायां महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरकी अपनी और उनकी औलाद वग़ैरहकी तरफ़से, जब कि जेनरल सर जॉन माल्कमको पूरे इख्तियारात मोस्ट नोबल् फ्रान्सिस मार्किस ऑव हेस्टिंग्ज़, के० जी० से मिले थे, जो हिज़ ब्रिटेनिक मैजेस्टीकी ऑनरेबल् प्रिवी कौन्सिलके मेम्बर थे, और जिनको ऑनरेबल् ईस्ट इण्डिया कंपनीने हिन्दुस्तानकी हुकूमतकी दुरुस्तीके लिये मुक़र्रर फ़र्माया था.

शर्त अव्वल – दोस्ती, इत्तिफ़ाक़ और ख़ैरख्वाही हमेशहको गवर्मेंट अंग्रेज़ी और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुर और उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम और जारी रहेगी, और दोस्त व दुश्मन दोनों फ़रीक़के आपसमें एकसे समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी – सर्कार अंग्रेज़ी वादा फ़र्माती है, कि वह राज और मुल्क डूंगरपुर की हिफ़ाज़त करेगी.

शर्त तीसरी – महारावल और उसके वारिस और जानशीन हमेशह अंग्रेज़ी सर्कारके साथ इताअ़त और इत्तिफ़ाक़ रक्खेंगे, उसकी हुकूमत और बुज़ुर्गीका इक़ार करेंगे, और आगेको किसी ग़ैर रईस या रियासतसे मिलावट न रक्खेंगे.

शर्त चौथी – महारावल और उसके वारिस व जानशीन अपने राज और मुल्कके पूरे हाकिम रहेंगे, और सर्कार अंग्रेज़ीका दीवानी व फ़ौज्दारी इन्तिज़ाम वहां दाख़िल न होगा.

शर्त पांचवीं – डूंगरपुरके मुआमले सर्कार अंग्रेज़ीकी सलाहसे तै पायेंगे, और तमाम कामोंमें सर्कार भी महारावलकी मर्ज़ीका लिहाज़ रक्खेगी.

शर्त छठी – महारावल और उसके वारिस और जानशीन किसी ग़ैर रईस या रियासतके साथ सर्कार अंग्रेज़ीकी मंज़ूरी बग़ैर इत्तिफ़ाक़ या दोस्ती न करेंगे, लेकिन् उनकी दोस्ताना लिखा पढ़ी अपने दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

शर्त सातवीं - महारावल और उनके वारिस और जानशीन किसीपर ज़बर्दस्ती न करेंगे, और अगर इत्तिफ़ाक़से किसीके साथ तक्रार पैदा होगी, तो उसका फ़ैसलह सर्कार अंग्रेज़ीकी सर्पंचीमें सुपुर्द होगा.

शर्त आठवीं - महारावल और उनके वारिस व जानशीन वादह करते हैं, कि जो वाजिबी ख़िराज रियासत धार या किसी औरका, जिसक़द्र अबतक देनेके लाइक़ होगा, वह अंग्रेज़ी सर्कारको क़िस्तबन्दी (खन्दी) से अदा किया जायेगा, और क़िस्तें सर्कार अंग्रेज़ी रियासत डूंगरपुरकी हैसियतके मुवाफ़िक़ मुक़र्रर फ़र्मावेगी, याने जितनी रियासतमें गुंजाइश होगी, उस क़द्र तादाद क़ाइम कीजायेगी.

शर्त नवीं - महारावल और उनके वारिस व जानशीन वादह करते हैं, कि वह अपनी हिफ़ाज़तके एवज़में सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज अदा करेंगे, जितना ख़िराज रियासतकी हैसियतसे सर्कार मुक़र्रर फ़र्मायेगी, वह देंगे; लेकिन् किसी हालतमें यह ख़िराज रियासतकी आमदनीपर छः आने फ़ी रुपयेसे ज़ियादह न होगा.

शर्त दसवीं - महारावल, उनके वारिस और जानशीन वादह करते हैं, कि उनके पास जितनी फ़ौज होगी, वह ज़रूरतके वक्त मांगनेपर सर्कार अंग्रेज़ीको हवाले करेंगे.

शर्त ग्यारहवीं - महारावल, उनके वारिस और जानशीन इक़ार करते हैं, कि वह कुल अरब और मकरानी और सिन्धी सिपाहको बर तरफ़ करके मुल्की आदमियोंके सिवा किसी ग़ैरको फ़ौजमें भरती न करेंगे.

शर्त बारहवीं - अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह महारावलके किसी सर्कश या फ़सादी रिश्तहदारको मदद न देगी, बल्कि महारावलको ऐसा सहारा देगी, कि सर्कश उनका फ़र्मांबर्दार होजावे.

शर्त तेरहवीं - महारावल इस अह्दनामहकी नवीं शर्तमें वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको ख़िराज दिया करेंगे, बस इसके इत्मीनानके लिये इक़ार करते हैं, कि अंग्रेज़ी सर्कार जिसे ख़िराज लेनेपर मुक़र्रर करेगी, उसको देंगे; और वक्तपर अदा न होनेकी हालतमें वादह करते हैं, कि अंग्रेज़ी सर्कार अपनी तरफ़से किसी मोतमदको मुक़र्रर करे, जो शहर डूंगरपुरकी आमदनी चुंगी वग़ैरहसे बाक़ियात वुसूल करे.

यह तेरह शर्तोंका अह्दनामह आजकी तारीख़ कप्तान जे० कॉलफ़ील्डकी मारिफ़त ब्रिगेडिअर जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वग़ैरहके हुक्मसे, जो ऑनरेबल् ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से मुख़्तार थे, और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरकी मारिफ़त, जो अपनी और अपने वारिस व जानशीनोंकी तरफ़से ज़ी इख़्तियार थे, तै हुआ. कप्तान कॉलफ़ील्ड वादह करते हैं, कि इस

अह्दनामेकी एक नक़्ल मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरलकी तस्दीक़ कीहुई, महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरको दो महीनेके अर्सेमें दीजायेगी, और जब नक़्ल मिल जायेगी, तो यह अह्दनामह, जो कप्तान कॉलफ़ील्डने ब्रिगेडिअर जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० व के० एल्० एस० वग़ैरहके हुक्मसे तय्यार किया, वापस दिया जायेगा- फ़क़त.

रावल साहिबने इस अह्दनामहपर अक़्लकी दुरुस्ती और होश व हवासकी बिह्तरीकी हालतमें अपनी रज़ामन्दी और खुशीसे मुहर और दस्तख़त किये, उनकी मुहर और दस्तख़त गवाहके तौर समझे जायेंगे.

मक़ाम डूंगरपुर ता० ११ डिसेम्बर सन् १८१८ ई०, मुताबिक़ बारहवीं सफ़र सन् १२३४ हिज्री, और मुताबिक़ अगहन सुदी १४ संवत् १८७५ विक्रमी.

दस्तख़त - जे० कॉलफ़ील्ड. [बड़ी मुहर.]

दस्तख़त - जशवन्तसिंह;
देसी हर्फ़ोंमें.

[मुहर ऑनरेबल कंपनीकी.]

दस्तख़त - हेस्टिंग्ज़.
दस्तख़त - जी० डाउड्ज़वेल.

[छोटीमुहर गवर्नर जेनरल की.]

दस्तख़त - जे० स्टुअर्ट.
दस्तख़त - जे० ऐडम.

हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरलने इज्लासमें आजकी तारीख़ तस्दीक़ किया, १३ फ़ेब्रुअरी सन् १८१९ ई०.

दस्तख़त - सी० टी० मेट्कॉफ़,
सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द.

अह्दनामह नम्बर ११.

सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरके दर्मियान -

इस सबबसे कि पहिले अह्दनामेकी आठवीं शर्तमें, जो सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरके दर्मियान अगहन सुदी १४ संवत् १८७५

मुताबिक् ११ डिसेम्बर सन् १८१८ ई० को क़रार पाया, रावलने शर्त की है, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको उसका और धार वग़ैरह रियासतका बाक़ी ख़िराज, जिस क़द्र तारीख़ अह्दनामह तक रहा होगा, सालाना क़िस्त वन्दी (खंदी) से देंगे; और क़िस्तें सर्कार अंग्रेज़ी मुनासिब तौरपर मुक़र्रर फ़र्मावेगी. सर्कार अंग्रेज़ीने रियासतकी तंग हालत और रावलकी कम आमदनीके सबब मुबलिग़ पैंतीस हज़ार रुपया सालिमशाही, जो मुल्कके साल भरके महसूलके बराबर है, आठवीं शर्तमें बयान कीहुई तमाम बाक़ियातके एवज़ मंजूर किया; इस वास्ते महारावल इस तहरीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको ज़िक्र किया हुआ रुपया नीचे लिखी हुई क़िस्तोंके मुवाफ़िक़ अदा करेंगे :-

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७६ विक्रमी मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२० ई०
रु० १५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक् एप्रिल सन् १८२० ई०
रु० १५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२१ ई०
रु० २५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक् एप्रिल सन् १८२१ ई०
रु० २५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२२ ई०
रु० ३०००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक् एप्रिल सन् १८२२ ई०
रु० ३०००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२३ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८० मुताबिक् एप्रिल सन् १८२३ ई०
रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८८० मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२४ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८१ मुताबिक् एप्रिल सन् १८२४ ई०
रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८८१ मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२५ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८२ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२५ ई०
रु० ३५००

जो कि उक्त अह्दनामेकी नवीं शर्तमें महारावल वादह करते हैं, कि वह सर्कार अंग्रेज़ीको हिफ़ाज़तके एवज़ मुल्ककी हैसियतके मुवाफ़िक़ ख़िराज देंगे, लेकिन् वह आमदनी मुल्कपर छः आने फ़ी रुपयेसे ज़ियादह न होगा; और जो कि सर्कारकी ऐन दिली ख़्वाहिश है, कि रावलकी रियासत जल्द बिह्तर और दुरुस्त हो, इस वास्ते सर्कारने तज्वीज़ की है, कि रुपया अदा करनेकी तादाद बावत सन् १८१९ ई० व सन् १८२० व सन् १८२१ ई० के क़रार पावे. महारावल इक्रार करते हैं, कि वह नीचे लिखी हुई तादाद बयान किये हुए सनोंकी बावत अदा किया करेंगे.

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७६ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२० ई०
रु० ८५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२० ई०
रु० ८५००

कुल बावत सन् १८१९ ई० रु० १७०००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२१ ई०
रु० १००००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२१ ई०
रु० १००००

कुल बावत सन् १८२० ई० रु० २००००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२२ ई०
रु० १२५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२२ ई०
रु० १२५००

कुल बावत सन् १८२१ ई० रु० २५०००

यह बन्दोबस्त सिर्फ़ तीन वर्षके वास्ते है, उसकी मीआद गुज़र जानेपर सर्कार अंग्रेज़ी नवीं शर्तके मुवाफ़िक़ ऐसा बन्दोबस्त ख़िराजका फ़र्मावेगी, जैसा उसके नज़्दीक ईमान्दारीसे ठीक मालूम होगा, और मुल्ककी हैसियतसे दोनों तरफ़की बिह्तरीका बाइस होगा.

यह अह्दनामह सोमवाड़ा मक़ामपर मारिफ़त कप्तान ए० मॅक्डोनल्डके, जो जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वग़ैरहके हुक्मसे सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से कारबन्द थे, और मारिफ़त तख़्ता गामोडी दीवान डूंगरपुरके,

जो महारावल श्री जशवन्तसिंहकी तरफ़से मुख़्तार था, तारीख़ २९ जैन्युअरी सन् १८२० ई० मुताबिक़ माघ सुदी १५ संवत् १८७६.

रावलकी मुहर और दस्तख़त.

दस्तख़त - ए० मेक्डोनल्ड,

अव्वल असिस्टेंट, सर० जे० मालकम साहिब.

—⁕—

अह्दनामह नम्बर १२.

दस्तख़त - रावल जशवन्तसिंह.

क़ौलनामह महारावल जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुर और कप्तान अलिग्ज़ेन्डर मेक्डोनल्डके दर्मियान, जो ऑनरेबूल कंपनीकी तरफ़से मुक़र्रर थे.

सात सौ रुपये माहवारी, जिसके आठ हज़ार चार सौ सालानह होते हैं, बावत तन्ख़्वाह सवार व पैदलोंके, जो मेरे हमराह रहेंगे, मैं सर्कारको मुक़र्रर क़िस्तोंसे दिया करूंगा; इसमें कुछ हीला और उज़्र न करूंगा. यह रुपया पहिली जैन्युअरी सन् १८२४ ई० से अदा होगा, इसमें कुछ फ़र्क़ न पड़ेगा, इसलिये यह तहरीर अपनी रज़ामन्दी और ख़ुशीसे लिख दी.

ता० १३ जैन्युअरी सन् १८२४ ई०, मुताबिक़ पौष सुदी ११ संवत् १८८० विक्रमी.

—⁕—

अह्दनामह नम्बर १३.

तर्जमह क़ौलनामह दर्मियान लींबरवाड़ोके भीलों और ऑनरेब्ल कम्पनीके, जो मारिफ़त मेजर हमिल्टनके हुआ था, जो कप्तान मेक्डोनल्डकी तरफ़से ज़ी इख़्तियार थे. ता० १२ मई सन् १८२५ ई०.

१- हम अपने कमान और तीर वगैरह हथियार देदेंगे.

२- हमने जिस क़द्र लूट अगले फ़सादमें की होगी, उसका सब एवज़ देंगे.

३- आगेको हम शहरों, गांवों और रास्तोंपर लूटमार न करेंगे.

४- हम किसी चोर, लुटेरे या गिरासिया ठाकुरों या सर्कार अंग्रेज़ीके दुश्मनको अपने गांवमें पनाह न देंगे, चाहे वह हमारे मुल्कके या किसी दूसरी जगहके हों.

५- हम कम्पनीके हुक्मकी तामील किया करेंगे, और जब हुक्म होगा, हाज़िर हुआ करेंगे.

६- हम रावल और ठाकुरोंके गांवोंसे सिवा अपने क़दीमी और वाजिबी हक़के कुछ न लेंगे.

७- हम रावल डूंगरपुरका सालानह ख़िराज अदा करनेमें इन्कार न करेंगे.

८- अगर कोई कम्पनीकी रिआया हमारे गांवमें आकर रहे, तो हम उसकी हिफ़ाज़त करेंगे.

अगर हम ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ अमल न करें, तो सर्कार अंग्रेज़ीके क़ुसूरवार समझे जायें.

दस्तख़त- वेनम सूरत और दूदा सूरत.

इसी क़िस्मका एक क़ौलनामह नीचे लिखे हुए आदमियोंके दस्तख़तसे तय्यार हुआः-

१- दस्तख़त आमरजी.	९- दस्तख़त नाथू कोटेर.	१७- दस्तख़त मन्ना डामर.
२- दस्तख़त डामर नाथा.	१०- दस्तख़त लालू.	१८- दस्तख़त लालू.
३- दस्तख़त पीथा डामर.	११- दस्तख़त राजिया.	१९- दस्तख़त ताजा.
४- दस्तख़त सलिया डामर.	१२- दस्तख़त मोगा.	२०- दस्तख़त जीतू
५- दस्तख़त मन्ना.	१३- दस्तख़त कन्हैया.	२१- दस्तख़त भीडू.
६- दस्तख़त कोरजी.	१४- दस्तख़त लालजी.	२२- दस्तख़त थानो कोटेर.
७- दस्तख़त शवजी.	१५- दस्तख़त तजना.	
८- दस्तख़त मनिया.	१६- दस्तख़त मनिया.	

इसी क़िस्मका क़ौलनामह सिमरवाड़ो, देवल और नांदूके भीलोंने भी दस्तख़तसे मन्जूर किया.

दस्तख़त थाजा.	दस्तख़त गूदड़ा.	दस्तख़त हीरा.	दस्तख़त सुकजी.
दस्तख़त सामजी.	दस्तख़त मग्गा.	दस्तख़त कान्हजी.	दस्तख़त धर्मा.
दस्तख़त रंगा.			

अहदनामह नम्बर १४.

क़ौलनामह, जो जशवन्तसिंह रावल डूंगरपुर और ऑनरेब्ल कम्पनीके दर्मियान, कप्तान मेकडोनल्डकी मारिफ़त मक़ाम नीमचमें ता० २ मई सन् १८२५ ई० को ते पाया, उसका तर्जमह.

१ - सर्कार अंग्रेज़ी जो कोई दीवान मुक़र्रर फ़र्मायेगी, मैं उसे मन्जूर करूंगा; सब काम उसके सुपुर्द करूंगा, और किसी तरह उसमें दख़्ल न दूंगा.

२ - जो कुछ सर्कार अंग्रेज़ी मेरी पर्वरिशके वास्ते मुक़र्रर फ़र्मावेगी, उसमें उज़्र न होगा, और जो मक़ाम राज डूंगरपुरमें मेरे रहनेको तज्वीज़ करेगी, वहां रहूंगा.

३ - अक्सर फ़साद मकारोंकी सलाहसे मेरे मुल्कमें हुए, इसलिये मैं लिख देता हूं, कि आगेको हर्गिज़ उनका कहना न मानूंगा, और न खुद फ़साद करूंगा; अगर मैं ऐसा करूं, तो जो सज़ा सर्कार अंग्रेज़ी तज्वीज़ फ़र्मावे, वह मुझे मन्जूर होगी.

अह्दनामह नम्बर १५.

सर्कार अंग्रेज़ी और श्री मान् उदयसिंह महारावल डूंगरपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके बीचका अह्दनामह, जो एक तरफ़ लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल अलिग्ज़ेन्डर रॉस इलियट हचिन्सन, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ने व हुक्म लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरलके किया, जिनको पूरा इख़्तियार राइट ऑनरेबल सर जॉन लेअर्ड मेयर लॉरेन्स, बैरोनेट्, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानसे मिला था, और महारावल उदयसिंहने खुद अपनी तरफ़से किया.

पहिली शर्त - कोई आदमी अंग्रेज़ी या किसी दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़ेमें बड़ा जुर्म करे, और डूंगरपुरकी राज्य सीमामें पनाह लेना चाहे, तो डूंगरपुरकी सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और दस्तूरके मुताबिक़ उसके मांगेजाने पर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

दूसरी शर्त - कोई आदमी डूंगरपुरके राज्यका बाशिन्दह वहांके राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी मुल्कमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम डूंगरपुरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ सुपुर्द करदेवेगी.

तीसरी शर्त - कोई आदमी, जो डूंगरपुरके राज्यकी रअ़य्यत न हो, और डूंगरपुरके राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमेकी रूवकारी सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अ़दालतमें होगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसला उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होता है, जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक़्पर डूंगरपुरकी मुल्की निगहबानी रहे.

चौथी शर्त - किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो बड़ा मुज्रिम

ठहरा हो, देदेनेके लिये पावन्द नहीं है, जब तक कि दस्तूरके मुताबिक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाकेमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर जैसा कि उस इलाकेके क़ानूनके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पायाजावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा, और वह मुज्रिम क़रार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

पांचवीं शर्त – नीचे लिखे हुए काम बड़े जुर्म समझे जावेंगेः–

१ – खून, २ – खून करनेकी कोशिश, ३ – वह्शियाना क़त्ल, ४ – ठगी, ५– ज़हर देना, ६ –सख्तगीरी (ज़बर्दस्ती व्यभिचार), ७– ज़ियादह ज़ख्मी करना, ८– लड़का बाला चुरा लेजाना, ९ – औरतोंका बेचना, १० – डकैती, ११ – लूट, १२–संध (नक़्ब) लगाना, १३ –चौपाये चुराना, १४–मकान जलादेना, १५ –जालसाज़ी करना, १६– झूठा सिक्कह चलाना, १७ – धोखा देकर जुर्म करना, १८– माल अस्बाब चुरालेना, १९– ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्ग़लाना (बहकाना).

छठी शर्त – ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह उसी सर्कारको देना पड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बातें कीजावें.

सातवीं शर्त– ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक्त तक बरक़रार रहेगा, जब तक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक उसके तब्दील करनेकी ख्वाहिश दूसरेको ज़ाहिर न करे.

आठवीं शर्त – इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो कि दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्खिलाफ़ हो.

मक़ाम डूंगरपुर, तारीख़ ७ मार्च सन् १८६९ ई०.

(द०) ए० आर० ई० हचिन्सन, लेफ्टिनेन्ट कर्नेल,
क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट, मेवाड़.

(द०) मेओ.

(द०) महारावल, डूंगरपुर.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने तारीख़ २१ एप्रिल सन् १८६९ ईसवीको मक़ाम शिमलेपर की.

(द०) डब्ल्यु० एस० सेटन्कार,
सेक्रेटरी, गवर्मेन्ट इन्डिया, फ़ॉरेन डिपार्टमेन्ट.

बांसवाड़ाकी तवारीख़.

जुग्राफ़ियह.

यह रियासत राजपूतानहकी छोटी रियासतोंमेंसे है, और उसकी दक्षिणी सीमा पर वाके है, जिसके उत्तर और पश्चिमोत्तरमें डूंगरपुर व मेवाड़; पूर्व और पूर्वोत्तरमें प्रतापगढ़; दक्षिण तरफ़ मध्य प्रदेशकी एजेन्सीकी छोटी छोटी रियासतें; और पश्चिम तरफ़ रेवा कांठाका इलाक़ह है. इसका फैलाव २३° १०′ से २३° ४८′ उत्तर अक्षांश तक और ७४° २′ से ७४° ४१′ पूर्व देशान्तर तकहै; और लम्बाई उत्तरसे दक्षिणको ४५ मील, और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिमको ३३ मील है. रक़बह १४०० या १५०० वर्ग मील, सन् १८८१ की मर्दुमशुमारीके मुवाफ़िक़ आबादी १५२०४५ और ख़ालिसेकी सालानह आमदनी डॉक्टर हंटरके गज़ेटियरके अनुसार रु० २८०००० है, जिसमेंसे ५०००० रुपया सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज वग़ैरहका दिया जाता है.

बांसवाड़ेका पश्चिमी भाग, याने राजधानी और माही नदीके बीचकी ज़मीन, साफ़ व सेराब होनेके सबब उपजाऊ (ज़रख़ेज़) है; ताड़ और महुआके दरख़्त कस्रतसे हैं. इस देशके चारों तरफ़ छोटी छोटी पहाड़ियां जंगलसे ढकी हुई हैं; उत्तरकी तरफ़ पहाड़ियां कुछ कम हैं, लेकिन् बड़े बड़े दरख़्तोंसे जंगल शोभायमान है, और यहीं भीलोंकी पालें हैं. ये लोग हमवार ज़मीनके जंगल काटकर खेती करते हैं, लेकिन् पानीकी कमीसे खेती बन्द और बर्बादी होजाती है. मदारिया और जगमेर दो बड़ी पहाड़ियां हैं- पहिली राजधानीसे डेढ़ कोसके फ़ासिलेपर है, जिसमें एक पवित्र झरना बहता है, और बहुतसे लोग उसकी पूजा करनेको जाते हैं; दूसरी- जगमेर, राजधानीसे थोड़ी दूर उत्तर तरफ़ वाके है, जहांपर जगमालने बांसवाड़ा आबाद होनेके पहिले आश्रय लेकर कोट तथा गढ़ बनवाया था, और जिसके खंडहर अब तक मौजूद हैं. पहाड़ियोंपर ५० फ़ुट तक ऊंचे दरख़्त होते हैं. सर्दीके मौसममें दरख़्तोंकी सब्ज़ी और पहाड़ियोंसे निकलकर वृक्षोंके समूहमें बहते हुए पानी व नालोंकी रवानी तथा तरह तरह के फूल व घाससे देशमें बड़ी रौनक़ दिखाई देती है. कुओंमें ४० फ़ुट नीचे पानी निकलता है. यहांपर कोई पक्की सड़क नहीं है, पर मामूली रास्तोंसे कई महीनों तक गाड़ी आतीजाती है, वर्सातके मौसममें कीचड़के सबब रास्तह बन्द होजाता है, नदी नाले हाथीपर बैठकर पार उतरे जाते हैं; माही नदीके उतारके मक़ामोंपर बेड़े भी रहते हैं, लेकिन् पानीकी चढ़ाईके वक्त उनसे कुछ काम नहीं निकल सक्ता.

बांसवाड़ेकी अक्सर ज़मीन उपजाऊ है, परन्तु पहाड़ियोंके बीचकी धरती सख़्त है. जंगलमें सागवान, शीशम, लादर, गोमर, हल्दू वग़ैरह बड़े बड़े दरख़्त पैदा होते हैं. रियासतके उत्तरमें छोटे छोटे दरख़्तोंका गुंजान जंगल है. तलवाड़ा, अवलपुर और बीचमें ऐसे पत्थरकी छोटी छोटी खानें भी हैं, जो घर बनानेके काम आता है; लोहा कहीं कहीं निकलता है; रियासतके पश्चिमोत्तर ख़ासकर लोहारियामें लोहा निकाला जाता था, लेकिन् अब दो वर्षसे खान बन्द होगई हैं; यहां पहिले सैकड़ों मकान थे, अब केवल २० रहगये हैं; मोतिया अंधे बेड़ामें लोहेकी एक छोटी खान है.

नदी और झील.

इस रियासतकी मुख्य नदी माही है, जो रतलामसे आती और उत्तर पूर्व होकर पश्चिमकी तरफ़ बहती हुई दक्षिणको जाकर बांसवाड़ा, मेवाड़ और डूंगरपुरकी सीमा बनती है. इस नदीमें पानी कम, लेकिन् बारहों महीने रहता है, और वर्सातमें ज़ियादह होजाता है; इसके करारे ४० से ५० फ़ुट तक ऊंचे हैं, जिनपर बड़े बड़े दरख़्त बहुत हैं. बांसवाड़ेमें माहीकी मददगार दो छोटी नदियां भनदन और रायव हैं, जो पूर्वसे आकर मिली हैं; इनमें बारहों महीने पानी नहीं रहता, और इन दोनोंके सिवा तीसरी चाप नदी राजधानीके पास माहीमें मिली है.

बड़ी झील बांसवाड़ेमें कोई नहीं है, मुख्य बाई नामी एक झील बनवाई हुई राजधानीसे पूर्वको एक कोसके फ़ासिलेपर है, जिसकी पालपर महारावलने महल बनवाये हैं; इसके सिवा कई गांवोंमें तालाव भी हैं. आबो हवा और वर्सातका कोई प्रमाण नहीं है, लेकिन् बांसवाड़ेके अस्पतालके थर्मामेटरमें गर्मीके दिनोंमें ९२ से १००, वर्सातमें ८० से ८३ और सर्दीमें ६५ से ७० डिगरी तक पारा पायागया है.

बाला, दाद और फोड़े फुन्सीकी बीमारियां बांसवाड़ेमें बहुत होती हैं, और ज्वर भी बहुत फैलता हैं, लेकिन् सर्दीके दिनोंमें और मौसमोंकी बनिस्बत ज़ियादह होता है.

इस देशकी ख़ास पैदावार मक्की, मूंग, उड़द, गेहूं, जव, चना, तिल, चावल, कोदरा, और सांठा (गन्ना) हैं; किसी क़द्र अफ़ीम भी बोई जाती है.

डूंगरपुरके मुवाफ़िक़ यहां भी तीन तरहके गांव हैं— ख़ालिसह, जागीर और धर्म संबन्धी. ख़ालिसेका हासिल कामदारोंके ज़रीए़से जमा कियाजाता है, और ज़नानह व जेब ख़र्चका हासिल ख़ास कामदारोंसे वुसूल होता है; हर एक गांवकी तरफ़से पटेल रहता है, जो कामदारोंसे हिसाब और खेतीका बन्दोबस्त करता है; पहिले हर एक

गांव या कई गांवों पीछे रियासतकी तरफ़से हासिल वुसूल करनेके लिये गामेती रहता था, लेकिन् अब गांवोंका हासिल थानेदारोंकी मारिफ़त जमा होता है. हासिल लेनेके लिये कोई क़ाइदह मुक़र्रर नहीं है; धरती न नापी जाती है, और न मालवेके मुवाफ़िक़ फ़ी बीघेके हिसाबसे लगान लियाजाता है. हासिलके सिवा ज़ुरूरतके वक़् भी किसान लोगोंसे रुपया वुसूल कियाजाता है; एक महारावलके मरने और दूसरेकी मस्नद नशीनीके वक़्, और महारावलकी बेटी या ख़ास उनकी शादीके समय, जो कुछ ख़र्च पड़ता है, किसानोंसे वुसूल होता है; कुंवर (१), लकड़ी घोड़ा चराई वग़ैरह और भी कई लागतें लीजाती हैं. ब्राह्मणोंसे दर्या बराड़, व्यापारी और दूसरे लोगोंसे कर यानी लगान, और चारण तथा भाटोंसे घासका गाड़ी बराड़ लिया जाता है.

इस रियासतमें राजपूत व भील जागीरदार हैं, जो ख़िराज देते हैं; सर्दारोंको लड़ाई झगड़ेके वक़् जमइयत समेत मददके लिये रईसके साथ रहना पड़ता है, और अगर किसी जगहकी चढ़ाईका काम किसी सर्दारके सुपुर्द हो, तो वे लोग अपनी जमइयत उस जगह भेजदेते हैं; सब सर्दार अपने अपने ठिकानोंके ख़ुदमुख़्तार हैं, अगर रईस उनकी जागीरमें दस्तअन्दाज़ी करे, तो मुक़ाबलह करनेको तय्यार होते हैं. देशका बड़ा हिस्सह भीलोंसे पुर है; बांसवाड़ेमें ब्राह्मण और राजपूतोंके सिवा दूसरी १५ छोटी ज़ातें हैं, ख़ास राजधानी (बांसवाड़ा) में ६१९७ आदमियोंकी वस्ती है. भीलोंके ठिकानोंमें बांसवाड़ेका दख़्ल बहुत कम रहता है, उनकी पालें भी बहुत हैं, गमेती (गामेती) लोग वक़् मुक़र्ररहपर ख़िराज दे देते हैं.

इन्तिज़ाम.

राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ यहां अदालतोंका कुछ प्रबन्ध नहीं है; राजधानीमें दीवानी, फ़ौज्दारी अदालतें मौजूद हैं; परन्तु हाकिमोंके किये हुए फ़ैसले महारावलके पास भेजेजाते हैं. दीवानी मुक़द्दमे पंचायतसे फ़ैसल होते हैं, और फ़ौज्दारी मुक़द्दमोंमें मुद्दईकी तसल्ली कीजाती है. ठाकुर लोग भी अपने अधिकारसे ठिकानोंमें दीवानी, फ़ौज्दारी रखते हैं. रियासतमें कई जगह थाने हैं, जिनमें एक थानेदार चन्द सवार व पैदलों समेत रहता है; थानेदारके इख़्तियारात थोड़े हैं. शहरमें एक कोतवाल और उसके मातह्त कुछ अमला है; उसको इख़्तियार है, कि बद मआश लोगोंको पकड़कर हाकिमोंको इत्तिला देवे. बांसवाड़ेमें जेलख़ानह नहीं

(१) कुंवर पदेकी लागत,

है, शहरकोटकी कोठड़ियोंमें बड़े फाटकोंके पास मुजिम लोग क़ैद कियेजाते हैं, पर क़ैदकी सज़ा कम होती है; महारावल फांसी देनेका भी इख़्तियार रखता है.

तालीम यहां बिल्कुल कम है, सिर्फ़ राजधानीमें एक छोटीसी पाठशाला है.

रियासत में सड़कें नहीं हैं, अस्बाब बैलोंपर लादा जाता है. पश्चिमी हिस्सेमें एक गांवसे दूसरे गांवको घास, लकड़ी वगैरह सब चीज़ें गाड़ीपर आती जाती हैं, बाक़ी और जगहोंमें गाड़ीका नाम भी कोई नहीं जानता. बांसवाड़ेमें तिजारती चीज़ोंकी आमद रफ़्तका कोई मश्हूर रास्तह नहीं है, रतलाम और मालवासे कुशलगढ़के रास्ते होकर माल आता है, और प्रतापगढ़से घाटोल होकर डूंगरपुरके उत्तर तरफ़ आता है. एक सड़क प्रतापगढ़से अहमदाबाद होकर गुजरातको जाती है. दूसरा रास्तह राजधानीसे डूंगरपुरको जालोदसे सीधा गया है. राजधानीमें एक डाकख़ानह कई वर्षसे नियत कियागया है.

ज़िला, ख़ास क़स्बे और मश्हूर मक़ामात.

इस रियासतकी राजधानी बांसवाड़ा, शहरपनाहसे घिरी हुई है, जिसमें ८००० से ज़ियादह आदमी आबाद हैं; दक्षिणकी तरफ़का शहरकोट गिरा हुआ है; और जिन पहाड़ियोंपर शहरपनाह बनी हुई थी, वे अब जंगलसे ढकरही हैं. शहरसे दक्षिणकी तरफ़ एक पहाड़ीपर महल बना हुआ है, जिसका ऊंचा कोट और तीन फाटक हैं. यह मकान पुराने ज़मानेकी इमारतोंके तर्ज़से मिलता हुआ है; इसके सिवा हर एक रईसने जुदे जुदे मकानात बनवाये हैं. मौजूद महारावलने भी कई इमारतें तय्यार कराई हैं, जिनमेंसे राजधानीके दक्षिणी तरफ़के दो मन्ज़िले महल 'शाही विलास' नामके उम्दह बने हुए हैं. पश्चिमकी तरफ़ ज़मीन हमवार है, कहीं कहीं खेती होती है, महुएके दरख़्त बहुत हैं. ताड़के दरख़्तोंके पीछे सघन जंगल है, उत्तर और पूर्वकी तरफ़ बाई ताल और पहाड़ियोंके बीचमें नदी शहरकी दीवारोंके नीचे बहती है, और मैदानमें दरख़्तोंके बीच छोटी छोटी कई झीलें देखनेमें आती हैं. शहरके पूर्व आध मीलपर नदीके पास एक बाग़में बांसवाड़ेके रईसोंकी छत्रियां हैं.

बांसवाड़ेके आठ हिस्से हैं, जो तप्पा कहलाते हैं, और राजधानीके हर तरफ़ रियासतकी सीमा तक चलेगये हैं:-

१ घाटी उतार	पश्चिम.	५ महीरवाड़ा	पूर्वमें माही पार.
२ लोहारिया	पश्चिमोत्तर.	६ पंचलवाड़ा	पूर्वमें माही पार.
३ चिमदा	उत्तर.	७ खांदूवाड़ा	दक्षिण.
४ भूंगड़ा	पूर्वोत्तर.	८ पथोग	दक्षिण पश्चिम.

१ घाटी उतार - यह हिस्सह तलवाड़ाके पास पहाड़ियोंकी घाटीके नामसे मश्हूर है; और इसकी सीमा उसी घाटीसे रियासतकी माही नदी तक है; इसमें नीचे लिखे ठिकाने हैं:-

गढ़ी, अर्थूणा, वांकड़ा, टकारा, मंडवा और तलवाड़ा; इनमें खेती करने वाले ब्राह्मण और पटैल रहते हैं; चावल, सांठा (गन्ना) और अफ़ीम यहां ख़ासकर ज़ियादह पैदा होती है. प्रतापपुर इस हिस्सेकी ख़ास जगह है, जिसमें पांच या छ:सौ घरोंकी बस्ती है.

गढ़ीमें भी प्रतापपुरके मुवाफ़िक़ मकान हैं, और उसके उत्तरमें चाप नदी है. अर्थूणामें ४०० घर हैं; इसके (१) पूर्वमें तीन चार कोसपर अमरावती नगरीके खंडहर और दक्षिणमें जैन मन्दिरके खंडहर वाक़े हैं. तलवाड़ामें ३०० या ४०० मकान हैं; इसके पास कितने ही टूटे फूटे पुराने मन्दिर पड़े हैं, जो सिद्धपुर पट्टनके राजा अम्बरीकके बनवाये हुए कहेजाते हैं; तलवाड़ा घाटी पहाड़ियोंमें ६ मीलके क़रीब लम्बी है, जिसमें पुराना तालाब और मन्दिरोंके टूटे फूटे निशानात पायेजाते हैं. घाटीके बीच वाले तालाबकी निस्बत मश्हूर है, कि युधिष्ठिरके भाई भीमने अपने बारह वर्षके बनवासके समयमें उसे बनवाया था.

२ लोहारिया - रमणविलास चाड़ियावासके पास रावलके बनवाये हुए महलसे बांसवाड़ेके पश्चिमोत्तर तीन चार मील माही नदी तक चलागया है. यहांकी धरती हलकी है; चावल अच्छे पैदा होते हैं. इस हिस्सेमें ख़ास ३ गांव घनोड़ा, मोलान और मेतवाल हैं, जिनमेंसे हर एकमें तीन सौ घरके क़रीब आबादी है.

३ चिमदा - बांसवाड़ेके उत्तरमें मेवाड़की सीमा माही नदी तक चलागया है; मक्की और सांठा यहां कस्रतसे होता है. घाटोड़ गांवमें ३०० - ४०० घर हैं; इस जगह एक कामदार हासिल वुसूल करनेको रहता है. इस हिस्सेमें ६ जागीरदारोंके ठिकाने हैं.

४ भूंगड़ा- बांसवाड़ेसे पूर्वोत्तर प्रतापगढ़की सीमा तक चलागया है, जहांसे मलिया और कुशलपुरके ठाकुर व सूंधलपुर और मऊड़ीखेड़ाके भील सर्दार आबाद हैं; भूंगड़ामें २०० घरकी बस्ती है.

५ महीरवाड़ा - यह हिस्सह माही नदीसे प्रतापगढ़ तक फैला हुआ है; इसमें भील रहते हैं, जिनमें महीर ज़ातके ज़ियादह हैं; और इसीसे यह हिस्सह महीरवाड़ा कहलाता है.

६ पंचलवाड़ा - माही नदीके पूर्वमें रतलामकी सर्हदसे जामिला है, जिसमें ख़ासकर भील ही आबाद हैं.

---

(१) हमको इस ग्रामके पुराने खंडहरोंके मन्दिरोंमें दो प्रशस्तियां विक्रमी ११३६ और ११६६ की मिली हैं, जिनमें पंवार राजाओंकी वंशावली और उनका संक्षेप हाल लिखा है; वे इस ज़िले (वागड़) का राज्य करते थे, जिससे पायाजाता है, किं सीसोदियोंसे पहिले पंवार राजा इस ज़िले पर हुकूमत करते थे; लेकिन् यह मालूम नहीं, कि वे खुद मुख्तार थे, या चित्तौड़के मातहत- (देखो शेष संग्रह नम्बर ६-७).

७ खांदूवाड़ा - वांसवाड़ेके दक्षिणमें रतलाम तक फैला हुआ है; चार गांवोंके सिवाय सबमें भील लोग रहते हैं. खांदू गांवमें क़रीबन् ७०० घरकी बस्ती है. यहांके जागीरदार वांसवाड़ेके अव्वल दरजहके सर्दारोंमेंसे हैं; गांवके दक्षिण तरफ़ नदीके किनारेपर महाराजके महल हैं.

८ पयोग- यह हिस्सह वांसवाड़ेसे दक्षिण पश्चिममें कुशलगढ़की सीमा तक फैला हुआ है. वरिया, अन्नजा, टचाजा, भूकिया ठिकानेवाले जागीरदार हैं. ननगांव, चीच, वागीदोरा, कालिञ्जा ख़ास गांव हैं; पहिले तीनमें पांच पांच सौ घरकी और दूसरोंमें तीन तीन सौ घरोंकी आवादी है. चावल, चना, गेहूं और मक्की इस हिस्सेमें ज़ियादह पैदा होते हैं.

मेले.

वांसवाड़ेमें एक मेला ऑक्टोवर महीनेमें १५ रोज़ तक रहता है, जिसमें आस पासके वनिये व्यापारी लोग आते हैं; और अमल, नारियल, छुहारे, बम्बईका सामान और अनाज व तम्वाकू वग़ैरह वेचते हैं; व्यापारियोंसे महसूल नहीं लियाजाता. इस मेलेमें व्यापारी और ख़रीदार वग़ैरह लोग २००० के क़रीव जमा होते हैं. दूसरा मेला गोतियो अंवो मक़ामपर होता है, जहां हर साल भील लोग सौदा करनेको आते हैं. इस मक़ामके लिये ऐसा भी मश्हूर है, कि यहांपर युधिष्ठिरने पनाह ली थी.

वांसवाड़ेमें दस्तकारीका काम नहीं होता; कपड़ा, नारियल, छुहारा, सुपारी, काली मिर्च, तम्वाकू और नमक वग़ैरह चीज़ें गुजरातसे आती हैं; लेकिन् ज़ियादह हिस्सह रतलामको जाता है.

तवारीख़.

इस रियासतका तवारीख़ी हाल वहुत ही कम मिलता है, कर्नेल टॉड और कप्तान येटको भी ज़ियादह कुछ नहीं मिला. हमने नैनसी महता और उदयपुरके सर्कारी पुराने काग़ज़ातसे चुनकर कुछ हाल एकट्ठा किया है. नैनसी महता लिखता है, कि चारण रुद्रदास भाणावत साइयां झूलाका पोता गांव जैतारणमें विक्रमी १७१९ चैत्र [हि० १०७२ शअ्वान = ई० १६६२ मार्च] में मिला, उसने मुझे वांसवाड़ेकी तवारीख़ इस तरह लिखवाई, कि वागड़के तीन हज़ार पांच सौ गांवोंमेंसे १७५० गांव वांसवाड़ेके क़ब्ज़ेमें रहे, जिसका ज़िक्र इस तरहपर है:-

डूंगरपुरका रावल उदयसिंह, जो विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२८] में चित्तौड़के महाराणा संग्रामसिंह (सांगा) अव्वलके साथ जाकर बयानाके पास बाबर बादशाहकी लड़ाईमें मारागया, उसके दो बेटे थे, बड़ा पृथ्वीराज और छोटा जगमाल; जब पृथ्वीराज डूंगरपुरकी गद्दीपर बैठा, तब जगमाल उसके बर्ख़िलाफ़ होकर देश बिगाड़ने लगा; रावल पृथ्वीराजने बड़ी जमइयत देकर चहुवान मेरा और रावत् पर्वतको भेजा; इन सर्दारोंने अच्छी लड़ाइयां करके जगमालको मुल्कसे निकालदिया. यह वापस डूंगरपुर आये, तो इनके साथियोंमेंसे किसीने जाकर रावल पृथ्वीराजसे कहा, कि जगमाल हमारे क़ाबूमें आगया था, सो वह ज़ुरूर गिरिफ़्तार होता, या माराजाता; परन्तु मेरा और पर्वतने जान बूझकर छोड़दिया. इस बातपर यक़ीन करके रावलने उन दोनों सर्दारोंसे कहलाया, कि तुम नमक हराम हो, हमारे देशसे निकल जाओ, जिससे वे नाराज़ होकर जगमालके पास चलेगये, और जगमाल अपनी ताक़तको बढ़ाकर मुल्कपर क़ब्ज़ह करने लगा; आख़िर हिम्मत हारकर पृथ्वीराजने सुलह चाही; तब यह फ़ैसलह हुआ, कि बागड़के तीन हज़ार पांच सौ गांव आधे पृथ्वीराज और आधे जगमालको बांट दियेजावें; इसी तरह फ़ैसलह होगया; पृथ्वीराज डूंगरपुरके, और जगमाल बांसवाड़ाके रावल कहलाये.

मिराति सिकन्दरीमें विक्रमी १५८८ [हि० ९३७ = ई० १५३१] में लिखा है, कि "बहादुरशाह गुजरातीने पृथ्वीराज और जगमालको यह मुल्क बांट दिया." मेवाड़की पोथियोंमें महाराणा रत्नसिंहका बागड़के दो हिस्से करवा देना लिखा है, और क़ियाससे भी मालूम होता है, कि महाराणाकी ज़बर्दस्त हिमायतके विना दो हिस्से होना ग़ैर मुम्किन् था, और महाराणाको भी इनकी ताक़तका कम करना मन्ज़ूर होगा. राजपूतानह गज़ेटियरमें बिशना भीलके नामसे बांसवाड़ेका आबाद होना क़िस्सहके तौर लिखा है, लेकिन् इसमें शक है.

रावल जगमाल बड़ा बहादुर था, वह एक अर्से तक ज़िन्दह रहा, जिसने चारों तरफ़ पैर फैलाकर अपने राजको बढ़ाया. उसका बेटा प्रतापसिंह था, जिसका नाम बड़वा भाटोंने कृष्णसिंह लिखदिया है; लेकिन् नैनसी महता, अक्बरनामह व तुज़क जहांगीरी वग़ैरहसे उसका नाम प्रतापसिंह साबित होता है. नैनसी महता अपनी किताबमें लिखता है, कि रावल प्रतापसिंहके कोई अस्ली बेटा नहीं था, और एक ख़वास (पद्मा बनियानी) के पेटका मानसिंह नाम लड़का था; चहुवान मानसिंह वग़ैरह सर्दारोंने उसीको बांसवाड़ेका मालिक बना दिया. यह रावल मानसिंह कहीं शादी करनेको गया था, और पीछेसे खांदूके भीलोंने नुक़्सान किया, थोड़ेसे राजपूतोंने बांसवाड़ेसे निकलकर खांदूपर छापा मारा, लेकिन् भीलोंने राजपूतोंके घोड़े

छीन लिये. जब रावल मानसिंह अपनी राजधानीमें आया, तो इस बे इज़्ज़तीका हाल सुनकर खांदूपर चढ़ा, सैकड़ों भीलोंको मारकर उनके सरगिरोहको गिरिफ्तार किया; जब वह क़ैदी भील रावल मानसिंहके साम्हने आया, तब उसने किसीकी तलवार छीनकर उससे रावलको मारडाला; चहुवान मानसिंहने उस भीलको भी मारा, और ये लोग बांसवाड़ेको वापस आये. राजधानीको ख़ाली देखकर चहुवान मानसिंह मुख़्तार बनगया. डूंगरपुरके रावल सैंसमल्ल (सहस्रमल्ल) ने मानसिंहको लिख भेजा, कि तुमको सीसोदियोंका राज नहीं मिल सक्ता, लेकिन् उसने कुछ ख़याल नहीं किया; तब वह बांसवाड़ेपर चढ़ा. मानसिंहने मुक़ाबलह किया, और सैंसमल्लको शिकस्त खाकर डूंगरपुर लौटना पड़ा. महाराणा प्रतापसिंह अव्वलने भी मानसिंहको निकालनेके लिये चार हज़ार आदमियोंकी जमइयत देकर रावत् रत्नसिंह कांधलोत चूंडावत और रावत् रायसिंह खंगारोत चूंडावतको भेजा, लेकिन् कुछ काम्याबी हासिल न हुई, और मानसिंहसे शिकस्त खाकर लौट आये. तब कुल वागड़के चहुवान सर्दारोंने मानसिंहसे कहा, कि तुमने बहुत कुछ ज़ियादती करली, चहुवान बांसवाड़ेके मुख़्तार नहीं होसक्ते, ख़ैरख़्वाह नौकर और मुसाहिब (भड़ किवाड़) ज़रूर हैं; इस लिये जगमालके पोतोंमेंसे किसीको रावल बनाना चाहिये.

तब मानसिंहने जगमालके पोते, प्रतापसिंहके भाई और कल्याणमल्लके बेटे उग्रसेनको गद्दीपर बिठाया, और आधा राज उसको देकर आधा अपने क़ब्ज़हमें रक्खा. इसपर भी उग्रसेनको वह अपना किया हुआ रईस समझकर हक़ीर जानता था. कुछ अर्से बाद राठोड़ सूरजमल्ल वग़ैरह राजपूतोंकी मददसे मानसिंहपर उग्रसेनने हमलह किया; मानसिंह भागगया, और बांसवाड़ा उग्रसेनके क़ब्ज़हमें आया. महाराणा प्रतापसिंह अव्वल भी उसके मददगार थे, इसलिये लाचार होकर चहुवान मानसिंह बादशाह अक्बरके पास पहुंचा; अक्बरने मिर्ज़ा शाहरुख़को बड़ी फ़ौज देकर मानसिंहके साथ उग्रसेनपर बिदा किया. इस फ़ौजने बांसवाड़ा छीन लिया; लेकिन् उग्रसेनकी मददपर महाराणा प्रतापसिंह अव्वल व रावल सैंसमल्ल और दूसरे भी कुल राजपूत होगये, जिससे उसने बादशाही मुल्क लूटना शुरू किया; मिर्ज़ा शाहरुख़ मालवेकी तरफ़ गया, और उग्रसेनने लौटकर बांसवाड़ेपर क़ब्ज़ह करलिया. कहते हैं कि इन लड़ाइयोंमें चार सौ आदमी मारेगये, जिनमें ज़ियादह मानसिंहके थे. मानसिंह भी भागकर बादशाही फ़ौजके शामिल होगया, और बांसवाड़ा लेनेकी कोशिशमें लगा रहा. बादशाही फ़ौज बुर्हानपुरमें पहुंची, तब उग्रसेनके राजपूत गांगा गौड़ने चहुवान मानसिंहको मारडाला, और उग्रसेन बादशाही इताअत क़बूल करके बे खटके बांसवाड़ेका राज करने लगा.

रावल उग्रसेनके बाद रावल उदयभान गद्दीपर बैठा, और उसके बाद रावल समरसी वहांका मालिक हुआ. यह रावल महाराणा जगत्सिंह अव्वलके बर्ख़िलाफ़ होकर साइरके कामदारोंको अपने इलाक़हसे निकालने बाद बादशाही नौकर बनना चाहता था, और देवलियाके रावत् हरीसिंहकी बहकावट और महाबतखांकी हिमायतका इन पर भी असर पहुंचा; महाराणा जगत्सिंह अव्वलने बड़ी फ़ौजके साथ अपने प्रधान कायस्थ भागचन्दको भेजा; उसने बांसवाड़ेपर घेरा डाला, और रावल समरसी भागगया. छः महीने तक वह प्रधान बांसवाड़ेपर घेरा डाले रहा; फिर देशदाण बदस्तूर जमाकर दस गांव जुर्मानेमें लेने बाद समरसीको पीछा बांसवाड़ेका मालिक बनाया. यह हाल बेड़वासकी बावड़ीकी प्रशस्ति और राज समुद्रकी प्रशस्तिके पांचवें सर्गके २७ व २८ वें श्लोकसे मज़्बूत होता है- (देखो पृष्ठ ३८१ और ५८९).

इनके बाद कुशलसिंह गद्दीपर बैठे, इन्होंने भी उदयपुरसे आज़ाद होनेकी कोशिश की, लेकिन् महाराणा राजसिंह अव्वलने सत्ताईस गांव डांगल ज़िलेके ज़ब्त करलिये, और रावल कुशलसिंहसे मुचल्कह लिखवा लिया, कि इन गांवोंसे बिल्कुल तअ़ल्लुक़ नहीं रक्खूंगा.

इनके बाद रावल अजबसिंह गद्दीपर बैठे; इन्होंने बादशाह आलमगीरके पास पहुंचकर बादशाही नौकरी इख़्तियार करली, और उसी ताक़तसे अपने बापके ज़मानेके २७ गांव, जो महाराणाकी ज़ब्तीमें थे, उनको अपने क़ब्ज़ेमें करलिया. महाराणा अमरसिंह दूसरेने बादशाहीमें अजबसिंहका क़ुसूर साबित करनेको कुशलसिंहका इक़ारनामह अपने वकीलोंकी मारिफ़त बादशाहके पास भेजदिया, जिसके जवाबमें वज़ीर असदख़ांने विक्रमी १७५९ [हि० १११३ = ई० १७०२] में एक काग़ज़ महारावल अजबसिंहके नाम लिख भेजा, जिसकी नक़्ल महाराणा दूसरे अमरसिंहके हालमें लिखीगई है- (देखो पृष्ठ ७४७).

इनके बाद रावल भीमसिंह गद्दीपर बैठे; इनका हाल कुछ नहीं मिला; मालूम होता है, कि यह थोड़ेही अर्सेतक बांसवाड़ेकी हुकूमतपर रहे. जब यह दुन्याको छोड़गये, तो उनके बेटे बिशनसिंह (विष्णुसिंह) गद्दीपर बैठे; इनका भी इरादह उदयपुरसे किनारह करनेका मालूम हुआ, तब महाराणा संग्रामसिंह दूसरेने पंचोली बिहारीदासको लिख भेजा, जो उस वक़्त रामपुरापर फ़ौज लेकर गया था, कि तुम वहांका काम करके लौटते हुए देवलिया, बांसवाड़ा और डूंगरपुरकी तरफ़ होते आना. बिहारीदास मए फ़ौजके उसी तरफ़ होकर आया, तब बांसवाड़ेके रावल बिशनसिंहको धमकाकर नज़ानेका रुक़ह लिखवाया, जिसकी नक़्ल यहां लिखीजाती है :-

रुक्केकी नक्ल.

श्रीरांम १

सीध श्री लीपतं राउल श्री वीसनसींघजी अप्रंच, पंचोली श्री वीहारीदासजी पधारया रामपुराथी अणी वाटे पधारा, जदी गोठरा रु० २५०००) देणा, वे ड़ीपरे पचीस हज़ार देणा, हाथी १ नीजर करणो, ढील करे नही

मतुं रावल श्री वीसनसीघजी उपर लीपुं ते सही, कोल मास १ नी मास १ ग्ऐ प्र देणा. सं० १७७४ आसोज वद १०.

वीगत रुपीआ

१०००० ड़ीपरे रुपीआ हज़ार दस तो मास १ में भरणा.

१५००० रुपीआ ड़ीपरे हज़ार पदरे श्री जी हज़ुर पगे लागे जदी अरज करे वगसांवणा.

फिर महारावल विशनसिंह महाराणाकी नौकरीमें आते जाते रहे, जब ईडरके महाराज अणन्दसिंहपर महाराणाने फ़ौज भेजी, तो रावल विशनसिंह नहीं गये. न जाने सर्कशीसे या इस सबबसे कि उस फ़ौजका अफ्सर भींडरका महाराज था; उस फ़ौजके शामिल न होनेपर कुछ अर्सेके बाद रावल विशनसिंहसे जुर्मानेका रुक्कह लिखाया गया, जिसकी नक़्ल नीचे लिखते हैं:-

रुक्केकी नक्ल.

॥ श्री ॥

लीपतं १ रु० ८५००१ रो वांसवालारो तीरी नकल,

सवत.

सीध श्री दीवांणजी आदेसातु, प्रत दुम्ने धाभ्र भाई नगजी, पचोली कांन्हजी अप्रंच ॥ वांसवालारा रावलजी म्रवके फौजम्हें न्हीं आया, जणी बाबत वेड परचरा रु० ८५००१ अपरे रुपीआ पच्यासी हज़ार कीधा, सो अेवारु पेहली भरणा, पंदी

न्ही रोकडा भरणा. सं १७८६ वेस्प वीद ८ स्ने रावलजी श्री वीसनसीघजी मतो सेंह आंणु, अगरसीघ लषतं.

इसके बाद रावल बिशनसिंहका भी देहान्त होगया, क्योंकि उदयपुरके पुराने दफ़्तरकी बहीमें विक्रमी १७८९ पौष शुक्ल २ [हि० ११४५ ता० १ रजब = ई० १७३२ ता० २० डिसेम्बर] को बांसवाड़ाके रावल उदयसिंहके तलवार बंधना लिखा है. इस हिसाबसे उक्त मितीके पहिले रावल बिशनसिंहका इन्तिकाल होगया था.

इनके बाद रावल उदयसिंह गद्दीपर बैठे, और उनके कोई औलाद न हुई, तब उदयसिंहके बाद उनके छोटे भाई पृथ्वीराज गद्दीपर बैठे.

इनके बाद विजयसिंह और उनके बाद उम्मेदसिंह, फिर भवानीसिंह और बहादुरसिंह, जिनके बाद लक्ष्मणसिंह, जो अब बांसवाड़ेके रावल हैं, रईस हुए.

इनमेंसे रावल विजयसिंहके वक़ विक्रमी १८५० [हि० १२०७ = ई० १७९३] में जब महाराणा भीमसिंह ईडर शादी करनेको गये, तो पीछे लौटते हुए डूंगरपुरसे फ़ौज ख़र्च लेकर बांसवाड़ेकी तरफ़ रवानह हुए; उस वक़्त रावल विजयसिंहने ठाकुर जोधसिंहको भेजकर महाराणाको तीन लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका देना क़बूल किया. इस बातसे महाराणा माही नदीके किनारेसे उदयपुरकी तरफ़ लौटगये.

उसके बाद महारावल उम्मेदसिंहने ब्रिटिश गवर्मेंटके साथ अह्दो पैमान किया. राजपूताना गज़ेटियर जिल्द १ के पृष्ठ १०५ में यहांका तवारीख़ी हाल इस तरहपर लिखा है :–

"जगमालसे छठी पुश्तमें समरसिंह था, जिसने प्रतापगढ़के रईसपर फ़त्ह पाई, और अपने मुल्ककी तरक़ी की. इसके बाद उसका पुत्र कुशलसिंह हुआ, जो भीलोंसे बारह वर्ष तक लड़ता रहा, और अपने इलाक़ेमें कुशलगढ़ वग़ैरह मश्हूर जगहोंकी बुन्याद डाली."

"ईसवी १७४७ [वि० १८०४ = हि० ११६०] में पृथ्वीसिंह गद्दीपर बैठा, जिसने बांसवाड़ेकी शहर पनाह बनवाई, सौंठ मक़ामको लूटा, और बांसवाड़ेके दक्षिण पूर्व चिलकारी स्थानको अपने क़ब्ज़हमें किया. आख़िर सदीमें यह सब देश या कुछ कमोबेश मरहटोंके क़ब्ज़हमें गया, जिन्होंने रईसोंसे खूब धन लिया, और उनके साथियोंने मन माना लूटा; मरहटोंसे जो कुछ बचरहा, उसे उन लोगोंके गिरोहने लूटलिया, जो किसीके हुक्ममें न थे, और जिन्होंने देशको दुःख सागरमें डबोदिया."

"ईसवी १८१२ [वि० १८६९ = हि० १२२७] में बांसवाड़ेके रईसने जुदी रियासत ठहराली, और सर्कार ब्रिटिशको ख़िराज देनेकी दर्ख़्वास्त की; पर शर्त यह थी, कि मरहटे देशसे निकाल दियेजावें; लेकिन् ईसवी १८१८ [वि० १८७५ = हि० १२३३] तक कोई संबंध ठीक नहीं रहा; इसी सालमें यह अ़हृद ठहरा, कि सर्कार ब्रिटिशकी हिफ़ाज़त और मददके सबब रावल, सर्कारकी मातह्ती करे, तो सर्कारकी सलाहके साथ रियासतका काम करेंगे; दूसरी रियासतसे सम्बन्ध न रक्खेंगे; ख़िराज सर्कारको देंगे; और ज़रूरतपर सिपाह भी देंगे. यह अ़हृद वकीलकी मारिफ़त हुआ था, जिसको रावलने नहीं माना. इसके बाद दूसरा अ़हृदनामह ईसवी १८१८ नोवेम्बर [वि० १८७५ कार्तिक = हि० १२३४ मुहर्रम्] में कियागया. इस अ़हृदनामहमें यह लिखागया, कि महारावल सर्कार अंग्रेज़ीको सब ख़िराज धार या दूसरी रियासतका अदा करे, और माल गुज़ारीका तीन आठवां हिस्सह हर साल दिया करे. सर्कार अंग्रेज़ी रावलके बिगड़े हुए भाई बेटोंको उसके आधीन करदेवे. पीछेके एक अ़हृदनामहमें सालानह ख़िराज पैंतीस हज़ार रुपया मुक़र्रर कियागया. उसके बाद फिर ज़रूरी ख़र्चके लिये रुपया बढ़ा दियागया."

महारावल लक्ष्मणसिंह.

विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४१] के बाद, जिसका ख़ास वक़्त कई बार दर्याफ़्त करनेपर भी नहीं मिला, गोद लिये जाकर मस्नद नशीन हुए. इनके गद्दी बैठनेपर खांदूके ठाकुरने अपने बेटेके गद्दी बैठनेके वास्ते दावा किया था, लेकिन् उसके मामूली ख़िराजमेंसे तेरह सौ रुपया सालानह कम होजानेपर वह चुप हो बैठा. महारावलकी कम उ़म्रमें कई साल तक मुन्शी शहामतअ़लीख़ां वग़ैरहने सर्कारी तरफ़से काम किया; फिर उनको होश्यार होनेपर इस्तियार मिल गया.

मौजूद महारावलके अ़हृदमें प्रतापगढ़ वग़ैरहसे सर्हदी झगड़े और मातह्त सर्दारोंसे बहुतसी अन्दरूनी तक़ारें पेश आईं, जिनमें अक्सर बांसवाड़ेका नुक्सान हुआ. सर्कारी तहक़ीक़ातमें गांव बोरी रीचेड़ीके फ़सादमें बांसवाड़ेकी ज़ियादती पाई गई, जिससे वहांका काम्दार चमनलाल कोठारी दस हज़ार रुपया जुर्मानह लिये जाने बाद दस वर्षके लिये मुल्कसे निकाल दियागया. गांव अजन्दा भी तहक़ीक़ात होने बाद बांसवाड़ेके क़ब्ज़हसे निकालकर प्रतापगढ़ वालोंको दिलाया गया. इसकी

बाबत वांसवाड़ेसे पेश कियेहुए कागज़ात जाली साबित होनेपर सर्कारकी नाराज़गी, और रियासतकी बहुत बदनामी हुई.

विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में थानह कालिन्जरेका बड़ा मुक़द्दमह फैला, कि इस मक़ामसे एक संगीन मुज्रिम किसी तरह निकल गया; राज वालोंने उसके भगा लेजानेका इल्ज़ाम राव कुशलगढ़पर लगाया. कर्नेल निक्सन पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़ने भी इस दावेके मुवाफ़िक़ राय देदी, जिससे सर्कारी हुक्मके मुवाफ़िक़ कुशल-गढ़पर ज़ब्ती पहुंची; लेकिन् रावने अपने बेकुसूर होनेकी बाबत बहुत कोशिश की, और दोबारह तहक़ीक़ातमें कर्नेल हचिन्सन पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़ने रावको सच्चा क़रार दिया. तीसरी बार ज़ियादह खोज और तस्दीक़के लिये कर्नेल मेकेन्ज़ी वग़ैरह कमानियर (कमांडर) खैरवाड़ाके नाम तहक़ीक़ातका हुक्म हुआ. वह कई महीने तक मौक़े पर सुबूत वग़ैरहको तलाश करते रहे. आख़िरकार डूंगरपुरके काम्दारोंकी मारिफ़त बांसवाड़ेके काम्दार केसरीसिंह कोठारीने तमाम अस्ली अह्वाल कर्नेल साहिबसे ज़ाहिर करदिया, और महारावलसे भी किसी तौरपर तह्रीरी इक़ार करादिया, कि मुज्रिमका भागना कुशलगढ़की मदद्से न था, राजके अह्ल्कारोंकी ग़फ़्लतसे जुहूरमें आया, और इस मुआमलहमें काम्दारोंने सब कार्रवाई महारावलके हुक्मसे की है. इस मुक़द्दमहकी मुफ़स्सल रिपोर्ट कर्नेल साहिबने सद्रको भेजदी, जिसपर बांसवाड़ेकी तरफ़से बहुत बे एतिबारी पैदा होकर विक्रमी १९२६ पौष [हि० १२८६ शव्वाल = ई० १८७० शुरू जैन्युअरी] से एक ख़ास सर्कारी अफ्सर असिस्टेंट पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़के नामसे वांसवाड़ेमें तईनात कियागया, जो बांसवाड़े और प्रतापगढ़के सर्हदी मुक़द्दमों और जागीरदारोंके संगीन झगड़ोंका निगरां रहकर फ़ैसलह किया करे. इस मह्कमहका ख़र्च, जिसकी तादाद पन्द्रह हज़ार रुपया सालानह है, मामूली ख़िराजके सिवा हमेशहके वास्ते बांसवाड़ेपर जुर्मानहके तौर डालागया.

विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में गढ़ीके ठाकुर चहुवान रत्नसिंहने, जो अस्सी हज़ार सालानहका जागीरदार है, सर्कशी की; उसने महाराणा शंभूसिंहको अपनी बेटी ब्याहकर उनसे रावका ख़िताब महारावलकी वग़ैर इजाज़त हासिल करलिया था. महारावलने वांसवाड़ेमें उसके बाग़का एक हिस्सह सड़क बनानेके बहानेसे दबाकर उसके इलाक़हमें राहदारीका महसूल, जो उसके बयानके मुवाफ़िक़ मुआफ़ था, जारी करदिया; लेकिन् दूसरे ठाकुरोंने नर्मीके साथ फ़ैसलह करादिया; महारावलने मेवाड़का दिया हुआ रावका ख़िताब ठाकुरके नामपर बहाल रखकर बाग़ और दाग़के एवज़ कुछ रुपया देदिया, और रत्नसिंहको अपना दीवान बनालिया.

दूसरे कई जागीरदारोंपर वगैर दर्याफ़्त गोद लिये जानेपर महारावलने सज़ा तज्वीज़ की थी, लेकिन् पोलिटिकल अफ़्सरने हिदायत करदी, कि राजको मुल्की कार्रवाईके सिवा क़ौमी बातोंमें दस्ल देनेका इस्तियार नहीं है.

महारावल लक्ष्मणसिंह, जिनको चालीस बरससे ज़ियादह अ़र्सा राज करते गुज़रा, पुरानी चालके रईस हैं; उनको इ़ल्मका शौक़ है, और अपने बेटोंको भी किसी क़द्र हिन्दी व फ़ार्सी तालीम दिलाई है. राज बांसवाड़ेके ख़ालिसहकी आमदनी दो लाख रुपया सालानह और इससे कुछ ज़ियादहकी जागीर सर्दारोंके क़ब्ज़हमें है; तीस हज़ार सालानहके गांव ब्राह्मण, चारण और अहल्कारों वग़ैरहको बंटे हुए हैं. इस रईसको गोद लेनेका इस्तियार और १५ तोपकी सलामी है, लेकिन् सर्कारी नाराज़गीके सबब मौजूद महारावलकी ज़ाती सलामी कुछ अ़र्सेके लिये १३ तोप करदी गई थी.

एचिसनकी अ़हदनामोंकी किताब जिल्द ३,

अ़हदनामह नम्बर १६.

अ़हदनामह ऑनरेब्ल ईस्ट इण्डिया कंपनी और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुर रईस बांसवाड़ा और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान, ऑनरेब्ल ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मॅटकॉफ़की मारिफ़त, पूरे इस्तियारके साथ, जो उनको श्रीमान मार्किस हेस्टिंग्ज़, के० जी० गवर्नर जेनरलसे मिले थे, और महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुरकी तरफ़से रत्नजी पंडितकी मारिफ़त, जो उनकी तरफ़से पूरे इस्तियार रखता था, तै पाया.

शर्त अव्वल- दोस्ती, इत्तिफ़ाक़ और नेक निय्यती आपसमें सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुर रईस बांसवाड़ा और उसके वारिसों व जानशीनोंके हमेशह क़ाइम और जारी रहेगी, और एक फ़रीक़के दोस्त व दुश्मन दूसरेके भी दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी- सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह राज और मुल्क बांसवाड़ेकी हिफ़ाज़त करेगी.

शर्त तीसरी- महारावल, उसके वारिस और जानशीन हमेशह अंग्रेज़ी सर्कारके साथ इताअ़त और इत्तिफ़ाक़ रक्खेंगे, उसकी हुकूमतको बड़ा क़ुबूल करेंगे, और आगेको किसी दूसरे रईस या रियासतसे वासितह न रक्खेंगे.

शर्त चौथी- महारावल, उसके वारिस व जानशीन अपने कुल राज्य और

मुल्कके हाकिम रहेंगे, और सर्कार अंग्रेज़ीकी दीवानी व फ़ौज्दारीका इन्तिज़ाम वहां दाख़िल न होगा.

शर्त पांचवीं - राज बांसवाड़ेके मुआमले अंग्रेज़ी सर्कारकी सलाहसे तै पावेंगे, लेकिन् सब बातोंमें अंग्रेज़ी सर्कार महारावलकी मर्ज़ीका लिहाज़ फ़र्मावेगी.

शर्त छठी - महारावल, उसके वारिस और जानशीन अंग्रेज़ी सर्कारकी मंजूरी बग़ैर किसी ग़ैर रईस या रियासतके साथ दोस्ती या इत्तिफ़ाक़ न रक्खेंगे, मगर उनकी दोस्तानह लिखा पढ़ी अपने दोस्त और रिश्तह्दारोंके साथ जारी रहेगी.

शर्त सातवीं- महारावल, उसके वारिस व जानशीन किसी पर ज़ियादती नहीं करेंगे, अगर इत्तिफ़ाक़न् किसीके साथ तक़ार पैदा होगी, तो उसका फ़ैसलह सर्कार अंग्रेज़ीकी सर्पंचीके सुपुर्द होगा.

शर्त आठवीं- महारावल, उसके वारिस व जानशीन अंग्रेज़ी सर्कारको अपनी आमदनीमेंसे छः आने फ़ी रुपयेके हिसाबसे ख़िराज अदा करेंगे.

शर्त नवीं- ज़ुरूरतके वक्त मांगनेपर रियासत बांसवाड़ा अपनी फ़ौज सर्कार अंग्रेज़ीकी नौकरीके लिये अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ देगी.

शर्त दसवीं- यह दस शर्तोंका अह्दनामह तय्यार होकर उसपर चार्ल्स थियोफ़िलस मॅटकॉफ़ और रत्नजी पंडितके दस्तख़त व मुहर हुए, और उसकी नक़्लें हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल और महारावल उम्मेदसिंहकी तस्दीक़ की हुई आजकी तारीख़से दो महीनेके अन्दर आपसमें एक दूसरेको दीजायेंगी.

मक़ाम दिहली, तारीख़ १६ सेप्टेम्बर सन् १८१८ ई०

रत्नजी पंडितकी मुहर.	दस्तख़त- सी० टी० मॅटकॉफ़. दस्तख़त- हेस्टिंग्ज़.
कंपनीकी मुहर.	दस्तख़त- जे० डाउड्ज़वेल. दस्तख़त- जे० स्टुअर्ट. दस्तख़त- सी० एम० रिकेट्स.

गवर्नर जेनरलने कौन्सिलमें तारीख़ १० ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० को मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें तस्दीक़ किया.

दस्तख़त - जे० ऐडम,
चीफ़ सेक्रेटरी गवर्मेंट.

बाक़ी शर्त अह्दनामहकी, जो १६ सेप्टेम्बर सन् १८१८ ई० को ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कंपनी और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुर रईस बांसवाड़ाके तै हुआ.

जो कि महारावल बयान करते हैं, कि उन्होंने अब तक किसी रईसको मुक़र्रर ख़िराज नहीं दिया, इस वास्ते यह इक़ार किया जाता है, कि अगर कोई रईस इस बाबत अपना दावा पेश करे, और उसका सुबूत दे, तो ऐसे दावोंका फ़ैसलह सर्कार अंग्रेज़ीकी सर्पंचीके सुपुर्द होगा.

मक़ाम दिहली, ता० १६ सेप्टेम्बर सन् १८१८ ई०

दस्तख़त – सी० टी० मॅटकॉफ़. [बड़ी मुहर.]

[पंडित रत्नजीकी मुहर.]

दस्तख़त – हेस्टिंग्ज़.

दस्तख़त – जे० डाउड्ज़्वेल.

[कंपनीकी मुहर.]

दस्तख़त – जे० स्टुअर्ट.

दस्तख़त – सी० एम० रिकेट्स.

हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरलने कौन्सिलमें ता० १० ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० को मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें तस्दीक़ किया.

दस्तख़त – जे० ऐडम,

चीफ़ सेक्रेटरी गवर्मेंट.

अह्दनामह नम्बर १७.

अह्दनामह ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनी और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ा और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान, ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से कप्तान जेम्स कॉलफ़ील्डकी मारिफ़त, जिसको ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरलके एजेंटकी तरफ़से हुक्म मिला था, और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ाकी मारिफ़त, जो अपनी और अपने वारिस व जानशीनोंकी तरफ़से मुख़्तार थे, तै पाया. ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कमको कुल इख़्तियार इस मुआमलेमें मोस्ट नोबल फ़्रांसिस मार्किस हेस्टिंग्ज़ के० जी० की तरफ़से, जो

हिज़ ब्रिटैनिक मॅजिस्टीकी प्रिवी कौन्सिलके मेम्बर थे, और जिनको ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीने हिन्दुस्तानकी हुकूमत और उसकी कार्रवाईके लिये मुक़र्रर किया था, हासिल हुए थे.

शर्त अव्वल - दोस्ती, इत्तिफ़ाक़ और आपसकी ख़ैरख़्वाही सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ा और उसके वारिस व जानशीनोंके हमेशह क़ाइम और जारी रहेगी, और दोस्त व दुश्मन दोनों फ़रीक़के आपसमें एकसे समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी - अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह राज्य और मुल्क बांसवाड़ेकी हिफ़ाज़त करेगी.

शर्त तीसरी - महारावल, उसके वारिस और जानशीन हमेशह सर्कार अंग्रेज़ीके साथ इताअत और इत्तिफ़ाक़ रक्खेंगे, उसकी हुकूमत और बुज़ुर्गीका इक़ार करेंगे, और आगेको किसी रईस या रियासतसे तअल्लुक़ न रक्खेंगे.

शर्त चौथी - महारावल, उनके वारिस और जानशीन अपने राज्य और मुल्कके पूरे हाकिम रहेंगे, और अंग्रेज़ी दीवानी और फ़ौज्दारीका इन्तिज़ाम वहां दाख़िल न होगा.

शर्त पांचवीं - राज बांसवाड़ेके मुआमले अंग्रेज़ी सर्कारकी सलाहसे तै पावेंगे, और सब बातोंमें अंग्रेज़ी सर्कार महारावलकी मर्ज़ीका लिहाज़ फ़र्मावेगी.

शर्त छठी - महारावल, उनके वारिस और जानशीन सर्कार अंग्रेज़ीकी मन्ज़ूरी बग़ैर किसी रियासतके साथ इत्तिफ़ाक़ या दोस्ती न रक्खेंगे, लेकिन् उनकी दोस्तानह तह्रीर अपने दोस्त व रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

शर्त सातवीं - महारावल, उनके वारिस व जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, अगर इत्तिफ़ाक़न् किसीके साथ झगड़ा होजायेगा, तो उसका फ़ैसलह अंग्रेज़ी सर्पंचीके सुपुर्द होगा.

शर्त आठवीं - महारावल, उनके वारिस व जानशीन वादह करते हैं, कि जो वाजिबी ख़िराज रियासत धार या किसी और का, जो अबतक देनेके लाइक़ होगा, वह अंग्रेज़ी सर्कारको सालानह क़िस्त बन्दीके साथ मुनासिब वक़्तोंमें अदा किया जायेगा, और ये क़िस्तें अंग्रेज़ी सर्कार रियासतकी हैसियतके मुवाफ़िक़ मुक़र्रर फ़र्मावेगी.

शर्त नवीं - महारावल, उनके वारिस और जानशीन वादह करते हैं, कि वह हिफ़ाज़तके एवज़में सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज दिया करेंगे, और यह ख़िराज हर बरस मुल्क बांसवाड़ेका तरक़्क़ीके मुवाफ़िक़ बढ़ता जायेगा, जिस क़द्र कि सर्कार अंग्रेज़ी

हिफ़ाज़तके ख़र्चकी वाबत काफ़ी ख़याल फ़र्मावे, लेकिन् वह किसी हालतमें आमदनी रियासतपर छः आने फ़ी रुपयेसे ज़ियादह न हो.

शर्त दसवीं- महारावल, उनके वारिस व जानशीन वादह करते हैं, कि राजकी फ़ौज हमेशह अंग्रेज़ी सर्कारके इरिव्तयारमें रहेगी.

शर्त ग्यारहवीं - महारावल, उनके वारिस व जानशीन इक़ार करते हैं, कि वह हर्गिज़ किसी अरव, मकरानी, सिंधी या गैर मुल्कके सिपाहीको अपनी फ़ौजमें, देशी लोगोंके सिवा, भरती न करेंगे.

शर्त बारहवीं- सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह महारावलके किसी रिश्तहदारको, जो उनसे बाग़ी होगा, मदद न देगी; बल्कि महारावलको ऐसा सहारा देगी, कि सर्कश उनका फ़र्मांबर्दार बनजावे.

शर्त तेरहवीं- महारावल इस अह्दनामहकी नवीं शर्तमें वादह करते हैं, कि वह सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज दिया करेंगे, बस उसके इत्मीनानके वास्ते इक़ार करते हैं, कि ख़िराज अदा न होनेकी हालतमें एक मोतमद सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से बांसवाड़ेमें तईनात हो, जो चबूतरे और दूसरे मातहत नाकोंकी आमदनीसे बाक़ियातका रुपया वुसूल करे.

यह तेरह शर्तोंका अह्दनामह आजकी तारीख़ कप्तान जे० कॉलफ़ील्डकी मारिफ़त, ब्रिगेडिअर जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० के हुक्मसे, ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से, और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ाकी मारिफ़त खुद उनकी और उनके वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से ख़त्म हुआ; कप्तान कॉलफ़ील्डने उसकी एक नक़्ल ज़बान अंग्रेज़ी, फ़ार्सी और हिन्दीमें दस्तख़ती और मुहरी अपनी महारावल श्री उम्मेदसिंहको दी; और एक नक़्ल उनकी दस्तख़ती और मुहरी आप ली.

कप्तान कॉलफ़ील्ड वादह करते हैं, कि एक नक़्ल मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल बहादुरकी तस्दीक़ कीहुई बिल्कुल इस अह्दनामहकी नक़्लके मुवाफ़िक़, जो अब तै पाया है, महारावल श्री उम्मेदसिंहको इस अह्दनामहकी तारीख़से दो महीनेके अन्दर दीजावेगी; और जो नक़्ल कप्तान कॉलफ़ील्ड साहिबने अपनी दस्तख़ती और मुहरी दी है, वह उस वक़्त वापस होगी.

यह अह्दनामह महारावल श्री उम्मेदसिंहने अपनी मर्ज़ी और ख़्वाहिशसे तन्दुरुस्ती और अक़्लकी दुरुस्तीकी हालतमें ख़त्म किया है.

मक़ाम बांसवाड़ा, ता० २५ डिसेम्बर, सन् १८१८ ई० मुताबिक़ २४ सफ़र, सन् १२३४ हिज्री, और मुताबिक़ १३ पौष, संवत् १८७५ विक्रमी.

कंपनीकी मुहर. दस्तख़त – जे० कॉलफ़ील्ड.

दस्तख़त – हेस्टिंग्ज़.

दस्तख़त – जे० डाउड्ज़्वेल.

दस्तख़त – जेम्स स्टुअर्ट.

गवर्नर जेनरलकी छोटी मुहर.

दस्तख़त – ऐडम.

गवर्नर जेनरलने कौन्सिलमें ता० १३ फ़ेब्रुअरी सन् १८१९ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त– सी० टी० मॅटकॉफ़,
सेक्रेटरी, गवर्मेंट.

अह्दनामह नम्बर १८.

गवर्मेंट अंग्रेज़ी और महारावल श्री भवानीसिंह रईस बांसवाड़ाके दर्मियान.

जो कि उस अह्दनामहकी आठवीं शर्तमें, जो सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ाके दर्मियान, ता० २५ डिसेम्बर सन् १८१८ ई० मुताबिक़ पौष कृष्ण १३ संवत् १८७५ को तै हुआ, उक्त रावलने यह शर्त की है, कि वह सर्कार अंग्रेज़ीको रियासत धार और दूसरे ठिकानोंका तमाम बाक़ी ख़िराज, जो अह्दनामहकी तारीख़ तक वाजिबी होगा, सालानह क़िस्तबन्दीके साथ देंगे; और क़िस्तें मुनासिब समझकर अंग्रेज़ी सर्कार मुक़र्रर फ़र्मावेगी; और जो कि सर्कार अंग्रेज़ीने रियासतकी तबाही और रावलकी कम आमदनीके ख़यालसे पैंतीस हज़ार रुपया सालिमशाही, जो मुल्ककी एक सालकी आमदनीके बराबर है, आठवीं शर्तमें बयान कीहुई तमाम बाक़ियातके एवज़ मंज़ूर किया; इस वास्ते महारावल इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको नीचे लिखी हुई क़िस्तोंके मुवाफ़िक़ ज़िक्र किया हुआ रुपया अदा करेंगे.

मिती फाल्गुन् संवत् १८७६ मुताबिक़ फ़ेब्रुअरी सन् १८२० ई० रु० १५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२० ई० रु० १५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२१ ई० रु० २५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२१ ई० रु० २५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२२ ई० रु० ३०००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२२ ई० रु० ३०००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२३ ई० रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८० मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२३ ई० रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८८० मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२४ ई० रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८१ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२४ ई० रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८८१ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२५ ई० रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८८२ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२५ ई० रु० ३५००

और जो कि उक्त अहदनामहकी नवीं शर्तमें महारावल वादह करते हैं, कि वह सर्कार अंग्रेज़ीको हिफ़ाज़तके एवज़ एक ख़िराज मुल्ककी हैसियतके मुवाफ़िक़ देंगे, मगर वह किसी हालतमें आमदनी मुल्कपर छः आने फ़ी रुपयेसे ज़ियादह न होगा; और जो कि गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी बिल्कुल दिली ख़्वाहिश यह है, कि रियासत रावलकी दुरुस्ती और बिह्तरी बहुत जल्द हो, इस वास्ते उसने तज्वीज़ फ़र्माई है, कि वाजिब रुपयेकी तादाद बाबत सन् १८१९ ई० व सन् १८२० ई० व सन् १८२१ ई० के क़रार पावे; और महारावल इक़ार करते हैं, कि वह बयान किये हुए रुपयोंकी बाबत नीचे लिखे मुवाफ़िक़ रुपया अदा किया करेंगे:-

मिती फाल्गुन् संवत् १८७६ मुताबिक़ फ़ेब्रुअरी सन् १८२० ई० रु० ८५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२० ई० रु० ८५००

कुल बावत सन् १८१९ ई० रु० १७०००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२१ ई० रु० १००००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२१ ई० रु० १००००

कुल बाबत सन् १८२० ई० रु० २००००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७८ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२२ ई० रु० १२५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२२ ई० रु० १२५००

कुल बाबत सन् १८२१ ई० रु० २५०००

यह बन्दोबस्त सिर्फ़ तीन वर्षके वास्ते है, बाद इस मुद्दत गुज़रनेके सर्कार अंग्रेज़ी नवीं शर्त अ़ह्दनामहकी तह्रीरके मुवाफ़िक़ ऐसा बन्दोबस्त फ़र्मावेगी, जैसा उसके नज़्दीक ईमान्दारीकी रूसे रावलके मुल्ककी हैसियतके मुवाफ़िक़ और दोनों तरफ़की बिह्तरीके लिये मुनासिब समझा जायेगा.

यह अ़ह्दनामह बांसवाड़ा मक़ामपर कप्तान ए० मॅक्डोनल्डकी मारिफ़त जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वग़ैरहके हुक्मसे, जो अंग्रेज़ी सर्कारकी तरफ़से कारबन्द थे, और महारावल श्री भवानीसिंहकी मारिफ़त, जो अपनी रियासतकी तरफ़से मुरूतार थे, ता० १५ फ़ेब्रुअरी सन् १८२० ई० मुताबिक़ फाल्गुन् सुदी २ संवत् १८७६ विक्रमी और मुताबिक़ २६ वीं रबीउ़स्सानी सन् १२३६ हिज्रीको तय्यार हुआ.

रावलकी मुहर.

दस्तख़त - ए० मॅकूडोनल्ड,
असिस्टेंट, सर जॉन माल्कम.

अ़ह्दनामह नम्बर १९.

अ़ह्दनामह दर्मियान अंग्रेज़ी गवर्मेन्ट और श्री मान लक्ष्मणसिंह, महारावल

बांसवाड़ा व उनकी औलाद वारिसों व जानशीनोंके, जो एक तरफ़ लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल अलिग्ज़ेन्डर रॉस इलियट हचिन्सन, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़ने बहुक्म लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आइ० और वी० सी० के किया, जो राजपूतानाकी रियासतोंके लिये गवर्नर जेनरलके एजेन्ट थे, और जिनको पूरे इख़्तियारात हिज़ एक्सिलेन्सी राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, बार्ट, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ०, वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्दसे मिले थे, और दूसरी तरफ़ महारावल लक्ष्मणसिंहने ख़ुद अपनी तरफ़से किया.

शर्त पहली– कोई शख़्स अंग्रेज़ी या ग़ैर इलाक़ेका रिआया अंग्रेज़ी इलाक़ेमें कोई बड़ा जुर्म करके बांसवाड़ा इलाक़ेकी हद्दमें कहीं आश्रय लेवे, तो उसको बांसवाड़ेकी सर्कार गिरिफ़्तार करेगी, और सर्कार अंग्रेज़ीको सपुर्द करेगी, जब कि सरिश्तेके मुवाफ़िक़ वह तलब किया जायेगा.

शर्त दूसरी – कोई शख़्स बांसवाड़ेकी रिआया बांसवाड़ाके इलाक़ेकी हद्दमें बड़ा जुर्म करके अंग्रेज़ी इलाक़ेमें आश्रय लेवे, तो सरिश्तेके मुताबिक़ दर्ख़्वास्त करनेपर सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी, और बांसवाड़ेकी सर्कारके सुपुर्द करेगी.

शर्त तीसरी – कोई शख़्स जो बांसवाड़ेका बाशिन्दा न हो, और बांसवाड़ा इलाक़ेकी हद्दमें कोई भारी जुर्म करे, और अंग्रेज़ी इलाक़ेमें आश्रय लेवे, तो वह गिरिफ़्तार कियाजायेगा, और मुक़द्दमेकी रूबकारी ऐसी अदालतमें होगी, जिसे कि सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करे. अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंकी तहक़ीक़ात उस पोलिटिकल अफ़्सरके इजलासमें होगी, जिसकी सुपुर्दगीमें बांसवाड़ेकी पोलिटिकल निगहबानी रहे.

शर्त चौथी – किसी हालतमें कोई सर्कार किसी शख़्सको, जिसपर किसी बड़े जुर्मका इल्ज़ाम लगाया गया हो, सुपुर्द करनेके लिये मजबूर न होगी, जब तक कि सरिश्तेके मुवाफ़िक़ वह सर्कार, जिसके इलाक़हमें जुर्म किया गया हो, दर्ख़्वास्त न करे, या इख़्तियार न दे, और जुर्मकी ऐसी गवाही होनेपर, जैसे कि उस मुल्कके क़ानूनोंके मुताबिक़, जिसमें कि मुज्रिम पायाजावे, उसका गिरिफ़्तार करना दुरुस्त ठहरे, और जुर्मकी पुख़्तगी हो, गोया कि जुर्म वहींपर किया गया हो.

शर्त पांचवीं – नीचे लिखे हुए जुर्म भारी जुर्म क़रार दियेगये हैं :–

१– ख़ून, २– ख़ून करनेकी कोशिश, ३– वहशियाना क़त्ल, ४– ठगी, ५– ज़हर देना, ६– सख़्तगीरी, याने ज़बर्दस्ती व्यभिचार, ७– शदीद ज़रर पहुंचाना,

८-लड़का चुराना, ९-औरतोंका बेचना, १०-डकैती, ११- लूटमार, १२- मकानमें सेंध लगाना, १३- चौपाये जानवर चुरा लेजाना, १४- मकान जलाना, १५- जाली दस्तख़त बनाना, १६- झूठा सिक्कह बनाना, १७- धोखा देकर जुर्म करना, १८- माल अस्बाब चुरा लेजाना, १९- ऊपर लिखेहुए जुर्मोंमें मदद देना.

शर्त छठी- मुज्रिमको गिरिफ्तार करने, रोक रखने या इन शर्तोंके मुवाफ़िक़ सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगेगा, वह उस सर्कारको देना पड़ेगा, जिसकी दर्ख़्वास्तसे यह काम किया जावे.

शर्त सातवीं- यह अ़ह्दनामह उस वक्त तक जारी रहेगा, जब तक कोई एक फ़रीक़ इसके ख़त्म करनेकी ख़्वाहिश दूसरेसे न ज़ाहिर करे.

शर्त आठवीं- इस अ़ह्दनामहकी किसी बातका असर पहिलेके अ़ह्दनामोंपर कुछ नहीं होगा, जो कि दोनों फ़रीक़में क़ाइम हैं, सिवाय उसके, जो कि इसकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम बांसवाड़ा, ता० २४ डिसेम्बर सन् १८६८ ई०.

[मुहर.] दस्तख़त- ए० आर० ई० हचिन्सन्, लेफ्टिनेन्ट कर्नेल,

[मुहर.] क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट, मेवाड़.

[मुहर.] और दस्तख़त- महारावल, बांसवाड़ा.

दस्तख़त- मेओ.

इस अ़ह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान वाइसरॉय गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानने, मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें, ता० ५ मार्च सन् १८६९ ई० को की.

[मुहर.] दस्तख़त डब्ल्यु० एस० सेटन् कार,

सेक्रेटरी गवर्मेंट ऑव इन्डिया,

फ़ॉरेन् डिपार्टमेन्ट.

देवलिया याने प्रतापगढ़की तवारीख़.

इस रियासतका हाल यहांपर इसलिये दर्ज कियागया है, कि महाराणा दूसरे अमरसिंह व संग्रामसिंहके अ़ह्द हुकूमतमें देवलियाके महारावत् बादशाही हिमायतसे दोबारह मेवाड़की मातह्तीमें लाये गये थे; लेकिन् अब यह रियासत राजपूतानहकी छोटी अ़लहदह रियासतोंमेंसे एक गिनी जाती है.

जुग्राफ़ियह (१).

प्रतापगढ़का राज्य २४° १८′ से लेकर २३° १७′ उत्तर अक्षांश तक और २४° ३१′ से ७५° ३′ पूर्व देशान्तर तक फैला हुआ है, इसकी ज़ियादह लंबाई उत्तरसे दक्षिणको ६७ माइल और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम तक ३३ माइल; और कुल रक़्बह १४५० वर्ग माइलके क़रीब है. यह रियासत पश्चिमोत्तरमें मेवाड़, पूर्वोत्तरमें सेंधियाके ज़िले नीमच व मन्दसोर, पूर्व दक्षिणमें जावरा व पीपलोदा, दक्षिण पश्चिम और पश्चिममें रियासत बांसवाड़ासे घिरी हुई है.

प्रतापगढ़का ज़ियादह हिस्सह जिसमें राजधानीके पूर्व और दक्षिण पूर्वके बीचकी ज़मीन चौड़ी खुली हुई अच्छी काली मिट्टीकी है, जो भूरे रंगकी सुर्ख़ी माइल रंगसे मिली हुई है, जैसी कि मालवाके ऊंचे मैदानके बाज़ हिस्सोंकी; और कहीं कहीं बहुत पथरीली है; घाटोंकी एक क़तार क़रीब क़रीब ठीक उत्तर और दक्षिण, बांसवाड़ाके जंगलोंमेंके झुकावको ज़ाहिर करती है. इस राज्यका पश्चिमोत्तरी भाग पुरानी राजधानी क़स्बे देवलियासे मेवाड़की सीमा तक जंगल व पहाड़ियोंसे ढका हुआ और क़रीब क़रीब बिल्कुल भीलोंसे आबाद है. इसीतरह अक्सर पहाड़ियों व जंगलोंके सिवा कुल इलाक़हमें कुछ नहीं नज़र आता; जहांपर जंगलोंके दरख़्त कटगये हैं, वहांपर थोड़ीसी भीलोंकी झोंपड़ियां हैं.

---

(१) यह बयान कप्तान सी० ई० येट साहिब बहादुरके बनाये हुए राजपूतानह गज़ेटियरके पृष्ठ ७७ से तर्जमह करके लिखागया है.

पहाड़ियोंका बड़ा सिल्सिला इस राज्यमें एक ही है, जो रियासतके पश्चिमोत्तर कोणमें होकर इलाके मेवाड़में बड़ी सादड़ी तक चलागया है, और जाकुम नदीके तीरपर राणीगढ़के पाससे शुरू होता है, जहांपर इसकी बलन्दी समुद्रकी सत्हसे १५४८ फ़ीट है, और पश्चिमकी तरफ़ क़रीब तीन माइलके फ़ासिलेपर १७२१ फ़ीट होगई है; इसी तरह पश्चिमोत्तरकी तरफ़ कुछ कुछ बढ़तीहुई मेवाड़की सर्हदके किनारे पर १९०० फ़ीट होगई है. जाकुमसे दक्षिण तरफ़ थोड़े ही फ़ासिलेपर नीची ज़मीन है, लेकिन् पहाड़ियां रफ़्तह रफ़्तह ऊंची होतीगई हैं, और देवलियाके नज़्दीक जाकर फिर १८०० फ़ीट ऊंचाई होगई है. देवलियासे दक्षिण पुरानी पहाड़ीपर "जूना गढ़" नामका एक गढ़ है, जिसके ऊपर एक छोटा तालाब व कुआं है, और उसके आस पास भीलोंके खेत हैं.

प्रतापगढ़की ज़मीनका पूरा पूरा हाल मालूम नहीं है. विन्ध्याचल पहाड़, जो मेवाड़की सीमापर ख़त्म होता है, अर्वलीकी समानान्तर श्रेणियोंमें मिलगया है, परन्तु भूगर्भ विद्याके अनुसार ज़मीनकी कैफ़ियत कभी मालूम नहीं कीगई है. यहांपर किसी क़िस्मका धातु नहीं पाया जाता, लेकिन् यहांके लोग पहिले देवलियाके पास डाकोर मक़ाममें पत्थरकी अच्छी खानें होना बयान करते हैं.

आब हवा और बारिश.

यहांकी आब हवा उम्दह और मालवाके दूसरे हिस्सोंके मुवाफ़िक़ गर्मी व सर्दी भी साधारण है. सन् १८७९ ई० में जो वर्सातका अन्दाज़ा ३२ इंच हुआ था, उसके हिसाबसे बारिशका औसत भी अच्छा समझा जा सक्ता है.

जंगल.

इस इलाक़हमें कोई ख़ास जंगली हिस्सह नहीं है, लेकिन् पश्चिम और पश्चिमोत्तरके पहाड़ी हिस्से छोटे छोटे दरख़्तों और बांसके जंगलोंसे ढके हुए हैं, मगर बहुतसी लकड़ी, जो काममें लाई जाती है, भील लोग बांसवाड़ाके ज़िल्ओंसे लाकर सप्ताहिक बाज़ारोंमें बेचते हैं; इस सौदागरीके बाज़ार सीमाके किनारेपर कई गांवोंमें लगते हैं.

नदी और झील.

प्रतापगढ़में कोई मश्हूर नदी नहीं है, क्योंकि यह हिस्सह बंगालेकी खाड़ीमें

गिरनेवाली नदियोंके बहावको खंभातकी खाड़ीमें गिरनेवालियोंके प्रवाहसे अलग करनेवाली ऊंची ज़मीनपर वाके़ है. जाकुम नदी, जो मेवाड़में सादड़ीके पास निकलती है, राज्यके पश्चिमोत्तरी भागमें धरियावदकी तरफ़ जाकर माही नदीमें गिरती है. वह छोटा गढ़ जो प्रतापगढ़का दक्षिणी हिस्सह है, उन दो नालोंके कोनेपर बना है, जो पीछेसे आपसमें मिलकर बांसवाड़ेके राज्यमें माही नदीसे मिलने वाली एक नदीको बनाते हैं. राज्यके दक्षिण पूर्वी हिस्सेका बहाव सोनमें गिरता है, जो कि चम्बलकी एक मददगार है, और मन्दसौरमें होकर उत्तरकी तरफ़ बहती है.

राज्यमें चन्द बड़े बड़े तालाब हैं, जिनमेंसे रायपुरका सर्पटा तालाब सबसे बड़ा है. पानी अक्सर ज़मीनकी सत्हसे ४० या ५० फ़ीटकी गहराईपर मिलता है.

राज्यका प्रबन्ध.

राज्यका प्रबन्ध क़रीब क़रीब बिल्कुल रईसकी संभाल और सलाहपर अहल्कार या प्रधानके ज़रीएसे होता है; पहिले रियासतका कुल इन्तिज़ाम कामदार ही करता था, लेकिन् कुछ अर्सेसे दीवानी, फ़ौज्दारी, महक्मह माल व पुलिसपर जुदे जुदे अफ्सर मुक़र्रर करदिये गये हैं.

जेलख़ानह, अस्पताल, पाठशाला और टकशाल.

राजधानीमें एक जेलख़ानह, अस्पताल और एक पाठशाला है, और मन्दसौरके सर्कारी डाकख़ानहसे राजका भी एक डाकख़ानह मिला हुआ है. टकशाल भी यहांपर है, लेकिन् उसमें किसी तरहका यन्त्र (कल) नहीं है, सिर्फ़ एक भद्दे ठप्पेपर सालिमशाही (१) रुपया गढ़ाजाता है, जिसकी क़ीमत क़रीब ॥।) कल्दारके है.

आबादी.

कुल राज्यके आदमियोंकी तादादका बड़ा हिसाब रियासतकी तरफ़से १२२२९८ हुआ है. शहर प्रतापगढ़ व ख़ालिसेके ज़िलोंमें ८५९१९ आदमियोंकी आबादी लिखी है. ऐसा अन्दाज़ा किया जाता है, कि जागीरदारोंके गांवोंमें कुल २७६२९ आदमी हैं, और इन्हें छोड़कर बड़े छोटे २५० गांव भीलोंके हैं, जिनमें फ़ी गांव औसत १० घरके हिसाबसे २५०० घर या क़रीब ८७५० भीलोंकी बस्ती है.

---

(१) ये रुपया नर्मदा किनारे तक कुल मालवेमें चलता है.

ऊपर लिखे तख़्मीनेसे फ़ी मील मुरब्बा क़रीब ८४ $\frac{१}{३}$ बाशिन्दोंका ओसत हुआ, जिसको ठीक समझना चाहिये; मुल्कके साफ़ हिस्सेकी आबादी, पश्चिमी व उत्तरी जंगली व पहाड़ी ज़िलोंके भीलोंकी तादादके बराबर ही मानी जाती है.

बाजरा व मोठके सिवा अक्सर सब क़िस्मका अनाज यहां उपजता है, परन्तु गेहूं ख़ास पैदावार है; अफ़ीम, ईख और ज्वार भी कस्रतसे बोई जाती है. यहांपर भील लोग ज़िलोंमें खेती उसी तरह करते हैं, जैसी बांसवाड़ेमें; और वह सिर्फ़ मक्की ही बोते हैं.

ज़मीनका पट्टा और आमदनी.

अक्सर ज़मीन राजकी ख़ालिसाई है, और किसानोंको कच्चे पट्टेपर जोतने बोने को दीजाती है, जो उसके बेचने या गिर्वी रखनेका इख़्तियार नहीं रखते; लेकिन् इसके बर्ख़िलाफ़ यह भी नहीं होसक्ता, कि बिना किसी ख़ास सबबके ज़मीनसे अलग कियेजावें, जो पीढ़ियोंसे उनके क़ब्ज़ेमें चली आती है. राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ यहां भी ठाकुर और अहलकार लोग चाकरी और ख़िराजकी शर्तपर जागीर पाते हैं.

ज़ियादह तर ख़ालिसेके गांव मुक़र्रर वक़के लिये ठेकेपर दियेजाते हैं, और जब ठेका नहीं होता है, तो गांवोंकी मालगुज़ारी पटैलके ज़रीएसे राजका कामदार तहसील करता है. पीवल (सींचीजाने वाली) ज़मीनका कर फ़ी बीघे ५) रुपयेसे ३०) तक नक्द लियाजाता है; जो ज़मीन नहीं सींची जाती उसका महसूल नक्द पैदावारमें से लियाजाता है. नक्दकी हालतमें फ़ी बीघा ।) से लेकर ३) रुपये तक, और पैदावारमें बीघे पीछे ५ सेरसे लेकर दोमन तक वुसूल होता है; भील लोग घर प्रति १) रुपया सालानह देते हैं, बीघेका महसूल मुक़र्रर नहीं है; ख़ालिसाई ज़िलोंकी कुल सालानह आमदनी १२५०००) रुपया सालिमशाही है, लेकिन् साइर व ख़िराज वग़ैरह मिलाकर कुल आमदनी तीन लाखके लग भग समझी जाती है.

सौदागरी.

धान, अमल और देशी कपड़े व्यापारकी ख़ास चीज़ोंमेंसे हैं. धान ज़ियादह तर बांसवाड़ेसे आता है, और जो देशी कपड़ा मन्दसौर व दूसरे मक़ामोंसे आता है, वह वहां भेजाजाता है. प्रतापगढ़के कारीगर ज़ुमुर्रुदके रंगके काचपर सोनेका काम

करनेके लिये प्रसिद्ध हैं, लेकिन् अब यह काम सिर्फ़ दो ख़ानदानोंमें होता है, क्योंकि इनकी नर्कीब पोशीदह रक्खी जाती है.

सड़कें.

राज्यमें कहीं बनाई हुई सड़कें नहीं हैं, परन्तु जो सड़क नीमचको जाती है, ३२ मील उत्तरको है, और मन्दसोरको जाने वाली १९ मील पूर्वको और जावराको जाने वाली ३५ मील दक्षिण पूर्वमें है. साफ़ मैदानमें होकर गुज़रने वाली सड़कें अच्छी हैं; मेवाड़ और बांसवाड़ेकी सौदागरी अभी तक केवल बंजारोंके ज़रीएसे बैलोंपर होती थी, परन्तु हालमें एक गाड़ीकी सड़क बांसवाड़े तक जारी करनेकी कोशिश हुई है, जो ५९ मील दक्षिण पश्चिमको कान्हगढ़के घाटेमें होकर गई है.

ज़िले और शहर.

राज्यमें तीन पर्गने हैं :- छोटा या कुंडल पर्गनह, जिसमें राजधानीसे उत्तर और पूर्व मन्दसोरकी तरफ़ वाली ज़मीन है; बड़ा पर्गनह, जिसमें दक्षिणी ज़िले हैं; और माली पर्गनह (पश्चिमोत्तरी) जिसमें भील लोग आबाद हैं.

शहर प्रतापगढ़ उत्तर अक्षांश २४° २′ और पूर्व देशान्तर ७४° ५९′ में समुद्रकी सत्हसे १६६० फ़ीटकी ऊंचाईपर वाक़े है, जिसकी बुन्याद महारावत् प्रतापसिंहने अठारहवीं सदीके शुरूमें एक मक़ामपर डाली, जो पहिले घोघेरिया खेड़ा कहलाता था. यह शहर एक नालेके सिरेपर दो नालोंके बीच शहर पनाहसे मह्फ़ूज़ बसा हुआ है, जिसमें आठ दर्वाज़े हैं; शह्रपनाहको महारावत् सालिमसिंहने मस्नद नशीन होनेपर विक्रमी १७५८ में बनवाया; इसके दक्षिण पश्चिमी कोणमें एक छोटा गढ़ है, जहां हालमें महारावत्के परिवारके रहनेको मकान बनायागया है. शहरके बीच वाला महल बहुत बड़ा नहीं है, और अक्सर ख़ाली रहता है (१), क्योंकि वर्तमान महारावत्ने अपने रहनेको एक नया महल शहरसे पूर्व एक मीलकी दूरीपर बनवालिया है. शहरमें २९०६ घर और १०६६९ आदमी बसते हैं, जिनमें ज़ियादह तर रोज़गार पेशह लोग हैं.

देवलियाकी पुरानी राजधानी, जो अब बिल्कुल ऊजड़सी होगई है, प्रतापगढ़से ठीक पश्चिम ७½ मीलपर २४° ३०′ उत्तर अक्षांश और ७४° ४२′ पूर्व देशान्तरमें समुद्रकी

---

(१) इस गज़ेटियरके बनने बाद महारावत् अब प्रतापगढ़के अन्दर रहने लगे हैं, और इमारतोंकी तरक़्क़ी भी की है.

सतहसे १८०९ और प्रतापगढ़से १४९ फ़ीटकी ऊंचाईपर बसा है; पुराने महल अब बिल्कुल बे मरम्मत पड़े हैं, जिनको सत्रहवीं सदीमें महारावत् हरीसिंहने बनवाया था. पहिले यह शहर खूब आबाद था; यहांपर कई मन्दिर विष्णु, शिव और दुर्गाके, और दो मन्दिर जैनके अभी तक मौजूद हैं. बहुतसे तालाव भी हैं, जिनमें सबसे बड़ा 'तेज' तालाव तेजसिंहके नामसे बना है, जो सन् १५७९ ई० में अपने पिताके क्रमानुयायी थे, जिन्होंने पहिले देवलिया बसाया था. क़िला कोई नहीं है, और ऐसा मालूम होता है, कि शहरकी हिफ़ाज़त व बचावका भरोसा इसके कुद्रती मक़ामकी मज़बूतीपर ही है, जो टीलेके किनारेसे अलग पहाड़ीके एक ढालपर चारों तरफ़की ज़मीनसे ऊंचा है; उत्तर और पश्चिमकी ओरका हिस्सह नाहमवार ज़मीन और बिल्कुल उजाड़ है.

मेले.

प्रतापगढ़में मुख्य देवस्थान महादेवका है; और अर्णोदके पास पश्चिमी घाटोंकी चोटीपर 'गौतम नाथ' मक़ामपर हर साल बहुतसे यात्री वैशाख शुक्ल १५ को जाते हैं, जहां दो दिन तक मेला रहता है. दूसरा एक बड़ा पवित्र स्थान राज्यके पश्चिमोत्तर कोणमें पहाड़ियोंके दर्मियान मेवाड़की सीमाके पास सीता माताका है. 'अम्बा माता' जो प्रतापगढ़से ४ मील उत्तर, और 'सन्तनाथ' जो धमोतरके पास ही जैनका एक मन्दिर है, इन दोनों मक़ामोंपर हर साल कार्तिक शुक्ल १५ को मेला होता है. प्रतापगढ़से दक्षिण तरफ़ तालाबपर दीपनाथ महादेवका मन्दिर है, जहां वैशाख शुक्ल १५ को एक प्रसिद्ध मेला लगता है.

तवारीख़.

महाराणा मोकलके बड़े बेटे कुम्भकर्ण मेवाड़की गद्दीपर बैठे, और दूसरे खेमकरण को कोई जागीर नहीं मिली; महाराणा मोकल विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = ई० १४३३] में चाचा मेराके हाथसे मारेगये. खेमकरण बचपनमें तो चित्तौड़पर बने रहे, लेकिन् बड़े होने बाद जागीरका दावा करने लगे. महाराणा कुम्भाने वैमात्र होनेके सबब खेमकरणको जागीर देनेमें हुज्जत की; तब खेमकरणने बड़ी सादड़ीपर ज़बर्दस्ती क़ब्ज़ह करलिया. महाराणा कुम्भाने फ़ौज भेजकर उनको वहांसे निकाला,

तो वह मांडूके बादशाहको चढ़ा लाया, बहुतसी लड़ाइयां हुईं, जिनका हाल महाराणा कुम्भाके वर्णनमें लिखा गया है.

आख़िरकार महाराणा कुम्भा और खेमकरण, दोनों इस दुन्याको छोड़गये. और मेवाड़की गद्दीपर महाराणा रायमल्ल बैठे, तो खेमकरणके बेटे सूर्यमल्लने रावत् अज्जा लाखावतके बेटे सारंगदेवको अपना शरीक किया, क्योंकि अज्जाको महाराणा मोकलने और सारंगदेवको महाराणा कुम्भा व रायमल्लने जागीर देनेमें इन्कार किया था. सारंगदेवने वाठर्डापर और सूर्यमल्लने नाहरमगरा व गिर्वा वगैरह पहाड़ी ज़िलोंपर अपना क़ब्ज़ह किया. महाराणा रायमल्लने किसी सबबसे दर्गुज़र किया, तो सूर्यमल्लने पूर्वी मेवाड़में भैंसरोड़ गढ़पर जा क़ब्ज़ह किया. महाराणा रायमल्ल अपने बेटोंके ख़ानगी फ़सादसे तंग होरहे थे, उनके बड़े बेटे पृथ्वीराजने सूर्यमल्ल और सारंगदेवको भैंसरोड़से शिकस्त देकर निकाल दिया, और सादड़ीपर भी हमले करने लगे. महाराणा रायमल्लने भी चढ़ाई की, जिसमें हज़ारों राजपूत मारेगये, और महाराणा व सूर्यमल्ल दोनों ज़ख़्मी होकर अपने अपने डेरोंको लौट गये. कुंवर पृथ्वीराज सूर्यमल्लका आराम पूछनेके लिये गये; कुंवरने कहा, कि "काकाजी खुश हो". तब सूर्यमल्ल बोला, कि "हां भतीजे मेरे ज़ख़्मोंको आराम होनेपर खुशी होगी." पृथ्वीराजने बयान किया, कि मैं भी श्री दर्बार (महाराणा रायमल्ल) के घावपर पट्टी बांधकर आया हूं. इस तरह बातें करके पृथ्वीराज चित्तोड़ आया; फिर इसने गिर्वा व नाहरमगरा वगैरह पर्गने सूर्यमल्लसे छीन लिये; रावत् सारंगदेवको वाठर्डेमें जा मारा, और सूर्यमल्लसे लड़ने लगा. कुंवर पृथ्वीराज और कुंवर सांगाके दर्मियान नाहरमगरेके पास भीमल ग्राममें लड़ाई हुई, तो सूर्यमल्ल सांगाका मददगार बनकर पृथ्वीराजसे लड़ा, और ज़ख़्मी हुआ. सूर्यमल्ल और पृथ्वीराजके आपसमें कई लड़ाइयां हुईं, परन्तु दिनको लड़ते, और रातको आपसमें आराम पूछने जाते. यह सब हाल मुफ़स्सल तौरपर महाराणा रायमल्लके बयानमें लिखा गया है.

रायमल्लके बाद पृथ्वीराजके मरजानेसे महाराणा सांगा (संग्रामसिंह १) चित्तोड़की गद्दीपर बैठे, तो यह रंजिश दूर हुई; क्योंकि महाराणा सांगाकी सूर्यमल्लसे दोस्ती थी. इन दोनोंका इन्तिक़ाल होनेपर सूर्यमल्लका बेटा बाघसिंह गद्दीनशीन हुआ. विक्रमी १५९२ [हि० ९४१ = ई० १५३५] में बहादुरशाह गुजरातीने चित्तोड़पर हमलह किया, तब सर्दारोंने महाराणाको तो बूंदी भेजदिया, और उनके एवज़ मरनेके लिये बाघसिंहको क़िले और फ़ौजका मुख़्तार बनाया; छत्र व चंवर
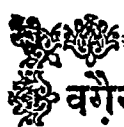
वगैरह महाराणाका लवाज़िमह अपने साथ रखकर बाघसिंह चित्तौड़के आख़िरी
पर बड़ी बहादुरीके साथ मारागया; इसलिये देवलियाके महारावत् भी अबतक '
के नामसे पुकारेजाते हैं, क्यौंकि एकलिङ्गजी मेवाड़के राजा, और महाराणा
दीवान कहलाते हैं; जब कि उनकी जगहपर क़ाइम होकर बाघसिंह भी मारा
इससे छत्र, चंवर और दीवानका ख़िताब उनकी औलादको मिला.

बाघसिंहके भाई सहसमल्लकी औलाद सीहावत कहलाई, जिनके
धमोतर और मारवाड़में झालामंड वगैरह हैं. इनकी चौथी पीढ़ीमें धम
ठाकुर जोधसिंहका छोटा भाई पूरा था, जिसकी सन्तान पूरावत कहला
बाघसिंहका तीसरा भाई रणमल्ल था, जिसकी औलाद रणमलोत कहलाई;
महाराणा उदयसिंहके समयमें बड़ी बहादुरीके साथ खैराड़की तरफ़ लड़ाईमें
गया. रावत् बाघसिंहके चित्तौड़पर मारेजानेका हाल महाराणा विक्रमा
प्रकरणमें लिखागया है- (देखो पृष्ठ ३१). इनके दो बेटे थे- बड़ा रायसिंह
दूसरा ख़ानसिंह, जिनमेंसे रायसिंह गद्दीपर बैठा, और ख़ानसिंहकी शाख़ ख़
कहलाई.

रायसिंहके बाद उसका बेटा बीका गद्दीपर बैठा. महाराणा उदयसिंह बन
निकालकर जब चित्तौड़के मालिक बने, तो उनको रावत् रायसिंहकी वह बा
आई, कि जब वह बनबीरके डरसे भागकर धायके साथ सादड़ीमें गये थे, और
रायसिंहने कुछ मदद नहीं की. इसलिये रावत् बीकाको महाराणाने फ़ौज
सादड़ीसे निकालदिया; वह ग़यासपुर और बसारमें जारहा. इस कांठलके पर्गनेमें
मीने (१) लोग रहते थे; बीका बड़ा बहादुर राजपूत था, उनकी सर्कशी
और देऊ मीणीके ख़ाविन्दको, जो सबसे ज़ियादह सर्कश था, मारडाला; तब देऊ
पतिके साथ सती हुई, और उस वक़ रावत् बीकासे यही कहा, कि मेरा नाम रहना
जिसको बीकाने मन्ज़ूर करके विक्रमी १६१७ [हि० ९६७ = ई० १५६
उसी जगह राजधानीकी नीव डाली; और उसी मीनीके नामसे 'देवलिया' नाम
नैनसी महता अपनी किताबमें लिखता है, कि बीकाने ७०० गांवोंपर अपना
करलिया, जिनमें ४०० चौड़ेके थे (जिनको देवलिया वाले देश कहते हैं), और

(१) नैनसी महताने अपनी किताबमें उस ज़मानेमें इन लोगोंको मेर लिखा है,
हमारी तहक़ीक़ातसे इस देशके मीने और मेरवाड़ाके मेर और खैराड़के मीने व मेवातके
सब एक ही ख़ानदानसे हैं, जिनका तफ़्सीलवार हाल हमने बंगालकी एशियाटिक सोसाइटीके ज
१८८६ ई० के पहिले हिस्सेमें छपवाया है.
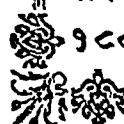
पहाड़ी थे, जिनमें मेरोंके १०० गांव हैं. सोनगरा राजपूत भी बड़े फ़सादी थे, जिन्हें मारकर बीकाने सुहागपुरके २४ गांव अपने क़ब्ज़ेमें किये; और जलखेड़िया राठौड़ोंको दबाकर ताबेदार बनाया. इसी तरह डोडिया राजपूतोंसे भी कोठड़ी वग़ैरहका इलाक़ह छीन लिया; फिर अपने भाई कांधल सहावतको धमोतर वग़ैरह पर्गनह जागीरमें दिया.

जब विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] में बादशाह अक्बरकी फ़ौजसे महाराणा प्रतापसिंहकी हल्दी घाटीपर लड़ाई हुई, तो महारावत् बीकाकी तरफ़से उनका भाई कांधल महाराणाकी फ़ौजमें था; सो उसीमें बड़ी बहादुरीके साथ मारागया. इसके तीन पुत्र, तेजसिंह, कृष्णदास और सुर्जण थे; परन्तु बड़वा भाटोंने कृष्णदासकी जगह शार्दूल लिखा है. बीकाके बाद विक्रमी १६३५ [हि० ९८६ = ई० १५७८] में तेजसिंह गद्दीपर बैठा, जिसने 'तेज सागर' तालाब बनवाया; और विक्रमी १६५० [हि० १००१ = ई० १५९३] में मारागया. उसके दो बेटे थे, बड़ा भाना (भवानीसिंह) और छोटा सिंहा; रावत् तेजसिंहके बाद भाना जानशीन हुआ; गादी बैठने बाद भानसिंह और जोधसिंह शक्तावतके आपसमें दुश्मनी बढ़ी. जोधसिंहको महाराणा अमरसिंह अव्वलने जीरण और नीमच जागीरमें दी थी; वह बड़ा बहादुर और लड़ाकू शख़्स था, मन्दसौरके सूबहदार मक्खन मियां और देवलियाके रावत् भानासे दुश्मनी रखता था. नैनसी महता लिखता है, कि एक दिन महाराणा अमरसिंहके साम्हने भाना और जोधसिंहके दर्मियान किसी बातपर ज़िद हो पड़ी, उस वक्त महाराणाने तो दोनोंको समझादिया; लेकिन् भानाने अपनी राजधानी (देवलिया) में आकर मक्खन मियांसे मिलावट की, और डेढ़ हज़ार सवार साथ लेकर दोनों शख़्स जोधसिंहसे लड़नेको चढ़े; जोधसिंहने भी १०० सवार और २०० पैदल साथ लेकर मुक़ाबलह किया; चीताखेड़ासे आगे एक बड़के पेड़ (१) के पास लड़ाई हुई, जिसमें मक्खन मियां, रावत् भाना और जोधसिंह, तीनों बड़ी बहादुरीसे काम आये. देवलिया वाले जीरणके तालाबपर रावत् भानसिंहकी छत्री बतलाते हैं.

विक्रमी १६६० [हि० १०१२ = ई० १६०३] में जब भाना लड़कर

---

(१) यह स्थान चीताखेड़ा, नैनसी महताकी किताबसे लिखा है, जो इस लड़ाईके ५० वा ६० वर्ष बाद तक मौजूद था. येट साहिबके बनाये हुए प्रतापगढ़के गज़ेटियर और प्रतापगढ़की तवारीख़में यह लड़ाई जीरणमें होना लिखा है; लेकिन हमको नैनसीका लेख दुरुस्त मालूम होता है, और भानाकी लाशको जीरणमें लाकर जलाई होगी, जहां उसकी छत्री बनी है.

मारागया, तो उसके कोई औलाद न थी, इसलिये उसका छोटा भाई सिंहा तेजावत गद्दीपर बैठा, और जीरणमें जोधसिंहके बेटे नाहरख़ान व भाखरसिंह रहे. आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे ना ताक़त देखकर रावत्ने, जो कि इन दिनों बादशाह अक्बरकी बहुत हिमायत रखता था, लोगोंके इलाक़े छीन लेने चाहे. यह हाल देखकर महाराणा अमरसिंह अव्वलने रावत् सिंहा और नाहरख़ानका विरोध मिटा दिया, और कहा कि भाना व जोधसिंह दोनों हमारे भाई थे, उनका रंज हमको है, तुम्हें नहीं रखना चाहिये.

विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] में महारावत् सिंहा भी परलोकवासी हुआ; इसके दो बेटे जशवन्तसिंह और जगन्नाथ थे, जिनमेंसे जशवन्तसिंह गद्दीपर बैठा. जशवन्तसिंह नरहरदासोत शक्तावतको महाराणा कर्णसिंहने मोड़ीके थानेपर रक्खा था, जो बसारके पर्गनेमें है, और वह पर्गनह महाराणाके ख़ालिसेमें था. देवलियाके रावत् जशवन्तसिंह सिंहावत और जशवन्तसिंह शक्तावत में तक्रार होनेलगी; महाराणा कर्णसिंह और बादशाह जहांगीरका देहान्त होगया, और महाराणा जगत्सिंह अव्वल उदयपुरमें, और बादशाह शाहजहां आगरेमें मस्नद नशीन हुए. महाबतख़ां शाहजहांके शुरू अ़ह्दमें, जो ख़ानख़ानां सिपहसालार और सात हज़ारी मन्सबदार होगया था, जहांगीरके ख़ौफ़से भागकर उदयपुरके पहाड़ोंमें आया; और वहांसे देवलियाकी तरफ़ गया, तो रावत् जशवन्तसिंह सिंहावतने उसे बड़ी ख़ातिरके साथ रक्खा. उसको अजमेरका सूबहदार व बादशाहका बड़ा मुसाहिब जानकर जशवन्तसिंहको महाराणासे अ़लहदह होनेकी हिम्मत हुई. महाराणा कर्णसिंहके इन्तिक़ाल और जगत्सिंहकी गद्दी नशीनीका मौक़ा देखकर मन्दसौरके हाकिम जांनिसारख़ांको वर्ग़लाया, कि बसारका पर्गनह बहुत अच्छा और आमदनी का है, बादशाहसे अपनी जागीरमें लिखवा लीजिये; उसने वैसा ही किया; परन्तु शक्तावत जशवन्तसिंहने दख़्ल न होने दिया; तब जांनिसारख़ां अपनी जमइयत लेकर चढ़ा, और देवलियाके रावत्ने अपनी फ़ौज उसके शामिल करदी, तो दोनों तरफ़से अच्छा मुक़ाबलह हुआ. इस लड़ाईमें रावत् जशवन्त नरहरोत, सीसोदिया जगमाल बाघावत, सीसोदिया पीथा बाघावत, सीसोदिया कान्ह, शार्दूलसिंह नरहरोत और सबलसिंह चत्रभुजोत पूर्विया वग़ैरह काम आये; जांनिसारख़ांके भी बहुतसे आदमी मारेगये.

यह ख़बर बादशाह शाहजहांने सुनी, तो एक फ़र्मान नसीहतके तौर महाराणा जगत्सिंह अव्वलके नाम लिखा, जिसका तर्जमह और नक़्ल यहां दर्ज की जाती है:-

अबुल्मुज़फ़्फ़र शिहाबुद्दीन मुहम्मद शाहजहां बादशाहके फ़र्मानका तर्जमह, जो महाराणा जगत्सिंह अव्वलके नाम आया.

ख़ुदा बड़ा है.

ख़ैरख़्वाह और इज़्ज़तदार ख़ानदानका
बिह्तर, मिह्र्बानी, बख़्शिश और इज़्ज़तके लाइक़,
नेक आदत ख़ैरख़्वाहोंका बुज़ुर्ग, राणा जगत्सिंह,
बादशाही इनायतोंसे ख़ुश ख़बर होकर जाने, इस सबबसे कि बुज़ुर्ग सल्तनतके अह्लकारोंको मालूम न था, कि पर्गनह बसार उस मिह्र्बानियोंके लाइक़ की अगली जागीरमें शामिल था, और ना वाक़िफ़ीसे मिह्र्बानीके क़ाबिल जांनिसारख़ांकी जागीरमें दाख़िल करदिया गया; अब यह बात सुलैमानी तख़्तके पास खड़े रहने वालोंके साम्हने अर्ज़ हुई, तो उस पर्गनहको अगले दस्तूरके मुवाफ़िक़ उस ख़ैरख़्वाहको इनायत फ़र्माया; और दफ़्तरके लोग जांनिसारख़ांको एवज़ दूसरे मक़ामसे देंगे; इस मुआमलेमें फ़र्मान आलीशान जांनिसारख़ांके नाम जारी हुआ है, कि पर्गनह बसार उस ख़ैरख़्वाहसे तअल्लुक़ रखता है, उसके क़ब्ज़ेमें छोड़कर इस बाबत झगड़ा और लड़ाई न करे; लेकिन् उस लड़ाई और तक्रारसे, जो उस ख़ैरख़्वाहके आदमियों और जांनिसारख़ांके दर्मियान हुई, दौलत ख़्वाहोंको तअज्जुब नज़र आया; जब कि उस उम्दह वफ़ादारका चचा और वकील वग़ैरह पाक दर्बारमें हाज़िर थे, लाज़िम था, कि अव्वल इस मुआमलेको बुज़ुर्ग दर्गाहमें अर्ज़ करते; और फिर जैसा कुछ हुक्म होता, अमलमें लाते.

نقل مرمان ابوالمظفر شهاب الدین محمد شاهجهان بادشاه،
موسومهٔ مهارانا جگت سنگه اوّل والي میواز *

(نقل طغرا)

فرمان ابوالمظفر شهاب الدین
محمد شاهجهان بادشاه غازی
صاحب قران ثاني *

الله اکبر

(نشان مهر)

ابوالمظفر
شهاب الدین
محمد شاهجهان
بادشاه غازي ۱۰۳۷
صاحب قران
ثاني * سنه احد

خلاصهٔ خاندان عزت واخلاص ، شایستهٔ عاطفت ومرحمت
و اختصاص ، قدوهٔ متخصصان سعادت کیش ، رانا جگت سنگه ،
بعنایت بادشاهانه مخصوص ومباهي گشته بداند ، که چون معلوم دیوانیان عظام ممالک نظام
نبود ، که پرگنهٔ بسار دردول سابق، آن لائق الاحسان داخل بوده ، وبه نا دانستگی دردول

यक़ीन है, कि उस ख़ैरख़्वाहको इस कार्रवाईपर इत्तिला न होगी; लाज़िम है, कि अपने आदमियोंको मना करे, जब तक ऐसे मुआमले बलन्द बुज़ुर्ग दर्गाहके हाज़िर बाशोंके आगे अर्ज़ न होलें, बादशाही नौकरोंसे लड़ाई और दुश्मनी न कीजावे, कि उसकी ख़ैरख़्वाहीके लाइक़ नहीं है; और आहिस्तह आहिस्तह ख़ुदा न करे, उस दरजह तक पहुंचें, कि ख़ल्क़तकी ख़राबी और तक्लीफ़का सबब होजावें. जिस रोज़ कि फ़र्मान आलीशानके मज़्मूनपर इत्तिला हासिल करे, पर्गनेपर क़ाबिज़ होकर पहिलेसे ज़ियादह बुज़ुर्ग मिहर्बानियोंको अपनी बाबत समझे; और हुक्मसे बख़िलाफ़ी न इख़्तियार करे. तारीख़ १७ आज़र महीना इलाही, अव्वल जुलूस- फ़क़त. [मुताबिक़ सन् १०३७ हिज्री = वि० १६८५ = ई० १६२८].

(पीठकी इबारत).

अदना दरजहके ख़ैरख़्वाह आसिफ़ख़ांकी मारिफ़त.

قابل العنایه جان نثارخان داخل شده؛ الحال که اینمعنی بعرض ایستادهاے پایهٔ سریر سلیمانی رسید، آن پرگنه را بدستور سابق بآن اخلاص کیش عنایت فرمودیم؛ و عوض به جان نثارخان دیوانیان از محل دیگر خواهند داد — و درین باب فرمان عالیشان بجان نثارخان صادرشده، که پرگنهٔ بسار به آن خیرخواه متعلق است، بتصرف او واگذاشته برسر این نزاع و جدال نه نماید؛ اما از جنگ ونزاعے که درمیانهٔ مردم آن خیر اندیش و جان نثارخان شده، دولتخواهان را تعجب روے داده، چون عمده وکلاے آن زبدهٔ اصحاب عقیدت در دربار مقدس بودند، مے بایست که اوّل این مقدمه را بدرگاه جهان پناه معروض داشت میکردند، تا هرچه حکم میشد، بعمل مے آوردند۔ یقین است که آن خیرخواه را ازین معنی اطلاعے نخواهد بود، مے باید که مردم خود را منع نماید، که مادام که این چنین مقدمات بعرض ایستادهاے درگاه فلک اشتباه نه رسد، بابندهاے بادشاهی نزاع وخصومت نه کنند، که لائق اخلاص او نیست، ورفته رفته معاذ الله بجائے انجامد، که موجب خرابی و آزار خلق الله گردد۔ در روزکه بر مضمون فرمان عالیشان اطلاع حاصل نماید، آن پرگنه را متصرف شده بیشتر از پیشتر عنایت اشرف را دربارهٔ خود شناسد، از فرموده تخلف نه ورزد — تحریرًا فی تاریخ ۱۷ - آذر ماه الهی، سنه احد فقط (مطابق سنه ۱۰۳۷ هجری)

(عبارت پشت)

بر سالهٔ کمترین اخلاص کیشان

آصف خان *

(نقل مهر وزیر)

۱۰۳۷
شده چو شاهجهان
بادشاه قیصرشان
خدائے داده یکیتی
مراد آصفخان
سنه احد

बादशाहने जांनिसारख़ांको लिख भेजा, कि पर्गने बसारपर दख़्ल न करे. शाहजहां जानता था, कि कैसी कैसी ताकृत काममें लानेपर महाराणा उदयपुरका फ़साद दूर हुआ है, अब छोटी बातके लिये उसी आगको भड़काना अ़क्लमन्दीका काम नहीं. इसके सिवाय बादशाहका भी शुरू तख़्त नशीनीका अ़ह्द था, इसलिये जांनिसारख़ांको धमकाया, और महाराणाको नसीहतोंका फ़र्मान लिख भेजा; परन्तु देवलियाके रावत् जशवन्तसिंहसे महाराणा बहुत नाराज़ रहे, और उससे जशवन्तसिंह शक्तावतका बदला लेना चाहा. महाबतख़ांकी हिमायतके सबब महाराणाको देवलियापर फ़ौजकशी करनेका मौक़ा न मिला, तब धीरे धीरे रावत् जशवन्तसिंहको धोखा दिया, और विक्रमी १६९० [हि० १०४३ = ई० १६३३] में उसे मए उसके बेटे महासिंहके उदयपुर बुलाया; उसे पूरा विश्वास नहीं था, इससे वह एक हज़ार चुने हुए राजपूत साथ लाया; और चम्पा बाग़में डेरा किया. राठौड़ रामसिंह कर्मसेनोतको महाराणाने रातके वक्त फ़ौज देकर भेजा, जो महाराणाकी बहिनका बेटा था; उसने फ़ौज समेत चम्पा बाग़पर घेरा डाला, और तोपें व सोकड़ोंकी गाड़ियां (१) मोर्चोंपर जमा दीं. रावत् जशवन्तसिंह केसरिया पोशाकके साथ सिरपर सेहरा और तुलसीकी मंजरी लगाकर चम्पा बाग़से बाहर निकला; और अपने साथियों समेत महाराणाकी फ़ौजपर टूट पड़ा; परन्तु तोप और सोकड़ेकी गाड़ियोंके फ़ैरसे सबके सब भुनगये; तो भी किसी किसीने रामसिंहको ललकारा, और तलवारें चलाईं. आख़िरकार महारावत् जशवन्तसिंह अपने बेटे महासिंह और १००० राजपूतों समेत बहादुरीके साथ मारागया, और महाराणा जगत्‌सिंहकी इस दग़ादिहीसे बड़ी बदनामी हुई.

यह ख़बर जब देवलियामें पहुंची, तो धमोतरके ठाकुर जोधसिंहने जशवन्तसिंहके दूसरे बेटे हरीसिंहको गद्दीपर बिठादिया. महाराणाने राठौड़ रामसिंहको फ़ौज देकर देवलियापर भेजा; यह सुनकर जोधसिंह (२) हरीसिंहको बादशाह शाहजहांके पास आगरे लेगया, और महाबतख़ांने उनको उदयपुरसे अ़ल्हदह करके बादशाही नौकर बनाने बाद मन्सब और इ़ज़्ज़तसे बड़े अमीरोंमें शामिल किया; और बादशाही

---

(१) एक एक गाड़ीमें सौ सौ या दो दो सौ तय्यार बन्दूकें उसके क़ाइदेके मुवाफ़िक़ जमी हुई रहती थीं, इनमें एक जगह बत्ती लगानेसे एक दम सब बन्दूकें चलती थीं. यह पुराने रिवाजकी गाड़ियां मेवाड़के बाज़े बाज़े ठिकानोंमें अबतक टूटी फूटी मौजूद हैं.

(२) देवलिया प्रतापगढ़की तवारीख़में इनका नाम जशकरण लिखा है, और जोधसिंह नैनसी महताकी तवारीख़ने लिखागया है, लेकिन् बड़वा भाटोंकी पोथियोंमें दोनों नाम नहीं मिलते. जो कि यह हाल नैनसी महताके ज़मानेका है, इसलिये उसको मोतबर माना है.

फ़ौज उनके साथ देकर अपने वतनको भेजा, जिससे महाराणा जगत्सिंह अव्वलने अपनी फ़ौजको वापस बुलालिया; क्योंकि बादशाही फ़ौजसे मुक़ाबलह करनेमें इस वक़्त ज़ियादह बखेड़ा बढ़नेका ख़याल था. इस नाराज़गीसे महाराणाने धरियावदका पर्गनह हरीसिंहसे छीनलिया. हरीसिंह कई बार इस पर्गनेके लिये बादशाह शाहजहांके पास अर्ज़ीऊ हुआ, लेकिन् बादशाहने भी दर्गुज़र किया. देवलियाके महारावत् बाघसिंहसे लेकर सिंहा तक महाराणाके फ़र्मांबर्दार और ख़ैरख्वाह रहे, और बड़ी बड़ी लड़ाइयोंमें बहादुरी दिखलाई. अगर महाराणा जगत्सिंह जशवन्तसिंहको धोखेसे न मारडालते, तो हरीसिंह महाबतख़ांका वसीला ढूंढकर बादशाही नौकर बननेकी कोशिश नहीं करता; क्योंकि डूंगरपुर, बांसवाड़ा और रामपुराके रईस चित्तौड़ छूटनेके बाद अक्बर बादशाहसे जा मिले थे, लेकिन् देवलिया वाले इस बातके इख्तियार करनेको बहुत बुरा समझते थे. अगर देवलियापर फ़ौज भेजकर जशवन्तसिंहको उनके बेटे समेत मारडालते, और हरीसिंहको उसी इलाक़ेका मालिक बनादेते, तो कभी वह इताअ़तसे मुंह न फेरता; क्योंकि मेवाड़के राजाओंका पुराने वक़्तसे यह क़ाइदह चला आता है, कि बापको सज़ा देकर बेटेकी पर्वरिश करते थे, लेकिन् विश्वासघात और बर्बादीपर कमर कभी नहीं बांधी. इस फ़सादका यह अंजाम हुआ, कि देवलियाके रईसने भी आज़ादी हासिल करनेका रास्तह पकड़ा. महाराणा जगत्सिंहके वक़्में, बल्कि शाहजहांके बादशाह रहने तक हरीसिंह आज़ाद रहा; जब आलमगीर शाहजहांकी बीमारीसे आप अपने भाइयोंकी लड़ाइयोंमें लगा, उस वक़्का हाल राजसमुद्रकी प्रशस्तिके आठवें सर्गके आठवें श्लोकसे २४ वें श्लोक तक इस तरह लिखा है:-

विक्रमी १७१६ वैशाख कृष्ण ९ मंगल [हि० १०६९ ता० २३ रजब = ई० १६५९ ता० १५ एप्रिल] के दिन कायस्थ फ़त्हचन्द प्रधानको देवलियापर फ़ौज समेत भेजा, तब रावत् हरीसिंह भाग गये, और उनकी माने अपने पोते कुंवर प्रतापसिंहको भेजकर ताबेदारी इख्तियार करली. उसी संवत् (१) में महाराणा राजसिंह अव्वल बांसवाड़ेकी तरफ़ फ़ौज लेकर चढ़े, उसी चढ़ाईके ख़ौफ़से देवलियाका रावत् हरीसिंह महाराणाके पास सादड़ीके राज झाला सुल्तानसिंह, बेदलाके राव चहुवान सबलसिंह, सलूंबरके रावत् चूंडावत रघुनाथसिंह, और

---

(१) प्रशस्तिमें पिछला हाल पहिले और पहिला पीछे दर्ज हुआ है, और फ़त्हचन्द प्रधानका जाना विक्रमी १७१५ श्रावणी हिसाबसे लिखा है, जिसको हमने चैत्री संवत्के हिसाबसे ऊपर दर्ज किया है.

भींडरके महाराज शक्तावत मुह्कमसिंहका वचन लेकर आये; क्योंकि रावत् हरीसिंहको अपने बाप और दादाके धोखेमें मारे जानेसे दह्शत होगई थी. उसने पांच हज़ार रुपया, मनरावत हाथी और एक हथनी महाराणाको नज़में दी. महारावत् हरीसिंहका देहान्त विक्रमी १७३० [हि० १०८४ = ई० १६७३] में हुआ. उनके चार बेटे थे, प्रतापसिंह, अमरसिंह, मुह्कमसिंह और माधवसिंह.

महारावत् प्रतापसिंह.

हरीसिंहके बाद महारावत् प्रतापसिंह गद्दीपर बैठे, यह बड़े अक़्मन्द और बहादुर थे, इन्होंने प्रतापगढ़का शहर विक्रमी १७५४ [हि० ११०८ = ई० १६९७] में शहर पनाहके अन्दर आबाद किया; जयपुर, जोधपुर, और बीकानेर वगैरहसे अपना सम्बन्ध बढ़ाया; और महाराणा उदयपुरसे भी ज़ियादह बख़िलाफ़ी न बढ़ने दी. ऐसा बर्ताव बग़ैर अक़्मन्दीके नहीं हो सक्ता. यह महारावत् जब बीकानेर शादी करने गये, तो चारण, भाटोंको बहुतसा त्याग और इन्आम इक्राम दिया; जोधपुर महाराजा अजीतसिंहको इन्होंने अपनी बेटी व्याही थी. इनका देहान्त विक्रमी १७६४ [हि० ११११९ = ई० १७०७] में होगया, इनके दो बेटे पृथ्वीसिंह और कीर्तिसिंह थे.

महारावत् पृथ्वीसिंह.

प्रतापसिंहके बाद पृथ्वीसिंह गद्दीका मालिक हुआ. जोधपुरके इतिहासमें विक्रमी १७६५ वैशाख [हि० ११२० = ई० १७०८] में महारावत् प्रतापसिंहका मौजूद होना लिखा है, जब कि सवाई जयसिंह और अजीतसिंह दोनों बहादुरशाहसे नाराज़ होकर देवलिया होते हुए उदयपुर आये थे. तअज्जुब नहीं कि प्रतापसिंहके इन्तिक़ालका संवत् श्रावणी हो, तो वैशाखके बाद श्रावणी संवत् के हिसाबसे इस संवत्के दो महीने बढ़े, जिनमें महारावत्का देहान्त हुआ होगा. हमने जो संवत् ऊपर लिखा, वह देवलियाकी तवारीख़से दर्ज किया है. एक दूसरा फ़र्क़ मारवाड़की तवारीख़से यह मालूम हुआ, कि जोधपुरके महाराजा अजीतसिंहकी दो शादियां देवलियामें होना लिखा है, एक तो महाराजा अजीतसिंहने जालोरसे महारावत् प्रतापसिंहकी मौजूदगीमें उनके बेटे पृथ्वीसिंहकी बेटीके साथ की, दूसरी विक्रमी १७६६ चैत्र शुक्ल १२ [हि० ११२१ ता० ११ मुहर्रम = ई० १७०९ ता० २३ मार्च]

को की; सो रावत् पृथ्वीसिंहके समयमें हुई मालूम होती है; लेकिन् प्रतापसिंहकी बेटी का ज़िक्र उसमें नहीं है, जैसा कि देवलियाकी तवारीख़से ऊपर लिखागया है.

रावत् पृथ्वीसिंह भी अपने पिताके मुवाफ़िक़ अच्छे सर्दार थे, जब यह बादशाह फ़र्रुख़सियरके पास गये; तब उसने खुश होकर इनको 'रावत् राव' का ख़िताब दिया; वहांसे वापस आकर इन्होंने उदयपुरके महाराणा दूसरे संग्रामसिंहकी ख़िद्मतमें अपने बड़े बेटे पहाड़सिंहको भेज दिया; महाराणाने भी खुश होकर धरियावदका पर्गनह देनेका हुक्म दिया; लेकिन् ईश्वरकी इच्छासे उदयपुरमें ही पहाड़सिंहका देहान्त होगया, और रावत् पृथ्वीसिंह भी विक्रमी १७७३ [हि० ११२८ = ई० १७१६] में इस संसारको छोड़गये. इनके बेटे पहाड़सिंह, उम्मेदसिंह, पद्मसिंह, कल्याणसिंह, और गोपालसिंह थे.

महारावत् रामसिंह.

पृथ्वीसिंहके पोते, पहाड़सिंहके बेटे रामसिंह (१) गद्दीपर बैठकर छः महीने बाद मरगये, तब विक्रमी १७७४ [हिज्री ११२९ = ई० १७१७] में पृथ्वीसिंहके दूसरे बेटे उम्मेदसिंह को गद्दी मिली; यह भी विक्रमी १७७९ [हि० ११३४ = ई० १७२२] में मरगये, तब उनके छोटे भाईको गद्दी मिली.

महारावत् गोपालसिंह.

यह अक़्मन्द और समझदार थे, इन्होंने अपने युवराज कुंवर सालिमसिंहको महाराणा दूसरे संग्रामसिंहकी ख़िद्मतमें भेजदिया, और बाजीराव पेश्वासे भी दोस्ती करली. देवलियाकी तवारीख़ में लिखा है, कि विक्रमी १७८८ [हि० ११४४ = ई० १७३१] में बाजी राव पेश्वा और महाराणाकी फ़ौजने डूंगरपुरको घेरलिया, तब रावत् गोपालसिंहने समझाकर घेरा उठवाया. इन्होंने अपने नामसे 'गोपालगंज' आबाद किया. विक्रमी १८१४ [हि० ११७० = ई० १७५७] में इनका इन्तिक़ाल होगया, और इनके बेटे सालिमसिंह गद्दीपर बैठे.

महारावत् सालिमसिंह.

यह बड़े होश्यार थे, लेकिन् इनके वक़्में मरहटोंका ग़द्र शुरू होगया, और हरएक राजा उनके साथ दोस्तीका बर्ताव रखने लगा; रावत् सालिमसिंहने भी वैसा

(१) बड़वा भाटोंकी पोथियोंमें पृथ्वीसिंहके बाद पद्मसिंहका गद्दीपर बैठना लिखा है, लेकिन् हमने देवलियाकी तवारीख़के मुवाफ़िक़ दर्ज किया है.

ही किया; तो भी मुसल्मान बादशाहोंकी बादशाहत फिर चमकनेकी उम्मेद बाक़ी थी, जिससे सालिमसिंह दिल्ली गये, और बादशाह आलमगीर सानीसे रुपयेकी टकशालकी इजाज़त लाकर अपने यहां सालिम शाही रुपया जारी किया. सिवाय उदयपुरके राजपूतानहकी कुल रियासतोंमें रुपयेकी टकशालें जारी होनेका यही वक़् है. सालिम शाही रुपया कुल मालवे और कुछ मेवाड़के हिस्सेमें भी चलता है. देवलियाकी तवारीख़में यह भी लिखा है, कि बादशाह फ़र्रुख़सियरसे महारावत् पृथ्वीसिंहने भी टकशाल जारी करनेका हुक्म लेलिया था, परन्तु जारी नहीं हुई थी, इन्होंने प्रतापगढ़में 'सालिमगंज' बसाया, और शहर पनाहको मज़्बूत किया.

जब माधवराव सेंधियाने उदयपुरको विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = ई० १७६८] में आघेरा, तब रावत् सालिमसिंह भी अपनी जमइयत लेकर महाराणा अरिसिंहके पास आगये, और घेरा उठनेके बाद तक मददगार रहे. इस ख़ैरख़्वाहीके एवज़ इनको महाराणा अरिसिंहने धरियावदका पर्गनह जागीरमें देदिया, और 'रावत् राव' का ख़िताब भी, जो बादशाहने दिया था, इनके नामपर बहाल रक्खा. इस बारेमें एक पर्वानह भी सालिमसिंहके नाम लिख दिया था, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

पर्वानेकी नक़्ल.

श्री रामोजयति.

श्री एकलिंग प्रसादातु.

श्री गणेस प्रसादातु.

स्वस्ति श्री बीजे कटकातु महाराजा धिराज महाराणा श्री अरसिहजी आदेशातु, देवल्या मुयाने रावत राव सालमसीघ कस्य सुप्रसाद लीपते यथा अठारा समाचार भला हे, आपणा समाचार कहावजो,

१ अग्र, आगे पातसांहजी श्री फुरकसेरजी, थाहरे रावत प्रथीसीघ हे रावत शवरी पदवी मया कीदी थी, सो थाहे सावत करे मया कीदी हे. सवत १८२८ वर्षे फागण वदी ९ गुरे.

सालिमसिंहका इन्तिक़ाल विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = ई० १७७४] में होगया, इनके दो बेटे सावन्तसिंह और लालसिंह थे, इनमेंसे सावन्तसिंह गद्दीके मालिक हुए, और छोटे भाई लालसिंहको अर्णोद जागीरमें दिया, जिसकी औलादमें अब रघुनाथसिंह मौजूद है.

महारावत् सावन्तसिंह.

सावन्तसिंहके वक्में मरहटोंका बड़ा ज़ोर शोर था, हर एक रियासतको दबाते थे, देवलियाको भी दबाकर पन्द्रह हज़ार रुपया, जो मुसल्मान बादशाहोंको मातहत होनेके वक् देते थे, उसके एवज़ ७२०००) रुपया सालिमशाही मल्हार राव हुल्करकी मारिफ़त पेश्वाको देने लगे. महारावत् सावन्तसिंह फ़य्याज़ीमें नामवर शख़्स थे; अब तक कवि लोग उनको बड़ी नामवरीके साथ कवितामें याद करते हैं; मज़्हबी ख़यालात भी इनके बड़े मज़्बूत थे, लेकिन् रियासतकी क़र्ज़दारी और मरहटोंका दबाव होनेके सबब तंग रहे, और टांकाके रुपये भी भरना देकर बड़ी मुश्किलसे चुकाते थे. मातहत लोग इनका पूरा भरोसा रखते और मुहब्बतसे बरतते थे. धमोतरका पर्गनह, जो रावत् सालिमसिंहको महाराणा अरिसिंहने लिख दिया था, इनके क़ब्ज़ेमें न रहा. इनके पुत्र दीपसिंह तेरह वर्षकी उ़म्रमें मल्हारराव हुल्करकी ओल (रुपयोंके एवज़में किसी अ़ज़ीज़को देनेका रिवाज था) में गये थे, लेकिन् दो तीन वर्षके बाद हुल्करने रुख़्सत देदी. फिर सेंधियाकी तरफ़से जग्गू बापू फ़ौज लेकर आया, और देवलिया प्रतापगढ़पर बीस दिन तक लड़ाई रही; उस वक् कुंवर दीपसिंहने बड़ी बहादुरीके साथ मुक़ाबलह किया, और सेंधियाकी फ़ौजका एक कुमेदान मारा गया, जग्गू बापूको ना उम्मेदीसे फ़ौज समेत लौटना पड़ा. ऐसी तक्लीफ़ोंके सबब सर्कार अंग्रेज़ीसे तअ़ल्लुक़ करना चाहा, जिसका हाल कप्तान सी० ई० येट साहिबने अपने गज़ेटियरमें इस तरह लिखा है :-

"सर्कार अंग्रेज़ीने पीछेसे मन्दसौरके अ़हृदनामहके मुवाफ़िक़ हुल्करसे इस ख़िराजका अधिकार लेलिया, लेकिन् यह तै कियागया, कि इस रुपयेका हिसाब हुल्कर ही को दिया जावे, जिसको सर्कार अंग्रेज़ी वुसूल करके हुल्करको अपने ख़ज़ाने

से देती है. सर्कार अंग्रेज़ीका संवन्ध प्रतापगढ़से विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] में हुआ, लेकिन् यह तअल्लुक़ लॉर्ड कॉर्नवालिसके जारी किये हुए वर्तावसे टूट गया. विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] के अह्दनामहसे यह रियासत फिर सर्कारी हिफ़ाज़तमें लीगई."

इनके कुंवर दीपसिंहका तो इन्तिक़ाल होगया, जिनके दो बेटे थे, बड़े केसरीसिंह, दूसरे दलपतसिंह, जिनको विक्रमी १८८१ [हि० १२३९ = ई० १८२४] में डूंगरपुरके रावल जशवन्तसिंहने गोद लिया, और बड़े केसरीसिंहका विक्रमी १८९० [हि० १२४८ = ई० १८३३] में देहान्त होगया; तब महारावत् सावन्तसिंहने अपने पोते दलपतसिंहको देवलियामें बुलाया, विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] में सावन्तसिंहका इन्तिक़ाल हुआ, तब दलपतसिंह मालिक बने, इन्होंने डूंगरपुरको अपने मातहत करना चाहा, लेकिन् वहांके सर्दारोंको यह बात नागुवार गुज़री; तो उन लोगोंने गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त दूसरा राजा बनाना चाहा. गवर्मेंटने समझाइशके साथ डूंगरपुरके हक़दार सावलीसे महारावल उदयसिंहको दलपतसिंहके हाथसे डूंगरपुरका मालिक बनादिया, इनका ज़िक्र डूंगरपुरके हालमें लिखा गया है.

महारावत् दलपतसिंह.

रावत् दलपतसिंह भी अपने बाप दादोंके मुवाफ़िक़ अक़्लमन्द और फ़य्याज़ थे; इनके वक़्में सब तरहसे अम्न व आमान रहा. गवर्मेंट अंग्रेज़ीने उनको देवलियाकी गद्दी नशीनीके वक़्त ख़िल्अ़त भेजा, जिसकी तफ़्सील यह है:- हथनी १ चांदीके हौदे समेत, घोड़ा १ बादशाह वख़्श मए ज़ेवर नुक़ई, मोतियोंकी माला १, सर्पेच १, मंदील १, शाल जोड़ा १, चुग़ा १, शाली रूमाल १, गोश्वारा १, तलवार १ मए पर्तलेके, बन्दूक़ दुनाली १, और एक तमंचेकी जोड़ी वग़ैरह. विक्रमी १९२० [हि० १२७९ = ई० १८६३] में इनका देहान्त हुआ, और इनके बेटे महारावत् उदयसिंह, जो अब देवलियाकी गद्दीपर हैं, वारिस रहे.

महारावत् उदयसिंह.

यह फ़य्याज़ी और बहादुरीमें नामवर हैं, और अख़्लाक़ भी इस तारीफ़के लाइक़ है, कि जहां एक बार जो आदमी मिला, उसे अपना बनाया. देवलिया और बांसवाड़ेके पहाड़ी इलाक़ोंके बाशिन्दे भील क़दीमसे सर्कश थे; मैदानके

गांवोंको लूटकर मवेशी वगैरह लेजाया करते थे, लेकिन् उन्हें विद्यमान महा-रावत्ने एकदम सीधा करदिया; जब कभी भीलोंके फ़सादकी ख़बर मिली, वह ख़ुद घोड़ेपर सवार होकर अपने राजपूतोंसे पहिले पहुंचते हैं; सैकड़ों बद-मआ़शोंको सज़ा देकर दुरुस्त किया, यहां तक कि अब इनका नाम सुननेसे डकैत और बदमआ़श लोग घबराते हैं. भाई बेटे वग़ैरह सब रियासती लोग इनके बर्तावसे ख़ुश हैं. गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी तरफ़से इस रियासतकी पन्द्रह तोपोंकी सलामी है.

विक्रमी १९४३ [हि० १३०५ = ई० १८८७] में महारावत्के एक कुंवर पैदा हुआ, जिसकी बाबत बहुत ख़ुशी मनाई गई.

उमराव सर्दार.

राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ प्रतापगढ़की रियासतमें भी राज-पूत क़ौमके जागीरदार हैं, जिनकी तादाद छोटे बड़े जागीरदारोंको मिलाकर कुल पचास है, और उनकी जागीरों में ११६ गांव हैं, जिनके बाशिन्दोंका शुमार २७६२९ और सालानह आमदनी २४६६०० रुपया है. इस आमदनीमेंसे ३२२९६ रुपया ख़िराजका महारावत्को दियाजाता है.

ऊपर लिखे हुए जागीरदारोंमेंसे सिर्फ़ ९ अव्वल दरजेके हैं, जिनके नाम मए ठिकाना, तादाद गांव व आमदनी वग़ैरहके इस नक़्शेमें दर्ज किये जाते हैं:-

नाम सर्दार मए ठिकाना.	गांव.	आबादी.	आमदनी.	ख़िराज.
केसरीसिंह— धमोतरके	११	३२३३	६००००	६१००
तख़्तसिंह सीसोदिया— झांतलाके	५	८४७	११०००	१४१६
लालसिंह चूंडावत— बर्लियाके	२	७८२	८०००	१३२२
तख़्तसिंह रणमलोत— कल्याणपुरके	२	५७६	७०००	२१९५
रत्नसिंह खानावत— रायपुरके	८	१४७७	३५०००	४३६२
कुशलसिंह खानावत— आम्बेरामाके	४	३८९	९०००	१९२९
माधवसिंह सीसोदिया— अचलोदाके	७	९७६	७०००	१८३३
रघुनाथसिंह सीसोदिया— अर्णोदके	६	२८९६	३००००	२०२५
कुशलसिंह सीसोदिया— सालिमपुरके	४	१०४३	११०००	१७६९

धमोतरका ठाकुर सहसमल्लकी औलादमें है, जो बाघसिंहका छोटा भाई था, जो अपने पिता सूर्यमल्लकी गद्दीपर विक्रमी १५३७ [हि० ८८५ = ई० १४८०] में बैठा.

कल्याणपुरका ठाकुर इसी खानदानके छोटे भाईकी औलाद है, जो धमोतरके पहिले ठाकुर गोपालदासके चौथे बेटे रणमल्लसे पैदा हुआ था.

आम्बेरामाका ठाकुर बाघसिंहके दूसरे पुत्र खानसिंहकी सन्तान है.

झांतला ठाकुर केसरीसिंहकी औलादमें है, जो हरीसिंहका छोटा भाई था, और जिसने देवलियाको विक्रमी १६९१ [हि० १०४४ = ई० १६३४] के लग भग मेवाड़से लेलिया, और विक्रमी १७३१ [हि० १०८५ = ई० १६७४] में मरगया.

सालिमगढ़का ठाकुर अमरसिंहके वंशमें है, जो महारावत् हरीसिंहका दूसरा बेटा था. अचलोदा ठाकुर माधवसिंहकी नस्लमें है, जो कि चौथा पुत्र महारावत् हरीसिंहका था.

महाराज रघुनाथसिंह अर्णोद वाला लालसिंहकी नस्लमें है, जो महारावत् सावन्तसिंहका छोटा भाई था, जिसकी गद्दी नशीनी विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में और देहान्त विक्रमी १९०१ [हि० १२६० = ई० १८४४] में हुआ.
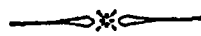
एचिसन्की अह्दनामोंकी किताब तीसरी जिल्द पृष्ठ ५०.

अह्दनामह नम्बर २०.

अह्दनामह जो दर्मियान सामन्तसिंह राजा प्रतापगढ़ और कर्नेल मरे साहिब अफ्सर फ़ौज अंग्रेज़ी, गुजरात, अट्ठावीसी और मालवा वगैरहके, विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] में हुआ, उसकी नक्ल.

शर्त अव्वल - राजा हर तरह जशवन्तराव हुल्करकी तावेदारी और बुज़ुर्गीसे इन्कार करते हैं.

शर्त दूसरी- राजा वादह करते हैं, कि वह उस क़द्र ख़िराज अंग्रेज़ी सर्कारको दिया करेंगे, जितना कि जशवन्तराव हुल्करको देते थे; और यह ख़िराज उस वक़ दिया जायेगा, जब कि मोस्ट नोबूल गवर्नर जेनरल उसका लेना मुनासिब ख़याल करेंगे.

शर्त तीसरी- सर्कार अंग्रेज़ीके दुश्मनोंको राजा अपना दुश्मन समझेंगे, और वादह करते हैं, कि हर्गिज़ ऐसे लोगोंको अपने इलाक़हमें नहीं रहने देंगे.

शर्त चौथी- अंग्रेज़ी सर्कारकी फ़ौज और उसके लिये सामान हर क़िस्मका राजाके इ़लाक़ेमें होकर बग़ैर किसी रोक और टैक्सके गुज़रेगा, बल्कि राजा वादह करते हैं, कि वह हर तरहकी मदद और उसकी हिफ़ाज़त करेंगे.

शर्त पांचवीं- राजाके इ़लाक़ेसे मक़ाम मल्हारगढ़में पांच हज़ार मन चावल, दो हज़ार मन चना और तीन हज़ार मन ज्वार दी जावेगी; और उसकी वाजिबी क़ीमत चीज़ें सौंपनेके वक्त़ सर्कारसे मिलेगी; और यह सब चीज़ें चौदह रोज़में आधी, और अठ्ठाईस दिनमें कुल देदी जावेंगी.

शर्त छठी - इस सबबसे कि ऊपर लिखी हुई शर्तोंपर राजाका अ़मल होगा, कर्नेल मरे अफ्स़र अंग्रेज़ी फ़ौज इक़ार करते हैं, कि वह और किसी क़िस्मकी मदद रुपये, मवेशी या ग़ल्लेकी न लेंगे, और न किसी हिस्से अंग्रेज़ी फ़ौजको, जो उनके मातह्त होगा, इस तरहकी मदद लेने देंगे.

शर्त सातवीं - राजा वादह करते हैं, कि जिस क़द्र सिक्का वग़ैरहकी ज़ुरूरत अफ्स़र अंग्रेज़ी फ़ौजको होगी, और जिस क़द्र चांदी वह भेजेंगे; उस क़द्र सिक्का प्रतापगढ़की टकशालसे तय्यार करके भेजदेंगे, और जो वाजिबी ख़र्च उसमें लगेगा, वह अंग्रेज़ी सर्कार अदा करेगी.

शर्त आठवीं - यह अ़ह्दनामह बग़ैर तअ़म्मुल दस्तख़त होनेके लिये हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरलकी ख़िद्मतमें भेजा जायेगा, मगर ऊपर लिखी हुई शर्तोंकी तामील तस्दीक़ किये हुए काग़ज़के आने तक अफ्स़र अंग्रेज़ी फ़ौज और राजापर वाजिब और ज़ुरूर होगी.

यह अ़ह्दनामह मेरी मुहर और दस्तख़तसे तारीख़ २५ नोवेम्बर सन् १८०४ ई० को लश्करमें चम्बल दर्याके किनारेपर दिया गया.

दस्तख़त- जे० मरे,
कलेक्टर.

अ़ह्दनामह नम्बर २१,

अ़ह्दनामह जो ५ ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० को राजा देवलिया प्रतापगढ़के साथ हुआ.

अ़ह्दनामह, जो ऑनरेब्ल ईस्ट इण्डिया कंपनी और सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़ और उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान, मारिफ़त कप्तान

कोलक़ील्डके, ब हुक्म ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस्०, पोलिटिकल एजेएट, मोस्ट नोबूल गवर्नर जेनरलके ऑनरेबूल ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से, और रामचन्द भाऊ, सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़की तरफ़से हुआ. ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कमको कुल इख्तियार मोस्ट नोबूल फ़ांसिस मार्किस ऑव हेस्टिंग्ज़, के० जी०, मोस्ट ऑनरेबूल प्रिवी कौन्सिल ब्रिटेनिक मैजेस्टीके मेम्बरने, जिनको ऑनरेबूल ईस्ट इण्डिया कंपनीने हिन्दुस्तानकी हुकूमत और उसके काम अंजाम देनेके लिये मुक़र्रर फ़र्माया है, अता किये; और रामचन्द भाऊको कुल इख्तियार सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़से मिले थे.

शर्त पहिली – राजा इक़ार करते हैं, कि वह हर तरहके सरोकार दूसरी रियासतोंसे छोड़देंगे, और जहां तक होसकेगा अंग्रेज़ी सर्कारकी इताअत किया करेंगे; सर्कार अंग्रेज़ी इसके एवज़में वादह करती है, कि वह तमाम ज़िलोंमें दोबारह अमल जमादेगी, और राजाकी हिफ़ाज़त और हिमायत दूसरी रियासतकी ज़ियादती और दावोंके मुक़ाबिल करेगी.

शर्त दूसरी – राजा वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको कुल बाक़ी ख़िराज, जो महाराजा मल्हार राव हुल्करको मिलता था, और जिसकी तादाद एक लाख चौबीस हज़ार छः सो सत्तावन रुपये छः आना है, नीचे लिखे मुवाफ़िक़ अदा करेंगेः–

अव्वल साल सन् १८१८ और १९ ईसवी मुताबिक़ सन् १२२६ फ़स्ली व संवत् १८७५ विक्रमी– दस हज़ार रुपये.

दूसरे साल– पन्द्रह हज़ार रुपये.
तीसरे साल– बीस हज़ार रुपये.
चौथे साल– पच्चीस हज़ार रुपये.
पांचवें साल– पच्चीस हज़ार रुपये.
छठे साल– उन्तीस हज़ार छः सौ सत्तावन रुपये छः आना.

राजा यह भी इक़ार करते हैं, कि यह रुपया अदा न होनेकी सूरतमें एक मोतमद अंग्रेज़ी सर्कारसे मुक़र्रर होकर आमदनी शहर प्रतापगढ़से वुसूल करे.

शर्त तीसरी – राजा देवलिया प्रतापगढ़ खुद अपनी और अपने वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको अपनी हिफ़ाज़तके एवज़ उस क़द्र ख़िराज और नज़ानह दिया करेंगे, जो मल्हार राव हुल्करको

दिया जाता था; और यह ख़िराज नीचे लिखे मुवाफ़िक़ अदा होगा:-

अव्वल सालसन् १८१८ और १९ ई० मुताबिक़ सन् १२२६ फ़स्ली और संवत् १८७५ विक्रमी- पैंतीस हज़ार रुपये.

दूसरे साल- पैंतालीस हज़ार रुपये.

तीसरे साल- पचपन हज़ार रुपये.

चौथे साल- पैंसठ हज़ार रुपये.

और पांचवें वर्षमें पूरी रक़्म याने बहत्तर हज़ार सात सौ रुपया सालिम शाही.

यह रुपया दो क़िस्तोंमें अदा करेंगे, आधा माघमें, और आधा जेठ मुताबिक़ मार्च और जुलाई में.

शर्त चौथी- राजा वादह करते हैं, कि वह अरब या मकरानीको नौकर न रक्खेंगे, लेकिन् वह पचास सवार और दो सौ पियादे प्रतापगढ़की रिआयामेंसे नौकर रक्खेंगे, और ये सवार व पैदल सर्कार अंग्रेज़ीके इख्तियारमें रहेंगे, और जब उनकी ज़रूरत किसी क़रीबके इलाक़ेमें होगी, तो उस वक्त वह अंग्रेज़ी सर्कारकी नौकरीमें हाज़िर रहा करेंगे.

शर्त पांचवीं- राजा प्रतापगढ़ अपने कुल मुल्कके मालिक रहेंगे, और उनके इन्तिज़ाममें अंग्रेज़ी सर्कार कुछ दख़्ल न देगी, लेकिन् इतना कि लुटेरी क़ौमोंका बन्दोबस्त और दोबारह इन्तिज़ाम क़ाइम करके मुल्की अम्न फैलाना उसके इख्तियारमें रहेगा. राजा वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारकी सलाहपर अमल करेंगे, और यह भी वादह करते हैं, वह नाजाइज़ महसूल टकशाल या दूसरी चीज़ोंके सौदागरोंपर अपने मुल्कमें न लेंगे.

शर्त छठी- अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह किसी रिश्तहदार या वासितहदार राजाको, जो उनकी ना फ़र्मानी करेगा, पनाह या मदद न देगी; बल्कि राजाकी मदद करके उसको ताबेदारीके रास्तेपर लावेगी.

शर्त सातवीं- अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह मीना और भील लोगोंके ज़ेर करनेमें राजाकी मदद फ़र्मावेगी.

शर्त आठवीं- सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह राजाके किसी वाजिबी और पुराने दावेमें, जो मुवाफ़िक़ क़दीम रिवाजके उसकी रिआयाकी निस्बत होगा, मुदाख़लत नहीं फ़र्मावेगी.

शर्त नवीं- सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह राजाकी मदद उसके
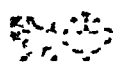
तमाम वाजिबी दावोंमें, जो रिआयाकी निस्वत होंगे, करेगी, अगर राजा आप उनके हासिल करनेमें मज्बूर होगा.

शर्त दसवीं- अगर राजा प्रतापगढ़का कोई सच्चा दावा किसी हमसायह रियासत या और किसी आस पासके ठाकुरपर होगा, तो अंग्रेज़ी सर्कार वादह करती है, कि वह उसकी मदद ऐसे दावोंके हासिल, या फ़ैसल करनेमें करेगी; अगर कुछ तकार राजा या आस पासके रईसोंके दर्मियान पैदा होगी, तो भी अंग्रेज़ी सर्कार ऐसी तकारके फ़ैसल या मौकूफ़ करनेमें मुदाख़लत करेगी.

शर्त ग्यारहवीं- अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह पुण्यार्थकी ज़मीनमें मुदाख़लत न करेगी, और मज़्हबी रस्में और राजा या रिआयाके दस्तूरोंका कामिल तौरपर लिहाज़ रक्खेगी.

शर्त बारहवीं- राजाने इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तमें वादह किया है, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको ख़िराज दिया करेंगे, और इत्मीनानकी नज़रसे इक़ार करते हैं, कि ख़िराज जिसको अंग्रेज़ी सर्कार वुसूल करनेके लिये मुक़र्रर फ़र्मावेगी, उसको देंगे; अगर यह रुपया वादहके मुवाफ़िक़ अदा न होगा, तो राजा इक़ार करते हैं, कि एक मोतमद अंग्रेज़ी सर्कारकी तरफ़से मुक़र्रर होकर ख़िराजका रुपया शहर प्रतापगढ़की आमदनीसे वुसूल करे.

यह अह्दनामह, जिसमें बारह शर्तें दर्ज हैं, आजकी तारीख़ कप्तान जेम्स कोलफ़ील्डकी मारिफ़त ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम के० सी० बी० और के० एल० एस० के हुक्मसे, जो ऑनरेब्ल कंपनीकी तरफ़से मुक़र्रर थे, और रामचन्द भाऊकी मारिफ़त, जो सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़की तरफ़से मुख़्तार था, तै हुआ; कप्तान कोलफ़ील्डने इसकी एक नक़्ल अंग्रेज़ी, फ़ार्सी और हिन्दीमें अपने दस्तख़तोंसे रामचन्द भाऊको इस ग़रज़से दी, कि वह राजा देवलिया प्रतापगढ़के पास भेज दे; और रामचन्द भाऊ मज़्कूरसे एक दूसरी नक़्ल उसकी मुहरी और दस्तख़ती ली.

कप्तान कोलफ़ील्ड वादह करते हैं, कि इस अह्दनामहकी एक नक़्ल दस्तख़ती मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरलकी, जो मुताबिक़ इस अह्दनामेके होगी, जो उन्होंने आप दी है, दो महीनेके अर्सेमें रामचन्द भाऊको इस ग़रज़से दीजावेगी, कि वह तस्दीक़ कीहुई नक़्ल सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़को दे; और जब तस्दीक़ कीहुई नक़्ल राजाको दीजायेगी, तो फिर वह नक़्ल, जो कप्तान कोलफ़ील्डने ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम के० सी० बी० और के० एल्० एस० के हुक्मसे दी है, वापस
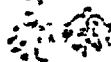
होगी; और रामचन्द भाऊ इसी मुताबिक़ वादह करता है, कि उसकी तरफ़से भी एक नक़्ल दस्तख़ती सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ़की बिल्कुल इस अ़हदनामहके मुताबिक़, जो उसने दिया है, कप्तान कोलफ़ील्डको दीजावेगी, ता कि वह इस तारीख़से आठ रोज़के अ़र्सेमें मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल बहादुरके पास भेजी जावे; और जब यह नक़्ल दस्तख़ती राजाकी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल बहादुरको दीजायेगी, तो जो नक़्ल रामचन्द भाऊने अपनी दस्तख़ती और मुहरी, जो उसने अपने हासिल किये हुए इख़्तियारातसे दी है, वह उसको वापस मिलेगी.

मक़ाम नीमच, ता० ५ ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० मुताबिक़ ४ ज़िल्हिज सन् १२३३ हिज्री, और मुताबिक़ आसोज सुदी ६ संवत् १८७५ विक्रमी.

दस्तख़त - हेस्टिंग्ज़. [गवर्नर जेनरल की छोटी मुहर.]

दस्तख़त - जी० डाउड्ज़वेल.

[कंपनीकी मुहर.]

दस्तख़त - जे० स्टुअर्ट.

दस्तख़त - सी० एम० रिकेट्स.

मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरलने कॉन्सिलमें मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम पर ता० ७ नोवेम्बर सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त - जे० ऐडम,
चीफ़ सेक्रेटरी, गवर्मेन्ट.

अ़हदनामह नम्बर २२

दस्तख़त - रावल सामन्तसिंह.

इक़ारनामह, जो रावल सामन्तसिंह रईस प्रतापगढ़ने कप्तान ए० मेक्डोनल्डकी मारिफ़त ऑनरेबल कंपनीके साथ किया.

दो सौ पियादे और पचास सवार और एक हज़ार रुपया माहवारी या बारह हज़ार रुपया सालानह उसके लिये सर्कारको मुनासिब क़िस्तोंमें देनेका ज़िक्र अ़हदनामहमें है, अब संवत् १८८३ से दो हज़ार रुपया माहवारी या चौबीस हज़ार रुपया सालानह सर्कार कंपनीको दियाजावेगा, और इससे हर्गिज़ इन्कार न होगा; यह रुपया सिक्कए सालिमशाही होगा.

मिती अगहन सुदी ७ संवत् १८८०, मुताबिक़ तारीख़ ९ डिसेम्बर सन् १८२३ ई०.

अह्दनामह नम्बर २३.

अह्दनामह दर्मियान अंग्रेज़ी गवर्मेन्ट और श्री मान उदयसिंह, राजा देवलिया प्रतापगढ़ व उनकी औलाद, वारिसों और जानशीनोंके, जो एक तरफ़ लेफ्टिनेन्ट कर्नेल अलिग्ज़ेन्डर रॉस इलियट हचिन्सन्, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट, मेवाड़ने बमूजिब हुक्म लेफ्टिनेन्ट कर्नेल रिचर्ड हार्टकीटिंग, सी० एस० आइ० और वी० सी०, एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके किया, जिनको पूरे इख्तियारात राइट ऑनरेबूल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ०, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल, हिन्दसे मिले थे; और दूसरी तरफ़ खुद राजा उदयसिंहने किया.

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह, अगर अंग्रेज़ी इलाक़ेमें बड़ा जुर्म करे और प्रतापगढ़की राज्य सीमामें पनाह लेना चाहे, तो प्रतापगढ़की सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी; और सरिश्तहके मुताबिक़ उसके मांगे जानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी- कोई आदमी प्रतापगढ़के राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी सीमामें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसे गिरिफ्तार करके सरिश्तेके मुताबिक़ मांगे जानेपर प्रतापगढ़की सर्कारको सुपुर्द करेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो प्रतापगढ़की रअय्यत न हो, और उस राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी इलाक़ेमें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमेकी रूबकारी सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अदालतमें होगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होगा, जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक़्पर प्रतापगढ़के इलाक़ेकी निगहबानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो बड़ा मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि सरिश्तेके मुताबिक़ खुद वह सर्कार, या उसके हुक्मसे कोई उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़ेमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर जैसा कि उस इलाक़ेके क़ानूनके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पायाजावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा; और वह मुज्रिम क़रार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं - नीचे लिखेहुए काम बड़े जुर्म समझे जायेंगेः-

१- खून, २- खून करनेकी कोशिश, ३- वहशियाना क़त्ल, ४- ठगी, ५- ज़हर

देना, ६– सख्तगीरी (ज़बर्दस्ती व्यभिचार), ७– ज़ियादह ज़ख़्मी करना, ८– लड़का बाला चुरा लेजाना, ९– औरतोंका बेचना, १०– डकैती, ११– लूट, १२ सेंध (नक़ब) लगाना, १३– चौपाये चुराना, १४–मकान जलादेना, १५– जालसाज़ी करना, १६– झूठा सिक्का चलाना, १७– धोखा देकर जुर्म करना, १८– माल अस्बाब चुरा लेना, १९– ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्ग़लान्ना (बहकाना).

शर्त छठी – ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुवाफ़िक़ मुज्रिमको गिरिफ़्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें जो ख़र्च लगे, वह उसी सर्कारको देना पड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बातें कीजावें.

शर्त सातवीं – ऊपर लिखा हुआ अ़हूदनामह उस वक्त तक बर्क़रार रहेगा, जब तक कि अ़हूदनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक उसके तब्दील करनेकी ख़्वाहिश दूसरेको ज़ाहिर न करे.

शर्त आठवीं – अ़हूदनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अ़हूदनामेपर, जो कि दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे हैं, कुछ नहोगा, सिवाय ऐसे अ़हूदनामहके, जो कि इस अ़हूदनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम प्रतापगढ़, ता० २२ डिसेम्बर, सन् १८६८ ई०.

मुहर. दस्तख़त– ए० आर० ई० हचिन्सन्, लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़.

मुहर. मुहर व दस्तख़त– राजा प्रतापगढ़ देवलिया.

मुहर. दस्तख़त– मेओ, वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अ़हूदनामहकी तस्दीक़ हिज़ एक्सिलेन्सी वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम ता० १९ फ़ेब्रुअरी सन् १८६९ ई० को की.

मुहर.

दस्तख़त–डबल्यु० एस० सेटन्कार,
सेक्रेटरी, गवर्मेंट ऑव इन्डिया,
फ़ारिन डिपार्टमेन्ट.

सिरोहीकी तवारीख़.

जुग़्राफ़ियह.

सिरोहीकी उत्तरी सीमा मारवाड़; दक्षिणी पालनपुर, ईडर, दांता, व मही कांठा; पूर्वी सीमा मेवाड़; और पश्चिमी सीमा मारवाड़ है. यह रियासत २४° २२′ और २५° १६′ उत्तर अक्षांश और ७२° २२′ व ७३° १८′ पूर्व रेखांशके बीचमें वाके है; इसका रक़्बह ३०२० मील मुरब्बा, और आबादी सन् १८८१ की मर्दुम-शुमरीके मुताबिक़ १४२९०३ है.

पहाड़ियों व चटानोंके सिल्सिलेसे देश टूटा और कटा है; ख़ासकर आबू पहाड़, जो दक्षिणी सीमाके पास अर्वलीसे दूर है, आधारके पास क़रीब २० मील लम्बा है (१); और मिली हुई पहाड़ियोंकी सकड़ी नालसे अलग है, जो पूर्वोत्तर कोणमें ऐरनपुराकी छावनी तक चलीगई हैं, और राज्यको क़रीब क़रीब दो हिस्सोंमें तक़्सीम करती हैं. पश्चिमी हिस्सह खुला और ज़मीन हम्वार होनेके सबब ज़ियादह आबाद है, और खेती भी अच्छी होती है. वर्सातके मौसममें पहाड़ियोंकी छोटी छोटी नालोंमें बड़ी तेज़ीसे पानी बहता है. यह देश नीची चटानी पहाड़ियों और धाव, खैर, बंबूल व बेर वग़ैरहके घने जंगलसे ढका हुआ है; आबूके उत्तरी सिरेके पश्चिमी ऊंचे मैदान और नीची पहाड़ियोंका सिल्सिला, जो सिरोहीकी सीधमें है, नदियोंके बहावको रोकने वाला है, जिससे नदियां पश्चिमोत्तर और दक्षिण पश्चिमको बहकर लूनी और पश्चिमी बनासमें जा मिलती हैं. अर्वली पहाड़ पूर्वकी तरफ़ साफ़ दीवारके मुवाफ़िक़ है.

कुओंकी कमीसे खेती कम होती है, और इसी सबबसे अभी तक ज़मीनका ३/१० हिस्सह बग़ैर जोते बोये जंगल पड़ा है, जो लुटेरोंके पनाह लेनेका मक़ाम है. इस देशमें कुओंकी गहराई ६० फ़ुटसे लेकर १०० फ़ुट तक है, मारवाड़के पासके हिस्सेमें ९० से १०० फ़ुट तक गहराईपर खारा पानी मिलता है, पश्चिमोत्तरी

(१) ख़ास राजधानी शहर सिरोही, इस सिल्सिलेके नीचे पश्चिमको आबू पहाड़के उत्तरी सिरेसे १६ मीलकी दूरीपर है.

भागमें ७० से ९० फ़ुट तक, पूर्वी ज़िलोंमें बनासके किनारे तथा दूसरे पर्गनोंमें ६० फ़ुटके लग भग गहराईपर पानी रहता है, और यह पानी अच्छा होता है. दक्षिणी हिस्सेमें इससे भी कम गहराईपर पानी मिलता है; लेकिन् पश्चिमी भागमें और ख़ास सिरोहीमें भी पानी बहुत नीचा और ख़राब पायाजाता है.

सिरोहीमें सिर्फ़ एक बड़ी नदी पश्चिमी बनास है, जो अर्वलीमें सैमरके पाससे निकली और पूर्वी बनासके निकासके साम्हने पहाड़ी सिल्सिलेके पश्चिमी खालोंमें बहकर पिंडवाड़ाके पास और आबूके पूर्वी धरातलके किनारे किनारे दक्षिण पश्चिममें बहती है, और चन्द्रावती शहर व मावल गांवके पास होती हुई पालनपुरके राज्यमें दाख़िल होती है; यहांसे डीसा छावनीके पास होकर कच्छके रणके सिरेपर रेतमें ग़ाइब होजाती है. इसकी सहायक नदी बत्रशा है, जो अम्बा भवानीके मश्हूर मक़ामसे निकल कर पश्चिममें मानपुर तक बहती है. बनासके सिवा और भी कई नदियां हैं, जिनमें कई महीनों तक पानी बहता रहता है. जवाई नदी अर्वली पहाड़में बेलकार मक़ामसे, जो समुद्रकी सत्हसे ३५९९ फुट ऊंचा है, निकलकर लूनीमें जा मिलती है. दो शूकली नदियां हैं, जो सिल्सिले सिरोहीके पश्चिमी बहावमें लूनीसे मिल-जाती हैं; और दो छोटी नदियां शूकली, जिसे कालेड़ी भी कहते हैं, सिरोहीकी दक्षिणी पश्चिमी सीमापर पहाड़ियोंके सिल्सिले नन्दवानासे निकलकर बनासमें जागिरती हैं. ये दोनों नदियां अहमदाबादकी ख़ास सड़कको पार करती हैं.

सिरोहीके कई हिस्सोंमें बनाई हुई झीलें हैं, लेकिन् आबू पहाड़परकी झीलके सिवा और कोई मश्हूर झील नहीं है.

ऊपर बयान हो चुका है, कि अर्वली पर्वत पूर्वकी तरफ़ एक सीधी दीवारकी तरह है, उसके सिल्सिलेके सिर्फ़ नीचेके किनारे और बाहरी शाख़ें सिरोहीकी सी-मामें हैं. पूर्वी घाटेके सिरेपर पिंडवाड़ासे उत्तर पहाड़ियोंकी नीची आरपार जाने वाली शाख़ें हैं, जो अर्वलीको सिल्सिले सिरोहीसे मिलाती हैं. घाटीके दक्षिणी सिरेपर भाखर, याने पहाड़ी हिस्सह और आबूके दक्षिणकी पहाड़ियां एक मैदानके हिस्सेको दक्षिणी पूर्वी और दक्षिणी शाख़ोंसे, जो आबूसे निकलती हैं, जुदा करती हैं.

आबू पहाड़ ग्रेनिटकी चटानोंका एक ढेर है, जिसपर पहाड़ियोंका समूह है; और पहाड़ियोंके बीच बीचमें घाटियां हैं; इस सिल्सिलेकी सबसे ऊंची चोटी, जो पहाड़ीके उत्तरी सिरेके पास गुरू शिखर कहलाती है, २४° ३९′ उत्तर अक्षांश और ७२° ४९′ देशान्तरमें फैली हुई है, और सत्ह समुद्रसे ५६५३ फ़ुट ऊंची है. यह चोटी हिमालय और नीलगिरीके बीचमें सबसे ऊंची है; सारा पहाड़ बांस, जंगल

ओर पेड़ोंसे ढका हुआ है. पहाड़ियोंके सबब सिरोहीसे भाखर पर्गनेमें जानेका रास्तह देलदर गांवके पास एक तंग नालमें होकर है. चन्द पहाड़ियों व घाटियोंके जंगलोंमें टीमरू (आबनूस), धामण, सिरस, हल्दू वगैरह बहुत हैं. आबूके दक्षिणमें भी पहाड़ियोंका सिल्सिला पालनपुर तक चलागया है, जिसमें चोटीला और जयराज दो मश्हूर चोटियां हैं; जयराजकी ऊंचाई ३५७५ फुट समुद्रकी सतहसे है. आबूके पश्चिममें नन्दवानाका (१) सिल्सिला सिरोहीके दक्षिण पश्चिममें मारवाड़की सीमाके पास एक बड़ा और लम्बा पहाड़ है. सिरोहीकी श्रेणीमें, जो आबूके उत्तरसे एरनपुरकी छावनी तक गई है, बोनिक नामकी एक पहाड़ी मश्हूर है, जिसकी ऊंचाई समुद्रसे २०९८ फुट है; यही सिल्सिला मेवाड़ तक चलागया है, जो मल नामी पहाड़ीसे जा मिला है; और यहां लुटेरे लोग अक्सर रहते हैं.

अर्वली पहाड़में स्लेटके पत्थर और भाखरकी पहाड़ीमें संग मर्मरकी खानें हैं; आबू ज़ियादहतर सिफ़ेद और रवेदार ग्रेनिट पत्थरका बना हुआ है; अब्रकके टुकड़े और बिल्लोरके मुवाफ़िक़ चूनेका पत्थर पहाड़के कई हिस्सोंमें पायाजाता है; ठोस नीला स्लेट कभी कभी निकलता है; आबूका ग्रेनिट सिवाय मकान बनानेके नक़ाशी वगैरहके काममें नहीं आसक्ता. सिरोहीमें पहिले तांबेकी खानका होना भी लोगोंकी ज़बानी सुना गया है.

सिरोहीकी रियासतका क़रीब क़रीब $\frac{3}{4}$ हिस्सह जंगलसे ढका हुआ है, जिसमें ज़ियादह झड़बेरी, आंवला, खैर, खेजड़ा, बंबूल, धाव, पीलू और करेल तथा एक क़िस्मका आम भी है; सनाम, ढाक और थूहर भी कस्रतसे है. आबूके ढालोंपर और आधारके चौगिर्दके जंगलोंमें बांस, आम, सिरस, धाव, जामुन, कचनार, हल्दू, बेल, टीमरू, सेमल, गूलर, पीपल, बड़, सैंजणा, फलोदरा, धामण, आंवला; रोहेड़ा गांवके पास नीम, पीपल, बेर, गूलर, बड़ व इमली वगैरहके दरख़्त बहुत हैं. सिरोहीके राज्यमें शेर बहुत हैं, जो गांवकी मवेशीको अक्सर मारडालते हैं; हरिन, ख़र्गोश, सिफ़ेद व काले तीतर, कई तरहके बटेर और बहुतसी क़िस्मके जानवर जंगलोंमें पाये जाते हैं; मछलियां सिवाय बनास नदीके और जगह बहुत कम मिलती हैं.

---

(१) यह नीमज पहाड़ीके नामसे मश्हूर है, जो नीमजके गढ़ व गांवसे प्रसिद्ध हुआ है; और श्रेणीसे पश्चिमकी तरफ़, जहां सिरोहीका रईस रहता है, पश्चिमोत्तर और मारवाड़ी सीमाके भीतर मुंडा नामकी एक पहाड़ी सतह समुद्रसे ३२५२ फुट ऊंची है.

सिरोहीकी आबो हवा तन्दुरुस्तीके लिये अच्छी है, आबादी फ़ासिले फ़ासिले पर होनेके सबब हैज़ा कम होता है. गर्मी ज़ियादह नहीं होती, और सर्दी भी कम अर्से तक रहती है. दक्षिण और पूर्वी पर्गनोंमें बारिश अच्छी होती है, लेकिन् बाक़ी हिस्सेमें कम, क्यौंकि आबू और अर्वली पहाड़ बादलोंके ज़ियादह हिस्सेको अपनी तरफ़ खेंच लेते हैं; आबूपर औसत ६४ इंचके लग भग और ऐरनपुरामें, जो ५० मीलके क़रीब उत्तरको है, सिर्फ़ १२ या १३ इंच पानी बरसता है; और दक्षिणी पश्चिमी हवा चला करती है. जड़ैया ज्वर तथा आमातीसार बर्सातके आख़िर व जाड़ेके शुरूमें होता है; गुजराती, शीतला, बात, और बालाकी बीमारी भी अक्सर रहती है.

सिरोहीमें ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, गुसाईं, वैरागी वगैरह कई क़ौमके मनुष्य बसते हैं; कुणबी, रैबारी और ढेड़ भी बहुत हैं; लेकिन् सबसे बड़ा गिरोह आबादीका ग्रासिया, मीना और भीलोंको ही समझना चाहिये.

सिरोहीके राज्यमें उत्तरकी तरफ़ मीने और पश्चिममें भील ज़ियादह आबाद हैं, जो लूट मार व बौलाईसे अपना गुज़र करते हैं; खेती सिर्फ़ बर्सातकी फ़स्लमें बोते हैं. ग्रासिया क़ौमके लोग भीलोंकी तरह हर एक जानवरको नहीं खाते, वे गाय और सिफ़ेद जानवरको पाक समझते हैं, और गायको पूजते हैं; लेकिन् काली भेड़ या बकरीको खालेते हैं. कोली, जिनको इस राज्यमें गुजरातसे आकर बसेहुए १३० वर्षसे ज़ियादह अर्सह हुआ, खेतीका पेशह करते हैं. इस इलाक़ेकी बोली मारवाड़ी और गुजराती भाषासे मिली हुई है.

सिरोहीमें अदालती इन्तिज़ाम बहुत ही कम है, फ़ौज्दारीके मुक़द्दमोंका फ़ैसला राजधानीमें प्रधान और पर्गनोंमें तहसील्दार करलेता है; दीवानीके मुक़द्दमे पंचायतसे फ़ैसल होते हैं. मुज्रिमोंके लिये राजधानीमें एक जेलख़ानह भी है; अगर्चि क़ैदी उसमें तन्दुरुस्त रहते हैं, लेकिन् मकान बहुत तंग है. यहांपर इल्मका प्रचार बहुत कम है; देशी भाषाके लिये सिरोही, रोहेड़ा और मदारमें एक एक पाठशाला, और राजधानीमें एक शिफ़ाख़ानह भी है.

ऐरनपुरा, सिरोही, अनाद्रा, रोहेड़ा और मदारमें डाक ख़ाने हैं; और आबूमें एक तार घर है, जहां दो तोपें, ७४ सवार और २६० पैदल रहते हैं. सिरोहीमें टकशाल नहीं है; भीलाड़ी (शाही) रुपया, जोधपुरी (विजयशाही) रुपया और भीलाड़ी व ढब्बूशाही पैसा चलता है. राजधानीका सेर अंग्रेज़ी तोलसे आधा, और पर्गनोंमें अलग अलग माप है.

जव, गेहूं, चना, मकी, बाजरा, मूंग, मौठ, उड़द, कुलथ, करांग, चीना, गुवार,

तिल, कूरी, बस्थी, कुदरा, मल, और सांवलाई इस इलाक़ेमें पैदा होते हैं; लेकिन् चना और ज्वार कम बोयेजाते हैं; घोड़ोंको चनेके एवज़ अक्सर कुलथ खिलाया जाता है. रूई और तम्बाकू और अम्बाड़ी भी कम बोई जाती है. मूली, गाजर, बैंगन, मेथी, चौलाई, मिर्च, चील (बथुवा) और पियाज़ वग़ैरह तर्कारी पैदा होती है. पड़त ज़मीन ज़ियादह होनेके सबब घास और बरू बहुत उगता है, जो मकान छाने व पर्दा वग़ैरह बनानेके काममें आता है.

सिरोहीमें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ दाण लिये जाते हैं:- (१) सिरोहीमें मुख्य दाण, (२) देश दाण (ग़ैर इलाक़ेमें जाने वाली चीज़ोंका दाण), (३) चेला दाण (बाहरसे आने वाली चीज़ोंका), (४) शहर दाण और तुलाई (मापा), जो एक क़िस्मकी चुंगी है. इन महसूलोंमेंसे पहिला तो सिर्फ़ राज्य ही में जमा होता है, बाक़ीमेंसे कुछ हिस्सह जागीरदारोंको भी मिलता है. स्थानीय टैक्स घर गिनतीपर है, जो छः माही पर लगती है. वसन्त ऋतुमें अजय तीज और शर्द ऋतुमें दीवालीपर २) से ६) रुपये सालाना तक हैसियतके मुताबिक़ लियाजाता है. दापा विवाहमें १) से ५०) रुपये तक, जिसमेंसे $\frac{1}{3}$ दुलहिनके बापसे और $\frac{2}{3}$ दूल्हाके बापसे वुसूल कियाजाता है. यह टैक्स महाजन और कारीगरोंसे लियाजाता है. मवेशीपर भी एक क़िस्मका महसूल लगता है, जो ऊंट व भैंसपर १), गायपर ।) और बकरीपर =) के हिसाबसे जमा होता है. दूसरा यह कि हर दूसरे साल बैलोंके टोलेमेंसे एक बैल, सिरोहीकी तोलका आध सेर फ़ी गाय और फ़ी भैंस सेर भर घी सालाना, और बकरियोंके फ़ी झुंड पीछे एक बकरी, एक कम्बल और २) रुपये नक्द लियाजाता है. राव या उनके कुंवरकी शादीमें और रावके मरनेपर भी सर्व लोगोंसे हैसियतके मुवाफ़िक़ रुपया वुसूल कियाजाता है.

ज़मीनका पट्टा राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ ही यहांपर भी है. इस रियासतमें कुल गांव ५३१ हैं, जिनमेंसे २६२ जागीरदारोंके, २४ मन्दिरोंके भेट, ४२ ब्राह्मण व चारण भाटोंके, १२ ज़नानेके और २११ ख़ालिसेके हैं, जिनमेंसे कई गांव उजड़ भी पड़े हैं. ख़ास राजपूत जागीरदार रावको फ़ी रुपया ।=) और दूसरे लोग फ़ी रुपया ॥) के हिसाबसे ख़िराज देते हैं. किसान लोगोंको पैदावारका $\frac{2}{3}$ से लेकर $\frac{3}{4}$ तक हिस्सह मिलता है. गांवोंकी मालगुज़ारी तहसील्दार और उनके नायब तहसील करते हैं. गांवोंके मुख्य अफ़्सर थानेदार, भलावन्या, और भांबी हैं; भलावन्या, लोग बनिये होते हैं, जो बजाय पटवारीके काम देते हैं;

और भांबी चमार या ढेड़ होते हैं. ये लोग थानेदारके मददगार हैं; मुसाफ़िरोंको रास्ता बताने, व सामान एकट्ठा करनेमें मदद और हर्कारेका काम देते हैं.

सौदागरीकी चीज़ें.

घी इस रियासतसे दूसरी जगहोंको बहुत भेजाजाता है, सींगदार जानवर बालोत्राके मेलेमें बिक्रीके लिये पहुंचाये जाते हैं, तिल व शहद गुजरातको बहुत जाता है; देशी सुपारी, अरीठा, आंवला, बहेड़ा, आककी जड़, निसोत, गिलोय, शिलाजीत, नकछिकनी, और खैर वग़ैरह बहुत होता है. सिरोहीकी बनी हुई तलवार, बर्छी, कटार, और छुरी मश्हूर है. अनाज, चावल, शकर, गुड़, दाल, मसाला, नारियल, तम्बाकू, छुहारा, अंग्रेज़ी कपड़े, देशी कपड़े, रेशमी कपड़े, लोहा, तांबा, हाथी दांत वग़ैरह ख़ासकर बम्बई व गुजरातसे, नमक पचभद्रासे और अफ़ीम मालवासे आती है. बम्बई व गुजरातकी ख़ास सड़क इस राज्यमें होकर गुज़रनेके सबब बहुतसा सामान सौदागरीका आया करता है.

इस राज्यमें होकर जानेवाली ख़ास सड़क अजमेरसे मारवाड़, सिरोही, पालनपुर, और गायकवाड़की अमल्दारीमें होकर अहमदाबादको गई है. यह सड़क ऐरनपुराकी सड़कसे मिलकर शहर सिरोहीमें गुज़रती हुई आबूके पश्चिमी भागके किनारे किनारे डीसाकी छावनीको चली गई है.

मेले.

रवाई पर्गनेमें झाड़ोलीके पास बाणवारजीके मन्दिरपर मार्च महीनेमें एक जैन मत वालोंका मेला होता है, जहांपर २४ महात्माओंकी पूजा होती है. इस मेलेमें कपड़ा, हाथी दांत, अफ़ीम, रूई, नारियल, शकर, वग़ैरह चीज़ें बिकती हैं; यह मेला पांच रोज़ तक रहता है, और क़रीब सात हज़ार आदमीके जमा होते हैं. मगरेके पर्गने फलोदमें वैजनाथकी पूजापर ऑगस्ट महीनेमें मेला होता है. सिरोहीसे दो मीलके फ़ासिलेपर सिरोहीके सर्दारोंके कुलदेव सारणेश्वरका एक बड़ा मेला सेप्टेम्बर महीनेमें होता है, और इसके दूसरे दिन बाणवारजीका मेला होता है. मेष संक्रान्तिको खूणी पर्गनेमें गंगोपिया महादेवके स्थानपर क़रीब दो हज़ार आदमियोंके भीड़ रहती है; यह मेला दो रोज़ तक रहता है. इन मेलोंके सिवा अनाद्राके पास आबूपर करोड़ीध्वजके दो मेले होते हैं, पहिला मार्चमें होलीपर और दूसरा ऑगस्टमें.

ज़िले, शहर और मश्हूर मक़ामात.

रियासतका दर्मियानी (मध्य) पर्गनह चौरा व बारठ और राजधानी शहर सिरोही है; दक्षिणी पर्गनह साठ, और पूर्वी पर्गने रवाई व भीतरोटके नामसे प्रसिद्ध हैं.

शहर सिरोही- रियासतकी राजधानी जिसमें ५००० के क़रीब आदमी बसते हैं. यहांपर कई निशानात ऐसे पाये जाते हैं, जिनसे इस शहरकी दशाका अगले ज़मानेमें अच्छा होना साबित होता है. शहरमें पांच मन्दिर जैनके और चार हिन्दू धर्मके पांच सौ वर्ष तकके पुराने कहे जाते हैं. रावका महल छोटा, पर मज़्बूत ज़ियादह है. शहरसे दो मीलके फ़ासिलेपर सारणेश्वर महादेवके मन्दिरके पास एक कुण्ड है, जिसका पानी जिल्दपरकी बीमारियोंको दूर करता है.

शिवगंज- पर्गने खूणीमें ऐरनपुराकी छावनीके पास एक उम्दह गांव है, जिसको विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में राव शिवसिंहने आबाद किया. इसके सिवा पिंडवाड़ा, रोहेड़ा पर्गनह भीतरोटमें, जावाल, कालिन्द्री, पर्गनह मगरामें, मदार और साठ मश्हूर मक़ामात हैं; पिछले छः क़स्बोंमें दो दो तीन तीन हज़ार मनुष्योंकी आबादी है.

अजारी गांवमें महावीर स्वामीका एक पुराना जैन मन्दिर (१) है, जो विक्रमी ११८५ [हि० ५२२ = ई० ११२८] में चावड़ा कौमके राजा कुमारपाल (२) का बनवाया हुआ प्रसिद्ध है. अजारीके पास मारकुण्डेश्वरका मन्दिर भी बहुत पुराना है, जिसको १२०० वर्ष पहिलेका बनाहुआ बताते हैं.

वसन्तगढ़ (३)- यह गढ़ी उदयपुरके महाराणा कुम्भाकी बनवाई हुई है.

नादिया- यह गांव प्राचीन नगरी नन्दीवर्धनकी जगहपर बसा है, जिसमें महावीर स्वामीका एक जैन मन्दिर विक्रमादित्यके समयसे ३०० वर्ष पीछेका बना हुआ कहा जाता है.

भीतरोट पर्गनेका लोटाना } यह गांव प्राचीन नगर लोटाना पाटनकी जगहपर उसी समय बसा था, जब कि परमारोंकी प्राचीन राजधानी चन्द्रावती थी.

---

(१) राणपुरके मन्दिरके लेखसे मालूम होता है, कि राणपुरका मन्दिर और यह मन्दिर एकही शख़्सने बनवाये हैं, इस वास्ते यह ११८५ का नहीं होसक्ता, लेकिन् १५ वें शतकका है.

(२) यह पाटनका राजा जयसिंहकी सन्तानमें से था.

(३) यह परमारोंका बनाया हुआ है, और संवत् १०९९ की परमारोंकी प्रशस्ति भी हमको मिली है, जो शेषसंग्रहमें दर्ज कीजायेगी.

चन्द्रावतीके बारेमें बम्बई गज़ेटियरकी पांचवीं जिल्दके एष्ठ ३३९ से ३४० तक इस तरह लिखा है:-

"चंद्रावती या चंद्रावली, आबू पहाड़से प्रायः १२ मील दक्षिण एक जंगली हिस्सह अम्बा भवानी और तारिंगाके मन्दिरोंसे १२ मीलके फ़ासिलेपर एक पुराने शहरका खंडहर है, जिसका घेरा किसी ज़मानेमें अठारह मील था.

समुद्रके किनारे और उत्तरी हिन्दुस्तानके दर्मियान एक ख़ास रास्तेके नज़्दीक, और एक तरफ़ अम्बा भवानी और तारिंगाके मन्दिरों और दूसरी तरफ़ अम्बा भवानी और आबूके बीचों बीच होनेके सबब चंद्रावती मक़ाम मज़्हब और तिजारतके लिये मश्हूर था. पुराने शहरके खंडहर और आबूके मन्दिरोंके देखनेसे मालूम होता है, कि वहांके महाजनोंके पास बड़ी दौलत थी; वे इमारतका बड़ा शौक़ रखते थे, और वहांके कारीगर और राजगीर बड़े होश्यार थे; चन्द्रावतीके जुलाहों और रंग्रेज़ोंकी कारीगरीके सबब पिछले ज़मानेमें अहमदाबादके रेशमी कपड़े और छींटें मश्हूर हुईं. सातवीं सदीसे लेकर पन्द्रहवीं सदीके शुरू तक इसकी तरक़्क़ीका ज़माना क़ाइम रहा. ज़बानी हालसे यह शहर धारकी बनिस्बत ज़ियादह क़दीम और पश्चिमी हिन्दुस्तानकी राजधानी मालूम होता है, जिस वक़्त कि परमार लोग राज्य करते थे, और रेगिस्तानके नव (१) गढ़ उनके मातहृत बड़े सर्दारोंके थे. सातवीं सदीमें धारके मातहृत होनेके सबब वहां राजा भोजने आश्रय लिया, जब कि किसी उत्तरी हमलह करने वालोंने उसको भगा दिया. परमारोंसे सिरोहीके चहुवान सर्दारोंने उसको छीनलिया, और अनहिलवाड़ेका सोलंखी ख़ानदान क़ाइम होनेपर चन्द्रावतीके राजा उनके मातहृत होगये- (ई० ९४२) चन्द्रावती और आबूके खंडहरोंसे मालूम होता है, कि ग्यारहवीं और बारहवीं सदीमें वहांपर दौलत वग़ैरहकी बड़ी तरक़्क़ी थी. ११९७ ई० में यहांके राजा प्रहलाद और धारावर्षने, जो अनहिलवाड़ाके दूसरे भीमदेवके मातहृत थे, आबूके नज़्दीक कैम्प जमाकर कुतुबुद्दीन एबकके बख़िलाफ़ गुजरातमें जानेकी कोशिश की; लेकिन् उनको शिकस्त खाकर भागना पड़ा. बादशाहके हाथ बड़ी दौलत आई, वह आगे बढ़कर अनहिलवाड़े तक पहुंचा, और क़ब्ज़ह करलिया. इससे मालूम होता है, कि उसने रास्तेमें चन्द्रावतीको भी लूटा- (देखो मिरात अहमदी). कुतुबुद्दीनकी चढ़ाई सिर्फ़ चन्द-रोज़ा और लूटनेकी ग़रज़से कीगई थी, और धारावर्षका बेटा उसके बाद मालिक होगया; वह या उसका जानशीन १२७० ई० के क़रीब नाडोलके चहुवानोंसे शिकस्त

(१) कर्नेल टॉडने नानकोट, अर्बुध, धात, मन्दोदरी, खेरालू, पारकर, लोदरवा, और पूंगल, आठ गढ़ोंके नाम लिखे हैं.

जाकर खारिज हुआ; और १३०० ई० के क़रीब देवड़ा चहुवानोंने उसे निकाल दिया. तब १३०४ ई० (१) में अलाउद्दीनने आख़िर मर्तबह गुजरातको फ़त्ह किया, और चन्द्रावती व अनहिलवाड़ाकी बिल्कुल स्वाधीनता जाती रही. फिर सौ वर्षमें उसकी बर्बादी पूरी हुई. पन्द्रहवीं सदी ई० के शुरूमें सिरोहीकी बुन्याद पड़नेसे चन्द्रावतीमें हिन्दुओंकी राजधानी नहीं रही."

चन्द्रावतीके खंडहर ज़ियादहतर ग्यारहवीं और बारहवीं सदीके हैं.

अमरावती- एक पुराने शहरका खंडहर ऋषिकृष्णके धामके पास आबूके नीचे पूर्व तरफ़ है. यहां एक मूर्ति बदर कुल देवीकी है, जिसके पीछे एक मन्दिर है, जिसे राठौड़ अमरसिंहका बनवाया हुआ बताते हैं.

भाखर पर्गनेका उपलागढ़ }- उदयपुरके महाराणा कुम्भाकी बनवाई हुई गढ़ीके खंडहर हैं.

साठ पर्गनेका विरमन }- यहांपर कई बड़ी बड़ी इमारतों व जैन मन्दिरोंके खंडहर पाये जाते हैं. इस शहरको चन्द्रावतीके समयका प्राचीन और बड़ा शहर बताते हैं.

बारठ पर्गनेकी लाखावती नगरी }- कोह आबूके दामनमें अनाद्राके पास यह एक पुरानी गढ़ी थी, जिसके चिन्ह अब तक मौजूद हैं; कुछ दूर पहाड़ियोंकी नालमें देवांगनजीका स्थान है, जहां कई प्राचीन मन्दिरोंके चिन्ह हैं; इसके पास ही पहाड़ियोंपर करोड़ीध्वजका पुराना मन्दिर है.

चोरा पर्गनेका कोलर }- एक पुरानी गढ़ीका बचा हुआ हिस्सह सारणेश्वरके मन्दिरके पास है, जिसे लोग मेवाड़के महाराणा कुम्भाका बनवाया हुआ बताते हैं.

आबू पहाड़का भूगोल सम्बन्धी बयान.

आबू पहाड़ तमाम राजपूतानहमें एक तन्दुरुस्तीका मक़ाम कहा जासक्ता है. यह एक जुदा पहाड़ राजपूतानहके सब पहाड़ोंसे बलन्द क़रीब क़रीब रियासत सिरोहीके बीचमें वाके है, और इसको एक घाटी, क़रीब १५ मील चौड़ी, जिसमें होकर पश्चिमी बनास बहती है, अर्वली पहाड़से जुदा करती है. इस पहाड़का

---

(१) आबूकी एक प्रशस्तिमें सन् १३३८ ई० तक चन्द्रावतीके एक चहुवान राजाका मौजूद होना लिखा है.

आकार लम्बा और तंग है, चोटीपर लम्बाई १४ मीलके लगभग और चौड़ाई २ से ४ मील तक है; आधारकी लम्बाई २० मीलके अनुमान है. यह पहाड़ उत्तर और उत्तरपूर्व तथा दक्षिण व दक्षिणपश्चिम दशामें उत्तर अक्षांश २४° ३३′ और पूर्व देशान्तर ७२° ४४′ में फैला हुआ है, जिसकी ख़ास चोटी 'गुरू शिखर' इसके उत्तरी सिरेके पास समुद्रकी सत्हसे ५६५३ फ़ीटकी ऊंचाईपर, और आरोग्यता स्थान दक्षिण पश्चिमी सिरेके पास समुद्रकी सत्हसे क़रीब क़रीब ४००० फ़ीट और नीचेके मैदानोंसे ३००० फ़ीट ऊंचा है.

पहाड़की शक्ल- पहाड़की शक्ल एक अ़जीब तरहकी है, चोटीका ज़ियादह हिस्सह चटानी ऊंचे टीलोंसे घिरा हुआ है, जो बहुतसी जगह पहाड़ियों, घाटियों और ढालू हिस्सोंमें टूटा हुआ दिखाई देता है; और एक तरहका पहाड़ी ज़िला बन जाता है; अक्सर हिस्सोंमें दरारें भी हैं, जिनमेंसे नीचेके मैदान दिखाई देते हैं. इस पहाड़की कुद्रती सूरत ऊंची है, ढाल बहुत खड़े हैं, जिनमें ख़ास पश्चिमी और उत्तरी तरफ़, पूर्व और दक्षिणमें बाहरकी तरफ़का सिल्सिलह कई शाखोंमें तक्सीम होगया है, जिनके दर्मियान कई गहरी घाटियां (१) हैं. पहाड़ीकी चोटीके किनारे किनारे साइनाइट पत्थरके बड़े बड़े गोल ढोंके गुम्बज़की तरह बड़े खूबसूरत दिखाई देते हैं; कहीं कहीं ये पत्थर ऐसे बेलाग रक्खे हुए मालूम होते हैं, गोया अभी गिर जाएंगे. बाज़ जगहोंमें चोटियोंके मुहरे गोल खोहों व सूराख़ोंके मुवाफ़िक़ बनगये हैं, जो एक बहुत ही बड़े बनावटी स्पंजकी तरह मालूम होते हैं. पहाड़की चोटीके पासका अग्र भाग प्रायः कन्दराके समान है, जो ३०० या ४०० फ़ीटकी ऊंचाई तक सीधा खड़ा हुआ है. उत्तरकी तरफ़ आबू व सिरोहीका पहाड़ी सिल्सिलह एक तंग नालसे जुदा होता है; पश्चिमकी तरफ़ लहरकी सूरत वाला ज़मीनका एक टुकड़ा है, जो मारवाड़के मैदानों और कच्छकी खाड़ीमें मिलगया है, मेवाड़की सीमाके किनारेकी पहाड़ियोंके बड़े ऊंचे सिल्सिलेसे टूटा हुआ है; पूर्वकी तरफ़ बनासकी घाटी आबू पहाड़को अर्वलीसे जुदा करती है; दक्षिणमें कई शाखें कुछ दूर मैदानोंमें चली गई हैं, जो यहां जुदा जुदा पहाड़ियोंमें तक्सीम किया गया है. आबूके अन्दरूनी हिस्सेकी कैफ़ियत देखनेके लाइक़ है; पहाड़ियों व घाटियोंका सिल्सिलह वार एक दूसरेके बाद चला जाना, कई बड़ी भारी भारी सिफ़ेद व सियाह कुद्रती

---

(१) पूर्वकी तरफ़वाली एक घाटीमें गाड़ीकी सड़क बनी है, जो 'ऋषिकृष्ण' मक़ामसे आबूके ऊपर तक चलीगई है.

चटानोंका एक अजीव अन्दाज़से वाके होना, दरख़्तों व छोटे छोटे पौदोंकी सब्ज़ी वगैरह चीज़ें देखने वालेके दिलको तरोताज़ा करदेती हैं. बाज़ बाज़ मक़ामोंपर जंगल व दरख़्तोंके कट जाने व उजाड़ होजानेके सबब यह कैफ़ियत जाती भी रही है, जो पहिले देखनेके योग्य थी. किसी किसी घाटीमें पानीके झरनों और बहावसे भी पहाड़ शोभायमान है, लेकिन् आबूपर यह शोभा ज़ियादह नहीं है; क्योंकि जंगलोंके कट जानेसे कई नदियां सूख गई हैं, परन्तु बर्सातके मौसममें और उसके कुछ अर्से बाद तक झरनोंका बहाव शुरू होने व अनेक प्रकारकी वनस्पति जमनेपर अच्छी कैफ़ियत रहती है. कई एक सोते भी हैं, जिनमेंसे 'ऋषिकृष्ण' घाटीके सिरेपर हेतमजीके नीचे बहनेवाला बर्सातके दिनोंमें बहुत ही दिलचस्प दिखाई देता है. आबू पहाड़के पानीका बहाव ज़ियादहतर पूर्वकी तरफ़ बनासकी घाटीमें है, जिसका सबब पश्चिमकी तरफ़ पहाड़का ज़ियादह ऊंचा होना पायाजाता है.

झील व तालाब- आबूपर कई झीलें व तालाब हैं; उड़ियाके पास वाला तालाब बर्सातमें भरजाता और गर्मीमें खुश्क होजाता है, और क़रीब क़रीब यही हाल तमाम झीलोंका है. एक नखी तालाब ही मश्हूर है, जो पानीकी एक खूबसूरत चादर आध मीलके क़रीब लम्बी और चौथाईके लग भग चौड़ी आबूके दक्षिण पश्चिमी कोणपर शहरके पास सत्ह समुद्रसे ३७७० फ़ीटकी ऊंचाईपर वाके है, जिसकी औसत गहराई २० से ३० फ़ीट तक और बीचमें तथा बंधके पास १०० फ़ीट है. यह झील एक उम्दह जगहपर पहाड़ियोंसे घिरी हुई है, जहांसे दूर दूरके मैदान एक नालेके द्वारा दिखाई देते हैं. दक्षिणकी तरफ़ रामकुंडकी पहाड़ीपर अच्छा जंगल है, वह बहुत ऊंची है; इसके ऊपर व नीचेके रास्तेपरसे झीलकी शोभा और आबूके ऊपर व नीचेकी सुन्दरता नज़र आती है. यहांके लोगोंके ज़बानी बयानके मुवाफ़िक़ इस तालाबका नाम 'नखी' इस सबबसे पड़ा है, कि महिशासुर राक्षससे पनाह लेनेके लिये देवताओंने एक गुफा ज़मीनमें अपने नाखूनोंसे खोदी थी, क्योंकि महिशासुरने ब्रह्माकी खूब सेवा करके उनको प्रसन्न किया, और सर्व शक्तिमान होकर देवताओंको मारने लगा था; लेकिन् ऊपर लिखे सबबसे इस झीलका नाम 'नखी' रक्खाजाना हमारे क़ियासमें ग़लत मालूम होता है; अल्बत्तह यह बात सहीह मालूम होती है, कि इसका बन्द चन्द्रावती नगरीमें राज्य करने वाले प्राचीन परमार वंशके राजाओंमेंसे किसीने बनवाया था.

इस पहाड़का पत्थर मकान बनानेके लिये अच्छा नहीं समझाजाता, क्योंकि ज़ियादह सख़्त होनेके सबब इसपर घड़ाई नहीं होसक्ती, और खानसे निकालते वक़्त बेमौक़ा टूट जाता है. चूनेका पत्थर यहां नहीं होता, लेकिन् ईंटें बनानेके लिये एक

उम्दह क़िस्मकी मिट्टी निकलती है; संग मर्मर भी एक दो जगह खानसे निकलता है, लेकिन् बहुत ही सख़्त होता है.

जंगल- आबूके ढाल और आधार कई तरहके दरख़्तोंके गुंजान जंगलोंसे ढकेहुए हैं, कहीं कहीं बांसके जंगल भी हैं; शहरके नज़्दीक वाली पहाड़ियोंका जंगल पानीके ज़ोरसे बहगया है, जहां सिवाय पथरीली ज़मीनके दरख़्त नज़र नहीं आता; पहिले अक्सर जंगल काटे जाते थे, जिससे पहाड़के कई हिस्सोंकी रौनक़ जाती रही, लेकिन् सन् १८६८ ई० से आबूकी चोटी और ऊपरवाले ढालोंपरके दरख़्तों व पौदोंका काटना बन्द करदिया गया है. पहाड़के आधारपर आम, जामुन, सिरस, धाव, बड़, पीपल, गूलर, एक क़िस्मका चम्पा, करोंदा, कचनार, सेमल, खाखरा, (ढाक), सिफ़ेद चंबेली, दो तरहके जंगली गुलाब और दो क़िस्मकी फूलदार बेलें, जिनमेंसे एक तो गाय बैल वग़ैरहको और दूसरी घोड़ोंको खिलाई जाती है. इनके सिवा कई तरहके फूलदार पौदे और बेलें पैदा होती हैं, और बहुतसी अंग्रेज़ी तर्कारी, फूल व फल भी उगाये जासक्ते हैं; आड़ू, नारंगी, नीबू, अमरूद, इन्जीर, शहतूत वग़ैरह ख़ूब फलते हैं.

इस पहाड़पर कई तरहके शिकारी जानवर शेर, चीता, काला रीछ वग़ैरह होते हैं; लकड़बघा, और मुश्कबिलाव भी कहीं कहीं दिखाई देते हैं; गीदड़ और लोमड़ी बिल्कुल नहीं होती. सांभर, हिरण, चीतल, साही, ख़र्गोश और कई क़िस्मके सांप, जिनमें सख़्त ज़हर होता है, पायेजाते हैं; कई तरहके तीतर, बटेर, भुजंगा, कोयल, लाल रंगकी चिड़िया, और गिद्धके सिवा कई जातिके पक्षी हैं.

आबो हवा- आबूकी आबो हवा तन्दुरुस्तीके लिये मुफ़ीद है, गर्मी सर्दी साधारण रहती है, लेकिन् कभी कभी गर्मीके मौसममें पारा ९० दरजे तक पहुंच जाता है, ताहम हवा ख़ुश्क और हल्की होनेके सबब ऐसी गर्मी नहीं पड़ती, कि जिसको अंग्रेज़ लोग न सह सकें; दक्षिण पश्चिमको बहने वाली हवा गर्मीको घटाती है. रातको और सुब्हके वक्त़ हमेशह सर्दी पड़ती है, जो बदनको तरोताज़ा रखती है. बारिश अच्छी होती है, लेकिन् किसी साल ज़ियादह और किसी साल कम, जिसका सालानह औसत ६८ इंच मानागया है. मौन्सून याने मौसमी हवाके पीछे थोड़े दिन तक किसी क़द्र गर्मी होजाती है; बर्सात ख़त्म होनेके बाद बुख़ार और जड़य्या बुख़ार अक्सर देशी लोगोंको आने लगता है. जाड़ेकी फ़स्लमें डिसेम्बर महीनेसे मार्च तक आबोहवा बहुत साफ़ और तन्दुरुस्तीको बढ़ाने वाली रहती है; रातको ओस ज़मीनपर गिरती और किसी किसी झील या तालावमें पतला बर्फ़ भी

जमजाता है. अगर्चि आबूकी चोटीपर भरने और तालाव, जिनमें सत्ह तक पानी पायाजावे, बहुत ही कम हैं, क्योंकि चटानोंकी रोकसे पानी सत्ह तक नहीं पहुंच सक्ता, लेकिन् पहाड़की नीची घाटियोंमें कुएं खोदनेपर उम्दह पानी २० या ३० फ़ीटकी गहराईपर निकल आता है; जो कुएं घाटियोंके बहुत नीचे हिस्सोंमें गहरे खोदेजाते हैं, उनमें पानी ज़ियादह दिनों तक रहता है, बाक़ी कुओंका पानी गर्मीके ख़त्म होते होते खुश्क होजाता है.

आबूपर अक्सर ग़ैर मुक़र्रर वक्तोंपर ज़ल्ज़ला (भूकम्प) आता रहता है, जिसकी आवाज़ बड़े ज़ोरसे होती है; लेकिन् धक्का हल्का होता है. यहांके देशी लोगोंकी ज़बानी सुनागया है, कि संवत् १८८१ व ८२ (सन् १८२४ व २५ ई०) में बड़ा ज़ल्ज़ला आया था, जिससे मकानों व देलवाड़ेके मन्दिरोंको नुक़्सान पहुंचा; और इसी क़िस्मका ज़ल्ज़ला सन् १८४९ व ५० और १८७५ ई० में भी आया; पिछलेका धक्का १५० मीलके फ़ासिलेपर जोधपुर तक पहुंचा.

मुल्की हाकिमों और फ़ौजी अफ़्सरोंके रहनेकी जगह - लेफ़्टिनेंट कर्नेल जेम्स टॉड, साबिक़ पोलिटिकल एजेन्ट पश्चिमी राजपूतानह, जो 'टॉडनामह राजस्थान' नामी किताबके बनानेवालेके नामसे ज़ियादह मश्हूर हैं, वही पहिले अंग्रेज़ थे, जिन्होंने आबूपर क़ियाम किया; और उसको ज़ियादह प्रसिद्ध किया.

टॉड साहिबके आनेके वक्त विक्रमी १८७९ [हि० १२३७ = ई० १८२२] से लेकर विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] तक आबूमें सिरोहीके पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट और जोधपुर लीजनके अफ़्सर गर्मीमें कुछ अर्से तक रहा करते थे. सन् १८४० ई० में अंग्रेज़ी बीमार सिपाही गर्मीके दिनोंमें रहनेके लिये आबूपर भेजेगये; विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] में बारक और अस्पताल बनवाये गये, और उसी वक्तके लग भग एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह मए अपने अमले व राजपूतानहकी रियासतोंके वकीलोंके वहां रहने लगे. इसी तरह दिन दिन यह मक़ाम ज़ियादह आबाद हुआ; अब यहांपर एक मकान रेज़िडेन्सीका, ४० बंगले दफ़्तरके अमले व दूसरे अंग्रेज़ों तथा रियासती वकीलोंके रहनेके लिये बनगये हैं; फ़ौजी अफ़्सरों और सिपाहियोंके रहनेका मकान २०० से ज़ियादह आदमियोंकी गुंजाइशका है. जाड़ेके दिनोंमें एजेन्ट गवर्नर जेनरल मए अपने अमलेके दौरा करनेको चले जाते हैं, तब बंगले वग़ैरह मकानात ख़ाली होजाते हैं. इस मौसममें गोरोंकी पल्टनका ज़ियादह हिस्सह डीसाको चलाजाता है.

पाठशाला और गिर्जाघर - यहांकी पाठशालाओंमेंसे सर हेनूरी लॉरेन्सका

बनवाया हुआ 'लॉरेन्स स्कूल' सबसे ज़ियादह मश्हूर है, जो राजपूतानह व पश्चिमी हिन्दुस्तानकेगोरे सिपाहियोंकी औलादको तालीम देनेकी ग़रज़से विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में जारी कियागया था. इस पाठशालामें पढ़नेवाले लड़के लड़कियोंका औसत ७० से ८० तक है, जिनको उम्दह तालीम दीजाती है; और स्कूलका इन्तिज़ाम बहुत अच्छा है. एक गिर्जाघर, एक तारघर और डाकख़ानह व अस्पताल भी वहां है.

आबादी - आबूपर कभी मर्दुम शुमारी नहीं हुई, और पहिलेकी आबादीकी निस्बत पूरा पूरा सहीह बयान नहीं होसक्ता; लेकिन् इस बातपर भरोसा किया जासक्ता है, कि चन्द सालसे 'लोक' क़ौमके लोगोंका शुमार बढ़गया है, जो यहांके ख़ास किसान हैं. आबूपर ज़ियादह आबादी नहीं है, सिर्फ़ छोटे छोटे १५ गांव हैं, जिनमें ४७३ घरकी बस्ती है; और छावनी वाले बाज़ार और खेड़ोंमें १७४ घर हैं. इन सबको मिलाकर ६११ घर होते हैं. इस हिसाबसे अगर फ़ी घर पांच आदमी समझेजावें, तो ३०५५ हुए, और इस तादादमें पण्डे व पुजारी (१००), राज्यके सिपाही व अह्लकार (५०), अंग्रेज़ी सिपाही मए उनके नौकरोंके (१००) और लॉरेन्स स्कूलके तालिबुइल्म क़रीब (१००) के जोड़ देनेपर ३४०५ आदमी हुए. गर्मी व वर्सातके दिनोंमें एजेएट गवर्नर जेनरल व पोलिटिकल एजेएट मारवाड़का डेरा और दूसरे दफ़्तर तथा डीसासे कुछ सिपाही आजानेसे आबूपर क़रीब ४५०० आदमियोंकी बस्ती होजाती है. आबूके गांवोंके बाशिन्दे अक्सर एक मिश्रित जातिके लोग हैं, जो अपनेको 'लोक' कहते और राजपूत बतलाते हैं; लेकिन् उनकी पैदाइशका हाल सहीह तौरपर मालूम नहीं, कि वे लोग कहांके क़दीम बाशिन्दे और किस क़ौमसे हैं. लोगोंके ज़बानी बयानसे ऐसा पायागया है, कि जब अनहिलवाड़ेके मश्हूर सौदागर बिमलशाहने (१) आबूपर ऋषभदेवका प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया, तो बहुतसे राजपूत नीचेसे आये, और वहांके क़दीम बाशिन्दोंकी लड़कियोंसे विवाह करलिया; इसका कुछ हाल मालूम नहीं, कि क़दीम बाशिन्दोंकी जाति क्या थी, लेकिन् हमारे क़ियाससे उन लोगोंका भील क़ौम होना पायाजाता है. किसी क़द्र भील, महाजन (बनिया), राजपूत, ब्राह्मण, माली, दर्ज़ी व फ़क़ीर गांवोंमें रहते हैं; लेकिन् मुल्की और फ़ौजी मक़ामोंके बाज़ारोंमें और भी कई जातिके लोग हैं.

खेती - आबूपर बोयेजाने वाले अनाज बहुत कम हैं; बर्सातमें मक्की, उड़द,

---

(१) टॉड साहिबने अपने सफ़र नामेमें लिखा है, कि यह मन्दिर विमलशाहने परमार राजा धारावर्षके समयमें बनवाया, जो विक्रमी १२६५ [हि० ६०५ = ई० १२०९] के लग भग होगा.

और सामा बोयाजाता है; और वालरा खेतीमें (जो पहाड़के ढालमें जंगलके हिस्सोंको काटनेपर बर्सातके बाद सूख जानेसे राखमें बोई जाती है) तीन क़िस्मका छोटा अनाज पैदा होता है, जिसको माल, संवलाई और करांग कहते हैं. इस खेतीको आबूके लोक और भील ज़ियादह पसन्द करते हैं. वर्सातके मौसममें आलू बहुत बोये जाते हैं, और डीसाको भेजे जाते हैं. जाड़ेकी फ़स्लमें जव और गेहूंकी खेती होती है.

ज़मीनका पट्टा- ख़ास ज़मीनका अधिकार सिरोहीके हाकिमको है; लेकिन् पीवल (सींची जानेवाली) ज़मीनपर लोक लोग अपनी बापोतीका हक़ रखते हैं, और अपनी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ ज़मीन मोल ले सक्के, बेच सक्के और गिर्वी रख सक्के हैं. रांखड़ (न सींची जानेवाली) ज़मीनपर उनका ऐसा हक़ नहीं रहता, वीड़ों (घासका जंगल) का सबसे ज़ियादह हिस्सा राजका और किसी क़द्र लोकोंका है; बापके मरने बाद, जितने उसके लड़के हों, उनमें उसकी ज़मीन तक़्सीम करदी जाती है.

आबूके लोकोंको हासिल बहुत कम देना पड़ता है; वालरा खेतीके सिवा सब वर्सातके अनाज मुआफ़ हैं. सियाली फ़स्ल (जव, गेहूं) के हासिलमें पैदावारकी क़िस्मसे (जव व गेहूं दोनोंके एवज़) सिर्फ़ जव लिया जाता है, जो बोये जानेवाले बीजका आधा हिस्सह होता है. तमाम आबूकी तह्सीलके लिये, एक कामदार और एक नाइब है, और दो थानेदार एक उत्तरी हिस्सेके वास्ते और दूसरा दक्षिणी विभागके लिये रहता है. लोग हरएक गांवकी तह्सील गांवके ग्रामी (गामेती) के ज़रीएसे करते हैं. लोक लोगोंसे हासिलके सिवा नीचे लिखे कर और लिये जाते हैं:- चराईका कर, जो वर्सातके बाद हर साल फ़ी घर ऽ२ सेर घी लियाजाता है; घर गिनती, घर पीछे ॥) से लेकर रु० १) तक. महाजन लोगोंसे हर छः महीने बाद घर गिनतीका रु० १) से रु० २) तक कर वुसूल होता है. राजपूत, भील, और सरगरा लोगोंका कर मुआफ़ है.

सड़कें- शहरके पास और उसके अन्दर वाली सड़कें अच्छी हैं, और बहुतसी हलकी गाड़ियोंके आने जानेके लाइक़ हैं; ख़ास सड़क दुमानी घाट तक गई है, जिसको यहांके लोग "सूर्य्यास्त विन्दु" कहते हैं, जो अनाद्राके ऊपर और आबूके पश्चिमी तरफ़के मैदानोंके ऊपर है. बहुतसी सड़कें सवारोंकी आमदो रफ़्त की हैं, जिनमेंसे ख़ास ख़ास यहांपर लिखी जाती हैं:- १- उड़िया तक देलवाड़ेमें होकर पांच माइल, जिसकी एक शाख़ अचलगढ़को जाती है. २- आबूकी चोटीतक, गोमुखके ऊपर. ३- देलवाड़ा तक, ईंटके मैदानोंमें होकर, जिसको "लम्बी दौड़" (घेरा) कहते हैं. ४- झीलके ऊपरकी सड़क, "सूर्य्यास्त विन्दु" तक. ५- नीचली

सड़क, जो झीलके किनारे किनारे बांध और अनाद्राकी सड़क तक जाती है. मैदानसे पहाड़पर जानेका ख़ास रास्तह अनाद्राकी पुरानी सड़क है, लेकिन् वहांके बाशिन्दोंके आने जानेके बहुतसे रास्ते हैं. एक गाड़ीकी सड़क शहरसे 'ऋषिकृष्ण' तक ११ मीलके अनुमान आबूके पूर्वी आधारपर तय्यार होरही है.

मेले तमाशे – आबूपर कोई मश्हूर मेला नहीं होता, लेकिन् वहांपर जैन मतके मन्दिर प्राचीन और ज़ियादह होनेके सबब अक्सर यात्री लोग आया करते हैं; ज़ियादहतर गुजराती यात्रियोंके गिरोह मए सिपाहियों वगैरहके पूरे ज़ाबितेसे आते हैं, जिनमें बहुधा जैन मतके धनवान महाजन होते हैं. एक महात्म जो 'संगत' कहलाता है, हर बारहवें वर्ष होता है; उस वक्त हज़ारों पुजारी और यात्री लोग पहाड़पर जमा होते हैं. इस मेलेपर सिरोहीके राव महाजनोंसे टैक्स लिया करते हैं, जो दूसरे ज़िलोंके सुनारों व कलालों वगैरहसे भी वुसूल होता है.

मन्दिर व देवस्थान – अरबुद (१) याने बुद्धिका पर्वत, जो हिन्दुओं और जैनियोंके मतके अनुसार बड़ा पवित्र समझा जाता है, और जो प्राचीन समयसे देवताओं और ऋषियों (२) व मुनियोंके रहनेकी जगह माना गया है; आबूपर बहुतसे मन्दिर व देवस्थान हैं, लेकिन् पुराने मन्दिर अक्सर खंडहर होगये हैं. टॉड साहिबने आबूको हिन्दुस्तानका ओलिम्पस (Olympus.) (३) लिखा है, और कई उम्दह उम्दह मन्दिरों वगैरहका हाल अपने ईसवी १८२२ [वि० १८७९ = हि० १२३८] के सफ़रनामहमें (४) दर्ज किया है.

आबूपर निम्न लिखित मक़ाम ज़ियादह मशहूर हैं:– गुरूशिखर, अचलेश्वर, गौमुख, और देलवाड़ा.

गुरूशिखर आबूकी सबसे बलन्द चोटी है, जो पहाड़के उत्तरी सिरेके पास मुल्की हाकिमोंके रहनेकी जगहसे क़रीब १० मीलके फ़ासिलेपर वाके है. यहां एक गुफामें चटानपर दत्तात्रेयका चरण और उसी गुफाके एक दूसरे कोनेमें 'रामानन्द' के चरण बने हुए हैं, जिनको लोग पूजते हैं.

अचलेश्वरका मन्दिर, जो महादेवके निमित्त बना है, दर्शन करनेका मकान है; इसके आसपास कई छोटे मन्दिर हैं. अचलेश्वर महादेव आबूकी रक्षा करने

(१) यह शब्द संस्कृत अर = पर्वत और बुद्ध = बुद्धिसे निकला है.

(२) ऋषि लोग बड़े महात्मा थे; ख़ासकर पुराणोंमें सातका ज़िक्र है, जिनमेंसे विश्वामित्र और वशिष्ठका नाम यहांपर कई वृत्तांतोंमें सुनाजाता है,

(३) यह पहाड़ ग्रीस (यूनान) देशमें देवताओंके रहनेका मक़ाम माना जाता था.

(४) वेस्टर्न इन्डियाके ७४ और आगेके पृष्ठोंमें देखो.

वाले देवता कहे जाते हैं. इन मन्दिरोंकी तामीरका कोई साल संवत् नहीं मिला, सिर्फ़ एक लेख आदिपालकी मूर्तिकी चरण चौकीके नीचे यह लिखा है, कि "परमार 'श्री धारावर्ष' ने अचलेश्वरके मन्दिरकी मरम्मत कराई", लेकिन् संवत् मितीके अक्षर मिटगये हैं. अल्बत्तह उड़ियामें कंकूलेश्वरके एक लेखसे धारावर्षका विक्रमी १२६५ [हि० ६०५ = ई० १२०९] (१) में राज्य करना पाया जाता है, जिससे मालूम होता है, कि वह संवत् १२६५ से बहुत अर्से पेश्तरका बना हुआ है. कहते हैं, कि अहमदाबादके हाकिम मुहम्मद बेगड़ाने ख़ज़ाने व मालके लालचसे मन्दिरके पीतलके नन्दिकेश्वरको तोड़ा, लेकिन् इसका बदला उसको जल्द ही मिलगया, कि जब उसकी फ़ौज पहाड़से उतरने लगी, तो उस वक़ इतने भ्रमर उड़े, कि वे लोग हथियार छोड़कर भागगये. पश्चिमकी तरफ़ मन्दिरोंके साम्हने चम्पा व आमके पेड़ोंका एक उम्दह कुंज, और उसके आगे एक पुराना कुंड चूने व पत्थरका बना हुआ है, जिसमें बर्सातके बाद थोड़े ही दिनों तक पानी रहता है, और जिसको टॉड साहिबने प्राचीन प्रसिद्ध अग्निकुण्ड ख़याल किया था; लेकिन् यहांके लोग उसको दक्षिणकी तरफ़ कुछ नीचेको एक छोटी झीलकी जगहपर होना बयान करते हैं. इस कुंडके दूसरी तरफ़ परमार राजा आदिपालकी एक हंसती हुई मूर्ति बनी है. कुण्डके उत्तरी घाटपर सिरोहीके राव मानसिंहकी छत्री बनी है; कहते हैं कि यह ज़हरसे मारेगये, तबसे सिरोहीके देवड़ा राजाओंको आबूपर रहना तलाक़ होगया.

अचलगढ़– अचलेश्वरके मन्दिरके पीछे एक पहाड़ीपर परमारोंका प्राचीन गढ़ 'अचलगढ़' है, जो विक्रमी १५०७ [हि० ८५४ = ई० १४५०] के क़रीब महाराणा कुम्भाका बनवाया हुआ कहा जाता है; शायद महाराणाने गढ़का जीर्णोद्धार कराया होगा, और किसी क़द्र बढ़ाया भी होगा, लेकिन् गढ़ बहुत बरसों पहिलेका बना मालूम होता है, अब सिर्फ़ उसके खंडहर रहगये हैं; यहांपर एक कुंड भी है, गढ़के भीतर दो मन्दिर जैनके हैं– १ ऋषभदेवका और दूसरा पार्श्वनाथका.

गौमुख– यह देवस्थान आबूकी चोटीके नीचे पहाड़ीके दक्षिणी सिरेपर है, यहां एक गायका मुंह पत्थरका बना हुआ है, जिसमेंसे बराबर साफ़ पानी निकलकर एक छोटे कुंडमें गिरता है, और कहते हैं, कि इसको विक्रमी १८४५ [हि० १२०३ = ई० १७८९] में सिरोहीके राव गुमानसिंहने बनवाया था. थोड़ी दूर आगे बढ़कर वशिष्ठ मुनिका स्थान गुंजान दरख़्तोंमें छिपा हुआ है, जिसके पास और भी कई देवस्थान हैं. वशिष्ठ मुनिकी मूर्ति काले पत्थरकी एक मन्दिरके भीतर है; मन्दिरके पास एक छत्रीमें चन्द्रा-

(१) टॉड साहिबकी बनाई हुई 'वेस्टर्न इन्डिया' किताबका ९० पृष्ठ देखो.

वतीके परमार राजा धारावर्षकी एक पीतलकी मूर्ति है. यह स्थान जंगलके सब्ज़े और दूर दूरके तालाब व घाटियोंकी कैफ़ियत दिखाई देनेके सबब बहुत ही उत्तम और रमणीय है.

अधर देवीका मन्दिर— बहुतसे मन्दिरोंके बीचमें अधर देवीका मन्दिर है, यह देलवाड़ेकी घाटीके ऊपर एक ऊंचे मक़ामपर वाक़े है, जिसकी दीवारें शहरसे दिखाई देती हैं.

देलवाड़ेके जैन मन्दिर— मश्हूर देलवाड़ेके मन्दिर, जो जैनियोंके पांच बड़े तीर्थोंमेंसे हैं, देलवाड़ा नामके एक छोटे ग्राममें हैं. यहांके लोगोंके ज़बानी हालसे यह मालूम होता है, कि यह स्थान जैन मन्दिरोंके बननेके पेश्तर शिव और विष्णुके मन्दिरोंसे सुशोभित था. पहिले यहां पंडे लोग जैनियोंको नहीं आने देते थे, लेकिन् अनहिलवाड़ाके साहूकारोंने राजा धारावर्ष परमारको बहुतसा रुपया देकर ज़मीन मोल लेली. इसपर पंडोंने राजाको शाप (बद दुआ) दिया, और उसी समयसे चन्द्रावतीका राज्य नष्ट होगया.

इन मन्दिरोंके समूहमें चार मन्दिर हैं, जिनमेंसे दो तो पिछले ज़मानेके बने हुए सादी बनावटके हैं, जिनको बने हुए क़रीब ४०० वर्षका अर्सा हुआ; बाक़ी दो, जो आबूपर बहुत मश्हूर जैन मन्दिर हैं, उनमेंसे एक तो विक्रमी १२६६ [हि० ६०६ = ई० १२०९] के लग भग विमलशाह (अनहिलवाड़ा पाटनके एक सेठ) ने ऋषभदेवका मन्दिर बनवाया, और दूसरा विक्रमी १२९३ [हि० ६३३ = ई० १२३६] के क़रीब जैन महाजन तेजपाल व वसन्तपाल, दोनों भाइयोंने पार्श्वनाथका मन्दिर बनवाया. यह दोनों मन्दिर बहुत बड़े और ऊंचे नहीं हैं, लेकिन् भीतर जानेपर उनके हर एक हिस्सेकी बनावट और खूबसूरतीको देखकर तअज्जुब होता है. इन मन्दिरोंकी ख़ास चीज़ सामान्य अठपहलू गुम्बज़ हैं, जो पोशीदह कोठरीके एक मंडपके बराबर है, जिसमें मूर्तें रक्खी हुई हैं; और उसके चारों तरफ़ गुम्बज़दार थंभे लगे हुए हैं, जिनपर बहुत उम्दह बारीक नक़ाशी कीहुई छतें हैं. तेजपाल व वसन्तपालके मन्दिरकी हाथीशालामें १० बड़े बड़े हाथी संग मर्मरके बने हुए हैं, और इनके पीछे बहुतसे स्वरूप हाथमें थैलियां लिये हुए बने हैं, जो ज़ाहिरी धर्म सम्बन्धी काम कराने वालोंकी तस्वीरें हैं; लेकिन् यह स्वरूप सार्थक हैं, जो उस वक़्का पहिराव और केश रखनेकी चाल दिखलाते हैं. यह मन्दिर शिल्प शास्त्रके अनुसार बनाये गये हैं; अगर कोई शख़्स इस विद्याका जानने वाला इन मन्दिरोंको देखे, तो शायद उसको मालूम होगा, कि ऐसे मन्दिर बहुत ही कम पाये जाते हैं.

तवारीख़.

यह राज्य चहुवान राजपूत जातिके देवड़ा राजाओंके क़ब्ज़हमें है; यह पता मुश्किलसे लग सका है, कि इस ज़िलेपर चहुवानोंके पहिले किस किस घरानेके राजाओंने राज्य किया; परन्तु परमार ख़ानदानके राज्य करनेका सुबूत मिलता है; इन राजाओंका ज़ियादह पता अबतक हमको नहीं मिला, सिर्फ़ एथ्वीराजरासा में एथ्वीराजके सावन्तोंमें जैत परमार और उसके बेटे सलख परमारकी एथ्वीराजके साथ लड़ाइयोंमें बहादुरी दिखलाई है; और विक्रमी ११३६ [हि० ४७१ = ई० १०७९] में एथ्वीराज चहुवानने, जो सारूंडा गांवमें शिहाबुद्दीन गोरीको शिकस्त दी, वह फ़त्ह जैत परमारके ज़रीएसे हुई; और उसके बाद जैत परमारकी बेटी ईंछिनीके साथ एथ्वीराजका विवाह होना वगैरह कथा बढ़ावेके साथ लिखी है, परन्तु यह ग्रंथ बहुत समय पीछे बनाया गया, इससे जैसी संवत्‌की ग़लती पड़ी है, वैसी इतिहासमें भी होनेका सन्देह है; क्योंकि जिन जिन प्रशस्तियोंसे हमको परमार राजाओंका कुछ हाल मिला है, उससे एथ्वीराज रासाका लेख ग़लत ठहरता है; इसलिये, कि एक प्रशस्ति जो विक्रमी १०९९ [हि० ४३३ = ई० १०४२] की वसन्तगढ़ की लान बावड़ीपर है, उसका लेख एशियाटिक सोसाइटी बंगालके जर्नल १० भाग २ में छपा है, जिसमें १ उत्पलराज उसका बेटा २ अरण्यराज, उसका बेटा ३ अद्भुतकृष्णराज, उसका पुत्र ४ श्रीनाथ घोशी, उसका पुत्र ५ महीपाल, उसका पुत्र ६ धंधुक, उसका पुत्र ७ पूर्णपाल, जिसकी बहिन लाहिनीने यह बावड़ी बनवाई थी-(देखो शेष संग्रह नम्बर ८). विक्रमी १०९९ [हि० ४३३ = ई० १०४२] तक परमार राजाओंके वंशमें सात राजा चन्द्रावती, आबू और वसन्तगढ़पर राज्य करचुके थे. आबूके परमारोंका मूल पुरुष धूमराज था. फिर विक्रमी १२८७ [हि० ६२७ = ई० १२३०] की वसन्तपाल तेजपालके जैन मन्दिरकी प्रशस्तिसे, और उसके पहिलेकी अचलेश्वरके मन्दिरकी प्रशस्तिसे (जिसका संवत् मालूम नहीं होता,) परमार राजाओंकी पिछली वंशावली साबित होती है-(देखो शेष संग्रह नम्बर ९-१०). इनमें धंधुकके बाद ध्रुवभट्ट लिखा है, जिससे पायाजाता है, कि धंधुकका पुत्र पूर्णपाल कुंवरपदेमें ही मरगया, क्योंकि उसका नाम इन दोनों प्रशस्तियोंमें छोड़दिया है. ध्रुवभट्टके बाद रामदेव हुआ, और उसके बाद धारावर्ष हुआ, उसका छोटा भाई और उसका सेनापति प्रह्लाददेव बड़ा बहादुर व विद्वान था. वह प्रशस्तिकार लिखता है, कि उसने सामन्तसिंहसे कभी शिकस्त नहीं खाई. सामन्तसिंह चित्तौड़के बापा रावलसे २३ नम्बर पर और समरसिंहसे छः पीढ़ी पहिले हुआ था; और धारावर्षका एक ताम्रपत्र विक्रमी १२३७ [हि० ५७५ = ई० ११८०] का मिला है-(देखो शेष संग्रह नम्बर ११),

और एक लेख आबूपरके ओरीया ग्राममें मिला है, जिसमें धारावर्षको दूसरे भीमदेव सोलंखीके तावे लिखा है; उसका संवत् विक्रमी १२६५ [हि० ६०४ = ई० १२०८] है- (देखो शेष संग्रह नम्बर १२). इससे प्रतीत हुआ, कि धारावर्ष विक्रमी १२३७से १२६५ [हि० ६०४ = ई० १२०८] तक चन्द्रावतीका राजा था, तो यह साबित होगया, कि पृथ्वीराज चहुवानके समयमें सलख परमार और जैत परमारको आबूका राजा लिखना गलत है; राजा पृथ्वीराजके समयमें चित्तौड़पर भी रावल समरसिंह नहीं था, उस वक्त वहां सामन्तसिंह था, जिसके साथ धारावर्षके भाई प्रह्लाददेवने लड़ाइयां की थीं, और इन लेखोंसे यह भी साबित होगया, कि आबूके राजाओंकी वंशावलीसे विक्रमी १२६५ [हि० ६०४ = ई० १२०८] तक सलख और जैत नामका कोई राजा नहीं हुआ. धारावर्षका पुत्र सोमसिंहदेव और उसका पुत्र कृष्णराजदेव लिखा है, और उसी मन्दिरके एक दूसरे लेखमें सोमसिंहका दूसरा पुत्र कान्हड़देव लिखा है, जिस लेखका संवत् विक्रमी १२९३ [हि० ६३३ = ई० १२३६] है- (देखो शेष संग्रह नम्बर १३). इन्डियन ऐन्टिक्वेरीके दूसरे भागके पृष्ठ २१६ में वॉटसन् साहिब लिखते हैं, कि कान्हड़देवके बाद चन्द्रावतीका आख़िरी परमार राजा हुण (१) था. इससे मालूम होता है, कि वह सोमसिंह या कान्हड़देवका पुत्र होगा; परन्तु यह निश्चय होगया, कि विक्रमके तेरहवें शतकमें आबूके राजा परमार वंशके थे; अल्बत्तह यह बात प्रसिद्ध है, कि परमारोंसे यह मुल्क चहुवानोंने लिया.

चहुवान उन चार क्षत्रियोंके वंशोंमेंसे हैं, जिनको बशिष्ठ ऋषिने अग्निकुंडसे निकाला था; यह कथा बूंदीकी तवारीख़में लिखी गई है- (देखो पृष्ठ १०१).

उसके बाद देव रावके नामसे देवड़ा कहलाये, इसके समय और पीढ़ियोंमें बहुत इख़्तिलाफ़ है; नैनसी महता लिखता है, कि १ मालवाहन, २ जैत्रराव, ३ अंबराव नगोगो भाई, ४ दलराव, ५ सिद्धराव, ६ राव लाखण, ७ बल, ८ सोही, ९ महिराव, १० अनहल, ११ जीदराव, १२ आसराव, इसके घरमें देवीराणी होकर रही, जिसके गर्भसे तीन बेटे पैदा हुए. देवीकी औलाद होनेसे देवड़ा कहलाये. आसरावका बेटा १३ आल्हण, १४ कीतू, १५ महणसी, १६ बीजड़, इसके पांच बेटे थे. और यह लोग गूढ़ा बांधकर गुज़र करते थे. चहुवानोंने आबूके परमारोंको बेटियोंकी शादी करना क़बूल करके बुलाया; जब वे लोग विवाह करनेको आये, तब उनको दग़ासे मारकर चहुवानोंने विक्रमी १२१६ माघ कृष्ण १ [हि० ५५४ ता० १६ ज़िल्हिज = ई० ११५९ ता० २८ डिसेम्बर] को आबूका क़िला लेलिया; लेकिन् यह

(१) इस बातमें शुब्हः मालूम होता है.

बात गलत है, क्योंकि विक्रमका तेरहवां शतक पूरा होने तक परमार राजाओंका राज्य प्रशस्तियोंसे ऊपर साबित होचुका है, और इसके बाद भी विक्रमी १३७७ [हि० ७२० = ई० १३२०] की एक प्रशस्ति अचलेश्वरके मन्दिरमें मिली है- (देखो शेष संग्रह नम्बर १४), जिसमें चहुवान लुंभराजने चन्द्रावती और आबू लेलिया, ऐसा लिखा है. उसके पूर्वजोंके नाम इस तरह लिखे हैं- माणिक्यराज, लक्ष्मणराज, अधिराज, सोहीराज, सिन्धुराज, आसराज, आनन्दराज, कीर्तिपाल, समरसिंह, उदयसिंह, मानसिंह, प्रतापसिंह, दशस्यंदन (बीजड़), लावण्यकर्ण, लुंभा; इन्होंने आबू और चन्द्रावतीका राज्य परमार राजाओंसे लेलिया. इसका पुत्र तेजसिंह था, जिसका कान्हड़देव और उसका सामन्तसिंह- (देखो शेषसंग्रह नम्बर १५).

नैनसी महताका लेख इन प्रशस्तियोंसे नहीं मिलता. वह लिखता है, कि बीजड़के बाद १७ तेजसिंह आबूका राव हुआ. १८ लुंभा, १९ सलखा, २० रिणमल्ल, २१ सोभा, २२ राव सहसमल्ल. इन्होंने सरणवा (१) नामी पहाड़के पास विक्रमी १४५२ वैशाख कृष्ण २ [हि० ७९७ ता० १६ जमादियुस्सानी = ई० १३९५ ता० ७ एप्रिल] (२) को शहर आबाद करके उसी पर्वतके नामसे सरणवाही नाम दिया, जिसको समयके बीतनेपर लोग 'सिरोही' कहने लगे.

इसके बाद २३ राव लाखा हुआ, जिसने लाखेलाव तालाब बनवाया. २४ राव जगमाल, २५ राव अखेराजके २६ बड़ा बेटा रायसिंह और छोटा दूदा एकके बाद दूसरा गद्दीपर बैठा.

राव लाखाके बेटा १ जगमाल, २ हमीर, ३ शंकर, ४ उदयसिंह था; जब राव लाखाके बाद जगमाल गद्दी पर बैठा, तो उसके भाई हमीरने राज्यका विभाग करना चाहा, जिसपर आपसमें बहुत लड़ाइयां हुईं, आख़िरकार जगमालके हाथसे हमीर मारा गया.

जगमालके बाद राव अखेराज सिरोहीका मालिक कहलाया, जिसके वक्तकी प्रशस्ति विक्रमी १५८९ [हि० ९३९ = ई० १५३२] की मिली है- (देखो शेष संग्रह नम्बर १६), और उसने जालोरके पठानोंको गिरिफ्तार किया; बाद उसके रायसिंह सिरोहीका राव हुआ, उसने मेवाड़ और मारवाड़के राजाओंकी फ़ौजोंमें बड़ी बहादुरियां दिखलाईं; चारण माला आसियाको करोड़ पशावमें खेण गांव दिया, जिसमें

---

(१) सरणवाका अर्थ सरणा अर्थात् पनाहका पहाड़ है, जिसमें दुश्मनोंके भयसे पनाह लीजावे.

(२) संवत् १४५२ की जगह बड़वा भाटोंकी पोथियोंमें संवत् १४६२ और १४८२ भी लिखा है, परन्तु हमने नैनसी महताकी पोथीसे मूलका संवत् लिखा है.

३०० रहट चलते हैं; और अब तक वह उसकी औलादके कुब्ज़ेमें है. दूसरा करोड़ पशाव चारण पत्ता कलहटको दिया, जिसमें गांव मांडासण गुजरातकी सीमापर उदक करदिया. यह राव दातारीमें बड़ा मश्हूर गिनाजाता है. भिन्नमालमें बिहारी पठानोंका एक थाना था, जिनपर रायसिंहने हमलह किया; उस वक़ एक तीर लगनेसे वह मरगया; उसके साथके राजपूत लाशको कालधरीमें लेआये, और वहीं दाग़ दिया. रायसिंहने मरते समय कहा, कि मेरा बेटा उदयसिंह बच्चा है, इसलिये भाई दूदाको सिरोहीकी गद्दीपर बिठादेना चाहिये, यह उदयसिंहकी पर्वरिश करेगा. सब सर्दारोंने इस बातको कुबूल किया; परन्तु दूदाने कहा, कि उदयसिंह गद्दीका मालिक है, जबतक वह बड़ा हो, मैं रियासतके कामको संभालूंगा; और इसी तरह नेक निय्यतीसे उसने काम चलाया.

जब दूदा मरने लगा, तो उसने उदयसिंह और दूसरे सर्दारोंसे कहा, कि मेरे बेटे मानसिंहको लोहियाना गांव जागीरमें देकर उदयसिंह सिरोहीकी गद्दीपर बैठे; यही बात अमलमें आई; एक वर्षके बाद उदयसिंहने बचपनकी अदावतके कारण मानसिंहको लोहियानेसे निकाल दिया; उसके राजपूतोंने दूदाकी खैरख्वाही बतलाकर बहुत मना किया, लेकिन् रावने एक भी न सुनी; मानसिंह महाराणा उदयसिंहके पास चलागया, जिसको वहां बरकाण बीझेलावका पट्टा मिला. उदयसिंह शीतलाकी बीमारीसे मरगया, और मानसिंह सिरोहीका मालिक हुआ; इसके समयकी एक प्रशस्ति विक्रमी १६३२ [हि० ९८३ = ई० १५७५] की मिली है- (देखो शेष संग्रह नम्बर १७). यह हाल तफ्सीलवार महाराणा उदयसिंहके बयानमें लिखागया है- (देखो पृष्ठ ६५).

मानसिंहके गद्दी बैठनेपर जोधपुरके राव गांगाकी बेटी चंपाबाईने, जो राव रायसिंहको ब्याहीगई थी, और जिसके गर्भसे उदयसिंह पैदा हुआ था, मानसिंहको ललकारकर कहा, कि मेरे बेटे उदयसिंहकी स्त्री गर्भवती है, इसलिये तुझको गद्दीपर नहीं बैठना चाहिये, तब मानसिंहने उदयसिंहकी गर्भवती स्त्रीको मारडाला. (विचार का स्थान है, कि मनुष्य थोड़ी ज़िन्दगीमें लोभसे कैसे कैसे अनर्थ करते हैं; अब वह मानसिंह कहां है !) राव मानसिंह बड़ा बहादुर और मुन्तज़िम था, उसने कई सर्कश कोलियोंको ताबे किया, जो बड़े फ़सादी और पहाड़ी जागीरदार थे.

पंचायण परमारको उदयसिंहने ज़हर दिलाकर मारडाला था, जिसका भतीजा कल्ला परमार रावकी सेवामें रहनेलगा, और उसने मानसिंहको कटारसे मारडाला. मानसिंहके औलाद न होनेके कारण सुल्तान भाणावतको गद्दी मिली.

राव लाखाका बेटा उदयसिंह, जिसका रणधीर, उसका भाण, उसका बेटा

सुल्तान था. सुल्तान गद्दीपर बैठा, परन्तु कुल कारोबारका मुरूतार विजा देवड़ा था, जिसने रावके काका सूजा रणधीरोत को इसलिये मरवाडाला, कि वह ज़बर्दस्त आदमी रियासती कामोंमें दस्तअन्दाज़ी करने लगा. अब नामके लिये सुल्तान मालिक रहगया; विजाके भाइयोंने उसको बहुत रोका, परन्तु मुसाहिबी ऐसी चीज़ है, कि अगलोंकी दुर्दशा देखनेपर भी पिछले उसी बलामें फंसजाते हैं. राव मानसिंहकी स्त्री बाहड़मेरी को गर्भ था, जिसने अपने पीहर बाहड़मेरमें एक लड़का जना; जब देवड़ा विजा और राव सुल्तानमें अदावत बढ़ने लगी, तो विजाने मानसिंहके बेटेको गद्दीपर बिठानेको बाहड़मेरसे बुलाया, और आप उसकी पेश्वाईके लिये गया; परन्तु वह लड़का अकस्मात् मरगया, और पीछेसे राव सुल्तान भागकर रामसेन चलागया. सिरोहीकी गद्दीपर देवड़ा विजाने बैठना चाहा, परन्तु उसका यह मनोर्थ देवड़ा समरा सूराने रोका; विजा जब्रन मुरूतार बना. तब समरा और सूरा दोनों, राव सुल्तानके पास चलेगये; महाराणा प्रतापसिंह अव्वलने विजाको निकालकर अपने भानजे कल्ला मिहाजलोतको वहांका मालिक बनादिया; राव सुल्तान भी कल्लाके पास चला आया, लेकिन् राजपूतोंने आपसकी तक्रारसे कल्लाको शिकस्त देकर सुल्तानको दोबारह सिरोहीका राव बनाया. फिर बीकानेरके राव रायसिंहकी मारिफ़त सिरोहीका आधा राज बादशाही ख़ालिसेमें होकर महाराणा उदयसिंहके बेटे जग्मालको मिला. यह ज़िक्र तफ़्सीलवार महाराणा प्रतापसिंह अव्वलके हालमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ १६१).

दुबारह राव सुल्तान सिरोहीपर राज करने लगा, परन्तु महाराणा उदयसिंहके बेटे सगरने अपने भाई जग्मालका बदला लेकर सिरोहीको बर्बाद किया. यह ज़िक्र महाराणा अमरसिंह अव्वलके हालमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ २२०). विक्रमी १६६७ आश्विन कृष्ण ९ [हि० १०१९ ता० २३ जमादियुस्सानी = ई० १६१० ता० १२ सेप्टेम्बर] को राव सुल्तानका देहान्त होगया.

उसका बेटा राजसिंह गद्दीपर बैठा; वह एक भोला आदमी था, उसका दूसरा भाई सूरसिंह रियासतका हिस्सह करनेके लिये फ़साद करनेलगा, और देवड़ा भैरव-दास समरावत डूंगरोत वग़ैरह उसके मददगार होगये; राव राजसिंहकी तरफ़ देवड़ा पृथ्वीराज सूजावत रहा; दोनों तरफ़ राजपूतोंकी फ़ौजें तय्यार होकर लड़ाई हुई, जिसमें सूरसिंहने शिकस्त खाई. पृथ्वीराज रावकी मुसाहिबी करने लगा. कुछ दिनोंके बाद राव राजसिंह और पृथ्वीराजमें भी नाइत्तिफ़ाक़ी फैली. पृथ्वीराजके पास भाई और बेटोंका बड़ा गिरोह था, रियासतकी बर्बादीके ख़यालसे राव और पृथ्वीराजको महाराणा अमरसिंह अव्वलके कुंवर कर्णसिंहने उदयपुरमें बुलाकर फ़हमाइश की, परन्तु कुछ कारगर नहीं हुई; तब वे पीछे सिरोही गये. रावने देवड़ा भैरवदासको
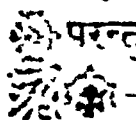
पृथ्वीराजपर घात करनेको रक्खा; राव महादेवके दर्शनको गये, और पीछेसे भैरवदासको पृथ्वीराजके कुटुंबियोंने मारडाला. यह सुनकर रावने सब्र किया, और भैरवदासकी जागीर उसके बेटे रामसिंहको दी. एक दिन पृथ्वीराज अपने भाई बेटोंको लेकर गया, और राव राजसिंहको ग़फ़लतकी हालतमें मारडाला; महल वग़ैरह घेर लिये, और राजसिंहके दो वर्षकी उम्र वाले बेटे अखेराजको मारना चाहा, परन्तु उसको राणियोंने छिपादिया; थोड़ी देरके बाद सीसोदिया पर्वतसिंह व रामा भैरवदासोत वग़ैरह रावके राजपूतोंने लड़ाई शुरू की, और एक तरफ़से दीवार तोड़कर राव अखेराजको निकाल लिया; उसके बाद हमलह करने लगे; तब पृथ्वीराज भाग निकला, और उसके कई राजपूत भाई बेटे मारे गये.

आख़िरकार विक्रमी १६७५ [हि० १०२७ = ई० १६१८] में पर्वतसिंह, रामा भैरवदासोत, चीबा, दूदा, करमसी, साह तेजपाल वग़ैरहने दो वर्षकी उम्रके राव अखेराजको गद्दीपर बिठाया; और सब राजपूतोंने मिलकर पृथ्वीराजको मुल्कसे निकाल दिया. वह देवलियामें जारहा, और सिरोहीके इलाक़ेमें फ़साद करने लगा; तब देवराजोत देवड़ा राजसिंह व जीवाको फ़रेबकी लड़ाई करके सिरोहीसे निकाल दिया. वे पृथ्वीराजके पास जारहे, और ग़फ़लतकी हालतमें उसको मारकर पीछे चले आये.

पृथ्वीराजके बेटे चांदाने अम्बावके पहाड़ोंमें रहकर सिरोहीका मुल्क खूब लूटा; आख़िरकार वह विक्रमी १७०१ [हि० १०५४ = ई० १६४४] में १२० गांवोंपर क़ब्ज़ह करके नींबजमें रहने लगा. तब विक्रमी १७१३ [हि० १०६६ = ई० १६५६] में राव अखेराजने अपने राजपूत सीसोदिया पर्वतसिंह, देवड़ा रामा, चीबा, करमसी, ख़वास केसर वग़ैरह कुल फ़ौजको लेकर नींबजको जाघेरा; चांदाने मुक़ाबलह किया, और राव अखेराजको शिकस्त दी, जिसमें रावके ५० आदमी मारेगये, १०० ज़ख़्मी हुए, और देवड़ा राघवदास जोगावत बड़ा नामी सर्दार काम आया.

इन्हीं दिनोंमें बादशाह शाहजहांके बेटोंमें तख़्तके लिये अदावत फैलने लगी, तब बड़े शाहज़ादह दाराशिकोह और छोटे मुरादबख़्शने अखेराजके नाम निशान लिखे; उनकी नक़्लें सिरोहीके दीवान 'ख़ान बहादुर' निअ़मतअ़लीख़ांने हमारे पास भेजीं, जिनको तर्जमह समेत यहां दर्ज किया जाता हैः-

१- शाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, सिरोहीके राव अखेराजके नाम.

———

(मुहरकी नक्ल)

* अल्लाह. *
* शाह बलन्द इक़्बाल, *
* मुहम्मद दाराशिकोह, *
* इब्न शाहजहां, बादशाह *
* ग़ाज़ी. *

बराबर वाले सर्दारों और कारगुज़ारोंमें उ़म्दह, राव अखेराज, शाही मिहर्बानियोंसे ख़ातिर जमा और इ़ज़्ज़तदार होकर जाने-

जो अ़र्ज़ी कि इन दिनोंमें ख़ैरख़्वाहीकी बाबत भेजी थी, पाक नज़रसे गुज़री. आ़ला हज़्रतने वह सूबह शाहज़ादह (शायद मुरादबख़्श) से उतारा, और कोई दूसरा अ़न्क़रीब बादशाही दर्गाहसे मुक़र्रर होकर वहां पहुंचेगा, और शाहज़ादहको सूबेसे अ़लहदह करेगा. उस सर्दारको चाहिये, कि हर तरह तसल्ली रखकर ख़ैरख़्वाही और

۱- نشان پادشاهزادهٔ دارا شکوه بنام راو اکهی راج
رئیس سروهی *

———

زبدة الامثال والاقران، عمدة الاشباه والاعیان،
راو اکهی راج، به عنایت شاهانه معزز و مستمال
بوده بدانند - که عرضه داشتے که دریولا مشتمل بر (خیرخواهی) بصاحب (عالمیان مآب)
ارسال داشته بوده، شرف از مطالعهٔ قدسی یافت — چون بندگان اعلیحضرت آن صوبه را از شاهزاده

वफ़ादारीमें मज़्बूत रहे, और शाही मिहर्बानियोंको अपने हालके शामिल जाने. ता० ११रबीउ़ल अव्वल, सन् १०६०हिज्री [वि० १७०६ = ई० १६५०].

२–शाहज़ादह मुरादबख़्शका निशान, राव अखेराजके नाम.

(मुहरकी नक्ल़)

* * *
* मुरादबख़्श, *
इब्न शिहाबुद्दीन मुह-
म्मद शाहजहां, साहिब
* क़िरानि सानी, *
बादशाह ग़ाज़ी.
*

बराबरी वालोंसे उ़म्दह और बिह्तर अखेराज, सिरोही़का ज़मींदार, शाही मिहर्बानियोंसे सर्बलन्द होकर जाने, जो अ़र्ज़ी, कि इन दिनोंमें फ़र्मांबर्दारी और ख़ैरख़्वाही साबित करनेके लिये

تعبیر نموده اند، و عفریب از حضرت خلافت و جهانداری (شخصے دیگر) متعین شده در آنجا خواهد رسید، و ایشان را از صوبهٔ مذکور خواهد بر آورد — می باید که آن زبدة الاشباه خاطر بهمه جهت مطمئن داشته باخلاص و بندگی ثابت باشد، و عنایات شاهانه را شامل حال خود شناسد — تحریر فی تاریخ یازدهم ربیع الاول سنه ۱۰۶۰ هجری فقط

٢ — نشان بادشاهزاده مرادبخش - بنام راو اکهے راج *

(نقل مهر)

مرادبخش، ابن شهاب الدین محمد شاهجهان، صاحب قران ثانی، بادشاه غازی
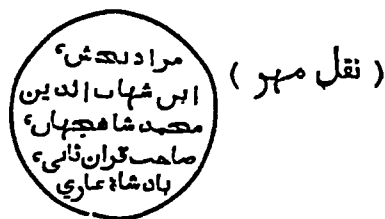
زبدة الاقران، قدوة الاعیان، اکهے راج، زمیندار سروهی، بعنایت سلطانی سرفراز و سربلند بوده بداند، که عرضداشتے که درینولا مشتمل بر رسوخ اطاعت و انقیاد و وثوق عقیدت و اخلاص بدرگاه ارسال داشته بود، بوسیلهٔ قرب یافتگان مجالس فردوس منزلت از نظر فیض اثر گذشت، و مضمون آن معروض بجناب بارگاه، و باعث مزید توجه و عنایت مادربارهٔ او بوقوع آمد — باید خاطر خود بهمه باب جمع داشته و مستمال مراحم سلطانی بوده به زودی روانهٔ حضور موفور السرور شود، که به عالی ادراک سعادت ملازمت فیض منقبت هرگونه عرض
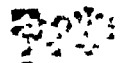
हमारी दर्गाहमें भेजी थी, बड़े दरजेके हाज़िर लोगोंके ज़रीएसे बलन्द नज़रसे गुज़री; उसके मज़्मूनसे उसके हालपर हमारी मिहर्वानीकी तरक्क़ी हुई. मुनासिब है, कि अपनी तस्कीनको हर बातसे बे फ़िक्र रखकर शाही मिहर्वानियोंके भरोसेपर जल्द हमारे यहां हाज़िर हो. बुज़ुर्ग ख़िदमतकी नेक बख़्ती हासिल करने बाद हर तरहकी अ़र्ज़ और ख़्वाहिश, जो उसके दिलमें होगी, क़ुबूल फ़र्माई जायेगी. हमारी बे हद मिहर्वानियोंको अपने शामिल हाल जानकर देर न करे, इस मुआ़मलेमें ताकीद समझे. ता० २९ रबीउ़ल अव्वल, २९ जुलूस, मुताबिक़ सन् १०६६ हिज्री [वि० १७१२ = ई० १६५६].

३- शाहज़ादह मुरादबख़्शका निशान, राव अखेराजके नाम.

(मुहरकी नक़्ल)

* * *
मुरादबख़्श, इब्न
शिहाबुद्दीन, मुहम्मद
शाहजहां साहिब क़िरा-
* निसानी, बादशाह *
* * ग़ाज़ी. * *
* * * * * *

बराबर वालोंमें उ़म्दह अखेराज, सिरोहीका ज़मींदार
शाही मिहर्वानियोंसे ख़ुश हाल होकर जाने,
कि इन दिनों हमारे हुज़ूरमें अ़र्ज़ हुआ, कि सय्यद रफ़ी बलन्द दर्गाहसे रवानह होकर हमारी ख़िदमतमें आता था; जब दांतीवाड़ेकी हदमें पहुंचा, तो केसरी नाम

والتماسے، که داشته باشد، بعز اجابت مقرون خواهد شد — عنایت بے غایت ما را شامل حال دانسته اهمال نه نماید، درین باب قدغن شناسد — تحریراً فی التاریخ بست ونهم شهر ربیع الاول سنه ۲۹ جلوس، مطابق سنه ۱۰۶۶ هجری قدسی صلعم *
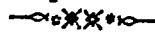
۳ — نشان بادشاهزادهٔ مرادبخش، بنام راو اکھے راج *

زبدة الاشباه اکھے راج، زمیندار سروهی، به عنایت سلطانی مستمال گشته بداند، که چون درینولا به عرض باریافتگان مجلس رسید، که سیادت پناه سید رفیع از درگاه آسمان جاه روانه

राजपूत हाथीवाड़ेके रहनेवालेने, जो अगवेके तौर हमराह था, बद नसीबीसे नाक़िस ख़याल अपने दिलमें जमाया, सय्यदके दो तीन आदमियोंको क़त्ल और तीन चारको ज़ख़्मी करके, सात आठ हज़ार रुपया नक़द और सामान लूटलिया. इस वास्ते बलन्द दरजेका ज़बर्दस्त हुक्म जारी किया जाता है, कि मुबारक निशानके हासिल होते ही ज़िक्र किये हुए नालाइक़को पूरी सज़ा देकर तलाशके साथ तमाम माल अस्बाब हमारे हुज़ूरमें भेज देवे, कि उसका फ़ाइदह और बिह्तरी इस बातमें है; अगर "ख़ुदा न करे" इस मुआमलेमें टाल कीगई, तो ज़रूर यह हक़ीक़त बड़े हज़रतकी दर्गाहमें अर्ज़ कीजायेगी; इस सूरतमें नेक नतीजा न होगा; शर्मिन्दगी और पशेमानी भी फ़ाइदह न देगी. इस बाबत हुक्मके मुवाफ़िक़ बहुत जल्द ताकीद समझकर बर्ख़िलाफ़ी न करे. माह मुहर्रम, सन् ३० जुलूस मु० सन् १०६७ हिज्री [वि० १७१३ = ई० १६५६].

४- शाहजहां बादशाहका फ़र्मान, राव अखेराजके नाम.

बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम, व बिही नस्तईन.

(मुहरकी नक़ल)

बराबर वाले सर्दारोंमें उम्दह, मुसल्मानी बादशाहतका ताबेदार, अखेराज, सिरोहीका ज़मींदार, बादशाही मिहर्बानियोंका उम्मेदवार होकर जाने,

---

ملازمت فیض منقبت شده ، در حدود دانتی واره کیسری نام راجپوت متوطن ماتهی واره که بطریق
بدرقه همراه بود ، از روی بدبختی خیال تباه بخود راه داده ، دو سه کس از همراهیان مشار الیه
را کشته ، و سه چهار کس را زخمی ساخته ، هفت و هشت هزار روپیه نقد و جنس بغارت برده ؛
لهذا امر رفیع القدر منیع الشان واجب الاطاعت لازم الاذعان صادر مے شود ، که بمجرد
ورود نشان فرخنده عنوان ، مدبر را تنبیه واقعی رسانیده ، اموال مذکور به تجسس بدست
آورده ، بحضور پرنور بفرستد ، که خیریت و بهبود درین ست ؛ واگر عیاذاً بالله درینباب
دفع الوقت نماید ، ضرور میشود که این حقیقت بدرگاه فلك اشتباه عرضداشت نموده آید ،
درینصورت نتیجهٔ نیك نخواهد یافت ، ندامت و پشیمانی سود نخواهد داشت — درینباب قدغن
بلیغ لازم دانسته تخلف و انحراف نه ورزد — تحریر فی التاریخ هفتم شهر محرم الحرام سنه ۳۰
جلوس میمنت مانوس ، موافق سنه ۱۰۶۷ هجری *

इन दिनोंमें वादशाही दर्गाहके हाज़िर लोगोंकी मारिफ़त अर्ज़ हुआ, कि उसकी ज़मींदारीके इलाकेमें वाज़े लोगोंका माल अस्वाव चोरी गया; इसलिये वुज़ुर्ग व ज़वर्दस्त हुक्म जारी होता है, कि अपने इलाकेमें ऐसा वन्दोवस्त करे, और ज़ाबितह रक्खे, कि ऐसी वातें हर्गिज़ वाके न हों; और जो माल उसके इलाकेमें चोरी गया, उसको पैदा करके माल वालोंको दे. उस जगहकी ज़मींदारी हुज़ूरसे इसलिये इनायत फ़र्माई गई है, कि ऐसी वारिदातें वहां न हों, और आदमी और मुसाफ़िर वे फ़िक्रीसे अपना आना जाना जारी रक्खें. मुनासिव है, कि आगेको अपने इलाकेसे अच्छी तरह ख़वरदार रहे, और ख़ातिर जमा रक्खे, कि वह इस दर्गाहका तावेदार है, कोई उसकी ज़मींदारीमें ख़लल न डालेगा; इस वावत ताकीद जाने, और अमल करे. ता० २३ सन् ३० जुलूस, मुताविक़ सन् १०६७ हिज्री [वि०.१७१४ = ई० १६५७].

۴ - فرمان شاهجهان بادشاه، بنام راو اکھے راج *

بسم الله الرحمن الرحیم و به نستعین *

(نقل مهر)

زبدة الامثال والاقران مطیع الاسلام اکھے راج
زمیندار سروهی بعنایت بادشاهانه مستمال
و امیدوار بوده بداند، که درینولا بعرض ایستادهای پایهٔ سریر خلافت مصیر رسید، که
درمحال زمینداری او مال واسباب جمعی بدزدی رفته — بنابر آن حکم جهان مطاع لازم الانقیاد
واجب الاتباع صادر می شود، که درین محال این نوع امور اصلا واقع نشود، و نقد وجنس هرچه
از مردم درمحال زمینداری او بدزدی رفته باشد، آنرا پیدا ساخته، بصاحبان مال رساند —
مادولت زمینداری آنجارا باو برای این عنایت فرموده ایم، که این قسم امور در آنجا
واقع نشود، و خلق الله ومترددین بفراغ بال و رفاه حال تردد و آمد وشد نمایند — می باید که
من بعد از سرزمین وحدود متعلقهٔ خود بواقعی خبردار باشد، و خاطر جمع دارد، که چون
او بندهٔ این درگاه خلایق پناه است هیچکس متعرض زمینداری او نخواهد شد — درینباب
قدغن داند، و درعهده شناسد — بتاریخ ۲۳ - سنه ۳۰ از جلوس مبارک، مطابق سنه ۱۰۶۷
هجری تحریر یافت *

५– बादशाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, राव अखेराजके नाम.

बराबरी वाले सर्दारोंमें उम्दह मिहर्बानियोंके लाइक़, राव अखेराज,
शाही मिहर्बानियों से इज़्ज़तदार और शामिल होकर जाने,

जो अर्ज़ी कि बुज़ुर्ग मिज़ाजकी दुरुस्ती पूछनेकी बाबत भेजी थी, पाक नज़रसे गुज़री, और ख़ैरख़्वाहीका मज़्मून मालूम हुआ. ज़बर्दस्त हुक्मके मुवाफ़िक़ फ़र्मान जारी कियाजाता है, कि वह ख़ैरख़्वाह अपने इलाक़ेमें जमइयत समेत अच्छी तरह इन्तिज़ाम रखकर होश्यार रहे; जिस हालतमें कि लाचार होकर वहांका रहना मुनासिब न समझे, तो हुज़ूरमें चला आवे; फिर और तद्बीर कीजावेगी. ता० १४ मुहर्रम सन् १०६७ हिज्री [वि० १७१३ = ई० १६५६].
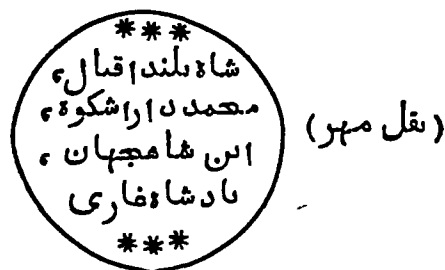
---

٥ — نشان بادشاهزادهٔ داراشکوه بنام راو اکهیراج *

زبدة الاماثل والاعیان، عمدة الاشباه والاقران،
راو اکهیراج، بعنایت شاهی معزز و مستمال بوده
بدانند، که عرضداشتی که مشتمل بر خیریت جناب عالمیان مآب ارسال داشته بود، شرف
از مطالعهٔ قدسی یافت، و مضمون اخلاص مشحون آن واضح گشت، و فرمان بموجب حکم
والا قدر نافذ می‌شود، که آن زبدة الاشباه بخاطر جمع با جمعیت شایسته در محال خود انتظام
داده، و خبردار باشد، و در صورتیکه کار برو تنگ شود، و بودن آنجا مناسب بحال خود نه داند، روانه
بحضور پر نور شود، که بعد از ملازمت کیمیاخاصیت تدبیری دیگر کرده خواهد شد فقط تحریر
فی تاریخ چهاردهم شهر محرم سنه ١٠٦٧ هجری *

९ - शाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, सिरोहीके राव अखेराजके नाम.

—x—

बिस्मिल्लाहि र्रह्मानि र्रहीम.

(मुहरकी नक़्ल)
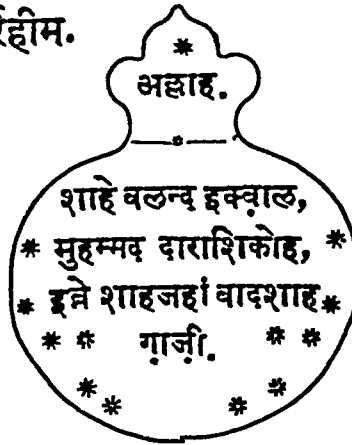
बराबरी वाले सर्दारोंमें बिह्तर उम्दह ख़ानदान वाला, मिह्र्बानियों और इह्सानके लाइक़, राव अखेराज, शाही मिह्र्बानियोंसे ख़ातिरजमा होकर जाने,

जो अर्ज़ी ख़ैरख़्वाहीके साथ उस तरफ़की ख़बरोंकी बाबत हमारे हुज़ूरमें भेजी

---

۹ — نشان والا شان شاهزاده داراشکوه بنام راو اکهیراج *

—*—

بسم الله الرحمن الرحیم *
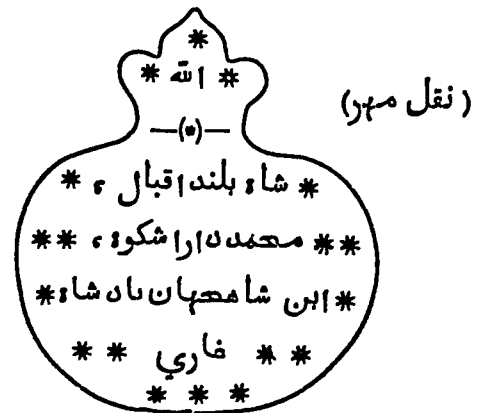
(نقل مهر)

زبدة الاماثل والاعیان، عمدة القبائل والاقران،
لائق العنایت والاحسان، راو اکهیراج،
بعنایت شاهی مستمال بوده بداند، که عرضداشتے که مشتمل بر اخبارات آن صوب و مراتب
اعتقاد خیراندیشی بجناب عالمیان مآب ارسال داشته بود، از نظر کیمیا اثر گذشت، و مضمون

थी, बुजुर्ग नज़रसे गुज़री; ख़ैरख़्वाहीका मज़्मून अच्छी तरहपर ज़ाहिर हुआ. हम उसको अपनी दर्गाहका वफ़ादार ख़ैरख़्वाह जानकर उसकी बिह्तरीमें मस्रूफ़ रहते हैं, इसलिये और ज़बर्दस्त हुक्म जारी कियाजाता है, कि अच्छी मज़्बूती और बे फ़िक्रीसे अपने इलाक़ेमें रहकर ऐसा बन्दोबस्त रक्खे, कि कोई मुख़ालिफ़ उस तरफ़से न गुज़र सके. उम्दह सर्दार, इज़्ज़तदार, बहुतसी मिहर्बानियोंके लाइक़, महाराज जशवन्तसिंह, जो निहायत दरजे दिलसे हमारी ख़ैरख़्वाही और वफ़ादारी करता है, उसने उम्दह फ़ौज जालौरमें ठहरा रक्खी है; उस महाराजाने इरादह करलिया है, कि मौक़ेपर, जब कि वह सर्दार मददका मुह्ताज हो, जमइयत उसके पास पहुंच जावे; मुनासिब है, कि वक्त़पर उस जमइयतको इशारह करदे, कि वह उसका साथ देगी. अपनी तबीअ़त हर तरह बे फ़िक्र रखकर शाही मिहर्बानियोंको अपने हालपर जारी समझे, और उस तरफ़की हक़ीक़त रोज़ बरोज़ अ़र्ज़ियोंके ज़रीएसे ज़ाहिर करता रहे. अगर शाहज़ादह (मुरादबख़्श वग़ैरह) उसको तलब करें, हर्गिज़ जानेका इरादह न करे. हिज्री १०६८, ता० १७ मुहर्रम [वि० १७१४ कार्तिक कृष्ण ३ = ई० १६५७ ता० २४ ऑक्टोबर].

اخلاص مشحون به تفصیل مفهوم رای مهر انجلای گردید — چون آن زبدة الاشباه را از عقیدت مندان درست اخلاص این آستان فیض نشان دانسته طبع ما بر رفاهت حال آن تهور شعار مصروف است، حکم والا قدر صادر میشود، که باستقلال تمام وجمعیت خاطر در آن سرزمین بوده بندوبست باید نمود، و نه گذارد، که مخالفی از اطراف تواند عبور کرد — چون جمعیت خوبی از عمدة الاشباه والاقران، قدوة الاماثل والاعیان، قابل اللطف والاحسان، لائق العنایة والامتنان سزاوار مراحم بیکران شایستهٔ الطاف نمایان، مهاراجه جسونت سنگه، که نهایت اخلاص واختصاص به ما دارد، در پرگنهٔ جالور میباشد، ومهاراجه مشارٌ الیه مقرر نموده است، که جمعیت مذکور در وقت کار، و صورتی که آن زبدة الاقران محتاج به کمک باشد، خود را باو رساند، میباید که در آن وقت بجماعهٔ مذکور اشاره نماید، که طریقهٔ همراهی به آن شهامت اطوار بجا خواهد آورد، و خاطر خود را بهمه جهت مطمئن داشته عنایت شاهانه را شامل حال خود شناسد؛ و از حقیقت آن صوب روزبروز عرضداشت مینموده باشد، وگر شاهزاده (مراد بخش وغیره) اورا طلب نماید، زنهار ارادهٔ رفتن نه کند — فقط تحریر فی التاریخ هفدهم محرم الحرام سنه ۱۰۶۸ هجری *

७– शाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, राव अखेराजके नाम.

(मुहरकी नक़ल)

शाहे बलन्द इक्बाल, मुहम्मद दाराशिकोह, इब्ने शाहजहां बादशाह ग़ाज़ी.

बराबरी वालोंमें उ़म्दह, नेक ख़ानदान, मिहर्बानियोंके लाइक़, राव अखेराज, शाही मिहर्बानियोंसे ख़ातिरजमा होकर जाने,

जो अ़र्ज़ी इन दिनोंमें ख़ैरख़्वाहीके साथ हमारे हुज़ूरमें भेजी थी, बुज़ुर्ग नज़रसे गुज़री; मुनासिब है, कि वह अपनी जमइयत समेत अपने इलाक़हमें रहकर पूरा बन्दोबस्त रक्खे; हम उसको हुज़ूरमें बुलालेंगे, जो तद्बीर उसके फ़ाइदोंके लिये दर्कार होगी, कीजावेगी; हर तरह ख़ातिर जमा रख कर शाही मिहर्बानियोंको अपने हालपर जारी समझे; किसी तरह न घबरावे. ता० ६ सफ़र सन् ३१ जुलूस, मुताबिक़ हिज्री १०६० [वि० १७०६ माघ शुक्ल ७ = ई० १६५० ता० ७ फ़ेब्रुअरी].

٧ـ نشان بادشاهزاده داراشکوه بنام راو اکهے راج *

(نقل مهر)

شاه بلند اقبال ، محمد داراشکوه ابن شاهجهان بادشاه غازي

عمدة الاماثل والاعيان ، زبدة القبائل والاقران ،
لائق العنايت والاحسان ، راو اکهے راج به عنايت ،
شاهي مستمال بوده بداند ، که عرضداشتے که دريولا مشتمل بر مراتب عقيدت واخلاص
بجناب عالميان مآب ارسال داشته بود ، از نظر کيميا اثر گذشت ، ومضمون آن واضح راى
جهان آرا گرديد — مے بايد که آن زبدة الاشباه با جمعيت خود در آنجا بوده (ازان سرزمين آگاهى
خبردار باشد) ، آن قدوة الامثال را بحضور پرنور طلب خواهيم فرمود ، بکوشے که در باب
سرانجام او بايد کرد ، نموده خواهد شد ؛ خاطر بهمه جهت جمع نموده عنايات وتفضلات شاهانه را
شامل حال خود شناسد ، وبه هيچ وجه مضطرب نه باشد — تاريخ ششم شهر صفر ختم بالخير ، سنه
سنه ۳۱ جلوس ميمنت مانوس ، مطابق سنه يك هزار وشصت هجري قدسي صلعم *

८– शाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, राव अखेराजके नाम.

(मुहरकी नक़्ल)

बराबरी वाले सर्दारोंसे उ़म्दह, नेक ख़ानदान, मिह्र्बानी और इह्सानके लाइक़, राव अखेराज, शाही मिह्र्बानीसे इ़ज़्ज़तदार और उम्मेदवार होकर जाने,

इन दिनोंमें जो अ़र्ज़ी उस इ़लाक़हकी ख़बरोंकी बाबत हमारे हुज़ूरमें भेजी थी, बुज़ुर्ग नज़रसे गुज़री; उसका मज़्मून मालूम हुआ. उस मिह्र्बानियोंके लाइक़को मालूम हो, कि नामी राजाओंका बुज़ुर्ग, बड़े दरजेका अमीर, बहुत एतिबारी बादशाही सर्दार, मिह्र्बानी और इह्सानोंके लाइक़, महाराजा जशवन्तसिंह, और बहादुरीकी निशानी, दिलेर सर्दार, बादशाही हुज़ूरका पसन्दीदह, निहायत कार्गुज़ार, बादशाही अमीर, नेक ज़ात, उ़म्दतुल् मुल्क, क़ासिमख़ां, उज्जैनसे आगेको रवानह हुए हैं, कि अहमदाबाद

۸— نشان بادشاهزاده دارا شکوه بنام راو اکھے راج *

(نقل مهر)

عمدة الاماثل والاعیان، زبدة القبائل والاقران،
لائق العنایت والاحسان، راو اکھے راج،
به عنایت شاهی معزز و مستمال بوده بدانند، که عرضداشتے که درینولا مشتمل بر اخبارات
آنصوب بجناب عالمیان مآب ارسال داشته بود، از نظر کیمیا اثر گذشت، و مضمون آن مفهوم

पहुंच जावें. इन दिनोंमें आला हज़रत खुदाके साये, हज़रत बादशाहने नेक ख़ानदान मिह्र्बानियोंके लाइक़, नेक बादशाही सर्दार, उम्दतुल् मुल्क ख़लीलुल्लाहख़ां, और बहादुरीकी निशानी, बराबरी वालोंमें उम्दह, मिह्र्बानियोंके लाइक़, दिलेर सर्दार, राव शत्रुशालको बीस हज़ार मज्बूत सवारों समेत, बीस लाख रुपया फ़ौज ख़र्च देकर इस तरफ़ जानेको मुक़र्रर किया है. यह लोग बहुत जल्द महाराजाके पास पहुंचेंगे, और हिम्मतसे उस बेअदब (मुरादबख़्श वग़ैरह) हक़् न पहिचानने वालेको सख़्त सज़ा देंगे.

मुनासिब है, कि वह ख़ैरख़्वाह भी इस वक्त अपनी जमइयत समेत फ़त्हमन्द लश्करमें पहुंचे, और उस तरफ़के ज़मींदारोंमेंसे, जो कोई नज़्दीक हो, उसको शाही मिह्र्बानियोंका उम्मेदवार करके साथ लेजावे. हर तरफ़ ज़मींदारोंको लिख दे, कि अगर वह गुनाहगार नालाइक़ उस तरफ़से भागना चाहे, तो उसको गिरिफ़्तार और क़त्ल करनेमें पूरी कोशिश करें, जैसा कि राजा गोकुल उज्जैनियाने शिकस्त और भागनेके पीछे नाशुजाअ्‌के आदमियोंको लूट मारसे सताया; जो कुछ नाशुजाअ्‌ और उसके हमराहियोंके माल व अस्बाबमेंसे उस राजाके हाथ आया, सब हमने उसको बख़्श दिया; और हज़रत बादशाहने और हमने बहुत मिह्र्बानियां ज़ाहिर कीं. इसी तरह बद नसीब नामुराद बाग़ी और उसके साथियोंका अस्बाब वग़ैरह, जहांतक हो सके,

---

راے جہان آرا گردید — معلوم آن لائق العنایة باد که زبدۂ راجگان نامدار، عمدۂ امراے عالی مقدار، رکن السلطنت العلیه، مؤتمن الدوله، شایستۂ الطاف بیکران، سزاوار اعطاف بے پایان، مورد عواطف نمایان، مہاراجه جسونت سنگه، و شجاعت و شہامت پناه، امارت و ایالت دستگاه، منظور انظار عنایات بادشاهی، مطرح اعطاف و تلطفات نامتناهی، رکن السلطنت العظمی، عضد الخلافة الکبری، یعنی سعادت نشان عمدة الملک قاسم خان، از آحین روانه پیشتر شده اند، که به احمدآباد بروند — درینولا بندگان اعلیحضرت خاقانی قبلۂ دوجهانی، خلیفة الرحمانی ظل سبحانی — سیادت و نجابت پناه، شایستۂ الطاف بیکران، سزاوار مراحم بے پایان، مورد عنایات گوناگون ظل الهی، مهبط توجهات روز افزون بادشاهی، عمدة الملک خلیل الله خان، و شجاعت و شهامت پناه، تهور و جلادت دستگاه، قدوة الاشباه والاعیان، شایستۂ الطاف و مکارم بیکران، راو شترسال را با بیست هزار سوار باهمت تعین فرموده، بست لک روپیه بجهت اخراجات لشکر مظفر منصور همراه آنها فرستاده اند، وعنقریب به مهاراجه ملحق خواهند شد، و بتوفیق آن بے ادب ناحق شناس (مرادبخش وغیره) را به سزاے گران خواهند رسانید *
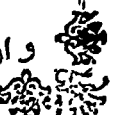
مے باید که آن زبدة الاشباه نیز درینوقت با جمعیت خود خود را به لشکر ظفر پیکر رساند، و از زمینداران نواحی، هرکس که به آن زبدة الاقران نزدیک باشد، او را امیدوار عنایات

उधरके ज़मींदार छीनलें; हम साफ़ तौरपर मुआ़फ़ फ़र्माते हैं; और आ़लीशान निशान, जो कान्हजीके नाम भेजाजाता है, उसके पास पहुंचादे; और अपनी तरफ़से भी कुछ लिखकर रग़बत दिलावे, कि इस वक्त जो कुछ कोशिश की जावेगी, उसके फ़ाइदहका सबब होगी. ता० ७ रजब हिज्री १०६८ [वि० १७१५ = ई० १६५८].

९– शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मका निशान, राव वैरीशालके नाम.

(मुहरकी नक़्ल)
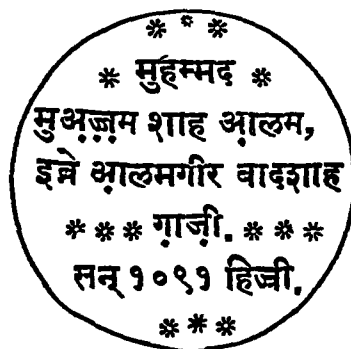
बहादुरीकी ख़ासियत, दिलेरीकी निशानी, वैरीशाल, बड़ी शाही मिहर्बानियोंसे सर्बलन्द होकर जाने, कि इन दिनोंमें अक्बर बाग़ी दुर्गा और सोनंग वग़ैरह बद नसीब राठौड़ों

شاهانه نموده ببرد — به زمینداران اطراف و جوانب بنویسد، که اگر آن عاصي حق ناشناس خواهد که برود، مساعي موفور بکار برند، چنانچه راجه گوکل اجینیه بعد از شکست وهزیمت ناشجاع آورده، و مردم اورا تاراج نموده آنچه از مال و متاع او و همراهانش بدست آورده، به راجهٔ مزبور معاف ومسلم داشتیم؛ ومورد عنایات بادشاهي و مراحم شاهي گردیده — همچنین آنچه از اسباب و اشیاے نامراد بے سعادت باغي وهمراهان او، که زمینداران مذکور بدست توانند آورد، متصرف شوند، که دیده و دانسته به آنها معاف فرموده‌ایم، ونشان عالي شان که بنام کانهه‌جي صادر شده، به او برساند؛ و به او از خود نیز چیزے بنویسد، و ترغیب نماید، که دریوقت هرگونه سعي وتلاش، که درین باب خواهد نمود، موجب بهبود خواهد شد — تحریر في التاریخ هفتم رجب سنه ۱۰۶۸ هجري فقط *

समेत उस दिलेर ख़ासियतके इलाक़हसे निकलता हुआ भागा है, और उसने फ़ौज जमा न होने और बाग़ियोंकी ख़बर न पानेके सबब उनके क़त्ल और क़ैद करनेमें कोशिश न की; लेकिन् अब सुननेमें आया, कि वह इस मुआमलेमें कोशिश करना चाहता है; इसलिये ज़बर्दस्त हुक्म जारी किया जाता है, कि अगर बद नसीब बाग़ी लोग फिर उसके इलाक़हमें आवें, तो बुज़ुर्ग मिहर्बानीसे ख़ातिर जमा रखकर वफ़ादारी और मिह्नतके साथ उनकी गिरिफ़्तारी और क़त्लमें कमी न करे, सबको क़ैद या क़त्ल करडाले, कि यह बात बुज़ुर्ग बादशाही दर्गाह और हमारे हुज़ूरमें बड़ी कार्गुज़ारी समझी जावेगी; इसका नेक नतीजह मिलेगा; इसमें सख़्त ताकीद जाने. ता० ९ रबीउ़ल् अव्वल हिज्री.

---

۹ — نشان پادشاهزادهٔ محمد معظم بنام راو بیری شال ٭

(نقل مهر)

تهورشعار ، جلادت دثار ، بیری سال ، به عنایت
عالی متعالی شاهی سرفراز بوده بدانند ، که چون
دربولا اکمو باغی با درگا وموتک و دیگر راتهوران ادبار نصیب از حدود متعلقهٔ زمینداری آن تهور شعار
آوارهٔ دشت فرار شده ، و او بسبب فراهم نیامدن جمعیت و بیخبری باغیان مذکور چندان سعی در قتل و اسر
آنها نه کرده ؛ والحال باستماع آمده ، که آن تهور شعار کوشش وسعی در گرفتن وکشتن طاغیان کرده ؛ لهذا حکم
محکم عز اصدار و شرف ورود می یابد ، که اگر باز باغی مذکور با سائر گروه شقاوت پژوه بحد زمینداری آن
جلادت دستگاه برسد ، باید که خاطر خود مستمال تفضلات والا داشته مراتب فدویت و جانفشانی را در قتل و اسر
آنها کما ینبغی بجا آورده همه را اسیر و دستگیر نماید ، یا به قتل رساند ، که باعث سرافرازی کلی او در پیشگاه حضرت
خلافت و جهانداری وهم درحضور فیض گنجور عالی متعالی شاهی خواهد بود ، ونتیجهٔ نیک خواهد یافت ! درین
باب تاکید بلیغ داند — نهم شهر ربیع الاول سنه جلوس ٭

विक्रमी १७२० [हि० १०७३ = ई० १६६३] में राव अखेराजको उनके कुंवर उदयसिंहने क़ैद करदिया, और आप सिरोहीका मालिक बन गया. इस बग़ावतमें डूंगरोत देवड़ा कुंवर उदयसिंहके शामिल थे, तब देवड़ा रामा भैरवदासोत व साहिबख़ान वग़ैरह राजपूतोंने महाराणा राजसिंह अव्वलसे मदद लेकर रावको क़ैदसे निकाला. राजसमुद्रकी प्रशस्तिके आठ सर्ग ३५-३६ श्लोकमें महाराणाका राणावत रामसिंहको फ़ौज देकर राव अखेराजकी मददके लिये भेजना लिखा है. (देखो पृष्ठ ५९७).

यहां तक सिरोहीकी तवारीख़का ज़ियादह हाल हमने बीकानेरके महता नैनसीकी तहक़ीक़ातसे लिया है, जिसने विक्रमी १७२१ माघ [हि० १०७५ रजब = ई० १६६५ जैन्यूअरी] में सिरोहीके चारण आड़ा महेषदासकी तहरीरसे, और विक्रमी १७१७ आश्विन [हि० १०७१ सफ़र = ई० १६६० ऑक्टोबर] में देवड़ा अमरसिंहके प्रधान बाघेला रामसिंहकी ज़बानी और महता सुन्दरदासकी तहरीरसे लिखा है.

अब अगला हाल सिरोहीके वर्तमान दीवान ख़ान बहादुर निअ्मतअ्लीख़ांकी तहरीरसे लिखते हैं, जिसने हमारी मददके लिये बड़वा भाट ज़ोरजी वग़ैरह लोगोंसे तहक़ीक़ात करके हमारे पास भेजा है; और राजपूतानह गज़ेटियरसे भी लिया जायेगा, क्योंकि उक्त समयसे पहिला हाल बड़वा भाटोंके पास कहानी क़िस्सोंके तौर लिखाहुआ मालूम होता है.

राव अखेराजके दो बेटे थे, बड़ा उदयसिंह, दूसरा उदयभान; उदयसिंहने अपने बापको क़ैद किया, इस क़ुसूरसे अखेराजने उसको मरवाडाला. अखेराजके बाद उदयभान और उसके बाद विक्रमी १७३३ [हि० १०८७ = ई० १६७६] में उसका बेटा वैरीसाल गद्दीपर बैठा.

विक्रमी १७४९ [हि० ११०३ = ई० १६९२] में राव सुर्तानसिंह गद्दीपर बैठा, इसके बाद उदयसिंहका दूसरा बेटा छत्रसाल गद्दीपर बैठा. दीवान निअ्मतअ्लीख़ां लिखता है, कि छत्रसाल उदयपुरके महाराणा संग्रामसिंहकी मदद लेकर आया, और सुर्तानसिंह भागकर जोधपुरके राजा अजीतसिंहके पास गया; उस वक़्से सिरोहीके गांव पालड़ी और कोटरा उदयपुरके क़ब्ज़हमें गये.

छत्रसालके बाद मानसिंह गद्दीपर बैठे, जिनको उम्मेदसिंह भी कहते हैं. इनके वक़्में जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने चढ़ाई की, तब इन्होंने कुछ फ़ौज ख़र्च और अपनी बेटी महाराजाको देकर पीछा छुड़ाया. इनके चार बेटे १- पृथ्वीराज, २- जगत्सिंह, ३- ज़ोरावरसिंह, ४- उम्मेदसिंह थे. विक्रमी १८०६ [हि० ११६२ = ई०
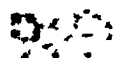
१७२१] में राव पृथ्वीराज गद्दीपर बैठे, जिनके बाद विक्रमी १८३८ ज्येष्ठ कृष्ण ६ [हि० ११९५ ता० २० जमादियुल्अव्वल = ई० १७८१ ता० १४ मई] को उनके भाई जगतसिंह गद्दीपर बैठे, जिनको भारजा गांव जागीरमें मिला था. इनके बाद राव वैरीसाल गद्दीपर बैठे. इनके तीन बेटे थे, उदयभान, अखेराज, और शिवसिंह. जोधपुरके महाराजा भीमसिंहने, जब अपने भाई मानसिंहको जालोरसे निकालनेके लिये फ़ौज भेजी, तब महाराजा मानसिंहने अपना ज़नानह सिरोहीमें भेजना चाहा; लेकिन् महाराजा भीमसिंहके भयसे रावने इन्कार किया.

वैरीसालके बाद उदयभानको सिरोहीकी गद्दी मिली. इनकी आदत ख़राब थी. जब वह गंगास्नानको गये, तब पीछे लौटते वक्त जोधपुरके महाराजा मानसिंहने अगली रंजिशसे उनको गिरिफ़्तार करलिया, और पचास हज़ार रुपया दंडका लेकर छोड़ा; इस रक़मके वुसूल करनेको उदयभानने सिरोहीके राजपूत व रअय्यतको तंग किया, जिसका नतीजह यह हुआ, कि सर्दारोंने मिलकर उदयभानको क़ैद करलिया, और उसके भाई शिवसिंहको विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] में गद्दीपर बिठाया; उदयभान विक्रमी १९०३ [हि० १२६२ = ई० १८४६] में क़ैदकी हालतमें मरा. शिवसिंहके विरुद्ध जोधपुरके महाराजा मानसिंहने फ़ौज भेजकर उदयभानको छुड़ाना चाहा था, लेकिन् महाराजाका मनोर्थ पूरा न हुआ.

राव शिवसिंहकी हुकूमत बहुत ज़ईफ़ होगई थी, उत्तरकी तरफ़से मारवाड़की चढ़ाइयों और मीना लोगोंकी लूट खसोटके सबब बड़ी दुर्दशा होने लगी; राव अपनी रिआयाको मदद देनेके लाइक़ न रहे; इसी ज़ोफ़ हुकूमतसे कई सर्दारोंने दीवान पालनपुरको अपना मालिक बनालिया, यहां तक कि राज्य बर्बाद होनेका वक्त आपहुंचा; तब राव शिवसिंहने विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] में गवर्मेंट अंग्रेज़ीका आश्रय लिया, और विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] में एक अह्दनामह लिखागया. हक़ीक़तमें यह राज्य गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी मददसे बच गया. कर्नेल टॉडने इस रियासतके हुक़ूक़ और इलाक़हकी हिफ़ाज़तमें बहुत कोशिश की; उक्त कर्नेलको वहांके लोग मुहब्बतके साथ याद करते हैं. राज्यकी ख़राबी देखकर गवर्मेंट अंग्रेज़ीने कप्तान स्पीयर्सको वहांका पोलिटिकल एजेंट मुक़र्रर किया, जिससे बहुत फ़ाइदह हुआ, और बंबईकी फ़ौजसे एक गिरोह मीना व डकैतोंको दबानेके लिये वहां रक्खा गया. गवर्मेंट अंग्रेज़ीके अफ़्सरोंसे राज्यकी जिस क़द्र बिहतरी हुई, उसका हाल हम राजपूतानह गज़ेटियरसे नीचे दर्ज करते हैं:-

" बहुतसे ठाकुर इताअतमें लाये गये, और बन्दोबस्त हुआ; नीबजके ठाकुरके

साथ भी एक सुलहनामह किया गया, जो सिरोहीके सब सर्दारोंमें ज़ियादह टेढ़ा था. कप्तान स्पीयर्स साहिबके भेजे जानेके थोड़े ही दिन बाद शिवसिंहको पोलिटिकल एजेंटने इन्तिज़ामकी तब्दीलातके लिये जो कुछ राय दी, उससे वह अपनेको लाचार जानकर आबूको भागगया; और बहुतसे ठाकुर उसके मददगार होगये; सिर्फ़ नीबजका ठाकुर प्रेमसिंह अलग रहा; लेकिन् यह बखेड़ा बहुत दिनों तक नहीं रहा, और सब ठाकुर अपने अपने ठिकाने आगये; रावने भी मुआफ़ी मांगी, और सिरोहीको लौट आया. ईसवी १८३२ [वि० १८८९ = हि० १२४७] में सिरोहीका प्रबन्ध नीमचकी एजेन्सीके, और ईसवी १८३६ [वि० १८९३ = हि० १२५२] में मेवाड़की एजेन्सीके सुपुर्द किया गया; लेकिन् मेवाड़के एजेंट नीमचमें रहते थे, और वहांसे राज्यकी संभाल अच्छी तरह नहीं होसक्ती थी; इससे यह रियासत मेजर डाउनिंगके सुपुर्द करदी गई, जो जोधपुर लीजेन याने पल्टनके अफ्सर थे, और जिनकी छावनी एरनपुरामें थी, जो सिरोही और मारवाड़की सीमापर है; वहां एक अंग्रेज़ी फ़ौजी अफ्सरके रहनेसे बन्दोबस्तमें अच्छी मदद मिली; और इसी वक़्से सिरोहीकी दुरुस्ती समझना चाहिये. इस वक़्त लूटके लिये मारवाड़की रऋय्यतके हमले, मेवाड़की तरफ़से भीलोंकी चढ़ाई और खुद मुख़्तारी चाहनेवाले ठाकुरोंकी रद्दो बदल कई वार हुई, जिससे सिरोहीमें बहुत पीछे तक बुराइयां रहीं; क्योंकि देश पहाड़ी और बिकट जंगलोंसे भरा होनेके सबब वह उन भीलों और मीनोंको लालच देने वाला आश्रय बना रहा, जो कि किसी बाग़ी ठाकुरकी मदद करनेको हमेशह तय्यार रहते हैं."

"ईसवी १८४३ [वि० १९०० = हि० १२५९] में रावकी मर्ज़ी और सर्कार अंग्रेज़ीकी सलाहसे कुछ शर्तोंपर एक शिफ़ाख़ानह जारी हुआ; इस वक़्त भटानाका ठाकुर नाथूसिंह बाग़ी हो गया, इससे सिरोहीमें कई वर्ष तक बड़ी ख़राबी रही. इसका सबब यह मालूम होता है, कि सिरोही और पालनपुरके बीच सीमा क़ाइम करनेमें इस ठाकुरके दो गांव पालनपुरको देदिये गये थे; और दूसरी ज़मीन जो उसे दी जाती थी, उसने लेनेसे इन्कार किया. अकेला सिरोहीका राज्य इस ठाकुरसे लड़नेके लाइक़ न था, लेकिन् ईसवी १८५३ [वि० १९१० = हि० १२६९] में जोधपुर लीजेनकी मददसे नाथूसिंह और उसके साथी ऐसे दबाये गये, कि उन्होंने ताबेदारी मंजूर करली. नाथूसिंहको छः वर्षका जेलख़ानह हुआ, और उसके साथियोंको भी क़ैदकी सज़ा मिली, लेकिन् ईसवी १८५८ [वि० १९१५ = हि० १२७४] में नाथूसिंह जेलख़ानहसे भागगया; उसके पकड़नेकी कोशिश की गई, जो फ़ुज़ूल गई, और फिर वह राज्यके लिये तक्लीफ़ और अन्देशेका एक ज़रीअह हुआ."
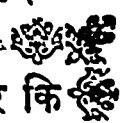
"ई० १८५४ [वि० १९११ = हि० १२७०] में रावने यह देखकर कि क़र्ज़ह बहुत बढ़गया, और राज्यका प्रबन्ध नहीं होसक्ता; सर्कार अंग्रेज़ीसे एक अंग्रेज़ी अफ़्सर इन्तिज़ामके लिये मांगा. यह इन्तिज़ाम पहिले तो आठ वर्षके लिये किया था, पीछे ग्यारह वर्षके लिये होगया; क्योंकि राज्यका क़र्ज़ह चुकानेमें ईसवी १८५७ [वि० १९१४ = हि० १२७३] का ग़द्र एक रोक होगया. पहिले कर्नेल एन-डर्सन सुपरिन्टेन्डेएट हुए, इनकी लियाक़त और समझदारीके सबब बहुत कुछ इन्तिज़ाम और तरक़्क़ी हुई, जिससे उन्होंने सर्कार अंग्रेज़ीसे शुक्रगुज़ारी और नेकनामी पाई; उसका नाम सिरोहीके लोग अबतक शुक्रके साथ याद करते हैं. इस वक़्में राज्य ख़र्चको छोड़कर, जो मुक़र्रर होगया था, सुपरिन्टेन्डेएटका काम सिर्फ़ इतना ही था, कि उन बातोंका इन्तिज़ाम करे, जिससे देशकी हालतमें नुक्सान न हो; बाक़ी सब बातोंमें रईसकी मर्ज़ी रही, और ख़ानगी कामोंमें कुछ दख़्ल नहीं दिया; इतनी ही निगरानीसे व्यापार और खेतीने तरक़्क़ी पाई, जिससे सिरोहीकी बिहूतरी हुई. इसी तरह ईसवी १८६१ [वि० १९१८ = हि० १२७७] तक यह प्रबन्ध चला, जब शिवसिंहके ज़ईफ़ होनेके सबब उसके दूसरे बेटे उम्मेदसिंहको वहांका इन्तिज़ाम दिया गया, उससे पहिले उसका बड़ा बेटा गुमानसिंह मरगया था. वृद्ध रावकी इज़्ज़त उसके मरनेके दिन यानी ईसवी १८६२ ता० ८ डिसेम्बर [वि० १९१९ पौष कृष्ण २ = हि० १२७९ ता० १५ जमादियुस्सानी] तक बनी रही."

"शिवसिंहने ४४ वर्ष तक राज्य किया; वह मुश्किलसे अच्छा राजा समझा जासक्ता है, उसकी आदत समयके अनुसार नहीं थी. ई० १८५७ के ग़द्रमें उसने बड़ी ईमान्दारीका काम किया, जिससे उसका आधा ख़िराज मुआफ़ करादिया गया, जो पहिले पन्द्रह हज़ार भीलाड़ी रुपयोंपर मुक़र्रर हुआ था. जब शिवसिंहसे इस्ति-यार लेलिया गया, तो उसके बेटोंके गुज़ारेके लिये कुछ बन्दोबस्त करना ज़ुरूर हुआ, उस वक़्के पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट मेजर हालने सुफ़ारिश की, कि चन्द गांव चार बड़े बेटोंके लिये अलग करदिये जायें. हमीरसिंह, जैतसिंह, जवानसिंह और जामनसिंहके सिवाय सबसे छोटा लड़का तेजसिंह राव उम्मेदसिंहका सगा भाई सिर्फ़ तेरह वर्षका था; इस कारण उसके निर्वाहके लिये इस वक़् कुछ बन्दोबस्त करना ज़ुरूर नहीं समझा. सब बेटोंने इस बातसे इन्कार किया, लेकिन् हमीरसिंहको छोड़कर बाक़ी सबने सिरोहीमें पांच सौ रुपये माहवारपर, जब तक कि शादी न हो, रहना क़बूल किया; हमीरसिंह ऐसा मालूम होता है, कि बुरी सलाह देने वालोंकी

बहकावटसे ईसवी १८६१ नोवेम्बर [वि० १९१८ कार्तिक = हि० १२७
अव्वल] में बाग़ी होगया; तब मेजर हॉल एक फ़ौज लेकर उसपर गये; हमीर
पहाड़ोंमें भागकर भीलों और गिरासियोंकी पनाहमें रहा; मेजर हॉलने उसका
ठीक न समझा; परन्तु रास्तोंपर सिर्फ़ गार्ड रखदिये. उसी वक़ दूसरे दो
होकर महीकांठामें दांताको चलेगये, और थोड़े ही दिन पीछे ईसवी १८६२ [
= हि० १२७९] में यह दोनों सिरोहीसे आये हुए तीसरे भाईके स
जाकर हमीरसिंहसे मिले; लेकिन् ईसवी १८६२ ता० ८ डिसेम्बर [वि०
कृष्ण२ = हि० १२७९ ता० १५ जमादियुस्सानी] को वृद्ध राव शिवसिंहके म
सर्दारोंने तीनों छोटे लड़कों को बुलाया. हमीरसिंह उस वक़ भी अलग
कुछ दिनों बाद आगया, और उनके गुज़ारेके लिये गांव मुक़र्रर करदिये

राव उम्मेदसिंह.

"इनको ईसवी १८६५ ता० १ सेप्टेम्बर [वि० १९२२ भाद्रपद शुक्ल
१२८२ ता० ९ रबीउस्सानी] को सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से राज्यका पूरा इ
रावने अच्छे वक़पर हुकूमत पाई, ख़ज़ानह अच्छी हालतमें था, रा
भी पहिलेके बनिस्बत उम्दह थी. अगर वह ज़ियादह ताक़त वाले
ख़र्चका बन्दोबस्त करते, तो उसकी तरक़्क़ीके लिये बहुत कुछ सामान कर
वह ऐसे हिम्मतवर न थे, जैसा कि सिरोहीके रईसको होना चाहिये;
बात मानने, नर्म दिल होने और नई बातें न चाहनेके सबब उनका रा
पड़गया. राव दयालु, बुरे कामोंसे दूर और ज़ियादहतर रिश्तहदारों
उनके वक़में नीचे लिखी हुई बातें हुईं:-

"ईसवी १८६८ या ६९ [वि० १९२५ या २६ = हि० १२८५ या ८६]
नाथूसिंहका दुबारा बाग़ी होना, और मारवाड़की तरफ़से भीलोंका हमलह;
बाग़ी होनेसे राज्यको बहुत नुक्सान पहुंचा, उसको ज़ेर करनेके लिये जितनी
सब बेकार गईं, जो अंग्रेज़ी सिपाही भेजेगये थे, वे भी बुलालिये गये, और
राज्य उसके और उसके साथियोंके साथ लड़नेको छोड़ दिया गया; अंजाम
कि लुटेरोंका ज़ोर बढ़गया; मारवाड़के भीलोंने, जो सिरोहीकी पश्चिमी हद
हैं, हमले किये; और नाथूसिंहके नामसे लूट मचा दी. यह बातें ऐसी

सिरोहीमें अहमदाबादकी सड़कपरके मुसाफ़िरों और व्यापारियोंके लिये तक्लीफ़ होगई. ऐसी हालतमें फ़सादियोंको दवानेके लिये ऐरनपुराकी पल्टन भेजनेके सबब रियासतका इन्तिज़ाम फिर फ़ौजी हाकिम मेजर कर्नेलीके सुपुर्द करदिया गया. उन्होंने इख्तियार पाते ही भीलोंको ज़ेर करके लूट बन्द कराई, लेकिन् बाग़ी सर्दारोंको तावे नहीं किया; नाथूसिंह सिरोहीकी हद्के नज़्दीक मारवाड़के गांवमें ईसवी १८७० [वि० १९२७ = हि० १२८७] के लग भग मरगया, और उसका बेटा भारथसिंह अपने साथियों समेत ईसवी १८७१ [वि० १९२८ = हि० १२८८] के अन्दर, जब कि वह भी क़ैद था, बुलाया गया. नाथूसिंहके बाग़ी होनेका बयान सिरोहीके समान कठिन स्थानमें बाग़ियोंके दवानेके लिये अंग्रेज़ी सिपाहियोंके भेजनेसे, जो नुक्सान होता है, उसके जतानेके लिये मुफ़ीद है."

"राव उम्मेदसिंह ईसवी १८७५ ता० १६ सेप्टेम्बर [वि० १९३२ भाद्रपद शुक्ल १५ = हि० १२९२ ता० १४ शअ्वान्] को सिरोहीमें मरगये. उनके एक ही राणी ईडरके वंशकी थी, उससे एक कुंवरके सिवा एक बेटी भी हुई, जो ईसवी १८७० [वि० १९२७ = हि० १२८७] में महाराजा कृष्णगढ़के बड़े कुंवरको व्याही गई."
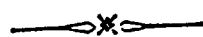
राव केसरीसिंह.

"यह अपने पिताके बाद गद्दीपर बैठे, जो अब सिरोहीके राव हैं. इन्होंने राजपूतानहके दूसरे रईसोंके मुवाफ़िक़ गोद लेनेकी सनद पाई है, और इनको राज्यके पूरे इख्तियार ईसवी १८७५ ता० २४ नोवेम्बर [वि० १९३२ मार्गशीर्ष कृष्ण १० = हि० १२९२ ता० २४ शव्वाल] को मिले हैं." इन्होंने विक्रमी १९३३ [हि० १२९२ = ई० १८७६] में बंगाला और बम्बई वग़ैरहकी तरफ़ फ़र्ज़ी नाम रखकर सफ़र किया, जिससे थोड़े ख़र्चमें ख़ूब सैर और ज़ियादह तज्रिबह हासिल हुआ. इनके विक्रमी १९४५ आश्विन् [हि० १३०५ मुहर्रम = ई० १८८८ सेप्टेम्बर] में एक कुंवर पैदा हुआ है. सिरोही रावकी पन्द्रह तोपोंकी सलामी होती है, और अंग्रेज़ी सर्कारको सालानह ख़िराज सात हज़ार पांच सौ भिलाड़ी रुपया यहांसे दिया जाता है, लेकिन् भिलाड़ी रुपयेका भाव एकसा न रहनेके सबब ६८८१ $\frac{?}{४}$ कल्दार सालानह मुक़र्रर होगया है.
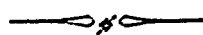
एचिसन् साहिबकी अहृद्नामोंकी किताब जिल्द ३.

अहृद्नामह नम्बर ८६.

अहृद्नामह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कंपनी और राव शिवसिंह मुरूतार रियासत सिरोहीके दर्मियान, जो ऑनरेबल कंपनीके एजेंट कप्तान अलिग्ज़ेन्डर स्पीयर्सकी मारिफ़त, बहुक्म मेजर जेनरल सर डेविड् ऑक्टरलोनी, बैरोनेट्, जी० सी० बी०, रेजिडेन्ट मालवा व राजपूतानहके, जिनको पूरे इख्तियार राइट ऑनरेबल विलिअम पिट लॉर्ड ऐमहर्स्ट, गवर्नर जेनरल मए कौन्सिलसे मिले थे, और राव शिवसिंह, मुरूतार राज सिरोहीकी मारिफ़त उनकी अपनी तरफ़से हुआ.

जो कि अब राव शिवसिंह मुरूतार रियासत सिरोही और रियासतके खान्दानके प्रतिनिधिने दरख्वास्त की, कि सर्कार अंग्रेज़ीकी हिफ़ाज़त इस मुल्कपर रहे, और गवर्मेंट अंग्रेज़ीको साबित हुआ, कि रियासत सिरोही राजपूतानहके किसी और रईस या राजाके मातह्त नहीं है; इस वास्ते राव साहिबकी दरख्वास्त मन्जूर हुई, और नीचे लिखी हुई शर्तें दोनों तरफ़से मन्जूर हुईं, जो हमेशह जारी रहेंगी; और शर्तोंका बयान किया जावे, जिसके मुताबिक़ दोनों फ़रीक़ चंद्र और सूर्य्यकी मौजूदगी तक अमल रक्खेंगे.

शर्त अव्वल - सर्कार अंग्रेज़ी मन्जूर फ़र्माती है, कि वह रियासत और इलाक़ह सिरोहीको अपनी मातह्ती और पनाहमें ली हुई रियासतोंके मुवाफ़िक़ शुमार करेगी, और अपनी हिफ़ाज़तमें रक्खेगी.

शर्त दूसरी - राव शिवसिंह, मुन्सरिम, अपनी, राव साहिबकी, उनके और वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से इस तह्रीरके ज़रीए़से सर्कार अंग्रेज़ीकी बुज़ुर्गीको कुबूल करते हैं, और इक़ार करते हैं, कि दोस्तीका बर्ताव ताबेदारीके साथ रक्खेंगे; और इस अहृद्नामेकी दूसरी शर्तोंका पूरा लिहाज़ रक्खेंगे.

शर्त तीसरी - राव साहिब सिरोही किसी दूसरे रईस या रियासतसे दोस्ती न करेंगे, और दूसरेपर ज़ियादती नहीं करेंगे, और अगर इत्तिफ़ाक़से किसी हम्सायहके साथ झगड़ा पैदा होगा, तो वह सर्कार अंग्रेज़ीकी सरपंचीके सुपुर्द किया जावेगा, और सर्कार अंग्रेज़ी मंजूर फ़र्माती है, कि वह अपने ज़रीए़से हरएक दावेका फ़ैसलह करादेगी, जो सिरोही और दूसरी रियासतोंके दर्मियान ज़ाहिर होगा चाहे वह दूसरी रियासतोंकी तरफ़से या सिरोहीकी तरफ़से ज़मीन, नौकरी, रुपया या मददकी बाबत, या किसी और मुआमलेकी निस्बत हो.

शर्त चौथी- अंग्रेज़ी हुकूमत रियासत सिरोहीमें दाख़िल न होगी, मगर यहांके हाकिम हमेशह अंग्रेज़ी सर्कारके अफ़्सरोंकी सलाहके मुताबिक़ रियासती इन्तिज़ाम चलावेंगे, और उनकी रायके मुवाफ़िक़ अमल किया करेंगे.

शर्त पांचवीं- जो कि अब सिरोहीका राज्य इलाक़ोंके बटने और बदख़्वाहोंकी बद चलनी, और ग़ारतगरोंकी लूट मारसे बिल्कुल वीरान होगया है; इसलिये मुन्सरिम रियासत वादह करते हैं, कि वह सर्कारी हाकिमोंकी सलाहके मुवाफ़िक़, जिस बातमें कि मुल्की बिहतरी और ख़ुश इन्तिज़ामी समझी जावेगी, अमल किया करेंगे; और यह भी इक़ार करते हैं, कि वह अब और आगेको मुल्की फ़ाइदे, चोरी और ग़ारत गरीके रोकने, और रिआयाके इन्साफ़में पूरी कोशिश किया करेंगे.

शर्त छठी- अगर सिरोहीके सर्दार या ठाकुरोंमेंसे कोई शख़्स किसी जुर्म या ना फ़र्मानीका मुल्ज़िम होगा, उसको जुर्मानह, इलाक़ेकी ज़ब्ती, या और कोई सज़ा, जो क़ुसूरके मुनासिब होगी, अंग्रेज़ी अफ़्सरोंकी सलाह और उनके इत्तिफ़ाक़ रायसे दीजावेगी.

शर्त सातवीं- सिरोहीके रहने वालों, क्या अमीर और क्या ग़रीब, सबने इत्तिफ़ाक़के साथ बयान किया है, कि राव उदयभान अगला हाकिम वाजिबी तौरपर बर्तरफ़ होकर क़ैद किया गया; और इसमें तमाम सर्दारों और ठाकुरोंकी रायका इत्तिफ़ाक़ होगया है, कि वह इस सज़ाको अपने ज़ुल्म और ज़ियादतीके सबब पहुंचा; और राव शिवसिंह सबकी मंज़ूरीसे उसकी जानशीनीके लाइक़ क़रार दिया गया; इस वास्ते अंग्रेज़ी सर्कार राव शिवसिंहको उसकी ज़िन्दगी तक रियासतका मुन्सरिम मंज़ूर फ़र्माती है, और उसके मरने बाद राव उदयभानकी औलादमेंसे कोई वारिस होगा, तो वह गद्दीपर बिठाया जायेगा.

शर्त आठवीं- रियासत सिरोही उस क़द्र ख़िराज अंग्रेज़ी सर्कारको अपनी हिफ़ाज़तके ख़र्चोंकी बाबत आजकी तारीख़से तीन बरस गुज़रने बाद दिया करेगी, जितना कि तज्वीज़ व मुक़र्रर होगा, इस शर्तसे कि उसकी तादाद छः आने फ़ी रुपये आमदनी मुल्कसे ज़ियादह न हो.

शर्त नवीं- सौदागरीकी तरक़ी और आम रिआयाके फ़ाइदोंकी ज़ियादतीके लिये सर्कारी अफ़्सरोंको यह मुनासिब होगा, कि वह राहदारी व पर्मट वग़ैरहके महसूलकी शरह रियासत सिरोहीके इलाक़हमें इस तौर मुक़र्रर करें, जो तज्रिबेसे मुनासिब और ज़रूरी मालूम हो; और वक़ वक़पर उसके जारी करने और कमी बेशीमें मुदाख़लत करें.

शर्त दसवीं- जब कोई अंग्रेज़ी फ़ौजका टुकड़ा राज्य सिरोहीमें या उसके आस

पास किसी कामपर तईनात हो, तो रावको मुनासिब होगा, कि वह सर्कारी खिद्मतोंके लिये फ़ौजके ज़रूरी सामानकी तय्यारी बग़ैर किसी मह्सूलके करे; और फ़ौजके कमानियर अफ़्सरको वाजिब होगा, कि वह इलाक़हकी फ़स्ल और ज़मीन पैदावारको फ़ौजकी लूट मारसे बचावे; अगर अंग्रेज़ी सर्कारकी यह राय होगी, कि कुछ फ़ौज सिरोहीमें क़ियाम रक्खे, तो उनको इस बातका इख़्तियार हासिल होगा, और राव साहिबकी तरफ़से नाराज़गीकी कोई निशानी इस काममें ज़ाहिर न होगी; इसी तरह अगर यह ज़रूर हो, कि कुछ फ़ौज रियासत सिरोहीकी ज़रूरतोंके वास्ते भरती हो, और उसमें अंग्रेज़ अफ़्सर रहें, तो राव साहिब इस बातका वादह करते हैं, कि वह इस मुआमलेमें, जहां तक हो सकेगा, सर्कारी तह्रीर और हिदायतके मुवाफ़िक़ कोशिश करेंगे; मगर इस हालतमें, जो ख़िराज राव साहिब अदा करते हैं, उसमें कमी कीजावेगी, और जो फ़ौज अस्लमें राव साहिबकी है, वह हर वक़्त अंग्रेज़ी अफ़्सरोंकी मातह्तीमें ख़िद्मत गुज़ारीको तय्यार रहेगी.

मक़ाम सिरोही तारीख़ ११ सेप्टेम्बर सन् १८२३ ई०

मुहर राव शिवसिंह.	कंपनीकी मुहर.	दस्तख़त- ऐमहर्स्ट.

राइट ऑनरेबल गवर्नर जेनरल बहादुर मए कौन्सिलने मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें तारीख़ ३१ ऑक्टोबर सन् १८२३ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त- जॉर्ज स्विन्टन्,
सेक्रेटरी, गवर्मेंट.

अह्दनामह नम्बर ८७.

राइट ऑनरेबल गवर्नर जेनरल बहादुर मए कौन्सिल मिहर्बानीके साथ इजाज़त देते हैं, कि पचास हज़ार रुपया सिक्के सोंठ क़र्ज़के तौर तीन बरसके लिये बग़ैर सूद महाराव शिवसिंह मुन्सरिम रियासत सिरोहीको किसी क़द्र बे क़वाइद फ़ौजकी भरतीके ख़र्चके लिये, जो पोलीसका इन्तिज़ाम और रियासतकी तह्सील साहिब एजेंट बहादुर अंग्रेज़ीकी सलाह और निगहबानीसे करेगी, दियाजावे. महाराव शिवसिंह वादह करते हैं, कि तीन साल गुज़रने बाद फ़ौज ख़र्च अदा करनेकी अव्वल तारीख़से वह क़र्ज़का रुपया पर्मेंटके तीन चौथाई हिस्सेकी ज़ब्तीसे अदा करना शुरू करेंगे.

जो कुछ कमी ज़ियादती सिक्केकी तब्दीली या रुपयेकी तह्सीलमें होगी, वह

गव साहिबके ज़िम्मह समझी जावेगी; क्योंकि यह बात साफ़ बयान होचुकी है, कि जिस सिकहमें रुपया दिया गया है, उसीके मुताबिक़ अदा होगा.

नक़्ल मुताबिक़ अस्ल.
दस्तख़त - आर० रॉस,
अव्वल असिस्टेंट, रेज़िडेएट.

अह्दनामह नम्बर ८८.

इक़ारनामह, जो रायसिंह ठाकुर नीवजने सिरोही मक़ामपर वैशाख सुदी ६ संवत् १८८१ मुताबिक़ ४ मई सन् १८२४ ईसवीको किया उसका तर्जमह.

मिती वैशाख सुदी १ संवत् १८८१ मुताबिक़ २९ एप्रिल सन् १८२४ ई० को रायसिंह ठाकुर व प्रेमसिंह ठाकुर नीवज राज़ी होकर इस तह्रीरके ज़रीएसे महाराव शिवसिंह रईस सिरोहीकी इताअत और बुज़ुर्गीका इक़ार करते हैं, और नीचे लिखी हुई सात शर्तें मंज़ूर करते हैं; ये शर्तें हर पुश्तमें जारी रहेंगी, और इनमें कभी कुछ उज़्र पेश न किया जायेगा.

शर्त अव्वल - गांव नीवजकी हर क़िस्मकी पैदावार याने ज़मीनकी आमदनी, राहदारी और परमट वग़ैरहके महसूलसे छः आना फ़ी रुपया श्री दर्बार साहिब सिरोहीको दिया जावेगा, और जुर्मानह वग़ैरह हर क़िस्मकी ज़ियादती रिआयापरसे मौक़ूफ़ होगी.

शर्त दूसरी - ठाकुर नीवजका बेटा कुंवर उदयसिंह चाहता है, कि गिरवर, परनेरा और मूंगथला गांवोंका महसूल, जो अगले ठाकुर लखजीकी जागीरमें थे, और अब पालनपुरके मातहत क़रार दिये गये हैं, उनको मिले; अगर ये गांव सिरोहीको वापस मिलें, तो महाराव ख़ुद इस बातका फ़ैसलह इन्साफ़से करेंगे.

शर्त तीसरी - नीवज और उसके मातहत गांवोंके अन्दर तहसील और फ़ैसलहके मुआमले सिरोहीके कामदारोंकी सलाहसे तै पावेंगे, और कोई बात ग़ैर इन्साफ़ी और ज़ियादतीकी रवा न रक्खी जायेगी.

शर्त चौथी - जब कभी सिरोहीके सर्दार और वहांकी फ़ौज किसी मुआमलेके वास्ते जमा हों, तो ठाकुर नीवज और उसकी फ़ौज भी बग़ैर उज़्र हमराह हुआ करेगी.

शर्त पांचवीं - ठाकुर नीवज किसी ग़ैर रियासतसे न इत्तिफ़ाक़ रक्खेगा, न नया

पैदा करेगा; वह हर्गिज़ उन फ़सादोंमें शरीक न होगा, जो रियासत जोधपुर और पालनपुरमें उसके भाइयों व रिश्तहदारों, और कोलियोंके दर्मियान पैदा हों; अगर किसी ग़ैरसे तक्रार हो, तो ठाकुर उसकी इत्तिला दर्बार सिरोहीको करेगा, और जो हुक्म उसको वहांसे मिलेगा, उसकी तामील करेगा.

शर्त छठी- ठाकुर नीबज अपनी रिआयाके अम्न और इत्मीनानके लिये हर एक तद्बीर अमलमें लावेगा, जिससे उसकी रिआया भील, कोली और मीनामें इन्तिज़ाम रहे; जो कुछ अस्बाब उसके इलाक़हमें चोरी जायेगा, वह उसका एवज़ ज़रूर देगा.

शर्त सातवीं- दर्बार सिरोहीने नीबजके ठाकुरके कुंवरों, ठकुरानियों, और दूसरी औरत रिश्तहदारोंकी पर्वरिश और गुज़रके लिये नीचे लिखे हुए अठारह कूएं बग़ैर ख़िराज दिये हैं; इसमें किसी तरहका फ़र्क़ न होगा.

कूओंकी तफ्सील.

मौज़ा धोली - दो कूएं, गांव जेजतीवाड़ा - दो कूएं, गांव अनाद्रा - सात कूएं, गांव सोलन्दा - सात कूएं; कुल १८ कूएं.

नम्बर ८९.

राव साहिब सिरोहीके ख़रीतेका तर्जमह, जो लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल सर एच० एम० लॉरेन्स, के० सी० बी० एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके नाम ता० २६ जैन्युअरी सन् १८५४ ई० को लिखा गया.

मामूली अल्क़ाबके बाद, रियासत सिरोही क़र्ज़दार होगई है, इस वास्ते मेरी ख़ास ख़्वाहिश यह है, कि अंग्रेज़ी सर्कार सात या आठ बरसके वास्ते उसका इन्तिज़ाम करे, ताकि सालानह ख़र्च आमदनीकी तादादके अन्दर आजावे; क़र्ज़ेका रुपया अदा हो, और मुल्क आबाद हो; अगर इस सात आठ बरसके अर्सेमें यह मत्लब हासिल न हो, तो मीआद ज़ियादह कीजावेगी. यह रियासत सिर्फ़ सर्कार अंग्रेज़ीके सबबसे बची रही है, इसी वास्ते उनकी मिहर्बानीसे पूरी उम्मेद है, कि सर्कार उसकी बिहतरीकी और तद्बीरें भी फ़र्मावेगी. सय्यद निअ्मतअ़ली वकीलको हुक्म हुआ है, कि वह आपके हम्राह नीमच तक जाये; यह शख़्स सिरोहीके अगले और मौजूद हालसे ख़ूब वाक़िफ़ है; जो सवाल इस मुआमलेमें उससे किया जावेगा, उसका जवाब पूरे तौरपर देसक्ता है- फ़क़त.

राव साहिब सिरोहीके ख़रीतेका तर्जमह, जो लेफ्टिनेन्ट कर्नेल सर एच० एम० लॉरेन्स, के० सी० बी०, एजेंट गवर्नर जेनरल, राजपूतानहके नाम ११ फ़ेब्रुअरी सन् १८८२ ई० को लिखा गया.

मामूली अल्क़ावके बाद, मेरे पास आपकी चिट्ठी ३ फ़ेब्रुअरीकी लिखी हुई मेरे ख़रीतेके जवावमें इस मज़्मूनसे पहुंची, कि मेरी दर्ख्वास्त मंज़ूर करनेसे पहिले यह ज़रूर हुआ, कि मैं आपको इस बातकी इत्तिला दूं, कि जो कुछ साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट मुनासिब तसव्वुर फ़र्माकर जो तद्बीर और तज्वीज़ ख़र्चकी कमीमें करेंगे, वह मुझको मंज़ूर करनी होगी; और मेरी इज़्ज़त व दरजह बहाल रहेगा; और यह वादह करूं, कि जो तद्बीरें साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट रियासती इन्तिज़ामके लिये करेंगे, उसकी कोई रोक न होगी; और इन बातोंका जवाब मुझसे जल्द तलब हुआ था.

इसके जवाबमें लिखता हूं, कि मैंने ख़तके मज़्मूनको ख़ूब समझ लिया; जो कि मेरी इज़्ज़तमें कुछ फ़र्क़ नहीं आया, इस वास्ते मैं ख़ुशीसे तहरीर करता हूं, कि जो तद्बीरें और तज्वीज़ें क़रार दीजावें, वह जल्दी ज़ुहूरमें आवें; और वादह करता हूं, कि कोई रोक साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएटके इन्तिज़ाममें मीआदी मुद्दत तक न होगी.

सय्यद निअ्मतअली, जो आपके हमराह है, वह पूरे तौरपर मुख़्तार किया गया है, कि आप जो कुछ इस मुआमलेमें दर्याफ़्त फ़र्माएं, उसका काफ़ी जवाब देगा; मैं उसको अपना ख़ैरख़्वाह जानता हूं - फ़क़त.

अह्दनामह नम्बर ९०.

पहाड़ आबूके हवाख़ोरीके मक़ामकी बाबत शर्तें.

अव्वल - जो मक़ाम हवाख़ोरीके लिये तज्वीज़ हो, वह हत्तल् इम्कान नखी तालाबके मुतअल्लिक़ ज़मीनके अन्दर हो.

दूसरे - सिपाहियोंको मनाही हो, कि वह गांवमें न जायें, और किसी तरहकी तक्लीफ़ वहांके रहने वालोंको न दें, ख़ुसूसन औरतोंकी ख़राबी और बेइज़्ज़ती न करने पावें.

तीसरे - गाय या बैल न मारेजावें; मोर और कबूतरोंका शिकार न हुआ करे, गाय या बैलका गोश्त पहाड़पर लानेकी सख़्त मनाही हो.

चौथे– मन्दिरों और इबादतके स्थानों और उनके तअ़ल्लुक़की जगहोंमें, आमदो रफ्त न हो.

पांचवें– पुजारियों और फ़क़ीरोंसे कोई छेड़ छाड़ न हो.

छठे– आबूपर कोई दरख़्त साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेन्टके ज़रीएसे राव साहिब या उनके काम्दारकी इजाज़त हासिल किये बग़ैर न काटा जावे, और न उखाड़ा जावे.

सातवें– सिपाहियोंको मनाही हो, कि मछलीका शिकार फ़क़ीरों और पुजारियोंके मकानोंके क़रीब याने तालाबके दक्षिणी और पूर्वी कोनेपर न किया करें.

आठवें– पूरी इह्तियात अमलमें लाई जावे, कि कोई चोर फ़ौजको न लूटे, क्योंकि राव साहिब ख़ुदको उसका ज़िम्मह्दार नहीं क़रार देसक्ते.

नवें– ऐसा इन्तिज़ाम किया जावे, कि खेती वग़ैरह और दूसरे अस्बाबका नुक्सान न हो, और सिपाहियोंको मनाही हो, कि वह आम, जामुन और शहद वग़ैरह, जो रिआ़याकी जायदाद है, ज़बर्दस्ती न लें; मगर करोंदा, जो कस्रतसे होता है, ले सक्ते हैं.

दसवें– कोई रास्तह और पगडंडी वग़ैरह बन्द न कीजावे.

ग्यारहवें– राव साहिबसे कोई ख़्वाहिश बाज़ारकी बाबत न कीजावे, बल्कि तमाम तद्बीरें ज़ुरूरी सामानके हासिल करनेको अपने तौरपर अमलमें लाई जावें.

बारहवें– कोई शख़्स अंग्रेज़ हो, या हिन्दुस्तानी बग़ैर एक अगुवेके सिरोहीके इलाक़ेमें सफ़र न करे, क्योंकि यही एक तद्बीर लूटसे बचनेकी है; अगुवे, कुली और मज़्दूरोंको सिरोहीके क़ाइदेके मुवाफ़िक़ और कर्नेल सदर्लैण्ड साहिबकी तज्वीज़के तौर अपना अपना हक़ मिला करे.

तेरहवें– तमाम कुली और मज़्दूरोंको आबू पहाड़पर उसी हिसाबसे मज़्दूरी मिलेगी, जो वहांपर राइज है, और जिसको कर्नेल सदर्लैण्ड साहिबने तज्वीज़ किया था.

चौदहवें– सिपाही, सिर्फ़ घाटा अनाद्रा और घाटा दमानीसे आमदो रफ्त रक्खें.

पन्द्रहवें– अगर ऐसे मुआ़मले पेश आएं, कि जिनसे और शर्तें या तद्बीरें ज़ुरूरी समझी जाएं, तो वह शर्तें और तद्बीरें भी राव साहिबकी तह्रीरपर साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्टकी मारिफ़त तै पासकेंगी.

ग़लत ख़याल दूर करनेके लिये मैंने ऊपर वाली शर्तें मुफ़स्सल लिख दीं, अगर्चि ज़ाहिर है, कि ख़ुद फ़ौजके कूचके वक्त ऐसी बातोंका लिहाज़ रक्खा जाता है.

नम्बर ९१.

तर्जमह ख़रीतह, अज़ तरफ़ राव सिरोही, ब नाम क़ाइम मक़ाम पोलि-
टिकल सुपरिन्टेन्डेएट, मुवर्रख़े श्रावण सुद १२ सम्वत्
१९२३ मु० २३ ऑगस्ट सन् १८६६ ई०.

मैंने आपका ख़रीतह ता० ६ जुलाई सन् १८६६ ई० का लिखाहुआ ठीक वक्तपर पाया, जिसमें कि आप बयान करते हैं, कि पहिलेकी ब निस्बत आबूपर अब बहुत ज़ियादह यूरोपिअन शरीफ़ लोग और आदमी रहते हैं, कि हिन्दुस्तानी परदेशी लोगोंका शुमार भी बहुत बढ़गया है; और इन कारणोंसे साबिक़ राव साहिबके किये हुए बन्दोबस्त काफ़ी नहीं हैं; और इसलिये ज़ुरूर है, कि पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट साहिबके इख्तियारात दस्तूरके मुताबिक़ पुख्तह कियेजावें, वगैरह, वगैरह.

मेरी इस बातमें पूरी सम्मति है, और इसलिये मैं अपनी भी राय ज़ाहिर करता हूं, कि सन् १८६० के ऐक्ट नम्बर ४५, सन् १८६१ के ऐक्ट नम्बर २५ और सन् १८५९ के ऐक्ट नम्बर ८ व सफ़ाई और सड़क बनानेके क़ानून म्युनिसिपेलिटीके, आबूपर जारी कर दिये जावें, और गज़टमें छापे जावें.

—————

तर्जमह ख़रीतह, अज़ तरफ़ राव सिरोही, बनाम क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट, मुवर्रख़े २२ सेप्टेम्बर सन् १८६६ ई०

आपका ख़रीतह ता० २७ ऑगस्टका लिखा हुआ ठीक वक्तपर मैंने पाया. मैंने पेश्तर ता० २३ के ख़रीतेमें आपको लिखा है, कि आबू और अनाद्रापर सन् १८६० का ऐक्ट नम्बर ४५, सन् १८६१ का ऐक्ट नम्बर २५, सन् १८५९ का ऐक्ट नम्बर ८ और म्युनिसिपल ऐक्ट जारी होना मुझे मंजूर है; और अब मैं लिखता हूं, कि आबू और अनाद्रापर इन ऐक्टोंके जारी करनेमें जो कोई तब्दीलात या सुधार कियेजावें, वह भी मुझे मंजूर हैं.

और यह भी मैं मंज़ूर करता हूं, कि सन् १८६४ का ऐक्ट नम्बर ६, सन् १८६२ का ऐक्ट नम्बर १० और १८५९ का ऐक्ट नम्बर १४ उन दोनों मक़ामातपर जारी कियेजावें. स्टाम्पसे जो आमदनी हो, वह आबूकी सड़कों व बाज़ारोंमें ख़र्च कीजावे.

सुप्रीम (बड़ी) गवर्मेन्ट पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएटके इख्तियारात दीवानी व फ़ौज्दारीके मुआमलोंमें भी क़ाइम करसक्ती है. इन इख्तियारातके बाहर मुक़द्दमोंकी सुनाई

एजेएट गवर्नर जेनरल साहिबके इज्लासमें होगी, जिनके इज्लासमें पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट साहिबके फ़ैसलोंकी अपील भी सुनी जायेगी; लेकिन् मैं यह शर्तें दर्ज करता हूं- अव्वल कि, आबू या अनाद्रापर कोई दीवानी या फ़ौज्दारीके मुक़द्दमे सिरोहीकी रिआयाके दर्मियान होवें, तो उनका फ़ैसला पहिलेकी तरह हमारे दस्तूरोंके मुताबिक् सिरोहीकी अदालतोंमें होवे; दूसरा कि, हमारे मज़्हब और रीति रस्ममें किसी तरह फ़र्क़ न पड़े; तीसरा कि, ऊपर लिखेहुए इख्तियारात, जो कि मैंने सुप्रीम गवर्मेन्टके सुपुर्द करदिये हैं, जब मैं चाहूं, वापस ले लिये जावें.

नम्बर ९२.

तर्जमह ख़रीतह, अज़् तरफ़ श्रीमान राव सिरोही, बनाम साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट, रियासत हाज़ा, मुवर्रख़े ९ मार्च सन् १८६७ ई०.

मैंने आपका ख़रीतह ता० ७ मार्चका पाया, जिसमें आबू और अनाद्रापर सन् १८६५ का ऐक्ट नम्बर ११ जारी करनेकी इजाज़त मांगी गई. मैं उस ऐक्टका जारी कियाजाना उन शर्तोंपर मंजूर करता हूं, जिनकी तफ़्सील २२ सेप्टेम्बर गुज़श्तहके ख़रीतेमें लिखी है.

अह्दनामह नम्बर ९३.

अह्दनामह दर्मियान अंग्रेज़ी गवर्मेन्ट और श्री मान उम्मेदसिंह राव सिरोही व उनकी औलाद, वारिसों और जानशीनोंके, जो एक तरफ़ लेफ्टिनेएट विलिअम जेम्स वेमिस् म्यूर, पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट सिरोहीने बमूजिब हुक्म कर्नेल विलिअम फ़्रेड्रिक ईडन्, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके किया, जिनको पूरे इख्तियारात राइट ऑनरेबल् सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दसे मिले थे; और दूसरी तरफ़ खुद राव उम्मेदसिंहने किया.

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह, अगर अंग्रेज़ी इलाक़ेमें बड़ा जुर्म करे, और सिरोहीकी राज्य सीमामें पनाह लेना चाहे, तो सिरोहीकी सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी; और सर्रिश्तहके मुताबिक् उसके मांगेजानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी- कोई आदमी सिरोहीके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी इलाक़हमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उस

को गिरिफ्तार करके सरिश्तेके मुताबिक़ मांगेजानेपर सिरोहीकी सर्कारके सुपुर्द करेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो सिरोहीकी रअय्यत न हो, और उस राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी इलाक़हमें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और मुक़द्दमहकी तहक़ीक़ात उस अदालतमें होगी, जिसके लिये सर्कार अंग्रेज़ी हुक्म देवे; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंकी रूबकारी उस पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएटके इज्लासमें होगी, जिसके तह्तमें सिरोहीकी पोलिटिकल निगहबानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जिसपर कोई बड़ा जुर्म क़ाइम हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि सरिश्तेके मुताबिक़ खुद वह सर्कार, जिसके इलाक़हमें जुर्म हुआ हो, या उसके हुक्मसे कोई शख़्स उस आदमीको नहीं मांगे, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके क़ानूनके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पाया जावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा; और वह मुज्रिम क़रार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं- नीचे लिखे जुर्म बड़े जुर्म समझे जायेंगे- १ खून, २ खून करनेकी कोशिश, ३ वह्शियानह क़त्ल, ४ ठगी, ५ ज़हर देना, ६ सख़्तगीरी (ज़बर्दस्ती व्यभिचार); ७ ज़ियादह ज़ख़्मी करना, ८ लड़का बाला चुराना, ९ औरतोंका बेचना, १० डकैती, ११ लूट, १२ संध (नक़्ब लगाना), १३ चौपाये चुराना, १४ मकान जला देना, १५ जालसाज़ी करना, १६ जाली सिक्का बनाना या खोटा सिक्का चलाना, -१७ धोखा देकर जुर्म करना,- १८ माल अस्बाब चुराना, १९ ऊपर लिखेहुए जुर्मोंमें मदद देना या वर्ग़लाना (बहकाना).

शर्त छठी- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें जो खर्च लगेगा, वह उसी सर्कारको देना पड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बातें कीजावें.

शर्त सातवीं- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक़्त तक बर्क़रार रहेगा, जबतक कि अह्दनामह करने वाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक उसके तब्दील करनेकी ख्वाहिश दूसरेपर ज़ाहिर न करे.

शर्त आठवीं- इस अह्दनामेकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो कि दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे हैं, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अह्दनामोंके, जो कि इस अह्दनामेकी शर्तोंके बख़िलाफ़ हों.

मक़ाम सिरोही ता० ९ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० मुताबिक़ आसोज सुद ११ सम्वत् १९२४.

दस्तख़त- डब्ल्यू० म्यूर,
पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट, सिरोही.

मुहर राव सिरोहीकी.

दस्तख़त- जॉन लॉरेन्स,
वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अ़ह्दनामेकी तस्दीक़ हिज़ एक्सिलेन्सी वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्दने ता० ३१ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० को मक़ाम शिमलेपर की.

दस्तख़त- डब्ल्यू० म्यूर,
फ़ॉरेन सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द.
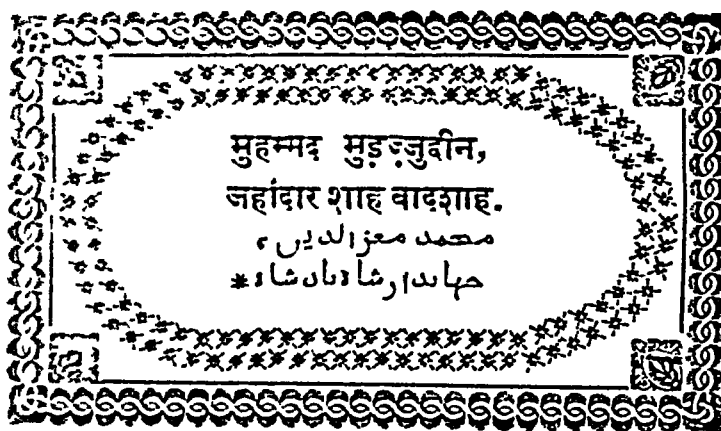
जब बहादुरशाह मरा, उस वक्त शाहज़ादह अ़ज़ीमुश्शान उसके पास मौजूद था; लेकिन् वह डरसे भागकर अपने लश्करमें चला आया, और उसने अमीनुद्दौलहको बादशाहकी आख़िरी हालत देखनेके लिये भेजा; उसने वापस आकर बादशाहके मरनेकी ख़बर सुनाई. यह बात सुनते ही अ़ज़ीमुश्शान बहुत रोया, बाद उसके अमीनुद्दौलहके कहनेसे बादशाह बनकर खुशीका नक़ारा बजवाया, और हाज़िरीन दर्बारने नज़्रें दिखलाईं.

हमीदुद्दीनख़ां, हकीमुलमुल्क, हकीम सादिक़ख़ां, महाबतख़ां, शाहनवाज़ख़ां वग़ैरह लोग भी उससे आमिले; रुस्तमदिलख़ां और किसी क़द्र दूसरे लोग जहांशाहसे मिले; ज़ुल्फ़िक़ारख़ां जहांदारशाहके पास गया, जिसकी सलाहसे उसने जहांशाह याने ख़ुजस्तह अख़्तर व रफ़ीउ़ल्क़द्रको भी मिला लिया. तीनों शाहज़ादे बड़ा भारी लश्कर लेकर अ़ज़ीमुश्शानसे मुक़ाबलह करने लगे; सात रोज़ तक बराबर गोलन्दाज़ी रहनेके बाद निअ़्मतुल्लाहख़ां, अ़ज़ीज़ख़ां, दया बहादुर नागर, राजा मुह्कमसिंह खत्री, कृष्णगढ़के राजा राजसिंह बहादुर और शाहनवाज़ख़ांने हमलह करना चाहा; लेकिन् अ़ज़ीमुश्शानने रोक दिया; क्योंकि वह जानता था, कि तीनों शाहज़ादोंके पास ख़ज़ानह नहीं है, इसलिये वे आपही बिखर जायेंगे.

आठवें दिन ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने एक ऊंची जगहसे अ़ज़ीमुश्शानके लश्करपर गोलन्दाज़ी शुरू की, जिससे उसका लश्कर भाग निकला. तब नागर दया बहादुर, और राजा मुह्कमसिंह बहादुर अ़ज़ीमुश्शानके मना करनेपर भी ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके तोपख़ानेपर चढ़गये, और उसे छीन लिया; लेकिन् पिछली मददके न पहुंचनेसे ज़ुल्फ़िक़ारख़ां, रुस्तमख़ां और जानीख़ांने हमला करके शिकस्त दी; और वे दोनों ज़ख़्मी होकर मारेगये. फिर सुलैमानख़ां पन्नीने एक हज़ार सवारों समेत अ़ज़ीमुश्शानके लश्करसे निकलकर लड़ाई की, और मारागया. अ़ज़ीमुश्शानकी बे इन्तिज़ामीसे

साठ सत्तर हज़ार सवारोंमेंसे दस बारह हज़ार बाक़ी रहगये; और उनमेंसे भी रातके वक़ निकलकर बहुतसे शहरमें चलेगये, सिर्फ़ दो या तीन हज़ार सवार पास रहे; जब सुब्ह्को अ़ज़ीमुश्शान लड़ाईके लिये चला, तो कुल दो हज़ार सवार साथ थे. इसपर भी तेज़ हवा रावी नदीके रेतको लेकर अ़ज़ीमुश्शानके साम्हने इस तरहपर आई, कि मानो परमेश्वरने उसे ग़ारत करनेका शस्त्र बना भेजा था. अमीनुद्दौलहने इस वक़ अ़ज़ीमुश्शानको निकलनेकी सलाह दी, लेकिन् उसने इन्कार किया. फिर हाथी सूंडपर गोला लगनेसे अ़ज़ीमुश्शानको लेभागा, और वह रावी नदीमें हाथी समेत गिरकर डूब मरा.

इस लड़ाईका ख़ातिमह होनेपर खुजस्तहअख़्तर, याने जहांशाहने बादशाहसे कहा, कि सल्तनत तक़्सीम करनेका वादह पूरा होना चाहिये. उसी वक़ अस्सी छकड़े अश्रफ़ी और सौ छकड़े रुपयोंके जो मिले थे, उसके तीन बराबर हिस्से करने चाहे. तब ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने कहा, कि पांच हिस्से होने चाहियें, जिनमेंसे तीन मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाहके, और दो दोनों शाहज़ादोंके. इसपर बखेड़ा हुआ, तीन दिनतक दोनों तरफ़की फ़ौजें तय्यार रहीं, चौथे दिन शामको जहांशाहने अचानक मुइज़्ज़ुद्दीनके लश्करपर ह़मलह किया, और फ़त्ह पाई. मुइज़्ज़ुद्दीन पोशीदह तौरपर ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके पास पहुंचा; ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने हैरान होकर अपने ख़ास तीन चार सौ बर्क़न्दाज़ोंको नज़्रके बहानेसे जहांशाहके पास भेजा, जिन्होंने बाढ़ मारकर जहांशाहका काम तमाम किया; और मुइज़्ज़ुद्दीन बजाय शिकस्त पानेके फ़त्हयाब होगया. दूसरे रोज़ सुब्ह्को रफ़ीउश्शान याने रफ़ीउल्क़द्रने लड़ाईकी तय्यारी की; तब ज़ुल्फ़िक़ारख़ां मुइज़्ज़ुद्दीनको हाथीपर सवार कराकर मुक़ाबलेके लिये लेआया. लड़ाई होनेके बाद रफ़ीउल्क़द्र भी साथियों समेत मारागया.

मुइज़्ज़ुद्दीनने बे खटके सल्तनत पाकर चारों तरफ़ फ़र्मान भेजे, और लाहौरसे रवाना होकर हिज्री ११२४ ता० १८ जमादियुलअव्वल [वि० १७६९ आपाढ़ कृष्ण ४ = ई० १७१२ ता० २३ जून] वृहस्पतिवारको तीन घंटे दिन बाक़ी रहे दिल्ली पहुंचा, जहां तख़्तपर बैठकर आसिफ़ुद्दौलह असदख़ांको वकीले मुत्लक़ रक्खा, जैसा कि वह बहादुर-शाहके वक़्में था; ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको वज़ीरे आज़म बनाया, और अ़ज़ीमुश्शानके बड़े बेटे सुल्तान करीमुद्दीनको मरवाडाला, जिसे हिदायतकेशख़ां लाहौरसे गिरिफ़्तार कर लाया था. आलमगीर बादशाहके बेटे मुहम्मद आज़मका शाहज़ादह आलीतबार, काम-बख़्शका बेटा मुह्युस्सुन्नह और फ़ीरोज़मन्द क़ैद किये गये. फिर अपने धायभाईको ख़ानेजहांका ख़िताब दिया, जो ज़ुल्फ़िक़ारख़ांका विरोधी था. लालकुंवर बेगमका

बादशाहने बड़ा रुत्बा बढ़ाकर उसके भाइयोंको सात हज़ारी और पांच हज़ारी मन्सबदार बनाया; ये लोग गवय्ये थे. जुल्फ़िक़ारखां, बेगमके भाई खुशहालखांसे हंसी ठठा किया करता था, उसने अपनी बहिनकी मारिफ़त बादशाहका दिल वज़ीरसे फेरा; जुल्फ़िक़ारखांने खुशहालखांको नालाइक़ हरकतोंके सबब गिरिफ़्तार करके सलीमगढ़में क़ैद कर दिया. इसी तरह लालकुंवरकी दोस्त जुहरा कोंजड़ीको गाज़ियुद्दीनखांके बेटे चीन क़िलीचखांने पिटवाया, जो रास्तेमें उसके साथ बे अदबीसे पेश आई थी. बादशाह कमीन लोगोंके फन्देमें गिरिफ़्तार होकर ऐश इश्रत व शराबको अपनी बादशाहत जानते थे, और बड़े बड़े खानदानी आदमियोंकी दिलशिकनी होने लगी.

अज़ीमुश्शानके बेटे फ़र्रुखसियरका हाल यह है, कि बादशाह आलमगीरके समय अज़ीमुश्शानको बंगालेकी सूबहदारी मिली थी, और बहादुरशाहके राज्यमें उड़ीसा, इलाहाबाद (प्रयाग) और अज़ीमाबाद (पटना) भी उसको मिलगया; तब अज़ीमुश्शान तो बादशाहके पास रहने लगा, और सय्यद अब्दुल्लाहखांको इलाहाबाद और सय्यद हुसैनअलीखांको अज़ीमाबाद और जाफ़रखांको सूबह बंगाल व उड़ीसाकी सूबहदारी दी. जब बहादुरशाह और आज़मकी लड़ाई हुई, तबसे अज़ीमुश्शान बंगालेकी तरफ़ नहीं गया; परन्तु अपने बेटे फ़र्रुखसियरको मए अपनी हरमसराय व मुलाज़िमोंके अक्बर नगर उर्फ़ राजमहलमें छोड़ आया था; वह शाहज़ादह उसी जगह तइनात रहकर इस समय तक वहां बर्क़रार था. अब जहांदारशाहने बादशाह होकर एक फ़र्मान जाफ़रखांको लिखभेजा, कि फ़र्रुखसियरको गिरिफ़्तार करके भेजदो; उस नेक आदमीने अज़ीमुश्शानकी पर्वरिशको याद करके फ़र्रुखसियरको खानगी तौरपर खबर दी, कि मेरे पास यह हुक्म आया है, आप अपने बचावकी सूरत कीजिये. शाहज़ादहने पटनेकी राह ली, और हुसैन अलीखांके पास पहुंचकर बहुत लाचारी की; पहिले तो हुसैनअलीखांने टाला टूली की, पर आख़िरमें फ़र्रुखसियरका मददगार बनगया, और अपने भाई अब्दुल्लाहखांको भी शामिल किया; चारों तरफ़ फ़र्रुखसियरके नामसे फ़र्मान जारी होगये. हुसैनअलीखांने अपने भान्जे गैरतखांको अज़ीमाबादमें छोड़कर मए फ़र्रुखसियरके कूच किया. इधर मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाहने इस बातको सुनकर सय्यद अब्दुल्ग़फ़्फ़ारखां कुर्देज़ीको दस बारह हज़ार सवारों समेत इलाहाबादकी हुकूमतपर भेजदिया, जिसे अब्दुल्लाहखांने अपने भाइयोंको भेजकर मुक़ाबलेमें शिकस्त देने बाद मारडाला. यह पहिला मुक़ाबलह था, जो मुइज़्ज़ुद्दीनके मुलाज़िमोंसे फ़र्रुखसियरके मुलाज़िमोंने किया.

इसके बाद फ़र्रुख़सियर भी मए हुसैनअलीख़ां व सफ़्शिकनख़ां नाइब सूबहदार उड़ीसा व अहमदबेग, मुइज़्ज़ुद्दीन कोके, व ख़्वाजह आसिम ख़ानिदौरां वग़ैरह सर्दारोंके आन पहुंचे; और अब्दुल्लाहख़ांको लेकर इलाहाबादसे आगे बढ़े. यह ख़बर सुनकर जहांदारशाहने भी अपने बड़े शाहज़ादे अअ़ज़ुद्दीनको मए पचास हज़ार सवार व तोपख़ानह व बड़े बड़े सर्दारोंके रवानह किया. शाहज़ादेकी मदद व फ़ौजकी दुरुस्तीके लिये ख़्वाजह अह्सनख़ांको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब व ख़ानिदौरांका ख़िताब देकर भेजा. इन सबके पीछे ग़ाज़ियुद्दीनख़ांके बेटे चीन क़िलीचख़ांको तसल्ली देकर रवानह किया. ये सब खजवा गांवमें पहुंचकर ठहरे थे, कि फ़र्रुख़सियर भी आपहुंचा; और गोलन्दाज़ी होने लगी; पिछले पहर रातमें शाहज़ादह अअ़ज़ुद्दीन भाग गया, और माल अस्बाब, ख़ज़ानह व तोपख़ानह वग़ैरह फ़र्रुख़सियरकी फ़ौजके क़ाबूमें आया. भागते हुए अअ़ज़्ज़ुद्दीनको चीन क़िलीचख़ांने आगरेके पास रोका, और बादशाह जहांदारशाहको ख़बर दी.

यह सुनकर मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाह हिज्री ११२४ ता० १२ ज़िल्क़ाद [वि० १७६९ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ = ई० १७१२ ता० ११ डिसेम्बर] सोमवारके दिन फ़र्रुख़सियरके मुक़ाबलेको दिल्लीसे रवानह हुआ. हरावल ज़ुल्फ़िक़ारख़ां, और मददगार कोकलताशख़ां, आज़मख़ां, जानीख़ां, मुहम्मद अमीरख़ां वग़ैरह तूरान, व ईरानके सर्दार कुल सत्तर अस्सी हज़ार सवार तोपख़ानह और पैदल फ़ौजके साथ आगरेकी तरफ़ चले. जब आगरेको पीछे छोड़कर समूनगरके पास पहुंचे, उधरसे फ़र्रुख़सियर भी लश्कर सहित आया, और जहांदारशाहको धोखा देनेके लिये हुसैनअलीख़ांको डेरोंमें छोड़कर आप मए अब्दुल्लाहख़ांके जमना नदी पार आगरेसे ४ कोस दिल्लीकी तरफ़ रोज़बिहानी सरायमें आठहरा. जहांदारशाह भी पीछा फिरकर उसके मुक़ाबलेमें आया. इधर ज़ुल्फ़िक़ारख़ां और उधर अब्दुल्लाहख़ां हरावलके अफ्सर थे. हिज्री ११२४ ता० १४ ज़िल्हिज [वि० १७६९ पौष शुक्ल १५ = ई० १७१३ ता० १२ जैन्युअरी] को दोनों फ़ौजोंकी लड़ाई शुरू हुई; अब्दुल्लाहख़ांने जहांदारशाहके तोपख़ानहको हटाकर बड़ी बहादुरीके साथ हमलह किया, और मुइज़्ज़ुद्दीनके हाथी तक पहुंचगया. वह कम नसीब अपने बेटे और बेगम लालकुंवरको लेकर भागा, और आगरेके क़िलेमें जा ठहरा. ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने बहुतेरा ढूंढा, परन्तु कुछ पता न लगा. फ़र्रुख़सियरकी फ़ौजमें फ़त्हके शादियाने बजे. मुइज़्ज़ुद्दीन मए अपने बेटेके भागकर दिल्ली पहुंचा, जिसको आसिफ़ुद्दौलह असदख़ांने नज़र बन्द करदिया. पीछेसे ज़ुल्फ़िक़ारख़ां भी पहुंच गया, जो दुबारा फ़र्रुख़सियरसे लड़ना चाहता था; लेकिन् उसने असदख़ांके समझानेसे यह इरादह छोड़ दिया. उसको फ़र्रुख़सियरकी तरफ़से ख़ौफ़ था, क्योंकि उसके बाप अज़ीमुश्शानको उसने मारकर मुइज़्ज़ुद्दीनको तख़्तपर बिठाया था; असदख़ांसे कहा,

कि मैं दक्षिणको चला जाऊं; उस बुड्ढेने समझाया, कि हम आलमगीरके ज़मानेके पुराने नौकर हैं. फ़र्रुख़सियर हर्गिज़ हमको बर्बाद न करेगा. हुसैनअ़लीख़ां ज़ख्मी होकर बेहोश पड़ा था, जिसको अ़ब्दुल्लाहख़ांने तलाश करके उठाया. हिज्री ११२४ ता० १६ ज़िल्हिज [वि० १७६९ माघ कृष्ण १ = ई० १७१३ ता० १२ जैन्युअरी] को फ़र्रुख़सियरने शाहाना दर्बार किया, जिसमें चीन क़िलीचख़ां, अ़ब्दुस्समदख़ां, मुहम्मद अमीनख़ां वग़ैरह तूरानी सर्दारोंने अ़ब्दुल्लाहख़ांकी मारिफ़त हाज़िर होकर नज्रें दिखलाईं.

(फ़र्रुख़सियर बादशाह.)

फ़र्रुख़सियरने अ़ब्दुल्लाहख़ांको मए लुत्फ़ुल्लाहख़ां, सादिक़ख़ां वग़ैरह उमरावोंके दिल्लीका बन्दोबस्त करनेको रवानह किया; और आप एक हफ्ते ठहरकर दिल्लीकी तरफ़ चला, जो हिज्री ११२५ ता० १४ मुहर्रम [वि० १७६९ माघ शुक्ल १५ = ई० १७१३ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को दिल्लीके पास बारह पुलेमें पहुंचा, और वहां अ़ब्दुल्लाहख़ांको क़ुतुबुल् मुल्कका ख़िताब व सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर अपना वज़ीर आज़म बनाया; हुसैनअ़लीख़ांको इमामुल्मुल्कका ख़िताब व सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर अमीरुल् उमरा बख़्शियुल् मुल्क अव्वल बनाया; मुहम्मद अमीनख़ांको एक हज़ारी ज़ात व सवार पहिले मन्सब पर बढ़ाकर एतिमादुद्दौलहका ख़िताब देने बाद दूसरे दरजेका बख़्शी किया; चीन क़िलीचख़ांको, जो पहिले पांच हज़ारी था, सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर 'निज़ामुल्मुल्क' का ख़िताब इनायत किया; और दक्षिणकी सूबहदारी दी; ख़्वाजह आसिमको समसामुद्दौलह ख़ानेदौरांका ख़िताब व सात हज़ारी ज़ात व ६ हज़ार सवारका मन्सब दिया; अहमदबेग मुइज़्ज़ुद्दीनके कोकाको, जो फ़र्रुख़सियरसे पहिले आमिला था, ग़ाज़ियुद्दीनख़ां बहादुर ग़ालिब जंगका ख़िताब व ६ हज़ारी ज़ात व पांच हज़ार सवारका मन्सब और तीसरे दर्जेकी बख़्शीगरी दी; क़ाज़ी अ़ब्दुल्लाह तूरानीको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और ख़ानख़ानां मीर जुम्लाका ख़िताब दिया; यही बादशाहकी तरफ़से तहरीरपर दस्तख़त करता था. इनके सिवा बहुतसे आदमियोंको इन्आ़म, इक्राम, मन्सब और ख़िताब दिये.

वज़ीर असदख़ां मए अपने बेटे ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके बारहपुलेपर हाज़िर हुआ; पहिले हुसैनअ़लीख़ांने चाहा था, कि वह हमारी मारिफ़त पेश हो; परन्तु अ़ब्दुल्लाहख़ां मीर जुम्लाने उन दोनों ज़बर्दस्तोंका एक होना ना पसन्द करके अपनी मारिफ़त पेश किया. इस इख़्तिलाफ़से इन बेचारोंपर आफ़त आई; असदख़ांको रुख़्सत देकर ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको बाहर डेरेमें ठहराया, जो बादशाहके हुक्मसे थोड़ी देरमें मारा

गया. उसी दिन ता० १६ मुहर्रम [वि० फाल्गुन् कृष्ण २ = ई० ता० १३ फ़ेब्रुअरी] को जहांदारशाहको भी फांसी देकर मारडाला, और ता० १७ मुहर्रम [वि० फाल्गुन् कृष्ण ३ = ई० ता० १४ फ़ेब्रुअरी] को फ़र्रुख़सियर क़िलेमें दाख़िल हुआ, जिसके पीछे मुइज़्ज़ुद्दीनका सिर बांसपर, लाश हाथीपर और ज़ुल्फ़िक़ारख़ांकी लाश उसी हाथीकी पोंछसे उलटी लटकती हुई बंधी आती थी. उन लाशोंके पीछे पालकीमें बेचारे बुड्ढे असदख़ांको चलाया गया था. फिर असदख़ांको ख़ानेजहां बहादुरकी हवेलीमें क़ैद किया, लाशोंको क़िलेके दर्वाज़ेपर डाला, और ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके दीवान राजा सभाचन्दकी ज़बान कटवा डाली; इन सबका माल अस्बाब ज़ब्त हुआ. इनके सिवा दूसरे भी कई सर्दारोंको शुब्हेमें फांसियां देकर मरवाडाला; मुइज़्ज़ुद्दीनके बेटे अइज़्ज़ुद्दीन, आज़मशाहके बेटे आलीतबार और ख़ुद फ़र्रुख़सियरके भाई हुमायूं बख़्तकी आंखोंमें सलाइयां फिरवा दीं. इस ज़ुल्मसे हर एक सर्दारके दिलमें बड़ा ख़ौफ़ होगया.

फ़र्रुख़सियरने शुरू सल्तनतसे सय्यद अब्दुल्लाहख़ांके बर्ख़िलाफ़ उह्दे देना तज्वीज़ किया, जिससे बादशाह और वज़ीरके दिलोंमें फ़र्क़ आने लगा; लुच्चे और बद मआश लोग बादशाही हुज़ूरमें पहुंचने लगे; लेकिन् कुल इख़्तियार अब्दुल्लाहख़ांके हाथमें होनेसे, जो नुक़्सान दिखाई देते, वे रफ़ा हो जाते; अब्दुल्लाहख़ां भी बड़ा अय्याश था, वह अपने दीवान राजा रत्नचन्द महाजनको कुल इख़्तियार देकर ऐशमें पड़ा; रत्नचन्द बादशाहतका काम संभालनेकी लियाक़त नहीं रखता था; अल्बत्तह अब्दुल्लाहख़ांका भाई हुसैनअलीख़ां बड़ा बहादुर सिपाही था, जिसके दबावसे कोई कुछ नहीं कर सक्ता था. मीर जुम्ला जुदा बादशाहको बहकाकर काममें ख़लल डालता था. इस तरहकी बे तर्तीबीसे बादशाहतका अजब ख़राब ढंग होगया था.

मीर जुम्लाने बादशाहसे कहा, कि अब्दुल्लाहख़ांसे हुसैनअलीख़ांको जुदा करना चाहिये; इस बातके लिये अभी यह मौक़ा है, कि राजा अजीतसिंहने बादशाह आलमगीरके मरने बाद मारवाड़ और जोधपुरपर क़ब्ज़ह करलिया, बांग देना मौक़ूफ़ करदिया, और मस्जिदोंको गिरवाकर उस जगह मन्दिर बनाये; इसलिये हुसैनअलीख़ांको उस तरफ़ भेज दीजिये. बादशाहने ऐसा ही किया, और हुसैनअलीख़ां मए फ़ौजके जोधपुरकी तरफ़ रवानह हुआ. बादशाहने महाराजाको एक फ़र्मान पोशीदह लिख भेजा, कि तुम हुसैनअलीख़ांको मारडालना. पीछेसे अब्दुल्लाहख़ांको गिरिफ़्तार करना चाहा; अब्दुल्लाहख़ां इस भेदसे वाक़िफ़ होगया, और उसने अपने भाईको पीछा आनेके लिये लिखा. उधर राजा अजीतसिंहने भी बादशाहका फ़र्मान हुसैनअलीख़ांको दिखलाया. इसपर भी बहादुर हुसैनअलीख़ां, महाराजाकी बेटी इन्द्रकुंवरको

बादशाहके लिये, और कुछ पेश्कश व महाराजाके कुंवरको साथ लेकर दिल्ली पहुंचा. आपसके रंज व फ़रेबसे सल्तनतके कामोंमें दिन दिन बिगाड़ होता जाता था, वज़ीर और अमीरुल्उमरा अपनी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ काम करना चाहते थे, और बादशाहका सलाहकार मीर जुमला उनके बख़िलाफ़ चाल चलता था; वज़ीर व उसका दीवान रत्नचन्द रिश्वत वगैरह ख़ूब लेने लगे; और बादशाह अब्दुल्लाहख़ांको गिरिफ़्तार करना चाहता था. फ़र्रुख़सियरकी मा, जिसने सय्यदोंसे कुर्आनकी सौगन्द खाकर क़ौल क़रार किया था, हरएक बातकी उनको ख़बर देती थी; यहां तक कि दोनों भाई दर्बारमें जाना छोड़कर होश्यार रहने लगे.

फ़र्रुख़सियरकी मा अब्दुल्लाहख़ांके मकानपर जाकर दोनों भाइयोंको ले आई, और बादशाह व दोनों सय्यदोंमें सुल्ह करवादी; उन दोनोंने बादशाहके साम्हने तलवार रखकर कहा, कि हम कुसूरवार हों, तो यह तलवार और सिर हाज़िर है, सज़ा दीजिये; और मौकूफ़ करना हो, तो हमको वह भी मंजूर है, ता कि मक्केको चले जावें; हमसे काम लेना हो, तो नालाइक़ आदमियोंकी बातोंपर ध्यान न देना चाहिये. बादशाहने इस बातपर सुलह करली, कि मीर जुमलह तो अज़ीमाबादकी सुबहदारीपर, और हुसैन-अलीख़ां दक्षिणकी सूबहदारीपर चलाजावे; निज़ामुल्मुल्क दक्षिणका सूबहदार दिल्लीमें चलाआवे; और दाऊदख़ां गुजरातके सूबहदारको लिखाजावे, कि वह अहमदाबादसे बुर्हानपुर चला जावे, वहां हुसैनअलीख़ांके हुक्मकी तामील करना चाहिये; लेकिन् पोशीदह दाऊदख़ांको फ़र्मान लिख भेजा, कि हुसैनअलीख़ांको मारडालोगे, तो कुल दक्षिणकी सूबहदारी तुमको मिलेगी.

मीर जुम्लाको तो अज़ीमाबादको रवानह करदिया, और हुसैनअलीख़ांको हुक्म दिया, कि तुम महाराजा अजीतसिंहकी बेटीका विवाह करजाओ. तब अमीरुल्उमराने उस राजकुमारीका पिता बनकर बड़ी धूमधामसे तय्यारी की, और हिन्दुओंके रवाजके मुवाफ़िक़ हिज्री ११२७ ता० २२ ज़िल्हिज [वि० १७७२ पौष कृष्ण ७ = ई० १७१५ ता० २८ डिसेम्बर] बृहस्पतिवारकी रातको उसका विवाह बादशाहके साथ कर दिया.

इन्हीं दिनोंमें सिक्खोंके गुरू बिन्दाने पंजाबमें बड़ी भारी बग़ावत की, और हज़ारहा मर्द, औरत बच्चे वगैरह मुसल्मानोंको बड़ी बे रहमीके साथ क़त्ल किया, जिसको अब्दुस्समदख़ां सूबहदार कश्मीरने गिरिफ़्तार करके दिल्ली भेजा; वह भी बड़ी सख़्तीके साथ मए अपने बेटे और साथियोंके बादशाहके हुक्मसे हिज्री ११२८ [वि० १७७३ = ई० १७१६] में मारागया.

हुसैनअलीख़ांको बादशाहने दक्षिणकी तरफ़ रवानह किया, तो उसने अर्ज़ की, कि मेरे भाईके साथ किसी तरहकी दग़ा न कीजिये, वर्नह मैं २० दिनमें यहां आसक्ता

हूं. हुसैनअ़लीख़ां हिज्री ११२८ शुरू रमज़ान [वि० १७७३ भाद्रपद शुक्ल २ = ई० १७१६ ता० २० ऑगस्ट] को बुर्हानपुर पहुंचा; गुजरातका सूबहदार दाऊदख़ां पहिलेसे वहां मौजूद होगया था, जो बादशाही इशारेके मुवाफ़िक़ हुसैनअ़लीख़ांसे लड़नेको मुस्तइद हुआ; हुसैनअ़लीख़ांने बहुत समझाया, लेकिन् वह न माना; आख़िरकार दाऊदख़ां मारा गया, और अमीरुल्उमराने फ़त्ह पाई. यह ख़बर बादशाहके कान तक पहुंची, तो उसने रंजके साथ कहा, कि ऐसे बहादुर सिपाहीको मारना न चाहिये था; तब अ़ब्दुल्लाहख़ां वज़ीरने अ़र्ज़ की, कि मेरा भाई उस पठानके हाथसे माराजाता, तो शायद मर्ज़ी मुबारकके मुवाफ़िक़ होता. इस तरह फिर ज़ियादह रंजकी सूरत पैदा होने लगी; मीरजुम्लासे अ़ज़ीमाबादका बन्दोबस्त न होसका, वह फ़ौजकी तनूख़्वाह भी न देसका, और भागकर दिल्ली पहुंचा. इस बातसे शक हुआ, कि बादशाहने उसको बुलाया है; लेकिन् बादशाहने उसका मन्सब घटाकर पंजाबकी तरफ़ भेजदिया; तो भी बादशाह और वज़ीरका रंज दिन दिन बढ़ता गया.

हिज्री ११२९ [वि० १७७४ = ई० १७१७] में आ़लमगीरके वज़ीर असदख़ांका ९४ वर्षकी उ़म्रमें इन्तिक़ाल होगया. यह अपने बेटे ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके क़त्ल होनेसे गोशह नशीन था; जब अ़ब्दुल्लाहख़ांसे बादशाहकी नाइत्तिफ़ाक़ी बहुत बढ़गई, और फ़र्रुख़सियरने उस बुड्ढे वज़ीर असदख़ांसे सलाह पूछनेको अपना एतिबारी आदमी भेजा, उसने यह जवाब दिया, कि हमारे पुराने ख़ानदानको आपने बर्बाद किया, जिसका यह नतीजा है; अब मुनासिब यही है, कि सय्यदोंको ख़ुश रखा जावे; क्योंकि सल्तनतको ज़वाल आचुका, और उसकी लगाम सय्यदोंके हाथमें है; बर्ख़िलाफ़ीसे आपके हक़में ख़राब नतीजा होगा.

बादशाही मुलाज़िम बड़ी हैरतमें थे, कि अब बादशाहके हुक्मकी तामील करें, या वज़ीरको ख़ुश रक्खें. इनायतुल्लाहख़ां, आ़लमगीरी मुलाज़िम मक्कहसे वापस आया, जिसके बेटे हिदायतुल्लाहख़ांको फ़र्रुख़सियरने अपने पहिले जुलूसमें मरवाडाला था; बादशाहने उस पुराने अह्लकारका इस समय आना ग़नीमत जानकर ख़ालिसहकी दीवानी और कश्मीरकी सूबहदारी उसके लिये तज्वीज़ की; उसने जलती हुई आगमें और ईंधन डाला, याने ग़ैर मज़्हबी लोगोंपर जिज़्यहका लगान, जो इस बादशाहके पहिले जुलूसमें मौक़ूफ़ किया गया था, इसने मक्कहके शरीफ़की अ़र्ज़ीके ज़रीए़से फिर जारी करवादिया. इस बारेमें फ़र्रुख़सियरने एक फ़र्मान अपने हाथसे महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके नाम लिखा था, जिसका तर्जमह ऊपर दर्ज होचुका है- (देखो पृष्ठ ९५४-५५).

दूसरी बात उसने यह बताई, कि हिन्दू वग़ैरह लोगोंके मन्सब व जागीरोंमें
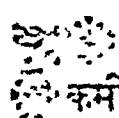
कमी कीजावे. इन बातोंसे रत्नचन्द वग़ैरह मुलाज़िम व आम लोग वज़ीरके पास फ़र्यादी हुए; वज़ीरने उस हुक्मको रोक दिया. इससे सब लोग इनायतुल्लाहख़ांसे नाराज़ और वज़ीरसे ख़ुश थे. फिर बादशाहने इनायतुल्लाहख़ांके कहनेसे रत्नचन्दको बर्तरफ़ करनेका हुक्म दिया, लेकिन् वज़ीरने इस हुक्मकी तामील न की.

हिज्री ११२९ के शुरू शव्वाल [वि० १७७४ भाद्रपद शुक्ल २ = ई० १७१७ ता० १० सेप्टेम्बर] में आंबेरके महाराजा सवाई जयसिंहको राजाधिराजका ख़िताब, मन्सबकी तरक़्क़ी, जवाहिर, हाथी और कई लाख रुपया देकर चूड़ामण जाटको सज़ा देनेके लिये रवानह किया, जो सर्कश होरहा था; और पीछेसे सय्यद ख़ानेजहां वज़ीरके मौसेको भी बड़ी फ़ौज देकर मददके लिये भेजा. एक साल तक लड़ाई होनेके बाद चूड़ामणने तंग होकर बाला बाला वज़ीरकी मारिफ़त सुलह करली, जिससे महाराजा जयसिंह भी रंजीदह हुआ, और बादशाह भी दिलमें नाराज़ था.

इसी तरह राजा साहू वग़ैरह दक्षिणियोंके नाम बादशाहने पोशीदह फ़र्मान भेजदिये थे, कि हुसैनअलीख़ांको मारडालना. इससे दक्षिणके इन्तिज़ाममें भी ख़लल आगया. हुसैनअलीख़ांने मरहटोंसे मेल मिलाप करके उनके हुक़ूक़ बढ़ा दिये, देशमुखी व चौथ उन लोगोंको लिखदी, जिससे लोगोंने बादशाहको ज़ियादह भड़काया. एक शख़्स मुहम्मद मुराद नामी कश्मीरीको रुक्नुद्दौलह एतिक़ादख़ांका ख़िताब देकर बादशाहने बढ़ाया, जो सय्यदोंको ग़ारत करनेका ज़िम्महवार होगया था. उसीकी सलाहसे महाराजा अजीतसिंहको अह्मदाबादसे, सर्बलन्दख़ांको पटना अ़ज़ीमाबादसे, और निज़ामुल्मुल्कको मुरादाबादसे बुलाया; राजा अजीतसिंहको महाराजाका ख़िताब और बहुतसी इ़ज़्ज़त देकर इस काममें शरीक करना चाहा, परन्तु अ़ब्दुल्लाहख़ांके बर्ख़िलाफ़ होनेसे उसने इन्कार किया, और वज़ीरके शरीक होगया. निज़ामुल्मुल्क व सर्बलन्दख़ांने बादशाहकी सलाहमें शामिल होकर अ़र्ज़ की, कि हम दोनोंमेंसे एकको विज़ारतका ख़िल्अ़त दे दीजिये, जिससे अ़ब्दुल्लाहख़ांकी ताक़त कम हो; फिर वह सर्कशी करेगा, तो सज़ा दीजावेगी; लेकिन् उस कम अ़क़्ल बादशाहसे यह भी न होसका. इसी सालमें ईदके मौक़ेपर फ़र्रुख़सियरके पास सत्तर अस्सी हज़ार फ़ौज राजाओं वग़ैरहकी एकट्ठी होगई थी, और अ़ब्दुल्लाहख़ांके पास कुल चार पांच हज़ारसे ज़ियादह न थी, अफ़्वाह थी, कि इस मौक़ेपर अ़ब्दुल्लाहख़ांके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई होगी; लेकिन् उस कम हिम्मत बादशाहसे यह भी न बन पड़ा. इस अफ़्वाहसे वज़ीरने बीस हज़ार सवार बन्दोबस्तके लिये भर्ती करलिये थे, और हुसैनअलीख़ांकी भी अ़र्ज़ी हाज़िर होनेकी बाबत बादशाहके पास

आगई थी. इन बातोंसे दबकर महाराजा अजीतसिंहकी मारिफ़त बादशाहने वज़ीरसे सुलह चाही, और उसके घरपर जाकर ईमान और सौगन्दके साथ सफ़ाई की; हुसैनअ़लीख़ांके न आनेके लिये इख़्लासख़ांको भेजकर तसल्ली करवादी, जिसने फिर आनेमें चन्द रोज़ तअम्मुल किया; परन्तु बादशाहका फिर वही ढंग होगया, और निज़ामुलमुल्क व सर्बलन्दख़ां भी बेचारे बे क़द्री और बे ख़र्चीसे तंग होरहे थे. वज़ीरने उनकी तसल्ली करके सर्बलन्दख़ांको क़र्ज़ह वग़ैरह चुकाने बाद काबुलकी सूबहदारीपर भेजदिया, और निज़ामुलमुल्क व मुहम्मद अमीनख़ां वग़ैरहको अपनी तरफ़ करलिया; अपने भाई हुसैनअ़लीख़ांको लिखभेजा, कि जिस तरह होसके, जल्दी चले आओ.

बादशाहने इसी अ़र्सेमें यह इरादह किया, कि शिकारको सवार होकर लौटते हुए वज़ीरके घर आवें, और महाराजा अजीतसिंहका मकान उसीके पास है, इसलिये वह नज़्र और सलामके लिये हाज़िर होगा, तो उस वक़्त महाराजाको गिरिफ़्तार करलेवेंगे, जिससे वज़ीरकी ताक़त टूट जायेगी. यह बात महाराजाके कान तक पहुंच गई, जिससे वह इरादह भी पूरा न हुआ. इन ख़बरोंके सुननेसे हुसैनअ़लीख़ां भी हिज्री ११३० आख़िर ज़िल्हिज [वि० १७७५ मार्गशीर्ष शुक्ल १ = ई० १७१८ ता० २३ नोवेम्बर] को औरंगाबादसे दिल्लीको रवानह हुआ, जिसके साथ बाईस सर्दार बादशाही मन्सबदार और तीस हज़ार दूसरे सवार थे, जिनमें दस या बारह हज़ार मरहटे और बाक़ी बादशाही मुलाज़िम थे. उसने बुर्हानपुरमें दो चार मक़ाम किये, और हिज्री ११३१ ता० २२ मुहर्रम [वि० १७७५ पौष कृष्ण ८ = ई० १७१८ ता० १५ डिसेम्बर] को वहांसे दिल्लीकी तरफ़ रवानह हुआ. इस अफ़्वाहको सुनकर डरपोक बादशाह अ़ब्दुल्लाहख़ांके घरपर गया, कुर्आन बीचमें देने बाद पगड़ी अपने सिरसे उतारकर वज़ीरके सिरपर रखदी, और दूसरे दिन वज़ीरको मए महाराजा अजीतसिंहके क़िलेमें बुलाकर बहुत ख़ातिर तसल्ली की. हुसैनअ़लीख़ांने आख़िर रबीउ़ल्अव्वल [वि० १७७५ फाल्गुन शुक्ल १ = ई० १७१९ ता० २१ फ़ेब्रुअरी] को दिल्ली पहुंचकर फ़ीरोज़शाहकी लाटके पास डेरा किया. उस वक़्त महाराजा जयसिंहने बादशाहसे कहा, कि वज़ीर और हुसैनअ़लीख़ांने रंग बदला है, अगर आप हिम्मत फ़र्माकर सवार हों, तो उनसे ज़ियादह फ़ौज और सिपाह आपके साथ होकर दोनोंको सज़ा दे सक्ते हैं; बल्कि उनके पास जो बहुतसे बादशाही मुलाज़िम हैं, वे भी आपके पास चले आवेंगे; लेकिन् उस कम अ़क़्ल और कम हिम्मत बादशाहसे कुछ भी न बन पड़ा.

क़ुतुबुल्मुल्क याने वज़ीरने अपने भाईकी तरफ़से बादशाहको कहलाया, कि

राजा सवाई जयसिंह, जो हमारा दुश्मन है, वतनको रुख़्सत करदिया जावे, और सर्कारी तोपख़ानह व क़िला वग़ैरह कुल हमारे इख़्तियारमें कर देवें, तो हम बेधड़क आपके पास हाज़िर होजावें, जिसपर बादशाहने महाराजा सवाई जयसिंहको ता० ३ रबीउ़स्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल ४ = ई० ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को घरकी रुख़्सत देदी. वज़ीर व महाराजा अजीतसिंहने क़िलेमें ता० ५ रबीउ़स्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल ६ = ई० ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को बन्दोबस्त कर लिया; उसी दिन हुसैनअलीख़ां शामको क़िलेमें आया; मरहटी फ़ौजके सवार क़िलेके गिर्द तईनात करदिये. जब वह बादशाहके पास गया, तो अदब आदाबका ख़याल भी पूरा नहीं रक्खा; बादशाहने ख़िल्अ़त, घोड़ा, हाथी, वग़ैरह देकर ख़ुश रखना चाहा; परन्तु वह जैसा चाहिये, ख़ुश न हुआ; और अपने लश्करमें लौट आया. ता० ८ रबीउ़स्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल ९ = ई० ता० २ मार्च] को वज़ीर अब्दुल्लाहख़ां और महाराजा अजीतसिंह दोनों क़िलेमें आये और पांचवीं तारीख़के मुताबिक़ फिर बन्दोबस्त किया; बादशाहसे दीवान ख़ास, ख़्वाबगाह व अ़दालत ख़ासकी कुंजियें लेलीं. यह ख़बर अमीरुल्उमराको मिली, तो वह उसी शानो शौकतसे फ़ौज लेकर आया, और क़िलेके पास शाइस्तहख़ांकी बारहदरीमें ठहरा. अब्दुल्लाहख़ां व महाराजा अजीतसिंह बादशाहके पास गये, और आपसमें बहुत कुछ सख़्त सुस्त बहस हुई, जब बादशाहने बिल्कुल अपनेसे बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई देखी, तो ज़नाने महलोंमें चला गया; सारी रात क़िलेके गिर्द फ़ौज बन्दी व गली कूचों और दर्वाज़ोंपर बन्दोबस्त रहा.

अब्दुल्लाहख़ां व महाराजा अजीतसिंह शाही महलोंमें, और बादशाही आदमी बाहर पड़े रहे. ता० ९ रबीउ़स्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल १० = ई० ता० ३ मार्च] को शहरमें कई अफ़्वाह उड़ रही थीं. बादशाहका श्वशुर सादातख़ां, दूसरा ग़ाज़ियुद्दीनख़ां ग़ालिबजंग और आग़रख़ां बहादुर तुर्कजंग, तीनों बादशाहकी मददको चले; निज़ामुलमुल्क व समसामुद्दौलह अपने घरोंमें बैठ रहे; एतिमादुद्दौलह हुसैनअलीख़ांकी मददको पहुंचा. दूसरी तरफ़से एतिक़ादख़ां, सय्यद सलाबतख़ां व मनोहर हज़ारी दो तीन हज़ार आदमीकी फ़ौज समेत बादशाहकी मददको आये. चांदनी चौकमें शाही मददगारोंसे हुसैनअलीख़ांके मुलाज़िमोंका मुक़ाबलह हुआ, लेकिन् पहिले ही मुक़ाबलेमें कई ज़ख़्मी हुए, और कुछ कुछ लड़ भिड़कर बिखर गये. इस हुल्लड़से सादुल्लाहख़ांका चौक बाज़ार लुट गया. क़िलेके भीतर वज़ीर और महाराजाने चाहा, कि किसी तरह फ़र्रुख़सियर बाहर निकल आवे, पर वह न निकला; तब हुसैनअलीख़ांके इशारेसे उन दोनों सर्दारोंने नज्मुद्दीनअलीख़ां वज़ीरके

भाईको ज़नानेमें घुसनेका हुक्म दिया, वह कई पठान और चेलोंके साथ बादशाही ज़नानख़ानहमें घुस गया, बेचारी बहुतसी लौंडियोंने रोकना चाहा, लेकिन् ये लोग न के, और बादशाहको गिरिफ्तार करलिया; उसकी माता, और बेगमात व बेटीने बहुत शिश की, पर कुछ पेश न गई; बादशाहको क़िलेमें त्रिपोलियाके ऊपर एक तंग मकानमें र दिया.

(रफ़ीउद्दशान.)

इस कामसे निबटकर वज़ीर और महाराजाने हिज्री ११३१ ता० ९ रबीउस्सानी [वि० १७७५ फाल्गुन् शुक्ल १० = ई० १७१९ ता० ३ मार्च] पहर दिन चढ़े रफ़ीउद्दशान के छोटे बेटे रफ़ीउद्दरजातको तख़्तपर बिठाकर "शम्सुद्दीन अबुल्बरकात रफ़ीउद्दर-जात" के ख़िताबसे प्रसिद्ध किया. यह आलमगीरके बेटे अक्बरकी बेटीके पेटसे पैदा हुआ, और इस वक्त २० वर्षकी उम्रमें था. इसके तख़्त नशीन होतेही शहरका हुल्लड़ घटा, और वज़ीरने बन्दोबस्तके साथ क़िलेमें रहना इख़्तियार किया. महाराजा अजीतसिंहकी बेटीके सिवाय फ़र्रुख़सियरके कुटुम्ब और तरफ़दारोंका माल अस्बाब सब ज़ब्तीमें आया. अब्दुल्लाहख़ांने सब कारख़ानोंपर अपने भरोसेके आदमी रख दिये. फ़र्रुख़सियरको क़ैदमें रखकर किसी तरहकी तक्लीफ़ न देना सैरुल्मुतअख़्ख़िरीनमें लिखा है, लेकिन् तारीख़ मुज़फ़्फ़रशाहीका बनाने वाला मुहम्मद्अलीख़ां अन्सारी अपनी किताबमें उसकी आंखोंमें सलाई फेरना, और तंग मकानमें तस्मा खेंचकर बड़ी तक्लीफ़के साथ मारना लिखता है; रॉबर्ट आर्म अपनी किताबकी पहिली जिल्दके २० पृष्ठमें, जो ई० १८६१ सन् में चौथी बार मदरासमें छपी है, लिखते हैं- कि "फ़र्रुख़सियर पहिला मुग़ल बादशाह था, जिसका वालिद बादशाह नहीं हुआ. जिन लोगोंने उसे बड़े दरजेको पहुंचाया था, उन्होंने अपनी हिफ़ाज़त ज़रूरी समझकर उसे तख़्तसे उतारा, उसको क़ैद करने बाद बे फ़िक्र होकर उन्होंने उसकी आंखें निकलवा दीं; लेकिन् इस बातसे भी उनका ख़ौफ़ या गुस्सह कम न हुआ; इसलिये उन्होंने उसको बड़ी बे इज़्ज़ती और हिक़ारतके साथ १६ फ़ेब्रुअरी सन् १७१९ ई० [वि० १७७५ फाल्गुन् कृष्ण ११ = हि० ११३१ ता० २५ रबीउल्अव्वल] को क़त्ल किया."

मुन्तख़बुल्लुबाब, ख़ानदानि आलमगीरी, मिरातिआफ़्तावनुमा वग़ैरह फ़ार्सी तवारीख़ोंमें भी तक्लीफ़के साथ तस्मेसे फांसी देकर मारना लिखा है; परन्तु सैरुल्मुतअख़्ख़िरीन वाला ख़ुद शीअह और सय्यद होनेके सबब कुछ कुछ सय्यदोंकी तरफ़्दारी दिखलाकर दूसरी किताबोंके हवालेसे अस्ली हाल भी दर्ज करता है.

इस बादशाहके मरनेकी तारीख़ नहीं मिलती, सिर्फ़ टामस विलिअम बील साहिबने जो फ़ार्सी ज़बानमें मिफ़्ताहुत्तवारीख़ लिखी है, उसमें हिज्री ११३१ ता० १२ जमादियुस्सानी [वि० १७७६ वैशाख शुक्ल १३ = ई० १७१९ ता० २ मई] को इस बादशाहका मरना लिखा है. इसकी एक लड़की, जिसका नाम बादशाह बेगम था, मुहम्मदशाहसे ब्याही गई, जिसको मलिकह ज़मानीका ख़िताब मिला था.

महाराजा अजीतसिंह तो फ़र्रुख़सियरके क़ैद होने बाद अपनी बेटी इन्द्र-कुंवर बाईको लेकर जोधपुर चलेगये, और उस बेगमके ख़र्चके लिये अहमदाबादकी सूबहदारीसे बारह हज़ार रुपया सालानह मुक़र्रर होगया था, जहांके सूबहदार यही महाराजा थे. रफ़ीउद्दरजातको सिलकी बीमारी पहिलेसे थी, जिससे वह इसी वर्ष याने हिज्री ११३१ ता० १२ रजब [वि० १७७६ ज्येष्ठ शुक्ल १३ = ई० १७१९ ता० १ जून] शनिवारको तीन महीने और कुछ दिन बादशाहत करके मरगया.

(रफ़ीउद्दौलह).

रफ़ीउश्शानके मन्शासे उसके बड़े भाई रफ़ीउद्दौलहको तख़्तपर बिठाया, जिसका पूरा नाम मिफ़्ताहुत्तवारीख़में "शम्सुद्दीन रफ़ीउद्दौलह मुहम्मद शाहजहां सानी" लिखा है. इसकी थोड़ीसी बादशाहतके समयमें लोगोंने आलमगीरके शाहज़ादे मुहम्मद अक्बरके बेटे नीकोसियरको आगरेमें तख़्तपर बिठा दिया, जो वहां क़ैद था; लेकिन् सय्यदोंने रफ़ीउद्दौलहको साथ लेकर नीकोसियरको क़ैद किया, और साथियोंको सज़ा दी. परमेश्वरकी इच्छासे यह बादशाह भी इसी साल यानी हिज्री ११३१ ता० ७ ज़िल्क़ाद [वि० १७७६ अधिक आश्विन शुक्ल ८ = ई० १७१९ ता० २२ सेप्टेम्बर] को तीन महीने और कुछ दिन बादशाहत करके मरगया.

(मुहम्मदशाह बादशाह).

आलमगीर बादशाहके पोते ख़ुजस्तह अख़्तर जहांशाहके बेटे रौशन अख़्तरको अब्दुल्लाहख़ांने तख़्तपर बिठाया. कहते हैं, कि रफ़ीउद्दौलहकी मौतको छुपाया था. इससे तवारीख़ोंमें तारीख़का इख़्तिलाफ़ है. ख़फ़ीख़ां लिखता है, कि रफ़ीउद्दौलहके मरनेसे एक हफ़्ते बाद ता० ११ ज़िल्क़ाद [वि० अधिक आश्विन शुक्ल १२

= ई० ता० २६ सेप्टेम्बर] को मुहम्मदशाह फ़त्हपुरमें लायागया, और उसी महीनेकी ता० १५ [वि० अधिक आश्विन कृष्ण१ = ई० ता० ३० सेप्टेम्बर] को तख़्तपर बिठाया गया, जिसका पूरा नाम "अबुल्मुज़फ़्फ़र नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह बादशाह ग़ाज़ी" होकर सिक्कह व ख़ुत्बह जारी किया गया. इस बादशाहने अपने जुलूसका दिन वही रक्खा, जिस दिन कि फ़र्रुख़सियर तख़्तसे उतारा गया था. कुल उह्दोंपर जो सय्यदोंके आदमी तईनात थे, वे बर्क़रार रहे.

अब हम वह बात लिखते हैं, जो दोनों भाई सय्यदों और चीन क़िलीचख़ां निज़ामुल्मुल्कके बीच ना इत्तिफ़ाक़ीका सबब हुई. वज़ीर और अमीरुल्उमराने निज़ामुल्मुल्कका बादशाहके पास रहना ना मुनासिब जानकर सूबह मालवापर भेजदिया, और मांडूके क़िलेदार मरहमतख़ांसे क़िलेदारी तग़ीर करके ख़्वाजह क़िलीचख़ां तूरानीको वहां भेजदिया; लेकिन् मरहमतख़ांने क़ब्ज़ह नहीं होने दिया. तब वज़ीरने निज़ामुल्मुल्क सूबहदार मालवाको लिखभेजा, कि अगले क़िलेदारको निकालकर ख़्वाजह क़िलीचख़ांका क़ब्ज़ह करादेवें; तब निज़ामुल्मुल्कने मरहमतख़ांको समझाकर अपने पास बुला लिया, और नये क़िलेदारने मांडूपर क़ब्ज़ह करलिया. आमझराके राजा जयरूपसिंह (१) और उसके भाई जगरूपसिंहमें अदावत थी; जगरूपकी हिमायत करके जयरूपसिंहको विश्वासके साथ अपने पास बुलाया, और उसे मारडाला. तब उसका बेटा लालसिंह छोटी उम्रका निज़ामुल्मुल्कके पास फ़र्यादी आया; उसने जगरूपको गिरिफ़्तार करके लालसिंहको आमझरेपर बिठा दिया. इसी तरह राणागढ़का क़िला शत्रुसाल बुंदेलेके बेटे जानचन्दने लेलिया, जो सिरोंजके पास ख़ालिसेका था; हुसैनअ़लीख़ांकी लिखावट और बादशाही हुक्मके पहुंचनेसे निज़ामुल्मुल्कने मरहमतख़ांको फ़ौज समेत भेजकर क़िला ख़ाली करवा लिया. इसी प्रकार निज़ामुल्मुल्कके पास ख़ानगी रुक़्के भी पहुंचगये थे, जिनमें यह लिखा था, कि बादशाहको सय्यदोंके पंजेसे निकाले. निज़ामुल्मुल्क और सय्यदोंके आपसमें अदावत बढ़गई, तो हुसैनअ़लीख़ांने कोटाके महाराव भीमसिंहको बहुत कुछ लालच देकर अपनी तरफ़ मिला लिया. महारावको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब ख़िल्अ़त और माही मरातिब दिलाया; नर्वरके राजा गजसिंह व दिलावरअ़लीख़ां वग़ैरह सर्दारोंको १५००० सवारों समेत भीमसिंहके साथ देकर यह हुक्म दिया, कि बूंदीमें सालिमसिंहको सज़ा देकर हमारे हुक्मकी राह देखना; क्योंकि दर पर्दा निज़ामुल्मुल्कपर तय्यारी थी. इन लोगोंने सालिमसिंहपर फ़त्ह पाकर हुसैनअ़लीख़ांको इत्तिला दी. निज़ामुल्मुल्कने

---

(१) तारीख़ मालवामें इसका नाम जसरूप लिखा है.

दोस्नोंकी लिखावट और बादशाहके इशारेसे दक्षिणकी तरफ़ कूच किया, और आसेरके क़िले व बुर्हानपुरको अपने क़ब्ज़ेमें करलिया.

इसके बाद हुसैनअ़लीख़ांके इशारेसे महाराव भीमसिंह और दिलावरअ़लीख़ां भी मालवाको चले; बुर्हानपुरसे सोलह सत्रह कोस रत्नपुरके क़रीब दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ. हिज्री ११३२ ता० १३ शअ़्बान [विक्रमी १७७७ ज्येष्ठ शुक्ल १४ = ई० १७२० ता० २१ जून] को इस लड़ाईमें दिलावरअ़लीख़ां, महाराव भीमसिंह, राजा गजसिंह कछवाहा वग़ैरह बड़ी बहादुरीके साथ चार पांच हज़ार आदमियों समेत मारे गये, जिसका मुफ़स्सल हाल कोटेकी तवारीख़में लिखा जायगा. निज़ामुल्मुल्कने फ़त्ह पाकर तोपख़ानह व कुल सामान लूट लिया. यह ख़बर हुसैनअ़लीख़ां और अ़ब्दुल्लाहख़ांके पास पहुंची, तो उन्हें बहुत रंज हुआ; लेकिन् अब तक सय्यदोंके दिलपर ज़ियादह ख़त्रह नहीं था, और आ़लम अ़लीख़ां औरंगाबादसे तीस हज़ार सवार लेकर बुर्हानपुर आपहुंचा था; दिलावरअ़लीख़ां, महाराव भीमसिंह, व राजा गजसिंह वग़ैरहका हाल सुनकर उसके साथियोंने वापस लौटनेकी सलाह दी; लेकिन् उस जवांमर्दने यह बात मंजूर नहीं की, और मुनासिब भी यही था; क्योंकि निज़ामुल्मुल्क एक फ़ौजसे लड़कर कम ताक़त हो चुका था.

निज़ामुल्मुल्क अपनी फ़ौज लेकर बुर्हानपुरसे पन्द्रह सोलह कोस पश्चिमको पूर्णा नदीपर मुक़ाबलहके इरादेसे जा ठहरा, और उसके पास ही हरताले तालाबपर आ़लमअ़लीख़ांने डेरा आ जमाया. बर्सातके सबब दोनों लश्करोंने चन्द रोज़ क़ियाम किया; लेकिन् निज़ामुल्मुल्क अपनी हिम्मतसे पन्द्रह सोलह कोस उस नदीको पायाब उतर गया, और बारिशकी ज़ियादतीसे तक्लीफ़ पाता हुआ बालापुरके पास पहुंचा. आ़लमअ़लीख़ां भी साम्हने आया, परन्तु उसके साथ कई सर्दार निज़ामुल्मुल्कके तरफ़्दार थे, और आधेके क़रीब मरहटोंकी फ़ौज थी, जो राजा साहूने आ़लमअ़लीख़ांकी मददको भेजी थी. हिज्री ११३२ ता० ६ शव्वाल [वि० १७७७ श्रावण शुक्ल ७ = ई० १७२० ता० १२ ऑगस्ट] को दोनों तरफ़से मुक़ाबलह हुआ. यह लड़ाई बड़ी तेज़ी और जोशके साथ हुई, जिसकी मुन्तख़बुल्लुबाबमें ख़फ़ीख़ांने बहुत कुछ कैफ़ियत लिखी है. बाईस वर्षकी उ़म्रमें आ़लमअ़लीख़ां १७ या १८ दूसरे सर्दारों समेत नामवरीके साथ मारागया, और अमीनख़ां उ़मरख़ां, फ़िदाईख़ां, तुर्क ताज़ख़ां वग़ैरह निज़ामुल्मुल्कसे मिलगये, जो पेश्तरसे उन्हें चाहते थे; बाक़ी आदमी आ़लमअ़लीख़ांकी फ़ौजवाले भाग गये. निज़ामुल्मुल्कने फ़त्हयाबीके बाद सय्यदोंकी फ़ौजका अस्बाब लूटकर फ़त्हका शादियानह बजवाया. यह ख़बर सुनकर दिल्लीमें शोर मचगया.

हिज्री ११३२ ता० ९ ज़िल्क़ाद [वि० १७७७ भाद्रपद शुक्ल १० = ई०

१७२० ता० १४ सेप्टेम्बर] को हुसैनअलीख़ांने बादशाह समेत आगरेसे दक्षिणकी तरफ़ कूच किया. इस वक्त पचास हज़ार सवारकी भीड़ भाड़ साथ थी. आगरेसे चार कोसपर पहुंचने बाद अब्दुल्लाहख़ांको राजधानीकी तरफ़ भेज दिया, और बादशाही फ़ौज फ़तुहपुरसे पैंतीस कोस दक्षिणको मक़ाम तोरामें पहुंची. इसी सालकी ता० ६ ज़िल्हिज [वि० १७७७ आश्विन शुक्ल० ७ = ई० १७२० ता० १० ऑक्टोबर] को हुसैनअलीख़ां, मीर हैदरख़ां काशग़रीके हाथसे मारा गया, जिसका हाल ख़फ़ीख़ांने इस तरहपर लिखा हैः-

एतिमादुद्दौलह मुहम्मद अमीनख़ां, सआदतख़ां, और मीर हैदरख़ां काशग़री, तीनोंने बादशाहकी माके मन्शा और सलाहसे हुसैनअलीख़ांको मारडालनेका इरादह किया. इस नातको यहां तक छिपा रक्खा, कि बादशाह भी बे ख़बर थे. जब बादशाह अपने डेरोंमें पहुंचे, तो मुहम्मद अमीनख़ां जी घबरानेका बहाना करके हैदरकुलीख़ांके डेरेमें चला आया, और हुसैनअलीख़ां बादशाहको पहुंचाकर अपने डेरेको जाता हुआ गुलाल बाड़ेके दर्वाज़ेपर पहुंचा था, कि इसी अर्सेमें मीर हैदरख़ां काशग़री एक अर्ज़ी लेकर गया, जिसमें मुहम्मद अमीनख़ांकी शिकायत लिखी थी; हुसैनअलीख़ां उसे पढ़ने लगा; इतनेमें काशग़रीने ख़न्जर निकालकर बड़ी फ़ुर्ती और चालाकीसे हुसैनअलीख़ांके पहलूमें ऐसा मारा, कि उसका काम तमाम होगया. मीर हैदर भी नूरुल्लाहख़ांके हाथसे उसी जगह मारागया. नूरुल्लाहख़ां, जो हुसैनअलीख़ांका चचा ज़ाद भाई था, उसे भी दूसरे मुग़लोंने मार डाला; और हुसैनअलीख़ांका सिर काटकर बादशाहके पास पहुंचाया. ख़्वाजह मक्बूल, सक्के और भंगियों तकने हुसैनअलीख़ांकी तरफ़से बड़ी बहादुरीके साथ तलवार चलाकर जान दी. इनके सिवाय दूसरे सिपाही भी बन्दूक़ और रामचंगियां चलाने लगे, और हुसैनअलीख़ांका भान्जा इज़्ज़तख़ां अपने डेरोंमें यह ख़बर सुनने बाद चार पांच सौ सवारों समेत, जो उस वक्त मौजूद थे, हाथीपर सवार होकर बादशाहके डेरोंकी तरफ़ चला. इस तरह चारों तरफ़ ग़द्रकी सूरत देखकर हैदरकुलीख़ां एतिमादुद्दौलहके कहनेसे सआदतख़ां शाही डेरोंमें गया और एतिमादुद्दौलह बादशाहको हाथीपर सवार कराके आप ख़वासीमें बैठने बाद थोड़ी ही जमइयत लेकर आगे बढ़ा. सय्यदोंकी फ़ौजके लोग इज़्ज़तख़ांके साथ बढ़ते आते थे, लेकिन् मुहम्मदशाहको हाथीपर सवार देखकर हज़ारों बादशाही मुलाज़िम इकट्ठे होगये. आख़िरकार इज़्ज़तख़ां लड़कर मारा गया; हुसैनअलीख़ांके डेरे जलाकर उसका लश्कर व बाज़ार लूटलिया; जिस क़द्र उसकी फ़ौजके लोग बाक़ी थे, भाग गये.

ख़फ़ीख़ां लिखता है, कि "हुसैनऋलीख़ांका नक्द और जिन्स, जो एक करोड़से ज़ियादहका था, लुट गया; और जवाहिर व ख़ज़ानह जो पीछे रहगया था, बादशाही ज़ब्तीमें आया. नागोरके मुहूकमसिंहको, जो हुसैनऋलीख़ांका दोस्त था, हैदरकुलीख़ांने तसल्ली देकर बादशाहके पास बुला लिया; अस्ल और तरक़ीसे छः हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिलाया: अब्दुल्लाहख़ांके दीवान रत्नचन्दको क़ैद किया, और उसका वकील राय शिरोमणिदास फ़क़ीर बनकर निकल भागा, जो अब्दुल्लाहख़ांके पास पहुंच गया. हुसैनऋलीख़ां, इज़्ज़तख़ां और नूरुल्लाहख़ांकी लाशें अजमेर भेजी गईं, जो शहरसे पूर्व ऊसरी दर्वाज़ेके बाहर हुसैनऋलीख़ांके बापकी क़ब्रके पास दफ़्न हुईं. इस वक़ इस जगह क़ब्रें नहीं हैं, बल्कि मक्बरेके दर बन्द करके पहिले गवर्मेंट कालिज बना था, अब उसमें साहिब लोग किरायेपर रहते हैं. यह हाल मुन्शी मुहम्मद अक्बरजहांकी किताब अहसनुस्सियरमें दर्ज है.

एतिमादुद्दौलह मुहम्मद अमीनख़ांको आठ हज़ारी ज़ात व सवार दो अस्पह का मन्सब, वज़ीर आज़मका उहदह 'वज़ीरुलममालिक ज़फ़रजंग' का ख़िताब और डेढ़ करोड़ दाम इन्आम मिले; सम्सामुद्दौलहको मीरबख़्शीका उहदह, आठ हज़ारी मन्सब और अमीरुल् उमराका ख़िताब दियागया; एतिमादुद्दौलहका बेटा क़मरुद्दीनख़ां दूसरे दरजेका बख़्शी व गुस्लख़ानहका दारोग़ा हुआ; हैदरकुलीख़ांको छः हज़ारी ज़ात व सवार दो अस्पह सि अस्पहका मन्सब, नासिरजंगका ख़िताब अता हुआ; सआदतख़ांको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब, 'सआदतख़ां बहादुर' का ख़िताब और नक़्क़ारह दियागया. इसी तरह सब लोगोंको इन्आम इकाम देकर बादशाहने खुश किया.

अब्दुल्लाहख़ां यह ख़बर सुनकर फ़िक्रमन्द हुआ, लेकिन सब्रके साथ दिल्ली पहुंचगया, और हिज्री ११३२ ता० ११ ज़िल्हिज [वि० १७७७ आश्विन शुक्ल १२ = ई० १७२० ता० १५ ऑक्टोबर] को रफ़ीउद्दरजातके बेटे सुल्तान इब्राहीमको तख़्तपर बिठाकर "अबुल फ़तह ज़हीरुद्दीन, मुहम्मद इब्राहीम बादशाह" के लक़बसे मश्हूर किया; उससे कई अमीरोंको ख़िताब, मन्सब और उहदे दिलाये. रिसालह फ़ी सवार ८० रुपया माहवारकी तन्ख़्वाहपर भरती करना शुरू किया, एक करोड़ रुपया राजा रत्नचन्दके ख़ज़ाने समेत फ़ौज बन्दीकी तय्यारीमें ख़र्च हुआ; लेकिन बहुतसे लोग अब्दुल्लाहख़ांसे दिली नफ़रत रखते थे, और अक्सर लोग एक महीनेकी

पेशगी तन्ख्वाह लेकर चलदेते थे. इसी सालमें ता० १७ ज़िल्हिज [वि० कार्तिक कृष्ण ३ = ई० ता० २१ ऑक्टोबर] को अब्दुल्लाहखांने इब्राहीमशाहके साथ शहरसे बाहर ईदगाहके पास डेरा किया; और दिल्लीकी संभालके लिये अपने भतीजे नजाबतअलीखांको गुलामअलीखां समेत छोड़ा. इब्राहीमशाहके साथ हर मन्ज़िलमें बारहके सय्यद और बड़े बड़े पठान सर्दार अपने अपने गिरोह समेत शामिल होते जाते थे. हिज्री ११३३ ता० १० मुहर्रम [वि० १७७७ कार्तिक शुक्ल ११ = ई० १७२० ता० १२ नोवेम्बर] को सुल्तान इब्राहीमके साथ नव्वे हज़ारसे ज़ियादह सवार इकठ्ठे होगये थे. यह बात ख़फ़ीख़ांने सय्यद अब्दुल्लाहखांकी ज़बानी व दफ्तरसे तह्क़ीक़ करके लिखी है. चूड़ामणि जाट व मुह्कमसिंह (१) और आस पासके ज़मींदारोंकी जमइयत इसके सिवा थी. सब मिलाकर एक लाख सवारसे ज़ियादहका तख़्मीनह किया गया.

मुहम्मदशाहकी फ़ौजमें भी दुरुस्ती हो रही थी, और आंबेरके राजा धिराज सवाई जयसिंह व लाहौरके सूबहदार सैफ़ुद्दौलह दिलेरजंगकी भी राह देखीजाती थी; लेकिन् ये लोग दूर होनेके सबब शामिल न होसके; राजा धिराजकी तरफ़से तीन चार हज़ार सवारोंकी जमइयत बादशाही लश्करमें आ मिली, और बाज़ बाज़ दूसरे सर्दार भी आगये; लेकिन् सुल्तान इब्राहीमकी फ़ौजके आगे मुहम्मदशाहकी फ़ौज आधी भी न थी, जिसमें भी मुह्कमसिंह वग़ैरह सर्दार सय्यदोंसे मिलावट रखते थे. मुहम्मदशाहने हैदरकुलीख़ांको हरावल व तोपख़ानहका अफ्सर बनाया; सआदतख़ां बहादुर व मुहम्मदख़ां बंगशको दाहिनी तरफ़का इख्तियार दिया; सम्सामुद्दौलह व नुस्रतयारख़ां व साबितख़ां वग़ैरहको बाईं तरफ़ रक्खा. आज़मख़ां वग़ैरहको मददगार फ़ौजका अफ्सर बनाया; वज़ीर आज़म वग़ैरहको अपने साथ रक्खा; मीर जुम्लह, मीर इनायतुल्लाहख़ां, ज़फ़रख़ां, इस्लामख़ां, राजा गोपालसिंह भदौरिया और राजा बहादुर वग़ैरहको बहीर (डेरों) की हिफ़ाज़तके लिये मुक़र्रर किया; असदअलीख़ां, सैफ़ुल्लाहख़ां, महामिदख़ां, अमीनुद्दीनख़ां, व राजा धिराज सवाई जयसिंहकी फ़ौज वग़ैरहको जुरुन्ग़ार बुरुन्ग़ारकी मदद और ज़नानख़ानेकी हिफ़ाज़तके लिये तईनात किया.

फ़ौजकी तर्तीब होने बाद इसी सालकी ता० १३ मुहर्रम [वि० कार्तिक

---

(१) चूड़ामणि जाट खुद आया, और मुह्कमसिंह मुहम्मदशाहके साथ था, उसकी जमइयत यहां आ मिली.

शुक्र १४ = ई० ता० १५ नोवेम्बर] की रातको नागौरवाला मुह्कमसिंह, खुदादादखां और खाने मिर्ज़ा सात आठ सौ सवारों समेत बादशाही लश्करमेंसे अब्दुल्लाहखांके पास चले गये. दूसरे दिन सुब्ह होतेही बादशाह लड़ाईके लिये हाथीपर सवार हुए, और उसी वक्त अब्दुल्लाहखांके दीवान रत्नचन्दका सिर काटा गया, जो मुहम्मदशाहकी फ़ौजमें क़ैद था. हसनपुरके पास दो पहरके वक्त दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ; तोप, बन्दूक़ और बानोंसे ऐसी बहादुराना लड़ाई हुई, कि दोनों तरफ़के सूर वीरोंने अपनी मुराद पूरी करनेका मौक़ा पाया; लड़ते लड़ते ता० १४ की रात होगई, लेकिन् चन्द्रकी चांदनीमें दिनके मानिन्द तरफ़ैनके बहादुर लड़ते रहे. मुहम्मदशाहकी तरफ़से हैदरकुलीख़ांने तोपख़ानहसे ऐसे गोले बर्साये कि अब्दुल्लाहखांकी फ़ौजमें ख़लल आगया; और बहुतसे आदमी जान लेकर भागे. पिछली रात तक एक लाख सवारमेंसे कुल सत्तरह अठारह हज़ार सवार अब्दुल्लाहखांके साथ बाक़ी रहगये; और सूर्य निकलने तक नागौर वाला मुह्कमसिंह भी भाग गया. हिज्री ता० १४ मुहर्रम (१) [वि० कार्तिक शुक्र १५ = ई० ता० १६ नोवेम्बर] की प्रभातको मुहम्मदशाहने हमलह करनेका हुक्म दिया, और अब्दुल्लाहखांका भाई नज्मुद्दीनअलीख़ां अपने साथियों समेत आगे बढ़ा; इस वक्त बाक़ी बचेहुए बहादुर खूब दिल खोलकर लड़े, और अब्दुल्लाहखांकी फ़ौजके सर्दार शहामतख़ां, फ़त्हयारख़ां, तहव्वुरअलीख़ां, अब्दुलक़दीरख़ां, अब्दुलग़नीख़ां, मुह्युद्दीनख़ां, सिब्ग़तुल्लाहख़ां वग़ैरह बहादुरीके साथ मारे गये. बादशाही लश्करमेंसे दर्वेशअलीख़ां, अब्दुन्नबीख़ां, मयाराम मुन्शी और मुहम्मद जाफ़र वग़ैरह काम आये. आख़िरकार नज्मुद्दीनअलीख़ां बहुत ज़ख़्मी हुआ, जिसकी मददको हाथीपर सवार होकर सय्यद अब्दुल्लाहख़ां पहुंचा; चूड़ामणि जाटने डेरोंकी तरफ़ कई हमले किये; फिर वह भी अब्दुल्लाहखांकी मददको आगया, और ख़ास बादशाहसे मुक़ाबलह हुआ. इस हमलहसे बादशाही फ़ौजके पैर उखड़ा चाहते थे, लेकिन् हैदरकुलीख़ां, सआदतख़ां और मुहम्मदख़ां वग़ैरह मददको पहुंच गये; सख़्त लड़ाई होनेपर सय्यद अब्दुल्लाहख़ां हाथीसे उतरा; उस वक्त उसके साथ सिर्फ़ दो तीन हज़ार सवार बाक़ी रहे थे, वह भी उसे हाथीपर न देख कर भाग निकले. अब्दुल्लाहखांको हैदरकुलीख़ांने गिरिफ़्तार करलिया, और रिसालेका बख़्शी सय्यदअलीख़ां भी पकड़ा गया; बाक़ी बहुतसे अफ़्सर बादशाही फ़ौजमें आमिले; सुल्तान इब्राहीम भी पकड़े आये.

हिज्री ११३३ ता० १४ मुहर्रम [वि० १७७७ कार्तिक शुक्र १५ = ई० १७२०

(१) हिज्री सनके हिसाबमें तारीख़ शामसे शुरू होती है.

ता० १६ नोवेम्बर] की शामको मुहम्मदशाहकी फ़ौजमें फ़त्हके शादियाने बजगये, और तोपख़ानह व अस्बाब वग़ैरह सब-बादशाही ज़ब्तीमें आया; इनायतुल्लाहख़ांको दिल्ली भेजकर सय्यदोंके ख़ज़ाने व अस्बाब वग़ैरहका बन्दोबस्त करादिया. हिज्री ता० १६ मुहर्रम [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण २ = ई० ता० १८ नोवेम्बर] को कूच दर कूच बादशाह भी दिल्लीके क़रीब पहुंचे, और सबको कारगुज़ारीके मुवाफ़िक़ मन्सब, इन्आम व इक्राम दिया. हिज्री ता० २२ मुहर्रम [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण ८ = ई० ता० २४ नोवेम्बर] को बादशाह क़िलेमें दाख़िल हुए. हिज्री शुरू सफ़र [वि० मार्गशीर्ष शुक्ल २ = ई० ता० १ डिसेम्बर] में राजाधिराज जयसिंह आंबेरसे, और दयाबहादुरका बेटा राजा गिरधर नागर ब्राह्मण अवधसे बादशाही दर्बारमें हाज़िर हुए; राजा धिराजकी अर्ज़से क़हत वग़ैरहकी तक्लीफ़के सबब जिज़्यह मुआफ़ होगया. सम्सामुद्दौलह क़मरुद्दीनख़ां और हैदरक़ुलीख़ांको जोधपुरके महाराजा अजीतसिंहपर चढ़ाईके लिये तय्यार किया; लेकिन् ख़ज़ानेकी कमीके सबब सम्सामुद्दौलहने इस चढ़ाईको बन्द रक्खा. दक्षिणसे निज़ामुल्मुल्कके आनेकी ख़बर सुनकर महाराजा अजीतसिंहने अहमदाबादकी सूबहदारीका इस्तिअ्फ़ा भेजकर ताबेदारीका इक़ार करलिया, सिर्फ़ अजमेर अपने क़ब्ज़ेमें रखना चाहा; अहमदाबादकी सूबहदारी हैदरक़ुलीख़ांको मिली.

हिज्री ११३४ ता० २२ रबीउस्सानी [वि० १७७८ फाल्गुन् कृष्ण ८ = ई० १७२२ ता० ९ फ़ेब्रुअरी] को निज़ामुल्मुल्क बादशाही हुज़ूरमें दिल्ली आया; और ता० ५ जमादियुल्अव्वल [वि० फाल्गुन् शुक्ल ६ = ई० ता० २२ फ़ेब्रुअरी] को विज़ारतका उहदह, जड़ाऊ क़लम्दान, हीरेकी अंगूठी, ख़िल्अत व ख़ंजर बादशाहकी तरफ़से पाया. इस वज़ीरने बादशा-हतका अच्छा इन्तिज़ाम करना चाहा, लेकिन् बदमआश लोग बादशाहके मुँह लग रहे थे, जिससे उसका कुछ बस न चला. इस ख़राब हालतको देखकर हैदरक़ुलीख़ां अहमदाबादकी सूबहदारीपर चला गया. हिज्री ११३४ ता० ३० ज़िल्हिज [वि० १७७९ आश्विन शुक्ल १ = ई० १७२२ ता० १२ ऑक्टोबर] को सय्यद अब्दुल्लाहख़ां मरगया, जिसे ज़हर दिया जाना भी लिखा है. अब वज़ीर निज़ामुल्मुल्कसे भी चुग़लख़ोर लोगोंने बादशाहको बहकाया; जो कोई नेक बात वज़ीर कहता, उसको उलटी बताते. ऐसी हालत देखकर निज़ामुल्मुल्क शिकारके बहानेसे निकला, और गंगाके किनारे सोरम तक पहुंचा, कि दक्षिणसे ख़बर मिली, कि मरहटे मालवा और गुजरात तक लूटमार करने लगे. तब वज़ीर अर्ज़ीके ज़रीएसे बादशाहसे रुख़्सत

लेकर दक्षिणको चला, जिसकी रवानगी सुनकर मरहटे नर्वदासे वापस दक्षिणको चलेगये; लेकिन् इसी अर्सेमें बादशाहने मुहम्मद अमीनखांके बेटे क़मरुद्दीनखांको विज़ारतका उहदह देदिया. ऐसी ख़राब ख़बरें सुनकर निज़ामुल्मुल्क, जो बादशाहके पास आनेका इरादह रखता था, बेदिल होकर दक्षिणको चलागया; और हिज्री ११३६ ता० आख़िर रमज़ान [वि० १७८१ आषाढ़ शुक्ल १ = ई० १७२४ ता० २३ जून] को औरंगाबाद पहुंचा.

बादशाहने मुबारिज़खां इमादुल्मुल्कको लिख भेजा, कि तुम निज़ामुल्मुल्कको मार डालोगे, तो सारे दक्षिणकी सूबहदारी तुमको मिलेगी, जिससे वह निज़ामुल्मुल्कका दुश्मन होगया. निज़ामुल्मुल्कने बहुतेरा समझाया, लेकिन् उसने न माना; हैदराबादसे मुबारिज़खां औरंगाबादकी तरफ़ रवानह हुआ, और निज़ामुल्मुल्क भी मुक़ाबलह को चला; बरारके इलाक़हमें सक्करखेड़ेके पास, जो औरंगाबादसे चालीस कोस है, हिज्री ११३७ ता० २३ मुहर्रम [वि० १७८१ कार्तिक कृष्ण ८ = ई० १७२४ ता० १२ ऑक्टोबर] को दोनोंका मुक़ाबलह हुआ; लड़ाई होनेके बाद मुबारिज़खां कई सर्दारों व अपने दो बेटों समेत मारागया, और दो बेटे व कई सर्दार ज़ख़्मी होकर गिरिफ़्तार हुए. निज़ामुल्मुल्क औरंगाबाद आया; और मुबारिज़खांका बेटा ख़्वाजह अहमद, जो हैदराबादमें अपने बापका नाइब था, उसने मुहम्मदनगरके क़िलेपर क़ब्ज़ह किया. निज़ामुल्मुल्क औरंगाबादसे चलकर हिज्री ११३७ ता० ३० रबीउस्सानी [वि० १७८१ माघ शुक्ल १ = ई० १७२५ ता० १६ जैन्युअरी] को हैदराबाद पहुंचा. यह सुनकर ख़्वाजह अहमदखांने बहुतसी भीड़ इकट्ठी करली, लेकिन् निज़ामुल्मुल्कने रसाईसे क़िलेपर क़ब्ज़ह करलिया, और अन्वरुद्दीनखांको हैदराबादका सूबहदार बनाया. ग़रज़ कि दक्षिणका बहुत उम्दह बन्दोबस्त करलिया, जिससे मुहम्मदशाहने भी निज़ामुल्मुल्कके लिये 'आसिफ़जाह' का ख़िताब मए हाथी व जवाहिरके भेजा; लेकिन् कुछ दिनोंके बाद मुहम्मदशाहने गुजरातका सूबह निज़ामुल्मुल्कसे उतारना चाहा, क्योंकि उसका चचा हामिदखां अहमदाबादका नाइब सूबहदार मरहटोंसे मिलकर अक्सर फ़साद उठाया करता था. इस कामपर मुबारिज़ुल्मुल्क सर्बलन्दख़ांको मुक़र्रर किया, जो पहिले काबुलका सूबहदार और सय्यदोंका तरफ़दार था. एक करोड़ रुपया ख़र्चके लिये देकर हिज्री ज़िल्हिज [वि० १७८२ भाद्रपद = ई० सेप्टेम्बर] में सर्बलन्दख़ांको रवानह किया, जिसे हिज्री ११४३ ता० ८ रबीउस्सानी [वि० १७८७ आश्विन शुक्ल १० = ई० १७३० ता० २२ ऑक्टोबर] को जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने लड़ाई करके अहमदाबादसे निकाला; क्योंकि जब जोधपुरके महाराजा अजीतसिंह अपने छोटे बेटे बख़्तसिंहके हाथसे मारेगये, तो

अहमदाबादकी सूबहदारी हैदरकुलीखां, निज़ामुल्मुल्क और उसके बाद सर्बलन्दखांको मिली थी; इस वक्त उक्त महाराजाके बड़े बेटे महाराजा अभयसिंहको फिर वही सूबहदारी मिली; लेकिन् सर्बलन्दखांने क़ब्ज़ह नहीं होने दिया, जिससे लड़ाई हुई. इसका ज़िक्र महाराणा दूसरे अमरसिंहके प्रकरण जोधपुरकी तवारीख़में लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ८४४ व ४५).

जब सर्बलन्दखां आगरे पहुंचा, तो बादशाहकी तरफ़से गुर्ज़ बर्दारोंने जाकर उसे रोका; यह कार्रवाई वज़ीर आसिफ़जाहकी तरफ़से हुई थी; लेकिन् बादशाह सर्बलन्दखांको चाहते थे. इसी सबबसे आसिफ़जाहने मरहटोंके सर्दार बाजीराव पेश्वाको उभारा, जिसने राजा गिरधर बहादुर, सूबहदार मालवा, व राजा अभयसिंह सूबहदार गुजरातपर हमले किये. इन मुलाज़िमोंकी अदावतसे मुग़्लोंकी सल्तनत बर्बाद होने लगी. हिज्री ११४८ [वि० १७९२ = ई० १७३६] में मालवेकी सूबहदारी बादशाहकी तरफ़से बाजीराव पेश्वाके नामपर होगई, जिससे लुटेरे मुल्कके मालिक होगये, और गुजरात भी मरहटोंने महाराजा अभयसिंहसे छीन लिया; फिर यहां तक बढ़े, कि इलाहाबाद व आगरेके ज़िलेकी फ़ौज्दारीमें भी दख़्ल देनेलगे; और गवालियर व अजमेर क़ब्ज़हमें करलिया. बुन्देलोंने मरहटोंकी हिमायतके लिये उनको अपने मुल्कमें बुला लिया; और बड़े बड़े मुसाहिब 'दौलह' व 'जंग' का ख़िताब रखने वाले मरहटोंसे सुलह चाहते थे, अल्बत्तह सआदतखां बुर्हानुल्मुल्क सूबहदार अवधने मुक़ाबलह करके मलहार रावको हिज्री ११४९ ता० २२ ज़िल्क़ाद [वि० १७९३ चैत्र कृष्ण ७ = ई० १७३६ ता० २२ मार्च] में शिकस्त दी. ये मलहार राव भदावरके राजाको बर्बाद कर रहा था, जो सआदतखांके हिमायतियोंमेंसे था. सैरुल्मुतअख़्ख़िरीनका बयान है, कि इस लड़ाईमें मलहार राव भी सख़्त ज़ख़्मी हुआ था.

बाजीराव दिल्लीके पास पहुंचा, और लूट खसोट की; जब फ़ौजें दौड़ धूप करके दिल्ली आईं, उसने लौटकर रेवाड़ी और पाटौदीकी तरफ़ लूट मचाई; फिर दक्षिणकी तरफ़ चला गया. तब बादशाहने अमीरुल्उमराकी सलाहसे मरहटोंको चौथ देना कुबूल करलिया, और इन बातोंसे लाचार होकर बादशाहने बहुत बड़े बड़े ख़िताब देकर निज़ामुल्मुल्कको दक्षिणसे बुलाया; वह हिज्री ११५० ता० १६ रबीउल्अव्वल [वि० १७९४ श्रावण कृष्ण २ = ई० १७३७ ता० १५ जुलाई] को बादशाही हुज़ूरमें दिल्ली पहुंचा; बादशाहने आगरेकी सूबहदारी राजा धिराज जयसिंहसे व मालवाकी बाजी रावसे उतारकर आसिफ़जाह निज़ामुल्मुल्कके बेटे ग़ाज़ियुद्दीनखांके नामपर लिख दी, और इसी कारण निज़ामुल्मुल्क पेश्वासे लड़ाई करनेके इरादेपर

भूपालके पास पहुंचा; लेकिन् नादिरशाहकी हिन्दुस्तानपर चढ़ाई सुनकर उसने पेशवासे सुलह करली, और दिल्ली चला आया. अब हम नादिरशाहके हिन्दुस्तानमें आनेका हाल शुरू करते हैं:-

नादिरशाहका हमलह.

नादिरशाह हिज्री ११०० ता० २८ मुहर्रम [वि० १७४५ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ = ई० १६८८ ता० २३ नोवेम्बर] शनिवारको मुल्क ईरानमें तूस शहरसे बीस कोसके फ़ासिलेपर दस्तजर्द क़िलेमें इमामकुलीबेगसे पैदा हुआ था, जिसका जन्म नाम नादिरकुलीबेग पड़ा, और वह क़ौम तुर्कमान व ख़ानदान अफ़्शारमें था. वह जवानीमें ईरानके सफ़वी बादशाहोंका इज़्ज़तदार मुलाज़िम और सिपहसालार होगया. ईरानकी यह हालत थी, कि क़न्धारसे इस्फ़हान तक पठान ग़लज़ई, हिरातमें अब्दाली, शिर्वानानमें लक़ज़ई और ख़ास फ़ारिसमें सफ़वी मिर्ज़ा, किर्मानमें सय्यद अहमद, बिलोचिस्तान व बन्दरोंमें सुल्तान मुहम्मद, जानकीमें अब्बास, गीलानमें इस्माईल, ख़ुरासानमें मलिक महमूद सीस्तानी, आज़र बायजान वग़ैरहमें रूमी, दरबन्दसे माज़िन्दरान तक रूसी और अस्तराबादमें तुर्कमान मुख़्तार बनगये थे; लेकिन् नादिरशाहने इन सबको शिकस्त देकर मुल्कपर क़ब्ज़ह करलिया. वह हिज्री ११४८ ता० २४ शव्वाल [वि० १७९२ चैत्र कृष्ण १० = ई० १७३६ ता० ७ मार्च] बृहस्पतिवार को सफ़वी बादशाह तहमास्प सानीको क़ैद करके आप ईरानके तख़्तपर बैठगया, और नादिरशाहके ख़िताबसे मश्हूर हुआ. उसने रूम व तूरान वग़ैरह मुल्कोंपर भी दबाव डाला.

हिन्दुस्तानपर नादिरशाहकी चढ़ाईकी बुन्याद इस तरह पड़ी, कि जब इस्फ़हानपर पठान क़ाबिज़ होगये, तो उन्हें नादिरने मार पीटकर निकाल दिया, और अलीमर्दानखां शामलूको ईरानसे हिन्दुस्तानमें भेजकर बादशाह मुहम्मदशाहको लिख भेजा, कि हमारे इलाक़ोंसे बाग़ी लोग भागकर जावें, तो काबुल वग़ैरह आपके सूबोंमें उन्हें पनाह न मिलनी चाहिये. इसका जवाब मुहम्मदशाहने मिठासके साथ लिख दिया; लेकिन् उस वक़् ख़ास दिल्लीके गिर्दनवाहका बन्दोबस्त ही ठीक नहीं था, काबुलकी ख़बरदारी कब मुम्किन थी. तब ईरानसे नादिरशाहने मुहम्मदअलीख़ां नामी दूसरा एल्ची भेजा, और यह लिखा, कि क़न्धार, जो हमारे क़ब्ज़ेमें है, वहांके बाग़ी पठानोंको अपने इलाक़हमें न आने देवें. इसका भी यहांसे सर्सरी जवाब गया, कि हमने बन्दोबस्त करवा दिया है. दोनों काग़ज़ नादिरशाहने अपनी सिपाहसालारीके वक़ भेजे थे. तीसरी बार उसने ईरानका बादशाह बनने बाद हिज्री ११५० ता०

११ मुहर्रम [वि० १७९४ वैशाख शुक्ल १२ = ई० १७३७ ता० १२ मई] में मुहम्मदख़ां तुर्कमानको एल्ची बनाकर मुहम्मदशाहके पास भेजा, और दो काग़ज़, एक मुहम्मदशाहके, दूसरा बुर्हानुल्मुल्क सआदतख़ांके नाम पहिले लिखेहुए मज़्मूनके मुवाफ़िक़ रवानह किये. हिन्दुस्तानका यह हाल था, कि एल्चीको लुटेरोंने रास्तेमें ही लूट लिया, वह बेचारा बड़ी मुश्किलसे काग़ज़ लेकर मुहम्मदशाहके पास पहुंचा; लेकिन् उसे बेपर्वाईसे जवाब ही नहीं मिला. तब नादिरशाहने क़न्धारमें आकर अपने एल्चीके नाम फ़र्मान लिखा, कि तुम जिस कामके लिये गये थे, उसका क्या बन्दोबस्त हुआ, और अब तुम जल्दी यहां चले आओ.

क़न्धारमें नादिरशाह बहुत दिनों तक ख़तका इन्तिज़ार करता रहा, जब दिल्लीसे कुछ जवाब न मिला, और एल्ची ख़ाली लौट कर गया, तो हिज्री ११५१ ता० १ सफ़र [वि० १७९५ ज्येष्ठ शुक्ल २ = ई० १७३८ ता० २१ मई] को वह क़न्धारसे रवानह होकर ग़ज़नी और काबुलकी तरफ़ गया; हिज्री ता० २२ सफ़र [वि० आषाढ़ कृष्ण ८ = ई० ता० ११ जून] को ग़ज़नी, और हिज्री ता० १२ रबीउ़ल्अव्वल [वि० आषाढ़ शुक्ल १३ = ई० ता० १ जुलाई] को काबुल उसने अपने क़ब्ज़ेमें करलिया. उसी जगह मुहम्मदख़ां एल्चीकी अर्ज़ी पहुंची, कि बादशाहकी तरफ़से न हमको जवाब मिलता है, न रुख़्सत ! यह पढ़कर एक अहदी चापारीके हाथ ता० २६ रबीउ़ल्अव्वल [वि० श्रावण कृष्ण १२ = ई० ता० १५ जुलाई] को मुहम्मदशाहके नाम फिर एक काग़ज़ लिख भेजा, जिसमें बहुत दोस्तीके लफ़्ज़ और सिर्फ़ पठानोंको सज़ा देनेका मत्लब था; लेकिन् वह बेचारा क़ासिद अफ़्ग़ानिस्तानकी हदसे भी बाहर न निकला था, कि मारा गया. तब हिज्री ता० रबीउ़स्सानी [वि० श्रावण = ई० ता० जुलाई] को बादशाह काबुलसे आगे चला, हिज्री ता० ३ जमादियुस्सानी [वि० अधिक आश्विन शुक्ल ४ = ई० ता० १८ सेप्टेम्बर] को जलालाबादपर क़ाबिज़ हुआ. वहां पहुंचने बाद उसने अपने शाहज़ादह रज़ाकुलीको बल्ख़से बुलाकर हिज्री ता० ३ शअ़्बान [वि० कार्तिक शुक्ल ४ = ई० ता० १७ नोवेम्बर] को ईरान भेजदिया, ताकि वहांका मुल्क ख़ाली न रहे. दूसरे छोटे बेटे नस्रुल्लाहको अपने साथ रक्खा. काबुलके सूबहदार नासिरख़ांने, जो पिशावरमें रहता था, बीस हज़ार पठानोंको जमा करके ख़ैबरका घाटा रोक लिया; लेकिन् नादिरशाह हिज्री ता० १३ शअ़्बान [वि० कार्तिक शुक्ल १४ = ई० ता० २७ नोवेम्बर] को दूसरे रास्ते होकर नासिरख़ांके पास आपहुंचा, और मुक़ाबलहमें उसे गिरिफ़्तार करने बाद हिज्री ता० १५ रमज़ान [वि० पौष कृष्ण १ = ई० ता० २८ डिसेम्बर] को पिशावरसे दिल्लीकी तरफ़ रवानह

हुआ; वह अटकपर किश्तियोंका पुल बांधकर उतर आया. जब वह लाहौरके शालामार बाग़में पहुंचा, तो दूसरे दिन वहांका सूबहदार ज़करियाख़ां बीस लाख रुपये व कई हाथी लेकर हाज़िर हुआ (१), नादिरशाहने पेश्कश लेने बाद ख़िल्अ़त वग़ैरह देकर उसे सूबहदारीपर बहाल रक्खा. यह सूबहदार मुहम्मदशाहके वज़ीर क़मरुद्दीनख़ांका बहिनोई और अब्दुस्समदख़ां दिलेरजंगका बेटा था. फ़ख़रुद्दौलहख़ां कश्मीरका नाज़िम, जिसे कश्मीरियोंने निकालदिया था, और लाहौरमें रहता था, वह नादिरशाहके पास गया; उसे भी कश्मीरका सूबह मिलगया; और नासिरख़ां काबुलका सूबहदार, जो नादिरशाहके साथ क़ैदमें था, लाहौरसे काबुल व पिशावरकी सूबहदारीपर भेज दिया गया. इस दरजह तक नौबत पहुंचने पर भी मुहम्मदशाहको कुछ ख़बर नहीं थी. सैरुलमुतअख़्ख़िरीन वाला लिखता है, कि किसीने नादिरशाहके काबुल वग़ैरहमें आजानेका ज़िक्र हुज़ूरमें किया, तो हाज़िर रहने वाले लोगोंने उसे ठट्ठेमें उड़ादिया; और कह दिया, कि तूरानी निज़ामुलमुल्क वग़ैरह अपना बड़प्पन दिखलानेको शेख़ियां मारते हैं.

जब नादिरशाहकी ज़ियादह अफ़्वाह सुनीगई, तो मुहम्मदशाह फ़ौज समेत दिल्ली से रवानह होकर दो महीनेमें कर्नाल पहुंचा, जो दिल्लीसे सिर्फ़ चार मन्ज़िल था. सम्सामुद्दौलह ख़ानिदौरांने राजा धिराज जयसिंह वग़ैरहको बहुत कुछ लिखा, पर कोई न आया. मुहम्मदशाह यहां तक ग़ाफ़िल थे, कि नादिरशाह क़रीब आ गया, और हिन्दुस्तानी घसकटे ज़ख़्मी होकर फ़र्यादी आये, तब यक़ीन हुआ, कि वह आपहुंचा है. अब हम नादिरशाहका ज़िक्र 'जहां कुशाय नादिरी' से लिखते हैं:-

नादिरशाहने फिर मुहम्मदशाहके नाम दोस्ती और नर्मीसे लिखभेजा, कि ये पठान लोग हमारे मुल्क ईरानको ही तक्लीफ़ नहीं देते, बल्कि इन्होंने हिन्दुस्तानमें भी पूरी अब्तरी डाल रक्खी है; और हम इन्हें सज़ा देनेके सिवाय कोई दूसरी बात नहीं चाहते. इसीलिये पहिले जो एल्ची भेजे, उनपर भी आपने हमारे आख़िरी एल्ची मुहम्मदख़ांको रुख़्सत न दी; और न जवाब दिया, तो जिन लोगोंको हमने सज़ा देना चाहा है, उन्हें सज़ा देने बाद हम आपकी सुफ़ारिशको मन्ज़ूर करेंगे. यह ख़त रवानह करके उसने हिज्री ११५१ ता० २६ शव्वाल [वि० १७९५ माघ कृष्ण ११ = ई० १७३९ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को लाहौरसे कूच किया; और हिज्री ११५१ ता० ७ ज़िल्क़ाद [वि० १७९ माघ शुक्ल ८ = ई० १७३९ ता० १७ फ़ेब्रुअरी] को सर्हिन्दमें पहुंचा. वह हिज्री ता०

(१) सैरुलमुतअख़्ख़िरीनमें लिखा है, कि ज़करियाख़ांने पहिले कुछ मुक़ाबलह किया, फिर पेश्कश देकर ताबेदारी क़बूल की.

९ को अंबालेमें अपना सब खटला छोड़कर फ़त्हअलीखां अफ़्शारको हिफ़ाज़तके लिये मुक़र्रर करने बाद हिज्री ता० १० को फ़ौज समेत पन्द्रह कोस शाहाबादमें दाख़िल हुआ. उसकी फ़ौजका अगला हिस्सह, जिसे क़रावुल बोलते हैं, उसी रातको मुहम्मदशाहकी फ़ौजके इर्द गिर्द आपहुंचा; और उसने ता० ११ में कई आदमियोंको नादिरशाहके पास पकड़कर भेजदिया. क़रावुल अज़ीमाबादमें ठहरा, जो कर्नालसे छः कोसपर है. हिज्री ता० १३ को नादिरशाह अज़ीमाबादमें आगया, और १४ तारीख़को उसने मुहम्मदशाहकी फ़ौजके मुक़ाबिल तीन कोसके फ़ासिले पर अपना लश्कर ला जमाया. वह आप घोड़ेपर सवार होकर मुहम्मदशाहके लश्करको अपनी आंखसे देख आया.

जब नादिरशाहको ख़बर मिली, कि अवधका सूबहदार बुर्हानुल्मुल्क सआदतखां तीस हज़ार फ़ौज लेकर मुहम्मदशाहकी मददको आया है, तो उसने उसके मुक़ाबलेके लिये एक गिरोह मुक़र्रर करदिया; लेकिन् सआदतखां दूसरे रास्तेसे मुहम्मदशाहके पास जापहुंचा, और नादिरशाह उस जगहसे कूच करके मुहम्मदशाहकी फ़ौजसे पूर्व तरफ़ डेढ़ कोसके फ़ासिलेपर आजमा. अब हम दिल्लीवालोंका हाल सैरुल मुतअख़्ख़िरीन वग़ैरह किताबोंसे यहां दर्ज करते हैं, क्यों कि जहां कुशाय नादिरीका मुसन्निफ़ मुन्शी मिर्ज़ा मुहम्मद महदी अपने बादशाहके बड़प्पनकी बातोंको लिखकर मुहम्मदशाहके सर्दारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीका हाल जानकारी या अजानकारीसे छोड़ गया है; लेकिन् महीना व तारीख़ हम उसी किताबसे दर्ज करेंगे.

मुहम्मदशाह, सआदतखां बुर्हानुल्मुल्कके आनेका इन्तिज़ार देख रहा था, कि हिज्री ११५१ ता० १५ ज़िल्क़ाद [वि० १७९५ फाल्गुन् कृष्ण १ = ई० १७३९ ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को उसके आनेकी ख़बर मिली, और ख़ानदौरां अमीरुल्उमरा आध कोस पेश्वाई करके लेआया. बादशाहने उसीके पास अपने डेरे जमानेका हुक्म दिया; इसी वक़्त बुर्हानुल्मुल्कने सुना, कि जो डेरे आते थे, उनको नादिरशाहकी फ़ौज लूट रही है. वह इस ग़ैरतसे उसी दम मददको चढ़ दौड़ा; निज़ामुल्मुल्क वग़ैरह सर्दारों और बादशाहके मना करनेपर भी वह चलदिया, और पीछेसे ख़ानदौरां भी उसकी मददको पहुंचा. नादिरशाह भी तय्यार हुआ, क़रीब दो घंटेके लड़ाई रही; अन्तमें कुल फ़ौज बुर्हानुल्मुल्क व ख़ानदौरांकी बर्बाद होकर ख़ुद अमीरुल्उमरा ख़ानदौरां सख़्त ज़ख़्मी हुआ, और डेरेपर आकर मरगया; मुज़फ़्फ़रखां उसका भाई व उसका बड़ा बेटा अलीअहमदखां, शाहज़ादखां, यादगारखां, मिर्ज़ा आक़िलबेग वग़ैरह अक्सर सर्दार मारे गये. अमीरुल्उमरा ख़ानदौरां जांकन्दनीकी हालतमें डेरोंपर लायागया था, उस वक़्त उसने आंख खोलकर मुहम्मदशाहको कहलाया, कि

नादिरशाहको दिल्ली न लेजाना, और बादशाहसे मुलाक़ात भी न कराना; जैसे होसके, इस बलाको वापस लौटा देना. यह कहकर वह मरगया. बुर्हानुल्मुल्क क़ैद होकर नादिरशाहके पास लाया गया, और शाम होजानेसे लड़ाई बन्द होगई. नादिरशाह डेरेमें पहुंचा, तो बुर्हानुल्मुल्कने दो करोड़ रुपया देना क़बूल करके उसे ईरानको लौट जानेपर राज़ी करलिया. इस खुश खबरीका रुक़ा बादशाह और निज़ामुल्मुल्कके नाम लिखा, जिसे देखते ही ये बहुत खुश हुए, और मुहम्मदशाहने आसिफ़जाह निज़ामुल्मुल्कको नादिरशाहके पास भेजकर दो करोड़ रुपयेका पक्का इक़ार करलिया; आसिफ़जाह वापस आया, तो मुहम्मदशाहने खुश होकर उसे अमीरुलउमराका ख़िताब देदिया, जिसका उम्मेदवार बुर्हानुल्मुल्क था. यह सुनकर बुर्हानुल्मुल्क नाराज़ हुआ, कि ख़िद्मत मैंने की, और ख़िताब आसिफ़जाहको मिला; इसलिये उसने फिर नादिरशाहको बहकाया.

हिजी ता० २० ज़िल्क़ाद [वि० फाल्गुन् कृष्ण ६ = ई० ता० २ मार्च] को मुहम्मदशाह, आसिफ़जाहकी सलाहसे नादिरशाहकी मुलाक़ातको गया, तब बुर्हानुल्मुल्कने नादिरशाहसे कहा, कि सिवाय आसिफ़जाहके और कोई लाइक़ आदमी नहीं है, और दो करोड़की क्या हक़ीक़त है, मैं इतने रुपये अपने ही घरसे नज़ करूंगा; आप दिल्ली तक चलिये, वहां बहुतसा ख़ज़ानह आपको मिलेगा. तब नादिरशाहने आसिफ़जाहको अपने लश्करमें बुलाकर कहा, कि बादशाह मुहम्मदशाहको बुलाओ; लाचार उसने अर्ज़ी लिखी, और बादशाहको जाना पड़ा. नादिरशाहने उसे एक दूसरे डेरेमें ठहराकर नज़र क़ैदीके मुवाफ़िक़ रक्खा. इसी तरह वज़ीर क़मरुद्दीनख़ांको भी अपने डेरेमें बुलालिया, और बुर्हानुल्मुल्कको तह्मास्प जलायरके साथ मुहम्मदशाहके फ़र्मान समेत दिल्ली भेजा, कि क़िला, ख़ज़ानह व कारख़ानोंकी कुंजियां लुत्फुल्लाहख़ां सादिक़ इनको सौंपदे, जो वहांका नाइब था. पीछेसे दोनों बादशाह भी चले, ता० ८ ज़िल्हिज [वि० फाल्गुन् शुक्ल ९ = ई० ता० २० मार्च] को मुहम्मदशाह, और ता० ९ को नादिरशाह दिल्लीके क़िलेमें दाख़िल हुए. दूसरे दिन ज़िल्हिजकी ईद, नौरोज़का जश्न और शुक्रवारका दिन था, जामिअ् मस्जिद वग़ैरहमें नादिरशाहके नामका ख़ुत्बा पढ़ागया (१).

ता० ११ को तीसरे पहर शहरमें यह अफ़्वाह मश्हूर हुई, कि नादिरशाह मारागया. इससे शहरके बदमआशोंने ईरानियोंको मारना शुरू किया; तमाम रात यही हाल रहा. नादिरशाहने यह ख़बर सुनकर अपनी फ़ौजमें कहला भेजा, कि जो जहां मौजूद है, वहीं तईनात रहे; और हिन्दुस्तानी उनपर आवें, तो रोकें;

(१) जहांकुशाय नादिरीमें शुक्रवारको ता० ९ लिखी है.
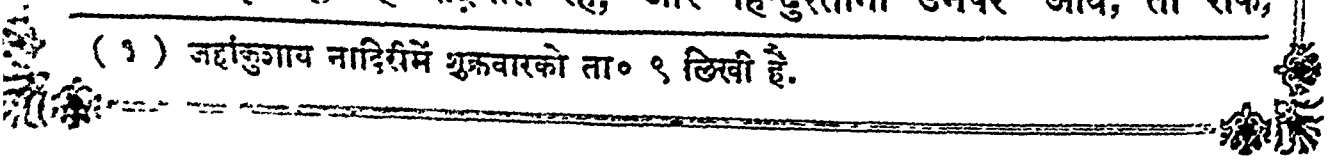
इस हंगामहमें सात सौ ईरानी मारेगये. दूसरे दिन प्रभात ता० १२ को नादिरशाह घोड़ेपर सवार होकर रौशनुद्दौलहकी सुनहरी मस्जिदमें आया, और क़त्ल आमका हुक्म दिया, कि जिस महल्लेमें एक ईरानी मरा पाओ, वहांके सब आदमियोंको क़त्ल करो; और ऐसा ही हुआ. सैरुल् मुतअख़्ख़िरीनमें दो पहर तक, और जहांकुशाय नादिरीमें शाम तक क़त्ल होना व तीस हज़ार आदमी माराजाना लिखा है; आसिफ़जाह व क़मरुद्दीनख़ांको भेजकर मुहम्मदशाहके मुआफ़ी मांगनेपर अम्न व आमानका हुक्म हुआ. बुर्हानुल्मुल्कने अपने घरसे दो करोड़ रुपया देनेका वादह किया था, लेकिन् वह क़त्ल आम होनेके एक दिन पहिले अदीठ वग़ैरहकी बीमारीसे मरगया, इसलिये शेरजंगख़ां सर्दार एक हज़ार जमइयत समेत अवधको भेजागया, जो वहां जाकर उसके दामादसे रुपये लेआया. नादिरशाहने 'तख़्त ताऊस', ज़ेवर, ख़ज़ानह वग़ैरह, जो कुछ हाथलगा, लिया; और अपने छोटे बेटे नस्रुल्लाह मिर्ज़ाकी शादी शाहज़ादह यज़्दांबख़्शकी बेटीके साथ की, जो दावरबख़्शका बेटा और शाहज़ादह मुरादबख़्शका पोता था.

ख़ानदान आलमगीरीमें बादशाही ख़ज़ानह वग़ैरहसे अस्सी करोड़ रुपयेका माल नादिरशाहको मिलना लिखा है, और बाबू शिवप्रसादने भूगोल हस्तामलकमें सत्तर करोड़ दर्ज किया है. नादिरशाहने तमाम सूबह सिन्ध व किसी क़द्र पंजाब और काबुलको ईरानमें मिला लिया, और एक बड़े भारी दर्बारमें अपने हाथसे मुहम्मदशाहके सिरपर बादशाही ताज रखकर सब सर्दारोंको ख़िल्अ़त देने बाद बहुतसी नसीहतें कीं, और हिज्री ११५२ ता० ७ सफ़र [वि० १७९६ वैशाख शुक्ल ८ = ई० १७३९ ता० १६ मई] को दिल्लीमें ५७ दिन रहकर कूच करगया; ईरानमें पहुंचने पर उसने अपने मुल्ककी कुल रिआयाको तीन वर्षका हासिल छोड़ दिया; सारी ईरानी सिपाह लूटमार व इन्आम इक्रामसे मालामाल होगई. नादिरशाह हिज्री ११६० ता० ११ जमादियुस्सानी [वि० १८०४ ज्येष्ठ शुक्ल १२ = ई० १७४७ ता० २२ मई] को मुल्क ईरानके ज़िले फ़त्हाबादमें मारा गया. नादिरशाह, जो इस मुल्कसे हज़ारों आदमियोंकी जान और करोड़ोंका माल लेगया, यह सिर्फ़ मुहम्मदशाहके सर्दारोंकी अदावतका नतीजह था. सआदतख़ां बुर्हानुल्मुल्क भी बड़ी भारी बदनामीका दाग़ अपने नामपर लगा गया. अवधमें उसका दामाद अबुल्मन्सूरख़ां सफ़्दरजंग क़ाइम मक़ाम हुआ, जिसकी औलादमें अवधकी रियासत वाजिदअलीशाह तक क़ाइम रही जो हिज्री १३०५ [वि० १९४४ = ई० १८८७] में तीस वर्ष सर्कार अंग्रेज़ीसे पेन्शन पाने बाद कलकत्ता मक़ामपर गुज़र गया. यह धक्का दिल्लीकी डूबती हुई बादशाहतको ऐसा लगा, कि फिर दम लेनेका मौक़ा न मिला, और बादशाही अमीरोंकी

ना इत्तिफ़ाक़ी इस बड़े नसीहत आमेज़ सबबसे भी न मिटी, बल्कि दिन दिन बढ़ती गई. मुहम्मदशाहकी अख़ीर बादशाहतमें अहमदशाह अब्दाली दुर्रानीका हमलह जामिउत्तवारीख़में मौलवी फ़क़ीर मुहम्मद इस तरह लिखता है:-

"यह अहमदशाह हिरातका रहनेवाला मुहम्मद ज़मांख़ांका बेटा और नादिरशाहका मुलाज़िम था; वह नादिरशाहके मारेजानेपर लश्करसे भागकर मश्हद पहुंचा, और उसने अपनी क़ौमका एक गिरोह इकट्ठा करके काबुल व कन्धारको अपने क़ब्ज़हमें करलिया. फिर वहांसे सात हज़ार सवार लेकर पेशावर होता हुआ लाहोर पहुंचा, जहांका सूबहदार शाह नवाज़ख़ां उससे शिकस्त खाकर दिल्लीकी तरफ़ भागा; अहमदशाह भी दिल्लीकी तरफ़ चला. मुहम्मदशाहने यह ख़बर सुनकर अपने वली अह्द शाहज़ादह सुल्तान अहमदको फ़ौज व तोपख़ानह समेत मुक़ाबलहको रवानह किया; सहिन्दके पास हिज्री ११६१ ता० १५ रबीउल्अव्वल [वि०१८०४ चैत्र कृष्ण २ = ई० १७४८ ता० १६ मार्च] से हि० ता० २८ [वि० चैत्र कृष्ण १४ = ई० ता०२९ मार्च] तक मुक़ाबलह रहा, जिसमें मुहम्मदशाहका वज़ीर क़मरुद्दीनख़ां तोपका गोला लगनेसे मारा गया, और अहमदशाह अब्दाली शिकस्त खाकर काबुल कन्धारकी तरफ़ चलागया; शाहज़ादहकी फ़त्ह हुई. बादशाह इसको वज़ीरकी जांफ़िशानी और सफ़्दरजंग व मुईनुलमुल्ककी तनदिहीका नतीजह समझकर खुश हुआ; और क़मरुद्दीनख़ांके बेटे मुईनुलमुल्कको लाहोर व मुल्तानकी सूबहदारी दी. इसके बाद इसी सन्में हिज्री ता० २७ रबीउस्सानी [वि० १८०५ वैशाख कृष्ण १३ = ई० १७४८ ता० २६ एप्रिल] को मुहम्मदशाहका इन्तिक़ाल होगया, जो निज़ामुद्दीन औलियाकी दर्गाहमें अपनी माकी क़ब्रके पास दफ़्न किया गया.

तीमूरके ख़ानदानमें हिन्दुस्तानकी बादशाहत बाबरसे आलमगीर तक तरक़्क़ी पाती रही, और शाहआलम बहादुरशाहसे मुहम्मदशाहकी अख़ीर हुकूमत तक दिन दिन तनज़्ज़ुलीकी हालतमें आती गई, यहां तक कि मुहम्मदशाहके मरने बाद नामको बादशाहत थी; न बादशाहको कोई मानता था, न सूबहदारियां शाही हुक्मसे मिलती थीं; सिर्फ़ दिल्लीमें 'ख़ान-' 'जंग-' 'दौला-' 'मुल्क' वगैरह लंबे चौड़े ख़िताब देकर बेचारे बादशाह अपनी जान बचाते थे; लेकिन् इसपर भी बड़े बड़े ख़िताब पानेवाले नालाइक़ लोग एकका गला काटते, और दूसरेको तख़्तपर बिठाते थे. इस वास्ते हम तीमूरिया ख़ानदानकी तवारीख़का इस जगह ख़ातिमह करना मुनासिब जानकर पिछले बादशाहोंका मुख़्तसर हाल दर्ज करते हैं, जिनमें दो तो मरहटोंके खिलौने और तीन अंग्रेज़ोंके पेन्शनदार थे. इन पांचों बादशाहोंका हाल इस तरहपर है:-

मुजाहिदुद्दीन, अहमदशाह बहादुर, बादशाह ग़ाज़ी.

यह हिज्री ११३८ ता० २७ रबीउस्सानी [वि० १७८२ पौष कृष्ण १३ = ई० १७२६ ता० ३ जैन्युअरी] को अद्हम बाईसे दिल्लीमें पैदा हुआ, और हिज्री ११६१ ता० २ जमादियुल् अव्वल [वि० १८०५ वैशाख शुक्ल ३ = ई० १७४८ ता० २ मई] को पानीपतमें अपने बाप मुहम्मदशाहके मरनेकी ख़बर मिलनेपर तख़्तनशीन हुआ. सफ़्दरजंगने नज़ दी, और बादशाह उसे वज़ीर बनाकर दिल्ली आया. कुछ अर्से बाद अहमदशाह अब्दालीने हिन्दुस्तानपर दो बारह चढ़ाई की, लेकिन् लाहोरके सूबहदार मुईनुल्मुल्कने उसे सियालकोट, औरंगाबाद, और गुजरात वग़ैरह चार पर्गने देकर पीछा लौटा दिया. तीसरी बार अहमदशाह अब्दाली फिर आया, और लाहोरमें मुईनुल्मुल्कने चार महीने तक लड़नेके बाद उसकी तावेदारी कुबूल की; अब्दाली लाहोर और मुल्तानको अपने मुल्कमें मिलाने बाद उसे नाइब बनाकर लौट गया. अहमदशाहकी बादशाहत कमज़ोर होगई थी, निज़ामुल्मुल्क आसिफ़-जाह ग़ाज़ियुद्दीनख़ांके बेटे इमादुल्मुल्कने, जो अपने बापके मरने बाद मीर बख़्शी होगया था, मल्हार राव हुल्कर और समसामुद्दौलहको मिलाकर विज़ारतका ओहदह लिया; और अहमदशाहको लाचार देना पड़ा. इसी वज़ीरने हिज्री ११६७ ता० १० शअ्बान [वि० १८११ ज्येष्ठ शुक्ल ११ = ई० १७५४ ता० २ जून] में बेचारे अहमदशाह बादशाहको उसकी मा समेत क़ैद करके आंखोंमें सलाई फेर दी, जो बीस वर्ष क़ैद रहकर हिज्री ११८८ ता० २७ शव्वाल [वि० १८३१ पौष कृष्ण १३ = ई० १७७५ ता० १ जैन्युअरी] को मर गया. इसकी लाश मर्यम मकानीके मक्बरेमें गाड़ी गई.

इसके बाद मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाहके छोटे बेटे अज़ीज़ुद्दीनको तख़्तपर बिठाया, जो फ़र्रुख़सियरके वक़्तसे क़ैद था.

अबुलअद्ल अज़ीज़ुद्दीन मुहम्मद, आलमगीर सानी, बादशाह.

इसका जन्म हिज्री १०९९ [वि० १७४५ = ई० १६८८] को अनोप बाईके पेटसे मुल्तानमें हुआ था. इमादुल्मुल्क इसे तख़्तपर बिठाकर आप ख़ुद मुख़्तार मुसाहिब होगया. वह बादशाहके वलीअह्द आलीगुहर वग़ैरहको साथ लेकर लुधियाना पहुंचा, इस इरादेसे कि अहमदशाह अब्दालीके मुलाज़िमोंको निकालकर लाहोर व मुल्तान क़ब्ज़हमें करलेवे; लाहोरका सूबहदार मुईनुल्मुल्क इन दिनोंमें मरगया

था, लेकिन् उसकी बीबी लाहोरपर क़ाबिज़ थी; इमादुल्मुल्कने उसे फ़ौज भेजकर बुलालिया, और अपनी तरफ़से आदीनाबेगको लाहोरका सूबह बना आया. यह ख़बर पाते ही अह्मदशाह अब्दाली लाहोर पहुंचा; आदीनाबेगख़ां भागा, और अह्मदशाह वहां क़ब्ज़ह करके दिल्ली आया; बादशाहसे मुलाक़ात करके एक महीने तक दिल्लीको ख़ूब लूटा, और अपने बेटे तीमूरशाहकी शादी बादशाहकी भतीजीके साथ की. फिर आगे बढ़कर मथुरा व बल्लभगढ़को लूटने बाद सूरजमल जाटको सज़ा देनेका इरादह था, क्योंकि वह आलमगीर सानीके बर्ख़िलाफ़ फ़साद करता था; परन्तु अब्दालीशाह अपनी फ़ौजमें वबा फैलनेके सबब दिल्लीमें लौट आया, और मुहम्मदशाहकी बेटी मलिकह ज़मानीसे अपनी शादी की. इसके बाद अपने बेटे तीमूरशाहको लाहोर, मुल्तान व ठट्ठेका मालिक बनाकर आप कन्धार चलागया. उसके जाने बाद इमादुल्मुल्कने मरहटोंकी मददसे दिल्लीको आ घेरा, पैंतालीस दिन तक घेरा रहने बाद सुलह होगई; नजीबुद्दौलह, जिसे अब्दालीशाह वज़ीर बना गया था, निकलकर सहारनपुर चला गया.

इमादुल्मुल्क व बादशाहके दिलोंमें सफ़ाई न थी, तो भी इमादुल्मुल्क कारोबारका मुख़्तार बन गया. बादशाहने इमादुल्मुल्कके डरसे अपने शाहज़ादह आलीगुहर को हांसी वग़ैरह जागीरमें देकर कुछ फ़ौज समेत वहां भेजदिया. इमादुल्मुल्कने बादशाहके नामके रुक़्के लिखकर शाहज़ादहको बुलालिया; और जब वह आगया, तो क़िलेमें जानेसे रोककर अलीमर्दानख़ांकी हवेलीमें ठहराया; शाहज़ादहको गिरिफ़्तार करनेके इरादहसे दस बारह हज़ार सवार भेजकर घेर लिया, और दीवार तोड़कर शाहज़ादहके बहुतसे साथियोंको मारडाला; लेकिन् शाहज़ादह बचे हुए साथियों समेत भाग निकला, और नजीबुद्दौलहके पास सहारनपुरमें आठ महीने तक रहा; वहांसे शुजाउद्दौलह जलालुद्दीन हैदरके पास लखनऊ चला गया. उसने ख़ातिर्दारीके साथ एक सौ एक अश्रफ़ी, एक लाख रुपया और दो हाथी नज़ देकर विदा किया. वहांसे शाहज़ादह इलाहाबाद गया. इमादुल्मुल्कने इस अदावतसे नजीबुद्दौलह व शुजाउद्दौलहको बर्बाद करनेके लिये मरहटोंको दक्षिणसे अन्तरवेदकी तरफ़ भेजा; उन्होंने नजीबुद्दौलहको जा घेरा, चार महीने तक लड़ाई रही; तब शुजाउद्दौलह लखनऊसे उम्दह फ़ौज लेकर आ पहुंचा; और मरहटोंको क़त्ल व क़ैद करके दूर भगा दिया. इस फ़त्हके बाद सादुल्लाहख़ां, अलीमुहम्मदख़ांका बेटा, जिसकी औलादमें अब रामपुरके नव्वाब हैं, हाफ़िज़ रहमतख़ां, जिसकी औलादमें बरेलीके नव्वाब थे, दूंदेख़ां, जिसकी औलादमें मुरादाबादके रईस थे, पठान नजीबुद्दौलह समेत शुजाउद्दौलहसे

मिलगये; लेकिन् शुजाउद्दौलह अपने हिमायती अह्मदशाह अब्दालीके जानेकी ख़बर सुनकर मरहटोंसे सुलहके साथ लखनऊ चला गया.

दिल्लीमें इमादुल्मुल्क कुल काम करता था, परन्तु बादशाही तरफ़से उसको भरोसा न था, इसके सिवा इन्तिज़ामुद्दौलह क़मरुद्दीनख़ां वज़ीरके बेटेसे भी बर्ख़िलाफ़ी थी, जो इमादुल्मुल्कका मामू था. पहिले तो इन्तिज़ामुद्दौलहको मार डाला, और उसके तीन दिन बाद किसी फ़क़ीरके दर्शनके बहानेसे बादशाहको शहरके बाहर नदीके किनारेपर एक मकानमें लेजाकर, दूसरे साथी लोगोंको बाहर ठहराया; भीतर इमादुल्मुल्कके आदमियोंने बादशाहको छुरियोंसे मारकर उसकी लाश नदीमें डलवा दी. यह वारिदात हिज्री ११७३ ता० ८ रबीउस्सानी [वि० १८१६ मार्गशीर्ष शुक्ल ९ = ई० १७५९ ता० २९ नोवेम्बर] को हुई. इमादुल्मुल्कने दिल्लीमें आकर कामबख़्शके बेटे मुह्युसुन्नहको तख़्तपर बिठाकर उसका लक़ब शाहजहां सानी रक्खा.

अबुल्मुज़फ़्फ़र, जलालुद्दीन मुहम्मद, आली गुहर, शाहआलम सानी बादशाह.

इसका जन्म हिज्री ११४० ता० १७ ज़िल्क़ाद [वि० १७८५ आषाढ कृष्ण ३ = ई० १७२८ ता० २७ जून] को ज़ीनत महल उर्फ़ लालकुंवरके पेटसे हुआ था. इसने अपने बापके मरनेकी ख़बर अज़ीमाबादके ज़िले कथौली गांवमें पाई, और उसी जगह तख़्तपर बैठनेका दस्तूर अदा किया; लेकिन् राजधानी दूसरोंके क़ब्ज़हमें होनेसे मुनीरुद्दौलहको एलची बनाकर अह्मदशाह अब्दालीके पास भेजा, कि वह मदद करे; और शुजाउद्दौलह व नजीबुद्दौलहको क़लमदान व ख़िल्अ़त वग़ैरह भेजा. फिर कामगारख़ां वग़ैरह पठान एक फ़ौज समेत बादशाहके पास आये. जब अह्मदशाह अब्दाली क़न्धारको लौट गया, तब शिख और मरहटोंने आदीनाबेगख़ांके बहकानेसे अब्दालीके शाहज़ादह तीमूरको लाहोरसे निकाल दिया. अह्मदशाह अब्दाली नादिरशाहके साथ आनेके सिवाय पांचवीं वार बड़ी फ़ौजके साथ अटक उतरकर हिन्दुस्तानमें आया. रास्तेमें दत्ताराव वग़ैरह और हुल्करकी फ़ौजको शिकस्त दी; तीन सौ आदमियोंसे हुल्कर भाग गया. इसी अ़र्सेमें नजीबुद्दौलह व शुजाउद्दौलह दस हज़ार फ़ौज समेत अब्दालीकी फ़ौजमें जामिले. यह ख़बर सुनकर सदाशिवराव भाऊ दक्षिणकी बड़ी जर्रार फ़ौज लेकर चला, आगरेके पास उससे राजा

सूरजमल जाट, मल्हार राव हुल्कर व इमादुल्मुल्क भी आमिले. भाऊने दिल्ली पहुंच कर मुहम्मदशाहको तख़्तसे उतार दिया, और पोलिटिकल कार्रवाई करनेके लिये शाहआलमके शाहज़ादह मिर्ज़ा जवांबख़्तको तख़्तपर विठादिया; अगले क़िलेदारके एवज़ नारूशंकर ब्राह्मणको मुक़र्रर किया. फिर कुंजपुरेके क़िलेमें अब्दुस्समदख़ां व कुतुबख़ांको मार कर क़िला फ़त्ह करलिया. भाऊने पानीपत पहुंचने बाद ख़न्दक़ वग़ैरह खोदकर फ़ौज समेत लड़ाईका बन्दोबस्त किया.

वहां अह्मदशाह भी आ पहुंचा; वह लड़ाईके ढंगसे खूब वाक़िफ़कार था (१). उसने मरहटोंकी फ़ौजमें रसद आनेका रास्तह बन्द कर दिया, और छोटी छोटी लड़ाइयोंपर अपने सर्दारोंको तईनात किया. इन्हीं लड़ाइयोंमें सदाशिवराव भाऊका साला बलवन्तराव मारागया. इसी अर्सेमें ख़बर लगी, कि गोविन्द पण्डितने दस हज़ार सवार समेत नजीबुद्दौलहके इलाक़ह मेरठ वग़ैरहको लूट लिया; शाहअब्दालीने अताख़ां दुर्रानीको पांच हज़ार सवारों के साथ भेजा; वह नारूशंकर व गोविन्दराव वग़ैरहको मारकर बहुतसा अस्बाब लूट लाया. हिज्री ११७४ ता० ६ जमादियुस्सानी [वि० १८१७ पोष शुक्ल ७ = ई० १७६१ ता० १४ जैन्युअरी] को अब्दाली शाहके मुक़ाबलहको मरहटी फ़ौज निकली, और शाह अब्दाली भी शुजाउद्दौलह व नजीबुद्दौलह समेत तय्यार हुआ; इस लड़ाईमें बहुतसे मरहटे काम आये, और बाक़ी बचेहुए भाऊकी फ़ौजमें जामिले; भाऊ तीस हज़ार फ़ौज लेकर अब्दाली शाहपर टूट पड़ा, अब्दालीशाहके बहादुर सिपाहियों व शुजाउद्दौलह, नजीबुद्दौलह वग़ैरह बहादुरोंने अच्छा मुक़ाबलह किया; मरहटे भी बड़ी वीरताके साथ लड़े; भाऊ हज़ारों मरहटे सर्दारों समेत मारागया; माधवराव सेंधिया एक पैरपर ज़ख़्म खाकर भागा; और मल्हार राव हुल्कर भी फ़रार हुआ; अब्दालीशाहने फ़त्ह पाई. यह हाल तफ़्सीलवार मौक़ेपर लिखा जावेगा.

इस लड़ाईमें बाईस हज़ार औरत, मर्द और बच्चे अब्दालीशाहने लौंडी और गुलाम बनाकर अपने सर्दार व सिपाहियोंको बांट दिये; और नक़्द, जिन्स, जवाहिर, तोपख़ानह, पचास हज़ार घोड़े, एक लाख गाय, बैल, पांच सौ हाथी और कई हज़ार ऊंट वग़ैरह अब्दालीशाहके हाथ आये. इसके बाद अह्मदशाह दिल्ली आया, और शाहआलमको बादशाह, शुजाउद्दौलहको वज़ीर, नजीबुद्दौलहको अमीरुल्उमरा और शाहज़ादह जवांबख़्त मिर्ज़ाको वलीअह्द बनाकर लाहोरमें अपने नाइब छोड़ने

---

(१) यह हमेशह कहा करता था कि नादिरशाह तो अस्सी हज़ार फ़ौजसे दस हज़ारको, और मैं तीन हज़ारको लड़ा सक्ता हूं.

बाद कन्धारको चलागया. शाहआलम व शुजाउद्दौलह वज़ीरने अन्तरवेद व काल्पीके ज़िलेसे मरहटोंके गुमाश्तोंको निकालकर अपने मुलाज़िमोंको मुक़र्रर किया. राजा सूरजमल जाटने अह्मदशाहका कन्धार जाना सुनकर आगरेके क़िलेपर क़ब्ज़ह करलिया और पंजाबसे सिक्खोंने शाह अब्दालीके आदमियोंको निकाल दिया. यह सुनकर छठी बार फ़ौज समेत अह्मदशाह अब्दाली फिर हिन्दुस्तानमें आया, और जब वह लाहौर पहुंचा, तब सिक्ख लोग भागकर सर्हिन्दकी तरफ़ चले गये, जहां इन लोगोंने दो लाख सवार व पैदल इकट्ठे करलिये थे. हिज्री ११७५ ता० ११ रजब [वि० १८१८ माघ शुक्ल १२ = ई० १७६२ ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को लड़ाई हुई, जिसमें बीस हज़ार सिक्ख मारेगये, और अब्दाली शाहने फ़त्ह पाई. वह लाहौर व कश्मीर वग़ैरहपर अपने आदमी मुक़र्रर करके लौटगया. इसके बाद लाहौर व मुल्तान वग़ैरह इलाक़े सिक्खोंने अफ़्ग़ानोंसे ले लिये, क्योंकि ख़ुरासानकी तरफ़ अह्मदशाह किसी ज़ुरूरतसे चलागया. इस वक़्से सिक्खोंका ज़ोर बढ़ता ही गया, अन्तमें कुल पंजाबका मालिक रणजीतसिंह बन बैठा.

शाहआलम सानी, आख़िरी बादशाहके अह्द हिज्री १२०२ [वि० १८४५ = ई० १७८८] को ज़ाबितहख़ांका बेटा और नजीबुद्दौलहका पोता गुलामक़ादिर, दिल्ली आया, और उसने क़िलेमें जाकर बादशाह शाहआलमको बे रह्मीके साथ अन्धा करदिया. इस वक़ भी बचा हुआ माल और जो कुछ बादशाही लवाज़िमह था, बर्बाद हुआ; लेकिन् मरहटा सर्दार माधवराव सेंधियाने शाहआलमको दो बारह तख़्तपर बिठाया, और गुलामक़ादिरख़ांको, जो भाग गया था, पकड़कर मार डाला. इसपर शाह आलमने उसको 'फ़र्ज़न्द आलीजाह' का ख़िताब दिया, जो अबतक ग्वालियर वालोंके नामपर बोला जाता है.

हिज्री १२१८ [वि० १८६० = ई० १८०३] में लॉर्ड लेक, दिल्ली पहुंच गया, और उसने शाहआलमको मरहटोंके पंजेसे निकालकर एक लाख रुपया माहवार पेन्शनके तौर उसके गुज़ारेके लिये मुक़र्रर कर दिया. यह बादशाह हिज्री १२२१ ता० ५ रमज़ान [वि० १८६३ कार्तिक शुक्ल ६ = ई० १८०६ ता० १८ नोवेम्बर] को मर गया.

अबुन्नस्र, मुइज़ुद्दीन मुहम्मद, अक्बर शाह सानी, बादशाह.

इसका जन्म हिज्री ११७३ ता० ७ रमज़ान [वि० १८१७ वैशाख शुक्ल ८ = ई०

१८३७ ता० २८ एप्रिल] ट्रहस्पतिवारको मुबारक महलसे हुआ था. यह हिज्री १२५३ ता० २८ जमादियुस्सानी [वि० १८९४ आश्विन् कृष्ण १४ = ई० १८३७ ता० २९ सेप्टेम्बर] शुक्रवारको दिल्लीमें मरगया.

—०×०—

अबुज़फ़र, सिराजुद्दीन मुहम्मद, बहादुरशाह सानी, बादशाह.

—०×०—

इनका जन्म हिज्री ११८९ ता० २८ शअ्बान [वि० १८३२ कार्तिक कृष्ण १४ = ई० १७७५ ता० २४ ऑक्टोबर] मंगलवारको लालबाईके पेटसे हुआ था. यह भी अपने बापकी तरह बराय नाम बादशाह हुआ, और सन् १८५७ ई० के ग़द्रमें अंग्रेज़ोंने इसे क़ैद करके रंगून भेजदिया; वह वहीं हिज्री १२७९ ता० १९ जमादिउल् अव्वल [वि० १९१९ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ = ई० १८६२ ता० ११ नोवेम्बर] में मरगया. बलवे वगैरहका ज़िक्र व्योरेवार अंग्रेज़ोंकी तवारीख़में लिखा जायेगा.

इस बादशाहके बारह बेटे थे, १- मिर्ज़ा दाराबख़्त, २- मिर्ज़ा शाहरुख़, ३- गुलाम फ़ख़ुद्दीन मिर्ज़ा फ़त्हुलमुल्क, ४- मिर्ज़ा अब्दुल्लाह, ५- मिर्ज़ा सद्दू, ६- मिर्ज़ा फ़र्ख़ुन्दहशाह, ७- मिर्ज़ा कूमाश, ८- मिर्ज़ा बख़्तावरशाह, ९- मिर्ज़ा अबुनन्स्र बुलाकि, १०- मिर्ज़ा मुहम्मदी, ११- मिर्ज़ा ख़िज़्र सुल्तान, १२- मिर्ज़ा जवांबख़्त, ये रंगूनमें हिज्री १३०१ ज़ीक़ाद [वि० १९४१ भाद्रपद = ई० १८८४ ता० सेप्टेम्बर] शुक्रवारको मर गया. अब शाहआलम सानीकी औलादमें से कुछ लोग बनारस वगैरहमें बाक़ी रहगये हैं, जो किसी क़द्र जागीरपर गुज़र करते हैं.

—०×०—

शेष संग्रह नम्बर १.

वड़ी पालके पीछे नीलकंठ महादेवके पास छोटे कुंडपर श्री दक्षिणा मूर्तिमें महादेवजीके मन्दिरके दर्वाज़ेके साम्हने, जो प्रशस्ति है, उसकी नक्ल.

स्वस्ति श्री मन्महागणपतयेनमः॥ श्री गुरुभ्योनमः वालन्यग्रोधवंशाब्धि भासमान-सुधांशवे॥ मंत्रदैवतरूपायगुरवेकुसुमांजलिः॥१॥ब्राह्मंतेजोदधानःश्रुतिविषयलसन्मंत्र भावैरनेकैःशंभोरास्योल्लसद्भिस्त्वगणितमनुभीरौद्रमाधत्तएव ॥ श्रौतस्मार्तक्रियाभिर्वि-गलितकलुषःपोषयन्विप्रवृन्दं कारुण्यौदार्ययुक्तःसजयतिनितरां दक्षिणामूर्तिरेकः॥२॥ कलास्वपि कलाधरः प्रथितकीर्तिरंभोनिधे रुदारगुणसंयुतः सकलशास्त्रसारान्वितः॥ तपोमयतनुः स्वयं निगमतंत्रबोधोल्लसत्परामृतपरिप्लुतः सजयतीह विप्राग्रणी ॥३॥ ज्ञाने देवगुरुः प्रतापतुलितं कालाग्निरुद्रोपरस्तेजस्वी जमदग्निवजितहृषीकः कार्तिकेयोपरः॥ इष्टापूर्तक्रियासु प्रतिनिधिरनिशं याज्ञवल्क्यस्ससाक्षादाचार्य-त्वेवशिष्ठः सजयति नितिरां दक्षिणामूर्तिरेकः॥ ४ ॥ सनाथीकुर्वन् वै सदुदयपुरा-धीशमनिशंनृपोत्तंसं शश्वत् प्रतिवसति संग्रामनरपं॥ ततः श्रेयोधिक्यं सकल-दुरितध्वंसनविधिर्विधत्ते निर्विघ्नः सचजनपदः सोपि नृपतिः॥ ५॥ श्रीमद्भानुरिव प्रताप महसा प्रोन्मीलिताशः स्वयं शत्रुध्वांतविदारणेतिनिपुणः संसारसौख्य-प्रदः॥ स्वर्णाभः परिपूर्ण सद्गुणहृदः सन्मित्रपद्माटवीहर्षोत्पादनहेतवे समुदितः संग्रामसिंहः प्रभुः॥६॥ यत्सैन्ये चलति क्षितावरिजयप्रस्तारकर्मण्यथो गर्जत्कुंभि-मदार्द्रगंडमिलितैर्भृंगैरनेकैः कटं॥ पीत्वामोदितविग्रहैरनुदिशं झंकारशब्दान्वितैः श्रीसंग्राममहीपतेः प्रतिदिनं मन्ये यशोगीयते ॥ ७ ॥ दोर्लीलादलितारि-दंतिनिवहः कीर्त्याशिरश्चंद्रकां स्पर्द्धिन्याधवलीकृतक्षितितलः प्रोद्दामशौर्यान्वितः॥ षाड्गुण्यामलधीस्त्रिवर्गकुशलः शक्तित्रयालंकृतो मेवारप्रभुरीप्सितार्थफलदो वर्वर्ति सर्वोपरि॥८॥ अथ श्रीदक्षिणामूर्तिः शिवालयमकारयत्॥ वापींच माधुर्य-जलां शास्त्रोक्तविधिना ततः॥ ९ ॥ स्वस्ति श्रीविक्रमादित्यराज्योद्गमनकालतः॥ गगनाद्यश्वभूसंख्ये (१७७०) वत्सरे शोभनाव्हये ॥ १० ॥ तथा च शकवंधस्य शालिवाहनभूपतेः पंचाग्न्यष्टिप्रमितिके (१६३५) रसंनिवहइष्टदे ॥ ११ ॥ सौम्यायने सवितरि गुरुशुक्रोदये शुभे॥ चैत्रस्य पूर्णिमायां च शंभो स्थापनमाचरन् ॥ १२ ॥ विप्रांश्च शतसंख्याकान् वेदविद्याविशारदान् ॥ यज्ञांतकर्मकुशलान् मासात्प्रागेव संवृतान् ॥ १३ ॥ कुंडमंडपनिर्माणं निगमागममार्गतः ॥ विधाय

कोटिहोमं तत्कल्पद्रव्यसमन्वितं ॥ १४ ॥ प्रतिष्ठादिवसे प्राप्ते ज्योतिर्विद्भिर्निवेदिते ॥ नित्यं नैमित्तिकं कर्म विधायोक्तेन वर्त्मना ॥ १५ ॥ स्वछांत : शुचिरासीनो विप्रवृंद पुर : सरं ॥ ननाद्भि : पंचवाद्यैश्च वेदध्वनिपुर : सरं ॥ १६ ॥ अथ तत्रागमद्राजा भक्त्या संयुतमानस : ॥ ब्राह्मणान् शतसंख्याकान् गंधपुष्पाद्यलंकृतान् ॥ १७ ॥ नियुक्तान् शुद्धभावेन स्वस्तिवाचनकर्मणि ॥ प्राणे प्रतिष्ठामकरोद्राजराजेश्वरस्यच ॥ १८ ॥

——✻○✻——

शेषसंग्रह नंबर २.

सीसारमा गांवके वैद्यनाथ महादेवजीके मन्दिरकी प्रशस्ति.

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमदेकलिंगो विजयतु ॥ अथ प्रशस्तिप्रारंभः ॥ हरिः ॐम् ॥ शिवं सांबमहं वंदे विद्याविभवसिद्धये ॥ जगज्जनिकरं शंभुं सुरासुरसमर्चितं ॥१॥ गुंजद्भमद्भमरराजिविराजितास्यं स्तंबेरमाननमहं नितरां नमामि ॥ यत्पादपंकजपरागपवित्रताया : प्रत्यूह राशय इह प्रशमं प्रयांति ॥ २ ॥ शारदा वसतु शारदांडज स्वानना मम मुखांबुजे सदा ॥ यत्कृपायुतकटाक्षभाग्यतो भाग्यतोपमयमेति मानव : ॥ ३ ॥ स भूयादेकलिंगेशो जगतां भूतये विभु : ॥ यस्य प्रसादात्कुर्वंति राज्यं राणा भुव : स्थितं ॥ ४ ॥ यदेकलिंगं समभूत्पृथिव्यां तेनैकलिंगेत्यभिधाभ्यधायि ॥ चतुर्दशी माघभवाहि कृष्णा तस्यां समुद्भूतिरभूच्छिवस्य ॥ ५ ॥ तदा मुनीनां प्रवरस्तपस्वी हारीतनामा शिवभक्त आसीत् ॥ सएकलिंगं विधिवत्सपर्या विधेरतोपीष्ट शिवेष्टं निष्ट : ॥ ६ ॥ वापाभिधो रावल उन्नतेच्छो हारीतमेनं गुरुमन्वमंस्त ॥ विद्याप्रसादोदयवृद्धिवृद्ध्यै यथा मरुत्वानिव वागधीशं ॥ ७ ॥ तस्योपदेशेन समग्रसिद्धेर्वापानृपस्याथ वभूव सिद्धि : ॥ आराधनानुष्ठितोस्य शंभोः स्तदेकलिंगस्य विभोः प्रसादात् ॥ ८ ॥ सूर्यान्वयोसाविवतिग्मरश्मि : प्रतापसंशोषितकर्दमारि : ॥ समुल्लसत्स्वीयमुखांबुजश्री दूरीभवद्दुष्टखलांधकार : ॥ ९ ॥ अथाभवद्राणपदं वितन्वन् राहप्पराण : पृथित : पृथिव्यां ॥ तदादिनहंगभवानरेंद्रा राणेति शब्दं प्रहितं भजंति ॥ १० ॥ रणस्थिरलानुतदा नृपाणां दिनाधिनाथान्वयसंभवानां ॥ चतुर्दिगंतप्रथितं हि राणपदं हि तत्सार्थकता मवाप्तं ॥ ११ ॥ राहप्पराणान्नरपाल आसीद्धनुर्भृतां मुख्यतर : पृथिव्यां ॥ जितारिवर्ग : परमप्रधान : मुश्राव कीर्तिन्नरवन्नरेंद्र : ॥ १२ ॥ दिनकरस्तु ततोप्यभवत्सुतो दिनकर द्युतिभाङ् नरपालतः ॥ अवनिमंडलभूपतिमंडलीमुकुटरत्नविराजितयत्कजः ॥ १३ ॥ यशकर्ण इहाभवत्ततो यशसैवाति समुज्वलां भुवं ॥ बुभुजे युगदीर्घ बाहुभृन्निज

धीरत्वमवन् दिशत्स्वपि ॥१४॥ ततस्तुनागपालोभून्नागायुतबलोत्कटः ॥ शशास वसुधामेतां प्रजां धर्मेण पालयन् ॥ १५॥ ततोभवत्पूर्णमनोरथोयः कृपाणपाणिः किल पूर्णपालः ॥ पूर्णं सुखैः पालयतीतिविश्वं तत्पूर्णपालत्वमवापितेन ॥ १६ ॥ तस्मादभूदुग्रतरश्च पृथ्वीमल्लोरिहस्तिष्विव हस्तिमल्लः ॥ ये युद्धमल्ला बलदर्पनद्धास्तस्मादवापुः खलुभंगमेव ॥१७॥ तस्माद्भुवनसिंहोभूद्धराधीशो महेंद्रभः॥युधिभूपालमातंगाः पलायंते यदीक्षिताः ॥ १८ ॥ तत्सूनुरुग्रः किल भीमसिंहो भयंकरो भीमइवाहितानां ॥ एकातपत्रां भुवमेत्यवीरो निष्कंटकीं दीर्घभुजो बुभोज ॥ १९ ॥ तदंगज़न्मा जयसिंहराणो भुवं समग्रां प्रथितः शशास ॥ जयोहि यस्मिंस्स्थिरतामुपेत्य पुनर्न कस्मिं स्थिरतांबभाज ॥ २० ॥ तदात्मजः सागरधीरवेत्ता नाम्ना ततो लक्ष्मणसिंहआसीत् ॥ यो मेघनादं च विजित्य गोभिः स्थितो हि रामानुजवन्नरेंद्रः ॥ २१ ॥ तस्मान्महीयानरिसिंहभूपो भूमंडलाखंडलतां जगाम ॥ लसाद्विपत्कुंजरमस्तकाद्यन् मुक्ताभिराकीर्णपदाग्रभूमिः ॥ २२ ॥ ततोरिसिंहादभवद्धमीरः समिद्धतेजाइवशंभुरीड्यः ॥ शिरस्स्खलत्स्वर्धुनिसुप्रवाहपवित्रिताशेषजगज्जनौघः ॥ २३ ॥ यश्चैकलिंगस्य शिवस्य लिंगं पुनर्वशिलाद्भुतमद्दधार ॥ शिवाज्ञयैव प्रमथाधिनाथसेवाविधिं सस्वयमन्वकार्षीत् ॥ २४ ॥ हम्मीरदेवादलभत्सुरश्रीर्यः क्षेत्र सिंहः पितुरेव राज्यं ॥ यस्मिन्महीं शासति वीरवर्ये स्थिता श्रुतौ तस्करता प्रजासु ॥ २५ ॥ लक्षावधीन्योधगणान्विधत्ते लक्षावधि द्राग्धनमत्रदत्तं ॥ योलक्षवारं विबभंजशत्रून् लक्षाभिधोस्मादुदभून्नरेंद्रः ॥ २६ ॥ मकारवाच्यः खलु विष्णुशब्द उकारवाची किल शंभुशब्दः ॥ तौचेतसि स्वेकलयत्यभीक्ष्णं तस्मान्नृपो मोकलइत्यभाणि ॥ २७ ॥ समोकलः सर्वगुणोपपन्नं संप्राप पुत्रं किल कुंभकर्णं ॥ यः कुंभजन्मेव विपक्षसैन्यमहार्णवस्यान्यइहावतीर्णः ॥ २८ ॥ यः कुंभकर्णादपि युद्धशाली यः कुंभकर्णारिमनाः सदैव ॥ यः कुंभिदानोद्धृतचित्तवृत्तिः सकुंभकर्णोथ भुवं बभार ॥ २९ ॥ सरायमल्लो गुरुकुंभकर्णाद्भुवं समग्रां विधिवच्छशास ॥ योराजमल्लप्रतिमल्लयोद्धा धरातलेस्मिन्नबभूव कश्चित् ॥ ३० ॥ तदंगजन्मा भुवनप्रकाशः संग्रामसिंहो भुवमन्वशासीत् ॥ म्लेच्छाधिपंयोधगृहीतमुक्तं चकार कारुण्यरसाभराढ्यः ॥३१॥ तेनासमुद्रांतजिगीषुणायं भूपाललोको वशमप्यनायि ॥ संग्रामसिंहेन गुणैकधाम्ना रामाभिरामेण नृपोत्तमेन ॥ ३२ ॥ पार्थिवात् समभवततः परं दीप्तिमानुदयसिंहभूपतिः॥ येन विश्ववलयैकभूषणं भूभृतोदयपुरं विनिर्मितं ॥ ३३ ॥ प्रतापसिंहोथबभूव तस्माद्धनुर्धरो धैर्यधरो धरित्र्यां॥ म्लेच्छाधिपात् क्षत्रिकुलेन मुक्तो धर्मोप्यथैनं शरणं जगाम ॥ ३४ ॥ प्रतापसिंहेन सुरक्षितोसौ पुष्टः परं तुंदिलतामगच्छत् ॥ अकब्बरम्लेच्छगणाधिपस्य परं मनःशल्पमिवाभवद्यः ॥ ३५ ॥ अशेषभूमंडल-

मंडितश्रीः समग्रभूमावमरेंद्रभूपः ॥ आसीत्तुतेनैवकृताः सुमार्गा भूपैः स्ववंश्यै-रपितेपुचेले ॥ ३६ ॥ तस्मादभूत्कर्णसमानदानप्रवाहभृद्भूभृदिहैव कर्णः ॥ ततो जगन्सिंहधराधिपोभूद्भाग्याधिपोसावमरेंद्रकल्पः ॥ ३७ ॥ ततोर्जिता षो-डशदानमाला मांधातृतीर्थादिवरेपुतेने ॥ राजांगणादग्रणिरेवविष्णोः प्रासा-दमभ्रंलिहमानतान ॥ ३८ ॥ ततो भवद्भूमिपतिः पृथिव्यां धराधिराजः किल राजसिंहः ॥ येनेह पृथ्वीवलयैकरूपं सरः समुद्रोपममाबबंधे ॥ ३९ ॥ दिल्लीपतेर्मालपुरापुरंयद् बाढं बलाद्भूरिबलश्चकुंथ ॥ धराधिपत्यं विधिवद्वि-धाय शक्रासनस्यार्धमथाधितस्थौ ॥ ४० ॥ तदंगजन्मा जयसिंहराणो धुरं धरित्र्या विभरांबभूव ॥ योदानदाक्षिण्यगुणैकसिंधुर्भाग्याधिको बुद्धिमतां वरिष्ठः ॥ ४१ ॥ नृणामहं भूमिपतिर्यदुक्तं कृष्णेन सत्यं जयसिंहराणे ॥ वचोस्तियद्वेगवती नदीयं सरः कृतासेतुविबंधनेन ॥ ४२ ॥ अमरनरपतिस्ततसूनुरेवाभवद्यः सकलनरपतीना-मेष मूर्द्धन्य आसीत् ॥ विधिविरचितरेखां योदरिद्रो भवेति स्वविहितवहुदानैरर्थिनामे-व मार्ष्टि ॥४३॥ शिवप्रसादामरसद्विलासपदाभिधासौधमथो तनिष्ट ॥ सराजराजा-द्रिसमानधाम महेंद्रतेजा अमरेशराणः ॥ ४४ ॥ अंतस्तड़ागं जगमंदिरंयन् मध्ये समुद्रं रजताद्रयः किं ॥ अकारितेनामरसिंहनाम्ना विभाति वैकुंठमिव द्वितीयं ॥ ४५ ॥ अथामरेंद्रश्च सुरेंद्रकल्पो हठादसौ शाहपुरं बभंज ॥ ज्वलद्धुताशावलिदग्ध-दीर्घ स्तंबं बभौ किंशुकयुग्वनं वा ॥ ४६ ॥ अखंडितांगं भवनप्रकाशं विस्तारिताशाकिरणैकरम्यं ॥ यः कीर्तिचंद्रं प्रविधाय भूमौ बलारिलोकं वह्नवित्तवेगात् ॥ ४७ ॥ वंशो विस्तरतां यातु राणभूमिभुजामयं ॥ यावन्मेरु-धराधारि यावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ४८ ॥ इति श्रीदेवकुमारिकानाम राज-मातृकारितवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ वंशवर्णनम् ॥ मुन्यंगसप्तेंदु (१७६७) युतेब्दे शुक्रमासे सिते नाग (८) तिथौ गुरौच ॥ पट्टाभिषेकोत्सव-सन्मुहूर्ते संग्रामसिंहस्य शुभंतदासीत् ॥ ५० ॥ पुरोहितः श्रीसुखराम-नाम वृद्धः सुराणामिव यो बृहस्पतिः ॥ सर्वं तनोतिस्म विधिं विधानवित् पट्टाभिषेकोत्सवयोग्यमंत्रतः ॥ ५१ ॥ तीर्थोदकैः कांचन कुंभसंस्थै-र्मूर्द्धाभिषेकोथनृपः समंत्रैः ॥ ततस्तुनेपथ्यविधिं दधानो धर्माभिमुक्तार्क इवव्यराजत् ॥ ५२ ॥ अशोभतासौ भ्रमुकामुकेन मतंगजेनेहमदोल्कटेन ॥ क्रामनपुरीं देवपुरीमिवेंद्रो लोकाभिरामां नरदेवनद्धां ॥ ५३ ॥ यस्याभि-षेकांबुसमार्द्रदेवी यावन्नचास्यायततावदेव ॥ सुदुःसहः शत्रुगणैः प्रतापो दिगंतराण्येवसमभ्यगच्छत् ॥ ५४ ॥ ततोनिजस्योद्धतवंशनामधरस्महोग्रं शबलेशपुत्रं ॥ मेनातिनामेवपराजयाय संग्रामनामानमुपादिशत्सः ॥ ५५ ॥

कायस्थउग्रः किलकान्हजिद्यस्तमादिशद्दुष्टवधाय वीरं ॥ गतौतु युद्धाय महोजसौतौ यत्रास्ति मेवातिगणः सदृप्तः ॥ ५६ ॥ म्लेच्छाधिपैस्तैरपि युद्धदक्षैः संग्रामसिंहस्यच योधमुख्यः ॥ घोरं महाचित्रकरं नियुद्धं देवासुराणामिवतत्र ह्यासीत् ॥ ५७ ॥ तज्जन्यभूमेरिदमंतरालं पतज्ज्वलद्योतिरिवव्यरोचत् ॥ निस्त्रिंशबाणावलिकुंतशक्तिप्रासादिभिस्तत्र दिवापिनूनं ॥ ५८ ॥ दलेलखानो रणरंगधीरस्तंमानसिंहो युधि संजघान ॥ सचावधीत्तं समरेपिदेवासुरेंद्रलोकं प्रति जन्मतुस्तौ॥५९॥ सचित्रकूटाधिपतेर्बलौघस्तद्यावनं सैन्यमपिव्यजैषीत् ॥ निशीथिनीसंभवमंधकारं सूर्यांशुसंदोह इवोदिताभः ॥ ६० ॥ बंदीमिवोद्गृह्य जयश्रियं ते म्लेच्छाधिपेभ्योथ नृपस्ययोधाः ॥ न्यवर्तयंताशुरणप्रदेशादुद्धृत्य सर्वं शिबिरादिकंयत् ॥ ६१ ॥ जयश्रियासंवृतसुंदरांगा अनीनमत् भूमिपहेत्यवीराः ॥ नृपोपिसुप्रीतमनास्तदानीं यथार्हसंभावनयाग्रहीत्तान् ॥ ६२ ॥ ततो निष्कंटकां पृथ्वीमशासीत् पृथिवीश्वरः॥ संग्रामसिंहो विरहत् स्वेच्छया मुदितोयुवा ॥ ६३ ॥ याक्षत्रियाणां किल शस्त्रविद्या ह्यशिक्षतासौ सकलापिनूनं ॥ मुक्तः शरस्तेन विकृष्यवेगात् स्थितिंलभेदेव न कुंजरेपि ॥ ६४ ॥ विश्वंभरोपि स्वयमेवतावत् संग्रामसिंहे वनिपालमुख्ये ॥ तस्मिंस्तु विश्वंभरताक्षमत्वं निधाय लक्ष्मी सुखमेव भुंक्ते ॥६५॥ नृपस्य मंत्री च विदां वरिष्ठो विहारिदासोतितरांसुधर्मा ॥ कायेन वाचा मनसापि गोपीनाथं समन्वास्त इहावतीर्णः ॥ ६६ ॥ विहारिदासे वरमंत्रिमुख्ये सर्वाधिकारेषु नियुज्यमाने ॥ विंशोपका विंशतिरेवलेख्या धर्मस्य सत्यस्य च शास्त्रविद्भिः ॥६७॥ तस्यैवानुमतेदत्त नृपोदानानिकानिच ॥ पर्जन्य इव सत्येभ्यो द्विजेभ्यस्तुनोदितः ॥ ६८ ॥ सदानुकूलेतिकिरातपद्यमस्मिन्द्वये सार्थक तामवाप्तं ॥ संग्रामसिंहे नृपतौ वरिष्ठे विहारिदासे वरमंत्रि मुख्ये ॥ ६९ ॥ संग्रामसिंहप्रभुणा कथंकल्पद्रुमः समः ॥ वांछितार्थप्रदोह्येष इष्टार्थाधिकदोन्तपः ॥ ७० ॥ वरनरपतिसेवितांघ्रिपद्मः सकलसुखैक निधिः प्रतापशाली ॥ अमरतनुज एष राजराजो हरिरिव शास्तु बुधार्चितः पृथिव्यां ॥ ७१ ॥ इति देवकुमारिकानाम राजमातृकृतवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ महाराणा श्रीसंग्रामसिंहपट्टाभिषेकादि वर्णनं नाम द्वितीयप्रकरणं ॥

दाक्षिणात्य इह मंत्रशास्त्रविद्दक्षिणादिपदमूर्तिनामभृत्॥ यो द्विजातिवरमंडलीवृत्तो भाति भर्गइव पार्षदावृतः ॥ १ ॥ ग्रामवस्त्रवरभूषणादिभिस्तं सदा वरमसावपूपुजत् ॥ चित्रकूटपतिरेवसद्द्विजं देववंद्यमिव पाकशासनः ॥ २ ॥ वैद्योवाग्भटसुश्रुतात्रिरचितग्रंथाब्धिपारंगतो योलोकेष्विहमंगलं वितनुते नाम्नाप्यसौ मंगलः ॥ तस्मै क्षीरसमुद्रलब्धजनुषा तुल्या-

लसद्रुद्रये भूपोग्रामवरेणुकार्पणविधिं संग्रामसिंहो करोत् ॥ ३ ॥ संवत् स्वाद्रिमुनींदुभिः (१७७०) परियुते ऽ व्देशंभुसूनोस्तिथौ शुक्रे मासि सितेतिपंडितवरः शास्त्रार्थ पारंगमः ॥ काशिस्थोतितरां सुधीर्दिनकर (१) स्तस्मै हिरण्याश्वयुग्ग्रामं विप्रवराय यो नृपवरः संग्रामसिंहो ऽददात् ॥ २ ॥ वाजपेयमुखयज्ञशालिने पुंडरीकयतिनामविभूते ॥ ग्राममेवलितवाजिसंयुतं चंद्रपर्वणि समर्पयत्प्रभुः ॥ ३ ॥ राजतीनां च मुद्राणामयुतं चंद्रपर्वणि ॥ पुंडरीकाय यज्ञार्थमदात्संग्रामभूपतिः ॥ ४ ॥ अथागमत्कैश्चिदहोभिरासीत्पुनीतमर्द्धोदयनामपर्वणि ॥ दानोदकोत्सर्गमना नरेंद्रो घर्मात्यये मेघइवापिकश्रीः ॥ ५ ॥ अथो महादेवपरैकचित्तो देवाभिरामो भुवि देवरामः ॥ द्विजाग्रणीः पुण्यबलस्तदानीं तुलातिरुद्रो विधिनाकपीष्ट ॥ ६ ॥ द्विजाय सत्पात्रवरायदेवरामायतस्मै नरवाह्ययानं ॥ ग्रामं हनुमातियनामभाजं संग्रामसिंहश्च समर्पयत्सः ॥ ७ ॥ ब्रह्मज्योतिविवर्तस्य गुणाः सर्वेप्यशेषतः॥ देवरामस्य विप्रर्षेर्वक्तुंकेनेहशक्यते ॥ ८ ॥ ज्योतिः शास्त्रविदांवरः सुमतिमान् तत्वार्थवित्कोविदः शिष्याणां प्रतिपाठनेतिचतुरो भूभृत्सभाभूषणं ॥ तस्मै पात्रवराय भट्टकमलाकांताय चार्द्धोदये ग्रामंयस्तिलपर्वतादि सहितं संग्रामसिंहो ददात् ॥ ९ ॥ मोरडीसंज्ञया ग्रामं विश्रुतं विश्वमंडले ॥ कमलाकांतभट्टाय संग्रामेशो ददात्प्रभुः ॥ १० ॥ हेमहस्तिरथदानमादृतो दीप्तिमानवनिपाकशासनः ॥ बंधुरोद्धुरसमिद्धसिंधुरानेकलिंगशिवतुष्टये ददात् ॥ ११ ॥ श्रीमत्संग्रामनृपतिर्जीयात्सशरदांशतं ॥ पात्राय प्रत्यहं दत्ते हेममुद्रायुतां च गां ॥ १२ ॥ इतिश्री वैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ प्रकरणं ॥

संग्रामसिंहजननी चाहुवाणान्वयोद्भवा ॥ पितुर्वंशोद्भवं तस्या अतः परमिहोच्यते ॥ १ ॥ पुरामहांस्तक्षकनागराज उत्तंगनाम्नः किल कर्णभूषां ॥ हलागमद्भूतलमेवसद्यो मुनिस्ततश्चातितरांचुकोप ॥ २ ॥ काष्ठांग्रहीलायखनंतमुच्चैर्मुनिं विलोक्याथ सुराधिराजः ॥ द्विजकृपामार्द्रमनादयालुर्वज्रं मुमोचाथ धराविदारिः ॥ ३ ॥ तेनैव मार्गेण च लब्धभूपो द्विजः परंतुष्टमनावभूव ॥ तद्गर्त्तपूर्त्यै तु वशिष्ठनामा यत्नंचलोककृपयावतिष्ठत् ॥ ४ ॥ हिमालयं याचितवान्मुनींद्रस्तद्गर्तपूर्त्यै सुतमेकमेव ॥ दत्तेन तेनाद्रिवरेण

---

(१) दिनकरभट्टको कोयाखेड़ी ग्राम हिरण्याश्वदानमें दिया था, वह ग्राम उसके पौत्रने कविराजा श्यामलदासजीको देखा है. इस प्रशस्तिके अन्तमें उसके ताम्रपत्र वगैरह दिये गये हैं.

गर्तपूर्तिंचकाराहितकृत्य आसीत् ॥ ५ ॥ भुवोथरक्षार्थमनल्पबुद्धिं मखंदधौ वीरवरस्यलिप्सुः ॥ हवींषितस्मिन्नजुहोत्स मंत्रैरमोघसिद्ध्यर्थकरैर्वसिष्ठः ॥ ६ ॥ तस्मादकस्मादथ वन्हिकुंडात् कृतांततुंडादिव चंडरूपः ॥ दोष्णश्च-विभृच्चतुरे ऽ वतीर्णं क्षात्रोत्रतस्माद्भुवि चाहुवाणः ॥ ७ ॥ सचाहुवाणः प्रथितो-त्रनामा धरामरक्षच्चतुरंगसंज्ञः ॥ श्रीशंभरे पत्रवरेथ राजश्रियं दधे वीरवरैर्वृतः सन् ॥ ८ ॥ तदन्वया क्षीरमहार्णवादिव क्षपाधिनाथोभ्युदयाय भूमौ ॥ संग्रामरावः खलु भूरितेजाः सचित्रकूटाधिपमन्वगाच्च ॥ ९ ॥ तंचित्रकूटाधिप-तिः समीक्ष्य योधारमुन्नद्धबलप्रभावम् ॥ अस्थापि राज्ञा बहुमानपूर्वं सचाहु-वाणान्वयवंशदीपः ॥ १० ॥ तत्सूनुरुग्रः परमप्रतापी प्रतापरावो रवरुग्ण-शत्रुः ॥ चातुर्यवित्तैकनिकेतनंयः सुनीतिनैपुण्यविधिर्विधिज्ञः ॥ ११ ॥ सएवरावः प्रसमिद्धतेजाः लेभेथपुत्रं बलभद्रसंज्ञं ॥ कृष्णाग्रजान्पूर्वबलत्वहेतोः सेनाप्यवाप्ता बलभद्रसंज्ञां ॥ १२ ॥ तदात्मजन्मा किल रामचंद्रः श्रीरामपादां-बुजचित्तवृत्तिः ॥ धूर्यो महावीरवृंतलभाजां पण्याधिचित्तैकरुचिर्बभूव ॥ १३ ॥ तस्यात्मजः सबलसिंह इतीरिताव्हो धामः श्रियां च यशसां च महागुणानां ॥ यः सामदामविधिभेदविनिग्रहाणां सम्यग्नियोगविधिवत्प्रबलोवभूव ॥ १४ ॥ तदात्मजः श्रीसुलतानसिंहः स्थानं तदीयं विधिवत्प्रशास्ति ॥ अर्द्धोदयेरूप्य-तुलादिदानावलिर्वितेने विधिनाथतेन ॥ १५ ॥ तस्माद्गुणाब्धेः सबलाभिधाना-द्रमेवसाक्षादुदिता भवघ्या ॥ पितुर्गृहे वर्धत सद्गुणौघैर्नाम्ना युता देवकुमारिकेति ॥ १६ ॥ पित्राथ दत्ता सबलेन राज्ञा वराययोग्यामरसिंहनाम्ने ॥ भीमेन कृष्णाय महोग्रधाम्ने धामाभिरामा किल रुक्मिणीव ॥ १७ ॥ ततोग्रराज्ञी जयसिंहसूनो-र्जाता महापुण्यपवित्रमूर्तिः ॥ रमेवसाक्षान्मकरध्वजंसा संग्रामसिंहं सुतमा-पदीड्यं ॥ १८ ॥ वैकुंठलोकश्रयतीड्यजेशभूपाधिनाथे ऽ मरसिंहराज्ञि ॥ तदा-त्मजः शक्रइवाथ पृथ्वीं दिवं दिनेशप्रतिमः प्रशास्ति ॥ १९ ॥ माता तदीयाथ विचार्य चित्ते धर्मार्थबुद्धिं विदधीतनित्यं ॥ उत्कर्षमापादयतिक्षणेन धर्मो जनैराचरितो हि सम्यक् ॥ २० ॥ तुलात्रयं राजतमुद्विधाय दानान्यनेकानि च सुव्रतानि ॥ शिवालयस्योद्धरणाय बुद्धिर्दधे तया तीर्थवरस्यसीमा ॥ २१ ॥ पूर्वे तुलासा ऽ मरसिंहभर्तुर्निदर्शितो धत्तमुदैव राज्ञी ॥ तया द्विजालि · पृथिवी-वत्पृथ्वा पुष्टा ऽ भवत्तुष्टमना नितांतं ॥ २२ ॥ तुला द्वितीयापि तयाव्यधायि श्रीएकलिंगेश्वरसन्निधाने ॥ ग्रहे विधोश्चंद्रकुमारिकाख्यां सुतांच पौत्रं विधिवद्विधाय ॥ २३ ॥ तुलां तृतीयां विधिनाव्यकार्षीत्संग्रामसिंहस्य नृपस्य माता ॥ अर्द्धोदये पर्वणि चान्यदाने : सहैवसा देवकुमारिकेयं ॥ २४ ॥

ईशोहि कांत्या रमतीतिहेतोः श्रीशारमग्रामवरोयदास्ते ॥ शिवस्थितिं तत्र विलोक्यदेव्याः प्रासादसिद्ध्यर्थमकारि बुद्धिः ॥ २५ ॥ सदश्मसंघट्टितरूपराशिः शिवस्थितिप्रोज्झितकल्मषौघः ॥ सुवर्णशृंगप्रतनाद्भुतश्रीः प्रासादईशाद्रिरिवावभास ॥ २६ ॥ राहप्पनामा किल भूसुरेशो यः श्रीनिवासः शुभधर्मधामा ॥ तत्पुण्यकर्माणि कविः कथंचित् संख्यां विधातुं निपुणोपिनेष्टे ॥ २७ ॥ तंज्ञानिवर्गार्पितसद्दुकूलं पात्रादिकं रायमिहोग्रबुद्धिः ॥ शिवालयस्योद्भवकर्मसिंधौ स श्रीनिवासं कुशलंन्ययुक्तः ॥ २८ ॥ तत्र स्वादूदकं कुंडं व्यधत्तरावलात्मजा ॥ धर्मकर्मार्थसिध्यर्थं जनानां च सुखाप्तये ॥ २९ ॥ इति श्रीदेवकुमारिकानाम्नि राजमातृकृतवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ चाहुवाणोद्भवप्रकरणं चतुर्थं ॥

अथ प्रतिष्ठां विधिवद्व्यकार्षीच्छुभे मुहूर्ते सति राजमाता ॥ आहूय सर्वांश्च पुरोहितादींस्तान् भूमिगीर्वाणवरान्सुबंधान् ॥ १ ॥ तस्यास्ति मंत्री हरजीतिनामा गुणाधिकः पुण्यभृतांवरिष्ठः ॥ यः सर्वकार्याणि निदेशमात्रात् सदाकरोत्येव सुबुद्धिराशिः ॥ २ ॥ प्रेमाभिधाकापि च राजमातुर्विश्वासपात्रं परिचारिकाभूत् ॥ तस्यासुतो बुद्धिबलैकसिंधुर्लोकैर्य ऊदाभिधयाभ्यधायि ॥ ३ ॥ ऊदाभिधं बुद्धिमतांवरिष्टं तदर्हवक्तुं प्रतिपादनेषु ॥ समादिशत्सर्वगुणोपपन्नमुदारचित्ताजननी नृपस्य ॥ ४ ॥ ऊदाभिधानो तितरांचदक्षस्तत्कर्मसिंधौ कुशलस्तरस्वी ॥ पुंजीकृतान्वस्तुचयान्समग्रान् बुद्ध्याचिनोत्सर्व हितार्थबुद्धिः ॥ ५ ॥ यज्ञांगसामग्र्यविधिं व्यधत्त पुरोहितश्रीसुखरामसंज्ञः ॥ संग्रामसिंहस्य यथैवजिष्णोर्महीमहेंद्रस्य गुरुर्गुरुर्यः ॥ ६ ॥ विचार्यतेनाथ पुरोहितेन वृत्ताद्विजास्तत्र वसिष्ठकल्पाः ॥ द्विजातिसंघः खलुसर्ववेदपारायणं चात्र समभ्यगीष्ट ॥ ७ ॥ वेदध्वनिः सोप्यथतुर्यनादैः संवर्द्धितो शोभत दिग्विदिक्षु ॥ केकारवः सुस्वरमंडितांगो घनाघनस्यस्तनितैरिवेह ॥ ८ ॥ हव्यैर्हुतैश्चातितरांस मंत्रैः सौहित्यभाजस्तुसुरा अभूवन् ॥ भोज्यैरनेकैरचितैश्चतुर्धा वर्णाश्रमा भूमिगता इवात्र ॥ ९ ॥ अथोभ्यगछत् किलराजमाता वेदिं च तत्कर्मविधिं विधित्सुः ॥ पुरोहितस्यानुमतेनदानैर्धरासुराणामपि तर्पणाय ॥ १० ॥ तुलांचतुर्थीमिव तत्र देवी चरीकरीति स्म विधिप्रयुक्तां ॥ एकीकृतः पुण्ययशः समूहः सरूप्यराशिस्तुलितो विभाति ॥ ११ ॥ वाराणसीस्थोप्यथचंद्रभट्टः सुपंडितः पत्रवरस्तपस्वी ॥ तस्मै गजोग्रामवरश्चदत्तः सदक्षिणासंयुतमानपूर्वं ॥ १२ ॥ रथाश्वनरयानादि भूहिरण्यादिकंबहु ॥ अदाद् द्विजेभ्यः पात्रेभ्यो राज्ञी शंकरतुष्टये ॥ १३ ॥ शब्दः संश्रूयते तत्र दीयतांभुज्यतामिति ॥ दीनानाथादयोप्यत्र मोदेरन्स्तुष्टमानसाः

॥ १४ ॥ प्रासादवैवाह्यविधिंदिदृक्षुः कोटाधिपो भीमनृपोभ्यगछत् ॥ रथाश्वपत्तिद्विपनद्धसैन्यो दिल्लीपसंमानितबाहुवीर्यः ॥ १५ ॥ योडुंगराख्यस्य पुरस्यनाथो दिदृक्षया रावलरामसिंहः॥ सोप्यागमत्तत्र समग्रसैन्यो देशांतरस्था अपिचान्यभूपाः ॥ १६ ॥ देवालयाद्योजनभूमिरेषा नृपैर्जनैः संघवती तथासीत् यथा समुच्छालित मुष्टयोपि तिलस्तलंनेयुरहो धरिण्याः ॥ १७ ॥ संवद्वुजाब्धिमुनिचंद्रयुताब्द माघे शुक्ले विशाखतिथियुग्गुरुवासरेच ॥ श्रीवैद्यनाथशिवसद्मभवां प्रतिष्ठां देवी चकार किल देवकुमारिकाख्याः ॥ १८ ॥ शेषनागमणिसुप्रभावलीभूषितोद्धतजटाकलापकः ॥ कोटिसूर्यसमभासमन्वितो वैद्यनाथ इह भूतयेस्तुनः ॥ १९ ॥ हेतुरेवच गुणत्रयस्ययः सिद्धिदः स्वभजनार्द्रचेतसां ॥ शैलजारुचिविभूषितार्द्धकं वैद्यनाथमिहतं नमाम्यहं ॥ २० ॥ विष्टपत्रितयवंदितेनवा वाग्मनोनिगमहात्म्यशोभिना ॥ सौख्यदेनचयुनक्तु मन्मनो वैद्यनाथचरणांबुजेनतु ॥ २१ ॥ संसृतेर्भयहराय सेवनात् त्र्यंबकाय मदनांतकाय च ॥ शीतदीधितिलसत्किरीटिने वैद्यनाथगिरिशायतेनमः ॥ २२ ॥ वेदगीतिमहिमोद्धताद्विभोर्भूतिभूषिततनोर्महेशितुः ॥ ब्रह्मणः परमतत्वमस्तिनो वैद्यनाथगिरिशादतः परं ॥ २३ ॥ वेदमंत्रविधिवत्सपर्यया पूजितस्य विबुधैरहर्निशं ॥ भक्तिरस्तुसकलाघहारिणी वैद्यनाथपरमेश्वरस्यमे ॥ २४ ॥ अष्टसिद्धि परिचारिकाते नाममात्रजपतांतुसिद्धिदे ॥ बुद्धिरस्तु विमलाद्यमेसदा वैद्यनाथउमया विराजते ॥ २५ ॥ आर्तिभंजनकृपैकवारिधे राजराजविधिसेवित प्रभो ॥ मन्मनोस्तु तव पादपंकजे प्रार्थनेति ममवैद्यनाथ भोः ॥ २६ ॥ हरिश्चंद्रनाम द्विजन्माभ्यभाणीदिदंवैद्यनाथाष्टकं भक्तियुक्तः ॥ प्रभाते पठेत् स्तोत्रमेतन्नरोयो मनोवांछितार्थांचसिद्धिं लभेत ॥ २७ ॥ इतिश्रीदेवकुमारिकानाम राजमातृकारितवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ प्रतिष्ठाप्रकरणं पंचमम् समाप्तिमगात् ॥ श्रीरस्तु.

पंचद्वीपमुनींदुसंमितशरच्छुक्लासिता ऽ द्रींद्रजा दास्त्रे सूर्यसूतान्विते द्विजवरो गोवर्द्धनस्यात्मजः प्रत्यर्थिक्षितिभृत्पराजयकरः श्रीमंडित – – – – – पामतरेश्वरस्य वचनात् श्रीरूपभट्टो लिखत् ॥ १ ॥ संवत् १७७५ वर्षे ज्येष्ठवदि तृतीया ३ शनौ लिपिकृतं भट्ट गोवर्द्धनसुतेन रूपजिता श्रीरामकृष्णाभ्यां नमः ॥

प्रशस्ति नम्बर २ के प्रकरण ३ श्लोक ४ में दिनकरभट्टको हिरण्याश्व दानमें गांव कोयाखेड़ी, जो महाराणा संग्रामसिंह दूसरेने दिया था, उसको दिनकर भट्टके

प्रपौत्र रामभट्टने कविराजा श्यामलदासजीको उन्हीं अपने हुकूक समेत बेचदिया; उसके बाबत काग़ज़ातकी नक़्ल यह है:–

ताम्रपत्रकी नक़्ल.

श्री रामोजयति.

श्री गणेस प्रसादातु. श्री एकलिंग प्रसादातु.

॥ महाराजाधिराज महाराणा श्रीसंग्रामसिंहजी, आदेशातु, भट्टदिनकर महादेवरा न्यात महाराष्ट्र कस्य, ग्राम कोद्यापेडी पडगने भरपरे पेहली थारे पटेथो, सो हिरण्याश्व महादान जेठसुदि १५ भोमेरे दिन दीधो, जदी दक्षिणारो लागत ० ।० गामटका केलुपुंट तथा सर्वसूधी ऊदक आघाट करे श्रीरामार्पण कीधो, दुवे श्री मुप स्वदत्तां परदत्तां वा ये हरंति वसुंधरां पष्टि वर्ष सहस्त्राणि विष्टायां जायते कृमि प्रतदुवे पंचोली विहारीदास, लिपतं पंचोली लपमण छीतरोत. सं० १७७० वर्षे ...। अमाड सुदी १२ भोमे

रामभट्टकी अर्ज़ी और महाराणा
साहिबके हुक्मकी नक्ल.

॥ श्री रामजी.

श्री एकलिंगजी.

॥ नकल अरजी रामभट चरण कासीनाथ, वषिदमत श्री जी इकवालहू मारुजा असाड सुद ७ सं० १९४० का.

चुंकी साअेलको करज
तकलीफ़ पूरी हे, ओर इसने रुप
लेलिये हैं, ओर करज दारीसे तंग
लाचार होकर रजस्टरी होजानेकी
अरजी पेसकी, अलावे इसके इस
तरह होनेमेंभी यह गाम उसी हालत
सासणमें रहेगा, जेसे साएलके था,
इसलिये हुक्म हुवा,
नम्बर १, महकमे रजस्टरीमें
लिषाजावे, कि साएलकी तकलीफ़ातका
षयाल फरमा रजिस्टरी होजानेकी
दरषास्त षास हालतमें ईसीके वास्ते
मंजूर फरमाई गई है, सो रजस्टरी
करदेवे. सं० १९४१ सावण वीद १३,
ता० २१ जोलाई सन् १८८४ ई०
छाप-
दस्तखत-

फ़ार्सीमें दस्तखत मुन्शीके

॥ अपरंच ॥ मारो गाम १ कोधाषेडी, कपासण प्रगणे हे, सो अबार
जाजी सावलदासजीने विकाव रु० १२००१) अषरे बारा हजार एकमे करदी

ग्वन मांड दीदो, सो खतपर रजस्टरीको हुक्म हुओ चावे; मारे क़रज़दारीकी बहुत तक्लीफ़ हे, ओर मारे पिता गोविंद भटजीका काशीजीमें देहांत होगया, और श्री खाविंदां का शुभचिंतकहां, वींमु पांच रुपया ज़ियादा खर्च पड्या, और आगे पण मारी कंन्यारो विवाह करयो जीमें पण पांच रुपया खर्च पड्या, सो देणा है; और आगे मारे पिता गोविंद भटजीरा हात सुं क़रज़दारीमें यो गाम रु० ८००० में गेऐ है, फेर मारे भ्रतरो सवन हुवो जीमें पांच रुपया खर्च पड्या, जीसुं गाम म्हे विकाव करदीदो है, सो षत ऊपर रजस्टरीको हुकम हुवो चावे. मारे या क़रज़दारां आगे बहुत अरचन है, सो श्री जी हज़ूर खाविंदी कर हुक्म रजस्टरीको वख़्शे, या मारी अ़र्ज़ है, फ़क़त

किर्अ़त समाअ़त

द: नाथूलाल पं० द: अंबालाल पं०

महद्राज्य सभाका रुक़ा.

श्री एकलिंगजी. श्रीरामजी.

नम्बर ९८

॥ कविराजाजी श्रीश्यामलदासजी योग्य, राजे श्री महद्राज सभा लि० अपरंच-गांव कोद्याखेड़ीका रामभट काशीनाथने गांव मज़कूर रु० १२००१ में राजके हात वेच रजस्टरी होजावाकी दर्ख्वास्त श्री जी हुज़ूरमें पेश की, अर सायलकी लाचारी ओर क़रज़दारी देखके वींकी तक्लीफ़ रफ़े करनेकी ग़रज़से रजस्टरी करादेवाको हुक्म श्री जी हुज़ूर दाम इक़्वालहूसे हुवा, जो तामीलन रजस्टरीमें लिखा गया है; ओर नक्ल उस हुक्मकी इत्तिलाअन राज पास भेजी जाती है. फ़क़त. सं० १९४१ का सावण विद ११ ता० २२-७-१८८४ ई०

छाप-

हस्ताक्षर- मोहनलाल पंड्याका.

शेषसंग्रह नम्बर ३.

(यह प्रशस्ति वेदले गांवकी सुर्तानवावमें अन्दर जाते हुए वाई तरफ़के आलेमें है.)

श्री गणेशगोत्रदेव्याः प्रसादात् ॥ श्री रामजी सत्य हे जी ॥ स्वस्ति श्रीमंगलाभ्युदयाय अद्यश्रीब्रह्मणोद्दितीयप्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे श्रीवैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतिमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जंबूद्वीपे

आर्य्यावर्त्तान्तर्गतब्रह्मावर्त्तैकदेशे कुमारिकानाम्नि क्षेत्रे स्वस्ति श्रीनृप विक्रमातीतशालिवाहनकृतराज्ये संवत् १७७१ वर्षे शाके १६३८ प्रवर्त्तमाने उत्तरायणगते श्रीसूर्य्ये मासोत्तममासे वैशाखमासे शुक्लपक्षे पूर्णमासीतिथौ घटी ३६ स्वातिनक्षत्रे घटी ५६ सिद्धिनामयोगे घटी ४२ मेदपाटदेशे नगरउदयपुरमध्ये महाराणाजी श्रीसंग्रामसिंहजी त्रातराज्ये महाराजाधिराजगोब्राह्मणप्रतिपालकशरणागतवत्सलगंगाजलनिर्मलस्य उभयकुलप्रकाशनमार्तंडचहुवाणकुलउत्पन्नस्य वत्सगोत्रस्य आशापुरावरलबंधस्य महारावजी श्री बलभद्रजी सुत महारावजी श्री रामचंद्रजी सुत महारावजी श्री सबलसिंघजी सुत महाराजाधिराजमहारावजी श्रीसुर्ताणसिंहजी सप्तगोत्र एकोत्तरशतकुल स्वयमात्मा उद्धारणार्थं वापी हरिमन्दिर वाग कृताः नानानामगोत्र महाराजाधिराज महारावतजी श्रीनेतसिंहजी, सुत रावतजी श्रीजगनाथजी, सुत रावतजी श्रीमानसिंहजी, तस्य पुत्री राजश्री बाई श्रीअनंदकुंवरजी तस्याः कुक्षे पुत्ररत्न महारावजी श्रीसुर्तानसिंहजी, वापी हरिमंदिर बाग निमितार्थं : ज्यागतत्रः १३००१ बावडी तथा हरिमंदिर कमठाणा लेखे ६०७७९ श्रीदीवाणजी बाई राजकी देवकुंवर बाई गोते पधारया, सो खरचाणा जणीरी वीगत २२६६६, घोड़ा ५६, खरच्या ८६००, सीधो खरचाणो १५१३, गेणो खरचाणो ७०००, कपड़ा खरचाणा ७५००, शेकड़ खरचाणा जीरा रुपया ६०७७९ हुवा; कमठाणा वागरा हजार तेरा वीगेरा साव सर्व जमा रुपया ७३७८०; सरब सुधी खरचाणा संवत् १७७४ असाढ़ सु० १ रवे साह सुजारा परधाना माही कमठाणो हुवो. लिखितं मावट किरपारां गजधर, उदा सोमपुरा.

शेषसंग्रह नम्बर ५.

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीअंबिकायैनमः ॥ अस्ति श्रीमानमानुर्वीमंडलेखंडमंडले ॥ जंबूद्वीपगते खंडो भारतोतिसुभारत ॥ १ ॥ तत्रदेशा नृपावेशा कामंसंति सहस्रशः ॥ तथापि संप्रशंसंति गुणा वागडनामभिः ॥ २ ॥ पंचत्र्यंशशतान् ग्रामान् विविधाभूतिभूतयः ॥ बहुदवोलया यत्र यत्रपुण्यजनाश्रितः ॥ ३ ॥ यत्र तीर्थान्यनेकानि यत्र धर्मः सनातनः ॥ तत्रदेशे महानद्यो विश्रुताः पुण्यवारिणा ॥ ४॥ एवं सर्वगुणे देशेनिवेशे पुण्यकर्मणां ॥ आस्ते गिरिपुरं नाम

नगरं नगरंजितं ॥ ५ ॥ यत्रद्राविततोद्यानवापीकूपसरोवरैः ॥ शुशुभे शुभपर्यंते-कल्पावल्लगोपुरैः ॥ ६ ॥ यत्राष्टश्रेणयो नानाविधाविर्भूत भूतयः ॥ यत्रागण्यानि पण्यानि पणिनः सन्ति वेपुरे ॥ ७ ॥ यत्रासत्रम्यहर्म्याणि यत्राक्षेत्रकुलाश्रियः (!) ॥ विप्रा दिशकृतायत्र सत्यः सत्यव्रतास्त्रियः ॥ ८ ॥ मंदुरा सुंदरा वाजिराजराजि-विराजिनाः ॥ शालागृहं गजा यत्र रेजिरे राजसद्मसु ॥ ९ ॥ शुश्राव यत्र सततं वेदशास्त्रध्वनिं जनः ॥ समेधितसमाधीनां पठतामग्रजन्मनां ॥ १० ॥ वीराणां रणधीराणां धनुर्विद्याविवादिनां ॥ प्रासादानु प्रतिध्वाने यद्वनुर्गुण-गर्जितः ॥ ११ ॥ रणच्चरणमंजीरैः संचारं राजवर्त्मसु ॥ शशंसुरिव लोकानां नक्तं यत्राभिसारिकाः ॥ १२ ॥ यत्र वेदविदोविप्राः प्रत्यहं विहितेष्टयः ॥ स्वधर्मे-मन्ववर्त्तत स्मृतिसंसक्तदृष्टयः ॥ १३ ॥ राजसंवर्हिताःपौरा यत्र यत्र महोत्सवान् ॥ परस्परस्पृहावंतः संतः कुर्वंतु संततं ॥ १४ ॥ सर्वदा संविधानेन मानेन मह नार्थिने ॥ यत्र दानं ददात्येव देहदानावधीकृतं ॥ १५ ॥ यत्पुरं पुरहूतस्य पुरस्यार्द्धिसमृधिजित् ॥ पुरंदरपुरीस्पर्धी यत्रमल्लनृपोभवत् ॥ १६ ॥ राज्ञः सहस्रमल्लस्य भोजराजसमप्रभः ॥ संपूर्णकवितामाद्यो धत्तेर्द्धकवितांपरः ॥ १७ ॥ द्विपत्तापकर्ता वृहच्चापधर्त्ता महासत्वपूरः प्रसन्नः प्रशूरः ॥ कलौयः कृपालुः कवींद्रैकपालः क्षितिं याति धीरः क्षमी मल्लदेवः ॥ १८ ॥ करधृतशरचापः शत्रुदुःसह्यतापः प्रवलखलनिहंता सुप्रमत्तेभयंता ॥ सकलविधिपुदक्षः कल्पनाकल्पवृक्षः समरसमयधीरो राजते मल्लदेवः ॥ १९ ॥ महादानकर्त्ता सलीलं विहर्त्ता गुणापारसिंधुर्द्विजन्मैकवंधुः ॥ समुद्यच्चरित्रः सदायःपवित्रः सुराजच्छरीरः क्षितौ मल्लदेवः ॥ २० ॥ ततः प्रभुत्वं जगृहेथ शक्रात्प्रतापमग्ने-श्चयमाच्चकोपं ॥ धनंधनेशाच्छिव विष्णुतश्च शक्तिं ― ― ― ― स्वरमंनुमन्ये ॥ २१ ॥ तत्सर्वमेकीकृतमेवमूहे पंचस्फुरद्भूतमहासमूहे ॥ निधाय कर्त्तुं भुवि धर्मरक्षां त्रिपुरुस्तुणातं नृपमल्लदेहं ॥ २२ ॥ श्रीआशकर्णतनयो हरिचरणपूजने रसिकः ॥ राउलसहस्रमल्लो ज्ञानकलाकोविदः सोऽत्र ॥ २३ ॥ तस्यवंशे महाराज सूर्यवंशसमुद्भवः ॥ सराजा पृथिवीपालो भोगयोगरतः सदा ॥ २४ ॥ तत्र राउलसहस्रमल्लस्य वंशनाम लिख्यते आदिनारायणः तस्य सुत कमलः कमल सुत ब्रह्मा ब्रह्मानु मरिचिः मरीचिनु कश्यपः क. सूर्यः सूर्यनु मनुः मनुनु ईक्ष्वाकुः ई. कुक्षः कुक्षनु विकुक्षः वि. जांणुः जां. पुनश्चन्द्रा. पु. अनुरण्य. अ. काकुत्स्थ. का. विश्वावसु. वि. महापति. म. चवन. च. प्रद्युम्न. प्र. धनुर्धर. ध. महीदास. म. यौवनाश्व. यौ. समेधा. स. मांधाता. मां. कुरुस्थ. कु. प्रवुध. प्र. कुरूस्थ. कु. वेण. वे. प्रथु. प्र. हरिहर.

ह. त्रिशंकु. त्रि. हरिश्चंद्र. ह. रोहिताश्व. रो. हरिताश्व. ह. अंबरीष. अं. ताड़जंग. ता. धनुर्धर. ध. नाडिजंग. ना. धंधुमार. ध. सगर. स. असमंजा. अ. अंशुमंत. अं. भगीरथ. भ. अरिमदन. अ. थिरथूर. थि. थिरुज. थि. दिलीप. दि. रघू. र. अज. अ. दशरथ. दशरथनु श्रीरामचंद्र. रामनु कुश. कु. अतिथ. अ. निषध. नि. नल. न. पुंडरीक. पु. क्षेमधन्वा. क्षे. देवानीक. दे. अहिर्बु. अ. नगु. न. अहिनगु. अ. जितमंत्र. जि. पारिजात. पा. शीला. शी. अनाभि. अ. विजय. वि. वज्रनाभ. व. वज्रधर. व. नाभि. ना. विजनध. वि. ध्युपिताश्व. ध्यु. विश्वतित. वि. हनु. ह. नाभिमुख. ना. हिरण्य. हि. कौशल्य. कौ. ब्रह्मिणु. ब्र. पुष्कर. पु. पत्रनेत्र. प. हव्यनेत्र. ह. पुष्पधन्वा. पु. धावशद्धि. धा. सुदर्शन. सु. सैंहवर्णन्. सै. अग्निवर्णन्. अ. विजिरथ. वि. माहारथ. मा. हैहय. है. माहानंद. मा. आनंदराजा. आ. अचल. अ. अभंगसेन. अ. प्रजापाल. प्र. कनकसेन. क. जितसत्र. जि. सूजिति. सू. शिलाजित. शि. सौवीर. सौ. श्रुकेत. श्रु. श्रुमति. श्रु. चंद्रसिंह. चं. वीरसिंह. वी. श्रुजय. श्रु. श्रुजित. श्रु. बीलरा पान शरषी गोत्र गोस्वामी हंसनिवास हं. विजयादित्य. वि. येन विजयादित्येन नागराजोपासनं कृत्वा तेन पुत्रद. क्रतस्यनामं भासादित्य. भा. ना. भोगादित्य. भो. जोगादित्य. जो. केशवादित्य. के. ग्रहादित्य. ग्रहादित्य दक्षणदेशे सर्पापुरपटने निवास. ग्र. भोजादित्य. भो. बापा राउल. बा. खुमाण राउल. खु. गोविंद रा. गो. महिद रा. म. आलु रा. आ. भादू रा. भा. शीह रा. शी. शक्तीकुमार रा. श. शालिबाहन रा. शा. नरबाहन रा. न. यशोभ्रम रा. य. नरब्रह्म रा. न. अंबाप्रसाद रा. अं. कीर्तिब्रह्म रा. की. नरवीर रा. न. उत्तम रा. उ. भालु रा. भा. सूरपुज रा. सू. करण रा. क. गात्रुड रा. गा. हंस रा. हं. जोगराज रा. जो. विरड रा. वि. वीरसिंह रा. वी. राहप रा. रा. देदू रा. दे. नरू रा. न. हरीअंड रा. ह. वीरसिंह रा. वी. अरिसिंह रा. अ. रयणसिंह रा. र. सामंतसिंह रा. सा. कुंवरसिंहरा. कु. मयण-सिंहरा. म. रेणसिंहरा. रे. सामन्तसिंहरा. सा. अरसींह रा. अ. रतनसिंह रा. र. श्रीपुंज रा. श्रीपुं. कुरमेर रा. कु. पदमसि रा. प. जीतशीह रा. जी. तेजसिंह रा. ते. समरसी राउल भूपति भर्तु शाखा द्वितयं विभाति भूर्लोके एकानाम्नी राणा-नाम्नी चपरमहती॥ धर्मे यस्य मतिर्नतिर्गुरुजने प्रीतिः सदा सद्गुरौ दात्रीपात्र गुणाच (?) निर्भयरणे सद्भिः समं संगतिः ॥ गीतिर्लौकिककर्मनर्मसुविधो निर्धूतलोभो-व्रती तेजः सिंहनराधिपो विजयतां संप्राप्य राज्य श्रियं ॥ अहह समरसिंहस्तस्य-सूनुः सवाहः त्रिभुवनपरिसंपत् कीर्तिगंगाप्रवाहः ॥ धरति धरणिभारं कूर्मपृष्ठा-वतारं ॥ निजकरकमलेनाप्यापनायंप्रयासं अजनिसमरसिंहः कौस्तुभः

र्गनिर्या: ॥ त्रि – निधिरधिधामामन्वयायेत्र भूप: अधिगतपरिभाग: पुंडरी-
काक्षवक्ष स्थलपरिसरकृत्या प्राप्तसाम्राज्यलक्ष्मी: ॥ दुर्गे श्रीचित्रकूटे विलसति
नृपतौ सर्वसामंतचूड़ारत्नप्रद्योततान्नावतवदतिमति : दिक्पथं संप्रयाति ॥
मन्त्र कृष्णानिकृष्णो भवदुचितमिदं कृत्तिवासा शेवोभूत् शीतांशुप्रतिहाय-
यन्लविमानिकलुषां युक्तमेतद्बभार ॥ असुरसुरजैत्रं चित्रकूटं पुरास्मिन्
भवति समरसिंह शासतिक्षोणिपाले ॥ कनककलशहेलिप्रस्फुरद्रम्यजाले:
दिनमणिकिरणालीं सप्रकाशेत प्रेक्ष्यं ॥ जगति कति न संति प्रार्थितार्थप्रदान
प्रकटितनिजशक्तिर्व्यक्तकीर्तिप्रपंच : ॥ परमिह परलोक : श्रीवशीकारसारं
श्रयति समरसिंह दान्तमस्ताभिमानं ॥ क्वचित् कदाचिद्दानांबुहस्तो वर्षति
वा नवा ॥ श्रीमत्समरसिंहस्य एतत् सर्वत्र सर्वदा ॥ तुरंगलाला गजदान नीर
प्रवाहयो: संगममुद्वहंति ॥ अस्य प्रमाणे निखिलापि भूमि: प्रयागलक्ष्मी विभरां
बभूव ॥ आकर्ण्य पन्नगीगीतं यस्यबाहुपराक्रमं ॥ शिरश्चालनयाशेषश्चक्रेकंपं
परंभुव : ॥ त्यागेनापि मनोहरेण कृतिनो यं कर्णमाचक्षते यं पार्थं प्रथयंति वैरि
सुभटा: शौर्येण सत्ताधिकं ॥ यंरत्नाकरमामनंति गुणिनो धैर्येण मर्यादया यं मेरुं-
हि समाश्रयेण विबुधा: शंसंति सर्वोन्नतं ॥ तस्यकालीकन्ह समरसिंह पुत्र : रतनसिंह
रा. नरब्रह्म रा. भालु रा. भा. केशरी रा. के. शांमंतसींह रा. शां. सिहड़दे रा. सि.
देदु रा. वरसंग रा. व. भचुंड रा. भ. डूंगरसींह रा. डूं. करमसींह रा. क. कांन-
ड़दे रा. का. प्रतापसी रा. प्र. गेपु रा. यस्यगेपालेन गोपिनाथविरदं धृता
तस्यपुत्र शोमदास रा. शो. गांगु रा. गां. उदिसिंघ रा. उ. प्रथीराज रा.
राउल प्रथीराज पुत्र आसकर्ण राउल ॥ कर्णं कर्णावतारं च सर्वधर्मैक-
सावनं ॥ हेमधारप्रवर्षेण ग्रहं पूर्य धरा मरा ॥ भृगुपतिरिव दृप्ता-
रातिसंहारवारी सुरगुरुरिवशश्वन् नीतिमार्गानुसारी ॥ स्मरद्रवसुरतेषु प्रेयसी-
चित्तहारी शिवरिव सबभूव श्रीपुसत्वोपकारी ॥ सोपिमित्र कमलानिबो-
धयन् लोकशोकशमलान्यशोधयन् ॥ तेजसाखिलजगत्प्रकाशयन् विद्विपति
निरमा – – – – – – – – – – – – – राउल आशकर्णयेनराउल आस-
कर्णेन पातसाह अकब्बरेणसार्द्धं युद्धंकृत्वा तस्य राउल आशकर्ण सुत महाराया
राउल श्रीसहस्त्रमल्लग्रहे भार्यापट्टराज्ञी चाउड़ावंशे चापोत्कटराज अणहलपुर-
पत्तन निवास राउल श्री वनराजतस्य पुत्रपुंजु पुंजापुत्र सामतसीतस्य
पुत्रजयसीचदत्त तस्यपुत्र पीमराज तस्यपुत्र चुंडराज तस्यपुत्र सवदास
तस्यपुत्र सामंतसी तस्यसुत जेसींगदे तस्यसुत सुरराउल तस्यपुत्री
सुरजदे नाम्नी राउल श्री सहस्त्रमल्लपट्टराज्ञीतेन सूरिजपुर ग्रामनिर्वास्य

प्रासादोद्धारित : अनेकपुण्यदानध्वजाप्ररोहणं कृत्वा संवत् १६४७ प्रवर्त्तमाने उत्तरायण गते श्रीसूर्ये ग्रीष्मऋतौ माहा मांगल्यप्रदे श्रीमज् ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे ५ पंचम्यां तिथौ घटि ३४ सोमवासरे पुष्यनक्षत्रघटि २७ ध्रुवनाम्नियोगे बालवकर्णे एवंयोगे प्रतिष्ठा कृता राउल श्री सहस्त्रमल्लसुत कुएर श्रीकरमसींगजी कुएरश्रीजसोदाबाईजी तस्यप्रधान नागरीज्ञातीमहं भाभलव्यासफाउ गांधीसंघासाह कल्यांणमहं सोमनाथ प्रशस्तिकृता गोहिलशार्दूलसुत गोहिलदेवा सुतमहेसदास प्रसाद उपरिमहषोषा कोठारीकचरा श्री शुभं भवतु राउल श्री सहस्त्रमल्लजी रांणी श्री सूरजदेजीने लेखक दीक्षत वेणीदासे मार्कंड ऋषीश्वरनोर्उ आयह्यो एहवो आशीर्वाद सांभल्योछिजी शुभं दशाअवतार लषिऐछि प्रथमं मत्स्यरूपेण प्रविष्ठो जलसागरे ॥ वेदमादायदेवानां सदेवः शरणंमम ॥ १ ॥ द्वितीयं कूर्मरूपेण मंदरंधारितं गिरिं ॥ समुद्रं मथितं येन सदेवः शरणंमम॥२॥ तृतीयं शुक्ररूपं च वाराहं गुरुवाहनं॥ पृथिवीचोद्धृतास्येन सदेवः शरणंमम ॥ ३॥ चतुर्थं नारसिंहंच — — — — — — — — — — ॥ हिरण्यकश्यपो हैता सदेवः शरणंमम ॥ ४ ॥ पंचमं वामनरूपं ब्राह्मणोवेदपारगः ॥ पाताले च बलिर्बद्धः सदेवः शरणंमम ॥ ५ ॥ जमदग्निसुतश्रेष्ठो पर्शुरामो महाबलः ॥ सहस्त्रार्जुन हंताच सदेवः शरणं ममः ॥ ६ ॥ सप्तमो दशरथपुत्रो रामोनाम धनुर्धरः ॥ रावणश्च हतोयेन सदेवः शरणं ममः ॥ ७ ॥ अष्टमो देवकीपुत्रो वासुदेव इतिस्मृतः ॥ कंसासुर हतोयेन सदेवः शरणं मम ॥ ८ ॥ नवमो बुद्धरूपेण योगध्यान व्यवस्थितः ॥ गुरुरूपयतिर्जोगी सदेवः शरणं मम॥ ९ ॥ दशमो कलियुगस्यांते कल्कीनाम भविष्यति ॥ म्लेच्छानां छेदनार्थाय सदेवः शरणं ममः ॥ १० ॥ एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत ॥ तस्यरोगाः क्षयं यांति गृहेलक्ष्मीः प्रवर्त्तते ॥ ११ ॥ एदशावतारनु फलभणीहो एते एहनु कल्यांणकारी डजे फलहोए ते श्री राउल श्री सहस्त्रमल्लजीनी तथा रांणी श्री सुरजदेजीनी फल प्राप्तह ज्यो लेषक दीक्षत वेणीदासे लषूछि सही कंदोई कांहांनां महं आउ आश्रु.

यावत् चंद्र तपेत्सूर्य तावत्तिष्ठंति मेदिनी ॥ यावत् रामकथा लोके अश्वत्थामा स्थिरं भवेत्॥ १ ॥सूत्रधार गोदाः तस्यपुत्र हरदास ः हीराः प्रशस्ति लषी छे. (यह प्रशस्ति बहुत अशुद्ध है, जैसी मिली वैसी ही दर्ज की है).

शेषसंग्रह नम्बर ५

प्रशस्ति १.

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीमहागणपतये नमः ॥ स्वस्ति श्री जयश्रेमांगल्यमभ्यु-

द्वयश्च ॥ श्रीमन्नृपविक्रमार्कसमयातीतसंवत् १६७९ वर्षे शाके १५४५ प्रवर्तमाने वैशाखमासे शुक्लपक्षे षष्ठी ६ तिथौ भृगुवासरे अद्येह श्रीगिरिपुरे महाराज श्रीमहाराउल श्री ५ पुंजाजी नाम्ना श्रीगोवर्द्धननाथप्रीतये प्रतिष्ठा सहितप्रासादवरं उद्धरन् अस्ति स्वस्ति श्रीमन्महाराजः पुंजनामा प्रतापवान् ॥ प्रासाद मुद्धरन् भाति गोवर्द्धनधरस्यवै ॥ १ ॥ नवमुनि रसचंद्रैः संमिते ब्देधरेशो कृतविकृत विहीनश्चंद्रमः शुभ्रकीर्तिः ॥ अमर गिरिवराभं कृष्णदेवस्यरत्ये सकलसुरनिशेपं पुंजराजः प्रसादं ॥ २ ॥ तत्र सूर्यवंशतिलकमहाराउल श्रीपुंजाजीकस्यप्रासादोद्धारकारिणः तावत् वंशावली लिख्यते ॥ अथ श्लोकाः ॥ निरंजनं पूर्वमिदंबभूव तदेव नारायणरूपमादात् ॥ नारायणस्योदरनाभिनालाद् विनिर्गतः सृष्टिकरो विधाता ॥ १ ॥ मरीचिनामाथ विधातृपत्यं यं मानसं पूर्वमुदाहरंति ॥ मरीचिपुत्रः किलकश्यपो भूत् संभूतिनाम्नीयमसोष्ट माता ॥ २ ॥ यः कश्यपो गोत्रकृतांवरिष्ठ स्ततोदितो सूर्यभजीजनत्सः॥ वैवस्वतो नाम मनुस्ततोभून् महीभृतामादिम एप यज्वा ॥वेदाक्षराणां प्रणवो यथावत् यमाप संज्ञा तनयं नयज्ञं ॥ ३ ॥ इक्ष्वाकुनामा तनय स्ततोभूद् भक्त्याययो विष्णुमनंतवीर्यः ॥ तपांसितप्त्वापिनलब्धपूर्वं ब्रह्मोपदेशात् परमापभक्तिं ॥ ४ ॥ विकुक्षिमिक्ष्वाकुरवाप पुत्रं यः शेपशय्या शयनं विमाने ॥ आराध्य भक्त्यापरयादिदेवं सुखानि भेजे हरितोपणानि ॥ ५ ॥ शशादनामा तनयस्ततो भूद्दनर्पितंयत् शसमापिपित्र्यं ॥ श्राद्धे शशादेति ततोस्यनाम कर्मानुरूपं कृतवान् वसिष्ठः ॥ ६ ॥ ततः परंतत्प्र भवः प्रपेदे ककुत्स्थनामा पृथिवीं समग्रां ॥ ककुत्स्थितोयो वृपभाकृतेर्हि व्यजेष्ठ शक्रस्य पुरारिवर्गं ॥ ७ ॥ नाम्ना अनेनास्तनयस्तदीयं पैत्र्यं पदं प्राप्यततोनरेंद्रः ॥ नाम्ना ययुस्तत्तनयोधिजातः तस्यावसाने पृथिवीं शशास ॥ ८ ॥ तस्यापिनाम्ना किलविष्टराश्व सुतोधिजज्ञे विधुशुभ्रकीर्तिः ॥ आयार्द्र इत्युद्गतनामधेयो मही समग्रां क्षितिपः शशास ॥ ९ ॥ पुत्रंप्रपेदे युवनाश्वमेपः श्रावंतनामा तनयस्तदीयः ॥ नाम्नापरीयेन विनिर्मिताभूत् श्रावंतनाद्यो पवनाप्तशोभा ॥ १० ॥ हित्वोपभोगांस्तपसोत्तमेन त्रिविष्टपंप्राप्तवतिक्षितीशे ॥ तदात्मजोसौ वृहदश्वनामा वभूवनामा किलचक्रवर्ती ॥ ११ ॥ तस्याभवत्सूनुरुदारवीर्यः कुशब्दपूर्वं वलयाश्वनामा ॥ यस्याभवत्पूर्वमयापिहत्वा वभूवधुंधु किलधुंधुमारः ॥ १२ ॥ दृढाश्वनामा तनयस्तदीयो महारथोसौ महनीयकीर्तिः॥ तस्यापि हर्यश्वइतिप्रसिद्धो निकुंभनामास्य सुतोवभूव ॥ १३ ॥ ससंहताश्वं तनयं प्रपेदे कृशाश्वनामा तनयस्तदीयः ॥ प्रसेनजिब्हास्य सुतो वभूव जातो यतो वै युवनाश्वनामा ॥ १४ ॥

मांधातृनाम्ना तनयोस्य जातः स सार्वभौमः पुरुकुत्समाप ॥ स आप पुत्रं त्रसदस्युसंज्ञं संभूतनामास्य सुतो धिजज्ञे ॥ १५ ॥ तदात्मजश्चापि सुधन्वनामा विधन्वनामापि ततः परोभूत् ॥ अथारुणस्तत्परमापधत्रीं महानुभावो महनीयकीर्तिः ॥ १६ ॥ सत्यव्रतस्तत्तनयो धिजातो यो यौवराज्ये किल सप्तपद्यां ॥ जहार कस्यापि विवाहकाले कन्यां निरास्थद् गुरुरस्यकोपात् ॥ १७ ॥ पित्रा निरस्तावनमाजगाम दुर्भिक्षकाले थ गुरोर्हरन् गां ॥ आप्रोक्षितां तां स्वभुजे बभार स कौशिकस्यापि कलत्रमत्र ॥ दोषत्रयापादनतो वसिष्ठस्त्रिशंकुनामानमथाभ्यषिंचत् ॥ १८ ॥ तदात्मजः सागरधीरचेताः नाम्ना हरिश्चंद्र इति प्रसिद्धः ॥ तदात्मजो रोहितनामधेय-स्तस्यापि पुत्रो हरितो बभूव ॥ १९ ॥ तस्यात्मजश्चंचुरिति प्रसिद्धस्तस्यापि पुत्रो विजयो बभूव ॥ तदात्मजोऽभूद् रुरुको महात्मा वृकोभवत्तस्य ततोपि बाहुः ॥ २० ॥ कृते युगे बाहुरधर्मबुद्धिः शकैर्निरस्तो वनमाजगाम ॥ तत्रापपुत्रं सगरं गराढ्यं स भार्गवादस्त्रमवाप चोग्रं ॥ २१ ॥ अवाप्य चास्त्रं जितवान् शकान् स इयाज राजा क्रतुभिः कृतात्मा ॥ कृतेयुगे तस्यसुतो समंजा स अंशुमंतं तनयं प्रपेदे ॥ २२ ॥ पुत्रो दिलीपः पृथितः पृथिव्यां खट्वांगनामा खलु तस्य जज्ञे ॥ यो मृत्युमात्मीयमसौ विदित्वा मुहूर्तमात्रेण बभूव मुक्तः ॥ २३ ॥ भगीरथस्तस्यसुतो बभूव भागीरथीं यो भुवमानिनाय ॥ तस्यापि पुत्रः सुतनामधेयो नाभागनामान-मवाप पुत्रं ॥ २४ ॥ ततोंबरीपः किल विष्णुभक्तो द्वीपांतसिन्धूपदपूर्वनामा ॥ ततो युताजिदृतुपर्णमाप कृते युगे यस्य नलः सखाभूत् ॥ २५ ॥ सुदासनामाथ भुवंप्रपेदे कल्मापपादश्चततः परोभूत् ॥ स सर्वकर्माणमवाप पुत्रं ॥ ततो नरण्यस्त-त एवनिघ्नः ॥ २६ ॥ पितुरनंतरमुत्तरकोशलान् दुलिदुहः प्रशशास नराधिपः ॥ अथ दिलीप इति प्रथितो भुवि रघुरतोपि ततो प्यजसंज्ञकः ॥ २७ ॥ दशरथः प्रशशा-स ततो महीमनघकीर्तिरुदारविचेष्टितः ॥ तदनुराग इतिप्रथितो भुवि हरिरभूद्र-जनीचरदर्पहा ॥ २८ ॥ ततः परं तत्प्रभवः प्रपेदे कुशाग्रबुद्धिः कुशनामधेयः ॥ कुमुद्वतीं नाम य आप कन्यां नागस्य पुत्रीं कुमुदस्य साध्वीं ॥ २९ ॥ तस्या-तिथिर्नाम सुतोपपन्नः कुशोपिजयात् (?) विधिना विपन्नः ॥ तस्यापिनाम्ना निपधोभिजज्ञे नलस्ततो भून्नभआसपश्चात् ॥ स पुंडरीकं तनयं प्रपेदे स क्षेमधन्वा-नमवाप पुत्रं ॥ ३० ॥ अनीकशब्दांतमभूव यस्य देवादिनामा स च तस्यपुत्रः ॥ अहीनगुर्नाम सुतोस्य जज्ञे सुधन्वनामा तनयश्च तस्य ॥ ३१ ॥ शीलः सुतोभूदथ उल्छनामा तस्यापि पुत्रः किल वज्रनाभः ॥ नलस्ततो भूद्ध्यूपिताश्वनाम तस्यापि पुत्रः तत आसपुष्यः ॥ ३२ ॥ तस्यार्थसिद्धिस्ततएव जज्ञे सुदर्शनस्तस्य हि चाग्निवर्णः ॥ तस्यैव पत्नीं सहपुत्रगर्भामथाभ्यषिंचत् विधिना वसिष्ठः ॥ स शीघ्रनामाजनितो

जनन्या प्रसुश्रुतस्तस्य तत : सुसंधि : ॥ ३३ ॥ नाम्ना सहस्वानथ तस्य जज्ञे यो वि-श्रुतो विश्रुतवांस्ततो भूत् ॥ ततो मरुत्तस्य वृहद्बलो भूत् कालेयमस्मात्परमाप क्षत्रं ॥ ३४ ॥ विजयरथसनामा तस्य पुत्रो वभूव जगति विजयशाली चंद्रमः-शुभ्रकीर्ति :॥ विदित परमतत्वो भोगशीलो महात्मा भुवनभवनिदान : सर्वलोकैक कांत : ॥ ३५ ॥ महारथस्तत्तनयो वभूव तदात्मजो हैहयनामधेय : ॥ ततोमहानंद इति प्रसिद्ध आनंदराजोस्य सुतो धिजज्ञे ॥ ३६ ॥ तज्जो चलोभूत्महनीय-कीर्ति : रभंगसेनस्तनयोस्य जात : ॥ तस्य प्रजापाल इति प्रसिद्धो य : क्षात्र-धर्म : प्रथितप्रताप : ॥ ३७ ॥ कनकसेन इति प्रथितो भुवि तदनु पार्थिव-मंडलमन्वशात् ॥ यदनु सैन्यमगात् पृथिवीक्षितां सकललोकजयाय यियासत : ॥ ३८ ॥ जितक्षत्र : सुतस्तस्य सुजित : स्तस्य चात्मज : ॥ शिलाजित्तनयस्तस्य सावीरस्तस्य चात्मज : ॥ ३९ ॥ सुकेतस्तनयस्तस्य सुमतिस्तस्य वै सुत : ॥ चंद्रसिंह : सुतस्तस्य वीरसिंहोपि तत्सुत : ॥ ४० ॥ सुजयस्तस्य पुत्रोभूत् सुजितस्तस्य चात्मज : ॥ वैजवापायगोत्रो यो हंसवाहन-संज्ञक : ॥ ४१ ॥ पुरे सर्पान्वयेशोभूद् राजा राजीवलोचन : ॥ सूर्योपासन-मापेदे गोत्रसंज्ञासमन्वितं ॥ तत : प्रभृति वंश्या ये वैजवापाय गोत्रिण : ॥ ४२ ॥ तस्यपुत्रो महात्माभूत् विजयादित्यसंज्ञक : ॥ सूर्यमाराध्य यल्लब्धो तेनादित्योपनामक : ॥ ४३ ॥ नीते सर्पपुरे नागैस्ततोनागह्रदे गत : ॥ केशवादित्यनामा तु पुत्रस्तस्य महीभुज : ॥ नागादीत्यो पि तत्रासीत् ग्रहादित्यस्तदात्मज : ॥ ४४ ॥ भोजादित्यस्ततो लेभे पुत्रवाप्पं नराधिपं ॥ ४४ ॥ हारीतनामा मुनिरस्य मित्रं गद्यावली येन विनिर्मितास्ति ॥ स एकलिंगास्पद-मीशमारादाराध्य लेभे किल चित्रकूटं ॥ ४५ ॥ हर : प्रसन्नो निजभक्तयोरदा-देकस्यपार्श्वे किल चंडरूपता ॥ वाप्पं स राजानममाद्यवाग्भव : स चित्रकूटाधिप-मादधे वरात् ॥ ४६ ॥ हारीतराशे : कृतसाहचर्यास्तएवलास्यामदधुर्महेंद्रा. (?)॥ खुम्माणनामा परमाप पृथ्वीं महींद्रनामापि ततो महीश : ॥ ४७ ॥ ततो तुलस्त-स्य च सिंहनामा वभूव राजन्यपति : सुधर्मा ॥ शक्तिकुमारसंज्ञोथ शालिवाहन संज्ञक : ॥ ४८ ॥ शालिवाहन संज्ञेति यदास्या शाकसुस्थिति ॥ ततः कुलेस्मिन्न-रवाहनोभूदंबाप्रासादात्स च पुत्रमाप ॥ अंबाप्रसादेति ततोस्यनाम भूमंडले भूत् प्रथितं महत्वात् ॥ ४९ ॥ कीर्तिब्रह्म सुतस्तस्य नरब्रह्मापि तत्सुत : ॥ नरवी-रोम्य तनय उत्तमोभूत्तदात्मज : ॥ ५० ॥ श्रीपुंजस्तस्य पुत्रोभूत् कनकोथ महीपतिः ॥ भादुनामा भवत्तस्य गात्रडस्तस्य चात्मज : ॥ ५१ ॥ स हंसपालाभिधमाप पुत्रं

स वीरडंनाम सुतं च लेभे ॥ स वीरसिंहं स च देवलास्यं निरूपमस्तस्य सुतो बभूव ॥ ५२ ॥ महीशसिंहोस्य सुतोधिजज्ञे सपद्मसिंहं सुतमाप पश्चात् ॥ तस्यारिसिंहस्तनयो बभूव सामंतसिंहोस्य विभुर्विजज्ञे ॥ ५३ ॥ स जीतसिंहं तनयं प्रपेदे सएवलोकं सकलं विजिग्ये ॥ तस्य सिंहलदेवो भूत् देदुनामास्य पार्थिवः॥ वीरसिंहोस्य तनयो वीरसिंहपराक्रमः ॥ भूचंडस्तस्य पुत्रोभुत् तज्जो डुंगरसिंहकः॥ ५४ ॥ तत्पुत्रः कर्मसिंहो भवदवनिपतिः व्रातसंजातकीर्तिः॥ कानडदे थास्य सूनुः परपुरपरिखापूरको वैरिवर्गैः ॥ ५५ ॥ पातास्यस्तस्य पुत्रः समभवदखिला नंदकारी जितारिः ॥ स्तज्जो गोपालनामा समजनि जनतातापहारी नरेंद्रः ॥ ५६ ॥ तस्यात्मजो धीरगभीरचेताः श्रीसोमदासः प्रवरप्रणेता ॥ बभूव तस्यापि सुतो बलीयान् श्रीगंगदासो हि रणे विजेता ॥ ५७ ॥ अथास्य पुत्रः पदमाप पूर्वं यो वैरिवर्गे प्रथितप्रतापः ॥ नामास्य यस्योदयशब्दपूर्वं सिंहेति लोकप्रथितं नृपस्य ॥ ५८ ॥ तस्यात्मजो महातेजाः कामकांतिकृपाश्रयः ॥ औदार्यधैर्यशौर्याणां पृथ्वीराजो भवन्निधिः ॥ ५९ ॥ जगति विततकीर्तिः श्र्याश कर्णोरिबाणः सुमनसिशयचारु (!) वीरवीर्यापहंता ॥ सुसुरतरुलताभोद्बाहु युग्मोधरित्र्यामभवदमलकीर्तिः राजविद्याप्रवीणः ॥ ६० ॥ आशकर्णोः महाराजो महादानानि षोडश ॥ चकार विधिना यत्र दातृतामगमन् द्विजाः॥ ६१ ॥ मनोरथयथातीतं याचकेभ्यो ददौ धनं ॥ आशकर्णेति तेनास्य चिंत्यनामामनन्वयात् (!)॥ ६२ ॥ राजाराजीवचक्षुः कनकगिरिनिभस्तुल्यकांतोधरित्र्याः विद्वान्विद्याप्रवीणो विनयनयवतामग्रणी शौर्यभाजां ॥ मल्लोनाम्नामहात्मा भुवनभवनिधिः सर्वलोकैककांतो दातात्राताविहर्त्ता पवनजवहरो मध्यवर्ती विविक्तः ॥ ६३ ॥ तदात्मजः सागरधीरचेताः सुकर्मसिंहेत्यभिधानयुक्तः ॥ जघान यो वैरिगणं महांतं महीतटे शक्रसमानवीर्यः ॥ ६४ ॥ अथ प्रासादउद्धारकारी महाराजश्रीपुंजराजमहिमा ॥ तदात्मजो वैरिगणैरसह्यः सपुंजराजो जनतासुखाय॥ यशो यदीयं दिवमंतरिक्षं भुवंच वर्वर्तिसदैव व्याप्यं ॥ ६५ ॥ गंगाजलं यस्यमुखेघहारि यस्यांतरावर्ति हरिस्वरूपं ॥ पुरो यदीये भगवान् सलोकः सपुंजराजो जयताच्चिराय ॥ ६६ ॥ प्रासादवर्गोप्यमुना विधायि गोवर्द्धनोद्धारकृतो निवासे ॥ हेम्नस्तुलादानमकारि येन सुवर्णपृथ्वीमददाद् द्विजेभ्यः ॥ ६७ ॥ यं कर्मसिंहः सुपुवेद मांस्या सा राजमातापि समग्रबुद्धिं ॥ सपुंजराजो नृपतिः प्रसादं व्यधत्त गोवर्द्धननाथरत्यै ॥ ६८ ॥ सप्तकोशार्द्धमानेन ग्रामे गाटडीनामनि ॥ निर्मीतवान् तडागं यः सागरोपममक्षयं ॥ ६९ ॥ रोपितवान् उद्यानं नवलक्षतरुश्रिया ॥ रम्यंपुष्पफलोपेतमिंद्रस्य नंदनं यथा ॥ ७० ॥ अर्थानर्थौ

विचार्यो यमनियमवतो यस्य धर्मेस्ति बुद्धिः योनाधारे जनानां जगति सदयथा माधवो वासइंज्य ॥ प्रीतः कांतः सुवर्चा मदनसम वभौ भास्कराभ : सधन्वी दाता त्राता विनेता धननिचयधवः पुंजराजा चिराय ॥ ७१ ॥ कोटिः पद्मं लक्षमित्यवशब्दाः सलेवेंदे बद्धभावा धने ये ॥ तेते सर्वेनेन दत्ते धनौघे लोके लोके छिन्नबंधाश्चरंति ॥ ७२ ॥ यस्मिन् महीं शासति पार्थिवेंद्रे खलश्च साधुश्च विविक्तवृत्तिः ॥ म्लेच्छार्णवो यत्रगतः क्षयाय स पुंजराजो जयताच्चिराय ॥ ७३ ॥ गृहभूवृत्तिदानेन गृहस्था ब्राह्मणाः कृताः ॥ श्रीपुंजराजउद्धर्ता प्रासादं वै रमापतेः ॥ ७४ ॥ यस्मिन्महीं शासति पार्थिवेंद्रे मनोपि लोकस्य न पापवर्ति ॥ यो राजवर्यः प्रचुरप्रतापः स पुंजराजो जयताच्चिराय ॥ ७५ ॥ संस्ये यत्कर-वालकालभुजगः प्रत्यर्थिकंठाटवीरक्तं हंत निपीय भूरि विशदं निर्माति चित्रं यशः ॥ श्यामो यस्य च वैरिभूतिरमणस्फुर्जत्कृपाणोरगो यत्सूते सितभिन्नमुत्तमयशस्तत्पुंजराजोचितं ॥ ७६ ॥ तत्प्रत्यर्थिमहीभृतां व-त हठात् कंठान्विछिद्य स्फुटं तत्स्त्रीणां परिपीय हंत वपुषां पीतां मनोज्ञां छविं ॥ संस्ये यस्य च खड्गकालभुजगी श्रीपुंजराजप्रभोर्यत्पीतं प्रचुरं प्रतापमतुलं सूते तदेवोचितं ॥ ७७ ॥ प्रासादस्त्रिदशांपतेर्मधुपतेर्वैकुंठलोकोपमं दृष्ट्वा यं सुरभिच्चकार निलयं त्यक्त्वापि लोकं स्वकं ॥ राज्ञो भक्तिवशाद् गतः परमुदं पुंजस्य भक्तप्रियः शश्वच्छांतिमुपैतु मा गिरिपुरे लोकोमदासेः कृते ॥ ७८ ॥ प्रासादः कमलापतेस्त्रिवसनं ब्रह्मादयो यत्र वै नित्यं दर्शनकां-क्षया मधुपतेरायांति विप्रच्छलात् ॥ इंद्रो यत्रनुमानभंगभयतः पुण्यः सुदृष्टो परो भक्त्या पूजयते धरंतमचलं गोवर्धनं भूगतं ॥ ७९ ॥ कमलहंस-समानकमच्युतः सकललोकसमुद्धृतिहेतवे ॥ गिरिपुरे नृपपुंजशुभाय वै स्व-यमुपेत्य सदा रमते त्र हि ॥ ८० ॥ प्रदक्षिणप्रक्रमणात् पदे पदे धर्मार्थतुल्यः कनकाचलार्पणैः ॥ प्रासादवर्यः कमलापतेः शुभः स्तंभैः शुभैः पुंजनृप-प्रकाशितः ॥ ८१ ॥ कृताश्रांतिमुपागतो मरहितं दैत्यक्षयं किं ननु तच्छ्रांतिं समुपोहितुं (?) हि भगवान् रम्यं प्रदेशं गतः ॥ दृष्ट्वा भक्तनृपास्पदं गिरिपुरं तत्रापि भूपान्वये मत्वा पुंजगतिं सुभक्तमधिकं तत्रैव वासं व्यधात् ॥ ८२ ॥ अव्यक्तरूपो भगवान् गुहासु ग्रावांविलीनः किल पुर्वमास्थात् ॥ स सांप्रतं पुंजनृपेंद्र-भक्त्या व्यक्तस्वरूपेण समुद्गतो स्ति ॥ ८३ ॥ म्लेच्छैर्व्याप्तमिदं विलोक्य सकलं भूमेस्तलं संकरं वर्णानां च विलोक्य रम्यविपयं प्राप्तो धुनास्ते हरिः ॥ मत्वा भक्त-मिदं य विघ्नमधिकं पुंजप्रभुं सर्वदा वासं तत्र विरोचयत् ध्वनिमसौ श्रोतुं प्रियं छंदसां ॥ ८४ ॥ वेदार्थप्रतिपत्तिशास्त्रमधुना संप्राप्यते वागड़े मत्वेतिप्रवरः पुराणपुरुषो

ध्यास्ते तमेवादरात् ॥ ज्ञात्वा पुंजपतिं स्वकीयभजने दाढर्यं दधानो हरिः वासं तत्र विरोचयत् गिरिपुरे तद्राजधान्यां स्वयं ॥ ८५ ॥ कला इव कलावंतं वाचो वाचस्पतिं यथा ॥ कल्पवृक्षं लता यद्वत् राजपत्न्यो द्रुमं श्रिताः ॥ ८६ ॥ अथ पत्नीनाम ॥ पूर्वंप्रतापा देवी या शेषवंशसमुद्भवा ॥ अथ या प्रथमा देवी शोलंकीवंशजा हि सा ॥ ८७ ॥ योधपुरे समुत्पन्ना पद्मा देवीति सा मता ॥ ज्येष्ठा झालान्वये जाता गुरादेवीति विश्रुता ॥ ८८ ॥ नाम्ना गंभीरदेवीति मोहनाख्यपुरोद्भवा ॥ हाडान्वये समुत्पन्ना चतुरंग देवी हि सा मता ॥ राणाग्र्यवंशसंभूता पाटमदेवीति या मता ॥ ८९ ॥ मेडताख्यपुरे जाता कनकादेवीति सा मता ॥ वीरपूरसमुत्पन्ना अंगदेवीति सा मता ॥ ९० ॥ बुध्रपुरे समुत्पन्ना गंगादेवीति सा मता ॥ परमारकुले जाता बहुरंगदेवीति सा मता ॥ ९१ ॥ झालान्वये समुत्पन्ना सौभाग्यदेवीति सा मता ॥ पद्मावतीति विख्याता चाहुवाणकुलोद्भवा ॥ ९२ ॥ नाम्ना शोभाधरा पश्चात्राजपत्न्याः प्रकीर्तिताः ॥ अथ भ्रातृनाम ॥ भ्राता वीरमजीनाम शोभनो ललितान्वयः ॥ भ्राता ऽजितसिंहश्च जयसिंहस्ततः परं ॥ रुद्रसिंहस्ततोप्पन्य कुमारो जलजेक्षणः ॥ ९४ ॥ अथ कुमारनाम ॥ भाति प्राप्तपरानंद शुद्धोभयकुलान्वितः ॥ – – – – – – – –
– – – – – – – – क्षणः ॥ ९५ ॥ कंदर्प इव लावण्यः कीर्तिमान् गुणवान् शुचिः ॥ श्रीमान् प्रतापसिंहाख्यः कुमारो भासुरोग्रणीः ॥ ततः श्रीभाउनामापि कुमारोललितान्वयः ॥ ९६ ॥ श्रीमान् सज्जनसिंहेति ततो नाम्नागुणान्वितः ॥ एतेकुमारा विख्याताः – – – – – – – – – ॥ ९७ ॥ – – – – – – – व्योमाधवपुंजश्चक्षत्रियः ॥ वच्छाख्य महितो विप्रः मालजीनाम सद्द्विजः ॥ ९८ ॥ प्रधानो रामजीनामा मुख्योन्ये थाधिकारिणः ॥ अथापि भीमजीनामा रघुनामापि तत्परः ॥ ९९ ॥ शिल्प सुत्रामनामापि वाणिग् नारायणः पुनः ॥ – – – – – – – – – – – –
– – – – न ॥ १०० ॥ लालजिन् मेघजिन्नाम मेघजीन्मांमजित् पुनः ॥ संस्तुतजानीतिकुसुतपूंजा लिखित ॥ १०१ ॥ अथप्राकृतवंशावलिः आदिनारायणः कमल. ब्रह्मा. म – कुस्थ. विश्वावसु. महामति. च्यवन. प्रद्युम्न. धनुर्धर. महीदास. युवनाश्व. सुमेधा. मान्धाता. कुरुछ. वेन. पृथु. हरिहर. त्रिशंकु. रोहिताश्व. अंबरीष, ताडजंग, नाडीजंग. धुंधुमार. सगर. अ – – – – – – – – – – – – – – – – – – –
दशरथ. राम. कुश. अतिथि. निषध. नल. पुंडरीक. क्षेमधन्वा. देवानीक. अहीनगुजितमंत्र. पारिजात. शल्य. वृक्षनाभ. वृक्षधर. नाभि. विजिनध. ध्युपिताश्व. विश्वजित्. हनुनाभि. – – – – – – – – – – – – – – – – –

— — द्वि. सुदर्शन. सिंहवर्णन. अग्निवर्ण. विजरथ. महारथ. हैहय. महानंद. अनंदराज. अचल. असंगसेन. प्रजापाल. कनकसेन. जितछत. सुजित. शिलाजित. मार्वीर. सुकृत. सुमति. चं. — — — — — — — — — — — — — —
— — — — — — विजयादित्य. आसादित्य. भोगादित्य. योगादित्य. केशवादित्य. ग्रहादित्य. भोजादित्य. अथ राजवंशावलिः वापो राऊल. पुमाण रा. गोविंद रा. महित रा. आलू रा. भादू रा. सिंह रा. शक्तिकुमार रावल. शा — — — —
— — — — — — — — — — — — — — — — — — नरवीर रा. उत्तम रा. भालो रा. शूरपुंज रा. कर्ण रा. गोत्रड रा. हंसराव. जोनराज रा. विरड रा. वीरसिंह रा. राहप रा. देदो रा. नरू रा. हरीअड रा. वीरसिंह रा. अरसिंह रा. रायणसिंह रा. जितसिंह रा. कुअरसिंह रा. मयणसिंह रा. रयणसिंह रा. नारसींह रा. आरसींह रा. रतनसीह रा. श्रीपुंज रा. कुरुमेर रा. पद्मसींह रा. जीतसींह रा. तेजसींह रा. समरसींह रा. रतनसींह रा. नरब्रह्म रा. भालो रा. केशरीसिंह रा. सामतसींह रा. सीहड़दे राव. देदो रा. वरसेग रा. भचुंड रा. डुंगरसींग रा. कर्मसींह रा. कांनडदे रा. प्रतापसींह रा. गेपो रा. सोमदास रा. गोरा. आदसींग रा. पृथीराज रा. आसकर्ण रा. सेहेंसमल्लराव. कर्मसींहराव. ॐ श्री ५ पुंजराजो जयति. अथ भ्रातनाम भ्राता जेसींगजी भ्राता रुद्रसींगजी भ्राता वीरमजी भ्राता रांमसींहजी अथ राजपत्नीनाम ॐ वो प्रतापदे. वो सोलंकणी वो. योधश्री वो. भाली जेष्टा वो. मालपरी वो. हाडी वो. पाटमदे वो. राणी वो. मारुणी वो. वीरपरी वो. वधाउँरी वो. प्रमार वो. भाली लाडी वो. चहुआण वडारेण जोधरां. अथ कुमार नाम. कु. गिरधरदासजी कु. लालाजी कु. प्रतापसींगजी कु. भाऊजी कु. — — जी अथ —र्श्व नाम दु० न्यांइदास वाघेला माधवदास पडाएता रांमजी महंवछा सुत लालजी मेघजी दा. सधारण सुत नरीणदासजी नितिकु सुत पुंजा सुत मुकुंद सुत द्वसरदा लिखितं मेदपाटि ज्ञात जोसीपुंजा सुत हरजी भ्राता हरीनाथ श्रीजीनो भंडारी.

श्री गणेशायनमः स्वस्ति श्री जयोमांगल्यसभ्युदयेषु श्रीगिरपुरनगराधिष्ठाता श्रीसूर्यवंशोद्भव महाराउल श्रीआशकरणजी तत्पुत्र महाराऊल श्री सहस्रमल्लजी तत्पुत्र महाराऊल करमसींहजी तत्सुत महाराजा धिराज महाराऊल श्रीपुंजराजजी संवत १६७९ वैशाषशुदि ५ दिने श्री विष्णोः गोवर्द्धन नाथजी कस्य गिरपुरीरा प्रसागर सन्निधाने प्रासादा कृतः तथाच प्रतिष्ठा कृता तत्तुला सुवर्णस्तुला पुरुष कृतं स महाराजा चिरंजीवी श्रीपुंजराजजी कुंवर श्रीगिरधरदासजी वा माधवकीसोरजी.

स्वस्ति श्री डुंगरपुर सुभसुथाने राञ्आंराञ्ञे महाराऊल श्री पुंजाजी आदेशात् वसइग्रामि पटेल जगमाल साहा महीञ्आ तथा समस्त गामलोक तथा समस्त डोलीया ब्राह्मण जोग्य समाहुष्टकारजांचजत ओग्राम श्रीगोवर्द्धननाथजीद्वार धरमषाते आचंद्रादिक तांबापत्र मुंकीछे ते अमारे वंशमांहे हुअेतेपाले नांपाले तथानांपालावि तेने श्रीनाथजीनी आंण दुए श्री स्वांप्रतदुवे साहांरांमजी संवत् १७०० वरषे कारतक शुदी ३ गुरु राजलोक तथा कुंअर श्री गिरधरदासजी राणीसेषाउताणी राणीहाडी राणीमिडतणी राणीरणी वडारणशोधर अत्रसाषः चहुआंण सुंदरदासजी चहुआंण भीमजी वाघेला माधवदासजी चहुआंए कचरा दोसीसवजी मितागेला मिताअमरजी सुतमिता वाघेजी दवेनईदास सलाट भाणजी लषीतं

(यह प्रशस्ति डूंगरपुरमें गोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें है).

दूसरी प्रशस्ति.

डूंगरपुरमें वनेश्वरमें विष्णुके मंदिरकी प्रशस्ति.

॥ स्वस्ति श्रीमत् संवत् १६१७ वर्षे शाके १४८३ प्रवर्त्तमाने उत्तरायणगते श्रीसूर्ये जेष्ठमासे शुक्लपक्षे ३ तृतीयायां तिथौ सुमुहूर्त्तयोगे तद्दिने महारायां रायराउल श्री आशकर्णजी विजयराज्ये एवं विधे समये श्रीगिरिपुर राजवंश-विवर्द्धनसत्कीर्तिसुधाधवलितदिङ्मंडल श्रीमहारायां रायराउल श्रीपृथ्वीराजस्य पट्टराज्ञी उभयकुलशुद्धदायिनी तथा श्रीलाछबाई श्रीआशकर्णजी श्री अषिलराजजी रुपसत्संतान सवित्रीबाई श्रीसजनाबाई नाम्नी तयाइयं पुरुषोत्तमस्य प्रासादेषु श्रेष्ठः कारितः सुप्रतिष्ठितः कृत : छ : श्रीमद्वागडदेश भूमिपतिभिश्चिंतामणेस्तुल्यतां प्राप्तैर्व्याप्तमिदं विलोक्य विशदं रत्नाकराभं कुलं ॥ वक्रं किंचिदुदेति वामन इवोच्चाप्ये फले कामना वक्ष्येतः कमला करोऽतिरुचिरांस्तस्मिन्भवाल्लेशत : ॥ १ ॥ वर्षे १६१७ सप्तमहीरसेंदु मितिके शाके १४८३ त्रिनागाब्धिभू संख्ये ज्येष्ट सुशुक्लवह्निदिवसे श्रीसज्जनांऽत्राख्यया ॥ राज्ञाकारि मुरारिभक्तिमनसा प्रासादएष ध्रुव :क्रीडां चात्र करोतु भक्तिरसिकोलक्ष्म्या नरेषूनमः ॥ २ ॥ आसीद्वंशस्य कर्त्ता रुचिरतरतनु : प्रौढमूलप्रतापस्तापाक्रांतारिवर्गो गिरिपुरनिलयो राजभूच्चंडनामा ॥ पातास्य: सूर्यवंशे समभवदखिलानंद कारीजितारि स्तज्जोगोपालनामा समजनि जनतातापहारी नरेंद्र : ॥ ३ ॥ राजद्राजगजौघताडनहरेर्यस्यासिचंचच्छटात्रस्तव्यस्तपरिग्रहारिपुमृगा : प्राप्ता : परंकाननं ॥ तावत्तत्र च तत्प्रतापदहनज्वालादहद्विग्रहा : सौख्यद्वेषविनिघ्नमान

सगणा मग्ना हि मोहांबुधौ ॥ ४॥ तस्यात्मजो धीरगभीरचेता श्रीसोमदासः प्रवरप्रणेता ॥ बभूव तस्यापि सुतोबलीयान् श्रीगंगदासो हि रणे विजेता ॥ ५ ॥ येनाष्टादशसाहस्त्रं बलं भग्नं महात्मना ॥ इलदुर्गाधिपोभानु भालेगर्जन ताडित : ॥ ६ ॥ तुलापुरुषकर्त्ता य : स्वर्णभारभवस्यच ॥ द्विजातीनां च यो दाता त्राता चौरभयाद्धि सः ॥ ७ ॥ आसीद्गंगेवसूनुर्नयविनयवतामग्रणी : शौर्यभाजां राज्ञामाज्ञा प्रणेता पवनजवहर : कल्पवृक्षप्रदाता ॥ याचद्वेरण्यगर्भे परउदयपदात्सिंहनामा नृपेंद्रो दानं दानेश तुष्टे व्यरचयदमलं कालतापापहारि ॥ ८ ॥ केचिद्व्यसनिनो द्यूते परयाशासु केचन ॥ भूपालोदयसिंहस्तु व्यसनी जगदीश्वरे ॥ ९ ॥ तस्यात्मजो महातेजाः कामकांति : कृपाश्रय : ॥ औदार्यशौर्यधैर्याणां पृथ्वीराजोभवन्निधि : ॥ १० ॥ ब्रह्मांडे रंगभूमौ कनकगिरिशिर: पादपीठोधिरूढा ज्योति : पुष्पांजलिं साजलधिजवनिकोल्लंघने प्रक्षिपंति ॥ अग्रेशंभो : शुभेंशे शशितपननिभं तालयुग्मं दधाना पृथ्वीराजस्य कीर्ति र्जगति विजयते नृत्यमाना सदैव ॥ ११ ॥ पृथ्वीशनृपते राज्ञी सज्जनाख्या मितप्रभा ॥ कारितो यं तया दिव्य प्रासादेषु वरोवल: ॥ १२ ॥ तुला पुरुष दानस्य हेम संपादि तस्यच ॥ गोसहस्त्रादि दानानां दात्री पात्रजनस्य या ॥ १३ ॥ विश्वंभर तया व्याप्त्या स्यातो दानैर्यशोभरै : ॥ अतुलोपि तुलां नीतो यया विष्णुर्मही तले ॥ १४ ॥ यत्कीर्त्यैवजित : शशी परिचलन्क्षीणत्व मापद्यते यद्दातृत्वपराजितो दितिसुत : पाताल आसीधुना ॥ अल्पोयद्गुण वर्णने फणिपति: शेषत्वमागादिव वक्तुं ते सजनांबसाधुगुणितां शक्त : कथं स्यामहं ॥ १५ ॥ आशामायात काशविदधतविपुलं सेवमिंद्राद्य धीशा दिङ्नागायात यत्नं गगनकुरुघनी भावलाभापयत्नं ॥ शैला बध्नीतबंधे विपुलतरतयो व्याप्तित : सज्जनाया ब्रह्मांडं भेदमेती कथयति चलतश्चंद्रइत्येव मान्यं ॥ १६ ॥ तस्यास्तनूजौ शुभनामधेयौ श्रीआंशकर्णेक्षयराजनामा ॥ पूर्णार्थकामौ निहतारिवर्गौ भूमौ भवेतां सततं सुखाय ॥ १७॥ श्रीलाछबाई परमा पवित्रा श्री सज्जनांबा जनितानुरूपा ॥ भूयापदा भक्तिमती व राम दातृत्व निर्यातितकर्णकीर्त्ति : ॥ १८ ॥ पृथ्वी राजात्मजोयोसावाशाकर्णः .श्रीयान्वितः ॥ यस्यकिंकरवर्गेण मेदपाटपतिर्जित : ॥ १९ ॥ द्विपत्कामहर्त्तात्यसद्दामधर्त्ता स्फुरत्काम रूप : क्षितिशानुरूप : ॥ अमानेनमानेनमानी सुवर्णं सदाभातु भूमंडले ह्याशकर्ण : ॥ २० ॥ जगतिविततकीर्ति : ध्याशकर्णोरिवाण : सुमनसिशयचारुवीर्यवीर्यापहंता ॥ सुसुरतरुलताभोद्दाहुयुग्मो धरित्र्यां भवतुहिसुखशाली राजविद्याप्रवीण : ॥ २१ ॥ अपिच ॥ श्रीमद्दाल

णदेवसूनुरभवत्क्षात्रैर्गुणैः संयुतः सोलंकी हरराजइत्यभिधया ख्यातो थ तस्यात्मजः॥ कृष्णः कृष्ण इवापर क्षितितले श्रीसज्जनांवा ततो जाता कारि तया प्रसंनमनसो प्रासाद एष स्थिरः॥ २२ ॥ अपिच॥ श्री शेषो मरुमंडले समभवद्वैरीभुजोच्छेदकृत् तत्पुत्री शुभकर्मवत्लवचना श्रीता गुणैः श्रीश्रितैः॥ आशाकर्णनृपस्य चाग्र्यमहिषी सूता रमांवा यया भूयात् स्वर्गनिवासिनीभिरुपमा सा ऽपूर्ववेदे ऽबासदा॥ २३॥ आशाकर्णात्मजः श्रीमान् सहस्रमल्लसंज्ञितः॥ अक्षया राजपुत्रास्तु व्याघ्रज्येष्ठास्तथामताः ॥ २४ ॥ सुरसाक्षरतां पदे पदे घटयंती परमोहनाशिनी॥ विमला कमलाकरस्य सा विदुशो दिव्युतिहंसगामिनी ॥ २५ ॥ अथ वागडदेशना राजानी वंशावली लिख्यते प्रथम विजयादित्य १ केशवादित्य २ नागादित्य ३ ग्रहादित्य ४ भोज ५ बापोरावल ६ षुमाणरावल ७ महेंद्ररावल ८ अलुरावल ९ शीह रा. १० शक्तिकुमार रा. ११ शालिवाहन रा. १२ नरवाहन रा. १३ संवपसान रा. १४ कीर्तिब्रह्म रा. १५ नृब्रह्म रा. १६ नरवीर रा. १७ उत्तम रा. १८ त्रिपज रा. १९ कनक रा. २० भादु रा. २१ गात्रड़ रा. २२ हंसपाल रा. २३ विरड रा. २४ वीरसी रा. २५ दहल रावल. २६ निरूपम रा. २७ महिसासी रा. २८ पदमसी रा. २९ अरसी रा. ३० सामंतसी रा. ३१ जीतसी रा. ३२ सींहडदे रा. ३३ देदू रा. ३४ वशसंगदे रा. ३५ भचूड रा. ३६ कमंसी रा. ३७ कानडदे रा. ३८ पातु रा. ३९ गिपु रा. ४० सोमदास रा. ४१ गंगो रा. ४२ उदयसिंह रा. ४३ पृथ्वीराज रा. ४४ आशकर्ण रा. ४५ चिरंजीवतु बाई श्रीसज्जनाबाई प्रासाद कराव्यूं छे.

शेषसंग्रह नम्बर ६.

ॐ नमः शिवायः॥ पाणौवद्धभुजंगफूत्कृतिभयात्संकोचयंत्याः करं व्याकृष्टं जरतीजनेन रभसाच्छंभोर्दृढं गृह्णतः॥ भ्रांताः संभ्रमतः सुखान्मुकुलिता विस्फारिताः कौतुकात् व्रीडासंवरिता विवाहसमये देव्यादृशः पांतुव ः॥ १॥ इंदुंमूर्ध्नि दधत्क्षीणं पातुवः शशिशेखरः॥ खेदादिव सदासन्नगौरीमुखपराजयात् ॥ २ ॥ अस्त्युच्चैर्गगनावलंबशिखरः क्षोणीभृदस्यांभुविख्यातो मेरुमुखोच्छ्रतादिषु परां कोटिं गतोप्यर्बुदः ॥ यत्र स्फाटिकपुष्परागकिरणालीढार्कचंद्रौ क्षणं दृष्ट्वा सिद्धजनैरमन्यत दिवा रात्रिस्तु नक्तं दिनं ॥ ३ ॥ तस्मिंस्त्यक्तभवश्चरित्रविभवस्तुष्यंतपोतप्यत ब्रह्मज्ञाननिधिर्गुणैर्निरवधिः श्रेष्ठो वसिष्ठो मुनिः ॥ यस्य प्रज्वलिताग्निहोत्रजनितै धूमैरिवव्योमगै र्जाताः संमलिना श्चिरेण हरितास्ते

हारिदश्वाहया : ॥ ४ ॥ मुनेस्तस्यान्तिके रेजे निर्मलादेव्यरुंधती ॥ स्थिरवश्येंद्रियग्रामा तप : श्रीरिव जंगमा ॥ ५ ॥ अनन्यसुलभाधेनु: कामपूर्वास्य सन्निधौ ॥ ददंती वांछितान्कामां स्तप : सिद्धिरिव स्थिता ॥ ६ ॥ ततः क्षत्रमदोद्वृत्तो गाधिराजसुतश्छलात् ॥ धेनुं जह्रे स्य दुष्प्राप्यां विप्रसिद्धिमिवोद्यतां ॥ ७ ॥ अथ पराभवसंभवमन्युना ज्वलनचंडरुचा मुनिनामुना ॥ रिपुवधं प्रति वीरविधित्सया हुतभुजि स्फुटमंत्रयुतंहुतं ॥ ८ ॥ पृष्ठे तूणीरयुग्मं दधदथ च करे चंडकोदण्डदण्डं बध्वन्जूटं जटानामतिनिबिडतरं पाणिना दक्षिणेन ॥ क्रुद्धोयज्ञोपवीती निजविषमदृशा भाययन् जीवलोकं तस्मादुद्दामधामा प्रतिबलदलनो निर्गतः कोपि वीरः॥९॥ आदिष्टस्तेन यातो रणममरगणै र्म्मंगले गीयमाने बाढंव्यात्तांतराले दिनकरकिरणच्छादकै र्वाणवर्षै: ॥ कृत्वा भंगं रिपूणां प्रबलभुजबलः कामधेनुं गृहीत्वा शक्त्या तस्यांघ्रिपद्मद्वयलुलितशिराः सोथ तस्थौ पुरस्तात्॥१०॥ आनतस्य जयिनः परितुष्टो वांच्छिताशिवमसावभिधाय ॥ तस्य नाम परमार इतीत्थं तथ्यमेव मुनिराशु चकार ॥ ११ ॥ तस्यान्वये क्रमवशादुदपादिवीर: श्रीवैरिसिंह इति संभृतसिंहनाद : ॥ दुर्व्वारवैरिवरवारणकुंभकूटभेदोद्यतासिनखरो ह्यमरक्षितींद्रः ॥ १२ ॥ कीर्तिं तावदवेक्ष्य भावचपलां संभोगबद्धाश्रियं नित्यं मंगलसद्मना शुभचतुर्दिक्कुंभिकुंभप्रभे ॥ दोर्दण्ड द्वयशालिना क्षितिभुजा माशाचतुष्कांतरे येनाकारि करग्रहो वसुधया गाढं गुणारक्तया॥ १३॥ गतश्री : श्रीनिधानेन संबंधः संयतारिणा ॥ नयेन समतां धत्ते जडधिः पटुबुद्धिना ॥ १४ ॥ तस्यानुजो डमरसिंह इति प्रचंडदोर्दण्डचण्डिमवशीकृतवैरिवृंद : ॥ शृङ्गारसारतरुणीजनलोचनालिपुंजोपरुद्धवदनाम्बुरुहो बभूव ॥ १५ ॥ चंद्रिकापिकथं कारं यस्यकीर्त्या समंसमा ॥ एका दोपकरोद्भूता गुणोत्करभवा परा ॥ १६ ॥ तस्यान्वये करिकरोद्धुरबाहुदण्ड: श्रीकंकदेव इति लब्धजयो बभूव ॥ दर्प्पांधवैरिवनिताकुचपत्रवल्लीसंदोहदाहदहनज्वलितप्रताप: ॥ १७ ॥ युद्धकंडूलदोर्द्दंडद्वयेय : समरं प्रति ॥ मेने रिपुशराघातनखकंडूयनैः सुखं ॥ १८ ॥ आरुढागजपृष्टमद्भुतशरासारैरणे सर्वत : कर्णाटाधिपतेर्व्वलंविदलयं स्तन्नर्म्मदायास्तटे ॥ श्रीश्रीहर्षनृपस्य मालवपतेः कृत्वा तथारिक्षयं य : स्वर्गं सुभटो ययौ सुरवधूनेत्रोत्पलैरर्चितै : ॥ १९॥ तस्यात्मजश्चंडपनामधेयो ब्रह्माण्डविश्रांतयशा बभूव ॥ सामंतकान्ताजनहासहंसश्रेणीप्रवासैकपयोदकाल : ॥ २० ॥ ब्रह्मस्तम्बस्ययत्कीर्तिर्म्मंजरीवोपरि स्थिता ॥ शश्वत्किन्नरभृगौघैरुपगीताधिकं बभौ ॥ २१ ॥ सत्यास्पदं दहनदु : सहधामधामा श्रीसत्यराज इति तस्य सुतो बभूव ॥ सामंतदूरनतिसंगिललाटपट्टलग्नोल्ल-

सत्तिलकपादनखांशुजालः ॥ २२ ॥ वनमालाधरा नित्यं भिया यस्याच्युता अपि ॥ रिपवो न च विक्रांता नलक्ष्मीपतयः कथं ॥ २३ ॥ निर्व्याजं करुणार्द्रितो पि शतशो निस्त्रिंशकर्म्मोद्यत संजातप्रसरोपि विक्रमशतैरंतः सदा संयतः ॥ आमूलं गुणवर्द्धितोपि बहुधा दोषार्ज्जित श्रीभरो योप्येवं नियतं विरुद्धचरितो लोके विरुद्धो भवत् ॥ २४ ॥ तस्मादभूदिह नयादिव वृद्धियोगः पुण्यस्त्रिलोक तिलको विपुलोन्नतांसः ॥ गीर्वाणचारुचरितार्पितकर्णपूरः श्रीमन्दिरं जगति मण्डनदेव-नामा ॥ २५ ॥ विशालोरस्थलं कांतं मन्ये श्रीरुदितोदितं नवबंध यमासाद्य पुराणपुरषे रतिम् ॥ २६ ॥ अनवच्छिन्नदानौघो यः प्रलंबकरोद्धुरः ॥ कुलैक धवलो भद्रः सुरद्विप इवाबभौ ॥ २७ ॥ विस्फूर्जन्नखचंद्रदीधितिलसल्लावण्य-नीरोच्चयं सुस्निग्धस्फुटदीर्घराजिरुचिभृत्सन्शंखमीनांकितं ॥ वाहिन्याप्तपतित्व-योग्यमतुलं ख्यातं श्रियः कारणं यस्या वक्रकरांघ्रिप्रद्मयुगलं सामुद्रिकं लक्षणं ॥ २८ ॥ यद्वा कौतुक मन्वयोच्छरुचिरां स्वच्छांगपूर्णाधिकं येनात्र स्मररूपिणा दृढभुजा दण्डोल्लसन्मण्डपे ॥ वैरिश्री र्नृवरेण भव्यदिवसावाप्तौ परैरीहिता दत्तेयं निजविक्रमेण महतेवोच्चैरनूढा स्वयं ॥ २९ ॥ धृतविश्वंभराभारः खंडितराति-विग्रहः ॥ असिर्म्मैत्रीव सततं यस्यावर्द्धयत श्रियं ॥ ३० ॥ यस्यारातिवधूजनस्य सरलैः श्वासानिलैः शोकजै रुष्णोष्णैः परितो युगांतपवनप्रस्कारिभिः कानने ॥ दग्धे नीलतृणांकरोत्करभरे नीरे धिकं शोषिते कृछ्रेणाशनपानवृत्तिरहितैः खिन्नैर्म्मृगैः स्थीयते ॥ ३१ ॥ दीप्यमानः सदा सर्व्ववाहिनीशः क्षयोल्बणः ॥ प्रतापो यस्य जज्वाल वाडवोग्निरिवापरः ॥ ३२ ॥ कीर्तिनि ॅ मनाथवे श्रृंखलेव रिपुश्रियां यस्यासिः समरे भाति वेणिकेव जयश्रियः ॥ ३३ ॥ बलभिद्दलयुक्तेन गोत्रहा गो-त्रनंदिना ॥ नयेन कृतिना धत्ते सोपिसाम्यं पुरंदरः ॥ ३४ ॥ तस्यास्ति हृदये लक्ष्मीः स चश्रीहृदयं गमः ॥ स्पर्द्धापि न कथंकारं करोति गरुडध्वजः ॥ ३५ ॥ यं प्रतापवन-पल्लवकांतं कीर्तिनिर्म्मलधृताक्षतदेहं ॥ श्रीः सदा नहि मुमोच दयांभः पूरितं विजय मंगलकुंभं ॥ ३६ ॥ निर्व्याजं शरमंदिरेति विमलैर्वृद्धैर्गुणैः स्थापिता मुक्तानां रुचि-धारिणी सुमहिता लोकत्रयव्यापिनी ॥ प्रत्याशं प्रति काननं प्रतिपुरं गेहं प्रतिप्र-स्तुता यस्यैषाद्भुतदेवतेव सततं कीर्तिर्जनैः स्तूयते ॥ ३७ ॥ लक्ष्म्या यस्मि-न्नुपात्तं जननमथ यशः पांडुपीयूषपूरैर्यत्रोद्भूतं समंतादखिलभूतलसद्भूतलाशा-न्तरालः ॥ क्षीरांभोधिर्गुणौघो निरवधिरभवद्यस्य चारित्रसीम्नः शीतांशु-श्रीर्यदुत्था च्छुरपतिगगनं कीर्तिकल्लोलमाला ॥ ३८ ॥ खर्व्वांकापि तु कुत्रचिन्न-हि तथा लोके गताशेषतां न प्राप्ताविरतिं स्फुटं नहि वृषध्वंसोदयाविष्कृता ॥

नोपूर्णकपदाल्पकात्रिभुवना क्रोडीकृता न क्वचिद्यत्कीर्तिर्व्विशिनष्ठि कुंदधवला कृष्णां तनुं श्रीपतेः ॥ ३९ ॥ यस्योद्दामरवाहुदण्डयुगलस्योद्यद्दलेनाधिकं सच्छन्नेन रजोभरैः प्रचलतः प्रत्यर्थिवृंदं प्रति ॥ तेजस्त्यक्तमहो स्वकं भगवता चंडांशुनापि स्फुटं प्रत्याशं भयसन्नशात्रवजनस्यान्यस्य तत्का कथा ॥ ४० ॥ यस्याशाविजयोद्यतस्य निखिलक्ष्मापालचूड़ामणे वैरिश्रीभृतिलंपटस्य चलतस्तीरेषु वारांनिधेः ॥ क्रुद्धाधोरण तर्जितैरपिमुहुर्म्मानोन्नतैः पीयते मज्जद्दिग्गजदानराशिसलिलं दुःखेन सेनागजैः ॥ ४१ ॥ उच्चैर्धृततपो नित्यं समदर्शी गताहितः ॥ जितासंख्यपुरः पूज्यो यो परः परमेश्वरः ॥ ४२ ॥ विख्याता चपलेति – प्रियतमासौशंकितेव श्रिया गता दिव्यभुवं सुरैरपिनुता नित्यं विशुद्धा सति ॥ मानेनेव तथापि कीर्तिरमलेनांगीकृतापि स्वयं येने यं यशसा सहैव सहजेनेत्थं जगद्भ्राम्यति ॥ ४३ ॥ धनुर्विद्याविदा येन सत्वसत्यैकसद्मना ॥ रणे संधानमानीय कथं नु रिपवोहताः ॥ ४४ ॥ आलानो विजयद्विपस्य रुचिरा वेणीनु कीर्तिस्त्रियो दोर्दण्डप्रियनिर्भरैकवसतेश्छायास्फुरन्तीश्रियः ॥ वाढं वैरिवधोद्यतः प्रतिरणं कालोग्रदण्डो गुरुर्यस्यासिः सुशुभे पराक्रमभृतो दृप्तारिदर्पच्छिदः ॥ ४५ ॥ शूरप्रौढवलः कुलैकतिलको दुर्वारवीरांतको वेरिश्रीहरणैकलंपटलसच्चण्डासिदण्डोल्वणः ॥ कांतालोलकटाक्षपुंजनिलयः श्रृंगारमीनध्वजो ज्ञातोयस्य रविद्युतेर्गुणनिधिश्चामुण्डराजः सुतः ॥ ४६ ॥ मुहुर्दुःखोष्णनिश्वासैरश्रुपूरैश्च संततं ॥ कृतं यस्यारिकांताभिर्दग्धपल्लवितं वनं ॥ ४७ ॥ अहितदोषगुणैरुदितोदितैर्जगति लब्धजयैरिव विभृताः ॥ सकललोकनिकायनिराकृता यमिह सर्वगुणाः शरणं ययुः ॥ ४८ ॥ दुर्व्वाराविदारिणा हरिखुरक्षुण्णान्तराले भृशं तीक्ष्णास्त्रक्षतवांतशोणितपयः पूरप्लुते सर्वतः ॥ निस्त्रिंशाहतकुंभिकुंभविगलन्मुक्ताफलानां गणाः क्षिप्ता वीरवरेण येन समरक्षेत्रे यशो वीजवत् ॥ ४९ ॥ वारं वारं प्रकृतिसुभगं धौतनिस्त्रिंशपाणिं युद्धे युद्धे सततविजयश्रीप्रियं खेचरीणां ॥ तत्कालोत्थ स्मरभयवशाद्यं प्रतिस्पर्द्धयैता मंदं मंदंचकित चकितं दृष्टयः संपतंति ॥ ५० ॥ क्रोधाद्यस्यातिभीता दिशि दिशि निहतानंतसामंतकांताः कांतारेषु प्रविष्टाः श्रमवशविवशाः संश्रिता दुःखनिद्रां ॥ स्वप्नेदैवादुपात्तान्निजनिजरमणान्प्राप्य संभोगमेता जाग्रत्यो प्याशु नेत्थं रतिरसरसिकाश्चक्षुरुन्मीलयन्ति ॥ ५१ ॥ शत्रवश्चण्डकोपेन येन स्वस्थानचालिताः ॥ निजकान्तामनोमुक्ता स्थिनिमन्यत्र नोगताः ॥ ५२ ॥ शश्वत्संनंदको वाढं वलिबंधो दितोदितः त्रिविक्रमइवोदारां यो लक्ष्मीं सततं दधौ ॥ ५३ ॥ दृढतरमभिसक्ता भव्यसंभोगरम्या विधृतविमलपक्षद्वंद्वमानंदहेतुं ॥ क्षणमपि न मुमोच प्राप्य यं राजहंसं कुवलयरतिपात्रं राजहंसीवलक्ष्मीः ॥ ५४ ॥ सिंधुराजमतिमत्य्य हेलया खड्गमंदर

भृता युधि येन ॥ उत्तमेन पुरुषेपु विलेभे श्रीर्यशो भुवनपावनशंखः ॥ ५५ ॥ विश्वं वैरिप्रतापं झटिति कवलयन् लीलया जांगलाभं चंडांशोस्तीव्रशोचिर्म्मिलनकपिलितार्चिश्छटोकसरश्रीः॥धारादंष्ट्राकरालो विलसति समरे जातघातोच्चनादो यस्यारातीभकुंभस्थलदलनपटुः प्रौढनिस्त्रिंशसिंहः॥ ५६॥ यस्य सर्व्वांगसौंदर्य्यप्रतिबिंबमपश्यता ॥ प्रशंसितास्मरेणापि निजा चिरमनंगता॥ ५७ ॥ स्त्रीभिर्यत्र गृहं प्रति प्रविशति स्वस्थे स्व हन्मंण्डले हर्षोत्तालतयैव हारकिरणान् संभाव्य सत्स्वस्तिकं ॥ उत्तुंगस्तनकुंभसंगरुचिरश्रीकंठकंबुस्फुरद्वक्रांभोजविभूषितं निजवपुश्चक्रे स्वयं मंगलं ॥ ५८ ॥ दूतीं दृष्ट्वोत्सुकानां वदनमभिरुधत्सौरभात्कामिनीनां नायात्यायाति वेति स्ववचनउदिते यत्कृते दुःखसौख्यैः ॥ जातोष्णश्वासदाहान्मधुकरपटलान्यश्रुसंपातसेकाद् वैकल्यास्वास्थ्यभांजि त्वरिततरमधः संपतंत्युत्पतंति ॥ ५९॥ गेहे गेहे नुरागात्पथि पथि सुचिरं प्रांगणे प्रांगणे यद् वारं वारं नितांतं युतयुवतिजनो जाततृष्णाभरार्तः॥उत्कल्लोलं समंतादहमहमिकया यस्य कंदर्पकांते लावण्यांभस्तनुस्थं स्वनयनचुलकै रुच्चलुंपांचकार ॥ ६०॥ अनंगः सस्मरो युक्तं विरहज्वलिते हृदि ॥ तस्थौ यदिह कांतानां चित्रं यो वसतीति मे ॥६१॥ येन धर्म्मो मही पृष्ठे कोप्यपूर्वः प्रकाशितः ॥ तस्योन्नयनतो प्येप गुणकोटिं परांगतः॥ ६२ ॥ दत्वा कांचनरत्नदानमतुलं धर्म्मैकरागात्तथा येनैश्वर्य्यमतिप्रपंचितमहो पुण्यद्विजप्रापिताः॥ जातं मंदिरमालिकासु तिमिरं दीपैर्विनैते यथा जित्वोद्योतमहर्न्निशं विदधते रत्नप्रदीपांकुराः॥ ६३ ॥ येनस्वर्णगिरि — — र्व्विरचिताः स्वर्णेन सप्ताब्धयः स्वर्ण्यः कल्पतरुः समस्तवसुधा स्वर्ण्या सहस्रं गवां॥ इत्यादि द्विजसंचयाय ददता स्फूर्ज्जद्यशो हासतः सोल्लासं हसिता बलिप्रभृतयः सर्व्वेप्यमी पार्थिवाः ॥ ३४ ॥ कामधेनुरकामाभूच्चिंता चिंतामणेरपि ॥ विकल्पः कल्पवृक्षस्य श्रुत्वा यद्दानमद्भुतं ॥ ६५ ॥ नतरिपुधृतचूडालग्ननीलेंदुशोचिर्म्मधुकरनिकुरंबच्छन्नपादाम्बुजेन ॥ रुचिरमिदमुदारं कारितं धर्म्मधाम्ना त्रिदशगृहमिह श्रीमण्डनेशस्यतेन॥ ६६ ॥ यावल्लोचनधूमदंडमिलितं छत्रच्छवींदुं दधौ भोगींद्रं नवयोगपट्टसदृशं यावच्च मौलौहरः॥ यावत्कौस्तुभ एष भाति हृदये विष्णोः श्रिये रागवत् श्रीमन्मण्डन कीर्तनं क्षितितले तावत् स्थिरं तिष्ठतु ॥ ६७॥ अथ चैत्रचतुर्दश्यां यशोदेवादिकिंकरैः ॥ कीर्तिराजमुखैरन्यैर्द्देवस्यैपा कृता प्रतिः॥ ६८॥ वणिजां खण्डगुडयो र्भरकं प्रतिवर्णिका ॥ मंजिष्ठसूत्रकार्पासभरकेषु च रूपकः ॥ ६९ ॥ तथा श्रीमंण्डनेनेयं शासनेन महात्मना ॥ हट्टे विक्रीयमेवन्तु तस्यापि रचिता प्रतिः ॥ ७० ॥ नालिकेरभरके फलमेकमानकं लवणमूटकमध्यात् ॥ पूगमेकमपिपूगसहस्रादाज्यतैलघटके पलिकैका ॥ ७१ ॥ दापितो रूपकः सार्द्धः

प्रतिकर्पटकोटिकां ॥ पूलकद्वितयं जालादन्नछद्दे च पाइली ॥ ७२ ॥ तच्छोच्छपनके तेन वणिजां प्रतिमंदिरं ॥ चैत्र्यां द्रम्मः पवित्र्यां च द्रम्मएकः प्रदापितः ॥ ७३ ॥ शालसु कांस्यकाराणां मासे द्रम्मः कृतस्तथा ॥ धुंधके कल्यपालानां रूपकाणां चतुष्टयं ॥ ७४ ॥ प्रकृतीनां च सर्व्वासां तया स्थित्यानुमंदिरं ॥ दापितो द्रम्मएकैको द्युतेस्मिन्रूपकद्वयं ॥ ७५ ॥ लगडापत्रशते द्वे तैलकर्षोनुघाणकं ॥ दापिता पत्रशाकेच्छा द्दपविंशोपकस्तथा ॥ ७६ ॥ द्रम्मस्तेन तथादत्तो वणिग्मण्डलिकां प्रति ॥ सर्व्वावर्तयुतामासं प्रतिशुक्ला चतुर्दशी ॥ ७७ ॥ अर्द्धाष्टमशते देशे व्याप्यदोरकसंभवे ॥ तथेक्षुतवर्णिद्रम्मो रघट्टे यवभारकः ॥ ७८ ॥ दाने च भाण्डधान्यानां भरकच्छद्वविंशतौ तेन दत्तस्वधर्म्मेण भरकच्छद्दएवच ॥ ७९ ॥ सवाटिकं तथा तेन पुरं धवलमंदिरं ॥ कारितं भूः प्रदत्ता च देवायाघाटसंमिता ॥ ८० ॥ वीजपूरकमेकंतु लगडायाश्चदापितां॥ यवानांमूटकस्यैषवापश्चाटविकेतथा ॥ ८१ ॥ श्रूयतां भाविभूपालाः प्रदत्तं शासनं मया ॥ पाल्यतामन्यथा नात्र मौलौ बध्दोयमंजलिः ॥ ८२ ॥ पृथुप्रभृतिभिर्भूपैर्भुक्ताकैः कैर्न मेदिनी ॥ तैरप्येषा पुनः सार्द्ध यतो नैकपदं गता ॥ ८३ ॥ कविः सुमतिसाधारो वंशे साधारसंभवे ॥ वभूव क्रमशो विद्वान् भारतीकर्णकुंडलं ॥ ८४ ॥ तस्यसुतगुणचंदनसुंदरसंजातदिग्वधूतिलकः ॥ कविजनमुखकुमु लक्ष्मी जयताच्छ्रीविजयसाधारः ॥ ८५ ॥ तस्यानुजेनाभिहिता प्रशस्ति श्चंद्रेण चन्द्रोज्वलकीर्तिभाजा ॥ समासहस्रैकशतेप्रयाते पडुत्तरत्रिंशति याति काले ॥ ८६ ॥ वालभजातिकायस्थ श्रीधरस्येह सूनुना ॥ लिखिता अस्तराजेन प्रशस्तिः स्वस्थचेतसा ॥ ८७ ॥ उत्कीर्णाविजानामकेन सूत्रधारोत्रतत्रासुत गंदाकंसूत्रधार संवत् ११३६ फाल्गुन् शुदि ७ शुक्रे मंगलं महाश्रीः

शेषसंग्रह नम्बर ७.

ॐनमो वीतरागाय॥ सजयतिजिनभानुर्भव्यराजीवराजी जनितवरविकाशो दत्तलोकप्रकाशः ॥ परसमयतमोभिर्नस्थितं यत्पुरस्तात्क्षणमपि चपलासद्वादिखद्योतकैश्च ॥ १ ॥ आसीच्छ्रीपरमारवंशजनितः श्रीमण्डलीकाभिधः कन्हस्य ध्वजिनीपतेर्न्निधनकृच्छ्रीसिंधुराजस्य च ॥ जज्ञे कीर्तिलतालवालक इति श्चामुंडराजो नृपो योवन्तिप्रभुसाधनानि वहुशो हंति स्म देशे स्थलौ ॥ २ ॥ श्रीविजयराजनामा तस्य सुतो जयति जगति विततयशाः ॥ सुभगोजितारिवर्गो गुणरत्नपयोनिधिः शूरः ॥ ३ ॥ देशेऽस्य पत्तनवरं तलपाटकाख्यं पण्यांगनाजनजितामरसुंदरीकम् ॥ अस्तिप्रशस्तसुरमन्दिरवैजयन्तीविस्ताररुद्धदिननाथकरप्रचारं ॥ ४ ॥ तस्मिन्नागर-

वंशशेखरमणिर्नि : शेषशास्त्राम्बुधिर्जैनेंद्रागमवासनारससुधाविद्धास्थिमज्जाभवत् (?) ॥ श्रीमानंवटसंज्ञक : कलिवहिर्भूतो भिषग्रामणी गार्हस्थोपिनिकुंठिताक्षपसरो देशव्रतालंकृत : ॥ ५ ॥ यस्यावश्यककर्म्मनिष्ठितमतेर्भीष्टा वनान्ते भवन्नन्तेवासिवदाहितांजलिपुटाः सौराः कृतोपासनाः ॥ यस्यानन्य समानदर्शनगुणैरंतश्चमत्कारिता शुश्रुषां विदधे सुतेव सततं देवीव चक्रेश्वरा ॥ ६ ॥ पापाकस्तस्यसूनुः समजनि जनितानेकभव्यप्रमोद : प्रादुर्भूतप्रभूतप्रविमलधिषण : पारदृश्वा श्रुतीनां ॥ सर्वायुर्व्वेदवेदी विहितसकलरुक्क्रांतलोकानुकंपो निर्न्नीताशेषदोषप्रकृतिरपगदस्तत्प्रतीकारभार : ॥ ७ ॥ तस्यपुत्रास्त्रयो भूवन् भूरिशास्त्रविशारदाः ॥ श्रीलाकः साहसाख्यश्च लल्लुकाख्यः परोनुजः ॥ ८ ॥ यस्तत्राद्यः सहजविशदप्रज्ञया भासमानः स्वांतादर्शस्फुरित सकलै तिह्यतत्वार्थसारः ॥ संवेगादि स्फुटतरगुणस्वाक्तसम्यक्स्वभाव : तैस्तैर्द्दानप्रभृतिभिरपि स्योपयोगीकृतश्रीः ॥ ९ ॥ आधारोय:स्वकुलसमितेः साधुवर्गस्यचाभूद्यये शीलं सकलजनताल्हादिरूपंच काये॥ पात्रीभूतःकृतद्यतिधृतीनां श्रुतानांप्रियाचरानंदानां (?) धुरमुदवहद्योगिनांयोगिनां च ॥ १० ॥ याम — रा — यनलस्तलतिग्मभानोर्व्याख्यानरंजितसमस्तसभाजनस्य ॥ श्रीच्छत्रसेनसुगुरो श्चरणारविंद सेवापरो भवदनन्यमनाः सदैव ॥ ११ ॥ यस्यप्रशस्तामल शीलवत्यां होलाभिधायां वरधर्म्मपत्न्यां ॥ त्रयो बभूवुस्तनया नयाढ्या विवेकवन्तो भुवि रत्नभूता : ॥ १२ ॥ अभवदमल बोधः पाक्ककस्तत्प्रपूर्व्वः कृतगुरुजनभक्तिः सत्कुशाग्रीयबुद्धिः ॥ जिनवचसियदीय प्रष्णजाले विशाले गुणभृदपि विमुह्येत्कैव वार्ता परस्य (?) ॥१३॥ करणचरण रूपानेकःशास्त्रप्रवीणः परिहृत विषयार्थो दानतीर्थप्र — — ॥ समनियमितचित्तो जातवैराग्यभावः कलि कलि लवि मुक्तो पासकीयप्रभाढ्यः (?) ॥ १४ ॥ कनिष्ठस्तस्याभूद्भुवनविदितोभूषणइति श्रियः पात्रं कांतेः कुलग्रहमुमायाश्चवसतिः ॥ सरस्वत्याः क्रीड़ागिरिरमलबुद्धेरतितमां क्षमावत्याः कंदः प्रवितत कृपायाश्च निलयः ॥ १५ ॥ स्मरःसौरूप्येण प्रवलसुभगत्वेन शशभृत् कुबेर:संपत्या समधिक विवेकेनधिपण :॥ महोन्नत्यामेरु र्जलनिधिरगाधेन मनसा विदग्धत्वेनोच्चैर्य इह वरविद्याधर इव ॥ १६ ॥ जैनेंद्रशासनपरो वरराजहंसो मौनींद्रपादकमलद्वयचंचरीकः ॥ निःशेषशास्त्र निवहोदकनाथनक्र : सीमंतिनीनयनकैरवचारुचंद्र : ॥ १७ ॥ विदग्धजनवल्लभ : सरससारशृंगारवानुदारचरितश्चय : सुभगसौम्य मूर्त्ति : सुधी : ॥ प्रसाधनपरां नमद्वरविलासिनीकुंतल पस्तपदपंकज द्वितयरेणु रत्युन्नतः (?) ॥ १८ ॥ प्रथमधवलप्राये मेघे गते पि दिवं पुनः कुलरथभरो येनैकेनाप्यसंभ्रम मुद्धृतः ॥ गुरुतरविपन्न — च — — — ग्रहादुदतारिचस्थिरमति महास्थान्नानीतो (?) विभूतिगिरेः

शिरः॥१९॥ द्वे भार्ये भूपणस्यस्तः लक्ष्मी शीलीतिविश्रुते॥पतिव्रतलसंयुक्ते चारित्रगुण भूपिते ॥ २० ॥ सशीलिकायामुदपादिपुत्रा न्सन्नामयोग्यान् गुरुदेवभक्तः ॥ आलो-कसाधारणसांविमुस्या – – चित्ताब्जविकाशभानून्॥ २१ ॥ आयुस्तत्तमहीध्रसार निहितस्तोकाम्वुवन्नश्वरं संचिंत्यद्विपकर्णचंचलतरां लक्ष्म्याश्चदृष्ट्वा स्थितिं ॥ ज्ञात्वा-शास्त्रसुनिश्चयात्स्थिरतरे नूनं – – – – – – तेनाकारि मनोहरं जिनगृहं भूमेरिदं भूपणम् ॥ २२ ॥ भूपणस्य कनिष्ठो सौ लल्लाक इतिविश्रुतः ॥ देवपूजा-परोनित्यं भ्रातुरादेशकृत्सदा ॥ २३ ॥ ज्येष्ठोपाद्रवनामायः सीलुकायामजीजनत् ॥ शुभलक्षणसंयुक्तं पुत्रमम्मटसञ्ज्ञकम् ॥ २४ ॥ वर्षसहस्त्रयातेपट्षष्ठ्युत्तरश-तेन संयुक्ते ॥ विक्रमभानोः काले स्थलिविषयमवनिमतिविजयगराजे ॥ २५ ॥ विक्रमसंवत् ११६६ वैशाखशुदि ३ सोमे वृपभनाथस्य प्रतिष्ठा ॥ श्रीवृपभनाथ नाम्नः प्रतिष्ठितं भूपणेन विवामिदं उच्छूणकनगरे स्मिंद्रजगतो वृपभनाथस्य ॥ २६ ॥ युगलं॥ तुर्यवृत्तात्समारभ्य वृत्तान्येतातिपोडश॥ आद्यवृत्ते प्रयुक्तानि कृतवान् कटुको वुधः ॥ २७ ॥ भाइल्लोवस्यवंशे भून्नजं श्री माधवोद्विजः ॥ तन्सू-नोर्भांडकस्येयं निःशेपेणपराकृत्तिः ॥ २८ ॥ वालभान्वयकायस्थ राजपालस्यसूनुना ॥ संधिविग्रहसंज्ञेन लिखितानागरीलिपिः ॥ २९ ॥ यावद्रावणरामयोः सुचरितं भूमौ जनैर्गीयते यावद्विष्णुपदी जलं प्रवहति व्योम्न्यस्ति यावच्छशी॥अर्हच्चक्रविनि-र्गतं श्रवणके यावच्छ्रुतंपठ्यते तावत्कीर्ति रियं चिराय जयतात्संस्तूयमाना जनैः ॥ ३० ॥ उत्कीर्णाविज्ञानिकस्तूमकेन मंगलंमहाश्री छ

॥ लक्ष्मीनिवासनिलयं विलोमविल्लयनिधाय हृदिवीरं॥ आत्मानुशासनमहं वक्षेविज्ञायभव्यानां(?)॥१॥ दुःखाद्विभेपिनितरामभिधांसिमुखमतोहमथात्मना (?)॥ दुःखापहारीसुखकरमनुशास्मितवानु ममतव (?)॥ २ ॥ यद्यपि कदाचिदस्मिन्वि पाकमधुरं तदात्वकटु॥ किंचित् त्वं तस्मान्मापो चीर्यथातु रोभेपजादुग्रात् ॥ ३ ॥ जनाघनाथवावाला: सुलभाः स्युर्नये स्थिताः॥ वाह्यंतरार्द्रास्तेजगदा – संजिही-र्पवः ॥ ४ ॥ परापन्नात्सुखा दुःखं स्वायन्तं केवलं वरं॥ अन्यथा सुखिनामान कथत्मभंतपस्विनः ॥ ५ ॥ उपायकोटिदूरक्षे स्वनसूतइतोग्यतः सर्वपतनप्राये कायेकोयंनवाग्रहः ॥ ६ ॥ अवश्यंनस्वरैरेभि रायुकायादिभिर्यदि ॥ शाश्वतंपदमा-याति मुधाप्वातवैहिने ॥ ६९ ॥ गंतुं मुखासनिः श्वासैर भ्यस्यत्येपसंततं ॥ लोकः प्रवेपितोवांछत्यात्मानमजरामरं ॥ ७० ॥ गलन्वायुः प्रायः प्रकटित घटीयंत्र सलिलं खलः कायोप्यायुः पतिमतिपतत्येप सततं किम – – – दूयमयमिदं जीवितमिहस्थितोग्रांध्यानादिस्तुतिरवतुभे – – –

(यह प्रशस्ति वहुत अशुद्ध है, लेकिन् जैसी मिली है, वैसी ही दर्ज की गई).

शेषसंग्रह नम्बर ८.

वसन्तगढ़की लाणवावड़ीकी प्रशस्ति.

प्रणम्य हरिपुत्रेण कविना मातृशर्म्मणा ॥ सुहृद्धिततरां वाणी प्रशस्तिः सुकृता मया ॥ ज्योतिर्ज्योतिर्विदां भवः शिवधियां दृष्टः परं चक्षुषा तत्वाराधनतः स्मृतः कलुषहा सर्व्वप्रकाशोमहान् ॥ तत्वज्ञानमसंवृतम्मतिमतां ज्ञाता च सत्कर्म्मणाम् पायाद्वो वसुसिद्धकिन्नरयुतस्त्रैलोक्यदीपो हरिः ॥ वसिष्ठकोपाज्जनितः कुमारः - भुम्यां महाबला यत्र नृपा बभूवुः॥ अस्यान्वये त्युत्पलराजनामा आरण्यराजो पि ततो बभूव ॥ तस्मादभूदद्भुतकृष्णराजो विख्यातकीर्त्तिः किल वासुदेवः॥ तस्यात्मजो भूवलयः प्रतिष्ठः श्रीनाथघोषी वृतवान् वरेण्यः ॥ पुत्रो पि तस्मान्महिपालनामा तस्मादभूद्धन्धुक एव भूपः ॥ अस्यापि कीर्त्तिः सुरराजलोके प्रगीयत्ते वै सुरकिन्नरीभिः ॥ वीणानिविष्टं करजांगुलीभिर्विमुक्तकंठोक्तिरलंकृताभिः ॥ येनाहृता शौर्य्यबलेन लक्ष्मीर्व्विख्याप्य भारं परसैन्यमध्ये ॥ अस्यापि भार्य्या घृतदेविनाम्नी रूपेण शीलेन कुलेन युक्ता ॥ तस्मादमुष्यां भुवि पूर्णपालः पूर्णो नृणां पालयशोभिपूर्णः ॥ महारणेनापि विजित्यराष्ट्रं नामापि भूतं बलदर्पदेति ॥ कनककर्णिकभूषिततारया करपदे मणिभूषितवीणया ॥ विबुधराजकुले सुरकन्यया सदसि यस्य यशः खलु गीयते ॥ हत्वा येन रिपून् युधा च बहुशः प्रख्याप्य भारं स्वकं विक्रान्ता मदशालिनो वरगजा नद्वाः स्वके मंदिरे॥ पूर्णप्पालकुलप्रदीप इव योप्यार्य्यावते धार्मिके अत्र श्रीपरमारवंशतिलके राज्ञी स्थिरा शासति ॥ अस्यानुजा लाहिनि नामराज्ञी लक्ष्मीर्यथा तामरसैर्व्विहीना ॥ ऊढापि या विग्रहभूभुजेन सत्यायथापूर्व्वमधोक्षजेन ॥ अस्यान्वयेपि ॥ आसीद्विजातिर्व्विदितो धरण्यां ख्यातप्रतापो रिपुचक्रमर्द्दी ॥ यो दुःखशौर्य्यार्ज्जितभूयशस्यः काशीश्वरः सर्व्वनृपप्रधानः ॥ तदन्वयेख्यातमतिर्न्नृपोभूत् कुलप्रदीपो भवगुप्तनामा ॥ उद्धृत्य वेशं वनवासिभानोर्वदेषु राज्यं कृतवान् सवीरः॥ अस्यान्वये संगनराजनामा वन्द्योनरैर्यो वदरीं समाप्तः॥ तस्मादभूद्दल्लभराजभूपश्चरोपि तस्माद्दरराजभूपः ॥ बभूव तस्माद्गुणिताप्रधानो नृपोत्तमो विग्रहराजनामा ॥ प्रदानशौर्य्यादिगुणैरुदारैर्यशो ययौ यस्य विजित्य लोकान् ॥ द्विजिक्ररिपुवाहनो ललनकान्तरापूजितः कुलद्वयकृतोन्नतिर्व्विधृतचारुलक्ष्मीवपुः ॥ स्वपौरुषधृतावनिर्व्वलनिविष्टवक्षा महान् बभूव नृवरोत्तमः सनररूपधृङ् माधवः ॥ भार्यां स चावाप्य गुणैः समेतां वितोषितां वै बुभुजे च भोगं ॥ सापि प्रियं प्राप्य पतिम्वरेण्यं यद्वन्महींद्रेण-

समं च रेमे॥ अस्मिन्मृते भर्तरि दैवयोगाद् भ्रातुर्गृहं सा प्रियविप्रयुक्ता॥ आवेशिता वै नगरे वदेऽस्मिन् देवात् प्रहीनैव सुखंक्रमेण॥ वसिष्ठराजोपि अत्रासीदतोयं वसिष्ठराजान्वेयो ऽपि (जातमत्रपावारुणिनापि) अत्रन्यग्रोधस्याश्रमः॥ स्थाने कंभगौ स्वमतौ वसिष्ठो मुक्तिप्रदौस्थापितवान् वरिष्ठः॥ तद्वद्दारूये नगरे वनेऽस्मिन् वहुप्रसादान् कृतवान् वसिष्ठः॥ प्राकारवप्रोपवनैस्तडागैः प्रासादवेश्मैः सुघनैः सदुर्गैः॥ अतिमन्त्रोदमक्षोभ्यं पारगावक्रमाकुलं॥ वेदार्णवं द्विजासम्यग् यत्रतीर्णाप्यगर्व्विताः॥ लोकैर्धर्म्मपरैः स्वकर्म्मनिरतैः सद्भिः सदावासितं आवृत्याजनसम्मतैः प्रतिदिनं नित्यं वणिग्भिर्वृतं॥ पौराणैर्गणिकाजनैर्व्यसनिकैः शूरैर्जनैः संकुलं स्वर्गस्थानमिवापरं वदपुरं क्षोणीतले संस्थितं॥ मरुद्गता यत्र सरित् सरस्वती सोपानपंक्तया च नृपेण निर्वृता॥ सुपुण्यपुष्पोदकफेनवाहिनी द्विजायमाना जननीव वेष्ठिता॥ ये सर्वे पालयन्ते नगरहितरता नीतिमन्तः प्रशान्ता देवान्विप्रान् यजन्ते वनभवनमही वस्त्ररत्ना दिदानैः॥ ख्याता येचैवनित्यंत्रिभुवनवलये सद्गुणैरेव नीताः तेस्मिन्पौराः समस्ताः सकलजनहिता भानवे भक्तिमन्तः॥ सात्रागता लाहिनिनामराज्ञी भर्त्तुर्व्वियोगेन निपीडितांगी॥ अस्मिन् पुरे विप्रजनैः समेत्य दृष्ट्वा तुतोपान्तरनात्मबुध्या॥ भानो र्गृहं दैववशाद्विभक्तं वसिष्ठपौरैः सुकृतं यदासीत्॥ विनाशि सर्व्वं सहजीवितेन ज्ञात्वा गृहं कारितमाशु भानोः॥ लोकप्रयोगा सुकृता दुरापासुश्लिष्ठसन्धीघटितोत्पलेव॥ ॥ सोपानपंक्तिः शुशुभे सुवद्धा निश्रेणिभूतेव दिवौकसानां॥ देवैः समस्तैर्मुनिभिश्च जुष्ठा पापापहा व्याप्य वियत् स्थिता या॥ जीवैर्वृता लाहिनिपुण्यहेतोः सारस्वती शेपजनस्य वापी॥ निष्पाद्य सुकृतो कृत्वा अर्थं दत्वा पुनः पुनः॥ वैनाशिकमिदं चान्यज्ज्ञात्वा लोकस्य चर्च्चितं॥ यावद्गोलोकवृत्तीः प्रवहति सुरभिर्यावदर्कोन्तरिक्षे यावद्वीच्यः समुद्रे पवनविधुनिताः संतताः प्रोच्छलन्ति॥ यावद्योम्नि प्रदीप्तं प्रवहति मिहिरस्यंदनस्यैकचक्रं वाप्येपा तावदक्ष्णा मुडुकरसदृशी कारकस्यातिकांता॥ कृतेयं हरिपुत्रेण मातृशर्म्मद्विजन्मना॥ सर्वलोकहितार्थाय लाहिन्याश्च हितैषिणा॥ आसीच्चनामा श्वपतेः सुदुर्गे दुर्गाकृतीदोडकसूत्रकारः॥ अस्यापि सूनुः शिव पालनामा येनोत्कृतेयं सुशुभा प्रशस्तिः॥ नवनवतिविहासीद्विक्रमादित्यकालेजग तिदशशतानामग्रतोयत्रपूर्णा प्रभवतिनभमासे स्थानके चित्रभानोः (?) सं १०९९

शेषसंग्रह नम्बर ९.

आबूपर वसंतपाल तेजपालके मंदिरकी प्रशस्ति १.

वंदे सरस्वतीं देवीं याति या कविमानसं॥ नीय माना निजं व ध (वेश्म) यान (मा)

नसवासिना ॥ १ ॥ यः कांतिमानप्यपवृत्तकामःशान्तोपि दीप्तः स्मरनिग्रहाय ॥ निमीलिताक्षो पि समग्रदर्शी स वः शिवायास्तु शिवातनूजः ॥ २ ॥ अणहिलपुरमस्ति स्वस्ति पात्रं प्रजानामजरजिरघुतुल्यैः पाल्यमानं चुलुक्यैः ॥ चिर मति रमणीनां यत्र वक्रेन्दुमन्दी कृतइवसितपक्षप्रक्षये प्यन्धकारः ॥ ३ ॥ तत्र ॥ प्राग्वाटान्वयमुकुटं कुटज प्रसूनविशदयशाः ॥ दानविनिर्जितकल्पद्रुमषण्डश्चण्डपः समभूत् ॥ ४ ॥ चण्डप्रसाद संज्ञः स्वकुलप्रसादहेमदण्डोस्य ॥ प्रसरत्कीर्तिपताकः पुण्यविपाकेन सूनुरभूत् ॥ ५ ॥ आत्मगुणैः किरणैरिवसोमो रोमोद्गमं सतां कुर्वन् ॥ उदगादगाधमध्याद्दुग्धोदधिबान्धवात्तस्मात् ॥ ६ ॥ एतस्मादजनिजिनाधिनाथभक्तिंबिभ्राणः स्वमनसि शश्वदश्वराजः ॥ तस्यासीद्दयिततमा कुमारदेवी देवीव त्रिपुरगुरोः कुमारमाता ॥ ७ ॥ तयोःप्रथमपुत्रोभून्मन्त्रीलूणिगसंज्ञया ॥ दैवाद्वापबालोपि सालोक्यं वासवेन सः ॥ ८ ॥ पूर्वमेवसचिवः स कोविदैर्गण्यते स्म गुणवत्सुलूणिगः ॥ यस्य निस्तुषमतेर्मनीषया धिक्कृतेव धिषणस्य धीरपि ॥ ९ ॥ श्रीमल्लदेवः श्रितमल्लिदेवः स्तस्यानुजोमन्त्रिमतल्लिकाभूत् ॥ बभूव यस्यान्यधनाङ्गनासु लुब्धानबुद्धिः शमलब्धबुद्धेः ॥ १० ॥ धर्मविधाने भुवनच्छिद्रपिधाने विभिन्नसंधाने ॥ सृष्टिकृतानाहिसृष्टः प्रतिमल्लो मल्लदेवस्य ॥ ११ ॥ नीलनीरदकदम्बकमुक्त श्वेतकेतुकिरणोद्धरणेन ॥ मल्लदेवयशसा गलहस्तो हस्तिमल्ल दशनांशुपुदत्तः ॥ १२ ॥ तस्यानुजो विजयते विजितेन्द्रियस्य सारस्वतामृतकृताद्भुतहर्षवर्षः ॥ श्रीवस्तुपाल इति भालतलस्थितानि दौःस्थ्याक्षराणि सुकृती कृतिनां विलुम्पन् ॥ १३ ॥ विरचयति वस्तुपाल श्चुलुक्यसचिवेषु कविषु च प्रवरः ॥ न कदाचिदर्थहरणं श्रीकरणे काव्यकरणे वा ॥ १४ ॥ तेजःपालः पालितस्वाशितेजः पुञ्जः सोयं राजते मन्त्रिराजः ॥ दुर्वृत्तानां शङ्कनीयः कनीयानस्य भ्राता विश्वविश्रान्तकीर्तिः ॥ १५ ॥ तेजःपालःस्य विष्णोश्च कः स्वरूपं निरूपयेत् ॥ स्थितं जगत्रयीसूत्रं यदीयोदरकन्दरे ॥ १६ ॥ जाल्हूमाऊसाऊधनदेवीसोहगावयजुकाख्याः ॥ पदमलदेवी चैषां क्रमादिमाः सप्तसोदर्याः ॥ १७ ॥ एतेश्वराजपुत्रा दशरथपुत्रास्तएवचत्वारः ॥ प्राप्ताः किल पुनरवनावेको दरवासलोभेन ॥ १८ ॥ अनुजन्मना समेतस्तेजःपालेन वस्तुपालोयम् ॥ मदयति कस्यन हृदयं मधुमासोमाधवेनेव ॥ १९ ॥ पन्थानमेको न कदापि गच्छेदिति स्मृतिप्रोक्तमिदं स्मरन्तौ ॥ सहोदरौ दुर्धरमोहचौरैः संभूयधर्माध्वनितौ प्रवृत्तौ ॥ २० ॥ इदं सदा सोदरयोरुदेतु युगं युगव्यायतदोर्युगश्रि ॥ युगे चतुर्थे प्यनघेन येन कृतं कृतस्यागमनं युगस्य ॥ २१ ॥ मुक्तामयंशरीरं सोदरयोः सुचिरमेतयोरस्तु ॥ मुक्तामयं किल महीवलयमिदं भाति

यत्कीर्त्यां ॥ २२ ॥ एकोत्पत्तिनिमितौ यद्यपि पाणीतयो स्तथाप्येक : ॥ वामो भूदनयो र्नतुसोदर्यो : कोपि दक्षिणयो : ॥ २३ ॥ धर्मस्थानाङ्किता मुर्वीसर्वतःकुर्वतामुना ॥ दत्तः पादोवलाद्वन्धु युगुलेन कलेर्गले ॥ २४ ॥ इति श्चौलुक्यवीराणां वंशे शाखाविशेषक : ॥ अर्णोराजइतिख्यातो जातस्तेजोमयः पुमान् ॥ २५ ॥ तस्मादनन्तरमनन्तरितप्रताप : प्राप क्षितिं क्षतरिपुर्लवणप्रसाद : ॥ स्वर्गापगाजलवलक्षितशङ्खशुभ्रा बभ्राम यस्य लवणाब्धिमतीत्य कीर्ति : ॥ २६ ॥ सुतस्तस्मादासीद्दशरथककुत्स्थप्रतिकृति : प्रतिक्ष्मापालानां कवलितवलो वीरधवल : ॥ यशःपूरेयस्य प्रसरति रतिक्रान्तमनसा मसाध्वीनां भग्नाभिसरणकलायां कुशलता ॥ २७ ॥ चौलुक्य : सुकृति : स वीरधवल : कर्णे जपानां जपं य : कर्णे पि चकार न प्रलपतामुद्दिश्य यो मन्त्रिणौ ॥ आभ्यामभ्युदयातिरेकरुचिरं राज्यं स्वभर्तु : कृतं वाहानां निवहाघटा : करटिनां वद्धाश्वसौधाङ्गणे ॥ २८ ॥ तेनमन्त्रिद्वयेनायं जानेजानू (तू) पवर्तिना ॥ विभुर्भुजद्वये नैव सुखमाश्लिष्यति श्रियम् ॥ २९ ॥ गौरीवरश्वशुरभूधरसंभवोयमस्त्यर्वुद : ककुदमद्रिकदम्बकस्य ॥ मन्दाकिनीं घनजटेदधदुत्तमाङ्गे य : श्यालक : शशिभृतो भिनयंकरोति ॥ ३० ॥ क्वचिदिह विहरन्ती वीक्षमाणस्य रामा प्रसरतिरतिरन्तर्मोक्षमाकाङ्क्षतो पि ॥ क्वचनमुनिभिरर्थ्यौ पश्यतस्तीर्थवीथिं भवति भवविरक्ति (क्तौ) धीरधीरात्मनोपि ॥ ३१ ॥ श्रेय : श्रेष्ठवसिष्ठहोमहुतभृक्कुण्डान्म्तण्डात्मज प्रद्योता धिकदेहदीधिति भर : कोप्याविरासीन्नर : ॥ तंमल्लापरमारणैकरसिकं सव्याजहारश्रुते राधार : परमार इत्यजनितन्नामाथतस्यान्वय : ॥ ३२ ॥ श्रीधूमराज : प्रथमंबभूव भूवासवस्तत्र नरेंद्रवंशे ॥ भूमीभृतोय : कृतवानभिज्ञान्पक्षद्वयोच्छेदनवेदनासु ॥ ३३ ॥ धन्धुकध्रुवभटादयस्ततस्तेरिपुद्वयघटाजितोभवन् ॥ यत्कुलेजनि पुमान्मनोरमो रामदेव इतिकामदेवजित् ॥ ३४ ॥ रोद : कन्दरवर्तिकीर्तिलहरी लिप्तामृतांशुंद्युते रप्रद्युम्नवशोयशोधवल इत्यासीत्तनूजस्तत : ॥ यश्चौलुक्यकुमारपालनृपतिप्रत्यर्पितामागतं मत्वासत्वरमेवमालवपतिं वल्लालमालब्धवान् ॥ ३५ ॥ शत्रुश्रेणीगलविदलनोन्निद्रनिस्त्रिंशधारो धारावर्ष : समजनि सुतस्तस्यविश्वप्रशस्य : ॥ क्रोधाक्रान्तप्रधनवसुधानिश्चले यत्र जाता श्चोतन्नेत्रोत्पलजलकणा : कोङ्कणाधीशपत्न्य : ॥ ३६ ॥ सोयं पुनर्दाशरथि : पृथिव्यामव्याहतौजा : स्फुटमुज्जगाम ॥ मारीचवैरादिव योधनोपि मृगव्यमव्यग्रमति : करोति ॥ ३७ ॥ सामन्तसिंहसमितिक्षितिविक्षतौजा : श्रीगुर्जरक्षितिपरक्षणदक्षिणासि : ॥ प्रल्हादनस्तदनुजो दनुजोतमारिचारित्रमत्र पुनरुज्ज्वलयांचकार ॥ ३८ ॥ देवीसरोजासनसंभवा किं

कामप्रदा किं सुरसौरभेयी ॥ प्रल्हादनाकारधराधरायामायातवत्येष न निश्चयो मे ॥ ३९ ॥ धरावर्षसुतो यं जयति श्रीसोमसिंहदेवो य : ॥ पितृत : शौर्यं विद्यां पितृव्यतो ज्ञानमुभयतो जगृहे ॥ ४० ॥ मुक्ताविप्रकरानराति निकरान्निर्जिज्य तत्किंचन प्रापत्संप्रति सोमसिंहनृपति : सोमप्रकाशं यश : ॥ येनोर्वीतलमुज्ज्वलंरचयताप्युत्ताम्यतामीर्ष्यया सर्वेषामिह विद्विषां नहि मुखान्मालिन्यमुन्मूलितम् ॥ ४१ ॥ वसुदेवस्येवसुत : श्रीकृष्ण : कृष्णराजदेवो स्य ॥ मात्राधिकप्रतापो यशोदयासंश्रितो जयति ॥ ४२ ॥ इतश्च ॥ अन्वयेन विनयेन विद्यया विक्रमेण सुकृतक्रमेण च ॥ क्वापि को पि न पुमानुपैति मे वस्तुपालसदृशो दृशो : पथि ॥ ४३ ॥ दयिता ललितादेवीतनयमवी तनयमाप सचिवेन्द्रात् ॥ नाम्ना जयन्तसिंहं जयन्तमिन्द्रात्पुलोमपुत्रीव ॥ ४४ ॥ य : शैशवे विनयवैरिणि बोधवन्ध्ये धत्ते नयं च विनयं च गुणोदयं च ॥ सोयं मनोभवपराभवजागरुक रुपो न कं मनसि चुम्बति जैत्रिसिंह : ॥४५॥ श्रीवस्तुपालपुत्र : कल्पायुरयं जयन्तसिंहो स्तु ॥ कामादधिकं रूपं निरूप्यते यस्य दानं च ॥ ४६ ॥ सश्रीतेज : पाल : सचिवश्चिरकालमस्तु तेजस्वी ॥ येन जना निश्चिन्ताश्चिन्तामणिनेव नन्दन्ति ॥ ४७ ॥ यच्चाणक्यामरगुरुमरुद्व्याधिशुक्रादिकानां प्रागुत्पादं व्यधितभुवने मन्त्रिणां बुद्धिधाम्नाम् ॥ चक्रे भ्यास : स खलु विधिनानूनमेनं विधातुं तेज : पाल : कथमितरथाधिक्यमापैषतेषु ॥ ४८ ॥ अस्ति स्वस्तिनिकेतनं तनुभृतां श्रीवस्तुपालानुज : स्तेज : पालइति स्थितिंवलिकृता मुर्वीस्थले पालयन् ॥ आत्मीयं वहुमन्यते नहि गुणग्रामं च कामन्दकिश्चाणक्यो पि चमत्करोति न हृदि प्रेक्षास्पदं प्रेक्ष्ययम् ॥ ४९ ॥ इतश्च महंश्रीतेज : पालस्य पत्न्याश्चानुपमदेव्या : पितृवंशवर्णनम् ॥ प्राग्वाटान्वय मण्डनैकमुकुट : श्रीसान्द्रचंद्रावतीवास्तव्य : स्तवनीयकीर्तिलहरीप्रक्षालितक्ष्मातल : ॥ श्रीगागाभिधयासुधीरजनि यद्वृत्तानुरागादभूत्कोनामप्रमदेनदोलितशिरानोद्भूतरोमापुमान् ॥ ५० ॥ अनुसृतसज्जनसरणिर्धरणिगनामाबभूवतत्तनय : ॥ स्वप्रभुहृदये गुणिना हारेणेवस्थितंयेन ॥ ५१ ॥ त्रिभुवनदेवी तस्य त्रिभुवनविख्यातशीलसंपन्ना ॥ यदिता भूदस्या : पुनरङ्गं द्वेधा मनस्त्वेकम् ॥ ५२ ॥ अनुपदेवीदेवी साक्षाद्दाक्षायणीव शीलेन ॥ तद्दुहिता सहिता श्रीतेजःपालेनपत्याभूत् ॥ ५३ ॥ इयमनुपमदेवी दिव्यवृत्तप्रसून ब्रततिरजनितेजःपालमन्त्रीशपत्नी ॥ नयविनयविवेकौ चित्यदाक्षिण्यदानप्रमुखगुणगणेन्दुद्योतिताशेपगोत्रा ॥ ५४ ॥ लावण्यसिंहस्तनयस्तयोरयं रयंजयन्निन्द्रियदुष्टवाजिनाम् ॥ लब्ध्वापिमीनध्वजमङ्गलं वय : प्रयाति धर्मैकविधायिना ध्वना ॥ ५५ ॥ श्रीतेजपालतनयस्य गुणानमुष्य श्रीलूणसिंहकृतिन : कति न स्तुवन्ति ॥ श्रीवन्धनो

द्दुरतरैरपियैसमन्ताद्दुद्दामतात्रिजगतिक्रियते स्म कीर्तिः ॥ ५६ ॥ गुणधन निधानकलशः प्रकटोयमवेष्टितश्च खलसर्पैः ॥ उपचयमयते सततं सुजनैरुपजीव्यमानो पि ॥ ५७ ॥ मल्लदेवसचिवस्य नन्दनः पूर्णसिंहइति लीलुकासुतः ॥ तस्य नन्दति सुतोयमह्लगादेविभूः सुकृतवेश्मपेथडः ॥ ५८ ॥ अभूदनुपमापत्नी तेजपालस्यमन्त्रिणः ॥ लावण्यसिंहनामायमायुष्मानेतयोः सुतः॥ ५९ ॥ तेजःपालेन पुण्यार्थं तस्यपुत्रकलत्रयोः ॥ हर्म्यं श्रीनेमिनाथस्य तेने तेनेदमर्बुदे ॥ ६० ॥ तेजःपालइति क्षितीन्द्रसचिवः शङ्खोज्ज्वलाभिः शिलाश्रेणीभिःस्फुरदिन्दुकुन्दरुचिरं नेमिप्रभोर्मन्दिरम् ॥ उच्चैर्मन्दिरमग्रतो जिनवरा वासद्विपञ्चाशतं तत्पार्श्वेषु बलानकं च पुरतो निष्पादयामासिवान् ॥ ६१ ॥ श्री मच्चण्डपसंभवः समभवच्चण्ड प्रसादस्ततः सोमस्तत्प्रभवो श्वराजइति तत् पुत्राः पवित्राशयाः ॥ श्री मल्लूणिगमल्लदेव सचिवः श्री वस्तुपालाह्वयस्तेजः पाल समन्विता जिनमता रामोन्नमन्नीरदाः ॥ ६२ ॥ श्रीमन्त्रीश्वरवस्तुपालतनयः श्रीजैत्रसिंहाह्वयस्तेजःपालसुतश्च विश्रुतमति र्लावण्यसिंहाभिधः ॥ एतेषांदशमूर्तय करिवधूस्कन्धाधिरूढाश्चिरं राजन्ते जिनदर्शनार्थमवतादिङ्नायकानामिव ॥ ६३ ॥ मूर्त्तीनामिह पृष्ठतः करिवधू पृष्ठप्रतिष्ठाजुषां तन्मूर्तीर्विमलाश्म खत्तकयुता कान्तासमेतादश ॥ चौलुक्यक्षितिपालवीरधवलस्याद्वैतबन्धु : सुधी स्तेजःपाल इति व्यधापयदयं श्रीवस्तुपालानुजः ॥ ६४ ॥ तेज :पालः सकलप्रजोपजीव्यस्य वस्तुपालस्य ॥ सविधे विभाति सफलः सरोवरस्यैव सहकारः ॥ ६५ ॥ तेन भ्रातृयुगेन या प्रतिपुरग्रामाध्वशैलस्थलं वापीकूपनिपानकाननसरःप्रासादसत्रादिका: ॥ धर्मस्थानपरंपरा नवतरा चक्रेथ जीर्णोद्धृता तत्संख्यापि नबुध्यते यदि परं तद्वेदिनी मेदिनी ॥ ६६ ॥ शम्भोः श्वासगतागतानि गणयेद्यः सन्मतिर्यो थवा नेत्रोन्मीलनमीलनानि कलये न्मार्कण्डनाम्नो मुनेः ॥ संख्यातुं सचिवद्वयी विरचिता मेतामपेतापर व्यापारः सुकृतानुकीर्तनततिं सोप्युज्जिहीतेयदि ॥ ६७ ॥ सर्वत्रवर्ततां कीर्तिरश्वराजस्य शाश्वती ॥ (उद्धर्तु) मुपकर्तु च जानीते यस्यसंततिः ॥ ६८ ॥ आसीच्चण्डपमण्डितान्वयगुरुर्नागेन्द्रगच्छश्रिय श्चूडारत्नमयत्नसिद्धमहिमा सूरिर्महेन्द्राभिधः ॥ तस्माद्विस्मयनीयचारुचरितः श्रीशान्तिसूरिस्ततो प्यानन्दामर सूरियुग्ममुदयच्चन्द्रार्कदीप्तद्युति ॥ ६९ ॥ श्री जैनशासनवनीनवनीरवाह : श्रीमांस्ततोप्यघहरो हरिभद्रसूरिः ॥ विद्वान्मनोमयगदेष्वनवद्यवैद्य : स्यातस्ततो विजयसेन मुनीश्वरोयम् ॥ ७० ॥ गुरोस्तस्याशिषांपात्रं सूरिरभ्युदय प्रभुः ॥

मैक्तिकानीवसूक्तानि भान्तियत्प्रतिमाम्बुधे ॥ ७१ ॥ एतद्धर्मस्थानं धर्मस्थानस्य चास्यय : कर्ता ॥ तावद्वयमिदमुदियादुदयत्ययमर्बुदोयावत् ॥ ७२ ॥ श्रीसोमेश्वरदेवश्चुलुक्यनरदेवसेविताङ्घ्रिपदयुग्म : ॥ रचयांचकार रुचिरां धमर्स्थानप्रशस्तिमिमाम् ॥ ७३ ॥ श्रीनेमेरम्बिकायाश्च प्रसादादबुर्दाचले ॥ वस्तुपालान्वयस्यास्तु प्रशस्ति : स्वस्तिशालिनी ॥ ७४ ॥ सूत्रकारकह्लणसुतधांधलपुत्रेण चण्डेश्वरेण प्रशस्तिरियमुत्कीर्णा श्री विक्रम संवत् १२८७ वर्षे श्रीश्रावण वदि ३ रवौ श्री विजयसेनसूरिभि : प्रतिष्ठा कारिता ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १०.

अचलेश्वरके मंदिरकी प्रशस्ति.

परमार वंश वर्णनं.

इतश्च ॥ अस्ति श्रीमानर्बुदाख्यो द्रिमुख्य : शृंगश्रेणिर्बिभ्रदभ्रंलिहो य : ॥ वृद्धिं विध्य : किंपुनर्यात्यसावित्यादित्यस्य भ्रान्तिमंतर्विधत्ते ॥ १० ॥ तत्राथ मैत्रावरुणस्य जुह्वतश्चंडो ग्निकुंडात्पुरुष : पुरो भवत् ॥ मत्वा मुनींद्र : परमारणक्षमं स व्याहृरत्तं परमारसंज्ञया ॥ ११ ॥ पुरा तस्यान्वये राजा धूमराजाह्वयो भवत् ॥ येन धूमध्वजेनेव दग्धा वंशा : क्षमाभृताम् ॥ १२ ॥ अपरे पि न संदग्धा धधूध्रुवभटादय : ॥ जाता : कृताहवोत्साहबाहवो बहवस्तत : ॥ १३ ॥ तदनंतरमभ्रंगितकीर्तिसुधासिन्धु : शुंधितव्योमा ॥ श्रीरामदेवनामा कामादपिसुंदर : सो भूत् ॥ १४ ॥ तस्मान्महीगविदितान्यकलत्रगात्रस्पर्शोयशोधवलइत्यवलंवते स्म ॥ यो गुर्जरक्षितिपतिप्रतिपक्षमाजौ बल्लालमालभत मालवमेदिनींद्रं ॥ १५ ॥ धारावर्षस्तत्सुत : प्रापलक्ष्मी र्लिप्तक्षोणि : शोणितै : कुंकणेंदो : ॥ सर्वत्रापि स्वैश्वरित्रै : पवित्रैर्ल्लीलाक्षोघाराघवेणेव येन ॥ १६ ॥ तस्य प्रल्हादनो नाम वामनस्येव भूभुव : ॥ अनुजन्मा भवयेन दक्षा श्री रग्रजन्मनां ॥ १७ ॥ श्रीसोमसिंह : पितुरेष धारा वर्षस्य राज्यं कुरुताच्चिराय ॥ तथाहि राज्यं गणतस्तुराज्यं दिशादिभिर्यस्य च दत्तमेव ॥ १८ ॥ सोमसिंहो नृसिंहोयमपूर्वःपृथिवीतले ॥ यन्नाम्ना भुविदीर्यंते हृदयानि विरोधिनां ॥ १९ ॥ श्री - देव : क्षितिदेवदौस्थ्यनिर्व्वासितव्याप्टतमासनो सौ ॥ श्रीसोमसिंहे पितरिस्वराज्ये वति स्थिरं यो वति यौवराज्यं ॥ २० ॥
इतश्च ॥

(यह प्रशस्ति बहुत बड़ी है, इसका संवत् ज़मीनमें गड़ाहुआ मालूम होता है, और इसके ऊपरके भागमें भी बहुत अक्षर खंडित होगये हैं, इस वास्ते हमने मात्र परमार राजाओंका हाल लिखा है).

शेषसंग्रह, नम्बर ११.

(१) आबूके परमार राजा धारावर्ष का ताम्रपत्र, सं० १२३७.

प्लेट १.

संवत् १२३७ वर्षे कार्तिक शुदि ११ गुरावद्येहचाज्ञापनं ॥ समस्त राजावलीसमलंकृत श्रीमदर्बुदाधिपति श्रीधूमराजदेवकुलकमलोद्योतनमार्तंडमांडलिकेपुचरंतु श्री धारावर्षदेवकल्याणविजयराज्ये तत्पादपद्मोपजीविनमहं० श्रीकोविदास समस्तमुद्राव्यापारान्परिपंथयतीत्येवं कालेप्रवर्तमाने शासनाक्षराणि लिख्यंते यथा उदयेसंजातेदैवा — — — का — — — महाप्रक्षीणनलिनीदलगतजललवतरलतरंजीवितव्यासिदविधाय परमार्सेवाचार्य भट्टारकवीसलउग्रदमके

प्लेट २.

— साहिलवाड़ा ग्रामेग्रह — मुक्ति ॥ तथाएतदीयधरणीगोचरेचरणीया तथाकुंभारनुलीग्रामे सुरभिमर्यादापर्यंत भूमिदत्ताहल २ हलद्वयभूमिशासनेनोदक पूर्वप्रदत्ता ॥ धृतोत्र महं श्री कोविदासगी. जाल्हणौ ॥ मतै ॥ श्री: ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ताराजभि: सगरादिभि: ॥ यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलम् ॥ १ ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां ॥ षष्ठिवर्षसहस्राणि विष्टायांजायतेकृमि ॥ २ ॥ ममवंशक्षये क्षीणेअन्योह नृपतिर्भवेत् ॥ तस्याहंकरलग्नोस्मि ममदत्तं न लोपयेत् ॥ ३ ॥ ढ ॥ शुभंभवतु .

मागवाड़ीग्राम ग्रासभूमिदत्ता दातड़लीग्राम ग्रासभूमिदत्ता ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १२.

ॐ स्वस्ति ॥ य: पुंसां द्वैतभावं विघटयितुमिव ज्ञानहीनेक्षणानामर्द्धस्वीयं विहायार्द्धमपि मुररिपोरेकभावात्मरूप: ॥ — — — रोदजन्मा प्रलयजलधरश्यामल: कंठनाले भाले यस्यार्द्धलेखा स्फुरति शशभृत: पातु व: स त्रिनेत्र: ॥ १ ॥ अवंतीभूलोकं निजभुजभृतां शौर्यपटलै: पुनंती विप्राणां श्रुतिविहितमार्गानुगमिनां ॥ सदाचारैस्तारै:स्मरसरसयूनां परिमलैरवंती हर्षंतीजयति धनिनां क्षेत्रधरणी ॥ २ ॥ एतस्यां पुरि नूतनाभिधमठात् संपन्नविद्या तया धीरात्मा चपलीयगोत्रिविभवो निर्वाणमार्गानुग: ॥ एकाग्रेण तु चेतसा प्रतिदिनं चंडीशपूजारत: संजात:

(१) यह ताम्रपत्र सिरोही राज्यके हायल गामके एक शुक्ल ब्राह्मणके पास है.

स च चंडिकाश्रमगुरुस्तेजोमयस्तापस : ॥ ३ ॥ शिष्यो मुनेरस्य महातपस्वी विवेकविद्याविनयाकरो य : ॥ गुरूरुभक्तिर्व्यसनानिरिक्तो वभौ मुनिर्वा कलराशिनाम ॥ ४ ॥ जज्ञे ततो ज्येष्ठजराशिरस्मादेकांतरीशांतमनास्तपस्वी ॥ त्रिलोचनाराधनतत्परात्मा वभूव यागेश्वरराशिनाम ॥ ५ ॥ तस्मादाविरभूदहस्करइव प्रव्यक्तलोकद्वय : क्रोधध्वांतविनाशनैकनिपुण : श्रीमौनिराशिर्मुनि : ॥ शांतिक्षांतिदयादिभि : परिकरै : शूलेश्वरीसन्निभा शिष्या तस्य तपस्विनी विजयिनी योगेश्वरी प्राभवत् ॥ ६ ॥ दुर्वासराशिरेतस्या : शिष्यो दुर्वाससा सम : ॥ मुनीनांसबभूवोग्रस्तपसा महसापि च ॥ ७ ॥ व्रतनियमकलाभिर्यामिनीनाथमूर्तिर्निजचरितवितानैर्दिक्षु विख्यातकीर्ति : ॥ अमलचपलगोत्रप्रोद्यतानां मुनीनामजनि तिलकरूपस्तस्यकेदारराशि : ॥ ८ ॥ जीर्णोद्धारं विशालं त्रिदिवपतिगुरोरत्र कोटेश्वरस्य व्यूढं चोत्तानपट्टं सकलकनखले श्रद्धया यश्चकार ॥ अत्युच्चैर्भित्तिभागैर्दिवि दिवसपतिस्यंदनं वा विग्रहृणन् येनेहाकारि कोट : कलिविहगचलच्चितवित्रासपाश : ॥ ९ ॥ अभिनवनिजकीर्तिमुर्तिरुचैरवाद : सदनमतुल नाथस्योद्धृतं येन जीर्णं ॥ इहकनखलनाथस्याग्रतो येन चक्रे नवनिविडविशाले सद्मनीशूलपाणे : ॥ १० ॥ यदीया भगिनिशांता ब्रह्मचर्यपरायणा ॥ शिवस्यायतनं रम्यं चक्रे मोक्षेश्वरी भुवि ॥ ११ ॥ प्रथमविहितकीर्ति प्रौढयज्ञक्रियासु प्रतिकृतिमिव नव्यां मंडपे यूपरूपां ॥ इह कनखलशंभो : सद्मनि स्तंभमालाममलकषणपाषाणस्य सव्याततान ॥ १२ ॥ यावदर्बुदनागोयं हेलया नंदिवर्द्धनं वहति पृष्ठतो लोके तावन्नंदतु कीर्त्तनं ॥ १३ ॥ यावत् क्षीरं वहति सुरभी शस्यजातं धरित्री यावत् क्षोणींकपटकमठो यावदादित्यचंद्रौ ॥ यावद्वाणीप्रथमसुकवे र्व्यासभाषा च यावत् श्रीमल्लक्ष्मीधरविरचिता तावदस्तु प्रशस्ति : ॥ १४ ॥ संवत् १२६५ वर्षे वैशाख शु० १५ भौमे चौलुक्योद्धरण परम भट्टारक महाराजाधिराज श्रीमद्भीमदेवप्रवर्द्धमानविजयराज्ये श्री करणेमहामुद्रामत्यमहंवा भूप्रभृति समस्तपंचकुलेपरिपंथयति चंद्रावतीनाथ मांडलिकासुर शंभु श्री धारावर्षदेवे एकातपत्र वाहकलेनभुवं पालयति षटदर्शन अवलंबनस्तंभसकलकलाकोविदकुमार गुरुश्रीप्रल्हादनदेवे यौवराज्ये सति इत्येवंकाले केदारराशिना निष्पादितमिदं कीर्तनं सूत्रपाल्हणहकेन उत्कीर्णं ॥

—⋇—

शेषसंग्रह, नम्बर १३.

ॐनम : ***************

संवत् १२८७ वर्षे लौकिक फाल्गुन वदि ३ रवौ अद्येह श्रीमदणहिलपाटके चौ-

लुक्यकुलकमलराजहंससमस्तराजावलीसमलंकृत महारा
विजयराज्येत ********** (धा ?)

श्रीवशिष्ठकुण्डयजनानलोद्भूतश्रीमद्धूमराजदेवकुलोत्पन्न
श्रीसोमसिंहदेव विजयराज्ये तस्यैव महाराजाधिरा
*** रात्रामण्डले श्री चौलुक्यकुलोत्पन्न महामण
लवणप्रसाददेवसुत महामण्डलेश्वर राणक श्री वीरधव
व्यापारिणा श्री मदणहिलपुरवास्तव्य श्रीप्राग्वाट ज्ञा
ठ० श्रीचण्डप्रसादात्मज महं० श्रीसोमतनुज ठ० श्री
श्री कुमारदेव्योः पुत्र महं० श्रीतेजपालेन श्रीमल्लदेवसंघ
पालयोरनुजसहोदरभ्रातृ महं० श्री तेजःपालेन स्वकीय
मादेव्या स्तत्कुक्षिस ***

चित्रपुत्र महं० श्रीलुणसिंहस्यच पुण्ययशोभिवृद्ध
देउलवाड़ाग्रामे समस्तदेव कुलिकालंकृतं विशालह
लुणसिंहवसहिकाभिधानश्रीनेमेनाथदेवचैत्यमिदं कारितम्
प्रतिष्ठितं श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिसंताने श्
आनन्दसूरि श्री अमरचन्द्रसूरिपट्टालंकारणप्रभु श्रीह
जयसेनसूरिभिः॥ छ ॥ अत्र च धर्म स्थाने कृतः श्र
यथा ॥ महं० श्रीमल्लदेव महं० श्रीवस्तुपाल महं० श्रीतेज
संतान परं परया तथा महं० श्रीलूणसिंहसक्रमातृ
वास्तव्य प्रागवाटज्ञातीय ठ० श्रीसावदेवसुत ठ०

श्रीसागर तनय ठ० श्री गागापुत्र ठ० श्रीधरणिगभ्रा
महं० श्री लीला० तथा ठ० श्री धरणिगभार्या ठ०
महं० श्री अनुपमादेवीसहोदर भ्रातृ ठ० श्री खीवसीह
श्रीऊदल तथा महं० श्री लीलासुत महं० श्रीलूणसीह त
सीह ठ० रत्नसिंहानां समस्तकुटुम्बेन एतदीय संतान
न्धर्मस्थाने सकलमपिस्नपनपूजासारादिकं सदैव करणीय

हृधर्कटज्ञातीय श्रे० नेहा उ० साल्हा तथा ज्ञा० धउलिग उ० आसचंद्र तथा ज्ञा० श्रे० वहुदेव उ० सोमप्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सावड उ० श्रीपाल तथा ज्ञा० श्रे० जीन्दा उ० पाल्हण धर्कट ज्ञा० श्रे० पासु उ० सादा प्राग्वाटज्ञातीय पूना उ० साल्हा तथा श्रीमाल ज्ञा० पूना उ० सल्हा प्रभृति गोष्ठिका अमीभिः श्रीनेमिनाथदेवप्रतिष्ठावर्षग्रंथियात्राष्टाहिकायां देवकीय चैत्रवदि ३ तृतीया दिने स्नपनपूजाद्युत्सव: कार्य: तथा कासहृदग्रामीय उएस वालज्ञातीय श्रेष्ठ सोहि उ० पाल्हण तथा ज्ञा० श्रे० सलखण उ० वालण प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सांनुय उ० देल्हय तथा ज्ञा० श्रे० गोसल उ० आलहा तथा ज्ञा० श्रे० कोला उ० आस्ना तथा ज्ञा० श्रे० पासचंद्र उ० पूनचन्द्र तथा ज्ञा० श्रे० जसवीर० उ० जगा तथा ज्ञा० ब्रह्मदेव उ० राल्हा श्रीमालज्ञातीय कडुयरा उ० कुलधरप्रभृति गोष्ठिका: अमीभिस्तथा ४ दिने श्रीनेमिनाथ देवस्य द्वीतीयाकाष्टाहिका महोत्सव: कार्य: तथा ब्रह्माणवास्तव्यप्रागवाटज्ञातीय महाजनि० आंमिग उ० पुनड० उ० एसल ज्ञा० महा० धान्वा उ० सागर तथा ज्ञा० महा० साटा उ० वरदेव प्राग्वाट ज्ञातीय महा० पाल्हण उ० उदयपाल उंइसवाल ज्ञा० महा० आबोधन उ० जगसीह श्रीमाल ज्ञा० महा० वीसल उ० पासदेवप्राग्वाटज्ञातीय महा० वीरदेव उ० अरसिंह तथा ज्ञा० श्रे० धनचन्द्र उ० रामचन्द्र प्रभृति गोष्ठिका: अभिभिस्तथा ५ पञ्चमी दिने श्रीनेमिनाथ देवस्य तृतीयाष्टाहिका महोत्सव: कार्य: ॥ तथा धउली ग्रामीय प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण उ० पासवीर तथा ज्ञा० श्रे० वोहडि उ० पुना तथा ज्ञा० श्रे० जसडय उ० जेगण तथा ज्ञातीय श्रे० साजण उ० भोला तथा ज्ञा० पासिल उ० पूनुय तथा ज्ञा० श्रे० राजुय० ऊसावदेव तथा ज्ञा० दूगसरण उ० साहणीय उंइसवाल ज्ञा० श्रे० सलखण ऊं महं० जोगा तथा ज्ञा० श्रीदेवकुंवार उ० प्रभृति गोष्ठिकाः ॥ अमिभिस्तथा ६ षष्ठीदिने श्री नेमिनाथ देवस्य चतुर्थाष्टाहिका महोत्सवः कार्य : तथामुण्डस्थलमहातीर्थवास्तव्यप्राग्वाटज्ञातीय श्रेष्ठसंधीरण उ० गुणचन्द्रपाल्हा तथा श्रे० सोहियं उ० आस्वेसर तथा श्रे० जेजा० उ० खांखण तथा फीलाणि ग्राम वास्तव्य श्री मालज्ञा० वापल गाजण प्रमुखगोष्ठिकाः अमीभिस्तथा ७ सप्तमी दिने श्री नेमिनाथ देवस्य पञ्चमाष्टाहिका महोत्सव: कार्यः तथा हणडाउद्राग्राम डवाणीग्राम वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० आस्वुय उ० जसराज तथा ज्ञा० श्रे० लखमण उ० आसु तथा ज्ञा० श्रे० आसल उ० जगदेव तथा ज्ञा० श्रे० सामिग उ० धणदेव तथा ज्ञा० श्रे० जिणदेव उ० जाल प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० आसल उ० सादा श्रीमालज्ञा० श्रे० देदा उ० वीसल

तथा ज्ञा० श्रे० आसधर उ० आसल तथा ज्ञा० श्रे० थिरदेव उ० विरुय तथा ज्ञा० श्रे० गुणचन्द्र उ० देवधर तथा ज्ञा० श्रे० हरिया उ० हेमा प्राग्वाटज्ञा० श्रे० लखमण उ० कडुया प्रभृतिगोष्ठिकाः अमिभिस्तथा ८ अष्टमी दिने श्री नेमिनाथ देवस्य पष्टाष्टाहिका महोत्सवः कार्यः ॥ तथा मडाहडवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० देसलउ० ब्रह्मसर (सा. ?)ण तथा ज्ञा० जसकरउ० श्रे० धणिया तथा ज्ञा० श्रे० देल्हण उ० अल्हा तथा ज्ञा० श्रे० वाला उ० पद्मसीह तथा ज्ञा० श्रे० आंबुय उ० वोहडि तथा ज्ञा० श्रे० वोसरि उ० पूनदेव तथा ज्ञा० श्रे० वीरुय उ० सजण तथा ज्ञा० श्रे० पाहुय उ० जिणदेव प्रभृति गोष्ठिकाः अमीभिस्तथा ९ नवमि दिने श्रीनेमिनाथदेवस्य सप्तमाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः॥ तथा साहिलवाड़ा (१) वास्तव्य उईसवाल ज्ञातीय श्रे० देल्हण उ० आल्हण श्रे० नागदेव उ० आस्वदेव श्रे० काल्हण उ० आसल श्रे० वोहिथ उ० लाखण श्रे० जसदेव उ० वहडा श्रे० सीलण उ० देल्हण श्रे० वहुदा श्रे० महधरा उ० धनपाल श्रे० पूनिग उ० वाघा श्रे० गोसल उ० वहड़ा प्रभृति गोष्ठिकाः अमीभिस्तथा दशमि दिने श्री नेमिनाथ देवस्य अष्टमाष्टाहिका महोत्सवः कार्यः तथा श्रीअर्बुदोपरि देउलवाडावास्तव्य समस्त श्रावकैः श्रीनेमिनाथ देवस्य पञ्चापिकल्याणिकानि यथादिनं प्रतिवर्षं कर्तव्यानि ॥ एवमियं व्यवस्था श्रीचन्द्रावतीपति राजकुल श्रीसोमसिंहदेवेन तथा तत्पुत्रराज० श्रीकान्हड़देवप्रमुखकुमारैः समस्तराजलोकैस्तथा श्रीचन्द्रावतीयस्थानपतिभट्टारकप्रभृतिकविलास तथा गूगुली ब्राह्मण समस्त महाजन गोष्ठिकैश्च तथा अर्बुदाचलोपरि श्री अचलेश्वर श्रीवशिष्ठ तथा संनिहिता ग्राम देउलवाड़ा ग्राम श्रीश्री मातामहवुग्राम आवुयाग्राम ऊरासाग्राम ऊ. तरछग्राम सिहरग्राम सालग्राम हेठउजी ग्राम आखी ग्राम श्रीधान्धलेश्वर देवीय कोटड़ी प्रभृति द्वादशग्रामेषु संतिष्ठमान स्थानपति तपोधन गूगुली ब्राह्मण राठीय प्रभृति समस्त लोकैस्तथा भालिभाडा प्रभृति ग्रामेषु संतिष्ठमान श्रीप्रतिहारवंशीय सर्वराजपुत्रैश्च. आत्मीयात्मीय स्वेच्छया श्रीनेमिनाथदेवस्य मण्डपे समुपविश्योपविश्य महं० श्री तेजःपाल पार्श्वात्स्वीयस्वीयप्रमोदपूर्वकं श्रीलूणसिंहवसहिकाभिधानस्यास्य धर्मस्थानस्य सर्वोपरिक्षापभारः स्वीकृतः तदेतदात्मीयवचनं प्रमाणिकुर्वद्भिरेतैः सर्वैरपि तथा एतदीयसंतानपरंपरया च धर्मस्थानमिदमाचन्द्रार्कं यावत्परिरक्षणीयम् ॥ यतः किमिह कपालकमण्डलुवल्कलसितरक्तपटजटापटलैः ॥

---

(१) ग्राम धारावर्षके ताम्रपत्रमें यही लिखा है- देखो शेषसंग्रह नम्बर ११.

व्रतमिदमुज्वलमुन्नतमनसां प्रतिपन्ननिर्वहणम् ॥ तथा महाराज कुल श्री-सोमसिंहदेवेन अस्यां श्रीलूणसिंह वसहिकायां श्रीनेमिनाथ देवाय पूजाङ्ग-भोगार्थं बाहिरहद्यां डवाणिग्रामः शासनेन प्रदत्तः ॥ स च श्रीसोमसिंह-देवाभ्यर्थनया प्रमारान्वयिभिराचन्द्रर्के यावत्प्रतिपाल्यः सिद्धिक्षेत्रमिति प्रसिद्ध-महिमा श्रीपुंडरीको गिरिः श्रीमान् रैवतकोपि विश्वविदितः क्षेत्रं विमुक्ते रिति ॥ नूनं क्षेत्रमिदं द्वयोरपि तयोः श्री अर्बुदस्तत्प्रभूर्भेजाते कथमन्यथा सममिदं श्री आदिनेमीस्वयम् ॥ १ ॥ संसारसर्वस्वमिहैव मुक्तिः (?) सर्वस्य मप्यत्र जिनेशदृष्टम् विलोक्यमाने भुवने तवास्मिन् ॥ पूर्वं परं च त्वयि दृष्टि-पान्थे ॥ २ ॥ श्री कृष्णर्षीय श्री नयचन्द्रसूरेरिमे संसरवणपुत्रसं सिंहराजसाधू साजणसं सहसासाईदे पुत्रीसुनथवप्रणमन्ति ॥ शुभम् ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १४.

अचलेश्वरके मन्दिरकी प्रशस्ति.

ॐ नमः सर्वेशाय ॥ येन यस्य गुणागुणे — — णिनः प्रायेण पाठ्या इव ****
****
मनिशं मोहं व्यपोहं महदानंदशिवनित्वेनं कलमसौ सौवोचलेशः ॥ १ ॥ ****
****
लानिकलया कर्माणि कर्म्मान्य वै व्यर्थव्यनुतान्य जात्म कुणपेतज्ज्ञान्वि ********
** हंचराचरमिदं
पूरयन्नात्मभावैर्विशेषो निजमावयांच गुणवान्वक्ति त्रय*********************
*** विधिंवेधाकरोलय्यसुं ॥ ३ ॥
विरंचिविष्णुभर्गाणांसरसया — — — तः ॥ जीर्णोद्धारं चकाराथ प्रशंसा क्रियते मया ॥ ४ ॥ जीर्णोद्धारः पुनश्चात्र त्वचलेश्वरमंडपे ॥ अकारि लिख्यते येन तस्य वंशागरः परः ॥ ५ ॥ क्षितौ प्रशांतौ किल सूर्यसोमवंशौ विशालौ प्रवरौ हि पूर्वात् ॥ तयोर्विनाशे भगवान् किवच्छ स्वचिंतयदोषभयान्महात्मा ॥ ६ ॥ तच्चिंतया चंद्रमसस्सुयोगाद्ध्यानान्महर्षैरभवभुविशुशेच (?) — — — — दिशासु सर्वासु दैत्यान्प्रविलोक्य वेगात् ॥ ७ ॥ निजायुधैर्दैत्यवरान्निहत्य संतोषयत् क्रोधयुतं तुवच्छं ॥ वच्छ्य स्तदाराधनतत्पराश्च चंद्रस्य वो — — — चंद्रवंश्याः ॥ ८ ॥ एते तदारभ्य विशालवंश्याः ख्याताः क्षितावत्र पवित्रगोत्राः ॥ त्राणायत्रासात्वपक्षात्र चित्राक्षात्रंविधिंविधिवशात् प्रचरंति चित्रं ॥ ९ ॥ वंशे — — — — — — विरमेच तस्मिन्गुणैर्गरिष्ठोहि — — — सोमौ ॥ स्वतेजसा निर्जितसर्ववंशः पूर्वप्रसिद्धोत्र तु सिंधुपुत्रः ॥ १० ॥ ततश्चातीवतेजाचपुमान् यो रुधभू — — — —

णोल्लणाधार: सर्वाधाराय – विह ॥ ११ ॥ शाकंभरीपूर्वयदा पुरावै माणिक्यसंज्ञ: पुरुष: प्रवीर:॥ स्ववीर्यधैर्योर्जितभूमिभागो नद्देत – – – दलक्ष्मणोभूत् ॥ १२ ॥ ततोभूदधिराजास्य पुत्रस्तस्यपराक्रमी सोहीरक्कोशनोवंशे शोभिभूमौहितत्सुत: ॥ १३ ॥ महिदुर्महतांश्रेष्ठोवलीवलिकुलोद्वह: तदन्वयीचमतिमान्सिंधुराजोविराजते ॥ १४ ॥ प्रतापेनपदंप्रापन्महीं दोर्महदद्भुतं ॥ अभूत्तेषां कुलेशानां कुले कुलविवर्द्धन:॥ १५॥ रघुर्यथा वंशकरो हि वंशे सूर्यस्य शूरो भुविमंडले ग्रे ॥ तथावभूवात्रपराक्रमेण स्वनामसिद्ध: प्रभुरासराजा ॥ १६ ॥ तस्यभूदान्दणोमानी चाहुमानान्वयाधिप: ॥ कीर्तिपाल: सुतस्तस्मात्कीर्त्या ख्यातोऽखिल क्षितौ ॥ १७ ॥ अभूत्समरसिंहो नु नामार्थपरिपालक: ॥ समरेमृगराजेव निहता मृगमानवा: ॥ १८ ॥ समरसिंहसुतौ द्वौ सिंहशावाविवानुगौ ॥ तयोरुदयसिंहोभूद्दाताराज्यधुरंधर: ॥ १९ ॥ यो वै परोदानगुणैर्गरिष्ठस्तस्यात्मजो मानवसिंहनामा ॥ वभूव भूमौ किलक्षत्रियाणामनाथनाथो महतानुरूप:॥ २० ॥ ततो भवद्वंशविवर्द्धनो नु प्रतापनामा नयनाभिराम:॥ सदा स्वकीर्त्या किल चाहुमान: पूज्य: प्रतापानलतापि तारि:॥२१ ॥ तस्यात्मजोऽपूर्वगुणाधिवासस्त्वासीद्दशस्यंदननाममाप: ॥ वभार बीजानि तु बीजश्रेयोचत्वारिराज्यायहरे: प्रसादात् ॥ २२ ॥ याभूदतीवादितितेजतुल्यांस्तुल्यांस्तनूजान्सुपुवे हि वीरान् ॥ सा मल्लदेवी दयिता तु तस्य धराचरा भारवहान्वरिष्ठान् ॥ २३ ॥ ज्येष्ठो लावण्यकर्णोभूद्दृढलक्षणसंज्ञकौ ॥ लूणवर्मानुजस्तेपामग्रजोराजपालक: ॥ २४ ॥ चकारकर्माणिचयानिनान्यै गच्छंति सिद्धिं नियतं निरीह: ॥ नीते क्षयं क्षत्रवरे सुरेर्यौ स्वगोत्रगोपालपरायणोभूत् ॥ २५ ॥ लावण्यकर्णे नुगते तु नाकं भ्रातानुजो लूणिगदेवसंज्ञ: ॥ स्वब्राहुवीर्यार्जितसर्वदेशान् शशास शूर: कुलकल्पवृक्ष: ॥ २६ ॥ पुनर्गतान्ना पदरीन्निहत्य दैत्यानिवद्यो समरेऽमरीश: ॥ प्रापत्प्रतापादपरान्हिदेशान् चंद्रावतीं चार्बुददिव्यदेशं ॥ २७ ॥ न तेन तुल्य: समये च तस्मिं देशे समोय: समरे विभर्ति ॥ शस्त्रीवशंभू परमोपि येन साकंवराकोत्रहि लुंठिगेन ॥ २८ ॥ अकारिपुण्यानि पराक्रमंच युक्त्यार्वुदे चार्बुदमानवेश: ॥ निवेशयद्वै प्रतिमांगमूर्तिं राज्ञोस्यराज्यास्त्वचलेश्वराग्रे ॥ २९ ॥ एवं गुणागराचार: लुंढागरनरागर: ॥ कालावप्य करोदत्र जीर्णोद्धारं सुरेश्वरे ॥ ३० ॥ उद्धर्त्ता पुण्यतीर्थानां प्रासादानां नराश्रय: ॥ अर्बुदेऽपरनाकेतु नागराजाश्रयेसुधीं: ॥ ३१ ॥ तेन वै देवदेवस्य लचलेश्वरमंडप: ॥ जीर्णोद्धारस्य विधिना कारयित्वा प्रतिष्ठित: ॥ ३२ ॥ सर्वदात्रोपचर्यार्थं शासनेश्रद्धयान्वित: ॥ दत्तो सावचलेशस्य हेठुंजीग्राममग्रत: ॥ ३३ ॥ प्रीत्यर्थ मस्य सततं स्थितिकं वत्सरं प्रति॥ श्रद्धयोत्पन्न मचलमचलेशायदत्तवान् ॥ ३४ ॥ शन्नाप्रशस्ता विशदान्वयेन

द्विजेनजात्माजनितेन तेन ॥ स्थानाग्रजे नागर नागरेण यशक्षितांशेन महाधरेण ॥ ३५ ॥ कृतार्थ रूपार्थ विनाविनाभू र्तेनेयमेनोऽनवनाशनेन ॥ भवाभवा भावन भावभूतिनात्मात्ममोदोदयमोहितेन ॥ ३६ ॥ मांगल्यमस्तु ॥ संवत् १३७७ वर्षे वैशाख सुदी ८ सोमे – – संवत्सरेऽधेयचंद्रावतीं प्रतिबद्ध बहुणसमा वासित महाराजकुल श्रीलुंढागरे चंद्रावती प्रभृति देशेषु तथा यावतीपुर प्रति बद्ध द्विराजकुलाधिप – – संतोशितत्रिशुक्के श्रीकरणादिपागारे महं॰ देवसिंह प्रतिबद्ध देवकुल प्रतिपथे श्रीअर्बुदाचले देव्र श्रीअचलेश्वर महामंडपजीर्णोद्धा-रो महाराज श्रीलुंढापेन कारितः

(यह प्रशस्ति बहुत खंडित है, लेकिन् हमको जैसी मिली, वैसी ही यहां दर्ज कीगई है).

शेषसंग्रह, नम्बर १५

आबू परके श्री वसिष्ठके मंदिरकी प्रशस्ति.

ओंनमः श्रीवसिष्ठाय ॥ निर्दोषः सततोदितो मितकलः श्रीमान् कलंकोझ्झितः तल्यः पक्षयुगे पि हर्षितवपु र्मित्रप्रतापोदये ॥ अत्यंतं कविभिर्बुधैरनुदिनं संसेवितो भूरिभिः नव्यः को पि विराजते द्विजपतिः पाढ़िर्महादेवकः ॥ १ ॥ योमग्न : कलिकर्दमे कवलितः पाखंडिसलैरति क्रौरैः किंच गतः श्रुतिस्मृतिकथा वैकल्यम-भ्यागतः ॥ श्रीमत्पाढि धरासुरेण सुगणैरुद्धृत्यपुष्टिकृतः स्वच्छंदं परिबभ्रमी-तिभुवने दानैरन्नेकैर्वृषः ॥ २ ॥ विदितवचनतत्वा श्रीवसिष्ठाग्रभक्तः निखिल-भुवनकर्म्मा रंभनिर्वाहदक्षः ॥ अशुभ हरणधीरो धीरतां यः प्रयातः सजयति भुवनेवै श्रीमहादेवपाढिः ॥ ३ ॥ किंच ॥ सरस्वतीयस्य पुराजनित्री गोपालसूनुः सविराजते वै ॥ दाता द्विजानां सहजैकनिष्ठः श्रीमान्महादेव चिरायजीवी ॥ ४ ॥ गजांतापव्यतेलक्ष्मी र्ध्वजांतं यस्य कीर्त्तनं श्रीमद्वसिष्ठभुवनं स्वर्गाः दपि मनोरमं ॥ ५ ॥ गुरोः प्रासादान्मधुसूदनस्य नरोत्तमोवैपरमोगुरुर्मे ॥ तयोः प्रासादाद्भु-वनं सुरम्यं पश्यंतुलोकाः परमं पवित्रं ॥ स्वस्ति श्रीनृपविक्रमकालातीत संवत् १३९४ वर्षे वैशाष शुदि १० गुरावद्येह श्री चंद्रावत्यां चाहुमांनवंशोद्धरणधौरेय-राज श्री तेजसिंह सुतराज श्री कानडदेवे राष्ट्रं प्रशासति सति पाढि श्री महादेवेन इदं श्री वसिष्ठस्य धर्म्मायतनं कारापितमित्यर्थः ॥ तथाच चहुमान ज्ञातीयराज श्री तेजसिंहेन स्वहस्तेन ग्रामत्रयं दत्तं झांवटु १ द्वितीयं ज्यातुलिग्रामं २ तृतीयं तेजलपुर मिति ३ तथा च देवडा श्री निहुणाकेन स्वहस्तेन सीहलुणग्रामं दत्तं तथा राज श्रीकान्हडदेवेन स्वहस्तेन वीरवाडाग्रामं दत्तं तथा चाहुमान जातीय राज श्री सामतसिंहेन लुहुलि छापुली किरणथलु ग्रामत्रयं दत्तं ॥ शुभं भवतु छ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १६.

श्री वसिष्ठ मुनीजी.

संवत् १५८९ वर्षे वैशाष सुदि १५ गुरुवारे स्वस्ति श्री महाराज श्री अधिराज चिरंजीवी गत्रे भपकामना करावितं पाढि श्री रायमल करापितं पीरीजी स्वहस्त० २५०५ देवका घरू शुभंभवतुः

शेषसंग्रह, नम्बर १७.

आबूपरके माना रावके मन्दिरकी प्रशस्ति.

शाके नंदांकशक्रे जलनिधिदहन क्षोणिपे विक्रमाब्दे ज्येष्ठे मासि द्वितीया दिनकरदिवसे पूर्णतांप्राप्तएषः ॥ प्रासादश्चंद्रमौलेर्निजतनयवधु श्रेयसेकारितोद्रौ मात्राश्रीधारवाय्या नृपमुकुटमणेर्मानसिंहस्यराज्ञः ॥ १ ॥ राज्ञः श्रीमानसिंहस्य पत्नीपंचकसंयुता ॥ मूर्ति श्री मन्महेशस्य सदाराधनतत्परा ॥ २ ॥ हस्तयुग्मंतुसंयोज्य स्थितापुण्यवदग्रणीः ॥ सर्वपापापनोदाय चित्तैकाग्र्ययुता स्थिता ॥ ३ ॥ भुक्लाराज्यं तु धर्मेण देवडावंशसंभवः ॥ प्रभवः सर्वपुण्यानां मानसिंहस्य वर्मणः ॥ ४ ॥ श्री रामभक्तिनिरतः श्री शिवार्चनतत्परः ॥ शूरोदारगभीरात्मा मानसिंहो नृपाग्रणीः ॥ ५ ॥ ज्योतिर्विदानाथाख्येन लिखतं ॥ श्री अचलेश्वरोजयति ॥ श्रीमच्चौहाणवंशालंकारशौर्यौदार्यगांभीर्यधैर्याद्याश्रय श्रीमदुर्ज्जनशल्यस्तस्यात्मजः सकलराज गुणश्रेयः श्री मानसिंहः श्री मदर्बुदाचले श्री मदचलेश्वरचरणसेवारतः ॥ सर्वपापविमुक्तो यः सर्वपुण्यरतः सदा ॥ श्रद्धयापरयायुक्तः सेवते ह्यचलेश्वरं ॥ तस्येयं परमामूर्तिः पत्नीपंचकसंयुता ॥ कारिता शिवसेवार्यै धारवाय्या शिवालये ॥ स्वस्तिश्री मन्नृपविक्रमार्क समयातीत त्रयस्त्रिंशदधिक शोडश शततमे वर्षे पार्थिव नाम्नि संवत्सरे उत्तरायणगते श्रीसूर्ये ग्रीष्मर्तौ महामांगल्य प्रदे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वितीयायां तिथौ रविवासरे श्रीमदचलेश्वर सन्निधाने शिवभक्त्यर्थे शिवालयं कारयित्वा मात्रा श्री धारवाय्या सपत्नीकस्यश्रीमानसिंहस्य स्वर्गगतस्य मूर्तिः कारिता श्रीमानेश्वरपुत्रपुण्यर्थे श्रीमात्रा धारवाय्या नवीनं चैत्यं कारितं सूत्र जोधाकेनकारितं श्रीहर्षकमल कस्य लिपिरियं आचंद्रार्कौ नंदतात् गोत्रेपु वंशेपु पुण्यवृद्धिर्भवतु ॥ ॐ मंगलं भगवान् विष्णुः संवत् १६३३ वर्षे ज्येष्ठशुक्ला २ रविवासरे.

सूरे गोरवालेकी, जो ब्रह्मपुरीमें हरनाथकी बावड़ीके पास महादेवजीके मंदिरके बाहर चौंतरेपर है, उसकी नक़्ल.

सूरज. गाय, बच्छ. चंद्रमा.

स्वस्ति श्री महाराजा धीराज महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजी आदेशात्, प्रथम दुवे पंचोली विसनदास भट देवराम अपरंच, ब्रह्मपुरी राय श्री निवासरीमांहे ब्राह्मणे हुकमथी घर मांड्या जणीरी धरती तथा माहोमाह बामण घर वेचे जीरी जगात तथा लागत विलगत भट देवराम हे स्वस्ति भणावे दीधी, अबे ब्रह्मपुरीथी कणी-वातरी दरबाररी आड़ीरी चोलण नहीं व्हे, अबे कोई कामदार तथा कोटवाल ओरही कोई चोलण करे, तींहे श्री एकलिंगजी पोछे. बामण घर वेचे, तो न्यातरा न्यातहें बेचे; तीनवरणने वेचवा पावे नहीं. ब्रह्मपुरीमे कोटवाल नहीं आवे, राते चोकी सारु जाबता सारु आवे, इसो हुकम हो. संवत् १७८१ वर्ष सावण विद ६ बुदे. कर्कसंक्रांतरा पुण्यकाल माणे चीरो रोपावारो हुकम हुवो, उणीदिन जगात लागत विलगत तथा घर मांड्या ज्या धरती भट देवरामहे स्वस्तिभणावे उदक आघाट करे श्री-रामार्पण करे दीधी. श्रीदरबाररी आड़ी शिवनिर्माल्य है, राय श्रीनिवासरी पुलाथी तला-वरा ओटाथी गोलेरा अषाडा विचे ब्राह्मणारा घर है, यांरी सब लागत छूटरो हुकम है.

छप्पय.

मिहर बंश मणिमौलि अमर पत्तन अमरेश्वर ।
उच्चाशन आरूढ़ भये संग्राम नरेश्वर ॥
पुर, मांडल, ले पटा मुगल सासन मेवाती ।
रान शुभट चखरत्त कढ़े तिन पे केवाती ॥
रन बाज़ ख़ान नाहर मरन अरु जोरावर उव्वरिय ।
अति कोप साह आलम अखिल भांति जहर घुट्टन भरिय॥ १॥
साह सु फ़र्रुख़सियर ख़ास अच्छर दल पठ्य ।
जिज़िया जारी करन रान रोखानल कठ्य ॥
दूत बिहारी दासगौन दिल्लिय पुर किन्नो ।
फ़र्रुख़सें फ़रमान रामपत्तन हठलिन्नो ॥
रठ्ठोरवंश दुग्गाशुभट वडपनाह दै त्वव्वर ।
जगतेश कँवर व्याहन जवहि लौना पुर चालुक्य घर ॥ २ ॥
बीडर ईडर विखम राख हीडर रठ्ठोरन ।
लीडरपाय पनाह वड़े तोरन जलवोरन ॥

रामपुरा जागीर लेख माधव हित किन्नो ।
रच जयसिंह फ़रेव दाव कग्गर 'लिखादिन्नो ॥
संग्राम सकल कारज व्यशद भावी राजन हित भये ।
परलोक वास हाहा परव सुत कलत्र नामहि ठये॥ ३ ॥
कुल चन्द्रावत कथा राम पत्तन जिम जेसी ।
ईडर धर इतिहास तास लेखिय तिम तेसी ॥
गिरपुर अन्वय गहर बंश पत्तन घर वत्तन ।
देवलिया पुर दिग्घ कथा शूरे उन मत्तन ॥
चहुवान थान अव्वुव चरित मिट्टत बल मुगलानको ।
जिम जहांदार फ़र्रुख़सियर मरन करन जन हानको ॥ ४ ॥
कछु दिन रफ़िउश्शान कछुक दिन रफ़िउद्दौला ।
शाह मुहम्मद शाह हसन अछिय खत खोला ॥
ईरानी अवनीश शाह नादिर वढ़ आवन ।
सुपह अहम्मद शाह परे घर केद अपावन ॥
आलम्मगीर सानी अधिप शाहजु आलिम नाहशो ।
सानीय अकव्वर साहवह पिनसन पावत माहशो ॥ ५॥
ताहि वहादुर शाह परमसुख पिन्सन पावन ।
मिल सिपाह वदमाश, मुगल थल बंश गमावन ॥
फिर लिख संग्रह शेष रान संग्राम पव्व इम ॥
वानिक वीरविनोद जानि कविराज श्याम जिम ॥
सज्जन महीप आशय सकल किलसासन फ़तमालको ॥
इतिहास खंड निज मति अनुग किय अंकित हित हालको ॥६॥

महाराणा संग्रामसिंह २,

ग्यारहवां प्रकरण समाप्त.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १७९० माघ कृष्ण १३ [हि० ११४६ ता० २७ शब्बान = ई० १७३४ ता० २ फ़ेब्रुअरी] को, और राज्याभिषेकोत्सव विक्रमी १७९१ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० ११४७ ता० १२ मुहर्रम = ई० १७३४ ता० १५ जून] को हुआ; लेकिन् राज्याभिषेकोत्सवके पहिले ही इनको मरहटोंके बारेमें फ़िक्र होचुकी थी, क्यों-कि महाराणा अमरसिंह दूसरेके वक्तमें पीपलियाके ठाकुर शक्तावत बाघसिंहको मरहटोंके पास बतौर एल्चीके भेजा गया था, जिसको साहू राजाने बड़ी ख़ातिरके साथ रक्खा. महाराणाको सिताराके राजा, अपना मुरब्बी जानते रहे; लेकिन् फिर साहू राजाके नौकर पेश्वा, हुल्कर, सेंधिया, व गायकवाड़ वगैरह बख़िलाफ़ व ज़बर्दस्त होगये. महाराणा संग्रामसिंहने मलहार राव हुल्करके साले नारायण रावको बूढ़ाका पर्गनह जागीरमें दिया था; जब मलहार राव हुल्कर बच्चा रहगया, तब उसकी मा उसको अपने भाई नारायण रावके पास लेगई, जो ख़ान्देशका बड़ा ज़मींदार था; नारायण रावके एक

बेटा और एक बेटी थी; बेटेका नाम बापके नामपर ही नारायण राव हुआ, और बेटीका नाम गौतमा बाई था, जो दक्षिणियोंकी रीतिके अनुसार मल्हार रावको ब्याह दी गई. यह नारायण राव, महाराणा उदयपुरका नौकर बना. इस सबबसे कि मरहटोंकी उन दिनोंमें बहुत कुछ तरक़ी होगई थी, और सिताराके सम्बन्धसे महाराणाको वे लोग अपना सर्परस्त जानते थे, यह जागीर नारायण रावको मिली.

नारायण राव कुछ दिनों बाद महाराणाकी ख़िदमत छोड़कर दक्षिणको चला गया, लेकिन् मरहटोंके लिहाज़से महाराणा इस जागीरकी आमदनी हमेशह उसके पास पहुंचाते रहे. इस तरहका इत्तिफ़ाक़ मरहटोंका पेश्तरसे मेवाड़के साथ था; अब इस वक़ मुहम्मद शाहकी बादशाहतमें ज़ोफ़ आगया, तो उनके नौकर आपसकी फूटसे एक दूसरेके ग़ारत करनेके लिये मरहटोंको उभारते थे; यहां तक कि नर्मदा उतर कर मालवामें वे लोग हमलह करने लगे. महाराणा जगत्सिंह २ को भी इस समय बहुतसे विचार करने पड़े; अव्वल यह कि बादशाहतका ज़ोफ़ है, इस समय मुल्क बढ़ाना चाहिये; दूसरा यह कि मालवापर मरहटे मुख़्तार होगये, तो मेवाड़के पड़ौसी होकर हमेशह दंगा फ़साद करेंगे; इस वास्ते कुल राजपूतानहके राजा एक मत होकर मालवापर क़ब्ज़ह करलेवें, तो उम्दह है. आंबेरके महाराजा सवाई जयसिंहको भी यह बात अपेक्षित थी. विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] के अह्दनामहसे महाराजाके छोटे बेटे माधवसिंह, जयपुरकी गद्दीका दावा करनेका हक़ रखते थे, जिससे उनके बड़े बेटे ईश्वरीसिंहका दरजह ख़ारिज होता था. महाराजाका ख़याल था, कि अगर मालवाका कुछ हिस्सह भी हाथ लगे, तो माधवसिंहके लिये रामपुरेकी जागीरके शामिल करके बड़ी रियासत बना दीजावे. जोधपुरके महाराजा अभयसिंहको यह लालच था, कि मरहटोंको इधरसे दबादिया जावे, तो गुजरातको मारवाड़में मिलानेसे बड़ी रियासत बनजावे.

इन सबबोंसे तीन रियासतोंका एक इरादह होगया, कि मरहटोंके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई कीजावे; कोटा, बूंदी, करौली, शिवपुर, नागोर, और कृष्णगढ़के, छोटे बड़े राजाओंने भी अपना मत्लब सोचकर महाराणाके शरीक होना चाहा. सब लोगोंने इस कामका सर्गिरोह महाराणा जगत्सिंह २ को ख़याल किया; क्योंकि टूटी कमान दोनों तरफ़ डराती है. दूसरे राजाओंको बिदून बादशाही हुक्मके कोई कार्रवाई करनेमें ख़ौफ़ था. अब यह विचार हुआ, कि सब राजा किस जगह इकट्ठे होकर इस बातका अह्द व पैमान करें; तब वकीलोंकी मारिफ़त यह बात क़रार पाई, कि मेवाड़की हदपर यह बड़ी कौन्सिल इकट्ठी हो. मरहटोंको निकालनेके लिये पहिले कुछ हिक्मत अमली कीगई, कि मालवा ख़ाली करदेनेके वास्ते पांच लाख रुपये उनको दियेगये, जैसा कि नीचे लिखे हुए दोनों काग़ज़ोंसे ज़ाहिर होगा.

कागज़ पहिला,

महाराणाके धव्वा राव नगराजका.

सीध श्री जथा सुभसुथानै सरबओपमा राज श्रीमलारजी राज श्री राणुजी राज श्री अणन्द रावजी जोग्य, विजेलसकर थे धाय भाईजी श्री राव नगराजजी लीखावतु जुहार बांच-जो जी, अठारा स्माचार भला है, राजरा सदा भला चाहजे जी, अप्रंच- सुबा मालवारा काम बाबत रुपीया पाच लाखरी श्री म्हाराज थे, म्हे नीस्यां लीवी है, सो तीरी वीगत देणारी तफ़सील-

३०००००) अखरे तीन लाख तो थारी सारी फ़ौज गुजरातकी हदमे जाय पोहता, देणा सो या कबज म्हारी पाछी लीया नीस्या करनी.

२०००००) अके दोय लाष मास १ एकमै देणा, ती मधै पींडत चिमना जी मालवारा सुबामै थी काट लेवेगा; तथा उजाड़ बीगाड़ नुकसान करैगा, सो ईणा रुपयामै भरे लीवायगो.

५०००००) अंके पाच लाख.

मालवारा सुबामै चीमनाजी उजाड़ बीगाड़ करेगा, तो ईणा रुप्यामै भरे लेवारो श्री महाराजा धीराज म्हा तीरे लीखो कराय लीयो है; सो मुवाफ़िक़ क़रारके चालोगा; आप-सका बोहारमें कांई खत(रो) न आवे, सो कीजो. म्हें ईत्री बात कीधी है, सो एक थाका भाईचारा वासते करनी पडे है. मी० चैत वदी ९ सं० १७८९ सदर हु रुपयामे वसूल रुपीया ३००००० तीन लाख पोंहचा. मि० चैत सुद १२ सं० १७९०

ऊपरके कागज़का जवाब.
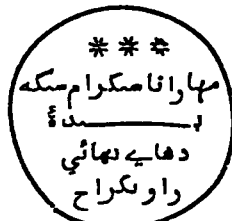
सिध श्री सर्व उपमा जोग्य, राज श्री धायभाई राव नगराजी एतान, लीखायत राज श्री मलार राव होलकर व राणोजी सींदे व अनंद राव पंवार केन राम राम बंचणा; अठाका समाचार भला छे, राजरा सदा भलाई चाहीजे जी, अप्रंच- रुपीया पांच लाख नगदी बाबत सुबे मालवा तीमे रुपीया दोय लाख बाकी था, सो बापुजी प्रभुके साथ मेल्या, सो पोंहचा; जुमले पांच लाख रुपीया पोहचा; घणो कांई लिखां. मिती जेठ सुध २ संमत १७९०

मुहर.

यह ऊपर लिखेहुए रुपये महाराणाके धायभाई नगराजने जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहकी तरफ़से भेजे थे, और उक्त महाराजाने यह खर्च बादशाही ख़ज़ानहसे

लिया था; लेकिन् मरहटे उक्त रुपये लेनेपर भी मालवाको छोड़ना नहीं चाहते थे; तब महाराणाने अपनी राजकुमारी ब्रजकुंवर बाईका विवाह कोटाके महाराव दुर्जन-शालके साथ विक्रमी १७९१ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० ११४७ ता० २३ मुहर्रम = ई० १७३४ ता० २६ जून] को करदिया, और आप मए महारावके उदयपुरसे रवानह होकर मेवाड़की उत्तरी हृदपर हुरड़ा गांवमें पहुंचे; उसी जगह महाराजा सवाई जयसिंह भी आ गये; इसी तरह जोधपुरके महाराजा अभयसिंह, नागौरके राजा बख़्तसिंह, बूंदीके रावराजा दलेलसिंह, करौलीके राजा गोपालपाल व बीकानेर, कृष्णगढ़ वगैरह के छोटे बड़े राजपूतानहके राजा लोग महाराणासे आ मिले. इस वक़ महाराणाके लाल डेरे देखकर जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने भी अपने लिये लाल रंगका डेरा खड़ा करवाया; ख़बरनवीसोंने यह बात मुहम्मद शाहको लिख भेजी; बादशाहने जोधपुरके वकीलको बुलाकर पूछा, वकील होश्यार आदमी था, जिसने अर्ज़ की, कि बादशाहत का बन्दोबस्त करनेको सब राजा इकट्ठे हुए, लेकिन् सलाह करनेके लिये एक दूसरे के डेरेपर नहीं जा सक्ता था, इसलिये महाराजाने बादशाही दीवानख़ानह खड़ा करवाया, जिसमें सब राजा बैठकर सलाह करें. यह सुनकर बादशाह ख़ुश हुआ.

हुरड़ाके मक़ामपर सब राजाओंकी सलाहके मुवाफ़िक़ एक अह्दनामह लिखा-गया, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है :-

सीरदारांरो लीखतरो.

॥ श्री ॥

स्वस्ती श्री सारा सीरदार भेला होय या सल्हा ठेरावी, सो ईणां बातां मांहे तफावत न होय. सं० १७९१ सांवण वदी १३ मुकाम गाम हुरड़े. वीगत-

१ सारांरी एक बात, भलाही बुराही मांहें सारा तफावत न करे, जणीरा सुह सपत कीया, धरम करम थी रेवे, मुख सारांरी लाज गाल एक जणी सारी बात.

१ हराम पोर कोई कणीरो राखवा पावे नहीं.

१ बाद बरसात काम उपज्यां रामपुरे सारा सीरदार जमीत सुदी भेला व्हे, कोई सरीर रे सबब न आवे तो डीलरी बदली कुंवर तथा भाई आवे.

१ जणी कुमरा लोग मांहे चुक बांक थे सीरदार चुकावे, पण और दखल न करे.
१ काम नवो उपजे, तो सारा भेला होय चुकावे- सं० १७९१ वर्षे.

इसके बाद महाराणा जगत्सिंह राजधानी उदयपुरको आये, और दूसरे राजा अपनी अपनी रियासतोंको पीछे गये, इस शर्तपर कि बाद बर्सातके कार्रवाई कीजावे. बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करमें मिश्रण सूर्यमल्लने हुरड़ामें उक्त राजाओंका इकट्ठा होना कार्तिक महीनेमें लिखा है; लेकिन् यह नहीं होसक्ता, क्यौंकि हमने अस्ल अह्दनामहकी जो नक़्ल ऊपर लिखी है, उसकी मिती देखलेना चाहिये. इस सलाहका फल, जैसा कि चाहिये था, न हुआ; क्यौंकि महाराणा जगत्सिंह तो ऐ़श व इ़श्रतको ज़ियादह चाहते थे, और उनके सर्दारोंमें आपसका रंज बढ़ता जाता था, इसपर भी भान्जे माधवसिंहका फ़साद इस रियासतमें ऐसा घुसा, कि जिससे दिन ब दिन कमज़ोरी बढ़ती गई.

विक्रमी १७९२ पौष [हि० ११४८ शअ़्बान = ई० १७३५ डिसेम्बर] में महाराणाने शाहपुरापर चढ़ाई की. इसके कई सबब थे, अव्वल वहांके महाराज उम्मेदसिंहने, जिसको महाराणा संग्रामसिंहने कई दफ़ा धमकाया था, इस समय उक्त महाराणाका परलोक वास होनेसे सर्कशी इख्तियार की, और मेवाड़के दूसरे जागीरदारोंको तक्लीफ़ देने लगा. महाराणाके समझानेका कुछ असर न हुआ, तब महाराणाने बड़ी फ़ौजके साथ शाहपुराको जा घेरा. यह ख़बर सुनकर जयपुरसे महाराजा जयसिंहने भी महाराणाकी मददके लिये कूच किया. यह मुआमलह ऐसा न था, कि जयपुरकी मदद दर्कार हो, लेकिन् महाराजा सवाई जयसिंहका यह इरादह था, कि शाहपुरा उम्मेदसिंहसे छीनकर माधवसिंहको दिलादिया जावे, जिसको महाराणा भी मंजूर करेंगे. इसमें पेच यह था, कि रामपुरा तो महाराणासे माधवसिंहको दिलाया गया, और शाहपुरा फिर दिलाकर रामपुरासे इलाक़ह मिला लिया जावे. इस बड़े इलाक़हके एक होजानेसे जयपुर तक कछवाहोंका राज्य एक होगा, और कोटा व बूंदीके राजाओंको भी अपने राज्यके शामिल करलेवेंगे, जिस तरह शैखावतोंको मातहत करलिया था. इन दिनों महाराजा जयसिंहका इरादह मालवाको तह्तमें करनेका कम होगया था, क्यौंकि उधर मरहटे ग़ालिब थे, इसलिये यह पेच उठाया गया, कि रामपुरा तक जयपुरकी हद बढ़ाई जावे. यह बात बेगूंके रावत् देवीसिंहके कान तक पहुंच गई थी, जो महाराजा सवाई जयसिंहका मुख़ालिफ़ और मेवाड़का ताक़तवर सर्दार था; वह फ़ज्रमें महाराणाके पास गया, और एक कबूतर उनके साम्हने छोड़ दिया, जिसका एक तरफ़का पर तोड़ा हुआ था; वह कबूतर उड़ना चाहता था, और गिरजाता. महाराणाने पूछा, तो देवीसिंहने कहा, कि यही हाल मेवाड़का है, जिसका एक पर

सलूंबर और दूसरा शाहपुराको जानना चहिये; फिर सवाई जयसिंहकी दग़ाबा
सब हाल भी कह सुनाया. रावत् देवीसिंहकी मारिफ़त राजा उम्मेदसिंह महारा
ख़िदमतमें हाज़िर होगया इससे महाराणाने एक लाख रुपया फ़ौज ख़र्च लेकर श
पुरासे घेरा उठालिया. यह ख़बर सुनकर महाराजा सवाई जयसिंह पीछे लौट गये.

इन्हीं दिनोंमें मुहम्मदशाहने मालवाकी सूबहदारी बाजीराव पेश्वाके नाम ि
भेजी, महाराणाने भी मरहटोंसे मिलकर अपना मत्लब निकालना चाहा; और
तख़्तसिंह, महाराणा जयसिंहोतको भेजकर पेश्वाको उदयपुर बुलाया. उ
चंपाबाग़के पास डेरा किया. मुलाक़ातके बारेमें उससे कहा गया, कि तुम सित
नौकर हो, और उदयपुरकी गद्दीपर सिताराका राजा भी नहीं बैठ सक्ता, इसलिये
प्रधानकी बराबर तुम्हारी इज़्ज़त की जायगी. तब पेश्वाने कहा, कि मैं ब्राह्म
इसलिये कुछ इज़्ज़त बढ़ाना चाहिये. इस बातको महाराणाने मन्ज़ूर करके अ
गद्दीके साम्हने दो गदेले रखवा दिये, एक पर बाजीराव पेश्वा और दूसरे पर महारा
पुरोहित बिठाया गया. बात चीत होनेमें यह क़रार पाया, कि मरहटे लोग महारा
साहू राजाकी जगह अपना मालिक जानकर हुक्मकी तामील करते रहेंगे. वंशभा
में सूर्यमल्लने लिखा है, कि पेश्वाको जगमन्दिर देखनेके लिये बुलाया, तब लो
उसके दिलपर दग़ाबाज़ीका शक डाला, जिसपर वह बहुत नाराज़ हुआ,
महाराणाने पांच लाख रुपया देकर पीछा छुड़ाया; परन्तु यह बात हमको लिख
अथवा जनश्रुतिसे दूसरी जगह नहीं मिली. उसी दिनसे उदयपुरका राज्य पुरो
महाराणाके साम्हने आसनपर बैठता है. पेश्वा विदा होकर जयपुरकी तरफ़ चला
और उसने दिल्ली तक लूट मार मचाई, जिसका हाल महाराणा संग्रामसिंह २ के वय
लिखा गया है.

शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहने जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहकी दग़ाबाज़
हाल जानने बाद जोधपुरके महाराजा अभयसिंहसे स्नेह बढ़ाया. महाराजा अभयसि
उम्मेदसिंहकी मदद की, उसके कई कारण थे, अव्वल महाराजा जयसिंहसे ि
अदावत, दूसरा ज़िले अजमेरके राठौड़ जागीरदार जोधपुरके मातहत होगये
और अभयसिंह भी उसे अपना समझते थे, इस सबब सावरके ठाकुर इन्द्रसिं
महाराणा जगत्सिंह तो अपना मातहत ख़याल करते, और अभयसिंह अपनी म
हतीमें लेना चाहते थे, जिससे उम्मेदसिंहको अपनी तरफ़ करलेना मुफ़ीद ज
विक्रमी १७९४ [हि० ११५० = ई० १७३७] में अभयसिंह उम्मेदसिंहको अ
साथ दिल्ली लेगये, और मुहम्मदशाहसे उनके बाप राजा भारथसिंहके एवज़ ख़िल्
व राजाका ख़िताब दस्तूरके मुवाफ़िक़ दिलाया. फिर नादिरशाह ईरा

हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की, जिसका मुफ़स्सल हाल ऊपर लिखागया. उस लड़ाईमें शरीक होनेके लिये महाराजा जयसिंह व अभयसिंहको मुहम्मदशाहने फ़र्मान भेजा, लेकिन् दोनोंने टाल दिया. इस बारेमें एक काग़ज़की नक़्ल, जो शाहपुरासे आई, हम नीचे दर्ज करते हैं:-

शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहके नाम, मेड़तासे उनके

वकील गुलाबका काग़ज़.

अपरंच, अठे इसी बात हुई छै, बादशाह बुलाया, महाराजा अभयसिंहजीने तथा जयपुर जयसिंहजीने. जब या दोनों राजावां सलाहकर बादशाहजीके नामें अरजी लिखी, अभयसिंहजी तो महाराज जयसिंहजीका माणसांने गढ़ रणथम्भोर बखशे, और पचास लाख रुपया खरचीका बखशे, जीसूं जयसिंहजीने लेर हज़ूर आऊं; और महाराज जयसिंहजी अरज लिखी, सो महाराज अभयसिंहजीको गुजरातका तो सूबा बखशे, और पचास लाख रुपया खरचीका बखशजे, जो महाराजा अभयसिंहजीने लेर हुजूर आऊं. ई तरां दोनो राजावां ऊपर लिखी हुई बातां लिखी छै; और महाराज अभयसिंहजीके और महाराज जयसिंहजीके मुलाकात होवाकी बहुत ताकीद होरही छै; मगर श्री दिवाणजीको लिख्यो आयो है, सो बस्तपंचमीने आय मिलस्यां. सो जाणवासे तो वस्तपंचमीने तीनो राजावांकी मुलाकात होसी.

सेखावत सार्दूलसिंहजी ऊपर महाराज जयसिंहजीकी फ़ौज गई छी, अर अठी सूं बख्तसिंहजीकी फ़ौज सार्दूलसिंहजीकी मदद गई छी; सो महाराज जयसिंहजीको लिख्यो अठे महाराजके नाम आयो छो, जींमें लिखी छी, के या फौज महाराजका हुक्म सूं गई छे, या बखतसिंहजी मोखली छे; और फ़ौज बखतसिंहजी ही मोखली होय, तो म्हाने लिख्यो आजावे; सो बखतसिंहजी सूं नागोरका परगणां सूं समझल्यां; और श्री हजूरसुं या भी मालूम होय, सो पहली भणायका मुकाता तावे अरज लिखी छी, जींको जवाब अब तक इनायत हुवो नहीं, सो जाणवामें आवे छै, सो श्री हुजूरकी सलाहमें आई नहीं होसी. अठे भी ई बातकी ताकीद छै, जीसूं श्री हुजूरने अरज लिखी छै; श्री हुजूरको हुक्म आ जावे, तो भणायका मुकाताकी रद बदल कर कमी बेशी कराय लेवां; और श्री हजूरको हुक्म न आवे, जद ई बातकी चरचा करां नहीं; और कंवरजी जालमसिंहजी पर श्रीमहाराज विशेष महरबान् है. संवत १७९५ पोष बद १४.

दिल्लीके बादशाहोंकी दिन बदिन बर्बादी देखकर राजपूतानहके राजा और ही घड़ंत घड़ रहे थे, लेकिन् कभी ख़याली पुलावसे भूक नहीं जाती; आपसकी फूटने उस इच्छाको पूर्ण नहीं होने दिया. महाराजा अभयसिंहने कुछ अर्से बाद विक्रमी १७९७ वैशाख [हि॰ ११५३ सफ़र = ई॰ १७४० एप्रिल] में बीकानेरपर चढ़ाई करदी, और महाराणा जगत्सिंहके बड़े कुंवर प्रतापसिंह जोधपुर शादी करनेको गये, जो महाराजा अजीतसिंहकी बेटी सौभाग्य कुंवरके साथ शादी करके पीछे चले आये. महाराजा सवाई जयसिंहने सब राजाओंकी मददसे जोधपुरको जा घेरा; महाराणाने भी उनकी मददके लिये अपने मातहत सर्दार सलूंबरके रावत् केसरीसिंह को जमइयतके साथ भेज दिया; महाराजा जयसिंहने सब राजाओंको, जो दम दिया था, उस बातको छोड़कर फ़ौज ख़र्च लेनेपर घेरा उठा लिया; और महाराणा जगत्सिंह भी, जो पुष्कर यात्राके बहानेसे रवानह हो चुके थे, इन सब राजाओंसे शौक़िया मुलाक़ात करके पीछे अपनी राजधानीको आये. महाराज बख़्तसिंह, महाराजा सवाई जयसिंहकी फ़िरेबी कार्रवाईसे ना ख़ुश होकर अपने भाई अभयसिंहसे मिलगये, और दोनों बड़ी फ़ौजके साथ जयपुरकी तरफ़ चले; ज़िले अजमेर गगवाणा गांवमें सवाई जयसिंहसे मुक़ाबलह हुआ, जिसमें बख़्तसिंहको भागना पड़ा, राजा उम्मेदसिंहने उनका अस्बाब मए सेवाकी हथनीके छीन लिया. इससे लड़ाईका नतीजह यह हुआ, कि अभयसिंह और बख़्तसिंहमें ज़ियादह रंज बढ़ गया. इन आपसकी ना इत्तिफ़ाक़ियोंसे हर एक आदमी मरहटोंकी मदद ढूंढने लगा, जिससे दक्षिणी ग़ालिब होकर इनपर हुकूमतका डंका बजाते थे. अगर हुरड़ा मक़ामके अह्दनामहकी तामील होती, तो राजपूतानहको ज़रूर फ़ायदह पहुंचता, लेकिन् बीकानेर व नागोरसे जोधपुरकी ना इत्तिफ़ाक़ी और जयपुरके महाराजाकी दग़ाबाज़ीसे बूंदी व कोटाकी तबाही और माधवसिंह ग़ैर हक़दारको हक़दार बनाकर अपना बड़प्पन दिखलानेमें महाराणाकी कोशिशने राजपूतानहको ऐसा धक्का दिया, कि गवर्नमेन्ट अंग्रेज़ीके अह्द तक सब दुःख सागरमें ग़ोता खाते रहे.

ईश्वर एक ढंगपर किसीको नहीं रखता, इन्हीं क्षत्रियोंके पूर्वजोंने इस भारतवर्षका बड़प्पन चारों तरफ़ ज़ाहिर किया; फिर मुसल्मानोंने इनकी आज़ादी छीनकर अपनी हुकूमतका डंका बजाया; और थोड़े दिनों तक पहाड़ी बर्साती नालेकी तरह मरहटोंने भी अपना ज़ोर शोर बतलाया; अब गवर्नमेन्ट अंग्रेज़ीकी आईनी राज्यनीति प्रकाशित होरही है. इन बातोंके देखनेसे मनुष्यको ईश्वरकी कार्रवाइयोंपर धन्यवाद करना चाहिये. इन्हीं दिनोंमें फिर महाराणाके मातह्त उमराव सलूंबरके रावत्

कुबेरसिंहने राजपूतानहको एक मत करनेका उपाय किया, और एक ख़ानगी अर्ज़ी महाराणाके नाम लिख भेजी, जिसकी नक़्ल हम नीचे लिखते हैं:-

सलूंबर रावत् कुबेरसिंहकी अर्ज़ीकी नक़्ल.

श्रीरामजी.

समाचार—————————————————

१ श्रीजीरो षास दसपतां रुको आयो, सो माथे चडाय लीधो राज; श्रीजी हुकम कीधो, सो कछवाहा दगापोर है, सो श्रीजी तो प्रमेसर है, ए दगापोर है, तो ईणांरो बुरो होयगो; पण केबामें तो तथा राषे नु हे, ने श्री जेसीघजीरा पटारो गनीम जुआ पाड़े, नें सुलझाड़ करे; हुं हजुर आवुंसु राज; नें नरुको हरनाथसींघ नें वीध्याधर बामणनें लेनें श्रीं हजुर आऊं हुं. मोने रुको मया व्हे, तो विद्याधर ने नरुका हरनाथसिंघहे लेने आऊं; जरे कांई चींता रापो मती. ईणांरा पग आगानुं पड़े है, जणी थी रुकारो हुक्म व्हे, ने रुको १ नरुका हरनाथसीघरे नामे हुक्म व्हे, सो थारी सुफारस रावत् कुबेरसीघ लीषी, सो राजने याही जोग है; ने रुको १ वीद्याधररे नामे, सो रावत कुबेरसीघ साथे नचीत आवजो, कोई चींता राषो मती, माधोसीघजीरे वासते तो थांनें रावत कुबेरसीघ समझाया ही होसी. ईसो रुको वीद्याधर बामणने लीषाय राज आपरे ने कछवाहांरे माहो माह मेल ठेराय ने हींदुस्थान ऐक करे ने गनीम तींरें थी मालवो षोसे लेणो; ने मालवारा बांटा ५ करणा, सो बांटा २ तो श्रीजीरा, ने बांटो १ राठौड़ांरो, ने बांटो १ कछवाहांरो, अर बांटो ॥ हाड़ांरो, अर बांटो ॥ मे प्रचुनी हींदु. इनी वातरा सूंह सपत हुवा हे; ने श्रीजी डेरो मनदसोर करणो, नें मुकासदारांने गनीम नरबदा ऊतरेने लुटे लेणा; ने पेहली कछवाहां लुटे ने मारे, पछें सारा ई गनीमारा मुकासदारां थी षरा पोटा व्हेणो. ईणी थाप ऊप्रे वीद्याधरहे हजुर ल्याऊं हुं राज. ऐ रुको अरजदास कठे ही जाहर नु होय राज. पींडत गोवंद थी ललो पतो होये, पण पईसा भराय नी; ने श्रीजी हजुर आवे नें पछें जायने राजाजी श्रीजी हजुर आवे, नें श्रीजी नें राजाजी भेला व्हे नें हुरड़े पधारे; नें म्हारावजी राजा अभयसींघजी तींरे जायने लावे, नें हुरड़े मीलेनें सीरदार भेलारा भेला मालवा सारु चाले राज. फागण वदी १४-

पानों दूजो.

श्रीजी हजुर मालंम व्हे राज, श्रीजी सलांमत, मालवामें मुकासा वे, सो उठावे देणा; अर श्रीजी बंट करेदे, जणीं प्रमांणे के ईसी अरज करे हे; सो श्रीजी प्रमेसर हे; पण म्हांरे माथे हाथ देनें जतन करावजे, ने ए स्माचार फुटवा पावे न्हीं राज; ने म्हारावजी
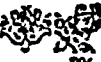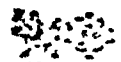
पण वेगाई श्रीजी हजुर आवे हे राज, सो हकीकत म्हारावजी मालम करेगा राज; ने वुन्देला तीरे श्री द्रवाररी आड़ी थी तो व्यास रुघनाथ, ने म्हाराजरी आड़ी थी व्यास राजारामरो भाई, म्हारावजीरी आड़ी थी पांडेरावरो जमाई, वुंदेला थी वातरे वासते मोकलाय, अर माने के से जो; व्यास रुघनाथजीने मोकलो, जणी थी वीगर हुकम म्हे त्यारी कीधा हे.
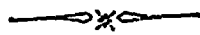
यह अर्ज़ी सलूंवरके रावत् कुबेरसिंहने जयपुरसे लिख भेजी थी, परन्तु इस सलाहका भी कोई नेक नतीजह नहीं दिखलाई दिया. कहांवत है, "मनके लड्डू फीके क्यों". महाराजा सवाई जयसिंहका तो किसीको एतिवार नहीं था, जिसकी इसी काग़ज़से तस्दीक़ होती है; और महाराणाके उमरावोंमेंसे भी हर एक आपसकी फूटसे दूसरेकी कार्रवाईको विगाड़ता था. इस ग्रन्थ कर्ताने अपने पिताकी ज़बानी सुना है, कि विक्रमी १७९७ [हि० ११५३ = ई० १७४०] में सलूंवरके रावत् केशरीसिंहके देहान्तके समय देवगढ़का रावत् जशवन्तसिंह आराम पूछनेके लिये गया, तव केशरीसिंहने अपने वेटों और रावत् जशवन्तसिंहसे कहा, कि भाई भाई आपसमें स्नेह रखना. उक्त रावत् पीछा लौटा, तव उसके आदमियोंमेंसे एकने कहा, कि केशरीसिंह मरते वक्त डरपोक होकर हमारे मालिकको अपने वेटोंकी भलामन देता है. यह वात केशरीसिंहने उसी वक्त सुन ली, और जशवन्तसिंहको पीछा वुलाकर कहा, कि मैंने वह वात मामूली तौरपर कही थी, वर्नह तुमको इष्टकी क़सम है, मेरे वेटोंके साथ अच्छी तरह दुश्मनी रखना, मेरे वेटे भी उसका वदला व्याज समेत अदा करेंगे. जशवन्तसिंहने अपने आदमीकी वेवकूफ़ी ज़ाहिर करके वहुत लाचारी की, लेकिन् उसका गुस्सह कम न हुआ, और उसी हालतमें दम निकल गया.

जव मुसाहिवोंमें इस तरहकी अदावत हो, तो रियासतका इन्तिज़ाम कव होसक्ता है? इसके अलावह वेगम और देवगढ़में, वेगम व सलूंवरमें, आमेट व देवगढ़में, और इन चारों चूंडावतोंके ठिकानों और भींडरमें फ़सादोंकी वुन्याद क़ाइम होगई थी; इससे ज़ियादह चहुवान व चूंडावतोंमें व झाला व चूंडावतोंमें भी विगाड़ था; और यही हाल राजधानीके अह्लकारोंका होरहा था; कायस्थ और महाजनोंमें, और कायस्थोंके आपसमें भी ना इत्तिफ़ाक़ी फैल रही थी. इनके सिवाय गूजर धायभाई अपनेको जुदाही मुसाहिव ख़याल करते थे; यहां तक कि एक हाथीका महावत फ़त्हख़ां भी महाराणाका मुसाहिव वनगया. इतने ही पर ख़ातिमह न हुआ, महाराणा और उनके वलीअह्द प्रतापसिंहमें भी विरोध वढ़ने लगा. इस विरोधकी वुन्याद भी सर्दार व अह्लकारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ी थी; क्योंकि महाराणाके मुसाहिवोंसे
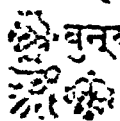
वलीअ़हदके मुसाहिब और वलीअ़हदके मुसाहिबोंसे महाराणाके मुसाहिब डाह रखते थे. वलीअ़हदकी उम्र तो अठारह वर्षकी थी, लेकिन् वह बदनके बड़े मज्बूत, ज़बर्दस्त व दीदारू थे; उनसे कुश्ती करनेकी ताक़त पहलवानोंको भी नहीं थी; जिस पत्थरके मुद्गरको वे एक हाथसे सौ सौ दफ़ा आसानीसे घुमाते थे, और जो अब खीच मन्दिरके बाहर पड़ा है, उसको बड़ा ताक़तवर पहलवान दोनों हाथोंसे एक बार नहीं घुमा सक्ता.

महाराणाको फ़िक्र हुई, कि वलीअ़हदको क़ैद करना चाहिये; लेकिन् उनका गिरिफ़्तार करना कठिन जानकर अपने छोटे भाई नाथसिंहको तज्वीज़ किया, जो बड़ा ज़बर्दस्त पहलवान था. नाथसिंहने महाराणासे कहा, कि मैं पहिले वलीअ़हदसे ताक़त आज़मा लूं; तब महाराणाके हुक्मसे खीच मन्दिर नाम महलमें दोनों चचा भतीजोंकी कुश्ती होने लगी, प्रतापसिंहने नाथसिंहको कुछ हटाया, लेकिन् दर्वाज़ेकी चौखटका सहारा पैरको लगनेसे नाथसिंहने वलीअ़हदको रोका, और खीच मन्दिरके दर्वाज़ेकी चौखटका मज्बूत पत्थर टूटगया; फिर कुश्ती मौकूफ़ हुई. नाथसिंहने महाराणासे कहा, कि मैं वलीअ़हदको दग़ासे पकड़ सक्ता हूं. विक्रमी १७९९ माघ शुक्ल ३ [हि० ११५५ ता० २ ज़िल्हिज = ई० १७४३ ता० २९ जैन्युअरी] को, जब कि महाराणा कृष्णविलास महलोंमें थे, उनके इशारेसे नाथसिंहने पीछेकी तरफ़से अचानक प्रतापसिंहकी पीठपर गोड़ी लगाकर दोनों हाथ बांध दिये. यह ख़बर सुनकर शक्तावत सूरतसिंहका बेटा उम्मेदसिंह, जो वलीअ़हदके पास रहता था, तलवार मियानसे निकालकर ड्योढ़ीमें घुसा; किसीकी मजाल न हुई, कि उसको रोके; वह सीधा महाराणाके साम्हने आया; महाराणाके पास उसका बाप सूरतसिंह मए अपने छोटे भाईके खड़ा था; पहिले उम्मेदसिंहने अपने चचाको मारलिया, जो महाराणाकी इजाज़तसे उसे रोकनेको आया था; फिर सूरतसिंह तलवार खेंचकर अपने बेटेपर चला; उम्मेदसिंहने बापके लिहाज़से कुछ सब्र किया, इसी अन्तरमें सूरतसिंहका वार होगया, जिससे उम्मेदसिंह क़त्ल होकर गिरा. महाराणाने सूरतसिंहको छातीसे लगाकर कहा, कि तुम दोनों बाप बेटोंने अच्छी तरह हक़ नमक अदा किया; बहुतसी तसल्ली दी; लेकिन् सूरतसिंहका कलेजा टूट गया, क्योंकि उसका भाई और बेटा दोनों उसके साम्हने मरे पड़े थे. उसके एक छोटा पोता अखेसिंह रहगया, सूरतसिंह उसको लेकर अपने घर बैठ गया. महाराणाने बहुतसी तसल्ली देकर कुछ जागीर व इन्आ़म देना चाहा, लेकिन् उसने रंजके सबब मंजूर नहीं किया. जब कुंवर प्रतापसिंह गद्दीपर बैठे, तब उन्होंने अखेसिंहको रावत्का ख़िताब और दारूका पट्टा देकर दूसरे नम्बरके सर्दारोंमें दाख़िल किया.

इन दिनों मालवापर मरहटे क़ाबिज़ होगये थे, बल्कि सूबह अजमेर वग़ैरह दूसरे ज़िलोंसे भी बादशाही हुकूक़ वुसूल करते थे. सूबह अजमेरके तऋल्लुक़का पर्गनह बनेड़ा, जो क़दीमसे मेवाड़का था, वह आलमगीरने मेवाड़पर चढ़ाईके वक़ छीनकर राजा भीमसिंहको जागीरमें दे दिया था, जो महाराणा राजसिंहका छोटा कुंवर था; उसकी और जागीरें तो छिन गईं, लेकिन् यह पर्गनह भीमसिंहके पोते सुल्तानसिंह तक उसकी औलादके क़ब्ज़हमें रहा; जब उसका देहान्त हुआ, और सर्दारसिंह उसका क्रमानुयायी बना, उससे मुहम्मद शाहके वक्में यह पर्गनह ख़ालिसह हुआ; तब उदयपुरके वकीलोंकी मारिफ़त महाराणा संग्रामसिंहके धायभाई नगराजको मिला; परन्तु ख़ास बनेड़ा सर्दारसिंहके क़ब्ज़हमें था, और वह उदयपुरमें महाराणा जगत्सिंहके पास हाज़िर रहता था. पर्गनहको ठेकादारीके तौरपर महाराणा ने मेवाड़के शामिल रक्खा; और वह ठेका पेश्वाको दियाजाता था. इस बारेमें हमको उसी समयका एक काग़ज़ मिला है, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

कागज़की नक़्ल.

श्री.

प्रगणा वणेडारा मुकातारी भरोती सनद दीपएयारा हाथरी काका बपतसींघ जी साथे चलाई, हस्ते रहा नेणसी पंचोली देवकरणजीरा रुका प्रमाणे दीधी.

बीगत

रु० २००००० मजमानीरा.
रु० ४५००० सं० १७९२ री उनालुरा.
रु० ९०००० सं० १७९३ रा व्रपरा.
रु० १२०००० सं० १७९४ रा.
रु० १५०००० सं०१७९५ रा व्र०
रु० ५२०००० व्रस ४ सं० १७९६ थी सं० १७९९ सुधी, व्र० प्र० रु० १३००००.

रु० ११२५०००

भ्रतो

रु० ६६०००१ भरोती १ रु० ६६०००१ लीखत पींडत सदासीव अप्रंच ॥ सं० १७९२ थी सं० १७९८ रा व्रप सुधी श्री जीरा भंडारथी हस्ते पींडत सदासीव भरे पाया; भरोती सं० १७९९ रा सावण सुद ११ री लीपी.

रु० १०००० भरोती १ रु० १०००० पींडत रामचन्दरी लीपी सं० १७९९ भादवा सु० ७ रा दसवासरी.
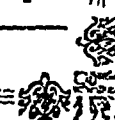
रु० ४५५००० भरोती १ रु० ५२०००० री लीषत पींडत गोविंदराव श्री जीरा दरवार थी प्रगणा वणेडारी जागीरी व्रष ४ म्है रुपया ५२०००० सं० १७९६ थी सं० १७९९ असाढ़ सुद १५ अणी वीगतसु चुकावे लीया.

बीगत

रु० ५५००० हस्ते पींडत स्दासीव जमे रुपया ६६०००० मध्ये.
रु० १०००० हस्ते पींडत रामचंद.
रु० ४५५००० हस्ते पींडत गोवीदराए सं० १७९९ रा असाढ सु० १५.

इसी मितीका एक काग़ज़ जोधपुरके महाराजा अभयसिंहका जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहके नाम है, जिससे मालूम होता है, कि महाराणाने इस समय भी राजपूतानहके राजाओंको एक करना चाहा था, लेकिन् इसका अंजाम कुछ भी न हुआ; उस काग़ज़की नक़्ल यह है :-

१ श्री रांमजी.

सीतारांमजी.

सीध श्री माहाराजा धीराज श्री सवाई जैसीघजी सुं मांरो मुजरो मालम होय, अप्रंच श्री दीवांणजीरा हुकमसुं आपसुं इकलास कीयो छै, सो हमे कीणी हींदु मुसलमानरा कयासुं ओर भांत नहीं करसां; इण करार वीची छै, साष श्री दीवांण छै, मीती असाढ सुद ७ वार सोम सं० १७९९.

पर्गनह रामपुरा, जो भाणेज माधवसिंहको महाराणा संग्रामसिंहने जागीरमें लिखदिया था, उसका ज़िक्र महाराणा संग्रामसिंहके हालमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ९७५). महाराजा जयसिंहने माधवसिंहके बहानेसे अपने आदमी भेजकर उस पर्गनेको क़ब्ज़ेमें कर लिया था. इस वक़ महाराणाने महाराजा जयसिंहको कहला भेजा, कि दाजीराजने पर्गनह रामपुरा, भाणेज माधवसिंहको दिया था, अब माधवसिंह होश्यार होगया, इस वास्ते उक्त पर्गनह हमारे आदमियोंकी सुपुर्दगीमें होजाना चाहिये, क्योंकि उक्त भाणेज यहां मौजूद है. अलावह इसके रामपुराके एवज़ माधवसिंहको मुक़र्रर जमइयत सहित इक़ारके मुवाफ़िक़ नौकरी देनी चाहिये; लेकिन् यह बिना आमदनीके किस तरह होसक्ता है ? इस काग़ज़के भेजनेसे महाराजा

जयसिंहने पर्गनह रामपुरासे अपना दख़्ल उठा लिया, क्योंकि इस वक़ महाराजा बहुत बीमार थे, जिससे किसी तरहकी चेष्टा नहीं करसके. उन्होंने अपने आदमियोंके नाम यह पर्गनह ख़ाली करदेनेको, जो पर्वाना लिख भेजा, उसकी नक़्ल नीचे लिखी जातीहै:-

प्रवानो १ कछवाहा दोलतसीघरे नामे म्हाराजा श्री जेसीघजीरो तीरी नकल.

श्री रामजी.

श्री सीता रामो जयति, महाराजा धिराज सवाई जेसीघजी.

स्वस्ति श्री महाराजा धिराज महाराजा श्री सवाई जेसीघजी देव वचनात, दोलतसींघ स्यो ब्रह्म पोता दीस्ये सुप्रसाद वंच्य, अप्रंचि - प्रगनो रामपुरो इस तठा भादवा सुदी ३ संवत् १८०० सो तालक चीसना माधोसीघके कियो छे, अर वेठे अखतयार रावत कुवेरसींघजीको छै; सो वाहकी तरफ़ जो आवे, तींहने अमल दीजो. मीती भादवा वदी १४ सं १८००. प्रवानो साह वधीचंद हे श्रीजी सोपायो सो सोप्यो संवत १८०० वर्षे सुदी ४ सोमे सोप्यो.
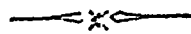
महाराजा सवाई जयसिंह इस वक़ ज़ियादह बीमार न होते, तो रामपुरा वापस देनेमें भी कुछ न कुछ दग़ाबाज़ीकी बाज़ी खेलते. बूंदीका मिश्रण सूर्यमल्ल अपने ग्रन्थ वंशभास्करमें लिखता है, कि इन महाराजाने ताक़तके वास्ते धातु औषधी खाई थी, जिससे उनका तमाम बदन फूट गया, और उसकी तक्लीफ़से वह विक्रमी १८०० आश्विन शुक्ल १४ [हि० ११५६ ता० १३ शअ्बान = ई० १७४३ ता० ३ ऑक्टोबर] को परलोक सिधारे. उनके बाद ईश्वरीसिंह गद्दीपर बैठे. यह बात सुनकर महाराणा जगत्सिंहने विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] के अह्दनामहकी शर्तके मुवाफ़िक़ माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठाना चाहा, लेकिन् इस बातके लिये ताक़तकी ज़रूरत थी, इसलिये मरहटोंसे दोस्ती बढ़ाई, और कोटेके महाराव दुर्जनसालको बुलाया. महाराव अन्नकूटके दर्शन् नाथद्वारेमें करके नाहरमगरामें महाराणाके पास पहुंचे, और उनकी सलाहके मुवाफ़िक़ फ़ौजबन्दीका हुक्म दिया गया. इस वक़ महारावकी फ़ौज भी शामिल होगई. महाराणाने नाहरमगरासे कूच करके जहाज़पुरके ज़िलेके गांव जामोलीमें मक़ाम किया. महाराजा ईश्वरीसिंह भी मुक़ाबलह करनेको अच्छी फ़ौजके साथ जयपुरसे चले, और उनके प्रधान राजामल्ल

खत्रीने हिक्मत अमली करनी चाही. महाराणाने चालीस दिन तक बनास नदीके किनारे जामोलीमें क़ियाम रक्खा, और वहांसे क़रीब पंडेर गांवमें ईश्वरीसिंह आ ठहरे. राजामल्ल खत्री महाराणाके पास आया, और कहा, कि आपको महाराव दुर्जनसालके बहकानेसे हमारी दोस्ती न तोड़ना चाहिये. तब महाराणाने राजामल्लसे कहा, कि माधवसिंहके लिये विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] के अह्दनामहकी तामील होना ज़रूर है. इसपर राजामल्लने कहा, कि दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहने हक़्दार जानकर ईश्वरीसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठाया है, और आपको भी बादशाहके हुक्ममें खलल डालनेसे फ़ायदह न होगा. इस तरहकी रद बदल होनेके बाद ५०००००) पांच लाख रुपया सालानह आमदनीका पर्गनह टौंक माधवसिंहके लिये क़रार पाया, और दोनों तरफ़के मुसाहिबोंने महाराणा व महाराजाके आपसमें मेल करा दिया. इस बातसे नाराज़ होकर महाराव दुर्जनसाल बग़ैर रुख़्सत लिये कोटा को चले गये, और महाराजा ईश्वरीसिंह भी सुलह करनेके बाद पीछे जयपुर चले गये.

महाराणाके ख़ालिसहका देवली गांव, जो सावरके ठाकुर इन्द्रसिंहने दबा लिया था, वह इस समय महाराणाने छुड़ाना चाहा; ठाकुर इन्द्रसिंह यह गांव देनेपर राज़ी होगया, परन्तु उसके कुंवर सालिमसिंहने मंजूर नहीं किया, और अच्छे अच्छे राजपूतोंके साथ देवलीकी गढ़ीमें घुसकर लड़ाई करनेको मुस्तइद हुआ. यह ख़बर सुनकर महाराणाने बीरमदेवोत राणावत बाबा भारतसिंहको फ़ौज और कुछ तोपख़ानह देकर भेजा. भारथसिंहने सालिमसिंहको बहुत समझाया, लेकिन् उसने एक न माना; तब गोलन्दाज़ी होने लगी, तीन दिन तक तोपों और बन्दूक़ोंसे मुक़ाबलह हुआ, चौथे दिन सालिमसिंह बड़ी बहादुरीके साथ गढ़ीके किवाड़ खोलकर बाहर निकला. महाराणाकी फ़ौजने बड़े ज़ोर शोरके साथ हमलह किया; बहादुर सालिमसिंहने तलवार और कटारियोंसे अच्छी तरह रोका, और टुकड़े टुकड़े होकर मारागया. यह कुंवर सालिमसिंह, जिसने चन्द रोज़ पहिले विवाह किया था, शादीके कंकण भी न खोलने पाया था, और बड़ी खुशीके साथ लड़कर दूसरी दुन्यांको सिधारा. उस ज़मानेमें अक्सर ऐसे राजपूत राजपूतानहमें पाये जाते थे, जो इस नाशवान शरीरके एवज़ नामवरी को ज़ियादह पसन्द करते थे. इक्यावन आदमी महाराणाकी फ़ौजके, और सत्तरह सालिमसिंहके साथके मारेगये. बाबा भारतसिंहने देवलीकी गढ़ीमें क़ब्ज़ह करलिया, और सावरका सीसोदिया ठाकुर इन्द्रसिंह भी महाराणाके पास जामोलीमें हाज़िर होगया. महाराणा अपने भान्जे माधवसिंह समेत उदयपुर आये, तो शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहने महाराणाके पास

हाज़िर होकर तलवार बंधाईके जो ५००००) पचास हज़ार रुपये बाक़ी थे, उनमेंसे ९९२४) नक़्द और १५०००) पन्द्रह हज़ारके दो हाथी विक्रमी फाल्गुन् शुक्ल ४ [हि० ११५७ ता० ३ मुहर्रम = ई० १७४४ ता० १७ फ़ेब्रुअरी] को नज़ किये, और महाराणासे सफ़ाई हासिल करली; क्योंकि राजा उम्मेदसिंह थोड़े दिनोंसे महाराणाकी उदूल हुक्मी करने लगे थे, परन्तु इस समय जयपुरकी चढ़ाईका मौक़ा देखकर उससे वाज़ आये.

विक्रमी १८०१ [हि० ११५७ = ई० १७४४] में जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंह अपनी गद्दीनशीनीको मज्बूत करनेके लिये मुहम्मदशाहके पास दिल्ली पहुंचे. पीछेसे महाराणा जगत्सिंहने अपने मातह्त सर्दार बाबा बख़्तसिंह और रावत् कुबेरसिंहको मल्हार राव हुल्करके पास भेजा, और एक करोड़ रुपया देना मंजूर करके जयपुरकी गद्दीपर माधवसिंहको बिठलाना ठहराया. महाराणाने ढूंढाड़की तरफ़ कूच किया, तो यह ख़बर सुनकर जयपुरके उमराव सर्दार भी मुक़ाबलह करनेको आये. बूंदीका मिश्रण सूर्यमल्ल वंशभास्करमें लिखता है, कि ढूंढाड़के उमरावोंने महाराणाको धोखा देकर कहा, कि हम माधवसिंहको चाहते हैं, ईश्वरीसिंहको गिरिफ़्तार करादेंगे. यह धोखा इसी वास्ते दिया गया था, कि दिल्लीसे राजा ईश्वरीसिंहके वापस आजाने तक लड़ाई मुल्तवी रहे. दिल्लीसे ईश्वरीसिंहके फ़ौजमें पहुंचते ही सब सर्दार उनके फ़र्मांबर्दार होगये, और जयपुरके प्रधान राजामल्ल खत्रीने मरहटोंको भी लालच देकर मिला लिया; एक मल्हार राव हुल्करने ईमान नहीं छोड़ा, लेकिन् दूसरे मरहटे लोग महाराणासे मुक़ाबलह करनेको तय्यार होगये; तब उनको कुछ रुपया देकर महाराणा मए माधवसिंहके उदयपुर चले आये. यह कुल बात हमने वंशभास्करसे लिखी है, मेवाड़की तवारीख़ोंमें नहीं मिली. एक काग़ज़ रावत् कुबेरसिंहका महाराणाके काका बख़्तसिंहके नामका हमको मिला है, जो उसने मक़ाम कोटा मरहटोंके लश्करमेंसे लिखा था, उसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

काग़ज़की नक़्ल.

सिध श्री सरब उपमा जोग, महाराजा श्री बखतसिंघजी एतान, कोटाथी लखतां रावत् कुबेरसिंघजी केन मुजरो बंचजो राज, अपरंच ॥ मारे आप उप्रांत और कईं वात नहीं छे राज, अप्रंच ॥ बुंदीरी लड़ाइ हुई, ने पछे छोड़े, सो समाचार तो पैलका कागदमें लख्या छा, सो पहुंचा होसी राज, ने पोस सुद १५ रवे रे दने कोटे आणे लागा राज, सो जणी दन आपाजीरे गोली लागी, तथा लड़ाई हुई सो

तो समाचार पैली लषा था राज, सो जांणा होसी जी; नै तुरत लड़ाई होवै छै राज. माह बद ८ भोमेरे दन मे कोटे आव्या राज. राजा ईशरीसीघजी सु पण कोल करार सारी बातरो लीदो जी, राजा श्री माधोसीघजीरा पटारो तथा सारा सरदारांरो एक वेवार करणो, तथा महारावजीसुं पण एक वेवार करणो. असो जतन तो ईसरीसीघजी कीदो जी; ने मे, नरुका हरनाथसीघजीने महारावजी सु मलायो छै जी; सो महारावजी पण रजाबंद हुआ छे जी; सो ओ सुलुक हुवाथी माहारावजी पण दन ४ तथा ५ पाचमे नाथदवारे आवसी, श्रीजी हजूर आवसी जी. असी थाप ठैराई छै जी, बड़ी मेनत करी छै, राजामलसुं जदी सारा समाचार राजसुं कहसा जदी थे तथा श्रीजी हजूर समाचार मालम करसो, जदी आप पण रजाबंद होसो जी; ने श्रीजी पण मेहरबान होसी. राजने दषण्यांसुं आरदल छे राज, सो दषणी तो १७ लष असेरा मागे छे राज, ५ पांच लाष हर बरसोदा मागे छे राज, सो रदल बदल करे तो कमजाफा करे ने काम चुकावां छां राज, ने आप मने हमेसे लषे छे, सो आपरे कई काम करणो होवे, सो कीज्यो; अबे में बेगा आवां छां राज, ढील न जाणसे राज. संवत् १८०१ रा महा वदी १२

सुकरे चोडावत जोरावरसीघ.

राणावत सांमतसीघरो जोंहार बंचजो जी, चोंडावत सुजारो मुजरो बंचजो जी.

वंश भास्करमें महाराणासे मरहटोंका बदलजाना इसी वर्षके विक्रमी माघ कृष्ण पक्ष [हि० ११५७ ज़िल्हिज = ई० १७४५ जैन्युअरी] में लिखा है, और यह काग़ज़ भी विक्रमी माघ कृष्ण १२ [हि० ११५७ ता० २६ ज़िल्हिज = ई० १७४५ ता० ३१ जैन्युअरी] को लिखागया, जिस वक़ महाराणा उदयपुरमें मौजूद मालूम होते हैं; शायद आगे पीछे वह मुआमलह हुआ हो, तो तअ़ज्जुब नहीं. इसमें सत्तरह लाख रुपया पहिले और पांच लाख सालानह मरहटोंको देनेकी जो तह्रीर है, शायद यह बात माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेके बारेमें होगी.

विक्रमी १८०२ [हि० ११५८ = ई० १७४५] में महाराणा जगत्सिंहने अपने नामपर पीछोला तालाबमें जगन्निवास नाम महल बनवाये, इस बारेमें यह मशहूर है, कि महाराणा संग्रामसिंहसे जगत्सिंहने अर्ज़ किया था, कि मैं चन्द रोज़के वास्ते ज़नानह समेत जगमन्दिरोंमें जाऊं. महाराणाने इस बातको कुबूल नहीं किया, और ताना दिया, कि ऐसी मर्ज़ी हो, तो नये महल बनवाकर उनमें रहना चाहिये. उसी तानेको याद रखकर जगत्सिंहने यह महल तय्यार करवाये. इसकी नीवका मुहूर्त विक्रमी १८०० वैशाख शुक्ल १० गुरुवार [हि० ११५६ ता० ९ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १७४३

ता० ४ मई] को हुआ, और विक्रमी १८०२ माघ शुक्ल ९ [हि० ११५९ ता० ८ मुहर्रम = ई० १७४६ ता० १ फ़ेब्रुअरी] सोमवारको वास्तू मुहूर्त किया गया. इसके उत्सवमें लाखों रुपयेका ख़र्च हुआ था, जिसकी तफ़्सील "जगत्विलास" ग्रन्थमें अच्छीतरह लिखी है, जो नन्दराम कविने उसी ज़मानेमें हिन्दी कवितामें बनाया था; उस ग्रन्थसे मुख़्तसर मत्लब हम नीचे दर्ज करते हैं:-

यह इमारत डोडिया ठाकुर सर्दारसिंहकी निगरानीसे तय्यार हुई थी. नन्दराम कवि लिखता है, कि विक्रमी १८०२ माघ शुक्ल ९ [हि० ११५९ ता० ८ मुहर्रम = ई० १७४६ ता० १ फ़ेब्रुअरी] को वास्तू मुहूर्त हुआ, और दूसरे दिन सब ज़नानह बुलाया गया, जिसकी तफ़्सील नीचे लिखी जाती हैः-

१ महाराणा अमरसिंहकी राणी दादी झाली-

१ महाराणा संग्रामसिंहकी महाराणी झाली, जिनके गर्भसे बाघसिंह और अर्जुनसिंह हुए थे.

महाराणा जगत्सिंहकी महाराणियोंके यह नाम थेः-

१- महाराणी बड़ी ईडरेची, २- महाराणी छोटी ईडरेची,
३- महाराणी राठौड़ छप्पनी, ४- महाराणी राठौड़ मेड़तणी,
५- महाराणी भटियाणी, ६- महाराणी चावड़ी,
७- महाराणी झाली, ८- महाराणी छोटी झाली
हलवदकी, जिनके गर्भसे एक कन्या और एक कुंवर अरिसिंह थे;
९- महाराणी देवड़ी,

भाणेज महाराज माधवसिंहकी राणियां:-

१- महाराणी राठौड़ ईडरेची, २- महाराणी सीसोदणी,
३- महाराणी चूंडावत, ४- महाराणी भटियाणी,

भाई नाथसिंहकी ठकुराणियां.

१- बहू वीरपुरी, २- बहू मालपुरी, ३- बहू मेड़तणी, ४- बहू बड़ी जोधपुरी, ५- बहू छोटी जोधपुरी, ६- बहू झाली.

युवराज प्रतापसिंहकी कुंवराणियां.

१- बहू भटियाणी, २- बहू हाड़ी, ३- बहू झाली. भाई बाघसिंहकी ठकुराणियां:- १- बहू भटियाणी, २- बहू छप्पनी, ३- बहू चावड़ी, ४- बहू पंवार. भाई अर्जुनसिंहकी ठकुराणी १- बहू झाली.

इनके बाद कवि नन्दरामने उन सर्दारोंके नाम लिखे हैं, जिनको महाराणाने इस उत्सवमें घोड़े दिये हैं, और उन घोड़ोंके नाम भी लिखे हैं:-

१- भाणेज माधवसिंहको, धसलबाज़ कुमैत. २- चहुवान राव रामचन्द्रको हरबख़्श नीला. ३- चहुवान रावत् फ़तहसिंहको बाज़ बहादुर. ४- रावत् जशवन्तसिंहको, पतंग राज कुमैत. ५- रावत् मेघसिंहको, नीलराज नीला. ६- झाला मानसिंहको, दिलमालक महुआ. ७- चूंडावत रावत् फ़तहसिंह दुलहसिंहोतको, सियाह लक्खी बछेरा. ८- झाला राज् कान्हसिंहको, प्राणप्यारा नीला. ९- रावत् पृथ्वीसिंह सारंगदेवोतको, प्राणप्यारा नीला. १०- शक्तावत महाराज कुशलसिंहको, सोनामोती. ११- शक्तावत रावत् हटीसिंहको, सुर्ख़ा. १२- महाराज तख़्तसिंहको, लालप्यारा कुमैत. १३- महाराज नाथसिंहको, पीताम्बर बख़्श कुमैत. १४- महाराज बाघसिंहको, बसन्तराज सुरंग. १५- महाराज बख़्तसिंहको, तेज बहादुर कुमैत. १६- राजा भाई सर्दारसिंहको, कल्याण कुमैत. १७- राजा उम्मेदसिंहको सूरती कुमैत. १८- डोडिया ठाकुर सर्दारसिंहको, सोवनकलस समन्द. १९- बाबा भारतसिंहको, अतिगति कुमैत. २०- राठौड़ मुहकमसिंहको, कन्हवां समन्द. २१- रावत् लालसिंहको, रत्न कुमैत. २२- चहुवान ज़ोरावरसिंहको, प्यारा सुर्ख़ा. २३- चूंडावत् रावत् जयसिंहको, हय गुमान सुरंग. २४- झाला कुंवर नाथसिंहको, रूपवन्त. २५- पुरोहित सन्तोषरामको, रणछोरपसाव. २६- प्रधान देवकरणको, चौगानबाज़ बोज रंगका. इसके सिवाय चारणोंको भी हाथी, घोड़े, कपड़े, व ज़ेवर इन्आममें दिये, तीन दिन तक बड़ा भारी जल्सह रहा.

महाराणा अव्वल जगत्सिंहने तो जगमन्दिर बनवाये थे, जो पीछोला तालाबके दक्षिणी तीरके पास हैं, और इन महाराणा याने दूसरे जगत्सिंहने जगन्निवास बनवाये, जो उत्तरी तटके क़रीब राजधानीके महलोंसे पश्चिमको हैं. ये दोनों मक़ाम सैरके लाइक़ पीछोला तालाबमें बने हैं, किश्तियोंमें बैठकर लोग देखनेको जाते हैं. उनके बग़ीचे, हौज़ व फ़व्वारोंको देखकर आदमीका दिल यह नहीं चाहता, कि यहांसे दूसरी जगह चलें. यह महाराणा अपने पिताकी तरह मुल्की इन्तिज़ाम भी उम्दह करना चाहते थे, लेकिन् जैसा कि चाहिये, वैसा नहीं हुआ; कुल सर्दार और उमरावोंसे मुल्की अम्नके लिये मुचल्के लिये गये थे, जिनमेंसे एक मुचल्केकी नक़्ल हम नीचे दर्ज करते हैं:-

मुचल्केकी नक़्ल.

सीध श्री श्रीजीहजूर, अत्रो हुकम हुवो, जणी मांहे तफ़ावत पड़े, तो महारो

पट्टो खालसे, जणीरी अरज करवा पावे नहीं; ने कोई झूंठी सांची मालम करे तो सांच झूट काडे ओलंभो दे; इत्री वात ठैहरीः-

वगत.

पट्टा परवाणे साथ राखणो; पट्टा मांहे सदा लागत लागे है, जो देणी; पट्टामांहे चोर पासीगररो वंट ले, तो ओलंवो पावे; श्री दरवाररो चीठीवालो आवे, जणीथी वोले नहीं; भोम पंचसाइ हुकम प्रमाणे छांड देणी. सावण वद ६ रवे सं० १८०३ लखतु रावत जसूंतसींघ, ऊपरलो लिख्यो सही.

चोर डकैत और पासीगरोंको सर्दार लोग अपने पास रखकर चौथा हिस्सा लेते थे, जिसको चौथान बोलते थे. फिर वे लोग ख़ालिसेके अथवा ग़ैर इलाक़ेके वाशिन्दोंको खूब लूटते, इस वे इन्तिज़ामीके सबब ऐसे मुचल्के लिखवाये गये; लेकिन् महाराणाके ऐश व इश्रतमें ज़ियादह गिरिफ़्तार होनेसे हुकूमतमें भी ज़ोफ़ आनेलगा; कभी सलूंवरके रावत् कुबेरसिंहकी बातोंपर ज़ियादह एतिवार होता, कभी रावत् जशवन्तसिंहको अपना सलाहकार बनालेते, कभी मरहटोंसे मेल मिलाप रखते, कभी उनके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करते, कभी जोधपुरके महाराजा अभयसिंहको अपना दोस्त बनाते, कभी उनके बर्ख़िलाफ़ महाराज बख़्तसिंहकी सलाहपर चलते, कभी बूंदीके माज़ूल राव राजा उम्मेदसिंहको मदद देनेके लिये तय्यार होते, और कभी दलेलसिंहकी मज्बूती चाहते. ऐसी कार्रवाइयोंसे दिन बदिन बे एतिबारी फैलती जाती थी, और उसका ख़राब नतीजह तरक़्क़ी पकड़ता था, इसपर भी माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेका इरादह माल और मुल्कको बर्बाद करनेवाला होगया.

विक्रमी १८०४ फाल्गुन् शुक्लपक्ष [हि० ११६१ रबीउल् अव्वल = ई० १७४८ मार्च] में राज महलके पास बनास नदीपर महाराणाकी फ़ौज और जयपुर वालोंसे, जो लड़ाई हुई, उसका हाल इस तरहपर हैः-

महाराणाने मलहार राव हुल्करसे इस काममें मदद चाही, हुल्करने अपने बेटे खंडेरावको मए फ़ौज व तोपख़ानहके भेज दिया; महाराणाने अपनी फ़ौजके शरीक कोटेके महाराव दुर्जनसाल व राव राजा उम्मेदसिंहको भी किया, लेकिन् दुर्जनसालने अपने एवज़ अपने प्रधान दधिवाड़िया चारण भोपतरामको भेज दिया. जयपुरसे राजा ईश्वरीसिंह कूच करके राज महलके पास पहुंचे, और उसी जगह मुक़ाबलह हुआ. इस लड़ाईमें हज़ारहा राजपूत मारे गये, जयपुरकी फ़ौजके पैर उखड़ने वाले थे; परन्तु महाराज माधवसिंह, जो मेवाड़ और मरहटी फ़ौजके शामिल

थे, उनका निशान (झंडा) जयपुरके मुवाफ़िक़ देखकर लोगोंको धोखा हुआ, कि जयपुरवाले हमारी फ़ौजमें आ घुसे; इससे मेवाड़ और कोटा वग़ैरहके सर्दार भाग निकले, और चन्द सर्दारोंने पीछे लौटकर जान दी; परन्तु फ़त्हका झन्डा जयपुरके हाथ रहा. शाहपुराका राजा उम्मेदसिंह अपनी जमइयत समेत वहीं खड़ा रहा; राजा ईश्वरीसिंहने कहलाया, कि वह चला जावे, पर वह न हटा; तब महाराजाने हमलह करनेके लिये अपने सर्दारोंको हुक्म दिया; शैखावत शिवसिंह, जो हरावलका मुख़्तार था, रुका; वह उम्मेदसिंहका श्वसुर था, जिससे लाचार होकर ईश्वरीसिंह को अपना हुक्म मुल्तवी रखना पड़ा. उम्मेदसिंह वहांसे दूसरे रोज़ कूच करके शाहपुरे आया; और मेवाड़, हाड़ौती और मरहटोंकी फ़ौज भी शाहपुरामें ठहरी. महाराणाने फिर मददगार फ़ौज उदयपुरसे भेजकर लड़ाई करना चाहा; लेकिन् मरहटोंकी यह सलाह थी, कि दोबारह एक ज़बर्दस्त फ़ौज लाकर हमलह किया जावे. इसी सबबसे ईश्वरीसिंह तो जयपुर गये, और मेवाड़की फ़ौजें लौट आईं.

मिश्रण सूरजमल्लने वंशभास्करमें जयपुरकी फ़ौजके हाथसे मेवाड़के क़स्बह भीलवाड़ाका लुटजाना लिखा है, परन्तु हमको इस बातका पता दूसरी जगहसे नहीं मिला. महाराणाको इस शिकस्तसे बहुत शर्मिन्दगी हुई, जिससे विक्रमी १८०५ [हि० ११६१ = ई० १७४८] में उन्होंने महाराव दुर्जनसालको कोटासे बुलाकर सलाह की, और मलहार रावके बेटे खंडेरावको मए फ़ौजके मददपर बुलाया. उक्त महारावको महाराणाने गद्दीपर बिठाया, सरपर हाथ लगाकर सलाम लिया, और उनके नाम ख़रीतह लिखनेका दरजह दिया. इस वक़्त तक कोटाके महाराव, महाराणाकी गद्दीके नीचे बैठकर उमराव सर्दारोंके मुवाफ़िक़ दरजह रखते थे; अब पूरे राजा बन गये. इस बातसे इह्सानमन्द होकर दुर्जनसाल तमाम ज़िन्दगी तक उदयपुरका शुभचिन्तक रहा, और अब तक भी उस रियासतमें इस उपकारकी यादगार भूली नहीं गई है. फिर दोबारह फ़ौज तय्यार होकर महाराणा सहित खारी नदीके किनारे तक पहुंची; उसमें मेवाड़ हाड़ौती और खंडेराव शरीक थे. राजा ईश्वरीसिंह भी उक्त नदीके दूसरे किनारेपर आ ठहरे. एक दिन थोड़ासा मुक़ाबलह हुआ, जिसमें मंगरोपके बाबा रत्नसिंह और आरजेके रणसिंहने अपनी जमइयतसे जयपुरकी हरावलको हटा दिया; फिर रात होनेके कारण लड़ाई मुल्तवी रही. इसपर महाराणाने खुश होकर दांदूथल व दांदियावास रत्नसिंहको, और सिंगोली रणसिंहको जागीरमें दी. रातके वक़्त जयपुरकी तरफ़से सुलहके पैग़ाम आने लगे; दूसरी तरफ़ सलाहमें फूट थी, हाड़ा चाहते थे, कि हमारा मत्लब ज़ियादह निकले; माधवसिंहने जाना, कि मैं कुछ अपना मत्लब अधिक निकालूं; महाराणाने

कुछ और ही बात ठानी; मरहटे अपना लालच चाहते थे. इसी पसोपेशसे न कोई मत्लब निकला, न लड़ाई हुई.

महाराजा ईश्वरीसिंह तो जयपुरकी तरफ़ गये, और महाराणा, उदयपुर चले आये; महाराज माधवसिंह खंडेरावके साथ रामपुराको चले गये, जो आपसमें पगड़ी बदल भाई बने थे. माधवसिंहने अच्छी तरहसे जानलिया, कि बग़ैर मरहटोंकी मददके काम्याबी हासिल न होगी, इस वास्ते खंडेरावसे दोस्ती बढ़ाई, जिससे मल्हार राव हुल्कर इस कामको पूरा करनेके लिये अच्छी तरह तय्यार था. जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंहने पहिली शर्तोंको तोड़ दिया, जो जामोली और पंडेरके मकामपर महाराणासे की गई थीं. इन शर्तोंका तोड़ना गै़र वाजिब नहीं था, क्योंकि महाराणाने इक़ारके बर्ख़िलाफ़ ईश्वरीसिंहपर चढ़ाई करदी, तो जिस तरह महाराणाने पहिले अपने इक़ारको तोड़ा, उसी तरह ईश्वरीसिंहने भी बर्ख़िलाफ़ी की. महाराज माधवसिंह और राव राजा उम्मेदसिंह दोनों मल्हार राव हुल्करको जयपुरपर चढ़ा लाये; हुल्करने महाराणा और जोधपुरके महाराजाको भी लिख भेजा; महाराणा तो इस कामके लिये दिलसे तय्यार थे, परन्तु मरहटोंका एतिबार न था, क्योंकि जिससे उनका मत्लब निकलता, उसीके सहायक बन बैठते. इस वास्ते महाराणा खुद तो न गये, चार हज़ार सवारोंके साथ शाहपुराके राजा उम्मेदसिंह, बेगूंके रावत् मेघसिंह, और देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंह, वीरमदेवोत राणावत शंभूसिंह और कायस्थ गुलाबरायको भेजदिया. ये लोग ढूंढारकी हदमें मल्हार रावकी फ़ौजसे जामिले, राव राजा उम्मेदसिंह व महाराज माधवसिंह पेश्तरसे वहां मौजूद थे; जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने दो हज़ार सवारों सहित रीयांके ठाकुर मेड़तिया शेरसिंह और ऊदावत कल्याणसिंह वग़ैरहको भेज दिया; और कोटाकी फ़ौज भी आमिली. मल्हार राव हुल्करने कुछ फ़ौजके साथ तांतिया गंगाधरको जयपुर भेजा, परन्तु वह शिकस्त खाकर वापस लौटा, महाराजा ईश्वरीसिंहने उसका पीछा किया, और भरतपुरके राजा सूरजमल्ल जाटको अपना मददगार बनालिया, इस शर्तपर, कि हम तुमको गद्दीपर बिठाकर बराबरीका रुत्बह देंगे.

वगरू गांवके पास विक्रमी १८०५ भाद्रपद कृष्ण ४ [हि० ११६१ ता० १८ शव्वान = ई० १७४८ ता० १४ ऑगस्ट] को महाराजा ईश्वरीसिंह और सूरजमल्ल जाटने मल्हार राव हुल्करसे उसकी मददगार फ़ौजों समेत मुक़ाबलह किया; विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ६ [हि० ता० २० शव्वान = ई० ता० १६ ऑगस्ट] तक लड़ाई होती रही; आख़िरकार महाराजा ईश्वरीसिंहकी ताक़त और हिम्मत टूटगई, तब उनके मन्त्री केशवदास खत्रीने तांतिया गंगाधरको लालच

देकर मिलाया, उसने मलहार राव हुल्करको कहा, कि ईश्वरीसिंहसे बड़ा भारी दंड लेकर क्षमा कीजिये, जिससे आपकी प्रभुता प्रसिद्ध हो. मलहार राव भी लोभके जालमें फंस गया, लेकिन् बूंदीका राज्य, राव राजा उम्मेदसिंहको, और टौंकके चार पर्गने महाराज माधवसिंहको दिला दिये. अगर इस वक्त मलहार राव लोभ न करता, तो माधवसिंहको जयपुरका राज्य इसी लड़ाईमें मिलसक्ता था; परन्तु ईश्वरको चन्द रोज़ फिर इस मुआमलहको चलाना मंजूर था, इस लिये इसी ढंगपर रहा; लेकिन् शिकस्त महाराजा ईश्वरीसिंहकी गिनीगई, और राव राजा उम्मेदसिंहको बूंदी दिलाकर सब मददगार फ़ौज अपनी अपनी जगहपर पहुंची. यह हाल हमने बूंदीकी तवारीख़ उम्मेदसिंह चरित्रसे लिया है. इस वक्त केशवदास खत्रीने ख़ैरख़्वाहीसे अपने मालिकको बचाया, लेकिन् हरगोविन्द नाटाणी वग़ैरह उसके विरोधी लोगोंने ईश्वरीसिंहसे कहा, कि इसी बदख़्वाह केशवदासने उम्मेदसिंहको बूंदी और माधवसिंहको टौंकके चार पर्गने हुल्करसे मिलकर दिलाये हैं. ऐसी बातोंको सुननेसे महाराजा ईश्वरीसिंह, केशवदाससे दिन ब दिन दिलसे नाराज़ होने लगे; आख़िरकार विक्रमी १८०६ [हि० ११६२ = ई० १७४९] में केशवदासको महाराजाने अपने साम्हने ज़हर देकर मारडाला, और मरते वक्त कहा, कि "अब तेरा मददगार हुल्कर कहां है!" उसने हाथ जोड़कर महाराजासे कहा, "मुझ बे कुसूर ख़ैरख़्वाहको मारनेका बदला ईश्वर आपको जल्द ही देगा". इस बातपर किसी कविने मारवाड़ी भाषामें एक दोहा कहा, जो नीचे लिखा जाता है:-

दोहा.

मंत्री मोटो मारियो, खत्री केशवदास ॥ जद ही छोड़ी ईसरा, राज करणरी आस ॥ १ ॥

अर्थ- जबसे अपने बड़े सलाहकार केशवदास खत्रीको मारडाला, तबसे हे ईश्वरीसिंह तुमने राज्य करनेकी उम्मेदको भी छोड़दिया.

यह बात दक्षिणमें मलहार राव हुल्करके कान तक पहुंची, तो वह आग होगया, कि मेरी मिलावटका इल्ज़ाम लगाकर ईश्वरीसिंहने केशवदासको क्यों मारा. वह पेश्वासे रुख़्सत लेकर विक्रमी १८०७ आश्विन शुक्ल १० [हि० ११६३ ता० ९ ज़िल्क़ाद = ई० १७५० ता० ११ ऑक्टोबर] को दक्षिणसे रवानह हुआ, और हाड़ौतीके इलाक़हमें पहुंचने बाद वहांसे ढूंढारकी तरफ़ चला. महाराजा ईश्वरीसिंहने बहुतसी हिक्मत अमली की, परन्तु हुल्कर न रुका. उन दिनोंमें महाराजाने केशवदासके एवज़ हरगोविन्द नाटाणीको अपना प्रधान बना रक्खा था, और आप उस मन्त्रीकी बेटीपर आशिक़ थे; उन्होंने अपनी माशूक़ाको देखनेके लिये महलोंके दक्षिणी किनारे पर एक मीनार बनाया, जो "ईश्वर लाट" के नामसे मश्हूर और अब तक मौजूद है. वह मन्त्री अपनी

विरादरी वगैरहमें इस बातसे शर्म और बदनामी उठानेके सबब महाराजाका सख़्त बदख़्वाह बनगया. जब महाराजाने उस प्रधानको हुक्म दिया, कि लड़ाईका सामान करना चाहिये, उस बदख़्वाह दीवानने जवाब दिया, कि ३००००० तीन लाख कछवाहोंकी फ़ौज मेरी जेबमें है, मरहटोंकी क्या ताक़त है, जो आपसे मुक़ाबलह करसकें ? आप अच्छी तरह आराम कीजिये. मलहार राव हुल्कर जो क़रीब आता जाता था, उसको हरगोविन्दने मिलावट करके लिख भेजा, कि तुम बे ख़ौफ़ चले आओ, यहां लड़ाईका कुछ सामान तय्यार नहीं है.

महाराजा ईश्वरीसिंहके पास छोटे आदमी मुसाहिब बन गये थे; जैसे ख़ानू महावत और शंभू बारी वगैरह. ये लोग भी बड़ा जुल्म करते थे, किसीकी स्त्री पकड़वा मंगाते, किसीका धन लूट लेते, जिससे राज्यके लाइक़ आदमी ख़ामोश हो बैठे. महाराजा शराबके नशेमें बे होश रहकर अय्याशीमें फंस गये, और हर-गोविन्द नाटाणी ज़ी इख़्तियार दीवान अपनी इज़्ज़त की ख़राबीसे चाहता था, कि जल्द इस बातका एवज़ लियाजावे. मलहार राव हुल्कर, जिसके साथ बूंदीके राव राजा उम्मेदसिंह भी थे, जयपुरके क़रीब आ ठहरा; उस समय हरगोविन्दको बुलाकर महाराजाने कहा, कि अब दुश्मन क़रीब आगया, वह फ़ौज कहां है, जो तू अपनी जेबमें बतलाता था ! दीवानने जवाब दिया, कि आपके दुरा चरण (चूहा) ने मेरी जेब काट डाली. यह सुनकर महाराजा एक दम हैरान होगये, और कुछ भी बात न बनपड़ी; वह विक्रमी १८०७ पौष कृष्ण ९ [हि० ११६४ ता० २३ मुहर्रम् = ई० १७५० ता० २३ डिसेम्बर] को ज़हर खाकर महलमें सो रहे. इस ख़बरके मश्हूर होते ही शहरमें शोर मच गया. दूसरे रोज़ हुल्करने अपने आदमी भेजकर शहरपर क़ब्ज़ह कर लिया, और महाराज माधवसिंहको जयपुर आनेके लिये ख़बर दी. माधवसिंह रामपुरासे उदयपुर आये, और चाहा था, कि कुछ मदद (फ़ौज) लेकर मलहार रावके शामिल होवें, परन्तु किसी ख़ास कारणसे देर हुई. उन्होंने कायस्थ कान्हको, जो महाराणाका मुसाहिब था, मलहार रावकी फ़ौजमें पहिले भेजकर कहला दिया, कि मैं भी आता हूं. हरगोविन्दकी मिलावटसे मलहार राव एकदम ख़ास जयपुरमें जा पहुंचा, और जातेही काम्याब हुआ. माधवसिंह भी ख़बर मिलते ही उदयपुरसे रवानह होकर सांगानेर पहुंचे; मलहार राव हुल्कर, उनका बेटा खंडेराव, बूंदीके राव राजा उम्मेदसिंह, करौलीके राजा गोपालपालने पेश्वाई की; और जयपुरके महलोंमें पहुंचाकर सब अपने अपने डेरोंको गये. इसी अरसहमें राणूजी सेंधियाका बेटा जय आपा भी अपने लश्करके साथ आ पहुंचा, जो पेश्वाकी इजाज़तसे हुल्करके साथ दक्षिणसे विदा हुआ, और किसी ख़ास कामके लिये पीछे रहगया था. हुल्करने पहिले एक करोड़ रुपया फ़ौज ख़र्च जयपुरसे ठहरा लिया था, जिसमें तीन हिस्से पेश्वाके

और एक उसका था; परन्तु सेंधियाके आ पहुंचनेसे अपने हिस्सेमेंसे आधा उसको देना पड़ा.

दूसरे रोज़ मरहटी फ़ौजके आदमी शहर जयपुरमें ख़रीद व फ़रोख़्त देखनेके लिये गये थे, इसी अ़रसहमें एक शैख़ावतने किसी मरहटेकी घोड़ी छिपा दी, जिसको मरहटोंने पहिचानकर छीन लिया; शैख़ावतोंने उन मरहटोंको तलवारसे मार डाला. इस शोर व गुलसे शहरके दर्वाज़े लग गये; चार हज़ार मरहटी फ़ौजके आदमी, जो शहरके अन्दर थे, उनमेंसे तीन हज़ार मारेगये; और एक हज़ार ज़ख़्मी हुए. इस फ़सादको महाराजा माधवसिंहने बड़ी मुश्किलसे मिटाया, और हुल्करके पास आदमी भेजकर अपनी बरिय्यत ज़ाहिर की. जय आपा बहुत नाराज़ हुआ, परन्तु महाराजाकी लाचारीसे हुल्करने उसे समझाया, और महाराजाने टौंकके चार पर्गने और रामपुरा हुल्करको देकर पीछा छुड़ाया. महाराजा माधवसिंहने तमाम इह्सानोंको भूलकर महाराणाका पर्गनह रामपुरा मरहटोंको देदिया; महाराणा जगत्सिंहने चौरासी लाख रुपया और हज़ारों राजपूतोंके सिर माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेमें बर्बाद किये; लेकिन् इस कहावती दोहेको महाराजाने सच्चा कर दिखायाः—

दोहा.

जाट, जवांई, भाणजो, रैबारी रु सुनार ॥
अतरा कदे न आपणा करदेखो उपकार ॥ १ ॥

मरहटी फ़ौजोंने अपनी अपनी राह ली, और महाराणा यह ख़बर सुनकर खुश हुए; परन्तु रामपुरा हुल्करको देनेसे दिलमें नाराज़ हुए होंगे. राजपूतानहके राजा इस वक़्से मरहटोंके शिकार बनगये.

महाराणा जगत्सिंहका उनकी अ़य्याशीने रोब खो दिया था. जब शाहजहां बादशाहने विक्रमी १७११ [हि० १०६४ = ई० १६५४] में चढ़ाईके वक़् मांडल गढ़, पुर मांडल, बधनौर, मेवाड़से छीन लिये, तब पर्गनह फूलिया भी अपने क़ब्ज़हमें करलिया होगा; क्योंकि महाराणा अमरसिंह अव्वलकी सुलहके वक़् यह पर्गनह भी जहांगीरके फ़र्मानमें कुंवर करणसिंहके नाम लिखा हुआ है. उस फ़र्मानके मुवाफ़िक़ कुल पर्गने विक्रमी १७११ (१) [हि० १०६४ = ई० १६५४] तक क़ाइम रहे. शायद उसी वक़् यह पर्गनह सुजानसिंह, सूरजमलोतको बादशाह शाहजहांने जागीरमें देदिया था; परन्तु फिर महाराणा राजसिंहने अपने मातह्त करलिया. विक्रमी १७३६ [हि० १०९०

---

(१) लेकिन् नैनसी महता लिखता है, कि फूलिया बादशाहने १६८४ के संवत्में ख़ालिसे किया था. इस तह्रीरसे शायद शाहपुरेवालोंका बयान सच हो; वे कहते हैं, कि संवत् १६८६ में फूलिया सुजानसिंहको शाहजहांकी तरफ़से मिला था.

= ई० १६७९] की चढ़ाईके बाद आलमगीरने उसको दोबारह मेवाड़से अलह्दह करलिया; और महाराणा दूसरे अमरसिंहने विक्रमी १७६३ [हि० १११८ = ई० १७०६] से भारतसिंहको अपना मातहत बनाया; लेकिन् भारतसिंहकी बादशाही ख़िद्मत मुआफ़ न हुई. महाराणा संग्रामसिंहने विक्रमी १७८५ [हि० ११४१ = ई० १७२८] में फूलियाको मेवाड़के तअ़ल्लुक़में करलिया; राजा उम्मेदसिंह विक्रमी १७९४ [हि० ११५० = ई० १७३७] में महाराजा अभयसिंहके साथ मुहम्मदशाहके पास दिल्ली गये, जिससे फूलियाकी पेशकशी जुदी बतलाने लगे. तब महाराणाने विक्रमी १७९८ [हि० ११५४ = ई० १७४१] में अपना वकील दिल्ली भेजकर बादशाही हुक्मसे वज़ीरों वग़ैरह की तह्रीरें अपने नाम लिखा लीं. उस वक़्के बाज़ फ़ार्सी काग़ज़ातमेंसे तर्जमह समेत एक तह्रीर यहां दर्ज कीजाती है:-

कमरुद्दीनख़ां वज़ीरकी तह्रीर, ता० ५ शअ़्बान हिज्री ११५६ [विक्रमी १८०० आश्विन शुक्ल ६ = ई० १७४३ ता० २५ सेप्टेम्बर] (१).

पर्गनह शाहपुरा, सावर, जहाज़पुर और बनेड़ा, ज़िला और सूबा अजमेरके मौजूद और आइन्दह कामदारोंको मालूम हो, किइन दिनोंमें वकील, इ़ज़्ज़तदार सर्दार, बहादुरीकी

(१) پروانه *

متصدیان مهمات حال و استقبال پرگنهٔ شاهپوره ساور و جهازپور بنیره
سرکار صوبهٔ اجمیر بدانند که درین ولا وکیل امارت و ایالت مرتبت

निशानी, बड़े दरजह वाले, हिन्दुस्तानके राजाओंके बुजुर्ग, महाराणा जगत्-सिंहकेले अ़र्ज़ किया, कि लिखी हुई जागीरें सीसोदिया राजपूतोंकी जागीरमें, जो महाराणाके हम क़ौम हैं, मुक़र्रर हैं; इन पर्गनोंके रहने वाले सूबहदारके नज़ानोंसे बहुत तक्लीफ़ उठाते हैं; महाराणा मिहर्बानी और रिआ़यतके क़ाबिल उम्मेदवार है, कि मुआ़फ़ीका पर्वानह इनायत हो. इस वास्ते लिखा जाता है, कि ज़िक्र किये हुए बड़े सर्दारकी ख़ातिरसे सूबहदारके नज़ाने वग़ैरह शुरूअ़् फ़स्ल ख़रीफ़ सन् ११५१ फ़स्लीसे इन जागीरोंकी बाबत मुआ़फ़ किये गये; चाहिये कि इन पर्गनोंको मुआ़फ़ समझकर किसी तरहकी दस्तन्दाज़ी न करें; इस बाबत ताकीद जानें. ता० ५ शअ़्बान, सन् २६ जुलूस (मुहम्मदशाही).

अ़र्ज़ीके दफ्तरकी तफ्सील तारीख़ ५ शअ़्बान सन् २६ जुलूस मुबारक.

पुश्तकी तह़रीर

मुक़र्रर जागीर, बड़े दरजहके सर्दार, महाराणा जगत्सिंहके वकीलकी अ़र्ज़ीके मुवा-फ़िक़ दस्तख़तमें आई, कि पर्गनात शाहपुरा, सावर, जहाज़पुर, बनेड़ा, जो महाराणाके हम क़ौम सीसोदिया राजपूतोंकी ज़मींदारीमें क़दीमसे मुक़र्रर हैं, वहांकी रअ़य्यत सूबहदारके नज़ानोंसे तक्लीफ़ें उठाती हैं; और महाराणा रिआ़यतके लाइक़ उम्मेदवार है, कि सूबेके नज़ानों वग़ैरहकी मुआ़फ़ीका पर्वानह शुरूअ़् फ़स्ल ख़रीफ़ सन् ११५१

ابهت و بسالت منزلت گرامی قدر عالیشان سرآمد راجهای هندوستان مهارانا جگت سنگه
التماس نموده که محالات مذکوره زمینداری راجپوتان سیسودیه که از برادران موکل الیه از قدیم
مقرر است، ساکنان پرگنات از پیشکش نظامت تصدیع میکشند - چون مهارانای واجب الرعایت
امیدوار است که پروانهٔ معافی مرحمت شود، لهذا نگارش میرود که بپاس خاطر امارت و ایالت
مرتبت مذکور از پیشکش نظامت وغیره ابواب محالات مذکوره را حسب الضمن من ابتدای
فصل خریف ئیل سنه ۱۱۵۱ فصلی معاف نموده شد - باید که محالات مذکور را معاف و
مرفوع القلم دانسته بوجهی من الوجوه مزاحم و متعرض نشوند - دریباب تاکید دانند - تاریخ
پنجم شهر شعبان سنه ۲۶ جلوس والا قلمی شد فقط *

नक़्ल मुताबिक़, दफ़्तरके हुक्मोंके दफ़्तरके मुवा- मुलाहज़ह
सरिश्तहमें पहुंचगई. मुवाफ़िक़ है. फ़िक़ है. हुआ.

फ़स्लीसे अह्लकारोंके नाम जारी हो; अ़र्ज़, ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ मन्ज़ूर हुई.

बयान दस्तख़त जुम्दतुल्मुल्क, मदारुल महामका यह है, कि मुआ़फ़ीका पर्वानह लिखदिया जावे.

चार पर्गने.

पर्गनह,	पर्गनह,	पर्गनह,	पर्गनह,
बदनौर,	बनेड़ा,	जहाज़पुर,	सावर,
जागीर.	जागीर.	जागीर.	जागीर.

تفصیل ساهه حضور) نقل دفتر رسید) موافق دفتر است) ملاحظه شد

مقرره ضمن بموجب عرض وکیل امارت وایالت مرتبت مهارانا
جگت سنگه، که بدستخط رسیده، آنکه پرگنهٔ شاهپوره ساور وجاجپور بنهره
محالات درزمینداری راجپوتان قوم سیسودیه براه ران موکل ازقدیم
مقرراست، رعایاء آنجا از پیشکش نظامت نهایت تصدیعه میکشند،
چون موکل واجب الرعایت امیدوار است که پروانهٔ معافی پیشکش
وغیره ابواب نظامت بنام متصدیان حال واستقبال از ابتداء
فصل خریف ئیل سنه ۱۱۵۱ فصلی مرحمت شود، التماس شرح
صدر دارد، درینباب امر

بروجب احکام است)

تاریخ ۸ شعبان سنه) صوبه رسیده نقل) احکام است)

۲۷ جلوس مبارک *

شرح دستخط جملة الملک مدار المهام آنکه
پروانهٔ معافی نویسند فقط

للعه محال

پرگنه	پرگنه	پرگنه	پرگنه
بدنور	بنهره	جاجپور	ساور
محال	محال	محال	محال

विक्रमी १८०८ आषाढ़ कृष्ण ७ [हि० ११६४ ता० २१ रजब = ई० १७५१ ता० १६ जून] को इन महाराणाका देहान्त होगया. इनका जन्म विक्रमी १७६६ आश्विन कृष्ण १० शनिवार [हि० ११२१ ता० २४ रजब = ई० १७०९ ता० २९ सेप्टेम्बर] को हुआ था. वंशभास्करमें लिखा है (१), कि जब यह महाराणा ज़ियादह बीमार हुए, तो जिन लोगोंने वलीअ़हद प्रतापसिंहको गिरिफ़्तार किया था, उन्होंने डरकर विचार किया, कि कुंवर प्रतापसिंहको ज़हर देदिया जावे; और महाराणाके छोटे भाई नाथसिंहको गद्दीपर बिठा देवें; परन्तु महाराणाने यह बात सुनकर उन लोगोंको शहरसे बाहर निकलवा दिया. यह बन्दोबस्त करने बाद उनका दम निकल गया. कुंवर प्रतापसिंह करणविलास महलमें, जिसको रसोड़ा कहते हैं, नज़र क़ैद थे; ख़ैरख़्वाह लोगोंने उनको बुलाकर गद्दीपर बिठाया.

महाराणा जगत्सिंह दूसरेका मंझोला क़द, साफ़ गेहुवां रंग, चौड़ी पेशानी थी. वह हंसत मुख, और रहमदिल, उदार, क़द्रदान, इल्मके शौक़ीन, अपने मज़्हबके पक्के और अय्याश थे; इक़ारके कच्चे और अपनी मौरूसी बातोंके घमंडी, साफ़ दिल और फ़िरेबको ना पसंन्द करने वाले थे. इनके वक़्में ऐश व इश्रत और बाप बेटोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे रियासतमें ख़राबीकी सूरत पैदा होकर तनज़्ज़ुलीकी बुन्याद क़ाइम हुई. उन्होंने महलोंमें छोटी चित्रशालीकी चौपाड़में इजारेका काम, पीतमनिवास महलमें चीनीकी ओवरी, तिबारी, जगन्निवास महल और जगन्नाथरायके मन्दिरका, जो बादशाही फ़ौजने बर्बाद किया था, जीर्णोद्धार वग़ैरह इमारती काम बनवाया. इन महाराणाने अपने पिता महाराणा संग्रामसिंहकी छत्री, अहाड़ ग्राम (महासती) में बहुत बड़ी बनवाई, लेकिन् उसके ऊपरका काम गुम्बज़ वग़ैरह नहीं बनने पाया था, कि इन महाराणाका देहान्त होगया; वह छत्री अब तक वैसी ही बग़ैर गुम्बज़ अधूरी पड़ी है.

इन महाराणाके दो महाराजकुमार प्रतापसिंह और अरिसिंह थे.

(१) यह बात हमने यहांकी किसी पोथीमें नहीं देखी, और न किसी कहावतमें सुनी.
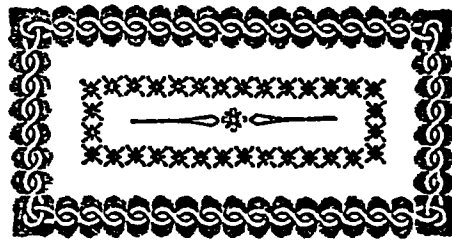
राज्य जयपुरकी तवारीख़.

जुग्राफ़ियह.

रियासत जयपुरकी उत्तरी सीमा बीकानेर, लोहारु झज्झर और पटियाला; दक्षिणी सीमा ग्वालियर, बूंदी, टौंक, मेवाड़ और अजमेर; पूर्वी सीमा अलवर, भरतपुर, और क़रौली; और पश्चिमी सीमा कृष्णगढ़, मारवाड़ और बीकानेर है. यह राज्य २५° ४३′ और २८° ३०′ उत्तर अक्षांशके बीच और ७४° ५०′ और ७७° १८′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान वाके़ है, जिसका रक्बह १५२५० मील मुरब्बा, आबादी सन् १८८१ ई० की मर्दुम शुमारीके मुताबिक़ २५३४३५७ आदमी, और सालानह आमदनी अन्दाज़न पचास लाख रुपया है.

ज़मीन – इलाक़ेकी ज़मीन बराबर साफ़ और खुली हुई है, लेकिन् कई मक़ामोंपर पहाड़ियोंका समूह व सिल्सिला और ऊंचे टीले नज़र आते हैं. रियासतका दर्मियानी हिस्सह मुसल्लस (त्रिकोण) की सूरतपर समुद्रके सत्हसे १४०० से लेकर १६०० फुट तक बलन्द है, जिसकी दक्षिणी आधार रेखा ख़ास शहर जयपुरके पश्चिमी तरफ़को चलीगई है; पूर्वी अलंग पहाड़ियोंका सिल्सिला है, जो उत्तर दक्षिण अलवरकी सीमाके नज़्दीक है. इस मुसल्लसी टीलेके उत्तर पश्चिमको जुदा जुदा पहाड़ियोंका एक सिल्सिला वाके़ है; वह अर्वली पहाड़का एक हिस्सह है, जो त्रिकोणका सिरा है, और पूर्वी सिल्सिलेको शैख़ावाटी खेतड़ीके पास जुदा करता है. इस जगह पहाड़ियां बहुत बलन्द हैं, जिनका यह सिल्सिला शैख़ावाटीके रेगिस्तानी व जंगली हिस्सों, और बीकानेर और जयपुरकी ज़ियादह उपजाऊ ज़मीनकी उत्तर पश्चिमी कुद्रती सीमा है. जयपुरके पूर्वमें शहरके क़रीब पहाड़ी सिल्सिलेके परे दो तीन मील तक तीन चार सौ फुटकी गहराई (उतार) होगई है, फिर आगे बढ़कर बाणगंगा नदीकी तराईके बराबर भरतपुरकी सीमातक सरल उतार है; और जमुनाकी तरफ़ ज़मीन रफ़्तह रफ़्तह कुशादह होती गई है. जयपुरके पूर्वी हिस्सेमें छोटी छोटी पहाड़ियोंका एक सिल्सिला, और क़रौली सीमाके पास कई नाले हैं. दक्षिण पूर्वको बनास नदीकी तरफ़ ज़मीनका हिस्सह झुकता हुआ याने ढालू है, और मैदानमें चन्द जुदी जुदी पहाड़ियां नज़र आती हैं; लेकिन् दक्षिणमें फ़ासिलेपर

फिर पहाड़ी सिल्सिला दिखाई देता है, और राज महलके पास, जहां बनास नदी उक्त सिल्सिलेके दर्मियान होकर गुज़रती है, मौक़ा बहुत दिलचस्प मालूम होता है. जयपुरसे पश्चिमी तरफ़ कृष्णगढ़की सीमाकी ओर मुल्कका हिस्सह रफ़्तह रफ़्तह बलन्द होगया है, और चौड़े खुले हुए मैदान, जिनमें दरख़्त नहीं पाये जाते, मए चन्द जुदा जुदा पहाड़ियोंके वाके़ हैं. ख़ास शहर जयपुरके आस पासकी ज़मीन, वायु कोणको अक्सर रेतीली है, बाज़ जगहपर सिर्फ़ बालूके खंड हैं; मगर इस रेतीली ज़मीनके नीचे सख़्त मिट्टी, कंकर मिली हुई पाई जाती है. पूर्वी तरफ़ बाण गंगाकी तराईके पास अक्सर ज़मीन काली मिट्टीकी, और कुछ दूर आगे बढ़कर रेतीली, लेकिन् उपजाऊ है. जयपुरके दक्षिण दिशामें अक्सर ज़मीन उम्दह व ज़रख़ेज़ है; और बनास नदीके पासकी ज़मीन, जो काली मिट्टीकी रेती मिली हुई निहायत उम्दह है, तमाम रियासतमें सबसे ज़ियादह उपजाऊ हिस्सह है; परन्तु शैख़ावाटीको जुदा करने वाली श्रेणीके उत्तरमें अक्सर रेत ही रेत है.

जयपुरके इलाक़हकी पहाड़ियोंमें, जिनका ज़िक्र ऊपर होचुका है, अक्सर दानादार और रेतीले पत्थर पाये जाते हैं; बाज़ औक़ात सिफ़ेद और काला चमकीला पत्थर और कभी कभी अब्रक़ (भोडल) भी निकल आता है; और दक्षिण पूर्वकी पहाड़ियोंमें रेतीला, और उत्तर वालियोंमें ज़ियादहतर दानादार पत्थर मिलता है. उत्तरकी तरफ़, जहां खेतड़ी और अलवरका पहाड़ी सिल्सिला मिला है, कई क़िस्मकी धातु पाई जाती हैं; पत्थरोंके दर्मियान फिटकरी, तांबा, कोबाल्ट याने सेता और निकेलकी धारियां नज़र पड़ती हैं. खेतड़ीके आसपास तांबा निकाला जाता है, लेकिन् उम्दह कल वग़ैरह न होनेके सबब नफ़ा नहीं होता; कई खानोंके पानीमें भी तांबाकी सल्फ़ेट और फिटकरी बहुत है, और तांबेकी धारियोंके बीचमें कोबाल्ट (सेता) की तह मिलती है. जयपुरमें कोबाल्ट (सेता) मीनाकारीके काममें ज़ियादह सर्फ़ होता है; और दिल्ली व हैदराबाद वग़ैरहको भी इसी मक़्सदसे भेजा जाता है. सांभर झीलका नमक सबसे ज़ियादह कार आमद चीज़ है, जो दूर दूर तक लेजाया जाता है. अब नमककी झील पर अंग्रेज़ी इन्तिज़ाम है.

इस इलाक़हके कई स्थानोंमें इमारत बनानेका पत्थर बहुत है; आंबागढ़ क़िलेके नीचे शहरके पूर्वी पहाड़ी सिल्सिलेमें एक क़िस्मका रेतीला पत्थर, जो मकानात और फ़र्श बनानेके काममें आता है, निकलता है. जयपुरसे २४ मील पर दनाउ मक़ामसे एक तरहका मोटा रेतीला पत्थर निकाला जाता है, जो चौखट, दिहली और स्थम्भोंके बनानेमें काम आता है. जयपुरसे ३६ मील दौसा गांवके पास भांकरी मक़ामसे एक क़िस्मका पत्थर निकाला जाता है, जो छतके काममें

आता है, और लंबाईमें ३० फ़ुटके क़रीब तक भी होता है. जयपुरसे ८२ मील क़रौलीके पाससे, और ९२ मील बसीसे बहुत उम्दह लाल और भूरे रंगका पत्थर आता है, जो ज़ेवर वग़ैरह बनानेके काममें लाया जाता है. मकराणा वाके मारवाड़से सिफ़ेद पत्थर आता है, जो मूर्ति वग़ैरह बनानेके लिये सबसे उम्दह और नर्म है. रायांवाला वाके जयपुरसे एक तरहका मोटा सिफ़ेद पत्थर, जिसका रंग बाद एक मुद्दतके पीला पड़जाता है, निकलता है; भैसलाना वाके कोटपूतलीसे काला पत्थर मूर्ति वग़ैरह बनाने और मीनाकारीके कामका निकाला जाता है; इलाक़ेमें चिनियां पत्थर बहुत है, लेकिन् काणोता मक़ामके पासका उम्दह होता है. कंकर तमाम जगहों में मिलता है.

क़ीमती पत्थर- राज महलके पास होता है, और उसीके पास टोडा मक़ामपर पहिले कई क़िस्मका क़ीमती पत्थर पाया जाना बयान करते हैं.

नदियां- देशका ढाल व पानीका बहाव रियासतके दर्मियानी बलन्द हिस्सेसे पूर्व और दक्षिण पूर्व रुख़को है. कई धारा उत्तर पश्चिमको भी बहती हैं, जो उत्तरी पहाड़ियोंका पानी उत्तरके रेतीले मैदानको लेजाती हैं, और जहां पानी जज़्ब हो जाता है.

बनास- यह नदी इस रियासतमें सबसे बड़ी है, जो पहाड़ी सिल्सिले अर्वली मक़ाम सेमलके पाससे निकलकर उदयपुरके उत्तर और पूर्वको बहती हुई १०० मीलसे ज़ियादह फ़ासिले पर जयपुरके राज्यमें देवलीके पास दाख़िल होती है; और बिलास- पुरसे १० मील पश्चिम रुख़ होती हुई टोडा श्रेणीके पासकी पहाड़ियोंके दर्मियानी तंग रास्तहसे गुज़रकर पूर्व रुख़ बहने बाद रणथम्भोर और खन्डारकी पहाड़ियोंमें, (जहां रियासत जयपुरके नामी क़िले हैं) होती हुई टोंकसे ८५ मील नीचे चम्बलमें गिरती है. इस नदीकी गहराई औसत ३० फ़ुट है, और कई जगह, जहां पानीके ज़ोरसे गड्ढे पड़गये हैं, बहुत ही गहरी है; चौड़ाई बिलासपुरके पास ५०० फ़ुट और टोंकके क़रीब २००० फ़ुट है; सालमें पांच महीने तक तेज़ीके सबब पार उतरनेके लिये किश्तियें दर्कार होती हैं, बिदून किश्तीके मुसाफ़िर पार नहीं जा सक्ता; गर्मीके मौसममें यह नदी सूख जाती है, लेकिन् गहरे खड्डोंमें सालभरके क़रीब तक पानी रहता है. माशी, ढोल और मोरेल वग़ैरह इसकी बाज गुज़ार यानी पानी पहुंचाने वाली नदियां हैं.

बाण गंगा- यह नदी, मनोहरपुरके पासकी पहाड़ीमेंसे निकलकर जयपुरसे ठीक २५ मीलके क़रीब उत्तर और इसी क़द्र दक्षिण पूर्वको बहती हुई रामगढ़ (जो किसी ज़मानहमें रियासत जयपुरकी राजधानी था,) के पास पहाड़ी सिल्सिलेमें

दाखिल होजाती है, जहां उसकी पहाड़ी गुज़रगाहकी लंबाई एक मील, चौड़ाई ३५० से ५०० फ़ुट तक, और गहराई ४०० फ़ुट है. वह यहांसे निकलकर ठीक पूर्वको ६५ मील वहने बाद रियासत भरतपुरमें महुवाके पास दाखिल होती है; इसपर राजपूतानह रेल्वेका एक पुल है, और १० मील आगे बढ़कर इसमें सिशीत मिली है, जो उत्तरसे आती है; इसकी गहराई बहुत है, रामगढ़के पास पहाड़ीके बीचमें यह साल भर तक बहती है, लेकिन् नीचेकी तरफ़ जाकर सूखजाती है, केवल बारिशमें पानी बहता है; रामगढ़के पास २३ फ़ुट पानी चढ़ जाता है.

गंभीरी- हिंडौनके दक्षिणकी पहाड़ीमेंसे निकलकर जयपुरकी पूर्वी सीमामें पूर्व और उत्तर पूर्व बहती है, और जयपुरके इलाक़हमें २५ मील बहकर भरतपुरके इलाक़हमें गुज़रती हुई रूपवासके पास बाण गंगासे मिलकर जमुनामें जा मिली है. इस नदीमें नाले बहुतसे हैं; हिंडौनके पश्चिमकी पहाड़ियोंका पानी, टोडा भीमसे खेरा तक इसी नदीमें जाता है.

बांडी- जयपुरके ठीक उत्तर २० मील सामोद और आमलोदाके पास पहाड़ियोंसे जारी होती, और दक्षिण व दक्षिण पूर्व बहकर कालवाड़ और कालक (१) के पास चटानी पहाड़ी सिल्सिलेकी रुकावटके सबब पश्चिम रुख़को इन पहाड़ियोंके दर्मियानसे गुज़रती हुई १०० मीलके बाद माशीमें जामिलती है. आसलपुर स्टेशनके पास, जयपुरसे २५ मीलपर अजमेर और आगराकी सड़क को पार करती है; इस जगहपर यह ८०० फ़ुट चौड़ी है, बल्कि बाढ़के वक्त हदसे बाहर बहुत दूर तक निकलजाती है, लेकिन् यह ज़ोर सिर्फ़ चन्द घंटों तक रहता है; करारोंकी ऊंचाई १० से १५ फ़ुट तक है.

अमानी शाहका नाला- जयपुर शहरसे उत्तरी तरफ़ इस नदीका मुहाना है, और दक्षिण दिशा क़दीम शहर सांगानेरके नीचे होकर २२ मील बहने बाद ढूंढ नदीमें शामिल होती है. इसमें साल भर तक पानी रहता है; सोतेके पासके सिवाय जयपुर स्टेशनके पश्चिमको एक मीलपर राजपूतानह रेल्वेका एक आहनी पुल है. इसी नदीका पानी नलोंके ज़रीएसे १०४ फ़ुटके क़रीब ऊंचाईपर हौज़ोंमें लेजाया जाता है, जो शहर जयपुरसे ऊंचे हैं; और उनमेंसे शहरके भीतर ५० फ़ुटकी नीचाईपर आहनी नलोंके द्वारा पहुंचता है.

---

(१) कालककी इन्हीं चटानोंके पास महाराजा रामसिंह २, ने बन्द बंधवाकर पानीको रोका है, और उस भरे हुए पानीका नाम कालक सागर रक्खा है; आसलपुर स्टेशनके क़रीब (जहां इस नदीपर पुल बंधा हुआ है,) एक नहर काटकर काठेड़ेकी तरफ़ निकाली है, जिससे ज़िराअतको बहुत फ़ायदह पहुंचता है.

मोरेल- यह बनासकी सहायक नदी है, जिसका निकास दूणीके पासकी पहाड़ियोंमेंसे है, और ३५ मील बहकर ढूंढसे मिलती है, जो ५० मीलके फ़ासिलेसे आती है- ये दोनों मिलकर मोरेल नामसे दक्षिण पूर्व रुख़को ४० मील बहने बाद खारी नदीका पानी लेती हुई पेचीदह राहसे बनासमें जा मिलती हैं.

माशी- बनासकी एक सहायक नदी है, जो राज कृष्णगढ़से निकलकर जयपुरके इलाक़हमें पचेवरके पश्चिम १० मील बहकर ५० मीलकी दूरीपर पूर्व तरफ़ बांडीसे जा मिली है.

ढूंढ- इस नदीका निकास जयपुरके ठीक उत्तरमें १५ मीलकी दूरीपर अचरौल मक़ामके पासकी पहाड़ियोंमेंसे है, और मोरेलमें जा गिरती है. वह दक्षिणमें बहती है, और आंबेरके पूर्व दो मील तक गुज़रकर काणोतामें होती हुई अजमेर व आगराकी सड़कको पार करती है.

खारी- बामणवासके उत्तरमें १० मीलके क़रीब टोडा भीम और लालसोटके पहाड़ी सिल्सिलेमेंसे निकलकर दक्षिणी ज़रखेज़ ज़मीनमें होतीहुई बीस फ़ुटकी गहराईसे ३५ मीलकी दूरीपर मोरेलमें जा मिलती है.

मींढा- जयपुरके उत्तर जैतगढ़के पासकी पहाड़ियोंमेंसे निकलकर पश्चिमी तरफ़ बहती हुई सांभर झीलमें गिरती है.

साबी- जयपुरसे उत्तर २४ मीलके अनुमान जैतगढ़ और मनोहरपुरके पास की पहाड़ियोंमेंसे बहकर उत्तर पूर्व रुख़को गुड़गांवाकी तरफ़ बहती हुई जयपुर रियासतमेंसे गुज़रकर नाभा रियासतमें दाख़िल होजाती है.

सोता- यह नदी झाड़ली और जैतगढ़के पास पहाड़ियोंमेंसे जयपुरसे ४० मीलके फ़ासिलेपर शुरूअ़ होकर उत्तरी पूर्वी तरफ़ इलाक़ेमें गुज़रती हुई ४० मील बहकर साबीसे जा मिलती है.

काटली- खंडेलाके पास पहाड़ियोंमेंसे निकलती है, और जयपुरके उत्तर पश्चिम और झूंझणूके पूर्व बहकर ६० मीलके क़रीब शेख़ावाटी इलाक़हमें बहने बाद बीकानेर इलाक़हके रेतेमें ग़ाइब होजाती है.

झील सांभर- यह जयपुरकी रियासतमें सबसे बड़ी झील है, जो २६° ५८′ उत्तर अक्षांश और ७५° ५′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान जयपुर व जोधपुरकी सीमापर अर्वली श्रेणीके पूर्व, जो श्रेणी राजपूतानहमें उत्तर पश्चिम है, वाक़े है; जब यह भरती है, तो इसकी लम्बाई २० मील, चौड़ाई $\frac{1}{2}$ मीलसे ७ $\frac{1}{2}$ मील तक और गहराई १ से चार फ़ुट तक होजाती है. झीलके आस पासकी ज़मीनमें अनाज वग़ैरह कुछ

नहीं निपजता. इसमें नमककी पैदावारका सालानह औसत ९००००० मन समझा जाता है, और कभी ज़ियादह भी होता है, मसलन् सन् १८३९ ई० में २०००००० मन नमक निकला, जो दर्ज रजिस्टर है; और फ़ी मन आध आना, नमक निकालनेकी मज़्दूरी पर ख़र्च पड़ता है, लेकिन् यह बात मालूम नहीं, कि झीलमें नमक क्योंकर जमा होता है; बाज़े लोग कहते हैं, कि उसमें नमककी चटान है, लेकिन् ग़ालिब यह गुमान किया जाता है, कि झीलके आस पासकी पहाड़ियोंमें नमक है, जो बर्साती पानीके साथ गलकर उसमें बह आता है. इस जगह तीन क़िस्मका नमक याने नीला, सिफ़ेद और सुर्ख़, निकलता है. जिसमेंसे नीला व सिफ़ेद रंगका ज़ियादह राइज और क़ाबिल पसन्द है, जो ज़िला रुहेलखंड और राजपूतानह वग़ैरहमें कस्रतसे जाता है; टोंकमें सिर्फ़ लाल रंगके नमककी चाह ज़ियादह रहती है.

आबो हवा व बारिश- जयपुरकी आबो हवा गर्म और सिहत बख़्श (नैरोग्य) है, मुल्ककी ज़मीन ऊंची और रेतीली होनेके सबब सख़्त बीमारियां कम होती हैं. सर्दीके मौसममें आबो हवा उ़म्दह रहती है, लेकिन् शैख़ावाटीमें अक्सर ख़राब पाई जाती है; क्योंकि वहां सूर्य निकलने तक कुहर रहता है. गर्मीके दिनोंमें पश्चिमकी लू शैख़ावाटी और जयपुरके उत्तरी हिस्सेमें तेज़ चलती है, लेकिन् रेतमेंसे गर्मी जल्द निकल जानेके सबब रातके वक़्त गर्मी कम रहती है, और सुब्हके वक़्त ठंडक होजाती है. दक्षिण और पूर्व तरफ़ लू कम चलती है, लेकिन् ज़मीन रेतीली न होनेसे रात व सुब्हको गर्मी ही रहती है. यहांपर गर्मीके दिनोंमें ज़ियादह गर्मी १०६ दरजे, और सर्द मौसममें ज़ियादह सर्दी ३८ दरजे तक अक्सर पहुंच जाया करती है. शैख़ावाटीको छोड़कर, जिसमें बारिशका कुछ ठिकाना नहीं है, रियासत भरमें बारिश उ़म्दह होती है, उसका औसत २६ इंचके क़रीब माना गया है; और बारिश अच्छी होनेकी वजह, मुल्कका दक्षिण पश्चिमी और दक्षिण पूर्वी मौसमी हवाके बीचमें वाक़े होना है, जिससे दोनों तरफ़से पानी आता है; और यही सबब क़ह्तसाली कम होनेका है. जयपुरमें ज़मीनसे कई तरहका पानी निकलता है, और कुओं वग़ैरहकी गहराई भी एकसी नहीं है; जयपुर और शैख़ावाटीके बीचकी श्रेणीके दक्षिण ३० या ४० फ़ुटकी गहराईके दर्मियान पानी निकल आता है, लेकिन् शैख़ावाटीमें उसी श्रेणीके उत्तर ८० से १०० फ़ुट तक गहरा पाया जाता है; अक्सर जगह पानी खारा है, मगर पूर्व दक्षिण तरफ़ अक्सर मीठा है. उत्तरमें शैख़ावाटी और जयपुरके आस पास कहीं मीठा कहीं खारा है.

जंगल वग़ैरह- जयपुरकी रियासतमें कोई बड़ा जंगल नहीं है; शहरके पास और रियासतके दक्षिणी हिस्सेकी पहाड़ियोंपर धाव ऊगता है, और ऐसे दरख़्त,

जिनकी लकड़ी जलानेके काम आवे, पैदा होते हैं. नींब, बबूल, आम, इमली, बड़, पीपल, सिरस, शीशम, जामुन, वगैरह दररूत आबादीके क़रीब पाये जाते हैं; बबूल और नींब दो क़िस्मके दरख़्त ज़ियादह होते हैं, और इन्हींसे लकड़ीकी तमाम चीज़ें बनाई जाती हैं. शैखावाटीमें दरख़्त बहुत कम होते हैं, खेजड़ा और फोग (एक क़िस्मका सिरस) अक्सर ऊगता है, जिसमेंसे पहिलेकी फलियां मवेशीके खानेमें आती हैं, और दूसरेके फूल आदमी और ऊंट खाते हैं. घास इस रियासतमें कई क़िस्मकी होती है, जो मवेशीके चराने, छप्पर छाने, और टट्टे, टोकरी वगैरह बनानेके काममें आती है.

पैदावार– यहांपर पैदावारकी फ़स्ल एक तरहकी नहीं है, जैसी ज़मीन होती है, उसीके मुवाफ़िक़ अनाज पैदा होता है. शैखावाटीमें खासकर बाजरा और मूंग, जयपुर शहरके पास उत्तरमें भी बाजरा और कुछ गेहूं व जव पैदा होते हैं; दक्षिण पूर्व तरफ़ जवार, मक्की, कपास, और तिल, गेहूं, जव, चना, ईख, अफ़ीम, तम्बाकू, दाल, अलसी और कुसूम ज़ियादह पैदा होता है; पूर्वी ज़िलोंमें किसी क़द्र मोटा चावल भी बोया जाता है; और हरी तर्कारियां, जैसे मूली, पियाज़, बैंगन, मिर्च, ककड़ी, कोला, आल, सोया (एक क़िस्मका साग) वगैरह होती हैं; गर्मीके मौसममें नालोंके रेतमें तर्बूज़ और खर्बूज़े कसरतसे बोये जाते हैं.

राज प्रबन्धका ढंग– राजपूतानहकी तमाम रियासतोंके मुवाफ़िक़ जयपुरके रईस अपने मुल्कका पूरा इख़्तियार दीवानी और फ़ौज्दारीका रखते हैं, और अपनी रिआयाके जीवन मृत्युका उनको अधिकार है. राजधानीमें आठ मेम्बरोंकी एक कॉन्सिल, और खुद महाराजा प्रेसिडेण्टके हुक्मके मुताबिक़ रियासती बन्दोबस्त होता है; एक सेक्रेटरी है, जो ब एतिबार उह्देके मेम्बर भी है. कॉन्सिलके कामोंके चार हिस्से हैं– अदालत, माल, फ़ौज और बाहर संबन्धी; यह सब काम मेम्बरोंके तअल्लुक़ हैं. इलाक़ेका न्याय प्रबन्ध ऐसे अफ़्सरोंके तअल्लुक़ है, जो नाज़िम कहलाते हैं, और ज़िला मॅजिस्ट्रेट या दीवानी जज हैं. हर एक ज़िलेकी नालिश उन्हींकी अदालतोंमें गुज़रानी जाती है; ३०० से कमकी नालिश राजधानीके महकमए मुन्सिफ़ीमें, और उससे ज़ियादहकी सद्र दीवानी अदालतमें दाइर होती है, जिसमें निज़ामत व मुन्सिफ़ी अदालतोंकी अपील भी होती है. खफ़ीफ़ मुक़द्दमोंके सिवा, जो कोतवालके पास जाते हैं, कुल फ़ौज्दारी मुक़द्दमे पहिले सद्र फ़ौज्दारीमें फ़ैसल होते हैं. राजधानीमें अदालत अपील भी है, जिसमें सद्र फ़ौज्दारी और दीवानीकी अपील होती है, और जिसको ५०० रुपयेसे कम मालियतके दीवानी मुक़द्दमोंका अख़ीर फ़ैसला करदेनेका इख़्तियार है. इन सबकी अपील कॉन्सिलमें

होती है, जो रियासतकी सबसे बड़ी अदालत है; लेकिन् यह बात याद रखनी चाहिये, कि अगर जयपुरमें किसी फ़रीक़को अख़ीर फ़ैसलेकी डिक्री (डिगरी) मिलजावे, ताहम उसकी तक्लीफ़ दूर नहीं होती.

फ़ौज- रियासत जयपुरके ३८ क़िलोंपर २०० तोपें चढ़ी रहती हैं. नागा लोग, याने दादूपन्थी साधू ४००० और ५००० के दर्मियान तादादमें हैं; नमक हलाल और बहादुर माने जानेके सबबसे उनकी तादाद ज़ियादह है. ये लोग क़वाइद नहीं करते, और वर्दी भी नहीं पहिनते; तलवार, बर्छी, तोड़ेदार बन्दूक़ और ढालसे तय्यार रहते हैं. सन् १८५७ ई० के ग़द्रमें रईसके नमक हलाल और ख़ैरख़्वाह यही लोग रहे; अगर ये न होते, तो क़वाइद दां फ़ौज रियासतमें फ़साद पैदा करती. पर्गनों व ख़ास राजधानीकी पुलिस जुदा जुदा है. इस रियासतका सालानह फ़ौज ख़र्च ६२०००० रुपया है. राजधानीमें तोपें ढालनेका कारख़ानह है, लेकिन् उसमें बड़ी तोपें ज़ियादह नहीं बनतीं.

टकशाल- ख़ास शहर जयपुरकी टकशालमें अश्रफ़ी (जो १६ रुपयेकी होती है, (१)), रुपये और पैसे बनते हैं.

डाकख़ानह, तारघर और मद्रसह- जयपुरमें ३८ अंग्रेज़ी डाकख़ानोंके सिवा राजके भी डाकख़ाने हैं, जिनके ज़रीएसे रियासतके ज़िलों वग़ैरहमें सर्कारी काग़ज़ात और आम लोगोंके ख़त आते जाते रहते हैं, लेकिन् काग़ज़ात वग़ैरहका महसूल अंग्रेज़ी हिसाबसे ही लिया जाता है.

तारघर- पश्चिमोत्तर देशका बम्बईको जाने वाला तार, जयपुरकी रियासतमें होकर गुज़रा है; और उसका राजधानीमें एक तारघर है.

मद्रसह- राजपूतानहकी तमाम रियासतोंकी बनिस्बत जयपुरके राज्यमें तालीमका सिल्सिलह उम्दह है, जिसने परलोक वासी महाराजा रामसिंह दूसरेके वक़्से ख़ूब तरक़ी पाई. राजधानीका कॉलेज सन् १८४४ ई० में जारी हुआ, उस वक़् तालिब-इल्मोंकी तादाद बहुत ही कम थी; लेकिन् इस वक़् बहुत ज़ियादह होनेके सिवा तालीमी तरीक़ों व इम्तिहानोंकी पढ़ाईमें सर्कार अंग्रेज़ीके कॉलेजोंकी बराबरी करता है. इसमें १५ अंग्रेज़ी मुदर्रिस, ११ फ़ार्सी पढ़ानेवाले मौलवी, और ४ हिन्दी पाठक हैं. उस वक़् मद्रसेका सालानह ख़र्च २४००० रुपयेके क़रीब था. कॉलेजमें एन्ट्रेन्स और फ़र्स्ट आर्ट्स तककी पढ़ाई होनेपर विद्यार्थी कलकत्ता यूनिवर्सिटीको इम्तिहानके लिये भेजे जाते हैं. राजधानीमें बड़े अहलकारों व ठाकुरोंके लड़कोंकी तालीमके लिये एक जुदा पाठशालाके सिवा संस्कृत स्कूल, लड़कियोंकी पाठशाला, कई

(१) आज कल अनुमान २३, रुपये कलदारमें बिकती है.

ब्रांच स्कूल और एक शिल्प शाला भी है. ज़िलोंमेंके ३३ मद्रसोंका ख़र्च राज्यके ख़ज़ानहसे दिया जाता है; और इनके सिवा ३७९ देशी शाला हिन्दी व उर्दूके हैं, जिन सबकी सहायता किसी क़द्र राज्यसे कीजाती है.

ज़ात, फ़िर्क़ह और क़ौम- रियासतमें ब्राह्मण, राजपूत, साधू, बनिया, कायस्थ, गूजर, जाट, अहीर, मीने, मुहम्मदी, क़ाइमख़ानी, वग़ैरह कई क़ौमें हैं. दर्मियानी इलाक़हमें राजपूतोंके सिवा, जो ज़ियादहतर कछवाहा नस्लसे हैं, वाग़रे ब्राह्मण बहुत हैं, जो काश्तकारी करते हैं; और इनके अलावह कई दस्तकारी पेशह लोग रहते हैं. पूर्वी सीमाके पास और दक्षिण पूर्वमें मीने ज़ियादह हैं, जिनकी तादाद राजपूत क़ौमके बराबर समझी जाती है; राजपूत व बनियों वग़ैरहकी संख्या बराबर है. दक्षिणी और मध्य ज़िलोंमें ब्राह्मण व गूजर ज़ियादह आबाद हैं. उत्तर तरफ़ राजधानीके आस पास और पश्चिममें जाट, और शैख़ावाटीमें मुहम्मदी व क़ाइमख़ानी (१) ज़ियादह हैं. गूजर, जाट, अहीर, वग़ैरह लोग खेती करते हैं; और मीने, जिनका क़ब्ज़ह राजपूतोंके आनेसे पहिले जयपुरकी ज़मीनपर था, दो तरहके हैं; एक चौकीदार और लुटेरे, दूसरे ज़मींदार खेती करने वाले. नागा साधू, जो एक फ़िर्क़ह दादूपन्थियोंका है, ग्रहस्थी नहीं होते; जयपुरके राज्यमें ये लोग सिपाहगरीका काम करते हैं. जयपुरमें मुहम्मदी कम हैं, लेकिन् शैख़ावाटीमें क़ाइमख़ानी कस्रतसे आबाद हैं, जो पहिले चहुवान राजपूत थे, पर पीछे मुसल्मान होगये; क़दीम ज़मानहमें इन्हीं लोगोंका इस इलाक़हपर क़ब्ज़ह होना सुना जाता है, जिनको पीछेसे कछवाहा राजा उदयकरणके पोते शैख़ाने बे दख़्ल करके इलाक़ह छीन लिया, और शैख़ावत फ़िर्क़ोंकी बुन्याद डाली, जो शैख़ावाटीके ज़िलेमें मौजूद हैं.

ज़मीनका क़ब्ज़ह व महसूल वग़ैरह- यह बात तहक़ीक़ मालूम नहीं, कि जयपुरके राज्यमें ख़ालिसह, जागीरदारों और पुण्यार्थकी ज़मीन किस क़द्र है; लेकिन् जयपुरके कई वाक़िफ़कार अफ़्सरों वग़ैरहके बयानसे ऐसा पाया गया, कि क़रीब $\frac{१}{८}$ हिस्सह

---

(१) क़ाइम ख़ानियोंकी जो एक क़लमी तवारीख़ "शजतुलमुस्लिमीन," शैख़ नज्मुद्दीनकी बनाई हुई फ़ार्सी ज़बानमें हमारे पास है, उसमें तफ़्सीलवार लिखा है, कि धुरेराके चहुवान राजा मोतीरायके पांच बेटे थे, जिनमेंसे बड़ेका नाम जयचन्द, दूसरेका करमचन्द, तीसरेका नाम मालूम नहीं, चौथेका जगमाल और पांचवेंका जशकरण था. पहिला ज़ैनुद्दीनख़ां नामसे मुसल्मान होने बाद नारनौलका हाकिम हुआ; दूसरा क़ियामख़ां नामसे मुसल्मान किया गया; तीसरेका नाम ज़बरुद्दीनख़ां रक्खा गया; और दो पिछले अपनी अस्ली हालतमें राजपूत बने रहे. दूसरे क़ियामख़ांकी औलाद क़ियामख़ानी हुई, जिसको आम लोग क़ाइमख़ानी बोलते हैं.

रियासतका खालिसह, ६/८ हिस्सह ख़िराजगुज़ार और नौकरी देनेवाले जागीरदारोंका, और २/८ याने १/४ हिस्सह बख़्शिश व धर्म वग़ैरहमें दीहुई जागीरोंका है. जोती बोई जानेवाली ज़मीनका अभी पता नहीं, कि किस क़द्र है; और न इस बारेके राज्यमें काग़ज़ पायेगये; लेकिन् वहांके लोगोंके अन्दाज़ेके मुवाफ़िक़ सींचीजानेवाली ज़मीन कुल रियासतका दसवां हिस्सह है, परन्तु बारिशके मौसममें दुगनी ज़मीन जोती बोई जाती है, और साल दरसाल इसमें भी कमी बेशी होती रहती है. जागीरदार राजपूतोंमें कई ठिकानेवाले ख़िराज, और कई सिर्फ़ चाकरी देते हैं, और बाज़ लोग लगान और चाकरी दोनों देते हैं. ख़िराजका कोई क़ाइदह या मामूल नहीं है; धर्मार्पण और मूंडकटी वग़ैरहकी ज़मीनसे लगान नहीं लिया जाता. काश्तकार लोगोंसे ज़मीनके हासिलमें नक्द रुपया और अनाज दोनों लिया जाता है. फ़ी बीघा या फ़ी हल कोई निर्ख़ मुक़र्रर नहीं. ज़मीन व पैदावारके लिहाज़से छठे हिस्सेसे लेकर आधे तक वुसूल होता है. जयपुरमें पटैल, गांवके मुखियाके तौर तह्सीलदारको जमा वग़ैरह वुसूल करनेमें मदद देता है; पटवारी गांवका हिसाव रखता और क़ानूंगो उसका मददगार रहता है.

रियासत जयपुरमें मए बांदी कुईके ग्यारह निज़ामतें याने पर्गने हैं, जिनका हाल मए उनकी मातह्त तह्सीलोंके यहांपर लिखा जाता है:-

१ निज़ामत हिंडौन.

इसके मुतअ़ल्लिक़ छः तह्सीलें हैं, १ ख़ास तह्सील हिंडौन, २ तह्सील महुवा, ३ तह्सील वालघाट, ४ रत्न ज़िला, ५ तह्सील घोंसला, और ६ तह्सील टोडा भीम. क़स्बह हिंडौन व्यापारका एक बड़ा स्थान है, जिसमें रियासतकी तरफ़से चार सौ के क़रीब जवानोंकी पल्टन, दो तोप, दो सौ नागे रहते हैं; कचहरीका मकान निहायत उ़म्दह है. एक थाना, और एक शिफ़ाख़ानह व मद्रसह भी है; इस ज़िलेमें गेहूं, जव, चना, जवार, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ, तिल, चीना, सिंघाड़ा, तम्बाकू और मूली व गाजरकी पैदावारके सिवा आबो हवा भी उ़म्दह है.

महुवा- तक़्रीबन दो हज़ार चार सौ घरोंकी बस्तीका क़स्वह है; यहांके क़िलेपर दो तोप और चन्द सवार व पैदल रियासतकी तरफ़से रहते हैं; और १०० नागा व ४० सवार तह्सीलके मातह्त हैं.

वालघाट- क़स्वह पहाड़के दामनमें वस्ता है; यहां १०० नागे और ४० सवार मातह्त तह्सील व थानाके रहते हैं; और पहाड़के दक्षिणी तरफ़ एक झील राजके मुलाज़िम जेकब

साहिबकी मददसे बांधा गया, जिससे काश्तकारीको बहुत कुछ फ़ायदह पहुंचता है.

तह्सील खक्कड़- व सबब ज़ियादह और उम्दह पैदावार होनेके रत्न ज़िलाके नामसे प्रसिद्ध है; यह क़स्बह एक टीलेपर वाके है; राज्यकी तरफ़से थाने व तह्सीलमें १०० नागे, ४० सवार और चन्द सिपाही तईनात हैं. इस तह्सीलकी हद रियासत क़रौलीसे मिली हुई है.

क़स्बह घोंसलामें १०० नागे, एक थाना, और चन्द सवार राज्यकी तरफ़से मुक़र्रर हैं.

टोडा भीम- यह क़स्बह एक पहाड़के दामनमें, जो बहुत दूरतक फैला हुआ है, उदयपुरके महाराणा अमरसिंह १, के बेटे भीमसिंहके नामसे प्रसिद्ध है, जिसमें एक थाना, मद्रसह, १०० नागे और चन्द सवार मातह्त तह्सील व थानाके रहते हैं; आबो हवा इस तह्सीलकी मोतदल है.

२ निज़ामत सवाई माधवपुर.

इसके मुतअल्लिक़ ४ तह्सीलें, ख़ास तह्सील सवाई माधवपुर, खंडार, मलारना-डूंगर, और पूतली हैं. शहर सवाई माधवपुर बहुत उम्दह जगहपर आबाद है, जो चारों तरफ़ पहाड़से घिरा हुआ है; और चन्द दर्वाज़े भी हैं. इस इलाक़ेमें मश्हूर क़िला रणथम्भोर एक ऊंचे और चौड़े पहाड़पर बना हुआ है, जिसका मुफ़स्सल हाल मश्हूर मक़ामातकी तफ़्सीलमें बयान किया जावेगा. यहां एक निशान पल्टन, दो सौ ढाई सौ नागा, और पचास सवार तह्सील व थानेके तईनात हैं; राज्यकी तरफ़से एक मद्रसह और शिफ़ाख़ानह भी क़ाइम किया गया है. क़लम्दान, शत्रंज, गंजफ़ा, और पलंगके पाये यहां उम्दह तय्यार होते हैं; यहांके पहाड़ोंमें शिलाजीत पैदा होता है. बर्सातका मौसम इस जगह ख़राब होनेसे बाशिन्दगानको बुख़ारकी शिकायत ज़ियादह रहती है.

खंडार- यहां पहाड़पर इसी क़स्बहके नामका क़िला खंडार बहुत उम्दह और मज़्बूत बना हुआ है, जिसमें कई तोपें, और पचास जवान बिरादरीके रहते हैं; थाना व राहदारी राज्यकी तरफ़से मुक़र्रर है. रणथम्भोर और खंडारके दर्मियान एक बहुत बड़ा जंगल वाके है, जहां शेर, चीते, लंगूर, नीलगाय, रीछ और जंगली कुत्ते कस्रतसे पाये जाते हैं; ये कुत्ते बाज़ वक्त गाय व बैल वगैरहको भी फाड़ डालते हैं; पहाड़पर शिलाजीत पैदा होनेके अलावह खरिया मिट्टीकी भी खान है. पलंग व बान और पाये यहांपर उम्दह बनाये जाते हैं.

क़स्बह मलारना डूंगर, एक पहाड़के नीचे आबाद है, जिसमें पहाड़पर एक मकानके अन्दर चन्द क़ब्रें हैं. यहांपर भी मिस्ल दूसरी तह्सीलोंके राज्यकी तरफ़से जमइयत रहती है; क़स्बहके साम्हने वाले तालाबमें मवेशी वगैरह पानी पीते हैं.

पूतली- क़स्बह पहाड़के दामनमें वाके है, इस पहाड़पर एक क़िला बहुत उम्दह बना हुआ है, जिसमें चन्द तोपें, दो सौ जवान, १०० नागा, और चालीस सवार

रहते हैं; थाना और मद्रसह राज्यकी तरफ़से हैं; यहांके इलाक़हमें मीना लोग और तह्सीलके मुतअल्लक़ गांवोंमें तालाव बहुत हैं. यह पर्गनह लॉर्ड लेकने मरहटोंसे छीनकर ईसवी १८०३ [वि० १८६० = हि० १२१८] में खेतड़ीके सर्दारको फ़ौजी मददके एवज़ दिया था.

३ निज़ामत गंगापुर.

यह क़स्बह एक मैदानमें वाके़ है, और रअय्यत यहांकी आसूदह हाल है. यहांपर एक निशान पल्टनका, १०० नागा, और ४० सवार राज्यकी तरफ़से रहते हैं. इस इलाक़ेमें चावल, अफ़्यून, और तम्बाकू, ज़मीन उ़म्दह होनेकी वजूहसे अच्छी तरह पैदा होता है. तम्बाकू ख़ास गांव ऊदीका बहुत उ़म्दह और मश्हूर है. क़स्बहके चारों तरफ़ शहर पनाह, और उत्तरकी तरफ़ वाले मैदानमें क़िलेके गिर्द ख़न्दक़ खुदी हुई है. पानी यहांका मीठा और उ़म्दह है. इस निज़ामतके मातह्त दो तह्सीलें- बामनवास और वज़ीरपुर हैं.

बामनवास- क़स्बह एक टीलेपर आबाद है; यहांपर भी और तह्सीलोंके मुताबिक़ सवार व सिपाही वग़ैरह राज्यकी तरफ़से रहते हैं. इस तह्सीलमें ज़ियादह आब्रेज़ीके सबब पानीसे बन्द और खेत भरे रहते हैं, इसी वजूहसे चावल खूब पैदा होता है; ख़ास क़स्बह और मुतअल्लक़ गांवोंमें शकरक़न्दी और अफ़ीम ज़ियादह निपजती है. उ़म्दह आबो हवापर भी मौसम बर्सातमें पानीकी कस्रतसे यहांके बाशिन्दोंको तक्लीफ़ और बुख़ारकी बीमारी होजाती है.

वज़ीरपुर- क़स्बहमें १०० नागा और सवार व थाना राज्यकी तरफ़से मुक़र्रर है. इस उ़म्दह पैदावार वाली तह्सीलमें कई तालाव हैं, और ज़मीन सेराब होनेकी वजूहसे चावल, अफ़ीम और गन्ना (सांठा) ज़ियादह पैदा होता है. क़स्बहसे तीन कोस फ़ासिलेपर इस तह्सीलकी हद रियासत क़रौली से मिली हुई है.

४ निज़ामत घौसा.

घौसाके मुतअल्लक़ लालसोट, सकराय, और बस्वा, तीन तह्सीलें हैं. क़स्बह घौसा एक पहाड़के नीचे वाके़ है; इस पहाड़पर क़िलेमें दस पन्द्रह जवान मुतअय्यन हैं. क़स्बहमें एक निशान, २०० नागा और ४० सवार, एक थाना और कुछ जवान बिरादरीके रहते हैं; और क़स्बहसे आध मीलपर रेल्वे स्टेशन है. यह क़स्बह पुराने ज़मानेमें आंबेरसे पहिले रियासत जयपुरकी राजधानी था, जिसके

क़रीब परोन जंगलमें मश्हूर बाग़ी तांतिया टोपी ईसवी १८५९ [वि० १९१६ = हि० १२७५] में सर्कारी फ़ौजके हाथ गिरिफ्तार हुआ था.

क़स्बह लालसोट- पहाड़के नीचे वाके है; यहां क़ौम ब्राह्मण कस्रतसे आबाद है. पहाड़पर एक पुरुतह क़िला वीरान पड़ा है; इस तह्सीलमें पैदावारी अच्छी होती है, और क़स्बह मौरानमें पान कस्रतसे पैदा होता है.

क़स्बह सकरायमें १०० नागा और ४० सवार और एक थाना राज्यकी तरफ़से क़ाइम है. यह तह्सील पैदावारीमें दूसरी तह्सीलोंके मुवाफ़िक़ नहीं समझी जाती, यहांकी ज़मीन कोट क़ासिम कीसी है.

तह्सील बस्वा- क़स्बह बस्वामें एक कच्चा क़िला बना हुआ है, जिसमें दो तोपें और चन्द पहरे सर्कारकी तरफ़से रहते हैं; और तह्सीलके मुतअल्लिक़ १०० नागा और ४० सवार मुक़र्रर हैं. पैदावारीमें यह तह्सील उम्दह गिनी जाती है; इन्आम और उदक वग़ैरह जागीरी गांव भी इसमें ज़ियादह हैं; इस तह्सीलकी हद रियासत अलवरसे मिली हुई है. मिट्टीके उम्दह बर्तनों और आध मीलके फ़ासिलेपर राजपूतानह स्टेट रेल्वेका एक स्टेशन क़ाइम होनेसे यह क़स्बह ज़ियादह प्रसिद्ध है; यहांकी ज़मीनमें ग़ल्लह दो फ़स्ली पैदा होता है.

५ निज़ामत कोट क़ासिम.

ज़मीन यहांकी ख़राब और कम पैदावारकी है, आबो हवा भी अच्छी नहीं, बर्सातमें रास्तह ख़राब और बन्द होजाता है; बाशिन्दोंको बुख़ारकी शिकायत रहती है. यह तह्सील चारों तरफ़ इलाक़ह नाभा, इलाक़ह अंग्रेज़ी और अलवरसे घिरी हुई है. क़स्बह कोट क़ासिम सात सौ घरोंकी आबादी है, जहां एक निशान, २ तोप, चालीस सवार और चन्द जवान बिरादरीके रहते हैं; एक मस्जिद और अक्सर मकानात और एक मीनारा शाही बना हुआ है; यहां खानज़ादह लोग, (खान जादव नामीकी औलाद) ज़ियादह रहते हैं.

६ निज़ामत छावनी नीब.

ख़ास क़स्बह छावनीसे एक मील दूर है, उसमें ५०० घरोंकी और छावनीमें २०० घरोंकी आबादी है; जहां दो सौके क़रीब सवारोंका एक रिसाला, १००० नागोंकी जमाअत, चार निशान, चालीस सवार, २ तोप और एक थाना राज्यकी तरफ़से मुक़र्रर है. छावनीके अन्दर एक क़िला खन्दक़ समेत बना हुआ है, नाज़िम और तह्सीलदार वग़ैरह यहीं रहते हैं; और एक शिफ़ाख़ानह भी है. उदक और इन्आमके

गांव इस पर्गनेमें ज़ियादह हैं; बाजरा और जवार यहां ज़ियादह निपजती है.

इस निज़ामतकी मातहत तह्सील बैराठके गिर्द पहाड़ वाके हैं, और एक क़िला पुख़्तह क़स्बहसे नज़्दीक ही मए चारों तरफ़ खाईके बना हुआ है; चार तोप, २५ जवान क़िलेमें रहते हैं. क़स्बह पिरागपुरा और महेड़में, जो इस तह्सील के मुतअ़ल्लक़ हैं, एक एक पुख़्तह और उ़म्दह क़िला बना हुआ है, जिनमें चन्द तोपें और २५ जवान रहते हैं. महेड़के पास वाले मैदानमें एक खजूरके दरख़्तसे बाणगंगाका निकास है, जो बारह महीने रवां रहती है. इस तह्सीलके जंगलोंमें हर तरहके जानवर पाये जाते हैं, और यहांके सन्दूक़चे, खुश्बूदार मिट्टी और तम्बाकू क़ाबिल तारीफ़ हैं.

७ निज़ामत शैखावाटी.

यह इ़लाक़ह रेतीला और बहुत कम पैदावारका है. इस तह्सीलके मुतअ़ल्लक़ कोई ख़ालिसेका गांव नहीं, सिर्फ़ भोमिये लोग रहते हैं, जो कुछ रुपया राज्यको देते हैं; ठिकानोंके वकील इस निज़ामतमें हाज़िर रहते हैं. यहां एक पुख़्तह क़िलेके अन्दर कचहरी निज़ामत होती है; क़स्बहकी आबादी ४००० घरकी है. यहां दो रिसाले, एक जमाअ़त नागोंकी, एक थाना और शिफ़ाख़ानह राज्यकी तरफ़से है; इ़लाक़हकी सर्हद बीकानेर, पटियाला, जोधपुर और अंग्रेज़ी इ़लाक़हसे मिली हुई है.

८ निज़ामत सांभर.

चूंकि सांभर नमक यहां ज़ियादह पैदा होता है, इसलिये इसका नाम सांभर (१) मश्हूर है. यहांपर रियासत जोधपुरकी हद मिली हुई है, और वहांके अह्लकार वग़ैरह भी यहां रहते हैं. सांभरकी झील, जिसमें नमक पैदा होता है, सर्कार अंग्रेज़ीके ठेकेमें है; उसका सालानह ७३२५६६ रुपया रियासत वालोंको मिलता है. यहांपर कई कोठियां, बंगले, शाही मह्लात और एक तालाब मुहम्मदशाह गोरीका बनवाया हुआ मए उ़म्दह घाट व छत्रियोंके, और दादूपन्थी साधुओंके क़ियामके लिये जहांगीरशाहका बनवाया हुआ एक मन्दिर क़ाबिल देखनेके हैं. दांता रामगढ़ और मुअ़ज़्ज़मावाद दो तह्सीलें निज़ामत सांभरके मुतअ़ल्लक़ हैं.

दांता रामगढ़ अच्छा आबाद क़स्बह है; जिसके पश्चिमी तरफ़ एक पुख़्तह क़िला बना हुआ है, उसमें बहुतसी तोपें और ७५ जवान बे क़वाइद रहते हैं. तह्सील के मातह्त २५ जवान और १०० नागा हैं.

---

(१) पुराने ज़मानेमें यहां चहुवान राजपूतोंकी राजधानी थी, जहां शाकंभरी देवीका प्रसिद्ध मन्दिर होनेके कारण इस स्थानका नाम शाकम्भरी शब्द बिगड़कर सांभर होगया; यहांसे निकले हुए चहुवान राजपूत अब तक सांभरिया कहलाते हैं.

मुअ़ज़्ज़मावाद दो हज़ार घरकी आवादी है; यहांकी ज़मीन पैदावारके लिहाज़से अच्छी है.

९ निज़ामत मालपुरा.

मालपुरामें दो हज़ार घरकी आवादी है, और क़स्वहके किनारेपर एक उम्दह तालाव है; तह्सीलमें दो जमाअ़त नागोंकी और सौ सवार मुतअ़य्यन हैं. महाराजा दूसरे रामसिंहके हुक्मसे जेकव साहिवने क़स्वहसे तीन कोस दूरीपर एक वन्द वंधवाया, जिसके पानीसे हज़ारों वीघा ज़मीन वोई जोती जाती है; वल्कि इलाक़ह टौंक और दूसरी जागीरके गांवोंको भी उससे वहुत कुछ फ़ाइदह पहुंचता है. तह्सील टोडा रायसिंह, और तह्सील नवाय इस निज़ामतके मातह्त हैं.

क़स्वह टोडा रायसिंह, जिसको महाराणा अव्वल अमरसिंहके पोते और भीमसिंहके वेटे रायसिंह राजाने वसवाया था, चारों तरफ़ पहाड़से घिरा हुआ है. क़स्वहकी आवादी उम्दह तर्तीवसे होने और महलों वग़ैरहकी वनावट देखनेसे उक्त राजाका होश्यार और रोवदार होना पाया जाता है; महलोंके दर्मियान मन्सूर शाहकी एक ख़ानक़ाह (दर्वेशोंके रहनेकी जगह) है.

क़स्वह नवाय एक पहाड़के दामनमें आवाद है; और पहाड़पर एक क़िला वना हुआ है.

१० ख़ास निज़ामत सवाई जयपुर.

ख़ास शहर जयपुरकी कैफ़ियत और तर्तीव आवादी वग़ैरहका हाल मश्हूर मक़ामातके वयानमें दर्ज किया जावेगा. तह्सील चाटसू, तह्सील कालक, और तह्सील महुवा रामगढ़ इस निज़ामतके मुतअ़ल्लिक़ हैं.

चाटसूकी तह्सील पैदावारीके हक़में निहायत उम्दह है, और ज़ियादह पैदावारी होनेकी वजह इलाक़हमें तालावों और नदी नालों वग़ैरहकी कस्रत होना है. आवो हवा यहांकी अच्छी और ज़मीन हम्वार है.

तह्सील कालक- क़स्वह पहाड़के नीचे आवाद है, जिसमें अच्छी आवादी, और पहाड़पर एक पुख़्तह क़िला है. क़स्वहके पूर्वमें किनारेपर एक वन्द वंधा हुआ है, जिसका पानी मालपुरा और मुअ़ज़्ज़मावादकी ज़मीनको सेराव करता है.

तह्सील रामगढ़का क़स्वह ढाई हज़ार घरोंकी आवादी है. यहां शाही इमारतें महल और कई उम्दह तालाव भी हैं; ज़मीन औसत दरजहकी है.

११ वांदीकुई.

इसका नाम किसी बांदीके कुआं बनानेसे क़ाइम हुआ. यह एक बड़ा सद्र स्टेशन राजपूतानह स्टेट रेल्वेपर राज्य जयपुरमें है, और क़स्बह मोहनपुरा स्टेशनसे एक मील दूरीपर है. आबो हवा यहांकी अच्छी है. अगले ज़मानेमें यहां लुटेरे और डाकू वग़ैरह लोग ज़ियादह रहते थे, जो वीरानह, घाटी और दर्रोंके आने जाने वाले मुसाफ़िरोंको लूट मारकर जंगलमें भाग जाया करते थे; लेकिन् अब रेलवे स्टेशनके नये इन्तिज़ामसे सब शिकायतें मिट गईं. यहां एक नाज़िम राज्य जयपुरकी तरफ़से रहता है, जिसको मॅजिस्ट्रेटी-का काम सुपुर्द है; वह बस्वासे अजमेर तक रियासती मुक़द्दमातमें दख़्ल रखता है; और सर्कार अंग्रेज़ीसे उसको पास मिला हुआ है, कि जिससे मह्सूलकी बाबत कोई रोक टोक न करसके. इस जगह गेहूं, जवार, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ, कपास तिल, चना वग़ैरह पैदा होते हैं.

मश्हूर शहर व क़स्बे.

जयपुर– यह रियासतकी राजधानी, जो दक्षिणके सिवा हर तरफ़ पहाड़ोंसे घिरी हुई है, एक मुख़्तसर मैदानमें वाके़ है; उत्तरी तरफ़ शहरसे मिला हुआ कई सौ फ़ुट ऊंचा पहाड़, और उसपर आलीशान महल हैं. दक्षिणी तरफ़ इस पहाड़की चढ़ाई बहुत खड़ी और चढ़ने उतरनेके क़ाबिल नहीं है, अल्बत्तह उत्तरकी ओर रफ़्तह रफ़्तह क़दीम राजधानी आंबेर तक नीचा होता गया है. शहर जयपुरकी लम्बाई पूर्व और पश्चिममें क़रीब दो मील, और चौड़ाई उत्तर व दक्षिणमें एक मीलके क़रीब है; उसके हर तरफ़ पक्की शहरपनाह मए ऊंचे बुर्जों व दर्वाज़ोंके है, लेकिन् शहरपनाहकी चौड़ाई इतनी कम है, कि मैदानी तोपख़ानहका मुक़ाबलह नहीं करसक्ती; और बलन्दी भी कम है, जिससे रेता, जो हमेशह उड़ता रहता है, अक्सर मक़ामातपर दीवारके पास कंगूरों तक जमा होगया है; और अगर कभी इस दीवारके गिर्द खाई थी, तो उसका निशान मिटादिया है. शहरपनाहसे बाहर दर्वाज़ोंके मुक़ाबिलमें दीवारें हैं, जिनको घोघस कहते हैं; उनमें तोपोंके वास्ते दमदमे और बन्दूक़ोंके मोर्चे बने हुए हैं; शहरके सात दर्वाज़े एकसी बनावटके हैं. हिन्दुओंके आबाद किये हुए तमाम शहरोंमें जयपुर शहर बहुत ख़ूबसूरती और क़ाइदहके साथ बसा है. सद्र बाज़ार पूर्वसे पश्चिमको दो मील लम्बा और चालीस गज़ चौड़ा है; और इसी चौड़ाईके चन्द बाज़ार उत्तर और दक्षिणमें हैं; दोनों तरफ़के बाज़ारोंके हर एक मिलानपर चौक है, जहां गुदड़ीका बाज़ार लगता है. इन बाज़ारोंके

मुक़ाविलमें दूसरे दरजेके वाज़ार २० गज़ चौड़े, और तीसरे दरजेकी गलियां ९ गज़ चौड़ी हैं; जिस जगह वाज़ार या गलियां बाहम बीचमें मिलते हैं, वह चौक चौपड़ कहलाता है; और कुल शहर चौरस हिस्सोंमें तक्सीम होरहा है. बड़े बाज़ारोंमें तमाम दुकानें एक ही तर्ज़की पक्की बनाई गई हैं, जिन सबके आगे सायबान हैं, और बाज़ारोंको जुदा जुदा रंगोंसे रंग दियागया है.

महाराजा साहिबका महल और बाग़ मए मकानातके शहरके दर्मियानी हिस्सेमें, जिसकी लम्बाई आध मील है, वाक़े है; महलका अव्वल मकान 'हवा महल' बाज़ारके किनारेपर सात आठ मन्ज़िल ऊंचा है, उसके गिर्द बलन्द बुर्ज और उनपर छत्रियां हैं; इहातेके भीतर दो बहुत बड़े और कई छोटे दीवान ख़ाने संगीन थम्भोंके हैं, और बाग़, जिसके गिर्द बलन्द मोर्चेदार दीवार है, निहायत ख़ूबसूरत और रौनक़की जगह है, उसकी सड़कोंपर फ़व्वारे और सर्व व शमशाद तथा कई क़िस्मके फूलदार दरख़्त और जा बजा आराइशके चबूतरे कस्रतसे हैं; अगर्चि हरएक तरह जियादह ख़ूबसूरत नहीं है, लेकिन् हक़ीक़तमें कुल बाग़ बहुत उम्दह और दिलचस्प है. जैकोमिन्ट साहिबने लिखा है, कि इस बड़े इहातेके अन्दर १२ महल हैं, कि हर एकसे दूसरेको नाल या बाग़में होकर आने जानेका रास्तह है. सबसे उम्दह मकान दीवान ख़ास बिल्कुल संग मर्मरका बनाहुआ है; और यही पत्थर कुल मकानातमें कस्रतसे ख़र्च हुआ है; बड़े बाज़ार और गलियोंमें भी मकानात इसी पत्थरके बड़ी ख़ूबसूरतीसे बने हैं, और ऐसेही मन्दिरों और मस्जिदोंकी बड़ी बड़ी इमारतोंकी कस्रतसे शहरने रौनक़ और दुरुस्ती पाई है. शहरसे चार मीलके फ़ासिलेपर अमानी शाहके नलेसे आहनी नलोंके द्वारा शहरमें मीठा पानी लाया जाता है, जिससे बाशिन्दोंको बड़ा आराम रहता है. इस शहरको महाराजा सवाई जयसिंह दूसरेने विक्रमी १७८५ [हि० ११४० = ई० १७२८] में आबाद करके अपने नामसे नामज़द किया था, और अपने निवासके कारण कुल राज्यका कारख़ानह क़दीम शहर आंबेरसे लाकर यहांपर क़ाइम किया, कि जबसे दिन बदिन कम होकर अब आंबेर वीरान होगया है.

आंबेर- जयपुरसे चार मील उत्तरमें पहाड़ोंके अन्दर एक छोटे तालाबके किनारेपर वाक़े है, उसके मन्दिर और मकानात और गलियां पहाड़ोंके नालोंपर, जो कि तालाबसे मिले हैं, फटी हैं. इन गलियोंमें, जो बहुत पेचदार और गुंजान दरख़्तोंके छायासे अंधेरी हैं, अब सिवा ख़ाकी जटाधारी वैरागियोंके, जो वीरान मकानात और मन्दिरोंमें रहते हैं, कोई नहीं रहता. तालाबके पश्चिमी किनारे और पहाड़के दामनपर आंबेरका बड़ा भारी महल और शिलादेवीका मन्दिर है,

जिसकी इमारत बहुत मज्बूत और चौड़े आसारोंकी काश्मीरकी क़दीम इमारतसे बहुत कुछ मिलती है. जैकोमिन्ट साहिब और हेबर साहिब दोनोंने लिखा है, कि हमने ऐसा दिलचस्प, खुशनुमा और खूबसूरत मकाम और कोई नहीं देखा. पहाड़के ढालपर और भीतरी अंधेरी जगहमें चार बुर्जोंसे महफ़ूज़ ज़नानह महल, और उससे बढ़कर, मगर बुर्जों व दर्वाज़ोंके ज़रीएसे महलसे मिला हुआ बड़ा क़िला है, जिसके हर तरफ़ दमदमे और मोर्चे बने हुए हैं; और सबसे बलन्दीपर एक उम्दह खूबसूरत मीनार है. लड़ाई झगड़ोंके ज़मानहमें क़िलेके तौर पर काम आनेके सिवा यह मक़ाम बतौर राज्यके खज़ानह और जेलखानहके काममें लाया जाता है. कहते हैं, कि शिला देवीके मन्दिरमें पुराने ज़मानेमें हर रोज़ आदमी मारा जाता था, अब उसकी जगह बकरा मारा जाता है. जयपुरके आबाद होनेसे पहिले क़दीम ज़मानहमें आंबेर राजधानी था, जिसको कछवाहा राजपूतोंने विक्रमी १०९४ [हि० ४२८ = ई० १०३७] में सूसावत मीनोंसे बड़ी लड़ाईके बाद छीना, और उनको वहांसे हटाकर चन्द गांव देने बाद रियासतके क़िलों और खज़ानहकी हिफ़ाज़त रखनेकी नौकरी सुपुर्द की, जिसका हक़ ज़मानए हाल तक वही लोग रखते हैं. यह शहर २६° ५९′ उत्तर अक्षांश और ७५° ५८′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान वाक़े है.

क़िला रणथम्भोर– यह क़िला शहर जयपुरसे ७५ मील दक्षिणी सर्हद याने बूंदीकी तरफ़ एक पहाड़पर, जिसके हर तरफ़ गहरे और पेचदार नाले तथा पहाड़ हैं, और एक तंग रास्तहसे गुज़र है, वाक़े है. ऊपर जाकर पहाड़की बलन्दी ऐसी सिधी है, कि सीढ़ियोंके ज़रीएसे चढ़ना पड़ता है; और चार दर्वाज़े आते हैं. पहाड़की चोटी एक मीलके क़रीब लम्बी और इसी क़द्र चौड़ी है, जिसपर बहुत संगीन फ़सील बनी हुई है, जो पहाड़की हालतके मुवाफ़िक़ ऊंची और नीची होती गई है, और जिसके अन्दर जा बजा बुर्ज और मोर्चे बने हुए हैं. इहातेके भीतर क़िलेदारके रहनेका महल है, और किसी मुसल्मान पीरका मज़ार और एक पुरानी मस्जिद बाक़ी है. फ़ौजके लिये कई बारकें भी मौजूद हैं. क़िलेके अन्दर कई ऐसे बर्साती चश्मे और तालाब हैं, जो वहांकी ज़ुरूरतके लिये काफ़ी होसक्ते हैं; क़िलेके पूर्वी तरफ़ एक तंग और संगीन ज़ीनहके ज़रीएसे मिला हुआ क़स्बह आबाद है. इस क़िलेका फ़त्ह करना चारों तरफ़ पहाड़ोंसे घिरे रहनेके सबब हमेशह मुश्किल समझा गया है. राज्य जयपुरकी तरफ़से इसमें एक हज़ारके क़रीब फ़ौज तीस तोपों समेत रहती है.

इस नामी क़िलेको दर्मियानी तेरहवीं सदी ईसवीमें किसी चहुवान राजाने
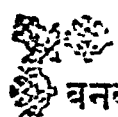
बनवाया था. विक्रमी १३४८ [हि० ६९० = ई० १२९१] में जलालुद्दीन फ़ीरोज़शाह खिल्जीने इसपर घेरा डाला; लेकिन् वह काम्याब न होसका. विक्रमी १३५४ [हि० ६९६ = ई० १२९७] में अलाउद्दीन मुहम्मदशाह खिल्जीने क़िलेकी दीवार तक पुश्तह बनाने बाद राजा हमीरदेवको क़त्ल करके, जो एथ्वीराजका रिश्तहदार था, (१) इसे छीन लिया; और खिल्जियों और तुग़्लक़ोंके आख़िर अह्द तक वह दिल्लीके मुतअल्लक़ रहा. तेरहवीं सदी ईसवीके ख़त्मपर, जब कि तुग़्लक़ोंके कम्ज़ोर होनेसे उनके मातहत सूबहदार, दक्षिण, गुजरात, मालवा, बंगाला वगैरहके सूबोंपर खुद मुख़्तार बन बैठे, और तीमूर लंगने दिल्लीको ग़ारत और तबाह किया, यह क़िला मालवी बादशाहोंके क़ब्ज़हमें गया; और वह यहांपर विक्रमी १५७२ [हि० ९२१ = ई० १५१५] तक क़ाबिज़ पाये जाते हैं. ख़याल किया जाता है, कि विक्रमी १५७६ [हि० ९२५ = ई० १५१९] में, जब कि मालवेका महमूद सानी मुक़ाबलह करके महाराणा सांगाकी क़ैदमें पड़ा, तो क़िला रणथम्भोर कुछ इलाक़ह समेत मेवाड़के क़ब्ज़हमें आया; और उनके बेटे महाराणा रत्नसिंहके बाद तक वहींके मुतअल्लक़ रहा. विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२७] में महाराणा सांगाके गुज़रनेपर उनका बड़ा बेटा रत्नसिंह चित्तौड़की गद्दीपर बैठा, और दूसरे विक्रमादित्यके क़ब्ज़हमें रणथम्भोर रहा. तुजुक बाबरीसे पायाजाता है, कि इन दोनों भाइयोंमें अदावत होनेसे बड़ा रणथम्भोरको और छोटा चित्तौड़को लेनेकी फ़िक्रमें था; इसी सबबसे विक्रमादित्यने क़िले रणथम्भोरको ज़िले शम्सावादके एवज़ बाबर बादशाहके हवाले करदेनेका इरादह किया था, जो उनके बड़े भाईके गुज़रजाने और उनके राज पानेसे मुल्तवी रहा. विक्रमी १६०० [हि० ९५० = ई० १५४३] में, जब शेरशाह सूरने राजपूतानहपर चढ़ाई और मालदेवसे लड़ाई करके नागौर व अजमेरको लेलिया, तो उस वक्त या उससे कुछ पहिले उसने रणथम्भोरको दबा लिया; और अपने बड़े बटे आदिलखांको जागीरमें देदिया. शेरशाहके मरने बाद, जब उसकी औलादमें बद इन्तिज़ामी फैली, और हुमायूंने काबुलकी तरफ़से पंजाब आ दबाया, तो पठानोंको मज्बूत मक़ामातसे हाथ उठाना पड़ा; चुनांचि मुहम्मदशाह अद्‌लीके अह्द विक्रमी १६१५ [हि० ९६५ = ई० १५५८] में झुझारखां क़िलेदारने राव सुर्जन हाड़ाको, जो मेवाड़का एक मातहत सर्दार और बूंदीका जागीरदार था, कुछ रुपया लेकर क़िला हवाले कर दिया. विक्रमी १६२५ फाल्गुन् [हि० ९७६ रमज़ान =

(१) फ़ीरोज़ शाहीमें हमीरदेवको एथ्वीराजका "नबीसह" लिखा है, जिसका अर्थ 'दोहिता' और 'पोता' होता है.

ई० १५६९ फ़ेब्रुअरी] में अक्बर बादशाहके चढ़ाई करनेपर राव सुर्जनने उसको क़िला हवालह करके मेवाड़के एवज़ बादशाही इताअ़त कुबूल की, और फिर इस क़िलेपर मेवाड़ वालोंका दख़्ल न होसका. विक्रमी १६७६ [हि० १०२८ = ई० १६१९] में जहांगीर इस क़िलेकी सैर करके बहुत खुश हुआ. वह लिखता है, कि 'रण' और 'थम्भोर' दो टेकरियोंमेंसे, जो क़रीब हैं, पिछलीपर क़िला बनाया गया था; और दोनों टेकरियोंके नाम मिलाकर क़िलेका नाम रणथम्भोर रख दिया गया है. शाहजहांने अपने शुरूअ़ अ़हद विक्रमी १६८८ वैशाख कृष्ण ८ [हि० १०४० ता० २२ रमज़ान = ई० १६३१ ता० २४ एप्रिल] को यह क़िला राजा विठ्ठलदास गौड़को इनायत किया था; लेकिन् आलमगीरने इसको वापस खालिसेमें दाख़िल किया, जो दर्मियानी अठारहवीं सदी ईसवी तक दिल्लीके मातह्त रहा. अ़ज़ीज़ुद्दीन आलमगीर सानीके अ़हद विक्रमी १८१२ [हि० ११६८ = ई० १७५५] में, जब कि मुग़्लियह सल्तनत तबाहीके क़रीब पहुंची, तो बादशाही क़िलेदारने मरहटोंके ख़ौफ़से यह क़िला जयपुरके महाराजा माधवसिंह अव्वलको सौंप दिया, और जबसे अब तक वहींके क़ब्ज़हमें चला आता है. क़िलेदारकी औलादमेंसे कई जागीरदार अब तक जयपुरके मातह्त हैं, जिनकी वहां बहुत कुछ ताज़ीम व इज़्ज़त कीजाती है.

ईसरदा- एक आबाद रौनक़दार क़स्बह शहरपनाह और खाईसे घिरा हुआ जयपुरसे साठ मील बनास नदीके तीरपर वाके़ है. यह एक जागीरदारका ठिकाना है, और इसमें एक गढ़ है.

खेतड़ी- जयपुरके एक बड़े सर्दारकी राजधानी क़िला समेत है, जिसकी पहाड़ीके क़रीब तांबेकी खानें हैं. क़स्बहमें एक मद्रसह, अस्पताल और एक सर्कारी डाकख़ानह भी है.

बगरू- एक मश्हूर क़स्बह आगरा व अजमेरकी सड़कपर राजधानी जयपुरसे १८ मील दूरीपर है, जिसमें रंगसाज़ी और कपड़ा छापनेका काम ज़ियादह होता है.

डिग्गी- एक मश्हूर और आबाद क़स्बह कच्ची शहरपनाह व कच्चे क़िले सहित जयपुरसे ४२ मील दक्षिणको है, और ख़ासकर कल्याणरायजीके मेलेके लिये मश्हूर है, जिसमें १५००० आदमी हर साल जमा होते हैं.

दूदू- आगरा व अजमेरकी सड़कपर कच्ची शहरपनाहसे घिरा हुआ है, जिसमें एक छोटा, लेकिन् मज्बूत क़िला है.

दूणी- यह एक आबाद क़स्बह है, जिसका क़िला विक्रमी १८६६ [हि० १२२४ = ई० १८०९] में दौलत राव सेंधियाके मुक़ाबलहमें मज्बूत रहने और बचाव करनेमें कामयाब होनेके सबब मश्हूर है.

फ़त्हपुर- शैख़ावाटी ज़िलेमें मोर्चा बन्द क़स्बह सीकरके सर्दारका है, जो जयपुरका ख़िराज गुज़ार है; इसको राव राजा लक्ष्मणसिंहने अपने रहनेके लिये आबाद किया था, उस वक़ यह बड़ी रौनक़पर था.

नाराणा– अगर्चि यह एक छोटा क़स्वह जयपुरसे ४० मील फ़ासिलेपर पश्चिमकी तरफ़ वाके है, लेकिन् पुराने ज़मानहका वसा हुआ, और अच्छे अच्छे मन्दिर तथा दादूपन्थी साधुओंका मुख्य स्थान होनेके सवव मश्हूर है. ऊपर लिखे हुए क़स्वोंके सिवा लक्ष्मणगढ़, नवलगढ़, उनियारा, रामगढ़, सामोद, सीकर व सांगानेर, सिंघाणा, सांभर वगैरह भी अक्सर प्रसिद्ध क़स्वे हैं.

मज़्हवी मक़ामात– गलता; अंविकेश्वर; सांगानेरके जैन मन्दिर, जिनमेंसे कितने एक १००० से ज़ियादह सालके वने हुए और आबूपर देलवाड़ा मक़ामके मश्हूर जैन मन्दिरोंकी तर्ज़पर वनाये गये हैं; खो, एक छोटासा गांव इस लिये मश्हूर है, कि कछवाहा राजपूतोंने पहिले पहिल जयपुरकी रियासतमें इसी गांवपर क़व्ज़ह पाया था; चर्णपाद; वैराट; गेहटोरकी छत्रियां वगैरह कई प्रसिद्ध और क़दीम ज़मानेके मक़ामात तीर्थ यात्रा आदिके लिये मश्हूर हैं.

मश्हूर मेले– चाटसूमें डूंगरी शेलरमाता, कालकमें ज्वाला माता, नराणामें दादू, आंवेरमें शला देवी, जयपुरमें रामनवमी, तालामें पीर बुर्हान, गोदेरमें गोदेर जगन्नाथ, नईमें महादेव, शामोदमें महिमाई, डिग्गीमें कल्याणराय, हिंडौनमें महावीर, चौसामें रघुनाथ, भांडारेजमें गोपाल, वसवामें पीर शाहखारार, टोडा भीममें खंडमखंडी, सकराय में माता, सवाई माधवपुरमें गणेश व काला गोरा भैरव, वर्वाड़ामें चौथ माता और खंडारमें रामेश्वरका मेला होता है. ऊपर लिखे हुए मक़ामोंके सिर्फ़ व्यापार व धर्म सम्वन्धी मुख्य मेलोंके नाम यहां दर्ज किये गये हैं, जिनमें प्रति वर्ष हज़ारहा आदमी जमा होते हैं, परन्तु सांगानेर व आंवेर वगैरहमें हर साल कई छोटे छोटे मेले और भी होते हैं.

ख़ास शहर जयपुरमें संगतराशीका काम याने सियाह व सिफ़ेद पत्थरकी मूर्तियां वगैरह कई चीज़ें उ़म्दह वनती हैं. ऊनी कपड़ा याने वारानी, घुग्घी व चकमे मालपुराके मश्हूर हैं. सोने व चांदीकी लेस, कलावतूनी कामके जूते, चूड़ियां, दो-पट्टे, छींट, और मीनाकारीकी चीज़ें जयपुरमें वहुत उ़म्दह और मश्हूर वनती हैं; यहांकी वनी हुई मीनाकारीकी चीज़ें पैरिस, लंडन व वियेनाकी नुमाइशगाहोंमें भेजी जाती हैं.

वाहर जानेवाली व्यापारकी ख़ास चीज़ें इस रियासतमें कपास, अनाज, किराना, शक्कर, छपे हुए कपड़े, चमड़ा, शैखावाटीकी ऊन, संगमर्मरकी मूर्तें, चूड़ी और जूता वगैरह हैं. वाहरसे आनेवाली चीज़ें अनाज, विलायती कपड़ा, शक्कर, वर्तन, और मुसालिह (मसाल्ह) वगैरह हैं.

आमदोरफ़्त व व्यापारके रास्ते– १ जयपुरसे टोंक तक जानेवाली सड़क, ६० मील

लम्बी; २ मंडावर व क़रौलीकी सड़क, मंडावरसे क़रौली तक ४९ मील लम्बी है; ३ आगरासे अजमेरको जानेवाली राजपूतानह रेल्वे लाइन, राजधानी और राज्यके बीचमें होकर पूर्व और पश्चिमको गई है, जो सबसे बड़ा रास्तह तिजारती सामान लाने और नमक व रूई वग़ैरह कई चीज़ें पश्चिमोत्तरी देश व पंजाब वग़ैरहमें लेजानेका है; और भी छोटे छोटे बहुतसे रास्ते हैं, जिनका बयान तवालतके सबब छोड़दिया गया है.

राज्य जयपुरकी तवारीख़,
कछवाहोंका इतिहास.

इस राज्यकी तवारीख़ एकट्ठी करनेके लिये हमने बहुत कुछ कोशिश की, महाराजा धिराज श्री माधवसिंह २, को वर्तमान महाराणाने और रेज़िडेण्ट मेवाड़, कर्नैल वाल्टरने भी कहा; और मैं (कविराज श्यामलदास) ने भी रूबरू निवेदन किया, उक्त राजधानीके मन्त्री व प्राइवेट सेक्रेटरी व सर्दारोंके पास यहांसे एक आदमी भेजा गया, तथापि हमको इच्छानुसार वहांका इतिहास न मिला. तब लाचार नीचे लिखी हुई किताबोंसे काम लिया.

नेनसी महताकी पुरानी तहक़ीक़ात, कर्नैल टॉडका इतिहास, राजपूतानह गज़ेटियर, कर्नैल ब्रुकका जयपुर गज़ेटियर, जयसिंह चरित्र (भाषा कविताका ग्रन्थ, आत्माराम कवि कृत), जयवंश महाकाव्य संस्कृत, राम पंडितका बनाया हुआ, एक पुस्तक जयपुरकी ख्यात भाषावार्तिक, पंडित रामचरण डिप्युटी कलेक्टर झालरापाटनकी भेजी हुई, तथा एक दूसरी ख्यात जयपुरकी, जो हमने छोटू नागर की पुस्तकसे लिखवाई; उक्त नागर महाराणा स्वरूपसिंहके समय जयपुरकी ख़बर नवीसीपर मुक़र्रर था; तीसरी ख्यात जोधपुरके रेज़िडेण्ट पाउलेट्की हिन्दी पुस्तकसे नक़्ल करवाई, शिखर वंशोत्पत्ती, चारण कविया गोपालकी बनाई हुई, जो कर्नैल पाउलेट्की पोथीसे नक़्ल कराई गई; वंशभास्कर, बूंदीके मिश्रण चारण सूर्यमल्ल कृत भाषा कविता. इनके अ़लावह फ़ार्सी तवारीख़ें अक्बर नामह, इक़्बाल-नामए जिहांगीरी, तुज़ुक जिहांगीरी, बादशाह नामह, अ़मल स्वालिह, आलम-गीर नामह, मआसिरे आलमगीरी, मुन्तख़बुल्लुबाब, मिराति आफ़्ताब नुमा,

सैरुल्मुतअख़्ख़िरीन, मआसिरुल् उमरा वगैरहसे राजा भारमल्लके बाद इस वंशका हाल चुनागया; परन्तु हमारी तसल्लीके लाइक़ नई तहक़ीक़ात और जयपुरके दफ़्तरसे अथवा वहांके मुलाज़िमोंसे कोई काग़ज़ात नहीं मिले; और ऊपर लिखी हुई सामग्रीसे राजा भारमल्लके बादका हाल कुछ ठीक होगा, परन्तु उक्त राजासे पहिला इतिहास, जो कहानी व क़िस्सोंके मुवाफ़िक़ मिलता है, वह अगर्चि क़ाबिल इत्मीनान नहीं है, लेकिन् लाचारीके सबब उसीका आश्रय लेना पड़ा.

इस वंशको सूर्य कुलकी एक शाख़ बतलाते हैं, परन्तु ईपासिंह और सोढ़देवके पहिलेका इतिहास बिल्कुल अन्धकारमें पड़ा हुआ है, टटोलनेसे भी अस्ल मत्लब हाथ नहीं लगता, कुर्सीनामे अनेक तरहके मिलते हैं, किसीमें दस पांच नाम ज़ियादह किसीमें कम; किसीमें नये ही नाम घड़ंत किये गये हैं; बाज़ रामचन्द्रके पुत्र कुशसे जुदी ही शाखा ईपासिंह तक मिलाते हैं, और किसीने अयोध्याके आख़िरी राजा सुमित्रसे ईपासिंह तक वंश चलाया. इस इख़्तिलाफ़को देखकर दिल क़बूल नहीं करता, कि मैं भी उन लकीरोंमेंसे किसी एकपर चलूं; आख़िरकार यही ठहराया, कि राजा सुमित्रसे पहिला हाल तो भागवत पुराण, और महाभारतके हरिवंश वगैरह संस्कृत ग्रन्थोंमें लिखा हुआ है, जिसमें हेर फेर नहीं होसका; और सुमित्रसे लेकर ईपासिंहके बीचका हाल छोड़कर ईपासिंहसे तवारीख़ लिखना शुरूअ् किया है.

देवानीकके पुत्र १ राजा ईपासिंह ग्वालियरका राज्य करते थे. एक समय विद्वान ब्राह्मणोंके कहनेसे धन दौलत उन्होंने कुल ब्राह्मणोंको लुटादी, और ग्वालियरका राज अपने भानजेको देकर किसी दूसरी जगह जारहे. उनका पुत्र २ सोढ़देव विक्रमी १०३३ कार्तिक कृष्ण १० [हि० ३६६ ता० २४ मुहर्रम = ई० ९७६ ता० २२ सेप्टेम्बर] को नैशध देश बरेलीमें अपने बापकी जगह राजा हुआ, और यादव कुलकी राजकन्याके साथ विवाह किया, जिसके गर्भसे दुर्लभराज अर्थात् दुल्लहराय कुंवर पैदा हुआ. इस कुंवरने अपने बापके हुक्मसे फ़ौजकशी करके द्यौसामें अमल करलिया, जहां बड़गूजर राजपूतोंका राज था, और जो बहुतसे मारे गये. इस राजकुमारने भांडारेजमें अमल किया, और इसी तरह मांचीपर हमलह किया, जो मीना लोगोंके रहनेका बड़ा विकट स्थान था; परन्तु वहां फ़ौज सहित यह खुद ज़ख़्मी हुआ. ख्यातमें लिखा है, कि अपनी कुलदेवीकी दुआ (वरदान) से उसने फिर मीनोंको मारकर मांचीमें अमल करलिया, और वहां एक क़िला बनाकर उसका नाम रामगढ़ रक्खा; और अपनी कुलदेवी जमुहाय माताका भी एक मन्दिर बनवाया. सोढ़देवने अपने पुत्र दुल्लह-रायको युवराज बना दिया. कुछ अरसे बाद सोढ़देवका इन्तिक़ाल हुआ, और

३ दुल्हराय राजा होने बाद मीणा वग़ैरह सर्कश लोगोंको दबाकर ज़बर्दस्त होगया. फिर वह ग्वालियरकी तरफ़ लड़ाईमें मारा गया. तब उनके बेटोंमेंसे बड़ा कांकिल गादी बैठा, और छोटा विकल था, जिसके बिकलावत कछवाहा कहलाये, और जिसकी औलाद रामपुर वग़ैरहमें है.

४ कांकिलने अपनी बहादुरी और जमुहाय माताके हुक्मसे मीणा लोगोंको मारकर अम्बिकापुर (आंबेरके) शहरकी नीव डाली; और अम्बिकेश्वर महादेवका मन्दिर बनवाया. कांकिलका देहान्त हुआ, तो उनके चार बेटोंमेंसे बड़ा ५ हणूं गादी बैठा; दूसरा अलखरायके, झामावत कछवाहा हुए, जिनका वंश अब कोटड़ीमें है; तीसरा देलण, जिनकी औलाद पूर्वमें हरड्या वैद्यनाथके पास है; चौथा रालण, जिनकी औलाद नंगली पालखेड़ाके पास लहरका कछवाहा कहलाती है. हणूंका इन्तिक़ाल होने बाद उनका बेटा ६ जानड़देव गादी बैठा; और उनके बाद ७ प्रजूनराय राजा बना, जो बड़ा पराक्रमी और राजा पृथ्वीराज चहुवानके सामंतोंमें नामवर था. यह भी लिखा है, कि पृथ्वीराजकी बहिनके साथ उसकी शादी हुई थी. प्रजून के बाद ८ मलेसीने अपने पिताका पद पाया, और उनके बाद ९ बीजलदेव क्रमानु-यायी हुआ, जिनके पीछे १० राजदेव गद्दीपर बैठा, जिसने अपने पूर्वज कांकिलके बनाये हुए आंबेर स्थानमें शहर आबाद करके राजधानी बनाई. इसके छः बेटे हुए, १ कील्हण, २ भोजराज, इनकी औलाद लवाणगढ़के कछवाहे कहलाते हैं; सिवाय इसके इनके वंशकी शाखा प्रशाखा और भी कई शाखें हैं. ३ सोमेश्वर (१), ४ बीकमसी, ५ जयपाल, ६ सीहा, जिसके सीहावत कछवाहा कहलाते हैं.

राजदेवके पीछे ११ कील्हण गद्दी नशीन हुआ. महाराणा रायमल्लका रासा, जो उक्त महाराणाके ही समयमें बना था, और जिसकी दो सौ वर्ष पहिलेकी लिखित एक पुस्तक हमारे पास है, उसमें महाराणा कुंभाके हालमें कुंभलमेरुपर कील्हणका सेवा करना लिखा है. यह बात अच्छी तरह खुलासह नहीं हुई, कि वह उक्त महाराणाकी पनाहमें रहता था, या ताबेदारोंकी गिन्तीमें था; लेकिन् जैसे उस समयमें मालवी और गुजराती बादशाह बड़े ज़बर्दस्त थे, महाराणा राजपूतानहके दूसरे राजाओंपर ग़ालिब थे, जिससे दोनों बातें संभव हैं. कील्हणके तीन बेटे थे, १ कूंतल, २ अखे-राज, जिसके वंशके धीरावत कछवाहा हैं; ३ जसराज, जिसके जसरेपोता कछवाहा कहलाते हैं.

---

(१) इनकी औलादको नेनसी महता राणावत कछवाहा कहलाना लिखता है, और जयपुरकी ख्यातकी पुस्तकमें लिखा है, कि सोमेश्वरकी औलाद वाले सोमेश्वर पोता कछवाहा कहलाते हैं.

कील्हणके बाद १२ राजा कूंतल गादी बैठा. इनके चार बेटे थे, १ भ्मोणसी, २ हमीर, जिनके हमीरदेका कछवाहा, ३ भड़सी जिसके भाखरोत कीतावत कछवाहा, ४ आल्हण, जिसके जोगी कछवाहा कहलाते हैं. कूंतलके बाद राजा १३ भ्मोणसी ने अधिकार पाया. भ्मोणसीके चार बेटे थे, १ उदयकरण, २ कुंभा, जिसके कुम्भाणी कछवाहा, ३ सांगा, ४ जैतकरण.

भ्मोणसीके बाद १४ उदयकरण आंबेरके राजा बने. इसके छः बेटे थे, १ नृसिंह २ वरसिंह, जिसकी औलाद नरूका (अलवर, उणियारा, लांबा, लदाना वग़ैरह) हैं; ३ बाला, जिसके शैख़ावत; ४ शिवब्रह्म, जिसके शिवब्रह्म पोता; ५ पातल, जिनके पातल पोता; ६ पीथा, जिसके पीथल पोता कछवाहा कहलाये.

१५ नृसिंह आंबेरकी गादीपर बैठा, जिसके १ बनवीर, २ जैतसी, ३ कांधल, तीन कुंवर हुए; इनमेंसे बड़ा १६ बनवीर आंबेरके मालिक हुए. इनके १ उद्धरन २ नरा, ३ मेलक, ४ वरा, ५ हरा और ६ वीरम थे; इन छः मेंसे ३ मेलकके मेलक कछवाहे हैं; बाक़ी सबकी औलाद बनवीर पोता कहलाई.

बनवीरके बाद १७ राजा उद्धरन हुआ, इसके बाद १८ राजा चन्द्रसेन गादी बैठा. इनका चाटसूके मक़ाम मांडूके बादशाहसे लड़ाई करना लिखा है, लेकिन् उस बादशाहका नाम नहीं लिखा. इसके पुत्र १ पृथ्वीराज, २ कुम्भा, ३ देवीदास हुआ. जब चन्द्रसेनका इन्तिक़ाल हुआ, तब १९ पृथ्वीराज आंबेरकी गादीपर बैठा.

जयपुरकी ख्यातमें चन्द्रसेनका देहान्त और पृथ्वीराजका गद्दी नशीन होना विक्रमी १५५९ फाल्गुन् कृष्ण ५ [हि० ९०८ ता० २० रजब = ई० १५०३ ता० १८ जैन्युअरी] लिखा है; परन्तु हमको इस समयसे पहिले की ख्यातोंमें लिखे हुए साल संवतोंपर एतिबार नहीं है; शायद पृथ्वीराज रासाके संवत्से धोखा खाकर बड़वा भाटोंने क़ियासी संवत् बनालिये, और उन्हींके अनुसार रियासती लोगोंने भी अपनी अपनी ख्यातोंमें लिख लिया है. जयपुरकी ख्यातमें गादी नशीनीके संवत् नीचे लिखे मुवाफ़िक़ दर्ज हैं:-

१- ईशासिंह-----

२- सोढ़देव विक्रमी १०२३ कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ३५५ ता० २४ शव्वाल = ई० ९६६ ता० १३ ऑक्टोबर].

३- दुल्हराय, विक्रमी १०६३ माघ शुक्ल ६ [हि० ३९७ ता० ५ जमादियुल्अव्वल = ई० १००७ ता० २८ जैन्युअरी].

४- कांकिल विक्रमी १०९३ माघ शुक्ल ७ [हि० ४२८ ता० ६ रबीउस्सानी = ई० १०३७ ता० २७ जैन्युअरी].

५- हूणूं विक्रमी १०९६ वैशाख कृष्ण १० [हि० ४३० ता० २४ जमादियुस्सानी = ई० १०३९ ता० २२ मार्च].

६- जानड़देव विक्रमी १११० कार्तिक शुक्र २ [हि० ४४५ ता० १ रजब = ई० १०५३ ता० १९ सेप्टेम्बर].

७- प्रजून विक्रमी ११२७ चैत्र शुक्क ६ [हि० ४६२ ता० ५ जमादियुस्सानी = ई० १०७० ता० २२ मार्च].

८- मलेसी विक्रमी ११५१ ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० ४८७ ता० १७ रबीउस्सानी = ई० १०९४ ता० ६ मई].

९- बीजलदेव विक्रमी १२०३ फाल्गुन शुक्क ३ [हि० ५४१ ता० २ रमज़ान = ई० ११४७ ता० ५ फ़ेब्रुअरी].

१०- राजदेव विक्रमी १२३६ श्रावण शुक्क ४ [हि० ५७५ ता० ३ सफ़र = ई० ११७९ ता० ११ जुलाई].

११- कील्हण विक्रमी १२७३ पौष कृष्ण ६ [हि० ६१३ ता० २० शश्र्र्बान = ई० १२१६ ता० २ डिसेम्बर].

१२- कूंतल विक्रमी १३३३ कार्तिक कृष्ण १० [हि० ६७५ ता० २४ रबीउस्सानी = ई० १२७६ ता० ५ ऑक्टोबर].

१३- ज्झोणसी विक्रमी १३७४ माघ कृष्ण १० [हि० ७१७ ता० २४ शव्वाल = ई० १३१७ ता० ३० डिसेम्बर].

१४- उदयकरण विक्रमी १४२३ माघ कृष्ण २ [हि० ७६८ ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १३६६ ता० २० डिसेम्बर].

१५- नृसिंह, विक्रमी १४४५ फाल्गुन कृष्ण ३ [हि० ७९१ ता० १७ मुहर्रम = ई० १३८९ ता० १६ जैन्युअरी].

१६- बनवीर- विक्रमी १४८५ भाद्रपद कृष्ण ६ [हि० ८३१ ता० २० शव्वाल = ई० १४२८ ता० ३ ऑगस्ट].

१७- उद्धरन विक्रमी १४९६ आश्विन कृष्ण १२ [हि० ८४३ ता० २६ रबीउल्अव्वल = ई० १४३९ ता० ५ सेप्टेम्बर].

१८- चन्द्रसेन विक्रमी १५२४ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० ८७२ ता० २८ रबीउस्सानी = ई० १४६७ ता० २७ नोवेम्बर].

१९- पृथ्वीराज विक्रमी १५५९ फाल्गुन कृष्ण ५ [हि० ९०८ ता० २० रजब = ई० १५०३ ता० १७ जेन्युअरी].

इन संवतोंमें हमको सन्देह होनेका यह कारण है, कि प्रजूनरायकी गद्दी नशीनी

का संवत् ११२७ लिखा है, जो एक सौ वर्षके बाद याने संवत् १२२७ होता, तो पृथ्वीराजके अस्ली संवत्के बराबर होता; लेकिन् "पृथ्वीराज रासा" के बनाने वालेने ग़लती की; उसको सहीह मानकर राजपूतानह के बड़वा भाटोंने ऐसे संवत् बना लिये, जिसका मुफ़स्सल हाल हमने एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल सन् १८८६ ई० [विक्रमी १९४३ = हि० १३०३] में लिखा है.

दूसरा शक यह है, कि कील्हणरायका संवत् १२७३ लिखा है, जो पृथ्वीराजके मारे जानेसे २४ वर्ष पीछे हुआ; और प्रजूनसे कील्हण तक पांच पुश्तें होती हैं, जिनके लिये २४ वर्ष बहुत कम ज़मानह होता है; लेकिन् यह क़ियासी वजूह कुछ माकूल सुबूत नहीं है. एक दूसरी दलील इस ख़याली बातको मज़्बूत करनेवाली यह है, कि महाराणा रायमल्लके रासेमें कील्हणरायका महाराणा कुम्भाकी सेवामें रहना लिखा है, और उक्त ग्रन्थ उसी ज़मानहके कविने बनाया था; महाराणा कुम्भा विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = ई० १४३३] में गद्दी नशीन हुए, और विक्रमी १५२५ [हि० ८७२ = ई० १४६८] तक राज्य करते रहे; लेकिन् सोचना चाहिये, कि विक्रमी १२७३ [हि० ६१३ = ई० १२१६] से विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = ई० १४३३] के बाद तक कील्हणरायका ज़िन्दह रहना ख़यालमें नहीं आता; अगर विक्रमी १३७३ [हि० ७१६ = ई० १३१६] ख़याल कियाजावे, तो भी ग़ैर मुम्किन् है. हमारा ख़याल है, कि बड़वा भाटोंने इस ग़लतीको राव चन्द्रसेनके बनावटी इन्तिक़ालसे ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ दर्ज करादिया होगा; हमारे अनुमानसे राजा पृथ्वीराजके इन्तिक़ालका संवत् ठीक मालूम होता है, जिसकी तस्दीक़ बीकानेरकी तवारीख़से भी मिलती है, इस वास्ते हम उक्त संवत्को सहीह मानकर वहांसे तारीख़ी सिल्सिलह रक्खेंगे.

राजा पृथ्वीराज.

यह राजा आंबेरके रईसोंमें बड़े सीधे सादे, हरि भक्त, सर्व प्रिय और प्रजा पालक थे. इनकी राणी बालाबाई, जो बीकानेरके राव लूणकरणकी बेटी थी, वह भी बड़ी भक्त कहलाई. राजा पृथ्वीराज, उनकी राणी, और उनके गुरु कृष्णदास पैहारीका हाल "भक्त माल" नाम ग्रन्थमें नाभाने बहुत बढ़ावेके साथ लिखा है; कृष्णदास पैहारी रामानुज संप्रदायमें बड़ा मश्हूर शख़्स हुआ है, जिसके क्रमानुयायी आंबेरमें गलता मक़ामपर बड़ी प्रतिष्ठाके साथ अब तक राज्य गुरु कहलाते हैं. "भक्त माल" और जयपुरकी ख्यातोंमें लिखा है, कि पहिले राजा पृथ्वीराजके गुरु

कनूफटा जोगी, जो कापालिक मतमें नाथ कहलाते हैं, थे. लिखा है, कि कृष्णदासने अपनी करामातसे नाथोंको रद करके राजा और राणीको अपना चेला (शिष्य) बनाया, और गलताको अपना प्रतिष्ठित स्थान क़रार दिया. बालाबाई भी मीरांबाई के मुवाफ़िक़ बड़ी नामवर हरिभक्त कहलाई, और चित्तौड़के महाराणा सांगाने भी राजा पृथ्वीराजके साथ अपनी बहिनकी शादी करदी. इस राजाका ज़ियादह हाल मज़्हबी व करामाती बातोंके अलावह तवारीख़ी तौरपर बहुत कम मिलता है. राजा पृथ्वीराजका देहान्त विक्रमी १५८४ कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ९३४ ता० ११ सफ़र = ई० १५२७ ता० ५ नोवेम्बर] को हुआ. इनके १९ बेटे थे - १ पूर्णमल्ल, जो राणी तंवर से पैदा हुआ, जिसकी औलाद नींबाड़ेमें पूर्णमल्लोत कछवाहा कहलाती है; २ भीम, जिसकी औलाद नर्वरमें गई; ३ भारमल्ल, जो बालाबाईसे पैदा हुआ था; ४ रामसिंह, बालाबाईके गर्भसे, जिसकी सन्तान खोहमें रामसिंहोत कछवाहा कहलाई; ५ सांगा, बालाबाईके गर्भसे; ६ गोपाल, बालाबाईसे, जिसके वंशवाले सामोद व चौमूं के नाथावत कछवाहा कहलाते हैं; ७ पंचायण, बालाबाईसे, जिसकी औलादके नायले वग़ैरह में पंचायणोत हैं; ८ जगमाल, बालाबाईसे, जिसके साईवाड़ तथा नरायणामें खंगारोत हैं; ९ सुल्तान, बालाबाईसे, जिसकी सन्तान काणोते वाले सुल्तानोत कछवाहा हैं; १० प्रताप, बालाबाईके गर्भसे, जिसका वंश कोटड़ेमें प्रतापपोता नामसे क़ाइम है; ११ बलभद्र, बालाबाईका, जिसकी औलाद अचरोल वाले बलभद्रोत हैं; १२ सांईदास, यह भी बालाबाईसे पैदा हुआ था, जिसके वंशमें बड़ौदेके सांईदासोत हैं; १३ कल्याण, चित्तौड़के महाराणा सांगाकी बहिन राणावत के गर्भसे पैदा हुआ, इसके कल्याणोत कालवाड़ वाले हैं; १४ भीका, राणावतके गर्भसे; १५ चत्रभुज, बालाबाईसे, जिसके वंशमें बगरू वाले चत्रभुजोत हैं; १६ रूपसी, राणी गौड़के गर्भसे, जिसने अजमेरमें रूपनगर आबाद किया; १७ तेजसी, राणावतके गर्भसे; १८ सहसमल्ल; और १९ रायमल्ल.

राजा पृथ्वीराजका देहान्त होनेपर २० - पूर्णमल्ल गादीपर बैठा, जो राजका हक़्दार था, लेकिन् विक्रमी १५९० माघ शुक्ल ५ [हि० ९४० ता० ४ रजब = ई० १५३४ ता० १९ जैन्युअरी] को पूर्णमल्लका देहान्त होगया, और उनका बेटा सूजा अपनी माके साथ ननिहाल चला गया, तब २१ - भीमसिंह पृथ्वीराजोत आंबेरकी गादीपर बैठा; परन्तु ईश्वरेच्छासे विक्रमी १५९३ श्रावण शुक्ल १५ [हि० ९४३ ता० १४ सफ़र = ई० १५३६ ता० १ ऑगस्ट] को उनका भी इन्तिक़ाल होगया, और भीमसिंहकी जगह उनका बेटा २२ - रत्नसिंह गादी बैठा; लेकिन् यह ग़ाफ़िल हमेशह शराबके नशेमें चूर रहता था, भाइयोंने चारों तरफ़से इलाक़ह दबालिया; सांगा पृथ्वीराजोत उससे नाराज़ होकर

अपनी ननिहाल बीकानेरको चला गया, और अपने मामूसे मदद चाही; तब बीकानेर के राव जैतसिंहने नीचे लिखे सर्दार मए फ़ौजके उसके साथ दियेः-

१- वणीर वाघावत, चेचावादका; २- रत्नसिंह लूणकरणोत, महाजनका; ३- रावत् कृष्णसिंह कांधलोत राजासरका; ४- खेतसिंह संसारचन्दोत, द्रोणपुरका; ५- महेशदास मंडलावत, सारूंडेका; ६- भोजराज सदावत, भेलूका; ७- बीका देवीदास घड़सीसरका; ८- राव वैरीसिंह भाटी, पुंगलका; ९- धनराज शैखावत, वीठणोक वालोंका पूर्वज; १०- भाटी कृष्णसिंह वाघावत, खारवेका; ११- जोइया हांसा, मिलकका; १२- सिंहाणाका वैद्य महता अमरा; १३- वछावत महता सांगा; १४- पुरोहित लक्ष्मीदास, देवीदासोत वगैरह; पन्द्रह हज़ार (१) फ़ौज लेकर सांगा ढूंढाड़ को रवानह हुआ. अमरसर पहुंचनेपर रायमल्ल शैखावत आ मिला, और उसने तेजसिंहको भी आंबेरसे बुलालिया, जो रत्नसिंहका मुसाहिब था. सांगाने तेजसिंह से कहा, कि तुम्हारी मुसाहिबीमें आंबेरका इलाक़ह भाइयोंने दबा लिया; तब तेजसिंह ने जवाबमें रत्नसिंहकी गफ़लत और शराब खोरीकी शिकायत की, और कहा, कि अब आप चाहेंगे, तो सब छीनलिया जायेगा. सांगाने कहा, कि नरूका करमचन्द दासावतको मारे बिना यह काम मुश्किल है; तेजसिंहने कहा, कि यह बात भी होसकेगी. तब सांगा मए फ़ौजके मौज़ाबाद पहुंचा, और तेजसिंहके पास जो नरूका करमचन्दका भाई जयमल्ल रहता था, उसे कहा, कि तू अपने भाई को लेआ. जयमल्लने जवाब दिया, कि उसने जो ४० गांव आंबेरके दबा लिये हैं, उनको सांगा लेना चाहता है; और वह नहीं देगा. तेजसिंहने उसको समझाया, कि मुझसे भी सांगा नाराज था, परन्तु उसके पास पहुंचकर मैं नर्मीसे पेश आया, तबसे वह बहुत मिहर्बानी रखता है. नर्मी करनेसे करमचन्दका भी नुक्सान नहीं होगा. जयमल्ल अपने भाईको लेनेके लिये चला, और सांगा व तेजसिंहने करमचन्दके मारने को नापाके भाइयोंमेंसे लाला सांखलाको तय्यार किया; जब करमचन्द और जयमल्ल मौज़ाबादकी छत्रीमें सांगाके पास पहुंचे, उस समय इशारा होते ही लालाने तलवारसे करमचन्दके दो टुकड़े करडाले; तब जयमल्लने तेजसिंहको मारलिया, और सांगापर चला, उस समय उसका छोटा भाई भारमल्ल एथ्वीराजोत बीचमें आया; जयमल्लने उसको हाथसे झिड़ककर कहा, कि तुझ छोकरेको क्या मारूं! इसके बाद एक कटारी छत्रीके स्तम्भमें मारी, जिसका निशान इस वक़ तक मौजूद बतलाते हैं. इसी अरसहमें लाला सांखलाने जयमल्लको भी मार लिया. इस बातसे सांगाका रोब जमकर आसपासके

(१) यह हाल बीकानेरकी तवारीख़से लियागया है, जो साहिब रेज़िडेन्ट मारवाड़से हमको मिली.

कुल इलाक़ोंमें उसका क़ब्ज़ह होगया, और बाग़ी लोगोंने तावेदारी इख़्तियार की. सांगा रत्नसिंहको टीकैत मानकर आंबेर नहीं गया, परन्तु उसके क़रीब ही सांगानेर शहर बसाकर वहां रहने लगा. उसने मौज़ाबाद वग़ैरह सब ज़मीनपर अपना क़ब्ज़ह करलिया.

करमचन्द और जयमल्ल नरूका, जो मारे गये, उनके राजपूतोंमेंसे एक चारण कान्हा आड़ाने, जो करमचन्दके मारेजानेके वक़्त कहीं गया था, ताना देकर राजपूतोंसे कहा, कि तुमको करमचन्दने बड़े आरामसे इसलिये रक्खा था, कि उसका आख़िर तक साथ दो. तब किसी राजपूतने जवाब दिया, कि ऐ कान्हा करमचन्दने तक्लीफ़ तो तुमको भी नहीं दी थी; अगर बहादुरी रखते हो, तो उनका एवज़ लेना चाहिये. कान्हाने उसी वक़्त यह प्रण लिया, कि जबतक मैं सांगाको नहीं मारूं, अन्न न खाऊंगा; और उसी दिनसे दूध पीने लगा. वह सांगाके पास जारहा, सो दो तीन ही दिनके बाद मौक़ा पाकर कान्हाने सांगाको कटारीसे मार लिया, और उसी हालतमें वह ख़ुद भी मारागया. उस समयसे कान्हा चारणकी औलादके लोग उणियाराके रावके पास बड़ी इ़ज़्ज़तके साथ रहते हैं.

सांगाके मारेजाने बाद उसके कोई औलाद न होनेके सबब उसका छोटा भाई भारमल्ल पृथ्वीराजोत सांगानेरका मुख़्तार बना, और कुछ अ़रसह बाद आसकरण भीमसिंहोत, रत्नसिंहके छोटे भाईको राजका लालच देकर मिला लिया, और विक्रमी १६०४ ज्येष्ठ शुक्ल ८ [हि० ९५४ ता० ७ रबीउ़स्सानी = ई० १५४७ ता० २७ मई] को उसके हाथसे ज़हर दिलवाकर रत्नसिंहको मरवा डाला.

२३ - राजा भारमल्ल,

जब रत्नसिंहको आसकरणने ज़हर देकर मारा, उसी वक़्त भारमल्लने आंबेरपर क़ब्ज़ह करलिया, और उस बेईमान आसकरणको, जो अपने भाईको मारकर राज्यका उम्मेदवार हुआ था, राज्यसे बाहर निकाल दिया. वह दिल्ली पहुंचा, शेरशाह सूरके बेटे सलीमशाहने उसको नर्वर जागीरमें दिया, जहांपर उसकी औलाद मुद्दत तक क़ाबिज़ रहकर मरहटोंके दबावसे ख़ारिज हुई.

जब हुमायूं बादशाह पठानोंको निकालकर दोबारह दिल्लीके तख़्तपर बैठा, और थोड़े ही दिनों बाद उसका इन्तिक़ाल होगया, तब कलानौरमें विक्रमी १६१२ फाल्गुन शुक्ल ५ [हि० ९६३ ता० ४ रबीउ़स्सानी = ई० १५५६ ता० १५ फ़ेब्रुअरी] को उसका बेटा अक्बर बादशाह तख़्त नशीन हुआ, उसके राज्यमें चारों तरफ़ बखेड़ा फैला हुआ था; उस समय सूर बादशाहोंके नौकर हाजीख़ां पठानने राजा भारमल्ल कछवाहेकी मददसे

नारनौलको घेरा, जो मजनूंखां क़ाक़शालके क़ब्ज़हमें था. राजा भारमल्लने बुद्धिमानी और दूर अन्देशीसे मजनूंखांको माल अस्वाब व बाल बच्चों समेत हिफ़ाज़तसे निकाल दिया. जब अक्बर बादशाहने हेमूं ढूंसर वगैरह ग़नीमोंको बर्बाद करके दिल्लीमें क़ब्ज़ह किया, तब मजनूंखां क़ाक़शालकी सिफ़ारिशसे राजा भारमल्ल भी दिल्ली पहुंचे. बादशाहने उसे और उसके बड़े दरजे वाले कुल राजपूतों वगैरहको ख़िल्अ़त दिये; और वे साम्हने लाये गये. बादशाह एक मस्त हाथीपर सवार थे, जो राजपूतोंकी तरफ़ दौड़ा, परन्तु ये लोग अपनी जगहसे न हिले. हाथी रोक लिया गया, और इसी दिनसे बादशाहको राजपूत लोगोंकी क़द्र मालूम होगई, कि यह क़ौम कैसी दिलेर है ! फिर राजा अपने वतनको चले आये. आंबेरमें मीनोंने बहुत फ़साद कर रक्खा था, जिनको राजाने मारकर सीधा किया.

बादशाहने मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीन हुसैनको अजमेरका सूबहदार बनाया था, जिसने कुछ रुपया वगैरहके लालचसे पूर्णमल्ल पृथ्वीराजोतके बेटे सूजाकी हिमायत करके भारमल्ल पर चढ़ाई करदी; और भारमल्लके बेटे जगन्नाथ और उसके भतीजे राजसिंह आसकरणोत और खंगार जगमालोतको गिरिफ़्तार करलिया. बादशाह अक्बर भी विक्रमी १६१८ के माघ [हि० ९६९ जमादियुलअव्वल = ई० १५६२ जैन्युअरी] में आगरेसे राजपूतानहकी तरफ़ रवानह हुआ, और कलावली ग्राममें भारमल्लके दोस्त चग़त्ताख़ांने बादशाहसे राजाकी तक्लीफ़का हाल अ़र्ज़ किया. तब बादशाहने मिहर्बान होकर राजा भारमल्लको बुलानेकी इजाज़त दी. चौसा मक़ामपर उनका भाई रूपसिंह अपने बेटे जयमल्ल समेत हाज़िर होगया, और जब बादशाह सांगानेरमें पहुंचा, तो राजा भारमल्ल भी बादशाहकी तावेदारीमें आया. राजपूतानहके राजाओंमेंसे यह पहिला राजा है, जो बादशाही तावेदार बना. इस राजाका बहुत बड़ा राज्य नहीं था, परन्तु एक बड़े गिरोह कछवाहोंका पाटवी होनेके कारण वह ताक़तवर गिना जाता था; क्योंकि इस गिरोहके शैख़ावत व नरूका वगैरह राजपूत जो जुदा जुदा अपने इलाक़ोंपर मुख़्तार थे, बाहरके दुश्मनोंकी चढ़ाईके समय अपने सरगिरोहको अकेला छोड़देनेमें बड़ी शर्मिन्दगीकी बात जानते थे. इस राजाने बादशाही तावेदार होनेसे पहिले अपने बेटे भगवानदासको चित्तौड़के महाराणा उदयसिंहकी ख़िद्मतमें भेजदिया था, (१) जिससे वे इनके सरपरस्त और मददगार बने रहे.

चग़त्ताख़ांकी सलाहसे यह राजा अपनी बेटी बादशाहको देनेके लिये राज़ी होगया. इस बातके लिये ईरानके बादशाहकी नसीहतसे हुमायूंशाह अभिलाषा रखता था, और

(१) यह बात अमरकाव्यमें लिखी है.

अक्बरने भी अपने बापकी ख़्वाहिश और नसीहत पूरी करनेके लिये इस शादीको ग़नीमत समझा. वह राजापर जल्द मिह्र्बान होगया, कि उसको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सबदार बनाकर इज़्ज़तें दीं. अक्बरने राजाको शादीका लवाज़िमा तय्यार करनेकी रुख़्सत देकर कूच किया, और राजा शादी व जिहेज़का सामान मए अपनी बेटीके लेकर मक़ाम सांभरपर हाज़िर होगया. बड़ी खुशीके साथ उस राजकुमारीसे शादी हुई, और मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीन हुसैनकी क़ैदसे राजाके बेटे व भतीजोंको अपनी खिदमतमें बुलाकर फाल्गुन् शुक्ल १० [हि० ता० ८ जमादियुस्सानी = ई० ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को आगरेकी तरफ़ लौटा. राजा भारमल्ल बड़ी इज़्ज़त व इन्आमो इक्राम पाकर आंबेर गया, और उनका बेटा भगवानदास व पोता मानसिंह वगैरह बादशाहके साथ आगरे गये. विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] में, जब बादशाह अक्बरकी चढ़ाई क़िले चित्तौड़की तरफ़ हुई, तो यह राजा भी उसके साथ था; और राजपूतोंकी लड़ाई के तरीके व ख़ानगी बर्ताव की बातें बादशाहको बताया करता था, जिससे अक्बर बादशाह उसपर दिन व दिन ज़ियादह मिह्र्बान होतागया. विक्रमी १६२५ [हि० ९७६ = ई० १५६८] में बादशाहने क़िले रणथम्भोरको घेरा, तब वहांके क़िलेदार राव सुर्जणको इसी राजाने सलाह देकर बादशाही ताबेदार बनाया.

विक्रमी १६२६ आश्विन कृष्ण ३ [हि० ९७७ ता० १७ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १५६९ ता० ३० ऑगस्ट] को राजा भारमल्लकी बेटीके गर्भसे फ़त्हपुर सीकरी के मक़ाममें शैख़ सलीम चिश्तीके घरपर बादशाह अक्बरके शाहज़ादह सलीम पैदा हुआ, और इससे ख़ानदान कछवाहाकी रिश्तहदारी मुग़लबादशाहोंके साथ ज़ियादह मज्बूत होगई. (ईश्वर जिसको बढ़ाना चाहे, उसके लिये हर सूरतसे तरक़्क़ीके सामान खुद बखुद मौजूद होजाते हैं.) विक्रमी १६३० माघ शुक्ल ५ [हि० ९८१ ता० ४ शव्वाल = ई० १५७४ ता० २८ जैन्युअरी] को इस राजाका देहान्त होगया.

इनके आठ (१) कुंवर- १ भगवन्तदास (२); २ भगवानदास, जिनके बांकावत लवाण वाले हैं; ३ जगन्नाथ, जिनके जगन्नाथोत; ४ परसराम; ५ शार्दूल; ६ सुन्दरदास; ७ पृथ्वीदीप; और ८ रामचन्द्र थे.

---

(१) इन आठके सिवा जयपुरकी एक ख्यातमें १ शलहदी, २ विठलदास, और एक ख्यातमें भोपत, तीन नाम ज़ियादह पायेगये हैं; लेकिन् इन नामोंकी बाबत हमको कुछ तहक़ीक़ नहीं है.

(२) जयपुरकी तवारीख़में बड़ेका नाम भगवन्तदास और उससे छोटेका नाम भगवानदास लिखा है, लेकिन् फ़ार्सी तवारीख़ोंमें भगवानदासको ही भगवन्तदास लिखना पायाजाता है.

२१- राजा भगवानदास.

जब राजा भारमल्लका इन्तिक़ाल हुआ, तो भगवानदास मए अपने कुंवर मानसिंह के बादशाह अक्बरकी ख़िद्मतमें हाज़िर होगये. बादशाहने मिहर्बान होकर उसके बापका मन्सब उसके नामपर बहाल रक्खा, और दिन बदिन मिहर्बानी ज़ियादह की. इस राजाने विक्रमी १६२९ [हि० ९८० = ई० १५७२] में गुजरात फ़त्ह होने बाद सरनालकी लड़ाईमें, जब अक्बर बादशाह ने इब्राहीम हुसैन मिर्ज़ापर पांच सो सवारोंके साथ हमलह किया, अच्छी बहादुरी दिखलाई, जिसके इन्ऋाममें इसको नक़ारह और निशान मिला. गुजरातकी चढ़ाईमें भी इस राजासे बड़ी बहादुरी ज़ाहिर हुई. बादशाहने इसको फ़ौज देकर ईडर व मेवाड़की तरफ़ रवानह किया, इस सफ़रमें भी वह फ़ौजी व अक़्ली कार्रवाइयां करता हुआ बादशाहके पास पहुंचा.

विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] में इस राजाकी बेटी की शादी बड़े शाहज़ादह सलीमके साथ बड़ी धूमधामसे हुई, जिसकी तफ्सील अक्बर नामहकी तीसरी जिल्दके पृष्ठ ४५५ व ५६ में बहुत कुछ लिखी है. खुद बादशाह अपने बेटेको लेकर राजाके मकानपर गये, और राजाने एक सौ हाथी और बहुतसे घोड़े इराक़ी, अरबी, तुर्की कच्छी वग़ैरह, और बहुतसे लौंडी गुलाम ज़र व ज़ेवर समेत जिहेज़में दिये. दो करोड़ रुपया मिहर (१) दुलहिनका क़रार पाया. मआसिरुल उमरामें लिखा है, कि खुद बादशाह और शाहज़ादह दुलहिनका डोला उठाकर बाहर लाये. इसी राजकुमारीके पेटसे विक्रमी १६४४ [हि० ९९५ = ई० १५८७] में सुल्तान खुस्रौ पैदा हुआ.

अक्बरके तीसवें जुलूसमें यह राजा सीस्तानकी हुकूमतपर भेजा गया, लेकिन् ज़ियादह सामान वग़ैरहका उज़्र करनेसे यह हुक्म मुल्तवी रहा; और फिर वह आजिज़ी करनेपर वहां रवानह किया गया; परन्तु जब सिन्धु उतरकर खैराबादमें पहुंचा, तो एकदम दीवाना होगया. कुछ दिनों बाद विक्रमी १६४६ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ९९८ ता० ६ सफ़र = ई० १५८९ ता० १५ डिसेम्बर] को लाहौरमें इस राजाका इन्तिक़ाल हुआ. वह टोडरमल्लके दाग़में गया था, वापस आनेपर क़ै (उछांट) हुई, और पेशाब बन्द होकर पांचवें रोज़ मरगया. मआसिरुल उमरा में लिखा है, कि इस राजाने लाहौरमें (मुसल्मानोंको खुश करनेके लिये) एक

(१) मुसल्मानोंमें शरअके मुवाफ़िक़ मिहर एक तरहका अह्दनामह क़रार पाता है, अगर औरत को उसका खाविन्द तक्लीफ़ या तलाक़ दे (छोड़ दे), तो मिहरका रुपया मुक़र्रह उसको दे देना पड़ता है.

मस्जिद बनवाई थी, जिसमें अक्सर मुसल्मान लोग जुमएकी नमाज़ पढ़ा करते थे.

इनके ४ कुंवर थे. १ मानसिंह; २ माधवसिंह, जिसके माधाणी कछवाहे हैं; ३ सूरसिंह, जिसके सूरसिंहोत हैं; और ४ बनमालीदास, जिसके बनमाली दासोत कछवाहा कहलाते हैं.

२५-राजा मानसिंह.

इन महाराजाका जन्म विक्रमी १६०७ पौष कृष्ण २ [हि० ९५७ ता० १६ ज़िल्क़ाद = ई० १५५० ता० २७ नोवेम्बर] को, राज्याभिषेक विक्रमी १६४६ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ९९८ ता० ६ सफ़र = ई० १५८९ ता० १५ डिसेम्बर] को, और राज्याभिषेकोत्सव माघ कृष्ण ५ [हि० ९९८ ता० १९ रबीउल्अव्वल = ई० १५९० ता० २६ जैन्युअरी] को हुआ.

यह राजा जब अपने दादा और बापके साथ बादशाही ख़िद्मतमें पहिले पहुंचा था, उसका ज़िक्र शुरूअ्में लिखागया है. यह अपनी अ़क्ल और बहादुरी व बादशाही ख़ैरख़्वाहीसे ऐसा बढ़गया था, कि बादशाह अक्बर कभी इसको फ़र्ज़न्द और कभी मिर्ज़ा राजा कहकर बोलता था; वह अव्वल दरजेके उमराओंसे भी ज़ियादह इ़ज़्ज़तदार गिनागया. अक्बरके ज़मानेमें पांच हज़ारीसे ज़ियादह मन्सब नौकरोंको नहीं मिलता था, लेकिन् दो सर्दारोंको सात हज़ारी तक मन्सब मिला, जिनमें एक राजा मानसिंह और दूसरा कोका अ़ज़ीज़ था. यह राजा अपने बापकी मौजूदगीमें ही नामवर होगया था, अक्बर बादशाहने पहिले गुजरातपर चढ़ाईके वक्त़ और उस मुल्कको फ़त्ह करनेके बाद ईडर, डूंगरपुर और उदयपुरकी तरफ़ राजा भगवानदास और कुंवर मानसिंहको भेजा था, जिसका हाल महाराणा प्रतापसिंह अव्वलके ज़िक्रमें लिखागया है- (देखो एष्ठ १४६). विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] में बादशाहने मेवाड़पर फ़ौज कशीके लिये खुद अजमेरमें ठहरकर कुंवर मानसिंह को लड़ाईके लिये भेजा. इसका हाल भी महाराणा प्रतापसिंह अव्वलके ज़िक्रमें दर्ज कियागया है- (देखो एष्ठ १५०). जयपुर की ख्यातकी पोथियोंमें इसी लड़ाईके बाद राजा भगवानदासका मरना लिखा है, जबकि मानसिंह मेवाड़की मुहिमपर थे; परन्तु यह बात ठीक नहीं, क्योंकि उक्त लड़ाईसे पीछे तेरह बरससे ज़ियादह अ़र्से तक राजा भगवानदास जीते रहे हैं, जैसा कि पहिले लिखागया और फिर लिखा जायेगा.

विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] में मिर्ज़ा हकीम, बादशाहका सौतेला भाई मरगया, जो काबुलका हाकिम था; कुंवर मानसिंहने बादशाही हुक्मके

मुवाफ़िक़ काबुल पहुंचकर वहांके लोगोंकी दिलजमई की, और उक्त मिर्ज़ाके लड़कों अफ़ासियाब व केकुबादको उनके साथियों समेत बादशाहके पास ले आया. बादशाह भी नीलाब (सिन्धु) नदी तक आपहुंचे थे, कुंवरको काबुलकी सूबहदारी दी; उसने वहां पहुंचकर ख़ैबर वग़ैरहके रास्ते लूटने वाले पठानोंको सज़ा देकर सीधा करदिया; जब यूसुफ़ ज़ई पठानोंकी मुहिमपर राजा बीरबर व ज़ैनख़ां कोका व हकीम अबुल्‌फ़त्‌ह गये, तो बीरबरके मारेजाने बाद ज़ैनख़ां व अबुल्‌फ़त्‌हको बादशाहने वापस बुलालिया, और वहांका बन्दोबस्त कुंवर मानसिंहके सुपुर्द किया; फिर सीस्तानकी हुकूमत राजा भगवानदासको मिली, परन्तु वह रास्तहमें दीवाना होगया, जिससे वह इलाक़ह भी कुंवरके सुपुर्द हुआ.

विक्रमी १६४४ चैत्र [हि० ९९५ रबीउस्सानी = ई० १५८७ मार्च] में बादशाहने कुंवर मानसिंहके राजपूतोंकी तरफ़से रिआयापर जुल्म करने और मानसिंहकी चश्मपोशी करने, और सर्द मुल्कमें रहनेसे कुंवरको तक्लीफ़ जानकर बुलालिया, और सूबह बिहारमें राजा भगवानदास व कुंवर मानसिंहको जागीर देकर उसी तरफ़ भेजदिया. विक्रमी १६४७ [हि० ९९८ = ई० १५९०] में राजा भगवानदास लाहौरमें गुज़रे, तब यह अपने बापकी जगह राजा हुए. इसी सालमें पूर्णमल्ल केदोरियापर चढ़ाई की, जिसको फ़त्‌ह करके राजा संग्रामको जा दबाया, और उससे हाथी वग़ैरह चीज़ें पेशकश लेकर पटनाके बाग़ियोंको सीधा किया. झाड़खंडके रास्तेसे मुल्क उड़ीसापर चढ़ाई की, उस तरफ़ क़त्लू लौहानी पठान बड़ा ज़बर्दस्त होरहा था; जब राजा वहां पहुंचा, उसने मुक़ाबलह किया. इस मुक़ाबलेमें बादशाही फ़ौजके पैर उखड़ गये थे, परन्तु राजा न हटा; ईश्वरकी कुद्रतसे क़त्लू एकदम बीमार होकर मरगया, तब उसके वकील ईसा ने क़त्लूके बेटे नसीरको सर्दार क़ाइम करके सुलह करली. राजाने जगन्नाथपुरीको इलाक़ह समेत उसके क़ब्ज़ेसे निकाल लिया; फिर आप बिहारको चलाआया. जब तक ईसा जीता रहा, तब तक इक़ारमें फ़र्क़ नहीं पड़ा; परन्तु उसके मरने बाद क़त्लूके बेटे ख़्वाजह सुलैमान व ख़्वाजह उस्मानने फिर बग़ावत इख़्तियार की, जिसका हाल अक्बर नामहकी तीसरी जिल्दके ६४१ एष्ठसे यहां लिखाजाता है:-

"ईसा पठान जब मरगया, तो फिर पठानोंने हर तरफ़ दंगा फ़साद करके जगन्नाथपुरी लेली; और राजा हमीरके इलाक़े पर लूट मार शुरूअ़ की. हिज्री १००० [विक्रमी १६४९ = ई० १५९२] में राजा मानसिंह फ़त्‌हका इरादह करके दर्याके रास्तेसे चला, और तोलकख़ां, फ़र्रुख़ख़ां, ग़ाज़ीख़ां, मेदिनीराय, मीर क़ासिम बदख़्शी, राय भोज बूंदीके हाड़ा सुर्जणका बेटा, संग्रामसिंह, शाह, अगर और सगर तीनों महाराणा उदयसिंहके बेटे, चत्रसेनका बेटा बज्जा, भोपतसिंह और बर्ख़ुरदार वग़ैरह ख़ुश्कीके रास्ते

गये. मानसिंहका भाई माधवसिंह, लखमीराय कोकरा, पूर्णमल्ल केदोरिया, रूपनारायण सीसोदिया वग़ैरह कश्मीरके जागीरदार यूसुफ़ख़ांकी मातह्तीमें झाड़खंडके रास्तेसे रवानह हुए. जब फ़ौज बंगालेमें पहुंची, तो वहांका हाकिम सईदख़ां बीमारीके सबब ठहरा रहा, और राजा आगे बढ़ा; सईदख़ां आराम होनेपर बहादुरख़ां, ताहिरख़ां वग़ैरह साढ़े छः हज़ार सवार साथ लेकर फ़ौजमें जा पहुंचा. उस इलाक़हके बहुतसे मक़ाम क़ब्ज़ेमें आगये; पठानोंने बहुतसे हीले हवाले करने चाहे, लेकिन् उनकी बातें कुछ न सुनीगईं; लड़ाईकी तय्यारी होगई, और राजा मानसिंहके मातहूत् राय भोज, राजा संग्राम, बाक़रख़ां, फ़र्रुख़ख़ां, दुर्जनसिंह, सुजानसिंह, सबलसिंह, मीर क़ासिम, शिहाबुद्दीन वग़ैरह हर रोज़ हमले करते थे, और फ़सादी लोग भागते थे."

"पहिली फ़र्वर्दीको राजाने अपना हरावल आगे रवानह करदिया, पठान लोग नसीबख़ां, जमालख़ां, क़त्लूके बेटों वग़ैरहकी मातह्तीमें लड़ाईपर मुस्तइद हुए; मुक़ाबलह होनेपर दुश्मनोंका 'मियां लहरी' हाथी तोपका गोला लगनेसे कई हाथियों समेत जल मरा; दूसरे लोगोंने और हाथी बढ़ाया; मीर जम्शेद बख़्शी बहादुरीसे हमलह करके काम आया, हाथीने कई आदमियोंको नुक्सान पहुंचाया, लेकिन् बाज़ों ने घोड़ोंसे उतरकर हाथीको ज़ख़्मी करने बाद पकड़ लिया. 'बहादुर कोह' हाथीने फ़र्रुख़ख़ांको दबाया, राय भोज और राजा संग्रामने जल्द क़दम बढ़ाया. जगत्सिंह भी दुर्जनसिंह वग़ैरहको साथ लेकर पठानोंपर दौड़ा, और उनको बीचमेंसे हटता हुआ देखकर दाहिनी तरफ़से ज़ोर किया. बाबू मंगली शाही फ़ौजमेंसे बढ़कर हट आया; बहारख़ांने पीछेसे पहुंचकर बड़ा काम किया, एक जवान सिपाही आगे बढ़ा, जिसको बहारख़ांने रोका, लेकिन् वह दूसरी दफ़ा बढ़कर मारागया; मख़्सूसख़ां ने भी बहुत कोशिश की, और ख़्वाजह हलीम अपने साथियों समेत मौक़ेपर, जब मुख़ालिफ़ लोग भागने वाले या मारेजानेकी जगह थे, मददको पहुंचा, जिसके साथ ख़्वाजह वैस मारा गया. तीन सौ से ज़ियादह पठान लड़ाईके मैदानमें बेजान हुए; और बादशाही फ़ौजमेंसे चालीस आदमी काम आये; बादशाही फ़ौजने कामयाबी हासिल की."

क़त्लूके बेटोंने सारंगगढ़के राजा रामचन्द्रकी पनाह ली; बंगालेका सूबहदार सईदख़ां वापस लौटगया, परन्तु राजाने पीछा न छोड़ा; और सारंगगढ़को जा घेरा. तब वे दोनों लाचार होकर मानसिंहके पास हाज़िर होगये: राजाने उनको बादशाही हुक्मसे कुछ जागीर देदी. विक्रमी १६४९ [हि० १००० = ई० १५९२] के अन्दर कुल उड़ीसेपर बादशाही अमल होगया.

विक्रमी १६५१ [हि० १००२ = ई० १५९४] में बादशाहके पोते सुल्तान

खुस्रोके नाम उड़ीसा जागीरमें मुक़र्रर होकर यह राजा शाहज़ादेका अतालीक़ बनाया गया, और राजाको बंगालेमें जागीर देकर उसी तरफ़ रवानह किया. उसने वहां पहुंचकर अपनी बहादुरी व बुद्धिमानीसे बंगाली राजाको ताबे बनाया. विक्रमी १६५३ [हि० १००४ = ई० १५९६] में एक अच्छी मौक़ेकी जगह देखकर एक शहर 'अक्बरनगर' नाम आबाद कराया, जिसको 'राजमहल' भी कहते हैं. विक्रमी १६५४ [हि० १००५ = ई० १५९७] में कूचके राजा लक्ष्मीनारायण (१) को ताबे बनाया, जिसका मुल्क मआसिरुलउमरामें दो सौ कोस लम्बा और चालीससे लेकर सौ कोस तक चौड़ा लिखा है. इस राजाने अपनी बहिनकी राजा मानसिंहसे शादी भी करदी. लक्ष्मी-नारायणसे जो मुक़ाबलह हुआ, उसमें राजा मानसिंहका बेटा दुर्जनसिंह मारागया.

जयपुरकी तवारीख़में लिखा है, कि बंगालेकी तरफ़ केदार नामी एक कायस्थ का राज्य था, और उस कायस्थके पास शिला देवी की मूर्ति थी, जिसे केदारपर फ़त्ह पाकर राजा लेआया, और वह अब आंबेरमें मौजूद है. लिखा है, कि इस देवीको मनुष्यका बलिदान लगता था; राजाने इसको पशुबली करदिया.

विक्रमी १६५७ [हि० १००८ = ई० १६००] में जब बादशाह अक्बर दक्षिण की तरफ़ गया, और इस राजाको वलीअ़ह्द शाहज़ादह सलीम सहित उदयपुरके महाराणाकी लड़ाईपर अजमेर छोड़गया, तब मानसिंहने अपने बड़े बेटे जगत्सिंहको बंगालेके बन्दोबस्तके लिये रवानह किया; परन्तु वह रास्ते ही में मरगया; तब जगत्-सिंहके बेटे महासिंहको, जो बच्चा था, बंगालेकी तरफ़ भेजदिया; और आप शाह-ज़ादहके पास अजमेरमें रहा. बंगालेमें क़त्लूके बेटे उस्मानने मौक़ा देखकर फ़साद करना शुरू किया, राजाके लोगोंने सहल जानकर मुक़ाबलह किया, परन्तु शिकस्त खाई; पठान बंगालेमें बहुतसे इलाक़ोंपर क़ाबिज़ होगये. शाहज़ादह उदयपुरकी चढ़ाईके एवज़ शाही हुक्मके बर्ख़िलाफ़ इलाहाबाद चलागया, और राजा उससे अ़लहदह होकर बंगालेके बन्दोबस्तको रवानह हुआ. उसने शेरपुरके पास पठानोंको

---

(१) जयपुरकी ख्यात जयसिंह चरित्र वग़ैरहमें इस राजाका नाम प्रतापदीप और शहरका नाम हेला लिखा है, और एक दोहा भी मश्हूर है, जो हरनाथ कविने कहा था, जिसको सुनकर राजा मानसिंहने दस लाख रुपया इन्आ़म दिया; वह दोहा इस जगह अर्थ सहित दर्ज किया जाता है:—

दोहा.

जात जात गुन अधिक हो सुनी न अजहूं कान ॥ राघव वारिधि बांधियो हेला मार्‍यो मान ॥ १ ॥

अर्थ- पूर्वजसे औलादका गुण अधिक हो, यह कानसे नहीं सुना; परन्तु रामचन्द्रको तो समुद्र बांधना पड़ा (लंका जानेके लिये), और मानसिंहने हेला शहरको मारा, (जो लंकासे भी ज़ियादह मुश्किल था).

लड़ाईमें शिकस्त दी; मीर अब्दुर्रज़्ज़ाक़ मामूरी बख़्शी सूबह बंगालेका, जो मुख़ालिफ़ोंके पास कैद था, इस लड़ाईमें बेड़ी तौक़ समेत राजाके हाथ आगया. जब राजा बंगालेके बन्दोबस्तसे फ़ारिग़ (निश्चिन्त) होकर बादशाहके पास आया, तो सात हज़ारी ज़ात व छः हज़ार सवारका मन्सब पाया. मआसिरुल उमरामें लिखा है, कि उस वक़्त इतना मन्सब किसी उमराव सर्दारको नहीं मिला था.

जब अक्बर बादशाहका इन्तिक़ाल हुआ, तो यह राजा अपने भानजे शाहज़ादह ख़ुस्रौका मददगार था, लेकिन् जहांगीरने इसको बंगालेकी सूबहदारी वग़ैरह देकर वहां भेजदिया. वह इसी सालमें बंगालेसे अलहदह हुआ, कुछ दिनों रुहतासके सर्कशों को सज़ा देनेके लिये मुक़र्रर रहा, फिर हुज़ूरमें आगया.

विक्रमी १६६४ [हि० १०१६ = ई० १६०७] में इस तज्वीज़से राजाको घर जानेकी रुख़्सत मिली, कि दक्षिणकी लड़ाईका बन्दोबस्त करके ख़ानख़ानांकी मदद के वास्ते जल्द पहुंचे, सो राजा मुद्दत तक दक्षिणमें रहा, और वहीं वह नवें साल जुलूस जहांगीरी, विक्रमी १६७१ आषाढ़ शुक्ल १० [हि० १०२३ ता० ९ जमादि-युस्सानी = ई० १६१४ ता० १७ जुलाई] को बीमार होकर गुज़र गया, जिसके साथ साठ औरतें सती हुईं. इस राजाकी आदत, बर्ताव व इ़ज़्ज़त वग़ैरहका हाल मआसिरुल-उमराके मुसन्निफ़ने उस ज़मानेकी किताबों वग़ैरहसे लेकर मुफ़स्सल लिखा है, जिसका ख़ुलासह नीचे लिखा जाता है:-

"राजा मानसिंह बंगालेकी हुकूमतमें बड़ी सर्दारी और बहुत कुछ सामान रखता था; इसके कवि (१) के पास १०० हाथी थे, और नौकर, मोतबर सर्दार और सब सिपाह बेश क़रार दरमाहा दार रखता था, जिस ज़मानेमें दक्षिणकी मुहिम ख़ानिजहां लोदीके सुपुर्द हुई थी, तब उसके साथ १५ पंज हज़ारी, नक़ारह और निशान वाले थे, जैसे ख़ान ख़ानां, राजा मानसिंह, मिर्ज़ा रुस्तम सफ़्वी, आसिफ़ख़ां, जाफ़र, शरीफ़ अमीरुलउमरा वग़ैरह; और चार हज़ारीसे एक सदी तक एक हज़ार सात सौ मन्सब्दार मददको तईनात थे. जब बालाघाट मक़ामपर ग़ल्लेके न मिलनेसे बड़ा अकाल पड़ा, जिसमें कि रुपयेका एक सेर आटा भी नहीं मिलता था, एक दिन राजाने सरे दर्बार खड़े होकर नर्मीसे कहा, कि अगर मैं मुसल्मान होता, तो हर रोज़ एक वक़्त खाना तुम्हारे साथ खाता, लेकिन् मैं बुड्ढा हूं, सो एक बीड़ी पानकी मेरी तरफ़से क़बूल करो. यह सुनकर सबसे पहिले ख़ानिजहांने सलाम करके कहा, "मुझे क़बूल है".

---

(१) यह शख़्स चारण छापा बारहठ था, जिसका ज़िक्र अबुल्फ़ज़्लने अक्बरनामहमें गुजरात की लड़ाईके वक़्त किया है.

इसी तरह सबने क़ुबूल किया. राजाने सौ रुपये रोज़ानह पंज हज़ारीके हिसाबसे एक सदी तक सबका वज़ीफ़ह मुक़र्रर करदिया. हर रात उसी क़द्र रुपया थैलियोंमें रखकर और उनपर उन शख़्सोंके नाम लिखकर हिस्से मुवाफ़िक़ हर एकको भेज देता था. यह हाल तीन चार महीने, जब तक यह सफ़र पूरा न हुआ, रहा; राजाने कभी नाग़ह न किया. और जब तक लश्करके लोगोंको रसद मिलती, जिन्स भी निर्ख़के मुवाफ़िक़ अपने पाससे देता था. कहते हैं, कि उसकी राणी रायकुंवर बड़ी दाना और तद्बीर वाली थी; यह सारा सरंजाम वही अपने वतनसे करके भेजती थी. राजा सफ़रमें मुसल्मानोंके वास्ते कपड़ेके हम्माम और मस्जिद बनवाकर खड़े करवादेता था; और एक वक़्का खाना अपने पाससे सब साथियोंको भेजता था."

"कहते हैं, कि एक दिन एक सय्यद और एक ब्राह्मण आपसमें अपने अपने दीनकी बड़ाईपर बहस करने लगे, और दोनोंने राजाको मध्यस्थ मुक़र्रर किया; राजाने कहा, कि अगर मैं दीन इस्लामको अच्छा कहता हूं, तो लोग कहेंगे, कि बादशाही वक़्की ख़ुशामद से कहता है; और जो हिन्दुओंके दीनको अच्छा कहता हूं, तो तरफ़दारी समझी जायेगी. जब दोनोंने ज़ियादह हठ की, तो राजाने कहा, कि मैं ज़ियादह तो नहीं कह सक्ता, परन्तु इतना जानता हूं, कि हिन्दुओंमें बहुत मुद्दतसे साहिबे कमाल मज़्हबके पैदा होते हैं, जब वे मरे, जलादिये जाते हैं, और बर्बाद होजाते हैं; जब कभी कोई रातको वहां जावे, तो भूत, प्रेत वग़ैरह आसेबका डर पैदा होता है; और मुसल्मानोंके हरएक क़स्बोंमें बहुतसे बुज़ुर्ग क़ब्रोंमें हैं, जिनकी ज़ियारत कीजाती है, बरकत लीजाती है, और तरह तरहके जल्से होते हैं.

बंगाले जाते वक़् जब वह मुंगेर पहुंचा, तो वहां शाह दौलतकी ख़िद्मतमें, जो उस वक़् के बड़े साहिबे कमाल थे, गया; शाह साहिब ने कहा, कि इतनी दानाई और शुऊरके उप्रान्त भी तुम मुसल्मान क्यों नहीं होजाते? राजाने कहा, कि क़ुर्आन शरीफ़में लिखा है, कि बहुतसोंके दिलोंपर अल्लाहकी छाप लगी है, (ختم الله علی قلوبهم) जिससे ईमान नहीं लाते. अगर आपकी कृपासे यह ताला मेरी छातीसे खुल जावे, तो मुसल्मान होजाऊं. इस बातपर एक महीने तक राजा वहां ठहरा, परन्तु दीन इस्लाम उसके नसीबमें नहीं था, फ़ायदह न हुआ."

इस राजाके डेढ़ हज़ार औरतें, राणियां वग़ैरह थीं, और हर एकसे दो दो तीन तीन लड़के पैदा हुए, जो राजाके रूबरू ही मरगये, सिर्फ़ भाऊसिंह बाक़ी रहे थे.

राजा मानसिंह छोटे क़द व काले रंगके आदमी थे, और कुछ ख़ूबसूरत न थे; इसपर एक कहावत मश्हूर है, कि एक दिन अक्बर बादशाहने पूछा, कि मानसिंह ख़ुदाके यहां जिस वक़् नूर बंटता था, तब तुम कहां रहगये? राजाने कहा, कि हां हज़्रत जहां अक्ल

और बहादुरी बंटती थी, उसके लेनेमें फंसगया. मानसिंह उदारतामें भी बड़े मश्हूर हुए. उनकी एक शादी बीकानेरके राजा रायसिंहकी बेटीके साथ हुई थी; एक दिन महाराणी बीकानेरीने जलसा किया, तब राजाने पूछा, कि आज तुमको किस बातकी खुशी है ? राणीने जवाब दिया, कि मेरे बापने करोड़ पशाव दिया है, जो आज तक किसी राजाने नहीं दिया. यह बात सुनकर राजा चुप होरहे, और ख़ानगीमें अह्लकारोंको हुक्म दे दिया, कि फ़ज्रको छः करोड़ पशावका सामान और छः चारण हाज़िर रहें. अह्लकारोंने हुक्मके मुवाफ़िक़ छः ही चारणोंको मए बख़्शिशके हाज़िर किया, और महाराजाने उन छओंको करोड़ पशाव देकर रोज़मर्रहका मामूली काम काज किया. शामके वक़्त उन्हीं बीकानेरी राणीके महलमें गये, तब राणीने शर्मिन्दह होकर कहा, कि आपसे तो बिह्तर नहीं, लेकिन् दूसरे राजाओंसे तो मेरा बाप बढ़कर है. इस इन्आमके बारेमें किसी मारवाड़ी शाइरने अपनी ज़बानमें एक छप्पय कहा था, जो नीचे लिखाजाता है :-

छप्पय.

पोळ पात हरपाळ । प्रथम प्रभता कर थप्पे ॥
दळमें दासो नरू । सहोड़ घण हेत समप्पे ॥
ईसर कसनो अरघ । बड़ी प्रभता बाधाई ॥
भाई डूंगर भणे । क्रीत लख मुखां कहाई ॥
अई अई मान उनमान पहो । हात धनो धन धन हियो ॥
सुरज घड़ीक चढ़तां समो । दे छ कोड़ दातण कियो ॥ १ ॥

अर्थ- १- पहिला हरपाल हापावत बारहठ, जो उनके दर्वाज़ेपर नेग पाने वाला था, उसकी बड़ी इ़ज़्ज़त बढ़ाई (कोट गांव दिया).

२- दासा खड़िया, (जिसको गंगावती गांव दिया).

३- नरू अलूंओत कविया, (जिसको भैराणा दिया).

४- ईसर दास रतनू, (जिसको खेड़ी गांव मिला).

५- किसना (कृष्ण) भादा (जिसको कचोल्या गांव दिया).

६- डूंगर कवियाको (डोगरी गांव मिला), जिसको भाईका ख़िताब था.

इन छओंकी औलाद वालोंके क़ब्जेमें ऊपर लिखे छः गांव मए उनकी दस्तावेज़ोंके अब तक मौजूद हैं.

२६- मिर्ज़ा राजा भावसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १६३२ आश्विन शुक्ल २ [हि० ९८४ ता० १ रजब =

ई० १५७६ ता० २६ सेप्टेम्बर] को, और राज्याभिषेक विक्रमी १६७१ आषाढ़ शुक्ल १० [हि० १०२३ ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० १६१४ ता० १६ जुलाई] को हुआ. महाराजा मानसिंहके बाद उनके कुंवर जगत्सिंहके बड़े बेटे महाराज महासिंह आंबेरके हक़दार थे; परन्तु बादशाहने महाराजा मानसिंहके छोटे बेटे भावसिंहको राजा बना दिया, जिसका हाल खुद बादशाह जहांगीरने अपनी किताब तुज़ुक जहांगीरीके पृष्ठ १३० में इस तरहपर लिखा है:-

"पांचवीं अमरदादको राजा मानसिंहके मरनेकी ख़बर पहुंची, यह राजा मेरे बापके मातहृत बड़े सर्दारोंमेंसे था, मैंने कई दफ़ा अपने जिन सर्दारोंको दक्षिणमें भेजा, उनमें यह राजा भी उसी नौकरीपर तईनात था; जब राजा उस जगह मरगया, तो मैंने उसके बेटे मिर्ज़ा भावसिंहको बुलाया, जो शाहज़ादगीके दिनोंसे ही मेरी ख़िद्मत बहुत ज़ियादह करता रहा था. हिन्दुओंके रवाजके मुवाफ़िक़ रियासत और पाटवीका हक़ मानसिंहके बड़े बेटे जगत्सिंहके कुंवर महासिंहका (जिसका बाप अपने बापकी ज़िन्दगी ही में मरगया,) था; लेकिन् मैंने उसको मंज़ूर नहीं किया, और भावसिंहको मिर्ज़ा राजा ख़िताब और चार हज़ारी ज़ात तीन हज़ार सवारका मन्सब देकर उसके बुज़ुर्गोंकी जगह आंबेरका हाकिम बनाया. महासिंहको खुश करनेके लिये पांच सदी मन्सब उसके पहिले मन्सबपर बढ़ादिया; इन्आममें मांडूके इलाक़हमें जागीर मुक़र्रर करके कमरपटका, जड़ाऊ ख़न्जर, घोड़ा व ख़िल्अ़त उसके लिये भेजा."

राजा भावसिंह शराब ज़ियादह पीते थे, जिनकी मौतका हाल तुज़ुक जहांगीरीके ३३७ पृष्ठमें इस तरह लिखा है :-

"हिज्री १०३१ सफ़र [विक्रमी १६७८ पौष = ई० १६२२ जैन्युअरी] में अ़र्ज़ हुआ, कि दक्षिणके सूबहमें राजा भावसिंह बहुत शराब पीनेसे मरगया. वह शराबकी ज़ियादतीसे बहुत कमज़ोर और दुबला होगया था, एक दिन ग़श (तान या तासीर) आनेसे एक रात व दिन बे होश पड़ारहा; हकीमोंने बहुत कुछ इलाज किये, और सिरपर दाग़ भी दिया, परन्तु कुछ फ़ाइदह न हुआ, और वह मरगया. उसके बड़े भाई जगत्सिंह और भतीजे महासिंहने भी इसी मरज़में जान खोई थी, लेकिन् भावसिंहने उनके अह्वालसे इ़ब्रत न पकड़ी. वह बहुत बहादुर, नेक और शायस्तह आदमी था. शाहज़ादगीके ज़मानेसे मेरी ख़िद्मतमें रहकर उसने पांच हज़ारी मन्सब पाया था. उसके कोई लड़का नहीं था, जिससे उसके बड़े भाईके पोतेको, जो थोड़ी उम्रका था, राजाका ख़िताब और दो हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया. आंबेर, जो उनका क़दीम वतन है, जागीरमें बहाल रक्खा. भावसिंहके साथ दो राणियां और आठ सहेलियां सती हुईं."

भावसिंहका देहान्त विक्रमी १६७८ पौष शुक्ल १० [हि० १०३१ ता० ९ सफ़र = ई० १६२१ ता० २३ डिसेम्बर] को दक्षिणमें हुआ. उनके कोई पुत्र नहीं था.

२७- मिर्ज़ा राजा जयसिंह—१.

इनका जन्म विक्रमी १६६८ आषाढ़ कृष्ण १ [हि० १०२० ता० १५ रबीउल्अव्वल = ई० १६११ ता० २९ मई] को, और राज्याभिषेक विक्रमी १६७८ पौष शुक्ल १० [हि० १०३१ ता० ९ सफ़र = ई० १६२१ ता० २३ डिसेम्बर] को हुआ. जब मिर्ज़ा राजा भावसिंहके कोई पुत्र नहीं रहा, तब राजा मानसिंहके पड़पोते, जगत्सिंहके पोते और महासिंहके बेटे जयसिंहको आंबेरकी गद्दी मिली, जैसा कि ऊपर लिखा गया है. कुंवर जगत्सिंह, जो अपने बापके साम्हने मरगये थे, उनका जन्म विक्रमी १६२५ [हि० ९७६ = ई० १५६८] में, और देहान्त विक्रमी १६५५ कार्तिक शुक्ल [हि० १००७ रबीउस्सानी = ई० १५९८ ऑक्टोबर] में हुआ. उनके बेटे महासिंहका जन्म विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] में हुआ, जिनका हाल मआसिरुल उमरामें इस तरहपर लिखा है:-

"महासिंह, जगत्सिंहका बेटा, जो राजा मानसिंहका पोता है, अपने बापके मरने बाद अपने दादाका क़ाइम मक़ाम होकर बंगालेकी हुकूमतपर गया; पैंतालीसवें जुलूस अक्बरीमें, जिन दिनों बंगालेके पठानोंने फ़साद कर रक्खा था, वह कम उम्र था. मानसिंहका भाई प्रतापसिंह काम चलाता था; उसने इस फ़सादको थोड़ासा जानकर पक्का बन्दोबस्त न किया, और एकदम भदरक मक़ाममें मुक़ाबलह कर बैठा, जिसमें पठान ग़ालिब रहे; बहुतसे राजपूत मारे गये, और महासिंह ठहर न सका. सैंतालीसवें सन् जुलूसमें, जब जलाल गक्खड़ और क़ाज़ी मोमिनने इलाक़ए बंगालामें फ़साद मचाया, तो महासिंहने उन लोगोंको सज़ा देनेमें खूब जुरअत और मर्दानगी दिखलाई. पचासवें साल जुलूसमें उसका मन्सब दो हज़ारी तीन सौ सवार किया गया."

"दूसरे सन् जुलूस जहांगीरीमें वह फ़ौजके साथ बंगशकी मुहिमपर तईनात हुआ. तीसरे साल जुलूसमें उसकी बहिनकी शादीके वास्ते अस्सी हज़ारका सामान भेजा गया, और वह बादशाही महलमें दाख़िल हुई. दादा राजा मानसिंहने उसके साठ हाथी जिहेज़में दिये. पांचवें सन् जुलूसमें उसको निशान मिला. इसी सालमें बांधूका राजा विक्रमादित्य बाग़ी होगया, उसको सज़ा देनेके लिये यह

मुक़र्रर हुआ. नवें साल जुलूसमें राजा मानसिंहके मरनेपर उसने पांच सौ ज़ात पांच सौ सवारकी तरक़्क़ी पाई, क्योंकि बादशाहकी भावसिंहपर बड़ी मिहर्बानी थी, जिसको उसकी क़ौमका बुज़ुर्ग बनाकर उसके बदलेमें इसके मन्सबपर पांच सदी ज़ातका इज़ाफ़ह किया, ख़िल्अ़त व ख़न्जर जड़ाऊ इसके वास्ते भेजा, और मांडूमें जागीर इन्आ़मके तौर दी. दसवें साल जुलूसमें राजाका ख़िताब पाया, और नक़ारह मिला. ग्यारहवें साल जुलूसमें उसने पांच सौ ज़ात व पांच सौ सवारकी तरक़्क़ी पाई. बारहवें साल जुलूस हिज्री १०२६ ता० ३ जमादियुस्सानी [वि० १६७४ ज्येष्ठ शुक्ल ४ = ई० १६१७ ता० ८ जून] को वह बालापुर, बरारके मुल्कमें मरगया. उस का बेटा १ मिर्ज़ा राजा जयसिंह था, जो राजा भावसिंहके मरने बाद आंबेरका राजा हुआ."

जगत्सिंहका छोटा बेटा जुझारसिंह था, जिसकी औलादमें झलाय, साइबाड़, बगड़ी और मूंडे वगैरहके जुझारसिंहोत कछवाहे कहलाते हैं.

जब शाहजहां दक्षिणसे विक्रमी १६८५ [हि० १०३७ = ई० १६२८] में अजमेर होता हुआ आगरेको बादशाह बननेके लिये जाता था, रास्तेमें राजा हाज़िर हुआ, और आगरा पहुंचने बाद महाबनका फ़साद मिटानेके लिये उनको भेजा. जब विक्रमी १६८६ चैत्र कृष्ण ६ [हि० १०३९ ता० २० रजब = ई० १६३० ता० ५ मार्च] को निज़ामुल्मुल्क वगैरहपर फ़ौज कशी हुई, उसमें यह भी भेजेगये. उस वक़्त इनका मन्सब एक हज़ारकी तरक़्क़ीसे चार हज़ारी चार हज़ार सवार कियागया था, और उस बड़ी फ़ौजमें वह हरावल मुक़र्रर हुए थे. विक्रमी १६८७ पौष कृष्ण ५ [हि० १०४० ता० १९ जमादियुल्अव्वल = ई० १६३० ता० २५ डिसेम्बर] को बीजापुरपर फ़ौज गई, तो उसमें भी वह तईनात थे.

विक्रमी १६९० ज्येष्ठ कृष्ण ३० [हि० १०४२ ता० २९ ज़ीक़ाद = ई० १६३३ ता० ८ जून] को हाथियोंकी लड़ाईमेंसे एक हाथीने शाहज़ादह औरंगज़ेबपर हमलह किया, इस राजाने पीछेसे पहुंचकर हाथीके एक बर्छा मारा, जिससे वह चलदिया. विक्रमी १६९० भाद्रपद कृष्ण ८ [हि० १०४३ ता० २२ सफ़र = ई० १६३३ ता० २९ ऑगस्ट] को बादशाहज़ादह मुहम्मद शुजाअ़के साथ, जो बहुतसी फ़ौज समेत बीजापुर गया था, राजा जयसिंह भी थे. उन्होंने वहांकी लड़ाइयोंमें बड़े बड़े काम किये. विक्रमी १६९२ वैशाख कृष्ण ५ [हि० १०४४ ता० १९ शव्वाल = ई० १६३५ ता० ८ एप्रिल] को जश्नके दिन उन्होंने पांच हज़ारी ज़ात पांच हज़ार सवारका मन्सब पाया, और विक्रमी १६९२ भाद्रपद शुक्ल १५ [हि० १०४५ ता० १४ रबीउ़स्सानी = ई० १६३५ ता० २७ सेप्टेम्बर] को दक्षिणसे बादशाहके पास

वापस आगये. विक्रमी १६९२ माघ कृष्ण ३ [हि० १०४५ ता० १७ शअ्बान = ई० १६३६ ता० २५ जैन्युअरी] को जब साहू और निज़ामुल्मुल्कके लोगोंने दक्षिणमें फ़साद उठाया, और उनको सज़ा देनेके लिये बीस हज़ारके क़रीब फ़ौज तईनात हुई, उसमें जयसिंह भी भेजदिये गये. बहुतसी लड़ाइयोंके बाद देवगढ़के क़िलेपर धावा हुआ, और कई सुरंगें लगाकर क़िलेके बुर्ज वग़ैरह उड़ादिये गये. एक बुर्जके गिरनेसे रास्तह होजानेपर सिपहदारख़ां और यह राजा अन्दर घुसगये, और बड़ी मर्दानगीके साथ दुश्मनोंको मारने बाद वहांके क़िलेदार देवाको ज़िन्दह पकड़कर क़िलेपर बादशाही अमल जमादिया. विक्रमी १६९३ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १०४६ ता० २५ शव्वाल = ई० १६३७ ता० २२ मार्च] को दक्षिणसे ख़ानिदौरां अपने साथ इब्राहीम आदिलशाहके पोते इस्माईलको लेकर साथियों समेत बादशाहके पास आया, तो उस वक़ जयसिंहका मन्सब पांच हज़ारी पांच हज़ार सवार हुआ; और चाटसूका पर्गनह, ख़िल्अ्त, जड़ाऊ खपुवा फूलकटारा समेत इन्आममें मिला. इनको विक्रमी १६९४ वैशाख शुक्ल १५ [हि० १०४६ ता० १४ ज़िल्हिज = ई० १६३७ ता० ९ मई] को आंबेर जाकर कुछ दिनों आराम करनेकी रुख़्सत मिली. इनके मुल्कमें एक एक हज़ार रुपयेकी क़ीमतका घोड़ा पैदा होता था, इसलिये बीस घोड़ियां बच्चे लेनेके वास्ते साथ दीगईं.

विक्रमी १६९४ फाल्गुन [हि० १०४७ शव्वाल = ई० १६३८ फ़ेब्रुअरी] में बीस हज़ार फ़ौजके साथ शाहज़ादह शुजाअ् कन्धार भेजे गये, तो राजा जयसिंह उसके साथ थे. विक्रमी १६९६ वैशाख कृष्ण ११ [हि० १०४८ ता० २५ ज़िल्हिज = ई० १६३९ ता० २९ एप्रिल] को राजा जयसिंह, जो नौशहरेमें बादशाहज़ादह दाराशिकोहके पास था, रावलपिंडी मक़ामपर शाहजहांके काबुल जाते वक़ हुक्मके मुवाफ़िक़ उसके पास आगया. नौशहरेमें फ़ौजकी हाज़िरी होनेके वक़ राजाको बादशाहने एक घोड़ा और मिर्ज़ा राजाका ख़िताब, जो उनके बाप दादाको था, दिया; और काबुलसे वापस आजाने बाद विक्रमी १६९६ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० [हि० १०४९ ता० २९ रजब = ई० १६३९ ता० २५ नोवेम्बर] को आंबेर जानेकी रुख़्सत और ख़िल्अ्त मिला. विक्रमी १६९७ फाल्गुन शुक्ल १३ [हि० १०५० ता० १२ ज़ीक़ाद = ई० १६४१ ता० २२ फ़ेब्रुअरी] को वह वापस शाहजहांके पास गया. विक्रमी १६९८ चैत्र शुक्ल १० [हि० १०५० ता० ९ ज़िल्हिज = ई० १६४१ ता० २१ मार्च] को शाहज़ादह मुराद बरुशके साथ राजा जयसिंहको काबुल जानेका हुक्म हुआ, और ख़िल्अ्त, मीनाकार जम्धर, फूलकटारा और घोड़ा सुनहरी सामान समेत इन्आममें मिला. विक्रमी १६९८ मार्गशीर्ष [हि० १०५१ रमज़ान

= ई० १६४१ डिसेम्बर] में शाहज़ादह मुरादवख़्श सियालकोट होता हुआ जगत्सिंह की जागीर पीथानमें पहुंचा, जो मऊसे तीन कोस है. इस मक़ामसे जगत्सिंहके मुक़ाबलहपर सईदख़ां बहादुर ज़फ़रजंग, राजा जयसिंह और असालतख़ांको आगे भेजा. वहांपर बहुतसी लड़ाइयां हुईं, और बहुतसे आदमी ग़नीमके मुक़ाबलहमें मारेगये, बाक़ी भागगये. इन मारिकोंमें राजाने बड़ी बहादुरी दिखाई, जिससे उसका मन्सब पांच हज़ारी ज़ात पांच हज़ार सवार, दो हज़ार सवार दो अस्पह सेअस्पह किया गया. विक्रमी १६९८ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १०५१ ता० २५ ज़िल्हिज = ई० १६४२ ता० २६ मार्च] को जगत्सिंहको गिरिफ़्तार करके शाहज़ादह और उसके साथी बादशाहके पास चले आये.

विक्रमी १६९९ चैत्र शुक्ल [हि० १०५२ मुहर्रम = ई० १६४२ एप्रिल] में शाहज़ादह दाराशिकोहकी तय्यारी कन्धारपर जानेको हुई, तो राजा जयसिंह भी ख़िल्अ़त, जम्धर जड़ाऊ, फूलकटारा, घोड़ा और हाथी इन्आ़म पाकर उसके साथ तईनात हुए. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ शअ़्बान = ई० ता० १४ नोवेम्बर] को बादशाहने लाहौरसे अक्बराबाद आतेहुए राजा को ख़ासह ख़िल्अ़त दिया. विक्रमी १७०१ कार्तिक कृष्ण १ [हि० १०५४ ता० १५ शअ़्बान = ई० १६४४ ता० १७ सेप्टेम्बर] को ख़ानिदौरां नुस्रत जंग किसी ज़रूरतके सबब दक्षिणसे बादशाही दर्बारमें बुलायागया, राजा जयसिंहके नाम क़ाइम मक़ाम काम करनेके लिये दक्षिण जानेका हुक्म हुआ; और उनके लिये दक्षिणमें विक्रमी १७०२ श्रावण कृष्ण २ [हि० १०५५ ता० १६ जमादियुल अव्वल = ई० १६४५ ता० १० जुलाई] को ख़िल्अ़त भेजा गया. विक्रमी १७०३ आश्विन कृष्ण १३ [हि० १०५६ ता० २७ शअ़्बान = ई० १६४६ ता० ८ ऑक्टोबर] को राजा जयसिंह, जो दक्षिणमें थे, बादशाहने पिशावरसे उनके बुलानेका हुक्म भेजा; और उनके बेटे रामसिंहको ख़िल्अ़त और घोड़ा सुनहरी सामान समेत देकर घर जानेकी रुख़्सत इनायत की. विक्रमी १७०४ ज्येष्ठ कृष्ण १० [हि० १०५७ ता० २४ रबीउ़स्सानी = ई० १६४७ ता० २९ मई] को राजा जयसिंह हस्बुल हुक्म दक्षिणसे वापस बादशाहके पास आगये.

विक्रमी आश्विन [हि० रमज़ान = ई० ऑक्टोबर] में, जब बादशाही फ़ौज बल्ख़ और बदख़्शांका इलाक़ह दबाये हुए थी, राजा जयसिंह भी वहां पीछेसे भेजे गये. दुरुस्त इन्तिज़ाम न होनेके सबब वह मुल्क वहांके पहिले बादशाह नज़र मुहम्मदख़ांको वापस दियागया; और बादशाही चार करोड़ रुपया फ़ुज़ूल ख़र्च

पड़ा. शाहज़ादह दाराशिकोहके मुल्क सौंपने बाद बादशाहज़ादह औरंगज़ेब फ़ौज लेकर अलीमर्दानखां, राजा जयसिंह, बहादुरखां, मोतमदखां, व पृथ्वीराज समेत काबुलको लौटा. रास्तहमें बर्फ़के पड़ने और लुटेरोंके हमलोंके सबब बहुत तक्लीफ़ पाई. विक्रमी १७०७ [हि० १०६० = ई० १६५०] में जश्नके दिन इन्होंने आंबेर आनेकी रुख़्सत ली, और इनके छोटे कुंवर कीर्तिसिंहको मेवातका इलाक़ह जागीरमें मिला, जहांके मेव लोग बड़े सर्कश और लुटेरे थे. कीर्तिसिंहने वहांका इन्तिज़ाम अच्छा किया. विक्रमी १७०८ चैत्र कृष्ण २ [हि० १०६२ ता० १६ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १६५२ ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को बादशाहने सादुल्लाहखां वज़ीरको कन्धारपर भेजा, तो राजा जयसिंहको उस फ़ौजका हरावल अफ़्सर मुक़र्रर किया. विक्रमी १७१४ कार्तिक कृष्ण ६ [हि० १०६८ ता० २० मुहर्रम = ई० १६५७ ता० २७ ऑक्टोबर] को राजा जयसिंह एक हज़ारकी तरक़ीसे छः हज़ारी ज़ात छः हज़ार सवारका मन्सब पाकर सुलैमांशिकोहके साथ, जब कि शाहज़ादोंमें शाहजहांकी बीमारीसे तख़्तके दावेपर फ़साद उठा, बंगालेकी तरफ़ शुजाअ़पर भेजे गये. इस मारिकेमें राजाने बड़ी बहादुरी दिखलाई, जिससे विक्रमी १७१४ चैत्र कृष्ण १२ [हि० १०६८ ता० २६ जमादियुस्सानी = ई० १६५८ ता० २९ मार्च] को एक हज़ारकी तरक़ीसे सात हज़ारी सात हज़ार सवारका मन्सब हुआ, लेकिन् राजा औरंगज़ेबके ग़ालिब होजानेसे विक्रमी १७१५ आषाढ़ शुक्ल ६ [हि० १०६८ ता० ५ शव्वाल = ई० १६५८ ता० ५ जुलाई] को सुलैमांशिकोहका साथ छोड़कर मथुरामें उसके पास चले आये. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण २ [हि० ता० १६ ज़ीक़ाद = ई० ता० १४ ऑगस्ट] को औरंगज़ेबने दिल्लीसे लाहौर जाते हुए सिकन्दर बाड़ी मक़ामपर इनको एक करोड़ दाम (ढाई लाख रुपया) सालानह की जागीर दी. औरंगज़ेबको इन महाराजाके मिलनेसे बड़ा फ़ाइदह हुआ, क्योंकि इनके समझानेसे बहुतसे हिन्दू राजाओंने दाराशिकोहका साथ छोड़दिया. बर्नियरने अपनी किताबमें औरंगज़ेब और महाराजा जयसिंहके मिलनेका जो हाल लिखा है, वह महाराणा जयसिंहके प्रकरणमें दर्ज किया गया है- (देखो पृष्ठ ६८५). इन महाराजाने औरंगज़ेबको खुश करनेके लिये महाराजा जशवन्तसिंहको समझा बुझाकर जोधपुरसे बुलाया; और विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० ता० २५ ज़ीक़ाद = ई० ता० २३ ऑगस्ट] को पंजाबमें सतलजके किनारेपर औरंगज़ेबके पास हाज़िर किया.

औरंगज़ेबने राजा जयसिंह और दिलेरखांको लाहौरकी तरफ़ इस मत्लबसे भेजा,

कि सुलैमांशिकोह, जो कश्मीरसे आता था, दाराशिकोहके शामिल न होजावे. ये लोग विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ३० [हि० ता० २९ ज़ीक़ाद = ई० ता० २७ ऑगस्ट] को लाहौरमें पहुंचे, कश्मीरके राजा राजरूपको व्यासा नदीपर विक्रमी भाद्रपद शुक्क ७ [हि० ता० ६ ज़िल्हिज = ई० ता० ३ सेप्टेम्बर] को औरंगज़ेबके पास ले आये. विक्रमी १७१५ फाल्गुन शुक्ल १५ [हि० १०६९ ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० १६५९ ता० ७ मार्च] को औरंगज़ेबने अजमेरमें दाराशिकोहसे लड़ाईके वक्त राजा जयसिंह और दिलेरख़ांको अपने हरावलका अफ़्सर बनाया, जिन्होंने बड़ी बहादुरीके साथ काम दिया. इस राजाने जश्वन्तसिंहको भी समझाकर दाराशिकोहसे अलग करदिया. जब दाराशिकोह अजमेरसे भागा, तब औरंगज़ेबने राजा जयसिंह और दिलेरख़ांको उसका पीछा करनेके लिये भेजा; उस वक्त राजाको ख़िल्अत, हाथी, तलवार और एक लाख रुपया नक्द इन्आम दिया. इन लोगोंने दाराशिकोहको अहमदाबाद और गुजरातकी तरफ़से निकाल दिया, और कच्छके राव तमाची को मिला लिया, जो दाराका मददगार बनगया था. जब दाराशिकोह कत्ल होचुका, तो पीछेसे विक्रमी १७१६ आश्विन कृष्ण ९ [हि० १०६९ ता० २३ ज़िल्हिज = ई० १६५९ ता० ९ सेप्टेम्बर] को इस राजाने आलमगीरके पास आकर एक हज़ार मुहर और दो हज़ार रुपया नज़ किया; बादशाहने ख़ास ख़िल्अत, जड़ाऊ पहुंची, एक हाथी, एक हथनी, चांदीके ज़ेवर और सुनहरी सामान समेत, और दो सौ घोड़े इन्आममें दिये. विक्रमी १७१६ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० १०७० ता० ४ रबीउल्अव्वल = ई० १६५९ ता० १८ नोवेम्बर] को बयालीसवीं साल गिरहपर आलमगीरने राजा जयसिंहको एक लाख रुपया नक्द और इनके कुंवर कीर्तिसिंहको जड़ाऊ सर्पेच और कामां पहाड़ीकी फ़ौज्दारी दी. विक्रमी १७१७ आषाढ़ [हि० १०७० ज़ीक़ाद = ई० १६६० जुलाई] में राजाने एक लाख तीस हज़ार रुपये क़ीमतके हथियार व जवाहिर बादशाहको नज़ किये. विक्रमी १७१७ पौष शुक्ल ६ [हि० १०७१ ता० ५ जमादियुल अव्वल = ई० १६६१ ता० ६ जेन्युअरी] को इनके बड़े कुंवर रामसिंहने दाराके बेटे सुलैमांशिकोहको श्रीनगरके राजाकी मददसे गिरिफ्तार करलिया, जिसको आलमगीरने क़ैद करदिया. यह बयान बादशाह आलमगीरके हालमें लिखागया है-(देखो पृष्ठ ६८९). फिर विक्रमी १७१८ ज्येष्ठ [हि० शुरू शव्वाल = ई० जून] में इन राजाको पहिलेके सिवा ढाई लाख आमदनी की जायदाद और मिली.

विक्रमी १७२० मार्गशीर्ष कृष्ण २ [हि० १०७४ ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १६६३ ता० १६ नोवेम्बर] को राजा जयसिंह दिलेरख़ां समेत दक्षिणकी तरफ़ शिवा

मरहटेके मुक़ाबलहपर भेजेगये, जिसका हाल मुख़्तसर तौरपर आलमगीर नामहसे यहां लिखाजाता है:-

"हिज्री १०७५ ज़िल्हिज [वि० १७२२ आषाढ़ = ई० १६६५ जुलाई] में राजा जयसिंह और दिलेरख़ांने दक्षिणमें बहुतसे क़िले और मक़ाम फ़त्ह करके वहांपर क़ब्ज़ह करलिया, और शिवाको राजगढ़के क़िलेमें घेरलिया; तब वह भागकर शिवापुर गांवमें जाछिपा, और उसने वहांके थानहदार सर्फ़राज़ख़ांकी मारिफ़त बादशाही ताबेदारीके इरादहसे राजाकी मुलाक़ात करनी चाही. राजाने अपने मुन्शीको पेश्वाई के लिये भेजा; लश्करके भीतर राजाके फ़ौजी बख़्शी जानीबेगने पेश्वाई की, ख़ेमेमें पहुंचनेपर राजाने खड़े होकर उसको अपने पास बिठाया. शिवाने बड़ी लाचारीके साथ क़ुसूरोंकी मुआफ़ी चाही, और कई क़िले सौंपनेपर बादशाही ताबेदारी इख़्तियार की. दिलेरख़ां और कीर्तिसिंहने क़िलेपर गोलन्दाज़ी बन्द की, और राजाकी दर्ख़्वास्तपर बादशाही फ़र्मान और ख़िल्अ़त शिवाके लिये पहुंचा, जिसको उसने तीन कोस पेश्वाई करके लिया. राजा और दिलेरख़ांने पैंतीस क़िलोंमेंसे, जो निज़ामके इलाक़ेके उसने दबालिये थे, बारह क़िले एक लाख हौन (पांच लाख रुपये) जागीर के शिवाको छोड़े; और तेईस क़िले, जिनकी जागीरी आमदनी दस लाख हौन (पचास लाख रुपया) थी, बादशाही क़ब्ज़हमें लिये. शिवाका बेटा शम्भा, जिस की उम्र आठ वर्षकी थी, बादशाही नौकरोंके तौर राजाकी ख़िद्मतमें रक्खागया."

"हिज्री १०७६ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १७२२ भाद्रपद = ई० १६६५ ऑक्टोबर] में बादशाहने राजा जयसिंहकी दर्ख़्वास्तपर शिवाके बेटे शम्भाको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया. शिवा, राजा जयसिंहके पास मुलाक़ातको बग़ैर हथियार आता था, इसलिये राजाने एक तलवार और जड़ाऊ जम्धर देकर उसको शस्त्र बांधनेकी इजाज़त दी. राजाने मए दिलेरख़ांके बीजापुरके इलाक़हमें पहुंचकर उसको तबाह किया, तब आदिलख़ां (शाह) बीजापुरीने सुलह करना चाहा. राजाके तसल्ली देने और समझानेसे शिवा, हिज्री १०७६ ता० १५ ज़ीक़ाद [वि० १७२३ ज्येष्ठ कृष्ण १ = ई० १६६६ ता० १९ मई] को बादशाही दर्बारमें आगया, जिसकी कुंवर रामसिंहने पेश्वाई करके बादशाहके साम्हने सलाम कराया; शिवाने डेढ़ हज़ार मुहर और छः हज़ार रुपया नज़्र किया. कुछ अरसह बाद वह पंज हज़ारियोंकी सफ़में खड़े रहनेको बे इ़ज़्ज़ती समझकर शर्मसे भाग गया. इस क़ुसूरमें बादशाहने जयसिंहके कुंवर रामसिंहको मन्सबसे माज़ूल करके उसकी ड्योढ़ी बन्द करदी."

इसका अस्ल मतलब यह था, कि शिवाको राजा जयसिंहने क़स्मियह तसल्ली

देकर बादशाहके पास भेजा था, लेकिन् आलमगीर अपनी आदतके मुवाफ़िक़ दग़ाबाज़ीको काममें लाया, कि राजा शिवाको क़ैद करदिया; उसके भागजानेसे रामसिंहपर इल्ज़ाम रक्खा. अगर अस्लमें रामसिंहने ही शिवाको निकाल दिया हो, तो भी तअ़ज्जुब नहीं; क्योंकि रामसिंहको उसके बापने लिखदिया होगा, कि बादशाह दग़ाबाज़ी करे, तो तुम ख़बरदार रहकर इसको बचाना. यह बात फ़ार्सी तवारीख़ोंमें नहीं लिखी, लेकिन् जयसिंह चरित्र वग़ैरह जयपुरकी पुस्तकोंमें साफ़ साफ़ मौजूद है, कि कुंवर रामसिंहने शिवा राजाको निकाला, और शिवा राजाके जमाई नेतू (१) को राजा जयसिंहने एवज़में पकड़कर बादशाहके पास भेजदिया. राजा, वर्सात आजानेके सबब बीजापुरका फ़ैसलह मुल्तवी रखकर औरंगाबादमें चले आये. कुछ दिनों बाद बादशाही फ़र्मान् पहुंचा, कि शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़म, जिसको औरंगाबादकी सूबहदारी मिली थी, उसके वहां पहुंचने बाद राजा यहां चला आवे.

आलमगीर नामहमें लिखा है, कि बुर्हानपुरके वाक़िअ़ह नवीसोंकी अ़र्ज़ियोंसे मालूम हुआ, कि राजा जयसिंह, जो औरंगाबादसे हुक्मके मुवाफ़िक़ हुज़ूरमें आता था, बुर्हानपुरमें विक्रमी १७२४ श्रावण कृष्ण १४ [हि० १०७८ ता० २८ मुहर्रम = ई० १६६७ ता० १९ जुलाई] को बीमारीसे मरगया; और जयपुरकी पोथियोंमें इनके मरनेका हाल इस तरहपर लिखा है, कि शिवा राजाके निकालनेके क़ुसूरमें आलमगीर, कुंवर रामसिंहसे नाराज़ हुआ, और इसी सबबसे राजा जयसिंह और आलमगीरके दर्मियान रंज बढ़तागया, जिससे वह ख़ुद आलमगीरके पास आनेको रवानह हुआ; तब आलमगीरने अन्देशहके सबब बुर्हानपुरमें इस राजाको किसी ख़वासके हाथसे ज़हर दिलवाकर विक्रमी १७२४ आश्विन कृष्ण ६ [हि० १०७८ ता० २० रबीउ़ल्अव्वल = ई० १६६७ ता० ८ सेप्टेम्बर] को मरवाडाला. राजा जयसिंहका नाराज़ होकर दक्षिणसे आना तो फ़ार्सी तवारीख़ोंसे नहीं मालूम होता, लेकिन् ज़हरसे मरवाडालना आलमगीरकी आदतसे तअ़ज्जुबकी बात नहीं है; क्योंकि उसने अपने भाइयोंको बकरोंकी तरह मरवाया, बापको क़ैद किया, और बड़े बेटे सुल्तान मुहम्मदको सख़्त क़ैदमें डाला, जिसकी बहादुरीसे उसको तख़्त मिला था; और मीर जुम्लाके मरनेसे ख़ुश हुआ, जो उसका दिली ख़ैरख़्वाह मददगार था.

राजाके मरनेकी तारीख़में जयपुरकी पोथियों व फ़ार्सी तवारीख़ोंके देखनेसे पौने दो महीनेका फ़र्क़ मालूम होता है; और हमने जयपुरके मोतबर आदमियोंसे दर्याफ़्त किया, तो उनका बयान यह है, कि हमारे यहां उक्त महाराजाका सांवत्सरिक

(१) आलमगीर नामहमें कुछ अ़र्सह बाद इसका मुसल्मान होजाना लिखा है.

श्राद्ध आश्विन कृष्ण ६ को होता है, इस सबबसे यह तिथि ग़लत नहीं होसक्ती. आलमगीरनामहका मुसन्निफ़ भी उसी ज़मानेका आदमी है, जिसकी तहरीरको भी हम ग़लत नहीं कहसक्ते; अलबत्तह आलमगीरनामहके लिखेजाने या छपनेमें ग़लती होगई हो, तो तअज्जुब नहीं. हमको मरने वगैरहकी तिथियोंमें जयपुरकी पोथियों पर ज़ियादह एतिबार है, क्योंकि उस समयसे आज तक जो सांवत्सरिक श्राद्ध होता चला आया है, उसमें मज़्हबी ख़यालसे फ़र्क़ नहीं होसक्ता.

महाराजा जयसिंहके साथ एक राणी बीकावत, दो ख़वास और दो पातर कुल पांच सतियां हुईं.

इनके बेटोंमेंसे इस वक़् रामसिंह और कीर्तिसिंह, जिसको कामां जागीरमें मिला, मौजूद थे. यह महाराजा बुद्धिमान, बहादुर, फ़य्याज़, मज़्हब व ईमानके सच्चे, और पोलिटिकल मुआमलात, याने राजनीतिमें बहुत होश्यार थे.

२८- महाराजा रामसिंह-१.

इन महाराजाका जन्म विक्रमी १६९२ द्वितीय भाद्रपद कृष्ण ५ [हि० १०४५ ता० १९ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १६३५ ता० १ सेप्टेम्बर] को, और राज्याभिषेक विक्रमी १७२४ आश्विन कृष्ण ६ [हि० १०७८ ता० २० रबीउ़लअव्वल = ई० १६६७ ता० ८ सेप्टेम्बर] को हुआ था. जब बादशाह शाहजहां अजमेर आये, तब विक्रमी १६८९ [हि० १०४२ = ई० १६३२] में यह अपने बापके साथ बादशाही ख़िद्मतमें पहुंचे; और विक्रमी १७०२ [हि० १०५५ = ई० १६४५] में बादशाह शाहजहांके लाहौरसे काबुलकी तरफ़ जानेके वक़् इनको पांच सौ सवारकी तरक़्क़ी और निशान मिला. जिस वक़् बादशाह शाहजहांके बेटोंमें लड़ाइयां हुईं, उस समय महाराजा जयसिंह तो सुलैमांशिकोहके साथ बंगालेकी तरफ़ भेजेगये; और यह अपने भाई कीर्तिसिंह समेत दाराशिकोहके साथ थे.

विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में यह सुलैमांशिकोहके लानेको श्रीनगरकी तरफ़ भेजेगये, सो वहांके राजासे मिलावट करके उक्त शाहज़ादहको लेआये. जब मरहटा राजा शिवाके भागजानेसे इनपर बादशाही नाराज़गी हुई, तो इनका मन्सब ज़ब्त और सलाम बन्द किया गया. इनके बाप राजा जयसिंहके बुर्हानपुरमें इन्तिक़ाल होने बाद इन (कुंवर रामसिंह) को आगरेसे बुलाकर बादशाह आलमगीरने ख़िल्अ़त, जड़ाऊ जम्धर, मोतियोंकी कंठी, तलवार जड़ाऊ सामान समेत, अ़रबी घोड़ा सुनहरी सामान समेत, ख़ासह हाथी ज़रदोज़ी झूल

और चांदीके ज़ेवर समेत, चार हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब और राजाका ख़िताब दिया. फिर विक्रमी १७२६ आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० १०८० ता० ११ सफ़र = ई० १६६९ ता० ९ जुलाई] को आलमगीरने इन्हें एक हज़ारकी तरक़्क़ी देकर एक बड़ी फ़ौजके साथ आसामकी तरफ़, जहां कि फ़सादियोंने फ़ीरोज़ख़ां थानेदारको मारडाला था, भेजा. विक्रमी १७३१ आश्विन कृष्ण १० [हि० १०८५ ता० २४ जमादियुस्सानी = ई० १६७४ ता० २५ सेप्टेम्बर] को महाराजा रामसिंहके कुंवर कृष्णसिंह, आग़रख़ां, व नुस्रतख़ां वग़ैरह समेत जम्रोद और ख़ैबरके पठानोंको सज़ा देनेके लिये भेजेगये; और विक्रमी १७३३ चैत्र कृष्ण १० [हि० १०८८ ता० २४ मुहर्रम = ई० १६७७ ता० २८ मार्च] को उस तरफ़की नौकरी बजा लाकर बादशाहके पास आने पर उनको चार महीनेकी रुख़्सत घर जानेके लिये मिली.

विक्रमी १७३९ चैत्र शुक्ल १४ [हि० १०९३ ता० १३ रबीउस्सानी = ई० १६८२ ता० २३ मार्च] को वह किसी ख़ानगी फ़सादमें लड़कर मारेगये. जयपुरकी ख्यातमें उनका बादशाही दक्षिणकी लड़ाईमें माराजाना लिखा है; लेकिन् फ़ार्सी तवारीख़ोंमें ख़ानगी फ़सादके सबब माराजाना पाया जाता है. कृष्णसिंहका जन्म विक्रमी १७११ द्वितीय भाद्रपद कृष्ण ९ [हि० १०६४ ता० २३ शव्वाल = ई० १६५४ ता० ५ सेप्टेम्बर] को हुआ था. जयपुरकी ख्यात व जयसिंह चरित्रमें महाराजा रामसिंह (१) का काबुलकी तरफ़ भेजा जाना लिखा है, परन्तु फ़ार्सी तवारीख़ोंमें इनका पिछला हाल बहुत कम मिलता है. इन महाराजाका देहान्त विक्रमी १७४६ आश्विन शुक्ल ५ [हि० ११०० ता० ४ ज़िल्हिज = ई० १६८९ ता० १९ सेप्टेम्बर] को हुआ. यह महाराजा बड़े बहादुर और सच बोलने वाले थे; इनको मज़्हबी तअस्सुब भी ज़ियादह था, अपने बाप दादोंके मुवाफ़िक़ मुसल्मानोंसे हिलमिलकर रहना नापसन्द करते थे, इसलिये आलमगीर इनसे ख़ुश नहीं था. राजा रामसिंहके बाद उनके पोते विष्णुसिंह आंबेरकी गद्दीपर बैठे.

२९- महाराजा विष्णुसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७२८ [हि० १०८२ = ई० १६७१] में, और राज्याभिषेक विक्रमी १७४६ आश्विन शुक्ल ५ [हि० ११०० ता० ४ ज़िल्हिज = ई० १६८९ ता० १९

---

(१) यह वही रामसिंह हैं, जिनका हवाला महाराणा राजसिंहने अपने काग़ज़में दिया है, जो जिज़्यहकी बाबत आलमगीरको लिखा था— (देखो पृष्ठ ४६०).

सेप्टेम्बर] को हुआ था. जब इनके दादा रामसिंहका इन्तिक़ाल हुआ, तब यह उन्हींके साथ (१) काबुलमें थे; वहां इनके नाम बादशाह आलमगीरका हुक्म पहुंचा, कि हिन्दुस्तानमें सिनसिनीके जाटोंने फ़साद उठाया है, तुम वहां पहुंचकर बन्दोबस्त करो. तब वे रवानह होकर आंबेर आये, और वहांसे जाटोंको सज़ा देनेके लिये गये. इस मुहिमको तै करने बाद वे मुल्तानमें तईनात हुए, जहांके लोगोंने बग़ावत कर रक्खी थी.

विक्रमी १७४७ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० ११०२ ता० १९ सफ़र = ई० १६९० ता० २१ नोवेम्बर] को, जब बादशाह दक्षिणमें थे, वहांपर इनकी अ़र्ज़ी इस मत्लबसे पहुंची, कि विक्रमी १७४७ ज्येष्ठ शुक्ल ४ [हि० ११०१ ता० ३ रमज़ान = ई० १६९० ता० ११ जून] को सक्खरकी गढ़ी फ़त्ह होगई. फिर उसी तरफ़ तईनात रहे. विक्रमी १७५५ आश्विन कृष्ण ३० [हि० १११० ता० २९ रबीउ़लअव्वल = ई० १६९८ ता० ५ ऑक्टोबर] को शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मके साथ काबुलको गये, वहां पहुंचनेपर बंगश वगैरह पठानोंकी लड़ाईमें बड़ी दिलेरी और बहादुरीके साथ नौकरी दिखलाई, परन्तु ईश्वरेच्छासे विक्रमी १७५६ माघ कृष्ण ५ [हि० ११११ ता० १९ रजब = ई० १७०० ता० १० जैन्युअरी] को काबुलमें ही इनका इन्तिक़ाल होगया. इनके दो बेटे, बड़े जयसिंह और छोटे विजयसिंह थे; राजा भगवानदाससे लेकर विष्णुसिंह तक जयपुरका मुल्की हाल तवारीख़में लिखने क़ाबिल नहीं मिलता, क्यौं कि बादशाही नौकरीके सबब वतनमें रहनेकी फुर्सत उनको बहुत कम मिली; जो हालात बादशाही नौकरीमें रहनेके वक्त क़ाबिल लिखनेके थे, ऊपर लिखेगये.
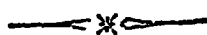
३०- महाराजा सवाई जयसिंह- २.

इनका जन्म विक्रमी १७४५ मार्गशीर्ष कृष्ण ६ [हि० ११०० ता० २० मुहर्रम = ई० १६८८ ता० १४ नोवेम्बर] को और राज्याभिषेक विक्रमी १७५६ [हि० ११११ = ई० १७००] के अख़ीरमें काबुलसे विष्णुसिंहके मरनेकी ख़बर आनेपर हुआ, और वह जल्दी ही आंबेर से रवानह होकर दक्षिणमें आलमगीरके पास पहुंचे. वहां हाज़िर होनेपर बादशाहने इनके दोनों हाथ पकड़लिये, और कहा, कि अब तू क्या करसक्ता है! राजाने जवाब दिया, कि अब मैं सब कुछ करसक्ता हूं, क्योंकि मर्द औरतका एक हाथ पकड़ता है, तो उसको बहुत कुछ इख़्तियार देता है, और हुज़ूरने मेरे दोनों

---

(१) इनका काबुलमें होना जयपुरकी तवारीख़ोंमें लिखा है.

हाथ पकड़ लिये, जिससे यक़ीन है, कि मैं सबसे बढ़कर हो गया. तब बादशाहने खुश होकर कहा, कि यह बड़ा होश्यार होगा; और कहा, कि इसको सवाई जयसिंह कहना चाहिये (याने अव्वल जयसिंहसे ज़ियादह). इनका अस्ली नाम विजयसिंह था, लेकिन् बादशाहने यह नाम इनके छोटे भाईको दिया, और इनका नाम सवाई जयसिंह रक्खा. मआसिरे आलमगीरीके ४२४ पृष्ठमें यह बयान इस तरह लिखा है :-

"विजयसिंह आंबेरके भोमियेको उसका बाप मरजानेसे राजा जयसिंहका ख़िताब और उसके भाईको विजयसिंह नाम दियागया; उसको ५०० पांच सौ ज़ात दो सौ सवारकी तरक़ीसे डेढ़ हज़ारी ज़ात हज़ार सवारका मन्सब अ़ता हुआ."

इन महाराजाका ज़ियादह हाल महाराणा अमरसिंह दूसरे व संग्रामसिंह दूसरे के ज़िक्रमें इनकी पॉलिसीके साथ लिखदिया गया है, इस वास्ते हम यहां वही हाल लिखते हैं, जो मआसिरुलउमरा वग़ैरह फ़ार्सी तवारीख़ोंमें दर्ज है; क्योंकि मुल्की हाल इनका ऊपर आचुका, दुबारह लिखना बे फ़ाइदह होगा.

जब ये आलमगीरके पास रहने लगे, तो दक्षिणमें क़िले खेलनाके फ़त्ह करनेको मुक़र्रर हुए; वहां इनकी और इनके राजपूतोंकी हमलहके वक़ बड़ी बहादुरी दिखलाई दी, जिससे आलमगीरने पांच सौ की तरक़ीसे दो हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब इनको दिया. आलमगीरके मरने बाद ये राजा शाहज़ादह मुहम्मद आज़मकी फ़ौजमें थे, जब उसका आगरेके पास बहादुरशाहसे मुक़ाबलह हुआ, और आज़म मारा गया, (मआसिरे आलमगीरीमें लिखा है), उसी दिन वह बहादुरशाहके पास चला आया; इस वास्ते उस राजाकी बातका एतिबार न रहा. इनका छोटा भाई विजयसिंह, जो काबुलमें बहादुरशाहके साथ था, उसको बहादुरशाहने तीन हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब देकर जयसिंहके एवज़ आंबेरका मालिक बनाना चाहा; और आंबेरके ख़ालिसहपर सय्यद हुसैन अलीको भेज दिया. बहादुरशाह कामबख़्शकी लड़ाईपर दक्षिणको गये, तब यह राजा, जो बादशाहके हमराह थे, राजा अजीतसिंह सहित नाराज़ होकर नर्मदा नदीसे लौट आये; और उदयपुर शादी करके जोधपुरको गये. इनके दीवान रामचन्दने सय्यदोंको आंबेरसे निकाल दिया, और सांभरके मक़ामपर सय्यद हुसैन अलीख़ां वग़ैरह इन दोनों राजाओंसे लड़कर मारे गये. जब बहादुरशाह दक्षिणसे पीछा राजपूतानहमें आया, तो ये दोनों राजा ख़ानख़ानांकी मारिफ़त बादशाहके पास हाज़िर होगये; बादशाह भी सिक्खोंकी बग़ावतके सबब इनसे दर्गुज़र करके लाहौरको चले गये. यह हाल महाराणा दूसरे अमरसिंहके बयानमें मुफ़स्सल लिखा गया है-(देखो पृष्ठ ९२९).

बादशाह फ़र्रुख़सियरने इनको राजाधिराजका ख़िताब दिया, जिसके पांचवें सन् जुलूस विक्रमी १७७२ [हि० ११२७ = ई० १७१५] में चूड़ामणि जाटने

वग़ावत की, और उसपर इनको भेजा. क़रीब था, कि चूड़ामणि बर्बाद होजावे; सय्यद अब्दुल्लाहख़ां वज़ीरने राजाधिराजसे दुश्मनीके सबब ख़ानिजहां बारहको पीछेसे भेजकर बाला बाला सुलह करवाली. यह बात राजाधिराजको बहुत नागुवार गुज़री. हुसैनअलीख़ां दक्षिणसे आया, तब उससे दबकर फ़र्रुख़सियरने राजाधिराजको वतनकी रुख़्सत देदी, और पीछेसे ख़ुद बादशाह मारा गया. यह हाल महाराणा संग्रामसिंहके ज़िक्रमें लिखागया है-(देखो एष्ठ ११४०).

मुहम्मदशाहके तख़्तपर बैठने बाद राजा दिल्लीमें हाज़िर होगये, तो बादशाह बड़ी मिहर्बानीसे पेश आये. फिर वह चूड़ामणि जाटपर तईनात किये गये, और जाटोंसे कुल इलाके़ छीन लिये. विक्रमी १७८९ [हि० ११४५ = ई० १७३२] में मुहम्मदख़ां बंगशसे मालवेकी सूबहदारी उतरकर राजाधिराजको हासिल हुई. विक्रमी १७९२ [हि० ११४८ = ई० १७३५] में इनकी दर्ख्वास्तसे ख़ानिदौरांकी मारिफ़त मालवेकी सूबहदारी बाजीराव पेश्वाको मिली.

विक्रमी १७८४ श्रावण [हि० ११३९ ज़िल्हिज = ई० १७२७ जुलाई] में महाराजाने आंबेरके दक्षिणी तरफ़ अपने नामपर जयपुर शहरकी बुन्याद डाली, जिसके बाज़ार, गली कूचे, महल वग़ैरह सब लैन डोरीसे मापकर बनवाये गये. इसके सिवा उन्होंने जयपुर व बनारस वग़ैरह कई शहरोंमें ग्रह नक्षत्र बेधनेके यन्त्र भी बनवाये. इन महाराजाका देहान्त विक्रमी १८०० आश्विन शुक्ल १४ [हि० ११५६ ता० १३ शअ्बान = ई० १७४३ ता० २२ सेप्टेम्बर] को ख़ून बिगड़जानेकी बीमारीसे बहुत तक्लीफ़के साथ हुआ. ये राजा बहुत बुद्धिमान, इल्मको तरक़्क़ी देनेवाले, विद्वानोंके परीक्षक, राजनीतिके पूरे पक्के और अपनी रियासतको तरक़्क़ी देनेवाले हुए; इनकी अक़्लमन्दी व होश्यारीका सुबूत जयपुरका शहर मौजूद है, जो उन्होंने अपनी तज्वीज़से आबाद किया. "भूगोल हस्तामलक" में बाबू शिवप्रसादने एक इटॅलियन इन्जिनिअरकी सलाहसे यह शहर आबाद कियाजाना लिखा है; अगर ऐसा भी किया, तो भी उनकी बुद्धिमानीमें कमी नहीं आसक्ती, क्योंकि यूरोपियन लोग जो उस समय हिन्दुस्तानमें थे, उनमेंसे किसीने ऐसा नामवरीका काम नहीं किया.

इसके सिवा जयपुरकी इतनी बड़ी रियासत, जो अब मौजूद है, उसको उन्हीं की बुद्धिमानीका फल कहना चाहिये; क्योंकि राजा भारमल्लसे पहिले तो कुछ बड़ा इलाक़ह उनके क़ब्ज़हमें नहीं था, राजा भगवानदाससे विष्णुसिंह तक ये लोग बादशाही मिहर्बानी और नवाज़िशसे बड़े अमीर होकर दूरके मुल्कोंमें जागीरें तथा सूबहदारियां पाते रहे, जो बदलती रहीं; परन्तु मौरूसी मुल्कमें बड़े हिस्सेपर महाराजाधिराज बनना इन्हींका काम था. राजाओंके चार अंग- साम, दाम, दंड और भेद,

सब इनमें मौजूद थे, जिनकी राजनीतिके लिये राजाओंको बहुत ज़रूरत है. बूंदीके मिश्रण सूर्यमल्लने अपने ग्रन्थ वंशभास्करमें बुधसिंह चरित्रके पृष्ठ १०० में इनकी दस बातें अनुचित लिखी हैं, जिसकी नक्ल नीचे लिखी जाती है:-

जो निज धरम रच्यो कूरम हिय। क्यों तब कर्म अधर्म इते किय॥
हन्यो प्रथम सिवसिंह स्वीय सुत। जोहु तास जननी निज तिय जुत॥
पुनि जननी निज स्वर्ग पठाई। भट वर विजयसिंह बलि भाई॥
पुनि भानेज सत्य जो होतो। अरु असत्य सिसु होतउसो तो॥
पुनि संग्राम रामपुर स्वामी। हन्यों दगा रचि होय हरामी॥
सत्त अठ्ठ सत्रह १७८७ मित संवत। तेरह लक्ख १३००००० साह रुप्पय तत॥
लै अरु कितव मिल्यो मर हट्ठन। सो मुरयो न अबलग अधर्म सन॥
साह तास विस्वास हि रक्खैं। यह तउ मन्त्र दक्खिनिन अक्खैं॥

अर्थ-जो कछवाहेके दिलमें राजपूतोंका धर्म माना गया, तो इतने बुरे काम क्यों किये:- पहिले अपने बेटे शिवसिंहको मारा, अपनी राणी शिवसिंहकी माको मारा, अपनी माताको मारा, और अपने छोटे भाई विजयसिंहको मारा, अपने भान्जे राव राजा बुद्धसिंहके बेटेको मारा, रामपुराके राव संग्रामसिंह चन्द्रावतको दग़ासे मारा, और संवत् १७८७ में तेरह लाख रुपये बादशाहसे लेकर मरहटोंसे मिल गया, बादशाह उसपर एतिबार रखता था, और वह पोशीदह सलाह मरहटोंसे करता था.

३१- महाराजा ईश्वरीसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७७८ फाल्गुन् शुक्ल ८ [हि० ११३४ ता० ७ जमादियुल अव्वल = ई० १७२२ ता० २२ फेब्रुअरी] रविवारको हुआ था. जब महाराजा सवाई जयसिंहका देहान्त हुआ, तब इनको गद्दी मिली; परन्तु अपने छोटे भाई माधवसिंहका ख़ौफ़ था, कि वह ज़ुरूर राज्यका दावा करेगा, इस वास्ते ये दिल्ली पहुंचे, और बादशाहसे अपने बापका ख़िताब, मन्सब, और जयपुरकी गद्दीका फ़र्मान हासिल किया. पीछेसे माधवसिंहके मददगार मरहटों और महाराणाकी फ़ौजें ढूंढाड़में पहुंची; यह सुनकर ईश्वरीसिंह दिल्लीसे एकदम जयपुर पहुंचे, और अपने सर्दारोंके शामिल होकर लड़ाईपर आये, जहां मरहटोंको लालच देकर काम्याब होगये. यह हाल पहिले लिखा गया है- (देखो पृष्ठ १२३२). इसी तरह इनकी दूसरी लड़ाइयां भी, जो मेवाड़ और मरहटोंके साथ हुई थीं, महाराणाके ज़िक्रमें लिख दीगईं.

इस वास्ते दोबारह लिखना बे फ़ाइदह होगा; महाराणा जगत्सिंहका बयान पढ़नेसे पाठक लोगोंको इनका कुल हाल मालूम होजायगा.

विक्रमी १८०४ [हि० ११६० = ई० १७४७] में, जब अह्मदशाह अब्दाली हिन्दुस्तानपर चढ़ आया, तब मुहम्मदशाहने अपने शाहज़ादहके साथ महाराजा ईश्वरीसिंहको भी मुक़ाबलहके लिये मए बड़ी जमइयतके भेजा था. फ़ार्सी तवारीख़ वाले इस लड़ाईका हाल इस तरह लिखते हैं, कि "दुर्रानी शाहसे मुक़ाबलेके वक़ राजा मए अपने राजपूतोंके ज़ाफ़रानी (केसरिया) पोशाक पहिने तय्यार था, जिसको राजपूत लोग लड़ाईके वक़ पहनकर पीछे हर्गिज़ नहीं हटते; लेकिन् वह मुक़ाबलह होते ही भाग गया."

इस भागनेका सबब भी यही था, कि राजाको उस वक़ ख़बर लगी, कि माधवसिंहकी हिमायती फ़ौजें जयपुरके मुल्कमें आपहुंची हैं, इस वास्ते उनको लाचार लड़ाई छोड़कर आना पड़ा; आख़िरकार यह महाराजा विक्रमी १८०७ पौष कृष्ण १२ [हि० ११६४ ता० २६ मुहर्रम = ई० १७५० ता० २५ डिसेम्बर] को ज़हर खाकर मरे (१). इनके मरनेका हाल भी ऊपर लिखा गया है- (देखो पृष्ठ १२४०). यह महाराजा बड़े बहादुर और फ़य्याज़ थे; लेकिन् लोगोंके बहकानेसे बेजा काम भी कर बैठते; आख़िर ऐश व इश्रतमें ज़ियादह पड़गये, इसीके तुफ़ैल उनकी जान भी गई, और वे अपनी बदनामीका निशान "ईशर लाट" नाम मीनार बाक़ी छोड़गये. महाराजा सवाई जयसिंहने तो इनकी मज़्बूतीका सामान बहुत कुछ किया था, लेकिन् परमात्मा को यह मन्ज़ूर था, कि माधवसिंह भी जयपुरका महाराजा कहलावे.

३२- महाराजा माधवसिंह -१.

इनका जन्म विक्रमी १७८४ पौष कृष्ण १२ [हि० ११४० ता० २६ रबीउस्सानी = ई० १७२७ ता० ९ डिसेम्बर] को हुआ, और जयपुरकी गद्दीपर विक्रमी १८०७ पौष शुक्ल १४ [हि० ११६४ ता० १३ सफ़र = ई० १७५१ ता० १० जैन्युअरी] को बैठे. जब महाराजा ईश्वरीसिंहका इन्तिक़ाल हुआ, तब यह उदयपुर में थे, इनके वकील कायस्थ कान्हने ख़बर भेजी, जो मलहार राव हुल्करकी फ़ौजमें था. यह हाल हम महाराणाके ज़िक्रमें ऊपर लिख आये हैं- (देखो पृष्ठ १२४०).

महाराजाने जब हुल्कर व सेंधिया वग़ैरह मरहटोंको रुख़्सत करके अपना और अपनी रअय्यतका पीछा छुड़ाया, तब उनको अपनी जानकी फ़िक्र पड़ी; जो लोग महाराजा ईश्वरीसिंहसे बदलकर इनके ख़ैरख़्वाह बने थे, उनका एतिबार जाता रहा, कि ये

---

(१) वंशभास्करमें पौष कृष्ण ९ लिखा है.

लोग जैसे उनसे बदले, उसी तरह मुझसे भी किसी वक्त बेईमानी करें, तो तअज्जुब नहीं; इस वास्ते पहिले तो अपने खाने पीने और पहननेके कामोंपर अपने एतिबारी आदमी मुक़र्रर किये, जो उदयपुरसे इनके साथ आये थे; और उन्हीं लोगोंकी औलाद जयपुरकी रियासतमें ख़ानगी कारख़ानोंपर आज तक मुक़र्रर है; इनमें ज़ियादह पल्लीवाल ब्राह्मण हैं, जो उदयपुरके राज्यमें बड़ा प्रतिष्ठित ख़ानदान इन ब्राह्मणोंका है.

इन महाराजाने राज्यका प्रबन्ध अच्छी तरह किया; वे विक्रमी १८१० [हि० ११६६ = ई० १७५३] में दिल्लीको गये, वहांसे फ़र्मान व ख़िल्अ़त वग़ैरह हासिल करके जयपुर आये, और बाज़े कामोंके लिये अपने दीवान हरगोविन्द नाटाणीको दिल्ली छोड़ आये थे; जब वह दीवान दिल्लीसे फिरा, तो रास्तेमें मरहटोंने आ घेरा, जिसके साथ बूंदीका माधाणी हाड़ा भगवन्तसिंह था; लेकिन् दीवान मरहटोंको शिकस्त देकर जयपुर चला आया.

कुछ अ़रसहके बाद मलहार राव हुल्कर जयपुरके इलाक़हपर चढ़ आया, क्योंकि उसको रामपुरा और पर्गनह टोंक महाराजाने देनेका पूरा इक़ार करलिया था, परन्तु वे उसके क़ब्ज़हमें नहीं आये. विक्रमी १८१५ वैशाख [हि० ११७१ रमज़ान = ई० १७५८ मई] में हुल्करकी चढ़ाईसे ख़ौफ़ खाकर महाराजाने रामपुरा व टोंक वग़ैरह चारों पर्गने मए ११००००० रुपयेके देकर इस बलाको टाला. इसी सालके पौष शुक्ल पक्ष [हि० ११७२ जमादियुलअव्वल = ई० १७५९ जैन्युअरी] में रणथम्भोरका क़िला बादशाही आदमियोंसे जयपुरके क़ब्ज़हमें आया. यह क़िला विक्रमी १६२५ [हि० ९७६ = ई० १५६८] में मेवाड़के मातह्त क़िलेदार बूंदीके राव सुरजण हाड़ासे बादशाह अक्बरने छीन लिया, तबसे मुग़ल बादशाहोंके क़ब्ज़हमें रहा; शाहजहां बादशाहने राजा विट्ठलदास गौड़को जागीरमें दिया था, जिसका हाल बादशाहनामहमें लिखा है; जब उसकी औलादमें कोई लाइक़ आदमी न रहा, तब बादशाह आलमगीरने इस क़िलेको फिर ख़ालिसहमें रक्खा. महाराजा सवाई जयसिंहने इस क़िलेको अपने क़ब्ज़ेमें लानेके लिये बहुतसी कोशिशें कीं, लेकिन् उनकी मुराद हासिल न हुई. मुहम्मदशाह जब महाराजा ईश्वरीसिंहको अहमदशाह दुर्रानीकी लड़ाईपर भेजने लगे, तब राजाने इस क़िलेके मिलनेकी दर्ख्वास्त की, जिसको ख़ानदान आलमगीरी व मिरातिआफ्ताब नुमामें इस तरह लिखा है:-

"जब कि अहमदशाह दुर्रानीने पंजाबका इलाक़ह दबालिया, तब मुहम्मदशाह बादशाहने मुक़ाबलहके लिये शाहज़ादह अहमदशाह, ज़ुल्फ़िक़ारजंग और राजा ईश्वरीसिंहको रवानह किया. राजाकी ख़्वाहिश थी, कि अगर क़िला रणथम्भोर हुज़ूरसे इनायत हो, तो लड़ाईमें बहुत अच्छी ख़िद्मत अदा कीजावे; लेकिन् नव्वाब क़मरुद्दीनख़ां

वज़ीर और सफ़्दर जंगने यह बात मन्जूर न की, और राजाके वकीलको सख़्तीसे जवाब दिया, कि यह हर्गिज़ नहीं होसक्ता; राजा लाचारीसे साथ चलागया. लड़ाईके मौक़ेपर नव्वाब क़मरुद्दीनख़ां, नव्वाब सफ़्दर जंग, नव्वाब ज़ुल्फ़िक़ार जंग और राजा ईश्वरीसिंहने ईरानियोंसे मुक़ाबलह किया; राजा अपने राजपूतों समेत, जो केसरिया लिबास पहने हुए थे, राजपूतोंकी रस्मके ख़िलाफ़ अव्वल हमलहमें अपने वतनकी तरफ़ भाग गया. इस वक्त़ सादुल्लाहख़ां और राजा बख़्तसिंह (राठौड़) शामिल नहीं थे."

इस तरहकी ख़्वाहिशोंके होनेपर भी जो क़िला राजा माधवसिंहके बुज़ुर्गोंको नहीं मिला, वह मरहटोंके दबावसे सहजमें इनके क़ब्ज़हमें आगया. जब पेश्वाके मुलाज़िमोंने इस क़िलेको लेना चाहा, तीन साल तक मुक़ाबलह रक्खा; परन्तु शाही मुलाज़िमोंने उनको दख़्ल न दिया; आख़िर फ़ौजकी कमी और नाताक़तीके सबब राजा माधवसिंहको क़िला सुपुर्द करनेके इरादेसे खंडारके क़िलेदार पचेवरके ठाकुर अनूपसिंह खंगारोतको बुलाकर क़िला सुपुर्द करदिया, और वे लोग दिल्ली चलेगये; महाराजाकी फ़ौजने मरहटोंको वहांसे हटा दिया, और खुद महाराजा रणथम्भोर पहुंचे, क़िलेका सामान दुरुस्त करके उसके क़रीब जयपुरके तर्ज़पर एक शहर अपने नामपर आबाद किया, जो माधवपुर मश्हूर है. यह सुनकर पेश्वाने नाराज़गीसे गंगाधर तांतियाको जयपुर वालोंसे क़िला रणथम्भोर छीन लेनेके लिये विक्रमी १८१६ मार्गशीर्ष [हि० ११७३ रबीउस्सानी = ई० १७५९ नोवेम्बर] में भेजा; कंकोड़ गांवके पास महाराजाकी फ़ौजसे मुक़ाबलह हुआ. इस लड़ाईमें ठाकुर जोधसिंह नाथावत चौमूंका और बगरूका ठाकुर गुलाबसिंह चतुरभुजोत, दोनों अच्छी तरह लड़कर मारेगये, और गंगाधर तांतिया ज़ख़्मी होकर भागा; दोनों तरफ़के पांच सौ आदमी काम आये.

दोबारह मल्हार राव हुल्कर ढूंढाड़पर चढ़ा, जिसने पहिले उणियाराके राव सर्दारसिंहको आ दबाया; उसने कुछ भेट देकर नर्मीसे अपना पीछा छुड़ाया. फिर बरवाड़ासे कछवाहोंको निकाल दिया, और राठौड़ जगत्सिंहको बिठाया, जिससे पहिले कछवाहोंने यह ठिकाना छीन लिया था. हुल्करको इस जगह यह ख़बर मिली, कि अह्मदशाह अब्दाली हिन्दुस्तानकी तरफ़ आता है, इससे वह जयपुरकी लड़ाई छोड़कर दिल्लीकी तरफ़ चला; रास्तेमें चाटसू वगैरह कई क़स्बे लूट लिये; महाराजाने सब्र किया; लेकिन् दक्षिणियोंके जाने बाद उणियाराके रावको जा दबाया, इस वज्हसे कि उसने हुल्करसे मिलावट करली थी. मरहटे दूसरी तरफ़ फंस रहे थे, इसलिये राजपूतानहकी तरफ़ ज़ियादह ज़ोर नहीं डाल सके; परन्तु एक दूसरा फ़साद खड़ा हुआ, जिसका हाल इस तरहपर है:-

भरतपुरके महाराजा जवाहिरसिंहके छोटे भाई नाहरसिंहने वहांका राज तक्सीम

करनेके इरादेसे मरहटोंकी मदद लेकर अपने बड़े भाईके साथ मुक़ाबलह किया, परन्तु वह शिकस्त खाकर दक्षिणकी तरफ़ चलागया. कुछ अ़रसह बाद नाहरसिंह, जयपुरके महाराजा माधवसिंहके पास आ रहा, तब उसकी औरत और अस्बाबको जवाहिरसिंहने तलब किया. महाराजा माधवसिंहने उस औरतको (१) जानेके लिये कहा, लेकिन् उसने बिल्कुल इन्कार किया, और ज़ियादह कहागया, तो उसने ज़हर खा लिया. यह बात जयपुर और भरतपुरकी रियासतोंके लिये बारूदमें चिन्गारी होगई.

इसके बाद कामांका पर्गनह, जो जयपुरके राज्यमें था, महाराजा जवाहिरसिंहने दबा लिया. यह बात महाराजा माधवसिंहको नागुवार गुज़री. जवाहिरसिंह, जोधपुरसे इत्तिफ़ाक़ करनेके इरादेसे विक्रमी १८२४ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० ११८१ ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० १७६७ ता० ५ नोवेम्बर] को पुष्कर स्नान करनेको आया, और जोधपुरसे महाराजा विजयसिंह भी आमिले; दोनों पगड़ी बदल भाई बनकर आपसके नफ़ा नुक़्सानमें शरीक होगये. महाराजा विजयसिंहने अपना मोतमद भेजकर महाराजा माधवसिंहको कहलाया, कि आप भी पुष्कर आइये, ताकि एक मत होकर मरहटोंको नर्मदा उतार देवें; आप सूबह मालवा लेलीजिये, गुजरात पर हम क़ब्ज़ह करलेवें, और अन्तरवेदकी तरफ़ जवाहिरसिंह अपनी अ़मल्दारी बढ़ावे. माधवसिंहने ख़याल किया, कि हमको जाट जवाहिरसिंहसे लड़ाई करना है, इस वास्ते महाराजा विजयसिंहको जुदा करना चाहिये, वर्नह दो ताक़तोंका तोड़ना मुश्किल होगा; उन्होंने अपने मोतमदको पुष्कर भेजकर महाराजा विजयसिंहसे कहलाया, कि मैं बीमार हूं, इस सबबसे नहीं आसका; वर्नह आपकी सलाहसे हम जुदे नहीं हैं.

उस एल्चीने जवाहिरसिंहसे लड़ाई न करनेका पक्का इक़्रार करलिया था, तो भी महाराजा विजयसिंहने साथ होकर भरतपुर तक पहुंचानेका इरादह किया; परन्तु जवाहिरसिंहने इन्कार करके कहा, कि "क्या मक़्दूर है जयपुरका, जो हमारे साम्हने आवे!" इसपर भी अजमेर ज़िलाके गांव देवलिया तक खुद विजयसिंह साथ रहा, और महता मनरूप और सिंगवी शिवचन्दको ३००० फ़ौज समेत जवाहिरसिंहके साथ दिया. जयपुरमें महाराजा माधवसिंहने अपने सर्दारोंको एकट्ठा करके कहा, कि मैं "बीमार हूं, इसलिये कामांका पर्गनह छोड़ देना चाहिये, जो जवाहिरसिंहने लेलिया है." तब धूलाके

---

(१) बूंदीके ग्रन्थ वंशभास्करमें लिखा है, कि यह औरत बहुत खूबसूरत थी, जिसको जवाहिरसिंह चाहता था, इसी भयसे उस औरतने इन्कार किया, और आख़िरको ज़हर खाकर मरगई.

ठाकुर दलेलसिंहने कहा, कि जब तक एक भी कछवाहा जीता है, तब तक यह बात हर्गिज़ न होसकेगी. इसी तरह दीवान हरसहाय और बख़्शी गुरसहायने भी जवाब दिया. तब यह विचार हुआ, कि सावर गांवके पास लड़ाई कीजावे, जिसपर ठाकुर दलेलसिंहने जवाब दिया, कि वहां राठौड़ शरीक होजावेंगे, इस वास्ते आगे पहुंचने पर मुक़ाबलह किया जावे; पांच हज़ार फ़ौज उदयपुरकी और तीन हज़ार बूंदीकी तो जयपुर व आंबेरकी हिफ़ाज़तके लिये महाराजाने अपने पास रक्खी, और साठ हज़ारके क़रीब फ़ौज लड़ाईके लिये तय्यार करके रवानह की, जिसमें दीवान हरसहाय व बख़्शी गुरसहाय और ठाकुर दलेलसिंह वग़ैरह मुसाहिब थे. तंवरोंकी जागीरके गांव मांवडाके पास राजपूतोंने जवाहिरसिंहको जा घेरा, और दोनों तरफ़से बड़ी सख़्त लड़ाई हुई. इस लड़ाईमें शिम्रू फ़रंगी जवाहिरसिंहके तोपख़ानहके अफ़्सरने बहुत गोले बरसाये; लेकिन् गोश्तकी दीवारका टूटना मुश्किल होगया; शैख़ावत राजसिंह और भोपालसिंह, जो महाराजा माधवसिंहसे रंजीदह थे, किनारा करगये; परन्तु दूसरे कछवाहोंने बड़ी बहादुरीके साथ लड़ाई की; जाटोंने भी कमी न रक्खी, परन्तु आख़िरकार जवाहिरसिंह भागकर शिम्रूकी मददसे भरतपुर पहुंचा.

जयपुरके सर्दारोंमेंसे दीवान हरसहाय खत्री, बख़्शी गुरसहाय खत्री, धूलाका ठाकुर दलेलसिंह, दलेलसिंहका छोटा बेटा लक्ष्मणसिंह, सांवलदास शैख़ावत, गुमान-सिंह, सीकर राव शिवसिंहका छोटा बेटा बुद्धसिंह, धानूताका ठाकुर शैख़ावत शिवदास, शैख़ावत रघुनाथसिंह, ईंटावाका नाहरसिंह नाथावत वग़ैरह, हज़ारों आदमी काम आये; और दूसरी तरफ़के बहुतसे लोग इसी तरह मारे गये.

जवाहिरसिंहका डेरा, अस्बाब व तोपख़ानह जयपुरकी फ़ौजने लूट लिया. महा-राजा माधवसिंह, जो बीमारीकी हालतमें थे, यह ख़बर सुनकर बहुत खुश हुए; और बूंदीके कुंवर अजीतसिंहको व मेवाड़की फ़ौजको कुछ दिनों मिह्मान रखकर मुहब्बतके साथ रुख़्सत किया; लेकिन् महाराजाकी बीमारी दिन बदिन बढ़ती जाती थी, यहांतक कि वे विक्रमी १८२४ चैत्र कृष्ण २ [हि० ११८१ ता० १६ शव्वाल = ई० १७६८ ता० ४ मार्च] को इस दुन्याको छोड़ गये.

जोधपुरकी तवारीख़में फाल्गुन् शुक्ल १५ और जयपुरकी ख्यातमें कहीं कहीं चैत्र कृष्ण ३ भी लिखी है; परन्तु वंशभास्करमें विक्रमी १८२५ चैत्र शुक्ल १५ [हि० ११८१ ता० १४ ज़िल्क़ाद = ई० १७६८ ता० २ एप्रिल] लिखी है, जिससे एक महीनेका फ़र्क़ मालूम होता है. हमारे विचारसे मिश्रण सूर्यमल्लने फाल्गुन् शुक्ल १५ के एवज़ भ्रमसे चैत्र शुक्ल १५ लिखदिया होगा, और कर्नेल् टॉड व डॉक्टर स्ट्रैटनने अपनी किताबोंमें लिखा है, कि जाटोंकी लड़ाईके चार दिन बाद महाराजा माधवसिंहका देहान्त होगया. यह बात ग़लत मालूम

होती है, क्योंकि महाराजा जवाहिरसिंह कार्तिक शुक्ल १५ को पुष्कर स्नानके लिये गये थे, और इस लड़ाईका होना वंशभास्कर वग़ैरह किताबोंसे हेमन्त ऋतु (सर्द मौसम) में लिखा है, और महाराजा माधवसिंहका देहान्त फाल्गुन् शुक्ल १५ के लगभग हुआ, जिससे लड़ाई पौषमें और देहान्त उसके दो महीने बाद होना पाया जाता है.

यह महाराजा पुष्ट शरीर, हंसमुख, मंझोला क़द, गेहुवां रंग, और मिलनसार थे. वह पोलिटिकल् याने राजनीतिके विषयमें अपने पितासे कम न थे. उनका देहान्त होनेके पांच महीने बाद भरतपुरके महाराजा जवाहिरसिंह भी मरगये, जिससे दोनों तरफ़की दुश्मनी ठंडी हुई. महाराजाके दो कुंवर बड़े पृथ्वीसिंह और छोटे प्रतापसिंह थे.

३३- महाराजा पृथ्वीसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८१९ माघ कृष्ण १४ [हि० १७७६ ता० २८ जमादियुस्सानी = ई० १७६३ ता० ३ जैन्युअरी] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८२४ फाल्गुन् शुक्ल १५ अथवा चैत्र कृष्ण ३ को हुआ. महाराजा सवाई जयसिंहने उदयपुरकी हिमायतको नर्म करनेके मत्लबसे अपने बड़े पुत्र ईश्वरीसिंहकी एक शादी तो महाराणा जगत्सिंहकी कुमारी सौभाग्यकुंवरके साथ और दूसरी सलूंबरके रावत् केसरीसिंहकी कन्यासे की थी, जो कृष्णावतोंका सरगिरोह था; और इसी विचारसे सांगावतोंके सरगिरोह देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहकी बेटीके साथ माधवसिंहकी शादी हुई, जिसके पेटसे दो महाराजकुमार पैदा हुए; उनमेंसे बड़ा पृथ्वीसिंह पांच वर्षकी उम्र वाला जयपुरकी गद्दीपर बैठा. इस राजाके नाबालिग् होनेके सबब ज़नानी ड्योढ़ीका हुक्म तेज़ रहनेसे राज्यमें बद इन्तिज़ामी बढ़ने लगी.

विक्रमी १८२७ [हि० ११८४ = ई० १७७०] में इनका विवाह बीकानेरके महाराजा गजसिंहकी पोतीके साथ हुआ; लिखा है, कि इस विवाहमें दोनों तरफ़से त्याग और सरबराहमें लाखों रुपया ख़र्च हुआ. इसके सिवा और कोई बात इन महाराजाकी लिखने लाइक़ नहीं है. विक्रमी १८३५ (१) वैशाख कृष्ण ३ [हि० ११९२ ता० १७ रबीउलअव्वल = ई० १७७८ ता० १५ एप्रिल] को इनका देहान्त होगया.

३४- महाराजा प्रतापसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८२१ पौष कृष्ण २ [हि० ११७८ ता० १६ जमादियुस्सानी

(१) जयपुरकी तवारीख़में यह संवत् लिखा है, परन्तु चैत्रादि महीनेसे विक्रमी १८३६ लगगया होगा; क्योंकि जयपुरमें श्रावणादिक प्रचलित है.

=ई० १७६४ ता० ९ डिसेम्बर] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८३५ वैशाख कृष्ण ४ [हि० ११९२ ता० १८ रबीउ़लअव्वल = ई० १७७८ ता० १६ एप्रिल] को हुआ. ख्यात वगै़रह पोथियोंमें इन महाराजाका ठीक ठीक हाल नहीं मिलनेके सबब चन्द अंग्रेज़ी किताबोंसे खुलासह करके नीचे लिखाजाता है:-

(जेम्स ग्रँट डफ़्की तवारीख़ जिल्द ३, पृष्ठ १५.)

"ईसवी १७८५ [वि० १८४२ = हि० ११९९] में सेंधियाने कई एक मुसल्मान सर्दारोंकी जागीरें छीन लीं, जिससे कि वे नाराज़ होगये. मुहम्मदबेग हमदानीकी जागीर तो नहीं छीनी थी, लेकिन् उसके दिलमें धोखा था. ईसवी १७८६ [वि० १८४३ = हि० १२००] में बादशाहके नामसे सेंधियाने राजपूतोंपर ख़िराजका दावा क़ाइम किया, और अपनी फ़ौजके साथ जयपुरके पास जाकर साठ लाख रुपया पहिली क़िस्तका मुक़र्रर किया, जिसमेंसे कुछ तो वुसूल करलिया, और बाक़ीके वास्ते कुछ मीआ़द मुक़र्रर करली. जब कि वह मीआ़द पूरी होगई, सेंधियाने रायाजी पटैलको बाक़ी तह्सील करनेके लिये भेजा; लेकिन् राजपूत लोग साम्हना करनेके लिये तय्यार हुए; और उनको यह भी भरोसा था; कि मुहम्मदबेग और दूसरे मुसल्मान सर्दार, जो सेंधियासे नाराज़ थे, मदद देवेंगे; इसलिये उन्होंने रुपया देनेसे इन्कार किया. रायाजी पटैलकी फ़ौजपर हमलह हुआ, और उनको भगा दिया. जो लोग कि दिल्लीमें सेंधियाके बर्ख़िलाफ़ थे, वे इस बग़ावतसे बहुत मज़्बूत हुए; बादशाह भी उनकी पक्षपर हुआ, और कहा, कि मरहटे सर्दार बड़ा उपद्रव मचा रहे हैं; लेकिन् सेंधिया इस बातसे कुछ भी न डरा; उसका ख़ज़ानह भी ख़र्च होगया था, फ़ौजकी तन्ख़्वाह चढ़गई थी, तो भी उसने राजपूतोंसे लड़नेका पक्का इरादह करलिया; और आपा खंडेरावकी फ़ौज व डीबाइनीकी दो पल्टनें अपने साथ करलीं; इनके अलावह फ़ौजके दो गिरोह दिल्लीके उत्तर तरफ़ भेजने पड़े, जिनके अफ़्सर हैबतराव फाल्के, अंबाजी इंगलिया मुक़र्रर कियेगये, कि जाकर सिक्ख लोगोंके हमलहको हटावें."

"ईसवी १७८७ [वि० १८४४ = हि० १२०१] में जयपुर पहुंचनेपर सेंधियाने सुलहकी शर्तें करनेकी कोशिश की, लेकिन् जयपुर वालोंने उनपर कुछ ध्यान न दिया. जोधपुरका राजा और दूसरे भी कई एक राजपूत सर्दार जयपुरके राजा प्रतापसिंहके साथ हो लिये, उनकी फ़ौज बहुत बड़ी थी. सेंधियाकी फ़ौजका बड़ा हिस्सह मरहटोंकी फ़ौजसे जुदे तौरका था, और राजपूतोंने साम्हना रोक देनेके सबब उनको बड़ी मुश्किलमें डाला; मरहटा और मुग़ल दोनों बड़ी तक्लीफ़के सबब

नाराज़ हुए, मुहम्मद बेग हम्दानी और उसके भतीजे इस्माईलबेगने यह मौक़ा सेंधियाको छोड़कर राजपूतोंसे मिलजानेका मुनासिब जाना; सेंधियाने ख़याल किया, कि अगर देर होगी, तो बादशाहकी कुल फ़ौजमें नाराज़गी फैल जायगी, उनको जल्द लड़ाईमें शामिल किया. बड़ी लड़ाई हुई, जिसमें मुहम्मदबेग तोपके गोलेसे मारा गया, उसकी फ़ौज भागनेके क़रीब थी, जब कि इस्माईलबेगने उनको दुरुस्तीके साथ रखकर मरहटा लोगोंको हटा दिया. सेंधिया दोबारह लड़ाई करनेके वास्ते तय्यारी कर रहा था, लेकिन् लड़ाई होजानेके तीन दिन बाद बादशाहकी बिल्कुल पैदल पल्टन, जो क़वाइद सीखी हुई थी, अस्सी तोपोंके साथ इस्माईलबेगकी मददके वास्ते आगई." इसके बाद जॉर्ज टॉमस (मश्हूर जहाज़ फ़रंगी) की इन महाराजासे लड़ाई हुई, जिसका हाल उक्त साहिबके ईसवी १८०५ [वि० १८६२ = हि० १२२०] के छपे हुए सफ़र नामहके पृष्ठ १५१ में इस तरह लिखा है:-

---

ईसवी १७९९ [वि० १८५६ = हि० १२१४] जयपुरपर चढ़ाई.

"इस वक़्के क़रीब लखवाने, जो कि नर्मदाके उत्तरी तरफ़ सेंधियाकी फ़ौजका कमान्डर-इन-चीफ़ था, बामन रावको हुक्म लिखा, कि जयपुरपर चढ़ाई करे. इस बारेमें, जो ख़त लिखा, उसमें पहिले ज़िलोंसे, जो रुपया वुसूल किया गया था, उसकी तादाद लिखकर उसने बामन रावको दी. इस मौक़ेपर भी उतना ही तह्सील करनेके वास्ते लिखा, और यह भी कह दिया, कि रुपयेमें दस आने तो फ़ौजके लोगोंको तक्सीम करदिये जावें; और बाक़ी छः आने उसके ख़ज़ानेमें भेज दिये जावें."

"(पृष्ठ १५२) यह हुक्म पहुंचनेपर बामन रावने टॉमसके नाम इस चढ़ाईमें शामिल होनेके वास्ते ख़त लिखा, लेकिन् उसने पहिले तो इन्कार किया, जो कि दिलसे कुछ दिनोंके लिये जयपुरमें जाना चाहता था. उसको मालूम था, कि ऐसी चढ़ाईमें फ़ौजका ख़र्च चलानेके वास्ते पूरा ख़ज़ानह चाहिये, और उस वक़् उसका हाथ तंग था. उसको यह भी मालूम था, कि जयपुरका राजा लड़ाईके मैदानमें बहुत बड़ा रिसालह ला सक्ता है, जिससे कि रसद मिलनेमें दिक़्क़त वाक़े होगी. और इसके बग़ैर फ़त्ह मिलनेमें शक है. उसने बामनरावको लिखा, कि अगर कामयाबी हासिल भी हुई, तो जयपुरका राजा उनको उतना रुपया नहीं देगा, बल्कि बाला बाला लखवाके साथ कार्रवाई करेगा, जिससे कि उनको मिह्नतका फल न मिलेगा; लेकिन् इन सब बातोंसे बामन रावने अपना इरादह नहीं छोड़ा."

"(पृष्ठ १५३) उस ज़िलेके सर्दारने अपना वकील टॉमसके पास भेजा, और

उसके हमराह यह कहलाया, कि मदद दोगे, तो कुछ रुपया दिया जायेगा, जिसकी कि, टॉमसको बड़ी हाजत थी. उसकी फ़ौजमें उस वक़ चार चार सौ आदमियोंकी तीन पल्टनें, १४ तोपें, ९० सवार, ३०० रुहेले और दो सौ हरियानेके लोग थे, जिनके साथ वह कानूंड मक़ाममें वामनरावसे जा मिला. वामनरावके पास एक पल्टन पैदल, चार तोपें, ९०० सवार और छ:सौ सिपाही भी थे. इस फ़ौजके साथ उन्होंने जयपुरकी तरफ़ कूच किया. देशमें दाख़िल होनेपर राजपूतोंकी फ़ौज, जो ख़िराज तहसील करलेनेके वास्ते रक्खी गई थी, भाग गई; तब ज़िलेके हाकिमोंने टॉमसके कैम्पमें अपने वकील भेजे, जिन्होंने लखवाका मुक़र्रर किया हुआ दो सालका ख़िराज देनेका इक़ार किया."

"(पृष्ठ १५४) यह बात मंजूर कीगई, और फ़ौजने आगे बढ़कर और भी कई हाकिमोंसे वैसाही इक़ार करा लिया. तक़रीबन् एक महीने तक बे रोक टोक दोनों फ़ौजें बढ़ती गईं; लेकिन् इसी दर्मियानमें जयपुरके राजाने अपनी फ़ौज एकट्ठी करली थी; वह चढ़ाई करने वालोंको सज़ा देनेका इरादह करके अपने इलाक़ोंके बचावके वास्ते चला. उसकी फ़ौजमें चालीस हज़ार आदमी थे, जिनको लेकर राजा, टॉमस और वामनरावके बर्ख़िलाफ़ चला, जिनको अभी तक कोई ऐसा मक़ाम नहीं मिला था, जहांसे कि सामान मिल सके; और उनको मालूम हुआ, कि इस बातमें बड़ी ग़लती हुई. वामनरावने देखा, कि ऐसी बड़ी फ़ौजका साम्हना करना ग़ैर मुम्किन् है, और टॉमससे कहा, कि अब अपने ही ऊपर भरोसा रक्खो; क्योंकि दुश्मनकी फ़ौजका शुमार और उनकी दिलेरी देखकर उनसे साम्हना करके फ़त्हयाब होनेकी उम्मेद नहीं है. इस विचारसे टॉमसको सलाह दी, कि पीछे हट चलें; तब (पृष्ठ १५५) टॉमसने वामन रावको जतलाया, कि पहिले तुमने बे समझे जल्दी करदी, और इस मुश्किल मक़ाम तक पहुंचाया, लेकिन् एक बार तो साम्हना ज़रूर करना चाहिये; क्योंकि सिपाह लड़नेको तय्यार हैं; अगर इस मौक़ेपर बग़ैर कुछ कोशिश किये लौट चलें, तो उसके लिये और उसके बाप दादोंके लिये बे इज़्ज़ती होगी, जो कभी दुश्मनके साम्हनेसे नहीं भागे थे; और यह भी कहा, कि अगर इस वक़ पर तुमने मुंह मोड़ा, तो सेंधिया या उसका और कोई सर्दार तुमको नौकर न रक्खेगा."

"इन बातोंसे वामन रावका इरादह लड़नेका होगया. (पृष्ठ १५६) इस इरादहसे फ़त्हपुरकी तरफ़ चले, जहांपर फ़ौजके वास्ते खानेका सामान मिलने की उम्मेद थी; लेकिन् वहांके बाशिन्दे उनके आनेकी ख़बर सुनकर फ़ौजको तक्लीफ़ देनेके वास्ते आस पासके कुओंको बन्द करने लगे थे; और जब टॉमस

पहुंचा, उस वक्त सिर्फ़ एकही कुआ खुला मिला. इस कुएकी बाबत टॉमस और शहरके चार सौ आदमियोंमें, जो उसके बन्द करनेके वास्ते आये थे, झगड़ा हुआ; टॉमसने फ़ौरन् अपने रिसालेको बढ़ाया, पहिले ख़ूब लड़ाई हुई, लेकिन् दुश्मनके दो सर्दार मारे गये, और बाक़ी भाग गये. इस तौरसे कुआ बचगया. उस दिन टॉमसकी फ़ौजने बड़ी मिह्नत की थी, क्योंकि पच्चीस मील तक गहरे रेतमें सफ़र करचुकी थी, जो कहीं कहीं घुटने तक गहरा था; इस लिये टॉमसने फ़ौजको आराम देनेके वास्ते डेरा डालदिया."

"(एष्ठ १५७) मुग़ल लोगोंके साथ एक तातार क़ाइमख़ां हिन्दुस्तानको चला आया था, जब कि उन्होंने पहिली चढ़ाई की, और उस मौक़ेपर अच्छी नौकरी देनेके सबब हरियाना और झूंझनूंकी हुकूमत पाई. कुछ दिनों बाद दिल्लीके मुग़ल बादशाहोंने जुल्म करके उसके घरानेके लोगोंको निकाल दिया, और वे लोग जयपुरके इलाक़हमें जाकर ठहरे. उनके रहनेके लिये महाराजा जयपुरने फ़तहपुर दिया. (एष्ठ १५८) उसी ज़मानहसे क़ाइमख़ांकी औलाद अब तक क़ाइमख़ानीके नामसे मश्हूर है (१). फ़तहपुरके शहरमें लोग बहुत थे, इसलिये टॉमसने ख़ूंरेज़ी बचाने के वास्ते चाहा, कि बाशिन्दे कुछ रुपया देदेवें, लेकिन् वामनरावने इतना ज़ियादह मांगा, कि वे देनेको राज़ी न हुए. उस मरहटेने दस लाख रुपये मांगे, लेकिन् शहर के लोग सिर्फ़ एक लाख देनेको राज़ी थे; क्योंकि उनको शायद यह उम्मेद थी, कि जयपुरके राजासे मदद मिलेगी, जो जल्दीके साथ उस तरफ़ आता था. (एष्ठ १५९) इतनेमें रात पड़गई, और रुपयेके बारेमें कुछ फ़ैसलह न हुआ; लेकिन् चन्द लोग, जिनको टॉमसने इस मत्लबसे शहरमें भेजा था, कि जब तक बाशिन्दोंके ताबे होजानेकी शर्त न होजावे, तब तक शहरकी हिफ़ाज़त करें, उन्होंने बाशिन्दोंको लूटना शुरू करदिया. इस बातसे अफ्सरने और शर्तें बन्द करके उसको छापा मार कर लेलिया. यह काम ख़त्म नहीं होचुका था, कि राजाके पहुंचनेकी ख़बर टॉमसको मिली, और उसने अपने कैम्पको मज्बूत करना मुनासिब समझकर बड़े बड़े कांटेके दरख़्त कटवाकर अपने कैम्पके साम्हने और दोनों बाज़ू पर लगवादिये. पीछे की तरफ़ फ़तहपुरका शहर था. (एष्ठ १६०) ज़ियादह मज्बूतीके वास्ते दरख़्तों की डालियें एक दूसरेमें पैवस्त करदी गईं, और रस्सियोंसे बांध दीगईं, ताकि रिसाला रुकजावे. इसके अलावह डालियोंके दर्मियान बहुतसी रेत डालदी गई, जो कि

---

(१) क़ाइमख़ानियोंकी तवारीख़, जो हमारे पास फ़ार्सी ज़बानमें क़लमी मौजूद है, उसमें राजपूत ख़ानदानसे फ़ीरोज़ शाह तुग़ल्क़के वक़्में इस ख़ानदानका मुसलमान होना लिखा है.

दुश्मनकी तरफ़ थी, खाई नहीं खोदी जासक्ती थी, क्योंकि रेत ऐसी थी, कि खोदने पर फ़ौरन् बन्द होजाती थी; लेकिन् जो तज्वीज़ ऊपर कही गई, उससे टॉमसको बहुत फ़ाइदह पहुंचा, क्योंकि दुश्मनके रिसालेका हमलह रोकनेके अलावह कैम्पकी भी हिफ़ाज़त हुई. उसने आस पासके कुओंके बचावके वास्ते बन्दोबस्त किया, जिनको कि उसने खुदवाकर दुरुस्त करवालिया था. उसने शहरको लेकर अच्छी तरहसे मोर्चा बन्द किया, कैम्पमें बहुतसा सामान मंगवाया, और इतनी तय्यारी हो ही रही थी, कि दुश्मनकी फ़ौजके आगेका हिस्सह (हरावल) नज़र आया."

"(पृष्ठ १६१) आते ही उन्होंने टॉमससे चार कोसकी दूरीपर अपना कैम्प जमाया, और थोड़े दिनों बाद रिसाले और पैदलका एक गिरोह आस पासके कुओंको साफ़ करनेके वास्ते भेजा. दो दिन तक टॉमसने उनको नहीं रोका, लेकिन् तीसरे दिन सुब्हके वक्त वह दो पल्टन पैदल, आठ तोपें और अपने ही रिसालेके साथ उनके तोपख़ानहपर हमलह करनेके इरादहसे चला, और जो सिपाह पीछे रह-गई, उसको हुक्म दिया, कि हरावलपर हमलह करके तित्तर बित्तर करदेवें. कूच करनेके वक्त बामनरावके नाम एक चिट्ठी लिखकर रखगया, कि अपने बचे हुए रिसालेके साथ पीछे आवे, और जो पैदल पल्टन उसके साथ थी, उससे कैम्पकी हिफ़ाज़तका बन्दोबस्त करदेवे. (पृष्ठ १६२) रातके वक्त वह रवानह हुआ था, इसलिये ज़ियादह दूर न चल सका, क्योंकि एक गाड़ी उलट गई थी, जो सुब्हके पहिले सीधी नहीं होसकी, और जब कैम्पके पास पहुंचा, तो दुश्मनको लड़नेके लिये तय्यार पाया. पहिली तज्वीज़ तो उस वक्त नहीं हो सक्ती थी, लेकिन् वह बढ़ता ही गया, और सात हज़ार आदमियोंका गिरोह, जो उसके साम्हने आया, उसपर बड़ी दिलेरीके साथ हमलह किया. दुश्मनोंने अच्छा मुक़ाबलह नहीं किया, और बहुत नुक़्सानके साथ अपने बड़े गिरोहमें जाकर शामिल होगये. जो कुए साफ़ किये गये थे, वे भर दिये गये; और टॉमस घोड़ों और दूसरे चौपायोंको, जो खेतमें छूट गये थे, एकट्ठा करके अपनी फ़ौजके साथ कैम्पको वापस चला गया. रास्तेमें मरहटा लोगोंके रिसालहसे मुलाक़ात हुई, जिन्होंने इस बातसे नाराज़ी ज़ाहिर की, कि ऐसे बड़े मौक़ेपर उनकी सलाह नहीं लीगई; लेकिन् बामनरावने उन लोगोंसे साफ़ साफ़ कह दिया, कि उन्होंने तय्यार होनेमें देर करदी. यही सबब था, कि उनकी उम्मेद पूरी नहीं हुई."

"(पृष्ठ १६३) उस वक्त टॉमसके अफ्सरोंको मरहटा सर्दारने ख़िल्अ़त दिये, और दुश्मनी रोकनेके लिये मरहटा रिसालेके सर्दारोंको भी ख़िल्अ़त मिले, जो कि रज़ामन्दीके साथ नहीं थे. दुश्मनने एक बड़ी भारी लड़ाईके वास्ते तय्यारी की,

दूसरे दिन सुब्हको टॉमसने ख़बर पाई, कि दुश्मनके कैम्पमें बड़ी हल चल मच रही है, और थोड़ी ही देरमें उनके पहुंचनेकी ख़बर आगई. उसको मालूम था, कि मरहटा लोगोंपर भरोसा नहीं रक्खा जा सक्ता, इसलिये अपनी पैदल पल्टनका एक हिस्सह और चार तोपें तीन सेरके गोले वाली कैम्प और फ़ौजकी चंदावल हिफ़ाज़तके लिये छोड़ दीं; बाक़ी दो पल्टनें पैदल, दो सौ रुहेले, दस तोपें और रिसालह लेकर लड़ाईके वास्ते तय्यार हुआ. (एष्ठ १६४) मरहटा लोग दुश्मनकी बड़ी फ़ौज देखकर ना उम्मेद होगये, टॉमसको इस बड़ी लड़ाईमें बग़ैर मदद लड़ना पड़ा, कुछ देरके बाद उसे बड़ी खुशी हुई, कि दुश्मनने अपनी फ़ौज उसी तरह रक्खी, जैसी टॉमस चाहता था. दाहिनी तरफ़का हिस्सह, जिसमें कि बिल्कुल राजपूतोंका रिसालह था, उसके कैम्पपर हमलह करनेके वास्ते मुक़र्रर किया गया; उनको फ़त्हकी इतनी पूरी उम्मेद थी, कि ऊपर बयान किये हुए दरख़्तोंकी आड़को देखकर उन्होंने ख़याल किया, कि यह थोड़ेसे झाड़ हम लोगोंको नहीं रोक सक्ते. बाईं तरफ़ चार हज़ार रुहेले, (एष्ठ १६५) तीन हज़ार गुसाईं, छः हज़ार पैदल, जो कि क़वाइद नहीं सीखे हुए थे, अपने अपने ज़िलोंके अफ़्सरके हमराह एक बारगी बड़ी तेज़ीके साथ ज़ोरसे चिल्लाते हुए शहर लेनेके वास्ते चले. तीसरा गिरोह याने ख़ास गिरोहमें दस पल्टन पैदल, बाईस तोपें और राजाके सिलहपोश (बॉडी गार्ड) थे, जिसमें सोलह सौ आदमी तोड़ेदार बन्दूक़ और तलवार लिये हुए थे, और जिनका अफ़्सर राजा रोड़जी मईदोज़ था. गोकि यह फ़ौज इतनी भारी थी, तो भी टॉमसकी फ़ौजका ऐसा मौक़ा था, कि उससे बहुत फ़ाइदे निकले." (एष्ठ १६६)

"दुश्मनका रिसालह आगे बढ़ा, और मरहटा लोगोंने, जो कि पीछे थे, मदद चाही; टॉमसने चार कम्पनी और दो तोपें भेजदीं, जो कैम्पकी रक्षाके वास्ते रह गई थीं; वह तीन तोपें और पांच कम्पनी पैदल लेकर दुश्मनके रिसालेका हमलह रोकनेके वास्ते चला. उसके ख़ास गिरोहका अफ़्सर जॉन मॉरिस (अंग्रेज़) था. टॉमस एक ऊंचे रेतके टीलेपर था, इस तरहपर दुश्मन दो टुकड़ोंके बीचमें पड़ गये, न उसपर हमलह कर सके, न कैम्पपर, और हटने लगे; लेकिन् यह देखकर, कि टॉमसके पास रिसालह बहुत कम है, अगर्चि सवार उसके पीछे थे, अचानक उनपर हमलह किया, जिससे कि अफ़्सर और कई दिलेर आदमी फ़ौरन् मारे गये; और जब तक दो कम्पनी पैदल सिपाहियोंकी न पहुंचीं, जिन्होंने फ़ायर करनेके बाद संगीनोंसे हमलह किया, दुश्मन नहीं हटे. अगर उनकी फ़ौजके दूसरे हिस्से भी दिलेरी करते, तो फ़त्ह उन्हींकी होती." (एष्ठ १६७)

"जब तक उनका रिसालह पीछे नहीं हटा, तब तक शहर लेनेके वास्ते, जो

गिरोह भेजागया था, दोबारह नहीं बढ़ा; क्योंकि पहिले एक दफ़ा बहुत नुक्सान के साथ पीछे हटाया गया था. शहरके भीतर टॉमसने हरयानेके पैदल सिपाही और सौ रुहेले रखदिये थे, जिन्होंने मज्बूत और ऊंचे मकानोंको मोर्चे बन्द करलिया था, और सिवाय तोपोंके हरएक हमलहसे बच सक्ते थे. यह बात दुश्मनोंको मालूम होगई थी, और उन्होंने छः तोपें शहरकी तरफ़ भेजीं. टॉमसने उनके रिसालेको खेतसे हटते हुए देखकर शहरवालोंकी मददके वास्ते दुश्मनपर फ़ौरन् हमलह किया, जिन को तोपें लेकर भागजाना पड़ा; उनकी बिल्कुल फ़ौज तित्तर बित्तर होगई. उनका यह पक्का इरादह था, कि टॉमसकी फ़ौजके ख़ास गिरोहपर हमलह करें, लेकिन् उनके अफ़्सरने सब सिपाहियोंको राज़ी नहीं पाया. टॉमसने उनको ठहरे हुए देखकर अपनी तोपोंसे ज़ंजीरदार गोले चलवाये, और दुश्मन बहुत नुक्सानके साथ पीछे हटे. (पृष्ठ १६८) टॉमसने उन पल्टनोंको पीछा करनेका हुक्म दिया, जिनको कि पहिले हमलहमें बहुत कम मिह्नत पड़ी थी; लेकिन् तोपख़ानहके बैल एक टीलेके पीछे रहगये थे, वह जल्दी नहीं आसके. इस वक्त मरहटा लोगोंका रिसालह बढ़ आया, और थोड़ी देरमें टॉमसको एक तोपके लिये बैल मिलगये. उसको एक पैदल पल्टनके साथ लेकर वह दुश्मनकी तरफ़ चला; और मरहटा सवार भी अपनी पहिली बेइज़्ज़ती दूर करनेके वास्ते उसके साथ होगये. दुश्मन हर एक तरफ़ भाग रहे थे, टॉमसने दो तोपें लेलेनेका इरादह किया, जिनसे बारह सेरका गोला चल सक्ता था, और जो उसीके पास पड़ी थीं. (पृष्ठ १६९) फ़ौरन् राजपूत सवारोंका एक बड़ा गिरोह हाथमें तलवार लियेहुए तोपोंको बचानेके वास्ते चलाआया, तब मरहटे लोग कम हिम्मतीसे भाग गये. टॉमसने यह देखकर, कि दुश्मन बढ़ रहा है, अपनी फ़ौजको दुरुस्त किया; लेकिन् मरहटा सवार उसके बाईं तरफ़के गिरोहके बीच होकर निकल गये थे, और राजपूत लोग उनका पीछा करते हुए उसके आदमियोंको क़त्ल करने लगे. ”

“इन सिपाहियोंने खूब साम्हना किया, और कई एकने मरते मरते भी दुश्मनके घोड़ोंकी लगाम पकड़ली. मक़ाम बहुत मुश्किल था, सिर्फ़ एक तोप और डेढ़ सौ आदमियोंके साथ वह दिलेरीसे खड़ा रहा. जब दुश्मन चालीस गज़के फ़ासिलेपर आगया, तब तोप और बन्दूक़ोंके फ़ायर ऐसी तेज़ीसे शुरू किये, कि दुश्मनके बहुतसे आदमी फ़ौरन् गिरगये, और दुश्मन आख़िरमें तित्तर बित्तर होगये. (पृष्ठ १७०) मरहटा सवारोंने कैम्पकी रक्षाके वास्ते जल्दी की, लेकिन् टॉमसके हुक्मसे वे नहीं आने पाये, और राजपूतोंके छोटे गिरोहने, जो कि पीछे पीछे चले आये थे, अक्सरको बेरहमीके साथ क़त्ल किया. दुश्मनके पैदल सिपाही, रिसालेका

हमलह देखकर फिर लड़नेके वास्ते तय्यार मालूम होते थे. उनको ऐसा करनेका मौक़ा देनेके लिये टॉमस अपने बचे हुए सिपाहियोंको एकट्ठा करके हमलेका मुन्तज़िर रहा. दिन ख़त्म होनेपर आया, और दुश्मनने पीछे हटना मुनासिब समझा; टॉमस ने बारह सेरके गोले वाली तोपोंको तलाश किया, लेकिन् नहीं मिलीं; तब वह अपनी फ़ौजके साथ कैम्पको वापस गया. (एष्ठ १७१) इस लड़ाईमें टॉमसके तीन सौ आदमियोंका नुक्सान हुआ, जिसमें घायल भी शामिल हैं; मॉरिस भी मारा गया. दुश्मनके दो हज़ारसे ज़ियादह आदमियोंका नुक्सान हुआ, इसके अलावह घोड़े और बहुतसा अस्बाब खेतमें छूटगया."

"(एष्ठ १७२) दूसरे दिन सुब्हको टॉमसने दुश्मनके अफ्सरसे कहा, कि मुर्दोंको दफ़्न करनेके वास्ते, जिन शरूसोंको मुनासिब समझें, भेजदेवें; और घायलोंको लेजानेमें भी हमारी तरफ़से कुछ रोक नहीं है. यह बात कुबूल हुई, और सुलहके वास्ते भी अर्ज़ कीगई. वामनरावने उससे लड़ाईके हरजानहके बदले बहुतसा रुपया मांगा, लेकिन् उस अफ्सरने यह कहकर इन्कार किया, कि जयपुरके राजाने मुझको बग़ैर हुक्म इतना ख़र्च करनेका इख्तियार नहीं दिया है. (एष्ठ १७३) यह जवाब मिलनेपर टॉमसने समझा, कि दुश्मन सिर्फ़ मौक़ा देखरहा है, और वामनरावसे कहा, कि दुश्मनको चलने दो. उसने लड़ाईकी बनिस्बत मुआमलह याने इक़ारनामह बिह्तर ख़याल किया, और इसलिये टॉमसके एतिराज़पर ध्यान न दिया. सुलह नहीं हुई, और दुश्मनने अपनी फ़ौजको एकट्ठा करके अपना पहिला मक़ाम लड़नेके वास्ते मुक़र्रर किया. इतने ही में सेंधियाके पाससे इस मत्लबके काग़ज़ पहुंचे, कि जयपुरकी फ़ौजके साथ दुश्मनी बन्द करदी जावे. इसी मत्लबके ख़त वामनराव के नाम पेरन साहिबके पाससे आये, जो कि थोड़े दिनोंसे जेनरल डिबॉइनकी जगह सेंधियाकी फ़ौजका कमांडर इन्चीफ़ होगया था. दुश्मन अब अपनी ही रज़ामन्दीसे ५०००० रुपया देनेको तय्यार हुआ, लेकिन् वामनरावने बे सोचे विचारे इन्कार कर दिया. इसी अरसेमें बहुतसी फ़ौज जयपुरके कैम्पमें पहुंच गई, और दोनों तरफ़से दूनी तेज़ीके साथ दुश्मनी शुरू हुई."

"(एष्ठ १७४) टॉमसकी फ़ौजको दूरसे चारा लानेके सबब बड़ी तक्लीफ़ हुई, क्योंकि कैम्पसे बीस मील जाना पड़ता था, और रास्तेमें दुश्मनकी फ़ौजके छोटे छोटे गिरोह उनको दिक़ करते थे; और उनकी तक्लीफ़ बढ़ानेके लिये जयपुरकी फ़ौजको पांच हज़ार आदमियोंके साथ बीकानेरके राजाने मदद पहुंचाई. टॉमसके कैम्पमें जो मरहटे थे, वे सब इसी मत्लबके थे, कि बेचारे किसानोंको लूटें, और बर्बाद करें. ऐसे मौक़ेपर पहुंचने, और दिन दिन चारा घटनेसे टॉमस और वामनरावने एक जंगी

कॉन्सिल की, जिसमें दूसरे अफ्सर भी शामिल थे. सबकी यह राय हुई, कि अपने मुल्कको वापस चले जावें. इसी इरादेके मुताबिक़ दूसरे दिन सुब्ह होनेके पहिले ही फ़ौज रवानह होने लगी. इतनेमें दुश्मनकी तमाम फ़ौज हमलहके लिये आगई, जब तक अन्धेरा रहा, तब तक बड़ी ख़राबी रही; लेकिन् दिन निकलनेपर टॉमसने अपने आदमियोंको क़वाइदके साथ जमा करके दुश्मनको बड़े नुक्सानके साथ हटा दिया; फिर भी वे उसके पीछे लगे रहे, और तोपख़ानहके फ़ायर व अग्निबाणसे उसे तंग करते रहे. उसकी कूचकी तेज़ीके सबबसे दुश्मनकी भारी तोपें पीछे रहगईं, सिर्फ़ तोड़ेदार बन्दूक़ और बाणवाले आदमी पीछा करनेके वास्ते रहगये. गर्मी खूब पड़ती थी, सिपाहियोंको पानी बग़ैर बड़ी तक्लीफ़ थी, लेकिन् दुश्मनको भी ऐसी ही तक्लीफ़ होनेके सबब उनकी बन्दिशें पूरी न हो सकीं. लड़ाई सख़्त हो रही थी, थकावट भी बहुत थी. आख़िर बहुत धावा करने बाद टॉमस शामके वक़्त एक गांवमें पहुंचा, जहांपर दो कुए अच्छे पानीके मिले. सिपाह पानीके वास्ते इतनी बे चैन थी, कि आदमी एक दूसरेपर पड़ने लगे, और दो कुएमें गिरगये; एक तो फ़ौरन् बेदम होगया, और दूसरा बड़ी मुश्किलके साथ निकाला गया. इस बातको रोकनेके लिये कुएपर गार्ड रखदिया गया, और रफ़्तह रफ़्तह सबको थोड़ा थोड़ा पानी मिलनेसे तसल्ली हुई."

"(पृष्ठ १७६) दुश्मन अभीतक पीछे पीछे चले आये, और दो कोसके फ़ासिलेपर डेरा जमाया. टॉमसने दूसरे दिन फिर हमलह करनेका इरादह किया, उसको यह मालूम होगया, कि सिपाहियोंकी हिम्मत कुछ कम होगई है, उनका दिल बढ़ानेके लिये खुद पैदल उनके साथ होलिया, और दिनभर रहा. दुश्मन कई दफ़ा हमलह करनेका इरादह करते हुए नज़र आये, इसलिये टॉमसने तोपख़ानहके अफ्सरको हुक्म देदिया, कि पीछेकी तरफ़ बराबर फ़ायर करता रहे. इससे उनकी हिम्मत कुछ कम हुई, और टॉमसकी फ़ौजको आगे बढ़नेका मौक़ा मिला. दूसरे दिन भी वैसी ही तक्लीफ़के साथ, जैसी कि पहिले दिनके सफ़रमें हुई थी, टॉमस एक बड़े क़स्बेके पास पहुंचा, जिसके पास पांच कुओंसे पानीकी इफ़ात पाई. (पृष्ठ १७७) यहांपर दुश्मनने पीछा छोड़ा, और टॉमसने अपनी फ़ौजकी हालतपर ख़याल करनेका मौक़ा पाया. बीमार और घायल लोग हिफ़ाज़तकी जगहमें पहुंचाये गये; और उन्हींके साथ वे लोग भी, जो कि दुश्मनकी तरफ़से पहिली दफ़ा सुलहकी शर्त करनेके वक़्त ज़मानतके तौरसे आये थे, भेजे गये. टॉमसने दुश्मनके मुल्कपर फिर दुश्मनी शुरू की; जब कि उसके आदमियोंने अच्छी तरह आराम लेलिया, जुर्मानह वग़ैरह कई तरहसे अपना ख़र्च चलाने और सिपाहियोंकी पिछली तन्ख़्वाह

चुका देनेके वास्ते काफ़ी रुपया एकट्ठा करलिया. इस वक्तपर जयपुरके राजाने जान लिया, कि इस लूट मारसे दुश्मनको बड़ा नुक़्सान पहुंचेगा, और इसलिये वामनरावके पास एक वकील अपना मुल्क खाली करालेनेकी शर्तें लेकर भेजा, जो मन्जूर कीगई, और कुछ रुपया दिया गया. इस तरहसे दुश्मनी खत्म हुई."

इस लड़ाईमें जो कि बीकानेरके महाराजाने जयपुरकी मददके लिये फ़ौज भेजी थी, इससे टॉमसनने दूसरे वर्ष बीकानेरसे बदला लिया. महाराजा प्रतापसिंहका देहान्त विक्रमी १८६० श्रावण शुक्ल १३ [हि० १२१८ ता० १२ रबीउस्सानी = ई० १८०३ ता० १ ऑगस्ट] को हुआ. इनकी प्रकृति मिलनसार थी, वह हंसमुख, इल्मके बड़े कद्रदान थे, अनेक ग्रन्थ इन्होंने नये बनवाये, जिनमेंसे वैद्यकका अमृतसागर नाम ग्रन्थ, चरक सुश्रुत, वाघ भट्ट, भाव प्रकाश, आत्रेय आदिका खुलासह लेकर बनवाया, जो इस समय भी भरतखंडमें बहुत प्रचलित है. इसी तरह शिक्षा राज्यनीति, गान विद्याकी पुस्तकें बनवाई थीं; अब तक बहुतसे विद्वान लोग उनको प्रीतिके साथ याद करते हैं; परन्तु उनकी उदारता और बहादुरी ऐश व इश्रतमें छिपगई थी.

३५ - महाराजा जगत्सिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८४२ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १२०० ता० २५ जमादियुल अव्वल = ई० १७८६ ता० २५ मार्च] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८६० श्रावण शुक्ल १४ [हि० १२१८ ता० १३ रबीउस्सानी = ई० १८०३ ता० २ ऑगस्ट] को हुआ. यह राजा अय्याशी और बुरी आदतोंसे बदनाम होगये थे, इस वास्ते हम अपनी तरफ़से क़लम उठानेमें किनारह करके ज्वालासहायकी किताब वक़ाये राजपूतानहका बयान नीचे लिखेदेते हैं:-

जिल्द १, पृष्ठ ६४६.

"वह अपने खानदान और ज़मानेमें सबसे ज़ियादह अय्याश और बदचलन रईस हुआ है. अगर उसके वक़्तका हाल बिल्कुल लिखनेके लाइक़ होता, तो उसकी तारीख़की एक अलग जिल्द होती; मगर वह अह्वाल ऐसे ख़राब हैं, कि उनके लिखने में अपना वक़्त ज़ाया करना, और पढ़ने वालोंके दिलोंमें इस किताबके पढ़नेसे नफ़रत पैदा करना है. मुख़्तसर यह है, कि उसके अहदमें दूसरी रियासतोंकी चढ़ाई, शहरों का मुहासरा, मुल्ककी ख़राबी, रअय्यतकी तबाही, बराबर जारी रही. रसकपूर नामी

एक अदना कस्बीने वह फ़रोग़ (मर्तबह) पाया, कि उसके मुक़ाबलहमें उम्दह ख़ानदानकी जोधी, जैसी, राठौड़, व भटियाणी राणियां गर्द होगईं. उसपर यहां तक इनायतें हुईं, कि उसको राज्यके आधे मुल्ककी राणी बनादिया, और राज्यका कुल सामान, बल्कि महाराजा सवाई जयसिंहका कुतुबख़ानह तक आधा उसको बांटदिया; जयमन्दिरका ख़ज़ानह, जिसकी हिफ़ाज़तमें काली खोहके मीने दिलोजानसे लगे रहते थे, मुफ़्त फ़ुज़ूल ख़र्चीमें ज़ाया करदिया; तिजारतमें ख़लल पड़ा, खेती बाड़ी जल्दी मौकूफ़ होगई; एक रोज़ रोड़ाराम दर्ज़ी मुख़्तार हुआ, दूसरे रोज़ कोई बनिया हुआ, तीसरे रोज़ कोई ब्राह्मण मुक़र्रर हुआ, और हर एक बारी बारीसे नाहरगढ़के जेलख़ाने में भेजाजाता था; रसकपूरके नामसे सिक्कह जारी हुआ; वह राजाके साथ हाथीपर सवार होकर निकलती, सर्दारोंको हुक्म था, कि मिस्ल राणियोंके उसका अदब और इज़्ज़त करें. अगर्चि मिश्र शिवनारायण, जो मुसाहिब था, उसको बाईजी याने बेटी व बहिन कहकर बोलता था; मगर चांदसिंह सर्दार दूनीने हर जल्सहमें, जिसमें कि वह कस्बी मौजूद होती, शरीक होनेसे इन्कार किया. इस इल्लतमें उसपर दो लाख रुपया, जो उसकी चार सालकी आमदनी थी, जुर्मानह हुआ. सर्दारान रियासत, राजा और उसकी हुकूमतसे ऐसे तंग थे, कि उन्होंने एक दफ़ा उसको गद्दीसे उतारनेकी कोशिश की, अगर रसकपूरको नाहर गढ़में क़ैद न करदिया जाता, तो यक़ीन है, कि इस तज्वीज़पर ज़रूर अमल करते. आख़िरकार ईसवी १८१८ ता० २१ डिसेम्बर [वि० १८७५ पौष कृष्ण ९ = हि० १२३४ ता० २३ सफ़र] को महाराजा जगत्सिंहका देहान्त होगया."

माल्कम साहिबकी किताब सेन्ट्रल इन्डिया,

जिल्द पहिली, पृष्ठ १९६ से.

"जब जशवन्तराव पंजाबसे वापस आया, तब एक महीने तक जयपुरके मुल्कमें ठहरा. उसकी फ़ौजने खेतोंको बर्बाद किया, और उसने राजा और प्रधानको डराकर अठारह लाख रुपया वुसूल करलिया."

महाराजा जगत्सिंहकी सगाई महाराणा भीमसिंहकी राजकुमारी बाई कृष्णकुमारीके साथ हुई थी, जिससे उस राजकन्याका देह नष्ट किया गया. यह हाल महाराणा अमरसिंह दूसरेके प्रकरणमें मारवाड़की तवारीख़में लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ८६२). बाक़ी यह माजरा महाराणा भीमसिंहके हालमें भी लिखा जायेगा. यहां मुख़्तसर दर्ज करते हैं.

सालकम साहिबकी तवारीख़ जिल्द १, पृष्ठ २६७ से.

"अमीरख़ांकी तवारीख़ जशवन्तरावके हिन्दुस्तानसे वापस आजानेके पहिले उसीके साथ मिली हुई है, लेकिन् पीछे वह अलग होगया, और उस वक्त़ वह जयपुरके राजा जगत्सिंहका नौकर होगया; क्यौंकि जोधपुरके राजाके साथ उदयपुर के राणाकी बेटीकी बाबत, जो लड़ाई होने वाली थी, उसके लिये उसकी मदद चाही. कृष्णकुमारीकी सगाई जोधपुरके राजा भीमसिंहके साथ हुई थी, जिसका देहान्त होगया. उसके मरनेपर मानसिंह, जो दूरका रिश्तह रखता था, गद्दीका मालिक हुआ; लेकिन् दो वर्ष पीछे भीमसिंहके सर्दार सवाईसिंहने उस राजाके एक हक़ीक़ी या ख़याली लड़केकी मददके वास्ते एक मज्बूत गिरोह एकट्ठा करलिया; और अपनी मुराद पूरी करनेके वास्ते एक वसीलह यह निकाला, कि जोधपुर और जयपुरके राजाओंमें बड़ी दुश्मनी पैदा करे. यह जानकर कि मानसिंह उदयपुरकी राजकुमारीसे शादी करनेकी उम्मेद करता है, सवाईसिंहने जयपुरके राजा जगत्सिंहको, जो बड़ा अय्याश था, उससे शादी करनेको उभारा; और जगत्सिंह उस राजकुमारीकी ख़ूबसूरतीका बयान सुनकर इस फ़िक्रमें पड़ा. उदयपुरके राणाकी बेटी विवाहनेके लिये कार्रवाई शुरू कीगई, और शादीका वक्त़ मुक़र्रर होगया, लेकिन् सवाईसिंहने इस बातको रोकनेके लिये कोशिश की, तब जोधपुरके राजाकी तबीअ़त बढ़ी, कि अपने पहिले दावेको मज्बूत करे, और अपने मुख़ालिफ़की ख़्वाहिश पूरी न होने देवे."

"राजपूत क़ौमके जितने राजा थे, सबके दिलमें दुश्मनी हद्द दरजेकी पैदा हुई, और सब तरफ़से मददकी चाह होने लगी. अंग्रेज़ोंकी मुदाख़लत भी चाही गई, लेकिन् सर्कार अंग्रेज़ी राज़ी न हुई. सेंधियाने यह मौक़ा राजपूतोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीका देखकर बापूजी सेंधिया और सिरजीराव घाटकियाको सहारा दिया, कि अपने लुटेरे गिरोहका गुज़र करनेके वास्ते कोशिश करें; और हुल्करने उनको अमीरख़ां और उसके पठानोंका शिकार बनाया, जिसका नतीजह यह हुआ, कि दोनों राज्योंकी पूरी बर्बादी हुई, जयपुरका कमसे कम एक करोड़ बीस लाख रुपया लड़ाईमें ख़र्च हुआ, आख़िरमें वे इज़्ज़ती उठाकर शिकस्त पाई."

"सवाईसिंहने मानसिंहको इस तरह फंसा हुआ देखकर धोंकलसिंहके लिये फिर कोशिश की, जो भीमसिंहका लड़का समझागया था. उस राजाकी सुस्ती देखकर उसने उसको छोड़ दिया, और हर एक सर्दारसे कहा, कि उसको छोड़ देवे. मानसिंह, जो लड़नेके लिये मैदानमें गया था, लाचार होकर थोड़ेसे आदमियोंके साथ भागा; और उसके कैम्पको जगत्सिंह और उसके मददगारोंने लूट लिया. मानसिंहकी

मुसीबतें यहीं ख़त्म नहीं हुईं, जोधपुर तक उसका पीछा कियागया, उसके तमाम मुल्कपर दुश्मनका धावा होगया. धौंकलसिंह राजा बनाया गया, हर एक राठौड़ सर्दारने उसको अपना मालिक माना; झगड़ा ख़त्म हुआ, लेकिन् मानसिंहकी ओर जो थोड़ेसे सिपाही उसके साथ रहे थे, उनकी हिम्मत पस्त नहीं हुई थी. उसने पहिले ही अपने दुश्मनोंको अलग करनेका उद्योग किया था, और बहुत दिनों तक घेरा रहनेके सबब, जो कठिनाई पड़ी, उससे उसकी कोशिशोंको मदद पहुंची. अमीरख़ांने उसकी शर्तें कुबूल कीं, और तन्ख्वाहके न मिलनेके बहानेपर घेरा डालने वाली फ़ौजसे अलग होकर जोधपुर व जयपुरके इलाक़ोंको खूब लूटने लगा. जयपुरकी रियासतके हर एक सर्दारकी ज़मीन उसकी लूट मारसे बर्बाद हुई, और उनकी नाराज़गीसे लाचार होकर जगत्सिंहको उस पठानके सज़ा देनेके लिये फ़ौज का एक गिरोह भेजना पड़ा; वह पहिले टौंककी तरफ़ भाग गया, लेकिन् फ़ौज और तोपोंकी मदद पाकर उसने जयपुरकी फ़ौजपर फिर हमलह किया, और शिकस्त दी."

"इस काम्याबीके बाद, जो बहुत अच्छी हुई, अमीरख़ांके जयपुरमें आनेकी उम्मेद थी, जिसके बाशिन्दे बड़ी हलचलमें पड़गये थे; लेकिन् इस मौक़ेपर यही साबित होगया, कि वह सिर्फ़ लुटेरोंका सर्दार है; वह राजधानीके क़रीब लूट खसोट करके चलागया. जयपुरकी फ़ौजकी शिकस्तका हाल सुनकर घेरा डालने वाली फ़ौजमें इतना डर और ख़राबी फैलगई, कि जगत्सिंहने अपनी राजधानीकी तरफ़ जानेका इरादह किया, और सेंधियाने जो मददगार भेजे थे, उनको बहुतसा रुपया देकर कहा, कि उसको वहां तक हिफ़ाज़तसे पहुंचादेवें. (पृष्ठ २७१) पहिली लड़ाईमें जो तोपें और अस्बाब लूटकर लियागया था, आगे भेजदिया; और थोड़ेसे राठौड़ सर्दार, जो मानसिंहके साथ रहगये थे, उनपर शुब्ह होगया था, इसलिये वह मज्बूर होकर जोधपुरसे चले गये थे. इस वक्तपर उन्होंने अपने राजाकी ख़ैरख्वाहीका सुबूत दिखलाना चाहा, और जो फ़ौज कि उनके मुल्कसे अस्बाब लूटकर लेजाती थी, उसपर हमलह करके उसको शिकस्त दी. चालीस तोपें और बहुतसा अस्बाब वापस लेलिया; और अमीरख़ांसे मेल करके उसके साथ जोधपुरको चलेगये." इन महाराजाका हाल हमने तवारीख़ोंसे चुनकर लिखा है, अपनी तरफ़से बिल्कुल क़लम नहीं उठाया. इनके देहान्तसे थोड़े ही अर्सह पहिले गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे रियासत जयपुरका अह्दनामह हुआ. आख़िरकार विक्रमी १८७५ पौष कृष्ण ९ [हि० १२३४ ता० २३ सफ़र = ई० १८१८ ता० २१ डिसेम्बर] को इन महाराजाका देहान्त होगया.

३६- महाराजा जयसिंह तीसरे.

इनका जन्म विक्रमी १८७६ वैशाख शुक्ल १ [हि० १२३४ ता० ३० जमादियुस्सानी = ई० १८१९ ता० २५ एप्रिल] को हुआ, और जन्म दिनको ही राज्याभिषेक मानना चाहिये; क्योंकि जब महाराजा जगत्सिंहका देहान्त होगया, और कोई औलाद न रही, तब दत्तक रखनेकी फ़िक्र हुई; कुल रियासतके सर्दारान व अहलकाराननें एक मत होकर नर्वरके ख़ारिज रईस मोहनसिंहको गद्दीपर बिठा दिया. इस कामके करनेमें मोहन नाज़िर और डिग्गीका ठाकुर मेघसिंह खंगारोत मुखिया थे; लेकिन् उसी अरसेमें मुखिया लोगोंकी अदावतके कारण विरोध बढ़ गया, एक बड़े गिरोहने एकट्ठा होकर मोहनसिंहकी गद्दी नशीनीसे इन्कार किया, और कहा, कि झलाय, ईसरदा व बरवाड़ा वगैरह हक़दारोंकी मौजूदगीमें नर्वरवालोंको गद्दी नहीं मिल सक्ती. इसी अरसेमें मशहूर हुआ, कि महाराजा जगत्सिंहकी राणी भटियाणीको गर्भ है, इस बातकी तह्क़ीक़ात अच्छी तरह होने बाद ऊपर लिखी हुई तारीख़को महाराजा तीसरे जयसिंह पैदा हुए, और मोहनसिंह माज़ूल किया गया.

महाराजा तीसरे जयसिंहके अह्दमें कोई बात लिखनेके लाइक़ नहीं है, ज़नानी ड्योढ़ीके हुक्मसे मुसाहिब व अहलकार काम करते थे; एक रूपां बडारण, जो महाराजा जगत्सिंहकी लौंडियोंमेंसे थी, ज़नानह हुक्म उसीके ज़रीएसे जारी होता था. यह बडारण आला दरजेकी मुसाहिब गिनीगई, जिसके कई काग़ज़ात हमारे पास मौजूद हैं, जिनकी नक़्लें महाराणा भीमसिंहके हालमें लिखी जावेंगी. विक्रमी १८८५ [हि० १२४३ = ई० १८२८] में जमुहाय माताके दर्शन करनेको महाराजा बाहर लाये गये, और तमाम रिआयाको उनके देखनेसे खुशी हुई. विक्रमी १८८८ माघ कृष्ण १३ [हि० १२४७ ता० २७ शअ़्बान = ई० १८३२ ता० ३१ जेन्युअरी] को लॉर्ड बेन्टिककी मुलाक़ातको यह महाराजा अजमेर आये. यह ज़िक्र तफ्सीलवार महाराणा जवानसिंहके हालमें लिखा जायेगा. इन महाराजाका इन्तिक़ाल विक्रमी १८९१ माघ शुक्ल ८ [हि० १२५० ता० ७ शव्वाल = ई० १८३५ ता० ६ फ़ेब्रुअरी] को हुआ, जिसकी निस्बत खयाल कियाजाता है, कि झूंथाराम प्रधान नमक हरामके ज़ह्र देनेसे हुआ.

३७- महाराजा रामसिंह २.

इनका जन्म विक्रमी १८९० द्वितीय भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२४९ ता० १३ जमादियुल अव्वल = ई० १८३३ ता० २८ सेप्टेम्बर] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८९१ माघ शुक्ल ८ [हि० १२५० ता० ७ शव्वाल = ई० १८३५ ता० ६ फ़ेब्रुअरी]

को हुआ, उस वक़ इनकी उम्र एक वर्ष चार महीने और चौबीस दिनकी थी. इस वक़ सिंघी झूंथाराम रियासतका कारोबार चलाने लगा, और रूपां बडारण, जो पेश्तर माजी भटियाणीकी जान थी, अब माजी चन्द्रावतकी ज़बान बनगई. दो पुश्त तक पर्दा नशीन महाराणियोंकी मुख़्तारी और अहलकार व मुसाहिबोंकी खुद ग़रज़ीसे रियासतमें कई दफ़ा फ़साद व ख़ूंरेज़ियां होगईं, परन्तु ब्रिटिश गवर्मेंएट की हुकूमतके अम्न व आमानसे रियासतपर कोई बड़ा ज़वाल नहीं आया, ताहम कर्ज़दारीकी तरक़ी व बे इन्साफ़ीका बाज़ार गर्म था. इस रियासतमें सर्दारोंकी निस्बत अहलकार लोग ग़ालिब रहे हैं, क्योंकि मुग़लियह बादशाहतके ज़मानहमें यहांके राजा हमेशह काबुल, बंगाला, दक्षिण वगैरह दूरके देशोंमें नौकरीपर रहते थे, और राजधानी का कारोबार सब मुसाहिबोंके इख़्तियारमें था. इसके बाद महाराजा सवाई जयसिंहने मुसल्मानी बादशाहतकी तनज़ुलीके वक़ अपनी अमल्दारीको बढ़ाया, और शैख़ावत, नरूका व राजावत वगैरह बड़े बड़े जागीरदारोंको अपने मातह्त करलिया, जो पहिले खुदमुख़्तार और पीछे मुग़ल बादशाहोंके जुदे मन्सबदार नौकर कहलाते थे. महाराजा सवाई जयसिंहने, जो बड़े पोलिटिकल हालातके जानने वाले थे, इनको नाताक़त करके अपने अहलकारोंके मातह्त करलिया. उनके बाद रामचन्द दीवान, व केशवदास खत्री, हरगोविन्द नाटाणी, हरसहाय व गुरसहाय खत्री वगैरह बड़े ज़बर्दस्त अहलकार हुए, जिनकी ताक़तने जागीरदारोंको कभी सिर न उठाने दिया. इसी सबबसे नाबालिग़ीकी हालतमें भी अहलकारोंने रियासतके कारोबारको अच्छी तरह चलाया, लेकिन् आपसकी ना-इत्तिफ़ाक़ियोंसे इस रियासतका अन्दरूनी हाल बहुत ख़राब था.

जब इन महाराजके पिता जयसिंह ३ का देहान्त हुआ, तो उनकी दग्धक्रिया करके शहरमें वापस आनेपर सिंघी झूंथारामके बर्ख़िलाफ़ शहरके लोगोंने बग़ावत की; लेकिन् झूंथारामने फ़ौजकी ताक़तसे उसको दबाकर अपना रोब जमा लिया. इल्ज़ाम यह लगाया था, कि झूंथाराम और रूपां बडारणने महाराजाको मार डाला. कुछ अर्से बाद वह क़ैद किया गया, और उसी हालतमें विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में चनारगढ़में मरगया. रूपां बडारण भी उसी वक़ क़ैद होकर बाहर भेजी गई थी. इस मुक़द्दमेकी तह्क़ीक़ातके लिये गवर्नर जेनरलके एजेंएट कर्नेल आल्विज़् और उनके असिस्टेंट मिस्टर ब्लैक आये थे. जब रूपां बडारणसे हाल दर्याफ़्त करके पीछे फिरे, तो महलोंके चौकमें बदमआशोंने शोर करदिया, कि यह महाराजाको मारने आये थे. कर्नेल आल्विज़् ज़ख़्मी होकर बमुश्किल रेज़िडेन्सीमें पहुंचे, और असिस्टेंट ब्लैक रास्तहमें मारेगये. इस क़ुसूरमें दीवान अमरचन्दको फांसी दीगई.

एजेएट साहिबकी सलाहसे सामोदका रावल वैरीशाल कुल कामका मुख़्तार बना, जो विक्रमी १८९५ ज्येष्ठ शुक्ल ४ [हि० १२५४ ता० ३ रबीउ़लअव्वल = ई० १८३८ ता० २७ मई] को बीमार होकर मरगया. तब उसका जानशीन रावल शिवसिंह और चौमूंका ठाकुर लक्ष्मणसिंह हुआ, और एक पंचायत भी इन्तिज़ामके लिये मुक़र्रर हुई, जिसमें डिग्गीका ठाकुर मेघसिंह और दूणीका राव जीवनसिंह थे; परन्तु इनसे भी काम दुरुस्त न चलसका; फिर रावल शिवसिंह और लक्ष्मणसिंहका इख़्तियार बढ़ गया. किसीको महाराजाका देखना मुयस्सर नहीं था, वे ज़नानहमें रहते थे.

विक्रमी १८९६ [हि० १२५५ = ई० १८३९] में मेजर थॉर्सबी साहिब जयपुरमें पोलिटिकल एजेएट मुक़र्रर हुए. उन्होंने फ़ौज वगैरहके फ़ुज़ूल ख़र्च तख़्फ़ीफ़ करके इन्तिज़ामके लिये दीवानी और फ़ौज्दारीकी अदालतें क़ाइम कीं. उन्होंने राजकी ज़ेरबारी और कम आमदनीपर ख़याल करके, जो उस वक़्में तीस लाख सालानह तक रह गई थी, अंग्रेज़ी सर्कारमें ख़िराज कम होनेकी रिपोर्ट की; इसपर विक्रमी १८९७ वैशाख कृष्ण ३० [हि० १२५६ ता० २९ सफ़र = ई० १८४० ता० १ मई] से बाक़ी ख़िराजका उन्तालीस लाख रुपया मुआफ़ होकर आगेके लिये आठ लाखके एवज़ चार लाख रुपया सालानह सर्कारी ख़िराज क़ाइम रक्खा गया. इसके बाद सांभरका क़ब्ज़ह राजको सौंपकर शेखावाटी ब्रिगेडका ख़र्च, जो लूट मार दूर करनेके लिये एक फ़ौज क़ाइम हुई थी, सर्कारने अपने ज़िम्मह लिया. माजी व ठाकुर मेघसिंहने अपने इख़्तियार कम होनेसे रंजीदगीके सबब बगावत कराई, लेकिन् हिन्डौन की बाग़ी पल्टन हथियार छीने जाने बाद मौक़ूफ़ कीगई. चन्द रोज़ बाद माजी व मेघसिंहने कालक्का क़िला, जो कि जयपुरसे बीस मील पश्चिमी तरफ़ है, दबालिया. मेजर थॉर्सबी साहिबने राजकी फ़ौजसे और मेजर फ़ॉस्टर साहिबने शेखावाटी ब्रिगेडसे क़िलेका मुहासरह किया, जिसमें तीन सौ आदमी क़त्ल और ज़ख़्मी हुए. आख़िर क़िले वालोंने तंग होकर फ़र्मांबर्दारी इख़्तियार की. फिर फ़सादियोंकी हर एक बग़ावत फ़ौजी ताक़तसे दबादी गई.

विक्रमी १८९७ आषाढ़ शुक्ल २ [हि० १२५६ ता० १ जमादियुलअव्वल = ई० १८४० ता० १ जुलाई] को चन्द मुसाहिबोंने महाराजाको देखकर पहिली नज़्र पेश की, लेकिन् रियासती आम आदमियोंको महाराजाके देखनेकी उम्मेद बनी रही. विक्रमी १८९९ चैत्र शुक्ल १५ [हि० १२५८ ता० १४ रबीउ़लअव्वल = ई० १८४२ ता० २७ मार्च] को महाराजासे सदर्लैंड साहिबकी ख़ानगी मुलाक़ात हुई, जिसमें चन्द मुसाहिब और सर्दार भी शामिल थे. ब्रिटिश अफ़्सर चाहते थे, कि महाराजा बाहर निकलें, लेकिन् माजी और बडारणें उनको अपने क़ाबूसे निकालना नापसन्द करती थीं, और मुसाहिब भी इसीमें अपना

फ़ाइदह जानते थे. रावल शिवसिंह व लक्ष्मणसिंहसे माजी व बडारणोंकी अदावत बढ़ती जाती थी, यहां तक कि इसी संवत्के फाल्गुन् शुक्ल ११ [हि० १२५९ ता० १० सफ़र = ई० १८४३ ता० १० फेब्रुअरी] को कई सौ विलायतियोंने मुसाहिबोंपर हमलह करना चाहा, फ़ौजी ताकृतसे सत्तरह आदमियोंको मारकर बाक़ीको निकाल दिया, और कुछ गिरिफ़्तार भी होगये. इस बग़ावतमें माजी, बडारणों, सर्दारों व अह्लकारोंकी साज़िश सुबूतको पहुंची, मगर झगड़ा बढ़जानेके ख़ौफ़से एजेण्ट साहिबने दो चार छोटे मुखिया आदमियोंको सज़ा देकर मुक़द्दमह ख़त्म किया.

विक्रमी १८९९ माघ [हि० १२५९ मुहर्रम = ई० १८४३ जैन्युअरी] से मेजर लडलो साहिबने मेजर थॉर्सबी साहिबके एवज़ जयपुरका काम संभाला. उनके साम्हने बहुतसी नाक़िस रस्में, सती होना, लौंडी गुलाम बेचना और बहुतसा त्याग देना, जिससे कि राजपूत लड़कियोंको अक्सर मारडालते (१) थे, जुर्म क़रार पाकर मौक़ूफ़ कीगईं. रावल शिवसिंह और उसके भाई लक्ष्मणसिंहने सख़्त कार्रवाईसे सब अह्लकारोंको नाराज़ किया, क्योंकि वह राजका रुपया ख़राब करके अपने रिश्तह-दारोंको बहुतसी जागीरें देने लगे थे. इसलिये एजेण्ट साहिबने लक्ष्मणसिंहको मौक़ूफ़ करके उसकी जागीरपर जानेका हुक्म दिया. मेजर लडलो साहिबने राजकी आमदनीको तरक़्क़ी देकर बहुतसे मुफ़ीद काम जारी किये. शहरके क़रीब सड़क, बाग़, शिफ़ाख़ानह और मद्रसह वग़ैरह तय्यार कराया.

ब्रिटिश गवर्मेण्टकी कोशिशसे महाराजाको ज़नानहसे बाहर निकालकर विक्रमी १९०० वैशाख शुक्ल १३ [हि० १२५९ ता० १२ रबीउस्सानी = ई० १८४३ ता० ११ एप्रिल] को जमुहाय माताके दर्शन करवाये गये, और आम लोगोंने महाराजके दर्शन करके ईश्वरका धन्यवाद किया. महाराजा जब कुछ होश्यार हुए, तब उन्होंने पोशीदह तौरसे हिन्दुस्तानके कई हिस्सोंकी सैर की, और अपनी रियासतके कामोंपर तवज्जुह की.

विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में पंडित शिवदीन, जो आगरा कॉलेज का तालिबइल्म था, महाराजा साहिबका उस्ताद मुक़र्रर हुआ; उसने अपने कामको दुरुस्तीके साथ अंजाम दिया. विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = ई० १८४७] में मेजर लडलो साहिब बड़ी नेकनामीके साथ जयपुरसे गये, और उनकी जगह कप्तान रिकार्ड्स मुक़र्रर हुए. इन्हीं दिनोंमें कर्नेल सदर्लैण्ड साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके चले जानेसे

---

(१) यह तर्जमह दूसरी तवारीख़ोंसे किया गया है. त्यागका देना फ़ुज़ूल ख़र्च लिखते, तो ठीक था. लड़कीका बाप त्याग नहीं देता, त्याग लड़केका बाप देता है. लड़की मारनेकी बुन्याद सगाईके वक्त टीका लेना है, जो लड़कीके बापकी तरफ़से दिया जाता है.

भी अफ्सोस हुआ, जिन्होंने राज जयपुरकी बिह्तरीके लिये बहुत तवज्जुह सर्फ़ की थी.

विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] में कर्नेल लो साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरलने पंचायतकी निगरानी उठाकर महाराजा साहिबको मुल्की इख्तियार मिल-जानेकी रिपोर्ट की, जिसपर लिहाज़ होकर विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में महाराजाको सर्कारकी तरफ़से इख्तियारात 'हासिल होगये, लेकिन् रावल वज़ीरके ज़बर्दस्त क़ाबूसे महाराजा दबेहुए थे. जब कर्नेल सर हेनरी लॉरेन्स, के. सी. बी. एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहसे सब हाल बयान किया, तो साहिबने निहायत मिहर्बानी और तसल्लीसे नेक सलाहके साथ कार्रवाइयां बतलाई. महाराजा साहिबने फ़ोरन् रावलको मौकूफ़ करके ठाकुर लक्ष्मणसिंहको वज़ीर, शिवदीनको हाकिम माल, और एक दूसरे शख़्सको फ़ौज बख़्शी मुक़र्रर किया.

रावल शिवसिंहसे मुसाहबत पंडित शिवदीनको मिली, जो महाराजाका उस्ताद था. महाराजाने अपनी रियासतका इन्तिज़ाम इस ख़ैरख़्वाह पंडितके ज़रीएसे बहुत ही उम्दह किया.

विक्रमी १९२० माघ [हि० १२८० रमज़ान = ई० १८६४ फ़ेब्रुअरी] में महाराजा साहिबने जोधपुर जाकर अपनी दो शादियां कीं; और इसी सालमें अंग्रेज़ी सर्कारसे उनको अव्वल दरजेका तमग़ाय सितारए हिन्द इनायत हुआ. अफ़्सोस है, कि चन्द रोज़ बाद महाराजाका लाइक़ मुसाहिब पंडित शिवदीन मरगया. इसके बाद महाराजा साहिबने एक कॉन्सिल मुक़र्रर की, जिसमें अव्वल मुसाहिब बख़्शी फ़ैज़अलीख़ां रक्खे गये. बख़्शीकी कारगुज़ारीसे महाराजा साहिबकी रज़ामन्दीके सिवा हर एक पोलिटिकल अफ़्सर भी खुश रहा, जिसके सबब एजेन्सीकी कोई रिपोर्ट उसकी तारीफ़ से ख़ाली नहीं होती थी. विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में बख़्शी फ़ैज़अलीख़ांको अंग्रेज़ी सर्कारसे नव्वाब मुम्ताज़ुद्दौलह ख़िताब और तीसरे दरजेका तमग़ाय सितारए हिन्द अता हुआ.

विक्रमी १९२७ आश्विन [हि० १२८७ रजब = ई० १८७० ऑक्टोबर] में लॉर्ड मेओ साहिब (१) वाइसरॉय हिन्द, दौरेके तौर अजमेरको जाते हुए अव्वल बार जयपुरमें दाख़िल हुए, जिनकी ख़ातिरदारी और मिहमानी महाराजा साहिबने उम्दह तौरपर की. दूसरे साल लॉर्ड मेओ साहिबके जज़ीरे ऐण्डमानमें एक क़ैदीके हाथसे मारे जानेके सबब महाराजा साहिबको सख़्त रंज पहुंचा, जिसका शोक बहुत दिनों तक उन्होंने

(१) इनकी यादगारके लिये मेओ हॉस्पिटल और उक्त लॉर्ड साहिबकी क़दे आदम मूर्ति महाराजाने जयपुरमें बनवाई.

किया. थोड़े दिनों बाद महाराजा साहिब खुद बीमार होगये, और उनकी बीनाई (दृष्टि) में फ़र्क़ आगया. इसलिये उन्होंने शिमले जाकर मश्हूर डॉक्टर मेक्नामारासे आंखका इलाज कराया. विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में नव्वाब फ़ैज़अलीख़ांने बीस सालकी नेकनाम नौकरीके बाद राज जयपुरकी विज़ारतसे इस्तिअ्फ़ा दिया. अंग्रेज़ी सर्कारने निहायत क़द्रदानीसे उसको राज कोटेका पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट मुक़र्रर किया, और दूसरे दरजेका तमग़ाय सितारए हिन्द याने के० सी० एस० आइ० इनायत हुआ. महाराजा साहिबने नव्वाबके चलेजाने बाद ठाकुर फ़त्हसिंह राठौड़को मुसाहबतका उह्दह दिया, जिसका काम उसने निहायत मुस्तइदी और दुरुस्तीसे अंजाम दिया.

विक्रमी १९३२ मार्गशीर्ष [हि० १२९२ ज़िल्क़ाद = ई० १८७५ डिसेम्बर] में लॉर्ड नॉर्थब्रुक साहिब गवर्नर जेनरल मुल्क हिन्द, और विक्रमी १९३२ माघ [हि० १२९३ मुहर्रम = ई० १८७६ फ़ेब्रुअरी] में शाहज़ादह साहिब वेल्स वलीअह्द इंग्लिस्तान व हिन्दुस्तान सैरके तौर जयपुरमें तश्रीफ़ लाये. दोनों मौक़ोंपर महाराजा साहिबने निहायत ख़ातिर और मिहमांदारीसे सर्कारी ख़ैरख़्वाहीका सुबूत दिया. इस खुशीकी यादगारमें महाराजा साहिबने मेओ हॉस्पिटल और मेओ साहिबकी बिरंजी (पीतलकी) तस्वीरके सिवा, जो पहिलेसे तय्यार होरहे थे, शाहज़ादह साहिबके नामपर एक मकान 'ऑल्बर्ट हॉल' बनाना तज्वीज़ किया; और उसकी बुन्यादका पत्थर शाहज़ादह साहिबने अपने हाथसे रक्खा. इन दोनोंका हाल मए सफ़ाई व सड़कों वग़ैरहके नीचे लिखा जाता है:-

महकमह पब्लिक वर्क्स (तामीरात).

इस महकमहकी इब्तिदा यानी आरंभ विक्रमी १९१७ [हि० १२७६ = ई० १८६०] में हुई. उस वक़ यह महकमह कर्नेल प्राइस साहिबके मातहत किया गया था. विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में लेफ़्टिनेन्ट कर्नेल एस० एस० जैकब साहिब उस जगहपर नियत हुए, जो इस राज्यके एग्ज़िक्युटिव एन्जिनिअर हैं. विक्रमी १९३७ भाद्रपद [हि० १२९७ शव्वाल = ई० १८८० सेप्टेम्बर] तक इस महकमेका ख़र्च रास्ता, तालाब, मकानात, वग़ैरह बनानेमें ४९००००० लाख रुपया हुआ.

रास्ते- ख़ास अजमेर और आगराकी बड़ी सड़कें बनाई गईं.

तालाब वग़ैरह- विक्रमी १९४२ [हि० १३०२ = ई० १८८५] तक छोटे बड़े १०० के क़रीब बनाये गये हैं, और उनसे बत्तीस हज़ार एकड़ ज़मीन सींची जाती है. बड़ी झीलें- टोरी, कालक, मोरा, खुर, बचरा हैं, जिनका क्षेत्रफल क्रमसे ६ १/२, २ १/२, २, १ ३/४, १ ३/४ वर्ग मील है.

शहरमें आहनी नलोंके द्वारा पानी पहुंचानेका काम विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में शुरू होकर विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में ख़त्म हुआ. इसका ख़र्च ६५८१७० रुपया हुआ, और वार्षिक ख़र्च ४७००० रुपया होता है.

गेसकी रौशनीका कारख़ानह विक्रमी १९३५ [हि० १२९५ = ई० १८७८] में शुरू हुआ, और विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में ख़त्म हुआ. इसका ख़र्च ३१७८२२ रुपया हुआ, जिसके वार्षिक ख़र्चके ३६८६६ रुपये होते हैं.

रामनिवास बाग़- इसका क्षेत्र फल ७६ एकड़ है. इसका काम बिक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] में शुरू हुआ, और अब तक जारी है. इस बाग़का ख़र्च ८१०७१५ रुपये होचुका है.

ऊपर लिखा हुआ हाल जैकब साहिबने विक्रमी १९४६ चैत्र शुक्ल ५ [हि० १३०६ ता० ४ शअ्बान = ई० १८८९ ता० ५ एप्रिल] को जयपुरसे लिखकर भेजा था, उससे और डॉक्टर स्ट्रेटन साहिबकी बनाई हुई " जयपुर आंबेर फ़ेमिली " नाम किताबसे लिया गया है.

दवाख़ानह- जयपुरके राज्यमें मेओ हॉस्पिटलके सिवा नीचे लिखी २४ जगहपर दवाख़ाने हैं:-

१ महल.	२ पुरानी बस्ती.	३ मोती कटरा.	४ क़ैदख़ानह.
५ पागलख़ानह.	६ सांगानेर.	७ हिंडौन.	८ सवाई माधवपुर.
९ झूंभणूं.	१० दौसा.	११ गंगापुर.	१२ चाटसू.
१३ सांभर.	१४ मालपुरा.	१५ लालसोट.	१६ महुवा.
१७ श्री माधवपुर.	१८ बांदी कुई.	१९ खेतड़ी.	२० कोटपुतली.
२१ चीरवा.	२२ सीकर.	२३ उनियारा.	२४ चौमू.

विक्रमी १९४५ [हि० १३०५ = ई० १८८८] की दवाख़ानोंकी रिपोर्ट, जो सर्जन मेजर हॅन्डली साहिबने हमारे पास भेजी है, उससे मालूम होता है, कि इस वर्षमें दवाख़ानोंका कुल ख़र्च ३४५४०-७-३ हुआ; और १५४९२८ मरीज़ोंका इलाज किया गया. मेओ हॉस्पिटल, जो जयपुरमें सबसे बड़ा दवाख़ानह है, उसकी नींव विक्रमी १९२७ कार्तिक कृष्ण ४ [हि० १२८७ ता० १८ रजब = ई० १८७० ता० १४ ऑक्टोबर] को रक्खी गई थी; और विक्रमी १९३५ श्रावण [हि० १२९५ शअ्बान = ई० १८७८ ऑगस्ट] में काम ख़त्म हुआ. इसमें कुल ख़र्च रु० १८४८८३-११-६ हुआ.

ऑल्बर्ट हॉल.

इसकी नींव विक्रमी १९३२ माघ शुक्ल ३ [हि० १२९३ ता० २ मुहर्रम = ई० १८७६ ता० १६ फ़ेब्रुअरी] को मलिकए मुअ़ज़्ज़महके पाटवी बेटे प्रिन्स ऑफ़ वेल्सके हाथसे रखवाई गई थी, और महाराजा रामसिंह दूसरेने उनकी मुलाक़ातकी यादगारके लिये इसका नाम 'ऑल्बर्ट हॉल' रक्खा. यह मकान रामनिवास बाग़में वाक़े है. कर्नेल जैकब साहिबने बहुत उम्दह क़तापर इसको जयपुरके कारीगरोंके हाथसे बनवाया है. यह बड़ा विशाल, सुशोभित, और देशी कारीगरी और इस देशकी पुरानी इमारतोंका नमूना है. इसके नीचले भागमें दो बड़े हॉल हैं, जिनमेंसे एक, जो मीटिंग, व्याख्यान वग़ैरहके लिये अवामके काममें आसके, ख़ाली रक्खा गया है. इनके सिवा नीचे और ऊपर कई बड़े बड़े कमरे व गैलेरी वग़ैरह संग्रह रखनेके लाइक़ बनाये गये हैं. स्तंभ व फ़र्श वग़ैरहमें तरह तरहके रंगके पत्थर काममें लाये गये हैं, फ़र्शपर दिह्लीके जेलख़ानेमें तय्यार कीहुई चटाइयें और जयपुरके क़ैदख़ानेमें बनाई हुई दरियां बिछाई गई हैं. कठहरे वग़ैरह भी देशी पत्थर और लकड़ीके उम्दह बनाये गये हैं. गैसकी रौशनीके वास्ते बड़े बड़े ख़ूबसूरत फ़ानूस ख़ास इस म्युज़िअमके वास्ते तय्यार करवाकर मंगवाये गये हैं. दीवारके ऊपर उम्दह बड़े अक्षरोंमें देशी और अंग्रेज़ी ज़बानोंमें कई नसीहतें लिखी हैं. इनके सिवा हिन्दुस्तान, यूनान, रोम वग़ैरह देशोंके पुराने ज़मानेके चित्रोंकी अस्लके मुताबिक़ बड़ी नक़्लें उम्दह चितारोंके हाथसे बनवाई गई हैं. बादशाह अक्बरने महाभारतका फ़ार्सीमें जो तर्जमह करवाया था, (जिसको रज़्मनामह कहते हैं), उसकी अस्ल प्रतिमें कई विषयोंके चित्र उस वक़्के प्रख्यात, लाल, बसवान, मशकिन और मुकुन्द, चितारोंके हाथके बनाये हुए हैं, जिनमेंसे छः चित्रोंको क़दमें बढ़ाके अस्लके मुताबिक़ बड़े ख़र्चसे यहां तय्यार करवाया गया है. पहिले चित्रमें युधिष्ठिरका द्यूत खेलना है, २ दमयन्तीका स्वयंबर, ३ हनुमानका लंका जलाना, और राक्षसोंका भागना, ४ चंद्रहास और विखियाका लग्न, ५ राजा मोरध्वजका यज्ञ, ६ अनुसालका श्वेत अश्वको लेजाना. ऐसे ही मिश्र, रोम वग़ैरहके चित्रोंमें भी प्राचीन वक़्के धर्म सम्बन्धी और दूसरे चित्र हैं. हॉलकी दोनों बारियोंके शीशोंपर सूर्य और चन्द्रकी मूर्तियां बनाई हैं. आज तक इस मकानका ख़र्च ४८१७३८-१-२ होचुका है, और अभी इसका काम जारी है.

विक्रमी १९३८ भाद्रपद शुक्ल ३ [हि० १२९८ ता० २ शव्वाल = ई० १८८१ ता० २६ ऑगस्ट] को एक दूसरे मकानमें कर्नेल वॉल्टर साहिबने एक म्युज़िअम (संग्रह स्थान) खोला था, और विक्रमी १९४३ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० १३०३ ता० १२ ज़िल्हिज = ई० १८८६ ता० ११ सेप्टेम्बर] तक वह संग्रह वहीं रहा. फिर ऑल्बर्ट हॉल तय्यार

होनेपर पदोंका संग्रह यहां लाया गया, और विक्रमी १९४३ माघ कृष्ण १२ [हि॰ १३०४ ता॰ २६ रबीउस्सानी = ई॰ १८८७ ता॰ २१ फ़ेब्रुअरी] को सर एडवर्ड ब्राडफ़ोर्ड साहिब, उस वक्तके एजेएट गवर्नर जेनरलने इस मकानको खोलनेकी रस्म अदा की.

इस म्युज़िअममें कई तरहके सादे और नक़ाशीके तांबा पीतलके बर्तन, जयपुर, बनारस, मुरादाबाद, लखनऊ, हैदराबाद वग़ैरह शहरोंमें बने हुए एकडे किये हैं; और वे अपने अपने दरजहके मुवाफ़िक़ जगहपर रक्खे गये हैं. लंका, ब्रह्मा, कच्छ और दिह्लीके बने हुए रूपेके बर्तन और दूसरी चीजें भी बहुत हैं. पुराने ज़माने के लड़नेके हथियार और लड़नेके वक्त पहिननेके बक्तर वग़ैरह भी एकडे किये हैं. पुराने ज़मानेके बर्तन और पुराने वक्तसे लेकर मुग़ल बादशाहोंके वक्त तकके सोना चांदी और तांबाके सिक्के, जो आज तक मिले हैं, उनका संग्रह क़ाबिल देखनेके है. पुराने वक्तसे आज तकके ग़रीबसे लेकर राजा तकके पहिननेके सोना, चांदी और पीतल के ज़ेवर भी खूब एकडे किये गये हैं.

पुराने ज़मानेसे आज तक हिन्दुस्तानकी जुदी जुदी बादशाहतोंके वक्तमें हिन्दुस्तानके विभाग किस तरह किये गये थे, और उस वक्तके देशोंके नाम वग़ैरह क्या थे, उसके अलग अलग नक़्शे इस म्युज़िअमके ऑनरेरी सेक्रेटरी सर्जन् मेजर हेन्डली साहिबने बड़े परिश्रमसे तय्यार करके यहां रक्खे हैं.

जयपुरकी बनाई हुई पत्थरकी मूर्तियां और जयपुर, दिह्ली, सिंध, पिशावर, जापान, चीन, जालंधर, मुल्तान, लंका, वग़ैरहके बनाये हुए मिट्टी (चीनी) के बर्तन का संग्रह बहुत बड़ा है. इन बर्तनोंके ऊपर कई तरहके चित्र बनाये गये हैं, किसी किसीपर महाभारत, रामायण वग़ैरहकी कथाओंमें लिखे हुए पुरुषोंके चित्र, किसी पर राशियोंके चित्र वग़ैरह धर्म और विद्या सम्बन्धी चित्र हैं. ब्रह्माकी बनाई हुई पत्थरकी चीज़ें और आगरेका पच्ची कारीका काम और हिन्दुस्तानकी कई जगहकी बनी हुई लकड़ी और हाथी दांतकी नक़ाशीकी चीज़ें, लाहौर और शिमलाकी नुमाइशगाहोंमें जो चीज़ें आई उनके फ़ोटोग्राफ़, जयपुर राजके बड़े बड़े मकानातके फ़ोटोग्राफ़, राजपूतानह और सेन्ट्रल इन्डियाके प्रख्यात मक़ामातके फ़ोटोग्राफ़, कई दूसरे राजाओंके फ़ोटोग्राफ़ वग़ैरहका संग्रह भी बहुत बड़ा है. महाराजा सवाई जयसिंहके बनाये हुए ज्योतिषके यन्त्र साम्राट्, ऋषिवलय, गोलयन्त्र, दिगंशयन्त्र, अयनयन्त्र, यन्त्रराज, नाड़ीवलय वग़ैरह पुराने और उपयोगी पीतलके यन्त्र भी यहां जमा किये हैं. महाराजाने अपने ख़ानगी संग्रहमेंसे ये यन्त्र दिये हैं. चटाई, दरी, ग़ालीचा वग़ैरहके तरह तरहके नमूने और २०० । ३०० वर्षके पुराने कपड़े, जो जयपुर राज्यमें संग्रह करके रक्खे हैं, उनकी अस्लके मुताबिक़ नई नक्लें, हिन्दुस्तानके कई शहरोंके बने हुए ज़र और कलाबत्तूके

नमूने, रेश्मी कपड़ोंके नमूने, कई तरहकी छींटोंके नमूने भी बहुत एकट्ठे किये गये हैं. पूना, कश्मीर, लखनऊ वग़ैरह शहरोंके बने हुए मिट्टीके खिलौने, मूर्तियां तथा कई क़िस्मकी मिट्टी, कई क़िस्मके पत्थर, धूल और पत्थरमें मिली हुई धातुएं, कई तरहके चटानके नमूने और शंख वग़ैरहका संग्रह भी बहुत उम्दह है. जयपुर राज्यमें जितनी ज़ातके लोग बसते हैं, उनके सिर और पघड़ियां मिट्टीकी बनाई हुईं, और दुन्यामें जितने बड़े बड़े हीरे हैं, उनके बराबर उसी रंगके काचके बनाये हुए हीरे, सूक्ष्म दर्शक यन्त्र, जादूका फ़ानूस, फ़ोटोग्राफ़, रसायन शास्त्र, पदार्थ विज्ञान शास्त्रके उपयोगी यन्त्र, डॉक्टरी विद्याके उपयोगी कृत्रिम शरीर विभाग, कई क़िस्मके नाज, दवा वग़ैरहका संग्रह भी बहुत है.

मरे हुए पक्षी और जानवरों को रखने के लिये अब जगह नहीं है, इसवास्ते सिर्फ़ राजपूतानह के पक्षी और जानवरों का संग्रह किया जायेगा.

कुद्रती तवारीख़ पढ़ने वालों के वास्ते बहुत उम्दह संग्रह होरहा है.

कैरो शह्र (क़ाहिरह) के गवर्नर ब्रुक्स बे साहिबने मिश्र देशकी कई पुरानी चीज़ें यहां भेजी हैं, जिनमें एक औरतकी लाश क़रीब ३००० वर्षकी पुरानी, जिसको ममीई कहते हैं, और ज़मीनमेंसे निकली हुई पुराने ज़मानेकी धातुकी मूर्तियां हैं, जिनमें हनुमान वग़ैरह हिन्दुओंके कई देवताओं की शक्लें हैं. इस म्यूज़िअम में कमसे कम १४००० चीज़ें रक्खी गई हैं, और कईएक यहां रखनेके लिये तय्यार हैं; वे भी रखनेका पुख़्तह बन्दोबस्त होनेपर रक्खी जायेंगी. सिवाय ऊपर लिखे मकान ख़र्चके, आज तक रु० ९६३८४- ३- ४ सामान ख़रीदनेमें ख़र्च होचुके हैं.

यह हाल हमने विक्रमी १९४५ फाल्गुन् शुक्ल १४ [हि० १३०६ ता० १३ रजब = ई० १८८९ ता० १६ मार्च] को राव बहादुर ठाकुर गोविन्दसिंहके साथ वहां जाकर खुद देखने बाद, और इस म्यूज़िअमकी तीसरी रिपोर्ट, जो सर्जनमेजर हेन्डली साहिबने हमारे पास भेजी, उससे लिखा है.

अगर्चि राज्य जयपुरके सरिश्तह तालीमका किसी क़द्र बयान जुग्राफ़ियेमें होचुका है, लेकिन् वह तफ्सीलवार और काफ़ी न समझा जाकर यहांपर मुफ़स्सल दर्ज किया जाता है:-

ख़ास राजधानी शहर जयपुरमें सबसे बड़ा मद्रसह 'महाराजा कॉलेज'' नामसे मश्हूर है, जिसकी बुन्याद महाराजा रामसिंह २ के अ़ह्द विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में डाली गई; और इसकी तालीम व तर्बियतका इन्तिज़ाम पंडित शिवदीन, मुन्शी कृष्णस्वरूप व पंडित वंशीधरके सुपुर्द किया गया; लेकिन् क़ाइम होनेके ज़मानहसे विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] तक कॉलेजमें कुछ तरक़्क़ी न होनेके सबब महाराजाने तीन बंगाली कलकत्तेसे बुलाकर कॉलेजमें नियत किये, जिनकी मिह्नत और खुश इन्तिज़ामीसे कॉलेजने बहुत रौनक़ पाई, और

तालिबइल्मोंकी तादाद भी रोज़ बरोज़ बढ़ती गई. अब यह कॉलेज राजपूतानह में सबसे बढ़कर है; इसमें अंग्रेज़ी, संस्कृत, अरबी, फ़ार्सी, उर्दू, और हिन्दीकी तालीम दी जानेके सिवा फ़न् इन्जिनिएरी और सर्वेइंग याने पैमाइश और लेवलिंग याने ज़मीनकी ऊंचाई नीचाईका हाल दर्याफ़्त करना भी सिखाया जाता है. हर साल कई तालिबइल्म एन्ट्रेन्स और फ़र्स्ट आर्ट्सका इम्तिहान देनेके लिये कल्कत्तह युनि-वर्सिटीको जाते हैं, और अक्सर काम्याब होते हैं. चांद पोलका स्कूल इस कॉलेजकी एक शाख़ है, जिसमें फ़ार्सी व हिन्दी पढ़ाई जाती है. शहरमें एक संस्कृत कॉलेज भी है, जो विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में जारी हुआ; उसमें संस्कृत ज़बानकी तालीम बहुत अच्छी होती है, और वहांसे मुस्तइद पंडित तय्यार होकर निकलते हैं.

ठाकुरोंका मद्रसह शुरूमें पंडित शिवदीनके ज़मानेमें इस ग़रज़से क़ाइम किया गया था, कि राज्यके सर्दार व जागीरदारोंके लड़के तहसील इल्म करके लियाक़त हासिल करें. और राज्यकी उम्दह ख़िद्मतोंके लाइक़ हों; लेकिन् तजिबहसे यह पाया गया, कि राजपूत लोगोंका शौक़ इल्मकी तरफ़ नहीं है, बल्कि वे क़दीम दस्तूरोंकी पाबन्दीके ख़यालातसे इल्म व हुनर सीखना अपनी हतकका बाइस समझते हैं; उन का एतिक़ाद यह है, कि पढ़ना लिखना ब्राह्मण और बनियोंका काम है, अमीर लोग इस क़िस्मका काम अपने मातहत अह्लकारोंसे लेसक्ते हैं, तो फिर उनको पढ़ने लिखनेमें कोशिश करना बेफ़ाइदह है; और इसी वजूहसे मद्रसेकी तरक़्क़ी नहीं हुई. अगर्चि मद्रसेको क़ाइम हुए कई साल होचुके थे, लेकिन् विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में देखागया, तो स्कूलमें अह्लकारोंके ८ लड़के और राजपूतोंके सिर्फ़ पांच ही थे; तब दूसरे साल महाराजाने इस अब्तरीको देख कर, जो किसी क़द्र राजपूतोंकी बेपर्वाई और किसी क़द्र अगले उस्तादोंकी ग़फ़लत और बदइन्तिज़ामीसे थी, नया बन्दोबस्त करके, सर्दारोंको अपने लड़कोंके मद्रसे में भेजनेकी ताकीद की; और बाबू संसारचन्द्रसेनको इस मद्रसेका हेड मास्टर बनाया; उस वक़्से दिन ब दिन लड़कोंकी तादाद व इल्ममें तरक़्क़ी होने लगी. विक्रमी १९३१ - ३२ [हि० १२९१ - ९२ = ई० १८७४ - ७५] में तालिब इल्मोंकी तादाद ५६ थी.

ज़नानह मद्रसह भी एक मुद्दतसे मुक़र्रर था, लेकिन् उसकी हालत भी अब्तरी पर थी, विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] तक सिर्फ़ २५ लड़कियां हिन्दीकी इब्तिदाई किताबें पढ़ती थीं. इस हालतको देखकर इसी सालमें महाराजाने मिस्ट्रेस ऑकल्टनको कलकत्तेसे बुलाकर हेड मिस्ट्रेस मुक़र्रर किया, जिसने लड़कियोंको तालीम देनेमें बहुत कुछ कोशिश की, और ज़रदोज़ी व सोज़नीका काम भी सिखलाया.

इस कामकी आमदनीमें, लड़कियोंकी तादाद बढ़जानेके सबब, पांच लड़कियां तनख्वाहपर पढ़ानेके लिये मुक़र्रर कीगईं. विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] से इस मद्रसेकी हेड मिस्ट्रेस, मिस्ट्रेस ज्वायसी हैं, जिनके इन्तिज़ामसे स्कूल की पहिलेके मुवाफ़िक़ ही रौनक़ और तरक्क़ी है. विक्रमी १९३१-३२ [हि० १२९१-९२ = ई० १८७४-७५] में इस मद्रसेकी चन्द शाखें और मुक़र्रर हुईं; एक ट्रेनिंग स्कूल, कि जिसमें लड़कियां इल्म हासिल करके पाठक मुक़र्रर हुआ करें, दूसरा अपर स्कूल, कि उसमें दौलतमन्द लोगोंकी लड़कियां पढ़ा करें. इसी तरह शहरमें १० शाखें मुक़र्रर होकर लड़कियोंकी तादाद विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में एक दम ५६४ को पहुंच गई, जो विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] में सिर्फ़ १६७ थी. उस स्कूलमें सिवाय हिन्दीके फ़ार्सी और उर्दू भी चन्द जमाअ़तोंको पढ़ाई जाती है.

कारीगरीका मद्रसह बनानेकी सलाह महाराजाको विक्रमी १९२१ [हि० १२८० = ई० १८६४] में बमक़ाम कलकत्ता सर चार्ल्स ट्रेविलिअन साहिबने दी थी, और बाद उसके डॉक्टर हंटर साहिब मुतअ़ल्लिक़ मद्रसे कारीगरीने, जो लॉर्ड नेपियर साहिबके साथ हिन्दुस्तानके मुख्तलिफ़ हिस्सोंकी कारीगरी और कारख़ानोंका हाल दर्याफ़्त करनेके लिये आये थे, डॉक्टर वैलिन्टाइनकी ख्वाहिशके मुवाफ़िक़ जयपुरमें जाकर वहांका पत्थर, धातु वगैरह चीजें मुतअ़ल्लिक़ सन्अ़त, कि जिनकी तरक्क़ी कारीगरीके ज़रीएसे बहुत कुछ होसक्ती है, देखकर, महाराजाको दस्तकारीके कामोंकी तरक्क़ीके लिये मुतवज्जिह किया, जिसपर उन्होंने विक्रमी १९२४ ज्येष्ठ [हि० १२८४ सफ़र = ई० १८६७ जून] में कारीगरीका मद्रसह मुक़र्रर किया. कुछ अ़र्से बाद डॉक्टर डिफ़ेबिकने, जो देवलीकी छावनीमें थे, इत्तिफ़ाक़न् जयपुरमें आकर महाराजासे इस कारख़ानेके इन्तिज़ाम की दर्ख्वास्त की, जो मन्ज़ूर होकर उक्त साहिब सुपरिन्टेन्डेएट मुक़र्रर हुए. उसी अ़र्सेमें वह किसी ज़रूरतके सबब छः महीनेकी रुख्सत लेकर गये, और फिर विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] में वापस आकर काम शुरू किया. कारख़ानेमें उस वक्त कोई लाइक़ उस्ताद नहीं था, इसलिये शुरूमें लड़कोंको नक्शह खेंचनेका काम सिखाना शुरू किया. बाद उसके दो कारीगर एक लुहार दूसरा कुम्हार मद्राससे, दो लकड़ीका काम करने वाले सहारनपुरसे, और ज़रदोज़ीका काम सिखाने वाले बनारससे बुलाये गये; संग तराशीका काम जयपुरमें बहुत उम्दह होता है, इसलिये इस कामके उस्ताद शहरमेंसे नौकर रक्खे गये. इन सब कामोंकी तालीम और सिवा उनके क़लमी तस्वीर खेंचनेका काम, फ़ोटोग्राफ़, कांसी पीतलके बर्तन बनाना, और हर क़िस्मका सादा व खुदाईका काम सिखलाना शुरू किया

गया. हरएक काम सीखने वालेको दो माह तक इम्तिहानन् काम करने बाद काम की उन्नत और पहिली जमाअत वालोंको एक रुपया माहवार, और इसी तरह चौथी जमाअतमें दाख़िल होनेपर ४ रुपये माहवार वज़ीफ़ा देना मुक़र्रर किया गया; लेकिन् यह अमल लड़कोंको कारीगरी सीखनेका शौक़ दिलानेके लिये थोड़े ही अरसे तक रहा. इस मद्रसेमें एक कुतुबख़ानह था, जिसमें सिवा संस्कृत किताबोंके, जो पहिलेसे थीं, महाराजाने हर एक इल्म, फ़न, और ज़बानकी ६००० जिल्दें इंग्लिस्तानसे मंगवाकर शौक़ीन लोगोंके पढनेके लिये रखवाई थीं, और हफ़्तेमें दो बार इल्म तिब्बी (वैद्यक) और तबीई (पदार्थ विद्या) पर डॉक्टर वैलिन्टाइन साहिब और जर्रेसक़ील (शिल्प शास्त्र) पर कप्तान जैकब साहिब लेक्चर (व्याख्यान) दिया करते थे, जिसे सुननेके वास्ते शहरके शरीफ़ लोग और मद्रसेके होश्यार तालिब इल्म और खुद महाराजा तश्रीफ़ लाते थे.

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] में मदरासके उस्तादोंकी जगह कई दूसरे उस्ताद दिल्ली, लखनऊ और कानपुरसे बुलाये गये, इस सबबसे कि मदरासके उस्ताद यहांकी बोलीसे वाक़िफ़ नहीं थे, इसलिये लड़कोंको उनका बयान समझमें नहीं आता था. अगर्चि इस कामके शुरू करनेमें कई तरहकी मुश्किलें पेश आईं, मगर डॉक्टर डिफ़ेबिक साहिबने अपनी कोशिश और पैरवीसे कारख़ानेको जारी रखकर थोड़े ही अरसेमें बहुत रौनक़ दी; इन डॉक्टर साहिबको सिर्फ़ यही काम सुपुर्द नहीं था, बल्कि उस ज़मानेकी बनी हुई तमाम मुफ़ीद तामीरातकी तज्वीज़ और नक़्शोंमें उनकी सलाह लीगई थी. स्कूलमें लुहार व खातीका काम, संगतराशी, ख़रांद, जवाहिर ख़राशी, मिट्टीके बर्तन बनाना, जिल्दसाज़ी, केमिस्टरी, लिथोग्राफ़, टाइपोग्राफ़, मुलम्मा साज़ी, फ़ोटोग्राफ़ और ज़रदोज़ी वग़ैरहका काम सिखाया जाता है; और हर फ़नके शागिर्द अपना अपना काम बड़ी सफ़ाईके साथ करते हैं. शागिर्दोंकी तादाद सिवा मुसव्विरोंके विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में ६४ थी, जो डॉक्टर डिफ़ेबिक साहिब सुपरिन्टेन्डेन्ट मद्रसे कारीगरीने विक्रमी १९२७-२८ [हि० १२८७-८८ = ई० १८७०-७१] की रिपोर्टमें दर्जकी है; और विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४ में १०४ तक पहुंची. विक्रमी १९२८ कार्तिक शुक्ल ४ [हि० १२८८ ता० ३ रमज़ान = ई० १८७१ ता० १६ नोवेम्बर] के रेज़ोल्युशन गवर्मेंएट सीगे माल नम्बरी ४९१० के मुवाफ़िक़ डॉक्टर डिफ़ेबिक साहिबका इस मद्रसेसे विक्रमी १९२९ आश्विन कृष्ण ३० [हि० १२८९ ता० २९ रजब = ई० १८७२ ता० १ ऑक्टोबर] को अलहदह होना ज़रूरी ख़याल किया गया. इसी सालके जूनमें महाराजाने मिस्टर स्कोरजी साहिब हेड-मास्टर मद्रसे अकोलाको बुलाया, जो ऑक्टोबरकी ३ तारीख़को जयपुरमें आया; और दो साल

रहकर पूनाको चलागया. अब यह मद्रसह ऐसे लाइक़ शख़्सके बिदून संभाल तनज़्ज़ुलीकी हालतमें है. शुरू ज़मानेमें जैसी तरक़्क़ी शागिर्दोंने की, और कलकत्तेकी नुमाइशगाहमें इन्ऋाम हासिल किये, ये सब हालात डॉक्टर डिफ़ेबिककी सन् १८७०-७१ व १८७१-७२ की रिपोर्टोंको देखनेसे अच्छी तरह मालूम होसक्ते हैं, जो यहांपर ब सबब तवालतके दर्ज नहीं कीगई- (देखो वक़ाये राजपूतानह पहिली जिल्द- पृष्ठ ८४२ से ५१ तक).

विक्रमी १९१८ [हि० १२७८ = .ई० १८६१] में जयपुरमें मेडिकल स्कूल मुक़र्रर हुआ था, जो उस वक़्तसे डॉक्टर बर साहिब एजेन्सी सर्जन के इह्तिमाममें रहा. इस मद्रसेको तोड़ देनेकी बाबत विक्रमी १९२३ [हि० १२८३ = .ई० १८६६] से बह्स होरही थी; डॉक्टर बर साहिबकी रिपोर्ट पर गवर्मेंएट हिन्दुस्तानसे इस बारेमें महाराजाकी राय तलब हुई. उनमें अव्वल बात यह है, कि डॉक्टर साहिबने फ़ी तालिबइल्म ५००, रुपया सालानह ख़र्च लिखा था, जिसपर कर्नेल ईडन साहिबकी तज्वीज़ हुई थी, कि अगर महाराजा चन्द लड़कोंको चाहें, तो कलकत्तेके मेडिकल स्कूलमें भेजा करें, ताकि ख़र्च भी बहुत कम लगे, और फ़ाइदह ज़ियादह हो; इस बातको महाराजाने मन्जूर किया; लेकिन् डॉक्टर एवर्ट साहिब प्रिन्सिपल मेडिकल स्कूलने इस तज्वीज़को नापसन्द किया. आख़िरको विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = .ई० १८६८] में गवर्मेंएटके मन्शाके मुवाफ़िक़ मेडिकल स्कूल तोड़ा जाकर तालिबइल्मोंको आगरे के मेडिकल स्कूलमें भेजा जाना क़रार पाया, और डॉक्टर फ़्लिपर साहिब प्रिन्सिपलके पास विद्यार्थी भेजे गये.

सिवाय ऊपर लिखे मद्रसोंके, जो ख़ास राजधानी शहर जयपुरमें हैं, महाराजाने विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में देहाती स्कूल क़स्बों व गावेंमें मुक़र्रर किये, और विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में ठाकुर गोविन्दसिंह चौमूं वालेने, जो ख़ुद निहायत लईक़ है, चौमूंमें मद्रसह क़ाइम किया. विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = .ई० १८६७] से विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = .ई० १८७५] तक क़स्बों व गावोंमें ४१२ मद्रसे व मक्तब क़ाइम किये गये, जिनमेंसे ३३ तो ख़ास राज्यके ख़र्चसे जारी हैं, और बाक़ी ३७९ को राज्यसे किसी क़द्र मदद दी जाती है. इन कुल मद्रसोंके विद्यार्थियोंकी संख्या विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = .ई० १८७५] में ७९०५ थी. ख़ास शहरके मद्रसों और ज़िलोंके छोटे बड़े स्कूलोंके नक्शे राजपूतानह गज़ेटियरसे यहां दर्ज किये जाते हैं.

सन् १८७४-७५ में कॉलेजों और पाठशालाओंकी आमद व ख़र्च वग़ैरहका नक़्शह

पाठशाला.	मक़ाम.	कब जारी हुआ.	सालके अख़ीर में तालिब इल्मों की तादाद.				औसत रोज़ानह हाज़िरी.	सालके अख़ीरमें हरएक ज़बान पढ़ने वाले तालिब इल्मोंकी तादाद.							आमदनी	ख़र्च.		मीज़ान.	हर एक तालिब इल्मकी तालीम में सालानह औसत ख़र्च.
			हिन्दू.	मुसल्मान.	क्रिश्चियन.	कुल.		अंग्रेज़ी.	फ़ार्सी.	उर्दू.	बंगाली.	अ़रबी.	संस्कृत	हिन्दी.		मामूली.	ग़ैर मामूली		
महाराजा कॉलेज	जयपुर	१८४४	६८४	१३७	४	८२५	५९७	६०२	३३७	२९७	०	६	५	१८४	२९८१२।≠)॥	२२३०५॥≠)॥	१५०६॥)	२९८१२।≠)॥	२८॥)॥२
संस्कृत कॉलेज	ऐज़न	१८४५	२०८	०	०	२०८	१७८	०	०	०	०	०	१५४	५४	७४३०॥≠)	७९८८)	४२॥≠)	७४३०॥≠)	३५॥≠)७
चांदपौल ब्रैंच स्कूल	"	१८४२	६०	१०	०	७०	५६	०	५०	०	०	०	२०	०	२८८॥)	२८८॥)	०	२८८॥)	४॥/)२
राजपूत स्कूल	"	१८६२	५२	४	०	५६	३५	४८	३९	५	०	०	१	१२	५०६८॥≠)	१८१२)	२५७॥≠)	५०६'॥≠)	९०॥)॥
ज़नानह स्कूल	"																		
दस्तकारीका स्कूल	शहर	१८६७	६५	३	०	६८	६०	०	०	०	०	०	०	६८					
मध्य	"	१८७५	१७८	२३	०	२०१	१९३	०	०	३७	७	०	०	२०१					
हथरोल ब्रैंच	हथरोल	१८७४	३०	२	०	२५	२५	०	०	०	०	०	०	२५					
गंगा पौल	गंगापौल	"	१००	१५	०	१००	९८	०	०	१५	०	०	०	१००					
घाट दर्वाज़ा	घाटदर्वाज़ा	१८७५	६५	९	०	७२	६९	०	०	०	०	०	०	७२					
चांदपौल ब्रैंच	चांदपौल	१८७४	४०	५	०	४५	४१	०	०	०	०	०	०	४५		३८०१)	६२३॥≠)॥	४५२५॥≠)॥	८)४
	शहर	१८७५	२३	०	०	२३	२३	२३	०	२३	२३	०	०	२३					
ऊपरका दरजा ⁕	"	१८७४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०					
साप्ताहिक अंग्रेज़ी दरजा*	"	"	०	०	०	६०	०	०	०	०	०	०	०	०					
औरतोंके कामका दरजा	"	"	८	०	०	८	७	०	०	०	०	०	०	८					

⁕ अब बन्द होगया.

* अच्छी शिक्षा दीजाती है.

जयपुरके ज़िलोंकी छोटी पाठशालाओंका नक्शह.

ज़िला व पर्गनह.	फ़ार्सी पाठशालाओंकी तादाद.	हिन्दी पाठशालाओंकी तादाद.	कुल.	तालिब इल्मोंकी कुल तादाद.	कैफ़ियत.
हिंडौन.	१	१	२	९४	
सवाई माधवपुर.	१	१	२	६३	
चाटसू.	१	१	२	५७	
पर्गनह नवाई.	१	०	१	३७	
मलारना.	०	१	१	२३	
मालपुरा.	०	१	१	२५	
द्यौसा.	१	०	१	२९	
वस्वा.	१	०	१	३५	
वैराट.	१	०	१	३२	
प्रयागपुरा.	१	०	१	२९	
तोरावाटी (रामगढ़).	१	१	२	५२	
सांभर.	१	०	१	३०	
श्री माधवपुर.	०	१	१	१८	
कोट वानावड़.	१	०	१	२८	
टोडा रायसिंह.	०	१	१	२९	
क़स्बह सांगानेर.	१	१	२	४३	
क़स्बह आंबेर.	०	१	१	३५	
शैखावाटी.	०	०	०	०	
उदयपुर.	१	०	१	३०	
झूंझणू.	१	०	१	७३	
ठिकानेके गांव.	८	१	९	८२	
मीज़ान.	२२	११	३३	८४४	

मक़ाम.	तादाद मक्तब.	तादाद पाठशाला.	मीज़ान.	तादाद तालिबइ़ल्म.	कैफ़ियत.
सवाई जयपुर	४४	९१	१३५	१३०४	
ज़िला जयपुर	२	३९	४१	७०२	
ज़िला हिंडौन	०	७	७	११३	
सवाई माधवपुर	१	८	९	२०५	
चाटसू	०	८	८	१६७	
मलारना	३	१३	१६	२९९	
धौसा	१	२३	२४	४१९	
बस्वा	१	१५	१६	३०५	
तोरावाटी	२	२९	३१	११३७	
पर्गनह सांभर	०	३	३	८२	
ज़िला गंगापुर	२	१५	१७	३०९	
ज़िला लालसोट	०	६	६	२७३	
टोडा भीम	१	६	७	१३९	
ज़िला शैखावाटी	७	३१	३८	१०७०	
मालपुरा	०	८	८	२७३	
फागी	१	४	५	१३८	
बैराट	०	५	५	७९	
कोटक़ासिम	१	२	३	४७	
मीज़ान	६६	३१३	३७९	७०६१	

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रमें ब्रिटिश गवर्मेण्टने ख़ैरख़्वाहीके एवज़ कोटपूतलीका पर्गनह महाराजाको दिया. महाराजाने शहर जयपुरको बहुत ही आरास्तह किया, सड़कोंकी दुरुस्ती, पानीके नल, गैसकी रौशनी, रामनिवास बाग़की तय्यारी, सरिश्तह तालीमके लिये मद्रसोंकी बुन्याद और लाइब्रेरीकी तरक़्क़ी की. इन कामोंसे शहरको ऐसी रौनक़ दी, कि मानो महाराजा सवाई जयसिंहने दोबारह जन्म लेकर अपनी बाक़ी रही हुई मुरादको पूरा किया. मैंने तीन चार दफ़ा इन महाराजाके पास जानेका मौक़ा पाया, बात चीत करनेमें उनको बड़ा बुद्धिमान और तज्रिबह कार देखा; अल्बत्तह पिछले दिनोंमें बद हज़्मीकी

शिकायत वग़ैरह बीमारियोंसे सुस्त होगये थे; लेकिन् पहिले रियासतका इन्ति
बहुत अच्छा करदिया था, जिससे कोई ख़लल नहीं आया. मैंने उनका रोब हर एक आ
पर ऐसा देखा, कि मानो महाराजा उसके पास खड़े हैं. जयपुरकी रियास
चालाक आदमियोंपर ऐसा रोब जमालेना आसान काम नहीं था. कुल काम व इन्ति
रियासतका एक कॉन्सिलके ज़रीएसे करते थे, जिसकी बुनयाद उन्हींके वक्तमें पड़ी

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] से नव्वाब गवर्नर जेनर
कॉन्सिलमें महाराजा ब तौर मेम्बरके मुक़र्रर हुए, और कई बार कलकत्ते व शि
जाकर इज्लासमें शामिल हुए. विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५]
जब बड़ौदेके गायकवाड़पर सर्कारी रेज़िडेन्टको ज़हर दिलवानेका मुक़द्दमह क़ाइम हु
और एक कमिशन तह्क़ीक़ातको जमा कीगई, तो महाराजा रामसिंह भी उसमें श
रक्खे गये. पंडित शिवदीनके मरने बाद अव्वल नव्वाब फ़ैज़अलीखांको और फिर ठ
फ़तहसिंहको महाराजाने मुसाहिब बनाया था. इन शख़्सोंकी लियाक़त उक्त पं
से ज़ियादह साबित हुई. इनके वक्तमें सांभरकी झीलपर महसूलका सालानह
जानह देने बाद एक इक़ारनामहके साथ अंग्रेज़ी सर्कारका क़ब्ज़ह हुआ. आ
कार विक्रमी १९३७ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२९७ ता० १३ शव्वाल = ई० १८
ता० १७ सेप्टेम्बर] को इन महाराजाका देहान्त होगया. इनके मरनेका अफ़
ब्रिटिश गवर्मेण्ट और हिन्दुस्तानके अक्सर रईसोंको बहुतही हुआ. उनके
सन्तान न रहनेसे ठाकुर ईसरदाके छोटे बेटे क़ाइमसिंहको बुलाकर गद्दीपर बिठाया ग
और उनका नाम दूसरे माधवसिंह रक्खा गया, जो अब जयपुरकी गद्दीपर विद्यमान

३८- महाराजा माधवसिंह- २.

यह विक्रमी १९३७ [हि० १२९७ = ई० १८८०] में गद्दीपर बैठे. शु
कॉन्सिलकी निगरानी एक यूरोपियन अफ़्सरके मुतअल्लिक़ रही, फिर विक्रमी १९
[हि० १३०३ = ई० १८८६] में इनको पूरे इख्तियारात सर्कार अंग्रेज़ीकी तर
मिले. इन महाराजाको विक्रमी १९४५ [हि० १३०६ = ई० १८८८] में कर्नेल
के० एम० वाल्टर साहिब, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहकी मारिफ़त, सर्कार अंग्रेज़
अव्वल दरजहका तमग़ाय सितारए हिन्द याने जी० सी० एस० आइ० इनायत हु

आज कल मुसाहबतका काम बंगाली बाबू कान्तिचन्द्र अंजाम देता है, जिस
सर्कारी तरफ़से ज़ाती तौरपर 'राव बहादुर' का ख़िताब मिला है. इलाक़े और
की कुल कचहरियोंका अपील कॉन्सिलमें होता है.

रियासत जयपुरके ख़ास जागीरदार और ठाकुर.

रियासत जयपुरके मुख्य जागीरी ठिकानोंमें खेतड़ी, सीकर, मनोहरगढ़, मंडावा, नवलगढ़, सूरजगढ़, खंडेला वगैरह शैख़ावत, और उणियारा, लदाना वगैरह नरूका, और टूणी वगैरह गोगावत; चौमूं, सामोद, वगैरह नाथावत; डिग्गी, पचेवर, दूदू वगैरह खंगारोत; अचरोल वगैरह बलभद्रोत; बगरू वगैरह चतुर्भुजोत; झलाय, ईसरदा, बरवाड़ा वगैरह राजावत; और नायला, काणोता, गीजगढ़ वगैरह चांपावत इत्यादि बहुतसे ठिकानेदार हैं, जिनका हाल किसी मौक़ेपर मुफ़स्सल लिखाजायेगा.

जयपुरके ख़ास उमराव और ठाकुर बारह कोटड़ी (गोत्री) कहलाते हैं; और यह नाम जयपुरके राजा पृथ्वीराजने अपने बारह बेटोंमेंसे हर एकको जागीर देकर क़ाइम किया था; दूसरे गोत्रियोंको भी, जो उससे पहिले राजाओंके हाथसे मुक़र्रर कियेगये थे, इनमें शामिल समझते हैं. बारह गोत्रियोंमेंसे तीन तो निर्वंश होगये, बाक़ीके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

जयपुरके बड़े जागीरदारोंका नक़्शह. (१)

नम्बर.	कोटड़ी (गोत्र).	नाम ठिकाना.	ख़ास ठिकाने की जमा.	भाई बेटोंके ठिकाने.	कुल घरानेकी जमा.	कैफ़ियत.
१	पूर्णमलोत	निमेरा	१०००० रु०	१	१०००० रु०	पृथ्वीराज नियत १२ कोटड़ी.
२	भीमपोता	(निर्वंश)	०	०	०	
३	नाथावत	चौमूं	७०००० रु०	१०	२२०००० रु०	
४	पचायणोत	समरा	१७७०० रु०	३	२४७०० रु०	
५	सुल्तानोत	सूरत	२२००० रु०	०	०	
६	खंगारोत	डिग्गी	५०००० रु०	२२	६००००० रु०	
७	राजावत	चन्दलाय	२०००० रु०	१६	११८१३७ रु०	
८	प्रतापजी	(निर्वंश)	०	०	०	
९	बलभद्रोत	अचरोल	२८८५० रु०	२	१३०००० रु०	
१०	शिवदासजी	(निर्वंश)	०	०	०	
११	कल्याणोत	कलवाड़ा	२५००० रु०	१९	२४५००० रु०	
१२	चतुर्भुजोत	बगरू	४०००० रु०	६	१००००० रु०	

(१) यह नक़्शह हमारी दानिस्तमें जैसा चाहिये, नहीं मिलसका, इससे लाचार राजपूतानह गज़ेटियरके मुताबिक़ छाप दिया गया है.

गोगावत	दूनी	७०००० रु०	१३	१६७९०० रु०	
खुमबानी	बांसखो	२१००० रु०	२	२३७८७ रु०	
खूमावत	महार	२७५३८ रु०	६	४०७३८ रु०	
शिवब्रह्मपोता	नीन्दड़	१०००० रु०	३	४९५०० रु०	
बनवीरपोता	बालखोह	१९००० रु०	३	२६५७५ रु०	
नरूका	उणियारा	२००००० रु०	६	३००००० रु०	
बांकावत	लवान	१५००० रु०	४	३४६०० रु०	

खेतड़ी- शैखावत राजा अजीतसिंहका ठिकाना है, जिसमें चार पर्गने खेतड़ी, बीबई, सिंघाणा और झूंझणू हैं. ठिकानेकी आमदनी ३५०००० रुपये सालानह मेंसे ८०००० रुपये रियासत जयपुरको ख़िराजके दिये जाते हैं. सिवाय इसके सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से पर्गनह कोटपुतली, जिसकी सालानह आमदनी क़रीब १००००० एक लाख रुपयेके है, इस राजाकी जागीरमें है, जो राजा अभयसिंहको लॉर्ड लेकने मरहटोंकी लड़ाईमें चम्बलके किनारे सेंधियाकी फ़ौजके मुक़ाबलेमें कर्नेल मॉन्सनको मदद देनेके एवज़ बख़्शा था.

सीकर- एक बड़ा ठिकाना शैखावत राव राजा माधवसिंहका है, जिसकी सालानह आमदनी ४००००० रुपयेकी है, इसमेंसे ४०००० रुपया रियासत जयपुरको सालानह ख़िराजका दिया जाता है.

पाटन- एक छोटा ख़िराज गुज़ार ठिकाना जयपुरके उत्तर कोट पुतली और खेतड़ीके बीच पहाड़ी ज़िले तोरावाटीमें दिल्लीके प्राचीन तंवर राजाओंके ख़ानदानमें है, जो मुसल्मानोंकी अमल्दारीके बाद पाटनमें आजमा, और तोरावाटी सूबहके इर्द गिर्द कई बार हल चल पड़नेपर भी साबित क़दमीसे क़ाइम रहा.

उणियारा-रियासत जयपुरके बड़े जागीरदारोंमेंसे नरूका फ़िर्क़ेके सर्दार गुमानसिंहका ठिकाना रियासतके दक्षिण और ज़रखेज़ हिस्सेमें वाक़े है, जिसकी सालानह आमदनी तक़्रीबन् १७५००० रुपया है; इसमेंसे ४५००० रुपया राज्य जयपुरको दियाजाता है. मौजूद राव राजाकी कम उम्रीके सबब यह ठिकाना कुछ अरसहसे राज्य जयपुरकी निगरानीमें है.

शैखावाटी ज़िलेके बड़े ठिकाने बस्वा, नवलगढ़ और सूरजगढ़ हैं. इन ठिकानोंकी आमदनीका हाल अच्छी तरह मालूम नहीं है, लेकिन् अन्दाज़ेसे मालूम हुआ, कि बस्वाकी आमदनी ७०००० रुपये सालानहसे कम नहीं; और बाक़ी हर एककी ५०००० रुपया है, जिसमेंसे पांचवां हिस्सह रियासत जयपुरको ख़िराजका

दियाजाता है. राज्य जयपुरके बाक़ी कुल छोटे मातहत ठिकाने सिवाय दो एकके खुश और आसूदा हैं, इन्तिज़ाम दुरुस्त और रअ़य्यत खुश हाल है.

एचिसन साहिबकी किताब जिल्द ३, अ़ह्दनामह नम्बर २४.

अ़ह्दनामह जयपुर (या जयनगर) के राजाके साथ, जो सन् १८०३ ई॰ में क़रार पाया.

दोस्ती और एकताका अ़ह्दनामह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कंपनी और महाराजा धिराज राज राजेन्द्र सवाई जगत्सिंह बहादुरके दर्मियान, हिज़ एक्सेलेन्सी जेनरल जिराई लेक, हिन्दुस्तानकी अंग्रेज़ी फ़ौजोंके सिपाह सालारकी मारिफ़त, हिज़ एक्सेलेन्सी मोस्ट नोबल रिचर्ड मारक्किस ऑफ़ वेलेस्ली, नाइट ऑफ़ दी मोस्ट इलस्ट्रिअस ऑर्डर ऑफ़ सेन्ट पेटेरिक, वन ऑफ़ हिज़ ब्रिटेनिक मैजिस्टीज़ मोस्ट ऑनरेबल प्रीवी कॉन्सिल, गवर्नर जेनरल इन् कॉन्सिलके दिये हुए इस्तियारातसे, जो उनको हिन्दुस्तानके तमाम अंग्रेज़ी इलाक़ों और हिन्दुस्तानकी तमाम मौजूदह अंग्रेज़ी फ़ौजोंकी बाबत हासिल हैं, ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कंपनीकी तरफ़से, और महाराजा धिराज राज राजेन्द्र सवाई जगत्सिंह बहादुरके, उनकी ज़ात ख़ास, उनके वारिसों और जानशीनोंकी तरफ़से क़रार पाया.

शर्त पहली- हमेशहके लिये मज्बूत दोस्ती और एकता ऑनरेबल अंग्रेज़ी कंपनी और महाराजाधिराज जगत्सिंह बहादुर और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम हुई.

शर्त दूसरी- चूं कि, दोनों सर्कारोंके दर्मियान दोस्ती क़रार पाई, इसलिये दोस्त और दुश्मन एक सर्कारके, दोस्त और दुश्मन दोनोंके समझे जावेंगे; और इस शर्तकी पाबन्दीका दोनोंको हमेशह लिहाज़ रहेगा.

शर्त तीसरी- ऑनरेबल कंपनी किसी तरहका दख़्ल मुल्की इन्तिज़ाममें, जो अब महाराजा धिराजके क़ब्ज़हमें है, नहीं देगी; और उससे ख़िराज तलब न करेगी.

शर्त चौथी- उस हालतमें, कि ऑनरेबल कंपनीका कोई दुश्मन हमलहका इरादह उस मुल्कपर करे, जो हिन्दुस्तानमें कंपनीके क़ब्ज़हमें है, या थोड़े अ़र्सहसे उनके क़ब्ज़हमें आया है, महाराजाधिराज अपनी कुल फ़ौज कंपनीकी फ़ौजकी मददको भेज देंगे; और आप भी पूरी कोशिश दुश्मनके निकाल देनेमें करके दोस्ती और मुहब्बतमें कोई कमी न रक्खेंगे.

शर्त पांचवीं- जो कि इस अ़ह्दनामहकी दूसरी शर्तके मुवाफ़िक़ ऑनरेबल कंपनी ग़ैर दुश्मनके मुक़ाबिल मुल्की हिफ़ाज़तकी ज़िम्मह्दार होती है, इसलिये महाराजा धिराज इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि अगर कोई तकार उनके और किसी

दूसरी रियासतके दर्मियान पैदा होगी, तो महाराजाधिराज उसकी हक़ीक़त अंग्रेज़ी सर्कारमें बयान करेंगे, ताकि सर्कार उसका वाजिबी फ़ैसलह करनेकी कोशिश करे; और अगर दूसरे फ़रीक़की ज़िद और ज़बर्दस्तीसे वाजिबी फ़ैसलह तै न पावे, तो महाराजा धिराज सर्कार कंपनीसे मददकी दर्ख्वास्त करेंगे. अगर मुआमलह ऊपरके बयानके मुवाफ़िक़ होगा, तो मदद दीजावेगी; और महाराजा धिराज वादह करते हैं, कि जो कुछ ख़र्च इस मददका होगा, उस दस्तूरके बमूजिब, जो और रियासतोंके साथ क़रार पाये हैं, वह अदा करेंगे.

शर्त छठी- महाराजा धिराज इस तह्रीरके ज़रीए्से वादह करते हैं, कि चाहे वह अपनी फ़ौजके पूरे हाकिम हैं, लेकिन् लड़ाईके वक्त या लड़ाईका जब ख़याल हो, वह अंग्रेज़ी फ़ौजके कमानियरकी सलाहके मुवाफ़िक़, जिसके वह साथ होंगे, कार्रवाई करेंगे.

शर्त सातवीं- महाराजा धिराज किसी अंग्रेज़ी या फ़रांसीसी रिआया या यूरपके और किसी बाशिंदहको अपनी नौकरीमें या अपने पास सर्कार कंपनीकी रज़ामन्दीके बग़ैर नहीं रक्खेंगे.

ऊपरका अह्दनामह, जिसमें सात शर्तें दर्ज हैं, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मक़ाम सहिन्द सूबह अक्बराबादमें तारीख़ १२ डिसेम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक़ २६ शअ्बान सन् १२१८ हिज्री और १४ माह पौष संवत् १८६० को हिज़् एक्सेलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक और महाराजा धिराज राज राजेन्द्र सवाई जगत्सिंह बहादुरके मुहर और दस्तख़त होकर मंजूर हुआ.

जब एक अह्दनामह, जिसमें ऊपरकी सात शर्तें दर्ज होंगी, हिज़् एक्सेलेन्सी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलके मुहर और दस्तख़तके साथ महाराजा धिराजको दिया जायगा, तो हिज़् एक्सेलेन्सी जेनरल लेककी मुहर और दस्तख़तका यह अह्दनामह वापस होगा.

* * * * *
* कंपनीकी *
* मुहर. *
* * * * *

(दस्तख़त) वेलेज़्ली.

इस अह्दनामहको गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलने ता० १५ जैन्युअरी, सन् १८०४ ई० को तस्दीक़ किया.

(दस्तख़त) जे० एच० बारलो.
(दस्तख़त) जी० अडनी.

अहदनामह नम्बर २५.

अह्दनामह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराज सवाई जगत्सिंह बहादुर राजा जयपुरके दर्मियान, सर चार्ल्स थिऑफ़िलस मेटकाफ़की मारिफ़त ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से, जिसको हिज़ एक्सेलेन्सी मोस्ट नोबल मार्क्विस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, के० जी० गवर्नर जेनरल वगैरहकी तरफ़से इख़्तियार मिले थे, और ठाकुर रावल बैरीसाल नाथावतकी मारिफ़त, जिसको राज राजेन्द्र श्री महाराजाधिराज सवाई जगत्सिंहकी तरफ़से इख़्तियार मिले थे, तै पाया.

शर्त पहली- हमेशह दोस्ती, एकता और खैरख्वाही ऑनरेबल कम्पनी और महाराजा जगत्सिंह और उनके वारिस व जानशीनोंके दर्मियान काइम रहेगी; और दोस्त व दुश्मन एक सर्कारके दोस्त और दुश्मन दूसरी सर्कारके समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी- अंग्रेज़ी सर्कार वादह करती है, कि वह मुल्क जयपुरकी हिफ़ाज़त करेगी, और उसके दुश्मनोंको ख़ारिज करेगी.

शर्त तीसरी- महाराजा सवाई जगत्सिंह और उनके वारिस व जानशीन अंग्रेज़ी सर्कारकी फ़र्मांबर्दारी करके उसकी बुज़ुर्गीका इक़ार करेंगे, और किसी दूसरे राजा या सर्दारसे सरोकार न रक्खेंगे.

शर्त चौथी- महाराजा और उनके वारिस व जानशीन किसी राजा या सर्दारके साथ अंग्रेज़ी सर्कारकी इत्तिला और मंजूरी बगैर मेल न रक्खेंगे, लेकिन् उनकी दोस्तानह लिखापढ़ी उनके दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

शर्त पांचवीं- महाराजा उनके वारिस व जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, अगर इत्तिफ़ाक़से किसीके साथ कुछ तक्रार होगी, तो वह सर्पंची और फ़ैसलहके लिये अंग्रेज़ी सर्कारके सुपुर्द होगी.

शर्त छठी- हमेशहके वास्ते रियासत जयपुरसे अंग्रेज़ी सर्कारको दिहलीके ख़ज़ानहकी मारिफ़त नीचे लिखे हुए मुवाफ़िक़ ख़िराज दिया जायेगाः-

अव्वल सालमें इस अहदनामहके लिखेजानेकी तारीख़से, मुल्की लूट मार और ख़राबीके सबब, जो मुद्दतसे जयपुरमें रही, ख़िराज मुआफ़.

दूसरे साल चार लाख रुपया सिक्कह दिहली.

तीसरे साल पांच लाख.

चौथे साल छः लाख.

पांचवें साल सात लाख.

छठे साल आठ लाख.

इसके बाद आठ लाख रुपया सालानह सिक्कह दिहली रहेगा, जब तक कि हासिल याने रियासतकी आमदनी चालीस लाख रुपयेसे ज़ियादह न होजावे.

और जब राजकी आमदनी चालीस लाख रुपये सालानहसे ज़ियादह हो जावेगी, तो पांच आना फ़ी रुपया ज़ियादतीका, जो चालीस लाखसे होगी, सिवा आठ लाख रुपये मामूलीके दिया जावेगा.

शर्त सातवीं- रियासत जयपुर अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ तलब किये जानेपर अंग्रेज़ी सर्कारको फ़ौजसे भी मदद देगी.

शर्त आठवीं- महाराजा और उनके वारिस व जानशीन क़दीम दस्तूरके मुवाफ़िक़ अपने मुल्क और मातहतोंके पूरे हाकिम रहेंगे, और ब्रिटिश दीवानी व फ़ौज्दारी वग़ैरहकी हुकूमत इस राजमें दाख़िल न होगी.

शर्त नवीं- जिस सूरतमें कि महाराजा अपनी दिली दोस्ती अंग्रेज़ी सर्कारकी निस्बत ज़ाहिर करेंगे, तो उनके आराम और फ़ाइदहका लिहाज़ और ख़याल रहेगा.

शर्त दसवीं- यह अ़ह्दनामह, जिसमें दस शर्तें हैं, मिस्टर चार्ल्स थिऑफ़िलस मेटकाफ़ और ठाकुर रावल बैरीसाल नाथावतके मुहर और दस्तख़तसे ख़त्म हुआ; और इसकी तस्दीक़ हिज़ एक्सेलेन्सी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल और राज राजेन्द्र श्री महाराजा धिराज सवाई जगत्सिंह बहादुरकी तरफ़से होकर आजकी तारीख़से एक महीनेके अन्दर आपसमें एक दूसरेको दिया जायेगा.

मक़ाम दिहली, ता० २ एप्रिल, सन् १८१८ ई०,

	(दस्तख़त) सी० टी० मेटकाफ़.	मुहर.
गवर्नर जेनरल की छोटी मुहर,	(दस्तख़त) ठाकुर रावल बैरीसाल नाथावत.	मुहर.
	(दस्तख़त) हेस्टिंग्ज़.	

इस अ़ह्दनामहको हिज़ एक्सेलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने कैम्प तुलसीपुर में ता० १५ एप्रिल सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया.

(दस्तख़त) जे० ऐडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

नम्बर २६.

हिन्दी अ़र्ज़ीका तर्जमह तमाम ठाकुरों और नौकरोंकी तरफ़से बाई भटियाणी जी साहिबाके नाम, जो ई० १८१९ ता० १२ मई को लिखी गई, और जिसकी नक़्

राय ज्वालानाथ और दीवान अमीरचन्दकी मारिफ़त जेनरल साहिबके पास भेजी गई थी, उसका मज़्मून यह है:-

बाई साहिबा की ख़िद्मतमें तमाम ठाकुरों और मुतसद्दियोंकी तरफ़से यह अर्ज़ है, कि जबतक महाराजा श्री सवाई जयसिंहजी होश्यार न होंगे, हममेंसे कोई ख़ालिसह की ज़मीन अपने वास्ते न लेगा, और हम सब हमेशह नमक हलालीके साथ राजका काम अंजाम देते रहेंगे.

(दस्तख़त) रावल वैरीसाल.
(द०) किसनसिंह.
(द०) क़ाइमसिंह, बलभद्रोत.
(द०) उदयसिंह, खंगारोत.
(द०) राव चतुर्भुज.
(द०) वैरीसाल, खंगारोत.
(द०) सरूपसिंह, वीरपोता.
(द०) भारतसिंह, चांपावत.
(द०) सलासिंह, पंचावत.
(द०) कृपाराम, वक़ायेनवीस.
(द०) कृपाराम.
(द०) मंगलसिंह, खुमाली.
(द०) सवाईसिंह, कल्याणोत.
(द०) दीवान अमरचन्द.
(द०) कुंभावत महारवाला.
(द०) राय अमृतराम, पल्लीवाल.
(द०) बालमसिंह, राणावत.
(द०) बाघसिंह, चतुर्भुजोत.
(द०) बहादुरसिंह, राजावत.
(द०) लक्ष्मणसिंह, झूंझणूंवाला.
(द०) राजा अभयसिंह, खेतड़ी.
(द०) मानसिंह, खंगारोत.
(द०) बख़्शी श्रीनारायण.
(द०) अमानसिंह, बंचावत.
(द०) शार्दूलसिंह, नरूका.
(द०) लछमण.
(द०) जीतराम, साह.
(द०) बांसखोह वाला.
(द०) राय ज्वालानाथ.
(द०) रावत् सरूपसिंह.
(द०) दीवान नवनिद्धराम.
(द०) साहजी मन्नालाल.
(द०) लालराम धायभाई.
(द०) अर्थराम बुज.

(दस्तख़त) रावल वैरीसाल.

हिन्दी अर्ज़ीका तर्जमह तमाम मुतसद्दियोंकी तरफ़से बाई साहिबाके नाम. ई० १८१९ ता० १२ मई.

बाई साहिबाकी ख़िद्मतमें तमाम मुतसद्दियोंकी तरफ़से अर्ज़ यह है, कि जब तक महाराजा श्री सवाई जयसिंहजी होश्यार होंगे, जो काम हमारे सुपुर्द दर्बारसे हुआ है, और जो हुक्म हमारे नाम सादिर होगा, उसकी तामीलमें हम नीचे लिखी हुई शर्तोंके पाबन्द रहेंगे:-

अव्वल- हम अपने ज़िम्महके कामको ईमान्दारीसे अंजाम देंगे, और किसीसे रिश्वत न लेंगे.

दूसरे- हम हर फ़स्लमें मुरुतारकी मारिफ़त सर्कारमें हिसाब दाख़िल करेंगे.

तीसरे- हम उसके सिवा, जिसने कि उ़दूल हुक्मी की होगी, और किसीसे दंड वुसूल न करेंगे.

चौथे- हम सर्कारी कामकी बाबत आपसमें किसी तरहकी ज़ाहिरी और गुप्त तक़ार न रक्खेंगे.

(दस्तख़त) राय ज्वालानाथ.
(द०) दीवान अमरचन्द.
(द०) कृपाराम.
(द०) लक्ष्मण.
(द०) बौहरा जयनारायण.
(द०) सरूपचन्द, दारोग़ा.
(द०) रावल वैरीसाल.
(द०) दीवान नवनिद्धराम.
(द०) घासीराम.
(द०) बरूशी श्रीनारायण.
(द०) जीवणराम.
(द०) ज्ञानचन्द.
(द०) मुन्शी श्रीलाल.
(द०) मुन्शी देवचन्द.
(द०) शिवजीलाल.
(द०) जीतराम साह.
(द०) बदनचन्द.
(द०) राय अमृतराम.
(द०) कृपा चरबुरा.
(द०) चतुर्भुज.
(द०) सुवागी मन्नालाल.
(द०) अर्हतराम.
(द०) संपतराम.
(द०) रामलाल धायभाई.
(द०) देवराम दारोग़ा.

अह्दनामह नम्बर २७.

जो अह्दनामह सन् १८१८ ई० में ब्रिटिश गवर्मेण्ट और ज़यपुर राज्यके दर्मियान तै हुआ, उसका ततिम्मह.

चूंकि वह क़ौल व क़रार जो उस अह्दनामहकी छठी शर्तमें मुन्दरज हैं, जो ब्रिटिश गवर्मेण्ट और जयपुर राज्यके दर्मियान ता० २ एप्रिल सन् १८१८ ई० को क़रार पाया, और ता० १५ एप्रिल सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया गया, मुज़िर है, इस लिहाज़से ज़ैलकी शर्तोंपर इत्तिफ़ाक़ किया जाता हैः-

शर्त पहिली- उक्त अह्दनामहकी छठी शर्त इस अह्दनामहके रूसे मन्सूख़ की गई है.

शर्त दूसरी- महाराजा जयपुर खुद आप व अपने वारिसों और जानशीनोंके वास्ते ब्रिटिश गवर्मेएटको हमेशह सालियानह ख़िराज चार लाख सर्कारी रुपया देना क़ुबूल करते हैं.

शर्त तीसरी- यह अ़ह्दनामह उस पहिले ज़िक्र किये हुए अ़ह्दनामहका, जो सन् १८१८ .ई० में हुआ, ततिम्मह समझा जावेगा.

यह अ़ह्दनामह कप्तान एडवर्ड रिडले कोलवर्न ब्रेडफ़र्ड, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट जयपुरने अज़ तरफ़ ब्रिटिश गवर्मेएट, और मुम्ताज़ुद्दौलह नव्वाव मुहम्मद फ़ैज़अ़लीख़ां वहादुर, सी० एस० आइ० ने, अज़ तरफ़ राज्य जयपुर, उन कामिल इख़्तियारातके रूसे, जो इस कामके लिये उनको दियेगये थे, ऑगस्ट महीनेकी ता० ३१, सन् १८७१ .ई० को मक़ाम शिमलेपर तै किया.

[मुहर.] (दस्तख़त) .ई० आर० सी० ब्रेडफ़र्ड, कप्तान, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट, जयपुर.

[मुहर.] (दस्तख़त) नव्वाव मुहम्मद फ़ैज़अ़लीख़ां बहादुर.
(फ़ार्सी हुरूफ़में)

[मुहर.] (दस्तख़त) सवाई रामसिंह.

[मुहर.] (दस्तख़त) मेओ.

श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल, हिन्दने ता० ४ सेप्टेम्बर सन् १८७१ .ई० को शिमले मक़ामपर तस्दीक़ किया.

(दस्तख़त) सी० यू० एचिसन्,
सेक्रेटरी गवर्मेएट हिन्द.

अ़ह्दनामह नम्बर २८.

अ़ह्दनामह बावत लेन देन मुज्रिमोंके दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेएट और श्री मान् सवाई रामसिंह महाराजा जयपुर, जी० सी० एस० आइ०, व उनके वारिसों और जानशीनोंके, एक तरफ़से मेजर विलिअम एच० वेनन, पोलिटिकल एजेएट, जयपुरने व इजाज़त लेफ़्टिनेएट कर्नेल विलिअम फ़्रेड्रिक एडन, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इख़्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको राइट ऑनरेब्ल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बैरोनेट, जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ०,

वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिये थे, और दूसरी तरफ़से नव्वाब मुहम्मद फ़ैज़अ़लीख़ां बहादुरने उक्त महाराजा रामसिंहके दिये हुए इख़्तियारोंसे किया.

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़हमें संगीन जुर्म करके जयपुरकी राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो जयपुर की सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगे जानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी- कोई आदमी जयपुरके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम गिरिफ़्तार करके जयपुरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो जयपुरके राज्यकी रअ़य्यत न हो, और जयपुरकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी; और उसके मुक़द्दमहकी तह्क़ीक़ात सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अ़दालतमें कीजायेगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक़्पर जयपुरकी पोलिटिकल निगरानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ ख़ुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो; और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके क़ानूनके मुवाफ़िक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम उस वक़् हो, उसकी गिरिफ़्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुज्रिम क़रार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं- नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेंगेः-

१- ख़ून. २- ख़ून करनेकी कोशिश. ३- वह्शियानह क़त्ल. ४- ठगी. ५- ज़हर देना. ६- ज़िनाबिल्जब्र (ज़बर्दस्ती व्यभिचार). ७- ज़ियादह ज़ख़्मी करना. ८- लड़का बाला चुरा लेजाना. ९- औरतोंका बेचना. १०- डकैती. ११- लूट. १२- सेंध (नक़ब) लगाना. १३- चौपाया चुराना. १४- मकान जलादेना. १५- जालसाज़ी करना. १६- झूठा सिक्कह चलाना. १७- ख़यानते मुज्रिमानह. १८- माल अस्बाब चुरा लेना. १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्ग़लाना.

शर्त छठी- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमोंको गिरिफ़्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह दर्ख़्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पड़ेगा.

शर्त सातवीं-ऊपर लिखा हुआ अ़ह्दनामह उस वक़ तक बर्क़रार रहेगा, जब तक कि अ़ह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे.

शर्त आठवीं-इस अ़ह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अ़ह्दनामहपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अ़ह्दनामहके, जो कि इस अ़ह्दनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

(दस्तख़त (डब्ल्यू० एच० बेनन, पोलिटिकल एजेएट.

दस्तख़त, मुहर व अदला बदली ता० १३ जुलाई सन् १८६८ ई० को जयपुरके महलमें की गई.

(दस्तख़त) सवाई रामसिंह.
(दस्तख़त) जॉन लॉरेन्स.
वाइसरॉय ऐन्ड गवर्नर जेनरल, हिन्द.

इस अ़ह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिमलेपर ता० ७ ऑगस्ट सन् १८६८ ई० को की.

(दस्तख़त) डब्ल्यू० एस० सेटन्कार, सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द.
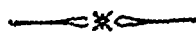
अ़ह्दनामह नम्बर २९.

अज़ तरफ़ श्री मान् महाराजा जयपुर,

व नाम पोलिटिकल एजेएट जयपुर, ता० ५ फ़ेब्रुअरी, सन् १८६८ ई०

जो बातचीत मैंने आपसे रेलवेकी बाबत की थी, दोबारह विचार करनेसे उन शर्तोंको, जिनको मैंने पहिले पेश किया था, अब वापस करनेको मैंने दिलमें ठहराया है; और जो शर्तें गवर्मेएट हिन्दने साबिक़में नम्बर ७२१ ता० २४ मार्च सन् १८६५ ई० में ठहराई थीं, उनपर मैं अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर करता हूं.

अपने इस विचारकी बाबत आपको ज़ाहिर करनेमें सिर्फ़ मुझे यही कहना है, कि मुझे पूरा भरोसा है, कि जब मुझे सर्कारी दस्तन्दाज़ीकी ज़ुरूरत हो, तो सर्कार हर तरह मेरे हुक़ूक़की हिफ़ाज़त करेगी, और झगड़ा पेश आनेपर फ़ैसलह सिर्फ़ इन्साफ़ और क़ानूनके ही उसूलपर ही न करेगी, बल्कि मुल्कके हालात और दस्तूर और रवाज और रअ़य्यतके ख़यालातपर भी लिहाज़ रक्खेगी.

अह्दनामह नम्बर ३०.

अह्दनामह दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ी और श्रीमान् सवाई रामसिंह, जी० सी० एस० आइ० महाराजा जयपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके, जो एक तरफ़ मेजर विलिअम एच० बेनन, पोलिटिकल एजेएट, राज्य जयपुरने व हुक्म लेफ्टिनेएट कर्नेल रिचर्ड हॉर्ट कीटिंग, सी० एस० आइ० और वी० सी०, एजेएट गवर्नर जेनरल, राजपूतानहके, जिनको पूरा इस्तियार श्रीमान् राइट ऑनरेबल रिचर्ड- साउथ वेल बुर्क अर्ल ऑफ़ मेओ, वाइकाउन्ट मेओ, ऑफ़ मोनी क्रोवर, बेरन नास ऑफ़ नास, के० पी०, जी० एम० एस आइ०, पी० सी० वगैरह, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिया था; और दूसरी तरफ़ नव्वाब मुहम्मद फ़ैज़अलीखां बहादुरने, जिसको उक्त महाराजा रामसिंहसे पूरा इस्तियार मिला था, तै किया.

शर्त पहिली - नीचे लिखे हुए अह्दनामहकी शर्तोंके मुताबिक़ जयपुरकी सर्कार सांभर झीलके किनारेकी ज़मीनकी हद्दोंके भीतर (जैसा कि चौथी शर्तमें लिखा है,) नमक बनाने और बेचने और इस हद्दके पैदावार नमकपर मह्सूल लगानेके इस्तियारका पट्टा सर्कार अंग्रेज़ीको करदेगी.

शर्त दूसरी - यह पट्टा उस वक्त तक क़ाइम रहेगा, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी इसको छोड़नेकी ख्वाहिश न करे, इस शर्तपर कि सर्कार अंग्रेज़ी जयपुरकी सर्कारको उस तारीख़से दो वर्ष पहिले इस बन्दोबस्तके ख़त्म करनेका इरादह ज़ाहिर करे, जिसपर पट्टा ख़त्म होना चाहे.

शर्त तीसरी - इस वास्ते कि अंग्रेज़ी सर्कार सांभर झीलपर नमक बनाने और बेचनेका काम करसके, सर्कार जयपुर, सर्कार अंग्रेज़ी और उसके इस कामके लिये मुक़र्रर किये हुए तमाम अफ्सरोंको इस्तियार देगी, कि वह शुब्हेकी हालतमें नीचे लिखी हुई हद्दके भीतरवाले मकान और दूसरी जगह, जो खुली या बन्द हो, उसके भीतर जावें; और तलाशी लेवें; और अगर उस हद्दके भीतर जो कोई एक या कई शख़्स ख़िलाफ़ उन क़ाइदोंके जो उस हद्दके भीतर नमक बनाने, बेचने, हटाने वगैरह लाइसेन्सके बनाने व बे ज़ाबितह लानेकी मनाईके बाबत सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करे, पाये जावें, उनको गिरिफ्तार करें; और जुर्मानह, क़ैद, मालकी ज़ब्ती करें; या और किसी तरहकी सज़ा देवें.

शर्त चौथी - झीलके किनारेकी ज़मीन, जिसमें सांभरका क़स्बह और बारह दूसरे खेड़े हैं, और जिस कुल ज़मीनपर अब जयपुर और जोधपुर दोनोंका शामिलाती क़ब्ज़ह है, उसका निशान किया जायेगा; और निशानकी लाइनके भीतरकी बिल्कुल ज़मीन तथा झीलका या उसके सूखे तलेका हिस्सह, जो ऊपर कही हुई दोनों रियासतोंके मातहत है, वही हद्द समझी जायेगी, जिसके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी और उसके अफ्सरोंको तीसरी शर्तके दर्ज किये हुए इस्तियार होंगे.

शर्त पांचवीं- कही हुई हद्दोंके भीतर और इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तके मुताबिक़ क़ाइदोंकी कार्रवाई करानेके लिये, और नमकके बनाने, बेचने, हटाने, बग़ैर इजाज़तके लानेसे रोकनेके लिये, जहांतक ज़ुरूरत हो, सर्कार अंग्रेज़ी या उसकी तरफ़से इख़्तियार पायेहुए अफ़्सरोंको इख़्तियार होगा, कि इमारतों या दूसरे मतलबोंके लिये ज़मीन लेलेवें; और सड़क, आड़, झाड़ी, व मकान बनावें; और इमारतें या दूसरा सामान हटादेवें. ऊपर लिखे हुए इसी मत्लबके लिये जयपुर सर्कारकी ख़िराज देनेवाली ज़मीनपर सर्कार अंग्रेज़ीका दख़्ल करलिया जावे, तो वह सर्कार जयपुरको उस ख़िराजके बराबर सालानह किराया दिया करेगी. जब कभी किसी शख़्सकी जायदादको सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ़्सर किसी तरह इस शर्तके मुताबिक़ नुक़्सान पहुंचावेंगे, तो जयपुरकी सर्कारको एक महीना पेश्तरसे इत्तिला दीजायेगी; और सर्कार अंग्रेज़ी उस नुक़्सानका बदला मुनासिब तौरसे चुका देवेगी. जब किसी हालतमें सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ़्सर, और मालिक जायदादके दर्मियान नुक़्सानकी तादादके बारेमें बहस होगी, तो तादाद पंचायतसे ठहराई जायेगी. ऊपर लिखी हुई हद्दोंके भीतर इमारतोंके बनानेसे सर्कार अंग्रेज़ीका कोई मालिकानह हक़ ज़मीनपर न होगा, जोकि पट्टेकी मीआद ख़त्म होनेपर सर्कार जयपुरके क़ब्ज़ेमें वापस चली जावेगी. मए उन इमारतों और सामानके, जो कि सर्कार अंग्रेज़ी वहांपर छोड़ देवे, किसी मन्दिर या मज़्हबी पूजाके मकानमें दख़्ल नहीं दिया जायेगा.

शर्त छठी- जयपुर सर्कारकी मंज़ूरीसे सर्कार अंग्रेज़ी एक कचहरी क़ाइम करेगी, जिसका इख़्तियार एक लाइक़ अफ़्सरको रहेगा, जो ऊपर बयान कीहुई हद्दोंके भीतर अक्सर इज्लास करेगा, इस ग़रज़से कि उन मुक़द्दमोंकी रूबकारी कीजावे, जो कि शर्त तीसरीमें लिखे हुए क़ाइदोंके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाईके सबब दाइर होवें; और तमाम मुज्रिमोंको सज़ा दीजावे; और सर्कार अंग्रेज़ीको इख़्तियार रहे, कि जिन मुज्रिमोंको जेलख़ानहकी सज़ा होवे, उनको चाहे उक्त हद्दोंके भीतर या अपने ही इलाक़हमें, जहां मुनासिब हो, क़ैद करें.

शर्त सातवीं- पट्टेके शुरू होनेकी तारीख़से ऊपर लिखी हुई हद्दोंमें बने हुए उस नमककी क़ीमत, जो इस शर्तके लिखे हुए दूसरे फ़िक़्रेके सिवाय बेचा जायेगा, सर्कार अंग्रेज़ी वक़्त बवक़्तपर मुक़र्रर करती रहेगी. जयपुरकी रियासत हक़्दार होगी, कि उसको सालानह रियासतके ख़र्चके लिये अंग्रेज़ी सर्कारसे नमक बननेके मक़ामपर ही नमककी कोई मिक़्दार (प्रमाण), जो जयपुरकी सर्कार मांगे, ब शर्ते कि वह मिक़्दार (१७२०००) मन अंग्रेज़ीसे ज़ियादह न हो, फ़ी मन ॥/) आने अंग्रेज़ीके हिसाबसे मिलती रहे.

जयपुरकी सर्कारको इरिव्तयार होगा, कि इस नमकको चाहे

शर्त आठवीं – नमकके उस ज़खीरेमेंसे, जो रियासत ज
दोनोंकी मिल्कियतमें पट्टेके शुरूके वक़ लिखी हुई हद्दोंके
जयपुरकी रियासतका हिस्सह, जो ऊपर लिखे ज़खीरेका आधा
नीचे लिखी शर्तोंपर अंग्रेज़ी सर्कारको देदेगी :-

दस्तूरके मुवाफ़िक़ पांच लाख दस हज़ार अंग्रेज़ी मन
रियासत अपना हिस्सह सर्कार अंग्रेज़ीको मुफ़्त देगी. ज़खीरेमें
का बाक़ी रहेगा, उसकी क़ीमत अंग्रेज़ी मनपर साढ़े छः आ
हिसाबसे गिनीजायेगी; और यह क़ीमत जयपुरकी रियासतको दी
देना उस वक़ शुरू होगा, जब कि अंग्रेज़ी सर्कार किसी सालमें
हज़ार अंग्रेज़ी मनसे ज़ियादह नमक बेचे, या निकाले; औ
ज़ियादतीके उस हिस्सेकी बाबत, जो जयपुरकी रियासतका ह
कि इस सालानह ज़ियादतीकी मिक़्दारोंसे पूरी मिक़्दार
जो पांच लाख दस हज़ार अंग्रेज़ी मनके अलावह दियागया है,
वक़ तक अंग्रेज़ी सर्कार इस ज़ियादतीके बिकनेकी क़ीमतपर वह
महसूलका, जो बारहवीं शर्तमें लिखागया है, नहीं देगी. ऊपर
पच्चीस हज़ार मन नमकमें वह मिक़्दार शामिल होगी, जो सा
फ़िक़्रेके मुवाफ़िक़ जयपुरकी रियासतके ख़र्चके लिये रक्खी जायेगी.

शर्त नवीं– जयपुरकी सर्कारको इरिव्तयार न होगा, कि किसी
कही हुई हद्दोंमें अंग्रेज़ी सर्कार बनावे, या बेचे, या जब कि जयपुर
किसी दूसरी जगहको अंग्रेज़ी पर्वानेके ज़रीएसे जयपुर राज्यमें
महसूल, लागत, राहदारी, या और किसी क़िस्मकी लगान खुद व
दूसरे शख्सोंको वुसूल करनेकी इजाज़त दे; मगर उस नमकपर,
मुताबिक़ दिया जावे, या ख़र्चके लिये जयपुरके राज्यमें बेचा जा
इरिव्तयार होगा, कि जो महसूल चाहे, वुसूल करे.

शर्त दसवीं– इस अह्दनामहमें कोई बात उस मालिकानह
न होगी, जो जयपुर सर्कारको ऊपर लिखी हद्दोंमें सिवाय उ
नमकके बनाने, बेचने या हटाने और बेइजाज़त बनाने या महसू

जयपुरकी रियासतसे उठा लिया जावेगा; और दिये हुए पट्टेके एवज़में अंग्रेज़ी सर्कार इक़्रार करती है, कि ऊपर लिखी हद्दोंमें बिके हुए नमकमें जयपुरकी रियासतके हिस्सेकी बाबत सवा लाख रुपया अंग्रेज़ी चलनका और उस मह्सूलके एवज़में, जो सर्कार जयपुर नमकपर लेती है, और जो इस अह्दनामहके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ी सर्कारको देदिया गया है, १५००००) रुपया सिक्कह अंग्रेज़ी सालियाना दो छः माहीकी क़िस्तमें जयपुरकी सर्कारको देती रहेगी; और कुल रुपया इस सालानह ख़िराजका यानी २७५०००) रुपया कल्दार अदा करनेमें ऊपर लिखी हुई हद्दमेंसे नमककी बिकी हुई या निकास कीहुई अस्ल मिक़्दार पर कुछ लिहाज़ न होगा.

शर्त बारहवीं- अगर किसी सालमें कही हुई हद्दोंके भीतर आठ लाख पच्चीस हज़ार अंग्रेज़ी मनकी बनिस्बत ज़ियादह नमक सकार्र अंग्रेज़ी बेचे, या उस हद्दके बाहर चालान करे, तो सर्कार अंग्रेज़ी जयपुरकी सर्कारको उस बढ़तीपर (आठवीं शर्तमें जो मिक़्दार लिखी है, उसके ख़र्च होजानेके पीछे) बीस रुपये सैकड़ेके हिसाबसे एक मह्सूल फ़ी मनके उस दामपर देगी, जो कि सातवीं शर्तके पहिले जुम्लेके मुताबिक़ बिकनेका निर्ख़ मुक़र्रर किया जावे.

जब कभी इस बारेमें सन्देह हो, कि किस सालमें कितने नमकपर मह्सूल लेना है, तो जो हिसाब सर्कार अंग्रेज़ीके बड़े अफ्सरकी तरफ़से पेश किया जावे, जो सांभरका मुख़्तार है, इस बातकी क़तई गवाही समझी जावेगी, कि दर अस्ल कितना नमक सर्कार अंग्रेज़ीने उस वक़्में बेचा, या बाहर चालान किया है, जिसकी बाबत हिसाबमें हो; मगर जयपुर सर्कारको अपनी तसल्लीके वास्ते भी इस बातकी रोक न होगी, कि वह अपने अफ्सर बिकरीका हिसाब रखनेको मुक़र्रर करे.

शर्त तेरहवीं- सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि हर साल सात हज़ार मन अंग्रेज़ी तोलका नमक वगै़र किसी क़िस्मकी लागतके जयपुर दर्बारके ख़र्चके वास्ते दिया करेगी; वह नमक उस जगहपर दिया जायेगा, जहां कि बनता है, और उस अफ्सरको दिया जावेगा, जिसको जयपुर सर्कारकी तरफ़से लेनेका इख़्तियार मिला हो.

शर्त चौदहवीं- सर्कार अंग्रेज़ीका कोई दावा किसी ज़मीनके या दूसरे ख़िराज पर नहीं होगा, जो नमकसे तअ़ल्लुक़ नहीं रखता, और सांभरके क़स्बे या दूसरे गांवों या ज़मीनोंसे दिया जाता है, जो कही हुई हद्दोंके भीतर शामिल है.

शर्त पन्द्रहवीं- अंग्रेज़ी सर्कार जयपुरके इलाक़हमें ऊपर लिखी हुई हद्दोंके बाहर नमक नहीं बेचेगी.

शर्त सोलहवीं- अगर कोई शख़्स, जिसको सर्कार अंग्रेज़ीने कही हुई हद्दोंके भीतर मुक़र्रर किया हो, कोई जुर्म करके भाग गया हो, या कोई शख़्स इस अह्दनामहकी

तीसरी शर्तके क़ाइदोंके बर्ख़िलाफ़ कोई काम करके भाग गया हो, तो जयपुरकी सर्कार जुर्मकी पुख़्तह गवाही होनेपर हर एक तरह उसको गिरिफ़्तार करने और कही हुई हद्दोंके भीतर अंग्रेज़ी हाकिमोंको सुपुर्द करनेकी कोशिश करेगी, जिस हालतमें कि वह शख़्स जयपुरके इलाक़हके किसी हिस्सहमें होकर गुज़रा हो, या कहीं आश्रय लिया हो.

शर्त सत्तरहवीं- इस अ़ह्दनामहकी कोई शर्त अ़मलमें न आएगी, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी दर हक़ीक़त कही हुई हद्दोंके भीतर नमक बनानेका काम अपने हाथमें न लेवे; ऐसे काम हाथमें लेनेकी तारीख़ सर्कार अंग्रेज़ी मुक़र्रर करेगी, इस शर्तसे कि वह तारीख़ नीचे लिखी हुई तारीख़ोंमेंसे कोई एक होगी:- ता० १ नोवेम्बर सन् १८६९ ता० १ मई, या १ नोवेम्बर सन् १८७० या ता० १ मई० सन् १८७१ अगर पहिली मई सन् १८७१ को या उसके पेश्तर चार्ज न लिया जावे, तो यह अ़ह्दनामह मन्सूख़ हो जावेगा.

शर्त अठारहवीं- इस अ़ह्दनामहकी कोई शर्त बग़ैर दोनों सर्कारोंकी पेश्तर रज़ामन्दी होनेके न बदली जावेगी, न मन्सूख़ कीजावेगी, और अगर कोई फ़रीक़ इन शर्तोंके मुताबिक़ न चले, या बे पर्वाई करे, तो दूसरा फ़रीक़ इस अ़ह्दनामहकी पाबन्दीसे छूट जावेगा.

(दस्तख़त) डबल्यू० एच० बेनन, पोलिटिकल एजेण्ट.

(दस्तख़त) नव्वाब मुहम्मद फ़ैज़अ़लीख़ां बहादुर.

दस्तख़त, मुहर और अदला बदली ब मक़ाम शिमला ता० ७ ऑगस्ट सन् १८६९ ई० को हुई.

(दस्तख़त) सवाई रामसिंह.

(दस्तख़त) मेओ.

इस अ़ह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने ब मक़ाम शिमला ता० ७ ऑगस्ट सन् १८६९ को की.

(दस्तख़त) डबल्यू० एस० सेटनूकार, सेक्रेटरी गवर्मेण्ट हिन्द.

ता० १८ मार्च सन् १८७० ई० को ऊपर लिखे अ़ह्दनामहकी बुन्याद पर गवर्मेण्टने सांभर झील कोर्टके मुक़र्रर होनेका इश्तिहार दिया, इसी इश्तिहारके मुवाफ़िक़ असिस्टेंट कमिश्नर ब्रिटिश इनलैण्ड कस्टम्स डिपार्टमेण्टका जो सांभर झीलपर रहे, वह इस अ़दालतका जज मुक़र्रर हुआ. इस जजको दफ़ा २२ ज़ाबितह फ़ौज्दारी के मुवाफ़िक़ सबॉर्डिनेट मैजिस्ट्रेट फ़र्स्ट क्लासके इख़्तियारात नीचे लिखे हुए दोनों क़िस्मके मुक़द्दमातमें हैं:-

(ए) मुक़र्ररह हुदूदके अन्दर ज़ाबिते फ़ौज्दारीकी दफ़ा २१ में लिखे हुए जुर्मका इर्तिकाब सर्कार अंग्रेज़ीकी रिआयासे होना.

(बी) अह्दनामोंकी तीसरी शर्तमें लिखे हुए क़ाइदोंके ख़िलाफ़का इर्तिकाब उसी हुदूदमें, चाहे किसीसे भी हो.

पहिली क़िस्मके मुक़द्दमातकी बाबत यह अदालत डिप्युटी कमिश्नर अजमेरके मातह्त रहेगी, जो वहांका अपील सुनेगा.

दूसरी क़िस्मके मुक़द्दमातकी बाबत शिकायत होनेपर एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह, बशर्ते मुनासिब मिस्ल मंगाकर सांभर झील कोर्टके फ़ैसलहकी मन्ज़ूरी, मन्सूख़ी या तर्मीम वग़ैरह करसकेंगे.

राज्य अलवरकी तारीख़.

रियासत अलवर राज्य जयपुरकी शाख़में है, इसलिये उसकी तारीख़ यहां दर्ज कीजाती हैः-

जुग्राफ़ियह (१).

रियासत अलवर राजपूतानहके पूर्वोत्तरी हिस्सेमें २७° ५′ और २८° १५′ उत्तर अक्षांश और ७६° १०′ और ७७° १५′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान वाक़े है. इसका रक़्बह ३०२४ मील मुरब्बा, आबादी क़रीब ८००००० आदमी, सालानह आमदनी २९४१८८३ रुपया और ख़र्च २२४५१५४ रुपयेके क़रीब माना गया है. यह रियासत उत्तरमें अंग्रेज़ी ज़िले गुड़गांवा, बावल पर्गनए नाभा, और कोटक़ासिम पर्गनए रियासत जयपुरसे; पूर्वमें रियासत भरतपुर व गुड़गांवासे; दक्षिणमें जयपुर, और पश्चिममें जयपुर, कोटपुतली, रियासत नाभा व पटियालासे घिरी हुई है. राज्य अलवर और जयपुरकी दर्मियानी सर्हद सन् १८६९-७२ में कप्तान ऐबटने क़ाइम करके नक़्शहमें दर्ज की; सन् १८७४-७५ में लेफ़्टिनेण्ट मासीने पटियाला और अलवरकी सीमा नियत की, और रियासत नाभा और इस राज्यके, जो बाहमी सर्हदी तनाज़ा था, मिटा दिया. सन् १८५३-५४ ई० में कप्तान मॉरिसनने भरतपुर और अलवरकी सीमा मुक़र्रर की; और वह सर्हद जिसकी बाबत अलवर और सर्कार अंग्रेज़ीके दर्मियान बह्स थी, राज्य अलवर और गुड़गांवाके बन्दोबस्तके अंग्रेज़ी हाकिमोंने तस्फ़ियह करके क़ाइम करदी.

क़ुद्रती सूरत- कुल राज्यमें उत्तरसे दक्षिणी तरफ़ बराबर पहाड़ियोंके सिल्सिले नज़र आते हैं. पूर्व और उत्तरकी तरफ़ कई एक छोटे पहाड़ी सिल्सिले हैं, जो कम ऊंचे, तंग, और अक्सर जुदा जुदा, दूर दूर एक एक या दो दो शामिल हैं. उत्तर पूर्वी सीमाकी पहाड़ियोंका सिल्सिलह बराबर चला गया है, जिनमें अक्सर पहाड़ियां कई मील चौड़ी हैं, तो भी उत्तर और पूर्वमें इस राज्यका अक्सर हिस्सह कुशादह है.

---

(१) यह जुग्राफ़ियह कप्तान सी० ई० येट (Captian C. E Yate.) के बनाये हुए राजपूतानह गज़ेटिअरकी तीसरी जिल्दसे खुलासह करके लिखा गया है.

ठीक दक्षिणी तरफ़, अलवरकी सीमापर, इस देशका दूसरा क़स्बह राजगढ़ है. इन दोनों मक़ामोंके बीचवाली ज़मीन अक्सर बराबर है, लेकिन् उनके बीचकी रेखाके पश्चिम और उत्तर पश्चिम खूबसूरत पहाड़ियोंका एक सिल्सिलह है, जिसके बहुतही नज़्दीक वाली पंक्तियां, उनकी दर्मियानी घाटियां ज़ियादह सकड़ी होनेकी वजूहसे वे डोल और मिली हुई मालूम होती हैं; लेकिन् दूरकी पंक्तियोंके बीच चौड़ी चौड़ी घाटियें हैं, और दक्षिण पश्चिम तरफ़की पहाड़ियां बहुत उपजाऊ हैं. राज्यकी उत्तरी व पश्चिमी ज़मीन बहुत हलकी है, लेकिन् पश्चिमी सीमाके कई मक़ामातके सिवा शैखा-वाटीकी तरह बालू रेतके टीले नहीं हैं. पूर्वकी तरफ़ वाली ज़मीनमें पानीकी आमद बहुत है, और इसीलिये वह उपजाऊ भी ज़ियादह है, मगर जहां पानी नहीं ठहरता उस हिस्सेकी ज़मीन बहुत हलकी है. दक्षिणकी ज़मीन अक्सर उम्दह है.

पहाड़ियोंके पासकी ज़मीनमें शिखर (चोटियां) कम हैं, अगर्चि कहीं कहीं नज़र आते हैं. एक ही सिल्सिलेकी ऊंचाई और नीचाई हर एक जगहपर क्रमसे है; लेकिन् अक्सर पहाड़ियोंमें सीधी खड़ी चटानें हैं, कि जिनके सबब पैदल आदमी भी पहाड़ीके पार नहीं जासक्ता. कहीं कहीं उनमें ऊंचे ऊंचे मैदान हैं, जिनपर घास कस्रतसे ऊगती है; पहाड़ी बलन्द मक़ामात (१) १९०० फ़ुटसे लेकर २४०० फ़ुट तक सत्ह समुद्रसे ऊंचे हैं. अक्सर पहाड़ियां देखनेमें खूब्सूरत और दिलचस्प मालूम होती हैं, जो घने जंगलोंसे ढकी हुई हैं, और पोशीदह जगहोंमेंसे पानीके चश्मे जारी रहते हैं.

---

(१)

नाम शिखर.	कहां वाके है.	ऊंचाई फ़ुट.
भानगढ़ शिखर	भानगढ़से ३/४ मील उत्तरको	२१२८
कानकारी "	कानकारी गढ़से १ १/२ मील उत्तर पूर्व	२२१४
सिर्वास "	सिर्वाससे ——— दक्षिण पश्चिम	२१३१
अलवरका क़िला		१९६०
भूरासिन्ध	छावनीसे एक मील पश्चिम	१९२७
बन्द्रोल शिखर	जयपुरकी सीमाके समीप (जो गाज़ीके थानह और बैराटके घाटेके ऊपर है) बन्द्रोलसे एक मील दक्षिण	२३०७
बहराइच "	जयपुर सीमापर बहराइचसे १/२ मील पश्चिम	२३९०
बीरपुर "	देवती और टहलाके घाटेके ऊपर	२०४८

नदियां व नाले- राज्य अलवरकी मश्हूर नदियां, सावी, रूपारेल, चूहरसिंध, लिंडवा, प्रतापगढ़, और अजबगढ़के नाले हैं, जिनमें सबसे बड़ी नदी सावी है, जो इस राज्यकी १६ मीलतक पश्चिमी कुद्रती सीमा बनाती और सोतासे मिलकर राज्यके उत्तरी पश्चिमी कोणको जुदा करदेती है; वह रियासत नाभाके मकाम बावलके एक हिस्सेको अलवरसे जुदा करती हुई राज्य जयपुरके पर्गनह कोट कासिममें दाखिल होती है. इसमें कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं, और उत्तरी जयपुरका बहाव इसमें आता है; लेकिन् इसके करारे ऊंचे होने और पेटेमें रेत ज़ियादह होनेकी वज्हसे खेती नहीं होसक्ती, और दूसरी नदियोंकी तरह खेतीके हक्में फ़ाइदहमन्द नहीं है; इसकी बाढ़से इलाकए अंग्रेज़ीके रेवाड़ी देशको उत्तरकी तरफ़ बहुत नुक्सान पहुंचता है, क्योंकि वह अच्छी ज़मीनको काटकर बहा लेजाती है, और उसकी जगह रेता वगैरह छोड़जाती है, जो ज़िराअतके काबिल नहीं होता. बर्सातके बाद यह नदी सूख जाती है; इसपर राजपूतानह स्टेट रेल्वेका एक पुल अलवरकी सीमाके बाहर बना हुआ है.

अलवर शहरके पश्चिम और दक्षिणकी पहाड़ियोंका पानी ख़ासकर रूपारेल और चूहरसिंधमें जाता है. ये दोनों नदियां पूर्व दिशाको बहती हैं, और इनसे खेतीको बहुत बड़ा फ़ाइदह पहुंचता है. रूपारेल, जो ज़ियादहतर बारा नामसे मश्हूर है, उसमें पानीका प्रवाह अक्सर रहता है; और चूहरसिंधमें सिर्फ़ बर्सातके बाद पाया जाता है. इस (चूहरसिंध) के सोतेके पास एक मश्हूर देवस्थान है; और रूपारेलकी एक शाखापर सीलीसेढ़की झील है.

उत्तरी पश्चिमी पहाड़ियोंके एक हिस्सेका पानी लिंडवा नदीमें जाता है. यह नदी १२ या १५ मील तक दक्षिणकी तरफ़ बहने बाद, जहां वह जुदा होती है, पूर्वको मुड़कर इलाकए अंग्रेज़ीमें दाख़िल होती है; खेतीको इसके पानीसे बहुत फ़ाइदह होता है, लेकिन् गर्मीके मौसममें इसका प्रवाह बन्द होजाता है.

टहला, अजबगढ़, और प्रतापगढ़ पर्गनोंसे राज्यके दक्षिणकी तरफ़ बड़े बड़े नाले जयपुरके इलाकेमें बहते हैं, जहां वे बाणगंगासे मिलजाते हैं. इनमेंसे प्रताप-गढ़ और अजबगढ़के नाले अक्सर गर्मियोंमें भी बहते रहते हैं.

झीलें- पश्चिममें नरायणपुरका नाला उत्तर तरफ़ बहकर सावीमें जामिलता है, लेकिन् बर्सातके बाद सूखजाता है. इस राज्यमें सीली सेढ़ और देवती नामकी दो छोटी छोटी झीलें या ताल हैं.

ईसवी १८४४ के लगभग महाराव राजा विनयसिंहने रूपारेल नदीकी एक सहायक धारापर ४० फ़ुट ऊंचा और १००० फ़ुट लम्बा एक बन्द बन्धवा दिया था,

जिससे "सीली सेढ़" ताल बनगया. यह झील शहर अलवरसे ९ मील दक्षिण पश्चिमको है, जब यह भरती है, तो इसकी लम्बाई १ मील और चौड़ाई ४०० गज़के क़रीब होजाती है. इसके ऊपर एक चटानपर सुबिधेका एक महल बना है, पानीमें किश्तियां रहती हैं, मछलियां और घड़ियाल भी बहुत कस्रतसे पाई जाती हैं, इसके आसपासके मक़ामोंमें शिकारी जानवर ज़ियादह होने, शहरसे क़रीब वाके़ होने और सब्ज़ी वग़ैरहके सबब रौनक़ व सैरकी जगह होनेकी वजूहसे, बहुतसे सैर करने वाले मनुष्य आया जाया करते हैं. यहांसे वज़ीए एक नहरके शहर अलवरमें पानी जाता है, और उस नहरके सबब राजधानीकी सीमाकी बहुत कुछ रौनक़ है.

देवती झील अलवरसे ठीक दक्षिण तरफ़ जयपुरकी सीमाके पास है; इसकी पाल जयपुरके एक सर्दारने बंधवाई थी. यहांपर जंगली, और पानीमें रहनेवाले जानवरोंके जमा होनेकी वजूहसे यह झील मश्हूर है, और पानीमें रहनेवाले सांपोंके लिये भी, कि जिसके सबब वहांके महलमें कोई नहीं रहता. सीलीसेढ़से यह झील लम्बाई चौड़ाई और गहराईमें कम है; और अक्सर गर्मीके मौसममें सूख जाती है.

ऊपर लिखी हुई झीलोंके सिवा खेतोंको सींचनेकी ग़रज़से कई नालोंमें पाल बांधी हुई हैं, लेकिन् उनमें पानी बहुत कम मुद्दत तक रहता है. चन्द तालाब भी हैं, जिनमें सालभर तक पानी रहता है.

आबो हवा और सर्दी गर्मी- आबो हवा इस .इलाकेकी उम्दह और पानी भी तन्दुरुस्तीके हक़में फ़ाइदह बख़्शनेवाला पाया गया है. सन् १८७१ से सन् १८७६ .ई० तक की बारिशका हिसाब करनेसे मालूम हुआ, कि इस राज्यमें हर साल २४ या २५ इंचके क़रीब पानी बरसता है.

सर्दी और गर्मीका कोई सहीह अन्दाज़ह नहीं रक्खा जाता. अक्सर राज्यके उत्तरी हिस्सेमें, जहांकी ज़मीन हलकी और मुल्की हिस्सह कुशादह मैदान है, गर्मीके दिनोंमें पहाड़ी मक़ामोंकी निस्बत गर्मी कम याने औसत दरजेकी रहती है; और पूर्व तथा पश्चिममें ज़मीनके सख़्त और पहाड़ी होनेकी वजूहसे गर्मी बहुत तेज़ पड़ती है. बर्सातके मौसममें पहाड़ियोंके ऊंचे मक़ामोंमें सर्दी रहती है, और बनिस्बत मैदानके उन जगहोंमें जाकर रहना अच्छा मालूम होता है. ऊपरी गढ़, जो शहर अलवरसे १००० फ़ीट ऊंचा है, इस मौसमके लिये बहुत ही उम्दह तन्दुरुस्तीकी जगह है.

पत्थर व धातु वग़ैरह- पहाड़ी हिस्सेकी कुल पहाड़ियां क्वार्ट्ज़की हैं, जिनमें सिफ़ेद पत्थर तथा अब्रक़ वग़ैरहकी धारियां नज़र आती हैं. दक्षिणकी तरफ़ कुछ ट्रैप और नीस चटान भी पाया जाता है, पश्चिमोत्तरमें काला स्लेट; दक्षिण

पश्चिममें अच्छे सिफ़ेद संग मर्मर और बाज़ जगह सिफ़ेद बिल्लोरके मुवाफ़िक़, और मोतिया या गुलाबी रंगका पत्थर भी मिलता है, जो मकानातके बनानेमें काम आता है. अलवर शहरके पूर्वोत्तर २० माइल फ़ासिलेपर खानोंमेंसे मेटा मॉर्फ़िक् (रूपान्तर कृत) स्लेटके रंगके रेतीले पत्थरकी पट्टियां निकलती हैं, शहरके दक्षिण पूर्व बीस मीलके भीतर वैसी ही पट्टियां निकलती हैं; और अच्छा सिफ़ेद चौकोर रेतीला पत्थर भी दक्षिण पूर्वमें पाया जाता है, जो मकानातकी तामीरमें बहुत काम आता है. छत पाटनेका पत्थर राजगढ़, रेवाड़ी और मांडणके नज़्दीक बहुत निकाला जाता है; राजगढ़में २० फ़ुट लम्बी और २ फ़ुट तक चौड़ी पट्टी निकलती है; और अजबगढ़ की स्लेटका रेलवे स्टेशनकी तामीरमें बहुत काम हुआ है. चूना बनानेका मोटा सिफ़ेद पत्थर इस इलाक़ेमें पाया जाता है. संग मूसा (काला पत्थर) शहरसे पूर्व १६ मीलके फ़ासिलेपर और आस पासकी जगहोंमें निकलता है. अब्रक़, लाल मिट्टी, एक क़िस्मका ख़राब नमक, शोरा, और पोटाश (खार, जवाखार, या सज्जी) भी मिलते हैं; लोहेकी कच्ची धातुके ढेरके ढेर पाये जाते हैं; और पहिले लोहा बहुत निकाला जाता था; तांबा और किसी क़द्र सीसा भी पाया गया है.

जंगल वगैरह- राज्यके कई हिस्सोंमें दरख़्तोंकी हिफ़ाज़त रक्खी जाती है, पहाड़ियोंपर दरख़्त बहुत कस्रतसे हैं, और दूसरे मक़ामोंमें मैदानोंमें मिलते हैं, ख़ास शहरके आसपास जोती जानेवाली और ऊसर ज़मीनपर जाबजा बबूलके बड़े बड़े दरख़्त लगे हुए हैं, लेकिन् कोई बड़ा गुंजान जंगल नहीं है.

पहाड़ी ज़मीन तथा पहाड़ियोंके ढालों और ऊंची ज़मीनपर सालर व ढाकके छोटे बड़े पेड़ अक्सर पाये जाते हैं, पहाड़ियोंके आधारपर और सकड़ी घाटियोंमें ढाक ज़ियादह जमा हुआ है. एक जगह तालके दरख़्तोंका बड़ा ख़ूबसूरत जंगल है, और जाबजा ताल व खजूरके दरख़्त बे शुमार खड़े हैं. दक्षिण और पश्चिमी पहाड़ियोंपर क़ीमती मज्बूत बांस बहुत होता है, और कहीं कहीं बड़के दरख़्त भी नज़र आते हैं. पहाड़ियों और घाटियोंमें खैर, खैरी, कधू, हरसिंगार, करवाला या अमलतास, गुर्जन, आटन या जरखैर, कीकर, कुंभेर, आंवला, डोलिया हड़, बहेड़ा, तेंदू, सेमल, गजरेंड, गूलर, गंगेरन, जामुन, कदंब, बेर, पापरी, गूगल, झालकंटीला, जिंगर, कुम्हेर, अडूसा वगैरह कई क़िस्मके छोटे बड़े दरख़्त पायेजाते हैं. खेजड़ा, खैर, नीम, कीकर, पीपल, फ़िरास, सीसम, रोहिड़ा, पीलू, आम, इमली, सेंजना, और बड़ भी बहुत होते हैं; और कई क़िस्मकी घास होती है, कि जो सिवाय मवेशियोंकी ख़ुराकके मकानोंकी छान, टोकरियां व पंखे वगैरह चीज़ें बनानेमें काम आती है.

शेर, तेंदुए ओर वघेरे वहुत हैं; और क़रीव क़रीब तमाम जंगलोंमें वल्कि शहरके आसपास तथा वग़ीचोंमें भी फिरते रहते हैं. सांभर, हिरन और नीलगायोंके झुंड खुले मैदानोंमें फिराकरते हैं, और कहीं कहीं सूअर भी मिलते हैं, लेकिन् पहिलेकी वनिस्वत वहुत कम हैं. ख़र्गोश, भेड़िया, चर्ख़, चिकार, धीम, ख़र्गोश, सेह याने कलगारी, गीदड़ लौमड़ी, फैंकरी, बीजू, मुश्कविलाई, साल (चींटी खानेवाला जानवर), सियहगोश, नेवला, घोड़ागोह, गडरबिलार और लंगूर वग़ैरह कई जानवर जंगलों व पहाड़ोंमें पाये जाते हैं. उड़नेवाले जानवर याने परिन्दे भी कई प्रकारके देखे गये हैं, मसलन तीतर, बटेर, काला तीतर, जंगली मुर्ग़, मोर वाज़, शिकरा, मोरायली, तुरमची, सिफ़ेद मोर, वटवल कुलंग, जो ज़मीनपर नहीं दिखाई देता, टिटहरी, हरयल, वया, लंकलाठ या बंदानी, जो सोते हुए नाहरके मुंहमेंसे गोश्तके टुकड़े निकाल लेती है, और सिवा इनके कई जानवर तालाव वग़ैरहमें तैरने वाले तथा उनके किनारोंपर रहने वाले भी पाये जाते हैं, जिनकी ख़ुराक मछली वग़ैरह पानीके छोटे जानवर हैं.

पैदावार- राज्य अलवरकी ख़ास पैदावार यह है:- गेहूं, जव, चना, जवार, वाजरा, मोठ, मूंग, उड़द, चौला, मक्का, गवार, चावल, तिल, सरसों, राई, ज़ीरा, कासनी, अफ़ीम, तम्वाकू, ईख, रुई वग़ैरह. लेकिन् मक्का और अफ़ीम मालवा व मेवाड़की तरह कस्रतसे नहीं वोई जाती, किसी किसी जगह गांवोंमें पैदा होती है, और अफ़ीम डोड़ियोंमेंसे कम निकाली जाती है, क्योंकि इस इलाक़ेमें वनिस्वत अफ़ीमके पोस्त पीनेका रवाज ज़ियादह है; ईख भी कम पैदा होता है. गाजर, मूली, वथुवा, करेला, वैंगन, तुरोई, कचरा, सेम, कोला, आल, घिया वग़ैरह तर्कारियां इलाक़हमें अच्छी और ज़ियादह मिलती हैं; अरुई, रतालू, व आलू वग़ैरह तर्कारियां और कई क़िस्मके फल ख़ास राजधानी अलवरके वाग़ीचोंमें पैदा होते हैं.

राज्य प्रवन्ध- महाराव राजा शिवदानसिंहके इन्तिक़ाल करनेपर मौजूद जानशीन महाराजाके नावालिग़ होनेके सवव राज्य प्रवन्धके लिये एक सभा या कमिटी मुक़र्रर कीगई; उस वक़ याने ई० १८७६ में पंडित रूपनारायण, ठाकुर मंगलसिंह गढ़ीवाला, ठाकुर वल्देवसिंह श्री चन्द्रपुराका, और राव गोपालसिंह पाई वाला इस कमिटीके मेम्वर क़रार पाकर विद्यमान महाराजाकी नावालिग़ीके ज़मानह तक उम्दग़ीके साथ राज्यका काम करते रहे. जवसे उक्त महाराजाने राज्यका काम अपने हाथमें लिया, तवसे वह सभा महाराजाकी राय व हुक्मके अनुसार काम अंजाम देती है.

अपीलकी कचहरी- इस कचहरीपर ५०० रुपये माहवारका एक अफ्सर है, जो फ़ौज्दारी, दीवानी और नुजूल (इमारत) की कचहरियोंकी अपील सुनता है. मुक़द्दमात फ़ौज्दारीमें, जिनपर कि दो साल क़ैदकी सज़ा हो, और १००० एक हज़ार रुपये तकके दीवानी मुक़द्दमोंमें उसीकी रायपर अमल दरामद होता है. उसको फ़ौज्दारके इख्तियारातसे बाहर वाले मुक़द्दमोंकी कार्रवाईका इख्तियार है.

माल गुज़ारीका महकमह- माल सद्रका हाकिम डिप्युटी कॅलेक्टर कहलाता है, जो ज़मीनकी मालगुज़ारीके मुतअल्लिक़ तमाम कामोंका इख्तियार रखता है, और इस कामका नाज़िर है. वह ज़मीनकी मालगुज़ारीके मुक़द्दमोंकी समाअत करता है, और ज़मींदारोंके बख़िलाफ़ महाजनोंके मुक़द्दमोंको भी सुनता है, जिन्होंने मालगुज़ारी के वास्ते ज़मींदारोंको बतौर क़र्ज़के रुपया दिया हो. एक असिस्टेंट डिप्युटी कॅले-क्टर उसकी मददके लिये मुक़र्रर है.

फ़ौज्दारी- महकमह फ़ौज्दारीका हाकिम जुदा है; उसको इख्तियार है, कि इस क़िस्मके मुक़द्दमोंमें मुज्रिमोंको एक सालकी क़ैद और तीन सौ ३०० रुपया जुर्मानह या इसके बदलेमें एक साल ज़ियादह क़ैदकी सज़ा दे. अक्सर ऐसे मुक़द्दमातमें, कि जिनमें वह ६ महीनेका जेलख़ानह या ३० रुपया जुर्मानहकी सज़ा देवे, उसीकी राय बहाल रहती है; और अदालत अपील ऐसे मुक़द्दमोंकी बाबत समाअत नहीं करती. फ़ौज्दार तह्सीलदारोंकी अपील सुनता है, जो एक माह क़ैद और २० रुपये तक जुर्मानह करसक्ते हैं.

महकमह दीवानी- दीवानीका हाकिम कुल मुक़द्दमात दीवानीको सुननेका इख्तियार रखता है. हाकिमकी तन्ख्वाह ३०० रुपया माहवार मुक़र्रर है. अपील सिर्फ़ ५० रुपयेसे ज़ियादह मालियतके मुक़द्दमोंमें होसक्ती है. तह्सीलदारको १०० रुपया मालियतके दावेकी समाअत करनेका इख्तियार है, जिसके फ़ैसलोंकी अपील महकमह दीवानीमें होती है.

नुजूल (मकानात वग़ैरह) का महकमह- यह महकमह अलवर शहरके अन्दर और आसपासके सर्कारी मकानोंकी मरम्मतका बन्दोबस्त करता है, और राजगढ़के मकानोंकी भी, निगरानी रखता है, जो अलवरके वर्तमान राजाओंका क़दीम स्थान था. इस महकमेके सुपुर्द ख़ालिसहके मकानोंकी निगरानी करना, और कोई शख़्स अपना मकान किसीको बेचे, तो उसकी तह्क़ीक़ात करना, बिक्रावकी रजिस्टरी करना और इस क़िस्मका सर्कारी महसूल वुसूल करना वग़ैरह मकानातके ख़रीद फ़रोख्तसे तअल्लुक़ रखनेवाले काम हैं. सिवाय अलवर व राजगढ़के दूसरे मक़ामोंका काम महकमह मालगुज़ारीके ताबे है. महकमह नुजूलके हाकिमकी अपील, अपीलकी कचहरीमें होती है. राज्यके महलातकी

तामीरका काम एक होश्यार इन्जिनिश्चरके सुपुर्द है, जो ३०० रुपये माहवार पाता है.

ख़ज़ानह-इस कामपर एक मोतवर खानदानी महाजन मुक़र्रर है, जो अपने मातह्तोंकी मौकूफ़ी बहालीका इख्तियार रखता है. हिसाब हिन्दी व फ़ार्सी दोनोंमें होता है, और रोज़मर्रहकी आमद व खर्चके हिसाबका तख़्मीना हमेशह देखलिया जाता है. दाण याने साइरकी आमदनी ईसवी १८६८-६९ में १२०००० रुपया थी, लेकिन् ईसवी १८७७ में दाण मुआफ़ करदिया गया, अब सिर्फ़ बहुत कम चीज़ोंपर बाक़ी रहगया है.

म्युनिसिपॅलिटी-(शहर सफ़ाई वगैरह) शहरकी सफ़ाईके लिये चन्द सालसे अलवर, राजगढ़ व तिजारा वगैरह शहरोंमें म्युनिसिपल कमिटी मुक़र्रर कीगई है. इसके मेम्बर कुछ तो राज्यके नौकर और कुछ बे नौकर हैं. मकानोंके मह्सूलकी बनिस्बत, जो कि पहिले लगता था, दाण अच्छा समझा जाता है. यह कमिटी हर सालके शुरू होनेसे पहिले सालानह आमदनीका हिसाब देखती है, और हर सालके अख़ीरसे उन कामोंकी रिपोर्ट देखती है, जो कि सालभरमें होते हैं.

धर्मखाता व इन्आम- ब्राह्मणों तथा मन्दिरोंके लिये माहवारी बंधानके मुवाफ़िक़ रुपया मिलता है. इस राज्यमें इस क़िस्मके ३७६ मन्दिर हैं, इनमेंसे तीन राणियोंके बनवाये हुओंका खर्च ३००० रुपया सालानह, द्वारिकानाथ के मन्दिरका खर्च ३६०० रुपया, और जगन्नाथके मन्दिरके लिये ६०० रुपया सालानह दिया जाता है, जो खास शहर अलवरमें हैं; और राजगढ़में गोविन्दजी के मन्दिरके सिवा, जिसके लिये २५०० रुपये मुक़र्रर हैं, बाक़ी मन्दिरोंके लिये थोड़ा थोड़ा मासिक खर्च मुक़र्रर है. मन्दिरोंका कुल सालानह खर्च ४०००० रुपयेके क़रीब समझा जाता है. ब्राह्मणोंके लिये २८००० और फ़क़ीरों वगैरहके लिये ७००० रुपया नियत था. हर एक अह्लकार व सर्कारी नौकरको विवाह और मौतके कामोंमें मदद देनेके लिये ५ रुपयेसे लेकर ३००० से ज़ियादह तक बतौर इन्आम मिलता है.

फ़ौज-पियादह पल्टन, रिसाला, तोपखानह व पुलिस वगैरह फ़ौजी आदमियों की तादाद छः हज़ारसे ज़ियादह मानी जाती है; मेजर पी० डब्ल्यू० पाउलेट ने अपने बनाये हुए अलवर गज़ेटिअरमें ६७९५ लिखी है. अगर्चि पहिले पुलिस जुदा न थी, और थानेदारोंकी तन्स्वाह भी बहुत कम थी, लेकिन् अब थानेदारोंके लिये ३० से ४० रुपये तक माहवार मुक़र्रर होगया है, गढ़की पल्टनमेंसे अच्छे अच्छे जवान चुनकर तनूख्वाहकी तरक़्क़ीके साथ पुलिस क़ाइम कीगई है, और एक लाइक़ शख्स सुपरिन्टेन्डेन्ट १०० रुपये माहवार तनूख्वाहपर मुक़र्रर कियागया है, जिसका काम पुलिसका इन्तिज़ाम करनेके सिवा, मीनों वगैरह लुटेरोंकी निगहबानी

रखनेका भी है. वे सिपाही जिनको कि ज़मीन मिली है, एक क़िस्मके छोटे जागीरदार हैं, जो घोड़े व सवारके एवज़ तह्सील व गढ़ोंमें पैदल सिपाहीकी नौकरी देते हैं. ये लोग सर्दार कहलाते हैं.

जेलख़ानह- एजेन्सी सर्जनके इख़्तियारमें है, जिसके मातह्त एक सुपरिन्टेन्डेन्ट है. यह मकान महाराव राजा विनयसिंहने एक सरायके साम्हने उ़म्दह मौक़े और तर्ज़पर बनवाया है, जो क़ैदियोंके लिये सिहत बख़्श है. यहांपर दरी, ग़ालीचे व नवार वग़ैरह चीज़ें अच्छी तय्यार होती हैं. इसके पास एक पागलख़ानह भी है, जहांपर पागलोंका इ़लाज होता है, और वे लोग यहींपर रक्खे जाते हैं. क़ाइदह जेलख़ानेका उ़म्दह है; जेलगार्डमें एक सूबेदार, ६ हवाल्दार, ११९ सिपाही, ३ भिश्ती, १ जमादार, ५ नायक हवाल्दार, १ मुहर्रिर और १ ख़लासी रहता है; काम करने वाले क़ैदियोंकी रोज़ानह ख़ुराक सेर नाज और दाल या तर्कारी है. जेलका सालानह ख़र्च ९१४० रुपयेके क़रीब पड़ता है.

टकशाल- यहांके टकशालमें कभी कभी देशी रुपये बनते हैं, जो हाली कहलाते हैं; लेकिन् इनका चलन अब ज़ियादह नहीं है, कल्दार रुपयेका चलन बहुत ही बढ़गया है; और पैसा भी अंग्रेज़ी ही चलता है, पैसा और पाई दोनों राइज हैं, लेकिन् बनिस्बत पाइयोंके बनिये लोग कौड़ियां ज़ियादह पसन्द करते हैं. चन्द सालसे मौजूद महाराजा मंगलसिंहने कल्दारकी क़ीमतके बराबर और उसी शक्लका, कि जिसके एक तरफ़ फ़ार्सीमें उनका नाम है, जारी किया है; वह हर जगह कल्दारके भावसे चल सक्ता है. पुराने पैसे, जो यहां पहिले चलते थे, उनको सिवाय घास व लकड़ी बेचनेवालोंके कोई नहीं लेता.

मद्रसह-सरिश्तह तालीमका इन्तिज़ाम अब यहां बहुत उ़म्दह होगया है, अगर्चि विद्याका प्रचार तो पहिले हीसे था, और ख़ास शहर अल्वरका बड़ा मद्रसह विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में महाराव राजा विनयसिंहने क़ाइम किया था, लेकिन् महाराव राजा शिवदानसिंहने मालगुज़ारीपर १ रुपया सैकड़ा मह्सूल जारी करके बड़े बड़े गांवों और तह्सीलोंमें मद्रसे क़ाइम करदिये, जिनमें फ़ार्सी, उर्दू और हिन्दी पढ़ाई जाती है, और विक्रमी १९३० कार्तिक [हि० १२९० रमज़ान = ई० १८७३ नोवेम्बर] में राजधानीके बड़े मद्रसेको, जो पहिले महाराव राजा बख़्तावरसिंहकी छत्रीमें था, शहरके ख़ास दर्वाज़ेके बाहर कुशादह और उ़म्दह जगहपर अंग्रेज़ी क़ताका दुमन्ज़िला, मकान तय्यार होने बाद मुक़र्रर किया; यहां एक पाठशाला ठाकुर सर्दारों तथा बड़े अह्लकारोंकी औलादको तालीम देनेकी ग़रज़से विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में क़ाइम कीगई, जो

अब तक मौजूद है. सिवाय इनके मिशन स्कूल और कई छोटे छोटे हिन्दी व फ़ारसी के मक्तब हैं; एक लड़कियोंकी पाठशाला भी है. यहांपर सरिश्तह तालीमका एक महकमह है, जिसका अफ्सर और उसका मातहत इन्स्पेक्टर तह्सीलों व देहातमें, जहां जहां मद्रसे हैं, दौरा करते रहते हैं.

राज्यका पुस्तकालय देखनेके लाइक़ है, इसमें कई क़दीम संस्कृत पुस्तकें और कई अरबी व फ़ार्सीकी क़लमी किताबें मए तस्वीरोंके रक्खी हैं, और एक गुलिस्तां क़लमी अजीब तुह्फ़ा है, जो पचास हज़ार रुपयेकी लागतसे तय्यार हुई, और शायद वैसी कहीं नहीं मिलसक्ती.

शिफ़ाख़ानह- ख़ास राजधानी अलवरमें एक बड़ा और कुशादह अंग्रेज़ी कताका शिफ़ाख़ानह बना हुआ है, जिसमें बीमारोंके रहनेके लिये उम्दह मकान और रहने वाले मरीज़ोंको खाना वग़ैरह राज्यसे मिलता है. सिवा इसके एक शिफ़ाख़ानह राजगढ़में और तिजारामें है, और अब हर एक तह्सीलके बड़े क़स्बोंमें बनते जाते हैं.

बाग़ीचे- रियासत अलवरमें ६५ से ज़ियादह बाग़ीचे हैं; जिनमेंसे दो तो ख़ास शहरके अन्दर, २७ सीमापर, १ कृष्णगढ़ पर्गनेमें, २ तिजारामें, २ बानूसूरमें, १ गोविन्दगढ़में, ३ लक्ष्मणगढ़में, ६ थानह ग़ाज़ीमें, २० राजगढ़में, और सिवाय इनके कई एक और भी हैं.

क़ौम व फ़िर्क़े- रियासत अलवरमें जिस जिस क़ौमके लोग आबाद हैं, उनके नाम यहांपर लिखे जाते हैं- ब्राह्मण, राजपूतोंमें चहुवान, कछवाहा, राठौड़, तंवर, गौड़, यादव, शैख़ावत, नरूका (१), बड़गूजर, और बनिया, कायस्थ, गूजर, अहीर, माली, सुनार, खाती, लुहार, कहार, दर्ज़ी, पटवा, चितारा, तेली, तंबोली, भड़भूंजा, मनिहार, कुम्हार, नाई, बारी, ठठेरा, रैबारी, गडरिया, बावरी, मीना, चाकर, (गुलाम), डाकौत, भांड, ढाडी, ख़ानज़ादह (२) मुसल्मान, मेव (३), क़ाइमख़ानी,

---

(१) अलवरके राजा इसी ख़ानदानके हैं, और इनकी तथा कछवाहा ख़ानदानकी कुलदेवी जमुहाय महादेवी है, जिसका मन्दिर जयपुरके राज्यमें बाणगंगा नदीके नालेमें, राज्य अलवरके दक्षिणी पूर्वी कोणसे नज़्दीक ही है. यहींपर जयपुर राज्यके जमानेवाले दुलहाराय तथा पीछेसे उसके बेटेने मीना और बड़गूजरोंकी लड़ाईमें देवीसे बड़ी मदद पाई थी.

(२) ये लोग खान जादव नाम राजपूतकी औलादमें हैं, जो मुसल्मान होगया था. मेवातमें क़दीमसे राज्य इन्हींका था, लेकिन् अब इन लोगोंके कोई जागीरी या मुआफ़ीका गांव नहीं है, केवल नौकरीसे गुज़र करते हैं.

(३) ये लोग नामके मुसल्मान हैं, वर्नह इनके गांवके देवता वही हैं, जो कि हिन्दू ज़मींदारों के; इनके यहां कई एक हिन्दुओंके त्योहार, मसलन होली, दिवाली, दशहरा, व जन्माष्टमी वग़ैरह उसी ख़ुशीके साथ माने जाते हैं, जैसे मुहर्रम, शबबरात व ईद.

रंगरेज़, जुलाहा, कूंजड़ा, भिश्ती, क़साई, कमनीगर, धोबी, कोली, चमार, और कई मत वाले साधू तथा बहुतसे मुतफ़र्रक़ फ़िर्क़े आबाद हैं. ब्राह्मणोंमें सबसे ज़ियादह आदगौड़ इस इलाक़ेमें बस्ते हैं.

ज़मीनका पट्टा व महसूल वग़ैरह– इस राज्यमें सिवाय थोड़ेसे हिस्सेके, जो जागीरदारों वग़ैरहके क़ब्ज़ेमें है, ख़ालिसेकी ज़मीन ज़ियादह है. राज्यमें ज़मीनका पट्टा दो तरहका है, एक बंटी हुई ज़मीन, जो बापोतीके हक़के मुवाफ़िक़ बांटी गई है, जिसको पश्चिमोत्तर देशमें पट्टीदारी कहते हैं; और दूसरी ग़ोल याने बग़ैर बंटी हुई; यह दो तरहकी होती है, अव्वल यह कि, जिस शख़्सका ज़मीनपर क़ब्ज़ह है, उसीको पूरा इख़्तियार होगया है, वह भाइयों व हक़दारोंमें नहीं बंट सक्ती; उस ज़मीनका जवाबदिह वही शख़्स होता है, जिसके क़ब्ज़ेमें ज़मीन हो, चाहे वह उसे जोते बोवे या पड़ा रहनेदे; और जमाकी बांट अक्सर ज़मीनके लिहाज़से बीघोड़ीके हिसाबपर होती है. दूसरे ग़ोल पट्टेमें गांवकी ज़मीन शामिलातमें रहती है, और किसानोंको किरायेपर दीजाती है. इसमें बापोतीके हक़के अनुसार सबको भाई बंट बराबर मिलता है, और हासिल भी बराबर देते हैं, नफ़े नुक़्सानमें सब हिस्सेदार शामिल रहते हैं. यह भी एक क़िस्मका ज़मींदारी पट्टा है; ऐसे पट्टे इस राज्यमें अक्सर लोगोंको मिले हैं.

जहां जागीरदार हिस्सह लेता है, वह या तो आधा आधा, पांचवां तिहाई, या चौथाई होता है, और इससे ज़ियादह एक महसूल और है, लेकिन् कभी कभी तिहाई, और हमेशह चौथाई मुफ़ीद समझा जाता है. कुल पैदावारका तीसरा हिस्सह, और सिवा इसके फ़ी मन एक सेर अनाज ज़ियादह, गांवमें हर एक हलसे एक दिनका काम, हर एक लाव वालेसे एक बोझ हरा अनाज (बाल या भुट्टे) और हर एक शादीमें २) रुपये नक़्द और कभी नौकरोंके लिये खाना, बग़ैर जोती हुई ज़मीनकी घास और जंगली पैदावार, और पड़त ज़मीनपर १।) सवा रुपया एकड़के हिसाबसे हासिल लेनेका इख़्तियार जागीरदारको समझा जाता है. जागीरदारको इख़्तियार है, कि चाहे वह हासिलका नक़्द रुपया लेवे या अनाज लेवे. मालगुज़ारीका कोई एक मुक़र्रर निर्ख़ नहीं है, लेकिन् विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में जब मालगुज़ारीका नया बन्दोबस्त हुआ, उस वक़्त हासिलका निर्ख़ ज़मीन और जिन्स के लिहाज़से सींची जानेवाली ज़मीनपर १) रुपयेसे लेकर ९।=) तक, और बग़ैर सींचीजानेवालीपर ॥) आठ आनेसे ३॥) रुपये तक मुक़र्रर करदिया गया है. कुएं वाली रेतीली ज़मीन, जो ख़राब तरहसे सींची जाती है, और ख़ास उत्तरमें

ज़ियादह है, उसके लिये ५) रुपये फ़ी एकड़, और उम्दह तौरपर सींची जानेवाली दक्षिण पश्चिमकी ज़मीनके लिये २२) रुपये तक मह्सूल लिया जाता है. मह्सूल जो दिया जाता है, वह तअ़ज़ुबके लाइक़ है, याने राज्यके एक बीघेके लिये ११।) रुपया; लेकिन् किसी किसी बाग़की ज़मीनको सालभरमें बारह मर्तबह पानी दिया जाता है, इसलिये सिर्फ़ पानीका हासिल ४५) रुपया फ़ी एकड़ देना पड़ता है, और अगर इसमें मालगुज़ारी जोड़ीजावे, तो पचास रुपये होजाते हैं. जिस ज़मीन पर बाढ़ आती है, उसका हासिल फ़ी एकड़ ९) रुपये लिया जाता है. यह निर्ख़ महकमह बन्दोबस्तके जारी होनेसे पेश्तर ही ठहराया गया था. नहरोंसे सींची जानेवाली ज़मीन इस राज्यमें ४१६० बीघेसे ज़ियादह है; विक्रमी १९३१-३२ [हि० १२९१- ९२ = ई० १८७४-७५] में नहरोंकी जुदी आमदनी १७०४०) रुपये हुई थी.

जब गांवोंमें ठेका नहीं हुआ था, और कुल इन्तिज़ाम तह्सीलदार करते थे, तब रईसका मन्शा यह था, कि सिवाय २ और ३ रुपये सैकड़ाके, जो हक़ मुजाई कहलाता था, और गांवके सर्दारों या नम्बरदारोंको दिया जाता था, पूरा मह्सूल वुसूल होजावे. उस वक़ यह क़ाइदह था, कि हर एक फ़स्लकी मालगुज़ारी कई पीढ़ियोंसे हर एक हिस्सेके लिये राज्यकी तरफ़से बज़रीए क़ानूनगो लोगोंके मुक़र्रर होजाती थी. जब विक्रमी १९१९ [हि० १२७९ = ई० १८६२] में दस सालका बन्दोबस्त शुरू हुआ, तबसे राज्यभरमें लाओंकी तादाद १२६०४ से बढ़कर १६०७४ होगई है. विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] में बहुतसे ज़मींदारोंको सभाकी रायके मुवाफ़िक़ ८०००० रुपया पेशगी दिया गया, जिससे ३०० नये कुएं बनाये गये, और १०० से ज़ियादहकी मरम्मत कीगई. इस राज्यमें रहटके ज़रीएसे पानी नहीं निकाला जाता, कुओंपर चरसोंसे काम लेते हैं, जिसका ख़ास सबब यही है, कि कुएं गहरे ज़ियादह होनेसे रहट काम नहीं देसक्ता. यहांके कुओंका पानी सात तरहका होता है, मतवाला, मलमला, रुकल्ला, मीठा, खारा, तेलिया, और बज्रतेलिया, जिसमें तेल और सख़्त खार होता है. इनमेंसे पहिला पैदावारके हक़में सबसे बढ़कर और पिछले दो बिल्कुल ख़राब और बेकार होते हैं; ये पीने या खेतीको सींचने वग़ैरह किसी काममें नहीं आते. यहांके ज़मींदार लोग बनिस्बत अंग्रेज़ी इलाक़हके बिह्तर हालतमें हैं. तह्सीलोंमें गांवोंका हासिल बज़रीए पटवारी व अह्लकारोंके वुसूल होता है.

तह्सीलें-राज्य अलवरमें १२ तह्सीलें १-तिजारा, २-कृष्णगढ़, ३-मंडावर,

४-बहरोड़, ५-गोविन्दगढ़, ६-रामगढ़, ७-अलवर, ८-बान्सूर, ९-कठूंबर, १०- लक्ष्मणगढ़, ११-राजगढ़, और १२- थानहग़ाज़ी हैं, जिनका मुफ़स्सल बयान नीचे दर्ज किया जाता है :-

१-तह्सील तिजारा-यह तह्सील मेवातके बीचोंबीच अंग्रेज़ी इलाक़ह, जयपुर की तह्सील कोट क़ासिम और अलवरकी तह्सील कृष्णगढ़के नज़्दीक २५७ मील मुरब्बाके विस्तारमें वाके है. आबादी कुल तह्सीलकी क़रीब ५२००० आदमीके हैं. इस तह्सीलमें दो पर्गने-एक ख़ास तिजारा और दूसरा टपूकड़ा (१) है, जिनके मातह्त १९९ गांव ख़ालिसेके और सब मिलाकर २०२ हैं. इस तह्सीलकी ज़मीनका ज़ियादह हिस्सह कम उपजाऊ है, सबसे उम्दह ज़मीन दक्षिणी पश्चिमी तरफ़को है. ख़ास फ़स्ल बाजरा और इससे दूसरे दरजेपर उड़द, मूंग, मोठ, वग़ैरहकी होती है. पड़त ज़मीन किसी काममें नहीं आती. तिजारामें सींची जाने वाली ज़मीन सैकड़े पीछे बारहवें हिस्सेसे भी कम पाई जाती है. पूर्वकी पहाड़ियोंका बहाव तह्सीलके मुख्य बांधको पानी पहुंचाता है, जो गढ़ और बलवन्तसिंहके महलके नीचे है. आबोहवा इस तह्सीलकी आदमी और जानवरके लिये सिहतबख़्श और पुष्ट है; पहाड़ियोंके आसपास तो पानी बहुत ही नीचे निकलता है, लेकिन् और जगहोंमें २० से ५० फुट तक की गहराईपर पाया जाता है. शहर तिजारा अलवरसे ३० मील दूरीपर पूर्वोत्तरको वाके है; इसमें आबादी ७४०० आदमी और मालिक यहांके मेव, माली और ख़ानज़ादह हैं. शहरमें एक म्युनिसिपल कमिटी, एक हॉस्पिटल, एक मद्रसह और बड़ा बाज़ार है. खेतीके सिवा यहांपर कपड़ा और काग़ज़ भी बनता है. यह शहर मेवातकी क़दीम राजधानी था, और मौजूदह ज़मानेमें भी एक मश्हूर मक़ाम गिनाजाता है. बहुधा हिन्दुओंके ज़बानी बयानसे मालूम होता है, कि तिजारा सरेहताके राजा सुशर्माजीतके बेटे तेजपालने बसाया था, और इसका पुराना नाम 'त्रीगर्तक' था. तेजपाल यादवका नाम पिछले वक़्तोंकी तिजाराकी जैन कथामें मिलता है. तिजारामें एक गढ़, कई पुरानी मस्जिदें और मश्हूर शरूसोंकी क़ब्रें तथा पुरानी इमारतें पाई जाती हैं. इस तह्सीलमें कई गांव बहुत क़दीम ज़मानेके बसे हुए इस वक़ तक मौजूद हैं.

२- तह्सील किशनगढ़ (कृष्णगढ़) - यह तह्सील तिजाराके पास पश्चिमकी तरफ़ मेवातमें, उत्तरकी तरफ़ राज्य जयपुरकी तह्सील कोट क़ासिमसे मिली हुई क़रीब २१७ मील मुरब्बाके विस्तारमें वाके है. तह्सीलमें ९ पर्गने हैं, जिनमें

---

(१) पहिले यह ईंदोर और दक्षिणी तिजाराके नामसे प्रसिद्ध था.

१४४½ गांव ख़ालिसेके और १५½ गांव मुआफ़ीके हैं. ६१००० आदमियोंकी आबादी कुल तह्सीलमें मानी गई है. इस तह्सीलकी आधी ज़मीन अच्छी है. बाजरा, ज्वार, जव और रुई कस्रतसे पैदा होती है; कुओंका पानी किसी किसी जगह ८० फ़ुटसे भी ज़ियादह गहराईपर लेकिन् अक्सर १५ से ३५ फ़ुट तक मिलता है. कृष्णगढ़से एक मील पश्चिमकी तरफ़ बासकृपालनगर एक बड़ा व्यापारका क़स्बह है, और इससे दूसरे दरजेका राजपूतानह स्टेट रेलवेपर खैरथल स्टेशन है, जो बज़रीए एक पक्की सड़कके किशनगढ़से मिला है.

३- तह्सील मंडावर- यह तह्सील किशनगढ़के पश्चिम और उत्तरकी तरफ़ है; इसके पास बावल पर्गनए नाभा और शाहजहांपुर वगैरह कई गांव इलाके अंग्रेज़ीके वाके हैं. तह्सीलका कुछ हिस्सह राठमें और कुछ मेवातमें है. रक़्बह तक़ीबन् २२९ मील मुरब्बा और आबादी ५४००० आदमी है. तह्सीलके मुतअल्लक़ ६ पर्गनों में १२७ गांव ख़ालिसेके और १७ गांव जागीरदारोंके हैं. बाजरा, चना, जव और ज्वार यहां ज़ियादह पैदा होती है. पानी कुओंमें २० से ४० फ़ुटकी गहराईपर निकल आता है, लेकिन् कहीं कहीं ८० फ़ुटपर पाया जाता है. इस तह्सीलकी ज़मीन मुख्य चहुवान ठाकुरोंके क़ब्ज़हमें रही है. क़स्बह मंडावर, जो अलवरसे २२ मील उत्तरको है, क़रीब क़रीब पहाड़ियोंसे घिरा हुआ है, जो दक्षिणकी चटानी ज़मीनकी एक शाख़ है; और १७५७ फ़ुटकी ऊंचाई तक चली गई है. इस क़स्बेमें रावकी हवेलीके सिवा मस्जिद और क़ब्रें मश्हूर हैं; क़स्बेके पास ही एक पुराना बड़ा तालाब है. मंडावरमें एक थाना और तह्सील राज्यकी तरफ़से नियत है. घरोंकी तादाद ४८२ और आदमियोंकी आबादी २३३७ है.

४- तह्सील बहरोड़- राज्यके पश्चिमोत्तरी भागमें है. इसकी सीमाके चारों तरफ़ फिरनेसे यह मालूम होगा, कि राज्यके ठीक बाहर मुल्की बन्दोबस्तमें सात बार फेर फार है; दक्षिण पश्चिममें कोटपुतलीका कुछ थोड़ा हिस्सह साबी और सोताके बीचमें, और बाद उसके पटियाला और फिर नाभाकी रियासत है; उत्तरी तरफ़ गुड़गांवा, पूर्वोत्तरमें बावल पर्गनए नाभा, उससे आगे अलवरका एक कोना, और बाद उसके शाहजहांपुर और गुड़गांवाके दूसरे गांव और सबसे पीछे अलवरका इलाक़ह मिलता है. यह तह्सील राठमें है, जिसका रक्बह २६४ मील मुरब्बा और आबादी तक़ीबन् ६०००० आदमी गिनीजाती है. इस तह्सीलमें तीन पर्गने हैं, जिनके मुतअल्लक़ १३१ गांव ख़ालिसहके और २० मुआफ़ीके हैं. ज़मीन तह्सीलमें किसी जगह उपजाऊ और कहीं बहुत कम उपजाऊ है; बाजरा, ज्वार, मोठ, चना,

जव और गेहूं बनिस्बत दूसरे अनाजके अच्छा निपजता है. कुओंमें पानी २० से ५० फुट तककी गहराईपर अक्सर निकलआता है, लेकिन् कई जगह १३० फुट पर पायाजाता है. क़स्बह बहरोड़ अलवरसे ३४ मील पश्चिमोत्तर, और नारनौलसे १२ मील दक्षिण पूर्व तरफ़ है, जिसमें १०३० के क़रीब घर, ५३६८ आदमियोंकी आबादी, एक कच्चा मिट्टीका गढ़, जो हालमें बिल्कुल बेमरम्मत पड़ा है, तह्सील, थानह, और एक मद्रसह भी है. मद्रसेमें फ़ार्सी और हिन्दी पढ़ाई जाती है; हालमें एक हॉस्पिटल भी मुक़र्रर किया गया है. क़स्बेमें एक उ़म्दह छोटा बाज़ार और कई बड़े बड़े संगीन मकान हैं; अगर्चि यह क़स्बह इस वक्त भी ठीक आबाद है, लेकिन् विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में मरहटोंके हाथसे तबाह होने बाद अपनी क़दीम अस्ली हालतको नहीं पहुंच सका.

५- तह्सील गोविन्दगढ़- सिर्फ़ एक पर्गनह है, जिसके मुतअ़ल्लिक़ ५३ गांव ख़ालिसेके, और ३ मुआफ़ीके हैं, मेवातमें वाके़ है. इसका रक़्बह क़रीब ५२ मील मुरब्बा और आबादी २६००० आदमियोंकी है. तह्सीलकी ज़मीन अक्सर अच्छी है, रुई, बाजरा और ज्वार बहुत निपजती है; पानी सिर्फ़ १० से लेकर २५ फ़ुट तक कुआं खोदनेसे निकल आता है, और तह्सीलोंकी तरह यहां गहराई बिल्कुल नहीं पाई जाती. क़स्बह गोविन्दगढ़में एक तह्सील, एक थानह, और एक पाठशाला, और बाशिन्दोंकी तादाद ४२९० है. यह क़स्बह अलवरसे २५ मील पूर्वको बस्ता है.

६- तह्सील रामगढ़- यह तह्सील राज्यके मध्यमें तह्सील गोविन्दगढ़ और ज़ियादहतर रियासत भरतपुरसे मिली हुई मेवातमें वाके़ है, जिसका रक़्बह १४६ मील मुरब्बा और आबादी ५१००० आदमीकी है. रामगढ़की ज़मीन पैदावारीके लिहाज़से उ़म्दह समझी जाती है; बाजरा, ज्वार, और जव यहांकी मुख्य पैदावार है. तह्सील के मुतअ़ल्लिक़ एक पर्गनह और १०५ गांव हैं. डेढ़ सौ वर्ष पहिले इस क़स्बेमें आबादी बिल्कुल नहीं थी; लेकिन् इस अ़र्सेमें भोज नामका एक मुखिया चमार मए कई एक दूसरे चमारोंके पहिले पहिल वहां आकर रहा; और कुछ अ़र्से तक अपने भाइयोंकी सहा-यताके लिये बेगारमें काम करनेके सबब आसपासके बड़े गांवोंमें इसका नाम भोजपुर मश्हूर होगया; और चमारोंने अपना बहुतसा रुपया लगाकर रहनेके लिये पक्के मकानात बना लिये. विक्रमी १८०२-३ [हि० ११५८-५९ = ई० १७४५-४६] में पद्मसिंह नरूकाने इसको अपने क़ब्ज़ेमें लिया, और उसमें एक गढ़ बनवाकर उसका नाम रामगढ़ रक्खा; इस क़स्बेमें एक तालाब है.

७ - तह्सील अलवर- यह तह्सील रामगढ़के पश्चिम और नज़्दीक ही मेवातमें

है. राज्यमें सिर्फ़ यही तह्सील है, जो किसी गैर इलाक़ेसे नहीं मिली है. इसका रक्बह ४९६ मील मुरब्बा और आबादी १५२००० आदमी है. तह्सीलके मुतअ़ल्लक़ ३ पर्गने और १४० गांव ख़ालिसेके हैं. पानी ज़मीनकी सत्हसे २० या ३५ फ़ुटकी गहराई पर निकल आता है, और कई जगह ६० फ़ुटपर निकलता है, जो सबसे ज़ियादह गहराई मानी जाती है. ज़मीन इस तह्सीलकी सेराब है, राजधानीका नाम अलवर रक्खे जानेके दो सबब हैं- अव्वल तो यह कि पहिले यह अलपुर याने मज़्बूत शहर कहलाता था, और दूसरे, यह कि इसका नाम अरवल लफ़्ज़के हुरूफ़ बदलनेसे बना है, जो उस पहाड़ी सिल्सिलेका नाम है, जिससे अलवरकी पहाड़ियां मिली हुई हैं. शहर उसी पहाड़ी सिल्सिलेके दामनमें बसा है, और चोटीपर एक गढ़ मए महलके १००० फ़ुट ऊंचा बना हुआ है. लोगोंके ज़बानी बयानसे पाया जाता है, कि यह गढ़ और प्राचीन शहर, जिसके निशानात गढ़के नीचे पहाड़ियोंमें दिखाई देते हैं, इस राज्यके क़दीम मालिक निकुंप राजपूतोंने बनवाया था. शहर अलवरके गिर्द पांच दर्वाज़ों सहित शहर पनाह और खाई बनी हुई है, और उसके अन्दर बाज़ारकी सड़कों व गलियोंमें पत्थर जड़े हुए हैं. रावराजा विनयसिंहका बनवाया हुआ महल, और साम्हनेकी तरफ़ बरूतावरसिंहका जलाशय और छत्री, मद्रसह, बाज़ार, हॉस्पिटल बाज़ारमें जगन्नाथजीका मन्दिर उम्दह व देखनेके लायक़ मकानात हैं; परन्तु सबसे बढ़कर कारीगरी व ख़ूबसूरतीमें बरूतावरसिंहकी छत्री क़ाबिल तारीफ़के है. एक गुम्बज़दार मकानमें, जो बाज़ारकी चारों सड़कोंके बीचमें त्रिपोलिया नामसे प्रसिद्ध है, फ़ीरोज़शाहके भाई तरंग सुल्तानकी प्राचीन क़ब्र है. सिवा इसके कई पुरानी मस्जिदें हैं, जिनपर लेख खुदे हुए हैं. सबसे बड़ी मस्जिद महलके दर्वाज़ेके पास है, जिसके बननेका साल विक्रमी १६१९ [हि० ९६९ = ई० १५६२] लिखा है, उसमें अब राज्यका भंडार है; अलावह इनके कई क़ब्रें नामी आदमियोंकी और मस्जिदें वगैरह पुरानी इमारतें मश्हूर हैं; मोती डूंगरीका बाग़ और रेल्वे स्टेशनके पास थोड़ी दूरपर महल बड़ी रौनक़ और सैरका मक़ाम है.

८- तह्सील बान्सूर- राज्यके मध्यमें अलवरकी तह्सीलके पास कुछ तो राठमें और कुछ बालमें ३३० मील मुरब्बा रक्बेके विस्तारसे पश्चिमी तरफ़ कोटपुतली तथा जयपुरके इलाक़हसे मिलीहुई वाक़े है. आबादी कुल तह्सीलकी ६७००० आदमी, आठ पर्गने, और १३६ गांव हैं. ज़मीन इस तह्सीलमें सब तरहकी है, कहीं सबसे उम्दह और कहीं बिल्कुल ख़राब; पानीकी औसत गहराई २० से ३०

फ़ुट तक और कहीं कहीं ७० फ़ुट भी पाईजाती है. क़स्बह बान्सूर शहर अलवर से २० मील पश्चिमोत्तरमें है, सड़कके रास्ते ३० मीलसे भी ज़ियादह पड़ता है; क़स्बेमें ६२० घर और २९३० आदमीकी आबादी है. शहरके साम्हने चटानी पहाड़ीपर एक गढ़ बना हुआ है, और वहीं तह्सीलके लिये एक मकान बनाया गया है.

९- तह्सील कठूंबर- यह तह्सील राज्यकी दक्षिणी तह्सीलोंमेंसे सबसे अव्वल, कुछ तो नरूखंडमें और कुछ कटेरमें वाके है, जिसके तीन तरफ़ भरतपुरकी ज़मीन है. इसका रक़्बह १२२ मील मुरब्बा और आबादी ३९००० आदमी हैं. तह्सील में तीन पर्गनोंके मुतअ़ल्लक़ ८१ गावोंमेंसे ६७ ख़ालिसेके और १४ मुआ़फ़ीके हैं. ज़मीनका $\frac{२}{३}$ हिस्सह तो ख़राब और बाक़ी अच्छा है. बाजरा, मोठ, ज्वार, रुई और जव यहांकी धरतीमें अच्छे निपजते हैं. कठूंबरके बाज़ बाज़ कुओंमें पानी ७० और ८० फ़ुटके दर्मियान गहराईपर मिलता है, लेकिन् आ़म जगहोंमें ३० फ़ुटके लग भग निकल आता है. क़स्बह कठूंबर अलवरसे ३८ मील दक्षिण पूर्वमें ८२८ घर और ३१४९ मनुष्योंकी बस्तीका पुराना क़स्बह है.

१०- तह्सील लक्ष्मण गढ़- लक्ष्मणगढ़की तह्सील कठूंबरके पास नरूखंडमें जयपुर और भरतपुरके राज्यसे मिली हुई है; रक़्बह इसका २२१ मील मुरब्बा और बाशिन्दोंकी तादाद ७०००० है. तह्सीलमें सिर्फ़ एक पर्गनह और १०८ गांव हैं; जहां बाढ़ आती है, वह ज़मीन ज़ियादह हल्की है; बाजरा, मोठ, ज्वार, जव, रुई और चना यहांकी ख़ास पैदावार है. कुओंकी गहराई ख़ासकर १९ से ३९ फ़ुट तक, परन्तु तह्सीलमें ७० फ़ुटकी गहराई मिलती है. लक्ष्मणगढ़का क़दीम नाम टवर था. प्रतापसिंहने स्वरूपसिंहसे यह मक़ाम पाकर गढ़को बढ़ाया, और उसका नाम लक्ष्मण गढ़ रक्खा.

११- तह्सील राजगढ़- दक्षिणी तह्सील राजगढ़का किसी क़द्र हिस्सह नरूखंडमें है, लेकिन् इसका पश्चिमी हिस्सह बड़गूजर और राजावत देश था. रियासत जयपुर इसकी दक्षिणी सीमाके किनारेपर है. इसका रक़्बह ३७३ मील मुरब्बा और आबादी ९८००० आदमीके क़रीब मानी गई है. तह्सीलमें ७ पर्गने, १०८ गांव ख़ालिसेके और ९९ गांव मुआ़फ़ीके हैं. यहांकी क़रीब क़रीब तमाम ज़मीन उपजाऊ है; जव, मोठ, बाजरा, रुई, ज्वार मुख्य पैदावार है. राजगढ़के आसपासकी पहाड़ियोंका पानी, जो भागुला बन्दमें रोका जाता है, उससे बहुतसी ज़मीन तथा आसपासके गांवोंको भी फ़ायदह पहुंचता है.

कुत्र्योंमें पानी १० फुटसे लेकर ३५ फुटतक तो हर जगह मिलता, और कहीं कहीं ७५ फुटकी गहराईपर निकलता है. राजगढ़में बहुतसे उम्दह मकानात हैं; ख़ास गढ़ और उसके महल, एक मन्दिर और दादूपन्थियोंका मठ वग़ैरह ज़ियादह मश्हूर हैं. लक्ष्मणगढ़ और राजगढ़, दोनों तह्सीलें नरूका राजपूतोंके रहनेकी ख़ास जगह कही जाती हैं. पर्गने टहलामें पहाड़ीपर नीलकण्ठ का एक प्रसिद्ध प्राचीन स्थान है. किसी ज़मानेमें इन पहाड़ियोंकी ऊंची ज़मीनपर एक बड़ा शह्र मन्दिरों और मूर्तियोंसे सुशोभित था. क़स्बह राजगढ़का पुराना नाम राजोड़गढ़ था, जो टॉड साहिबके लेखके मुवाफ़िक़ क़दीम ज़मानेमें बड़गूजर राजाओंकी प्राचीन राजधानी समझी जाती थी. इस मक़ाममें चटानको काटकर बनाई हुई. आदमीकी मूर्ति और एक बड़ा गुम्बज़दार मन्दिर देखनेके लाइक़ अजायबातमेंसे है.

१२- तह्सील थानहग़ाज़ी- यह तह्सील राजगढ़के पास दक्षिण और पश्चिममें रियासत जयपुरसे जामिली है; रक्बह इसका २८७ मील मुरब्बा और आबादी ५५००० आदमी है. तह्सीलके पांच पर्गनोंमें १२१ गांव ख़ालिसहके और २३ मुआफ़ीके हैं; ज़मीन यहांकी बहुत उम्दह है. मक्की, जव और मोठ कस्रतसे निपजते हैं. कुत्र्योंमें पानी ३० फुटसे नीचे गहराईपर निकल आता है, और अजबगढ़में १५ फुटसे भी कम गहराईपर. बलदेवगढ़, प्रतापगढ़ और अजबगढ़में आबादी अच्छी है, और क़स्बोंमें एक एक गढ़ बना हुआ है.

मेले और देवस्थान- शह्र अलवरमें गनगौर और श्रावणी तीजके प्रसिद्ध उत्सव, मार्च और ऑगस्टमें होते हैं. आषाढ़में जगन्नाथका उत्सव, साहिबजी (देवता) का मेला, जिनका स्थान शह्रके पास तिजाराकी सड़कपर है, होता है. पर्गने डेहरामें शह्रसे ८ मील पश्चिमोत्तरको फ़ेब्रुअरी महीनेमें चूहर सिंध (१) का मेला शिवरात्रिके दिन होता है. बान्सूरमें हर साल मार्च और एप्रिलमें बिलाली माताका मेला लगता है. राजगढ़में रथयात्राका मेला आषाढ़में; वैशाखमें अलवरसे ८ मील दूर सीली सेढ नामकी झीलपर शीतला देवीका मेला; कुंडल्क, थानह ग़ाज़ीमें वैशाख और भाद्रपदमें भर्तृहरिका मेला; घसावली, (घासोली) किशनगढ़में भाद्रपद महीनेमें साहिबजीका

---

(१) यह मेला एक मेव महापुरुषके नामपर होता है, जिसकी पैदाइश एक मेव और नाई क़ौमकी औरतसे औरंगज़ेबके वक्में होना बयान कीजाती है. वह धनेता गांवमें पैदा हुआ, और मह्सूल वुसूल करने वालेके डरसे घर छोड़कर खेतोंकी रखवाली और मवेशीकी चराईपर अपना गुज़र करता था. इत्तिफ़ाक़से उसको शाह मदार नामी एक मुसल्मान वली कहीं मिल गये, जिससे वह अजीब अजीब काम करने लगा. आख़िरको उसने वर्तमान धामकी जगह अपने रहनेका मक़ाम क़रार दिया.

मेला; पालपुर, किशनगढ़में माघ, वैशाख और ज्येष्ठमें हरसाल तीन मर्तबह शीतला देवीका मेला; दहमी, बहरोड़में चैत्र व आश्विनमें देवीका मेला; माचेड़ी, राजगढ़में चैत्रमें देवीका मेला; वरवाडूंगरी, बलदेवगढ़, थानह गाज़ीमें वैशाखमें नारायणीका मेला; और शेरपुर, रामगढ़में आश्विन, आषाढ़ व माघमें लालदासका मेला होता है. ऊपर लिखे हुए मेलोंमेंसे बिलाली और चूहरसिंधके मेले सबसे बड़े हैं. लोगोंके ज़बानी बयानसे मालूम हुआ कि, पिछले दो मेलोंमें अस्सी हज़ार आदमियोंके क़रीब यात्री जमा होते हैं.

सड़कें और रास्ते- रेलकी सड़क, विक्रमी १९३२ भाद्रपद शुक्ल १२ [हि० १२९२ ता० ११ शअ्बान = ई० १८७५ ता० १४ सेप्टेम्बर] को दिल्लीसे अलवर तक राजपूतानह स्टेट रेलवेकी सड़क खुली, और इसी सालके मृगशिर शुक्ल ६ [हि० ता० ५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० ६ डिसेम्बर] को वह दिल्लीसे बांदीकुई होकर गुज़री. यह सड़क उत्तरसे दक्षिणको अलवर राज्यमें होकर इलाक़ेके दो हिस्से करती हुई गई है. अजेरका, खैरथल, अलवर, मालाखेड़ा और राजगढ़ वग़ैरह इस राज्यमें कई रेलवेके स्टेशन हैं; दो बड़े बड़े पुल सड़कपर बने हैं, जिनमें एक तो अलवरसे ४ मील उत्तरमें और दूसरा किसी क़द्र ज़ियादह दक्षिणकी तरफ़ है. कप्तान इम्पी पोलिटिकल एजेएटकी कोशिश व मेजर स्ट्रॅटन और बॉयर्स साहिब एग्ज़िक्युटिव एन्जिनिअरके प्रबन्धसे यह रेलवे तय्यार हुई. सिवा इस लाइनके राज्यमें बड़े बड़े २६ रास्ते तथा सड़कें गाड़ी, घोड़ा व पैदलके जाने आनेके लिये हैं, जिनमेंसे कई एकको कप्तान इम्पी और सभाकी रायके मुवाफ़िक़ तय्यार किया गया है. विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में मुल्की इन्तिज़ामके लिये एक सभा मुक़र्रर होने बाद सड़कोंपर बहुत ध्यान दिया गया. मेजर केडलने रेलके स्टेशनोंको जानेवाली सड़कोंका प्रबन्ध किया; और नीचे लिखी हुई सड़कें तय्यार कीं:- १- अलवरसे भरतपुरकी सर्हद तक; २- अलवरसे गुड़गांवा ज़िलेको; ३- अलवरसे कृष्णगढ़तक; ४- खैरथलसे तिजाराको; ५- तिजारासे फ़ीरोज़पुरकी तरफ़; ६- लक्ष्मणगढ़से मालाखेड़ाको; ७- मौजपुरसे राजगढ़ तक; ८- खैरथलसे हरसोरा, बहरोड़, और बान्सूरको; और ९- मालाखेड़ासे गाज़ीके थानह तक. ये ९ सड़कें ऊपर बयान किये हुए रास्तोंके सिवा हैं.

व्यापार और दस्तकारी- इस राज्यमेंसे व्यापारके लिये नाज, रुई, चीनी, गुड़, चावल, नमक, घी, कपड़ा और कई फुटकर चीज़ें बाहर जाती हैं; और यही चीज़ें बाहरसे यहां बिकनेके लिये आती हैं. इनका सर्कारमें महसूल लिया जाता है. लोहा और तांबा पहिले इस राज्यमें बहुत निकाला जाता था, जिसमें

बहुतसे लोगोंका निर्वाह होता था, लेकिन् अब यह काम बन्द होगया है.

अलवरके पेचे, चींरेकी रंगत, उन्नावी, सब्ज़ काही, वगैरह हर तरहके रंग तारीफ़के लायक़ हैं, और मछली मक़ामका बना हुआ तोड़ेदार व चापदार धसका मश्हूर है; तिजारेमें कागज़ बहुत बनाया जाता है, और एक तरहका घटिया काच भी एक क़िस्मकी मिट्टीसे बनता है. कारीगर यहांके होश्यार और चतुर हैं.

अलवरका इतिहास.

जयपुरके बाद हम नरूके राजपूतोंका इतिहास लिखते हैं, जो उनकी शाखमेंसे एक खानदान पिछले ज़मानेमें इस देशपर क़ाबिज़ हुआ. रियासतकी तरफ़से हमको कोई तवारीख़ नहीं मिली, इसलिये यह हाल मेजर पी० डब्ल्यू० पाउलेट्के गज़ेटिअर व वक़ाये राजपूतानह अथवा पोलिटिकल एजेन्टोंकी रिपोर्टोंसे खुलासह करके लिखा गया है.

ढूंढाड़के १४ वें राजा उदयकरणका हाल जयपुरकी तवारीख़में लिखा गया है, पाउलेट् साहिबने उनकी गादी नशीनीका संवत् विक्रमी १४२४ [हि० ७६८ = ई० १३६७] लिखा है, और जयपुरकी तवारीख़से विक्रमी १४२३ माघ कृष्ण २ [हि० ७६८ ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १३६६ ता० २० डिसेम्बर] मालूम हुआ; लेकिन् ये दोनों संवत् क़ाबिल एतिबार न समझकर इस विषयमें हमने अपनी राय जयपुरकी तवारीख़में ज़ाहिर की है- देखो पृष्ठ १२७२).

मेजर पाउलेट् लिखते हैं, कि उदयकरणका बड़ा पुत्र बरसिंह था, जिसने अपने बापको एक बातकी ज़ुरूरतपर दूसरी शादी करवाकर उस राणीसे, जो बेटा (नृसिंह) पैदा हुआ, उसके लिये राजगद्दी छोड़ी, और आप चौरासी गांव समेत मोजाबाद वगैरहकी जागीर लेकर छोटे भाईका तावेदार बना. १- बरसिंहके

२- महराज और उसका नरू हुआ, जिसका वंश कछवाहोंमें नरूका मश्हूर है. ३- नरूके पांच पुत्र थे, १- लाल, जिसके लालावत नरूका अलवरके राव राजा वग़ैरह; २- दासा, जिसके दासावत नरूका उणियारा, लावा, लदूणा वग़ैरह; ३- तेजसिंह, जिसके तेजावत नरूका जयपुर तथा अलवरमें हादीहेड़ा वग़ैरह; ४- जैतसिंह, जिसके जैतावत नरूका, गोविन्दगढ़ वग़ैरह; ५- छीतर, जिसके छीतरोत नरूका अलवरके इलाके नैतला, केकड़ी वग़ैरहपर क़ाबिज़ हैं.

नरूका बड़ा पुत्र लालसिंह कम हिम्मतीके कारण छोटा बनकर बारह गांवों सहित झाकका जागीरदार बना, और उससे छोटा दासा, जो बड़ा बहादुर था, अपने बापकी जगहपर क़ाइम रहा. ४- लालसिंह, कछवाहा वंशके सर्दार राजा भारमल्लका ख़ैरख़्वाह रहा, इस वास्ते राजाने उसको रावका ख़िताब और निशान दिया. लालसिंहका बेटा उदयसिंह राजा भारमल्लकी हरावल फ़ौजका अफ़्सर गिना जाता था. इसके एक पुत्र लाड़खां (१) हुआ.

५- लाड़खां आंबेरके महाराजा मानसिंहके बड़े सर्दारोंमें गिनाजाता था, और उसका बेटा फ़त्हसिंह था. ६- फ़त्हसिंहके १- राव कल्याणसिंह, २- कर्णसिंह, जिसकी सन्तान अलवरमें राजगढ़के ग्राम वहालीपर क़ाबिज़ है; ३- अक्षयसिंह, जिसकी नस्ल वाले राजगढ़के ग्राम नारायणपुरके मालिक हैं. ४- रणछोड़दासकी औलाद वाले जयपुर इलाक़हके टीकेल ग्रामपर क़ाबिज़ हैं.

७- कल्याणसिंह, पहिला पुरुष था, जो, अलवरके इलाक़हमें जमाव करने वाला हुआ; लेकिन् दासावत नरूके अलवरके देश नरूखण्डमें पहिलेसे आबाद थे; उनको आंबेरके महाराजा जयसिंह अव्वलने माचेड़ी गांव जागीरमें दिया, जो नरूखण्डकी सीमापर है; उसकी नौकरी कामामें बोली गई, जो अब भरतपुरके राज्यमें है. कल्याणसिंहके छः पुत्र थे, जिनमेंसे पांचकी सन्तान बाक़ी है. १- आनन्दसिंह माचेड़ीपर, २- श्यामसिंह पारामें, ३- जोधसिंह पाईमें, ४- अमरसिंह खोरामें, ५- ईश्वरीसिंह पलवामें क़ाबिज़ रहा. इन पांचोंके पास कुल चौरासी घोड़ोंकी (२) जागीर थी.

८- आनन्दसिंहके दो बेटे थे, बड़ा ज़ोरावरसिंह, जो माचेड़ीका पाटवी सर्दार बना, और दूसरा ज़ालिमसिंह, जिसको बीजवाड़ मिला. इस समय अलवरके क़रीबी

---

(१) लाड़खांका ख़िताब बादशाह अक्बरका दिया हुआ था.

(२) एक घोड़ेकी जागीरमें ४०० बीघाके अनुमान ज़मीन समझी जाती है.

हक़दारोंमें बीजवाड़ वाले अव्वल नम्बर हैं. वक़ाये राजपूतानहमें पाउलेट् साहिबके लेखके ख़िलाफ़ और सिवाय इस तरहपर लिखा है:-

" कि कल्याणसिंह विक्रमी १७२८ आश्विन कृष्ण २ [हि० १०८२ ता० १६ जमादियुलअव्वल = ई० १६७१ ता २० सेप्टेम्बर] को माचेड़ीमें आया, और उसका बेटा ९- राव उग्रसिंह (१) था, जिसके १०- तेजसिंह, उनके ११- ज़ोरावरसिंह, उनके १२- मुहब्बतसिंह, उनके १३- प्रतापसिंह, जिनका जन्म विक्रमी १७९७ ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० ११५३ ता० १७ सफ़र = ई० १७४० ता० १३ मई] को हुआ था.

१- राव राजा प्रतापसिंह.

इनकी जागीरमें ढाई गांव, माचेड़ी, राजगढ़ और आधा रामपुर, राज्य जयपुरकी तरफ़से थे; लेकिन् इस शख़्सने बड़ी तरक़्की करके एक रियासत बनाली. पहिले इन्होंने अपने मालिक जयपुरके महाराजा माधवसिंहकी नौकरीमें नाम पाया. जब कि क़िला रणथम्भोर बादशाही मुलाज़िमोंने मरहटोंसे तंग आकर जयपुरके सुपुर्द करदिया, उस समय बहादुरी और हिक्मत अमलीमें प्रतापसिंह अव्वल नम्बर रहे, लेकिन् इनकी तरक़्क़ीसे दूसरे लोगोंके दिलोंपर खौफ़ छा जानेके सबब उन लोगोंने विक्रमी १८२२ [हि० ११७९ = ई० १७६५] में ज्योतिषी वग़ैरह लोगोंसे महाराजा माधवसिंहको कहलाया, कि प्रतापसिंहकी आंखोंमें राज्य चिन्ह दिखाई देता है. इस बातसे महाराजा नाराज़ रहने लगे, और प्रतापसिंहको जानका ख़तरा हुआ; बल्कि एक दफ़ा शिकारमें महाराजाकी तरफ़से उनपर बन्दूक़ भी चली, जिसकी गोली उनके बदनसे रगड़ती हुई निकल गई. इस डरसे वे अपनी जागीर माचेड़ीको चले गये, और वहांसे भरतपुरके राजा सूरजमल्ल जाटके पास पहुंचकर उसके नौकर बनगये. फिर सूरजमल्लके बेटे जवाहिरसिंहने पुष्करकी तरफ़ कूच किया, तो उसका इरादह जयपुरके बर्ख़िलाफ़ जानकर प्रतापसिंह अलहदह होगये.

जिस वक़्त मौज़े डेहरासे प्रतापसिंह रवानह होनेवाले थे, उस वक़्त एक लौंडीको बर्तन मांझनेके वक़्त मिट्टी खोदते हुए अशरफ़ी व बहुतसा रुपया वग़ैरह धन गड़ा

(१) शायद पाउलेट् साहिबने उग्रसिंहका आनन्दसिंह लिखदिया है, अथवा ज्वालासहायने आनन्दसिंहको उग्रसिंह लिखदिया.

हुआ मिला, जिसको राव राजाने ऊंटोंपर लदवाकर जयपुरकी तरफ़ कूच किया. वहां पहुंचकर महाराजा माधवसिंहसे जवाहिरसिंहके पुष्कर स्नानको आने और अपने ख़ैरख़्वाहीकी नज़रसे हाज़िर होजानेकी अ़र्ज़ की. इसपर महाराजा बहुत ख़ुश हुए, और शाबाशी दी. लौटते समय जवाहिरसिंहसे जयपुरकी फ़ौजका मांवडा मक़ामपर विक्रमी १८२३ [हि० ११८० = ई० १७६६] में मुक़ाबलह हुआ, तब प्रतापसिंहने जवाहिरसिंहपर हमलह किया. इस बातसे उसकी जयपुरसे दुश्मनी जाती रही, बल्कि महाराजा माधवसिंहने राव राजाका ख़िताब और माचेड़ीके सिवाय राजगढ़में क़िला बनानेकी इजाज़त दी. इसके बाद प्रतापसिंहने ख़ुद मुख़्तार होनेकी कार्रवाई की, और विक्रमी १८२७ [हि० ११८४ = ई० १७७०] में टहला और राजपुरमें गढ़ बनवाये. विक्रमी १८२८ [हि० ११८५ = ई० १७७१] में राजगढ़का क़िला पूरा करके क़स्बह आबाद किया, और देवती झीलमें जलमहल बनवाकर पालके नीचे बाग़ लगाया. विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में मालाखेड़ाका क़िला तय्यार करवाया. विक्रमी १८३० [हि० ११८७ = ई० १७७३] में बलदेवगढ़, और इन्हीं दिनोंमें सेंथल, मेंड, बैराट, आंबेला, भाभरा, तालाधौला, डब्बी, हरदेवगढ़, सिकराय और बावड़ीखेड़ा गांव भी राव राजाके क़ब्ज़हमें आगये थे, मगर कुछ अ़रसह बाद राज जयपुरके शामिल होगये.

विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = ई० १७७४] में नव्वाब मिर्ज़ा नजफ़ख़ांके साथ रहकर भरतपुरकी फ़ौजसे आगरा ख़ाली कराया. इस ख़ैरख़्वाहीके एवज़ उक्त नव्वाबकी सिफ़ारिशसे बादशाह शाहआ़लमने प्रतापसिंहको राव राजाका ख़िताब, पांच हज़ारी मन्सब, माचेड़ीकी जागीर व माही मरातिब दिया, और माचेड़ी हमेशहके लिये राज्य जयपुरसे अ़लहदह होगई. विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में प्रतापगढ़का क़िला बनवाया.

इसी समयके लग भग काकवाड़ी, ग़ाज़ीका थानह, और अजबगढ़के क़िले बने, जो अलवरसे नैऋत्य कोणमें वाक़े हैं; और कुछ अ़रसह बाद उसने सीकरके रावसे मेल करके उस तरफ़ अपना राज्य बढ़ाया. फिर उसने विक्रमी १८३२ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० ११८९ ता० २ शव्वाल = ई० १७७५ ता० २५ नोवेम्बर] को अलवरका क़िला भरतपुर वालोंसे लेलिया. इसी सालसे प्रतापसिंहको उनके भाइयोंने भी अपना मालिक माना, और ज़ियादहतर उस वक़्से, जब कि उसने लक्ष्मणगढ़ (पहिले टॉडगढ़) के मालिक स्वरूपसिंहको दग़ासे पकड़कर मरवाडाला, नरूखंडमें उसका रोब ख़ूब जम गया.

विक्रमी १८३६ [हि० ११९३ = ई० १७७९] के लगभग उसने नजफ़ख़ां, बादशाही मुलाज़िमके पंजेसे निकलकर लक्ष्मणगढ़का आसरा लिया. विक्रमी १८३९ [हि० ११९६ = ई० १७८२] में रावल नाथावत व दौलतराम हलदियाकी सलाहसे, जो पहिले राव प्रतापसिंहका नौकर था, और नाराज़ होकर जयपुर चलागया था, राजगढ़पर जयपुरके महाराजा सवाई प्रतापसिंहने चढ़ाई की; और बस्वामें पहुंचकर ठहरे. महाराव राजा प्रतापसिंह पांच सौ सवार लेकर रातके वक़ महाराजाके लश्करमें पहुंचे, ख़ौफ़ या ग़फ़लतके सबब लश्कर वालोंमेंसे किसीने उनको नहीं रोका. उन्होंने जातेही अव्वल महाराजाके ख़ेमेके दर्वाज़ेपर जो एक पखालका भैंसा खड़ा था, उसे मारा; वहांसे नाथावत ठाकुरोंके डेरेपर जाकर कई आदमी क़त्ल किये, और राजगढ़की तरफ़ लौटे. लौटते वक़ जयपुरके लश्करवालोंने उनका पीछा किया; रास्तेमें बड़ी भारी लड़ाई हुई, दोनों तरफ़के सैकड़ों आदमी मारेगये. राव राजाकी तरफ़ वालोंमेंसे सावन्तसिंह नरवान, जिसकी शक्ल कुछ कुछ महाराव राजाकी सूरतसे मिलती हुई थी, मर्दानगीके साथ लड़कर काम आया; जयपुरके लोग उसकी लाशको महाराव राजाकी लाश ख़याल करके महाराजा प्रतापसिंहके रूबरू लेगये, जिसको देखकर महाराजा बहुत ख़ुश हुए, और उस लाशको ताज़ीमके साथ दाग़ दिलवाया; लेकिन् जब मालूम हुआ, कि महाराव राजा ज़िन्दह हैं, महाराजाको बड़ी शर्मिन्दगी पैदा हुई, और राजगढ़पर फ़ौज कशी करनेका हुक्म दिया, मगर ख़ुशालीराम बौहराने, जो पहिले महाराव राजा प्रतापसिंहके पास नौकर था, और इस वक़ भी उनका दिलसे ख़ैरख़्वाह था, महाराजाको लड़ाई करनेसे रोका. आपसमें सुलह होकर फ़ौज जयपुरको वापस गई, मगर इस अ़रसहमें जयपुर वालोंने पिरागपुरा व पावटा वग़ैरह गांवोंपर क़ब्ज़ह करलिया, और ख़ुशालीराम बौहरापर सख़्ती की. तब महाराव राजाने जयपुरके सर्दारोंसे मिलावट करके यह तज्वीज़ की, कि महाराजा प्रतापसिंहको गद्दीसे ख़ारिज करके उनकी जगह दूसरा रईस मुक़र्रर करदिया जावे. इस ग़रज़से वह महाराजा सेंधियाकी फ़ौजको जयपुरपर लेगये, और कृष्णगढ़ डूंगरी मक़ामपर डेरा किया. महाराजा जयपुरने पोशीदह तौरपर सुलह करनेकी महाराव राजासे दर्ख़्वास्त की, जिसे महाराव राजाने चन्द शर्तोंपर मंज़ूर किया, और महाराजा सेंधियाकी फ़ौजको रवानह करने बाद जिस शख़्सको जयपुरकी गद्दीपर बिठाना तज्वीज़ किया था, उसे महाराजा सेंधियासे इ़लाक़ह मान्ट और महावनकी सनद दिलाकर अपनी रियासतको वापस आये.

महाराव राजा प्रतापसिंहके मुसाहिब होशदारख़ां, नबीबख़्शख़ां, और इलाही-

बख्शखां शैखोंने बहुत बड़े बड़े काम अंजाम दिये. एक पुरानी तवारीख़में लिखा है, कि उक्त महाराव राजाने हमेशह ज़बर्दस्त और ताक़तवर फ़रीक़के शामिल रहकर अपनी कुव्वत और मर्तबेको हर तरह क़ाइम रक्खा. विक्रमी १८४७ पौष कृष्ण ५ [हि० १२०५ ता० १९ रबीउ़स्सानी = ई० १७९० ता० २६ डिसेम्बर] को १५ (१) वर्ष राज्य करने बाद राव राजा प्रतापसिंहका इन्तिक़ाल होगया. यह महाराव राजा बड़े बहादुर सिपाही थे. उनके कोई लड़का न था, परन्तु अपने जीवनमें उन्होंने थानहकी कोटड़ीसे बख़्तावरसिंहको वलीअ़हद बनालिया था. प्रतापसिंहके मरनेके समय छः या सात लाख रुपया सालानह आमदनीके नीचे लिखे हुए ज़िले उनके क़ब्ज़हमें थेः-

अलवर, मालाखेड़ा, राजगढ़, राजपुर, लक्ष्मणगढ़, गोविन्दगढ़, पीपलखेड़ा, रामगढ़. बहादुरपुर, डेहरा, जींदोली, हरसोरा, बहरोड़, बड़ौद, बान्सूर, रामपुर, हाजीपुर, हमीरपुर, नरायणपुर, गढ़ी मामूर, ग़ाज़ीका थानह, प्रतापगढ़, अजबगढ़, बलदेवगढ़, टहला, खूंटेता, ततारपुर, सेंथल, गुढ़ा, डुब्बी, सिकरा, बावड़ी खेड़ा.

२- महाराव राजा बख़्तावरसिंह.

यह विक्रमी १८४७ [हि० १२०५ = ई० १७९०] में १५ वर्ष उम्रके होकर गद्दीपर बैठे. प्रतापसिंहके पुराने दीवान रामसेवकने मरहटोंको राजगढ़ पर बुलाया, और माजी गौड़जीसे नाइत्तिफ़ाक़ी करादी; इस क़ुसूरपर महाराव राजाने उस काम्दारको धोखेसे अलवरमें बुलाकर राजगढ़में क़ैद रखने बाद मरवा डाला, और मरहटोंकी फ़ौज वापस चली गई. जब विक्रमी १८५० [हि० १२०७ = ई० १७९३] में बख़्तावरसिंह मारवाड़में कुचामनके ठाकुरकी बेटीसे शादी करनेको गये, और लौटकर जयपुर आये, तो महाराजाने उसको नज़र क़ैद रक्खा, उससे सेंथल, गुढ़ा, डुब्बी, सिकरा, और बावड़ी खेड़ा लेकर छोड़ दिया; और उसने बावल, कांटी, फ़ीरोज़पुर और कोटपुतलीपर क़ब्ज़ह करलिया. विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १८००] में ख़ानज़ादह ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको घसावलीसे निकालकर उसके पास गोविन्दगढ़ आबाद किया. और मरहटोंके ग़द्रके वक़्त अपने वकील अहमदबख्शख़ांको भेजकर गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी सहायता ली, जब कि लॉर्ड लेकने लसवाड़ीको विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में फ़त्ह किया. उसको अलवरसे फ़ौज और सलाहकी अच्छी मदद मिली, इस ख़िद्मतके एवज़ राठका ज़िला सर्कार अंग्रेज़ीसे बख़्तावरसिंहको इन्आ़ममें मिला, और

(१) इसका राजा होना उस दिनसे माना गया है, जबसे बादशाह शाह आ़लमने राव राजाका ख़िताब दिया.

अहमदबरुशको फ़ीरोज़पुरका ज़िला बरुशा गया. अलवरके राव राजाने अपने वकीलको इस इन्आममें लुहारुकी जागीर दी, जो उनकी औलादके क़ब्ज़ेमें है; और इसी तरह लॉर्ड लेकने बएवज़ उम्दह ख़िद्मतोंके पर्गनह फ़ीरोज़पुर दिया था, जो एक मुद्दत तक उसके क़ब्ज़हमें रहा; परन्तु उसके बेटे नव्वाब शम्सुद्दीनख़ांकी मस्नदनशीनीके ज़मानेमें, मिस्टर विलिअम फ़ेज़र साहिब कमिश्नर व रेज़िडेएट दिल्लीको क़त्ल करनेका जुर्म साबित होनेपर नव्वाबको फांसी दीगई, और पर्गनह फ़ीरोज़पुर सर्कारमें ज़ब्त होकर ज़िले गुड़गांवामें शामिल किया गया. अब ये दोनों जागीरें अलवरसे जुदी हैं. फिर सर्कारने बख़्तावरसिंहको हरियानाके ज़िलों दादरी व बधवाना वग़ैरहके एवज़ कठूंबर, सूखर, तिजारा और टपूकड़ा देदिया.

बख़्तावरसिंहने विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में डुब्बी और सकराका ज़िला जयपुरसे छीनलिया, लेकिन् अह्दनामहके बर्ख़िलाफ़ जानकर गवर्मेण्टने पीछा दिलानेको कहा, तब बख़्तावरसिंहने इन्कार किया, इसपर जेनरल मार्शलकी सिपहसालारीमें उसपर सर्कारी फ़ौज भेजी गई. महाराव राजाने तीन लाख रुपया फ़ौज ख़र्च देकर हुक्मकी तामील की. इस फ़ौज ख़र्चके एवज़में उन्होंने अपनी रिआयापर नया महसूल जारी करके छः लाख रुपया वुसूल किया था. आख़िरमें राव राजाको मज़्हबी जुनून व तअस्सुब होगया था, जिससे उन्होंने मुसल्मान फ़क़ीरोंके नाक कान कटवाकर एक टोकरेमें भरे, और फ़ीरोज़पुरमें नव्वाब अहमदबरुशके पास भेज दिये. क़ब्रोंको खुदवाकर मुसल्मानोंकी हड्डियां अपने इलाक़हसे बाहर फिकवा दीं, और मस्जिदोंको गिरवाकर उनकी जगह मन्दिर बनवाये. यह बात सुनकर दिल्लीके मुसल्मानोंको बड़ा जोश पैदा हुआ, तब रेज़िडेएटने उनको समझाया, और राव राजाको ऐसा ज़ुल्म करनेसे रोका (१).

विक्रमी १८७१ माघ शुक्ल २ [हि० १२३० ता० १ रबीउ़लअव्वल = ई० १८१५ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को रावराजा बख़्तावरसिंह ऊपर लिखी हुई बीमारीकी हालतमेंही

---

(१) इस बारेमें एक ऐसा क़िस्सह मश्हूर है, कि रावराजा बख़्तावरसिंहने एक मुसल्मान करामाती फ़क़ीरको अपने शहरसे निकलवा दिया, उसकी बद दुआसे रावराजा पेटमें दर्द होनेके सबब मरनेके क़रीब होगये, तब उन्होंने कहा, कि हमारे कोई देवता ऐसे नहीं हैं, जो मुसल्मानोंकी बद-दुआको रद्द करें, उस समय उनके बारहट चारणने कहा, कि करणी देवीका ध्यान कीजिये, जिनके साम्हने मुसल्मान औलियाओंकी करामातकी कुछ हक़ीक़त नहीं है. इसी तरह किया गया, जिससे फ़ौरन् दर्द जाता रहा. तब रावराजाने ऊपर लिखी हुई सख़्तियां मुसल्मानोंपर कीं, और अलवरमें करणी माताका मन्दिर बनवाया.

इन्तिक़ाल करगये, और मूसी रंडी उनके साथ सती हुई. उनके कोई असील औलाद न थी, इस लिये गद्दी नशीनीके बारेमें बड़ी बह्स हुई; और सर्कार अंग्रेज़ीमें यह सवाल पेश हुआ, कि लॉर्ड लेकका बख़्शा हुआ नया इलाक़ह वापस लेलिया जावे या नहीं. आख़िरको बख़्शा हुआ मुल्क वापस लेना मुनासिब न समझाजाकर बदस्तूर बहाल रक्खा गया.

३ - महाराव राजा विनयसिंह (बनेसिंह)

बख़्तावरसिंहके दो औलाद, एक लड़की चांदबाई, जिसकी शादी ततारपुरके ठाकुर कान्हसिंहके साथ हुई थी, और एक लड़का बलवन्तसिंह, मूसी ख़वाससे थे. महाराव राजाने अपने भाईके लड़के विनयसिंह थानावालेको सात सालकी उम्रसे अपने पास रक्खा था. अगर्चि क़ाइदेके मुवाफ़िक़ वह गोद नहीं लिया गया, लेकिन् सर्दार लोग उनको गोद लिया हुआ ही समझते थे, और शायद रावराजाके दिलमें भी ऐसा ही था, चुनांचि जब मस्नदनशीनीकी बाबत बह्स हुई, कि गद्दीपर कौन बिठाया जावे, तो हमक़ौम ठाकुरों व राव हरनारायण हल्दिया व दीवान नौनिद्धरामने बलवन्तसिंहको गद्दी बिठाना नाजाइज़ समझकर विनयसिंहको राजा बनाना चाहा; लेकिन् मुसल्मान व चेले तथा शालिगराम, नव्वाब अह्मदबख़्शख़ांकी तरफ़ रहकर राजपूतोंसे मुत्तफ़िक़ न हुए; और बलवन्तसिंहकी तरफ़दारी करने लगे, कि बलवन्तसिंह, जिसकी उम्र छः वर्षकी थी, बख़्तावरसिंहकी पासबानका बेटा होनेके सबब विनयसिंहका हिस्सहदार है. आख़िरकार बांकावत अक्षयसिंह व रामू चेला वग़ैरहने, जिन्होंने विनयसिंहके बारेमें इस वक़्त बहुत कोशिश की थी, विक्रमी १८७१ माघ शुक्ल ३ [हि० १२३० ता० २ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १८१५ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को विनयसिंहको गद्दीपर बिठा दिया, तक्रार दूर होनेकी ग़रज़से विनयसिंहकी गद्दीपर बाईं तरफ़ बलवन्तसिंह भी बिठाया गया, और यह क़रार पाया, कि दोनों राम व लक्ष्मणकी तरह माने जावें. जब रामू ख़वास, ठाकुर अक्षयसिंह व दीवान शालिगरामने दिल्ली पहुंचकर मेट्कॉफ़ साहिब रेज़िडेण्टसे मस्नदनशीनीके दो ख़िल्अ़त बराबर मिलनेकी दर्ख्वास्त की, तो रेज़िडेण्टने एक गद्दीपर दो रईस क़ाइम होना ख़िलाफ़ दस्तूर व फ़सादकी बुन्याद समझकर इन लोगोंको समझाया, और कहा, कि विनयसिंह महाराव राजा क़रार दिया जाकर गद्दीपर बिठाया जावे, और बलवन्तसिंह कुल कामका मुख़्तार होकर इन्तिज़ाम रियासतका करे; लेकिन् इन लोगों ने बयान किया, कि विनयसिंह व बलवन्तसिंह दोनों मुत्तफ़िक़ राय रहकर राज करेंगे, और इनके आपसमें कभी तक्रार न होगी. इस तरहकी बहुतसी बातें कहनेपर उक्त

साहिबने सद्रको दर्ख्वास्त करके दो खिल्अ़त वरावरीके मंगवा दिये, और नव्वाव अह्मदवख़्शख़ां, रामू ख़वास व ठाकुर अक्षयसिंहकी दर्ख्वास्तपर गवर्मेंएटकी मन्ज़ूरी से वन्दोबस्त रियासतके वास्ते नव्वाव अह्मदवख़्श वकील व ख़िद्मत सर्कार अंग्रेज़ी, ठाकुर अक्षयसिंह मुसाहिब राज, दीवान नोनिद्धराम व शालिगराम फ़ौजवख़्शी, दीवान वालमुकुन्द रियासतका प्रधान, और ठाकुर शम्भूसिंह तंवर अलवरका क़िलेदार मुक़र्रर किया गया. विक्रमी १८७३ माघ शुक्ल १३ [हि० १२३२ ता० १२ रवीउ़ल अव्वल = .ई० १८१७ ता० ३० जैन्युअरी] को नव्वाव अह्मदवख़्शख़ांने पर्गनह तिजारा व टपूकड़ाका ठेका लिया.

विक्रमी १८८१ [हि० १२३९ = ई० १८२४] तक तो अह्लकारोंने हर तरह ख़राबीकी हालतमें राज्यका काम चलाया; लेकिन् जब दोनों राजा होश्यार हुए, और जवानीके जोशने हर एकके दिलोंमें अपनी ही खुद मुख़्तारी व हुकूमत रखनेका इरादह पैदा किया, तो आपसमें ज़ियादह रंजिश ज़ाहिर होने लगी; और शुरू रंजिशकी वुन्याद यह हुई, कि जेनरल अक्टरलोनी साहिब रेज़िडेएटने एक जोड़ी पिस्तौल और एक पेशक़ब्ज़ वतौर तुह्फ़ेके अलवर भेजे थे, जिनमेंसे रावराजा विनयसिंहने पिस्तौल और पेशक़ब्ज़ लेलिये, और वलवन्तसिंहको सिर्फ़ पिस्तौल ही मिला. आख़िरकार रियासती लोगोंमें दो फ़िर्क़े होगये; नव्वाव अह्मदवख़्श वग़ैरह, जो शुरूसे वलवन्तसिंहकी मदद करते थे, उसके तरफ़दार वनगये; और मल्ला, खुशाल व जहाज़ चेले तथा नन्दराम दीवान, रावराजा विनयसिंहका पक्ष करने लगे; इन लोगोंने साज़िशके साथ एक मेवको कुछ नक्द व गांव इन्आ़म देनेका लालच देकर नव्वाव अह्मदवख़्शख़ांको मारडालनेके लिये उभारा, जिसने आठ माह तक दाव घातमें लगे रहने वाद विक्रमी १८८० वैशाख कृष्ण ६ [हि० १२३८ ता० २० शअ़्वान = .ई० १८२३ ता० २ एप्रिल] को दिल्लीमें मौक़ा पाकर रातके वक्त ख़ेमेके अन्दर नींदकी हालत में नव्वावको तलवारसे ज़ख़्मी किया, जब कि वह दिल्लीमें रेज़िडेएटका मिहमान था; लेकिन् नव्वावको कुछ अ़र्से वाद आराम होगया, और इस वातका भेद खुल गया, कि अलवरके लोगोंकी साज़िशसे यह वारिदात हुई. वलवन्तसिंहने मेवको गिरिफ्तार करलिया, मल्ला व खुशाल, जहाज़ और नन्दराम दीवान क़ैद किये गये.

रामू ख़वास और अह्मद वख़्शने दिल्ली जाकर सर डेविड अक्टरलोनीके पास अपना अपना पक्ष निवाहनेकी कोशिश की, लेकिन् रामूने मुन्शी करमअह्मदकी मारिफ़त अपना रुसूख़ (पक्ष) जेनरल अक्टरलोनीके पास ज़ियादह वढ़ा लिया, जेनरल साहिब भी उसकी वातपर तवज्जुह करने लगे. इसने रफ्तह रफ्तह मुक़द्दमेकी सूरत निकाली, और वलवन्तसिंह

के तरफ़दारों याने रियासतमें फ़साद पैदा करनेवाले चन्द लोगोंको तंबीह करनेकी इजाज़त उक्त जेनरलसे लेकर राव राजा विनयसिंहके तरफ़दारोंको अलवर लिख भेजा, कि सिवाय बलवन्तसिंहके कुल मुफ़्सिदोंको मारडालो. यह ख़त पहुंचनेपर विक्रमी १८८० श्रावण शुक्ल १० [हि० १२३८ ता० ९ ज़िल्हिज = ई० १८२३ ता० १८ जुलाई] को राजपूतोंने जमा होकर शहरके दर्वाज़ोंका बन्दोवस्त करने बाद महलपर हमलह किया, राव राजा विनयसिंहको अक्षयसिंहकी हवेलीमें लेआये; आधी रातसे पहर दिन चढ़े तक लड़ाई रही, जिसमें बलवन्तसिंहकी तरफ़के दस आदमी मारे गये, बाक़ी लोगों ने हथियार छोड़कर राव राजाकी इताअ़त क़ुबूल की. पहर दिन चढ़े बलवन्तसिंह गिरिफ्तार होकर एक हवेलीमें शहरके अन्दर नज़रबन्द किये गये; और दो वर्ष क़ैद रहे. बलवन्तसिंहके साथी ठाकुर बलीजी, कप्तान फ़ास्ट व टामी साहिब भी क़ैद हुए, और बांकावत अक्षयसिंहकी मददसे राव राजाने फ़त्ह पाई.

जेनरल अक्टरलोनी व नव्वाब अह्मदबख़्शकी रिपोर्टें इस लड़ाईकी बाबत पहुंचनेपर गवर्मेंएटसे उनके जवाबमें यह हुक्म हुआ कि, नव्वाबकी सलाहके मुवा- फ़िक़ अमल किया जाकर राज़ीनामह लियाजावे; लेकिन् उन दिनों कलकत्तेकी तरफ़ किसी फ़सादके सबब सर्कारी फ़ौज भेजी जाती थी, इस वजूहसे अलवरके मुआमलेमें कार्रवाई न होसकी. जेनरल अक्टरलोनीने पहिले यह चाहा था, कि बलवन्तसिंहको पन्द्रह हज़ार रुपया सालानह वज़ीफ़ह अलवरकी तरफ़से करादिया जावे, परन्तु विनयसिंहने इसको नामन्ज़ूर किया. कुछ अ़र्से बाद जेनरल साहिब जयपुरको गये, नव्वाब व रामू भी साथ थे; रामूने रास्तेमें रुख़्सत लेकर अलवरको आते हुए मल्ला, ख़ुशाल, जहाज़, व नन्दरामकी रिहाईकी ख़बर सुनी, और घबराया; लेकिन् अलवर पहुंचकर उनको बदस्तूर क़ैद करदिया. जेनरल साहिबने अलवर आते हुए राहमें मुज्रिमोंको रिहा करदेना सुनकर बहुत नाराज़गी ज़ाहिर की, रामू व ठाकुर अक्षयसिंह पेश्वाईके लिये गये, लेकिन् जेनरलने रामूपर ख़फ़ा होकर अलवर जाना मौक़ूफ़ रक्खा, और रामूसे कहा, कि या तो मुज्रिमों और उन्हें रिहा करने वालोंको हमारे सुपुर्द करो, और आधा मुल्क व माल बलवन्तसिंहको देदो, या लड़ाईपर मुस्तइद हो; परन्तु राव राजाने इस बातको टालदिया. फिर दोबारह फ़ीरोज़पुरसे जेनरलने सख़्त ताकीद लिखी, उसकी भी तामील न हुई. तब गवर्मेंएटकी मन्ज़ूरीसे भरतपुरकी लड़ाई ख़त्म होने बाद लॉर्ड कम्बरमेअरकी मातह्तीमें एक अंग्रेज़ी फ़ौज अलवरकी तरफ़ रवानह हुई. उस वक़्त विनयसिंह ने बलवन्तसिंहको माल अस्बाब सहित रेज़िडेएटके पास भेज दिया, और उनको दो लाख आमदनीकी जागीर व दो लाख सालानह नक्द देना क़रार पाया. बलवन्तसिंह तिजारामें

रहने लगे. विक्रमी १८८३ [हि० १२४१ = ई० १८२६] से विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] तक वीस साल तिजारेकी हुकूमत करने बाद उनके बग़ैर औलाद मरजानेपर उनके तह्तका .इलाक़ह मए बहुतसे ज़र ज़ेवरके अलवरमें शामिल हुआ.

महाराव राजा विनयसिंह अगर्चि अकेले खुद मुख़्तार राज करते रहे, लेकिन् सर्कार अंग्रेज़ीसे नारसाई ही रही; नव्वाब अहमदबख़्शको मारनेका इरादह रखने वालोंको बजाय सज़ा देनेके बड़े दरजोंपर मुक़र्रर करना और विक्रमी १८८८ [हि० १२४६ = ई० १८३१] में जयपुर वालोंसे मातहत रईसोंकी तरह मातमपुर्सीका ख़िल्अत लेने वग़ैरहकी बाबत ख़त किताबत करना, सर्कारको बुरा मालूम हुआ; और ऐसी ही बातोंपर चन्द मर्तबह फ़ौज वग़ैरहसे धमकी दीगई. उस वक़ राजमें बदइन्तिज़ामी थी, और अह्लकार वग़ैरह अपना मन माना करते थे, ग़ारतगर लोग सर्कश होरहे थे, जिनको उक्त रावराजाने सज़ा देकर सीधा किया. उन्होंने मेव लोगोंको, जो सबसे ज़ियादह लुटेरे व बदमआश थे, मवेशी वग़ैरह छीन लेने व गांव जलादेने और सख़्त सज़ा देनेसे ताबेदार बनाने बाद कोलानी गांवमें विक्रमी १८८३ [हि० १२४१ = .ई० १८२६] में क़िला बनवाकर उसका नाम रघुनाथगढ़ रक्खा; और विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = .ई० १८३५] में क़िला बजरंगगढ़ बनवाया. इसी अरसेमें मल्ला चेलेको, जो राजमें बहुत ही दख़्ल रखता था, मौक़ा पाकर बेदख़्ल किया. दीवान जगन्नाथ व बैजनाथके वक़्में राज ज़ेरबारी व तंगीकी हालतमें रहा; इसपर विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ ई० १८३८] में मुन्शी अम्मूजान, सरिश्तहदार कमिश्नरी व रेज़िडेएटीको दिल्लीसे बुलाकर अपना दीवान बनाया, और मिर्ज़ा इस्फ़िन्दयारबेगको नाइब दीवान मुक़र्रर किया. अम्मूजानने अव्वल साह दुलीचन्द साहूकार व फ़ोतेदार राज्यके दबावसे रियासत और रिआयाको निकाला, जिसने राज्यकी तरफ़ बहुतसा रुपया बेजा तरीक़ोंसे बाक़ी निकाल रखनेके सिवा ज़मींदार रिआयाको भी अपना क़र्ज़दार बना रक्खा था, और बहुतसा रुपया, ज़ेवर और माल व अस्बाब उसके ज़िम्मेकी बाक़ियातके एवज़ राज्यके ख़ज़ानहमें दाख़िल कराकर उसे बेदख़्ल किया; पर्गनोंमें अपनी तरफ़से तह्सीलदार मुक़र्रर किये. कुछ अरसे बाद राज्यकी ज़ेरबारी दूर होकर उम्दगीसे काम चलने लगा, कई साल तक अम्मूजान व इस्फ़िन्दयारबेगने इत्तिफ़ाक़के साथ महकमह माल व अदालतें वग़ैरह क़ाइम करके नमक हलाली व दियानतदारीसे काम किया, लेकिन् इसके बाद अम्मूजानने रियासतके मालमें चोरी करना और रिश्वत लेना शुरू करदिया, जिसके लिये इस्फ़िन्दयारबेगने, जो बड़ा ईमान्दार था, उसे मना किया; और कई तरह समझाया; अम्मूजानने

इस्फ़िन्दयारबेगकी नसीहतोंसे नाराज़ होकर उसकी जगह अपने भाई फ़ज़्लुल्लाहख़ांको बुला लिया, और रियासती कारोबार उसकी निगरानीमें करके आप रावराजाके पास हाज़िर रहने लगा. थोड़े दिनों पीछे तीसरा भाई इनआमुल्लाहख़ां राज्यकी सिपहसालारीपर मुक़र्रर हुआ. अगर्चि ये तीनों भाई मुल्की व माली कामोंमें होश्यार व चालाक थे, लेकिन् लालची व बदचलन ज़ियादह थे. ग़रज़ कि इन लोगोंने कई लाइक़ आदमियों व चन्द सर्कारी अह्लकारों, गुलामअलीख़ां, सलीमुद्दीन, मीरमहदीअली, सुल्तानसिंह, बहादुरसिंह व गोविन्दसिंहके इत्तिफ़ाक़से रियासतका इन्तिज़ाम अच्छा किया, और बहुतसा रुपया भी पैदा किया. आख़िरको मिर्ज़ा इस्फ़िन्दयारबेगने, जो अम्मूजानके साथ ज़ाहिरा दोस्ती और दिलसे दुश्मनी रखता था, विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] में बहरोड़के तह्सीलदार कायस्थ रामलाल व सीताराम की मारिफ़त अम्मूजानके ग़बन व रिश्वत लेनेकी बाबत राव राजाको अच्छी तरह पूरा हाल रौशन कराकर, तीनों भाइयोंको मए उनके वसीलहदारोंके क़ैद करादिया, जिन्होंने सात लाख रुपया दण्ड देकर रिहाई पाई. दीवानका उह्दह इस्फ़िन्दयार बेगको मिला; दो सालतक उसने काम दियानतदारीसे किया; लेकिन् अपने मातह्तों पर ज़ियादह बेएतिबारी रखनेके सबब उससे काम न चलसका; तब राव राजाने मिर्ज़ा इस्फ़िन्दयारबेगको तो दीवान हुज़ूरी रक्खा, और अम्मूजान व दीवान बालमुकुन्द को आधे आधे इलाक़हके सरिश्तह मालका काम सुपुर्द किया. इसी ज़मानेमें मम्मन नामी एक चाबुक सवार राव राजाके ज़ियादह मुंह लगगया, और सौदागरों व रिआयाको ज़ुल्मसे बहुत तक्लीफ़ पहुंचाने लगा; सिवा इसके मिर्ज़ा इस्फ़िन्दयारबेगसे भी दुश्मनी रखता था.

विक्रमी १९१३ [हि० १२७२ = ई० १८५६] तक इस तरह रियासतका काम चलता रहा, पिछले पांच सालमें राव राजाको फ़ालिजकी बीमारीने राजके काम काज संभालनेसे लाचार करदिया. इन दिनों मिर्ज़ा व दीवान बालमुकुन्द अकेले काम करते थे, और अम्मूजानके साथ एक बड़ा गिरोह था, उसने महाराव राजाकी बीमारीमें रफ़्तह रफ़्तह अपने इख़्तियार बढ़ाकर आख़िरको कुल मुख़्तारी हासिल की.

यह राव राजा अगर्चि खुद आलिम नहीं थे, लेकिन् आलिमोंकी बड़ी क़द्र करनेवाले थे, इनके वक़्में हरएक फ़न व पेशेके उम्दह कारीगर नौकर रक्खे गये. उन्होंने शहर अलवरको बड़ी रौनक़ दी; और कई मकान भी उम्दह बनवाये. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रमें उन्होंने अपनी सख़्त

बीमारीकी हालतमें आठ सौ पैदल और चार सौ सवार मए चार तोपके आगरेकी घिरी हुई सर्कारी पल्टनोंको मदद देनेके लिये अलवरसे रवानह किये, जो भरतपुर और आगरके बीचवाली सड़कपर अचनेरा गांवमें मुक़ीम थे; नीमच और नसीराबादकी बाग़ी पल्टनें उनपर एक दम आगिरीं, उस समय पचपन आदमी अलवरके मारे गये, जिन में दस बड़े नामी सर्दार थे. इस शिकस्तका हाल रावराजाने नहीं सुना, क्यौं कि वे मरनेकी हालतमें होरहे थे. आख़िरकार विक्रमी १९१४ श्रावण कृष्ण ९ [हि० १२७३ ता० २३ ज़िल्काद = ई० १८५७ ता० १५ जुलाई] को बयालीस वर्ष राज्य करने बाद फ़ालिजकी बीमारीसे उक्त महाराव राजाका इन्तिक़ाल होगया. इनकी बीमारी की हालतमें मिर्ज़ा इस्फ़न्दयारबेगके बहकानेसे मेदा चेला वग़ैरह चन्द शख़्सोंने मम्मन चाबुकसवार, गनेश चेला व बलदेव मुसव्विरपर महाराव राजाको मारनेकी ग़रज़से जादू करानेकी झूटी तुहमत लगाकर तीनोंको बेगुनाह क़त्ल करादिया; और मेदाने कई मुसल्मानोंके मुंहमें सूअरकी हड्डियां दिलाकर तक्लीफ़ पहुंचाई, जिसकी सज़ा उसने अचनेरेमें बड़ी बेरहमीसे मारेजाकर पाई, और अख़ीरमें मिर्ज़ाने भी अपनी बदीका फल पाया, याने कुछ मुद्दत बाद मुल्कसे निकाला गया.

४- महाराव राजा शिवदानसिंह.

यह महाराव राजा, जिनका जन्म विक्रमी १९०१ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२६० ता० १३ रमज़ान = ई० १८४४ ता० २६ सेप्टेम्बर] को शाहपुरावाली राणीसे हुआ था, अपने पिताके इन्तिक़ाल करनेपर विक्रमी १९१४ श्रावण कृष्ण ९ [हि० १२७३ ता० २३ ज़िल्काद = ई० १८५७ ता० १५ जुलाई] को गद्दीपर बिठाये गये. इस समय मुसल्मान अह्लकारोंका बहुत असर बढ़ गया. मुन्शी अम्मूजान, जो राव राजा बिनयसिंहके बड़े लाइक़ अह्लकारोंमें गिना जाता था, और जिसने शाहपुरावाली राणीके साथ बिनयसिंहकी मौजूदगीमें ही बहिनका रिश्तह पैदा करलिया था, और सिवाय इसके दिल्ली फ़त्ह होने बाद उसने दिल्लीके भागे हुए कई बाग़ियोंको गिरिफ़्तार व सज़ायाब कराके सर्कार अंग्रेज़ीको भी अपनी ख़ैरख़्वाहीका यक़ीन दिलादिया था, इस वक़ महाराव राजाकी नाबालिग़ीके ज़मानेमें आम ग़द्रके सबब सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से रियासती प्रबन्धके वास्ते महकमह एजेन्सी क़ाइम न होनेसे क़ाबू पाकर और ही घड़न्त करने लगा, याने अपना मत्लब बनानेके लिये राव राजाके पास अपने रिश्तहदार वग़ैरह मुसल्मानोंको भरती किया, जिनकी सुह्बतसे वह नशे व अय्याशी वग़ैरह वाहियात बातोंमें लगकर अपने राजपूतोंसे नफ़रत और

मुसल्मानी रवाजको पसन्द करने लगे. यहांतक सुना गया है, कि अम्मूजान के ख़ानदानसे एक लड़कीका निकाह राव राजाके साथ करके उनको मुसल्मान बना लेनेकी सलाह ठहरी. जब रईसको इस तरहपर फांसकर अम्मूजान वगैरहने रियासतको लूटना शुरू किया, तो मिर्ज़ा इस्फ़िन्दयारबेगने, जो पुरानी दुश्मनीके सबब अम्मूजानकी घातमें लगा हुआ था, यह हाल राजपूतोंपर अच्छी तरह रौशन करके फ़सादपर आमादह किया; और सर्कार अंग्रेज़ीसे किसी तरहकी बाज़पुर्स न होनेकी उन्हें तसल्ली करदी. इस बातके सुननेसे राजपूतोंको, जिनका सरगिरोह ठाकुर लखधीरसिंह बीजवाड़ वाला था, बड़ा जोश आया; और विक्रमी १९१५ श्रावण [हि० १२७५ मुहर्रम = ई० १८५८ ऑगस्ट] में एक बग़ावत पैदा होगई, जिसमें अम्मूजानने तो बड़ी मुश्किलसे भागकर जान बचाई, और उसका भतीजा मुहम्मद नसीर और एक ख़िद्मतगार मारा गया. ठाकुर लखधीरसिंहने साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल और कप्तान निक्सन साहिब पोलिटिकल एजेण्ट भरतपुरको इत्तिला दी. कप्तान निक्सनने भरतपुरसे अलवरमें पहुंचकर राजपूतोंका क्रोध ठंडा किया; और ठाकुर लखधीरसिंह की मातह्तीमें रियासती कारोबारके इन्तिज़ामके लिये सर्दारोंकी एक पंचायत सर्कारी मन्जूरीसे मुक़र्रर करके राज्यमें एजेन्सी क़ाइम कियेजानेकी ग़रज़से सद्रको रिपोर्ट की, जिसपर विक्रमी १९१५ कार्तिक [हि० १२७५ रबीउस्सानी = ई० १८५८ नोवेम्बर] में कप्तान इम्पी अलवरके पोलिटिकल एजेण्ट मुक़र्रर हुए.

उस वक़ रियासतका ढंग बिगड़ा हुआ था, इस लिये कप्तान इम्पीने बहुत होश्यारी व साबित क़दमीके साथ कारोबारका बन्दोबस्त किया, जिसमें उनको कई तरहकी दिक़्क़तें उठानी पड़ीं. उनमें ज़ियादह तर रईसकी मुदाख़लत और विरुद्धता थी. विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = ई० १८५९] में महाराव राजाने ख़ुद मुख़्तार व आज़ाद होनेके मन्शा पर कई बदमआशोंकी मददसे महकमह एजेन्सी व पंचायतको ज़बर्दस्ती बर्ख़ास्त करके लखधीरसिंहको मारडालना चाहा, और चन्द फ़ौजी अफ़्सरोंसे मिलावट की. यह ख़बर पाकर इम्पी साहिबने उस गिरोहको गिरिफ़्तार करलिया, और इस कार्रवाईके शुब्हेमें अम्मूजान, फ़ज़्लुल्लाहख़ां व इन्आमुल्लाहख़ां, तीनोंको अलवरसे निकालकर मेरठ, बनारस व दिल्ली, अलहदह अलहदह मक़ामातपर रहनेका हुक्म दिया गया. इसी अर्सेमें इस्फ़िन्दयारबेग भी ३००) माहवार पेन्शन मुक़र्रर की जाकर अलवर से निकालदिया गया; और कप्तान इम्पी साहिबने अह्लकारोंका रिश्वत लेना, रियासतकी ज़ेरबारी और रिआयाकी तक्लीफ़ातके सबबों व ख़राबियों वगैरहका पूरा इन्तिज़ाम करके मिस्टर टॉमस हद्रलीकी मददसे तीन सालका सर्सरी बन्दोबस्त किया,

जिसमें औसत १४२९२२५ रुपया सालानह आमदनी हुई. रिआया इस इन्तिज़ामसे खुश हुई, और अक्सर वीरान गांव नये सिरसे आबाद हुए. आगेके दह सालह बन्दोबस्तके लिये रिआयाने महसूलका बढ़ाया जाना खुशीसे मन्जूर किया. इस बन्दोबस्तमें विक्रमी १९१९ [हि० १२७८ = ई० १८६२] से विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] तक औसत जमा १७१९८७५ रुपये मुक़र्रर हुई. सिवाय इसके उक्त कप्तानने अपने इन्तिज़ाममें कचहरियोंके वास्ते एक बड़ा मकान महलके चौकमें बनाया, रिआयाके आरामके वास्ते 'इम्पी ताल' नामका एक तालाब घोड़ाफेर इहातेके पास तय्यार कराया, जिसमें सीलीसेढ़की नहरसे पानी आता है. अलवर व तिजाराके दर्मियानी सड़क बनवाई, और महाराव राजाकी शादी रईस झालरापाटनके यहां बड़ी धूम धामसे की. जब कप्तान निक्सनकी क़ाइम कीहुई अगली पंचायतसे प्रबन्धकी दुरस्ती अच्छी तरह न हुई, तब थोड़े दिनों तक इम्पी साहिबने खुद रियासतका काम किया; फिर पांच ठाकुरोंकी एक कॉन्सिल मुक़र्रर की. उसमें भी बिगाड़ नज़र आया, तब विक्रमी १९१७ [हि० १२७७ = ई० १८६०] में दूसरी कॉन्सिल क़ाइम कीगई, जिसका मुख़्तार ठाकुर लखधीरसिंहको और मेम्बर ठाकुर नन्दसिंह व पण्डित रूपनारायणको बनाया. इस कॉन्सिलने महाराव राजाको इख़्तियारात मिलनेके वक्त तक अच्छा काम किया.

विक्रमी १९२० भाद्रपद शुक्ल २ [हि० १२८० ता० १ रबीउस्सानी = ई० १८६३ ता० १४ सेप्टेम्बर] में राव राजाको इख़्तियार मिलगया, और कुछ अ़रसह बाद एजेण्टीका इख़्तियार उठगया. महाराव राजाने रियासतके इख़्तियारात मिलते ही अम्मूजानके बर्ख़िलाफ़ बग़ावत करनेकी नाराज़गीके सबब लखधीरसिंहको बीजवाड़ जानेका हुक्म दिया, और गांव बांगरोली, जो विक्रमी १९१५ [हि० १२७५ = ई० १८५८] में मुवाफ़िक़ ख्वाहिश परलोकवासी महाराव राजा विनयसिंहके इन्तिज़ाम एजेन्सीके ज़मानेमें लखधीरसिंहको दिया गया था, छीन लिया. इसपर गवर्मेंटने महाराव राजाको बहुत कुछ हिदायत की, कि सर्कार अंग्रेज़ी ठाकुरकी उम्दह कारगुज़ारीसे बहुत खुश है, अगर इसके अ़लावह उसके साथ और कुछ ज़ियादती होगी, तो सर्कार बहुत नाराज़ होगी.

विक्रमी १९२१ [हि० १२८१ = ई० १८६४] में, जब कि महकमह एजेन्सी बदस्तूर था, महाराव राजाने कलकत्तेमें नव्वाब गवर्नर जेनरलके पास जाकर अपनी होश्यारी व लियाक़त ज़ाहिर की; लेकिन् नव्वाब साहिबको उनकी तरफ़से नेक चलनी का भरोसा न था, तौभी इह्तियातके तौरपर कहा, कि अगर अलवरमें कोई फ़साद पैदा होगा, तो उसका बन्दोबस्त करनेके लिये सर्कार मदद न देगी. इसी अ़रसेमें

विक्रमी १९२१ ज्येष्ठ कृष्ण १२ [हि० १२८० ता० २६ ज़िल्हिज = ई० १८६४ ता० १ जून] को मियांजान चाबुक सवार, जिससे महाराव राजा नाराज़ थे, राजगढ़में मारा गया; और उसके क़त्लका शुब्ह महाराव राजाकी निस्बत हुआ; लेकिन् गवाही वग़ैरहसे पूरा सुबूत न पहुंचा. उस ज़मानेमें कप्तान हमिल्टन रियासतके एजेएट थे, उनकी रिपोर्टोंमें इख़्तिलाफ़ और मुक़द्दमेकी तह्क़ीक़ातमें सुस्ती पाये जानेके सबब और महाराव राजाको पूरे इख़्तियारात मिलनेके लाइक़ होशियार और बालिग़ समझकर गवर्मेंटने एजेन्सीको तोड़दिया, और कप्तानको फ़ौजमें भेजदिया. कुछ अ़रसे तक तो महाराव राजाने रियासतका काम होशियारी व अ़क्लमन्दीके साथ किया; लेकिन् इन्हीं दिनोंमें ख़ारिज किये हुए अह्लकारोंको, कि जो बनारसमें थे, अलवरसे ख़त किताबत न रखनेकी शर्तपर सर्कारसे दिल्लीमें रहनेकी इजाज़त मिलगई. महाराव राजाने उन लोगोंको दिल्ली आते ही रियासतका सारा काम सुपुर्द करके चार हज़ार रुपयेके क़रीब माहवारी तन्ख़्वाह उनके पास भेजना शुरू कर दिया, इम्पी साहिबके ज़मानेके ख़ैरख़्वाह अह्लकार मौक़ूफ़ किये जाकर दिल्लीके सिफ़ारिशी मुसल्मान नौकर रक्खे गये, रिश्वतका बाज़ार फिर गर्म हुआ, और तमाम काम दिल्लीमें रहने वाले प्रधानोंकी मारिफ़त होने लगा, जिसका नतीजा यह निकला, कि रियासतमें पहिलेकी तरह फिर ख़राबी पैदा होगई.

इसी अ़रसेमें उक्त महाराव राजाने जयपुरके महाराजासे नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा की, और अपने मातह्त जागीरदारोंके साथ कई तरहके झगड़े उठाये; ठाकुर लखधीरसिंह पुष्कर स्नानके बहानेसे जयपुर चलागया. विक्रमी १९२२ [हि० १२८२ = ई० १८६५] में जब महाराव राजा अपनी ननसाल मक़ाम शाहपुराको जाते थे, तो रास्तेमें जयपुरके पास कर्नेल ईडन, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह, व मेजर बेनन पोलिटिकल एजेएट जयपुरसे काणोता मक़ामपर मुलाक़ात हुई; दोनों साहिबोंने महाराव राजा को बहुत कुछ समझाया, और ठाकुर लखधीरसिंहको वापस अपने साथ अलवर लेजानेको कहा, लेकिन् उन्होंने नहीं माना; इसपर ईडन साहिब व बेनन साहिबको बड़ा रंज हुआ. ठाकुर लखधीरसिंहने दोनों साहिबों व महाराजा जयपुरको अपना मिह्र्बान व तरफ़दार समझकर जयपुरके राज्यमेंसे लुटेरोंको एकट्ठा किया, और विक्रमी १९२३ [हि० १२८३ = ई० १८६६] में राव राजाके बर्ख़िलाफ़ रियासत अलवरमें लूट मार मचाई. इस समय लखधीरसिंहके ख़ानगी मददगार जयपुरके महाराजा रामसिंह थे; लेकिन् लखधीरसिंहको अलवरकी फ़ौजसे शिकस्त खाकर भागना पड़ा.

इस लड़ाईमें, जो घाटे बांदरोल व गोलाके बासपर हुई, लखधीरसिंहके साथके बहुतसे ग़ारतगर मारे गये, और उनमेंसे सतीदान मेड़तिया बड़ी बहादुरीके साथ लड़ा; राज्यकी फ़ौजके जादव राजपूतोंने ख़ूब मर्दानगी ज़ाहिर की. राव राजाने

बसबब पनाह देने लखधीरसिंहके जयपुर वालोंपर अपने नुक्सानका दावा किया, और जयपुरकी तरफ़से उससे भी ज़ियादह नुक्सानकी नालिश पेश हुई, लेकिन् वाक़िआतकी अस्लियत बख़ूबी दर्याफ़्त न होनेके कारण मुक़द्दमह डिस्मिस होगया. अंग्रेज़ी गवर्मेंएट लखधीरसिंहकी सर्कशीसे बहुत नाराज़ हुई, और महाराव राजाको उसकी पेन्शन व जागीर बदस्तूर बहाल रखनेकी हिदायत करके लखधीरसिंहको रियासत जयपुर व अलवर दोनोंसे बाहर रहनेका हुक्म दियागया, जिसपर वह अजमेरमें रहने लगा; मगर महाराव राजाने थोड़े दिनों बाद मौज़ा बीजवाड़को तबाह करके वहांकी ज़मीनपर खेती वग़ैरह होना बन्द करदिया. इस तरहके झगड़े बखेड़ोंके हमेशह रहनेसे नव्वाब वाइसरॉय गवर्नर जेनरलने उक्त महाराव राजाको एक अ़र्सेतक गद्दीनशीनी व रियासतके पूरे इख़्तियारातका ख़िल्अ़त नहीं भेजा, लेकिन् जब विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने उनकी नेक चलनी वग़ैरहकी बाबत रिपोर्ट की, तो १०००० रुपयेका ख़िल्अ़त सर्कारसे बख़्शा गया.

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] तक इस रियासतका संबन्ध एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके साथ रहा, और उसके बाद इसी सालके मई महीनेमें महकमह एजेन्सी पूर्वी राजपूतानह मुक़र्रर होकर भरतपुर, धौलपुर व क़रौलीके सिवा अलवर भी उसके मुतअ़ल्लिक़ हुआ, और कप्तान वाल्टर साहिबके रुख़्सत जानेपर कप्तान जेम्स ब्लेअर साहिब क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट मुक़र्रर हुए. इसी ज़मानेमें नीमराना व राज अलवरका बाहमी झगड़ा, जो मुद्दतसे चलाआता था, फ़ैसल होकर नीमरानावाले रईससे तीन हज़ार रुपया सालानह ख़िराज, सर्कार अंग्रेज़ीकी मारिफ़त अलवरको दिया जाना क़रार पाया; और कप्तान एबट साहिबके इह्तिमामसे नीमरानेके इलाक़ेकी हदबस्त तै पाकर जयपुर व अलवरकी शामिलातके गांव दोनों राज्योंकी रज़ामन्दीसे तक़्सीम हुए.

महाराव राजाने फ़ुज़ूल ख़र्ची और क्रूरतासे बड़ी बदनामी पैदा की, याने कुल आमद-नीके सिवा तीस लाख रुपया, जो इम्पी साहिबने ख़ज़ानेमें छोड़ा था, फ़ुज़ूल ख़र्चीमें उड़ाकर बहुतसा क़र्ज़ करलिया; विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में बहुतसे राजपूतों की जागीरें और मज़्हबी व ख़ैराती सीग़ेकी ज़मीन वग़ैरह छीन ली. इस तरहकी बेजा बातोंसे तमाम लोग रंजीदह होगये, पंडित रूपनारायण गिर्दावर राज इस्तिअ़्फ़ा देकर चला गया, और दिल्लीके दीवानोंकी सिफ़ारिशसे मुन्शी रुकलाल गिर्दावर, अ़ब्दुर्रहीम हाकिम अ़दालत, और शम्शाद अ़ली डिप्युटी कलेक्टर बनाया गया.

महाराणी झालीसे कुंवर पैदा हुआ, तो उसकी खुशीमें महाराव राजाने जश्न करके

नाच व राग रंग और दावतमें लाखों रुपया ख़र्च किया; और विक्रमी १९२६-२७ [हि० १२८६-८७ = ई० १८६९-७०] में राव राजाकी दर्ख़्वास्तपर शाहज़ादह ड्यूक ऑफ़ एडिम्बरा अलवरमें तश्रीफ़ लाये, जिनकी ज़ियाफ़त बड़ी धूम धामसे नाच व रौशनी वगैरहके साथ की गई. महाराव राजाने कई क़िस्मकी चीज़ें और एक उम्दह तलवार शाहज़ादहको नज़ की, दूसरे रोज़ सुब्हको शाहज़ादह साहिब वापस तश्रीफ़ लेगये. विक्रमी १९२६ माघ [हि० १२८६ ज़िल्काद = ई० १८७० फ़ेब्रुअरी] में महाराव राजाने राजपूतोंका ख़ास चौकीका रिसालह, जिसकी तन्ख़्वाह जागीरके मुवाफ़िक़ समझी जाती थी, मौकूफ़ कर दिया; और राजपूतोंकी जगह बहुतसे नये मुसल्मान भरती करलिये. ठाकुर मंगलसिंह गढ़ीवाला और दूसरे ठाकुर, जिनकी जागीरें ख़ालिसह हुई थीं, अव्वलसे ही नाराज़ थे, इस वक़ बारगीरोंकी मौकूफ़ीसे ज़ियादह जोशमें आकर एक मत होगये; और खेड़लीके ठाकुर जवाहिरसिंह व दूसरे सर्दारोंसे, जो जागीरें ज़ब्त होजानेका अन्देशह दिलोंमें रखते थे, मिलावट करके फ़साद करनेको तय्यार हुए. यह हाल सुनकर कप्तान जेम्स ब्लेअर साहिब पोलिटिकल एजेएट पूर्वी राजपूतानह, अलवरमें तश्रीफ़ लाये, और राजगढ़ मक़ामपर महाराव राजा व सर्दारोंके आपसमें सफ़ाई करादेनेमें पूरी कोशिश की; मगर उसका नतीजा उक्त साहिबके मन्शाके मुवाफ़िक़ न निकला; वह वापस चले गये, और करौलीमें पहुंचनेपर चन्द रोज़ बाद विक्रमी १९२६ फाल्गुन् [हि० १२८६ ज़िल्हिज = ई० १८७० मार्च] में उनका इन्तिक़ाल होगया.

जेम्स ब्लेअरकी जगह विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में कप्तान केडल सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से महाराव राजा व सर्दारोंके सुलह करादेनेके वास्ते पोलिटिकल एजेएट नियत हुए. इन्होंने भी सुलहके बारेमें बहुत कुछ कोशिश की, मगर कारगर न हुई. रियासतमें हर तरहकी बुराइयां फैल रही थीं, राज्यका कोई प्रबन्ध कर्ता और राव राजाको नेक सलाह देने वाला नहीं था; अब्दुर्रहीम, इब्राहीम सौदागर और शम्शाद अली, जो उनके मुसाहिब थे, अपनी वेजा मुदाख़लतके डरसे भाग गये. सर्दार लोगोंने इस वक़ मौक़ा पाकर महाराव राजाको गद्दीसे ख़ारिज करके उनकी जगह कुंवर शिवप्रतापसिंहको क़ाइम करना चाहा, लेकिन् थोड़े ही दिनों बाद कुंवरका इन्तिक़ाल होगया, और इसी अर्सेमें महाराणी झाली भी इस दुन्यासे कूच करगई; इन दोनों हादिसोंसे महाराव राजाके दिलको बड़ा सद्मह पहुंचा, और इन्हीं दिनोंमें केडल साहिबके नाम एजेन्सी मुक़र्रर किये जानेका हुक्म गवर्मेएटसे आगया. राज्यके प्रबन्धके वास्ते रियासती सर्दारोंकी कौन्सिल नियत कीगई, जिसके प्रेसिडेएट पोलिटिकल एजेएट हुए, और कौन्सिलके मेम्बरोंमें ठाकुर लखधीरसिंह बीजवाड़का, ठाकुर महताबसिंह खोड़ाका, ठाकुर हरदेवसिंह थानाका, ठाकुर

मंगलसिंह गढ़ीका, चार नरूका राजपूत, और पांचवां पण्डित रूपनारायण कान्यकुब्ज ब्राह्मण था. राव राजाका इख़्तियार घटाया जाकर एक मेम्बरके मुवाफ़िक़ करदिया गया. महाराव राजाको तीन हज़ार रुपया माहवारी मिलना क़रार पाया, और उनके ख़िद्मतगारोंका भी प्रबन्ध करदिया गया. जिन सर्दारों वग़ैरहकी जागीरें बे इन्साफ़ीसे छीनी गई थीं, वे वापस देदी गईं; और नये सिपाहियोंको मौकूफ़ करके पुराने हक़दारोंको भरती करलिया. विक्रमी १९२८ ज्येष्ठ [हि० १२८८ रबीउल्अव्वल = ई० १८७१ मई] में महाराव राजाका ढंग बहुत बिगड़ गया, कि सुलह चाहनेवालोंको फ़साद पैदा होनेका खौफ़ हुआ, जेलख़ानहमें बखेड़ा मचा, और कई तरहकी ख़राबियां पैदा हुईं. उसी ज़मानेमें साबित हुआ, कि साहिब पोलिटिकल एजेण्ट व ठाकुर लखधीरसिंहको मारनेकी साज़िश हुई है, मोती मीना व कई दूसरे मीने, जो इस जुर्मके करनेपर आमादह हुए थे, गिरिफ़्तार किये गये; और महाराव राजाको गवर्मेण्टसे सख़्त हिदायत हुई. जिन ठाकुर वग़ैरह जागीरदारोंने फ़सादके ज़मानेसे ख़ुद मुख़्तार बनकर राजकी जमा देना बन्द करदिया था, उनमेंसे कई लोगोंको क़ैद व जुर्मानहकी सज़ा देकर पोलिटिकल एजेण्टने ताबिअ् बना लिया; और रियासतकी क़र्ज़दारी व ज़ेरबारीको दूर करनेके लिये गवर्मेण्टसे दस लाख रुपया बतौर क़र्ज़ लिया, जिसकी क़िस्त अव्वल विक्रमी १९२८-२९ [हि० १२८८-८९ = ई० १७७१-७२] में एक लाखकी और आयन्दह वर्षोंके लिये तीन लाख रुपये सालानहकी मुक़र्रर कीगई. इस क़र्ज़ेके मिलनेसे मुलाज़िमोंकी चढ़ीहुई तन्ख़्वाह और क़र्ज़दारोंका रुपया दिया जाकर हर महकमह व सरिश्तेका प्रबन्ध कियागया, और मुफ़्सिद लोग मौकूफ़ किये गये.

विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] में ज़मीनके हासिलका प्रबन्ध किया गया. महाराव राजाने रियासतके इन्तिज़ाममें हाथ न डाला, और मेम्बरान कमिटीने अच्छी तरह काम किया. विक्रमी १९३०-३१ [हि० १२९०-९१ = ई० १८७३-७४] में रिआयाने बग़ैर उज़्र मालगुज़ारीमें साढ़े सात रुपया फ़ी सैकड़ाका इज़ाफ़ह ख़ुशीके साथ मन्ज़ूर किया.

आख़िरकार विक्रमी १९३१ आश्विन कृष्ण ऽऽ [हि० १२९१ ता० २९ शअ्बान = ई० १८७४ ता० ११ ऑक्टोबर] को उन्तीस वर्षकी उम्र पाकर दिमाग़ी बीमारीसे महाराव राजाका इन्तिक़ाल होगया. उनके कोई औलाद न रहनेके सबब गोदके बारेमें बहुत झगड़ा होने लगा, तब सर्कार अंग्रेज़ीने दो आदमियोंमेंसे एकको चुननेकी इजाज़त दी; एक बीजवाड़का ठाकुर लखधीरसिंह और दूसरा थानाके ठाकुरका बेटा

मंगलसिंह था, जिनमेंसे रियासती सर्दारोंकी कस्रत रायपर मंगलसिंहको गद्दीपर बिठाना तज्वीज़ हुआ.

५- महाराजा मंगलसिंह.

यह विक्रमी १९३१ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० १२९१ ता० ४ ज़िल्क़ाद = ई० १८७४ ता० १४ डिसेम्बर] को गद्दीपर बिठाये गये, इस बातसे ठाकुर लखधीरसिंह और दूसरे कई जागीरदार नाराज़ रहे, और राव राजाको नज़ नहीं दी. तब विक्रमी १९३१ फाल्गुन् कृष्ण ४ [हि० १२९२ ता० १८ मुहर्रम = ई० १८७५ ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को उनकी जागीरोंपर राज्यका प्रबन्ध किया जाकर किसी क़द्र ज़ब्ती हुई, और लखधीरसिंहको अजमेरमें रहनेका हुक्म मिला. दूसरे सर्कश ठाकुर भी उसके साथ ख़िलाफ़ हुक्म अजमेरको गये, लेकिन् वहां रहने न पाये.

विक्रमी १९३१ फाल्गुन् कृष्ण ८ [हि० १२९२ ता० २२ मुहर्रम = ई० १८७५ अख़ीर फ़ेब्रुअरी] को पंडित मनफूल सितारए हिन्द (सी० एस० आइ०) महाराव राजाका अतालीक़ (गार्डिअन) मुक़र्रर कियागया. इसी सालके फाल्गुन् [हि० १२९२ सफ़र = ई० १८७५ मार्च] में महाराव राजा नव्वाब गवर्नर जेनरलके हुक्मके मुवाफ़िक़ दिल्लीके दर्बारमें गये, जहांपर गवर्नर जेनरल व लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर पंजाब तथा पटियाला व नाभाके राजाओंसे मुलाक़ात हुई. इस अरसेमें कचहरियों वग़ैरहमें बहुत कुछ तरक़्क़ी हुई, अपीलका महकमह अलहदह क़ाइम हुआ, कि जिसमें फ़ौज्दारी, दीवानी व मालकी अपील सुनीजाती है; लेकिन् संगीन जुर्म वाले मुक़द्दमोंकी तज्वीज़ पंचायतसे होती है, और अख़ीर मन्ज़ूरी महाराजा व पोलिटिकल एजेन्टकी इजाज़तसे दीजाती है. इन्हीं दिनोंमें सर्कार अंग्रेज़ीके क़र्ज़हका दस लाख रुपया अस्ल और सूद, जो महाराव राजा शिवदानसिंहके वक़्का बाक़ी था, अदा कियागया. विक्रमी १९३२ भाद्रपद [हि० १२९२ शअ्बान = ई० १८७५ सेप्टेम्बर] में जयपुर मक़ामपर ठाकुर लखधीरसिंहका इन्तिक़ाल होगया; और उसकी जगह उसके वारिस रिश्तहदार माधवसिंहके गद्दी बैठनेपर गवर्मेंएटकी मन्ज़ूरीसे लखधीरसिंहकी जागीर, जो ज़ब्त होगई थी, उसको बहाल करदी गई. विक्रमी १९३२ कार्तिक कृष्ण ६ [हि० १२९२ ता० २१ रमज़ान = ई० १८७५ ता० २२ ऑक्टोबर] को महाराव राजा अजमेरके मेओ कॉलेज में सबसे पहिले दाख़िल हुए. दाख़िल होनेसे थोड़े ही हफ़्तों बाद नव्वाब वाइसरॉय अजमेरमें आये, उन दिनों पढ़ने लिखनेमें ज़ियादह तवज्जुह नहीं रही, उसके बाद एक महीने तक पढ़नेमें कोशिश करके दिल्लीमें फ़ौजकी क़वाइद देखनेके लिये इजाज़त

लेकर चलेगये, और वहांसे आगरे पहुंचकर शाहज़ादह प्रिन्स ऑफ़ वेलसकी पेश्वाईमें शामिल हुए, जहां शाहज़ादे साहिबसे मुलाक़ात और बात चीत हुई. विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में दिल्लीसे अलवर तक रेलवे लाइन खोली गई, और विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में बांदी कुई तक जारी हुई. विक्रमी १९३३ कार्तिक [हि० १२९३ शव्वाल = ई० १८७६ नोवेम्बर] में राव राजा विनयसिंहकी राणी और मंगलसिंहकी दादी रूपकुंवरका इन्तिक़ाल हुआ; यह बड़ी अक़्लमन्द और राज्यके कामोंसे वाक़िफ़ थीं. इसी सालमें ठाकुर महताबसिंह खोह वालेका इन्तिक़ाल हुआ. विक्रमी १९३३-३४ [हि० १२९३-९४ = ई० १८७६-७७] में महाराव राजाके पढ़नेमें ज़ियादह हर्ज हुआ, और इसी वक़ पण्डित मनूफूलने इस्तिअ्फ़ा दिया, उसकी जगह कप्तान मार्टैली असिस्टेएट एजेएट गवर्नर जेनरल इस कामपर मुक़र्रर हुए.

विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में महाराव राजाकी शादी कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंहकी दूसरी बेटीके साथ हुई, जिसमें रिआयासे न्योतेका रुपया, जो पहिले लियाजाता था, वुसूल न करनेपर उनकी बड़ी नेकनामी व रिआया पर्वरी ज़ाहिर हुई. इसी वर्ष पंचायतके मेम्बरोंमेंसे ठाकुर मंगलसिंह गढ़ीवाले, और पंडित रूपनारायण दीवानको उनकी उ़म्दह कारगुज़ारीके एवज़ सर्कार अंग्रेज़ीसे राय बहादुरका ख़िताब अ़ता हुआ.

विक्रमी १९३४ कार्तिक [हि० १२९४ ज़िल्क़ाद = ई० १८७७ नोवेम्बर] महीनेमें महाराव राजाको सर्कारी तरफ़से पूरे इख़्तियारात मिले, और इसी अ़रसेमें मेजर टॉमस केडल वी० सी० पोलिटिकल एजेएट अलवर, जिन्होंने कई साल तक राज्यके इन्तिज़ाममें मश्ग़ूल रहकर हर एक सरिश्ते व शहर तथा क़स्बोंको हर तरहसे रौनक़ दी, और मिहर्बानी व नर्मीसे रिआयाके साथ बर्ताव रक्खा, मारवाड़की एजेन्सीपर तब्दील होकर जोधपुर गये.

विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] में महाराव राजाको अव्वल दरजहका तमग़ाय सितारए हिन्द (G. C. S. I.) हासिल हुआ. विक्रमी १९४५ [हि० १३०६ = ई० १८८८] के शुरूपर सर्कारने उनको फ़ौजी कर्नेलका उ़हदह और मौरूसी तौरपर 'महाराजा' ख़िताब इनायत किया, जिसकी रस्म कर्नेल वाल्टर, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके हाथसे अदा हुई.

अलवरके जागीरदार व सर्दार.

रियासत अलवरके उत्तर पश्चिम राठमें पुराने चहुवान सर्दार और नरूखंडके

दक्षिणमें नरूका ख़ानदानके लोग रहते हैं, लालावत नरूकोंका पुर्षा लाला था, इसी ख़ानदानमें कल्याणसिंह हुआ, इसकी औलादमें, जिनको बारह कोटड़ी कहते हैं, २५ जागीरदार हैं. इनके सिवा कई एक नरूका ख़ानदान "देश" के नामसे मश्हूर हैं, जो नरूका देशसे आकर सर्दारोंके बुलानेपर अलवरमें आ बसे हैं.

चहुवान- इनका बयान है, कि दिल्लीके प्रसिद्ध राजा पृथ्वीराजकी नस्ल मेंसे हैं.

नीमराणा- यहांका जागीरदार अपनेको खुद मुरूतार बयान करता है, सर्कार अंग्रेज़ीको इस बारेमें बड़ी फ़िक्र हुई, आख़िरकार विक्रमी १९२५ [हि० १२८४ = .ई० १८६८] में यह क़रार पाया, कि नीमराणाके राजाको मुल्की और फ़ौज्दारीका इख्तियार अपने इलाक़हमें रहे, सर्कार अंग्रेज़ीके हुक्मके मुवाफ़िक़ अलवर दर्बारको अपनी आमदनीका आठवां हिस्सह ख़िराजके तौर दिया करे; और अलवरकी गद्दीनशीनीके वक्त ५००) रुपया नज़्रानह करे; नीमराणाकी गद्दीनशीनीके वक्त सर्कार अंग्रेज़ीके मातहतोंके दस्तूरके मुवाफ़िक़ बर्ताव किया जावे; नीमराणाका एक वकील अलवरमें और दूसरा एजेण्ट गवर्नर जेनरलके साथ रहा करे; नीमराणामें तिजारतपर महसूल न लियाजाये; और अस्बाबके आने जानेपर राज अलवर महसूल न लेवे; नीमराणा अलवरका जागीरदार सर्दार समझा जावे; विक्रमी १९२५ [हि० १२८४ = ई० १८६८] से विक्रमी १९५५ [हि० १३१५ = .ई० १८९८] तक नीमराणासे तीन हज़ार सालानह महसूल दिया जावे. इस बातको दोनोंने मान लिया. नीमराणामें दस गांव २४०००) रुपया सालानह आमदके हैं.

जागीरदार- नीचे उन गोत्रों और उपगोत्रोंके नाम लिखे हैं, जिनको जागीर घोड़ेके हिसाबसे मिलती है. घोड़ोंके टुकड़ेसे नक्द रुपया समझना चाहिये.

नक़्शह.

राजपूत गोत्र.		जागीरदारोंकी संख्या.	घोड़े.
नरूका	बारह कोटड़ी	२६	२२२ १/२
	दशावत	६	४१ १/२
	लालावत	७	४२ १/४
	चित्तरजिका	५	१८ १/२
	देशका	१०	७१ ३/४

राजपूत गोत्र.	जागीरदारोंकी संख्या.	घोड़े.
चहुवान	१९	१११ $\frac{३}{४}$
कल्याणोत	२	१२
पचाणोत	७	४१
जनावत	१	१०
राजावत	२	२
कुंभावत	१	४
जोग कछवाहा	१	२
राथाक	१	१ $\frac{१}{४}$
शैखावत	१	३
वांकावत	१	१
गौड़	९	५८
राठौड़	९	७३
यादव भाटी	७	५६ $\frac{१}{२}$
बड़गूजर	६	७०
तवंर	१	४
१ सय्यद, १ गुसांई, १ सिक्ख, १ गूजर, १ कायस्थ.	५	३३

ताज़ीम – नीचे लिखे १७ जागीरदार दर्बारमें ताज़ीम पाते हैं :-

१२ कोटड़ीके नरूका, बीजवाड़, पलवा, पारा, पाई, खोड़, थाना, खेड़ा, श्रीचंदपुरा, दशावत नरूका, गढ़ी (२० घोड़े) राठौड़, सालपुर (२८ घोड़े) सुंखमेड़ी (११), रसूलपुर (५) बड़गूजर, तसींग (४) गौड़, चमरावली (२४) जादव, कांक वाड़ी (९), मुकुन्दपुर (३). नव ठाकुर, जिनको मालगुज़ारी नहीं लगती, और ताज़ीम दीजाती है, इनमें जाउली ठाकुर जिनके तीन गांव हैं, मुख्य हैं; बख़्शी, शाहाबादके ख़ानज़ादह नव्वाब, मंडावरके राव और १३ ब्राह्मणोंको ताज़ीम मिलती है.

शैख़ावत-ये लोग वाल (बान्सूरकी तह्सील) में रहते हैं, और ज़ियादह कछवाहा गोत्रकी शाख़ जयपुरके उत्तरमें आबाद हैं. यह आंबेरके राजा उदयकरणसे उत्पन्न हुए हैं.

शैख़ाजीका बेटा रायमल्ल इन लोगोंका पिता थाः-

नरायनपुरके पास एक पुराना मन्दिर और इसके नज़्दीक खेजड़ेके दरस्तका कुछ बचा हुआ हिस्सह है, जिसके हरे होने और मुरझानेपर शैख़ावत ख़ानदानकी बढ़ती और घटती ख़याल कीजाती है; इनकी अब बहुत कम जागीर रहगई है, और इनके गांवोंपर थोड़ा महसूल लगाया गया है.
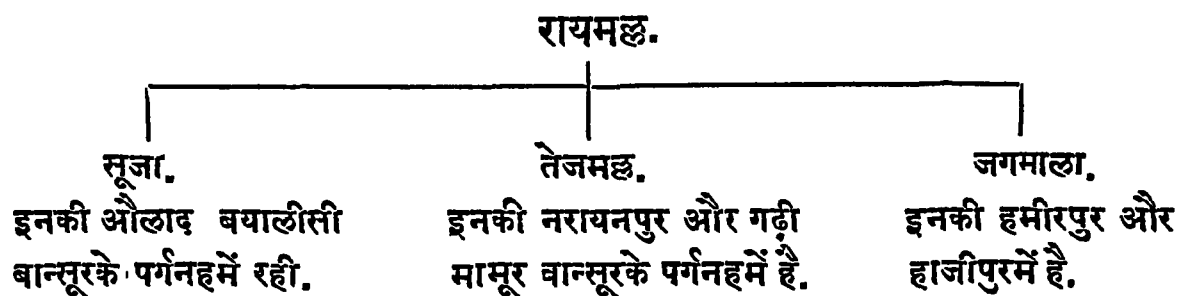
राजावत-ये लोग आंबेरके राजा भगवानदासकी औलाद, उस जगहपर, अब जहां थानह गाज़ीकी तह्सील है, पहिले आबाद थे. उनके नगर, महलों और मन्दिरोंके खंडहर भानगढ़में अबतक पाये जाते हैं. अगर्चि अब ये लोग अक्सर गांवोंमें खेतीसे गुज़र करते हैं, तो भी वे अपना अमीराना व्यवहार रखते हैं.

एचिसन्की किताब जिल्द ३,
अह्दनामह नम्बर ७७

शराइत अह्दनामह, जो हिज़ एक्सेलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक साहिब सिपहसालार हिन्द फ़ौज अंग्रेज़ीके, (मुवाफ़िक़ दिये हुए इख्तियारात हिज़ एक्सेलेन्सी दी मोस्ट नोव्ल मारक्विस वेल्ज़ली गवर्नर जेनरल बहादुरके), और महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंह बहादुरके दर्मियान क़रार पाई.

शर्त पहिली- हमेशहकी दोस्ती ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंह बहादुर और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान क़रार पाई.

शर्त दूसरी- ऑनरेबल कम्पनीके दोस्त व दुश्मन महाराव राजाके दोस्त व दुश्मन समझे जावेंगे, और महाराव राजाके दोस्त व दुश्मन ऑनरेबल कम्पनीके दोस्त व दुश्मन माने जायेंगे.

शर्त तीसरी- ऑनरेबल कम्पनी महाराव राजाके मुल्कमें दख़्ल न देगी, और ख़िराज तलब न करेगी.

शर्त चौथी- उस सूरतमें, जब कि कोई दुश्मन हिन्दुस्तानमें ऑनरेबल कम्पनीके या उसके दोस्तोंके इलाक़हपर हमलहका इरादह करेगा, तो महाराव राजा वादह करते हैं, कि वह अपनी तमाम फ़ौज उनकी मददको देंगे, और आप भी पूरी कोशिश दुश्मनके निकालदेनेमें करेंगे; और किसी तरहकी कमी दोस्ती और मुहब्बतमें रवा न रक्खेंगे.

शर्त पांचवीं- जो कि इस अह्दनामहकी दूसरी शर्तके रूसे ऐसी दोस्ती क़रार पाई है, कि उससे ऑनरेबल कम्पनी ग़ैर मुल्कवाले दुश्मनके ख़िलाफ़ महाराव राजाके मुल्ककी हिफ़ाज़तकी ज़िम्महवार होती है, तो महाराव राजा वादह करते हैं, कि अगर दर्मियान उनके और किसी दूसरे रईसके कोई तक़ारकी सूरत पैदा होगी, तो वह अव्वल तक़ारकी वज्हको गवर्मेण्ट कम्पनीसे रुजू करेंगे, इस नियत से, कि गवर्मेण्ट आसानीसे उसका फ़ैसलह करदे; अगर दूसरे फ़रीक़की ज़िदसे फ़ैसलह सुहूलियतके साथ न होसके, तो महाराव राजा गवर्मेण्ट कम्पनीसे मददकी दर्ख़्वास्त करेंगे, और अगर शर्तके बमूजिब उनको मदद मिले, तो वादह करते हैं, कि जिस क़द्र फ़ौज ख़र्चकी शरह हिन्दुस्तानके और रईसोंसे क़रार पाई है, उसी क़द्र वह भी देंगे.

ऊपरका अ़हृदनामह, जिसमें पांच शर्तें हैं, हिज़ एक्सेलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक और महाराव राजा बख्तावरसिंह बहादुरकी मुहर और दस्तख़तसे पहेसर मक़ामपर ता० १४ नोवेम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक़ २६ रजब सन् १२१८ हिज्री और १५ माह अगहन संवत् १८६० को दोनों फ़रीक़ने लिया दिया, और जब ऊपर लिखी शर्तोंका अ़हृदनामह हिज़ एक्सेलेन्सी दी मोस्ट नोबूल मारक्विस वेल्ज़्ली गवर्नर जेनरल बहादुरकी मुहर और दस्तख़तसे महाराव राजाको मिलेगा, यह अ़हृदनामह, जिसपर मुहर और दस्तख़त हिज़ एक्सेलेन्सी जेनरल लेकके हैं, वापस किया जायेगा.

राजाकी मुहर.	(दस्तख़त) - जी० लेक.	मुहर.
कम्पनीकी मुहर.	(दस्तख़त) - वेल्ज़्ली.	

यह अ़हृदनामह गवर्नर जेनरल इन् काउन्सिलने ता० १९ डिसेम्बर सन् १८०३ ई० को तस्दीक़ किया.

अ़हृदनामह नम्बर ७८.

उस सनदका तर्जमह, जो जेनरल लॉर्ड लेक साहिबने राजा सवाई बख्तावरसिंह अलवर वालेको दी.

तमाम मौजूद और आगेको होनेवाले मुतसद्दी और आमिल, चौधरी, क़ानूनगो, ज़मींदार, और काश्तकार, पर्गनों इस्माईलपुर, और मुंडावर मए तअ़ल्लुक़ा दर्बारपुर, रताय, नीमराना, माडन, गुहिलोत, बीजवाड़, सराय, दादरी, लोहारु, बुधवाना, भुदचल नहर, इलाक़ए सूबह शाहजहांआबादके मालूम करें, कि ऑनरेबूल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराव राजा सवाई बख्तावरसिंहके दर्मियान दोस्ती पुरानी और पक्की हुई, इस वास्ते इस दोस्तीके साबित और ज़ाहिर करनेको जेनरल लॉर्ड लेक हुक्म देते हैं, कि ऊपर ज़िक्र किये हुए ज़िले बशर्त मंज़ूरी मोस्ट नोबूल गवर्नर जेनरल लॉर्ड वेल्ज़्ली बहादुर, महाराव राजाको उनके ख़र्चके लिये दियेजायें.

जब मन्ज़ूरी गवर्नर जेनरल बहादुरकी आजायेगी, तो दूसरी सनद इस सनदके एवज़ दीजायेगी, और यह लौटाई जायेगी.

जबतक दूसरी सनद आए, उस वक़्त तक यह सनद महाराव राजाके दस्त़्लमें रहेगी.

पर्गनोंकी तफ़्सील.

पर्गनह इस्माईलपुर, मंडावर, तअ़ल्लुक़ा दर्बारपुर, रताय, नीमराना, बीजवाड़, और गुहिलोत और सराय दादरी, लोहारु, बुधवाना, और बुदचलनहर.

ता० २८ नोवेम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक़ १२ शअ़्बान १२१८ हिज्री, और अगहन सुदी १५ संवत् १८६०.

(दस्तख़त) - जी० लेक.

अ़ह्दनामह नम्बर ७९.

उस इक़ार नामहका तर्जमह, जो रावराजाके वकीलने किया.

मैं अहमदबख़्शखां उन पूरे इख़्तियारातके रूसे, जो महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंहने मुझको दिये हैं, और अपनी तरफ़से इक़ार करता हूं, कि एक लाख रुपया सर्कार अंग्रेज़ीको बाबत क़िले कृष्णगढ़ मए इलाक़े और सामानके, जो उसमें हो, दिया जायेगा; और पर्गने तिजारा, टपूकड़ा और कलतूमन, जो दादरी, बदबनोरा और भावनाकरजबके एवज़ मिले थे, महाराव राजाकी मुहर व दस्तख़तसे दिये जायेंगे; और हमेशहके वास्ते लासवाड़ी नदीका बन्द, जिस क़द्र कि राजा भरतपुरके मुल्कके फ़ाइदहके वास्ते ज़ुरूरी होगा, खुला रहेगा; और महाराव राजा इस इक़ार नामहके मुवाफ़िक़ पूरा अ़मल करेंगे.

जब एक इक़ार नामह महाराव राजाका तस्दीक़ किया हुआ आयेगा, तो यह काग़ज़ वापस होगा.

यह काग़ज़ इक़ारनामहके तौर हस्ब ज़ाबितह समझा जावेगा. ता० २१ रजब सन् १२२० हिज्री.

तर्जमह सहीह है.

(दस्तख़त) - सी० टी० मेटकाफ़,
एजेण्ट गवर्नर जेनरल.

अह्मदबख़्शखांकी मुहर.

मुहर.

अह्दनामह नम्बर ८०.

इक़ारनामह महाराव राजा बरूतावरसिंह रईस माचेड़ीकी तरफ़से, जो ता० १६ जुलाई सन् १८११ ई० को लिखा गया:-

जो कि एकता और दोस्ती पूरी मज्बूतीके साथ सर्कार अंग्रेज़ी और महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंहके दर्मियान क़रार पाई है, और चूंकि बहुत ज़रूर है, कि इसकी इत्तिला सब ख़ास व आमको हो, इसलिये महाराव राजा अपनी और अपने वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से इक़ार करते हैं, कि वह हर्गिज़ किसी ग़ैर रईस और सर्दारसे किसी तरहका इक़ार या इत्तिफ़ाक़ अंग्रेज़ी सर्कारकी बग़ैर मर्ज़ी और इत्तिला के नहीं करेंगे. इस निय्यतसे यह इक़ारनामह महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंहकी तरफ़से तह्रीर हुआ.

ता० १६ जुलाई सन् १८११ ई० मुताबिक़ २४ जमादियुस्सानी सन् १२४६ हिज्री. और ज़ाहिर हो, कि यह अह्दनामह, जो दोनों सर्कारोंके दर्मियान क़ाइम हुआ है, किसी तरह उस अह्दनामहको रद न करेगा, जो पहिले ज़ाबितह के मुवाफ़िक़ आपसमें तै हुआ है; बल्कि इससे उसकी और मदद और मज्बूती होगी.

दस्तख़त- महाराव राजा बख़्तावरसिंह.

मुहर महाराव राजा बख़्तावरसिंह.

अह्दनामह नम्बर ८१.

इक़ारनामह महाराव राजा सवाई बनेसिंहकी तरफ़से:-

जो कि तिजारा, टपूकड़ा, रताय और मंडावर वग़ैरहके ज़िले पर्लोकवासी राव राजा बख़्तावरसिंहको अंग्रेज़ी सर्कारसे जेनरल लॉर्ड लेक साहिबकी सिफ़ारिशपर इनायत हुए थे, मैं इन ज़िलोंकी जमाके मुताबिक़ अपने भाई राजा बलवन्तसिंहको और उसके वारिसोंको हमेशहके लिये आधा नक़्द और आधा इलाक़ह अंग्रेज़ी सर्कारकी हिदायतके मुवाफ़िक़ देता हूं; राजा इलाक़ह और रुपयेका मालिक रहेगा. अगर राजा या उसकी औलादमेंसे कोई लावारिस इन्तिक़ाल करेगा, तो इलाक़ह अलवरमें शामिल होजायेगा, और अगर राजा या कोई उसकी औलादमेंसे किसी ग़ैरको, जो उनका सुल्बी (औरस) न हो, गोद रक्खेंगे, तो ऐसे गोद लिये हुएको

मामूली इलाक़ह और रुपया नहीं दिया जावेगा. जो इलाक़ह राजाको दिया जायेगा, वह अंग्रेज़ी इलाक़हके पास और मिला हुआ होगा, और अंग्रेज़ी सर्कारकी हिफ़ाज़तमें समझा जावेगा. भाईचारेका वर्ताव मेरे और राजा मज़्कूरके दर्मियान क़ाइम और जारी रहेगा, और अंग्रेज़ी सर्कार मेरी और राजाकी तरफ़से इस इक़ारनामहकी तामीलकी ज़ामिन रहेगी.

तारीख़ माघ सुदी ६ संवत् १८८२ मुताबिक़ १४ रजब सन् १२४१ हिज्री, और ता० २१ फ़ेब्रुअरी सन् १८२६ ई०

तर्जमह सहीह–
दस्तख़त–सी० टी० मेटकाफ़,
रेज़िडेएट.

मुहर.

गवर्नर जेनरल बहादुरने इसको कौन्सिलके इज्लासमें तस्दीक़ किया. ता० १४ एप्रिल सन् १८२६ ई०.

अ़हदनामह नम्बर ८२.

अ़हदनामह बाबत लेन देन मुजिमोंके ब्रिटिश गवर्मेएट और श्रीमान् सवाई शिवदानसिंह महाराव राजा अलवरके व उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान, एक तरफ़से कर्नेल विलिअम फ़ेडरिक ईडन एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने उन कुल इख्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको हिज़ एक्सेलेन्सी दि राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बेरोनेट, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिये थे, और दूसरी तरफ़से लाला उमाप्रसादने उक्त महाराव राजा सवाई शिवदानसिंहके दिये हुए इख्तियारोंसे किया.

शर्त पहिली– कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़हमें संगीन जुर्म करके अलवरकी राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो अलवर की सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगेजानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी– कोई आदमी अलवरके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुजिम गिरिफ़्तार करके अलवरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो अलवरके राज्यकी रअय्यत न हो, और अलवरकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमहकी तह्क़ीक़ात सर्कार अंग्रेज़ी की बतलाई हुई अदालतमें कीजायेगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक्त्पर अलवरकी पोलिटिकल निगरानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके .इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो; और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जो कि उस .इलाक़हके क़ानूनके मुवाफ़िक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम उस वक्त हो, उसकी गिरिफ्तारी दुरुस्त ठहरेगी; और वह मुज्रिम क़रार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं- नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जायेंगे :-

१- खून. २- खून करनेकी कोशिश. ३- वह्शियानह क़त्ल. ४- ठगी. ५- ज़हर देना. ६- ज़िना बिल्जब्र (ज़बर्दस्ती व्यभिचार). ७- ज़ियादह ज़ख्मी करना. ८- लड़का बाला चुरालेना. ९- औरतोंका बेचना. १०- डकैती. ११- लूट. १२- सेंध (नक़्ब) लगाना. १३- चौपाया चुराना. १४- मकान जलादेना. १५- जालसाज़ी करना. १६- झूठा सिक्कह चलाना. १७- खयानते मुज्रिमानह. १८- मालअस्बाब चुरालेना. १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्ग़लाना.

शर्त छठी- ऊपर लिखीहुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमोंको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो खर्च लगे, वह दर्ख्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पड़ेगा.

शर्त सातवीं- ऊपर लिखाहुआ अह्दनामह उस वक्त तक बर्क़रार रहेगा, जब तक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक दूसरेको उसके रद करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे.

शर्त आठवीं- इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्खिलाफ़ हो.

ता० १२ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० को मक़ाम माउंट आबूपर तै किया.

फ़ार्सीमें (दस्तख़त) – डब्ल्यू० एफ़्० ईडन,
एजेएट गवर्नर जेनरल.

(दस्तख़त) – उमाप्रसाद,
वकील अलवरका. (दस्तख़त) – जॉन लॉरेन्स.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिमलेपर ता० २९ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० को की.

(दस्तख़त) – डब्ल्यू० म्यूर,
फ़ॉरेन सेक्रेटरी.

रियासत कोटाकी तारीख़.

जुग्राफ़ियह.

यह रियासत राजपूतानहके पूर्वी दक्षिणी हिस्से हाड़ौतीमें बूंदीकी शाख़ गिनी जाती है. इसका विस्तार उत्तर अक्षांश २४°- ३०' और २५°- ५१' और पूर्व देशान्तर ७५°- ४०' से ७६°- ५९' तक है. इसके पश्चिम व उत्तरमें चम्बल नदीके पश्चिमी किनारेपर बूंदी और उदयपुर, दक्षिणको मुकन्दरा नाम घाटेकी पहाड़ियां व झालावाड़, और पूर्वी हदपर इलाक़ह सेंधिया व छपरा इलाक़ह टौंक और झालावाड़ हैं; कुल रियासतकी लम्बाई दक्षिणसे उत्तरको क़रीब ९० मील और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिमको अनुमान ८० मीलके है. रक़बह ३७९७ मील मुरब्बा, और क़रीब ५१७२७५ कुल आबादीमेंसे ४७९६३४ हिन्दू, ३२८६६ मुसल्मान, २५ ईसाई, और ४७५० जैनी हैं. खालिसेकी आमदनी पच्चीस लाख रुपया सालानह मेंसे १८४७२० रुपया ख़िराज और २००००० रुपया कन्टिन्जेण्ट फ़ौजके लिये सर्कार अंग्रेज़ीको दिया जाता है.

मुल्कका सत्ह दक्षिणसे उत्तरकी तरफ़ ढालू है, और नदियां चम्बल, कालीसिन्ध, उजार और नेवज वग़ैरह बहती हैं; इनमें चम्बल और कालीसिन्ध बर्सातके दिनोंमें पायाब नहीं होतीं, और कहीं बारह महीनों इनमें नावें चला करती हैं. पहाड़ोंका एक सिलसिलह अग्निकोणसे वायव्य कोणकी तरफ़ चलागया है, यह पहाड़ कोटा व झालावाड़की सहद भी होगया है, और मालवा व हाड़ौतीकी हद भी इसी पहाड़से गिनी जाती है. इसीमें मुकन्दराका वह मश्हूर घाटा है, जिसको दक्षिणसे उत्तरका राजमार्ग कहना चाहिये. ज़मीन इस मुल्ककी उपजाऊ और आबाद होनेपर भी आबो हवा ख़राब है. गर्मीमें ज़ियादह तेज़ीके सबब और बर्सातमें कीचड़ (दलदल) की ख़राब हवासे बीमारी फैलजाती है. राजधानी कोटा चम्बल नदीके दाहिने किनारेपर एक शहर पनाहके अन्दर आबाद है; मुसाफ़िर लोग नदीकी तरफ़से किश्तियोंमें बैठकर जासक्ते हैं. शहरके पूर्व एक तालाब है, जिसके किनारेपर दरख़्तोंकी बहुतायतके सबब एक उम्दह और दिलचस्प मक़ाम नज़र आता है. चम्बल नदीके किनारेपर महारावके महल और एक बहुत बड़ा बुर्ज, जिसको छोटा क़िला कहना चाहिये, एक छोटी गढ़ीके अन्दर बहुत उम्दह बने हुए हैं. ज्यों ज्यों शहरकी आबादी बढ़ती गई, वैसे ही शहरपनाहकी दीवारोंसे जुदे जुदे अन्दरूनी हिस्से होगये हैं; शहरमें बहुतसे हिन्दुओंके मन्दिर हैं, और धनवान लोग भी ज़ियादह आबाद हैं.

कोटेकी निज़ामतें.

१- लाड पुरया- कोटेसे आध कोस पूर्व दिशामें है. २- दीगोद- कोटेसे ८ कोस पूर्व दिशामें. ३- वड़ोद- कोटेसे १२ कोस पूर्व दिशामें. ४-बारां- कोटेसे २० कोस दक्षिण पूर्वमें. ५- किशन गंज- कोटेसे ३० कोस उत्तरमें. ६- मांगरोल- कोटेसे ३० कोस उत्तर पूर्वमें. ७- अटचावा- कोटेसे २५ कोस पूर्वोत्तरमें. ८- अणता- कोटेसे १५ कोस उत्तरमें. ९- ख़ानपुर- कोटेसे ३० कोस पूर्व दिशामें. १०- शेरगढ़- कोटेसे २५ कोस उत्तर दिशामें. ११- कनवास- कोटेसे २० कोस दक्षिण दिशामें. १२- घांटोली- कोटेसे १५ कोस दक्षिणमें. १३- नाहरगढ़- कोटेसे ३० कोस पूर्व दिशामें. १४- सांगोद- कोटेसे १७ कोस उत्तरमें. १५- कुंजेड़- कोटेसे २५ कोस पूर्वमें है.
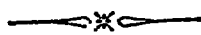
मश्हूर क़िले.

१- शेरगढ़- यह क़िला कोटेसे २५ कोस परवण नदीपर वाके है. २- गागरूण- कोटेसे २० कोस अग्नि कोणमें अउ, अमजार और कालीसिंध तीन नदियोंके बीचमें वाक़े है. ३- भमर गढ़- कोटेसे ३० कोस अग्नि कोणमें सीताबाड़ीसे १ कोसपर है. ४- नाहरगढ़- कोटेसे ३० कोस अग्नि कोणमें है. ऊपर लिखे क़िलुओंके सिवा कई छोटे क़िले नीचे लिखे हुए मक़ामातपर हैं:- अणता- अटरू- अट्यावा- मांगरोल- रांवठा- नानता- मुकन्दरा- घांटोली- मधुकरगढ़- दारां वग़ैरह.

प्रख्यात और मज़्हबी जगह.

१- गेपरनाथ महादेव- कोटेसे ५ कोसपर है. २- गराड़ीनाथ महादेव- चम्बलके पश्चिम किनारेपर. ३- कर्णेश्वर महादेव- कोटेसे २ कोस पूर्व तरफ़ कंसवा गांवमें है. ४- कपिलधारा- नाहरगढ़के नज़्दीक. ५- अधरशिला- अमर निवासके नज़्दीक कोटेसे आध कोस. ६- कांकड़दाकी माता- कोटेसे पूर्व दिशामें है. ७- कर्णाका महादेव- कोटेसे २ कोस अग्निकोणमें. ८- महादेव चार चौमाका- चतुर्मुख, कोटेसे ८ कोस पूर्व दिशामें. ९- बालाजी रंगवाड़ी- कोटेसे २ कोस दक्षिणमें. १०- कृष्णाई माताजी- कोटेसे २० कोस पूर्व रामगढ़में. ११- मट्ठे साहिब- गागरूणमें. १२- गेपीरजी- गराड़ीके पास.
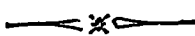
तारीख.

प्राचीन कालमें यहां नागवंशी और मौर्यवंशी राजाओंका
दो पाषाण लेख हमको मिले हैं, और जिनकी नक़्लें शेष संग्रहमें
कोटाके राजा चहुवान ज़ातके हाड़ा गोत्रमें बूंदी
हैं. उनके मूल पुरुष बूंदीके राव रत्नके छोटे बेटे माधवसिंह
१६८८ [हि० १०४१ = ई० १६३१] में जुदी रिया
'बादशाह नामह' की पहिली जिल्दके ४०१ पृष्ठमें इस तर

" बालाघाट, मुल्क दक्षिणके लश्करकी अर्ज़ियोंसे बादशा
हुआ, कि राव रत्न हाड़ाकी ज़िन्दगीके दिन पूरे हो गये, इस लिये
उसके पोते शत्रुशालको, जो उसका वलीअहद था, तीन ह
हज़ार सवारका मन्सब और रावका ख़िताब देकर बूंदी और खट
पर्गने, जहां राव रत्नका वतन था, उसकी जागीरमें इनायत कि
साथ फ़र्मान भेजकर उसको बादशाही दर्गाहमें तलब फ़र्मा
माधवसिंहको पांच सौ ज़ात और सवारकी तरक़ीसे ढाई हज़
हज़ार सवारका मन्सब देकर पर्गनह कोटा और फलायता उसकी ज

बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्कर और वंशप्रकाशमें इस रिय
सबब और तरहसे लिखा है, और कोटावाले अपनी तवारीख़में
करते हैं. उदयपुरमें प्रसिद्ध है, कि महाराणा जगत्सिंहकी
को कोटा मिला. किसी तरहसे हो, परन्तु बढ़ावेसे ख़ाली
लाचार हमको फ़ार्सी तवारीख़ोंका आसरा लेना पड़ा. अलब
मुसल्मानोंकी बड़ाईके साथ लिखी गई हैं; परन्तु साल संवत्‌की
ढंगसे लिखेजानेके सबब मुवर्रिख़ लोग उन्हींपर सब्र करते हैं.
में माधवसिंहका हाल इस तरहपर लिखा है:-

"माधवसिंह हाड़ा, राव रत्नका दूसरा बेटा है. शा
जुलूस हिज्री १०३७ [वि० १६८४ = ई० १६२८
मन्सब हजारी छ:सौ सवारका बहाल रहा. दूसरे साल

उनके साथ मुक़र्रर हुआ था. उन दिनों ख़ानेजहांने दक्षिणसे निकलकर मालवेकी राह ली, सो यह खूब तलाश करके उसतक जा पहुंचा. वह भी लाचार घोड़ेसे उतर पड़ा, और लड़ाई हुई. इसमें माधवसिंहने, जो सय्यद मुज़फ़्फ़रख़ांका हरावल था, ख़ानेजहांके बर्छा मारा, जिससे उसका काम तमाम हुआ. राजाको इस उम्दह चाकरीके एवज़में अस्ल व इज़ाफ़ह समेत दो हज़ारी हज़ार सवारका मन्सब और निशान मिला. इसी सालमें इसका बाप राव रत्न मरगया, तो बादशाहने इसको अगले मन्सबपर पांच सदी ज़ात पांच सौ सवारकी तरक़्क़ी दी; और पर्गनह कोटा व फलायता जागीरमें बख़्शा."

"छठे साल जुलूस हिज्री १०४२] वि० १६८९ = ई० १६३३] में यह सुल्तान शुजाअ्के साथ दक्षिणको गया. जब महाबतख़ां दक्षिणका सूबहदार मरगया, तो यह ख़ानेदौरां सूबहदार बुर्हानपुरके साथ तईनात हुआ, और जब कि साहू भोंसलेने दौलताबादकी तरफ़ फ़साद उठाया, तो ख़ानेदौरां एक फ़ौजके साथ उसके तदारुकको रवानह हुआ. इसको बुर्हानपुर शहरकी हिफ़ाज़तके वास्ते छोड़गया."

"सातवें साल जुलूस हिज्री १०४३ [वि० १६९० = ई० १६३४] में ख़ानेदौरांके साथ जुझारसिंह बुंदेलेकी सज़ादिहीपर मुक़र्रर हुआ; जब उसके मुल्कमें पहुंचे, उस दिन बहादुरख़ां रुहेलेका चचा नेकनाम लड़ाई करके बीचमें ज़ख़्मी पड़ा था; माधवसिंहने उसी जगहसे बाग उठाई, बहुतसे उन बाग़ियोंको जानसे मारा, और कितनोंको भगादिया. जब वे लोग अपने बालबच्चोंका जौहर करनेमें थे, तब माधवसिंहने ख़ानेदौरांके बड़े बेटे सय्यद मुहम्मदके साथ उनपर दौड़ की, और बहुतसोंको मारडाला. जब माधवसिंह बादशाही हुज़ूरमें आया, तो अस्ल व इज़ाफ़ह समेत उसका मन्सब तीन हज़ारी एक हज़ार छः सौ सवार हुआ."

"नवें साल जुलूस हिज्री १०४५ [वि० १६९२ = ई० १६३५] में जब बादशाह बुर्हानपुरमें आया, और साहू भोंसलेकी सज़ादिही, और आदिल-ख़ानियोंका मुल्क लेनेके वास्ते तीन फ़ौजें तीन सर्दारोंके साथ मुक़र्रर हुईं, तो माधवसिंह ख़ानेदौरां बहादुरके साथ तईनात हुआ."

"दसवें साल जुलूस हिज्री १०४६ [वि० १६९३ = ई० १६३६] में बादशाहके हुज़ूरमें आया, तो अस्ल व इज़ाफ़ह मिलाकर तीन हज़ारी दो हज़ार सवारका मन्सब हुआ."

"ग्यारहवें साल जुलूस हिज्री १०४७ [वि० १६९४ = ई० १६३७] में सुल्तान मुहम्मद शुजाअ्के साथ काबुलको गया."

"तेरहवें साल जुलूस हिज्री १०४९ [वि० १६९६ = ई० १६३९] में सुल्तान मुरादबख़्शके साथ फिर काबुलको गया."

"चौदहवें साल जुलूस हिज्री १०५० [वि० १६९७ = ई० १६४०] में जब शाहज़ादह वापस लौटा, और यह दर्बारमें हाज़िर हुआ, इसको तीन हज़ारी ढाई हज़ार सवारका मन्सब मिला."

"सोलहवें साल जुलूस हिज्री १०५२ [वि० १६९९ = ई० १६४२] में ५०० सवारका इज़ाफ़ह पाया."

"अठारहवें साल जुलूस हिज्री १०५४ [वि० १७०१ = ई० १६४४] में जब अमीरुल उमरा सूबहदार काबुलको बदख़्शां लेनेका हुक्म हुआ था, तो यह उसकी मददको मुक़र्रर हुआ. पीछे सुल्तान मुरादबख़्शकी ख़िद्मतमें बल्ख़को गया; जब सुल्तान मुरादबख़्श बल्ख़को छोड़आया, और सुल्तान औरंगज़ेब उसकी जगह मुक़र्रर हुआ, तब इसने उम्दह ख़िद्मतें कीं; और कुछ मुद्दतके लिये बल्ख़के क़िलेकी हिफ़ाज़तपर मुक़र्रर रहा. जब बादशाहके हुक्मके मुताबिक़ शाहज़ादह औरंगज़ेब बल्ख़का मुल्क वहांके अगले मालिकको सौंपकर वहांसे लौटा, तो माधवसिंह काबुल पहुंचने बाद हुक्मके मुवाफ़िक़ शाहज़ादहसे रुख़सत होकर इक्कीसवें साल जुलूस हिज्री १०५७ [वि० १७०४ = ई० १६४७] में बादशाहके हुज़ूरमें पहुंचा; और वहांसे रुख़सत लेकर वतनको गया. उसने इसी सालमें इस दुन्यासे कूच किया."

कर्नेल टॉडने माधवसिंहका जन्म विक्रमी १६२१ [हि० ९७१ = ई० १५६४] में और मृत्यु विक्रमी १६८७ [हि० १०३९ = ई० १६३०] में लिखा है, लेकिन् यह नहीं होसक्ता, क्यौंकि विक्रमी १६८८ [हि० १०४० = ई० १६३१] में जब उनके बाप रत्नसिंहका इन्तिक़ाल हुआ, तब इनको कोटा और फलायता मिला; विक्रमी १७०४ [हि० १०५७ = ई० १६४७] में माधवसिंहका इन्तिक़ाल होना उसी ज़मानेकी किताब बादशाहनामहमें लिखा है; सिवा इसके अक्बरनामहमें अबुल्फ़ज़्ल लिखता है, कि जब रणथम्भोरका क़िला अक्बर बादशाहने फ़त्ह किया, तब विक्रमी १६२५ [हि० ९७५ = ई० १५६८] में बूंदीके राव सुर्जणके बेटे दूदा और भोज बादशाहकी ख़िद्मतमें हाज़िर होगये; उस वक़ उनकी उम्र शुरू जवानीपर थी. भोजका पोता माधवसिंह है, जिससे कर्नेल टॉडके लेखपर यक़ीन नहीं होसक्ता. माधवसिंहके पांच बेटे थे- १- मुकुन्दसिंह, २- मोहनसिंह, ३- कान्हसिंह, ४- जुझारसिंह, ५- किशोरसिंह. इनमेंसे बड़े मुकुन्दसिंह गादी बैठे, उनसे छोटे मोहनसिंहको फलायता, कान्हसिंहको कोयला, जुझारसिंहको कोटड़ा, और किशोरसिंहको सांगोद जागीरमें मिला. यह हाल कोटेकी तवारीख़से लिखागया है.

मुकुन्दसिंहका हाल मआसिरुल उमरामें इस तरहपर लिखा है:-

"मुकुन्दसिंह हाड़ा माधवसिंहका बेटा है, वह अपने बापके मरने बाद

इक्कीसवें जुलूस शाहजहानीमें हुजूरमें आया, दो हज़ारी और डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब और वतन जागीरमें मिला. फिर पांच सौ सवारका इज़ाफ़ह हुआ. बाईसवें साल जुलूस हिज्री १०५८ [वि० १७०५ = ई० १६४८] में सुल्तान औरंगज़ेबकी ख़िदमतमें कन्धारकी लड़ाईपर गया; जब वहांसे लौटा, तो २५ वें जुलूस हिज्री १०६१ [वि० १७०८ = ई० १६५१] में पांच सौ ज़ातका इज़ाफ़ह और नक़ारह निशान मिला. इसी सालमें सुल्तान औरंगज़ेबके साथ दोबारह कन्धारको गया, और २६ साल जुलूस हिज्री १०६२ [वि० १७०९ = ई० १६५२] में सुल्तान दाराशिकोहके साथ कन्धार गया. जब वहांसे लौटा, तो अस्ल व इज़ाफ़ह समेत तीन हज़ारी दो हज़ार सवारका मन्सब हुआ.

२८ साल जुलूस हिज्री १०६४ [वि० १७११ = ई० १६५४] में सादुल्लाहख़ांके साथ क़िले चित्तौड़के बिगाड़नेको तईनात हुआ, और ३१ वें जुलूस हिज्री १०६७ [वि० १७१४ = ई० १६५७] में महाराजा जशवन्तसिंहके साथ, जब वह सुल्तान औरंगज़ेबके रोकनेको मालवेपर तईनात हुआ था, मुक़र्रर हुआ. इसने अपने छोटे भाई मोहनसिंह सहित लड़ाईके दिन ऐसी जुर्अत की, कि हरावल फ़ौजके मुक़ाबिल तोपख़ानहसे बढ़गया; और ऐसी कोशिश की, कि कारनामह रुस्तमका दिखा दिया. आख़िर इन दोनों भाइयोंने आबरूके साथ जानें वारदीं, याने हिज्री १०६८ [वि० १७१५ = ई० १६५८] में मारेगये."

कोटेकी तवारीख़में इनका इतना हाल ज़ियादह लिखा है, कि मुकुन्दसिंहने अपने मुल्ककी दक्षिणी हदके पहाड़ी घाटेमें क़िला और शहर आबाद करके उसका नाम मुकन्दरा रक्खा, और आख़िरी वक्त महाराजा जशवन्तसिंहके मददगारोंमें अपने चारों छोटे भाइयों समेत तईनात हुआ. फ़त्हाबादमें विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ [हि० १०६८ रमज़ान = ई० १६५८ जून] में औरंगज़ेबसे मुक़ाबलह करके बड़ी बहादुरीके साथ मुकुन्दसिंह, मोहनसिंह, कान्हसिंह, जुझारसिंह चारों भाई मारेगये; और पांचवां किशोरसिंह ४२ ज़ख़्म खाकर ज़िन्दह बचा. किसी कविने मारवाड़ी भाषामें उस वक्त एक गीत कहा था, जो यहांपर दर्ज किया जाता है:-

गीत.

प्रथम मुकन मोहण अणी घणी जूझार पण, सही भड़ किसोवर कान्ह साथै ॥
अथंग अवरंग अलंग ढीलड़ी आवतां, मधारा रावतां लीध माथै ॥ १ ॥
उरेड़े सेन सारसगड़ै ऊपड़ै, जागिया रुड़ै घण सबद जाड़ा ॥
काळ दखणादरा दळीसर दाकले, हाकले आणिया सीस हाड़ा ॥ २ ॥

लगस फौजां गजां बळो वळ लूंबियां, सांचरे हियां कहै भड़ां सांचां ॥
उरसरीगजां साही सरस ऊतरै, पाधरा ओढिया कमळ पांचां ॥ ३ ॥
किसवटै रणबटै थटै अवरंग कसै, अंवर सह धरहरै फरहरै आंच ॥
पांचनर नीमटै नाहिं सारी प्रथी, पेट हेकण तणा नीमटै पांच ॥ ४ ॥
बेस चाढे जहर रमा आवध बगल, स्याम ध्रम पार पाड़े सऊजा ॥
सार अड़बड़ थकां उपाड़ै किसोवर, देवपुर च्यार गा रतन दूजा ॥ ५ ॥

मुकुन्दसिंहके सिर्फ़ एक बेटे जगत्सिंह थे, जो चौदह वर्षकी उम्रमें कोटाकी गादीपर बैठे. मआसिरुल उमरामें लिखा है, कि मुकुन्दसिंहका बेटा जगत्सिंह अह्द आलमगीरीमें दो हज़ारी मन्सब और वतनकी सर्दारी पाकर मुद्दत तक दक्षिणमें तईनात रहा.

जब जगत्सिंह विक्रमी १७४० [हि० १०९४ = ई० १६८३] में गुज़रे, और उनके कोई औलाद न रही, तब रियासती लोगोंने कोयलाके कान्हसिंह माधवसिंहोतके बेटे पेमसिंहको गादीपर बिठादिया; लेकिन् वह चाल चलन ख़राब होनेके सबब तेरह महीने बाद ख़ारिज कियागया, और माधवसिंहके पांचवें बेटे किशोरसिंहको गादी मिली. इनका हाल मआसिरुल उमरामें इस तरहपर दर्ज है:-

"जब मुकुन्दसिंह हाड़ेका बेटा जगत्सिंह २५ वें साल जुलूस आलमगीरी हिज्री १०९२ [वि० १७३८ = ई० १६८१] में मरगया, और उसके कोई बेटा नहीं रहा, तो बादशाहने कोटेकी हुकूमत मुकुन्दसिंहके भाई किशोरसिंहको, जो जगत्सिंका चचा था, अता फ़र्माई; और किशोरसिंह, मुहम्मद आज़मके साथ बीजापुरकी लड़ाईपर तईनात हुआ. जिस दिन कि अल्लाहवर्दीख़ांका बेटा अमानुल्लाह काम आया, इसने भी ज़ख्म उठाया. ३० वें साल जुलूस हिज्री १०९७ [वि० १७४३ = ई० १६८६] में सुल्तान मुअ़ज़्ज़मके साथ हैदराबादकी तरफ़ गया. ३६ वें साल जुलूस हिज्री ११०४ [वि० १७४९ = ई० १६९३] में इसको नक़्क़ारह इनायत हुआ. इसके बाद किशोरसिंह गुज़रगया. ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बहादुरकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ कोटेकी हुकूमत उसके बेटे रामसिंहको, जो वतनमें था, मिली."

कोटेकी तवारीख़में यह हाल ज़ियादह लिखा है, कि सिन्सिनीके जाटोंकी बग़ावत मिटानेके लिये आलमगीरने अपने पोते शाहज़ादह बेदारबख़्तके साथ राव किशोरसिंहको भेजा, यह वहां बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर ज़ख्मी हुए. इनके साथ वालोंमेंसे घाटीका रावत् तेजसिंह, राजगढ़का आपजी गोवर्धनसिंह, पानाहेड़ाका ठाकुर सुजानसिंह सोलंखी, तारजका ठाकुर राजसिंह वग़ैरह मारेगये. यह ज़ख्मी

हालतमें अपनी राजधानी कोटेको आये, और कुछ अरसह बाद आलमगीरने इनको दक्षिण में बुलाया. ये बीमारीसे लाचार थे, इस सबबसे इन्होंने अपने बड़े बेटे विष्णुसिंह को जानेके लिये कहा, लेकिन् वह टालगया; और इसी तरह दूसरे बेटे हरनाथसिंहने भी बहाना ढूंढा; तब तीसरे बेटे रामसिंहको कहा, जो पिताके हुक्मके मुवाफ़िक़ खुशीसे रवानह होकर बादशाहके पास पहुंचा. कुछ दिनों बाद किशोरसिंह भी बीमारीसे फ़ुर्सत पाकर बादशाही ख़िद्मतमें जा हाज़िर हुए; और विक्रमी १७५२ [हि० ११०६ = ई० १६९५] में अर्काटके हमलेमें बड़ी बहादुरीके साथ मारेगये. इनके बेटे रामसिंह, जो ज़ख़्मी होकर जिन्दह बचे, वह गद्दीपर बैठे.

५- राव रामसिंह.

रामसिंह ज़ख़्मोंसे तन्दुरुस्त होकर आलमगीरके पास दर्बारमें गये, तब बादशाहने इनसे दर्याफ़्त किया, कि किशोरसिंहका हक़्दार कौन है? रामसिंहने जवाब दिया, कि बड़े विष्णुसिंह, दूसरे हरनाथसिंह हैं, और तीसरे नम्बरपर मैं हूं. बादशाहने कहा, कि जिसने अपने बापके साथ सर्कारी ख़िद्मतमें ज़ख़्म उठाये, वही उसका हक़्दार है. रामसिंहने सलाम किया, और बादशाहने उसको किशोरसिंहका वारिस बनाया.

कोटेमें विष्णुसिंहने गद्दीपर बैठकर सुना, कि रामसिंह बादशाही मदद लेकर आता है, तो वह भी अपनी जमइयतसे मुक़ाबलेको चले; गांव आंवाके पास लड़ाई हुई, जिसमें विष्णुसिंह ज़ख़्मी हुआ, और हरनाथसिंह मारागया; रामसिंहने फ़त्हयाबीके साथ कोटेपर क़ब्ज़ह करलिया. विष्णुसिंह अपनी ससुराल मेवाड़के इलाक़े पंडेरमें पहुंचा; वहांके राणावतोंने उसकी अच्छी ख़ातिर की, और तीन वर्ष बाद वह उसी जगह मरगया. विष्णुसिंहके एक बेटा पृथ्वीसिंह था, जिसको रामसिंहने बुलवाकर अणता जागीरमें दिया, और इसी तरह हरनाथसिंहके बेटे कुशलसिंहको सांगोद इनायत किया.

मआसिरुल उमरामें राव रामसिंहका हाल इस तरहपर लिखा है:-

"रामसिंह हाड़ा, माधवसिंह हाड़ेका पोता है. जब जगत्सिंह, मुकुन्दसिंह हाड़ेका बेटा २५ वें साल जुलूस आलमगीरी हिज्री १०९३ [वि० १७३९ = ई० १६८२] में गुज़रगया, और उसके कोई बेटा न रहा, तो बादशाहने कोटेकी हुकूमत मुकुन्दसिंहके भाई किशोरसिंहको, जो जगत्सिंहका चचा था, इनायत फ़र्माई. किशोरसिंह शाहज़ादह मुहम्मद आज़मके हमराह बीजापुरकी लड़ाईपर

तईनात हुआ. जिस दिन, कि अल्लाहवर्दीख़ांका बेटा अमानुल्लाहख़ां काम आया, इसने भी ज़ख़्म उठाया."

"३० वें साल जुलूस हिज्री १०९८ [वि० १७४४ = ई० १६८७] में वह सुल्तान मुअ़ज़्ज़मके साथ हैदराबादकी तरफ़ गया; ३६ वें साल जुलूस हिज्री ११०४ [वि० १७४९ = ई० १६९२] में नक़ारह इनायत हुआ. फिर किशोरसिंह गुज़र गया, ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बहादुरकी अ़र्ज़के मुवाफ़िक़ कोटेकी हुकूमत उसके बेटे रामसिंहको, जो वतनमें था, मिली. रामसिंहने अव्वल ढाई सदी, दोबारह छः सदी और पीछे हज़ारीका मन्सब पाया. वह हमेशह ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके साथ तईनात रहा, और संताके बेटे राणू वग़ैरह मरहटोंकी सज़ादिहीमें मश्ग़ूल था. ४४ वें साल जुलूस हिज्री १११२ [वि० १७५७ = ई० १७००] में नक़ारह मिला; ४८ वें साल जुलूस हिज्री १११६ [वि० १७६१ = ई० १७०४] में ढाई हज़ारी मन्सब पाया, और मऊ मैदानाकी ज़मींदारी राव बुद्धसिंहसे उतारकर उसको दीगई, जिसकी यह बड़ी आर्ज़ूमें था. उसको एक हज़ार सवार रखनेका हुक्म हुआ, और उसने आलमगीरके इन्तिक़ालपर आज़मशाहकी हम्राही इख़्तियार की; वह चार हज़ारी मन्सब पाकर लड़ाईके दिन सुल्तान अ़ज़ीमुश्शानके मुक़ाबलेमें बड़ी मर्दानगीसे मारा गया. उसके पीछे उसके बेटे भीमसिंहने वतनकी सर्दारी पाई."

"हिज्री ११३१ [वि० १७७६ = ई० १७१९] में, जब सय्यद दिलावर-अ़लीख़ांकी निज़ामुल्मुल्क आसिफ़जाहसे लड़ाई हुई, और उसमें सय्यद दिलावर-अ़लीख़ां मारा गया, तब यह (भीमसिंह) जान बचाकर न भागा; और इसने बड़ी मर्दानगीसे लड़कर जान देदी. पीछे इसका पोता गुमानसिंह, शत्रुसाल व दुर्जनशाल कोटेके मालिक हुए."

रामसिंहका ज़िक्र कोटाकी तवारीख़में भी बहुत है, पर उसका ख़ुलासह मआसिरुल उमराके लेखमें आचुका है, और राव रामसिंहके मारेजानेका हाल महाराणा दूसरे अमरसिंहके बयान व बहादुरशाहके ज़िक्रमें तफ़्सीलवार लिखागया है- (देखो पृष्ठ ९२५). इनके एक बेटे भीमसिंह थे.

६ - महाराव भीमसिंह.

जब राव रामसिंह सुल्तान आज़मके साथ बहादुरशाहके मुक़ाबलहपर मारेगये, तब बूंदीके राव बुद्धसिंह बहादुरशाहकी तरफ़ थे; उन्होंने कोटेको अपनी रियासतमें

मिलालेना सोचकर बहादुरशाहसे उस जागीरका फ़र्मान अपने नाम लिखा लिया, और अपने मुलाज़िमोंको लिख दिया, कि फ़ौज लेजाकर कोटा ख़ाली करालो. हाड़ा जोगीराम वगैरह बूंदीसे फ़ौज लेकर चढ़े, पच्चीस वर्षकी उम्रका राव भीमसिंह भी अपनी जमइयतके साथ कोटासे चला. पांच कोसपर पाटणके पास मुक़ाबलह हुआ, बूंदीकी फ़ौज शिकस्त खाकर भाग गई. बहादुरशाहको राजपूतानहका फ़साद बढ़ाना मन्ज़ूर नहीं था, क्योंकि उसको दक्षिणकी तरफ़ शाहज़ादह कामबरुशका मुक़ाबलह दर्पेश था.

कोटा और बूंदीके विरोधका सविस्तर हाल बूंदीके मिश्रण सूर्यमल्लने अपनी किताब वंशभास्करमें लिखा है, और विरोध शुरू करनेका कारण बुद्धसिंहको ठहराकर उनकी शिकायत की है; लेकिन् हम इन दोनों रियासतोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीका बानी (जड़) राव बुद्धसिंहको नहीं कहसक्ते, क्योंकि अव्वल माधवसिंहने कोटा व फलायता वगैरह पर्गने बूंदीसे जुदा करालिये, दूसरे राव रामसिंहने मऊ मैदानाके पर्गने बूंदीसे छीनकर आलमगीरके हुक्मसे अपनी रियासतमें शामिल करलिये, तब राव बुद्धसिंहने भी इस वक़् कोटा छीन लेनेकी कोशिश की; लेकिन् हम यह इल्ज़ाम बुद्धसिंहकी निस्बत लगा सक्ते हैं, कि इस समय वह कोटापर इह्सान दिखलाकर भीमसिंहको अपना दोस्त बनासक्ता था; इस मिलापसे दोनों रियासतें आनेवाली आफ़तोंसे बची रहतीं.

राव भीमसिंहको भी यह फ़िक्र हुई, कि दक्षिणसे आनेपर बहादुरशाह ज़रूर फ़ौज भेजेंगे, लेकिन् ईश्वरकी कुद्रतसे बादशाहको सीधा दक्षिणसे पंजाबको जाना पड़ा, जहां सिक्खोंने बड़ी भारी बग़ावत कर रक्खी थी. बहादुरशाह तो उसी तरफ़ बीमारीसे मरगये, और थोड़े दिनोंतक जहांदारशाहकी बादशाहत रही. फिर भीमसिंहने फ़र्रुख़सियरके अह्दमें हुसैनअलीख़ां अमीरुलउमराको अपना मददगार बनाया, यहांतक, कि फ़र्रुख़सियरको तख़्तसे उतारनेमें यह भी सय्यदोंके शरीक थे. आख़िरकार मुहम्मदशाहके शुरू अह्दमें सय्यदों और तूरानियोंमें नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ी, उसका हाल मुहम्मदशाहके ज़िक्रमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ११४३-४४).

बूंदीसे बदला लेनेके बहानेसे सय्यदोंने राव भीमसिंहको बहुत बड़ा मन्सब और फ़ौज देकर भेजा; और इशारह यह था, कि निज़ामुल्मुल्क फ़त्हजंगपर चढ़ाई करनेको तय्यार रहें. महाराव भीमसिंहने हाड़ौती पहुंचकर बूंदीपर क़ब्ज़ह करलिया, और बहुतसे ज़िले मालवा व गिर्दनवाहके अपनी रियासतमें मिला लिये. फिर महाराव वगैरह निज़ामुल्मुल्क फ़त्हजंगसे मुक़ाबलह करनेको चले. इसका हाल मुन्तख़बुल्लुबाबमें ख़फ़ीख़ांने इस तरहपर लिखा है :-

" हिज्री ११३२ [वि० १७७७ = ई० १७२०] में कोटेके महाराव :

भीमसिंह हाड़ा और नर्वरके राजा गजसिंह कछवाहेकी तबाहीका बड़ा मुआमलह पेश आया, जो सय्यद दिलावरअलीखां और आलमअलीखांके हमराह फ़ौज और सामानकी ज़ियादतीके सबब अमीरुलउमरा हुसैनअलीखांकी मददगारीका बड़ा दम भरते थे. हुसैनअलीखां बादशाही बख़्शीने महाराव भीमसिंहसे इक़ार किया, कि बूंदीके ज़मींदार सालिमसिंहकी सज़ादिही और निज़ामुल्मुल्क फ़त्हजंगका मुआमलह तै होने बाद उसको 'महाराजा' का ख़िताब और जोधपुरके अजीतसिंहके बाद दूसरे राजाओंसे ज़ियादह इज़्ज़त दीजावेगी. उसको सात हज़ारी मन्सब और माही मरातिब देकर राजा गजसिंह नर्वरी और दिलावरअलीखां वग़ैरहके साथ १५००० पन्द्रह हज़ार जर्रार सवारों समेत मुक़र्रर किया, कि सालिमसिंहके ख़ारिज करनेको बहाना बनाकर मालवेकी तरफ़ निज़ामुल्मुल्कके हालसे ख़बरदार रहें; और जल्द इशारह होनेपर उसका काम तमाम करें. इन लोगोंने बूंदी क़ब्ज़ेमें लाकर हुसैनअलीखांको कार्रवाईसे ख़बर दी; उसने ताकीद की, कि जिस वक़्त मौक़ा पावें, आलमअलीखांसे मिलकर निज़ामका मुआमलह तै करें. दिलावर अलीखां बूंदी लेने बाद राजा भीमसिंह व गजसिंह समेत मालवेमें पहुंच गया. निज़ाम पहिले ही दक्षिणमें जमाव करनेके लिये चलदिया था. दिलावरअलीखां वग़ैरहने निज़ामके आदमियोंको मालवेमें क़ैद और क़त्ल करना शुरू किया, और बुर्हानपुरकी तरफ़ रुजू हुए. निज़ामने यह हाल सुनकर बहुत जल्द बुर्हानपुरके शहर व आसीरगढ़को अपने क़ब्ज़ेमें लिया. इसपर हुसैनअलीखांने दिलावरअलीखां और महाराव भीमसिंहको निज़ामके मुक़ाबलहकी सख़्त ताकीद लिखी."

"बुर्हानपुरसे सत्तरह अठारह कोसके फ़ासिलेपर निज़ाम अपना तोपख़ानह और फ़ौज लेकर दिलावरअलीखां और महाराव भीमसिंहके मुक़ाबलेपर आपहुंचा. हिज्री ११३२ ता० १३ शअ्बान [वि० १७७७ ज्येष्ठ शुक्ल १५ = ई० १७२० ता० २० जून] को दोनों तरफ़से मुक़ाबलेकी तय्यारी होगई. शुरूमें निज़ामकी फ़ौज हटनेको थी, लेकिन् एवज़ख़ां हरावलकी दिलेरीसे जमगई; कई बार दोनों तरफ़से हार जीतकी सूरत पेश आती रही; आख़िरमें दिलावरअलीखांकी हरावल फ़ौजमेंसे शेरख़ां और बाबरख़ां कारगुज़ार मारे गये, और दिलावरअलीखां भी, जो हाथीपर आगे बढ़गया था, गोला लगनेसे मारा गया. इनकी फ़ौजके कुछ पठान वग़ैरह भाग निकले, लेकिन् राजा भीमसिंह व गजसिंहने यह शर्म पसन्द न की, अपने राजपूतों समेत हाथी घोड़ोंसे उतर कर ख़ास निज़ामकी फ़ौजपर हमलह करने लगे. मरहमतख़ां, निज़ामकी बाईं फ़ौजका अफ़्सर दोनों राजपूतोंपर एकदम टूट पड़ा, और उसने एक धावेमें चार सौ

राजपूतोंको वेजान किया. निज़ामके मुक़ाबलहपर कुल चार पांच हज़ार हिन्दू मुसल्मान सवार क़त्ल हुए, भागनेको बहुत कम बचे. निज़ामुल्मुल्क फ़त्हजंगकी फ़ौजने फ़त्हका नक़ारह बजाया. निज़ामकी तरफ़से बदख़्शीख़ां और दिलेरख़ांके सिवा, जो अपने साथियों समेत काम आये, कोई नामी सर्दार नहीं मारागया. निज़ामके हाथ बहुतसा तोपख़ानह और सामान आया. इसके बाद अब्दुल्लाहख़ां वज़ीर व हुसैनअलीख़ां बख़्शीने बादशाहको साथ लेकर निज़ामपर चढ़ाईका इरादह किया. "

जब महाराव भीमसिंह विक्रमी १७७७ ज्येष्ठ शुक्ल १५ [हि० ११३२ ता० १३ शब्वान = .ई० १७२० ता० २० जून] को मारे गये, उस वक्त उनके तीन बेटे, अर्जुनसिंह, श्यामसिंह, और दुर्जनशाल थे, जिनमेंसे बड़े अर्जुनसिंह कोटेकी गद्दीपर बैठे. भीमसिंहके पीछे कोटेमें दो राणियां और पांच ख़वासें, कुल सात औरतें सती हुईं.

७- महाराव अर्जुनसिंह.

इन्होंने माधवसिंह झालाकी बहिनके साथ शादी की थी. यह थोड़े ही दिनों ज़िन्दह रहकर विक्रमी १७८० [हि० ११३५ = .ई० १७२३] में इस दुन्या को छोड़गये. इनके कोई औलाद न होनेके कारण उनकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ उनके तीसरे भाई दुर्जनशालको गद्दी मिली.

८- महाराव दुर्जनशाल.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १७८० मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० ११३६ ता० १९ सफ़र = .ई० १७२३ ता० १८ नोवेम्बर] को हुआ. इस वक्त श्यामसिंह नाराज़ होकर महाराजा जयसिंहके पास जयपुर चलेगये. महाराजा जयपुर पहिलेसे कोटाके बर्ख़िलाफ़ थे, क्योंकि महाराव भीमसिंह हुसैनअलीख़ांकी हिमायतसे जयपुरकी बर्बादीको तय्यार हुए थे; इस समय जयसिंहने श्यामसिंहको अपनी पनाहमें रखलिया.

विक्रमी १७८५ [हि० ११४० = .ई० १७२८] में जयपुर वालोंने श्यामसिंहको फ़ौजकी मदद देकर कोटा लेनेके लिये भेजा. अत्रालिया गांवके पास महाराव दुर्जनशालसे मुक़ाबलह हुआ, श्यामसिंह लड़कर मारागया, जिसकी छत्री अत्रालिया गांवमें मौजूद है.

विक्रमी १७९१ [हि० ११४७ = .ई० १७३४] में उदयपुरके महाराणा जगत्सिंहकी कन्या बृजकुंवरका विवाह महाराव दुर्जनशालके साथ हु[आ]

विक्रमी १८०० [हि० ११५६ = ई० १७४३] में जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहका इन्तिक़ाल हुआ, तो बूंदीके रावराजा उम्मेदसिंह, जो अपनी ननिहाल बेगूंमें रहते थे, महारावके पास आए; क्योंकि महाराजा जयसिंहने रावराजा बुद्धसिंहसे बूंदी छीनकर वहांकी गद्दीपर दलेलसिंहको बिठादिया था. भीमसिंहने विक्रमी १८०१ आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० ११५७ ता० १० जमादियुस्सानी = ई० १७४४ ता० २२ जुलाई] को राजा उम्मेदसिंह शाहपुरावालेके साथ बूंदीको जा घेरा, और दलेलसिंहको निकालने बाद राव राजा उम्मेदसिंहको कुछ पर्गनह निकालकर बूंदीपर अपना क़ब्ज़ह करलिया. यह हाल मुफ़स्सल तौरपर बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करमें मिश्रण सूर्यमल्लने लिखा है. फिर जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंहने जयआपा सेंधियाकी मददसे बूंदी छीनकर दलेलसिंह को दिला दी, और मरहटी फ़ौजने मए जयपुरकी मददके कोटेको आ घेरा.

विक्रमी १८०२ वैशाख शुक्ल पक्ष [हि० ११५८ रबीउस्सानी = ई० १७४५ मई] में जियाजी सेंधियाके गोली लगने बाद कोटेकी तवारीख़में सुलह होना लिखा है, और इस बातका ज़िक्र सलूंबरके रावत् कुबेरसिंहने अपने काग़ज़में किया है, जो विक्रमी १८०१ माघ कृष्ण १२ [हि० ११५७ ता० २६ ज़िल्हिज = ई० १७४५ ता० ३० जैन्युअरी] को उदयपुर महाराजा बख़्तसिंहके नाम लिखा था; उसमें उक्त मितीको सुलह होना पायाजाता है. उस काग़ज़की नक़्ल हम महाराणा जगत्सिंह दूसरेके हालमें लिखआये हैं- (देखो पृष्ठ १२३२).

शायद इस काग़ज़के लिखने बाद फिर लड़ाई शुरू होगई हो, तो कोटेकी तवारीख़का लिखना ठीक होसक्ता है. आख़िरकार मरहटोंको पाटण व कापरणका पर्गनह और ४००००० चार लाख रुपया देकर महारावने पीछा छुड़ाया. इनका बाक़ी हाल उदयपुर और जयपुरके ज़िक्रमें आचुका है. यह बड़े दिलेर और मुल्की मुआमलातमें होश्यार थे. विक्रमी १८१३ श्रावण शुक्ल ५ [हि० ११६९ ता० ४ ज़िल्क़ाद = ई० १७५६ ता० १ ऑगस्ट] को इनका देहान्त होगया.

९- महाराव अजीतसिंह.

दुर्जनशालके कोई औलाद न होनेके सबब माधवसिंहके पोते और महाराव किशोरसिंहके बड़े पुत्र विष्णुसिंह (जो अपने भाई रामसिंहसे आंवा गांवमें मुक़ाबलह करके ज़ख़्मी हुए थे, और तीन साल बाद पंडेर गांवमें मरगये) के बेटे पृथ्वीसिंहके पांच कुंवरोंमेंसे दूसरे अजीतसिंह, जो अपने वालिदका देहान्त होनेपर अणतामें गद्दीनशीन होचुके थे, कोटाके महाराव मुक़र्रर हुए. इनके पिता

पृथ्वीसिंहको महाराव रामसिंहने अणता जागीरमें दिया था; पृथ्वीसिंहके पांच बेटे हुए थे- बड़ा भोपसिंह, जिसका इन्तिक़ाल पिताकी मौजूदगीमें ही होचुका था; दूसरा अजीतसिंह; तीसरा सूरजमल्ल, जिसने बंबूलिया जागीरमें पाया, और जिसकी औलाद इस वक़्त तक उक्त गांवमें जागीरदार है; चौथे वख्तसिंहको खेड़ली व इटावा जागीरमें मिला, इनकी औलाद खेड़लीमें मौजूद है; और पांचवें चैनसिंहको सोरखंड और मूंडली जागीरमें मिला, उनके वंशवाले मूंडली, आमली और कोटड़ेके जागीरदार हैं.

महाराव अजीतसिंह कोटेमें गद्दीनशीन होने बाद थोड़े ही दिन राज्य करके विक्रमी १८१५ भाद्रपद कृष्ण ऽऽ [हि० ११७१ ता० २८ ज़िल्हिज = ई० १७५८ ता० २ सेप्टेम्बर] को इस दुनयासे कूच करगये, और अपने पीछे दो पुत्र, एक शत्रुशाल और दूसरा गुमानसिंह छोड़े, जिनमेंसे बड़े राज्यके मालिक बने.

१०- महाराव शत्रुशाल, अव्वल.

अजीतसिंहका देहान्त होने बाद शत्रुशाल गद्दीपर बैठे, और पट्टाभिषेक विक्रमी १८१५ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० ११७२ ता० ११ मुहर्रम = ई० १७५८ ता० १५ सेप्टेम्बर] को हुआ. उसके बाद जयपुरके महाराजा माधवसिंहसे एक बड़ी भारी लड़ाई हुई, जिसका हाल कोटेकी तवारीख़में इस तरहपर लिखा है, कि क़िला रणथम्भोर जब बादशाही मुलाज़िमोंने जयपुरके महाराजा माधवसिंहको सौंप दिया, (जिसका हाल जयपुरकी तवारीख़में लिखागया है) तो बादशाही ख़ालिसहके समय इन्द्रगढ़, खातोली, गेंता, बलवन, करवाड़, पीपलदा, आंतरौदा, निमोला वगैरहके जागीरदार हाड़ा राजपूत क़िले रणथम्भोरके फ़ौज्दार को पेशकशी और नौकरी देते थे; जयपुरवालोंने भी उसी तरह लेना चाहा, तो इन जागीरदारोंने कोटेकी पनाह ली. महाराव शत्रुशालने इन जागीरदारोंसे कोटेकी मातह्तीका इक़्रार लिखवा लिया. यह सुनकर महाराजा माधवसिंहने एक बड़ी भारी फ़ौज कोटेको बर्बाद करनेके लिये भेजदी, और मलहार राव हुल्करको मदद्के लिये बुलाया; लेकिन् कोटावालोंने हुल्करको चार लाख रुपया देकर अलहदह कर- दिया, और एक फ़ौज जयपुरके मुक़ाबलेको भेजी; कोटेसे अठारह कोसपर भटवाड़ा गांवके पास मुक़ाबलह हुआ; तरफ़ैनके सैकड़ों आदमी मारेगये; आख़िरकार जयपुरकी फ़ौज भाग निकली, और फ़त्ह कोटावालोंको मिली. मलहारराव हुल्करने पहिले इक़्रार करलिया था, कि हम किसीकी तरफ़दारी नहीं करेंगे, लेकिन् भागनेवालोंका सामान लूटेंगे; इसलिये जयपुरवालोंका कुछ सामान हुल्करने लूटा, और बाक़ी इस क़द्र कोटाके हाथ आयाः- हाथी १७, घोड़े १८००, तोपें ७३, और हाथीका पचरंग

निशान वगैरह, जिनमेंसे तोपें और हाथीका निशान अबतक कोटेमें मौजूद बतलाते हैं.

विक्रमी १८२१ पौष कृष्ण ९ [हि० ११७८ ता० २३ जमादियुस्सानी = ई० १७६४ ता० १७ डिसेम्बर] को महाराव शत्रुशालका देहान्त होगया.

११- महाराव गुमानसिंह.

महाराव गुमानसिंहके गादीनशीनीका उत्सव विक्रमी १८२१ पौष शुक्ल ६ [हि० ११७८ ता० ४ रजब = ई० १७६४ ता० २८ डिसेम्बर] को हुआ. इनके समयमें झाला ज़ालिमसिंहको मुसाहिबी मिली, क्योंकि जयपुरकी लड़ाईके समय मलहार राव हुल्करको, जो जयपुरका मददगार होकर आया था, जुदा करना ज़ालिमसिंहकी कारगुज़ारीसे समझा गया था. अलावह इसके ज़ालिमसिंहकी बहिनके साथ महाराव गुमानसिंहकी शादी हुई थी. ज़ालिमसिंह इस समय महारावका बड़ा मुसाहिब बनगया, लेकिन् कुछ अरसह बाद महाराव और ज़ालिमसिंहमें नाइत्तिफ़ाक़ी होगई, जिससे वह झाला सर्दार उदयपुरमें महाराणा अरिसिंहके पास चलागया, और महाराणाकी नौकरीमें रहकर कारगुज़ारियां दिखलाईं. यह हाल उक्त महाराणाके ज़िक्रमें लिखा जायेगा; लेकिन् इस मुसाहिबके निकलजानेसे कोटाके कारोबारमें ख़लल आने लगा. पहिले महाराव दुर्जनशालके ज़मानेसे दधिवाड़िया चारण भोपतरामने रियासतका इन्तिज़ाम बहुत ही अच्छा किया था, और जयपुरकी लड़ाईके बाद ज़ालिमसिंहने भी भोपतरामके क़दम बक़दम काम किया. फिर जिन लोगोंने काम किया, उन्होंने अगले कारगुज़ारोंकी ख़िद्मतको रद्द करनेके मत्लबसे नया ढंग जमाया, जिससे बिल्कुल अब्तरी फैलने लगी. आक़िल आदमीको चाहिये, कि अपने दुश्मनकी भी नेक पॉलिसी (दस्तूर हुकूमत) को नहीं छोड़े. आख़िरकार महाराव गुमानसिंहने ज़ालिमसिंहको अपने अख़ीर वक़से कुछ पहिले कोटेमें बुला लिया (१), जो सेंधियाकी क़ैदमें था; और महारावने कुल कारोबार व अपना छोटी उम्रका लड़का उम्मेदसिंह उसके सुपुर्द करके विक्रमी १८२७ माघ शुक्ल १ [हि० ११८४ ता० २९ रमज़ान = ई० १७७१ ता० १७ जैन्युअरी] को इस दुन्यासे कूच किया.

---

(१) सर जॉन माल्कमने अपनी किताबमें ज़ालिमसिंहका कोटेमें आना महाराव उम्मेदसिंहके वक़्में लिखा है, लेकिन् हमने ऊपरका बयान कोटेकी तवारीख़से लिया है, जो वहांके प्रसिद्ध मुसाहिब चारण महियारिया लक्ष्मणदानने हमारे पास भेजी.

१२- महाराव उम्मेदसिंह- १.

इनका पट्टाभिषेक विक्रमी १८२७ माघ शुक्ल १३ [हि० ११८४ ता० ११ शव्वाल = .ई० १७७१ ता० २८ जेन्युअरी] को हुआ, और यह अपने बापकी जगह गद्दीपर बैठे, लेकिन् कुल कारोबारका मुरूतार ज़ालिमसिंह था. महारावके नज़्दीकी रिश्तहदारोंमें स्वरूपसिंह एक ज़बर्दस्त आदमी था, जिससे ज़ालिमसिंहकी मुरूतारीमें खलल आने लगा, तब उसने एक धायभाईको बहकाकर विक्रमी १८२९ फाल्गुन शुक्ल ३ [हि० ११८६ ता० २ ज़िल्हिज = .ई० १७७३ ता० २४ फ़ेब्रुअरी] को स्वरूपसिंहको मरवाडाला. उसके भाई बन्धु इस बातसे नाराज़ होनेके सबब शहर छोड़कर चलेगये. ज़ालिमसिंहने उनकी जागीरें ज़ब्त करके मुल्क से निकाल दिया. उनकी औलाद वाले कुछ अरसे बाद मरहटोंकी सुफ़ारिशसे कोटेमें आये, जिनको गुज़ारेके लिये बंबूलिया, खेड़ली वग़ैरह जागीरें निकाल दीगईं.

विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = .ई० १७९०] में कैलवाड़ा और शाहाबादका क़िला महाराव उम्मेदसिंह और ज़ालिमसिंहने फ़त्ह करके अपनी रियासतमें मिला लिया. इसी तरह गंगराड़ वग़ैरह कई पर्गने लेकर ज़ालिमसिंहने रियासतको ताक़तवर किया, और मरहटोंसे मेल मिलाप रखकर मुल्कमें कुछ फ़ुतूर नहीं उठने दिया. पहिले लालाजी पंडितसे दोस्ती करली, जो सेंधियाका मुसाहिब था; फिर आंबाजी एंगलियाको अपना धर्म भाई बनाया. इन दोनों आदमियोंको कुटुम्ब सहित कोटेमें रक्खा, जिनके बनाये हुए मकान वहां अबतक मौजूद हैं; और लालाजी पंडितकी सन्तान मेंसे मोतीलाल पंडित इस वक्त कोटेकी कौन्सिलका मेम्बर है. जावरे वालोंके पूर्वज ग़फ़ूरखांको भी कोटेमें रहने दिया. इसी तरह नव्वाब अमीरखांके कुटुम्बियोंको शेरगढ़के क़िलेमें हिफ़ाज़तसे रक्खा. ज़ालिमसिंह मरहटोंके अलावह अंग्रेज़ी अफ्सरोंसे भी मेल मिलाप रखता था.

विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में हिंगलाजगढ़के पास जशवन्तराव हुल्करने कर्नेल मॉन्सनसे विरोध बढ़ाया, तब मॉन्सनकी मददको कोयला और फलायताके जागीरदार, जिन दोनोंके नाम अमरसिंह थे, कोटेसे भेजेगये; और ये दोनों सर्दार अच्छी तरह मरहटोंसे लड़कर मारेगये; लेकिन् ज़ालिमसिंह ऐसा आक़िल आदमी था, कि उसने अपनी रियासतपर सद्मह न पहुंचने दिया. बाक़ी हाल हम इस वज़ीरकी बुद्धिमानीका रियासत झालावाड़के बयानमें लिखेंगे.

इस वज़ीरने मेवाड़मेंसे जहाज़पुर, सांगानेर और कोटड़ी वग़ैरह ज़िले दबालिये थे, लेकिन् फिर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने वे मेवाड़को दिलादिये. इनका ज़िक्र मेवाड़के हालमें

मौक़ेपर लिखा जायेगा. विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में इसी वज़ीरकी मारिफ़त गवर्मेएट अंग्रेज़ीके साथ महाराव उम्मेद्‌सिंहका अह्‌दनामह हुआ. महाराव उम्मेद्‌सिंहका विक्रमी १८७६ मार्गशीर्ष शुक्क २ [हि० १२३५ ता० १ सफ़र = ई० १८१९ ता० १९ नोवेम्बर] को इन्तिक़ाल होगया. उनके तीन पुत्र- बड़े किशोरसिंह, दूसरे विष्णुसिंह और तीसरे पृथ्वीसिंह थे.

१३- महाराव किशोरसिंह.

महाराव किशोरसिंहका पट्टाभिषेक विक्रमी १८७६ मार्गशीर्ष शुक्क १४ [हि० १२३५ ता० १२ सफ़र = ई० १८१९ ता० ३० नोवेम्बर] को हुआ. इसके बाद ज़ालिमसिंहने कर्नेल टॉड, पोलिटिकल एजेएट पश्चिमी राजपूतानहको ख़रीतह लिख भेजा, कि महाराव उम्मेद्‌सिंहका इन्तिक़ाल होगया, जिसका बहुत रंज है, और उनके वलीअह्‌द किशोरसिंह को कोटेकी गद्दीपर बिठाया है, जिसकी इत्तिला गवर्मेएट अंग्रेज़ीको दीजाती है; क्योंकि वह इस रियासतके मददगार व दोस्त हैं.

गद्दीनशीनीके बाद महाराव किशोरसिंह और ज़ालिमसिंहके आपसमें नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ने लगी, क्योंकि पेश्तरसे किशोरसिंहको इस मुसाहिबके दबावमें रहना नापसन्द था, अब गद्दी नशीन होनेपर अपना इख़्तियार बढ़ाना चाहा; ज़ालिमसिंहकी ख़वासके बेटे गोवर्द्धनदासने महारावको ज़ियादह भड़काया, जो ज़ालिमसिंहके अस्ली बेटे माधवसिंहके बर्ख़िलाफ़ था.

महारावका दूसरा भाई विष्णुसिंह तो मुसाहिबसे मिलगया, और उससे छोटा पृथ्वीसिंह महारावका फ़र्मांबर्दार रहा. महारावने एक ख़रीतह कर्नेल टॉडको लिख भेजा, कि सर्कार अंग्रेज़ीने हमको रियासतका मालिक तस्लीम किया है, तो राज्यका कुल इख़्तियार भी हमारे हाथमें होना चाहिये; परन्तु गवर्मेएट अंग्रेज़ीने अह्‌दनामहके बर्ख़िलाफ़ वज़ीरका इख़्तियार तोड़ना नहीं चाहा. इसपर विरोध ज़ियादह बढ़ा, तब कर्नेल टॉड ख़ुद कोटेमें पहुंचे, और महारावको कहा, कि आपको बहकाने वाले पृथ्वीसिंह और गोवर्द्धनदास वग़ैरहको निकालदेना चाहिये. यह बात महाराव को नामन्ज़ूर हुई. पोलिटिकल एजेएटसे महारावके साम्हने यहांतक सख़्त कलामी हुई, कि उन दोनोंने तलवारोंपर हाथ डाल दिये. आख़िरकार कर्नेल टॉडने ज़ालिमसिंहसे कहा, कि महारावको धमकाकर फ़सादी आदमियोंको गिरिफ़्तार करलेना चाहिये. उसने महारावको डरानेके लिये ख़ास क़िलेकी तरफ़ गोलन्दाज़ी शुरू की, इस वक्त बहुतसे आदमी महारावके शरीक होगये थे. आख़िरकार विक्रमी १८७८ पौष कृष्ण ३

[हि० १२३७ ता० १५ रबीउलअव्वल = ई० १८२१ ता० ११ डिसेम्बर] को महाराव किशोरसिंह कोटेसे निकलकर बूंदी पहुंचे. ये कुल बातें ज़ालिमसिंहको अपनी मरज़ीके सिवा लाचारीसे करनी पड़ीं, जिसको अपनी बदनामीका बड़ा खौफ़ था. बूंदीके रावराजाने महारावकी पहिले तो बहुत ख़ातिर तसल्ली की, लेकिन् ज़ालिमसिंहके दबाव और गवर्मेएट अंग्रेज़ी की लिखावटसे ज़ियादह न ठहरा सके. महाराव वहांसे रवानह होकर दिल्ली पहुंचे, जहां गवर्मेएटके अफ़्सरोंसे बहुत कुछ अर्ज़ की, परन्तु अह्दनामह और पोलिटिकल एजेएटकी सलाहके बर्ख़िलाफ़ कुछ मदद न मिली तब पीछे लौटकर मथुरा व वृन्दावन होते हुए हाड़ोतीकी तरफ़ चले. इस वक्त ३००० तीन हज़ारके क़रीब हाड़ा राजपूतोंका गिरोह इनसे जामिला था. महारावने पोलिटिकल एजेएटको एक काग़ज़ लिख भेजा, जिसमें चन्द शर्तें तह्रीर कीगई थीं, उसकी नक्ल नीचे लिखी जाती है :-

चिट्ठी महाराव किशोरसिंह, ब नाम कप्तान टॉड साहिब, जिसमें सुल्ह और सफ़ाईके लिये शर्तें दर्ज थीं, मर्कूमह आसोज, यानी कुंवार विदी ५, मु० १६ माह सितम्बर, मक़ाम म्यानोसे-

"बाद अल्क़ाब मामूली- चांदख़ांने अक्सर अपनी ख़्वाहिश वास्ते दर्याफ़्त करने मेरे मन्शाके ज़ाहिर की है, और वह मैंने पहिले मारिफ़त अपने वकील मिर्ज़ा मुहम्मदअलीबेग और लाला शालिग्रामके आपके पास लिख भेजी है. मैं फिर आपके पास तफ़्सील उन शर्तोंकी भेजता हूं, मुताबिक़ उनके आप कार्रवाई करें; और मेरा इन्साफ़, ब हैसियत वकील सर्कार गवर्मेएट अंग्रेज़ी, आप करें; मालिकको मालिक और नोकरको नोकरकी तरह रक्खें. ऐसाही हर मक़ामपर होता है, और आपसे पोशीदह नहीं है."

नीचे लिखी हुई शर्तोंकी तामील महाराव किशोरसिंह चाहते थे, जो उनकी चिट्ठी १६ माह सेप्टेम्बरके साथ आई थीं :-

"१- मुताबिक़ अह्दनामहके, जो दिह्ली मक़ामपर महाराव उम्मेदसिंहके साथ हुआ था, मैं अमल रक्खूंगा."

"२- मुझे हर तरह नाना ज़ालिमसिंहका एतिबार है, जिस तरह वह नौकरी महाराव उम्मेदसिंहकी करते थे, उसी तरह मेरी नौकरी करें; मैं उनके मुल्कके इन्तिज़ाम करनेको मन्ज़ूर करता हूं; मगर मेरे और माधवसिंहके दर्मियान शुब्हा पैदा होगया है, और हम बाहम इत्तिफ़ाक़ नहीं रखसक्ते, इसलिये मैं उसको जागीर दूंगा, उसमें वह रहे; उसका बेटा बापू लाल मेरे साथ रहेगा, और जिस तरह और अह्लकार रियासतका काम अपने मालिकके रूबरू सरंजाम देते हैं, उसी तरह वह मेरे रूबरू

काम करेगा; मैं मालिक और वह नौकर रहेगा. अगर मिस्ल नौकरोंके वह काम करेगा, तो यह कार्रवाई पीढ़ियों तक जारी रहेगी."

"३-जो काग़ज़ सर्कार अंग्रेज़ी या किसी और रियासतको तह्रीर हों, वे मेरी सलाह और हिदायतसे लिखे जावें."

"४-उनकी जानकी और मेरी जानकी ज़ामिन सर्कार अंग्रेज़ी होजाये."

"५-मैं एक जागीर अपने भाई पृथ्वीसिंहके वास्ते अ़लह्दह करदूंगा, वह उसमें रहे; जो मुलाज़िम उसके हम्राह और मेरे भाई विष्णुसिंहके हम्राह रहेंगे, उनको मैं मुक़र्रर करूंगा; सिवाय उनके और जो मेरे रिश्तेदार और हम क़ौम हैं, उनके रुत्बेके मुताबिक़ मैं उनको भी जागीर दूंगा; और वह मिस्ल क़दीम दस्तूरके मेरे हम्राह रहेंगे."

"६- मेरी ख़ास अर्दलीमें तीन हज़ार आदमी और नाइबका पोता बापू लाल (मदनसिंह) मेरे हम्राह रहेंगे."

"७- मुल्की आमदनी किशन भंडार (कृष्ण भंडार) याने ख़ज़ानह रियासतमें रक्खी जावेगी, और वहींसे सब ख़र्च हुआ करेंगे."

"८- हर क़िलेके क़िलेदार मेरे हुक्मसे मुक़र्रर होंगे, और फ़ौजपर मेरा हुक्म जारी रहेगा. नाइब भी अपने हुक्मकी तामील राजके अह्लकारोंसे करावे, मगर वह मेरी सलाह व मन्ज़ूरीसे हो."

"यह सब शराइत मैं चाहता हूं, और ये सब राजरीतिके मुताबिक़ हैं- मिती आसोज याने कुंवार ५, संवत् १८७८, (ई० १८२१)."

ये शर्तें पोलिटिकल एजेएटने ना मुनासिब जानीं, क्योंकि तीन हज़ार आदमी ख़ास, फ़ौजकी अफ्सरी और क़िलेदारोंपर इख़्तियार महारावके हाथमें होना आइन्दह फ़सादको तरक़्क़ी देना था. कर्नेल टॉडने अपनी किताबमें इस विरोधका हाल तफ्सीलके साथ लिखा है, लेकिन् वह बहुत तूल है, इसलिये उसका ख़ुलासह यहांपर दर्ज किया जाता है- गवर्मेएट अंग्रेज़ीने भी इस सख़्तीको लाचारीके दरजेपर क़ुबूल किया, क्योंकि उसको अ़ह्दनामहकी शर्तोंका लिहाज़ था. आख़िरकार सब हाड़ा राजपूत महारावके शरीक होगये, यहां तक, कि राजपूतानहके दूसरे राजा भी महारावकी हक़ तलफ़ीका अफ्सोस करते थे. मांगरोल गांवके पास काली सिन्ध नदीपर लड़ाईका मौक़ा मिला; महारावके पास सात आठ हज़ार फ़ौज मुल्की राजपूतोंकी बिदून तोपख़ानहके जमा थी; ज़ालिमसिंहके साथ आठ पल्टनें, चौदह रिसाले और
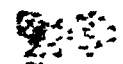
वनीम तोपें थीं; वज़ीरकी मददके लिये गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से एम० मिल्नकी मातहतीमें दो पल्टनें, ६ रिसाले, और घोड़ोंका एक तोपख़ानह तय्यार होकर विक्रमी १८७८ आश्विन शुक्ल ५ [हि० १२३७ ता० ४ मुहर्रम = ई० १८२१ ता० १ ऑक्टोबर] को लड़ाई शुरू होगई.

हाड़ा राजपूत दिलसे अपने मालिकके हुकूक़ क़ाइम करनेको मुस्तइद थे. वज़ीरकी तरफ़से गोलन्दाज़ी शुरू हुई, एक चाबुक सवार अलफ़ख़ां नामी तोपके गोलेसे उड़गया, जो महारावके आगे खड़ा था; तब कोयलाके जागीरदार राजसिंह और गेंताके दो कुंवर बलभद्रसिंह, सलामतसिंह और उनके चचा दयानाथ, हरीगढ़के चन्द्रावत अमरसिंह, और उनके छोटे भाई दुर्जनशाल वगैरह राजपूतोंने अंग्रेज़ी रिसालेपर धावा किया, और बारूद व गोलेकी मारको सहकर टूट पड़े; लेफ़्टिनेन्ट क्लार्क और लेफ़्टिनेन्ट रीड, दो अंग्रेज़ी अफ़्सरोंमेंसे एक राजसिंह और दूसरे बलभद्रसिंह के हाथसे मारेगये; उनका बड़ा अफ़्सर लेफ़्टिनेएट कर्नेल ज़ेरिज़, सी० बी० ज़ख़्मी हुआ; और दूसरी तरफ़से महारावके भाई पृथ्वीसिंह और राजगढ़के जागीरदार देवसिंह वगैरहने वज़ीरकी फ़ौजपर हमलह किया, देवसिंह बहुत ज़ख़्मी हुआ, और महाराज पृथ्वीसिंह भी ज़ख़्म खाकर घोड़ेसे गिरा, जिसकी पीठमें एक रिसालदारके हाथका बर्छा लगा था; वह पालकीमें डालकर वज़ीरके लश्करमें लाया गया; लेकिन् दूसरे रोज़ गुज़र गया. कर्नेल टॉड खुद इस लड़ाईमें मौजूद थे, जो अपनी किताबमें हाड़ा राजपूतोंकी बहादुरीका हाल बड़ी तारीफ़के साथ लिखते हैं.

फिर महाराव किशोरसिंह मैदानसे निकलकर गौड़ोंके बड़ोदे होते हुए नाथद्वारे चले गये, और हाड़ा राजपूतोंके लिये कुसूरकी मुआफ़ीका इश्तिहार जारी होगया, कि वे अपने अपने ठिकानोंमें जा बैठें. उन्होंने भी इस बातको ग़नीमत जानकर सब्र किया. उदयपुरके महाराणा भीमसिंहने सुफ़ारिशी होकर गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त इस विरोधको इस तरहपर मिटाया, कि महारावका ख़ास ख़र्च महाराणा उदयपुरके बराबर किया जावे, और महारावके ख़ानगी कामोंमें वज़ीर और वज़ीरके रियासती कामोंमें महाराव दख़्ल न दें. ये सब शर्तें अह्दनामह नम्बर ५७ में दर्ज हैं, जो अख़ीरमें लिखाजायेगा. महाराव, पोलिटिकल एजेएटकी शामिलातसे कोटेमें पहुंचे, जहां उनको मौरूसी इज़्ज़तके साथ वज़ीरने विक्रमी १८७८ पौष कृष्ण ९ [हि० १२३७ता० २२ रबीउ़लअव्वल = ई० १८२१ ता० १८ डिसेम्बर] को बड़ी नर्मीके साथ महलोंमें दाख़िल किया. इसके बाद विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] में ज़ालिमसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और उसका बेटा माधवसिंह
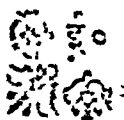
रियासतका काम करता रहा. विक्रमी १८८४ आषाढ़ शुक्ल ८ [हि० १२४२ ता० ७ ज़िल्हिज = ई० १८२७ ता० २ जुलाई] को महाराव किशोरसिंहका देहान्त हुआ. उनके कोई कुंवर न था, इसवास्ते वह अपने तीसरे भाई पृथ्वीसिंहके पुत्र रामसिंहको वलीअ़हृद बनागये.

१४- महाराव रामसिंह- २.

जब महाराव किशोरसिंहका इन्तिक़ाल होगया, तो गद्दीपर बैठनेका हक़ उनके दूसरे भाई अणताके जागीरदार महाराज विष्णुसिंहका था, लेकिन् महाराव किशोरसिंह जब झाला ज़ालिमसिंहकी अ़दावतके कारण कोटेसे निकले, तब विष्णुसिंह वज़ीरका शरीक रहा, और तीसरा भाई पृथ्वीसिंह महारावके साथ रहकर मांगरोलकी लड़ाईमें मारागया था, इससे किशोरसिंहने उसके बेटे रामसिंहको वलीअ़हृद बनाया. इस बातपर माधवसिंह झालाने अपने दोस्त विष्णुसिंहकी तरफ़दारी छोड़दी, क्योंकि पेश्तरका बड़ा बखेड़ा उसको याद था. विक्रमी १८८८ [हि० १२४७ = ई० १८३१] में महाराव रामसिंह मए अपने मुसाहिबके अजमेरमें लॉर्ड बैंटिंककी मुलाक़ातको गये, तो उन्होंने माधवसिंहको चंवर इनायत किया. यह वज़ीर अपने मालिकको हर तरह खुश रखना चाहता था.

विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] में माधवसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और उसका बेटा मदनसिंह कोटेका मुन्तज़िम बना. मदनसिंहसे महारावका विरोध बढ़ने लगा, वह रईसके मुवाफ़िक़ निकास पैसारके वक़ अपनी सलामीकी तोपें चलवाता; इस तरह कई हरकतोंपर आपसका विरोध बहुत तरक़्क़ी पागया. आख़िर-कार विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने बड़ा फ़साद होजानेके भयसे बीचमें आकर नया बन्दोबस्त किया, कि बारह लाख रुपया सालानह आमदनीके सत्तरह पर्गने मदनसिंहको देकर जुदा राजा बना दिया, और एक फ़ौज कोटा कन्टिन्जेन्ट नई भरती करके उसका ख़र्च महारावसे दिलाना क़रार पाया. एक नया अ़हृदनामह गवर्मेण्टकेसाथ क़रार पाया, जिसकी शर्तोंके पढ़नेसे पाठकोंको हाल मालूम होगा. विक्रमी १९०७ फाल्गुन [हि० १२६७ जमादियुल्अव्वल = ई० १८५१ मार्च] में महारावकी उदयपुर शादी हुई, जिसका बयान महाराणा स्वरूपसिंहके हालमें लिखा जायेगा. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के बल्वेमें कोटा कन्टिन्जेण्ट पल्टनने बग़ावत की, और हाड़ौतीके एजेण्ट मेजर ब्रिटन और उनके दो बेटोंको मारडाला,

जिसका हाल मेलीसन साहिबने अपनी गद्रकी तवारीख़की दूसरी जिल्दमें इस तरह पर लिखा है:-

"जब नीमचमें गद्र हुआ, तब लॉरेन्स साहिबने मेवाड़, कोटा और बूंदीके लश्करकी मददसे वहांपर पीछा क़ब्ज़ह करना चाहा. मेजर ब्रिटन, पोलिटिकल एजेण्ट कोटा, कोटेसे लश्कर लेकर नीमच भेजे गये."

"जेनरल लॉरेन्सने उनको तीन हफ़्ते तक नीमचमें ठहरनेको कहा था, जिससे उक्त मेजरको ठहरना पड़ा; आउवेमें गद्र होनेके बाद ब्रिटन साहिब अपना कोटे जाना मुनासिब समझकर अपने दो लड़कों समेत, जिनमेंसे एककी उम्र २१ वर्षकी और दूसरेकी सोलह वर्षकी थी, ईसवी १८५७ ता० १२ ऑक्टोबर [वि० १९१४ कार्तिक कृष्ण ९ = हि० १२७४ ता० २३ सफ़र] को कोटे पहुंचे; और अपनी मेम और बाक़ी चारों लड़के लड़कियोंको नीमच मक़ामपर अंग्रेज़ी लश्करकी हिफ़ाज़तमें छोड़गये."

"ईसवी ता० १३ व १४ ऑक्टोबर [वि० कार्तिक कृष्ण १०- ११ = हि० ता० २४-२५ सफ़र] को महारावसे ब्रिटन साहिबकी मुलाक़ात हुई. मुलाक़ात होनेके बाद महारावने अपने लोगोंसे ज़ाहिर किया, कि ब्रिटन साहिबने कितने एक आदमियोंको रियासतका बदख़्वाह होनेके सबब निकाल देने या सज़ा देनेको कहा है. इस बातके सुनतेही अफ़्सर लोग अपने मातह्तों समेत बदल गये, और महारावकी हुकूमत उठाकर राज्यपर अपना इख़्तियार करलेना चाहा. दूसरे रोज़ फ़ज्रमें बाग़ी लोगोंने एकट्ठे होकर रेज़िडेन्सी सर्जन मिस्टर सेडलर और शहरके हॉस्पिटलके डॉक्टर मिस्टर सेविलको, जो रेज़िडेन्सीके मकानमें रहते थे, मारडाला; और रेज़िडेन्सीपर हमलह किया. चौकीदार और नौकर लोग भागगये; मेजर ब्रिटन, उनके दो लड़के और एक नौकर रेज़िडेन्सीके ऊपर वाले मकानमें रहे. इन लोगोंने चार घंटे तक अपना बचाव किया, लेकिन् अख़ीरमें बाग़ियोंने रेज़िडेन्सीमें आग लगादी. मेजर ब्रिटनने जब बचनेकी कोई सूरत न देखी, तब अपने लड़कोंकी जान बचानेकी शर्तपर बाग़ियोंकी इताअ़त करना कुबूल किया, लेकिन् उन लड़कोंने इस बातको ना मंज़ूर किया. बाग़ियोंने सीढ़ीके ज़रीएसे मकानपर चढ़कर तीनोंको मारडाला, और साहिबका नौकर भागगया."

"महाराव साहिबने यह हाल जेनरल लॉरेन्सको लिख भेजा, और अपनी तरफ़से दिलगीरी ज़ाहिर की, कि मेरे लश्करने राजके कुल इख़्तियारात अपने क़ब्ज़ेमें लेकर मुझको बेइख़्तियार करदिया है. सर्कार अंग्रेज़ीने महारावको निर्दोष समझा, लेकिन् पूरा पूरा फ़र्ज़ अदा न होनेके सबब उनकी १७ तोप सलामी घटाकर
१३ करदी."

"मेजर ब्रिटनको क़त्ल करने बाद बाग़ियोंने महारावको क़ैद करके जबरन् एक काग़ज़पर, कि जिसमें नौ शर्तें थीं, दस्तख़त करालिये; इन शर्तोंमें एक शर्त यह भी थी, कि मेजर ब्रिटन महारावके हुक्मसे मारेगये. महारावने पोशीदह तौरपर क़रौलीके महाराजाके पास आदमी मए काग़ज़के भेजकर उन्हें कहलाया, कि आप लश्करकी मदद भेजें. क़रौलीके राजाने मदद भेजी, और बाग़ियोंको महलोंसे निकलवाकर महारावको क़ैदसे छुड़ाया, जिन्होंने अपनी मददगार फ़ौज वहीं रहने दी."

"रॉबर्ट साहिब .ईसवी १८५८ के मार्च [वि० १९१४ चैत्र = हि० १२७४ रजब] में नसीराबादसे लश्कर लेकर .ईसवी ता० १० मार्च [वि० चैत्र कृष्ण ११ = हि० ता० २४ रजब] को कोटेकी तरफ़ रवानह हुए, और .ईसवी ता० २२ मार्च [वि० १९१५ चैत्र शुक्ल ७ = हि० ता० ६ शश्रबान] को चम्बलके उत्तरी किनारेपर छावनी डाली; उस वक्त मालूम हुआ, कि नदीका दक्षिणी किनारा बिल्कुल बाग़ियोंके क़ब्ज़ेमें है, और क़िला, महल, आधा शहर और नदीका घाट क़रौलीके लश्करकी मददसे महारावने अपने तह्तमें लिया है."

"ईसवी ता० २५ मार्च [वि० चैत्र शुक्ल १० = हि० ता० ९ शश्रबान] को ख़बर मिली, कि बाग़ी लोग महलपर हमलह करते हैं. यह ख़बर सुनते ही रॉबर्ट साहिबने ३०० आदमी मेजर हीद साहिबकी मातह्तीमें महारावकी मददको भेजे, और बाग़ियोंको हटाया. ईसवी ता० २७ मार्च [वि० चैत्र शुक्ल १२ = हि० ता० ११ शश्रबान] को रॉबर्ट साहिब ६०० आदमी और दो तोपें लेकर क़िलेके अन्दर गये, और बाग़ियोंकी तरफ़ तोपें जमाई गईं. .ईसवी ता० २९ मार्च [वि० चैत्र शुक्ल १४ = हि० ता० १३ शश्रबान] को गोले चलने शुरू हुए, और बाग़ियोंको हटाकर दक्षिणी किनारेपर क़ब्ज़ह किया गया; बाग़ी कोटेसे भागनिकले, जिनकी ५० तोपें छीनीगईं. अंग्रेज़ी लश्कर तीन हफ्ते तक कोटेमें रहकर महारावका राज्यमें पूरा अमल दरूल कराने बाद वापस नसीराबादको चलागया."

थोड़े दिनों बाद दूसरे रईसोंकी तरह महारावको भी गोद लेनेकी सनद दीगई, और कोटा कन्टिन्जेन्टके एवज़ देवली मक़ामकी बे क़वाइद फ़ौज भरती कीगई. विक्रमी १९२३ चैत्र शुक्ल ११ [हि० १२८२ ता० १० ज़िल्क़ाद = ई० १८६६ ता० २७ मार्च] की शामको चौंसठ सालकी उम्रमें महाराव रामसिंहका इन्तिक़ाल होगया. उनके साथ एक राणीने सती होना चाहा था, लेकिन् पोलिटिकल एजेएटकी हिदायतसे बड़ी मुश्किलके साथ उसको इस इरादेसे बाज़ रक्खागया. महारावके बाद उनके एक बेटे शत्रुशाल बाक़ी रहे थे, जो राज्यके मालिक माने गये.

१५- महाराव शत्रुशाल-२.

यह महाराव विक्रमी १९२३ चैत्र शुक्ल १२ [हि० १२८२ ता० ११ ज़िल्क़ाद = ई० १८६६ ता० २८ मार्च] को कोटेकी गद्दीपर बैठे, जिनको दूसरे वर्ष कर्नेल ईडन, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने ज़ाबितहके साथ मस्नद नशीन किया, और नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुरने रियासतकी सलामी, जो उनके बापके वक्तमें घटा दीगई थी, बदस्तूर सत्तरह तोप बहाल करदी.

महाराव शत्रुशालके गद्दी बैठनेके वक्त रियासत क़र्ज़हसे ज़ेरबार थी, और ख़र्च भी आमदनीसे ज़ियादह था. महारावने कई बार ख़र्चमें तख़्फ़ीफ़ की, और महाराव रामसिंहकी महाराणी फूलकुंवरके मरनेसे, जो मेवाड़के महाराणा सर्दारसिंहकी बेटी थी, साठ हज़ार रुपये सालानह आमदनीकी जागीर ख़ालिसेमें दाख़िल हुई; इस तरहपर ख़र्च आमदनीसे कुछ कम होगया. इन महारावने सती होनेकी दो वारिदातें बहुत कोशिशके साथ रोक दीं, जिसपर अंग्रेज़ी सर्कारसे उनकी तारीफ़ हुई. इन सब बातोंपर बड़ा अफ्सोस यह था, कि महाराव अपने वालिदके इन्तिक़ाल तक हमेशह ज़नानहमें रहनेके सबब शराब ख़्वारीके आदी होगये थे; पोलिटिकल एजेंटोंने अक्सर बार इस ख़राब आदतको छुड़ानेके लिये सलाह और नसीहतमें कमी नहीं की, लेकिन् जवान उम्र और बड़े दरजहपर पहुंचनेके बाद ऐसी कोशिशें कारगर नहीं होतीं. इसलिये शराब ख़्वारीकी यह कस्रत हुई, कि महाराव हर वक़ बेख़बर रहने लगे, और अक़्ल व होश खो बैठे. ज़नानहमें रहनेके सबब उनके पास तक किसी अह्लकारकी रसाई नहीं होसक्ती थी; दीवानका एतिबार और इख़्तियार कुछ न था, रियासती काम मुल्तवी पड़े रहते थे, एजेंटीकी तह्रीरोंका जवाब बड़ी मुद्दत बाद दियाजाता था; महाराव जैब ख़ासके ख़र्चमें रुपया जमा करना चाहते थे; और अह्लकार ग़बन और फ़िरेबसे रियासतको लूटते थे; क्योंकि वह भी बड़ी रिश्वतें और नज़ानह देकर मुक़र्रर होते थे, और इस तरह अपने दिये हुए रुपयोंकी कस्र निकालकर ज़ियादह अरसह तक नौकरीपर क़ाइम न रहनेके ख़ौफ़से अपना घर भरलेना चाहते थे. महारावकी तबीअतपर चन्द ख़ानगी नौकरों, गूजर और हज्जाम वगैरहका बहुत इख़्तियार था, ये लोग इस सबबसे, कि किसीको रईस तक पहुंचने या पैग़ाम पहुंचानेका इनके सिवा कोई और ज़रीआ न था, राजके कारोबारमें बहुत दख़्ल देने लगे.

विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में महारावने अपने बापके अह्दके अह्लकारोंको मौकूफ़ कर दिया, लेकिन् इसपर किसीको

अफ्सोस और तअ़ज्जुब न हुआ; क्योंकि वे लोग मुद्दतसे जुल्म और ख़राबीका बाइस थे. विक्रमी १९२६-२७ [हि० १२८६-८७ = ई० १८६९-७०] की रिपोर्टमें लिखा गया है, कि कोटेकी अ़दालतें बराय नाम और नाकारह हैं; उनके हुक्मोंकी तामील नहीं होती, जो शख़्स रईस और राणी या दीवानसे तअ़ल्लुक़ रखता हो, वह ख़ुदही अ़दालतके इख्तियारसे बाहर रहना नहीं चाहता, बल्कि रिआ़यत या लालचसे दूसरोंका भी हिमायती बन जाता है. ज़बर्दस्त लोग अपनी हक़रसी आप कर लेते हैं, और कमज़ोरोंको अ़दालत भी कामयाब नहीं करा सक्ती.

विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में दीवान गणेशीलाल, जो चार बरससे काम करता था, मरगया; वह छोटी आसामीसे बड़े उ़ह्दहपर पहुंचा था; रईस और रियासतके हालातको ख़ूब पहिचानता था; इसलिये उसने महारावको हर मौक़ेपर रुपया देकर राज़ी रक्खा; और ख़ुदने भी रिआ़याको तक्लीफ़ देकर बहुत रुपया कमाया. मुसाफ़िर और सौदागरोंको कोटेके बराबर कहीं तक्लीफ़ न होगी, हर मक़ामपर हर बहानेसे कुछ न कुछ मह्सूल लेलिया जाता है, इनमेंसे कोई राज्यमें जमा होता है, और कोई अह्लकार अपने तौरपर वुसूल करलेते हैं. मुसाफ़िरोंको सबसे बड़ी मुश्किल चम्बल नदी और मुकुन्दरा घाटेको तै करनेमें होती है, जिनके लिये इजाज़त लेनेमें कई दिन गुज़र जाते हैं.

विक्रमी १९२७-२८ [हि० १२८७-८८ = ई० १८७०-७१] की रिपोर्टमें राज्यके नालाइक़ अह्लकारोंकी रिश्वतख़्वारीकी बाबत बहुत शिकायत है. मन्दिरों और राणियोंके नोहरोंमें मुजिमोंको पनाह दीजाती है, "कोटेके बावन हुक्म" आ़म मसल मश्हूर है, अह्लकार लोग ग़ारतगरोंसे हिस्सह लेते हैं, या मुज्रिमोंको जुर्मानह लेकर छोड़ देते हैं, क़ैदकी सज़ा रुपया वुसूल होनेकी उम्मेदके सिवा कभी नहीं दीजाती. शहरकी कोतवाली वग़ैरह अपने ख़र्चके सिवा राज्यमें रुपया दाख़िल करती है, इ़लाक़हके ठेकहदार अक्सर सर्कारी जमा खाजाते हैं, अह्लकारोंको रिश्वत देकर ग़ैर इ़लाक़ोंमें भागजाते हैं, और फिर आजाते हैं; अंग्रेज़ी सर्कारका फ़ौज ख़र्च व ख़िराज बहुत मुश्किल और देरसे अदा कियाजाता है, साइरका ठेका है, और कोई शरह मह्सूलकी मुक़र्रर नहीं है, इस लिये ठेकहदार अपने नफ़ेके वास्ते, जो चाहता है, वुसूल करता है; क़र्ज़ह बढ़ते बढ़ते पचास लाखके क़रीब पहुंचा, जिसकी बाबत साहूकारोंको कई लाखका इ़लाक़ह जमा वुसूल करनेके लिये सौंपा गया, और मुद्दतकी बद इन्तिज़ामीसे इ़लाक़हकी किश्तकारी भी कम होगई. एजेंटीकी बराबर ताकीद रहनेसे मिर्ज़ा अक्बरअ़लीबेग, जो पहिले क़रौलीमें नौकर रहचुका था, अफ्सर गिराई

किया गया; लेकिन् साहिब एजेंट गवर्नर जेनरलका दौरा होजाने बाद मिर्ज़ा और उसका अमलह तन्ख़्वाह न मिलनेके सबब अलह्दह होगया.

कोतवालीकी कार्रवाई बहुत ही बदनाम है, जिसपर मुश्किलसे लोगोंको यक़ीन आसके, याने शहरकी बद चलन औरतोंको बहकाकर मालदार और .इज़्ज़तदार लोगोंके घर भिजवा देते हैं, और पीछेसे पुलिसवाले मौक़ेपर जाकर दोनोंको गिरिफ़्तार करलेते हैं; औरत आश्नाईका इक़ार करती है, जिसपर एतिबार होकर बहुतसे बे क़ुसूरोंसे जुर्मानह लेलिया जाता है; डाकन होनेका जुर्म किसीपर लगा दिया जाता है, और उसको सज़ा या तक्लीफ़ देकर रुपया पैदा करते हैं. इसी तरह किसीको जादूगर क़रार देनेके लिये पुलिस वाले उसके घरमें चले जाते हैं, और खोपड़ी वग़ैरह बाज़ चीज़ें बरामद करके ख़यालो जुर्म क़ाइम करते हैं, और तक्लीफ़ देकर जुर्मानह लेते हैं. जेलख़ानहकी ऐसी अब्तरी है, कि अक्सर बड़े बड़े क़ैदी रुपये के एवज़ रिहा करदिये जाते हैं. फ़ौज तन्ख़्वाह न मिलनेके सबबसे एक बरस बाग़ी रही, सिपाहियोंने चोरी और लूटमार शुरू की, उनमेंसे कई आदमी सामान समेत गिरिफ़्तार किये गये, फ़ौजने हमलह करके उन्हें छुड़ा लिया, और महलके चौकमें आ जमे; परदेशी सिपाहियोंको तन्ख़्वाह देकर बेबाक़ किया, और देशियोंको हीला करके टाल दिया गया. राजकी कोई शिकायत एजेंटीमें नहीं करने पाता, क्योंकि एजेंटीमें ख़ाली जाने हीसे हर एकको अपनी बर्बादी नज़र आती है; लेकिन् तंग आकर सौ पटैल और ज़मींदारोंने, जब साहिब एजेंट कोटेमें गये, ज़ुल्म और सख़्तियोंकी एक-दम फ़र्याद की, जिसपर पोलिटिकल एजेंटने महारावको रुजूअ् किया; मगर कुछ इन्साफ़की उम्मेद न थी.

राज्य कोटा और कोटड़ियोंके सर्दारोंमें कई सालसे नाइत्तिफ़ाक़ी रही; राज्य हद्से ज़ियादह इताअ़त चाहता है, और सर्दार मामूलसे भी कम चाकरी देना चाहते हैं. ये सर्दार शुरूमें उदयपुरके मातह्त राव सुर्जणके ज़ेर हुकूमत थे, जब राव सुर्जणने क़िला रणथम्भोर अक्बर बादशाहको सौंप दिया, तो ये लोग भी ख़ालिसेके ख़िराज गुज़ार होगये. अ़ज़ीज़ुद्दीन आलमगीर सानीके वक़्में यह क़िला महाराजा माधवसिंह अव्वलको मिला, तो जयपुर वालोंने कोटड़ी वालोंपर अपना ख़िराज मुक़र्रर किया, लेकिन् दोनोंके आपसमें कभी मुवाफ़क़त न हुई. इसपर ज़ालिमसिंह झाला वज़ीर कोटाने ख़िराजका ज़ामिन होकर कोटड़ी वालोंको अपनी तरफ़ लेलिया, और राज्यकी रक़म कोटेकी मारिफ़त जयपुर वालोंको मिलना क़रार पाया. इन सात सर्दारों, इन्द्रगढ़, खातौली, गैंता, पीपलदा, करवाड़, बलवन अंतरौदामेंसे इन्द्रगढ़की आमदनी तीन लाख रुपये और खातौलीकी अस्सी हज़ार सालानहके क़रीब है, और बाक़ीकी कम

तादादमें दस पन्द्रह हज़ार तक हैं; लेकिन् हर एक इनमेंसे महाराजा कहलाता है.

हाड़ौतीके पोलिटिकल एजेण्ट अपनी रिपोर्टमें लिखते हैं किः- "ई० १८७२-७३ [वि० १९२९-३० = हि० १२८९-९०] के अख़ीरमें यहांकी हालत ऐसी अब्तर हुई, कि सर्कारी मुदाख़लतका होना बहुत ज़रूरी मालूम हुआ. मैं बराबर महारावजीसे ताकीद करता रहा, कि इस तबाहीसे बचनेके लिये कुछ तद्बीर करना लाज़िम है, लेकिन् इस नेक सलाहका असर ऐसे शख़्सपर कब होता, जो हर तरहकी बुराइयोंमें डूब रहा था, और ख़ुशामदियोंके हाथमें कठ पुतली बनगया था, कि वे जैसा चाहते थे, नचाते थे; लेकिन् रईस और रियासतकी ख़ुश नसीबीसे दर्बारियोंमेंसे एक दो ऐसे प्रतिष्ठित आदमी भी थे, कि जो इस बातको बख़ूबी समझ सक्ते थे, कि कैसा अप्रबन्ध इस रियासतमें फैल रहा है? इन लोगोंने मुझको बहुतसी मदद दी, और उन्होंने रईसको भी अच्छी तरह समझाया, कि रियासतपर पूरी तबाही आवेगी. उन्होंने उनसे यह भी ज़ाहिर करदिया, कि सर्कार अंग्रेज़ी आगे पीछे ज़रूर मुदाख़लत करके इस ज़ुल्म और बदइन्तिज़ामीको मिटावेगी; इसलिये आपको लाज़िम है, कि अपनी नेकनामी और बिहिय्यतके लिये रियासतकी दुरुस्तीमें मश्ग़ूल हों."

"आख़िरकार ईसवी १८७३ जुलाई [वि० १९३० आषाढ़ = हि० १२९० जमादियुलअव्वल] में महारावजीपर इस नेक सलाहका असर हुआ, और उन्होंने साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरलके, तथा मेरे नाम लिखा, कि वह इस अप्रबन्धको सुधार नहीं सक्ते, इसलिये उन्होंने अपनी रियासतको सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द करना चाहा, और जो कुछ प्रबन्ध सर्कार अंग्रेज़ी करे, उसमें अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर की. ईसवी ऑक्टोबर [वि० आश्विन = हि० शअ्बान] में साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरल कोटे आये. महारावजीसे कई एक मुलाक़ातें हुईं, तो उन्होंने फिर सर्कारी मददके लिये दर्ख़्वास्त की, और कहा, कि जो कुछ बन्दोबस्त सर्कार करे, मुझको मंज़ूर है. इस सूरतमें सर्कार अंग्रेज़ीने जयपुरके साबिक़ मुसाहिब नव्वाब फ़ैज़अलीख़ां बहादुर, सी० एस० आइ० को पूरे इख़्तियारात देकर कोटेका मुख़्तार मुक़र्रर करना मुनासिब समझा. मैं फ़ेब्रुअरीमें किशनगढ़के मक़ामपर साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरलके लश्करमें शामिल हुआ, तो वहां मुझसे और नव्वाब साहिबसे मुलाक़ात हुई; और मुझे आख़िरी अह्काम मिले; कुछ दिनके बाद ज़ाबितह साथ लेकर नये मुख़्तारको मुक़र्रर करनेके लिये मैं कोटे गया. इस समय यहांकी हालत बहुत अब्तर थी, महारावजी फिर बुरे सलाहकारोंके हाथमें फंस गये थे, कि जिन्होंने सर्कार अंग्रेज़ीकी कार्रवाईको इस तरहपर महारावजीके

दिलमें जमाया, कि सर्कार आपको गद्दीसे उतारना चाहती है. उन्होंने महारावजीको यह भी सलाह दी, कि सर्कारसे मददके लिये जो दर्ख्वास्त कीगई है, वह वापस लेनी चाहिये, और जहांतक होसके, ऐसी कोशिश करना चाहिये, कि नव्वाब फ़ैज़-अलीख़ां मुक़र्रर न होनेपावें. उन्होंने यहांतक दर्बारको सुझाया, कि आपकी जो हतक इज़्ज़त होनेवाली है, उससे मरना बिह्तर है; और झूठी गप्पें इन बदमआशोंने उड़ाईं, जिससे रिआयाके दिलमें घबराहट पैदा होगई. इन बरसोंके ज़ुल्मसे लोगोंके घबराजानेमें बिल्कुल शक नहीं था, और उम्मेद थी, कि सर्कार अंग्रेज़ी उनको इस ज़ुल्मसे बचावेगी. फ़ौजकी तन्ख़्वाह भी बहुत बाक़ी थी, सर्कारी मुदाख़लतके होनेसे उनको भी बाक़ियातके मिलजानेकी उम्मेद थी. मैं १९ फ़ेब्रुअरीको कोटे पहुंचा. महारावजीने मेरे मन्शाके मुवाफ़िक़ मामूली तौरसे मेरी पेश्वाई की. मैंने महारावजीसे नव्वाब साहिबको मिलाया, और दूसरे रोज़ मैं नव्वाब साहिबको साथ लेकर महारावजीसे मिलने गया, और साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरलका ख़रीतह रईसको दिया, कि जिसमें उस बन्दोबस्तकी बाबत तह्रीर थी, जो अब सर्कार कोटेमें करना चाहती थी. जिन होश्यार सलाहकारोंका ज़िक्र ऊपर होचुका, वह इन्तिज़ाममें शामिल हुए; और जब महारावजी मुझसे अपने इक़ारके मुवाफ़िक़ मिलनेको आए, तो ज़ाहिर होता था, कि कुछ बिह्तरीकी सूरत हुई. महारावजी, नव्वाब साहिबसे बड़े अख़्लाक़के साथ मिले, और ख़ुशीसे सर्कारी मुदाख़लतको क़बूल किया."

सर्कारी इन्तिज़ाम.
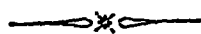
रियासतका हिसाब बे तर्तीब, नातमाम और एतिक़ादके लाइक़ नहीं था. इस हिसाबके देखनेसे मालूम हुआ, कि पिछले सालमें अट्ठाईस लाख २८००००० रुपये की आमदनी हुई. इसमेंसे जागीर, धर्म खाता और बाक़ियातके १२००००० बारह लाख मिन्हा देनेपर १६००००० सोलह लाख रुपये रहजाते हैं. अन्क़रीब यह कुल आमदनी ज़मीनके हासिलसे है. किसी क़िस्मका टैक्स नहीं लगाया जाता. क़रीब ६००००० छ: लाखके फ़ौजका ख़र्च है, और ६००००० छः लाखके महलका ख़र्च. अलावह इसके रु० १००००० एक लाख रुपया दर्बार ख़ास अपने जैब ख़र्चके लिये लेते हैं. जिस वक्त नव्वाब साहिबने चार्ज लिया, उस वक्त पोतेमें रु० ६३२२७ थे. जो लोग दर्बारमें रुपया मांगते थे, उनसे दावा पेश करनेके लिये कहा गया. चूंकि ये हिसाब बहुत बरसोंके हैं, और हरएक रक़मकी जांच होना ज़रूर है, कुल क़र्ज़ेका हिसाब तय्यार करनेमें कुछ अरसह लगेगा. रु० ९०००००० का दावा लोगोंने

पेश किया, कुछ अ़रसे तक आमदनीके बढ़नेकी कोई उम्मेद नहीं, लेकिन् इस अ़रसेमें हमको हत्तलइम्कान ख़र्च घटानेकी कोशिश करना चाहिये. हस्ब मंज़ूरी साहिब एजेएट गवर्नर जेनरल, अजमेरके मालदार सेठोंसे ६॥) रु० सैकड़ा सालानह सूदपर ६००००० छः लाख रुपया क़र्ज़ लेना तज्वीज़ हुआ, ताकि कार्रवाई शुरू कीजावे, और सर्कार अंग्रेज़ी तथा फ़ौजका जो कुछ देना बाक़ी है, देदिया जावे. ईसवी १८७३ ता० ३१ डिसेम्बर [वि० १९३० पौष शुक्ल १३ = हि० १२९० ता० ११ ज़ीक़ाद] तक जो टांकेका रु० २४६४२७ बाक़ी था, मार्चमें दिया गया; फ़ौजकी बक़ाया तन्ख़्वाह भी चुकने लगी, कोटड़ीकी जागीरोंकी बाबत जो रुपया जयपुरको देना है, और राजपूतानहके ख़ज़ानेके रु० २४४३१ और देवलीके ख़ज़ानेके रु० १०३१७३ जो देने हैं, उनके भी अदा होनेका बन्दोबस्त होरहा है. राजके ख़ज़ानेका दफ़्तर शहरसे उठाकर एजेन्सीके क़रीब रक्खागया है."

"अ़दालतें— मौजूदह अ़दालतें सिर्फ़ जुल्मके कारख़ाने हैं, कि जिनके हाकिमोंके न कोई इख़्तियारात और न कोई कार्रवाईका तरीक़ा साबित है. यह अ़दालतें बन्द कीगईं, और बजाय इनके दीवानी, फ़ौज्दारी, माल व अपीलकी कचहरियां क़ाइम कीगईं. इन अ़दालतोंके खुलनेसे एक महीनेकी मीआ़दके अन्दर दो हज़ार अ़र्ज़ियां पेश हुईं."

"कामदार— जहांतक मुम्किन था, पुराने अह्लकार, जो किसी क़द्र ईमानदार और मोतबर थे, साबित रहे; और जिन्होंने इन्तिज़ाममें मदद दी, उनको उ़म्दह उ़हदे बतौर इन्आ़मके दियेगये; और वे ख़ैरख़्वाहीसे नव्वाबको मदद देते हैं."

"नव्वाबकी सलामी— ११ मार्चको इत्तिला मिली, कि रियासत कोटाकी हुदूदके अन्दर ९ तोपकी सलामी मन्ज़ूर हुई है, मैंने कहा, कि क़िलेसे एक सलामी सर हो, तो फ़ौरन् इसकी तामील हुई."

"जेल और डिस्पेन्सरी— मैं और नव्वाब जेल और डिस्पेन्सरीको देखने गये. शिफ़ाख़ानह दुरुस्तीके साथ है, और बहुतसे मरीज़ आते हैं; नेटिव डॉक्टरकी लोग बहुत तारीफ़ करते हैं. जेलमें किसी क़द्र सफ़ाई है, और ७० क़ैदियोंमेंसे क़रीब आधोंके ज़ेर तज्वीज़ हैं."

"अब कार्रवाई बख़ूबी चल निकली है, पैमाइशका बन्दोबस्त किया गया है, इससे ज़मीनका बन्दोबस्त भी होजायेगा. सड़क, मद्रसे, शहर सफ़ाई और नलोंके बननेका बन्दोबस्त होता है; फ़ौज भी घटाई जावेगी. हिसाब उ़म्दह तरीक़ेपर रक्खा जावेगा; शिकायतें रफ़ा होंगी, और ख़ालिसेकी जो ज़मीन लोगोंने ग़ैर

तौरसे दवाली है, उसके छुड़ानेका बन्दोबस्त होगा. गैर वाजिबी ख़र्च घटाया जायेगा; क़र्ज़ अदा करनेके लिये सालानह क़िस्त क़ाइम कीजायेगी; और आम तौरसे रियासतका इन्तिज़ाम सुधारा जायेगा; लेकिन् यह सब काम एक दिनमें नहीं होसके. शुरूमें तो बड़ी सख़्त मिह्नत करनी पड़ेगी. इस साल हम इतनीही रिपोर्ट कर सके हैं, कि बद इन्तिज़ामीका अख़ीर हुआ, और दुरुस्तीकी तरफ़ कार्रवाई शुरू हुई; लेकिन् तरक़्क़ीकी बाबत हम दूसरे साल रिपोर्ट करेंगे."

नव्वाब वज़ीरने कोटेकी अगली सौ पर्गनोंकी तक़्सीम मौकूफ़ करके कुल मुल्कमें आठ निज़ामतें क़ाइम कीं, जिनके मातह्त मालके लिये चौबीस तह्सीलदार और फ़ौज्दारी इन्तिज़ामके लिये सत्ताईस थानहदार मुक़र्रर किये गये. नव्वाबने इन्तिज़ामी नक़्शह जमाकर तमाम इलाक़हमें दौरा किया, जिससे रिआयाको बहुत कुछ तसल्ली और इन्साफ़ हासिल हुआ. सद्रकी अदालतों फ़ौज्दारी और दीवानी वग़ैरहका अपील अदालत अपीलमें और उसका मुराफ़ा महकमह विज़ारतमें होता है. तमाम काम पांच क़िस्मों याने अदालत, जमा और ख़र्च, फ़ौज, ख़ैरात, और इलाक़ह ग़ैरमें बंटा हुआ है. इसमें कोई शक नहीं, कि यह इन्तिज़ाम जारी रहे, तो दूसरी रियासतोंके लिये भी नज़ीर होजावेगा.

क़र्ज़ ख़्वाहोंने नया इन्तिज़ाम होनेपर नव्वे लाख रुपयेका दावा पेश किया, सर्कारी हुक्मसे तह्क़ीक़ात कीगई, तो मालूम हुआ, कि साहूकारोंने सूदपर सूद लगाने और वुसूली रक़मका सूद मुज्रा न देनेसे बहुत लालच फैलाया है. आख़िर मुन्सिफ़ानह तौरपर साठ लाख रुपया क़र्ज़ ख़्वाहोंका दर्याफ़्त होकर फ़ी रुपया ।/॥) ७ नौ आने सात पाईके हिसाबसे देनेकी तज्वीज़ कीगई. बहुतसे राज़ी हुए, और कुछ शाकी रहे; आख़िर बयालीस लाख अट्ठाईस हज़ार तीन सौ उन्तीस रुपया चौदह आने दो पाईपर फ़ैसलह हुआ, जिसमेंसे नौ लाख सत्तानवे हज़ार नव्वे रुपये तेरह आने आठ पाई ईसवी १८७७ ता० ७ मई [वि० १९३४ ज्येष्ठ कृष्ण ९ = हि० १२९४ ता० २२ रबीउस्सानी] तक अदा होगया, और बाक़ीके लिये सर्कारी हुक्मसे छः लाख रुपया सालानह अदा करनेकी क़िस्त क़रार पाई. नव्वाबने अपनी अख़ीर दो बरसकी रिपोर्टमें लिखा, कि दो सालकी मुद्दतमें सवा पैंतालीस लाखके क़रीब रुपया तह्सील हुआ, और साढ़े उन्तालीस लाखसे कुछ ज़ियादह ख़र्च हुआ; इसके सिवा सवा पन्द्रह लाख रुपयेके क़रीब पुराने क़र्ज़े और बाक़ी तन्ख़्वाहमें दिये गये. नव्वाबने राजका मामूली ख़र्च सवा सत्ताईस लाख रुपया सालानहसे साढ़े अठारह लाख रुपया सालानहके अनुमान क़ाइम करनेसे नौ लाख सालानहके क़रीब तख़्फ़ीफ़ की.

बन्दोबस्त मालगुज़ारीके वास्ते मुन्शी नियाज़ अहमद, सर्कारी एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिश्नरको और तामीरातके इन्तिज़ामपर मिस्टर ह्यूस, सिविल इन्जिनिअरको मुक़र्रर कियागया. शिफ़ाख़ानह, टीकालगाना, जेलख़ानह, शहर सफ़ाई, मद्रसह, अक्सर रिआया के फ़ाइदहके काम क़ाइदहके साथ जारी किये गये; लेकिन् इस मुल्कके लोग काहिली और बेवकूफ़ीसे आरामकी बातोंकी तरफ़ कम तवज्जुह करते हैं. थोड़े अ़रसहमें नव्वाब मुख़्तारने बहुत उम्दह इन्तिज़ाम राजका किया था, लेकिन् रईसके पास रहने वाले खुशामदी लोगोंने आपसमें रंज करादिया; इसलिये ईसवी १८७६ ता० १ सेप्टेम्बर [वि० १९३३ भाद्रपद शुक्ल १३ = हि० १२९३ ता० १२ शअ़्बान] को मुम्ताज़ुद्दौलह नव्वाब सर फ़ैज़अ़लीख़ां बहादुर, के० सी० एस० आइ० ने ढाई बरससे कुछ ज़ियादह कोटेके इन्तिज़ामपर मुक़र्रर रहकर वहांकी मुख़्तारीसे अंग्रेज़ी सर्कारमें इस्तिअ़्फ़ा दाख़िल किया.

कोटा एजेन्सी.

—⁂—

नव्वाब सर फ़ैज़अ़लीख़ांके बाद अव्वल कप्तान एबट, क़ाइम मक़ाम काम करते रहे, विक्रमी १९३३ माघ कृष्ण ५ [हि० १२९३ ता० १९ ज़िल्हिज = ई० १८७७ ता० ५ जैन्युअरी] को मेजर पाउलेट, पोलिटिकल एजेण्ट और सुपरिन्टेन्डेन्ट मुक़र्रर होकर कोटेमें दाख़िल हुए. उन्होंने कई बार इलाक़हका दौरा करके रईसकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ एक महकमह पंचायत मुक़र्रर किया, जिसमें तीन जागीरदार और एक बाहरका अहलकार पंडित रामदयाल तईनात हुआ; फ़ौज्दारी, दीवानीमें कुछ तर्मीम होकर इलाक़ेकी निज़ामतें दुगनी करदी गईं, लेकिन् अ़दालतों और हाकिमोंके क़ाइदे और इख़्तियार, जो नव्वाब मुख़्तारने जारी किये थे, बदस्तूर बर्क़रार रहे.

विक्रमी १९३७ [हि० १२९७ = ई० १८८०] में मेजर बेले, पोलिटिकल एजेण्ट होकर कोटे पहुंचे, उन्होंने कई वर्ष तक उम्दह बन्दोबस्त किया. विक्रमी १९४६ [हि० १३०६ = ई० १८८९] में मेजर बेले, चन्द महीनोंकी रुख़्सतपर विलायत गये, और उनके एवज़ कर्नेल ए० डब्ल्यू० रॉबर्टस्, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट होकर कोटेमें आये. विक्रमी १९४६ ज्येष्ठ शुक्ल १२ [हि० १३०६ ता० ११ शव्वाल = ई० १८८९ ता० ११ जून] को महाराव शत्रुशाल

दूसरेने साढ़े सात वर्ष बाइख़्तियार, और साढ़े चौदह वर्ष बेइख़्तियार रहकर पचास वर्षसे ज़ियादह उ़म्रमें बीमारीसे (१) इन्तिक़ाल किया.

महारावकी ज़िन्दगीमें उनकी पसन्दके मुवाफ़िक़ कोटरा महाराज छगनसिंहके दूसरे बेटे उदयसिंह राजके वारिस क़रार दियेजाकर उम्मेदसिंह नामसे मश्हूर कियेगये.

१६-महाराव उम्मेदसिंह-२.

इनका जन्म विक्रमी १९३० भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० १२९० ता० १२ रजब = ई० १८७३ ता० ५ सेप्टेम्बर] को हुआ. यह महाराव, जिनकी बाबत महाराव शत्रुशालने एजेंटी कोटा और रेज़िडेन्सी राजपूतानहको अपनी ज़िन्दगीमें ख़रीते लिखदिये थे, विक्रमी १९४६ ज्येष्ठ [हि० १३०६ शव्वाल = ई० १८८९ जून] को कोटेके रईस माने गये; चन्द रोज़ बाद अंग्रेज़ी सर्कारकी मंज़ूरी आनेपर उनकी गद्दीनशीनीकी रस्म अदा कीगई. विक्रमी १९४६ श्रावण [हि० १३०६ ज़िल्हिज = ई० १८८९ शुरू अगस्त] में दर्बार मेवाड़की तरफ़से टीकेका सामान लेकर मैं (कविराजा श्यामलदास) कोटे गया था, और महाराणा फ़त्हसिंह साहिबकी ज्येष्ठ राजकुमारी नन्दकुंवर बाईकी सगाई महाराव उम्मेदसिंहके साथ पुख़्तह कर आया. इसका कुल हाल उक्त महाराणा साहिबके बयानमें सविस्तर लिखा जायेगा. महाराव उम्मेदसिंहको मैंने देखा, वे बाल तरुण वयसंधीके मध्य, हंसत मुख, बुद्धिमान और अच्छे सजीले स्पाटिकके मानिन्द मालूम होते हैं; परन्तु अब जिस रंग ढंगमें समीपी लोग लगावेंगे, वैसेही होंगे.

इन महारावके लिये मेओ कॉलेज अजमेरमें तालीमकी ग़रज़से कुछ मुद्दत तक दाख़िल होनेकी तज्वीज़ अंग्रेज़ी सर्कारसे हुई है.

---
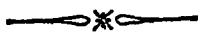
(१) बहुतसे लोग इनके ज़हरसे मरनेकी अफ़्वाहें उड़ाते हैं, और घीसा धायभाई और रामचन्द्र वैद्यको इसी इल्ज़ाममें क़ैद कियागया था; वैद्य क़ैदमें ही मरगया, धायभाई मौजूद है; लेकिन जैसी चाहिये, वैसी पुख़्तह सुबूती न गुज़री.

कोटेका अह्दनामह.

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब, तीसरी जिल्द, पहिला भाग.

अह्दनामह नम्बर- ५५.

अह्दनामह ऑनरेबल ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराव उम्मेदसिंह बहादुर राजा कोटा और उनके वारिस और जानशीनोंके दर्मियान, बज़रीए राज राणा ज़ालिमसिंह बहादुर मुन्तज़िम कोटाके, ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल दि मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, के० जी० गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख्तियारातके मुवाफ़िक़ मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़, और महाराव उम्मेदसिंहकी तरफ़से महाराज शिवदानसिंह, साह जीवणराम, और लाला फूलचन्दकी मारिफ़त, जिनको उक्त महाराव और उनके मुन्तज़िम राजराणाकी तरफ़से पूरा इख्तियार मिला था, तै हुआ.

पहिली शर्त- गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और महाराव उम्मेदसिंह और उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान दोस्ती, इत्तिफ़ाक़ और खैरख्वाही हमेशह क़ाइम रहेगी.

दूसरी शर्त-हरएक सर्कारके दोस्त व दुश्मन, दोनों सर्कारोंके दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे.

तीसरी शर्त- गवर्मेंट अंग्रेज़ी कोटेकी रियासत और मुल्कको अपनी हिफ़ाज़तमें रखनेका वादह करती है.

चौथी शर्त- महाराव और उनके वारिस और जानशीन, गवर्मेंट अंग्रेज़ीके साथ इताअत और इत्तिफ़ाक़ रक्खेंगे, और उसके बड़प्पनका लिहाज़ रक्खेंगे, और किसी रईस या रियासतसे, जिनसे अब राह रस्म है, मिलावट नहीं रक्खेंगे.

पांचवीं शर्त- महाराव और उनके वारिस और जानशीन गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी रज़ामन्दीके बग़ैर किसी रईस या रियासतके साथ इत्तिफ़ाक़ या दोस्ती न रक्खेंगे, परन्तु उनकी दोस्तानह लिखापढ़ी दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

छठी शर्त-महाराव और उनके वारिस और जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, और कदाचित किसीसे किसी तरह तक्रार होजायेगी, तो उसका फ़ैसलह गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त होगा.

सातवीं शर्त- कोटेकी रियासतवाले, जो ख़िराज मरहटा, (पेश्वा, सेंधिया, हुल्कर और पुंवार) को देते थे, वही अलहदह तफ्सीलके मुवाफ़िक़ गवर्मेंट अंग्रेज़ीको दिहली मक़ाममें दिया करेंगे.

आठवीं शर्त- कोई दूसरी रियासत कोटेकी रियासतसे ख़िराज नहीं मांगेगी; अगर कोई मांगेगा, तो गवर्मेंट अंग्रेज़ी उसको समझावेगी.

नवीं शर्त- कोटेकी फ़ौज गवर्मेंट अंग्रेज़ीके मांगनेपर उसको अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ दीजायेगी.

दसवीं शर्त- महाराव और उनके वारिस और जानशीन अपने मुल्कके पूरे मालिक रहेंगे, और अंग्रेज़ी दीवानी, फ़ौज्दारी वग़ैरहकी हुकूमत इस राजमें दाख़िल न होगी.

ग्यारहवीं शर्त- यह ग्यारह शर्तोंका अ़ह्दनामह दिल्लीमें होकर उसपर मुहर व दस्तख़त एक तरफ़से मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़ और दूसरी तरफ़से महाराजा शिवदानसिंह, साह जीवणराम और लाला फूलचन्दके हुए; और उसकी तस्दीक़ हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरल और महाराव उम्मेदसिंह और उनके मुन्तज़िम राज राणा ज़ालिमसिंहसे होकर आजकी तारीख़से एक महीनेके अ़रसेमें आपसमें नक़्लें एक दूसरेको दीजायेंगी. मक़ाम दिह्ली ता० २५ डिसेम्बर सन् १८१७ ई०.

(दस्तख़त) सी० टी० मेटकाफ़.

मुहर.

महाराव राजा उम्मेदसिंह बहादुर.

राज राणा ज़ालिमसिंह.

महाराजा शिवदानसिंह.

फूलचन्द.

(दस्तख़त) हेस्टिंग्ज़.

यह अ़ह्दनामह तस्दीक़ किया, हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने मक़ाम ऊचर कैम्पमें, ता० ६ जैन्युअरी सन् १८१८ ई० को.

(दस्तख़त) जे० एडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

तफ़्सील ख़िराजकी, जो अबतक मरहटा रईसोंको दियाजाता थाः-

१ कोटा.
२ सात कोटड़ी.
३ शाहाबाद.

१ कोटेका ख़िराज

नक्द .... रुपये २०००००

अस्बाब	रुपये	१०००००
कुल	"	३०००००
नुक़्सानी अस्बाब	"	२००००
नक़्द	"	२८००००

दो लाख अस्सी हज़ार चांदौड़ी,
उज्जैनी और इन्दौरी रुपये.
बट्टा बाबत ऊपर लिखेहुए सिक्केके
आठ रुपया सैकड़ाके हिसाबसे .... " २२४००

बाक़ी .... " २५७६००

दो लाख सत्तावन हज़ार छः सौ गुमानशाही रुपये, जिसके दिल्लीके रुपये दो लाख चवालीस हज़ार सात सौ बीस.

तफ़्सील ऊपर लिखे रुपयोंकी.

हिस्सह सेंधिया.

नक़्द	रुपये	७७०००
अस्बाब	"	३८५००
कुल रुपये	"	११५५००
नुक़्सानी अस्बाब	"	७७००
नक़्द	"	१०७८००

एक लाख सात हज़ार आठ सौ उज्जैनी,
चांदौड़ी और इन्दौरी रुपये.
बट्टा बाबत ऊपर लिखे सिक्केके आठ
रुपया सैकड़ाके हिसाबसे .... " ८६२४

बाक़ी गुमानशाही .... " ९९१७६

हुल्करका हिस्सह उसी क़द्र है, जिस क़द्र सेंधियाका.

पुंवारका हिस्सह.

नक़्द	रुपये	४६०००
अस्बाब	"	२३०००

कुल रुपये .... " ६९०००
नुक्सानी अस्बाब .... " ४६००
" ६४४००
नक्द .... " ५१५२
वट्टा आठ रुपया सैकड़ाके हिसाबसे ....
बाक़ी गुमान शाही " ५९२४८.

२— सात कोटड़ियोंका खिराज.

नक्द .... बूंदीके रुपये २२१५८
वट्टा पांच रुपया सैकड़ा .... " ११०८
बाक़ी .... " २१०५०

इक्कीस हज़ार पचास गुमानशाही रुपये जिसके सिक्कह दिहली " १९९९७॥)

तफ्सील.

आंतरोदा .... बूंदीके रुपये ३८००
वट्टा पांच रुपया सैकड़ा .... " १९०
गुमानशाही " ३६१०

सेंधियाका हिस्सह .... रुपये " १८०५
हुल्करका हिस्सह .... " १८०५

वल्वन .... बूंदीके रुपये १०००
वट्टा .... " ५०
गुमानशाही " ९५०

सेंधियाका हिस्सह .... रुपये ४००
हुल्करका हिस्सह .... " ४००
पुंवारका हिस्सह .... " १५०

करवाड़, गेंता और पीपलदा .... बूंदीके रुपये " ३५६०
वट्टा पांच रुपया सैकड़ा .... " १७८
गुमानशाही रुपये " ३३८२

सेंधियाका हिस्सह .... रुपये १५२०
हुल्करका हिस्सह .... " १५२०
पुंवारका हिस्सह .... " ३४२

इन्द्रगढ़ और खातोली,— दस गांव हुल्कर और

रींचवा.	मोहर थाना.
बंकानी.	फूल बरोड़.
दीलमपुर.	चांचोरनी.
कोटड़ाभट्ट.	कंकोरनी.
सूरेरा.	छीपा बरोड़

शेरगढ़का उस तरफ़ का हिस्सह, याने पूर्व की तरफ़ परवान्, या नेवज और शाहाबाद.

वाज़िह हो, कि नर्पतसिंह, झालावाड़का इलाक़ह छोड़कर महारावके इलाक़हमें बसेगा, और उसका इलाक़ह राजराणाके सुपुर्द होगा.

मक़ाम कोटा,

ता० १० एप्रिल सन् १८३८ ई०

(दस्तख़त)- जे० लडलो,

क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट.

(दस्तख़त)- एन० आल्विस,

एजेएट गवर्नर जेनरल.

राजराणा मदनसिंहकी मुहर.

ऊपर लिखे अह्दनामहकी तीसरी शर्तके मन्शाके मुवाफ़िक़, जिस जिसका क़र्ज़ह महाराव और उसके वारिस और जानशीनोंको देना वाजिब है, उसकी तफ़्सील यह है:-

	रु० आ०पा०		रु० आ०पा०
पंडित लालाजी रामचन्द्-	९२७३६४-१५-६	छगन कालू नागर-	५००००- ०-०
गोवर्द्धननाथजी-	३०६४३- ५-६	लक्ष्मणगिर हरीगिर-	१०९०१- ०-०
विट्ठलनाथजी-	३७५१७६- ०-०	बौहरा दाऊदजी ख़ानजी-	११५८८- ६-६
लाला सुगनचन्द्-	५६११६- १-०	साह मंगलजी-	८९४८- ५-३
जगन्नाथ सीताराम-	१००८२५- ४-९	साह हमीर वैद्य-	१०९६१७-१०-६
शिवलाल साकिन पतवार-	१००३३- ४-०	दुलजीचन्द् उत्तमचन्द्-	१०११५-१०-०
केशवराम वैजनाथ-	२४१७४७-१२-९	माधव मुकुन्द-	१०९५-१३-९
गोविन्ददास रामगोपाल-	२०४४१- १-३	बौहरा वली भाई-	५२५-११-३
गणेशदास किशनाजी-	२०२८१- ९-९	बख़्तावरमल बहादुरमल-	१८२-१५-९
मोहनराम हरलाल-	११३४-१-९		

	रु०	आ०	पा०
नन्दराम पीरूलाल-	७४७३	१३	०
उम्मेदराम भैरूंराम-	९७७१	९	०
गोपालदास वनमालीदास-	२९०८	१३	०
साह जीवणराम-	८३५	१४	०
सुजानमल शेरमल-	२४४८७	८	०
मोहनलाल वैद्य-	५५४२३	१३	०
शालिग्राम-	१४५५४	०	०
मौजीराम मूलचन्द-	३८९३	१२	६
दलजी मनीराम-	४५७७१६	०	०
कनीराम भूरानाथ-	४०८१९	१	०
भूरा कामेश्वर-	४७७०३	८	६
शोभाचन्द मोतीचन्द-	१५६७१	२	९
शिवजीराम उदयचन्द-	३४८	७	३
भागचन्द साकिन भदोरा-	५४७	२	२
बौहरा श्रीचन्द गंगाराम-	६३८३	२	३

ऊपर लिखा कर्ज़ह तह्क़ीक़ात करके महाराव हरएक शख़्सको देंगे, और इसके सिवाय भी और किसीको देना होगा, तो तह्क़ीक़ करनेपर, जिसका देने लाइक़ होगा, दिया जावेगा.

मक़ाम कोटा,

ता० १० एप्रिल, सन् १८३८ ई०

(दस्तख़त)- जे० लडलो,

क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट.

(दस्तख़त)- एन० आल्विस,

एजेण्ट गवर्नर जेनरल.

मुहर महाराव रामसिंहकी.

अह्दनामह नं० ५९.

अह्दनामह बाबत लेनदेन मुजिमोंके, दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेण्ट और श्रीमान् शत्रुशालसिंह बहादुर महाराव कोटा व उनके वारिसों और जानशीनोंके, एक तरफ़से कप्तान आर्थर नील ब्रूस, पोलिटिकल एजेण्ट हाड़ौतीने, बइजाज़त कर्नेल विलिअम

फ़्रेड्रिक एडन, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इख्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको श्रीमान् राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बैरोनेट, जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ०, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिये थे, और दूसरी तरफ़से कविराजा भवानीदानजीने उक्त महाराव शत्रुशालसिंह बहादुरके दिये हुए इख्तियारोंसे किया.

पहिली शर्त - कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़हमें संगीन जुर्म करके कोटाकी राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो कोटेकी सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगेजानेपर सर्कार अंग्रेज़ी को सुपुर्द करदेगी.

दूसरी शर्त - कोई आदमी कोटेके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम गिरिफ़्तार करके कोटाके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी.

तीसरी शर्त - कोई आदमी, जो कोटाके राज्यकी रअय्यत न हो, और कोटाकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी; और उसके मुक़द्दमहकी तह्क़ीक़ात सर्कार अंग्रेज़ी की बतलाई हुई अदालतमें कीजायेगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक़्पर कोटेकी पोलिटिकल निगरानी रहे.

चौथी शर्त - किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो; और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके क़ानूनके मुवाफ़िक़ सहीह समझीजावे, जिसमें कि मुज्रिम उस वक़ हो, उसकी गिरिफ़्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुज्रिम क़रार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

पाचवीं शर्त - नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेंगे :-

१- खून. २- खून करनेकी कोशिश. ३- वह्शियानह क़त्ल. ४- ठगी. ५- ज़हर देना. ६- ज़िना बिल्जब्र (ज़बर्दस्ती व्यभिचार). ७- ज़ियादह ज़रूमी करना. ८- लड़का बाला चुरालेजाना. ९- औरतोंको बेचना. १०- डकैती. ११- लूट. १२- सेंध (नक़्ब) लगाना. १३- चौपाया चुराना. १४- मकान जलादेना. १५- जालसाज़ी करना. १६- झूठा सिक्कह चलाना. १७- खयानते मुज्रिमानह.

१८– माल अस्बाव चुरालेना. १९– ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्ग़लाना.

छठी शर्त– ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमोंको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह दर्ख़्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पड़ेगा.

सातवीं शर्त– ऊपर लिखाहुआ अ़ह्दनामह उस वक़्तक बर्क़रार रहेगा, जबतक कि अ़ह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे.

आठवीं शर्त– इस अ़ह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अ़ह्दनामहपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अ़ह्दनामहके, जो कि इस अ़ह्दनामहकी शर्तों के बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम कोटा ता० ६ फ़ेब्रुअरी सन् १८६९ ई०

मुहर. (दस्तख़त)– ए० एन० ब्रुक, कप्तान,

मुहर. पोलिटिकल एजेएट.

मुहर. (दस्तख़त)– मेओ.

इस अ़ह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम फ़ोर्ट विलिअमपर ता० ५ मार्च सन् १८६९ ई० को की.

मुहर. (दस्तख़त)–डब्ल्यू० एस० सेटन्कार, सेक्रेटरी,

फ़ॉरेन् डिपार्टमेन्ट, सर्कार हिन्द.

झालरा पाटनकी तारीख़.

जो कि रियासत झालावाड़ राज कोटासे निकली है, इसलिये उसके पीछे यहांकी तारीख़ लिखी जाती है.

जुग्राफ़ियह.

झालावाड़में अलग अलग दो रक़्बे हैं, ख़ास रक़्बेके उत्तर तरफ़ कोटा, और दक्षिण तरफ़ राजगढ़, रियासत सेंधिया व हुल्करके कुछ हिस्से और इलाक़ह दिवेरका जुदा रक़्बह और जावरासे पूर्व तरफ़ सेंधियाका मुल्क और रियासत टोंकके एक न्यारे रक़्बेसे पश्चिम तरफ़ सेंधिया व हुल्करके जुदा जुदा ज़िले हैं. रियासतका यह हिस्सह २४°-४८′ और ३०°-४८′ उत्तर अक्षांशके दर्मियान और ७५°-५५′ और ७७° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाक़े है. दूसरा छोटा अलह्दह रक़्बह उत्तर, पूर्व और दक्षिणमें इलाक़ह ग्वालियरसे, और पश्चिममें रियासत कोटासे घिराहुआ है. इसका विस्तार २५°-५′ और २५°-२५′ उत्तर अक्षांशके बीच और ७७°-२५′ और ७६°-५५′ पूर्व देशान्तरके बीच है. रियासतके कुल रक़्बहकी तादाद २६९४ मील मुरब्बा, और १४५७ ग्राम व क़स्बोंमें सन् १८८१ ई० की ख़ानह शुमारीके अनुसार ३४०४८८ आबादी है. आमदनी १५२५२३० रुपयामेंसे ८०००० ख़िराजके सर्कार अंग्रेज़ीको देते हैं.

मुल्ककी सूरत और ज़मीनकी हालत-इस रियासतका ख़ास रक़्बह एक टीलेपर वाक़े है, जो समुद्रके सतहसे उत्तरमें हज़ार फ़ुटसे ऊंचा, और दक्षिणमें चार सौसे पांच सौ फ़ुट तक और भी ऊंचा होगया है. उत्तरी, पूर्वी और दक्षिणी हिस्से इस रक़्बेके पहाड़ी हैं, जिनमें छोटे बड़े बहुतसे नाले हैं; पहाड़ियोंके ज़ियादह हिस्सेमें घास और जंगल है, और कई जगह पानीके बहावपर बन्द बांध बांध कर बड़े बड़े भील बना-लिये गये हैं. रियासतमें इस रक़्बहका बाक़ी हिस्सह उपजाऊ और मैदान है, जिसमें हमेशह हरे रहने वाले दरख़्त भी दीख पड़ते हैं. शाहाबादका जुदा हिस्सह पश्चिममें ऊंचा है, और उसमें पानी बहुत नीचे पाया जाता है. पूर्वी हिस्सह पांच सौ या छः सौ फ़ुट नीचा है, इसके ऊपर बहुतसी पहाड़ियां और गहरे जंगल होनेके सबब यह हिस्सह भयानक मालूम होता है.

ज़मीन ज़ियादह तर उपजाऊ है, जिसमें काली मिट्टी है, और उसमें अफ़्यून ज़ियादह पैदा होती है. इसमें तीन प्रकारकी ज़मीन है, और हर एककी तीन तीन क़िस्में पैदावारीके मुवाफ़िक़ हैं, याने काली, धामनी और लाल पीली. पिछली खेतीके

हक़में कम पैदावार है; अनुमान किया गया है, कि जोतनेके लाइक़ ज़मीनके चार हिस्सोंमेंसे एक हिस्सह काली, दो हिस्सह धामनी और एक हिस्सह लाल पीली है.

नदियां.

इस रियासतमें कई नदियां हैं, उनमेंसे जो मश्हूर हैं, उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं :-

पर्वन- यह नदी दक्षिणी पूर्वी किनारेसे रियासतमें दाख़िल होकर ५० मील बहने बाद कोटा रियासतमें दाख़िल होती है. आधी दूरपर इसमें नींबज, जो बड़ी नदी है, आकर मिलजाती है. वह १६ मील तक रियासत कोटाके साथ हद क़ाइम करती है. इस नदीके पार होनेको दो घाट हैं, एक मनोहर थानहपर और दूसरा भचूरनी मक़ामपर; और नींबज नदीमें भूरेलिया मक़ामपर एक रास्तह भी है.

दक्षिण तरफ़ काली सिन्ध इस रियासतको हुल्कर और सेंधियाके इलाक़ोंसे और उत्तर तरफ़ बढ़कर कोटेकी रियासतसे जुदा करती है. इस नदीमें चटानें बहुत हैं, और इसके किनारे ऊंचे हैं, जिनपर कहीं कहीं दरख़्त ऊगे हुए हैं. इस रियासत में ३० मीलतक यह नदी बहती है, और दो एक जगह छांवनी अर्थात् महाराजराणा के मुख्य रहनेके मक़ामसे एक मीलसे कम फ़ासिलेपर है. मक़ाम भवनरसा पर इसमें एक गुज़र गाह है.

आहू नदी, दक्षिण पश्चिमी कोनेसे बहकर रियासतमें ६० मील तक गुज़रने बाद दक्षिणी तरफ़ इलाके हुल्कर और टौंकसे, उत्तरमें रियासत कोटेसे उस मक़ामपर, जहां यह कोटेमें दाख़िल होती है, इस राज्यको अलग करती है. इसके पेटेमें चटानें कम हैं, और ऊंचे किनारोंपर, जहां दरख़्त ऊगे हैं, वह रमणीक स्थान है. सुकेत और भेलवाड़ी मक़ामपर नदीपार उतरनेके घाट हैं.

छोटी काली सिन्ध, सिर्फ़ थोड़ी दूर तक राज्यके दक्षिण पश्चिम तरफ़ बहती है. गंगराड़में उससे पार उतरनेकी जगह है.

झील व तालाव- इस रियासतमें अक्सर बड़े क़स्बों व मक़ामातके क़रीब तालाव व बन्द वग़ैरह हैं, जिनके ज़रीएसे उन मक़ामातके आस पासकी ज़मीन सींचीजाती है. राजधानी झालरापाटनके नीचेका तालाव बड़ा है, जहांसे दो मील तक ईंटकी नहर बनी हुई है, जिसको ज़ालिमसिंहने बनवाया था. इसके ज़रीएसे उस तालावका पानी झालरापाटनके दूसरी तरफ़ वाले गांवोंकी ज़मीनको सेराब करता है.

आबो हवा-यहांकी सिहत बख़्श है, और उत्तरी राजपूतानहकी बनिस्बत गर्मी कम

पड़ती है, दिनके वक़ छायामें थर्मामिटर ८५ या ८८ दरजे तक पहुंचता है, और सुबह, शाम व रातको बराबर ठंड रहती है. बारिश सालमें ३० या ४० इंच औसतके हिसाबसे होती है.

पहाड़ वगैरह– हिन्दुस्तानके दो पहाड़ी सिल्सिले अच्छी तरह दिखाई देते हैं, झालरापाटन (राजधानी) दक्षिणी पहाड़ी क़तारके उत्तरी किनारे विन्ध्याचलकी तहपर है. यह पहाड़, जिसका नाम मालभी है, और जो हिन्दुस्तानकी पहाड़ी क़तारके ऊपरी हिस्सहसे विन्ध्याचलकी चटानों तक तअ़ल्लुक़ रखता है, झालरापाटन के क़रीब ही है, जिसमें रेतीले और चिनिया पत्थर पाये जाते हैं. विन्ध्याचलके इस पहाड़ी सिल्सिलेमें नीचाई ऊंचाईकी ज़ियादह तफ़ीक़ नहीं है; इनके एक तरफ़ नीचेके पहलू ढलाऊ और एक तरफ़के सीधे और ऊंचे हैं. इन तमामपर रेतीला पत्थर होता है, परन्तु झालरापाटनके नज़्दीककी तहोंमें इख्तिलाफ़ है. जो दक्षिण पूर्वसे उत्तर पश्चिम तरफ़को हैं, उनके सत्ह नीचेसे मिले हुए, परन्तु ऊपरकी तरफ़ खिंचते गये हैं, जो सत्तर डिगरी पूर्वोत्तर और दक्षिण पश्चिमके गहरावके साथ हैं. उनकी चोटीपर रेतीले पत्थरकी सिल्लियां पाई जाती हैं. यह कैफ़ियत उत्तर पूर्वमें रफ़्तह रफ़्तह कम होजाती है. विन्ध्याचलके सत्हपर और तरहके पत्थर आगये हैं. जहां पहिले सकड़ी घाटियां थीं, वहां यह पत्थर पाये जाते हैं, और इन्हींकी छोटी छोटी पहाड़ियां बन-जानेसे नीचेकी तह छिपगई है. चटानोंकी कई क़िस्में हैं, कोई चौड़ी, कोई चौखूंटी, कोई ढालू और कई गोल वगैरह तरह तरहकी पाई जाती हैं. इनके भीतर कई क़िस्मकी मिट्टी और पत्थर और ताज़ह पानीकी सीपियां मिलती हैं. ये सब चिन्ह दक्षिणी पहाड़ी सिल्सिलेके मुताबिक़ हैं, जिनसे साफ़ ज़ाहिर है, कि वह चटानें उड़कर यहां आगई हैं. इस जगह दूसरी जगहोंके मुवाफ़िक़ ऐसे पत्थर पाये जाते हैं, जिनकी अस्लियतकी निस्बत बड़ी बह्स है. विन्ध्याचल पहाड़का ज़मानह मालूम नहीं होता है. कमसे कम दर अस्ल दूसरी या तीसरी तहसे मुतअ़ल्लक़ है. लोहा और लाल पीली मिट्टी (गेरू), जो कपड़ा रंगनेके काममें आती है, शाहाबादके पर्गनहमें बहुत मिलती है.

पैदावार– रियासत झालावाड़की ख़ास पैदावार, मक्का, ज्वार, बाजरा, गेहूं, जव, चना, उड़द, मूंग, चावल, तिल, कंगनी, अफ़ीम, सांठा, (गन्ना) तम्बाकू और रुई वगैरह है.

आबपाशी– आबपाशी अक्सर कुंओंके ज़रीएसे होती है, और पानी भी पर्गनह शाहाबादके सिवा और जगहोंमें नज़्दीकही निकल आता है; लेकिन् खोदते वक़ बसबब सख़्त चटानें निकल आने व ढावोंकी मिट्टी गिरजानेके सोता अच्छा न निकलने और कुएं कम गहरे खोदेजानेसे एक कुएंसे थोड़ीही ज़मीन सींची जा सक्ती है.

राजप्रबन्धका ढंग- शुरू ज़मानेमें कामदारोंको दीवानी, फ़ौज्दारी और माली इख्तियारात बहुत कम थे; उनके फ़ैसलोंका अपील दारोग़ह पालकीखानहकी मारिफ़त महाराजराणाके हुज़ूरमें होता था, जिसका तस्फ़ियह या तो खुद रईस कर देता, या वापस कामदारोंके पास मुनासिब हुक्म लगाया जाकर भेजा जाता था. उस ज़मानहमें फ़ीस नहीं लीजाती थी; लेनदेनके मुक़द्दमे फ़रीक़ैनकी बाहमी रज़ामन्दी से फ़ैसल होजाते थे. खेतीके आलात कभी नहीं बिकते. जब विक्रमी १९०७ [हि० १२६६ = ई० १८५०] में दीवानी व फ़ौज्दारीकी अ़दालतें राजधानीमें क़ाइम हुईं, तो दो वर्षके अ़रसे तक तो सिर्फ़ नामके वास्ते ही इनको माना गया, क्योंकि इख्तियार पालकीखानहके दारोग़हको था, और मुक़द्दमात ज़बानी फ़ैसल किये जाते थे. विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = ई० १८६१] में ये अ़दालतें फिर क़ाइम की गईं; लेकिन् मिस्लें मुरत्तब होकर हर अ़दालतसे रईसके हुज़ूर में हुक्मके वास्ते भेजी जाती थीं. विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] के क़रीब अ़दालती कार्रवाई सुस्त पड़गई, लेकिन् कुछ अ़रसे से इसकी बुन्याद जम गई है, क्योंकि पेश्तर अ़दालती खर्च जुर्मानोंमेंसे चलता था, और साबिक़वाला अह्लकार काममें मुदाख़लत करता था. ज़मानह हालका न्याय प्रबन्ध इस तरहपर है, कि चौमहला व शाहाबादके तह्सीलदारोंके सिवा, जिनको दो माह क़ैद व ५० रुपये जुर्मानह तकका इख्तियार है, कुल तह्सीलदार एक माह क़ैद और ४० रुपये तक जुर्मानहकी सज़ा मुज्रिमको देसक्ते हैं. तह्सीलदारोंके फ़ैसलोंका अपील अ़दालत सद्र दीवानी या फ़ौज्दारीमें एक हफ़्तहकी मीआ़दके अन्दर होता है.

अ़दालत सद्र फ़ौज्दारीको फ़ौज्दारी मुक़द्दमातमें एक साल क़ैद और १०० रुपये जुर्मानह तक सज़ा देनेका इख्तियार है.

अ़दालत दीवानीको १००० रुपये मालियतके मुक़द्दमात सुननेका इख्तियार है. इन दोनों अ़दालतोंके फ़ैसलोंका अपील महकमह पंचायतमें होता है, जिसमें तीन मेम्बर हैं, और जिनका अधिकार फ़ौज्दारी मुक़द्दमोंमें तीन वर्ष क़ैद और ३०० रुपये तक जुर्मानहकी सज़ा देनेका है; और दीवानी मुक़द्दमोंमें वे ७००० रुपये मालियतकी समाअ़त कर सक्ते हैं. इस अ़दालतके अपीलकी मीआ़द दो माह तककी है. फ़ौज्दारी मुक़द्दमोंमें दण्ड संग्रह (P. C.) और मुल्की रवाजके मुवाफ़िक़ कार्रवाई कीजाती है. दीवानी मुक़द्दमातमें रु० १२॥ फ़ी सैकड़ाके हिसाबसे फ़ीस ली जाती है, लेकिन् बाहर गांवोंमें आसामीकी हैसियत मालीके मुवाफ़िक़ फ़ीस वुसूल कीजाती है. अ़दालत अपीलके हद्द इख्तियारसे बाहर वाले मुक़द्दमों और अ़दालत अपीलके

अपीलकी समाअ़त खुद रईसके इज्लासमें होती है; और तह्सीलदारोंके इख़्तियारातसे बाहर जो मुक़द्दमे होते हैं, उनको भी रईस ही सुनता है.

फ़ौज- पुलिसका इन्तिज़ाम अ़जीब तौरका है; इन लोगोंकी बहाली, बर्तरफ़ी, तन्ख़्वाह और ज़िले पुलिसका इन्तिज़ाम एक कारख़ानहके तह्तमें है. १०० सवार और २००० पैदल कुल रियासत भरमें काम देते हैं; चन्द इनमेंसे तह्सीली कामके वास्ते तह्सीलदारके मातह्त हैं, और कुछ वास्ते इन्तिज़ाम पुलिसके उसीके तह्तमें काम देते हैं. तह्सीलदारके मातह्त पेश्कार रहता है, जिसका काम तह्सीलसे कुछ तअ़ल्लुक़ नहीं रखता. बाक़ी सिपाही तीन गिराई अफ़्सरोंके तह्तमें हैं, जो रियासतकी सर्हदमें लुटेरे तथा डाकुओंकी तलाशमें गश्त करते हैं; फ़ौज सवार व पैदल गिराई अफ़्सरोंके हम्राह रहती है. पेश्कार तह्सीलदारकी मारिफ़त और गिराई अफ़्सर वाला वाला अपनी अपनी रिपोर्ट और कार्रवाई हाकिम अ़दालत फ़ौज्दारीके पास भेजते हैं; कुछ अ़र्सह पेश्तर यह मातह्ती सिर्फ़ नामके लिये थी. शहर झालरापाटन व छावनीमें कोतवालकी सुपुर्दगीमें म्युनिसिपल पुलिस है, जो अ़दालत फ़ौज्दारीके मातह्त है.

जेलख़ानह- पेश्तर क़ैदी लोग, मन्धरथानह, कैलवाड़ा और शाहाबादके गढ़ोंमें बन्द रक्खे जाते थे. विक्रमी १९२२ [हि० १२८१ = ई० १८६५] के क़रीब एक सद्र जेलख़ानह क़ाइम किया गया, जिसके इन्तिज़ामके लिये एक युरेशिअन सुपरिण्टेण्डेण्ट मुक़र्रर हुआ. उसने इन्तिज़ाम जेलका अच्छा किया; क़ैदियोंसे सड़क, काग़ज़, और कपड़ा बनानेका काम लियाजाता है, और जेलके मकानमें बनिस्बत पहिलेके सफ़ाई ज़ियादह और जेलके मुतअ़ल्लक़ इन्तिज़ाम दुरुस्त है. क़ैदियोंकी तादाद सवा सौके लगभग रहती है, और कभी ज़ियादह भी होजाती है.

तालीमी हालत व मद्रसह- इस रियासतमें तालीमका तरीक़ह शुरू हालतमें है, ज़िलोंमें ब्राह्मण इत्यादि पाठक लोग बणियों तथा ब्राह्मणोंके लड़कोंको पहाड़े व हिसाब किताब वग़ैरह साधारण तौरपर सिखाते हैं. राजधानी झालरापाटन और छावनीमें अल्बत्तह मद्रसे हैं, जिनमें हिन्दी, उर्दू व अंग्रेज़ीकी इब्तिदाई तालीम दियाजाना बयान किया जाता है; लेकिन् उस्ताद लोग ज़ियादह लाइक़ नहीं हैं; और इसमें शक नहीं. कि मद्रसोंको मदद भी कम दीगई है. इसी क़िस्मकी अब्तरियोंसे नतीजह यह होता है, कि अधूरे तालीम याफ़्तह स्कूलको छोड़ बैठते हैं.

ज़ात, फ़िर्क़ह और क़ौम- रियासत झालावाड़में नीचे लिखी हुई जातिके लोग आबाद हैं:- ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, कायस्थ, जाट, गूजर, माली, खाती,

कुम्हार, लुहार, दर्ज़ी, पटवा, तेली, तंबोली, छीपा, नाई, ओड़, मीना, रंग्रेज़, क़लईगर, मुसल्मान बौहरा, बिसाती, जुलाहा, मोची, धोबी, चमार, कंजर और गडरिये वग़ैरह.

राजपूत क़ौममेंसे झाला राजपूत यहां ज़ियादह हैं, और इनसे उतरकर शुमारमें राठौड़, चन्द्रावत, राजावत, सोलंखी, सीसोदिया शक्तावत और खीची चहुवान हैं. इस इलाक़हमें सोंदिया नामकी एक और क़ौम पाई जाती है, जिसका बयान माल्कम साहिबने अपनी बनाई हुई किताब "सेंट्रल इंडिया" में लिखा है, कि ये लोग अपनेको राजपूत बतलाते हैं, और उनमें कई गोत्र या हिस्से याने राठौड़, तंवर, यादव, सीसोदिया, गुहिलोत, चहुवान, और सोलंखी हैं. कहते हैं, कि सात सौ या नौ सो वर्ष पेश्तर अजमेर व ग्वालियरसे चहुवान, मारवाड़के इलाक़ह नागौर से राठौड़, और मेवाड़से सीसोदिया व दूसरे राजपूत यहां आये; उनसे इस नस्लकी उत्पत्ति हुई. एक बयानसे इस क़ौमका नाम सोंदिया होना इस तरह पाया जाता है, कि ये लोग सिन्ध नामकी दो नदियोंके दर्मियानी हिस्सेमें, जो सिंदवाहा कहलाता था, और पीछे बिगड़कर सोंदवाह कहलाया, रहनेके सबब सोंदिया प्रसिद्ध हुए. या ऐसा हुआ हो, कि पहिले सन्ध्या नामकी एक हिन्दू क़ौम थी, उसका नाम किसी कारणसे सोंदिया पड़गया हो. इन लोगोंका पेशह काश्तकारी और लुटेरापन है; ये बिल्कुल जाहिल होते हैं. रंग इनका गोरा, चिहरा गोल, डाढ़ी मूछ सहित होता है. इस रियासतमें इनके चन्द गांव जागीरी हैं. बादशाही वक़में बहुतसी जागीर इनके तहतमें होना सुनागया है, लेकिन् अब उन जागीरी गांवोंमेंसे थोड़ेसे बाक़ी रहगये हैं. उक्त साहिब (माल्कम) का बयान है, कि ये अक्सर राजपूत कहलाते हैं, लेकिन् यह नस्ल कई जातियोंसे बनी हुई है; ग़ालिबन् इनकी नस्ल नीची क़ौमोंसे पाई जाती है. वे अपनेको एक जुदा क़ौम ठहराते हैं, और कहते हैं, कि किसी राजाके शेरके चिहरेवाला एक लड़का पैदा हुआ था, वह जंगलमें निकाल दियागया, और वहां उसने मुख़्तलिफ़ ज़ातोंकी औरतोंसे आश्नाई की, जिसकी औलाद वे लोग हैं, और वही उनका पुर्पा बना. इसमें शक नहीं कि यह क़ौम क़दीम है, लेकिन् इनकी कोई बड़ी बहादुरानह कार्रवाई राजपूत क़ौमकी सी नहीं पाई जाती. जब उनकी ज़मीन चन्द देशी रईसोंने छीनली, तो वे आपसमें लड़ते झगड़ते रहे, और बाद उसके मध्य हिन्दुस्तानमें, जब ३० सालतक हल चल रही, उस ज़मानेमें लूट मार करने लगे. अगर्चि ये लोग गाय व भैंस वग़ैरहका मांस नहीं खाते, और ग्रासिया क़ौमसे अक्सर विरुद्ध हैं, लेकिन् हिन्दू मज़्हबकी बहुतसी बातें नामको भी

नहीं जानते. इस ज़ातमें जैसा ऊपर लिख आये हैं, कई फ़िर्के हैं, लेकिन् आपस
विवाह सब कर लेते हैं; अक्सर औरतोंका दूसरा विवाह भी होता है; उत्तम कु
राजपूतोंमें औरत नाता नहीं करसक्ती, इससे ज़ाहिर है, कि इन सोंदियोंने अ
बुज़ुर्गोंकी मर्यादाको छोड़ दिया है. ये शराब ख़ूब पीते हैं, और अफ़ीम भी ग
खाते हैं. यह लोग ग़ैर क़ौम और शंकर उत्पत्ति होनेके सबब हिन्दू रीति रस्म
अक्सर आज़ाद हैं, और बहुतसी बेजा हरकतें कर बैठते हैं. इनमें बाहम इत्ति
बिल्कुल नहीं होता, ज़मीन वग़ैरहकी बाबत हमेशह मार पीट और लड़ाई आप
किया करते हैं. ये लोग लड़ाईके काममें मज़्बूत, चालाक और बहादुर होते हैं; इन
औरतें भी मिस्ल मर्दोंके लड़ाईके वक्त घोड़ोंपर सवार होकर हथियारोंसे काम लेसक्ती
इस क़ौमको ज़ियादह लड़ाकू देखकर पिंडारोंकी लड़ाई ख़त्म होने बाद सर्कार अंग्रेज़ीने इ
घोड़ोंको बिकवा डाला, और गढ़ छीन लिये, तबसे इनका ज़ोर कम होगया, लेकिन् अ
ख़ासियत बिल्कुल नहीं बदली. इनके यहां विवाह ब्राह्मण कराता है, और भाटोंका
ख़ूब रक्खा जाता है, बल्कि भाटोंको जो उनके बुज़ुर्गोंकी वीरता गाते हैं, बहुत कुछ बख़्
देते हैं, और दिलके फ़य्याज़ होते हैं. इस क़ौममें वैष्णवी मज़्हब अक्सर लोग रखते

झालरापाटनमें जैनी लोग ज़ियादह हैं, जिनके कई बड़े बड़े मन्दिर
राजधानीमें बनेहुए हैं; चन्द दादूपन्थी साधू, गिरी, पुरी, भारती, गुसाईं और न
के सिवा कूंडा पन्थी मतवाले भी हैं, जिनमें कई क़ौमके आदमी पोशीदह जमा हो
कूंडेमें शामिल खाते हैं, और जातको नहीं मानते. यह मज़्हब थोड़े ही अ़रसहसे
जारी हुआ है.

पेशह– राजपूतोंमेंसे झाला खेती करते हैं, परन्तु इनके साथ दूसरे राज
शादी विवाह नहीं करते (१); ब्राह्मण लोग पूजापाठके सिवा ख़ानगी काम करते हैं; ब
व्यापारका पेशह करते हैं, और चन्द राजके नौकर भी हैं; कायस्थ ज़ातके मनु
मुतसद्दी हैं, राज्यमें अक्सर यही लोग अह्लकारीका काम करते हैं.

ज़मीनका क़ब्ज़ह व महसूल वग़ैरह– खेतीकी ज़मीनका हाल दर्याफ़्त कियेजाने
मालूम हुआ, कि कुल रियासतकी धरतीका पांचवां हिस्सह जोता बोया जाता
बग़ैर बोईजानेवालीका तिहाई हिस्सह ऐसा है, कि जिसमें ज़िराअ़त होसक्ती
बाक़ी ज़मीन पहाड़ी और ऊसर है. कुल रियासतकी जोती बोई जानेवाली ज़मी
१०८८४८८ बीघा याने ५०७४१८ एकड़ है, जिसमेंसे ७१६५३१ बीघा, या
३३१४४० एकड़ ख़ालिसेकी है. इस ख़ालिसेकी ज़मीनमेंसे ३९५९ बीघे (१८४६ एकड़

(१) ये झाला, राजराणाके ख़ानदानके नहीं हैं.

राजकी तरफ़से जोती बोई जाती है; १०८७२४ बीघे (५०६८३ एकड़) जागीरी, ५९२७९ बीघे (२६७०२ एकड़) उदक और ४५८०० बीघा (२१३५० एकड़) अह्लकारोंको माहवारी तन्ख़्वाहके बदले में दी हुई है.

क़दीम ज़मानेमें यहांपर महसूलका तरीक़ह लाटा और बटाई था; पैदावारीमेंसे $\frac{3}{6}$ हिस्सह राज्यको और बाक़ीमेंसे गांवका ख़र्च मुज्रा लियाजाकर काश्तकारको मिलता था. इस तरीक़ेमें हासिल वुसूल करनेवाले काश्तकारोंपर ज़ुल्म करने और धोखा देनेका अक्सर मौक़ा पाते थे. जिस तरह पटैल लोग ज़मीनपर अपना पुश्तैनी हक़ रखते थे, उसी तरह पहिले काश्तकारोंको भी मजाज़ था; वे अपने क़ब्ज़ेकी ज़मीनको फ़रोख़्त या गिरवी रख सक्ते थे; और अगर कोई ख़ुद ज़मीनको नहीं बोता, तो दूसरेको सौंपकर वापस ले सक्ता था; लेकिन् राजराणा ज़ालिमसिंहने इस क़ाइदेको बन्द करके लगानका तरीक़ह जारी किया, और हरएक क़िस्मकी ज़मीनके लिये फ़ी बीघा नक़्द रुपयेका निर्ख़ क़ाइम करदिया, जिससे रियासतकी आमदनीमें तरक़्क़ी हुई. हर गांवमें निर्ख़ जुदा जुदा था, और गांवका ख़र्च अन्दाज़हसे फ़ी बीघा पीछे मुक़र्रर कियाजाकर लगानके साथ जमा होजाया करता था. इसी तरह ठेके वग़ैरहका बन्दोबस्त होनेपर, जो ज़मीन कि पहिले बे जोती बोई पड़ी रहती थी, उसमें ज़िराअत होनेसे मुल्कमें पैदावार ख़ूब होने लगी; लेकिन् बाद उसके राजराणा ज़ालिमसिंहके जानशीनों व रियासतके क़ाइम मक़ाम रईसोंमें लड़ाइयें होने और क़हत-साली होजानेसे हालत बिगड़ गई. अगर्चि ज़मीनका हासिल ज़ालिमसिंहके ठहरायेहुए क़ाइदेपर लियाजाता है, लेकिन् कई बातोंमें तब्दीलात होगई हैं. काम्दारोंकी चालाकियोंसे ज़मीनमें अदला बदली भी हुई है, याने किसीकी ज़मीन किसीके क़ब्ज़हमें चली गई है. मुआफ़ीकी ज़मीनका भी यही हाल है, बल्कि कई शख़्स बेकार मुआफ़ीके नामसे ज़मीन खाते हैं.

ज़मीनका कुल हासिल क़रीब १७४७१९७ रुपयाके बतलाया जाता है, जिसमेंसे १३२१९४३ रुपया राज्यकी ख़ालिसाई आमदनी है; और मुख्य जागीरों की आमदनी १५१८०२ रुपये हैं. धर्म सम्बन्धी जागीरें ८०६२५ रुपयों की हैं. अह्लकारोंको तन्ख़्वाहके बदलेमें ४३९८३ रुपये, बे लगान ज़मीन ५३४८७ रुपये, और गांव ख़र्चमें ५९९५८ रुपयेके क़रीब आमदनीकी ज़मीन समझीजाती है. ज़मीनका हासिल मनोतीदारके ज़रीएसे जमा होता है, जो कि ज़मींदारका बोहरा होनेके सिवा उसकी तरफ़से हासिलका बाक़ी रुपया राज्यमें जमा करानेका ज़ामिन भी होता है. मनोती-दारोंके लिये राज्यकी तरफ़से किसी तरहकी तन्ख़्वाह या ज़मीन मुक़र्रर नहीं है, वे सिर्फ़

ज़मींदारोंकी तरफ़से ज़ामिन रहते हैं; और जो ज़मींदार, कि ग़रीबीके सबब ज़ामिनकी मारिफ़त रुपया जमा करानेसे मज्बूर रहते हैं. उनकी ज़मीनकी पैदावार तह्सील-दार ज़िला बिकवाकर ज़मींदारको बीज और खानेके लाइक़ रुपया उस आमदनीमेंसे देने बाद बाक़ीको राज्यके हासिलमें जमा करलेता है; ज़मीनका हासिल आसामीवार लिया जाता है, और खेतका कूंता करके हासिल मुक़र्रर करदिया जाता है.

कुल ज़मीनका मालिक रईस है, और यह इससे साफ़ ज़ाहिर है, कि जब ख़ालिसेकी ज़मीनका हासिल बढ़ाया गया था, तो जागीरोंमेंसे भी उसी शरहके मुताबिक़ हासिल तलब किया गया. गांवका मालिक या बिस्वादार सिवाय चौमहलाके और कोई नहीं है. ज़मींदार लोग सिर्फ़ क़ब्ज़हके रूसे ज़मीनके मालिक हैं, वर्नह गिर्वी वग़ैरह रखनेका इख़्तियार नहीं रखते, लेकिन् मुन्तज़िमोंकी ख़राबीसे वे ज़मीनके ख़ुद मुख़्तार मालिक होरहे हैं. जागीरदार घोड़े और आदमी रियासतकी नौकरीके वास्ते देते हैं, और त्यौहारोंपर खुद राजधानीमें हाज़िर होते हैं. धर्मखाता और मुआफ़ीदारोंकी ज़मीनपर लगान नहीं है. पटैलोंसे, गांवोंका हासिल एकट्ठा करानेकी नौकरीके सबब हासिल नहीं लियाजाता, और इसी तरह सांसरी व गांवबलाई भी तन्ख़्वाहके एवज़ ज़मीन बे लगान पाते हैं, जो, बशर्ते कि उनसे कोई क़ुसूर सख़्त न हो, हीन हयात तक उनके क़ब्ज़हमें रहती है.

तह्सील या ज़िले- झालावाड़की कुल रियासत ख़ास तीन क़ुद्रती हिस्सोंमें तक़्सीम कीगई है- १ बसती पर्गने, जो मुकुन्दरा पहाड़के नीचे हैं, और मालवेकी तरफ़ पथरीले मैदानका झुकाव. २ चौमहला- ख़ास मालवा देश. ३ शाहाबाद, जो पूर्वमें उस मैदानका पहाड़ी और वह्शी हिस्सह है. पिछले दोनों हिस्से ज़ालिमसिंहने खुद हासिल किये थे, जिनमेंसे नम्बर २ को मन्दसौरके अह्दनामहमें हुल्करने दिया था. इन तीनों हिस्सोंमें जिनका ज़िक्र ऊपर होचुका है, याने कुल रियासतमें बाईस पर्गने हैं, उनके नाम मए तादाद गांव (१) हर एकके ज़ैलके नक़्शहमें दर्ज किये जाते हैं:-

नक़्शह.

नाम पर्गनह.	तादाद गांव.	नाम पर्गनह.	तादाद गांव.
चेचट	.... ४४	देलनपुर	.... १४९
सुकेत	.... ५४	अकलेरा	.... ३२
ख़ैराबाद	.... २२	चरेलिया	.... १९

(१) पृष्ठ-१४५३ में ग्राम और क़स्बोंकी तादाद जो हएटर साहिबके गज़ेटिअरसे लिखीगई है, उसमें और इसमें फ़र्क़ है, और यह तादाद राजपूतानह गज़ेटिअरसे लिखी गई है.

नाम पर्गनह.	तादाद गांव.	नाम पर्गनह.	तादाद गांव.
जूल्मी	१०	मनोहरथानह	१३१
ऊर्मल (झालरापाटन)	१२८	जावर	४७
बुकरी	७३	छीपाबड़ोद	१६३
रीचवा	१३३	शाहाबाद	२५१
घ्रस्नावर	२६	पंचपहाड़	७७
रतलाइ	४२	आवर	४०
कोटड़ा भट्ट	४५	दीग	८६
सरेरा	३७	गंगराड़	१२३

ज़ाहिरा ये हिस्से गैर बराबर हैं, और इनकेलिये जांच दर्कार है. पंचपहाड़, आवर, दीग, और गंगराड़, जो चौमहला नामसे मश्हूर हैं, रियासतके और ज़िलों से दाणकी निस्बत जुदा हैं, और यही कैफ़ियत शाहाबाद ज़िलेकी है.

मश्हूर शहर व क़स्बे - झालरापाटन, छावनी, शाहाबाद, कैलवाड़ा, छीपा-बड़ोद, मनोहरथानह, सुकेत, चेचट, पंचपहाड़, दीग और गंगराड़, इस रियासतमें मश्हूर क़स्बे हैं, जिनका मुफ़स्सल हाल नीचे दर्ज किया जाता है :-

क़दीम झालरापाटनका शहर नई आबादीसे किसी क़द्र दक्षिण दिशाको चन्द्र-भागाके किनारे था, वह नये शहरके बीचों बीचसे चन्द गज़के फ़ासिलेपर है. टॉड साहिबके बयानसे झालरापाटनके शहरकी वज्ह तस्मियह यह है, कि क़दीम नग्र पाटनमें १०८ मन्दिर थे, जिनमें बहुतसोंके झालर लगी हुई थी, इसलिये उसका नाम झालरापाटन याने झालरनग्र रक्खा गया; पहिले इसका नाम चन्द्रियोती भी मश्हूर था. औरंगज़ेबके ज़मानेमें यह शहर बर्बाद किया गया, और मन्दिर तुड़वा दिये गये, जिनमेंसे विक्रमी १८५३ [हि० १२१० = ई० १७९६] में क़दीम आबादीका सातसहेली मन्दिर बाक़ी रह गया, जो नई राजधानीमें मौजूद है, और जिसके गिर्द भीलोंके चन्द झोंपड़े हैं. इस शहरकी प्राचीन तारीख़ लानेके लिये दो प्रशस्तियां, जो डॉक्टर बूलरने इण्डिअन् ऐन्टिक्वेरीकी जिल्द ५ के पृष्ठ १८१ और १८२ में दी हैं, उनकी नक़्ल इस प्रकरणके शेषसंग्रहमें दीगई है. इसी सालमें ज़ालिम-सिंहने नई राजधानी झालरापाटन मए शहरपनाहके आबाद की, और ऊर्मलसे तहसील उठाकर उक्त नग्रमें बाशिन्दोंको बड़ी तसल्लीके साथ बसाया; उनके

इत्मीनानके वास्ते शहरके बाज़ारमें इस मज़्मूनकी एक प्रशस्ति खुदवाकर क़ाइम करादी, कि जो कोई शहरमें बसेगा, उससे दाण नहीं लिया जावेगा; और हर क़िस्मके मुजिमसे १।) सवा रुपयेसे ज़ियादह जुर्मानह वुसूल नहोगा. इस बातपर कोटा और खासकर मारवाड़से बेशुमार पेशहवर लोग दौड़ आये. विक्रमी १९०७ [हि० १२६६ = ई० १८५०] में पहिले महाराजराणाके समय कामदार हिन्दूमल्लने इस पत्थर (प्रशस्ति) को उखड़वाकर शहरके पास वाले तालाबमें डुबवा-दिया; उस वक़्से बाशिन्दोंके कुल हुक़ूक़ जाते रहे. कहते हैं, कि इस तालाबको जैसू नामी किसी राजपूतने बनवाया था, मगर ज़ालिमसिंहने इसकी मरम्मत कराकर एक पुख़्तह नहर इसमेंसे जारी की, जिससे चन्द गांवोंकी ज़मीन सेराब होती है. उक्त शहरमें कई बड़े बड़े मालदार साहूकार महाजन हैं, टकशाल और राज्यके सब कारखाने तथा झालरापाटन नामकी तह्सीलका सद्र भी यहीं है.

छावनी- यहां महाराजराणाका महल, अदालतें और कारखानोंके मकानात बने हुए हैं; छावनी ऊंची पथरीली ज़मीनपर आबाद है. अगर्चि झालरापाटन शहरसे बस्ती यहां ज़ियादह है, लेकिन् पानीकी कमी है. विक्रमी १९२९-३० [हि० १२८९-९० = ई० १८७२-७३] में होल्डिच साहिब (Lt Holdich, R. E.) ने झालरापाटन कन्टोन्मेण्ट बनाना शुरू किया, लेकिन् यहां राजाके महलके गिर्द चन्द झोंपड़े थे, पुरानी आबादी दक्षिण तरफ़ दो कोसके फ़ासिलेपर रह गई; पश्चिम तरफ़ एक बड़े तालाबके पास महल है; उत्तर तरफ़ जंगल्दार पहाड़ीके गिर्द फ़सील बनी हुई है. यहांसे शहर खूब दीखता है, रईस अगर्चि छावनीमें रहते हैं, लेकिन् राजधानी इसीको समझना चाहिये. छावनीसे २ १/२ मील उत्तरको कोटेकी रियासतका क़िला गागरौन है. शहर का नाम पहिले पाटन था, लेकिन् ऐसा भी प्रसिद्ध है, कि पहिला रईस झाला राजपूत होनेसे झालरापाटन नाम पड़गया. यह शहर पहाड़ीके दामनमें आबाद है, इसके पासकी पहा-ड़ियोंका पानी एक झीलमें, जिसपर एक पुख़्तह पाल आध मीलसे ज़ियादह बनी है, जमा होता है; और उसपर कईएक मन्दिर व पुराने महल बने हैं; पालके पीछे शहर वाके है. पहाड़ीके दामन व शहरके दर्मियान चन्द बाग़ीचे हैं. झीलके सिवा शहरकोट चारों तरफ़ बुर्जों और खाईसे मह्फ़ूज़ है; शहरसे दक्षिण तरफ़ ४०० या ५०० गज़की दूरीपर चन्द्रभागा नदी बहती है, जो उत्तर पूर्वकी तरफ़ चार मील मैदानमें बहने बाद कालीसिन्धसे जा मिली है. चन्द्रभागा और शहरसे छावनीको जानेवाली सड़क के बीच १५० फ़ुट बलन्द एक पहाड़ीपर ज़िक्र कियाहुआ क़िला अधूरा बना हुआ पड़ा है. शहरकी उत्तरी दीवारसे छावनीका राजमहल २॥ कोसके क़रीब है. इस

नये महलके गिर्द ऊंची और चौकोर दीवारोंके कोनोंपर गोल बुर्ज और बीचमें दो दो आधे आधे बुर्ज बने हैं, दीवारोंकी लम्बाई ७३५ फुट है; पूर्वकी तरफ़ सद्र दर्वाज़ह है. छावनीसे डेढ़ मील पूर्व तरफ़ कालीसिन्ध नदी है.

शाहाबाद- यह पर्गनह कोटेके रईसने ज़ालिमसिंहके बेटेको बख़्शा था, जो पीछेसे झालावाड़ रियासतका एक हिस्सह होगया. इस क़स्बेके बसनेका वक्त ठीक ठीक मालूम नहीं, कि यह किस ज़मानहमें आबाद हुआ, लेकिन् ज़बानी रिवायतों वगैरहसे मालूम होता है, कि नीचेका क़िला श्रीराम और लक्ष्मणका बनवाया हुआ है. इस क़स्बेमें १००० मकानोंके क़रीब आबादी है, और आलमगीरके ज़मानहकी एक मस्जिद है. शहरके पास पहाड़ीपर ऊपरी क़िलेको ज़ालिमसिंहने बनवाया था. पान यहां कसरतसे होते हैं, लेकिन् पानी निकम्मा है.

केलवाड़ा- यह शाहाबाद पर्गनेमें है, इसके पास ही उ़म्दह और सायादार दरख़्तोंके जंगलमें तपत कुंड है, जहां गर्मीके मौसममें मेला लगता है.

छीपाबड़ोद- यह एक पुराना क़स्बह है, छीपा लोग ज़ियादह रहनेके सबब छीपाबड़ोदके नामसे मश्हूर है, और इसी नामकी तह्सीलका सद्र मक़ाम है. यहां विक्रमी १८५८ [हि० १२१६ = ई० १८०१] में दूसरे तीन गांवके बाशिन्दोंको पनाह देकर इसका नाम छीपाबड़ोद प्रसिद्ध किया गया.

मनोहरथानह- यह क़स्बह एक तह्सीलका सद्र मक़ाम है, पहिले इसको खाताखेड़ी कहते थे. दिल्लीके शहन्शाहोंके समयमें यह पर्गनह नव्वाब मनोहरखां (मुनव्वरखां) को दिया गया था, जिसने इस गांवको अपने नामपर आबाद किया. बाद उसके यह भीलोंके हाथ लगा, जिनके पाससे कोटेके महाराव भीमसिंहने छीनकर अपने क़ब्ज़हमें लिया. इसके अन्दर एक पुख़्तह गढ़ी तो पुरानी है, बाहरवालीको भीमसिंहने बनवाया, और शहरपनाह ज़ालिमसिंहने तय्यार कराई. क़स्बहकी आबादी ५०० घरोंकी है; क़िलेके नीचे पर्वन और काकर दोनों नदियें शामिल होकर एक बहुत गहरा कुण्ड बनगई हैं. पीतलके बर्तन यहां अच्छे बनाये जाते हैं, और क़स्बहके पास ही साखूका एक जंगल है.

सुकेत - यह क़स्बह बहुत पुराना है, जो पहिले सखतावत राजपूतोंका मक़ाम था, और इसमें एक क़िला भी था, जिसको महाराष्ट्र (मरहटा) लोगोंने तोड़डाला. क़स्बहमें झालोंकी कुलदेवीका मन्दिर है, जहां हर साल दशहरेके उत्सवपर महाराजराणा पूजा करनेको जाते हैं. यह एक तह्सीलका सद्र मक़ाम है.

संधियाके ठेकेदारोंके क़ब्ज़ेमें हैं ···· ···· ···· बूंदीके रुपये १३७९८
बट्टा पांच रुपया सैकड़ा ··· ···· ···· ···· ···· ···· ···· ···· ···· ···· ,, ६९०

गुमानशाही ,, १३१०८

३- शाहाबादका ख़िराज.

यह ख़िराज अबतक पेश्वाको दिया जाता था. उसकी ठीक तादाद मालूम नहीं हुई, परन्तु अन्दाज़न् २५००० रुपया मालूम हुआ, जिसमें आधा नक़्द और आधा अस्बाब दिया जाता था.

(दस्तख़त) सी० टी० मेट्काफ़. मुहर.

महाराव राजा उम्मेदसिंह बहादुर.
राज राणा ज़ालिमसिंह.
महाराजा शिवदानसिंह.
फूलचन्द.
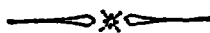
ततिम्मह शर्त, उस अह्दनामहकी, जो गवर्मेंट अंग्रेज़ी और रियासत कोटाके आपसमें ता० २६ डिसेम्बर सन् १८१७ ई० को हुआ था.

दोनों फ़रीक़ यह मंजूर करते हैं, कि महाराव उम्मेदसिंह राजा कोटाके बाद यह रियासत उनके वलीअह्द बड़े बेटे महाराज कुंवर किशोरसिंहको और उनके वारिसों को सिल्सिलहवार हमेशहके वास्ते मिलेगी, और रियासतके कामोंका कुल इन्तिज़ाम राज राणा ज़ालिमसिंह और उनके पीछे उनके बड़े बेटे कुंवर माधवसिंह और उनके वारिसोंके तअ़ल्लुक़ सिल्सिलहवार हमेशहके लिये रहेगा.

मक़ाम दिहली ता० २० फ़ेब्रुअरी सन् १८१८ ई०

दस्तख़त- सी० टी० मेट्काफ़.

महाराव राजा उम्मेदसिंह बहादुर.
राज राणा ज़ालिमसिंह.
महाराजा शिवदानसिंह.
फूलचन्द.
जीवणराम.

यादाश्त- इस ततिम्मह शर्तको हिज़् एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने मक़ाम

लखनऊमें तस्दीक़ किया. ता० ७ मार्च सन् १८१८ ई० को.

(दस्तख़त) जे० ऐडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

अह्दनामह नम्बर ५६.

गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलकी मुहरी और दस्तख़ती सनद,
कोटाके महाराव उम्मेदसिंहके नाम.

हाल और आगेको होनेवाले गवर्मेएट अंग्रेज़ीके कुल अह्लकार मालूम करें, गवर्मेएट अंग्रेज़ी और कोटाके महाराव उम्मेदसिंहके आपसमें, जो दोस्ती क़ाइम हुई है, और जो जो ख़िद्मतें गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी उसने की हैं, वे भी ज़ाहिर और साबित हैं, इस सबबसे उसके बदलेमें मोस्ट नोब्ल मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलने कप्तान टॉड साहिबके कहनेपर नीचे लिखे मक़ाम उक्त महारावको दिये; और शाहाबादका ख़िराज, जो दिल्लीमें तै पाये हुए अह्दनामह ता० २६ डिसेम्बर सन् १८१७ ई० के मुवाफ़िक़, महारावसे लिये जाने लाइक़ था, मुआफ़ किया गया. उसको महाराव और उसके वारिस व जानशीन हमेशह अपने ख़र्चमें लावें.

इस वास्ते महाराव अपनेको मालिक और हाकिम इन मक़ामोंका, और रअय्यतको अपना शरीक हाल जानकर अपना ताबेदार समझें. इसमें कोई दख़्ल नहीं करेगा.

पर्गनह डीग, पर्गनह पंच पहाड़, पर्गनह आहोर, पर्गनह गंगराड़. यह सनद मुहरी व दस्तख़ती गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलकी ता० २५ सेप्टेम्बर सन् १८१९ ई० को मिली.

नम्बर- २४.

महाराव किशोरसिंहके मुहरी व दस्तख़ती इक़ारनामहका तर्जमह,
मक़ाम नाथद्वारा, मिती मार्गशीर्ष कृष्ण १३.
मुताबिक़ ता० २२ नोवेम्बर सन १८२१ ई०.

मैं (महाराव किशोरसिंह) बहुत अफ़्सोस करता हूं, कि मैंने जो काम साल गुज़श्तहमें किया है, और ख़ासकर थोड़े अरसहसे, जिसका कारण मैं हुआ हूं, और उसी चालकी बुराइयोंसे भी ख़ूब वाक़िफ़ हुआ, चाहे वह बाबत गवर्मेंटके नेक

ख़याल या कोटा रियासतकी बिह्तरी या ख़ास अपनी ख़ुशी व बिह्तरीकी थी; और आजकी तारीख़ इन नीचे लिखी हुई शर्तोंपर अपनी मुहर व दस्तख़त करता हूं, जिसके मुवाफ़िक़ मैं आगेको काम करूंगा. इस मेरे धर्म कर्मका श्री नाथजी गवाह है. जो मैं इन शर्तोंसे फिरूं, तो आइन्दह गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी मिहर्बानीका हक्दार नहीं हूं.

(१)- जो कुछ गवर्मेंट अंग्रेज़ी हुक्म देगी, मैं ख़ुशीसे उसकी तामील करूंगा; और जो कुछ आप (कप्तान टॉड साहिब) की मारिफ़त मेरे लिये आगेके फ़ाइदे और मज्बूतीकी नसीहत होगी, उसमें कुछ उ़ज्र नहीं करूंगा.

(२)- दिह्लीके अह्दनामहके मुवाफ़िक़ मेरे नामसे और मेरे जानशीनोंके नामसे नानाजी ज़ालिमसिंह और उनके वारिस और जानशीन रियासतके कुल कामोंका इन्तिज़ाम, जैसे कि मेरे बाप राजा उम्मेदसिंहकी ज़िन्दगीमें करते थे, करेंगे; कुल कामों, मुल्की, माली, फ़ौजी, क़िले और बहाली बर्तरफ़ी अह्लकारोंकी बाबत उनको इख्तियार रहेगा, और मैं उसमें दख्ल नहीं दूंगा.

(३)- फ़सादी लोगोंको सज़ा दी गई, और मेरे बद सलाहकार लोग अलग कर दियेगये, या मैंने आपके हुक्मके मुवाफ़िक़ मौक़ूफ़ करदिये; वे ये थेः- गोवर्द्धनदास, सैफ़अली, महाराजा बलवन्तसिंह, क़ाज़ी मिर्ज़ा मुहम्मदअली, शैख़ हबीब वग़ैरह. ये और दूसरे, कि जिन्होंने मुझे गुमराह किया था, उन सबसे मैं हर्गिज़ आइन्दह किसी तरहका सरोकार नहीं रक्खूंगा.

(४)- मुझे जिस जिस तरहकी ख़ास सिपाह जिस जिस क़द्र रखनेकी इजाज़त दीजावेगी, उससे ज़ियादह लश्कर हर्गिज़ भरती करनेकी कोशिश नहीं करूंगा; और रियासती कामोंमें हर्ज करनेवाले और दख्ल देने वाले लोगोंको न अपने दर्बारमें रक्खूंगा, न उनसे किसी तरहका तअ़ल्लुक़ रक्खूंगा.

तफ्सील नम्बर- १.

तफ्सील रक़म मदद खर्च, जो हर महीनेके बीचमें कोटाके महाराव किशोरसिंहके गुज़ारेके लिये और उनके ख़ानगी मुलाज़िमों और सिपाह वग़ैरहके लिये मुन्तज़िम रियासत कोटा महारावको महा विद १ संवत् १८७८ मुताबिक़ ता० ८ जैन्युअरी सन् १८२२ ई० से दियाकरेंगे.

नम्बर.		माहवार.			सालानह.		
		रु०	आ०	पाई.	रु०	आ०	पा०
१	मन्दिर श्री व्रजराजजीका	४००-	०-	०	४८००-	०-	०
२	ख़ास पुण्यार्थ (ख़ैरात)	०-	०-	०	२२००-	०-	०
३	रसोई पन्द्रह रुपया रोज़	४५०-	०-	०	५४००-	०-	०

नम्बर		माहवार.	सालानह.
	ड्योढ़ी (महलके नौकरों) का ख़र्च-		
४	गहना.	०	१३०६- १ - १
५	राणियोंका ज़ेवर	०	१२०००- ० - ०
६	महारावजीके महलमें पहरनेको पोशाक और ख़ैरात	०	१८०००- ० - ०
७	जैब ख़र्च	२०००	२४०००- ० - ०
८	शागिर्द पेशह (गुलाम)	१०००	१२०००- ० - ०
९	फ़ोसला	०	६७१६- ८ - ०
१०	फ़ीलख़ानह	०	३२७६- ९ - ०
११	रथ, गाड़ी ज़नानी सवारी	०	१४०३- ५ - ६
१२	महाजान, और पालकीके कहार	०	१२३९- ० - ०
१३	महलका चौकी पहरा-		
	एक सौ सवार रु० २५ माहवार	२५००	३००००- ० - ०
	दो सौ पियादे मुताबिक़ तफ़्सील हिन्दी दो सूबहदार फ़ी नफ़र २० रुपये, दो जमादार फ़ी नफ़र १२रु०, निशानबर्दार ८, हवालदार ८, सिपाही फ़ी नफ़र ७रु०.	१४६५	१७५८०- ० - ०
१४	जहाइव यानी ऊंट ५	०	३१७- २ - ०
१५	रेगिस्तानके ऊंट ४	०	४८८- ७ - ९
१६	ईंधन याने लकड़ी वग़ैरह	०	७२०- ० - ०
१७	घास वग़ैरह	०	८५०- ० - ०
१८	रौशनाई, तेल, चराग़, सियाही वग़ैरह	०	१८००- ० - ०
१९	रंगाई कपड़े वग़ैरहकी	०	२०००- ० - ०
२०	अंबानत याने मरम्मत मकानात	२५०	३०००- ० - ०
२१	घोड़े, बैल, ऊंटकी ख़रीद तावे	०	६०००- ० - ०
२२	मरम्मत पर्दा, शतरंजी, क़ानात, डेरा वग़ैरह	०	१०००- ० - ०
२३	दवाख़ानह, दवा वग़ैरह ख़रीदमें	०	४००- ० - ०
२४	लौंडा ख़ानह	०	३००- ० - ०
	कुल ज़र सालियानह		१६४८७७-१०- ०

रु० आ० पा०

या ख़र्च माहवारी सिक्कह हाली कोटा १३७३९ - १२ - १०

(दस्तख़त) माधवसिंह.

तफ़्सील मदद ख़र्च, जो मुन्तज़िम रियासत कोटा, पृथ्वीसिंहके बेटे बापूलाल और उनके ख़ानदानको हर महीनेके बीचमें दियाकरेंगे- माह वदि १ संवत् १८७८, मुताबिक़ ता० ८ जैन्युअरी सन् १८२२ ई० से-

सालियानह कोटाका हाली रुपया	१८००० -० -०
या माहवारी	१५०० -० -०

(दस्तख़त-) माधवसिंह.

वे शर्तें, जो कप्तान टॉड साहिबने वास्ते रहनुमाई और पर्वरिश महाराव किशोरसिंह और उनके वारिसोंके तज्वीज़ कीं, और जिसपर कुंवर माधवसिंहने दस्तख़त किये :-

१ - महल व मकानात सैर व बाग़ात वाक़े शहर कोटा और गिर्द नवाह कोटा, याने शहरके महल, महलात उम्मेदगंज, रंगबाड़ी, जगपुरा व मुकुन्दरा; और बाग़ात जो ब्रजराजजी, गोपालनिवास और ब्रजबिलास नामसे मश्हूर हैं, ये सब महारावके क़ब्ज़हमें रहेंगे; इसमें इख़्तियार महारावका रहेगा; और कुछ दख़्ल मुल्कके बन्दोबस्त करने वालेका न रहेगा.

उन दीवारोंकी हद्दके अन्दर, जो महलोंके लिये शहरमें जुदा खिंची हुई हैं, अक्सर मकान हैं, कि जिनमें राज राणाका ख़ानदान और दूसरी औरतें रहती हैं, वहां पर, वह गली जो नये बुर्जसे खत्री दर्वाज़ेतक है, और जिस दर्वाज़ेको पानी दर्वाज़ा भी कहते हैं, बिल्कुल दोनोंका रास्तह जुदा करदेता है. पस लाज़िम है, कि दोनों तरफ़ वाले अपनी अपनी हद्दोंसे बाहर न जावें- पानी दर्वाज़ा दोनोंमें शामिल है, मगर सिवाय हथियार बन्द सिपाहियोंके पानी लेनेके वास्ते और कोई न जावे; और यह मुन्तज़िम रियासत सिवाय पचास चौकीदारानके वास्ते हिफ़ाज़त उन मक़ामात और कूचेके मुक़र्रर न करेगा.

२ - बन्दोबस्त वास्ते गुज़र औक़ात महाराव और उसके ख़ानदान वग़ैरहके बमूजिब तफ़्सील नम्बर १ के तादादी कोटा हाली रुपया एक लाख चौंसठ हज़ार आठ सौ सतहत्तर दस आना तीन पाई सालियानह, या मुब्लिग़ तेरह हज़ार सात सौ उन्तालीस रुपया बारह आना नौ पाई माहवारी दिया जावेगा, और यह रुपया हर आधा महीना गुज़रनेके बाद अमानतके तौरपर हर महीनेमें मारिफ़त

महाजन मुक़र्ररह राजराणाके दियाजावेगा; उसकी रसीद महाराव देकर एक नक़्ल उसकी वख़िद्मत साहिब एजेएट सर्कार अंग्रेज़ीके व तौर सनद रसीद रुपयोंके भेजेंगे-

ख़ास वाइस इस रुपयेके ख़र्चके, जिनका ज़िक्र तफ्सील नम्बर १ में लिखा है, कुल ज़ेर महाराव वतौर उनके ख़ानगी नौकरों वग़ैरहके और सिपाहियान चौकी पहरा महलात वग़ैरहके हैं.

(३)- महारावके ख़ानदानमें शादी या बालक पैदा होनेकी रस्म सब शान व शौकत मारिफ़त मुन्तज़िम रियासतके होगी, जैसे कि साबिक़ ज़मानहमें होती थी; और अगर महारावके वारिस पैदा होंगे, तो उनकी पर्वरिशके वास्ते जुदा बन्दोवस्त ख़र्चका रस्मके मूजिब मुनासिब कियाजावेगा.

(४)- महाराव और उनके ख़ानदानकी इज़्ज़त व हुर्मत साबिक़ दस्तूर जारी रहेगी, जैसे कि पहिले थी. महाराव वही रस्म त्योहार वग़ैरह जैसे दशहरा, जन्माष्टमी वग़ैरह हैं, अदा करेंगे, जो पहिले करते थे; और दान पुण्य भूरसी वग़ैरह पहिले मूजिब जारी रहेंगे.

(५)- जब महाराव हवाख़ोरी या शिकारको सवारी करेंगे, तो वही सब अलाभात राजकी उनके साथ रहेंगी, जो पहिलेसे उनके साथ रहती थीं; और अर्दलीके सिपाही साथ रहेंगे.

(६)- एक सौ सवार और दो सौ पियादे हस्ब तफ्सील मुन्दरजे नम्बर १ ऊपर लिखीहुई ख़ास चौकी और महलके जो पहरे वग़ैरहके वास्ते हैं, वे बिल्कुल ज़ेर हुक्म महारावके रहेंगे, और कोई उनमें मुदाख़लत नहीं करेगा, और उन सबका, जिनका ज़िक्र बनाम निहाद बाईस ख़र्च रक़म मदद ख़र्च व बसर औक़ातके दर्ज है, मिस्ल मुलाज़िमान ख़ानगी व महलात व दीगर मुतअ़ल्लिक़ान महलातके महाराव मालिक कुलका रहेगा.

(७)- बतौर मदद ख़र्च बापूलालजी वलद पृथ्वीसिंहके और उसके ख़ानदान और दूसरे वसीलह रखने वालोंके मुब्लिग़ अठारह हज़ार रुपया सालियानह, या पन्द्रह सौ रुपया हाली माहवारी मुक़र्रर हुआ है. यह रुपया जिस तरह और जिस वक़्त मदद ख़र्च महारावका अदा होगा, उसी तरह अदा होता रहेगा; और पहिली शादीके वक़्त उनको मुनासिब ख़र्च मुन्तज़िम रियासत देगा.

(८)- सिपाही या मुत्सद्दी, जिनको मुन्तज़िम रियासतने बर्ख़ास्त किया होगा, या जो उसकी नौकरी छोड़कर चले गये होंगे, उनको महाराव अपनी चाकरीमें न रक्खेंगे; और इसी तरह महारावके बर्ख़ास्त किये हुए या भागे हुए मुलाज़िमोंको मुन्तज़िम रियासत अपने पास नहीं रक्खेगा.

(९)- एक मोतबर आदमी साहिब एजेएट गवर्मेएटकी तरफ़से महारावके पास रहाकरेगा, और यह शख़्स आम किताबत या बातोंमें वकील रहेगा.

(१०)- जो क़र्ज़ह महारावने इस फ़सादके लिये लिया होगा, या वह इसके बाद लेगा, उसकी ज़िम्महवारी रियासतकी नहीं होगी.

मिती फागुन बदी १ संवत् १८७८ मुताबिक़ ता० ७ फ़ेब्रुअरी सन् १८२२ ई०.

यहां दस्तख़त माधवसिंहके इस इबारतसे हैं:- "जो कुछ लिखागया है, उसमें फ़र्क़ न होगा."

अह्दनामह नम्बर ५८.

अह्दनामह दर्मियान गवर्मेएट अंग्रेज़ी और महाराव रामसिंह कोटाके.

शर्त पहिली- कोटाके रियासती कामोंके इन्तिज़ाम छोड़नेके बाइस राज राणा मदनसिंहका हक़, जो मुवाफ़िक़ ततिम्मह शर्त अह्दनामह, जो दिह्लीमें हुआ, राज-राणा ज़ालिमसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंका था, महाराव रामसिंह उस शर्तके रद होजानेमें मंजूरी देते हैं.

शर्त दूसरी- गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी रज़ामन्दीसे महाराव इक़ार करते हैं, कि नीचे लिखी तफ़्सीलके मुवाफ़िक़ पर्गने राजराणा मदनसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंको दें.

शर्त तीसरी- महाराव और उनके वारिस और जानशीन नीचे लिखे पर्गनोंके हेर फेरमें, जो ज़ुरूरत हो, नीचे लिखी तफ़्सीलके मुवाफ़िक़ दूर करदेंगे :-

शर्त चौथी- महाराव अपनी और अपने वारिसों और जानशीनोंकी तरफ़से इक़ार करते हैं, कि मामूली ख़िराज, जो अब तक कोटाकी तरफ़से गवर्मेएट अंग्रेज़ीको दियाजाता है, देते रहेंगे; अलावह ८०००० कल्दार रुपयोंके, जिनकी बाबत गवर्मेएट अंग्रेज़ीने वादह किया है, कि वह राजराणा मदनसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंसे हर साल लेंगे; और पहिली सर्कारी क़िस्त संवत् १८९५ के शुरूसे राज-राणा अदा करेंगे, और जो सर्कारी आधी क़िस्त संवत् १८९४ की फ़स्ल रबीअ् (उन्हाली) की बाबत १३२३६० रुपया बाक़ी है, वह कोटाकी रियासतसे दिया जावेगा.

शर्त पांचवीं- महाराव अपने और अपने वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से इक़ार करते हैं, कि अगर गवर्मेएट अंग्रेज़ी ज़ुरूरत समझे, तो एक जंगी फ़ौज अंग्रेज़ी अफ़्सरोंकी

मातह्तीमें भरती करें; और यह बात क़रार पाचुकी है, कि यह फ़ौज किसी तरह महाराव व उनके वारिसों और जानशीनोंके रियासती कामोंके बन्दोबस्तकी ख्वादार या दस्ल देनेवाली न होगी.

शर्त छठी- इस फ़ौजका ख़र्च ३००००० रुपये सालानहसे ज़ियादह न होगा.

शर्त सातवीं- अगर यह फ़ौज नौकर रक्खी जायेगी, तो इसके ख़र्चका रुपया भी मुन्तज़िम रियासत, महाराव, और उसके वारिस और जानशीन गवर्मेएट अंग्रेज़ीको छः माहीकी दो क़िस्तोंमें ख़िराजके साथ जमा करेंगे; और पहिली क़िस्तकी मीआद गवर्मेएट अंग्रेज़ी मुक़र्रर करेगी.

शर्त आठवीं- यह बात मालूम रहनी चाहिये, कि दिह्लीमें तै पायेहुए अह्द-नामहकी शर्तें, जो गवर्मेएट अंग्रेज़ी और महाराज उम्मेदसिंह बहादुरके आपसमें ता० २६ डिसेम्बर सन् १८१७ ई० को क़रार पाई हैं, और जिनमें इस अह्दनामहकी शर्तोंसे कुछ फ़र्क़ नहीं आया है, क़ाइम और बहाल रहेंगी.

शर्त नवीं- इस अह्दनामहकी ऊपर लिखी शर्तें गवर्मेएट अंग्रेज़ी और महाराव रामसिंह राजा कोटाके आपसमें तै होकर उसपर दस्तख़त और मुहर कप्तान जॉन लडलो क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट और लेफ्टिनेएट कर्नेल नथेनिल आल्विस, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके एक तरफ़, और महाराव रामसिंहके दूसरी तरफ़ हुए. इसकी तस्दीक़ दो महीनेके अरसहमें राइट ऑनरेबल दि गवर्नर जेनरल बहादुर से होकर यह अह्दनामह आपसमें बदला जायेगा. मक़ाम कोटा, ता० १० एप्रिल सन् १८३८ ई०.

[ ] (दस्तख़त-) जे० लडलो,
क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट.

[मुहर महाराव रामसिंह.]

[ ] (दस्तख़त-) एन० आल्विस,
एजेएट गवर्नर जेनरल.

इस अह्दनामहके उन पर्गनोंकी तफ्सील, जो राजराणा मदनसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंके वास्ते अलह्दह होकर रियासत झालावाड़ नाम जुदा क़ाइम हुई.

चौहट.

सुकेत.

चौमहला, जिसमें पंचपहाड़, आहोर, डीग और गंगराड़ शामिल हैं.

झालरापाटन उर्फ़ उर्मल. रताय.

चेचट- जो हालमें इसी नामकी तह्सीलका सद्र है, अगले ज़मानहमें सखतावत राजपूतोंका था; लेकिन् कोटेके महाराव भीमसिंहने उनसे छीन लिया.

पंचपहाड़-यह एक तह्सीलका गांव है, जिसका नाम पांच पहाड़ियोंपर आबाद होनेके सबब पंचपहाड़ रक्खा गया, और इसी नामसे पर्गनह भी नामज़द कियागया. कहते हैं, कि पहिले पहल इसको पांडवोंने आबाद किया था, फिर उज्जैनके राजा विक्रमादित्यके क़ब्ज़हमें रहा, अक्बरके अ़ह्दमें रामपुराके ठाकुरने जागीरमें पाया, जिससे उदयपुरके महाराणा दूसरे संग्रामसिंहने छीनकर अपने भानजे जयपुर वाले राजा माधवसिंहको दिया; बाद उसके कुछ अ़रसह तक हुल्करके तह्तमें रहकर उससे लियाजाने बाद सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से ज़ालिमसिंहकी मारिफ़त कोटाके रईसको अ़ता हुआ. इस क़स्बहमें १००० घरोंकी बस्ती है. एक तालाबके किनारेपर जैन और विष्णुके दो मन्दिर हैं, बाहरकी तरफ़ एक मन्दिर माताजीका भी है, और हर एक मन्दिरमें प्रशस्ति लगीहुई है. इस पर्गनहके कुल ७७ गांवोंमेंसे, जिनका रक़बह १५७०६२ बीघा, १४ बिस्वा, और सालानह हासिल १६२३५३-३-० है, १६ गांव गैर आबाद, ५ धर्मार्पण या दानके, और ५६ खालिसहके हैं. ज़मींदार यहांके अक्सर सोंदिया लोग हैं.

आवर- पांच सौ वर्षका अ़रसह हुआ, कि मुहम्मदशाह खिल्जीके वक्तमें सखतावत राजपूतोंने इस पर्गनहको बसाया था. बाद उसके कई खानदानोंके क़ब्ज़हमें रहताहुआ हुल्करके हाथ लगकर कोटावाले रईसके तह्तमें आया, और अख़ीरमें झालावाड़के शामिल होगया. इस पर्गनहके मुतअ़ल्लिक़ ४२ गांव हैं, जिनमेंसे चौतीस खालिसहके और बाक़ी पुण्यार्थ वगैरहमें तक्सीम हैं. इन कुलका रक़बह ७५३७० बीघा, ३२.२ बिस्वा है. क़स्बहमें एक मन्दिर जैनका और मीरां साहिब नामी मुसल्मान पीरकी एक दर्गाह, दो मकाम पुराने ज़मानहके हैं.

दीग - अक्बरके ज़मानहमें इस पर्गनहको एक क्षत्रीने बसाया था, इससे पहिले अनोप शहर नामका एक क़दीम क़स्बह इसके आस पास होना बयान किया जाता है, लेकिन् उसका तह्क़ीक़ पता नहीं मिलता, कि वह किस जगह आबाद था. क़स्बह दीग अपनी आबादीके वक्तसे कई हिन्दू व मुसल्मान रईसोंके क़ब्ज़हमें रहता हुआ अख़ीरमें जशवन्तराव हुल्करके हाथ लगा, जिससे कोटाकी मुसाहबतके वक्त ज़ालिमसिंहने कई दूसरे गांवों समेत ठेकेमें लिया, लेकिन् झालावाड़ रियासत क़ाइम होनेपर मए तीन दूसरे मकामोंके मदनसिंह, अव्वल रईस झालावाड़को दियागया. इसके मुतअ़ल्लिक़ ८८ गांवोंमेंसे, जिनका रक़बह २६०३१४ बीघा, ३ बिस्वासे

ज़ियादह और कुल आमदनी सालानह १०२१३६-१-९ है, ख़ालिसहके ६९, जागीरके १०, गैर आबाद ७ और पुण्यार्थ जागीरके २ हैं. इस पर्गनेके पुराने मक़ामात यह हैं- कल्याणसागर तालाव, जिसको कल्याणसिंह चन्द्रावतने विक्रमी १६६३ [हि० १०१५ = ई० १६०६] में बनवाया था; इसके पासही ग़ाइबशाह व लाल हक्क़ानी मुसल्मान पीरोंकी दो दर्गाहें हैं. एक पक्का कुआ कोटावाले मीरांख़ांका विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में बनवाया हुआ मौजूद है, और मुसल्मानी अमल्दारीके वक्तमें बने हुए एक मक्बरेका खंडहर भी पड़ा है.

गंगराड़-यह क़स्बह इसी नामकी तह्सीलका सद्र मक़ाम, दर्याय कालीसिन्धके किनारेपर वाके है, पहिले इसका नाम 'गिरिगरन' था. अगर्चि इसके आबाद होनेका ज़मानह और बसानेवालेका नाम ठीक तौरपर दर्याफ्त नहीं हुआ, लेकिन् दन्त कथासे पायाजाता है, कि कैरव राजपूतोंने इसे अपने गुरु गर्गचर्ग (गर्गाचार्य) को जागीरमें दिया था. फिर किस किसके क़ब्ज़हमें रहा सो मालूम नहीं, लेकिन् शाहजहां बादशाहके अह्दसे दयालदास झाला और उसकी औलादके क़ब्ज़हमें रहा, जिनसे छीनकर कोटामें मिलाया गया. अब दयालदासकी औलादकी जागीरमें कुंडला इसी रियासतमें है, इस पर्गनेका और हाल दूसरे पर्गनोंका सा ही है. पर्गनहके गांवोंकी तादाद १३७ है, जिसमेंसे ख़ालिसहके ९७, जागीर में २०, गैर आबाद १६ और धर्म सम्बन्धी जागीरमें ४ हैं. कुल पर्गनहकी आमदनी १०७१७८ रुपया है. यहांके पुराने मकामात, एक तालाव, और एक मकान हैं. तालाबके किनारेपर उन चन्द राणियोंके चौरे मए पत्थरमें खुदी हुई प्रशस्तियोंके मौजूद हैं, जो अगले ज़मानहमें सती हुई थीं. नदीके किनारे एक बहुत पुराना मकान है, जिसमें अब राज्यकी कचहरी और दफ्तर है. मालूम होता है, कि पहिले इस शहरमें जौहरी लोगोंकी दूकानें थीं, क्योंकि अबतक इसके आस पास क़ीमती छोटे छोटे लाल नग पाये जाते हैं.

राटादेई-यह झालावाड़ छावनीसे १४ मील पूर्व हाड़ौती और झालावाड़के बीचके पहाड़ी सिल्सिलेपर एक भीलोंकी पाल या बस्ती है. पास वाले एक छोटे मन्दिरसे इसका नाम रक्खा गया है; और 'मानसरोवर' नामके एक खूबसूरत तालाबके पूर्वी किनारेपर बसा है. मुकुन्दरा, गंगराड़, और मनोहरथानह जिस तराईमें आबाद हैं, वही यहां तक चली आई है, जो इस मक़ामपर ६ या ७ सौ गज़ चौड़ी है, और जिसपर आर पार पाल बांधकर यह सरोवर बनालिया गया है. पूर्वी, उत्तरी, और पश्चिमी किनारे इस झीलके पानीके क़रीब तक गुंजान दरख़्तों और करोंदोंकी झाड़ीसे खूबसूरत मालूम होते हैं. यहांपर बाघ व चीतोंके हमेशह पायेजानेसे रियासतके रईस अक्सर शिकारको आते हैं. बयान कियाजाता है, कि क़दीम ज़मानहमें इस झीलके दक्षिणी नशेबपर श्रीनगर नामका एक क़स्बह बड़ी दूर तक आबाद था,

जिसके चिन्ह सिवाय तीन मन्दिरों और कईएक खंडहरोंके कुछ भी दिखलाई नहीं देते, लेकिन् दूर दूरतक घड़ेहुए पत्थर पड़े पायेजानेसे मालूम होता है, कि यह क़स्बह बड़ी दूरतक आबाद था. किसी किसी जगह गली कूचे भी नज़र आते हैं; दक्षिण पश्चिमी किनारेपर भीलोंने एक गांव गरगज नामका बसाया है. सबसे बड़ा मन्दिर महादेवका है, जिसको एक ग्वालने बनवाया था. झीलके दक्षिण तरफ़के खंडहरकी प्रशस्तिसे मालूम होता है, कि यह वैष्णवका मन्दिर है, जिसको शाह दमोदरशाहने विक्रमी १४१६ कार्तिक कृष्ण १ [हि० ७६० ता० १५ ज़िल्क़ाद = .ई० १३५९ ता० ९ ऑक्टोबर] को बनवाया था. कहते हैं, कि यह क़स्बह खीची राजका एक मुख्य स्थान था, जिस राज्यकी राजधानी पहिले मऊ थी. झीलकी पाल बहुत लम्बी चौड़ी है, और उसपर बहुतसी छत्रियां पुराने ज़मानेकी बनीहुई करौंदोंकी झाड़ीके अन्दर ढकीहुई हैं. हर एक चबूतरे और छत्रीपर राजाओं और सतियोंकी मूर्तियां मए उनके नाम और उनकी वफ़ातके साल संवत्के मौजूद हैं. इन छत्रियोंपरके कई एक लेख अजमेर मेरवाड़ा गज़ेटिअरकी तीसरी जिल्दमें दर्ज हैं. झीलके पश्चिम दो मीलके फ़ासिलेपर, जहांसे एक नदी चटानको काटकर निकली है, उसके उत्तर मैदानाके महलका खंडहर है, जो खीची राजपूतोंका एक बड़ा स्थान था, और जिसका बड़ा हिस्सह अबतक ऊंची टेकरी व पुराने गढ़के खंडहरके रास्तहके सिरेपर है. महलके नीचे मैदाना नामका एक क़स्बह वाक़े होना बयान कियाजाता है; तीन मन्दिर, एक छत्री और कई चबूतरे वगैरह वहां बनेहुए हैं. इस जगहसे वह नदी एक उजाड़ घाटी, और दक्षिणी मगरियोंमें एक लम्बी नालके दर्मियानसे गुज़रकर, जिसके उत्तर रुख़ एक बड़ा वीरान और भयानक जंगल है, मऊ मक़ामके मैदानमें दाख़िल होती है. तमाम मगरियोंमें घाटीरावकी बहादुरानह कार्रवाईके मुतअ़ल्लिक़ कई कहांनियें मश्हूर हैं. खीची महाराव क़दीम ज़मानहका एक बड़ा बहादुर शख़्स था.

कदीला- राटादेई और मान सरोवरसे दो मील पूर्व और उसी घाटीमें एक बड़ी झील है, जिसकी लम्बाई २५० गज़ और चौड़ाई १०० गज़के क़रीब है. इसकी निस्बत बयान किया जाता है, कि यह मान सरोवरसे भी ज़ियादह प्राचीन है, जिसको मऊके कदीला नामी किसी राजा या बनियेने नालमें पानीके निकासको रोककर बनवाया था. कदीलाके पश्चिम तरफ़ रंगपट्टन नामका एक प्राचीन नग्र था, लेकिन् अब उसका कोई चिन्ह नहीं पाया जाता. इसके राजाका नाम लाखा, और राणीका नाम शोडी था. कहते हैं, कि एक दिन राजा और राणी दोनों भोला नामी एक डोम (ढोली) का गाना सुन रहे थे. राजाने खुश

होकर डोमको कहा, कि मांग, जो कुछ तू मांगेगा, पावेगा. इसपर राणीने उस डोमको अपने गलेका एक बेशक़ीमती हार मांगनेके लिये अपने गलेकी तरफ़ इशारह किया. जिस वक़ राणीने महल्के भरोखेसे यह इशारह डोमको किया, और राजाको नीचे बैठेहुए उसके सामने रक्खेहुए काचमें अक्स पड़नेके सबब राणीकी यह हरकत देखनेसे शुबहा पैदा होगया, कि राणीने इस डोमको अपने मांगे जानेके लिये इशारह किया है. इसपर राजाने ना खुश होकर राणीको डोमके हवाले करदिया; पर उसने सच्चे ख़िदमतगार की तरह राणीकी ख़िदमत की. बाद एक अरसेके सिर्फ़ एकही मर्तबह राजा व राणीकी मुलाक़ात हुई, उसी वक़ दोनों पत्थरके होगये. उस समयकी एक कच्ची छत्री दोनों की वहांपर मौजूद है. उक्त राणी बड़ी पतिभक्त थी, जिसकी एक छत्री कदीलाकी पालपर बनवाईगई थी, लेकिन् इस वक़ वह मौजूद नहीं है.

मज़्हबी मक़ामात व तीर्थ— झालरापाटनके मुख्य मन्दिरोंकी निस्बत लोग ऐसा बयान करते हैं, कि जिस वक़ यह नया शहर (राजधानी) बनरहा था, उस समय गंगाराम नामी एक लोहारको अपने मकानकी तामीरके दिनोंमें एक ख़्वाब नज़र आया, जिसमें उसे यह मालूम हुआ, कि इस मक़ामपर ज़मीनमें चार मूर्तियां निकलेंगी. उसने ख़्वाबके इशारेके मुवाफ़िक़ ज़मीनको खोदा, तो अन्दरसे पत्थरका एक सन्दूक़ निकला, जिसमें द्वारिकानाथ, रामनिक, गोपीनाथ और सन्तनाथकी चार मुर्तियां थीं. इस बातकी ख़बर कोटेमें ज़ालिमसिंहके पास पहुंची; वह यह सुनकर फ़ौरन् झालरापाटनमें आया, और चारों मुर्तियोंपर एक बालकके हाथसे चार हिन्दू धर्म मार्गकी चिट्ठियां रखवाईं, जिसपर यह सिद्धान्त निकला, कि द्वारिकानाथने वल्लभ कुल, रामनिकने विष्णु मार्ग, सन्तनाथने जैनमत पसन्द किया, और उसीके मुताबिक़ मन्दिर बनवाये जाकर पूजा प्रतिष्ठा की गई; ये मन्दिर राजधानीमें मौजूद हैं. गोपीनाथको कोई मार्ग पसन्द नहीं आया, इसलिये उनका कोई मन्दिर नहीं बनाया गया.

चन्द्रभागा (१) नदीकी बाबत ऐसा बयान कियाजाता है, कि एक राजा

---

(१) इसके किनारेपर कई पुराने मन्दिरोंके और क़दीम राजधानी झालरापाटनके खंडहर पाये जाते हैं. एक बयान यह है, कि राजा हूणने यह शहर आबाद किया था; और दूसरा यह भी बयान है, कि राजा भीम पांडवने इस शहरकी बुन्याद डाली थी; और तीसरा बयान यह है, कि राजपूत जैतूने, जिसको पत्थर खोदते वक़ पारस हाथ लगा था, इस शहरको बसाया.

जिसको कोढ़की बीमारी थी, एक रोज़ शिकार खेलनेके समय किसी चितकबरे सूअरका पीछा करता हुआ उस मक़ामपर पहुंचा, जहांसे कि यह नदी बहती है; पास ही एक तलाईमें कुछ पानी भरा था, वह सूअर अपनी जान बचानेके लिये तलाईमें कूदगया और तैरकर दूसरे किनारेपर पहुंचा, तो रंग उसका बिल्कुल सियाह होगया. राजाने जब यह हाल देखा, तो ख़ुद भी उस पानीमें कोढ़ मिटजानेके ख़यालसे नहाया; नहाते ही बीमारीका निशान तक बाक़ी न रहा; उसी समयसे वह मक़ाम तीर्थ माना गया, जहां हर साल कार्तिक महीनेमें एक हफ़्तह तक दूर दूरके यात्रियोंकी भीड़ जमा रहती है, मेलेमें गाय, बैल, भैंस और पीतल तांबेके बर्तन वग़ैरह चीज़ें सौदागर लोग बेचनेको लाते हैं.

वैशाख महीनेमें पाटन तालाबके किनारे एक दूसरा बड़ा मेला होता है, जिसमें हाड़ौती व क़रीबवाली रियासतोंके ज़मींदार वग़ैरह आते हैं; यहां भी मवेशीकी ख़रीद व फ़रोख़्त होती है. मनोहर थानहमें फाल्गुन महीनेमें शिव-रात्रिका बड़ा मेला १५ दिनतक रहता है, जिसमें हज़ारहा यात्री आस पासके जमा होते हैं, मवेशी, बर्तन व कपड़ा वग़ैरह बिकता है. कैलवाड़ा वाक़े पर्गनह शाहाबादमें १५ रोज़तक एक बड़ा भारी मेला लगता है, यात्री लोग तपतकुंड सीताबारीमें स्नान करते हैं, और ज़िराअ़तके मुतअ़ल्लिक़ औज़ारों तथा बैलोंकी यहां सौदा-गरी होती है.

आमदो रफ़्तके रास्ते - रियासतके ख़ास ख़ास रास्ते व सड़कें ये हैं :-

१ छावनीसे झालरापाटन तक सड़क, २ छावनीसे कोटे तक सड़क, ३ आगरा और बम्बईकी शाह राह दक्षिण पूर्वको, और दक्षिणमें आगरा व इन्दौरका रास्तह, दक्षिण पश्चिम उज्जैनको, पश्चिम तरफ़ नीमचको, और उत्तर पश्चिम कोटाको, जिस तरफ़ नई सड़क जावेगी.

तारीख़.

झालरापाटनवाले अपना निकास गुजरातके इलाक़े हलवदसे बतलाते हैं, जो इस समय हलवदकी राजधानी ध्रांगधरामें है. राजपूतानह गज़ेटिअरमें, जो पीढ़ियां ध्रांगधराकी लिखी हैं, उनमें नाम लिखनेमें फेर फार मालूम होता है, इस वास्ते हम

बम्बई गज़ेटिअर जिल्द ८ के पृष्ठ ४२० से चुनकर लिखते हैं, जो हलवदके राज्य वंशी और बड़वा भाटोंसे दर्याफ़्त करके लिखागया है.

यह झाला क़ौमके राजपूत, जो पहिले मकवाना कहलाते थे, अपनी पैदाइश मार्कण्डेय ऋषीसे बतलाते हैं, और कान्तिपुरमें जो थलमें पारकर नगरके पास है, आबाद हुए.

पहिला राजा व्यासदेवका बेटा केसरदेव १ हुआ, जो सिन्धके राजा हमीर सूमरासे लड़कर मारा गया. उसका बेटा २ हरपालदेव मकवाना, पाटणके राजा करण सोलंखीके पास जा रहा; उस सोलंखी राजाने हरपालको २३०० गांवोंका राज्य दिया और हरपालने पाटड़ीमें अपनी राजधानी बनाई. एक दिन मस्त हाथी छूटगया, और हरपालदेवके लड़कोंपर, जो खेल रहे थे, हमलह किया, तब उस राजाकी राणीने उन्हें झाल (हाथमें उठा) कर बचालिया, जिससे उन तीनों लड़कोंकी औलाद झाला कहलाई. उस समय एक चारण भी खड़ा था, जिसे टप्पर (धक्का) देकर बचाया, जिसकी औलादके टापरया चारण कहलाये, जो झाला राजपूतोंकी पौलपर अबतक नेग पाते हैं. हरपालदेवके तीन बेटे थे, बड़ा सोढ़देव, जो पाटड़ीमें गद्दीपर बैठा, दूसरा मांगू, जो जावूमें रहा और जिसकी औलाद अब लीमड़ीमें है; तीसरा शेखराज, जिसकी सन्तान सचाणा और चोर बड़ोदरामें रही. हरपाल-देवकी वह राणी, जिसको शक्तिका अवतार बतलाते हैं, झाला लोग उसकी अबतक पूजा करते हैं.

सोढ़देवका पुत्र ४ दुर्जनशाल गद्दीपर बैठा. उसके बाद ५ जालकदेव (१), उसके बाद ६ अर्जुनसिंह, जिसको द्वारिकादास भी कहते हैं, फिर ७ देवराज, इसका पुत्र ८ दूदा, इसका सूरसिंह, उसका ९ सांतल, जिसने उत्तरी गुजरातमें सांतलपुर आबाद करके अपने छोटे बेटे सूरजमल्लको दिया. यह सांतल लड़ाईमें मारागया. उसके १० विजयपाल, उसका ११ मेघपाल, उसका १२ पद्मसिंह, उसका १३ उदयसिंह, जिसके २ बेटे थे, बड़ा पृथ्वीराज, और छोटा बेगड़. बड़े भाईने छोटे भाईको राज देदिया, और आप थलेमें जा रहा, जिसकी औलादवाले थलेचा झाला कहलाते हैं.

१४ बेगड़ गद्दीपर बैठा, इसने हलवदके पास बेगड़वाव गांव आबाद किया. इसका बेटा १५ रामसिंह हुआ. इसने ध्रांगधराके इलाक़हमें रामपुर

(१) गुजरात राजस्थानमें जाकलदेव लिखा है.

गांव बसाया. उसके बाद १६ वीरसिंह, उसका १७ रणमलसिंह, उसका १८ शत्रुशाल. इसने मांडलमें अपनी राजधानी बनाई. इसका दूसरा नाम सुल्तान है. इसने सुल्तानपुर भी बसाया. वह गुजरातके बादशाह अह्मदशाहसे तीन दफ़ा लड़ा, परन्तु शिकस्त खाई. इनके १२ बेटे थे, जिनमें बड़ा, १९ जैतसिंह, अपने बापकी गद्दीपर बैठा; २ राघवदेव मालवाके बादशाहके पास जारहा, और जागीर मिली, अब उसकी औलाद उज्जैनके पास नर्वरमें है; ३ लाखा, ४ दूदा, ५ प्रतापसिंह, ६ जयमल्ल, ७ मेपा, ८ कान्हा, ९ गजण, १० सारंग, ११ वीरसिंह, १२ देशल.

१९ जैतसिंहको गुजरातके बादशाहोंने पाटड़ीसे निकाल दिया, और वह कुआमें जारहे. इसके बाद २० बनवीर गद्दीपर बैठा, जिसका दूसरा भाई जगमल्ल, ३ मूला, ४ पचायण, ५ मेघराज, ६ श्याम था. बनवीरके ६ बेटे हुए, २१ भीमसिंह गद्दीपर बैठा, दूसरा अज्जा, ३ रामसिंह, ४ प्रतापसिंह, ५ पुंजा, ६ लाखा. भीमसिंहके बाद उसका बेटा २२ बाघसिंह गद्दीपर बैठा, यह गुजरातके बादशाहसे लड़कर मारागया. बाघसिंहके बारह लड़के थे, जिनमेंसे पहिले छ: १ नाया, २ महपा, ३ संग्राम, ४ जोधा, ५ अज्जा, ६ रामसिंह तो अपने बापके साथ मारेगये, और एकको मुसल्मान थानहदारोंने मारडाला, जिसका नाम ७ बीरमदेव था, ८ राजधर अपने बापका क्रमानुयायी बना; ९ लाखा, १० सुल्तान, ११ विजयराज, और १२ जगमाल था. बाघसिंहके बाद २३ राजधर गद्दीपर बैठा, जिसने विक्रमी १५४४ माघ कृष्ण १३ [हि० ८९३ ता० २७ मुहर्रम = ई० १४८८ ता० १३ जैन्युअरी] को हलवद शहर आबाद करके उसको अपनी राजधानी बनाया. राजधरके तीन बेटे, १ अज्जा, २ सज्जा और ३ राणू हुए.

राजधर विक्रमी १५५६ [हि० ९०४ = ई० १५००] में मरगया. अज्जा और सज्जा अपने बापको जलानेके लिये गये, पीछेसे राणू गद्दीपर बैठगया, इसपर अज्जा और सज्जा दोनों सुल्तान गुजरातकी मदद लेनेको गये, लेकिन् राणूने नज़ानह देकर मुसल्मानोंको खुश करलिया, तब अज्जा व सज्जा वहांसे निकलकर कुछ दिन जोधपुर रहे और पीछे चित्तौड़में पहुंचे. यह अज्जा, महाराणा सांगा और बाबर बादशाहकी लड़ाईके समय विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२७] में बड़ी बहादुरीके साथ मारागया, जिसकी औलाद मेवाड़के उमरावोंमें सादड़ीके राजराणा हैं. दूसरा सज्जा जो बहादुरशाह गुजरातीके हमलेमें चित्तौड़पर मारागया, उसकी औलादमें गोगूंदा और देलवाड़ाके राजराणा हैं.

२४ राणू हलवदका मालिक रहा. जिसके बाद २५ मानसिंह गद्दीपर बैठा.

सुल्तान बहादुरशाहने मानसिंहसे हलवद छीन लिया था, लेकिन् फिर बादशाहने कुछ इलाक़ह और हलवद उसको देदिया. मानसिंहके बाद उसका बेटा २६ रायसिंह गादी बैठा. इसके पीछे २७ चन्द्रसिंह राज्यका मालिक हुआ; इसके छः बेटे थे १ पृथ्वीराज, २ आशकरण, ३ अमरसिंह, ४ अभयसिंह, ५ रामसिंह, और ६ राणू. पृथ्वीराज अपने बापसे बाग़ी होगया था, और उसने बादशाही ख़ज़ानह भी लूटलिया था, इस सबबसे वह अहमदाबादमें क़ैद होकर उसी हालतमें मरगया. दूसरा आशकरण चन्द्रसेनके बाद विक्रमी १६८४ [हि० १०३७ = ई० १६२८] में हलवदकी गद्दीपर बैठगया. २८ पृथ्वीराजके दो बेटे हुए, १ सुल्तान, २ राजू; इनमेंसे सुल्तानने, तो वांकानेरका इलाक़ह अपने क़ब्ज़हमें किया, और दूसरे राजूने वढ़वानका ठिकाना लिया. २९ राजूके तीन बेटे थे, १ सबलसिंह, २ उदयसिंह, और ३ भावसिंह, राजू वढ़वानकी गद्दीपर विक्रमी १७०० [हि० १०५३ = ई० १६४३] में मरगया.

राजूका तीसरा बेटा ३० भावसिंह, जो बचपनसे ही ईडरमें आरहा था, उसकी शादी सावर (१) में हुई. भावसिंहका बेटा ३१ माधवसिंह अपनी ननिहाल सावरमें पर्वरिश पाकर होश्यार हुआ था. माधवसिंहकी ताक़त देखकर सावरके ख़ानदानको ख़ौफ़ हुआ, कि ऐसा न हो, जो हमारा ठिकाना छीन लेवें; इस सन्देहको दूर करनेके लिये माधवसिंह पच्चीस सवार लेकर महाराव भीमसिंहके पास कोटे गया; भीमसिंह उस वक़्त अच्छे अच्छे राजपूतोंको एकट्ठा कर रहा था, क्योंकि वह सय्यद अब्दुल्लाह और हुसैनअ़लीका मददगार होकर निज़ामुल्मुल्क फ़त्ह जंगपर चढ़ाई करनेका इरादह रखता था. उसने माधवसिंहको अपना फ़ौज्दार बनाया और उसकी बेटीके साथ अपने बेटे अर्जुनसिंहकी शादी करके नांनता गांव जागीरमें दिया, जो कोटाके क़रीब है.

माधवसिंहके बाद उसका बेटा ३२ मदनसिंह भी अपने बापकी जगह कोटेका फ़ौज्दार और नांनतेका जागीरदार रहा. इनके दो बेटे १ हिम्मतसिंह, और २ पृथ्वीसिंह थे. पृथ्वीसिंहके दो बेटे हुए शिवसिंह, और ज़ालिमसिंह. मदनसिंहके बाद ३३ हिम्मतसिंह बापकी जगह क़ाइम हुआ, जिसने चन्द मारिकोंमें अच्छी अच्छी कारगुज़ारी ज़ाहिर की और जयपुरकी फ़ौजका मुक़ाबलह कोटेकी तरफ़से करनेके सिवा वह

---

(१) सावरकी बाबत बम्बई गज़ेटिअर वग़ैरहमें मालवाके इलाक़हमें होना लिखा है, वह दुरुस्त नहीं है. यह एक ठिकाना (सावर) अजमेर इलाक़हमें सीसोदिया शक्तावत राजपूतोंका मेवाड़की पूर्वोत्तरी सीमापर है.

अह्दनामह क़ाइम किया, जिसके बमूजिब यह रियासत मरहटोंकी ख़िराज गुज़ार हुई, और क़दीम ख़ानदानको नये सिरसे मस्नद हासिल करनेका मौक़ा मिला. हिम्मत-सिंहके कोई औलाद न होनेके कारण उसके बाद पृथ्वीसिंहका छोटा बेटा ३४ ज़ालिमसिंह क्रमानुयायी बना.

विक्रमी १८१७ [हि० ११७३ = ई० १७६०] में जयपुरके महाराजा माधवसिंह अव्वलने कोटापर फ़ौज भेजी, तब ज़ालिमसिंहने जयपुरके मददगार मरह-टोंको अपनी अक़्मन्दीसे रोका, जिससे भटवाड़ाके क़रीब कोटाकी फ़ौजने जयपुरकी फ़ौजपर फ़त्ह पाई. इस फ़त्हके होनेसे ज़ालिमसिंहकी बड़ी क़द्र हुई, और वह कोटाकी रियासतका बिल्कुल मुसाहिब बनगया. यह बात हाड़ा राजपूतोंको नागुवार हुई, तब उन्होंने महाराव गुमानसिंहको वर्ग़लाकर काममें ख़लल डाला. ज़ालिमसिंहने ऐसा बे इख़्तियारीके साथ काम करनेसे इन्कार किया; तब महारावने उससे मुसाहिबीका काम और नांनताकी जागीर छीनली. ज़ालिमसिंह कोटेसे निकलकर उदयपुर आया, उन दिनोंमें मेवाड़के सर्दारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे महाराणा अरिसिंहको गद्दीसे ख़ारिज करनेके लिये रत्नसिंह नाम दूसरा बनावटी महाराणा खड़ा कियागया था. ज़ालिमसिंहका उस वक़्में आना बहुत मुफ़ीद हुआ, याने महाराणाने ज़ालिमसिंहको आते ही गांव चीताखेड़ा जागीरमें देकर अपने सलाह-कारोंमें शामिल किया. आख़िरकार विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = ई० १७६८] में महाराणा अरिसिंहने मरहटोंसे मुक़ाबलह करनेके लिये उज्जैनकी तरफ़ फ़ौज भेजी, और मेवाड़के बहुतसे सर्दार इस मुक़ाबलहमें मारे गये. ज़ालिमसिंह मरहटोंकी क़ैदमें पड़ा, और वह अंबाजी एंगलियाके बाप त्र्यम्बकरावकी सुपुर्दगीमें रहा. (इस लड़ाईका मुफ़स्सल हाल मौक़ेपर लिखा जायेगा). फिर ज़ालिमसिंह कुछ अरसह बाद पंडित लालाजी बल्लालके साथ कोटाको गया, महाराव गुमानसिंहने अगला कुसूर मुआफ़ करके उसको अपने पास रखलिया, क्योंकि ज़ालिमसिंहके चले जाने बाद इस रियासतका काम अब्तर होगया था.

इसी अरसहमें मलहार राव हुल्करका हमलह कोटाके मुल्कपर हुआ, जिसमें कई हाड़े राजपूत बड़ी बहादुरीके साथ मारेगये. ज़ालिमसिंहने अक़्मन्दीसे ६००००० रुपया देना करके मरहटोंको पीछा लौटा दिया. इस बातसे महाराव गुमानसिंहने दोबारह ज़ालिमसिंहका इख़्तियार बढ़ादिया, और कुछ अरसह बाद गुमानसिंह ज़ियादह बीमार हुआ, तब अपने पुत्र उम्मेदसिंहको, जो नाबा-लिग़ था, ज़ालिमसिंहके सुपुर्द करके परलोकको सिधार गया. उम्मेदसिंह कोटाकी

गद्दीपर बैठा, इस वक़्से लेकर पचास वर्ष बादतक ज़ालिमसिंहने कोटाकी रियासतको बड़ी अ़क्लमन्दीके साथ मरहटा लोगोंसे बचाया, और राज्यको बढ़ाया, व आबाद किया, जिसका हाल कोटाकी तवारीख़में लिखा गया है.

विक्रमी १८७४ माघ शुक्ल १४ [हि० १२३३ ता० १३ रबीउ़स्सानी = ई० १८१८ ता० २० फ़ेब्रुअरी] में गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ कोटाकी रियासतका अ़हृदनामह हुआ, जिसमें एक शर्त यह लिखीगई, कि कोटाकी गद्दीके मुख़्तार महाराव और इन्तिज़ाम कुल रियासतका ज़ालिमसिंहकी औलादके हाथमें रहे. इस शर्तपर महाराव उम्मेदसिंहके बाद उनका क्रमानुयायी किशोरसिंह बख़िलाफ़ चलने लगा, और वह कोटासे निकलकर ज़ालिमसिंहको निकाल देनेके लिये एक फ़ौज लेकर चढ़ आया; लेकिन् गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी वज़ीरकी मददगार थी, इस सबबसे मौज़े मांगरोलके पास महारावने शिकस्त पाई, और नाथद्वारेमें जाकर पनाह ली. फिर महाराणा भीमसिंहकी सिफ़ारिशसे गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने महारावको कोटेपर दोबारह क़ाइम किया. विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] में राजराणा ज़ालिमसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और अ़हृदनामहकी शर्तके मुवाफ़िक़ उनका पुत्र ३५ राज राणा माधवसिंह मुसाहिब बना. यह अपने बापके साम्हनेसे ही कोटाकी कुल रियासतका इन्तिज़ाम करता रहा था, लेकिन् पिछली जो नाराज़गी महारावसे हुई, उसमें ज़ालिमसिंहने इस (माधवसिंह) को बहुत झिड़कियां दीं; और कहा, कि यह सब फ़साद तेरी बद आ़दतोंके कारण हुआ है. इस शर्मिन्दगीसे माधवसिंह अपनी ज़िन्दगी भर महाराव कोटाके साथ बड़ी नर्मीसे पेश आता रहा. आख़िरकार विक्रमी १८९० माघ [हिज्री १२४९ शव्वाल = ई० १८३४ फ़ेब्रुअरी] में उसका इन्तिक़ाल होगया, तब उसका बेटा ३६ राज राणा मदनसिंह कोटेकी रियासतका मुसाहिब बना.

३६- महाराज राणा मदनसिंह- १.

मदनसिंहके वक़्में फिर महाराव रामसिंहसे अ़दावती छेड़ छाड़ होने लगी, और क़रीब था, कि कुछ फ़सादकी बुन्याद क़ाइम हो, लेकिन् गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी मांगरोल की लड़ाईको नहीं भूली थी; महाराव और उनके मुसाहिबकी ना इत्तिफ़ाक़ीको बिल्कुल मिटानेका इरादह करलिया, और विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में यह फ़ैसलह क़रार पाया, कि जो पर्गनात ज़ालिमसिंहने अपनी बुद्धिमानीसे कोटामें

मिला लिये, उतनी आमदनी ज़ालिमसिंहकी औलादको देकर अलहदह कर दिया जावे; और इसी तरह हुआ, याने बारह लाख रुपया सालानहका मुल्क हस्ब तफ्सील, मुन्दरजे अह्दनामह राजराणा मदनसिंहके तह्तमें आया, और जुदा रईस क़रार पाकर पन्द्रह तोपकी सलामी और 'महाराज राणा' ख़िताबसे इज़्ज़त पाई, और झालरापाटन राजधानी मुक़र्रर हुई. उनका रुत्बह व मर्तबह वही मुक़र्रर किया-गया, जो राजपूतानहके दूसरे रईसोंका है; सिवा इसके यह भी क़रार पाया, कि अगर दूसरे रईसोंको गोद लेनेका हक़ अता हो, तो उनको भी दियाजावे, मगर विरासतके क़ाइदेके मुवाफ़िक़ सिर्फ़ ज़ालिमसिंहके ख़ानदानमें महदूद रहे. विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में महाराज राणा मदनसिंहका इन्तिक़ाल होनेपर उनकी जगह ३७ महाराज राणा पृथ्वीसिंह झालरापाटनमें गद्दीपर बैठकर झालावाड़का मालिक बना.

३७ - महाराज राणा पृथ्वीसिंह - २.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के गद्रमें यह महाराज राणा अंग्रेज़ लोगोंको, जो उनके मुल्कमें पनाहकी ग़रज़से आये, हिफ़ाज़तके साथ अपने पास रखने बाद ख़ैर व आफ़ियतसे अम्नकी जगहोंमें पहुंचाकर सर्कार अंग्रेज़ीके दिली ख़ैरख़्वाह बने. गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने इस ख़ैरख़्वाहीके एवज़ उनकी बड़ी तारीफ़ की, जिसकी बाबत कप्तान ब्रुस साहिबने भी महाराज राणाकी बहुत कुछ तारीफ़ की है, कि झालावाड़की रियासत हाड़ौतीकी तमाम रियासतोंसे बिह्तर और यहांके रईस सर्कार अंग्रेज़ीके ख़ैरख़्वाह व दिली फ़र्मांबर्दार हैं. अलबत्तह किसी क़द्र फ़ुज़ूल ख़र्च होनेके सबब क़र्ज़दार हैं, मगर क़र्ज़हकी शिकायत नहीं है; तमाम साहूकार लोग उनका पूरा एतिबार रखते हैं, और महाराज राणाका भी इरादह इस क़िस्मकी बातोंके इन्तिज़ामकी तरफ़ रुजू है. दो साल गुज़श्तहमें जो सलाहें उनको दीगई, वह भी उन्होंने मन्ज़ूर कीं; अंग्रेज़ी छावनीको जानेवाले अनाजका महसूल मुआफ़ करदिया, और बसूरत तय्यारी रेलकी सड़कके उसके वास्ते इलाक़ह मेंसे ज़मीन देना फ़ौरन् मन्ज़ूर करलिया. गद्रके दूसरे साल नाना राव पेश्वा बाग़ी मेवाड़में नाथद्वारा होकर मेवाड़के पूर्वी हिस्सहमें भागता दौड़ता झालरापाटन पहुंचा, और वहांपर छावनीको घेरकर महाराज राणाको भी क़ैद करलिया, तोप-ख़ानह, ख़ज़ानह, ज़ेवर, हाथी, घोड़ा वग़ैरह कुल बाग़ियोंने लूटलिया; तब महाराज राणा रातके वक़्त उनकी क़ैदसे छूटकर पियादह भागे, और बड़ी तक्लीफ़ और

मुलीवनोंसे शाहाबादके क़िलेमें पहुंचे; बाग़ी लोग भी अंग्रेज़ी फ़ौजके ख़ौफ़से
छोड़कर भागगये. महाराज राणा फिर अपनी राजधानीमें आये. इस
रियासतका बहुत बड़ा नुक्सान हुआ.

विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = ई० १८६१] में महाराज
लड़कीकी शादी अलवरके महाराव राजा शिवदानसिंहके साथ हुई
उसके विक्रमी १९२३ [हि० १२८२ = ई० १८६६] में उक्त महा
नव्वाब गवर्नर जेनरल साहिबके दर्बार आगरामें शरीक हुए, और
बनारस वगैरह तीर्थके मक़ामातकी ज़ियारत करके विक्रमी १९२४
१२८४ = ई० १८६७] में वापस आये. यह पेश्तर बम्बईकी
बतौर सैरके गये थे, क्योंकि उनको सिर्फ़ मुल्ककी सैर ही करनेका शौक़
बल्कि हर एक जगहके प्रबन्ध वगैरहके ढंगसे तजर्बह हासिल करनेका
विक्रमी १९२३–२४ [हि० १२८३–८४ = ई० १८६६–६७] में महारा
गवर्मेएट हिन्दुस्तानके मन्शाके मुवाफ़िक़ ग़ैर इलाक़हके मतलूबह
गिरिफ्तारी व सुपुर्दगीकी बाबत अह्दनामह क़ाइम कियाजाना ख़ुशीसे
करके उसके मुताबिक़ अमलदरामद किया. दूसरे सालमें उन्होंने फ़
दीवानीके अंग्रेज़ी क़ानूनोंको मुनासिब तर्मीमके साथ अपनी रियासती अ
जारी किया, अगर्चि अह्लकारोंको यह नया तरीक़ह नागुवार गुज़रा, लेकि
नाराज़गीका कुछ ख़याल न करके बदस्तूर जारी रखकर, जो अदालती
पेश्तर फ़ार्सी व उर्दूमें होती थी, उन काग़ज़ातकी तर्तीब हिन्दी हर्फ़ोंमें कराई.

विक्रमी १९२५–२६ [हि० १२८५–८६ = ई० १८६८–६९]
रिआयाकी पर्वरिशके वास्ते इन्होंने पहिलेसे अनाज ख़रीद करलिया, औ
वगैरहकी तामीर जारी रक्खी, कि जिससे ग़रीब मज़्दूरी पेशह लोगोंको मद
इसी तरह उन्होंने इस साल सिर्फ़ ख़ैरात व खाना तक़्सीम करनेमें एक
ज़ियादह रुपया ख़र्च किया; और अलावह इसके चन्द मर्तबह देवलीकी
अनाज पहुंचाया, जिसपर पोलिटिकल एजेएट बड़े शुक्र गुज़ार हुए; और
उनका हस्ब ज़ाबितह शुक्रियह अदा किया. इसी साल शहर झालरापाटन
डाकख़ानह खोला गया, और एक छापहख़ानह जारी होकर हिन्दी अख़्बार निक
दूसरे साल मद्रसह क़ाइम किया गया, जिसमें अंग्रेज़ी, फ़ार्सी व हिन्दीकी ता
की गई. शुरू ज़मानहमें इसकी ख़ूब तरक़्क़ी रही, लेकिन् बाद उ
मद्रसह सिर्फ़ नामके लिये रहगया.

यह महाराज राणा बहुत सादह मिज़ाज और मिलनसार थे. अल्बत्तह लिबास उनका तब्दील होगया था, क्योंकि पहिले रियासतमें पुराना लिबास पहनकर दर्बार वगैरह करनेका दस्तूर था, लेकिन् जबसे इन महाराज राणाकी बेटीकी शादी अलवरके महाराव राजा शिवदानसिंहके साथ हुई, उस वक़से अलवर वालोंकी तरह इन्होंने भी अपना लिबास हिन्दुस्तानी बनालिया.

जब लॉर्ड मेओसे मुलाक़ात करनेके लिये उदयपुरसे महाराणा शंभुसिंह अजमेर गये थे, महाराज राणा पृथ्वीसिंह भी वहां आये. इस वक़ तक राजपूतानहके राजा अलवर और झालावाड़को अपने साथ गद्दीपर बिठानेका दरजह नहीं देते थे, जिसमें उदयपुरकी गद्दीपर बैठनेका तो उनको ख़याल भी न था, लेकिन् कोटाके साथ रियासती आदमियों की कार्रवाईसे अथवा और किसी सबबसे अजमेरमें महाराणाकी ना रज़ामन्दी होगई. यह मौक़ा झालावाड़को ग़नीमत मिला, उन्होंने निक्सन साहिब, पोलिटिकल एजेएट मेवाड़की मारिफ़त महाराणासे मुलाक़ात और बातचीत की. परमेश्वरने महाराज राणाकी स्वाहिश पूरी की. जब महाराणा अजमेरसे लौटकर नसीराबाद आये, तो विक्रमी १९२७ कार्तिक शुक्ल ५ [हि० १२८७ ता० १२ शअ्बान = ई० १८७० ता० २९ ऑक्टोबर] शनिवारको शामके वक़ महाराज राणा महाराणाके कैम्पमें बुलायेगये; उस वक़ मैं (कविराजा श्यामलदास) भी मौजूद था. महाराज राणा पृथ्वीसिंहका चंवर व मोरछल वगैरह लवाज़ि-मह ड्योढ़ीपर रोकदिया गया; उन्होंने महाराणाके पास पहुंचकर दोनों हाथोंसे झुककर सलाम किया, और गादीके नीचे खड़े रहे; महाराणाने एक हाथसे सलाम लिया, और उनका हाथ पकड़के बाईं तरफ़ अपनी गादीपर बिठा लिया; और चंवर, मोरछल वगैरह लवाज़िमह उनपर रखनेकी इजाज़त दी, और कोटेकी बराबर लिखावट वगैरह सब इज़्ज़तका बर्ताव होनेका हुक्म दिया. फिर उनके साथ बुड्ढे बुड्ढे सर्दारोंने ज़िक्र किया, कि महाराज राणा ज़ालिमसिंहने मेवाड़की जो ख़िद्मतें और ख़ैरख़्वाहियां की थीं, उनका एवज़ हुज़ूरने इनायत किया. इसी तरह महाराज राणाने भी महाराणाका शुक्रियह अदा किया. महाराणा भी उनके डेरेपर गये. इस समयसे राजपूतानहमें झालरापाटनकी रियासतका दरजह कोटाकी बराबर माना गया, क्योंकि पुरानी तवारीख़ोंके देखनेसे पाया जाता है, कि कुल रियासतोंको कम व ज़ियादह उदयपुरसे इज़्ज़त मिलना साबित है.

महाराज राणा पृथ्वीसिंह जब नाथद्वारामें दर्शन करनेको आये, उस वक़ उदयपुर भी आये थे; और विक्रमी १९२९ कार्तिक शुक्ल १३ बुधवार [हि० १२८९ ता० ११ रमज़ान = ई० १८७२ ता० १३ नोवेम्बर] को उदयपुर दाख़िल हुए. दाख़िल होनेके समय सलामी व पेश्वाई वगैरह कुल इज़्ज़त कोटाके बराबर कीगई; और जबतक

उदयपुरमें क़ियाम किया, उनसे बड़ी मुहब्बतके साथ वर्ताव रहा. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १३ [हि० ता० २८ रमज़ान = ई० ता० २९ नोवेम्बर] को महाराज राणा रुख़्सत होकर वापस अपनी राजधानीकी तरफ़ रवानह हुए.

विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] के अख़ीरमें एक नामी ग़ारतगर पिरथ्या भील गिरिफ़्तार हुआ, जो कई सालसे रियासत कोटा व झालावाड़में लूट मार करता रहा था. इन महाराज राणाने अपने दो कुंवरों के इन्तिक़ाल और अपनी उम्र ज़ियादह होजानेके सबब लड़का गोद लेना चाहा था, जिसपर एक अ़रसह तक बहस रहनेके बाद विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] में गवर्मेंएटसे मन्ज़ूरीका हुक्म हुआ. विक्रमी १९३१-३२ [हि० १२९१-९२ = ई० १८७४-७५] में महाराज राणाने लूनावाड़ेके रईसकी बेटीसे शादी की, और कुछ अ़रसह बाद विक्रमी १९३२ भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० १२९२ ता० २५ रजब = ई० १८७५ ता० २७ ऑगस्ट] को चालीस वर्षकी उम्र पाकर बुख़ारकी बीमारीके सबब इस दुन्यासे उठगये. इनके कोई औलाद न थी, इसलिये गुजरातमें बढ़वानके ठिकानेसे एक लड़का बुलवाया गया, जिसको गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने बहुत कुछ बहसके बाद, जैसा कि ऊपर लिख आये हैं, मंजूर किया; क्योंकि कोटाकी रियासतसे ज़ालिमसिंहकी औलादको यह हिस्सह दियागया था, अब उनकी औलादका ख़ातिमह हुआ, परन्तु गवर्मेंएटको रियासत क़ाइम रखना मंजूर था, इसलिये मुतबन्ना रखनेकी इजाज़त दी. मगर उनकी राणियोंमेंसे राणी सोलंखीने अपना हामिलह होना ज़ाहिर किया; और जो कि अस्ली कुंवर पैदा होनेपर गोद लिये हुएका हक़ गद्दी नशीनीका नहीं रहता, इसलिये यह बात मुनासिब समझी गई, कि हमलके नतीजेका इन्तिज़ार किया जावे, और रियासती इन्तिज़ामके लिये महकमह पंचायत, जिसमें वज़ीर और अव्वल सर्दार और परलोक वासी रईसके मोतमद सलाहकारोंमेंसे तीन शख़्स दाख़िल थे, मुक़र्रर हुआ; और उसकी निगरानीके वास्ते डिसेम्बर तक साहिब पोलिटिकल एजेएट पाटनमें मुक़ीम रहे. इ़लाक़हका दौरह करके रिआ़यापर जो सख़्ती हाकिम पर्गनात जमाके बढ़ाने और हासिल वुसूल करनेमें करते थे, उनकी शिकायतें दूर करनेके लिये मुनासिब कार्रवाई की. राणी सोलंखीके हामिलह होनेमें शक पाया जाकर पूरी ख़बर्दारी कीगई, कि कोई फ़िरेब व चालाकी न होसके; आख़िरकार विक्रमी १९३३ आषाढ़ शुक्ल १ [हि० १२९३ ता० २९ जमादियुलअव्वल = ई० १८७६ ता० २२ जून] को महाराज राणा

ज़ालिमसिंह, जिनका नाम मस्नद नशीनीसे पहिले बख्तसिंह था, गद्दी नशीन किये गये. विक्रमी १९३१ माघ [हि० १२९२ मुहर्रम = .ई० १८७५ फ़ेब्रुअरी] में साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल पाटनमें आये, और दूसरे महीनेमें कप्तान एबट साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट रियासतके मुक़र्रर हुए, जिनके एह्तिमामसे रियासती इन्तिज़ाम होने लगा. इन साहिबने रियासतकी बिह्तरीके वास्ते दिलोजानसे कोशिश की. महकमह मालका इन्तिज़ाम ख़राब देखकर उसका इन्तिज़ाम राय बहादुर पंडित रूपनारायण पंचसर्दार राज अलवरके बेटे पंडित रामचरणके सुपुर्द कियागया.

महाराज राणा पृथ्वीसिंह छोटा क़द, गेंहुवां रंग, हंसमुख और नेक मिज़ाज थे. उनके समयमें रियासतकी आमदनी क़रीब बीस लाख रुपया सालानह तकके पहुंचगई थी, और यह दिलसे चाहते थे, कि रियासतमें इन्तिज़ामकी दुरुस्ती हो. सिवा इसके गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीका इह्सान भी दिलोजानसे कुबूल करते थे, कि जिसकी बदौलत यह रियासत क़ाइम हुई. सच है ! आदमीको इह्सान भूलजाना बहुत बड़ा ऐब है, और कृतोपकारको माननेसे उस आदमीकी आदमियत दुन्यामें मानी जाती है.

---
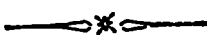
३८ - महाराज राणा ज़ालिमसिंह- ३.

यह महाराज राणा विक्रमी १९३२ आषाढ़ [हि० १२९२ रमज़ान = .ई० १८७५ ऑक्टोबर] में नव्वाब वाइसरॉय गवर्नर जेनरलकी मुलाक़ातके वास्ते साहिब पोलिटिकल एजेण्टके साथ मक़ाम नीमचको गये, और वहांसे वापस आकर बारह वर्षकी अवस्थामें गादीपर बैठनेके बाद विक्रमी १९३२ फाल्गुन [हि० १२९३ सफ़र = .ई० १८७६ मार्च] में अजमेर मेओ कॉलेजमें तालीम पानेको भेजेगये; अख़ीर एप्रिलमें राणी सोलंखीके हमल और रियासतकी मस्नद नशीनीका मुआमलह तै हुआ, और रियासतका इन्तिज़ाम गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके मातह्त पोलिटिकल एजेण्टने किया; दीवानी, फ़ौज्दारी, अपील और कौन्सिल वग़ैरह कचह्रियां क़ाइम हुईं. सद्र व देहातमें सर्रिश्तह तालीमने रौनक़ पाई; हरएक जगह स्कूल बनायेगये, ज़मीनके मह्सूलका पक्का बन्दोबस्त हुआ; पंडित रामचरण डेप्युटी मैजिस्ट्रेटने इस काममें अच्छी कारगुज़ारी दिखलाई, फिर हरएक कारख़ानह व सर्रिश्तहका मुनासिब प्रबन्ध कियागया, हकीम सआदत अह्मद अपीलमें मुक़र्रर कियागया, जो पहिले अदालत दीवानी का हाकिम था, और उसकी जगह एक दूसरा अह्लकार मुक़र्रर कियागया.

साबिक़ फ़ौज्दार कामकी अब्तरी और एक जन्म क़ैदीको अपनी साज़िशसे भगा देनेके क़ुसूरपर मुअत्तल किया जाकर उसकी एवज़ रिसालदार हसनअलीख़ां, जो अगले रईसके ज़मानहमें भी इस कामपर था, लाला सुखरामकी शामिलातसे क़ाइम मक़ाम फ़ौज्दार मुक़र्रर किया गया. बहरोड़ इलाक़ह अलवरके लाला रामदेव सर दफ़्तर फ़ार्सी व लाला बिहारीलाल क़ाइम मक़ाम सर दफ़्तर हिन्दीने बड़ी मिह्नत व होश्यारीके साथ काम अंजाम दिया. साहिब सुपरिएटेएडेएटके तमाम अमलेकी कार्रवाई क़ाबिल तारीफ़ रही, ख़ासकर मुन्शी गोपालकृष्ण मीर मुन्शी साबिक़ अपने काममें दियानतदारी व ईमानदारीको अच्छी तरह काममें लाकर उम्दह नेकनामी हासिल करगया. विक्रमी १९३३ फाल्गुन् [हि० १२९४ मुहर्रम = .ई० १८७७ फ़ेब्रुअरी] में कर्नेल वाल्टर साहिब क़ाइम मक़ाम एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने इस रियासतका दौरा किया, शहर झालरापाटनकी सैर की, और रियासतके बड़े बड़े लाइक़ व होश्यार अह्लकार उनके रूबरू पेश किये गये.

विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] में सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से महाराज राणा ज़ालिमसिंहको मुल्की इख्तियारात दिये गये, लेकिन् एक ग़ैर मामूली एजेएटी वहां क़ाइम होकर बाबू श्यामसुन्दरलाल, बी० ए० सेक्रेटरी बनाया गया. इन बातोंसे रईसको बहुत रंज था, जिसके सबब एजेन्सीके वक़्के अह्लकार उन्होंने मौक़ूफ़ करदिये; और सर्कारी पोलिटिकल अफ़्सरोंके साथ तक्रार बढ़ती गई; आख़िरकार एक वर्षके क़रीब ख़ुद मुरूतार रहने बाद रईसके मुल्की इख्तियारात सर्कारी हुक्मसे पोलिटिकल एजेएटको मिलगये. उस वक़्से लेफ़्टिनेएट कर्नेल एबट राजके सुपरिएटेएडेएट रहे. विक्रमी १९४६ [हि० १३०७ = .ई० १८८९] में उनके रुख़्सत जानेके सबब मिस्टर मार्टेएडलको झालरापाटनका क़ाइम मक़ाम चार्ज मिला है.

झालरापाटनका अह्दनामह, एचिसन साहिबकी किताब,
जिल्द तीसरी, हिस्सह पहिला.

अह्दनामह नम्बर ६०.

राज राणा मदनसिंहने, जो वादह किया, कि वह कोटेकी रियासतके कामोंका इन्तिज़ाम, जो मुवाफ़िक़ मन्शा ततिम्मह शर्त अह्दनामह दिहलीके राज राणा ज़ालिमसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंको मिला था, छोड़ते हैं; इस वास्ते नीचे लिखाहुआ अह्दनामह आपसमें गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और राज राणा मदनसिंहके क़रार पाया.

शर्त पहिली– ततिम्मह शर्त अह्दनामह दिहली, लिखा हुआ तारीख़ २० फ़ेब्रुअरी सन् १८१८ ई०, जो आपसमें महाराव उम्मेदसिंह बहादुर राजा कोटा और गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके हुआ था, यह दफ़ा उसको रद करती है.

शर्त दूसरी– गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी कोटाके महाराव रामसिंहकी रज़ामन्दीसे इक़ार करती है, कि वह राज राणा मदनसिंह और उसके वारिस और जानशीनोंको (जो औलाद राज राणा ज़ालिमसिंहके हैं) एक जुदा रियासत और रजवाड़ोंके गद्दीनशीनीके रवाजके मुवाफ़िक़ कोटाकी रियासत मेंसे निकाल देंगे, जिसमें नीचे लिखी तफ़्सीलके मुवाफ़िक़ पर्गने शामिल होंगे.

शर्त तीसरी– गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी मुनासिब ख़िताब राज राणा और उसके वारिसों और जानशीनोंको देगी.

शर्त चौथी– दोस्ती और इत्तिफ़ाक़ और ख़ैरख़्वाही हमेशहके लिये गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और राज राणा मदनसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम और जारी रहेगी.

शर्त पांचवीं– गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी वादह करती है, कि वह राज राणा मदनसिंहकी रियासतको अपनी हिफ़ाज़तमें रक्खेगी.

शर्त छठी– राज राणा (मदनसिंह) और उसके वारिस और जानशीन हमेशह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी तावेदारी करेंगे, और उनको अपना बड़ा समझेंगे, और इक़ार करेंगे, कि वह किसी ग़ैर रियासतसे मिलावट न करेंगे, और अगर उनसे कुछ तक़ार होगी, तो जो फ़ैसलह उसका गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी करदेगी, उसको वह मंजूर करेंगे.

शर्त सातवीं - राज राणा और उसके वारिस और जानशीन किसी रईस या रियासत से मिलावट या मुवाफ़क़त बिला मंजूरी गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके न करेंगे, परन्तु उनकी मामूली ख़त किताबत उनके दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

शर्त आठवीं - जब कभी गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीको ज़रूरत होगी, तो राजराणा अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ फ़ौज देंगे.

शर्त नवीं - राज राणा और उसके वारिस और जानशीन अपनी रियासतके बिल्कुल हाकिम रहेंगे, और इन्तिज़ाम दीवानी फ़ौज्दारी वग़ैरह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीका इस रियासतमें कुछ दख़्ल न होगा.

शर्त दसवीं - राज राणा और उसके वारिस और जानशीन ज़रूरी ख़र्चका बन्दोबस्त, जो कि इन्तिज़ामके दुरुस्त करने व .इलाक़हके बदलनेमें होगा, नीचे लिखी तफ़्सीलके मुवाफ़िक़ अपने .इलाक़हकी आमदनीपर करदेंगे, और इस .इलाक़हके अलह्दह करनेमें, जो फ़साद पैदा होंगे, उनका फ़ैसलह, जिस तरह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी करदेगी, उसको मन्जूर करेंगे.

शर्त ग्यारहवीं - राज राणा और उसके वारिस और जानशीन गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीको सालानह ८०००० रुपया कल्दार ख़िराज चालीस चालीस हज़ारकी दो क़िस्तोंमें देंगे. क़िस्त ख़रीफ़ (सियाली) पौष शुक्ल १५ और क़िस्त रबीअ़ (उन्हाली) ज्येष्ठ शुक्ल १५ को देंगे; और यह ख़िराज संवत् १८९५ की ख़रीफ़से शुरू होगा.

शर्त बारहवीं - यह अह्दनामह बारह शर्तका मक़ाम कोटामें क़रार पाकर उसपर मुहर और दस्तख़त कप्तान जॉन लडलो क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट और लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल नेथनल आल्विस साहिब, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके एक फ़रीक़, और राज राणा मदनसिंह दूसरे फ़रीक़के हुए, और तस्दीक़ इसकी राइट ऑनूरेबल गवर्नर जेनरल हिन्दकी पेशगाहसे होकर नक़्लें तस्दीक़ की हुई दो महीनेके भीतर आजकी तारीख़से आपसमें बटेंगी.

मक़ाम कोटा, ता० ८ एप्रिल सन् १८३८ .ई०.

मुहर और दस्तख़त -

☐ (दस्तख़त) - जे० लडलो, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट.

मुहर और दस्तख़त -

☐ (दस्तख़त) - एन्० आल्विस, एजेण्ट गवर्नर जेनरल.

तफ़्सील ऊपर लिखे अह्दनामहसे मिली हुई, उन पर्गनोंकी बाबत, जो राज राणा मदनसिंह बहादुर और उनके वारिसों और जानशीनोंके वास्ते कोटाकी रियासतसे अलह्दह होकर झालावाड़के नामसे क़ाइम हुए.

चीहट (१). रतलाई.

सुकेत. मनोहरथानह.

चौमहला, जिसमें पंचपहाड़ आहोर, दीग और गंगराड़ शामिल हैं. फूल बड़ोद.

झालरापाटन उर्फ़ ऊर्मल. चांचोरनी.

रीचवा. कंकोरनी.

वंकानी. छीपा बड़ोद.

दीलमपुर. शेरगढ़का उस तरफ़का हिस्सह, याने पूर्वकी तरफ़ परवान, या नेवज और शाहाबादसे.

कोटड़ाभट्ट.

सरेरा.

वाज़िह हो, कि नरपतसिंह झालावाड़ छोड़कर महारावके इलाक़हमें बसेगा, और उसका इलाक़ह राज राणाके सुपुर्द होगा.

मक़ाम कोटा, ता० १० एप्रिल सन् १८३८ ई० .

मुहर और दस्तख़त- ☐

☐ (दस्तख़त)- जे० लडलो, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट.

☐ (दस्तख़त)- एन० आल्विस, एजेन्ट गवर्नर जेनरल.

मुहर महाराव रामसिंह.

तफ्सील क़र्ज़ह, जो राज राणा मदनसिंह और उसके वारिस और जानशीन इस अह्दनामहकी दसवीं शर्तके मुवाफ़िक़ अदा करेंगे.

क़र्ज़ह.

रु०	आ०	पा०	
६१४४७-	१३-	३-	मगनीराम ज़ोरावरमल्ल.
४४३८२१-	३ -	६-	रामजीदास ठाकुरदास.
२६७८३९-	७ -	०-	मोहनराम जुगलदास.

राज राणा मदनसिंह वादह करते हैं, कि वह ऊपर लिखा क़र्ज़ह अपने इलाक़ह पर क़ाइम होने पर सात दिनमें ३२६१३७-७-९ तीन लाख छब्बीस हज़ार एक सौ

(१) यह नाम और जो पृष्ठ १४४८ और ४९ में छपे हैं, वह मुख़्तलिफ़ किताबों और नक़्शोंमें जुदा जुदा तौरपर लिखे हैं, राजपूतानह गज़ेटियरमें चीहटकी जगह चेचट, डीगकी जगह डग. वंकानीकी जगह बुकरी और किसी किताबमें मनोहरथानहकी जगह मंधरथानह या मोहरथानह वगैरह बहुत फ़र्क़ पाया जाता है.

सैंतीस रुपया सात आना नौ पाई देंगे; और उसके बाद चार वरसके असहमें बाक़ी रुपया ११८५२१७ जिसमें व्याज ८ रुपये सैकड़े सालानहका भी शामिल है, हर फ़स्लपर नीचे लिखे मुवाफ़िक़ देंगे, और यह कुल रुपया चार वरसमें जमा करा देंगे, जो इसमें देरी हो, तो गवर्मेएट अंग्रेज़ीको इस्तियार है, कि वह कुछ इलाक़ह झालावाड़से बाक़ी क़र्ज़हके वुसूल करनेके लिये अलग करले. पहिली क़िस्त मिती कार्तिक शुक्ल १५ संवत् १८९५ से शुरू होगी; और दूसरी क़िस्त वैशाख शुक्ल १५ संवत् १८९६ को.

क़िस्तोंका रुपया व्याज़ समेत नीचे लिखे मुवाफ़िक़ दियाजावेगा:-

१-क़िस्त १५००००, २-क़िस्त १५००००, ३-क़िस्त १५००००,
४-क़िस्त १५००००, ५-क़िस्त १५००००, ६-क़िस्त १५००००,
७-क़िस्त १५००००, ८-९५२१७.

मक़ाम कोटा, तारीख़ ८ एप्रिल, सन् १८३८ ई०.

मुहर व दस्तख़त-

(दस्तख़त)- जे० लडलो, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट.

मुहर व दस्तख़त-

(दस्तख़त)- एन्० आल्विस, एजेएट गवर्नर जेनरल.

दस्तख़त- राज राणा मदनसिंह.

अह्दनामह नम्बर ६१.

अह्दनामह बाबत लेन देन मुजिमोंके दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेएट और श्रीमान पृथ्वीसिंह बहादुर महाराज राणा झालावाड़ व उसके वारिसों और जानशीनोंके, एक तरफ़से कप्तान आर्थर नील ब्रुस पोलिटिकल एजेएट हाड़ौती बइजाज़त कर्नेल विलिअम फ्रेड्रिक एडन, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इस्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको श्रीमान राइट ऑनरेब्ल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, बैरोनेट् जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दियेथे, और दूसरी तरफ़से साह हरपचन्दने उक्त महाराज राणा पृथ्वीसिंह बहादुरके दियेहुए पूरे इस्तियारोंसे किया.

शर्त पहिली-कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका वाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इ़लाक़हमें संगीन जुर्म करके झालावाड़की राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो झालावाड़की सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगे जानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी-कोई आदमी झालावाड़के राज्यका वाशिन्दह वहांकी राज्य सीमा में कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम गिरिफ़्तार करके झालावाड़के राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी.

शर्त तीसरी-कोई आदमी, जो झालावाड़के राज्यकी रअ़य्यत न हो, और झालावाड़की राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ़्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमहकी तह्क़ीक़ात सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अ़दालतमें कीजायेगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक्तपर झालावाड़की पोलिटिकल निगरानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इ़लाक़हमें कि जुर्म हुआ हो; और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इ़लाक़हके क़ानूनके मुवाफ़िक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम उस वक्त हो, उसकी गिरिफ़्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुज्रिम क़रार दिया जावेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं- नीचे लिखेहुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेंगेः-

१-खून. २-खून करनेकी कोशिश. ३-वह्शियानह क़त्ल. ४-ठगी. ५-ज़हर देना. ६-ज़िनाबिल्जब्र (ज़बर्दस्ती व्यभिचार). ७-ज़ियादह ज़ख़्मी करना. ८-लड़कावाला चुरा लेजाना. ९-औरतोंका बेचना. १०-डकैती. ११-लूट. १२-सेंध (नक़्ब) लगाना. १३-चौपाया चुराना. १४-मकान जला देना. १५-जालसाज़ी करना. १६-झूठा सिक्कह चलाना. १७-ख़्यानते मुज्रिमानह. १८-माल अस्बाब चुरा लेना. १९-ऊपर लिखेहुए जुर्मोंमें मदद देना या वर्ग़लाना.

शर्त छठी-ऊपर लिखीहुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमोंको गिरिफ़्तार करने

रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह दर्ख्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पड़ेगा.

शर्त सातवीं - ऊपर लिखाहुआ अह्दनामह उस वक्त तक बर्क़रार रहेगा, जबतक, कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे.

शर्त आठवीं - इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामोंपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे हैं, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अह्दनामहके जोकि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम झालरापाटन, ता० २८ मार्च सन् १८६८ .ई०.

दस्तख़त और मुहर - (दस्तख़त) - ए० एन० ब्रुस,

पोलिटिकल एजेण्ट.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम कलकत्तेमें ता० २८ एप्रिल सन् १८६८ .ई० को की.
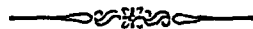
रियासत क़रौलीकी तवारीख़.

जुग्राफ़ियह.

यह रियासत, जो राजपूतानहकी पूर्वी हद्दपर उत्तर अक्षांश २६°-३′ व २६°-४९′, और पूर्व देशान्तर ७६°-३५′ व ७७°-२६′ के दर्मियान वाके़ है, अग्नि कोणकी सीमापर दर्याय चम्बल व इलाक़ह ग्वालियरसे, नैर्ऋत्य कोण व पश्चिमको जयपुरसे, उत्तर और ईशान कोणकी तरफ़ भरतपुर और धौलपुरसे और ईशान कोण तथा पूर्वमें रियासत धौलपुरसे घिरी हुई है. इसका रक़बह १२०८ (१) मील मुरब्बा, और आबादी १४८६७० बाशिन्दोंकी है. सालानह कुल आमदनी, जो ज़ियादह तर ज़मीन और दाणसे होती है, विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में अन्दाज़ह करनेसे ४८३८१० रुपयेके क़रीब पाई गई, और उसी सालकी तह्क़ीक़ातसे ख़र्चका तख़मीनह ४२९५८० रुपये मालूम किया गया है. बाशिन्दोंकी तादाद, जो ऊपर दर्जकी गई है, उसमें ८०६४५ मर्द और ६८०२५ औरतें हैं. रियासतके कुल गांवोंका शुमार एक शहर और आठ सौ इकसठ (२) गांव हैं, जिनमें २५९३० घर और औसत फ़ी मील मुरब्बाके हिसाबसे १२३ बाशिन्दे आबाद हैं. अगर क़ौमों या फ़िर्क़ोंके हिसाबसे कुल आबादीको तक़्सीम कियाजावे तो, मालूम होगा, कि इलाक़ह भरमें १३९२३७ हिन्दू, ८८३६ मुसल्मान, ५८० जैन, और १७ ईसाई हैं. हिन्दुओंमें ब्राह्मण २२१७४, राजपूत ८१८२, बनिया ९६२०, गूजर १५११२, मीना २७८१९, चमार १८२७८, जाट ८०८ और दूसरे लोग ३७२४४ हैं.

ज़मीनकी सूरत- यह इलाक़ह पहाड़ी और अक्सर ऊंचा नीचा (नाहमवार) है, और उस हिस्सेमें, जो चम्बल नदीकी तराईके ऊपरकी तरफ़ डांगके नामसे मश्हूर है, वाके़ है. ख़ास पहाड़ियां उत्तरी सीमापर हैं, जहां कई पहाड़ी सिल्सिले सर्हद्के बराबर बराबर चलेगये हैं. यहां कोई बहुत ऊंचा पहाड़ नहीं है, सिर्फ़ एक चोटी है, जो समुद्रके सत्हसे १४०० फ़ीटसे भी कम ऊंची है; अगर्चि इन पहाड़ोंमें किसी क़िस्मकी ख़ूबसूरती नहीं पाई जाती, लेकिन् लड़ाईके वास्ते बहुत कामके हैं.

---

(१) वक़ाये राजपूतानहमें १८०० लिखा है.

(२) वक़ाये राजपूतानहमें गांवोंकी तादाद सिर्फ़ ४०५ ही लिखी है, लेकिन् हमने इस रियासतका जुग्राफ़ियह सम्बन्धी हाल पाउलेट् साहिबके गज़ेटिअरसे लिखा है.

चम्बल नदीके किनारे किनारे एक ऊंची दीवारकी शक्लपर चटानोंका सिलसिलह, जो नदीके किनारे वाली ज़मीनको रियासतके दक्षिण तरफ़की ज़मीनसे जुदा करता है. पहाड़ी घाटोंके उत्तरी तरफ़की ज़मीन कई मील तक ऊंची है; और चटान इतने हैं, कि उनके दर्मियान होकर पानीका निकास नहीं होसक्ता; इसलिये बाशिन्दोंको पानीके वास्ते तालाबोंपर भरोसा रखना पड़ता है, जिनको वे बन्द बनाकर तय्यार करलेते हैं; लेकिन् उत्तरकी तरफ़ बहुत फ़ासिलेपर ज़मीन नीची है, चौरस धरती ज़ियादह है, पहाड़ियां बहुत ऊंची दिखाई देती हैं, और शहरके नज़्दीक वाली नीची ज़मीनमें बहुतसे दराड़े हैं.

पत्थर व धातु- इस इलाक़हके चटान विन्ध्याचलके चटानोंकी मुवाफ़िक़ और क्वार्ईज़ (१) पत्थरकी तरह हैं. पिछली क़िस्मके चटान, एक तंग टेकरीपर, जोकि बावलीके दक्षिण पश्चिमी तरफ़से बनास तक चली गई है, नज़र आते हैं. (बावली, करौली शहरसे ८ मील नैऋत्य कोणको है). अव्वल क़िस्मके चटान इस सिलसिलेके दोनों तरफ़ बहुत दूरतक मिलते हैं, अग्नि कोणकी तरफ़ चम्बल नदी तक ऊंची ज़मीन ऐसे ही चटानोंकी है. इस राज्यमें एक तरहका रेतीला पत्थर भांडेरके नामसे मश्हूर है; फ़त्हपुर सीकरीका महल और आगरेके मुम्ताज़ महलके कुछ हिस्से उसी पत्थरके बने हैं, जोकि करौलीसे थोड़ी दूरपर निकाला गया था. अलावह इसके नीला, भूरा, लाल, और सिफ़ेद पत्थर भी होता है; कई जगह गांवोंमें मकानात पत्थरके बने हैं; यहां तक कि मकानोंको कैलुओंके एवज़ पट्टियों (सिल्लियों) से पाट कर छत्तें बनाली गई हैं. करौलीसे ईशान कोणमें लोहेकी खान है, लेकिन् लोहा निकालनेमें ख़र्च ज़ियादह पड़ता है, इसलिये दूसरी जगहोंसे लाया जाता है. कई जगह चूना बनानेका पत्थर भी पायाजाता है. नीले रंगका पत्थर ख़ासकर कुएं बनानेके काममें आता है, और करौलीके पास जो निकलता है, उसकी, बहुत सस्त होनेके सबब, चक्की वगैरह चीज़ें बनाई जाती हैं.

जंगल- करौलीके ऊंचे पहाड़ोंपर अक्सर दरख़्त नहीं हैं, चम्बलकी तराईमें धावका झाड़, ढाक, खैर, सेमल, शाल, और नीमके दरख़्त कस्रतसे पायेजाते हैं; दक्षिण पश्चिमी हिस्सेमें झाड़ी बहुत है, इनके सिवा कहीं कहीं बबूलके दरख़्त भी नज़र आते हैं. पर्गनह मांदरेल, तथा एक नलेमें और करौलीसे बीस मील उत्तर पूर्वकी पहाड़ियोंपर शीशमके पेड़ खड़ेहुए हैं; और बहुतसे मक़ामातपर आम, गूलर, बेर, ढाक, जामुन, खेजड़ा, कदम्ब, इमली, खजूर वगैरह दिखाई देते हैं.

---

(१) क्वार्ईज़का हिन्दी नाम नहीं है.

चम्बलके पास वाले जंगलोंमें शेर, रीछ, रोझ, सांभर और हिरण वगैरह जंगली जानवर कस्रतसे पाये जाते हैं; शेरोंका ख़ौफ़ इतना रहता है, कि बिदून पूरे बन्दोबस्त व ख़बर्दारीके मवेशीको जंगलमें नहीं चरा सके. डांगकी ऊंची ज़मीनमें जहां जहां पानीके चश्मे वगैरह हैं, शिकारका उम्दह मौक़ा है. रियासतके पश्चिमी हिस्सेमें सांपोंकी बड़ी ज़ियादती है, लेकिन् शहरके पास नहीं है. क़रौलीके जंगलोंमें गोंद, लाख, शहद व मोम वगैरह कुद्रती चीज़ें पैदा नहीं होतीं; ये तमाम चीज़ें चम्बल पार ग्वालियरके जंगलोंमेंसे आती हैं.

नदियां- चम्बल नदी कहीं बहुत गहरी और धीमी, कहीं चटानी और इतनी तेज़ बहती है, कि उसमें किश्तीका जाना बहुत मुश्किल होता है; बर्सातके मौसममें इसका पानी बहुत चढ़जाता है; लेकिन् क़रौलीकी हद्दमें कोई बड़ी नदी इसके शामिल नहीं मिलती. इस रियासतमें सिर्फ़ पांचनद नामकी एक नदी है, जो पांच धाराओंके मिलनेसे शहरके उत्तर दो मीलके फ़ासिलेपर निकलती है, लेकिन् चम्बलमें नहीं गिरती. ये पांचों धारा क़रौलीके इलाक़ेमें बहती हैं, और गर्मीके मौसममें एकके सिवा सबमें थोड़ा बहुत पानी बारह महीने बहता रहता है. यह (पांचनद) नदी उत्तर तरफ़ बहकर बाणगंगामें जा मिलती है.

कालीसुर या डांगर और जिरोता नदी शहरके दक्षिण पश्चिम बहकर दोनों नदियां जयपुरकी तरफ़ मोरेलमें जा गिरती हैं.

आबो हवा- इस राज्यमें कुओंका पानी तो अक्सर अच्छा है, लेकिन् ऊंची चटानी ज़मीनके तालाबोंका पानी गर्मीके दिनोंमें बिगड़ जाता है, इसलिये अक्सर बाशिन्दे अपने चौपायोंको लेकर चम्बलके किनारे चले जाते हैं, परन्तु उसका भी पानी पीनेके वास्ते अच्छा नहीं है. बारिशका अन्दाज़ह करनेसे मालूम हुआ, कि विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में ३१ इंच पानी बरसा. बीमारी इस इलाक़हमें बुख़ार, दस्त और गठियाकी ज़ियादह होती है, लेकिन् हैज़ेकी बीमारी बहुत ही कम हुआ करती है.

पैदावार- क़रौलीकी रियासतमें गेहूं, चना, जव, बाजरा, ज्वार, चावल, और तम्बाकू पैदा होता है. अलावह इन चीज़ोंके कहीं कहीं ख़राब क़िस्मकी ऊख और शहरके पास भंग बहुत पैदा होती है. खेत तालाबों, कुओं और चम्बलके पानीसे सींचे जाते हैं.

राज्यका इन्तिज़ाम- न्यायके वास्ते इस रियासतमें फ़ौज्दारी अदालत वगैरह कचहरियां ख़ास राजधानीमें, और पर्गनोंके इन्तिज़ामके वास्ते तहसीलदार मुक़र्रर

हैं; और राज्य सम्बन्धी कुल इन्तिज़ाम दूसरी रियासतोंकी तरह यहां भी है.

फ़ौज- कुल फ़ौजकी तादाद १९६२ (१) है, जिसमें १६० सवार, १७७० पैदल और ३२ आदमी तोपख़ानहके हैं. फ़ौजी मुलाज़िम ज़ियादहतर इसी इलाक़हके बाशिन्दे यादव राजपूत और मुसलमान पठान हैं. तोपख़ानहकी तोपें, जो क़रीब चालीसके हैं, बहुत हल्की हैं; ऐसी कोई तोप नहीं, कि ज़ियादह काममें लाई जासके.

हॉस्पिटल- राजधानी शहर क़रौलीमें एक बड़ा हॉस्पिटल मरीज़ोंके इलाजकी ग़रज़से राज्यकी तरफ़से क़ाइम कियागया है.

मद्रसह- आम तालीमके लिये ख़ास शहर क़रौलीमें एक बड़ा मद्रसह है, जो विक्रमी १९२१ [हि० १२८१ = ई० १८६४] में क़ाइम कियागया था, लेकिन् उसमें लड़कोंकी तादाद कम होनेके अलावह इल्मी तरक़्क़ीका कोई नतीजह दर्याफ़्त न हुआ, क्योंकि मुदर्रिस लोगोंकी तन्ख़्वाह शुरूमें बहुत कम थी. मगर बनिस्बत पहिलेके अब लड़कोंकी तादाद ज़ियादह है; तालिब इल्मोंको अंग्रेज़ी, फ़ार्सी व हिन्दी, तीनों ज़बानें पढ़ाई जाती हैं. अलावह इनके ७ छोटे मद्रसे हिन्दी ज़बानकी तालीमके वास्ते और भी हैं.

टकशाल- क़रौलीकी टकशालमें चांदीके सिक्के याने रुपये बनाये जाते हैं, जिनका वज़्न ग्यारह माशा है, और क़ीमतमें कल्दारके बराबर चलते हैं. विक्रमी १९१५ [हि० १२७४ = ई० १८५८] से पहिले यहांके सिक्कहमें एक तरफ़ दिहलीके बादशाहका नाम मए साल संवत्के और दूसरी तरफ़ क़रौलीके राजाका नाम व संवत् होता था, मगर विक्रमी १९१५ [हि० १२७४ = ई० १८५८] के बाद मुग़ल बादशाहोंकी जगह मलिकह मुअ़ज़्ज़महका नाम रक्खागया है.

जेलख़ानह- शहर क़रौलीमें एक अच्छी जगह मज़्बूत मकान बना हुआ है, जिसमें क़ैदियोंकी तादाद २०० के क़रीब क़रीब रहती है. सफ़ाई वग़ैरहका इन्तिज़ाम ठीक है. राजधानीमें एक डाकख़ानह भी है.

ज़ात, फ़िर्क़ह व क़ौम- इस रियासतमें नीचे लिखी क़ौमोंके लोग आबाद हैं- ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, जाट, गूजर, मीना, काछी (माली), कुम्हार, नाई, धोबी, डोम, मुसलमान, कोली, वग़ैरह; और इनके सिवा कई मुतफ़र्रिक़ ज़ातोंके लोग रहते हैं. यहांके लोग अक्सर वैष्णव मतको मानते हैं, और इसी वजहसे कृष्णके मन्दिरोंकी तादाद रियासतमें सबसे ज़ियादह याने ३०० है, सिवाय इनके महादेव, देवी, हनुमान इत्यादि हिन्दू मज़्हबके देवताओंके भी स्थान बने हुए हैं, जिनकी इस क़ौमके सब बाशिन्दे पूजा

(१) यह हाल पाउलेट् साहिबके बनाये हुए क़रौलीके गज़ेटिअरसे लिखा है, परन्तु वक़ाये-राजपूतानहके मुसन्निफ़ने सन् १८७३- ७४ ई० की रिपोर्टोंका हवालह देकर सवार ४००, पियादह ३२०० और गोलन्दाज़ ३५ लिखे हैं.

करते हैं. राजाकी कुलदेवी अंजनी है, जिसका मन्दिर बीरवास नामी एक मक़ामपर बना है.

पेशह व दस्तकारी- ज़ियादहतर इस इलाक़हके ब्राह्मण तिजारत, मीना लोग खेती, राजपूत लोग जो यादव क़ौमसे हैं, अक्सर उम्दह सिपाहियानह नौकरी, और जो ग़रीब हैं, या जिनकी हालत दुरुस्त नहीं है, वे काश्तकारी करते हैं. दस्तकारी यहांपर कोई मश्हूर क़िस्मकी नहीं होती, सिर्फ़ मोटी क़िस्मका कपड़ा बनाया जाता है; इसके अलावह चन्द लोग रंगसाज़ी, संग तराशी, टाट बाफ़ी और खातीका काम करते हैं. रंगीन कपड़ा, शक्कर, नमक, रुई, और भैंस तथा बैल ख़ासकर ग़ैर इलाक़ोंसे बिकनेको आते हैं; और यहांसे बाहर जानेवाली चीज़ें चावल, रुई और जानवरोंमेंसे बकरी है.

तह्सील याने पर्गने.

रियासत क़रौली तह्सीलोंके लिहाज़से पांच हिस्सों याने हुज़ूर तह्सील, जिरोता तह्सील, मांदरेल तह्सील, मांचलपुर तह्सील और ऊतगढ़ तह्सीलमें तक़्सीम कीगई है, जिनमेंसे हर एकका मुफ़स्सल हाल ज़ैलमें दर्ज किया जाता हैः-

तह्सील हुज़ूर- हुज़ूर या ख़ास राजधानीकी तह्सीलके मातह्त शहर क़रौलीके आस पासका इलाक़ह है, जिसमें १२५ गांव हैं, जिनमेंसे ९१ तो कूरगांव तअ़ल्लुक़ेके और ३४ गुर्लाके हैं. कुल तह्सीलके बाशिन्दोंकी तादाद ६३१५५ मनुष्य है, काश्तकार लोग अक्सर मीना क़ौमसे हैं. इस पर्गनहके कुल गांव छोटे और कूरगांव तअ़ल्लुक़ह, जिसको आंतरी भी कहते हैं, पहाड़ियोंके बीचमें बसा हुआ है; परन्तु ज़मीन यहांकी उपजाऊ है.

तह्सील जिरोता- यह तह्सील क़रौलीसे पश्चिम रुख़को है, और क़रौलीके जागीरदार ठाकुरोंके गांव अक्सर इसी हिस्सेके अन्दर हैं. यहांकी ज़मीन पथरीली और पहाड़ी है, और काश्तकार उ़मूमन मीना लोग हैं, ब्राह्मण और बनिये भी खेती करते हैं; और राजपूत लोग राज्यकी नौकरीसे गुज़ारा करते हैं. कुओंकी गहराई एकसी नहीं है, किसी गांवमें ६० हाथपर और कहीं २० हाथपर ही पानी निकल आता है. आबादी कुल तह्सीलकी २४००० बाशिन्दोंकी है. जिरोता, जिसके नामसे इस तह्सीलका नाम रक्खागया है, यहांका सद्र मक़ाम है, जिसमें एक थानहदार, तह्सीलदार, और क़ानूनगो रहता है. यह राजधानी क़रौलीसे २८ मील दक्षिण पश्चिममें है; चौकीदार यहांके मीना लोग हैं. पानी ३० फ़ीटकी गहराईपर पायाजाता है. इस पर्गनेमें कटदाणा नामका एक अनाज पैदा होता है, जो फाल्गुन् महीनेमें बोया और आषाढ़में काटाजाता है. लोग कहते हैं, कि

ज़ीराख़ां नामी एक मुसल्मानने यह क़स्बह आवाद किया था, जिसकी क़ब्र यहांपर मौजूद है. क़स्बेमें कल्याणरायका एक मन्दिर सात सौ वर्षसे ज़ियादह अ़र्सेका बनाहुआ है, जिसकी प्रशस्तिमें विक्रमी ११९५ [हि० ५३२ = ई० ११३८] लिखा है, और क़स्बेके नज़्दीक ही एक पहाड़ीपर शैख़ बद्रुद्दीनकी दर्गाह है.

तह्सील मांदरेल- यह तह्सील, जिसकी आबादी १९००० बाशिन्दोंके क़रीब है, करौलीसे दक्षिण तरफ़ वाके़ है; इसमें दो तअ़ल्लुके़ हैं. मांदरेल तह्सीलका सद्र मक़ाम एक बड़े पुराने क़िलेके लिये मश्हूर है, जो यादव राजपूतोंकी राजधानीसे पहिले ज़मानेका बनाहुआ है, और जिसमें एक तालाव और कई मस्जिदें हैं. यह क़िला और सबलगढ़ बहुत अ़र्से तक महाराजा गोपालदासके पुत्र और उसके वारिसोंके क़ब्ज़हमें रहा. यहांके क़िलेदारकी मातह्तीमें ३०० आदमी रहते हैं; क़स्बेकी आबादी १००० घरों तथा १४००० बाशिन्दोंकी है, जिसमें अक्सर बोहरे व महाजन आसूदह व मालदार हैं; ज़मींदारी यहांपर सौ वर्षके अ़र्सेसे ब्राह्मणोंकी होगई है, पहिले मीनोंकी थी. इस पर्गनहमें पानी ७० हाथ गहराईपर मिलता है; गर्मीके मौसममें पानीकी इस क़द्र तक्लीफ़ रहती है, कि बाज़ वक्त तो २॥ मील फ़ासिलेपर दर्याय चम्बलसे लाया जाता है. क़स्बह मांदरेलके चारों तरफ़ शहरपनाह है, जिसको महाराजा हरबख़्शपालने बनवाया था, और बस्ती या क़िलेसे पश्चिम ज़मीनके सत्हसे ४५०० फ़ीट बलन्द एक पहाड़ीपर मर्दान ग़ाइबकी दर्गाह है; कहते हैं, कि यहांपर रातके वक्त कोई आदमी नहीं रह सक्ता, अगर रहे, तो मर जाता है.

तह्सील मांचलपुर - यह तह्सील करौलीसे उत्तर पूर्व २५४२० आदमियोंकी आबादी की है, जिसमें दो पर्गने हैं, इनमेंसे एक पर्गनह मुसल्मानोंके अ़ह्दमें चौरासी गांव होनेके सबब चौरासीका पर्गनह कहलाया, जो पहिले ज़मानेमें राजा गोपालदासके बुज़ुर्गोंके हाथसे जाता रहा था, लेकिन् पांच सौ वर्षके बाद बादशाह अक्बरसे राजा गोपालदासने दक्षिणकी नौकरीके एवज़ वापस हासिल कर लिया. विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में जयपुरके प्रधान नव्वाब फ़ैज़-अ़लीख़ांके बुज़ुर्गोंमेंसे डंडाईख़ां और रणमस्तख़ांने मांचलपुरको लूटा; विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में राज्य करौली और सर्कार अंग्रेज़ीके दर्मियान अ़ह्दनामह क़ाइम होनेसे २० वर्ष पहिले सेंधियाके मातहत मरहटोंने इस क़स्बहको तह्सीलके दूसरे बारह गांवों समेत नालबन्दीमें ले लिया था. पहिले यहांके ज़मींदार गौंज ठाकुर थे, जिनको महाराजा गोपालदासने निकाल दिये. इस पर्गनहमें १००० फ़ीटसे लेकर १३०० फ़ीट तक बलन्दीकी पहाड़ियां

पाई जाती हैं. क़स्बह मांचलपुर, जो क़रौलीसे १६ मील उत्तर पूर्व, १००० घरों तथा ५००० बाशिन्दोंसे ज़ियादह आबादीका मक़ाम है, इस तह्सीलका सद्र है. यहां एक अह्लकार रहता है, जिसको प्रधान कहते हैं; वह क़ानूनगोका काम करता और २५० रुपये सालानह तन्ख़्वाह पाता है. यहांपर महादेव और विष्णुके बहुतसे मन्दिर हैं, और बस्तीमें और उसके बाहिर अक्सर पुरानी इमारतें बनीहुई हैं, जिनमें सबसे बड़ा महाराजा गोपालदासके महलका खंडहर, इसीके पास एक महादेव और दूसरा मदनमोहनका मन्दिर उसी ज़मानेका बनाहुआ, शहरसे उत्तर रुख़ एक छोटी पहाड़ीपर १२ स्तम्भकी एक क़ब्र पठानोंके वक़्की है, यहांसे एक मील उत्तर एक पुराना कुआ है, जिसको चोर बावड़ी कहते हैं. क़स्बेसे उत्तर तरफ़ कई बाग़ीचे हैं, जिनमेंसे एकको दक्षिणियोंका बाग़ीचा कहते हैं, जो मरहटोंके अह्दमें बना था. इस तह्सीलमें कुओंका पानी २० हाथकी गहराईपर पायाजाता है.

तह्सील ऊतगढ़- क़रौली राज्यके दक्षिण पश्चिमी कोणपर यह पर्गनह है, जिसमें छः तअ़ल्लुके हैं. क़दीम ज़मानहमें यह पर्गनह लोधी लोगोंके क़ब्ज़हमें था; लेकिन् चार सौ वर्षका अ़र्सह हुआ, कि उनका क़ब्ज़ह छूटगया है, तो भी उन लोगोंके बनायेहुए बन्द और तालाब मौजूद हैं. राजा अर्जुनदेवने लोधियोंसे यहांकी ज़मीनका हासिल वुसूल किया. यहां एक बहुत पुराना क़िला है, जिसके भीतरका हिस्सह महाराजा हरबख़्शपालने बनवाया है; महाराजा जगोमानने अपने बेटे अमरमानको, जिसने अमरगढ़ बसाया, यह क़िला दिया था; लेकिन् उसके बाद उसकी औलादवाले फ़सादी होनेके सबब महाराजा मानकपालके वक़्में अमोलकपालने विक्रमी १८५९ [हि० १२१७ = ई० १८०२] में यह क़िला उनसे छीनलिया.

क़िले

क़रौलीके राज्यमें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ बारह क़िले हैं, १- क़रौलीका क़िला या महल, २- ऊतगढ़, ३- मांदरेल, ४- नारोली, ५- सपोतरा, ६- दौलतपुरा, ७- थाली, ८- जंबूरा, ९- खूडा, १०- निन्डा, ११- ऊंड और १२- खुदाई. इनमेंसे क़िला ऊतगढ़, मांदरेल और नारोली तो बड़े क़िले हैं, बाक़ी छोटे हैं- सपोतरा क़रौलीसे २० मील पश्चिममें है, खुदाई उत्तर पूर्वी सीमापर है, जिसमें ५० आदमी रहते हैं, थाली मांचलपुर पर्गनहमें उत्तरी सर्हदपर है, जंबूरा मांचलपुरसे थोड़ी दूर पूर्वमें, निन्डा मांदरेलसे तीन मील उत्तर, ऊंड मांदरेलसे उत्तर पूर्व चम्बलके नज़्दीक, खुदाई मांदरेलके नज़्दीक और दौलतपुरा ऊतगढ़ पर्गनहमें पश्चिमी हदपर है.

मश्हूर शहर व क़स्बे.

राजधानी शहर करौली- यह शहर, जिसको विक्रमी १४०५ [हि० ७४९ = ई० १३४८] में राजा अर्जुनदेवने आबाद किया था, और ज़िसका नाम कल्याणरायके मन्दिरसे रक्खा गया, शहर मथुरा ग्वालियर, आगरा, अलवर, जयपुर, और टोंकसे सत्तर मील फ़ासिलेपर वाके है, शुरू ज़मानहमें मीनोंकी लूट मारके सबब तरक़्क़ीको नहीं पहुंच सका, लेकिन् पीछे राजा गोपालपालने मीनोंको ज़ेर करने बाद शहरको लाल पत्थरकी शहरपनाहसे, जिसका घेरा २। माइलके क़रीब है, महफ़ूज़ किया, और शहरको तरक़्क़ी दी, यहांतक कि रफ़्तह रफ़्तह बाशिन्दोंकी तादाद २८००० तक पहुंचगई. शहर पनाहमें ६ दर्वाज़े और ग्यारह खिड़कियां और उसके चारों तरफ़ मिट्टीका एक चौड़ा धूलकोट है, जिसको तोपके गोलोंका कुछ भी ख़तरा नहीं और उसके गिर्द भद्रावती नदीके दराड़े याने पानीके बहावसे कटीहुई ज़मीनके शिगाफ़ इस तरहपर हैं, जैसे फ़ौलादी तलवारमें जौहर, अगर कोई नावाक़िफ़ आदमी उन दराड़ोंमें चलाजावे, तो उसको सिवा भटकनेके रास्तह मिलना मुश्किल होजाता है, बल्कि वह ऐसी जगह है, कि जिसमें हज़ारों आदमियोंकी फ़ौज ग़ाइब होसक्ती है. शहरके ख़ास बाज़ारकी लम्बाई क़रीब आध मीलके है, और बाज़ारके सिवा दूसरी गलियें बहुत तंग हैं. इस शहरको मैं (कविराजा श्यामलदास) ने भी महाराजा मदनपालके शुरू अह्दमें देखा था; शहरके दक्षिण तरफ़ धूलकोटके क़रीब उन यादव राजपूतोंकी देवलियां (१) हैं, जो लड़ाईमें एक साथ मारेगये थे, और जिनके देखनेसे उन राजपूतोंकी बहादुरीका नमूना मालूम होता है. राजाके भाई बेटे लाल छत्तेकी छायामें बदनपर लाल मिट्टी लगायेहुए थे, जिनको शेर बच्चा कहना चाहिये. अगर्चि राज्यके पुराने महल राजा अर्जुनदेवके बनाये हुए इस वक़्त मौजूद नहीं हैं, लेकिन् उस वक़्तके महलोंके बाग़के दरख़्त अबतक हैं; हालके महल राजा गोपालपालने दिल्लीके मकानातके ढंगपर लाल पत्थरके बनवाये हैं, जो क़ाबिल देखनेके हैं; महलोंका घेरा २२५० गज़के क़रीब है, और उनके गिर्द एक ऊंची दीवारका हाता खिंचाहुआ है, जिसमें दो दर्वाज़े हैं. उस दर्वाज़ेपर, जिसको बीच दर्वाज़ह बोलते हैं, उम्दह कारीगरीका काम बना हुआ है. कहते हैं, कि दर्वाज़ोंपर गुलकारीका काम किसी आगरेके कारीगरने बनाया था; दर्वाज़ेके ऊपर एक उम्दह छत्री बनीहुई है; महलोंके

---

(१) लड़ाईमें मारेजानेवाले राजपूतोंके चबूतरोंको देवलियां कहते हैं.

अन्दर चित्रकारीका काम, जिसमें ख़ासकर रंग महल और दीवान आमका बहुत ही उम्दह है. गवर्नर जेनरलके एजेएट कर्नेल कीटिंगने यहांके महलोंकी निस्बत तारीफ़में लिखा है, कि वे हिन्दुस्तानके सबसे उम्दह मकानातकी क़िस्मसे हैं. शहरके कुल मकानात लाल पत्थरके हैं, जिनमेंसे खूबराम प्रधानका मकान और अत्ता शहरमें अजीतसिंहके मकानात बहुत बलन्द बनायेगये हैं.

राजधानीमें मन्दिर वग़ैरह जो मश्हूर मज़्हबी मकानात हैं, उनके नाम यहांपर दर्ज किये जाते हैं- महाराजा गोपालपालका बनवाया हुआ मदनमोहनका मन्दिर, प्रतापशिरोमणिका मन्दिर, जिसको महाराजा प्रतापपालने बनवाया था, और जिसके ख़र्चके लिये दो हज़ारकी जागीर नियत है. नवलबिहारीका मन्दिर, जिसको महाराजा प्रतापपालकी विधवा राणी नरूकीने बनवाया था, कल्याणरायका मन्दिर, राधाकृष्णका मन्दिर, गोविन्दका मन्दिर, गोपीनाथ, महाप्रभू, मुरारीमनोहर, और बख़्तावर शिरोमणिके मन्दिर तथा चार मस्जिदें हैं. इन मन्दिरोंमेंसे मदनमोहनका मन्दिर सबसे बड़ा है, जिसकी मूर्ति जयपुरके महाराजा जगत्सिंहसे राजा गोपालपाल लाये थे; और गोविन्द तथा गोपीनाथकी मूर्तियां मए दो और प्रतिमाके वृन्दाबनसे लाई गई थीं. मन्दिरकी सेवाके वास्ते एक बंगाली ब्राह्मण मुर्शिदाबादके पास वाले एक मन्दिरसे बुलाकर मुक़र्रर कियागया था, जिसके वारिस अबतक इस गद्दीके मालिक हैं; इस मन्दिरके ख़र्चके लिये सत्ताईस हज़ार सालानहकी जागीर राजा गोपालपालकी नियत कीहुई है.

कूरगांव- क़रौलीसे दस मील दूर जयपुरके रास्तेपर ३०० मकान और १००५ आदमियोंकी बस्तीका गांव है, जो नमकके व्यापारके लिये इलाक़हमें मश्हूर है. ज़मीन यहांकी नालोंसे कटीहुई, लेकिन् पैदावारीमें उम्दह है. गांवके पास मकानोंके बहुतसे खंडहर नज़र आते हैं; लोगोंके ज़बानी बयानसे मालूम होता है, कि पहिले यहांपर मुसल्मान पठानोंका एक बड़ा शहर आबाद था, लेकिन् एक मुद्दत हुई, कि मुसल्मान यहांकी ज़मीनके मालिक नहीं रहे, और ऐसा ही हाल लोधी और धांकड़ लोगोंका है.

केला- क़रौलीसे दक्षिण पश्चिम तरफ़ १२ मील फ़ासिलेपर क़िले ऊतगढ़के रास्तेमें है. यहां एक छोटे नलेपर देवीका एक मश्हूर मन्दिर है, जहां हर साल चैत्र कृष्ण ११ को मेला शुरू होता और १५ रोज़तक बराबर जारी रहता है. जिसमें हज़ारहा यात्री इलाक़ह और दूर दूरके जमा होते और भेट चढ़ाते हैं. भेटका रुपया जो ६००० के क़रीब जमा होता है, सदाव्रत्तमें लगाया जाता है. क़रौलीके

रईस इस मक़ामपर कमसे कम एक मर्तबह सालभरमें दर्शन करनेको हमेशह आते हैं; यहांकी प्रशस्तिसे मालूम होता है, कि यह मन्दिर विक्रमी १७८० [हि० ११३५ = ई० १७२३] में बनवाया गया था.

बरखेड़ा, कूरगांव तऋ़ल्लुक़ह- यह गांव क़रौलीसे दक्षिण पश्चिमको वाके़ है, जिसमें किसी एक राणी और एक लौंडीके बनवाये हुए दो बाग़ और मरहटा रूपजी सेंधियाकी छत्री, जो यहां मारागया था, है. इस गांवको क़रौलीसे पहिलेका बसा हुआ बतलाते हैं.

सलीमपुर, कूरगांव तऋ़ल्लुक़ह- क़रौलीसे १४ मील पश्चिममें है; यहांपर पठानोंके बनवायेहुए क़िलेका खंडहर, मियां मक्खनकी मस्जिद, गांवके क़रीब मदार साहिबका चिल्ला नामकी एक पहाड़ी, जहां एक मुसल्मान फ़क़ीरने चालीस रोज़तक उपवास किया था, है. यहांकी आधी ज़मींदारी पठानोंकी है; कुओंमें पानी ६० हाथसे नीचे पायाजाता है.

मोहोली, कूरगांव तऋ़ल्लुक़ह- यह गांव क़रौलीसे दक्षिण पश्चिम आठ मीलपर खीचरी ठाकुरका है, जो क़रौलीके राजाकी एक ख़ास शिकार गाहके लिये, जिसे नीला डूंगर कहते हैं, प्रसिद्ध है. यहां आम, बेर और कई क़िस्मके दरख़्त कस्रतसे होते हैं, पहाड़ियां नज़्दीक होनेकी वज्हसे झाड़ीके अन्दर जंगली जानवर बहुत पाये जाते हैं. कुओंमें पानी २० हाथकी गहराई पर निकल आता है.

अगरी, गुरलां तऋ़ल्लुक़ह- यह जयपुरकी सर्हदपर पुराना गांव है, जो अफ़ीमकी पैदाइश और पोलिटिकल एजेण्ट लेफ़्टिनेन्ट मंक मेसनके, मीना और दूसरी सर्कश क़ौमोंको ज़ेर करनेकी ग़रज़से, बनाये हुए एक क़िलेके लिये मश्हूर है.

बीचपुरी, गुरलां तऋ़ल्लुक़ह- क़रौली शहरसे दक्षिण पूर्व तीन मील बद्रावती नलेपर है, यह और इसके पासके बरेर पहाड़ी, चावर, बालपुरा गांव, रेतीले पत्थर, खड़ीकी खान, तालाब और पुराने मन्दिरोंके लिये, मश्हूर हैं.

नारोली- जिरोतासे दो मील उत्तर जयपुरकी सर्हदसे मिलाहुआ ५०० घर तथा ३००० आदमियोंकी बस्तीका एक क़स्बह है, जो एक बड़े क़िलेके सबब, जिसको विक्रमी १८४० [हि० ११९७ = ई० १७८३] में मुकुन्द ठाकुरोंने बनवाया था, मश्हूर है. यहां हफ़्तेमें एक दिन हटवाड़ा होता है; और बारूद बनाई जाती है. जो कि यह क़स्बह जयपुरकी सर्हदसे मिलाहुआ है, इस सबबसे कई बार आपसमें सर्हदी झगड़े हुआ करते थे, लेकिन् लेफ़्टिनेण्ट मंक मेसनने मीनारे क़ाइम करके हमेशहका फ़साद मिटादिया.

सपोतरा- यह क़स्बह जिरोतासे ७ मीलके फ़ासिलेपर जिरोता तह्सीलके सबसे बड़े और आबाद गांवोंमेंसे ४०० घरोंकी बस्तीका है; यहां एक क़िला दो सौ बर्षका पुराना, रत्नपालके बेटे उदयपालका बनवाया हुआ है, जिसमें ५० आदमी रहते हैं; और एक उम्दह तालाब बना हुआ है. यहां हफ़्तेमें एक दिन हटवाड़ा लगता है. बाशिन्दोंमें ज़ियादह तर मीना लोग ज़मींदार हैं, छीपोंके घरोंकी तादाद भी ज़ियादह है; जोगी लोग बारूद बनाते हैं, जो कोटा और बूंदीको भेजी जाती है. पानी पच्चीस हाथकी गहराईपर पायाजाता है.

खूबनगर- मांदरेलसे १४ मील उत्तर और राजधानी करौलीसे ५ मील पश्चिम में वाके है. यहां शिकारका बहुत उम्दह मौक़ा है, और महाराजा हरबख़्शपालके प्रधान भाऊ खूबरामका बनवाया हुआ उम्दह व बड़ा तालाब है, लेकिन् उसके नीचेकी ज़मीन सख़्त व पथरीली होनेके सबब उसका पानी खेतीके काममें नहीं लाया जा सक्ता.

मेला- करौलीमें व्यापारके लिये कोई मश्हूर मेला नहीं है, सिर्फ़ शहरके नज़्दीक कलकत्ता नाम मक़ामपर शिवरात्रिका एक मेला होता है, जिसमें मवेशीकी ख़रीद फ़रोख़्त होती है.

व्यापारके रास्ते- क़रौलीके राज्यमें व्यापार सम्बन्धी रास्ते ये हैं:- १- क़रौलीसे मांचलपुर होकर आगरे जानेवाली सड़क, उत्तर पूर्वमें. २- पश्चिममें इलाक़ह जयपुरके अन्दर कुशलगढ़ और माधवपुरको जानेवाली सड़क. ३- दक्षिणमें शिवपुर व बरोड़ाकी सड़क. ४- ग्वालियर व इन्दौरको जानेवाली सड़क, और ५- नारोलीसे शिवपुर तक. ६- उत्तरी तरफ़ हिन्डौन व बयानाकी सड़क. ७- पूर्वमें मथुरा व धौलपुर जानेवाली सड़क.

तारीख़.

तवारीख़ी हाल इस राज्यका हमको ख़ानगी तौरसे कुछ नहीं मिला, सिर्फ़ कप्तान पी० डब्ल्यू० पाउलेटके गज़ेटिअरसे लिखा जाता है, जो मुझको कर्नेल युएन स्मिथकी मददसे मिला, और थोड़ासा हाल क़रौलीसे मेरे मित्र डॉक्टर भवानीसिंहने भेजा था, लेकिन् उसमें उक्त गज़ेटिअरका ही आशय है.

यहांके जादव (यादव) राजपूत चन्द्र वंशी श्री कृष्णकी औलादमें गिने जाते हैं. पाउलेट साहिब लिखते हैं, कि महाराजा विजयपाल मथुरा छोड़कर मनी पहाड़को

आया, और वहां एक क़िला विक्रमी १०५२ [हि० ३८५ = ई० ९९५] में बनवाया. बड़वा भाट बयान करते हैं, कि उसका राज बहुत बढ़गया था. ग़ज़नीके मुसल्मानोंने उसपर हमलह किया, और धोखेसे राणियोंका बारूदमें उड़ जाना इस राजाकी ज़िन्दगीके ख़ातिमेका सबब हुआ.. यह बर्बादी बयानाके क़िलेमें विक्रमी ११०३ [हि० ४३८ = ई० १०४६] में, जो उसने अपनी ज़िन्दगीमें बनवाया था, विजयपाल (१) के मरने बाद हुई. मुसल्मानोंने बयानेका क़िला छीन लिया. विजयपालके १८ बेटे थे, जिनमें छत्रपाल मुसल्मानोंसे लड़कर मारागया, और गजपालकी औलाद जयसलमेर (२) के भाटी हैं. तीसरे मदनपालने मांदरेल बसाया, और क़िलेको पीछा बनवाया, जिसके निशान अबतक मिलते हैं. विजयपालका सबसे बड़ा बेटा तवनपाल बारह वर्ष तक पोशीदह रहकर अपनी धायके मकानपर आया, उसने तवनगढ़का क़िला बयानाके अग्निकोणमें पन्द्रह मीलपर बनवाया, जिसके निशान अब तक मिलते हैं. तवनपालने डांगके इलाक़हपर क़ब्ज़ह करलिया.

तवनपालके मरने बाद उसका बेटा धर्मपाल गद्दीपर बैठा, और उसने धौलडेरामें जाकर एक क़िला बनवाया, जहां अब धौलपुर आबाद है. उसके बेटे कुंवरपालने गोलारीमें एक क़िला बनवाया, जिसका नाम कुंवरगढ़ रक्खा, और जिसके निशान अबतक मिलते हैं. धर्मपाल मुसल्मानोंकी लड़ाईमें मारागया; जब कुंवरपाल यहांसे निकलकर अंधेरा कटोलाकी तरफ़ चलागया, जो रीवांके पास है, तो उसका भाई मदनपाल मुसल्मानोंके ताबे रहकर तवनगढ़के पास ही रहा, जिसकी औलाद गोंज ख़ानदानके नामसे उस ज़िलेमें मौजूद है. अगर्चि वे मुसल्मान नहीं हुए, तो भी यादव लोग उनको ज़लील समझते हैं.

कुंवरपाल मरगया, तो उसके बाद सहनपाल, नागार्जुन, पृथ्वीपाल, तिलोकपाल, बपलदेव, सांसदेव, अरसलदेव और गोकुलदेव, एकके बाद दूसरा वारिस हुआ.

---

(१) हमको इस राजाके समयका पाषाण लेख काव्यमालाकी प्राचीन लेख मालाके पृ० ५३-५४-५५, ई० सन् १८८९ फ़ेब्रुअरीके अंकसे मिला है, जिसमें क्षितिपालके पुत्र विजयपालके सामन्त मथनदेवका वागौर नाम ग्राम एक मन्दिरको भेट करना लिखा है, उसमें विक्रमी १०१६ माघ शुक्ल १३ [हि० ३४८ ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० ९६० ता० १४ जैन्युअरी] दर्ज है. इससे विजयपालके मरनेके समयमें कुछ फ़र्क़ हो, तो आश्चर्य नहीं. इस पाषाण लेखकी नक़्ल शेष संग्रहमें दी है. बयानाकी एक प्रशस्ति, जो संवत् ११०० की है, उसमें विजयाधिराज लिखा है; इससे यह भी संभव है, कि राजा विजयपालने ज़ियादह उम्र पाई हो, और पहिली प्रशस्तिके वक़्में वह बचपनकी हालतमें हो. इस प्रशस्तिकी नक़्ल शेष संग्रहमें दी गई है.

(२) जयसलमेरकी तवारीख़में इससे फ़र्क़ पाया जाता है.

विक्रमी १३८४ [हि० ७२७ = ई० १३२७] में अर्जुनदेव गद्दीनशीन हुआ, उसने मुसल्मानोंसे मांदरेलका क़िला ले लिया. फिर पुंवार राजपूत और दोरोंसे मेल करके बिल्कुल इलाक़हपर क़ब्ज़ह करलिया. वह सर मथुराके ज़िलेके चौवीस गांव आबाद करके तवनपालकी कुल जायदादपर हुकूमत करने लगा, और कल्याण-रायका मन्दिर बनवाया, जहां अब क़रौली आबाद है.

विक्रमी १४०५ [हि० ७४९ = ई० १३४८] में क़रौली शहरकी नीव डाली, और एक महल, बाग़ व अंजनीका मन्दिर और गढ़कोट नामका क़िला बनवाया, जिसके निशान अबतक मौजूद हैं. विक्रमी १४१८ [हि० ७६२ = ई० १३६१] में विक्रमादित्य गद्दीपर बैठा, उसके बाद विक्रमी १४३९ [हि० ७८४ = ई० १३८२] में अभयचन्द, और विक्रमी १४६० [हि० ८०६ = ई० १४०३] में पृथ्वीराज. बड़वा भाटोंका बयान है, कि इसने ग्वालियरके राजा मानसिंहपर हमलह किया था, और मुसल्मानोंने तवनगढ़का मुहासरह किया, लेकिन् यादवोंने उनको हटा दिये. उनके बाद उदयचन्द उसके बाद प्रतापरुद्र, और चन्दसेन हुए; इसके बारेमें लिखा है, कि वह ऊतगढ़में रहता था. बड़वा लोग उसके बारेमें बहुतसी करामाती बातें कहते हैं. उसका बेटा भारतचन्द रियासतके लाइक़ नहीं था, इसवास्ते उसका पोता गोपालदास अपने दादाकी गद्दीपर बैठा, और वह अक्बर बादशाहकी नौकरीमें बहुत दिनों तक रहा.

अक्बरने उसको रणजीत नक़ारह दिया, जो अबतक रियासतमें मौजूद है, और ऐसा भी बयान है, कि आगरेके क़िलेकी बुन्याद अक्बर बादशाहने इसीके हाथ से डलवाई. मांचलपुरके क़िलेमें महल व बाग़ और झिरीमें महल व बहादुरगढ़का क़िला और गोपाल मन्दिर, यह सब उसीने बनवाये थे. मीना लोगोंको निकालकर पैदावार क़रौलीको तरक़्क़ी दी. चन्दसेनका दूसरा बेटा जीतसिंह था, जिसकी औलाद कोट-मूंदा यादव कहलाती है. गोपालदासके बड़ा बेटा द्वारिकादास गद्दीका मालिक हुआ, और दूसरे मुकरावकी औलाद सर मथुरा, झिरी और सबलगढ़के मुक्तावत यादव हैं. तुरसाम बहादुरकी औलाद बहादुरके यादव कहलाते हैं. द्वारिकादासका बेटा मगदराय था, जिसके पंचपीर यादव कहलाते हैं, इसका बेटा मुकुन्द था, जिसके कई बेटे, जगोमन, छत्रमन, देवमन, मदनमन, और महामनके नामसे मश्हूर थे, जो मुकुन्द यादव कहलाते हैं. मुकुन्दके बाद जगोमन गद्दीपर बैठा. उसके वक़्तमें सर मथुराके मुक्तावत और सबलगढ़के बहादुर यादवोंने फ़साद मचाया; लेकिन् वह तै किया गया. जगोमनका एक बेटा अनोमन हुआ; जिसकी औलादके मजूरा या कोटरीके यादव हैं.

जगोमनके पीछे उसकी गद्दीपर छत्रमन बैठा. वह बादशाह औरंगज़ेबके साथ दक्षिणकी लड़ाइयोंमें शामिल था. इसके एक बेटा राव भूपपाल था, जिसकी औलादमें इनायतीके राव हैं, और दूसरा शस्तपाल, जिसकी औलादमें मनोहरपुर वाले हैं. छत्रमनके बाद दूसरा धर्मपाल गद्दीपर बैठा; इसने दिल्लीके बादशाहोंको खुश रखकर मुक्तावतों और सबलगढ़ वालोंकी बग़ावतको मिटाया. इसका दूसरा बेटा राव कीर्तिपाल था, जिसकी औलादमें गरेड़ी और हाड़ोतीके जागीरदार हैं; और दूसरा भोजपाल हुआ, जिसके वंशमें रावंत्राके जागीरदार हैं.

धर्मपालकी गद्दीपर उसका बड़ा बेटा रत्नपाल बैठा. उसके वक़्में मुक्तावत और बहादुर जादव बाग़ी होगये, और ख़िराज देनेसे इन्कार किया, इसलिये झिरी और खेड़लाको ख़ालिसह करलिया; लेकिन् थोड़े दिनोंके बाद वापस दे दिया.

रत्नपालकी गद्दीपर दूसरा कुंवरपाल बैठा. उसने गुंबदका महल बनवाया. उन्हीं दिनोंमें चम्बल किनारेके राजपूतोंने फ़साद किया, जिनको दिल्ली वालोंकी हिमायत थी, तब कुंवरपालने अपने इलाक़हके दो बादशाही थानोंके आदमियोंको अपना नौकर बना लिया, जिनकी औलाद अबतक करौलीमें मौजूद है. फिर उनके बाद गोपालपाल (१) गद्दीपर बैठा. उसके प्रधान खंडेराय और नवलसिंह दो ब्राह्मण अच्छे बुद्धिमान थे. शिवपुर और नरवरका प्रबन्ध भी उन्हींकी सलाहसे होता था. जब गोपालपाल गद्दीपर बैठा, तो इन दोनों प्रधानोंने मरहटोंसे मिला-वट करके रियासतमें कुछ ख़लल न आने दिया. इस राजाने बड़ा होनेपर राज काज अच्छी तरह चलाया, और अपना मुल्क सबलगढ़से सीकरवाड़ तक फैलाया, जो ग्वालियरसे पांच कोसपर है. उसके इलाक़हमें विजयपुर भी शामिल होगया था, उसने झिरी और सर मथुरांके मुक्तावतोंको भी अच्छी तरह तावेदार बना लिया. इस राजाने शहर करौलीके गिर्द लाल पत्थरकी शहर पनाह, गोपाल मन्दिर, दीवान आम, त्रिपोलिया, और नक़ारख़ानह, नया कल्याण मन्दिर व मदन-मोहनका मन्दिर बनवाया. गोपालपालने सर मथुराका ख़िराज देकर महाराजा सूरजमल जाटको भी मिला लिया था. विक्रमी १८१० [हि० ११६६ = ई० १७५३] में यह राजा दिल्ली गया, और बादशाहसे माही मरातिब पाया.

---

(१) पाउलेट साहिबने इसका नाम गोपालसिंह रक्खा है, लेकिन् हमारे पास उसी ज़मानेकी तह्रीर मौजूद है, जब कि वह जयपुरके महाराजाके साथ उदयपुरमें आया था, उसमें उसका नाम गोपालपाल लिखा है.

बाद इसके जब विक्रमी १८१३ माघ शुक्ल ९ [हि० ११७० ता० ८ जमादियुल अव्वल = ई० १७५७ ता० २९ जैन्युअरी] को अहमदशाह अब्दाली दिल्लीमें पहुंचा, और उस शहरको लूटकर सूरजमल जाटकी सज़ाके लिये आगे बढ़ा, उसने अपने सेनापति जहांख़ांको एक फ़ौजके साथ मथुराकी तरफ़ भेजा. उसने मथुराको बर्बाद करके मन्दिरों और मूर्तियोंको मिट्टीमें मिलाया, राजा गोपालपाल, जो पक्का वैष्णव था, इस बातके सुननेसे उसे यहांतक रंज हुआ, कि आठ दिनके बाद वह मरगया. यह राजा क़रौलीके घरानेमें बहुत अच्छा और बुद्धिमान हुआ. यह राजपूतानहकी बड़ी बड़ी कार्रवाइयोंमें उदयपुर, जयपुर और जोधपुरका शरीक रहा, जिसका ज़िक्र पहिले लिखा गया है. गोपालपालके क़ब्ज़हमें जितने गांव थे, उनकी तफ़्सील पाउलेट् साहिबके गज़ेटिअरसे नीचे लिखी जाती हैः—

पर्गनह.	गांव.	
क़रौली	४४	
कूरगांव और जिरोता	९१	
मांचलपुर	५८	
बहरगढ़	१७	
ऊतगढ़, बागड़	६२	
कोलारी	३३	
मांदरेल	४८	
खरहा	८	
कोटड़ीके गांव	५२	
मांगरोल	३१	चम्बलके दक्षिण.
सबलगढ़	१७१	चम्बलके दक्षिण.
विजयपुर	८२	चम्बलके दक्षिण.
कुल गांव—	६९७	

इस राजाने दो वर्ष तक १३००० तेरह हज़ार रुपया सालियानह मरहटोंको भी दिया था. गोपालपालकी गद्दीपर उसका चचेरा भाई तुरसामपाल विक्रमी १८१४ [हि० ११७१ = ई० १७५७] में बैठा. इसके समयमें नीपरीके ठाकुर

सिकरवार बाग़ी होगये, और क़िला अपने क़ब्ज़हमें करलिया. उसको सज़ा देनेके लिये राजकी फ़ौज एक पठानकी मातहतीमें भेजी गई. कुंवारी नदीपर बड़ी भारी लड़ाई हुई, लिखा है, कि नदीका पानी खूनसे लाल होगया था. सिकरवार भाग निकले, और राजकी फ़ौजने फ़त्ह पाई. तुरसामपालका छोटा बेटा राव जुहारपाल था, जिसने जुहारगढ़ बनवाया, उसका पोता महाराजा प्रतापपाल था.

तुरसामपालका बड़ा बेटा माणकपाल विक्रमी १८२९ कार्तिक कृष्ण १३ [हि० ११८६ ता० २७ रजब = .ई० १७७२ ता० २४ ऑक्टोबर] को उसकी जगह गद्दीपर बैठा. उसके वक्तमें बहुत फ़साद रहा, और रोड़जी सेंधियाने चढ़ाई की. वह क़रोलीसे एक कोस पश्चिम रामपुरतक चलाआया, इसमें रोड़जी मारा गया, जिसकी छत्री भंडारनके बाग़में बनी है. इसके बाद नव्वाब हमदानीकी चढ़ाई लिखी है, जो कि शहरके क़रीब किशन बाग़ (कृष्ण बाग़) तक चला आया, और शहर-पनाह व महलोंपर गोलन्दाज़ी की; रियासतकी फ़ौजने साम्हना करके उसको हटा दिया. फिर सेंधिया और उनके फ़्रांसीसी जेनरल बेपटीस्टने चढ़ाई की, अमर-गढ़के ठाकुरकी दग़ाबाज़ीसे सबलगढ़ और चम्बलके दक्षिणी किनारेका मुल्क उसने लेलिया. यह लड़ाई विक्रमी १८५२ [हि० १२१० = .ई० १७९५] में हुई थी. इस राजाके बेटे अमोलकपालने उसके बापसे जुदा ही अपना ढंग जमा लिया था, एक फ़ौज भरती की, जिसको यूरोपिअन अफ्सरकी मातहतीमें क़वाइद सिखलाई. नारोली, ऊतगढ़, भिरी, और सरमथुरा वग़ैरह बाग़ी सर्दारोंसे छीन लिये; लेकिन् भिरी और सर मथुरा सर्दारोंसे ख़िराज लेकर वापस दे दिये; और बापके साथ विरोध होनेसे सबलगढ़ नहीं लेसका. एक दफ़ा उसने अपने बापसे क़रौली छीन लेनी चाही, लेकिन् अपनी बहिनके मना करनेसे छोड़ दिया, और ऊतगढ़के क़िलेमें चला गया, जहां उसका देहान्त होगया. यह ख़बर सुननेसे महाराजा माणकपाल भी बीमार होकर मरगया.

विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = .ई० १८०४] में उसका दूसरा बेटा हरबरूशपाल गद्दीपर बैठा. विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = .ई० १८१२] में नव्वाब मुहम्मदशाहख़ांसे मांचीमें लड़ाई हुई, नव्वाबने शिकस्त पाई, जिसके बाद जॉन बेपटीस्टके साथ मरहटी फ़ौजने क़रौलीपर चढ़ाई की, लेकिन् वे इस तरह लौटाये गये, कि पच्चीस हज़ार रुपया सालानह दिये जायेंगे; और कुछ अर्सह बाद इस ख़िराजके एवज़ मांचलपुर चन्द गांवों सहित देना पड़ा.

विक्रमी १८७४ कार्तिक शुक्ल १ [हि० १२३२ ता० २९ ज़िल्हिज = .ई० १८१७

ता० ९ नोवेम्बर] को करौलीका गवर्मेंट अंग्रेज़ीके साथ अह्दनामह हुआ, तब वह ज़िला भी करौलीको दिलाया गया. महाराजासे गवर्मेंटने ख़िराज नहीं लिया, लेकिन् अह्दनामहकी पांचवीं शर्तके मुताबिक़ वक़्पर फ़ौजसे मदद देनेका इक़ार है. राजाने चाहा था, कि चम्बलके दक्षिणी इलाके भी हमको मिलजावें, और उनके एवज़ हम ख़िराज दिया करेंगे; लेकिन् यह दर्ख्वास्त ना मंजूर हुई.

विक्रमी १८८९ [हि० १२४८ = ई० १८३२] में यह महाराजा गवर्नर जेनरलकी मुलाक़ातके लिये धौलपुर गये. भरतपुरकी दूसरी लड़ाईके वक़ महाराजाने गवर्मेंटके बख़िलाफ़ कार्रवाई की थी, इस सबबसे उनको ज़रूर सज़ा मिलती, लेकिन् बचगये.

महाराजा प्रतापपाल, जो हाड़ौतीके राव अमीरपालका बेटा और जवाहिरपालका पोता था, विक्रमी १८९४ [हि० १२५३ = ई० १८३७] में हरबख़्शपालके मरने बाद गद्दीपर बिठाया गया, क्योंकि वह राजा बेऔलाद मरगया था. प्रताप-पालके भी कोई औलाद नहीं थी, सिर्फ़ एक लड़की थी, जो उसके मरने बाद कोटाके महाराव शत्रुशाल दूसरे को ब्याही गई. प्रतापपालके समयमें हरबख़्शपालकी राणीके साथ बखेड़ा उठा, महाराजा करौली छोड़कर मांदरेलमें चला गया, और एक लड़ाई हुई, जिसमें हरबख़्शपालके एकट्ठे किये हुए धन और आदमियोंका नुक्सान हुआ. बाग़ी सर्दारोंने राजाके प्रधान सेवाराम और बिरजूको मार डाला.

विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में कर्नेल सदलैंएड, करौली आये, लेकिन् यह फ़साद नहीं मिटा. आख़िरकार विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में राणीसे सुल्ह होकर महाराजा करौलीमें आये. विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में ट्रेवलिअन साहिबने करौलीमें पहुंचकर महाराजाको गवर्मेंटकी तरफ़से गद्दी नशीनीका ख़िल्अत दिया. विक्रमी १८९८ [हि० १२५७ = ई० १८४१] में ठाकुरोंका फ़साद मिटानेके लिये एक अंग्रेज़ अफ्सर आया, लेकिन् कुछ फ़ाइदह नहीं हुआ. विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में महाराजा कर्नेल सदलैंएडसे मुलाक़ात करनेको बयाना गये, और विक्रमी १९०१ [हि० १२६० = ई० १८४४] में कप्तान मौरिसन् करौलीमें आया, लेकिन् ख़ानगी फ़साद मिटनेकी कोई सूरत नहीं निकली. विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में मेजर थॉर्स-बी ने आकर कुछ दिनोंतक फ़सादको रोका. विक्रमी १९०६ [हि० १२६५ = ई० १८४९] में महाराजा प्रतापपालका देहान्त होगया, तब हाड़ौतीसे

लाकर नृसिंहपालको गद्दीपर बिठाया. यह राजा लड़का था, इसलिये विक्रमी १९०६ वैशाख शुक्ल ४ [हि० १२६५ ता० २ जमादियुस्सानी = ई० १८४९ ता० २६ एप्रिल] को लेफ़्टिनेण्ट मंक मेसन् प्रबन्धके लिये करौलीमें आया. तह्क़ीक़ात करनेके बाद थोड़े सिपाही कोटा कण्टिन्जेण्टके दो तोपोंके साथ बुलाये जाने और पोलिटिकल एजेण्टकी मददपर डिप्युटी मैजिस्ट्रेट सैफुल्लाहख़ांके रहनेसे प्रबन्ध अच्छी तरह होगया, जिससे अबतक लोग उक्त साहिबकी तारीफ़ करते हैं. विक्रमी १९०९ [हि० १२६८ = ई० १८५२] में नृसिंहपाल मरगया. उसके कोई औलाद नहीं रही. तब रियासतको ज़ब्त करनेका विचार गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलमें हुआ; लेकिन् आख़िरको यह क़रार पाया, कि रियासतको बर्क़रार रखना चाहिये; और इस बारेमें जो ख़त किताबत हुई, उसमें विलायतके हाकिमोंने यह क़ाइदह निकाला, कि पुरानी देशी रियासतोंमें वारिस न होनेकी हालतमें गोद लेना मन्ज़ूर किया जावे. जो कि इस रियासतको बर्क़रार रखना था, इसलिये एक वारिस नियत करना ज़ुरूर हुआ. भरतपाल और मदनपाल दो गद्दीके दावेदार थे, लेकिन् मदनपाल हाड़ौतीका राव होनेके सबब गद्दीका मालिक बनगया, और सर हेन्री लॉरेन्सने उसको जयपुरसे अपने साथ लाकर विक्रमी १९१० फाल्गुन् शुक्ल १५ [हि० १२७० ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० १८५४ ता० १४ मार्च] को गद्दीपर बिठाया.

विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = ई० १८५५] में एजेन्सी उठाली गई. विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = ई० १८५९] तक कोई एजेण्ट रियासतमें नहीं था, इसलिये एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहसे ख़त किताबत होती रही. विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = ई० १८५९] में क़र्ज़ बहुत बढ़ जानेके कारण महाराजाकी मददके लिये एक अफ़्सर भेजा गया था, लेकिन् वह सिर्फ़ महाराजाकी सलाहके लिये था, जिसको विक्रमी १९१८ [हि० १२७८ = ई० १८६१] में पीछा बुला लिया; लेकिन् विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] के अकालमें क़र्ज़ होगया था, और महाराजाने दो लाख रुपया सर्कार अंग्रेज़ीसे क़र्ज़ लेकर अपनी प्रजाकी मदद की. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के गद्रमें सर्कारकी बड़ी ख़ैरख़्वाही की, और कोटाके बाग़ियोंकी सज़ाके लिये फ़ौज भेजी. इन कामोंके बदलेमें जी० सी० एस० आइ० का ख़िताब मिला, और दो फ़ाइर बढ़ाकर १७ तोपकी सलामी मुक़र्रर होगई, एक लाख सत्तर हज़ार क़र्ज़का रुपया सर्कारने छोड़ दिया. और एक ख़िल्अ़त भी मिला.

विक्रमी १९२६ श्रावण शुक्ल ८ [हि० १२८६ ता० ७ जमादियुलअव्वल = .ई० १८६९ ता० १६ ऑगस्ट] को महाराजा मदनपालका इन्तिक़ाल होगया.

वक़ाये राजपूतानहके पृष्ठ ६४२- विक्रमी १९२७-२८ [हि० १२८७-८८ = ई० १८७० - ७१] की रिपोर्टमें लिखा है, कि "इस रईसको अजब हिम्मत थी, अपनी रियासतपर बिल्कुल क़ादिर था, कुल मुआमलातमें अपनी तज्वीज़से फ़ैसला देता था; निहायत उम्दगी और सफ़ाईसे काम करता था; आम इजाज़त थी, कि सुब्ह और शामकी हवाख़ोरीमें, जो कोई चाहे, अपनी अर्ज़ी पेश करे, या ज़बानी अर्ज़ करे. उसके हमनशीन व मुसाहिबोंको फ़ैसलह मुक़द्दमातमें दस्तन्दाज़ी करनेकी मुल्लक़ मजाल न थी; जुर्मोंके बन्द करनेमें पूरी कोशिश थी; कुसूरवार कैसी ही बचावकी जगहपर छिपता, वहांसे पकड़ा चला आता, और सज़ा पाता था. सती और लड़कियोंका मारना और धरनाके जुर्मको एक साथ बन्द करदिया; अल्बत्तह उदारताके कारण ख़र्च ज़ियादह था, इस सबबसे रियासत क़र्ज़दार रहती थी, और महसूल सख़्त थे; अगर्चि ग़ैर मुस्तहक़ लोगोंके वास्ते हदसे ज़ियादह फ़य्याज़ था, मगर बर्ख़िलाफ़ तरीक़े बाज़ रईसोंके, कि नालायक़ोंके वास्ते फ़य्याज़ और हक़दारोंके वास्ते कन्जूस हैं, उसने कालके वक़्में दो लाख रुपया सर्कार अंग्रेज़ीसे क़र्ज़ लेकर ग़रीब लोगोंको बांटा. महाराजा मदनपालके मरनेपर उनका भतीजा लक्ष्मणपाल, राव हाड़ौती, वारिस रियासत समझा गया था, मगर बस्वा वाली राणीके गर्भ होनेसे उसकी मस्नद नशीनीकी नौबत न पहुंची, कि विक्रमी १९२६ भाद्रपद शुक्ल ६ [हि० १२८६ ता० ४ जमादियुस्सानी = .ई० १८६९ ता० १२ सेप्टेम्बर] को लक्ष्मणपाल मरगया. इसपर जयसिंहपाल, जो कि हाड़ौतीका रईस हुआ था, वारिस क़रौली समझा गया.

विक्रमी १९२७ माघ [हि० १२८७ ज़िल्क़ाद = .ई० १८७१ जैन्युअरी] में साहिब एजेएट गवर्नर जेनरलने क़रौलीमें जाकर महाराजा जयसिंहपालको, जो कि उस वक़ बत्तीस सालका बहुत होश्यार था, ख़िल्अ़त मस्नद नशीनी व इख़्तियार रियासत दिया. ठाकुर वृषभानसिंह तंवर राजपूत, महाराजा मदनपालके स्वसुरको, जो चन्द वर्षोंसे रियासतका बन्दोबस्त करता था, महाराजा मदनपालके मरने पीछे और जयसिंहपालकी गद्दी नशीनी तक रियासतमें पूरा इख़्तियार रहा; और उसने बहुत ईमान्दारीसे काम किया. इसी सबबसे उसकी बहुत क़द्र और इ़ज़्ज़त थी. जब महकमह पंचायत मुक़र्रर हुआ, तो वह भी उसमें शामिल हुआ, लेकिन् बुढ़ापे और नाताक़तीके सबब मिह्नत नहीं करसक्ता था. इस पंचायतके महकमहमें उसके सिवा नीचे लिखेहुए और सर्दार शामिल थेः-

१- मलूकपाल, सिपहसालार, रिसालेका अफ्सर और महाराजाका रिश्तहदार.

२- छत्रपाल, अफ्सर रिसालह और महाराजाका रिश्तहदार.

३- श्यामलाल, मौरूसी अह्लकार, जो पहिले हिन्दी दफ्तरका अफ्सर भी था.

४- दीवान बलदेवसिंह, जो पहिले मालके सरिश्तेका अफ्सर था. इसका एक बेटा तह्सीलदार था; और दूसरा महाराजाकी खिद्मतमें हाज़िर रहता था. एजेन्सी आबू और राजपूतानहकी विकालतोंपर करौलीके एक पुराने खानदानके लोग मुक़र्रर हैं, कि उनमेंसे एक फ़ज़्लरसूल एजेन्सी पश्चिमी राजपूतानहमें रहता है. उस ज़मानहमें पंचायतके सिवा मिर्ज़ा अक्बरअलीबेग एक और अह्लकार महाराजा वैकुण्ठ वासीके अह्दसे अदालतका हाकिम और सलाहकार था; मगर पीछे कामसे अलह्दह होगया. करौलीके लोग इसको बहुत अच्छा समझते थे. राज्यके .इलाक़हमें चारों अह्लकार करौलीके रहनेवाले थे. .इलाक़ह गैरके लोग कम नौकर थे, और तह्सीलदारोंका इख्तियार बे हद था.

महाराजा मदनपालके पीछे इन्तिज़ाममें नुक्सान आगया, क्योंकि महकमह पंचायतके सिवा कोई अदालत न थी. महाराजा जयसिंहपालने मदनपालके मुवाफ़िक़ यही तज्वीज़ की, कि महकमह अदालत जुदा करके उसपर एक आदमी मुक़र्रर कियाजावे; और पंचायतमें सिर्फ़ अपीलकी समाअत हो. सरिश्तह तालीममें सिर्फ़ एक मद्रसह राजधानीमें था, जिसकी कुछ भी दुरुस्तीकी उम्मेद न थी; अल्बत्तह वलियुल्लाह डॉक्टरकी कारगुज़ारी, डॉक्टर हार्वी साहिबने तारीफ़के साथ लिखी है. महाराजा मदनपालके इन्तिक़ालके समय रियासतपर दो लाख साठ हज़ार रुपया क़र्ज़ था, जिसमें दो लाख सर्कार अंग्रेज़ीका और साठ हज़ार साहूकारोंका था; कप्तान वाल्टर साहिब, पोलिटिकल एजेण्टने राजके ख़र्चमें ऐसी कमी की, कि पचास हज़ारसे ज़ियादह रुपया सालानह क़र्ज़में दिया जावे; और गैर मामूली ख़र्चके लिये कुछ बचत भी हो. इस तद्बीरसे विक्रमी १९२७ - २८ [हि० १२८७- ८८ = .ई० १८७० और ७१] तक गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीका सत्तर हज़ार रुपया अदा होगया, और साहूकारोंका क़र्ज़ह भी कुछ कम होगया; परन्तु महाराजा जयसिंहपालकी गद्दी नशीनीसे ख़र्च ज़ियादह होगया, ताहम रियासतकी आमद भी चार लाखसे पांच लाख होगई, सिर्फ़ मालका बन्दोबस्त पुख़्तह न हुआ, पुराने रवाजके साथ बढ़ावेपर ठेका दियाजाता था.

विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = .ई० १८७१] की रिपोर्टमें मेजर वाल्टर साहिबने लिखा है, कि " महाराजा जयसिंहपाल बहुत होश्यार हैं, मैं विलायतसे पीछा

आया, तब महाराजाने भरतपुर आकर मुझसे मुलाक़ात की, फिर मैंने भी क़रौलीमें जाकर मुल्कका दौरा किया, और वहांके हालात देखकर बहुत खुश हुआ. मुझको यक़ीन है, कि महाराजा अपनी रियासत और रिआयाकी तरक़्क़ीका बहुत फ़िक्र रखते हैं, और रियासतका बहुतसा काम खुद करते हैं. उनके हुक्म बहुत ठीक और इत्मीनानके होते हैं. उनको शहर क़रौलीकी सफ़ाई और हिफ़्ज़ानि सिहतकी बहुत फ़िक्र है, पानीका निकास और फ़र्शबन्दी शहरकी तज्वीज़ की है. इसमें दस हज़ार रुपया ख़र्च होगा, थोड़ा शहरके बड़े आदमियोंसे वुसूल होकर बाक़ी राजसे दियाजायेगा. गद्दी बैठनेसे थोड़े समय पीछे हिफ़्ज़ सिहत और प्रजाके आरामकी तद्बीर करना महाराजाकी निहायत खुश तद्बीरी ज़ाहिर करता है."

"क़रौलीसे कुशलगढ़ और हिन्डौनकी सड़कें, जिन दोनोंपर आमद रफ़्त रहती है, तय्यार करते हैं; कूरगांवमें मुसाफ़िरोंके आरामके वास्ते सराय तय्यार कराई है, और तरक़्क़ी की तद्बीरोंपर हर तरह मुस्तइद हैं. उनके मिज़ाजमें फ़ुज़ूल ख़र्ची नहीं है. यक़ीन है, कि उनके बन्दोबस्तसे रियासतकी आमदनी और ख़र्चका अच्छा बन्दोबस्त होजायेगा. ठाकुर वृषभानसिंह, जिंसने महाराजा मदनपालके मरनेसे महाराजा जयसिंहपालकी मस्नद नशीनी तक बहुत अच्छी तरहसे काम किया था, अब भी बराय नाम दीवान है; मगर बहुत बुड्ढा होगया है, काम नहीं कर सक्ता; सब उसका अदब करते हैं, और महाराजा साहिब उसका बहुत एतिबार करते हैं. जेलख़ानह साफ़ है, और क़ैदी तन्दुरुस्त रहते हैं. अस्पतालमें .इलाज अच्छी तरह होता है; मद्रसेमें बाज़े लड़के अच्छे पढ़ते हैं; उनमेंसे एकने गवर्मेंएट कॉलिज आगरामें भरती होनेकी दर्ख़्वास्त की, जो कि जुलाईमें दाख़िल होगा. हिन्दुस्तानके दूर दूर मक़ामातपर भी हर साल इल्मकी तरक़्क़ी होती जाती है, मगर जबतक इन मद्रसोंकी निगरानीके लिये कोई अफ़्सर मुक़र्रर न किया जावे, उनमें तरक़्क़ी नहीं होसक्ती. अक्सर रईस और उनके अहल्कार बे इल्म होते हैं; जब तक कि उनको विद्याका फ़ाइदह अच्छी तरह न मालूम हो, उम्मेद नहीं होसक्ती, कि वे सिर्फ़ नामकी मददिहीसे कुछ ज़ियादह करसकें."

"विक्रमी १९२९-३० [हि० १२८९-९० = .ई० १८७२-७३] में महाराजाने पंचायतका महकमह तोड़कर इज्लास खास मुक़र्रर किया, और ठाकुर वृषभानसिंह, जो अदालतका हाकिम था, और तामील व मुक़द्दमात शुरूका फ़ैसलह भी करता था, उसकी अपील महकमह इज्लास खासमें होती थी; बे क़ाइदह अदालत और अहल्कारोंकी कमीसे बहुतसी मिस्लें बाक़ी रहती थीं, और कामके जारी करनेमें भी

सुस्ती होती थी. कुशलगढ़की रिआयाने रियासत जयपुरसे नाराज़ होकर महाराजा करौलीसे दर्ख्वास्त की, कि अपने नामका एक क़स्बह आबाद कीजिये, हम वहां आ रहेंगे; इसपर महाराजाने अपने नामसे जयनगर आबाद किया, और बड़ौदेकी सड़कको दुरुस्त करके दुतरफ़ह दरख़्त लगादिये. इन महाराजाने क़दीम बाग़ात और मकानातकी अच्छी दुरुस्ती करवाई. यह महाराजा विक्रमी १९३२ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० १२९२ ता० १९ शव्वाल = ई० १८७५ ता० १७ नोवेम्बर] को दस्तोंकी बीमारीसे, जो कुछ अरसह तक रही, इन्तिक़ाल करगये. इनके कोई औलाद न थी, लेकिन् एक मुलाक़ातमें उन्होंने पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल राइटको कहदिया था, कि मेरे बाद हाड़ौतीका राव अर्जुनपाल गद्दीपर बिठाया जावे. उसी हिदायतके मुवाफ़िक़ अर्जुनपालको गद्दीपर बिठायागया.

महाराजा अर्जुनपाल.

यह महाराजा विक्रमी १९३२ माघ शुक्ल ५ [हि० १२९३ ता० ४ मुहर्रम = ई० १८७६ ता० ३१ जैन्युअरी] को गुज़रेहुए महाराजाकी इजाज़त और पोलिटिकल एजेण्टकी सम्मतिसे गद्दीपर बिठाये गये. इस वक़्त एक क़रीबी रिश्तहदार सज्जनपालने, जो पहिले करौलीकी गद्दीका दावा रखता था, लाचार होकर हाड़ौतीका राव बनना चाहा, लेकिन् उस ठिकानेके हक़दार भंवरपालको राव बनादिया गया था, इस लिये उसका यह मनोरथ भी पूरा न हुआ. रियासतके कई लोग सज्जनपालके मददगार होगये थे, लेकिन् वह कुछ चारा न जानकर महाराजा अर्जुनपालके क़दमों पर आ गिरा, तब उसके लिये महाराजाने कुछ जागीर मुक़र्रर करदी. हाड़ौतीके राव भंवरपालको तालीमके लिये मेओ कॉलिज अजमेरमें भेजनेकी हिदायत हुई, लेकिन् औरतोंकी जाहिलानह मुहब्बतने इस उम्दह लियाक़तसे उसको बाज़ रक्खा, और महाराजा अर्जुनपालने भी लाचारीका जवाब दिया, कि मेरा इसमें इख़्तियार नहीं है.

इन महाराजाके शुरू अह्दसे ही बद इन्तिज़ामीने इस रियासतमें क़दम रक्खा, क्योंकि उनका मुसाहिब ठाकुर रूपभानसिंह बिल्कुल ज़ईफ़ और फ़ालिजकी बीमारीसे बेकाम होगया था, अल्बत्तह उसका नाइब रामनारायण होश्यार और पुख़्तह मिज़ाज आदमी था, मगर महाराजा मदनपाल व जयसिंहपालके बराबर

लियाक़त नहीं रखता था, और जागीरदारोंकी सर्कशीको मिटानेकी ताक़त रईसमें न हो, तो अकेला नाइब किसतरह काम चलासक्ता है.

विक्रमी १९३९ [हि० १२९९ = ई० १८८२] में सर्दारोंकी सर्कशी और मुल्की बद इन्तिज़ामीके सबब सर्कार अंग्रेज़ीने मुदाख़लतके साथ महाराजाको बे दख़्ल करने बाद एक पोलिटिकल अफ्सर इन्तिज़ामपर रखदिया. सर्कारी अफ्सरके मातह्त कौन्सिल काम अंजाम देनेको क़ाइम रही, और मालगुज़ारीकी निगरानीपर मुन्शी अमानतहुसैन, जो ज़िला अजमेरमें तह्सीलदार रहचुका था, मुक़र्रर कियागया.

विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] में महाराजा अर्जुनपाल गुज़र गये, और उनके गोद माने हुए कुंवर भंवरपालने जवान उम्रमें राज्य पाया.

महाराजा भंवरपाल.

यह विक्रमी १९४३ भाद्रपद [हि० १३०३ ज़िल्हिज = ई० १८८६ सेप्टेम्बर] में करौलीकी गद्दीपर बैठे. कौन्सिल बदस्तूर सर्कारी अफ्सरकी निगरानीमें राज्यके कारोबार चलाती रही. विक्रमी १९४३ फाल्गुन [हि० १३०४ जमादियुस्सानी = ई० १८८७ फेब्रुअरी] में जनाब मलिकह मुअज़्ज़मह इंग्लिस्तान और क़ैसरह हिन्दुस्तानकी ज्युबिली, याने पचासवें साल जुलूसकी रस्मपर उम्दह कारगुज़ारीके सबब मुन्शी रशीदुद्दीनख़ां मेम्बर कौन्सिलको "ख़ान बहादुर" ख़िताब सर्कारसे मिला.

विक्रमी १९४६ ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० १३०६ ता० ७ शव्वाल = ई० १८८९ ता० ७ जून] को अंग्रेज़ी सर्कारकी तरफ़से महाराजा भंवरपालको मुल्की इख़्तियारात हासिल हुए; लेकिन् कौन्सिल उनके मातह्त बदस्तूर बहाल चली आती है.

राज्य करौलीके पांच लाख सालानह ख़ालिसहकी आमदनीके सिवा, डेढ़ लाख आमदके गांव जागीर, ख़ैरात और नौकरी वगैरहमें बंटे हुए हैं; और तमाम छोटे बड़े जागीरदारोंकी तादाद चालीस बयान कीजाती है, जिनमेंसे यादवोंकी कोटड़ियोंका नक़्शह यहां दर्ज कियाजाता है.

करौलीके यादवोंकी कोटड़ियोंका नक्शह.

नम्बर.	जागीर.	गांव.	छटूंद.	शाख.	कैफ़ियत.
१	गेरेरी हाड़ौती	गेरेरी हाड़ौती मांगरोल गोपालपुर एकट कीरतपुरा सूरतपुरा वलवापुरा गज्जुपुरा	१०६६-०-०	पाल	महाराजा धर्मपालके दूसरे बेटे कीर्तिपालके वंशमें हैं, और दर्बारमें पहिली बैठक है.
२	गेरेरीके मातह्त जागीर	पदमपुरा निताारा खूबपुरा रूपपुरा	२४४-८-०	"	" "
३	रावंत्रा	रावंत्रा डरीच रानेत कानपुर डरकोकी राणीपुरा	१४०४-८-०	"	धर्मपालके तीसरे बेटे भोजपालके वंशमें हैं. और दर्बारमें इनायतीके बाद बैठते हैं.
४	रावंत्राके मातह्त जागीर	बरोदा गरदानपुरा	१३०-०-०	"	रावंत्राके जागीरदार.
५	"	शिश्वारो	३८०-८-०	"	दर्बारके जागीरदार.

नम्बर.	जागीर.	गांव.	छटूंद.	शाख.	कैफ़ियत.
६	"	कावदा उम्मेदपुरा	१७९-०-०	"	" "
७	इनायती	इनायती	१५३-१२-०	"	महाराजा छत्रपालके ... में हैं, और अमर... हाड़ौतीसे नीचे बै...
८	इनायतीके मातहत जागीर	गुलाबपुरा	५१-४-०	"	इनायतीके जागीरदार...
९	अमरगढ़	अमरगढ़ जरोली नीसाणो कारो गुढ़ो अरूढ़ बगीद किशोरपुरा सुल्तानपुर जरोद भागीरथपुरा खुशालपुरा चतरभुजपुरा डूंगरी तलाव जतनपुरा कंवरपुर बाजनो लछमनपुरा	१०००-०-०	जगमान	महाराजा जगमानके ... में हैं.
१०	अमरगढ़के मातहत जागीर	मजोरा	२०३-०-०	"	दर्बारके जागीरदार.

नम्बर.	जागीर.	गांव.	छटूंद.	शाख.	कैफ़ियत.
११	वर्तूण	वर्तूण हरसिंह पुरा वुद पुरा खेमपुरा कमालपुरा	१०५९–८–०	मुकुन्द	महाराजा द्वारिकादासके पुत्र मुकुन्दके वंशमें हैं; और रावंत्राके नीचे बैठते हैं
१२	मातहत जागीर (नारोली)	नारोली चरीकी पार्वतीपुरा वंदीपुरा एदलपुरा	२५७–०–०	"	दर्बारके जागीरदार.
१३	" लोलरी	लोलरी	६९–०–०	"	" "
१४	" सिमार	सिमार	१७९–०–०	"	" "
१५	" "	खो	२३१–८–०	"	" "
१६	" "	सेमर्दो	२०५–०–०	"	" "
१७	" "	फ़तहपुर	२०९–०–०	"	" "
१८	" "	केदारपुरा	७०–०–०	"	" "
१९	केला "	केला	४१–८–०	ठाकुर	महाराजा कुंवरपालकी ... वानके पुत्रकी औलादमें
२०	वाजनो	वाजनो	४४–०–०	सलीदी	महाराजा द्वारिकादास पुत्रकी औलादमें है.
२१	महोली	महोली	२९४४–०–०	खिंत्रो	मालूम नहीं, कि यह के खानदानमें हैं.
२२	हरनगर	हरनगर भीकमपुरा	२८३–६–०	हरीदास	द्वारिकादासकी औलादमें.

नम्बर.	जागीर.	गांव.	छटूंद.	शाख.	कैफ़ियत.
२३	फ़त्हपुर	फ़त्हपुर	६२९-०-६	"	" "
२४	रामपुरा	रामपुरा	४८८-७-०	"	" "
२५	मेंगरी	मेंगरी	३७२-२-९	"	" "
२६	बख़्तपुरा	बख़्तपुरा	७४४-५-३	"	" "
२७	चैनपुर	चैनपुर	६१८-८-०	"	" "
२८	माची	माची दीपपुरा	२३९-०-०	"	" "
२९	टटवाई	टटवाई	२२८-०-०	"	" "
३०	बिनेग	बिनेग		"	हरबख़्शपालके वक्तमें खूब-नगर तालाबकी ज़मीन लेली, जिसके एवज़में छटूंद छोड़ दी गई.
३१	कोटो	कोटो	६०९-०-०	"	" "
३२	मचानी	मचानी	२९८-५-०	"	" "
३३	केशपुरा	केशपुरा	४०६-८-०	"	" "
३४	कानपुरा	कानपुरा	५१४-०-०	"	" "
३५	मोराखेड़ा	मोराखेड़ा खेड़ो काशीरामपुरा (ज़ब्त किया गया) रेहो मदीली			
३६	वेनसाहट	वेनसाहट	१३५-०-०	"	
३७	बीड़वास	बीड़वास	६९-४-०	"	

करौली राज्यमें ठाकुरोंके खानदानकी सैंतीस कोटड़ियोंमें मुख्य हाड़ौती, अमरगढ़, इनायती, रावंत्रा, और वर्तूण हैं. इन ठिकानेदारोंको महाराजा खुद आकर तलवार बंधाते व घोड़ा सिरोपाव देते हैं.

हाड़ौतीके ठाकुरकी खास जागीर गरेरीके नज़्दीक एक गांवमें थी, यहांका पहिला राव कीर्तिपाल, राजा धर्मपालका दूसरा बेटा था; यह धर्मपाल करौलीकी गद्दीपर विक्रमी १७०१ [हि० १०५४ = ई० १६४४] में बैठा. विक्रमी १७५४ [हि० ११०९ = ई० १६९७] में हाड़ौती और फ़त्हपुरके ठाकुरोंके आपसमें सहद्दी तनाज़ा खड़ा हुआ, और उन्हींके कुटुम्ब वालोंको पंच क़ाइम किया. हाड़ौती वालोंकी तरफ़से गोली चली, जिससे गरेरीका कीर्तिपाल, जो पंचायतमें शामिल था, मरगया. इससे महाराजाने कीर्तिपालके बेटोंको हाड़ौती पर क़ाबिज़ होनेका हुक्म दिया; हाड़ौतीके ठाकुर दूसरे ठाकुरोंके मुवाफ़िक़ खैरस्वाह मश्हूर नहीं हैं. महाराजा हरबख़्शपालने एकट नलाकी बहादुरानह लड़ाईके बाद इस जागीरको लेलिया, और छः वर्ष बाद कुछ जुर्मानह लेकर वापस दिया. यहांके ठाकुर राव कहलाते हैं. अमरगढ़ ठाकुरका दरजह बराबर है, इसलिये दर्बारमें दोनों एक साथ हाज़िर नहीं होते. अमरगढ़का पहिला ठाकुर राजा जगमानका बेटा था, यह राजा जगमान विक्रमी १६६२ [हि० १०१४ = ई० १६०५] में करौलीकी गद्दीपर बैठा था. अमरमानके बारेमें ऐसा बयान है, कि वह दिल्लीके बादशाहके पास गया, और वहांसे मन्सब पाया. महाराजा माणकपालके वक्तमें ठाकुरको क़ैद करके अमरगढ़की जागीर छीनली थी, मगर कुछ दिन बाद वापस देदी. महाराजा हरबख़्शपालने भी विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = ई० १८४७] में यह जागीर फिर लेली, और वापस दी. महाराजा प्रतापपालके ज़मानहमें यहांका ठाकुर लक्ष्मणचन्द बदमआशोंका मददगार बना, और सिक्कहगरोंका मददगार मालूम होनेपर जयपुर एजेन्सीके वकीलोंकी कोर्टने तज्वीज़ किया, कि पन्द्रह हज़ार रुपया जुर्मानह ठाकुरसे लिया जाकर वह रुपया फ़ायदह आमके काममें खर्च किया जाये.

करौलीका अहदनामह.

एचिसन् साहिबकी किताब, जिल्द ३, हिस्सह १, अहदनामह नम्बर ७०.

अहदनामह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजा यदुकुल

चन्द्रभाल हरबख़्शपालदेव राजा करौलीके दर्मियान, मारिफ़त मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलिस मेट्कॉफ़के, जिसको ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोबल मार्क्विस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, के० जी० गवर्नर जेनरलने इख़्तियारात अ़ता किये थे, और मारिफ़त मीर अ़ताकुलीके, जिसको उक्त राजाने अपनी तरफ़से पूरे इख़्तियारात दिये थे, तै पाया.

शर्त पहिली- दोस्ती, एकता और ख़ैरख़्वाही, गवर्मेंट अंग्रेज़ीके, जो एक फ़रीक़ है, और राजा करौली व उनकी औलादके, जो दूसरा फ़रीक़ है, हमेशहके वास्ते जारी रहेगी.

शर्त दूसरी- अंग्रेज़ी सर्कार राजा करौलीकी रियासतको अपनी हिफ़ाज़तमें लेती है.

शर्त तीसरी- राजा करौली अंग्रेज़ी सर्कारकी बुज़ुर्गीका इक़ार करके हमेशहकी इताअ़तका वादह करते हैं; वह किसीपर ज़ियादती न करेंगे, और किसी ग़ैरके साथ सुलह या मुवाफ़क़त अंग्रेज़ी सर्कारकी मर्ज़ीके बग़ैर न करेंगे; अगर इत्तिफ़ाक़से कोई तक़ार किसी रईसके साथ होजावे, तो वह फ़ैसलहके लिये अंग्रेज़ी सर्कारकी सर पंचीमें सुपुर्द कीजावेगी. राजा अपने मुल्कके पूरे हाकिम हैं, अंग्रेज़ी हुकूमत उनके मुल्कमें दाख़िल न होगी.

शर्त चौथी- अंग्रेज़ी सर्कार अपनी ख़ुशीसे राजा और उसकी औलादको वह ख़िराज मुआ़फ़ फ़र्माती है, जो वह साबिक़में पेश्वाको देते थे, और जो पेश्वाने अंग्रेज़ी सर्कारके नाम तब्दील करदिया था.

शर्त पांचवीं- राजा करौली, जब अंग्रेज़ी सर्कार तलब करे, अपनी फ़ौज अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ देंगे.

शर्त छठी- यह अहदनामह, जिसमें छः शर्तें दर्ज हैं, दिहली मक़ामपर तय्यार होकर उसपर मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलिस मेट्कॉफ़ और मीर अ़ताकुलीके मुहर और दस्तख़त हुए; और इसकी तस्दीक़ कीहुई नक़्ल दस्तख़ती हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल और महाराजा करौलीकी आजकी तारीख़ ९ नोवेम्बर सन् १८१७ ई० से दिहली मक़ाममें एक महीनेके अन्दर दीजावेगी- फ़क़त.

दस्तख़त- सी० टी० मेट्कॉफ़. मुहर.

मुहर राजा. मुहर मीर अ़ताकुली. दस्तख़त- हेस्टिंग्ज़.

मुहर कम्पनी.

इस अहदनामहको हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरलने कैम्प सलियामें तारीख़ १२ नोवेम्बर सन् १८१७ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त- जे ऐडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

अहदनामह नम्बर ७१.

अहदनामह बाबत लेन देन मुज्रिमोंके दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेंएट और श्री मान् मदनपाल महाराजा क़रौली, जी० सी० एस० आइ० व उसके वारिसों और जानशीनोंके, एक तरफ़से लेफ्टिनेएट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आइ० और वी० सी० एजेएट गवर्नर जेनरल, राजपूतानह, जिसको श्री मान् राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बैरोनेट्, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दसे पूरा इख्तियार मिला था, और दूसरी तरफ़से फ़ज़्लरसूलख़ांने, जिसको उक्त महाराजा मदनपालने पूरे इख्तियार दिये थे, तै किया.

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़हमें संगीन जुर्म करके क़रौलीकी राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो क़रौलीकी सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगेजाने पर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

शर्त दूसरी- कोई आदमी, क़रौलीके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम गिरिफ्तार करके क़रौलीके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द कर देवेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो क़रौलीके राज्यकी रअय्यत न हो, और क़रौलीकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी; और उसके मुक़द्दमहकी तह्क़ीक़ात सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अदालतमें कीजायेगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक्तपर क़रौलीकी पोलिटिकल निगरानी रहे.

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ ख़ुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके क़ानूनके

मुवाफ़िक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम उस वक़ हो, उसकी गिरिफ़्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुज्रिम क़रार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

शर्त पांचवीं- नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेंगेः-

१- ख़ून. २- ख़ून करनेकी कोशिश. ३- वह्शियानह क़त्ल. ४- ठगी. ५- ज़हर देना. ६- ज़िना बिल्जब्र (ज़बर्दस्ती व्यभिचार). ७- सख़्त ज़ख़्मी करना. ८- लड़का बाला चुरा लेजाना. ९- औरतोंका बेचना. १०- डकैती. ११- लूट. १२- सेंध (नक़ब) लगाना. १३- चौपाया चुराना. १४- मकान जलादेना. १५- जालसाज़ी करना. १६- झूठा सिक्कह चलाना. १७- ख़यानति मुज्रिमानह. १८- माल अस्बाब चुरालेना. १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना या वर्ग़लान्ना.

शर्त छठी- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमोंको गिरिफ़्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो ख़र्च लगे, वह दर्ख़्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पड़ेगा.

शर्त सातवीं- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक़ तक बर्क़रार रहेगा, जबतक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी ख़्वाहिश ज़ाहिर न करे.

शर्त आठवीं- इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे हैं, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अह्दनामहके जोकि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम अजमेर, तारीख़ २७ नोवेम्बर सन् १८६८ ई० को तै पाया.

(दस्तख़त)- फ़ज़्लरसूलख़ां,
वकील, महाराजा क़रौली, जी० सी० एस० आइ०,
फ़ार्सी हर्फ़ोंमें.

(दस्तख़त)- आर० एच० कीटिंग,
एजेएट गवर्नर जेनरल.

(दस्तख़त)- जॉन लॉरेन्स,
वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम फ़ोर्ट विलिअमपर ता० २० डिसेम्बर सन् १८६८ ई० को की.

(दस्तख़त)- डब्ल्यू० एस० सेटनूकार,
सेक्रेटरी, गवर्मेएट हिन्द, फ़ॉरिन डिपार्टमेएट.

शेष संग्रह नम्बर १.

हरवेनजीके खुरेपर शिवालयमेंकी प्रशस्ति.

श्रीमहागणपतयेनमः ॥ श्रीमहादेवायनमः श्रीएकलिंगेश्वरोजयति.

अथ जोशी हरिवंशकारित श्रीसदाशिवालयप्रशस्तिर्लिख्यते.

तत्रादौ मंगलाचरणं नृपवंशवर्णनं च ॥ श्री कंठः कंठतटी विलुठन्नागाधिप-मानात् हारावलिपरिवीतो गिरिजानुगतः स वः पायात् ॥ १ ॥ यत्राभवन् भूपतयो विशिष्ठा मनुप्रणीतोत्तमधर्मनिष्ठाः ॥ पराक्रमाक्रांतविपक्षशिष्ठाः सोयं जयत्युण्णकरस्यवंशः ॥ २ ॥ पुरंदरपुरोपमोदयपुरस्य निर्माणकृत्तथोदय-मरस्वतः समितितर्जितक्षोणिपः ॥ पुरंदरसमः क्षितावुदयसिंहवर्मा भवत्तदन्वय-विभूषणं बहुलबाहुवीर्यः सुधीः ॥ ३ ॥ प्रतापसंतापितशत्रुवर्गः प्रतापसिंहस्त-नुजस्तदीयः ॥ रणे रिपून्राणयतीति सिद्धपदंदधत् सार्थकमाविरासीत् ॥ ४ ॥ ततोमरसमो जज्ञे मरसिंहनरेश्वरः कर्णप्रतिभटः कर्णसिंहराणस्ततोभवत् ॥ ५ ॥ जगत्सिंहनृपस्तस्माद्राजसिंहस्ततः परं जयसिंहस्ततोजातोमरसिंहस्तु तत्सुतः ॥ ६ ॥ संग्रामसिंहनरपो भवत्संग्राम कोविदः ॥ तस्य पुत्रोमहाराण जगत्सिंहोधरातलं ॥ ७ ॥ प्रत्यर्थिदर्पदलनोदग्रजाग्रद्भुजार्गलः ॥ प्रसन्नो निजधर्मस्थः प्रशास्ति महितः सतां ॥ ९ ॥ सद्वृत्तः स्वप्रकाशप्रचयपरिसरव्या प्तविश्वावकाशो रंध्राभावेपिभूयः श्रुतिविपयवरोदिग्वधूर्भूपयंश्च ॥ एकोनेका-भिलापप्रवितरणपटुः सद्गुणः कोपि भास्वत्सद्वंशोन्मुक्तमुक्तामणिरिव जयति श्रीजगत्सिंहभूपः ॥ १० ॥ अथ हरिवंशवंशवर्णनं ॥ स्वामिमयूरत्रस्ते शेपे नासापुटं विशति चीत्कुर्वन्धुतमूर्द्धा जयति गणेशः सतांडवे शंभोः ॥ ११ ॥ अरुणशरीर निचोल सृग्भूपा कापिजगदादौ ॥ सहपुरुपेण शयाना सिंधौवालैवकेवलं जयति ॥ १२ ॥ यः पूर्वमंभोधिमयेत्र विश्वे शेपे पुराणः पुरुपोधिशेते ॥ तन्नाभिपद्मो दरसंचरिष्णुश्चतुर्मुखः केवलमाविरासीत् ॥ १३ ॥ तेनांवरोक्त्या नियमस्थितेन ज्योतिः परंचिंतयताथ किंचित् ॥ नासापुटन्यस्तसुनिश्चलाशो तेपेतपो दुश्चर मात्मनैव ॥ १४ ॥ प्रसादमासाद्य सदेवतायाः ससर्ज विश्वं कमलासनोथ ॥ वि-प्रानथ क्षत्र मथोविशोथ शूद्रांस्तथा न्यानपि जंतुसंघान् ॥ १५ ॥ विप्रेपु सप्तर्षि गणान् विधाय सप्तर्पिपु प्रागृयमवोचकार ॥ सकलयपंकलयपतोद्यविश्व जगद्गग-

त्सृष्टु रुदेन्मुदेव ॥ १६ ॥ शनावड़ास्तेन जरासुसृष्टाः प्रमत्तदंडव्यसनेतिचंडाः ॥ धर्मार्थगोपायननिष्ठचित्ताः परोपकारैकविसारिवित्ताः ॥ १७ ॥ रेवा वदातश्चरितैः सुरेज्यो भुवंसमुत्तीर्ण इव स्वयं यः ॥ शिवार्चनव्यग्रकरः सरेवादासद्विजन्मा जगती तले भूत् ॥ १८ ॥ ततस्तनूजः समुदैत्सताराचंदाभिधः क्षोणितलप्रसिद्धः ॥ तारासुचंद्रः किमयं प्रजासु यः कांतिभिर्प्रीतिभरं व्यधत्त ॥ १९ ॥ तदौरसोरावनगाधिराजादवाप्तसर्वप्रभुशक्तिरत्र ॥ गुणैकभूर्भूमिसुराग्रगण्योधिकर्धिरास्ते हरिवंशशर्मा ॥ २० ॥ यदाज्ञया सिंधुरपिस्वसीमां मुमोच विभ्यन्न खिलास्त्रवेत्ता ॥ सजामदग्न्यो जगतीतलेस्मिन्मन्ये विमूर्तिर्हरिवंशवेषः ॥ २१ ॥ विलासवाटीविलसस्ववापीलसत्पुरस्त्रीजनकौतुकानि ॥ निरीक्ष्य हृष्टेन महेश्वरेण विहाय कैलासमवासि यत्र ॥ २२ ॥ पीयूशवापीरुचिरः स्वरुच्या स्फुरत्स्ववाटीनिकटेतिरम्यः ॥ महेश्वरस्यातिमहान्निवेशोव्यधायि येनाचलसानुतुंगः ॥ २३ ॥ गिरिवरतनयासुतः प्रहृष्टो जगति निरीक्ष्यविलासवापिकायाः ॥ उपवनतरु राजि रंजितायाश्छबिमधिकां सशिवोपि यत्र तस्थौ ॥ २४ ॥ शिवसौधः शिवावापी वाटिका हरिमंदिरं ॥ अकारि हरिवंशेन चतुर्भद्रं चतुष्य-थे ॥ २५ ॥ व्योमांकमुनिभूसंख्ये वर्षे मासि च माधवे ॥ दले सिते त्रयोदश्यां तिथौच भृगुवासरे ॥ २६ ॥ जगतीशे जगत्सिंहे महीं शासति सद्गुणे ॥ यथोक्तविधिना चक्रे प्रतिष्ठां भूरिदक्षिणां ॥ २७ ॥ हरिवंशेश्वरस्यात्र हरि-वंशोमुदान्वितः ॥ वापीं वाटिकया युक्तां शिवायचसमर्पयत् ॥ २८ ॥ श्रीरूप भट्टजनुषा कविराड्वंदितांघ्रिणा रामकृष्णेन रचिता प्रशस्ति रियमुत्तमा ॥ २९ ॥ सूत्रधारवरेण्येनापीतविघ्नेन शिल्पिना ॥ संभूय चारुशीलेन विश्रुतेनेंद्र भानुना ॥ ३० ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७९० वर्षे वैशाख शुद १३ दिन राणा श्री जगत्सिंह जी विजयराज्ये शनावड़ जाति जोशी हरिवंश ताराचंदोत श्री हरि वंशेश्वरजीरी तथा हरिमंदिररी प्रतिष्ठा कीधी ने बाड़ी वावड़ी सुधी तयार कराये ने देवरे चढ़ाई.

—※—

शेष संग्रह, नम्बर २.

—※—

गोवर्द्धन विलासमें मानजी धायभाईके कुंडकी प्रशस्ति.

श्री महा गणपतये नमः ॥ श्रीएकलिंगजी प्रसादात् अथ धात्रेय भ्रातृ मानजि-त्कारापितकुंड प्रशस्तिर्लिख्यते ॥ उच्चैरुद्दंडशुंडाभ्रमणभवभयत्रस्तसिंदूरदैत्यग्रास-

व्यामंगजाग्रंनिजभुजभुजगभ्राजमानः प्रगर्जन् हृष्यत्स्ववर्वासिहस्तच्युतसुर-कुसुमामोदमाद्यद्विरेफभ्रांतिभ्राजत्कपोलाद्गलितमदजल : पातुव : श्रीगणेश : ॥ १ ॥ अथार्त्तिमद्वीक्ष्य जगत्समस्तं कलौ हरि : स्वेन कृतावदानः ॥ रिरक्षिपुर्लोकमगाधसत्वोदेवोभवद्गूजरवंश देव : ॥ २ ॥ गूरेपधातुस्तु घनांधकारवाचीति सर्वागमसिद्धमेव ॥ जर्जर्त्तितं स्वप्रभयानितांत ततोजनैर्गूजर इत्यभाणि ॥ ३ ॥ स्वधर्मनिष्ठः स्वकुलैकशिष्टः श्रेष्ठः समस्तार्यजनस्य हृष्ठः ॥ मान्यो वदान्यो जगदेकधन्यो झंझाभिधस्तत्रबभूव वित्तः ॥ ३ ॥ नाथाभिधो गूजरवंशनाथ : सुतस्तदीयोभवदद्वितीय : ॥ अनाथबंधुर्गुणसंघसिंधुर्धरातले धन्यतमः सदैव ॥ ४ ॥ तेजः समूहः किमु मूर्तएवं व्यतर्कि लोकैर्यमुदीक्ष्य दूरात् ॥ सभूतले भूरिगुणोतिभव्यस्तेजाभिधानोजनि तत्तनूजः ॥ ५ ॥ सुतस्तत : केशवनिष्ठचित्त : क्षितावभूत् केशवदाससंज्ञ : ॥ सदा सुवेषः श्रितभूमिदेशः स्फुरत्सुकेशः किमसावपीशः ॥ ६ ॥ भोलाभिधा भूमितलप्रसिद्धा धात्री स्वयं चंद्रकुमारिकाया : ॥ गुणैकभूमि : सुकृतैकलभ्या यस्याभवद्योपिदिलेव मूर्त्ता ॥ ७ ॥ तस्यामुदार : श्रुतशास्त्रसार : परोपकारव्रतधार उच्चै : ॥ धनाभिधानोगिरिशैकतान : सन्मानदोमानजिदास पुत्र : ॥ ८ ॥ यद्दानमाप्यार्थिमधुव्रतौघाभवंति पुष्टाः सहसैवतुष्टाः ॥ समुल्लसद्दंतरुचिः सनानो (?) महेभतां क्षोणितले बिभर्त्ति ॥ ९ ॥ स्वादिष्टपानीयपिपासुभिः सोनाहायि देवैरपिदत्तदृग्भिः ॥ सुधासमांभः परिपूर्णमध्यः कुंड : कृतोयेन महानखंड : ॥ १० ॥ स्वादूदकैर्यः परिपूर्णमध्यः स्वादूदकं सिंधुमपि व्यजेपीत् ॥ समानकुंडः सुमहानखंडो गणं सुराणां स्पृहयत्यजस्रं ॥ ११ ॥ पंचांकसप्तैकमितेथ वर्षे शुक्रावदातछदविष्णुघस्रे ॥ तत्र प्रतिष्ठां निगमोपदिष्टामचीकरन्मानजिदत्युदारः ॥ १२ ॥ सराजलोकस्तदवेक्षणेच्छुर्निमंत्रितो यत्र जगज्जनेश : ॥ समाययौवीरवरैरनेकैः सदा मुदा वंदितपादपीठः ॥ १३ ॥ सभोजनैः षड्रसवद्भिरुच्चैर्विभूषणैर्नैकविधैर्दुकूलै : ॥ उपायनैरश्वगजोपयुक्तै : संमानितोभूदतिसंप्रहृष्टः ॥ १४ ॥ दानैरनेकैरतिदक्षिणाढ्यैर्द्विजातयो यत्र निवृत्तदुखाः ॥ फुल्लाननांभोजरुचोतिहृष्टाः कल्पद्रुमानप्यहसन्नजस्रं ॥ १५ ॥ अदभ्रदानस्रवदभ्रपुष्पप्रवाहमीक्ष्यार्थिसमुच्चयो त्र ॥ हतस्वदारिद्रमलो मलोथ लोलोप्यलोलोजनि लब्धकामः ॥ १६ ॥ नखाभ्रमालागलदंबुबिंदु विभूषणालिट् तडिद्दादिनांतं ॥ प्रहर्पितोन्मत्तमयूरभिक्षुर्वृष्येवयत्पाणिरुपाचचार ॥ १७ ॥ असौ हयानुग्ररयान्मतंगान्मदच्युत : स्यंदनजातमत्र धनानि धान्या

नि च याचकेभ्यो ददौ दयावानतिकीर्तिकामः ॥ १८ ॥ ऋग्वेदिनः समपठन्त ऋचो यजूंषि तद्वेदिनः कृतकरस्वरचारु तत्र ॥ छंदांसि सामकुशलाः प्रतत (?) स्वकंठमाथर्वणा उपनिषन्निचयं च सम्यक् ॥ १९ ॥ वादित्रध्वनिमिश्रितो जनरवै र्वेदस्वनै र्ब्रंहितै र्हेषाभिः पुरसुंदरीजनमुखोद्गीतैश्च गीतैः शुभैः ॥ दिग्व्यापी दिविषत्सभासु कथयन् कुंडप्रतिष्ठोत्सवं स्वाध्यायाध्ययनध्वनिः प्रविततो ब्रह्मांडमापूरयत् ॥ २० ॥ आघ्राय यत्रातिहुताज्यगंधं तदैव सर्वे त्रिदशा जगत्सु ॥ वीताखिलोत्पत्तिविनाशदुखाः स्वसौमनस्यं प्रथयांबभूवुः ॥ २१ ॥ विकचपुष्पभरावनतैस्ततैः प्रचुरदध्वगसौख्यकरैः परैः॥ तरुवरै र्जितनंदनसंपदं व्यथितचित्तहरामथ वाटिकां ॥ २२ ॥ सम्मानिता मानजिता समस्ता सभाजितस्तत्र सुरा नराश्च ॥ जयस्वनैस्तुष्टहृदोऽ मुमुच्चैरवाकिरन् पुष्पभरैरतीव ॥ २३ ॥ इति स्वदानस्रवदंबुधारामरप्रसादप्लवमानकीर्तिः ॥ मानो महीशागमनप्रहृष्टस्तत्र प्रतिष्ठोत्सवमध्यकार्षीत् ॥ २४ ॥ श्रीमज्जगत्सिंहनृपप्रसादादवाप्तसर्वाभिमतः प्रहृष्टः ॥ मानः समाप्याखिलकृत्यमित्थं शुभे मुहूर्ते विशदात्मगेहं ॥ २५ ॥ श्रीरूपभट्टद्विजराजजेन श्रीरामकृष्णेन बुधेन बुध्या ॥ इलाविलासाहितचेतसेयं मानप्रशस्ति र्निरमायि रम्या ॥ २६ ॥ सुरूपरूपद्विजराजजन्मा बुधो भवत्येव न तत्र चित्रं ॥ इलाविलासोद्धुरचित्तवृत्ति र्नक्षत्रभूः क्षत्रकुलप्रथोपि ॥ २७ ॥ भूवियद्भूमिभूताब्धिसंख्य स्तत्र धनव्ययः ॥ खातमारभ्य संजज्ञे प्रतिष्ठावधिको खिलः ॥ २८ ॥ संवत् १७९५ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे ११ दिने गूजर ज्ञाति वास उदयपुर झांझाजी सुत नाथाजी तत्पुत्र तेजाजी तत्पुत्र केशवदासजी तत्पुत्र चिरंजीवी धायभाईजी श्री मानजी कुंड वाड़ी तथा सारी जायगा बंधाई कुंडरी खुदाई मंडाई कुमठाणो तथा व्याव वृद्धरा समस्त रुपीया ४५१०१ अखरे रुपीया पैंतालीस हजार एक सौ एक लगाया संवत् १७९९ वर्षे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे १ दिने गुरु वासरे महाराजा धिराज महाराणाश्रीजगत्सिंहजीविजय राज्ये मेदपाटज्ञाती भटरूपजी तत्पुत्र भटरामकृष्ण या प्रशस्ति बणाई छै.

शेषसंग्रह नम्बर ३.

(उदयपुरमें दिल्ली दर्वाज़ेके पास, बाईजीराजके कुंडके दर्वाज़ेके साम्हने पश्चिम दिशामें रास्तेपर पंचोलियोंके मन्दिरकी प्रशस्ति.)

॥ श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीगुरुभ्यो नमः॥ श्री एकलिंगप्रसादात्ः॥ योजेतुं त्रिपुरं

हरेण हरिणा दैत्याननेकान्पुनः पार्वत्या महिषासुरप्रशमने ध्यातः पुरा सिद्धये ॥ देवै-र्निंद्रपुरोगमैरनुयुगं संसेव्यते सर्वदा विघ्नध्वांतविदारणैकतरणिः पायात्स नागाननः ॥ १ ॥ श्रीदेकलिंगेश्वरसन्निधाने क्षेत्रे शुभे नागहृदे प्रसिद्धे ॥ शैलोपरिस्था-भवभीतिहर्त्री क्षेमंकरी क्षेमकरी सदास्तु ॥ २ ॥ दग्धो येन मनोभवस्त्रिजगतां जेना ललाटेक्षणप्रोद्भूतानलतेजसा शलभवद्दुःखौघविध्वंसनः ॥ वालेंदुद्युति-र्दीप्तपिंगलजटाजूटोहिभूषान्वितो देवः शैलसुतायुतो भवतु वः सर्वार्थसिद्ध्यै शिवः ॥ ३ ॥ यस्योदयेस्याज्जगतः प्रबोधः क्रियाः समस्ताः श्रुतिभिः प्रयुक्ताः ॥ ब्रह्मादिभिर्वंदितपादपद्मो रविस्त्रिकालं स धुनातु मोहं ॥ ४ ॥ योरूपैः किल मत्स्य-कच्छपमुखे ब्रह्मादिभिः प्रार्थितः प्रादुर्भूय भरंभुवोदनुसुतैर्जातं जहाराखिलं ॥ यं ध्यायंति सदैव योगिनिवहा हृत्पंकजे संस्थितं सो यं वो वितनोतु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥ ५ ॥ इति मंगलाचरणं.

यो धर्मराजस्य पुरो महामतिः शुभाशुभं कर्म नृणां सदैव हि ॥ सुगुप्तमप्या-लिखतीश्वराज्ञया स चित्रगुप्तः किलविश्रुतोऽभवत् ॥ ६ ॥ पुरातपस्यतः कायाद्ब्रह्मणः समभूदसौ ॥ तस्मात्कायस्थसंज्ञां वै स लेभे लोकविश्रुतां ॥ ७ ॥ द्वादशासन्सुतास्तस्य कायस्था इति विश्रुताः॥ तेष्वेकोह्यभवत् ख्यातो भट्टनागरसंज्ञकः ॥ ८ ॥ भट्टनागरवंशे ये जाताः कायस्थसत्तमाः ॥ ते भवन् भुवि विख्याताः सर्वे वै भट्ट नागराः ॥ ९ ॥ भट्टनागरवंशेपि विविधागोत्रजातयः ॥ क्षेत्रेशा गोत्रदेव्यश्च संबभूवुः पृथक् पृथक् ॥ १० ॥ अथ देवजिद्वंशवर्णनम् ॥ गोत्रे वै कश्यपाख्ये प्रचुरतरगढी-वालसंज्ञे प्रसिद्धे यत्र क्षेमंकरीति त्रिजगति महिता पूज्यते गोत्रदेवी ॥ तत्रासी-द्वंशधुर्यः सकलगुणयुतो रत्नजिद्धर्मवृद्धिस्तस्या सन् सूनवस्तु त्रय इह विदिता राजकार्येषु दक्षाः ॥ ११ ॥ टीलाख्यश्चैव सिंहाख्यो वेणीसंज्ञ स्तथापरः ॥ त्रयो पि क्षितिपालानां मान्या ह्यासन् गुणैर्युताः ॥ १२ ॥ टीलाभिधस्याथ गुणैकधामा सोमाभिधः पुत्रवरो बभूव ॥ तस्याभवद्भूपकुलाभिमान्यः स भोगिदासस्तनयो वरिष्ठः ॥ १३ ॥ भोगीदासस्य पुत्रस्तु पुंजराजाह्वयो भवत् ॥ तस्यासीत्सूर्य-मल्लाख्यः सुतो वंशधुरंधरः ॥ १४ ॥ श्रीसूर्यमल्लस्य कुले प्रसिद्धः सुतोऽभवद्देव जिदाख्यया च ॥ स वै जगत्सिंहमहीश्वरस्य विश्वासपात्रं परमं बभूव ॥ १५ ॥ श्रीम-त्संग्रामसिंहक्षितिपतितनयः श्रीजगत्सिंहभूतिं चक्रे मात्यः सचिव इव सदा देवजित्संज्ञके स्मिन् ॥ सो पि प्रीतिं क्षितीशादतुलमतिरवाप्यातुलां धर्मनिष्ठ श्चक्रे सर्वो पकारं खलु वचनमनः कर्मभिः प्रीतचेताः ॥ १६ ॥ कृत्वा पराधं किल भूपतेर्वै भयेन यस्तं शरणं जगाम ॥ दत्वाभयं देवजिदाह्वयस्तं ररक्ष भूपालवराभि

मान्यः ॥ १७ ॥ स दामोदरदासस्य पौत्रीं भूपालमंत्रिणः ॥ उपयेमे शुभे लग्ने रूपचंद्रसुतां वरां ॥ १८ ॥ सारूपचंद्रस्य सुता गुणाढ्या नाम्ना वसंताख्य कुमारिकासीत् ॥ भक्ता स्वपत्युर्नितरां बभूव शचीव शक्रस्य रमेव विष्णोः ॥ १९ ॥ तस्याःसुता सर्वगुणैरुपेता नाम्ना गुलाबाख्य कुमारिकासीत् ॥ पिता ददौ तां शिवदासनाम्ने विहारिमंत्रीदुहितुः सुताय ॥ २० ॥ भूयस्ततोन्यां नृपवाजिशालाधिकारिणः श्यामलदास नाम्नः ॥ सुतां शुभां सूर्यकुमारिकाख्यामुदारबुद्धिर्विधिनोपयेमे ॥ २१ ॥ तस्यामायुष्मंतं युगलकिशोरेति नामतः पुत्रं ॥ लेभे देवजिदाख्यः प्रद्युम्नं कृष्ण इव मनोज्ञं ॥ २२ ॥ ज्ञात्वा देवजिदाह्वयः शुभमतिः संसारमल्पायुषं चित्तं चंचलमध्रुवं ध्रुवमतिर्धृत्वा सुधर्मे धियं ॥ निर्धार्याखिलधर्मजातमसकृत्संसारपारप्रदं प्रासादौ किल वापिकां शुभजलां कर्तुं मनः संदधे ॥ २३ ॥ आहूय शिल्पिप्रवरान् शुभेन्हि सत्कृत्य वस्त्रादिभिरेकवित्तः ॥ पुरोपकंठे स चतुर्भुजस्य प्रासादमुच्चैस्तुहरेश्चकार ॥ २४ ॥ शिवालयं तथैवैकं हरेः प्रासादपृष्ठतः ॥ मनोज्ञं कारयामास शिल्पिभिः शास्त्रकोविदैः ॥ २५ ॥ हरेः प्रासादतश्चैकां नैर्ऋत्यां दिशि शोभनां ॥ स वापीं कारयामास शीतामलजलामपि ॥ २६ ॥ वाटिकां देवयोश्चैव पूजार्थं सुमनोयुतां ॥ मध्ये प्रासादयोश्चक्रे नानाद्रुममनोहरां ॥ २७ ॥ इत्यादि शोभनस्यात् ॥ प्रासादौ वाटिकां वापीं कारयित्वा शुभे हनि ॥ देवजित्कारयामास प्रतिष्ठां द्विजपुंगवैः ॥ २८ ॥ विनायकस्थापनवासरं हि प्रारभ्य सर्वः किल जातिवर्गः ॥ चकार भोज्यैर्विविधैः सदैव तत्रैव सद्भोजनमाप्रतिष्ठं ॥ २९ ॥ मंडपं लक्षणैर्युक्तं कुंडैः पंचभिरन्वितं ॥ प्रासादाद्दिशि पूर्वस्यां कारयामास शिल्पिभिः ॥ ३० ॥ तथान्यं मंडपं चैव विष्णोः प्रासादपृष्ठतः ॥ वाप्याः शिवालयस्यापि प्रतिष्ठार्थं समातनोत् ॥ ३१ ॥ शिल्पिनौ शास्त्रवेत्तारौ तत्रास्तां कर्मकारकौ ॥ इंद्रभानुः सुमतिमान् रूपजित्संज्ञकस्तथा ॥ ३२ ॥ संभृत्याखिलसंभारान् दैवज्ञैः कथिते दिने ॥ ब्रह्माचार्यमुखान् वव्रे देवजिद्द्विजसत्तमान् ॥ ३३ ॥ ब्रह्मातुतत्रामृतरायसंज्ञो गुरुः कुलस्यास्य बभूव विप्रः ॥ तथा महानंदइति प्रसिद्धो ह्याचार्य आसीत्सुविधानदक्षः ॥ ३४ ॥ तत्राचार्याज्ञया तेन वृताये ऋत्विजो द्विजाः ॥ चक्रुस्ते मंडपे सर्वे पारायणजपादिकं ॥ ३५ ॥ पारायणं वेदचतुष्टयस्य केचित्तथा सूक्तजपं प्रचक्रुः ॥ स्तोत्राण्यनेकानि तथैव केचिद् रुद्रस्य सूक्तानि तथा परेच ॥ ३६ ॥ पठतां तत्र विप्राणां वेदघोषो महानभूत् ॥ तेन शब्देन खं भूमिं दिशश्चापि विनेदिरे ॥ ३७ ॥ कृत्वा पारायणं विप्रास्तथा मंत्रजपादिकं ॥ सर्वे जपदशांशेन जुहुवुस्ते पृथक् पृथक् ॥ ३८ ॥ सकारयित्वा

हवनं द्विजैस्तैः संमोदितो मंडपमाजगाम ॥ पूर्णाहुतिं कर्तुमतिप्रतीतः पत्नीद्वया-
ढ्यो निजबंधुयुक्तः ॥ ३९ ॥ पूर्णाहुतिं चापि विधाय विप्रैर्युक्तः पठद्भिः किल वेद-
मंत्रान् ॥ प्रासादमध्ये स चतुर्भुजस्य मूर्तिं हरेस्थापितवांश्च शंभोः ॥ ४० ॥ प्रासा-
दस्य महोत्सवं किल तदा द्रष्टुं समभ्यागताः सर्वे नागरिका जना मुमुदिरे कृत्वा हरे-
र्दर्शनं ॥ तत्रानंदयुतः स देवजिदपि प्रीतो न्वितो बांधवैर्विप्रैश्चापि चकार वेष्ठनमथो
सूत्रेण देवालये ॥ ४१ ॥ तस्य स्वसृसुतापतिः शुभमतिः कल्याणदासाभिधः
काशीनाथकिशोरसंज्ञक सुतद्वंद्वेन युक्तो थ वै ॥ जामाता शिवदाससंज्ञक इति ख्यातो
न्वितः सद्गुणैरासन्सूत्रसुवेष्ठनस्य समये सर्वे पुरो गामिनः ॥ ४२ ॥ दानान्य-
नेकानि तदा द्विजेभ्यो ददौ ततस्तत्र महोत्सवे सः ॥ गोभूहिरण्याश्वगजादिकानि
स देवजिद्विष्णुमहेशतुष्ट्यै ॥ ४३ ॥ दीयतां हूयतां चैव भुज्यतां चेति
सद्ध्वनिः ॥ समुद्भूतस्तदा तत्र व्याप्तः सर्वदिगंतरं ॥ ४४ ॥ महोत्सवं तं प्रविधाय
सम्यक् संतोष्य विप्रान् बहुदक्षिणाभिः ॥ ज्ञातीन्समस्तान्नथ विप्रवर्यान्
संभोजयामास विचित्रभोज्यैः ॥ ४५ ॥ प्रासादस्योत्सवे वै नृपतिरपि जगत्सिंह
नामा सुधामा वैरिव्रातस्यजेता निजजनसहितस्तद्गृहेष्वाजगाम ॥ तत्रस्थित्वा
महार्हाभरणसुवसनैर्देवजित्पूज्यमानो नानाभोज्यैः सुधाभैर्विविधरसयुतैर्भोज-
नं वै चकार ॥ ४६ ॥ तस्मिन्देवमहोत्सवे किल जगत्सिंहं महीनायकं ह्यायातं निज-
बंधुभृत्यसहितं शुद्धांतसख्यन्वितं ॥ सद्वस्त्रैस्तपनीयतंतुरचितैरन्यै र्विचित्रैः शुभैः
संपूज्यातुलमोदमानमनसं चक्रे स देवाभिधः ॥ ४७ ॥ सद्वस्त्रै समलं कृतं नरपतिं
भोज्यैरनेकैः पुनः संभोज्याखिलबांधवानुगयुतं भक्त्या युतोदेवजित् ॥ धृत्वातन्नयना-
ग्रतो हयवरं ह्युच्चैश्रवः सन्निभं द्रव्यं पंचसहस्त्रसंख्यकमपि प्रादात्प्रतीतं नृपं
॥ ४८ ॥ भोजयित्वा तु संपूज्य धनादिभिरनन्यधीः॥ जगत्सिंहं महीपालं चक्रेसंप्री
तमानसं ॥ ४९ ॥ इयं प्रासादयोरेवं कृत्वा देवजिदाह्वयः॥ तयोर्हरिहरौस्थाप्प बभूवा-
नंदसंयुतः ॥ ५० ॥ प्रासाददक्षाग्रिमभागयोश्च चक्रेशुभामट्टपरंपरां च ॥
पश्चात्तथैकामपि धर्म्मशालां स कारयामास हरेस्तु तुष्ट्यै ॥ ५१ ॥ शालाः शुभा स्तत्र
सकारयित्वा रम्यां तथैवाट्टपरंपरांच ॥ संलेखयित्वा किल ताम्रपट्टे समर्पयद्विष्णु-
महेशतुष्ट्यै ॥ ५२ ॥ तथैवदेवालयसन्निधाने भूमिं गृहीत्वा च नृपाज्ञयैव ॥ द्रव्येण
तत्रापि गृहाणि दत्वा संवासयामास स जातिवर्गं ॥ ५३ ॥ खेटाभिधे भूमिपतिप्रदत्ते
ग्रामे निजे सीरयुगोन्मितां गां ॥ संलेखयित्वा किल ताम्रपट्टे ददौ कृपारामधरासुराय
॥ ५४ ॥ कृत्वा प्रासादमुच्चैस्तरमतिविशदं कीर्तिपुंजं यथोर्व्यांतस्मिन्देवाधिदेवं
सुरनरनमितं स्थापयित्वा रमेशं ॥ अन्यस्मिन्वै मृडानीपतिमतिमुदितः प्राप्तसर्वा

भिलाषोरेमे सर्वैरुपेतः सुतयुवतिजनैर्देवजिद्धर्मबुद्धिः ॥ ५५ ॥ श्रीमद्विक्रमभूपराज्यसमयादष्टादशानां शते याते वर्षगणे तथैव शुभदे मास्युत्तमे माधवे ॥ पक्षे चैव सिते तिथावपि तथाष्टम्यां गुरोर्वासरे चक्रे देवजिदाह्वयः सुविधिना देवप्रतिष्ठोत्सवं ॥ ५६ ॥ श्रीमद्देवजिदाह्वयाऽभिरचितप्रासादयो रुत्तमा नाथूरामधरासुरेण रचिता येयं प्रशस्तिः शुभा तांदृष्ट्वा मुदमाप्नुवंतु विबुधा ये वै जनाः सज्जना वंशो देवजितः सदैव परमां वृद्धिं समायात्वयं ॥ ५७ ॥ श्रीजगत्सिंह भूपस्य प्रीतिपात्रं महामतिं ॥ सुपुत्रो देवजिज्जीयाच्चिरं सर्वसुखान्वितः ॥ ५८ ॥ कायस्थोत्तमदेवजिद्विरचितप्रासादयुग्मस्थितौ विप्रैर्वेदविधानतःसुविधिना नित्यं समभ्यर्चितौ ॥ देवावब्धिसुताद्रिजाप्रियतमौ सर्वार्थसिद्धिप्रदौ श्रेयो वः कुरुतामुभौ हरिहरौ देवारिदर्पापहौ ॥ ५९ ॥ इतिश्री कायस्थ वंशावतंसदेवजित्कारितप्रासादप्रशस्तिः संपूर्णा- श्वटैषागोत्रजातेन सूत्रधारेणधीमता श्रमरारमेनरचितः प्रासादः तष्ठसूनुना ॥ १ ॥ संवत् १८०० वर्षे वैशाख शुदि ८ गुरौ देवरारी प्रतिष्ठा कीधी.

शेषसंग्रह नम्बर ४.

(मांडलगढ़की भीतरी तलहटीके बाज़ारमें, महतीजीके मन्दिरमें जातेहुए दाईं तरफ़की सुरह.)

सिद्ध श्री दिवाणजी आदेसातु प्रत दुवे महता देवीचंदजी कस वा मांडलगढ़ तलेटीरा समसत पंचा कस अपरंच थे जमाषातर राषेर गामरी आवादान करज्यो, आसाम्या बारणे गई हे ज्याने पाछी ल्यावज्यो, आदका देवालको अेक आसामीको हात पकड डंड करणो नहीं, अपदत्त परदत्त जे पालंती वसुंधरा तेनरा राजराजेंद्र जवलग चंद्र दिवाकरा, अपदत्त परदत्तं येहरंति वसुंधरा तेनरा नरकं यांति जवलग चंद्र दिवाकरा, लिखतां गोड सोलाल संभूरा सवत् १८०२ रा काती सुद ४ रवे.

शेषसंग्रह नम्बर ५.

(भट्याणीजीकी सरायके मन्दिरकी सुरह.)

श्रीगणेशाय नमः श्री एकलिंगजी प्रसादात् सिद्ध श्री तावापत्र प्रमाणे सुरे श्री मन्महीमहेंद्र महाराजा धिराज महाराणाजी श्री जगत्सिंहजी आदेशात् ठाकुरजी श्री द्वारिकानाथजीरो देवरो राणीजी भट्याणीजी करायो जींपर सादू तथा सेवग रहेगा जीरा भाता सारू धरती हल १ एकरी आगे पेमारी सराय मांहेथी देवाणी थी, तींरे बदले भट्याणीजीरी सराय माहेथी धरती वीगा ३८॥ साडा अडतीस मध्ये पीवल वीगा १८ अठारे माल मंगरारी वीगा २०॥ साडा वीस देवाणी पेमारी सरायरी धरती हल १ री रो हासल भट्याणीजीरी सराय मेलेसी पेली तावापत्र संवत् १८०२ रा काती विद ८ सोमेरो साह पुसालरे भंडार सूंप्यो लागत विलगत घर ठाम सुदी उदक आघाट करे श्री रामार्पण कीधो, स्वदत्त परदत्तं वा ये हरंति वसुंधरा षष्ठि वर्ष सहस्त्राणि विष्ठायां जायते क्रमी प्रत दुवे पंचोली हरकिसन लिषितं पंचोली गुलाबराय कान्होत संवत् १८०७ वर्षे असाड् विद ४ शने.

रियासत कोटाकी प्रशस्तियां,

इंन्डिअन एण्टिक्केरी जिल्द १४ वीं प्रष्ठ ४५-४६ से.

शेषसंग्रह नम्बर - ६.

ॐनमो रत्नत्रयाय॥ जयन्ति वादाः सुगतस्य निर्म्मलाः समस्तसन्देहनिरासभासुराः॥ कुतर्क्कसम्पातनिपातहेतवो युगान्तवाता इव विश्वसन्ततेः॥ १॥ योरूपवानपि विभर्ति सदैव रूपमेकोप्यनेक इव भाति च यो निकामं॥ आरादगात्परधियः प्रतिमर्त्यवेद्यो योनिर्जितारिरजितश्च जिनः सवोव्यात्॥ २ ॥ भिनत्ति योनृणाम्मोहं तमो वेश्मनि दीपवत्॥ सोव्याद्वः सौगतो धर्म्मो भक्तमुक्तिफलप्रदः॥ ३ ॥ आर्यसंघस्य विमलाः शरच्छशिजितश्रियः जयन्ति जयिनः पादाः सुरासुरशिरोर्च्चिताः ॥ ४ ॥ आसीदम्भोधिधीरः शशिधवलयशा विन्दुनागाभिधानस्तत्सूनुः पद्मनागो भवदसमगुणैर्भूपिताशेषवंशः॥ तस्याप्यानंदकारी करनिकरइवानुष्णरश्मेस्तनूजो जातः सामन्तचक्रप्रकटतरगुणः सर्व्वणागोजितारिः ॥ ५ ॥ तस्याभूद्दयिता विशुद्धयशसः श्रीरित्युरः शायिनी कृष्णस्येव महोदया च शशिनो ज्योत्स्नेव विश्वम्भरा॥ गौरीवाद्रिदशोसमा शमवतः प्रज्ञेव वातायिनो गम्भीरा यदि वा महोर्म्मिवलया वेलेव वेलाभृतः॥ ६॥ ताभ्यामभूद्गुणाम्भोधिर्व्वशीकृतमनोमलः॥ देवदत्तइतिख्यातः सामन्तः कृतिनांकृती ॥ ७ ॥ येपान्नतिर्जिनगुरौ गुरुता गुणेषु संगोर्थिभिः सततदाननिवद्धगर्द्धैः॥ भीतिः प्रकाममघतो जगदेकशत्रो स्तेषामयं कृतविशेष-

गुणोन्ववाये ॥ ८ ॥ येषांभूतिरियं परेति न परैरालोक्यतेऽर्थार्थिभिर्येषाम्मुद्विभवः परः परमुदः स्वप्नेपि नाभूत्तनौ ॥ येषामात्महितोदयाय दयितं नासीद्गुणासादनं तेषामेष वशीशशाङ्कधवले जातः कुलाम्भोनिधौ ॥ ९ ॥ सम्पादितजनानन्दः समासादितसन्ततिः॥ कल्पशाखीव जगतामेप भूतो गुणाकरः॥ १०॥ विश्वाश्वासविधौतृणीकृतसितज्योत्स्नोदयोदेहिनामन्तः शुद्धिविचारणे सुरगुरोरप्याहिताल्पोदयः गांभीर्याकलनेनिकामकलितःक्षीरोदसारस्त्वयं॥ यत्तन्नूनमहो गुणागुणितनु व्यासंगिनः संगताः ॥ ११ ॥ तावन्मानधनायशस्ततिभृतस्तावव्रतावद्बुधास्तावत्तायिसुतानुकारकरणा स्तावत्कृपाम्भोधयः॥ तावन्नयस्तपरोपकारतनवस्तावत्कृतज्ञाः परे यावन्नास्य गुणेक्षणे क्षणमपि प्राप्तावधानो जनः॥ १२॥ यस्योद्वीक्ष्य गुणानशेषगुणिनामप्याप्यवज्ञात्मनि निर्व्वाणाखिलमानसन्ततिपतञ्चेतोविकासा समा॥ भानौ ध्वस्तसमस्तनैशंतमसि स्वैरं करालीकृति प्रातर्येन कलावलोपि विगलच्छायः शशाङ्को न किम्॥ १३ ॥ यस्यान्वयेप्यगुणजन्मनदृष्टपूर्वमासादिता न च गुणैर्गणनव्यवस्था ॥ याता मुहूर्तमपि नो कलिदोषलेशा स्सोयन्निरस्तसमतो भुवि कोप्यपूर्वः॥ १४ ॥ यस्य दानमतिरक्षत दाना भाषितान्यफलवन्ति न सन्ति ॥ प्राणदानविहितावधिसस्य्यं तस्य को गुणनिधे रिह तुल्यः॥ १५॥ नाना सन्ति दिनानि सन्ति विविधा श्चन्द्रांशुशीता निशा स्सन्त्यन्याः शतशो बलाजितजगन्नारीसमस्तश्रियः॥ तन्नानन्दिजगत्त्रयेपि सुदिनं सा वा निशा साबला यज्जन्मन्यगमन्निमित्तपदवीमस्यापरैर्दुर्गमाम् ॥ १६॥ कोशवर्द्धनगिरेरनुपूर्व्वं सोयमुन्मिषितधीः सुगतस्य ॥ व्यस्तमारनिकरैकगरिम्णो मन्दिरं स्म विदधाति यथार्थम् ॥ १७ ॥ सुखान्यस्वन्तानि प्रकृतिचपलं जीवितमिदं प्रियाः प्राणप्रख्यास्तडिदुदयकल्पाश्च विभवाः॥ प्रियोदर्काश्चालं क्षणसुखकृतो दुःखबहुला विहारस्तेनायं भवविभवभीतेन रचितः ॥ १८ ॥ सान्द्रध्वानशरद्बलाकनिवहत्यक्तार्कबिम्बोज्वलं संसाराङ्कुरसंगभंगचतुरं यत्पुण्यमात्तम्मया ॥ जैनावासविधेरतोयमखिलो लोकत्रयानन्दनीं तेनारं सुगतश्रियं जितजगद्दोषांजनः प्राप्नुयात् ॥ १९ ॥ प्रशस्तिमेनामकरोज्जातः शाक्यकुलोदधौ ॥ जज्जकः कियदर्थांशनिवेशविहित स्थितिम् ॥ २० ॥ संवत्सराङ्क ७ (१) माघ शुदि ६ उत्कीर्णा चणकेन.

---

(१) इस लेखके अक्षर पुरानी लिपिके होनेके सबब संवत्का अंक पढ़नेमें शायद कोई ग़लती हुई हो, तो तअ़ज्जुब नहीं. इंन्डिअन ऐंटिक्वेरीकी चौदहवीं जिल्दके ३५१ पृष्ठमें फ्लीट साहिबने इसकी बाबत एक नोट लिखा है; और संवत् वग़ैरहके हिन्दसोंकी अस्ल लिपि बतलाकर इस संवत्के अंकको ८७९ पढ़ा है.

शेषसंग्रह नम्बर- ७.

जर्नल ऑफ़ दि बॉम्बे ब्रैञ्च ऑफ़ दि रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की

जिल्द १६ वीं पृष्ठ ३८२ से ३८६ तक.

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः स्सकल संसार सागरोत्तारहेतवे॥ तमोगर्त्ताभिसं पातहस्ता लम्वायशम्भवे ॥ १ ॥

श्वेतद्वीपानुकाराः क्वचिदपरिमितैरिन्दुपादैः पतद्भिर्न्नित्यस्थैस्सान्धकाराः क्वचिदपि निभृतैः फाणिपैर्भोगभागैः सोष्माणो नेत्रभाभिः क्वचिदति शिशिरा- जन्हुकन्याजलौघैरित्थं भावैर्व्विरुद्धैरपि जनितमुदः पान्तु शम्भोर्ज्जटा वः ॥ २ ॥ भोगीन्द्रस्य फणामणिद्युतिमिलन्मौलीन्दुलोलांशवो नेत्राग्नेश्छुरितास्सधूम कपिशैर्ज्वालाशिखाग्रैः क्वचित् ॥ मुक्ताकारमरुन्नदीजलकणैराकीर्णशोभाः क्वचिच्चे- त्थं शाश्वतभूपणव्यतिकराः शम्भोर्ज्जटाः पान्तु वः ॥ ३ ॥ स्थाणोर्व्वः पातु मूर्द्धना सरइव सततव्योमगंगाम्बुलोलस्फूर्ज्जद्भोगीन्द्र पंकश्लथविकटजटाजूटकल्हारहारी ॥ मन्दं यत्र स्फुरन्त्यो धवलनरशिरोवारिजन्मान्तरालस्पष्टः प्रोद्यन्मृणालांकुरनिकरइ- वाभान्ति मौलीन्दुभासः ॥ ४ ॥ नेत्रक्रोडप्रसक्तोज्वलदहनशिखापिंगभासां जटानां भारं संयम्य कृत्वा सममममृतकरोद्भासि मौलीन्दुबिम्बं ॥ हस्ताभ्यामूर्द्ध्न मुद्यद्विशशि- खिवदनग्रन्थिमातत्यनागं स्थाणुः प्रारब्धनृत्तो जगदवतु लयोत्कंम्पिपादांगुलीकः ॥ ५ ॥ चूडाचारुमणीन्दुमण्डितभुवः सद्भोगिनामाश्रयः पक्षच्छेदभयार्तिसंकटवतां रक्षाक्षमोभूभृतां ॥ दूराभ्यागतवाहिनीपरिकरो रत्नप्रकारोज्वलः श्रीमानित्थमुदा- रसागरसमो मौर्यान्वयो दृश्यते ॥ ६ ॥ दिङ्नागाइव जात्यसंभृतमुदो दानोज्वलैराननै र्व्विस्त्रम्भेण रमन्त्यभीतमनसा मानोद्धुरास्सर्व्वतः ॥ सद्वंशत्ववशप्रसिद्धयशसो यस्मिन्प्रसिद्धागुणैः श्लाघ्याभद्रतया च सत्वबहुला पक्षैस्ससंभूभृतः ॥ ७ ॥ इत्थं भवत्सु भूपेपु भुजन्त्सु सकलां मही ॥ धवलात्मा नृपस्तत्र यशसा धवलोऽभवत् ॥ ८॥ कायादिप्रकटार्जितैरहरहः स्वैरेव दोपैः सदा निर्व्वस्त्राः सततक्षुधः प्रतिदिनं स्पष्टीभवद्यातनाः ॥ रात्री संचरणा भृशं परगृहेष्वित्थं विजित्यारयो येनाद्यापि नरेन्द्रतां सुविपदो नीताः पिशाचा इव ॥ ९ ॥ कोपाल्लूनमहेभकुम्भविगलन्मु- क्ताफलालंकृतस्फीतास्त्रस्त्रुतिमण्डिता अपि मुहुर्येनोर्जितेन स्वयं ॥ उन्नाली रिव पंकजैः पुनरपि च्छिन्नैः शिरोभिर्द्विपां विक्रान्तेन विभूपिता रणभुवः त्यक्ता नरैः कातरैः ॥ १० ॥ इत्थं तस्य चिरन्तनो द्विजवरस्सन्नप्युपात्तायुधप्रीतिप्रेतनरेन्द्रसत्कृतिमुदः- पात्रं प्रसिद्धो गुणैः ॥ यस्याद्यापि रणांगणे विलसितं संसूचयन्ति द्विपत्सुष्यच्छोणि- तमर्म्मरा रणभुवः प्रेतघ्याः (?) प्रायशः ॥ ११ ॥ शब्दस्यार्थ इव प्रपादनपटोर्म्मार्ग्ग-

स्त्रयीसंज्ञितो धर्म्मस्सेव्य विशुद्धभावसरलो न्यायस्य मूलं सत : ॥ प्रामाण्यप्रगत –
– – – – यस्साध्यस्य संसिद्धये तस्याभूदभिसंगत : प्रियसखः श्रीसंकुकाख्यो नृपः
॥ १२ ॥ देगिणीनाम तस्यासीद्धर्मपत्नी द्विजोद्भवा ॥ तस्यां तस्याभवद्वीरः सूनुः कृत-
गुणादरः ॥ १३ ॥ यशस्वी रूपवांदाता श्रीमां शिवगणोनृपः ॥ शिवस्य नूनं सगणो येन
तद्भक्ततां गत : ॥ १४ ॥ खड्गाघातदलत्तनुत्रविचटद्वन्हिस्फुलिंगोज्वलज्वालादग्धक-
बन्धकण्ठकुहरप्रोन्मुक्तनादोल्वणे ॥ नाराचग्रथिताननाकुलखगप्रोद्दान्तरक्तासव-
प्रीतप्रेतजने रणेरतधिया येनासकृच्चेष्टितं ॥ १५ ॥ ज्ञात्वा जन्मजरावियोगमरणक्लेशैर-
शेषैश्चितं स्वार्त्थस्याप्ययमेव योग उचितो लोके प्रसिद्ध : सतां ॥ तेनेदं परमे-
श्वरस्य भवनं धर्म्मात्मना कारितं यद्दृष्ट्वैव समस्तलोकवपुषां नष्टं कले : कल्मषं ॥ १६ ॥
पुष्पाशोकसमीरणेन सुरभावुत्फुल्लचूतांकुरे काले मत्तविलोलषट्पदकुले व्यारुद्ध-
दिङ्मण्डले ॥ जातेपाङ्गनिरीक्षणैककथके नारीजनस्य स्मरे क्लृप्तं सद्भवनं भवस्य
सुधिया तेनेह कण्वाश्रमे ॥१७॥ कालेन्दोलाकुलानां तनुवलनभरात्प्रस्फुटत्कंचुकानां
कान्तानां दृश्यमाने कुचकलशतटीभाजि संभोगचिन्हे ॥ यस्मिन्प्रेयोभिमुख्य-
स्थितिझटितिनमच्छस्मितार्द्धेक्षणानां भ्रूभंगैरेव रम्यो हृदयविनिहित स्सूच्यते
प्रेमबन्ध : ॥१८॥ मत्तद्विरेफझङ्कारसहकारविराजिता : ॥ संवीक्ष्य ककुभो बाष्पं मुंचन्ति
पथिकांगनाः ॥१९॥ धूपादिगन्धदीपार्त्थं खण्डस्फुटितहेतुना ॥ ग्रामौ दत्तौ क्षयानीमिः
सर्व्वाट्टोंचोणिपद्रको ॥२०॥ पालयन्तु नृपाःसर्वे येषां भूमि रियं भवेत्॥ एवं कृते तेधर्म्मा-
र्थं नूनं यान्ति शिवालयं ॥२१॥ संसारसागरं घोरं अनेन धर्म्मसेतुना ॥ तारयिष्यत्यसौ
नूनं जन्यौ चात्मानमेव च ॥२२॥ यावत्ससागरां पृथ्वीं सनगां च सकाननां ॥ यावदि-
न्दुस्तपेद्भानुस्तावत्कीर्त्तिर्भ्भविष्यति ॥ २३ ॥ संवत्सरशतै र्यातै : सपंचनवत्यर्ग्गलै : ॥
सप्तभिर्म्मालवेशानां मन्दिरं धूर्जटे : कृतं ॥ २४ ॥ अलुब्धः प्रियवादी च शिवभक्तिरत:
सदा ॥ कारापकोशब्दगण : धार्मिक : शंसितव्रत : ॥ २५ ॥ दक्ष : प्राज्ञो विनीतात्मा
गुरुभक्तः प्रियंवदः ॥ तस्मो – – – – – – कश्चास्मिकायस्थो गोमिकांगजः ॥२६॥
उत्कीर्ण्णं शिवनागेन द्वारशिवस्य सूनुना ॥ सूनुना भट्टसुरभेर्देवटेन श्रुतोज्वलाः ॥२७॥
श्लोका अमी कृता भक्त्या मौलिचन्द्रसुधाजुष : ॥ कृष्णसुतो गुणाढ्यश्च सूत्रधारो-
त्रणण्णक : ॥ २८ ॥ एतत्कण्वाश्रमं ज्ञात्वा सर्व्वपापहरं शुभं ॥ कृतं हि मन्दिरं शम्भो :
धर्म्मकीर्त्तिविवर्द्धनं ॥ २९ ॥ यतिहीनं शब्दहीनं मात्राहीनं तु यद्भवेत् ॥ तत्सर्व्वं
साधुचित्तेन मर्षणीयं बुधैस्सदा. ॥ ३० ॥

रियासत झालावाडकी प्रशस्तियां.

इण्डियन ऐण्टिक्वेरी जिल्द ५ वीं पृष्ठ १८१ से.

शेषसंग्रह नम्बर ८.

॥ ॐनमःशिवाय ॥ रोषक्रोधप्रवृद्धज्वलदनलशिखाक्रान्तदिक्चक्रवालं
द्वादशार्कप्रति — .... राविराश्रु ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्ररुद्रैः प्र
तैरीक्षितं भ्रान्तदृग्भिर्ल्ललाटंवः पुनातुस्मरतनुदहनं लोचनं विश्वमूर्तेः ।
सन्ध्या वासरकामिनी त्रिपथगा पत्नीतथाम्भोनिधे स्तत्सक्तो न विभेष्यघा
निर्दग्धकामव्रतिन् ॥ इत्थंवाक्यपरंपरा विगर्हणे नोक्तोभवान्याभवो भूयाद्धक्र
विहसन्नुच्चैश्चिरं वः श्रिये ॥ २ ॥ श्रीदुर्ग्गगणे नरेन्द्रमुख्ये सतिसंपादित ले
वृत्ते अवदातगुणोपमानहेतौ सर्व्वाश्चर्यकलावि [प] श्चितीह ॥ ३ ॥ यरि
प्रमुदिता विगतोपसर्ग्गाः स्वैःकर्म्मभिर्व्विदधति स्थितिमुर्व्वरेशे ॥ सत्वावबोध
कृतचेतसश्च विप्राः पदं विविदिषन्ति परं स्मरारेः ॥ ४ ॥ यसर्व्वावनिपालवि
सत्वप्रवृत्युज्वलज्ज्वालादग्धतमाक्षतारितिमिरः प्राज्यप्रचेष्टोंजसा शंकामन्ध
पश्चकुरुते तुल्याकृतित्वादहो दग्धोप्येषविशेषविग्रहरुचि र्जातः कथं मन्मथ
आसीत्कृतज्ञस्थिरवागनायासितवान्धवः॥देवनामात्यपायेषु चित्तस्याहृष्टविनि
तस्यावरजः प्रवृद्धकोशक्षितिपद्यूतसभापतिर्व्वदान्यः ॥ विदुषामपिवोप्पका
स्वगुणैः प्रीतिमुपादधात्यजिह्मः ॥ ७ ॥ तेनेदमकारिचन्द्रमौलेर्भवनं जन्
हाणहेतोः ॥ प्रसमीक्ष्यजरावियोगदुःखप्रततिं देहभृतामनुप्रसक्ताम् ॥ ८
एवसखाव्यभिचारीरक्षः — —। कृतिनस्खलितेषु ॥ प्रायणेप्यनुगतिं वि
प्रेत्ययन्तिसुहृदः किमुतार्थाः ॥ ९ ॥ कालेप्रकाममकरन्द समीति मत्त भ्रा
कुलकेलिविरावरम्ये ॥ हृष्टान्यपुष्टमधुरातिकलप्रलापे शम्भोर्न्निविष्टमि
पक्ष्मधाम ॥ १० ॥ संवत्शतेषु सप्तसु षट्चत्वारिंशदधिकेषु ॥ प्रणहितमा
दं समग्रलोकेश्वराधिपतेः ॥ ११ ॥ रम्यैर्ज्जनप्रतीतैरर्थानुगतैरकर्क्कशैश
रचितेयमनभिमानात्प्रशस्ति रपि भट्टशर्व्वगुप्तेन ॥ १२ ॥ अच्युतस्य सुत
त्रधारेण धीमता उत्कीर्णा वामनेनेह पूर्व्वविज्ञानशालिना ॥ १३ ॥

इण्डियन ऐण्टिक्वेरी जिल्द ५ वीं पृष्ठ १८२-८३.

शेषसंग्रह नम्बर ९.

तेजोभिर्द्वादशार्क प्रतिविह ....

२ – – – ह्मेन्द्रोपेन्द्ररुद्रैः प्रलय भयभृतैरीक्षितंभ्रान्त .... गः ल्ली-
लाटम्व : पुनातु स्मरतनुदहनेलोच ....

३ ....गा पत्नी तथाम्भोनिधेस्तत्सक्ते न विभेष्यगाधपि कथं निर्दग्धकामव्र-
तिन् इत्थं वाक्यपरंपरा विगर्हणे.......... ....

४ ....येनविहसन्नुच्चैश्चिरंवः श्रिये ॥ श्रीदुर्ग्गगेणे नरेन्द्रमुख्ये सति संपादित
लोकपालवृत्ते ....

५ वश्वर्यकलाविपश्चितीह ॥ यस्मिंप्रजाः प्रमुषिताः विगतोपसर्ग्गाः स्वैः कर्म्मभि विदध-
ति स्थिति ....

६ .... विप्राः पदं विविदिशतिपर स्मरारे .... सर्व्वोपारि
विस्त्रुथलरः सत्वप्रवृत्युज्वल ज्वालादग....

७ ....म....कवि द्विषश्च कुरुते तुल्यक्रु....त्वादहः यद्वैः पविशेषविग्रहरुचिर्जात
कथमम ....

८ ....

९ .... शरणागतार्त दीनार्ति ....

१० .... समर्थो पि ॥ तस्य वरजः .... कृते पितृदेवार्चन विप्रपूजा ....
....

११ .... भिपूजिता सुतार्थी प्रयातः स्वगृहात्कदमी..........................

१२ .... ग्रहगत ....

(काव्यमालान्तर्गत प्राचीन लेख माला पृष्ठ ५३–५४–५५).

रियासत करौलीकी प्रशस्तियां.

शेषसंग्रह नम्बर १०.

मथनदेवमहीपतेर्दानपत्रम्.

ॐ स्वस्ति ॥ परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीक्षितिपालदेवपा-दानुध्यातपरमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीविजयपालदेवानामभिप्रवर्धमान-कल्याणविजयराज्ये संवत्सरशतेषु दशसु पोडशोत्तरकेषु माघमाससित-पक्षत्रयोदश्यां शनियुक्तायामेवं १०१६ माघसुदि १३ शनावद्य श्रीराज्यपुराव-स्थितो महाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीमथनदेवो महाराजाधिराजश्रीसावटसूनुर्गुर्जर प्रतीहारान्वयः कुशली स्वभोगावाप्तवंशपोतकभोगसंवद्धव्याघ्रवाटकग्रामे समुपग-तान्सर्व्वानेव राजपुरुषान्नियोगस्थान्क्रमागमिकान्नियुक्तकानियुक्तकांस्तन्निवासिमह-

त्तरमहत्तमवणिक्प्रवणिप्रमुखजनपदांश्च यथार्हं मानयति बोधयति समादिशति च॥ अस्तु वः संविदितम् – तृणाग्रलग्नजलबिन्दुसंस्थानास्थिराणि शरीरसंपज्जीवितानीतीमां संसारासारतां कीर्तिमूर्तेश्च कल्पस्थायितां ज्ञात्वा मया पित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये ऐहिकामुष्मिकफलनिमित्तं संसारार्णवतरणार्थं स्वर्गमार्गार्गलोद्घाटनहेतोः स्वमातृश्रीलच्छुकानाम्ना श्रीलच्छुकेश्वरमहादेवाय प्रत्यहं ३ स्नपनसमालभनपुष्पधूपनैवेद्यदीपतैलसुधासिन्दूरलागनखण्डस्फुटितसमारचनप्रेक्षणकपवित्रकारोहणकर्मकरवाटिकापालादिव्ययार्थमुपरि सूचितव्याघ्रवाटकग्रामः स्वसीमातृणयुतिगोचरपर्यन्तः सोद्रङ्गः सवृक्षमालाकुलः सकलभोगसंयुतादायाभ्यामपि समस्तसस्यानां भागखलभिक्षाप्रस्थकस्कन्धकमार्गणकदण्डदशापराधदाननिधिनिधानापुत्रिकाधननष्टिभरटोचितानुचितनिबद्धानिबद्धसमस्तप्रत्यादेय - सहितस्तथैतत्प्रत्यासन्नश्रीगुर्जरवाहितसमस्तक्षेत्रसमेतश्चाकिंचित्प्रग्राह्यो ऽद्य पुण्ये ऽहनि स्नात्वा देवस्य प्रतिष्ठाकाले उदकपूर्वं परिकल्प्य शासनेन दत्तः॥ मत्वैवमद्य दिनादारभ्य श्रीमदामर्दकविनिर्गतश्रीसोपुरीयसंतत्यां श्रीछात्रशिवे श्रीगोपालीदेवीतडागपालीमठसंबद्धश्रीराज्यपुरे श्रीनित्यप्रमुदितदेवमठे श्रीश्रीकण्ठाचार्यशिष्यश्रीरूपशिवाचार्यस्तच्छिष्यश्रीमदोंकारशिवाचार्यस्यास्खलितब्रह्मचर्यावाप्तमहामहिम्नः परमयशोराशेः शिष्यप्रतिशिष्यक्रमेण देवोपयोगार्थं तन्निमव्यवच्छेदेनाचन्द्रार्कं यावत्कुर्वतः कारयतो वास्मद्वंशजैरन्यतरैर्वा भाविभिर्भूपालैः कालकालेष्वपि परिपन्थना न कार्या॥ प्रत्युतास्मत्कृतप्रार्थनया सदा तन्निसानाथ्यं वोढव्यम्॥ यतः समानैवेयं पुण्यफलावाप्तिरनुमन्तव्या॥ उक्तं च भगवता परमर्षिणा वेदव्यासेन व्यासेन – बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः॥ यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्यतस्य तदा फलम्॥ आदित्यो वरुणो वायुर्ब्रह्मा विष्णुर्हुताशनः॥ भगवान् शूलपाणिश्च अभिनन्दति भूमिदम्॥ षष्टिर्वर्षसहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति भूमिदः॥ आच्छेत्ता चानुमन्ता च तान्येव नरकं वसेत्॥ यैर्वाञ्छितं शशिरदीधितिशुभ्रकीर्तैर्यैश्चामरप्रणयिनीपरिरम्भणस्य॥ ते साधवो नहि हरन्ति परेण दत्तां दानाद्वदन्ति परिपालनमेव साधु॥ शासनं कृतवान्देवो लिखितं तस्य सूनुना॥ व्यक्तं सूरप्रसादेन उत्कीर्णं हरिणा ततः। इति। तथामुष्मै देवाय पार्श्वदेवकुलिकाचतुष्टया ४ राजधान्यां प्रतिष्ठितविनायकसहिताय हट्टदाने गोर्नीप्रतिहट्टव्यावहरिकविं २ घटककूपकं प्रतिघृतस्य तैलस्यच पलिके द्वे २ वीथीं प्रतिमासि २ विं २ तथा वहिप्रविष्ठचोल्लिकां प्रतिपर्णानां ५० एतद्देवस्य कृतमिति॥ श्रीमथनः॥ ९

इण्डिअन ऐण्टिक्वेरी, जिल्द १४ वीं पृष्ठ १०.

शेषसंग्रह नम्बर ११.

ॐ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ आसीन्निर्वृतकान्वयैकतिलकः श्रीविष्णुसूर्य्यासने श्रीमत्काम्यकगच्छतारकपथः श्वेतांशुमान्विश्रुतः ॥ श्रीमान्सूरिमहेश्वरः प्रशमभूः श्वेताम्बरग्रामणी राज्ये श्री विजयाधिराज नृपतेः श्रीश्रीपथायांपुरि ॥ ततश्च ॥ नाशं यातु शतं सहस्रसहितं संवत्सराणान्द्रुतं ॥ म्लानोभाद्रपदः सभद्र पदवीम्मासः समारोहतु ॥ सास्यैवक्षयमेतु सोमसहिता कृष्णाद्वितीयातिथिः पञ्चश्री-परमेष्ठिनिष्ठहृदयः प्राप्तो दिवं यत्र सः ॥ अपिच ॥ कीर्तिर्दिक्करिकान्तदन्तमुशलः प्रोद्धूतलास्यक्रमम् क्वापि क्वापि हिमाद्रिमु — — महीसोत्प्रासहासस्थितिम् ॥ काप्यै-रावतनागराजजनितस्पर्द्धानुबन्धोद्धुरम् भ्राम्यन्ती भुवनत्रयं त्रिपथगेवाद्यापि न श्राम्यति ॥ सं० ११०० भाद्र वदि २ चन्द्रे कल्याणकदिने प्रशस्तिरियं साधुसर्व-देवेनोत्कीर्णेति.

छप्पय.

मिहर वंश मनि मौलि रान संग्राम गौनदिव ।
तासु पुत्त जगतेस ईश मेवार वंश इव ॥
सूर चन्द कुल सकल एक मत होन उमग्गिय ।
नद खारी तट निखिल करन मत्तिय डेराकिय ॥
दल संधिमुहर राजन दियउ हितदल मरहट्टन हतै ।
पैं फूट मूंठ ऐसी परी फिर दक्खिन लीनी फ़तै ॥ १ ॥
कुम्म गेह को कलह हान मेवार आन हुव ।
बन माधव आंबेर भीरु ननिहाल खोयभुव ॥
एक एक ते अनख लाग मरहट्टन लाये ।
रजपुत्तनके रुहिर बिहर तन भुम्मि बहाये ॥
बनवाय महल तालाब बिच जगनिवास लखि मोद जिय ।
पातलकुमार दे कैदपन कठिन गौन कैलास किय ॥ २ ॥
इम जयपुर आमेर वंश इतिहास खास बनि ।
कुल नारव की कथा बीच राजन अलवर बनि ॥
बड़े हड्ड बरबीर मध्य कोटा पति मन्निय ।
जिम जालिम बरजोर आप पट्टन घर अन्निय ॥

दुहूंवन उदन्त तिमभुम्मि दवि कहि जद्दवकुलकी कथा।
करोली राज थप्पन कियउ जिम अवनतिउन्नति जथा ॥ ३ ॥
पाहन लेख प्रमान कछुक संग्रह फिर किन्नो ।
वानक वीर विनोद डक्क आनक जिम दिन्नो ॥
सज्जन आशय समुभ्क पित्र इच्छा प्रति पालक ।
ले शासन फतमाल किति मरहट्टन कालक ॥
कविराज दास श्यामल कियउ बानिक बीर विनोदको ।
पूरन प्रवाह पाथोदपथ मद प्रवाह बुध मोदको ॥ ४ ॥

महाराणा जगत्सिंह २.

बारहवां प्रकरण समाप्त.